

॥ १३ ॥ दश पञ्चक्खाण आगारार्थः । ....	३३
॥ १४ ॥ दश पञ्चक्खाण आगारसंख्या गाथा ....	३६
॥ १५ ॥ मुहपत्ती पम्पिलेहण, सुत्र अर्थ साचो सरदहुं । ....	३६
॥ १६ ॥ थापनाचार्यकी १३ पम्पिलेहण बोल । ....	३७
॥ १७ ॥ आलोयण, आजूणा चौपहर रात्री तथा दिवश । ....	३७
॥ १८ ॥ पक्खी, चौमाशी, संवत्तरी, वृद्ध अतीचार । ....	३८
॥ १९ ॥ जयतिहुण वत्तीशी, श्रीअजय देवसूरी कृत । ....	४९
॥ २० ॥ परकीसूत्र, तित्थंकरेय तित्थे । ....	५३
॥ २१ ॥ पाहिक खामणा पाठ । ....	६९
॥ २२ ॥ ( साते स्मरण ) अजियंजिय सब्बजयं १ ....	७१
॥ २३ ॥ उट्ठासिकम नक्ख निग्गय पहा० २....	७४
॥ २४ ॥ नमिऊण पणय सुरगण, स्तोत्र ३ । ....	७५
॥ २५ ॥ तंजयउ जए तित्थं० ॥ ४ ॥ ....	७६
॥ २६ ॥ मय रहियं गुण गण रयण सायरं ५ ....	७८
॥ २७ ॥ सिग्घ मवहरउ विग्घं० स्तोत्र ६ । ....	७९
॥ २८ ॥ उवसग्ग हरं पासं० स्तोत्र ७ । ....	७९
॥ २९ ॥ लघुशांति, शांति शांति निशांत । ....	८०
॥ ३० ॥ बन्नी शांति, जोजो जव्याः शृणुतवचनं० । ....	८१
॥ ३१ ॥ दूजकीथुई, ( महीमंणं पुन्नसोविन्नदेहं ) ....	८४
॥ ३२ ॥ पंचमीस्तुतिः, ( पंचानंतकसु प्रपंच० ) । ....	८४
॥ ३३ ॥ अष्टमी स्तुतिः, ( चञ्चवीशे जिनवर० ) । ....	८५
॥ ३४ ॥ सर्वदिन स्तुतिः ( मूरति मनमोहन० ) । ....	८५
॥ ३५ ॥ दशमीस्तुतिः, ( अश्वशेन नरैसर० ) । ....	८५
॥ ३६ ॥ एकादशी स्तुतिः, ( अरस्य प्रब्रज्या० ) । ....	८६
॥ ३७ ॥ चतुर्दशी स्तुतिः, ( द्वे द्वे कि धपमप० ) । ....	८६
॥ ३८ ॥ चैत्री पूनम स्तुतिः, ( सेव्वंजगिरिनमियै० ) । ....	८७

॥ ३९ ॥ नवपदजली स्तुतिः, ( निरुपम सुखदायक० ) ।	....	८७
॥ ४० ॥ पर्यूषणापर्व स्तुतिः, ( बलि बलि हुंध्याजं० ) ।	....	८८

॥ ❀ ॥ तिथोंकास्तवन ( सरू ) ॥ ❀ ॥

॥ ४१ ॥ सुगण सनेही साजन श्रीसीमंधरस्वामि ।	....	८८
॥ ४२ ॥ श्री शंखेश्वर पास जिनेसर जेटियै ) ।	....	८९
॥ ४३ ॥ सफल संसार अवतार ए हुं गिणुं ।	....	९०
॥ ४४ ॥ प्रणमुं श्रीगुरुपाय ( पंचमी वृद्धस्तवन ) ।	....	९१
॥ ४५ ॥ पांचमि तप तुमे करो रे प्राणी ।	....	९३
॥ ४६ ॥ अमल कमल जिम धवल विराजे ।	....	९३
॥ ४७ ॥ पास जिनेसर जगति लोए ।	....	९४
॥ ४८ ॥ समवसरण बैठा भगवंत ।	....	९५
॥ ४९ ॥ तुं मेरै मनमें प्रजु तुं मेरे दिलमें ।	....	९६
॥ ५० ॥ सास्वता असाश्वता जिन बिंबनमस्कारस्तवन	....	९६
॥ ५१ ॥ जूलो मन जमराकांई जमें ( सिझाय )	....	९८
॥ ५२ ॥ कम्वा फलठे क्रोधना ( क्रोध सिझाय	....	९८
॥ ५३ ॥ जगचूरामणिजूल ( पोसह सिझाय ) ।	....	९९
॥ ५४ ॥ निस्सिहीर ( राई संथारा सिझाय ) ।	....	१०१

॥ ❀ ॥ सामायक पोशादि श्राद्ध अहोरात्रकृत्य ॥ ❀ ॥

॥ ५५ ॥ प्रजात सामायक विधिः ।	....	१०२
॥ ५६ ॥ राई प्रतिक्रमण विधिः ।	....	१०३
॥ ५७ ॥ सामायक पारण विधिः ।	....	१०७
॥ ५८ ॥ संध्याकाल सामायक ग्रहण विधिः ।	....	१०८
॥ ५९ ॥ देवशी प्रतिक्रमण विधिः ।	....	१०९
॥ ६० ॥ अठ पुहरी पोशह विधिः ।	....	१११
॥ ६१ ॥ पांचशक्रस्तवे देव वंदन विधिः ।	....	११३
॥ ६२ ॥ पञ्चरकाण पारण विधिः ।	....	११४
॥ ६३ ॥ राई संथारा विधिः ।	....	११७



॥ ६४ ॥ पोसह पारण विधि । ....	११७
॥ ३५ ॥ दिवश चौपुहरी पोसह विधिः । ....	११८
॥ ६६ ॥ रात्रि संबंधी चौपुहरी पोसह विधिः । ....	१२०
॥ ६७ ॥ चौबीश २४ थंमिला पहिलेहण पाठ । ....	१२१
॥ ६८ ॥ चौबीश थंमिला कहां २ करना । ....	१२१
॥ ६९ ॥ परकी ( चौमाशी ) संबहरी प्रतिक्रमण विधिः ....	१२२
॥ ७० ॥ राई प्रतिक्रमणमें ठम्माशीतप चिंतवन विधिः ....	१२४
॥ ७१ ॥ साधू श्रावक ( प्रतिक्रमणहेतू ) अर्थ ( कारण ) ....	१२६
॥ ७२ ॥ श्री सीमंधर जिन चैत्यवंदन ( जय २ त्रिनुवन ) । ....	१२९
॥ ७३ ॥ श्री सीमंधर जिनस्तवन ( पूर्व विदेह पुख लावती ) । ....	१२९
॥ ७४ ॥ श्री सीमंधर साहिबा वीनतमी० स्तवन ....	१२९
॥ ७५ ॥ जय जय नात्रिनरिंदनंद । सिद्ध गिरी चैत्य० ....	१३०
॥ ७६ ॥ आज पुंमर गिरि जेटिया ( सिद्धगिरीस्त० ....	१३०
॥ ७७ ॥ सिद्धाचल गिरी जेट्यारे ) धन्यभागहमारा ....	१३०
॥ ७८ ॥ श्री आदिजिन चैत्यवंदन ....	१३१
॥ ७९ ॥ श्री शांतिजिन दोचैत्यवंदन ....	१३१
॥ ८० ॥ श्री नेमिजिन चैत्यवंदन ....	१३१
॥ ८४ ॥ श्री पार्श्वजिनका चार चैत्यवंदनजूदा २ ....	१३२
॥ ८६ ॥ श्री महावीरस्वामीका दोचैत्यवंदन ....	१३३

### ॥ ❀ ॥ अथ तपगठ विशेष विधिसंग्रह ॥ ❀ ॥

॥ ८७ ॥ पंचेदियसंबरणो० स्थापनागाथा । ....	१३३
॥ ८९ ॥ इहामि खमासमाणो ( इहकारसुहराई ) । ....	१३३
॥ ९० ॥ सामाइय वयजुत्तो । सामायक पारवागाथा । ....	१३३
॥ ९१ ॥ जगर्चितामणिचैत्यवंदन ( जयवीरराय ) ....	१३४
॥ ९४ ॥ कल्लाणकंदं ( विशाल लोचन ) ( जगवानहं ) ....	१३५
॥ ९५ ॥ अतीचारकी आठगाथा । ....	१३५
॥ ९८ ॥ सुत्रदेवता ( खेत्रदेवता ) ( स्तुति ) ( अट्टाईजोसु ) । ....	१३६

॥ १०० ॥ वरकनक ( सागरचंदो० ) पोसहपारवागाथा	....	१३६
॥ १०१ ॥ ज़रहेसर बाहुबली, अन्नैकुमारो० सिझाय ।	....	१३७
॥ १०२ ॥ मन्ह जिणाणं आणं, सिझाय ।	.... ....	१३७
॥ १०३ ॥ सकल तीर्थ वंदुं कर जोरु० ।	.... ....	१३८
॥ १०४ ॥ सकलार्हत् प्रतिष्ठान, ( पख्खी वृद्ध स्तोत्र ) ।	....	१३९
॥ १०५ ॥ शांतिकरं शांतिजिणं० ( शांतिकरस्तोत्र ) ।	.... ....	१४०
॥ १०६ ॥ सीमंधर परमात्मा० ( श्री सीमंधर जगधणी ) ।	....	१४१
॥ १०९ ॥ श्री परमात्मा० ( विमल कमल ) श्रीशेठुंजय चैत्य० ।	....	१४२
॥ १११ ॥ सुणो चंदाजी सीमंधर० ( आंखनियै रेमें आज ) ।	....	१४३
॥ ११३ ॥ शेठुंजा द्वितीय स्तवन ( पंचतीर्थ स्तुति ) ।	....	१४४
॥ ११४ ॥ पिनुजी२ रै नाम जपुंदिनरातियां, नेमराजुल सि० ।	....	१४५
॥ ११५ ॥ आजुखो तूदानें सांधोको नहीरे, सि० ।	.... ....	१४५
॥ ११७ ॥ पंचतीर्थ चै० ( २ तिथको चै० ) ।	.... ....	१४६
॥ १२० ॥ पंचमी अष्टमी ( तथा ) एकादशीको चैत्यवंदन ।	....	१४७
॥ १२२ ॥ श्रीसीमंधर जिनकी ( २ ) दोय स्तुति ।	.... ....	१४८
॥ १२३ ॥ दिन सकल मनोहर०, बीजकीस्तुति ।	.... ....	१४९
॥ १२४ ॥ श्रावण सुदि दिन०, पंचमी स्तुति ।	.... ....	१४९
॥ १२५ ॥ मंगल आठकरी०, ( ८ ) अष्टमी स्तुति ।	.... ....	१५०
॥ १२६ ॥ एकादशी अतिरूवमी । ( ११ ) एकादशी स्तुति ।	....	१५०
॥ १२७ ॥ स्नातस्या प्रतिमस्य मेरु शिखरे०, ( १४ ) स्तुति ।	....	१५१
॥ १२८ ॥ श्रीशेठुंजय गिरि तीर्थ सार, स्तुति ।	.... ....	१५१
॥ १२९ ॥ महाविदेह क्षेत्रे सीमंधर स्वामी०, स्तुति ।	.... ....	१५२
॥ १३० ॥ सत्तर जेदी जिनपूजा०, पर्युषण स्तुति ।	....	१५२
॥ १३१ ॥ सामायक जेवा विधि ।	.... ....	१५२
॥ १३२ ॥ सामायक पारवा विधि ।	.... ....	१५३
॥ १३३ ॥ संध्याकाल, देवशी प्रतिक्रमण विधि १ ।	.... ....	१५३
॥ १३४ ॥ प्रजातकाले रात्रीप्रतिक्रमण विधि २ ।	.... ....	१५५

६ ॥ ❀ ॥ रत्नसागर प्रथम प्राग, सूचीपत्र ॥ ❀ ॥

॥ १३५ ॥ पक्खी प्रतिक्रमण विधि ३ । ....	१५७
॥ १३७ ॥ चौमाशी ४ ( संबहरी प्रतिक्रमण विधि ) ....	१५८
॥ १३८ ॥ पम्पिलेहण करवानो विधि । ....	१५९
॥ १३९ ॥ पच्चक्खाण पारवानो विधि । ....	१५९
॥ १४० ॥ पांच शक्रस्तवे देववंदन विधि । ....	१७३
॥ १४१ ॥ ( २४ ) जिनचै०, थुई, स्त०, ( चौमाशी देव वंदन )	१७३

॥ ❀ ॥ अथ ठंद स्तवन संग्रह ॥ ❀ ॥

॥ १४२ ॥ सेवो वीरनें चित्तमां० । महावीर ठंद । ....	१५९
॥ १४३ ॥ वंढित पूरे विविधपरें, श्री नवकार ठंद । ....	१६१
॥ १४४ ॥ सुखकारण जवियण०, श्री नवकारठंद । ....	१६२
॥ १४५ ॥ ठै परमेष्टी नमस्कारं, आत्मरक्षाठंद । ....	१६३
॥ १४६ ॥ सेवो पास शंखेसरो० । श्री पार्श्व जिन ठंद । ....	१६३
॥ १४७ ॥ वीरजिनेसर केरोसीस, श्री गौतम ठंद । ....	१६४
॥ १४८ ॥ आदिनाथ आदै०, शोलसतीनो ठंद । ....	१६४
॥ १४९ ॥ शेठुंजरुषज समो सरया ( तीर्थमाला स्त० ) । ....	१६५
॥ १५० ॥ श्री राणपुरो रलियामणोरे राणपुरास्त० । ....	१६६
॥ १५१ ॥ पुख्खलवइ विजये जयोरे० सीमंधर स्त० । ....	१६७
॥ १५२ ॥ माता त्रिशला फूलावे पुत्र पालणे ( हालरियो ) ।	१६७
॥ १५३ ॥ निंदा मकरजो कोईनी पारकीरे ( सि० ) । ....	१६९

॥ ❀ ॥ आनंद घनजी कृत स्तवन संग्रह ॥ ❀ ॥

॥ १५५ ॥ रुषज जिनेसर प्रीतम० ( पंथमो निहाळुं बीजा० ) ।	१६९
॥ १५७ ॥ संजव देवत धुर० ( अग्निनंदन जिन० ) । ....	१७०
॥ १५९ ॥ सुमति चरणकज० ( शीतल जिनपति० ) । ....	१७१
॥ १६० ॥ मनडुं किमही न वाजैहो कुंथुजिन म० । ....	१७२
॥ १६१ ॥ शाश्वता अशाश्वता जिन वृद्ध चैत्य० । ....	१८६
॥ १६२ ॥ शाश्वता २ जिनस्तुति ( तथा ) विधि । ....	१८८
॥ १६४ ॥ श्रीसिद्धगिरी स्त० ( श्री गिरनारजी स्तवन ) । ....	१८९

॥ १६५ ॥ आवो २ नें राज श्री अर्बुद गिरवर जइयै । ....	१९०
॥ १६७ ॥ श्री अष्टापदजी स्त० ( समेत सिखरजी स्त० ) । ....	१९१
॥ १६८ ॥ तोरणथी रथ फेरियोरे लाल ( बारमाशो ) । ....	१९२
॥ १६९ ॥ ( अजीमगंजे ) श्रीनेमी नूतन चैत्य प्रतिष्ठा स्तवन ।	१९३
॥ १७० ॥ जीया चतुर सुजाण, नवपदके गुणगायरे । ....	१९४
॥ १७१ ॥ सद्भक्त्या देवलोक रविशशि,० । शाश्वता० । ....	१९४
॥ १७२ ॥ अपह्वराकरती आरती जिन आगै । ....	१९५
॥ १७३ ॥ मंदर जाणेंकी पूजन करनेकी विधि: ....	१९६
॥ १७४ ॥ बमो नवकार, किंकण्णत्तरु रेअयाण० ....	२०१
॥ १७५ ॥ तिजयपहुत्त पयासं० स्तोत्र । ....	२०३
॥ १७६ ॥ दोसा वहार दम्बो०, स्तोत्र । ....	२०४
॥ १७७ ॥ जगद्गुरु, ९ ग्रह शांति स्तोत्र । ....	२०४
॥ १७८ ॥ धम्मोमंगल मुक्किठं० स्वाध्याय । ....	२०५
॥ १७९ ॥ जिन पंजर, आत्मरक्षास्तोत्र । ....	२०५
॥ १८० ॥ लघु जिनसहस्रनाम, स्तोत्र । ....	२०७
॥ १८१ ॥ सकल मंगल केलिनिवेशनं०, स्तोत्र । ....	२०९
॥ १८२ ॥ पार्श्वजिनस्तोत्र, विशदगुण विचित्रं । ....	२०९
॥ १८३ ॥ यस्यज्ञानदया सिंधो, शंखेश्वर पार्श्वजिन स्तोत्र । ....	२०९
॥ १८४ ॥ लक्ष्मीनिदानं० । श्रीपार्श्वजिनस्तोत्र । ....	२१०
॥ १८५ ॥ श्री शंखेश्वर पार्श्वजिन स्तोत्र । ....	२१०
॥ १८६ ॥ विशद सद्गुण० श्री पार्श्वजिनस्तोत्र । ....	२१०
॥ १८७ ॥ श्री गोमी पार्श्वजिन स्तोत्र । ....	२११
॥ १८८ ॥ आद्यश्री रुषजः०, २४ जिनस्तोत्र । ....	२११
॥ १८९ ॥ श्रीमन्नम्रसुरासुरेंद्र० । मंगलाष्टकस्तोत्र । ....	२१२
॥ १९० ॥ शिवंशुद्धबुद्धं० । परमात्मास्तोत्र । ....	२१३
॥ १९१ ॥ दर्शनंदेवदेवस्य० । नमस्कारस्तोत्र । ....	२१३
॥ १९२ ॥ आद्यंताक्षर संलक्ष० । रुषिमंजलस्तोत्र । ....	२१४

॥ १९३ ॥ ऋक्तामर प्रणतमौलि मणिप्रज्ञाणा० स्तोत्र ।	....	२१७
॥ १९४ ॥ कल्याण मंदिर सुदार मवद्यन्नेदी० स्तोत्र ।	....	२२०
॥ १९५ ॥ वृद्ध सेतुंजरास; श्रीरिसहेसर पायनमी० ।	....	२२३
॥ १९६ ॥ श्री शिखरजी को मोटो रास ।	....	२२९
॥ १९७ ॥ श्री गौतम स्वामीको रास ।	....	२३७
॥ १९८ ॥ श्री गौतम स्वामीके श्लोक ।	....	२४२

### ॥ ❀ ॥ पनरैतिथकी थुई सरू ॥ ❀ ॥

॥ २०१ ॥ पंच विदेह ( समदमोत्तम० ) वर मुत्तिय० ।	....	२४२
॥ २०२ ॥ ( यदंजि नमनादेव, )	....	२४३
॥ २०३ ॥ विश्वनायक लायक०, अजितजिन स्तुति ।	....	२४३
॥ २०४ ॥ सुखसमकित दायक कामित सुरतरुंकंद ।	....	२४४
॥ २०५ ॥ मिल चौविह सुरवर विरचै त्रिगुणोसार ।	....	२४४
॥ २०६ ॥ सुरअसुर वंदिय पायपंकज नेमिजिन स्तुति ।	....	२४५
॥ २०७ ॥ श्री देवार्थ ( विश्वेवर्य पूर्णानंद ) ।	....	२४५
॥ २०८ ॥ त्रिभुवन जन नायक दायक ।	....	२४५
॥ २०९ ॥ श्री सर्वज्ञ ज्योतीरूप विश्वाधीशं देवेन्द्र ।	....	२४६
॥ २१० ॥ पापायां पुरिचारु दीपमाला स्तुति ।	....	२४६
॥ २११ ॥ सिद्धार्थताता० दीपमाला स्तुति ।	....	२४७

### ॥ ❀ ॥ मोटे गेटे स्तवन सरू ॥ ❀ ॥

॥ २१३ ॥ मनमोहन महाराज । तीन भुवन शिरताज ।	....	२४७
॥ २१३ ॥ जय २ श्री जिनराज । जगजनअंतरजामी ।	....	२४८
॥ २१४ ॥ ऋविका श्री जिन बिंब जुहारो ।	....	२४८
॥ २१५ ॥ अंतर जामी सुण अलवेसर ।	....	२४९
॥ २१६ ॥ जयकारी जिनराज पुरसा दानीरे ।	....	२४९
॥ २१७ ॥ सुण सुण शेतुंजागिर स्वामी ।	....	२५०
॥ २१८ ॥ घर अंगण सुरतरु फल्योजी ।	....	२५१
॥ २१९ ॥ मोरा साहिबहो श्री शीतलनाथकि ।	....	२५१



॥ २२० ॥ चौराशी ८४ आशातना, वृद्ध स्तवन । ....	२५२
॥ २२१ ॥ चौवीश जिन देहमान स्तवन । ....	२५३
॥ २२२ ॥ चौवीश जिन आयु प्रमाण स्तवन । ....	२५४
॥ २२३ ॥ ( ६३ ) त्रैलोक्य शिलाका पुरुष स्तवन । ....	२५५
॥ २२४ ॥ मंगल कमलाकंद ए ) अजित शांति स्त० ॥ ....	२५७
॥ २२५ ॥ मुहपत्ती पन्थिलेहण स्तवन । ....	२५८
॥ २२६ ॥ श्री विमलाचल शिरतिलो । ....	२६०
॥ २२७ ॥ रुषन्न जिनेसर दिनकर साहब० । ....	२६०
॥ २२८ ॥ वीरसुणोमोरी वीनती । करजोमीहो० । ....	२६१
॥ २२९ ॥ पूरमनोरथ पाश०, २४ दंभकस्तवन । ....	२६३
॥ २३० ॥ इरियावही मिठामि दुक्कसंख्या स्त० । ....	२६५
॥ २३१ ॥ पांचसमवायस्तवन, सिद्धार्थसुत । ....	२६७
॥ २३२ ॥ १४ गुणठाणा वृद्ध स्तवन । ....	२७१
॥ २३३ ॥ समवसरण विचार गर्भित स्तवन । ....	२७४
॥ २३४ ॥ यात्रीमाझाई आबूजीनी जात्रकरेजो । ....	२७६
॥ २३५ ॥ जविजिन पूजोरे, शीतल जिनपतीरे । ....	२७७
॥ २३६ ॥ अढीघ्रीप, बीस विरहमान स्तवन । ....	२७८
॥ २३७ ॥ सकल शाश्वता चैत्य संख्या नमस्कार स्तवन । ....	२८१
॥ २३८ ॥ हां रे ह्यारै धर्म जिनंद सुं लागी पूरण प्रीतजो । ....	२८२
॥ २३९ ॥ समकित द्वार गुंजारै पैसतांजी । ....	२८३
॥ २४० ॥ मनमो अष्टा पद मोह्यो माहरोजी । ....	२८३
॥ २४१ ॥ अजित जिन तारजोरे । तारजोदीन दयाल० ....	२८४

॥ ❀ ॥ सिंहायमाला ॥ ❀ ॥

॥ २४२ ॥ ढंढण रिषजीने वंदना हुंवारी । ....	२८४
॥ २४३ ॥ धन्नारुषि सिंहाय, श्री जिनवाणीरे धन्ना । ....	२८५
॥ २४४ ॥ देव दानव तीर्थकर गणधर० । कर्मसिंहाय ....	२८६
॥ २४५ ॥ शीतासिंहाय, जलजलती मिलती घणीरे । ....	२८७



॥ २४६ ॥ अनाथी रूप सिंहाय । ....	२८८
॥ २४७ ॥ प्रतिक्रमण सिंहाय । ....	२८९
॥ २४८ ॥ सप्तव्यशन सिंहाय । ....	२८९
॥ २५० ॥ उपदेश सिंहाय । श्रीबाहुबलजी सि० ....	२९०
॥ २५१ ॥ श्री बाहु बलजी स्वाध्याय । ....	२९०
॥ २५२ ॥ चेलणाजी महासती स्वाध्याय । ....	२९१
॥ २५३ ॥ बाहुबलजी सिंहाय, राजतणा अतिलोत्रिया । ....	२९२
॥ २५४ ॥ अरणकमुनी सिंहाय । ....	२९२
॥ २५५ ॥ सचित्त अचित्त विचार सिंहाय । ....	२९३
॥ २५६ ॥ कावसग १९ दोष सिंहाय । ....	२९४
॥ २५७ ॥ आलोयण स्वरूप सिंहाय ....	२९५
॥ २५८ ॥ रेजीव मान न कीजियै मान सि० । ....	२९८
॥ २५९ ॥ समकितनू मूल जाणियैजी, माया सि० । ....	२९८
॥ २६० ॥ तुमे लक्षण जो ज्यो लोचनारेः । लोचन सि० । ....	२९८
॥ २६१ ॥ नरत चक्रवर्ति सिंहाय । ....	२९९
॥ २६२ ॥ नतपति जोय जीव आपणी । ....	२९९
॥ २६३ ॥ विजयसेठ विजया सेठाणी चौढालियो । ....	३०३
॥ २६४ ॥ इखुकार राजा नृगुप्रोहत सि० । ....	३०५

### ॥ ❀ ॥ नवपदका ९ चै० । ९ स्त० ९ थुई सरू ॥ ❀ ॥

॥ २६५ ॥ श्री अरिहंत पद गुण वर्णन, चै० । स्त० । थुई । ....	३०८
॥ २६६ ॥ श्री सिद्ध पद गुण वर्णन, चै० । स्त० । थुई । ....	३०९
॥ २६७ ॥ श्री आचार्य पद गुण वर्णन, चै० । स्त० । स्तुति । ....	३१०
॥ २६८ ॥ श्री उपाध्याय पद गुण वर्णन, चै० । स्त० । स्तुति । ....	३११
॥ २६९ ॥ श्री सर्व साधुपद वर्णन, चै० स्त० । स्तुति । ....	३१२
॥ २७० ॥ श्री दर्शनपद वर्णन, चै० । स्त० । स्तुति । ....	३१३
॥ २७१ ॥ ज्ञान पद गुण वर्णन, चै० स्त० । स्तुति । ....	३१३
॥ २७२ ॥ चारित्र्यपद गुण वर्णन । चै० । स्त० । स्तुति ....	३१४

॥ २७३ ॥ तप पद गुणवर्णन चै० । स्त० । स्तुति । ....	३१५
॥ २७४ ॥ वर्तमानचौबीसीका जुदा जुदा ( २४ ) चैत्यवन्दन ।	३१६
॥ २७५ ॥ अष्टपदादि बुटकर चैत्यवन्दन । ....	३१९
॥ २७६ ॥ नवपद चैत्य० । जोधुर श्री अरिहंत० । ....	३२०
॥ २७७ ॥ सुरमणी सम सहुमंत्रमा नवपद स्त० । ....	३२०
॥ २७८ ॥ तीर्थ नायक जिनवरूजी नवपद स्त० । ....	३२१
॥ २७९ ॥ नवपद ध्यान धरोरे प्रविका, स्तवन । ....	३२२
॥ २८० ॥ ( नवपदथुई ) नितप्रतिहुं प्रणमुं । ....	३२२
॥ २८१ ॥ ( ९ दिन ) जैती संयुक्त नवपद उली करण विधि ।	३२२
॥ २८२ ॥ तपस्या ग्रहण करनेको गुरुपास जानैकी विधि । ....	३३९
॥ २८३ ॥ सिद्धचक्र संक्षेप उद्यापन पूजन विधि । ....	३३९

### ॥ ❀ द्वादश मास सकल पर्वाधिकारः ।

॥ २८४ ॥ चैत्र शुक्ल ७ से, १५ तक, ४ पर्वाधिकार । ....	३४०
॥ २८५ ॥ चैत्री पूनम देव वांदन विधि । ....	३४२
॥ २८६ ॥ चैत्री पूनम वृद्ध स्तवन । ....	३४३
॥ २८७ ॥ नंदीश्वर स्त्रीप वृद्ध स्तवन । ....	३४५
॥ २८८ ॥ नंदीश्वर तपस्याकरण विधि । ....	३४६
॥ २८९ ॥ बैशाखमासे अक्षय तृतीया पर्वाधिकारः । ....	३४६
॥ २९० ॥ ज्येष्ठ कृष्ण १३ श्रीशांति पर्वाधिकारः । ....	३४७
॥ २९१ ॥ आषाढ मासे चौमासी १४ पर्वाधिकारः । ....	३४७
॥ २९२ ॥ श्रावण मासे बुटकर तपस्या अधिकारः । ....	३४८
॥ २९३ ॥ चार्द्रव मासे पर्यूषण पर्वाधिकारः । ....	३५२
॥ २९४ ॥ आश्विन मासे उली पर्वाधिकारः । ....	३५५
॥ २९५ ॥ कार्तिक मासे चतुर्पर्वाधिकारः । ....	३५५
॥ २९६ ॥ दीपमाला पर्व गुणनो करण विधि । ....	३५६
॥ २९७ ॥ दीपमाला निर्वाण समय आरती । ....	३५६
॥ २९९ ॥ दीपमाला चैत्य० निर्वाण कट्याणक स्तवन । ....	३५७

॥ ३०० ॥ धन धनरे दीवाली ह्यारै आजनीरे । ....	४७७
॥ ३०१ ॥ आजह्यारै दीवाली अछवाली । ....	५०३
॥ ३०२ ॥ ह्यारै दीवालीरे थई आज जिन मुख जोवाने । ....	५०४
॥ ३०३ ॥ कार्तिक सुद ग्यान पंचमी पर्वाधिकारः । ....	३५८
॥ ३०४ ॥ ग्यान पंचमी देववंदन विधिः । ....	३५८
॥ ३०५ ॥ ग्यानको बमो चैत्य वंदन । ....	३५९
॥ ३०६ ॥ श्रीआचारांग सूत्र सिंहाय १ । ....	३६०
॥ ३०७ ॥ श्रीसुयगंगांग सूत्र सि० २ । ....	३६१
॥ ३०८ ॥ श्रीठांणांग सूत्र सि० ३ । ....	३६२
॥ ३०९ ॥ श्रीसमवायांग सूत्र सि० । ....	३६२
॥ ३१० ॥ श्री जगवती सूत्र सि० ५ । ....	३६३
॥ ३११ ॥ श्रीज्ञाता सूत्र सि० । ....	३६४
॥ ३११ ॥ श्रीनपाशकदशा सूत्र सि० ७ । ....	३६४
॥ ३१३ ॥ श्रीअंतगरु दशांग सि० ८ । ....	३६५
॥ ३१४ ॥ श्रीअणुत्तरो वाई अंग सि० ९ । ....	३६६
॥ ३१५ ॥ श्रीप्रश्नव्याकर्ण सूत्र सि० १० । ....	३६६
॥ ३१६ ॥ श्री विपाक सूत्र सिंहाय ११ । ....	३६७
॥ ३१७ ॥ इग्यारै अंगवर्णन सि० । ....	३६७
॥ ३१८ ॥ मेरैरे मन मानी ग्यानजरी । ग्यानस्त० । ....	३६८
॥ ३१९ ॥ श्रुत अतिह जलो०, जिनागम स्तवन । ....	३६८
॥ ३२० ॥ कार्तिक चतुर्मास पर्वाधिकार । ....	३६९
॥ ३२१ ॥ कातिक १५ पर्वाधिकार । ....	३६९
॥ ३२२ ॥ ( सिद्धगिरीस्त० ) ते दिनक्यारे आवश्ये । ....	३७०
॥ ३२३ ॥ आज आपै चालो सहियो सिद्धाचल गिर जइये । ....	३७०
॥ ३२४ ॥ नमोरे नमो सेतुंज गिरीरे । ....	३७१
॥ ३२५ ॥ अंग नुमाहो मोने अतिघणो । ....	३७२
॥ ३२६ ॥ यात्रा निनाणुं करियै, विमल-गिरी, यात्रा० ....	३७२

॥ ३२७ ॥ सिद्धगिरी जेटो जविजावै । ज्युंसुख० । ....	३७३
॥ ३२८ ॥ शेजुंजरास ( ढाल ५ ) आदिजिनंद दिनंदसम । ....	३७४
॥ ३२९ ॥ जावधरिधन्य दिन आज सफलो गिणयो । ....	३८०
॥ ३३० ॥ मार्गशीर्षमाशे, मोन एकादशी पर्वधिकार । ....	३८०
॥ ३३१ ॥ ( मोन ११ ) दैढसै ( १५० ) कल्याणक गुणनो ....	३८१
॥ ३३२ ॥ पोषमाशे, बंद १० पर्वधिकार । ....	३८६
॥ ३३३ ॥ श्री पार्श्व प्रजु जन्म कल्याणक स्तवन । ....	३८६
॥ ३३४ ॥ बाणी ब्रह्मावादिनी, श्रीगौमी पार्श्व वृद्ध स्त० । ....	३८७
॥ ३३५ ॥ माघ माशे ( मेरु तेरस ) पर्वधिकारः । ....	३९१
॥ ३३६ ॥ फाल्गुनमाशे, पर्वधिकारः । ....	३९२
॥ ३३७ ॥ द्रव्यहोली, जावहोली, अधिकार । ....	३९२

॥ ❀ ॥ जावहोली खेलन विचार स्तवन संग्रह ३८ ॥ ❀ ॥

॥ ३३९ ॥ होरी खेलियै० ( जयबोलोपाशजिने० ) । ....	३९५
॥ ३४१ ॥ मधुवनमें जायमची होरी ( यादवमनमेरो० ) । ....	३९६
॥ ३४४ ॥ इकसुणलै० ( शांवरो सुखदाई० ) नैना हरखाई०	३९६
॥ ३४६ ॥ मनमोहन गज० ( रंगलग्यो गुरुयान ) । ....	३९७
॥ ३४८ ॥ चिदानंद खेले फाग० ( होरीआई मेरोमन० ) । ....	३९७
॥ ३५० ॥ होरीखेलो नेमसैं धायर, ( मेरै घटकी गगरिया रंगसे० ) ।	३९८
॥ ३५२ ॥ मेनें देखी अनोखी होरीरे ( तुमे ध्यावोरे अंतरीक० )	३९८
॥ ३५४ ॥ बाबो रुषज० ( नेम नजाणें मोरी पीर० ) । ....	३९९
॥ ३५५ ॥ जिनराजकों हमारी बंदनारे ( जिन० ) । ....	४००
॥ ३५७ ॥ दर्शन कियो आज० ( सिद्धगिरीजीको दर्शन० ) ।	४००
॥ ३५९ ॥ मेरो चेतन खेलेहोरी० ( अनंतानंत प्रजु० ) ....	४००
॥ ३६१ ॥ मोहे अपने रंगमें० ( मेरै पाश प्रजुजीके रंग० ) । ....	४०१
॥ ३६२ ॥ रंगमच्यो जिनद्वार, चालो खेलियै होरी । ....	४०१
॥ ३६४ ॥ नेमजीसैं कहियो० श्री चिंतामणिपाश प्रजुजी० ) ।	४०२
॥ ३६५ ॥ श्री चिंतामणिपाश, प्रजुजी तोरी अंगीयां वनी ० ) ।	४०२

॥ ३६७ ॥ चिंतामणि चित्तध्यावोरे० ( मतमारो पिचकारी० ) ।	४०३
॥ ३६८ ॥ हारे तुंतो प्रनुजज विलंब न करहो० । ....	४०३
॥ ३७० ॥ नेम मिलैतो वातां कीजिये. ( आतम तत्व विचार० ) ।	४०४
॥ ३७२ ॥ लालतेरे नयनों की० ( दर्शन विनजीव० ) । ....	४०४
॥ ३७४ ॥ मत गोमो ह्यानें गुंहीरे० ( अटक्यो चित्त हमारो० ) ।	४०५
॥ ३७५ ॥ मंगल राजै गिरनार० ( मंगल कलश ) । ....	४०५

### ॥ ❀ ॥ तपस्या विधि स्तवन संग्रह ॥ ❀ ॥

॥ ३७६ ॥ पांच कल्याणक टीप । ....	४०६
॥ ३७७ ॥ पांच कल्याणक तपस्या विधि । ....	४०९
॥ ३७८ ॥ पखवासे तपस्याको स्तवन । ....	४१०
॥ ३७९ ॥ पखवासे तपस्याकी विधि । ....	४११
॥ ३८० ॥ दशपञ्चक्खाण तप स्तवन । ....	४१२
॥ ३८१ ॥ दशपञ्चक्खाण तप विधि । ....	४१४
॥ ३८२ ॥ बीश स्थानक तप स्तवन । ....	४१४
॥ ३८३ ॥ बीशस्थानक तप करण विधि ॥ ....	४१६
॥ ३८४ ॥ बीशस्थानक गुणनो, कान्सग्ग प्रमाण । ....	४१७
॥ ३८५ ॥ रोहिणी तपस्या स्तवन । ....	४१९
॥ ३८६ ॥ रोहिणी तपस्या विधि । ....	४२१
॥ ३८७ ॥ ढम्माशी तप स्तवन । ....	४२२
॥ ३८८ ॥ ढम्माशी तप विधि । ....	४२२
॥ ३८९ ॥ बारैमाशी तप स्तवन । ....	४२३
॥ ३९० ॥ बारैमाशी तप विधि । ....	४२४
॥ ३९१ ॥ २८ लब्धी तप स्तवन । ....	४२४
॥ ३९२ ॥ २८ लब्धी तप विधि । ....	४२६
॥ ३९३ ॥ १४ पूर्व तप स्तवन । ....	४२६
॥ ३९४ ॥ १४ पूर्व तपस्या विधि । ....	४२९
॥ ३९५ ॥ तिलक तपस्या स्तवन । ....	४२९

॥ ३९६ ॥ तिलक तपस्या विधि । ....	४३०
॥ ३९७ ॥ १६ कषाय गंजन स्तवन । ....	४३१
॥ ३९८ ॥ १६ शोलिया तपकी विधि । ....	४३१
॥ ३९९ ॥ पैतालीश आगम तपकी विधि । ....	४३२
॥ ४०० ॥ ४५ आगमका नामको गुणनो । ....	४३२
॥ ४०१ ॥ इग्यारै गणधर तप विधिः । ....	४३४
॥ ४०२ ॥ ११ गणधर नाम, गुणनो । ....	४३४
॥ ४०३ ॥ श्रीनवकार मंत्र तपस्या विधि । ....	४३५
॥ ४०४ ॥ सर्व तपस्या ( प्रथम ) गुरूके पाशग्रहण विधि । ....	४३५
॥ ४०५ ॥ सर्व तपस्या गुरूके पाश पारण विधि । ....	४३७
॥ ४०६ ॥ जन्म, मरण, ऋतुवती, का सूतक विचार । ....	४३८
॥ ४०७ ॥ दिन प्रति, ( १४ नियम ) चितारण विधि । ....	४३९
॥ ४०८ ॥ बारै ब्रत, गुरूके पाश ग्रहण विधि । ....	४४२
॥ ४०९ ॥ ऋषभ प्रमुख जिन पाय युग प्रणमं, साधुवंदना । ....	४४५
॥ ४१० ॥ वर्त्तमान चौबीशी वंदुं, ( ठिन्हूं जिन स्तवन ) । ....	४४९
॥ ४११ ॥ उपधान तप वर्णन विधि संयुत, स्तवन । ....	४५१
॥ ❀ ॥ शरस रागरागणी प्राचीन स्तवन संग्रह ॥ ❀ ॥	
॥ ४१४ ॥ टुक निजर० ( लोक चवदके० ) सविसखी वन० ।	४५२
॥ ४१६ ॥ होजिनतेंमे दरश० ( ह्यारारिषभजिनंदने० ) ....	४५३
॥ ४१८ ॥ मनजीनो हमारो० ( अजित २ जिनध्यान ) । ....	४५४
॥ ४२१ ॥ यह अरजी० ( सुजरो मानी लीजै ) तुंमेंना प्रजु० ।	४५४
॥ ४२३ ॥ हम जाणतहें तुम० ( पंथीना पंथचलेगो ) । ....	४५५
॥ ४२५ ॥ तेवीशमा जिनराज० ( कैसें काज सरै० ) । ....	४५५
॥ ४२७ ॥ राजरी बधाई बाजैते ( मोतिनकीमाला० ) । ....	४५६
॥ ४२९ ॥ रहे तुम आजक्युं० ( हेमाय वांकमी करम० ) । ....	४५६
॥ ४३१ ॥ ह्यानें प्यारो लागे० ( मेरो पिया परसंग० ) । ....	४५७
॥ ४३३ ॥ वरषत वचन ऊरी० ( यावनीमें रंग० ) । ....	४५७



॥ ४३५ ॥ चिहुं और वदरिया० ( मोरवा पपइया बोलै० ) ।	४५८
॥ ४३७ ॥ समऊनरजीवन० ( मतकर मान गुमान ) । ....	४५८
॥ ४३९ ॥ निसदिन जोनं थारी० ( आजतो हमारे जाग० ) ।	४५९
॥ ४४१ ॥ वावरोरे आजमन० ( ऋषज विहारी थारी० ) । ....	४५९
॥ ४४३ ॥ सुणमन होणहार० ( सहियोरी मिलचालो० ) । ....	४६०
॥ ४४६ ॥ मनवाजिनंद० ( चालो देखोरी० ) मेरोमन० । ....	४६०
॥ ४४८ ॥ जिनराज नाम तेरा० ( सुणो सुजाण नेमजी० ) ।	४६१
॥ ४५० ॥ तेरै दरसको चाह० ( थारे सुखकारीहो० ) । ....	४६१
॥ ४५२ ॥ ऐसी विधतेनै पाईरे० ( मोहे अपनोकर० ) । ....	४६२
॥ ४५४ ॥ नेम जिनंद जीसे० ( आजप्रनुतोरेचरण० ) । ....	४६२
॥ ४५७ ॥ रातगईअब० ( तुमविनदीना० ) ज़ोरजयो० । ....	४६३
॥ ४६० ॥ जागरेसब० ( शांवरो सलूनो० ) आज ऋषज० ....	४६३
॥ ४६२ ॥ अंगण कलपफट्यो० ( ऊठोनेमोरा आतम० ) । ....	४६४
॥ ४६४ ॥ जजमन नाजिनंदन० ( आओनेम रहजावो० ) ।	४६५
॥ ४६६ ॥ अधम जग काम० ( आयो सही अब० ) । ....	४६६
॥ ४६८ ॥ घमीर पलर तिन २ निश० ( तुमतो जले विराजो० )	४६६
॥ ४७० ॥ सिखर गिरेंद्र जुहारो० ( शांवरियामें दीठो ) ० । ....	४६७
॥ ४७२ ॥ चरम प्रनु अरज० ( मेंमुखदेख्यो गोमीपा० ) । ....	४६७
॥ ४७५ ॥ कृपा करो० ( मुजरासाहब २ ) घंटवाजैवन० । ....	४६८
॥ ४७७ ॥ निरंजन सांझ्यांरे० ( ऐसे सहर विचै कोन० ) । ....	४६९
॥ ४८० ॥ आयरहोदिल० ( रहो २ रे यादव० ) विराजो बंगला०	४७०
॥ ४८२ ॥ कीनै देखा हमारा० ( अवधू सो जोगी गुरु० ) ....	४७०
॥ ४८२ ॥ अवधू ऐसो ज्ञान० ( बेर २ नहिं आवै० ) । ....	४७१
॥ ४८७ ॥ ए जिनके पाये० ( चित्तमें धरो प्यारे० ) अवधू निर० ।	४७२
॥ ४८९ ॥ चालणा जरूरजाकुं० ( समऊपरी मोहैसम० ) । ....	४७३
॥ ४९१ ॥ राजुल पोकारे नेम० ( जगत में कौन किसी० ) ।	४७३
॥ ४९३ ॥ वाजत रंग बधाई० ( जलांजीमेरो नेम चल्यो० ) ।	४७४

॥ ४९४ ॥ आदीशर जिन राज० ( रशना सफल जई० ) । ...	४७४
॥ ४९७ ॥ गौमीगाइयै मन रंग० ( हारे हुंतो मोह्योरे लाज० ) ।	४७५
॥ ४९८ ॥ प्रनुजी सुं लागो ह्यारो० ( रेजीव जिनध्रम की० ) ।	४७५
॥ ५०१ ॥ सोइर सारिरैन गमाई० ( चंद्रा प्रनुजीसैं ध्यान० ) ।	४७६
॥ ५०३ ॥ ते मुक्ति पुर गए रहेरे० ( खतरा दूरकरना २, एक० ) ।	४७६
॥ ५०५ ॥ पानीमें मीन पियासी० ( धनरे २ दीवाजी ह्यारै० ) ।	४७७
॥ ५०७ ॥ धन २ आजूणोदिन० ( ह्यारे आज आनंद० ) । ....	४७७
॥ ५०८ ॥ सवालाखटकानी जाये एक घनी । ....	४७८
॥ ❀ ॥ जिनदाशादि कृत लावण्यां संग्रह ॥ ❀ ॥	
॥ ५०९ ॥ अगड्डुं २ वाजे चौधमा सवाई मंका साहबका । ....	४७८
॥ ५१० ॥ नेमनाथ मोरी अरजसुणीजै, में हुं दाशी० । ....	४८०
॥ ५११ ॥ जिन दाशजी कृत, ( १० ) घन, लावणी सरू । ....	४८१
॥ ५१३ ॥ चलचेतन अब उठ० ( तुम प्रजो जिनेसरदेव० ) ।	४८२
॥ ५१४ ॥ हारे तुं कुमति कलेशन नारलगी क्युं केमै० । ....	४८४
॥ ५१५ ॥ तुमतजो जगतकाख्याल इसका गाना । ....	४८४
॥ ५१७ ॥ देगया दगा दिलदार० ( मुलकबीच मकशी० ) ।	४८५
॥ ५१९ ॥ सुणजो वातां राव सदा० ( खबर नहीं हे युगमें० ) ।	४८६
॥ ५२१ ॥ अरज हमारी सुनो० मुक्ति जाणेंकी डिगरी० ) । ....	४८८
॥ ५२२ ॥ अनुभव पदपानेंकी मिगरी । ....	४९०
॥ ५२४ ॥ सुकृतकी वाततेरे० ( तुम तजकर राजुल० ) । ....	४९०
॥ ५२५ ॥ आप समझका घर नहीं पाया, दूजैकों० । ....	४९२
॥ ५२६ ॥ नसुं २ में गुरु निग्रंथकुं० ( तछुं २ में उनकुं० ) । ....	४९२
॥ ५२७ ॥ जगतमें नवपद जयकारी, पूजतां० । ....	४९३
॥ ५२८ ॥ श्रीकेशरिया नाथजी ( मोदी ) लावणी । ....	४९४
॥ ५२९ ॥ नेमकी जानवनी जारी, देखनकों आवे० । ....	४९९
॥ ५३१ ॥ आरती करूं श्री पार्श्व० ( आदिजिनेसरकियो पारणो ।	५००
॥ ५३३ ॥ ठाई घटा गगनमें कारी० ( अजितनाथ महाराज० ।	५०१

- ॥ ५३४ ॥ मम्माई सहरमें० । बीठोडा पार्श्वजिन लावणी । .... ५०२
- ॥ ५३५ ॥ पोढोपोढोजी रुषज विहारे, निद्रावश० । .... ५०३
- ॥ ५३६ ॥ योजिनदाशझूठोरे झूठो, याने लेई लाकमी कूटो.... ५०४
- ॥ ❀ ॥ नवरसो चौढालियादि स्तवन संग्रह ॥ ❀ ॥
- ॥ ५३७ ॥ कीजैमंगल चार० ( श्रीनेमनाथजी नवरसो० ) । .... ५०५
- ॥ ५३८ ॥ दान, शील, तप, ज्ञाव, चौढालियो । .... ५०९
- ॥ ५३९ ॥ ( चक्रेश्वरी आरती ) । .... ५१५
- ॥ ५४० ॥ ( वीकानेर ) श्रीकुंथुजिन चैत्य प्रतिष्ठा स्तवन । .... ५१६
- ॥ ५४१ ॥ कलिकत्ता श्री शीतल जिन( २ ) स्तवन । .... ५१६
- ॥ ५४२ ॥ ( वीरप्रचुतेरी० ( सदासहाई शांतिजिनेसर० । .... ५१७
- ॥ ५४४ ॥ प्रचुजीकीमहमा अजबवनी, श्रीशांति स्तवन । .... ५१८
- ॥ ५४५ ॥ सर्वोत्तम कलकत्ता, कार्तिक महोद्भववधाई । .... ५१८
- ॥ ५४७ ॥ हमारै आज आनंद वधाई ( श्रावककी करणी ) । .... ५१९
- ॥ ५४९ ॥ सुण अरदाशा० ( चौपरु खेलन सिझाय ) । .... ५२१
- ॥ ५५१ ॥ शेवुंज खेल खिलारी० ( महाबीर स्वामी पारणो ) । .... ५२२
- ॥ ५५२ ॥ बेकरजोमी वीनबुंजी, आलोयण स्त० । .... ५२४
- ॥ ५५३ ॥ हिवैराणी पदमावती पाप आलोयण सि० .... ५२६
- ॥ ५५४ ॥ पुन्यप्रकाश .... ५२८
- ॥ ५५५ ॥ पहली तो समरुंहो सिधबुधरी दाता सारदा ॥ .... ५३४
- ॥ ५५६ ॥ शालजद्रजी सिलोको । .... ५३५
- ॥ ५५७ ॥ सारदमातनमुं सिरनामी । शांतिवृद्ध स्तवन । .... ५४५
- ॥ ५५८ ॥ जीवचार प्राकृत प्रकरण । .... ५४७
- ॥ ५५९ ॥ नवतत्व प्रकरण मूलसूत्र । .... ५५०
- ॥ ५६० ॥ दंरुकसूत्र २४ दंरुक विवरण । .... ५५२
- ॥ ५६१ ॥ लघु संघयणी मूलसूत्र । .... ५५५
- ॥ ५६२ ॥ श्रीनवकारजपो मनरंगे । .... ५५६
- ॥ ५६३ ॥ श्रीगौतमस्वामी अष्टक, प्रहज्ठी गौतम० । .... ५५७

॥ ५६४ ॥ आणी मनसूधी आसता श्री चिंतामणि स्त० । .... ५५७

॥ ५६६ ॥ आठ कर्मकी मूलोत्तर १५८ प्रकृतिनाम । .... ५५८

॥ ❀ ॥ अथ श्रीजिनपूजा संग्रह ॥ ❀ ॥

॥ ५६७ ॥ सदैव जिन पूजन करनेकी विधि । .... ५६१

॥ ५६८ ॥ श्री देवचंदजीकृत स्नात्रपूजा । .... ५६५

॥ ५६९ ॥ श्री देवचंदजीकृत अष्ट प्रकारी पूजा । .... ५७१

॥ ५७० ॥ शक्रोयथा जिनपते; वस्त्र पूजा । .... ५७५

॥ ५७१ ॥ अह पद्मिजंगा पसरं निमक उत्तारण पूजा । .... ५७५

॥ ५७२ ॥ पुष्प, पुष्पमाला । पहरावण पूजा । .... ५७६

॥ ५७३ ॥ सत्तरजेदी पूजाकी विधि । .... ५७६

॥ ५७४ ॥ सत्तर जेदी पूजा, साधू श्री कीर्त्तिजीकृत । .... ५७७

॥ ५७५ ॥ आरती करण विधि । .... ५८८

॥ ५७६ ॥ जैजै आरती शांतितुमारी तोराचरण० । .... ५८८

॥ ५७७ ॥ श्री देवचंदजी जश विजयजीकृत नवपदवनी पूजा । .... ५८८

॥ ५७८ ॥ श्री नवपद पूजादिकर्म सामग्री चाहिये सो० । .... ५९८

॥ ५७९ ॥ नवपद पूजन ( तथा ) कलसढालन विधि । .... ५९९

॥ ५८० ॥ नवपद बासहोप पूजा । .... ६००

॥ ५८१ ॥ शिव चंदजी पाठककृत रिषमंजल ( २४ ) प्रकारी पूजा । ६०२

॥ ५८२ ॥ नवपद आरती, जय २ जगजन बंजित पूरण० । .... ६१४

॥ ५८३ ॥ रुषमंजल आरती, जय २ जिनराजा । .... ६१५

॥ ५८४ ॥ रुष मंजल सुननेकी ( वा ) पूजनेकी विधि । .... ६१५

॥ ५८५ ॥ बीसथानकपूजा, श्री जिनहर्ष सूरीकृत । .... ६१६

॥ ५८६ ॥ बीसथानक आरती । .... ६३५

॥ ५८७ ॥ नंदीश्वर छीप पूजा, पाठक श्रीशिवचंदजीकृत । .... ६३६

॥ ५८८ ॥ नंदीश्वर लघु अष्ट प्रकारी पूजा । .... ६४३

॥ ५८९ ॥ नंदीश्वर ५२ चैत्य मंजल पूजन विधि । .... ६४४

॥ ५९० ॥ नंदीश्वर छीप तपस्या विधि, आरती । .... ६५१

॥ ५९१ ॥ इकवीस प्रकारी पूजा, पा । शिवचंदजी कृत । ....	६५२
॥ ५९२ ॥ सम्मेल शिखरजी पूजा, उ । श्री बालचंदजी कृत । ....	६६५
॥ ५९३ ॥ वारै व्रतकी पूजा, पं । प्र । कपूरचंदजी कृत । ....	६७४
॥ ५९४ ॥ पंच कल्याणक पूजा, उ । श्री बालचंदजी कृत । ....	६८८
॥ ५९५ ॥ शांतिक पूजा विधि । ....	७०२
॥ ५९६ ॥ दशदिग्पाल नवग्रह पूजा आह्वानमंत्र । ....	७०३
॥ ५९७ ॥ नवपद मंजुल पूजा विधि । ....	७१२
॥ ५९८ ॥ जगवंतके नवअंग पूजन दूहा, शिद्दाकारक । ....	७२४
॥ ५९९ ॥ लघु नवपद पूजा ग्यानविमलजी कृत । ....	७२५
॥ ६०० ॥ नवपद आरती, पंच परमेष्ठी पूजा । ....	७३३
॥ ६०१ ॥ सिद्धगिरी निन्नाणूं प्रकारी पूजा । ....	७४०
॥ ६०२ ॥ श्री आबूजी पूजा, उ । श्री सुमतिमंजुणजी कृत । ....	७५०
॥ ६०३ ॥ श्री आबूजी स्तवन । ....	७५८
॥ ६०४ ॥ श्री सहस्रकूटजी पूजा, उ । श्री सुमति० । ....	७५८
॥ ६०५ ॥ श्री सहस्रकूटजी स्तवन, तथास्वरूप विधिः । ....	७६७
॥ ६०६ ॥ पांचज्ञान पूजा उ । श्री सुमतिमंजुणजी कृत । ....	७६८
॥ ६०७ ॥ पांचज्ञान आरती । ....	७७३
॥ ६०८ ॥ मंगल आरती मंगलदीवो । ....	७७४
॥ ६०८ ॥ जलयात्रा महोत्सव अंगसुधी मंत्रपूजन विधि । ....	८२०

### ॥ ❀ ॥ श्री लक्ष्मी मोहन कृत स्तवन संग्रहः ॥ ❀ ॥

॥ ६०९ ॥ अरिहंतनमो जगवंतनमो । जिनराय० । ....	७७४
॥ ६११ ॥ जबसें चेतन पावत निजगुण० ( मेरासाहबजिनंदा० ) । ....	७७५
॥ ६१२ ॥ जीया इके सुण वात, जिनपदकों तुं ध्यायरे । ....	७७५
॥ ६१४ ॥ सुणो मेरे पतियां० ( नितर नसुरे० ) । ....	७७६
॥ ६१५ ॥ ऐसे पूजा करनेवाले मेनें विरले देखे जाले । ....	७७६
॥ ६१७ ॥ याकहुं अबचेतजीव०, ( आदिजिनवरजी० ) । ....	७७७
॥ ६१८ ॥ श्रवण आजित जिन सहगुण सुणकर० ....	७७७

- ॥ ६२१ ॥ अजित चरण० ( संप्रव जिन थारी० ) जिनतत्त्वसार० ७७८
- ॥ ६२३ ॥ प्रजनकर अवतो० ( तुंअवतार विमलवा० ) .... ७७९
- ॥ ६२५ ॥ प्रनु नमिनाथ० ( प्रनु धर्मनाथमुज्जयारा० ) .... ७७९
- ॥ ६२७ ॥ दिलहरना जावोरे० ( तोरा कथन निजानारे० ) .... ७८०
- ॥ ६२९ ॥ मेरे रंगीला चंगीला० ( प्यारी पारशकी २० ) .... ७८०
- ॥ ६३१ ॥ अरजकरुंठाढो० ( सरणमें आयो० ) .... ७८१
- ॥ ६३३ ॥ मोहै तारो मोहैतारो० ( गुणांकोंधारले दिलदार० ) ७८१
- ॥ ६३५ ॥ नितध्यावो फलपावो० ( मोरी बातमुणोसारे० ) .... ७८२
- ॥ ६३६ ॥ निजगुण आत्म जब पावै, कुमतितिमर० .... ७८२
- ॥ ६३७ ॥ आज मोरी अरज शीतल जिनधारो० .... ७८३
- ॥ ६३८ ॥ मोरी सुमता राणीजी थानें श्री पतिजीमिले । .... ७८३
- ॥ ६३९ ॥ आवो २ सज्जन मिल सारारे, गुणगावो० । .... ७८४
- ॥ ६४० ॥ प्रनुजी मिल्या मोहे आजरे, २४ जिनस्तवन । .... ७८४
- ॥ ६४१ ॥ श्री दादाजी अष्ट प्रकारी पूजा श्री ज्ञानसारजीकृत । ७८४
- ॥ ६४३ ॥ श्रीदादाजी लघु, वृद्ध अष्टप्रकारी पूजा । .... ७८८
- ॥ ६४४ ॥ श्री दादाजीकी आरती, पहली आरती० । .... ७९७
- ॥ ६४५ ॥ विलशै रुद्धि समृद्धि मिली, वृद्ध स्तवन । .... ७९८
- ॥ ६४६ ॥ श्री सुयदेव पसाय० श्री जिनदत्तसूरी उत्पत्ति स्तोत्र ७९९
- ॥ ६४७ ॥ श्री जिन कुशल सूरजी उत्पत्ती स्तोत्र, रिसह जिनेसर० ७९९
- ॥ ६४८ ॥ सञ्जु करुणा निधान० ( समरंमाता० वृद्धदं ) .... ८०१
- ॥ ६५० ॥ सञ्जुजीथे सांजलो० ( सहाई मेरे श्रीजिन कु० ) । ८०३
- ॥ ६५२ ॥ दादा चिरंजीवो० ( गाजे जिन कुशल गमाले० ) । ८०४
- ॥ ६५४ ॥ आयो २ री समरंता० ( जाया चक्तिसुंघूर रहोरे० ) । ८०५
- ॥ ६५६ ॥ कुशल सुरिंद गुरु० ( आज करोरे उच्चाह० ) । .... ८०६
- ॥ ६५८ ॥ में निरख्या गुरु महाराज० ( चरणकी ३ वा० ) । .... ८०७
- ॥ ६६० ॥ कुशल गुरु अवमोह० ( कुशल गुरु कुशल करो० ) । ८०७
- ॥ ६६२ ॥ सञ्जु पूजन जावस्यां० ( आयोसहु श्रीसंघ० ) । .... ८०८



॥ ६६४ ॥ सदा सहाई कुशल० ( जिन कुशल सुरिंद० ) ।	८०९
॥ ६६६ ॥ उन्नपती थां रैपाय० ( सज्जुजी सुणोमोरी अरजी ) ।	८१०
॥ ६६७ ॥ सज्जुके चरण चित लाय २ ।	८१०
॥ ६६९ ॥ गुरु पूजरचोरे सुग्यानी ( केसे २ अवसरमें० ) ।	८११
॥ ६७१ ॥ श्रीजिन कुशल० ( श्री गणधर गुरु० ) ।	८११
॥ ६७३ ॥ कुशल गुरु देवके० ( कुशल गुरु दरशण० ) ।	८१२
॥ ६७५ ॥ पूजो नजोरे जाई० ( हुंतो अरजकरं० ) ।	८१२
॥ ६७६ ॥ सज्जुजी म्हांरा सरणें आयांकीलज्या० ) ।	८१३
॥ ६७७ ॥ आजकी घडी म्हारे हरखवधाई ।	८१३

### ॥ ❀ ॥ देशना बधावा गुंहजी संग्रह ॥ ❀ ॥

॥ ६७८ ॥ वीरजी दिये ते देशनारे ( गुणनिधि श्री जिन० ) ।	८१४
॥ ६८१ ॥ श्री जिनचंद्र सूरी सरू० ( एहवा सज्जु वंदिये ) ।	८१५
॥ ६८२ ॥ सुखकर स्वामी श्री तीर्थकरूरे ।	८१६
॥ ६८३ ॥ मोतियने मेह वरसियो सखि ।	८१७
॥ ६८४ ॥ जिन सासन जयकारी ।	८१८
॥ ६८५ ॥ पहलुंए मंगल जिन तणुं ।	८१८
॥ ६८६ ॥ पूर्ण कलश स्थापना मंगल ।	८१९
॥ ६८७ ॥ चैत्य प्रतिष्ठा मंगल ।	८२०
॥ ६८८ ॥ दादाजीका काव्य सवैया ।	८२३
॥ ६८९ ॥ खरतर गढ शुद्ध समाचारी ।	८२४
॥ ६९० ॥ स्वकुल प्रकाशन संहित गुरवावली ।	८२७
॥ ६९१ ॥ अन्त मंगला चरण आहक नामावली ।	८३२

॥ ❀ ॥ इति सूचीपत्र समाप्तम् ॥ ❀ ॥

# ॥ श्री जैन लक्ष्मी मोहनशाला ॥

## ॥ रत्नसागर प्रथमभाग विज्ञापन ॥

॥ शुभचिंतक, धर्मरागी, गुणग्राही ( सर्व जैनी ) सज्जन पुरुषोंके पढ़ने पढ़ानेके निमित्त बहुत पुस्तकोंसे बहुत रत्न वस्तुका संग्रह करके ( प्रथम ) कलकत्ता मध्ये हमारी जैन विद्याशाला खाते पुस्तक १००० ठपाके प्रसिद्ध किया था तिके संपूर्ण पुस्तक खपजाणेंसे, और जी संघकी मांगणी ज्यादा आनेसे, दूसरी आवृत्ती ठपानेका विचार किया ( परन्तु ) बहुतसे संघको मुम्बईका ठापा प्रियसमजके ( तथा ) जिन मंदिरोंकी अंगीरचना, संघकी प्रकृति । संघकी उन्नति । विद्याकी उन्नति, ( मुम्बईमें ) ज्यादा होती देखके ॥ सं। १९४४ मि। माहसुद ५ दिन, श्री आदीसरजी, श्री महावीरजी दोनों मंदिरोंके बीचमें ( जैन पाठशाला ) जाहर खबर ठापा बेंदके स्थापन करी । जिसमें सवेर सांझ, दशवजेतक जो धर्म कृत्य शीखणेंको आवै उनको विगार मासिक फी लिये पढ़ाना सुरू किया । पाठशालामें सो सवासे ठोठा मोठा पढ़नेवाला लाज लेता था । इससेती पढ़ानेवाला पंक्ति नोकर, मकान चामा, वगैरैका सब खरच खाते ( मासिक ) चालीस पैंतालीस रुपिया आसरे लगताथा, पहले कलकत्तेसे आया जब मुम्बईका संघकी बहुत आशा दिलमेंथी ( क्युंकि ) कांग्रेस विद्याशाला आदिके मैवरोका, बरुा बरुा लंबा चोला चाषण देखके, जीवमें बहुत आनंद हुवाथा ( कि ) जहां जो ग्यान वृद्धीके निमित्त उद्यम करेंगे तो अवश्य पंक्तिादिकके खरचका वंदोवस्त संघ करदेगा तो अपनेकोजी नवा नवा ग्रंथ देखनेमें आवेगा ( परन्तु ) सर्व आसा निरुफल होगई । श्री आदीसरजी प्रमुखकी सजाका मारवानी कई लोकोंने धीरज बंधाई कि हमे पाठशालाको वंदोवस्तकरादेसां । पर अंतमें कोईसे कुछ वंदोवस्त सहाय हुवानहिं । तोपिणमें तीन वर्ष जैनपाठशाला उन्नतीके बराबर चलातारहा इससे धरु ग्यानखातेका रुपिया ग्यानजंमर खाते लगाणाथा ( सो ) इसीतरै ग्यानवृद्धीमें खरचहोगया ( सो तो ) मोठामारवानी लोकोंने आहारपाणी

की बहुत मदतदीनी, इससेती तीनचार आदम्यांको निजाव होगयो ॥ नहिं तो तीनवरषजी पाठशाला चलसक्ती नहीं । इस तीनवरषमें रत्नसागरका दोभाग ठपाके प्रसिद्ध किया ॥ इसमेंजी ज्यादा ग्रंथवधाणेंसे खरच बहुत होगया पीछे श्री चिंतामणजीका श्रीसंघकी आग्यासें श्रीचिंतामणजीके मंदिरमें ( आदे शीहोकर ) आयरहा ( इससें ) अजीतक जैनपाठशाला ग्यानवृद्धीकाकार्य अपनी शक्ति मुजब चला रहाहुं ॥ इससमयमें बहुतसे जैनी नामधारक साधु श्रावक अपना स्वार्थ साधक एकांतपट्टी हो रहेहैं ( तथापि ) श्रीसंघमोटोहै सर्व धर्मखाताके निर्वाहकरनेवाला पण अनंतकल्याणी श्रीसंघहै ( इसीसें ) बीकानेर रांघनीका माणकचौकमें ( श्रीकुंथुनाथस्वामीका नवासंदर ) महो पाध्याय श्री गुरुमहाराज ( श्रीलक्ष्मीप्रधानजीकी ) अंगत प्रेरणा उपदेशसें तै यार हुवाहै । और फेर गुरुमहाराजकी आग्यासें, ग्यानजंमर खाते नवामकान ( जैनलक्ष्मी मोहनशाला ) नामक बनवायके, अपना सातपीढीका सर्व हजारों रुपियाका लिखा हुवा पुस्तक, उसमें रखके, ग्यान जंमर स्थापन कियाहै ( और ) जोजो पुस्तकां नहींहैं उनोंकी क्रमसे वृद्धी संचयकरते जातेहैं हमारे दिलमें पण ऐसी धारणाहै ( कि ) कोई पूर्वकृत कषायकर्मादिककेयोग तपतपस्या साधुपणेंका सुध्वतादिक कुञ्जी अजीतक यह आत्मासें वण नहिं आताहै ( तथापि ) कोई सुजकर्मोदयके योग । जैन दर्शण, ज्ञान ज्ञातिका अंशमात्र पायाहै, इससेती जैनके सेवकहैं । ग्यानकैही प्रसाद सर्व कामकी सिद्धी होतीहै ( इससें ) जहांतक बनें तहांतक ग्यानकी वृद्धी ग्यानकी जत्ती करते रहणा चाहिये । इसी विचारसें ग्यानखाते जो पैदास होतीहै ( सो ) ग्यानजंमरके मकानकी सार संजाल मरमतखाते, ( तथा ) पुस्तकनवा ठपाणें लिखाणें खाते; पढ़ने पढ़ानेमें पंक्तिादिकके खरच खाते; ग्यानोपगरण खाते खरच करतेहैं ( इससेती ) जो धर्मरागी ग्यानवृद्धीके रसिया जैन सज्जन लोक रत्नसागर दो भाग आदि जैन पुस्तक लेकर पढेगा पढावेगा ( और ) बीकानेर, कलकत्ता, मुंबई, तीनों ठिकाणें हमारी जैन पाठशाला स्थापनहै । उनको जो तन मन धनसें मदत देनेवाला मिलेगा ( तो ) बहुत उन्नतीके साथ

सर्वोपयोगी मासिक पुस्तकादिक प्रगट करके ग्यानवृद्धी करता रहूंगा पहलेके रत्नसागरसें अबके जाणवा जोग बहुत ग्रंथ वधाएँमें आया है ( तथापि ) पुस्तकका निबारावल सामान्यगत्तादारका रुपिया मात्र ५ ) आगेके मुजब लेनेमें आवैगा ॥ ❀ ॥

( इस पुस्तकमें ) खरतरा तपादि संपूर्ण जैन धर्मियोंके बारे माशमें करने लायक प्रजावीक प्रमाणीक पूर्वाचार्योंकेरचित संपूर्ण धर्मकृत्य संग्रह करनेमें आयाहै। एक पुस्तकसें पचीस तीसपुस्तकका काम चल सक्ताहै। और बारमाशी धर्मकृत्य संपूर्ण करसकैहैं ( इसमें )

॥ १ ॥ नवकारादि प्रतिक्रमण मूलपाठ, साधु श्रावक अतीचार, पक्षीसूत्र, अजी संतादि सात स्मरण, बनीशांत, पांचे तिथकी थुई, स्तवन, पांचुं पन्क्रिमणा, पोसाकी, जूदी २ विधि पृष्ठ १० ( सें ) १३२ तक ॥

॥ २ ॥ तपगह्वका पांचप्रतिक्रमण, देव वंदन, ज़रहेसर, शांतिकरा, सकलार्जुन, ( पांचे तिथकी ) थुई, स्तवन, सिझायां, चौमाशी वना देववंदनादि, पांच प्रतिक्रमण विधि ॥ दशत्रिक सहत मंदर जाणेंकी पूजनकी विधि १३३ ( सें ) पृष्ठ २०० तक ॥ ❀ ॥

॥ ३ ॥ वनो नवकार, रुषिमंजल, जत्तामर, कल्याणमंदर जिन सहस्र शेज्जंजरास गौतमरास आदि संस्कृत प्राकृतमई अनेक प्रजावीक आचार्यकृत स्तोत्र संग्रह पृष्ठ २०१ ( सें ) ॥ २४२ तक ॥ ❀ ॥

॥ ४ ॥ पनरै तिथकी नवी २ स्तुति संग्रह .... २४२ ( सें ) २४७

॥ ५ ॥ मोटा ठोटा स्तवन संग्रह.... २४८ ( सें ) २८४

॥ ६ ॥ सिझाय माला चौढालियासंग्रह .... २८४ ( सें ) ३०८

॥ ७ ॥ नवपदचै०, स्त०, थुई, जैती ( आदि ) जंजी० ३०८ ( सें ) ३४०

॥ ८ ॥ बारैमासका सर्वपर्वाधिकार गुणना विधिसंग्रह ३४० ( सें ) ४०६

॥ ९ ॥ पंचकल्याणक ( आदि ) अनेकतपस्याधिकार ४०६ ( सें ) ४५२

॥ १० ॥ कल्याण, काफी (आदि) सर्वरागरागिणीके स्तवन ४५२ ( सें ) ४७८

॥ ११ ॥ जिनदाशादि कृत मनोरंजक लावण्यासंग्रह ४७८ ( सें ) ५०५

॥ १२ ॥ नवरसा, चौढालिया, स्लोका, बारमाशासंग्रह ५०५ ( सें ) ५४६

॥ १३ ॥ जीवचार नवतत्त्व दंभकादिप्रकरण ..... ५४७(सें)५६०

॥ १४ ॥ स्नात्र सत्तरजेदी नवपदादिसर्वपूजा संग्रह.... ५६१(सें)७७४

॥ १५ ॥ श्रीजक्ष्मीमोहन कृतस्तवनसंग्रह .... ७७४(सें)७८४

॥ १६ ॥ श्रीदादाजीकी अष्टप्रकारी तीन पूजा स्तवन ७८४(सें)८१३

॥ १७ ॥ देशना वधावा समाचारी संक्षिप्तगुर्वावली ८१४(सें)८३२

( इत्यादिक ) बहुत रत्नवस्तूका संग्रह किया है ( प्रगटपणों ) यह पुस्तक धर्म रत्नोंका समुद्र तुल्य है ( इसीसे ) इसका गुण निष्पन्न ॥ ❀ ॥ रत्नसागर नाम रक्खा है ॥ ❀ ॥ ( और ) जो इस पुस्तकमें रत्नवस्तू है ( सो ) आत्मा के मोहन गुण । ज्ञान, दर्शन, चारित्रादिकों, प्रगट करनेकी एक श्रेणीवत है ( जिससे ) इस पुस्तकका ( दूसरा ) मोहन गुणमाला नाम रक्खा है ॥ ( और ) सर्व स्थानक, जैन विद्या शाला, पाठशालायोंमें, जैन पाठक गण कों, ( प्रथम ) अपना नित्य नेम, अवश्य शीखना, शिखाना चाहिये ( इसी से ) सर्व जैन पाठकगणके उपगारार्थ, ज्ञाषा, विधि संयुक्त । वारमाशी संपूर्ण, अवश्य धर्मकृत्यका संग्रह किया है ( इससे ) प्रथम भाग नाम रक्खा है ॥ ❀ ॥ ( और ) इसका दूसरा भाग जीठपा जया तैयार है ( जिसमें ) आचार दिनकरादि, आचार ग्रंथोंसे । जैन गृहस्थोंका, जन्मसे लेके, मरण पर्यंत, १६ संस्कार, उपदेश, आचार, विधि स्वरूप ज्ञापक, प्रथम प्रकाश ( तथा ) संक्षिप्त जैन इतिहास, । वावन ५२ बोल गर्जित २४ महाराजका दृष्टांतरूप इतिहास । श्रीमहावीर स्वामीसे आजतक गद्य मतादिकका संक्षिप्त स्वरूप ( इस उपरांत ) सर्वोपयोगी बहुत जैन आचार रत्नोंका संग्रह किया हुआ है ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( इससे ) बहुत विनय नम्रतासे ( सर्व ) जैनसज्जनोंसे प्रार्थना करनेमें आवै है ( कि ) इस पुस्तकको बहुत विवेकसे यत्न करके रखना जिसमें ग्यानकी आशातना न होय ( क्युंकि ) क्या लिखाहुवा, क्या उपा हुवा, आत्म धर्मोपगारी दोनों पुस्तक समान है । अग्यानी जीव, अनेक तरसे जिनप्रतिमा ( तथा ) जिन धर्मपुस्तकका, अनादर, आशातना करै ( तथापि ) विवेकी ग्यानी पुरुषोंको । जिन प्रतिमा ( तथा ) धर्म पुस्तककी कभी आशात

ना न करनी चाहिये ( जिके ) जिनप्रतिमाकों पाखाणादिककी जाणके ( और ) पुस्तककों लिखा हुवा, उपा हुवा, जाणके । अनादर करेगा । निंदन करेगा ( सो ) अपना एकांत हठवादसे । सदाकाल, एकेंद्रियादिक अज्ञान दिशामें परिभ्रमण करता रहेगा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( और ) में मेरी जाणमें दो माहिना ज्यादा लगणेंका ( तथा ) खरच ज्यादा लगनेका विचार ठोके ( और ) बहुत परिश्रमसे सुध करके उपाया है ( तथापि ) बद्धस्थ, अल्प बुद्धियाहुं ( इससे ) निजर, दिलका, ज़रोसा न देसक्ताहुं ( इसको ) पढते, पढाते, जो कोई स्थानक, प्रमादादिकसें ( वा ) ठापके दूषणसें । ईकार, ऊकार अक्षरादिककी झूल माछुम होय ( तो ) अपना विद्वज्जन गुरुसें जाणके । शुध करके पढना ( और ) कोई मेरा कसूर होय सो माफ करना । श्रेणकराजाकेतुल्य गुणग्राही पणा धारन करके । इस पुस्तकका गुणग्रहण करना ( इस पुस्तकसें ) बहुत काल तक, बहुतजीवोंके सधर्म प्राप्ती होगा ( इससें ) यह पुस्तक धर्मरूपी कल्पवृक्ष का बीज है ॥ ( इसको ) सेवन करनेवालोंके मनोवांछित फल प्राप्ती होगा ॥ ( और ) इस पुस्तकको, मुख्य अपने ( तथा ) परके, विद्यावृद्धी उपगारके अर्थ ( जो ) गुणग्राही जैनसज्जन एकेक पुस्तक लेवेगा ( तथा ) कोई ज्ञान खातै । पांच पचीस पुस्तक इकठी लेके । मंदर, उपाशरामें ( तथा ) ज्ञानज्ज मारोंमें ( तथा ) साधु, श्रावक, गरीब विद्यार्थियोंको । धर्मोपगारार्थ देवेगा ( और ) तन, मन, धनसें, ज्ञानवृद्धीके अर्थ पाठशालाको मदत देवेगा । जिन उत्तम पुरुषोंका बहुत धर्म उपगार मानके ( पाठशालाकी ) पुस्तकमें नाम उपाके । प्रशिक्ष करनेमें आवेगा ॥ ❀ ॥ ( और ) दिन प्रमाण साठ घन्टी होता है ( जिसमें ) दो चार घन्टी तो इस पुस्तकको जरूर बाचनो पढनो रखना ॥ ❀ ॥ ( और ) सिधांत विरुद्ध, कषाय, प्रमादादिक के वस । कोई उजो, अधको, हरफ, कानो, मात, लिखनेमें आयो होय ( तो ) सर्व संघके सन्मुख में, मिठा मि छुक्कड़ देता हुं ॥ इत्यजंविस्तरेण ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जैन सेवक उपाध्याय श्रीमोहनलाल मुक्तिकमल गणिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जैन लक्ष्मी मोहनशाला, रत्नसागर तंत्री ॥ ❀ ॥



## ॥ ❀ ॥ मोहन हितशिक्षा ॥ ❀ ॥

अहो जैन जाईयो सुदेव, सुगुरु, सुधर्मकों, तत्वपदार्थ जानके, अंतरंग प्रीति रखो ॥ ( तथा ) कर्मोंकी विचित्र गति जानके ( कोई ) संसारी जीवकी निंदा मतकरो । निंदा दुःख दालिद्रकी देनेवाली है ( और ) बुझी है सो कर्मानु सारणी है । अपना कर्मोंके प्रसाद, सुख दुःख सर्वजीव जोगवते हे ॥ ❀ ॥ ( यदुक्तं ) ॥ ❀ ॥ कृतकर्म ह्यो नास्ती । कल्प कोटि शतैरपि । अवस्य मेव ज्ञोक्तव्यं । कृत कर्मः सुजासुजं ॥ १ ॥ ❀ ॥ ( पुनः ) ॥ ❀ ॥ जं जं समयं जीवो । आवस्सइ जेण जेण जावेण । सो तंमि तंमि समए । सुहा सुहं बंधए कम्मं ॥ २ ॥ ❀ ॥ ( पुनः ) ॥ ❀ ॥ नीचै गोत्रावतार श्रम जिनपते मल्लिनाथा बलात्वं । अंधत्वं ब्रह्मदत्ते भरत नृप जयः सर्व नाशश्च कृष्णे । निर्वाणं नारदेपि प्रथम सुख रति स्या च्छिलाती सुतेपि । इत्थं कर्मानु बीर्योः स्फुट मिह जयतां स्पर्धया चिंत्यरूपे ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ( पुनः ) ॥ ❀ ॥ ब्रह्मा येन कुलाल व नियमितो ब्रह्मांस्त्रांनोदरे । विष्णुर्येन दशावतार गहने द्विष्टः महासंकटे । रुद्रो येन कपालपाणि पुट के जिह्वाटनं कारितः । सूर्यो भ्राम्यति नित्य मेव गगने तस्मै नमः कर्मणैः ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ( पुनः ) ॥ ❀ ॥ प्रचलति यदि मेरुः शीततां याति बन्धि । उदयति यदि ज्ञानुः पश्चिमायां दिशायां । विकशति यदि पद्मं पर्वताग्रे शिलायां । तदपि न चलनीया जाविनी कर्मरेखा ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ( पुनः ) एकके पाय अनेक परे पुनि एक अनेकके पाय परै है । एक अनेक किंचितहरे अरु एकन आपनो पेटजरेहै । एक खुस्याल सूअे सुख पालमें एककुं कंथन खाट छुरै है । देखन यार कहै धर्मसी जगि पुन्यरु पाप प्रतिह फिरे है ॥ ६ ॥ ( पुनः ) ॥ ❀ ॥ लंठन चंदमें तापदिनंदमें चंदन मांहि फणिंदको वासो । पैन्ति निर्धन सधन है सठ नारि महाहठको घरवासो । हीम हिमाचल खारो है वाराधि केतकि कंटक कोटिको पासो । देखो धरम्मसी है सबको दुःख कोऊ करो मति काऊको हासो ॥ ७ ॥ ❀ ॥ ( इसवास्ते ) अहो देवाणु प्रियो । कर्मोंकी < मूल प्रकृति ( तथा ) १५८ उत्तर प्रकृतिका स्वरूप जाणके सम जावसें आत्म लघुता करते रहो ॥ ❀ ॥

॥श्रीः॥



( वा )

॥ मोहनगुणमाला ॥



॥ प्रथम प्राग ॥



॥ मंगलाचरण ॥

॥ उँकारं बिंदुसंयुक्तं । नित्यं ध्यायन्ति योगिनः ।

कामदं मोक्षदं चैव । उँकाराय नमोनमः ॥ १ ॥

॥ उँकार उदार अगम्म अपार संसारमें सार पदारथ नामी,  
सिद्धि समृद्धि सरूप अनूपज्ञयो सबही सिरभूप सुधामी,  
मंत्रमें यंत्रमें ग्रंथके पंथमें जाकुं कियो धुर अंतरजामी, पंचही-  
इष्ट वसे परमिष्ट सदा ध्रमसी करे ताहि सिलामी ॥ १ ॥

नमो निसदीश नमायकेशीश जपो जगदीश सही सुखदाता,  
जाकी जगत्तमें कीरति जागत प्रागतिहे सब ईति असाता  
इंद नरिंद दिणिंद फुणिंद नमाएहें वृंद आनंद विधाता, धोरी  
धरम्मको धीर धराधर ध्यान धरे ध्रमसी गुणध्याता ॥ २ ॥

॥ अथ गुरुमहमा नमस्कार ॥

॥ सर्वारिष्टप्रणाशाय । सर्वान्नीष्टार्थ दायिने ।

सर्वलब्धि निधानाय । गौतमस्वामिने नमः ॥ १ ॥

॥ महिमा जिणकी महिमें महिमें जिन दीनो महा इक  
ग्यान नगीनो, दूरजग्यो भ्रमसोतम देषत पूरजग्यो परकास  
नवीनो, देतहि देतहि दूनोवधै अरु खायोहि खूटत नाहिं खजीनो,  
ऐसो पसाय कियो गुरुराय तिणें ध्रमसी पदपंकज लीनो ॥ १ ॥

॥ अज्ञानतिमिरान्धानां । ज्ञानाञ्जनशलाकया ॥

नेत्रमुन्मीलितं येन ॥ तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ १ ॥

॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥ श्री सारदायै नमः ॥

॥ सरस्वती महाज्ञागे । बरदे कामरूपिणी । विश्वरूपी विशा-  
लाक्षी । दे विद्या परमेश्वरी ॥ १ ॥ सरस्वती मया दृष्टा । बीणा-  
पुस्तक धारिणी । हंसबाहन संयुक्ता । विद्या दान बरप्रदा ॥ २ ॥

॥ दीर्घाक्षरं सरस्वती नमस्कार ॥

सिद्धारूपी साची देवा सारे जीकी नीकी सेवा रागे आए  
लागे पाए जागे मोटी माई है, चंगी रंगी बीणा वावे रागे सारे  
रागे गावे हावे नावै सोनापावे ग्याता जाकुं गाई है, हंसी  
कैसी चाली चाले पूजी बंदी पीडा टाले लीला सेती लालेपाले  
सुद्धी बुद्धी दाई है, सोहेवानी नीकी बानी जाकुंग्यानी प्राणी  
जानी ऐसी माता शाता दानी धर्मसीहे ध्याई है ॥ १ ॥

( स्वरवर्णः )

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ  
ए ऐ ओ औ अं अः

( व्यञ्जनवर्णः )

क ख ग घ ङ । च छ ज झ ञ । ट ठ ड  
ड रु ढ ण । त थ द ध न । प फ ब भ

म । य र ल व । श ष स ह । कः झः  
क का कि की कु कू के कै को कौ कंकः

कृ गृ तृ दृ णृ मृ वृ शृ सू हृ

क्य ख्य ग्य घ्य च्य व्य ज्य ट्य ठ्य एय त्य द्य  
ध्य न्य प्य भ्य म्य ण्य ल्य ण्य स्य ह्य क्ष्य

क्र ग्र व्र ज्ञ त्र द्र प्र भ्र म्र ब्र श्र ख्र झ्र

कृ ग्व एव त्व द्व ध्व न्व म्व स्त्व श्व ष्व स्क्व क्व

अ घ्न त्न म्न स्त्र ण्न स्तन् कम गम धम चम

एम अ न्म इम ण्म स्म ह्य क्ष्म ॥ कर् खर् गर् घर्

अङ्क डख श्र उछ एट एठ एरु एढ एण न्त न्थ न्द

न्ध न्न म्म ष्क स्क स्ख श्र उछ ष्ट ष्ठ स्त स्थ स्फ

ष्प स्फ क्क कत्व ग्ग च्छ ष्च ज्ञ ज्ञा दृ त्त

त्थ द्द डु प्प ल्क ल्प ल्म ल्ल द्द्र द्द ग्द न्ध ब्द

ब्ध ल्म क्त स्र त्क त्प त्स ॥

न्त्य न्द्य न्ध्य न्य द्य न्ह्य म्भ्य ल्क्य ष्य व्य

द्व्य स्त्य स्त्य न्त्य क्त्य ज्य स्त्व ।

त्क च्छ न्त्र न्द्र ष्ट्र ख्र त्र ज्व ष्ट्र त्व स्त्व

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ( १० १०० १००० १०००० )

॥ स्वस्तिश्री कृष्णब्रह्मस्था, एविंद्राव्हा स्युश्च स्वस्करा,

पृथ्वीभृद्वल्गु श्रेष्ठात्म, ब्रम्पास्ते हृद्यज्ञातिदा ॥ १ ॥

( शिक्षा वाक्य )

॥ गुरु शुश्रूषयाविद्या । पुष्कलेन धनेन वा । अथवा विद्यया विद्या । चतुर्थं  
नैव कारणं ॥ १ ॥ विद्वत्त्वं च नृपत्वं च । नैव तुल्य कदाचन । स्वदेशे  
पूज्यते राजा । विद्वान् सर्वत्र पूज्यते ॥ २ ॥ पाण्डिते च गुणाः सर्वे । मूर्खे

दोषाहि केवलं । तस्मान्मूर्खं सहस्रेषु । प्राज्ञ एको विशिष्यते ॥ ३ ॥  
 नक्षत्रचूषणं चन्द्रो । नारीणां चूषणं पतिः । पृथिव्या चूषणं राजा । विद्या  
 सर्वस्यचूषणं ॥ ४ ॥ माताशत्रुः पिता वैरी । बालो येन न पाठितः । न  
 शोभते सन्ना मध्ये । हंस मध्ये बको यथा ॥ ५ ॥ लालयेत्पंच वर्षाणि ।  
 दशवर्षाणि ताडयेत् । प्राप्ते तु षोडशे वर्षे । पुत्रं मित्रं वदाचरेत् ॥ ६ ॥  
 वरमेको गुणी पुत्रो । न च मूर्खं शतान्यपि । एकचन्द्र स्तमो हन्ति । न च  
 तारागणादपि ॥ ७ ॥ अविद्यं जीवनं शून्यं । दिशः शून्यास्त्व बांधवा ।  
 पुत्रहीनं गृहं शून्यं । सर्वं शून्या दरिद्रता ॥ ८ ॥ न च विद्या समो बंधु  
 न च व्याधि समो रिपुः । न चापत्य समः स्नेहो । न च दैवात्परं बलं ॥ ९ ॥  
 किं तथा क्रियते धेन्वा । या न सूते न दुग्धदा । कोऽर्थः पुत्रेण जातेन ।  
 यो न विद्वान् न प्रक्तिमान् ॥ १० ॥ उपदेशो हि मूर्खाणां । प्रकोपाय न  
 शान्तये । पयः पानं जुजंगानां केवलं विषवर्धनं ॥ ११ ॥ मातृवत्परदारं-  
 श्च । परद्रव्याणि लोष्ट्रवत् । आत्मवत् सर्वचूतानि । विहृते धर्मबुद्ध्यः ॥ १२ ॥

### ॥ अथ वाक्यमंजरी ॥

॥ श्रीसद्गुरुभ्यो नमः ॥ श्रीवाग्वादिभ्यो नमः ॥ प्रातरुत्थाय श्रीपरमेश्वरं  
 चिन्तयेत् । तदनन्तरं, हस्तौ पादौ सम्यक् प्रक्षाल्य स्नात्वा आगन्तव्यं ।  
 परमेश्वरस्य पूजा विधेया ( देवः पूज्यः ) ॥ धर्मशास्त्र मध्ये किं किमुक्तं  
 नास्ति, धर्मशास्त्रे सर्वं वर्तते । धर्मशास्त्र मत्यंतं समीचीनं ॥ सरस्वती स्तोत्रं  
 सर्वीर्यं भवति । सद्यः प्रीतिजनकं भवति । इदं सरस्वती स्तोत्रं सद्यः  
 प्रत्यय कारकं भवति ॥ कविता समीचीना । कवित्वं कथमायाति । गुरु-  
 समीपे गत्वा सम्यक् पठनीयं । ततो ज्ञानं भवति । तदा कवित्वमायाति ।  
 तस्मादादौर्बुद्धौ ज्ञानं सम्पादनीयं । सदा प्रियं ब्रूयात् । प्रियवादी सर्वस्य  
 प्रियो भवति । विद्याहि परमं धनं । यस्य विद्याधनमस्ति । स सदा सुखेन  
 कालं नयति । श्रमेण यत्नेन च विद्या भवति । तस्मात् विद्यालाभाय श्रमो  
 यत्नश्च विधेयः । विद्यां विना वृथा जीवनं ॥ अलस्यं सर्वेषां दोषाणामा-  
 करः । अलसा विद्यामुपार्जयितुं न शक्नुवन्ति । धनं न लभन्ते । अलसानां  
 नैव सुखं । तस्मादालस्यं परित्यजेत् ॥ योऽस्मानध्यापयति ।

सोऽस्माकं परम गुरुः । सहि पितृवत् पूजनीयः । विद्यादाता ज-  
न्मदाता च द्रावेव समानौ । समं माननीयो च ॥ क्रोधं यत्नेन वर्जयेत् ।  
क्रोधवशेन परुषं प्रापते । ततः प्रहरेत् । क्रोधो हि महान् शत्रुः ॥ सर्वं पर-  
वशं दुःखम् । सर्वमात्मवशं सुखम् । एतदेव सुखदुःखयोर्लक्षणम् ॥ परहिं-  
सायां परापकारे च बुद्धिर्नकार्य्या । तयोः समं पापं नास्ति ॥ यथाशक्ति-  
परेषा मुपकारं कुर्यात् । परोपकारो हि परमो धर्मः ॥ अहंकारं परिहरेत् ।  
नाहंकारात् परोरिपुः ॥ संतुष्टस्य सदा सुखम् । आत्मनः सुखमन्विषेत् ।  
सन्तोषमूलं हि सुखम् ॥

## ॥ अथ सन्धिसुत्र ॥

सिद्धो वर्णः । समान्नायः । तत्र चतुर्दशादौ स्वराः दशसमाना । तेषां  
ऋऔ द्रावन्यो । ऽन्यस्य सवर्णौ । पुर्वौ द्रस्वः । परो दीर्घः । स्वरो वर्णः  
वज्जो नामी । एकारादीनि संध्यहाराणि । कादीनि व्यंजनानि । ते वर्गाः ।  
पंच पंच । वर्गाणां प्रथम द्वितीयौ । शषसाश्च घोषाः । घोषवन्तोऽन्ये । अ-  
नुनासिकाः ङणनमाः । अन्तस्थाः यरलवाः । उष्माणः शषसहाः । अ-  
इति विसर्जनीयः । कः इति जिह्वा मूलीयः । पः इत्युपध्मानीयः । अं इ-  
त्यनुस्वारः । पूर्वपरयो रथोपलब्धौ पदम् । अस्वरं व्यंजनं । परं वर्णनयेत् ।  
अनतिक्रमयन् विश्लेषयेत् । लोकोपचारात् ग्रहणं सिद्धिः ॥ इति संधौ-  
सूत्रतः प्रथमश्चरणः समाप्तः ॥

## ॥ हितोपदेसः ॥

अर्क्षन्तो नृगवंत इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता । आ-  
चार्या जिनसासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः । श्रीसि-  
द्धांत सुपाठका मुनिवरा रत्नत्रया राधकाः । पंचैते परमेष्ठिनः  
प्रति दिनं कुर्वंतु वो मंगलं ॥ १ ॥

## ॥ अर्थः ॥

( एते पंचपरमेष्ठिनः प्रतिदिनं वः शुष्माकं मंगलं कुर्वन्तु ) । यह  
पंचपरमेष्टि निरन्तर श्रीसंघप्रते मंगलकरो । ( कैसे है पंचपरमेष्टि ) ( अ-



ज्ञानतो जगवंत इन्द्रमहिता ) । प्रथम परमेष्ठि । श्रीअरिहंत देवः । अष्ट-  
 कर्म शत्रुकुंहणं ( सो ) अरिहंत कहियै । अरिहंत कैसे है । ( जगवंत-  
 ज्ञानवंत है । केवल ज्ञान केवल दर्शन संयुक्त है । ( तथा ) जगशब्द-  
 के १४ अर्थ है ॥ जगोर्स्क ( सूर्य ) १ । ज्ञान २ । महात्म ३ । यश  
 ४ । वैराग्य ५ । मुक्ति ६ । रूप ७ । वीर्य ८ । प्रयत्न ९ । इच्छा १० ।  
 श्रीलक्ष्मी ११ । धर्म १२ । ऐश्वर्य १३ । योनि १४ । यह चवद्वै अर्थोंमेंसे ।  
 सूर्य १ योनि २ । दो अर्थ वर्जकर । १२ अर्थ जग शब्दका मिलै ( जि-  
 ससे ) जगवंत कहियै ( पुनः किंविशिष्ट ) फेर अरिहंत कैसे है ( इन्द्र-  
 महिता ( चौसठ इन्द्रोंके पूजनीक । द्वादशगुणों करी विराजमान है ( सो  
 द्वादश गुण कैसे ) प्रथमतो अरिहंतको अद्भुतरूप । रोगादि रहित । प्र-  
 स्वेद मलादि रहित । सुगंध शरीर होय ॥ १ ॥ सासोस्वासकी कमलजैसी  
 सुगन्ध होय ॥ २ ॥ लोही मांस गायके दूध जैसा सपेद होय ॥ ३ ॥ आ-  
 हारनीहारकी विधि अदृश्यहोय । प्राणी देख सक्ते नहिं ॥ ४ ॥ ए च्यार  
 अतिसय गुणतो जन्मथकासे होय । ( शेषआठगुण ) केवल ज्ञान उत्पन्न  
 होणेसे प्रगट होय । ( अशोकवृद्धः ) जगवन्तके शरीरसे । बारै गुणों  
 नुंचो अशोकवृद्ध होय । जिसकी ढायां बैठेणेंसे रोगसोकादिक दूर होय ॥ १ ॥  
 ( सुरपुष्पवृष्टिः ) देवगण पंचवर्ण फूलोंकी जानूपर्यंत वर्षा करै । आका-  
 ससे पडता सीधापडै विटनींचै रहै । पंषडी ऊपर रहै ॥ २ ॥ ( दिव्य-  
 ध्वनि ) योजनपर्यंत । देवता । मनुष्य । तिर्यच । सब जीव । अपणी २  
 ज्ञापामें । यथावस्थित समजै ( जाएं ) जगवंत मेरी ज्ञापामें उपदेस देते  
 है ॥ ( कहावी है ) एगाईं गिराणेगे । संदेह देहिणं समंठित्ता । तिहुअण  
 मणुंसा संता । अरिहंता हुंतिमे सरणं ॥ ३ ॥ ३ ॥ ( श्रामर ४ ) जग-  
 वंतके दोनुं पासे इन्द्रचामर ढालता रहे ॥ ४ ॥ ( आसनच ५ ) जगव-  
 न्तके बैठेणेंको । इन्द्रादिक रचित । फिटक रत्नमई सिंहासण रहे ॥ ५ ॥  
 ( जामंडलं ६ ) जगवन्तके पिठाडी जामंडल रहे ( जिसमें ) जगवंतके  
 च्यार मुख । च्यारुंदिश तरफ माछुम होय जगवंत तो पूर्वदिशा मुख  
 कर बैठे । आरे तीन दिशमे । जगवन्तके प्रतिविंब इन्द्रादिक स्थापन

करै । परंतु जगवन्तके अतिशयसें । च्यारुंदिशे । बारैई परषदाकों । अपणेसन्मुख उपदेश देता मालुम होय ॥ ६ ॥ ( ढुंढुजी ७ ) आकाशमें देव ढुंढुजी बाजित वाजे ॥ ७ ॥ ( रातपत्रं ) जगवन्तके विहार कालै । वा स्थिति कालै । हमेसां मस्तकपर । तीन ठत्र रहै ॥ ८ ॥ ( यह आठ गुण देवगणके किये होय ) ऐसे अरिहंत । देवाधिदेव । चौतीस अतिशय विराजमान । पैंतीस वचनगुण शोभित । एक हज्जार आठ लक्षणांलं-कृत । अठारै दूषण रहत । शांत दांत । कृपासागर । त्रैलोक्यनाथ । जग-त्रयके गुरु ( वर्त्तमानकालै ) महाविदेह खेत्रे । केवलज्ञान । केवलदर्शनसें । लोकालोकका ज्ञाव देखते थके । पृथ्वीमंडलपर जव्य जीवुंके मनोरथ पूरण करते थके । विचरते है ( ऐसे ) अनंतगुणें सुसोभित । अरिहंत देव श्रीसंघमें सदा मंगल करो ॥ १ ॥ ( तथा सिद्धाश्च सिद्धि स्थिता ) ( दूसरै पदै ) सिद्ध महाराजको नमस्कार हुवो । ( सिद्ध महाराज कैसे है ) अष्ट कर्म काष्टकों । शुक्लध्यान रूप अग्निसैं जस्मकर सिद्धगतिकों प्रा-प्तजये ( ऐसे ) अनंत ग्यान । अनंतदर्शन । अनंत चारित्र । अनंत तप । अनंत वीर्यसंयुक्त । जन्म जरा मरण रोग सोक जयादिकसे विप्रमुक्त । चवदै राजलोकमें सब जीवोंके मनोगत ज्ञाव । एक समयमें जाणते थके । देखते थके पिण आत्मगुणां में मग्न रहे है ( ऐसे ) सिद्ध महा-राज श्रीसंघमें सदा मंगल करो ॥ २ ॥ ( आचार्या जिनशासनोन्नति कराः ) ( तीसरा परमेष्टि ) श्रीआचार्य महाराजकों नमस्कार हुवो । ( सो कैसे है ) ( ठत्तीस गुण करी विराजमान । मुक्तिमार्गके साधक । कर्म श-त्रूके विराधक । अबुध जीव प्रतिबोधक । कृमागुण जंडार । समदृष्टी । तरण तारण । धर्मके धोरी । जिन सासनकी उन्नतिके करण हार ( ऐसे ) पर उपगारी आचार्य महाराज श्रीसंघ में सदा मंगलकरो ॥ ३ ॥ ( पुज्या नपाध्यायका । श्रीसिद्धांत सुपाठका ( चौथा परमेष्टि । श्रीनपाध्याय महा-राजकों नमस्कार हुवो । ( सोकैसे है ) द्वादशांगी सुत्रार्थके जाणकार । नय निह्नेपा गमां पर्याय युक्त । सिद्धांतको पढाणेंवाले । ज्ञानचक्षु देणेंवाले । ( ऐसे ) २५ गुण करी विराजमान । श्रीनपाध्याय महाराज श्रीसंघमें

सदा मंगल करो ॥ ४ ॥ ( मुनिवराः रत्नत्रयाराधकाः ) ( पंचम परमेष्ठि )  
 सब साधु मुनिराज ( सो कैसे है ) ज्ञान १ दर्शन २ चारित्र ३ यह तीन  
 रत्नके आराधक है । पांचे सुमते सुमता । तीने गुप्तेगुप्ता । ढक्कायके पीहर  
 कुक्खी संबल । चारित्रपात्र । मोक्षमार्गके साधक । ( ऐसे ) सब साधु  
 मुनिराज । सत्ताईस गुणें करी सोजित । श्रीसंघमें सदा मंगल करो ॥ ५ ॥  
 इति हितोपदेशः उन्नय श्रेयार्थम् ॥

## ॥ त्रिभूजिन नामः ॥

( अतीत चौबीसी. )

- |                        |                        |                      |
|------------------------|------------------------|----------------------|
| १॥ श्रीकेवलज्ञानीजी ।  | ९॥ श्रीदामोदरजी ।      | १७॥ श्रीअनिलनाथजी ।  |
| २॥ श्रीनिर्वाणीजी ।    | १०॥ श्रीसुतेजनाथजी ।   | १८॥ श्रीयशोधरजी ।    |
| ३॥ श्रीसागरजी ।        | ११॥ श्रीस्वामीजी ।     | १९॥ श्रीकृतार्थजी ।  |
| ४॥ श्रीमहायशजी ।       | १२॥ श्रीमुनिसुव्रतजी । | २०॥ श्रीजिनेश्वरजी । |
| ५॥ श्रीविमलदेवजी ।     | १३॥ श्रीसुमतिनाथजी ।   | २१॥ श्रीशुद्धमतीजी । |
| ६॥ श्रीसर्वानुभूतिजी । | १४॥ श्रीशिवगतीजी ।     | २२॥ श्रीशिवकरजी ।    |
| ७॥ श्रीश्रीधरजी ।      | १५॥ श्रीअस्तागजी ।     | २३॥ श्रीस्पन्दनजी ।  |
| ८॥ श्रीदत्तस्वामीजी ।  | १६॥ श्रीनमीश्वरजी ।    | २४॥ श्रीसंप्रतिजी ।  |

॥ इति अतीत चतुर्विंशति तिर्थं करेभ्यो नमः ॥

( वर्त्तमान चौबीसी )

- |                         |                       |                        |
|-------------------------|-----------------------|------------------------|
| १॥ श्रीरुषभदेवजी ।      | ९॥ श्रीसुविधिनाथजी ।  | १७॥ श्रीकुंथुनाथजी ।   |
| २॥ श्रीअजितनाथजी ।      | १०॥ श्रीशीतलनाथजी ।   | १८॥ श्रीअरनाथजी ।      |
| ३॥ श्रीसंनवनाथजी ।      | ११॥ श्रीश्रेयांसजी ।  | १९॥ श्रीमहिनाथजी ।     |
| ४॥ श्रीअग्निनन्दनजी ।   | १२॥ श्रीवासुपुज्यजी । | २०॥ श्रीमुनिसुव्रतजी । |
| ५॥ श्रीसुमतिनाथजी ।     | १३॥ श्रीविमलनाथजी ।   | २१॥ श्रीनमिनाथजी ।     |
| ६॥ श्रीपद्मप्रभुजी ।    | १४॥ श्रीअनन्तनाथजी ।  | २२॥ श्रीनेमनाथजी ।     |
| ७॥ श्रीसुपार्श्वनाथजी । | १५॥ श्रीधर्मनाथजी ।   | २३॥ श्रीपार्श्वनाथजी । |
| ८॥ श्रीचंद्राप्रभुजी ।  | १६॥ श्रीशान्तिनाथजी । | २४॥ श्रीमहावीरजी ।     |

( अनागत चौवीसी )

- १॥ श्रीपद्मनाभजी । ९॥ श्रीपोटिल प्रनुजी । १७॥ श्रीसमाधिनाथजी ।  
 २॥ श्रीसूरदेवजी । १०॥ श्रीशतकीर्त्तिजी । १८॥ श्रीसंबरनाथजी ।  
 ३॥ श्रीसुपार्श्वजी । ११॥ श्रीसुब्रतनाथजी । १९॥ श्रीयशोधरजी ।  
 ४॥ श्रीस्वयंप्रनुजी । १२॥ श्रीअममनाथजी । २०॥ श्रीविजयनाथजी ।  
 ५॥ श्रीसर्वानुभूतिजी । १३॥ श्रीनिष्कषायजी । २१॥ श्रीमल्लिप्रनुजी ।  
 ६॥ श्रीदेवश्रुतजी । १४॥ श्रीनिष्पुलाकजी । २२॥ श्रीदेवप्रनुजी ।  
 ७॥ श्रीनन्दप्रनुजी । १५॥ श्रीनिर्ममनाथजी । २३॥ श्रीअनन्तजी ।  
 ८॥ श्रीपेढालप्रनुजी । १६॥ श्रीचित्रगुप्तिजी । २४॥ श्रीनद्रंकरजी ।

॥ इति ऋविष्यचतुर्विंशति तिर्थकरेभ्योनमः ॥

( वीसबिहरमान नामानि )

- १॥ श्रीसीमन्धरजी । ८॥ श्रीअनन्तवीर्यजी । १५॥ श्रीनेमप्रनुजी ।  
 २॥ श्रीयुगमन्धरजी । ९॥ श्रीसूरप्रनुजी । १६॥ श्रीईश्वरजी ।  
 ३॥ श्रीबाहुजी । १०॥ श्रीविमलजी । १७॥ श्रीवयरसेनजी ।  
 ४॥ श्रीसुबाहुजी । ११॥ श्रीवज्रधरजी । १८॥ श्रीमहाभद्रजी ।  
 ५॥ श्रीसुजातजी । १२॥ श्रीचंद्राननजी । १९॥ श्रीदेवजसजी ।  
 ६॥ श्रीस्वयंप्रनुजी । १३॥ श्रीचंद्रबाहुजी । २०॥ श्रीअजितवीर्यजी ।  
 ७॥ श्रीरुषभाननजी । १४॥ श्रीनुजंगजी ।

॥ इति विंशति बिहरमानतिर्थकरेभ्योनमः ॥

( च्यार सास्वतानामः )

- १॥ श्रीरुषभाननजी । ३॥ श्रीवारिषेणजी ।  
 २॥ श्रीचंद्राननजी । ४॥ श्रीवर्द्धमानजी ।

॥ इति चत्वार सास्वता जिनवरेभ्योनमः ॥

## ॥ पांच प्रतिक्रमणसूत्र विधि ॥

श्रीपांचपरमेष्ठिने नमः ॥ एमो अरिहंताणं ॥ एमो सिद्धाणं ॥  
 एमो आयरियाणं ॥ एमो उवज्जायाणं ॥ एमो लोए सब-  
 साहूणं ॥ एसो पंच एमुक्कारो ॥ सबपाव प्पणासणो ॥ मंग-  
 लाणंच सबेसिं ॥ पढमंहवइ मंगलं ॥ १ ॥ पद ९ ॥ संपदा ८ ॥  
 अक्षर ६८ ॥ गुरु ७ ॥ लघु ६१

## ॥ अथ सकल तिर्थंकर नमस्कार लि० ॥

॥ ❀ ॥ श्रीइष्टदेवाय नमः ॥ ❀ ॥ जयउसामिहि ॥ २ ॥ रिस-  
 ह सेत्तुंजि उज्जित पडू नेमिजिण । जयउ बीर सच्चरमंरुण ।  
 नरवड्ढहि मुणि सुवय । महुरिपास दुह डुरिअ खंरुण । अवर  
 विदेहजि तित्थयर । चिहुं दिसि विदिसि जंकेवि । तीआणागय  
 संपयं । वंडुं जिण सब्बेवि ॥ २ ॥ कम्मभूमिहि ॥ २ ॥ पढम  
 संघयण उक्कोसन सत्तरिसन । जिणवराण विहरंतलप्रइ । नव-  
 कोडी केवलिण । कोडिसहस नवसाहु संपय । संपइ जिणवर  
 वीसमुणि । डुइकोडीवरणाणि । समणाकोडीसहसडुइ । थुणिजइ  
 निच्चविहाण ॥ १ ॥ सत्ताणवइ सहस्सा । लक्खा उप्पन्न अठ्ठको-  
 डीओ । चउसय णयासीआ । तिखुक्के चेइए वंदे ॥ २ ॥ वंदे नव-  
 कोडिसयं । पणवीसंकोडि लक्खतेवन्ना । अठ्ठावीससहस्सा  
 चउसय अठ्ठासिआ पडिमा ॥ ३ ॥ जंकिंचि नामतित्थं । सग्गेपा-  
 यालेमाणुसेलोए । जाइंजिणबिंबाईं । ताईं सबाईं वंदामि ❀ ॥ ४ ॥  
 एमोत्थुणं अरिहंताणं नगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं तित्थग-  
 राणं सयंसंवुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरसोत्तमाणं पुरस सीहाणं पुरसवर  
 पुंरुरीआणं पुरसवर गंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं लोग-  
 नाहाणं लोगहियाणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥

प्रज्ञयदयाणं चक्खुदयाणं मग्ग दयाणं सरणदयाणं बोहि-  
 दयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं धम्म देसिआणं धम्मनायगाणं ।  
 धम्मसारहीणं धम्मवरचानुरंत चक्कवट्ठीणं ॥ ६ ॥ अप्पमिह-  
 वरणाण दंसणधराणं विअट्ठठनमाणं ॥ ७ ॥ जिन्नाणं जा-  
 ययाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहिआणं मुत्ताणंमोअ-  
 ताणं ॥ ८ ॥ सबन्नूणं सबदरिसीणं सिव मयल मरुअ मणंत  
 मक्खय मवावाह मपुणरावत्ति सिद्धिगइ नामधेयं ठाणंसंपत्ताणं  
 मोजिणाणं जिअप्रयाणं ॥ ९ ॥ जेअ अईआसिद्धा जेअ  
 नविस्संति अणागएकाले संपइअ वट्ठमाणा सबे तिविहेण  
 वंदामि \* ॥ १ ॥ \* पद ॥ ३३ ॥ संपदा ॥ ९ ॥ अक्षर ॥ २९७ ॥  
 गुरु ॥ ३३ ॥ लघु ॥ २६४ ॥ \* ॥ जावंति चेइआइं । उट्ठेअ अ-  
 हेअतिरिअलोएय । सवाइंताइंवंदे । इहसंतो तत्थसंताइं ॥ १ ॥  
 इच्छामिखमा० इत्थाका० नगवन् । जावंति केविसाहू । नरहे  
 रवए महाविदेहेअ । सबेसि तेसिपणओ । तिविहेण तिदंरु  
 विरआणं ॥ २ ॥ अक्षर ॥ ९२ ॥ \* नमो क्तत सिद्धाचार्योपा  
 ध्याय सर्वसाधुभ्यः ॥ \* ॥ उवसग्ग हरंपासं । पासं वंदामि  
 कम्मघण मुक्कं । विसहर विसनिन्नासं । मंगल कल्लाण  
 आवासं ॥ १ ॥ विसहर फुलिंग मंतं । कंठे धारेइ जो सया  
 मणुओ । तस्सगहरोगमारी । दुठजराजन्ति उवसामं ॥ २ ॥ चिठ्ठ  
 दूरे मंतो । तुज्ज पणामोवि बहुफलो होइ । नरतिरिए सुवि जीवा ।  
 पावंति नदुक्ख दोहग्गं ॥ ३ ॥ तुहसम्मत्ते लद्धे । चिंतामणि क-  
 प्पपाय बप्पहिए । पावंति अविग्घेणं । जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥  
 इअ संथुओ महायस । नत्तिब्जरनिब्जरेण हिअएण । तादेव दिज्ज  
 बोहिं । नवे नवे पास जिणचंद ॥ ५ ॥ इति श्रीपार्श्व जिनस्तुतिः ॥



❀ ॥ जय वीयराय जगगुरु । होउममं तुहपन्नावओ । जयवं  
जवनिब्बेओ । मग्गाणुसारिआ इठफलसिद्धी ॥ १ ॥ लोग  
विरुद्ध चाओ । गुरुजण पूआ परत्थकरणंच सुह गुरुजोगो  
तब्बयण सेवणा आनवमखंता ❀ ॥ २ ॥ ❀ ॥ अरिहंत  
चेइयाणं । वंदणवत्तिया । अनत्थूकही । एक नवकारनोका-  
वसग्गकरी एकथूईनीगाथा कहै ॥ इतिचैत्यवंदनकं ॥ ❀ ॥

॥ अथ इरियावही ॥

॥ इच्छामि खमासमणो वंदितं जावणिज्जाए निसीहि आए  
मत्थणवंदामि ॥ इतिक्षमाश्रमणदंरुक्कः ॥ गुरु ३ लघु २५ ॥  
( इच्छाकारेण संदिसह जगवन् ) इरिआवहिअं पम्किमामि,  
इच्छं इच्छामि पम्किमिनं । इरिआवहियाए विराहणाए ।  
गमणा गमणे पाण क्कमणे वीअक्कमणे हरिअ क्कमणे । उसा  
उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कडा । संताणा संकमणे । जेमे जीवा  
विराहिआ । एगिंदिआ वेइंदिआ तेइंदिआ चउरिंदिआ पं-  
चिंदिआ अग्निहया वत्तिआ लेसिया संघाइआ संघट्ठिआ ।  
परिआविया किलामिआ उद्विआ ठाणा उछाण संकामिआ  
जीवियाओववरोविआ । तस्समिच्छामिदुक्कं ❀ ॥ ७ ॥ ❀ तस्स  
उत्तरी करणेणं । पायच्छित्त करणेणं । विसोही करणेणं । विसल्ली  
करणेणं । पावाणं कम्माणं । णिग्घायणछाए । ठामिकानसग्गं  
॥ पद ३२ संपदा ८ गुरु २४ लघु १७५ ॥ एवं ॥ १९९ ॥ ❀ ॥  
अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं ढीएणं जंजाइएणं  
उड्डुएणं वाय निसग्गेणं जमलिए पितमुत्ताए ॥ १ ॥ सुहुमेहिं  
अंग संचालेहिं । सुहुमेहिं खेल संचालेहिं । सुहुमेहिं दिठ्ठि  
संचालेहिं ॥ २ ॥ एव माइएहिं आगारेहिं । अजग्गो

अविराहिओ हुज्ज मे कानसग्गो ॥ ३ ॥ जाव अरिहंताणं ज-  
गवंताणं णमोक्कारेण नपारेमि तावकायं ठाणेणं मोणेणं जाणे-  
णं अप्पाणं वोसरामि ❀ ॥ ४ ॥ ❀ लोगस्स उज्जोअगरे । धम्म  
तित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइसं । चनवीसंपि केवली ॥ १ ॥  
उसन्न मजिअं च बंदे । संजव मज्जिनंदणं च । सुमइअ पन्नम  
प्पहं सुपासं । जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहं च पुप्फदंतं ।  
सीअल्ल सिज्जंस वासुपुज्जं च । विमल मणंतं च जिणं । धम्मं  
संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथु अरं च मल्लिं । वंदे मुणिसुव्वयं न  
मि जिणं च । वंदामि रिठ्ठनेमिं । पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥  
एवं मए अज्जिथुआ । बिहुअ रयमला पहीण जर मरणा ।  
चनवीसंपि जिणवरा । तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिअ  
वंदिअ महिआ । जेते लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरोग्ग वोहि  
लान्नं । समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा ।  
आइच्चेसु अहिअं पयासयरा । सागर वर गंजीरा । सिद्धा सिद्धिं  
मम दिसंतु ॥ ❀ ॥ ७ ॥ ❀ पद २८ संपदा २८ गुरु २८ लघु २२८  
[ एवं सर्वअक्षर ॥ २५६ ] सबलोए अरिहंतचेइआणं करेमिका  
उस्सग्गं ॥ ❀ ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ पुक्खरवर दीवट्ठे । धायइ  
संमैअ जंबुदीवेअ । जरहे रवय विदेहे । धम्माइगरे नमंसा-  
मि ॥ १ ॥ तम तिमिर पल्ल विद्धंसणस्स । सुरगण नरिंद  
महिअस्स । सीमाधरस्स वंदे । पुप्फोमिअ मोह जालस्स ॥ २ ॥  
जाई जरा मरणसोग पणासणस्स । कल्लाण पुक्खल विसाल सुहा  
वहस्स । को देव दाणव नरिंद गणाच्चिअस्स । धम्मस्ससार मुवल  
प्रकरेपमायां ॥ ३ ॥ सिद्धेओपयत्तं णमोजिणमए नंदीसयासंजमे । देव  
नाग सुवन्न किन्नरगण स्सब्भुअ जावच्चिए । लोगो जत्थ पयट्ठिओ

जगमणं तेलोक्क मच्चासुरं । धम्मो वढ्ढुत्तसासओ विजयत्त धम्मो  
त्तरं वढ्ढुओ ॥ ४ ॥ सुअस्सज्जगवत्तं करेमि कान्तसग्गं ॥ ❀ ॥ ( पद  
१६ संपदा १६ गुरुअ ३४ लघुअ १८२ एवं २१६ ) ॥ ❀ ॥ वंद-  
णवत्ति आए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए  
बोहिलान्नवत्तिआए निरुवसग्ग वत्तिआए सिद्धाए मेहाए धिईए  
धारणाए अणुप्पेहाए वद्धमाणीए ठामिकान्तसग्गं ॥ १ ॥ अन्न  
त्थज्जससिएणं नीससिएणं इत्यादि ॥ ❀ ॥

॥ सिद्धाणं बुद्धाणं पारगयाणं परंपरगयाणं । लोगग्ग  
मुवगयाणं । एमो सया सब सिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाणविदेवो  
जंदेवा पंजली नमंसंति । तं देव देवमहिअं । सिरसावंदे म-  
हावीरं ॥ २ ॥ इक्कोवि एमुक्कारो । जिणवर वसहस्स वद्धमा-  
णस्स । संसार सागराओ । तारेइ नरंव नारिंवा ॥ ३ ॥ उज्जित  
सेल सिहरे । दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स । तं धम्म  
चक्कवट्ठिं । अरिद्वनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अट्ठ दस  
दोअ वंदिआ । जिणवरा चत्तवीसं । परमट्ठ निट्ठिअट्ठा । सि-  
द्धा सिद्धिं ममदिसंतु ॥ ५ ॥ ❀ ॥ वेयावच्चगराणं । संतिग-  
राणं । सम्मदिट्ठि समाहिगराणं । करेमिकान्तसग्गं ॥ १ ॥  
अणत्थज्जससिएणं इत्यादि ( संपदा २० पद २० गुरु अक्षर  
३१ लघु १६७ एवं १९८ ) ॥ ❀ ॥ संसार दावानल दाह  
नीरं । समोहधूली हरणे समीरं । मायारसा दारण सार सीरं ।  
नमामि वीरं गिरिसार धीरं ॥ १ ॥ ज्ञावावनाम सुर दानव मा-  
नवेन । चूला विलोल कमलावलि मालितानि । संपूरिता जि-  
नत लोक समीहि तानि । कामं नमामि जिनराज पदानि  
तानि ॥ २ ॥ बोधा गाधं सुपद पदवी नीर पूराजिरामं । जीवा

हिंसाविरल लहरी संग मागाहदेहं । चूलावेलं गुरु गम मणी  
संकुलं दूरपारं । सारं वीरागम जलनिधिं सादरं साधुसेवे ॥ ३ ॥  
आमूला लोलधूली बहुल परिमला लीढ लोलालिमाला ।  
जंकारा राव सारा मलदलकमला गारभूमी निवासे । गया  
संनारसारे वरकमलकरे तारंहाराजिरामे । वांणीसंदोहदेहे नव-  
विरहवरं देहिमे देविसारं ॥ ४ ॥ इति वीरस्तुतिः ॥

### ॥ वांदणां ॥

॥❀॥ इहामिखमासमणो बंदिउंजावणिज्जाए निसीहिआए ।  
अणुजाणह मेमिउग्गहं निसीही । अहो कायं काय । संफासं  
खमणिज्जो नेकिलामो । अप्पकिलंताणं बहुसुत्तेणने दिवसो-  
वइक्कंतो । जत्ताने जवणि जंचने । खामेमि खमासमणो देव-  
सिअं वइक्कमं । आवसिआए पक्कमामि खमासमणाणं । देव  
सिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचिमिआए । मणउक्क-  
डाए वयउक्कडाए कायउक्कडाए । कोहाए माणाए मायाए लोआए ।  
सवकालिआए सबमिहोवयाराए सबधम्माइक्कमणाए आसाय  
णाए । जोमेअईयारोकओ तस्सखमासमणो पडिक्कमामि  
निंदामि गरिहामि अप्पाणं बोसरामि ॥❀॥ ॥ अक्षर ॥ १९८ ॥

### ॥ साध्वालोयणा ॥

॥❀॥ इहाकरेण संदिसह जगवन् देवसिअं आलोएमि ।  
इहंआलोएमि । जोमेदेवसिओ अईआरोकओ । काईओ वा  
ईओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अक्कप्पो अकरणिज्जो  
उज्जाओ उव्विचिंतिओ । अणायारो अणवियवो । असम-  
णपावग्गो । नाणेत्तहदंसणेचरित्ते । सुएसामाइए तिण्हंगुत्तीणं-  
चत्तण्हंकसायाणं । पंचण्हं महवयाणं । षण्हं जीवनिंकायाणं ।

सत्तएहंपिंसेसणाणं अठ्ठएहं पवयणमाईणं । नवएहं बंनचेर  
गुत्तीणं दसविहेसमणधम्ममे । समणाणं जोगाणं । जंखंमिअं  
जं विराहिअं । तस्समिहामिडुक्कं ॥\*॥

॥ श्रावकआलोयणा ॥

॥\*॥ इह्वाकारेण संदिसह जगवन् । देवसियं आलोएमि  
इहं आलोएमि । जोमे देवसिओ अइयारोकओ । काईओ  
वाईओ माणसिओ । उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो । अकरणिज्जो  
डुज्जाओ डुव्विचिंतिओ । अणायारो अणव्वियवो । असावग-  
पावग्गो । नाणेत्तह दंसणे चरित्ता चरित्ते । सुए सामाइए  
तिएहंगुत्तीणं । चउएहंकसायाणं । पंचएहंमणुव्वयाणं । तिएहं  
गुणव्वयाणं । चउएहं सिक्खावयाणं । वारसविहस्स सावग ध-  
म्मस्स । जंखंमिअं जंविराहिअं । तस्स मिहामिडुक्कडं ॥\*॥

॥\*॥ ठाणेकमणे चंकमणे आउत्ते । अणाउत्ते हरिअकाय  
संघट्टे बीयकायसंघट्टे थावरकायसंघट्टे उप्पइयासंघट्टे । सब्बस्स  
वि देवसिअ । डुच्चिंतिय डुप्पासिय डुच्चिठ्ठिअ । इह्वाकारेण  
संदिसह । इहंतस्समिहामिडुक्कडं ॥ १ ॥\*॥ संथाराउवट्टण-  
की । आउट्टणकी । परिअट्टणकी । पसारणकी । उप्पइयासं  
घट्टणकी । अच्चक्खु विसयकायकी । सब्बस्सविराइअ । डुच्चिं  
तिअ डुप्पासिअ डुच्चिठ्ठिअ । इह्वाकारेणसंदिसह । इहं-  
तस्स मिहामिडुक्कं ॥ १ ॥\*॥ इह्वाकारेणसंदिसह जगवन्  
अभूठ्ठिओमि अप्पितर । देवसिअंखामेनं । इहंखामेमि देव-  
सिअं । जंकिंचि अपत्तिअं परपत्तियं । जत्ते पाणे विणए वेया-  
वच्चे । आत्तावे संत्तावे । उच्चासणे । समासणे अंतरजासाए  
उवरिजासाए । जंकिंचि मज्जविणय परिहीणं सुहुमंवा वायरंवा ।

तुष्रेजाणह अहंनजाणामि । तस्स मिहामिडुक्कमं ॥ \* ॥  
॥ इति गुरुवंदणा ॥ \* ॥

॥ \* ॥ करेमि जंते सामाइयं । सावज्जंजोगं पच्चक्खामि ।  
जावनियमं पज्जुवासामि । दुविहं तिविहेणं । मणेणं वायाए  
काणणं । न करेमि न कारवेमि । तस्स जंते । पडिक्कमामि । निंदामि  
गरहामि । अप्पाणं बोसिरामि ॥ \* ॥ करेमि जंते पोसहं । आहार  
पोसहं, देसञ्च । सब्बञ्च वा । सरीरसक्कार पोसहं । सब्बञ्च बंनचेर  
पोसहं । सब्बञ्च अद्वावार पोसहं । सब्बञ्च चञ्चविहे पोसहे । साव  
ज्जंजोगं पच्चक्खामि । जावदिवसं अहोरत्तिं वा पज्जु वासामि ।  
दुविहं तिविहेणं । मणेणं वायाए काणणं । न करेमि न कारवेमि ।  
तस्स जंते । पडिक्कमामि निंदामि । गरहामि अप्पाणं बोसिरामि  
॥ \* ॥ आयरियञ्चवज्जाए सीसेसाहम्मिए कुलगणेवा । जेमे कया-  
कसाया । सब्बे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सब्बस्स समणसंघस्स । जग  
वञ्च अंजलिं करिय सीसे । सब्बं खमावइत्ता । खमामि सब्बस्स अहि-  
यंपि ॥ २ ॥ सब्बस्स जीव रासिस्स । जावञ्च धम्मनिहियनिय-  
चित्तो । सब्बं खमावइत्ता । खमामि सब्बस्स अहियंपि ॥ ३ ॥ \* ॥  
सुवर्णशालिनी देयाद् । द्वादसांगी जिनोद्भवा । श्रुतदेवी सदा-  
मह्य । मसेषश्रुतसंपदं ॥ १ ॥ चतुवर्णायसंघाय । देवी जवन-  
वासिनी । निहत्य दुरितान्येषा । करोतुसुखमहत्तं ॥ २ ॥ यासां  
क्षेत्रगतास्संति । साधवः श्रावकादयः । जिनाज्ञां साधयंतस्ता ।  
रक्षंतु क्षेत्रदेवताः ॥ ३ ॥ \* ॥

॥ \* ॥ जय महायश २ जय महाजाग जय चिंतिय  
सुहफलय । जय समत्थ परमत्थजाणय । जय २ गुरु  
गरिम गुरु । जय पुहत्तेसत्ताणताणय । थंजणयठिय पासजिण ।



सत्तएहंपिमेसणाणं अट्ठएहं पवयणमाईणं । नवएहं बंजचेर  
गुत्तीणं दसविहेसमणधम्ममे । समणाणं जोगाणं । जंखंमिअं  
जं विराहिअं । तस्समिहामिडुक्कं ॥\*॥

॥ श्रावकआलोयणा ॥

॥\*॥ इह्वाकारेण संदिसह जगवन् । देवसियं आलोएमि  
इहं आलोएमि । जोमे देवसिओ अइयारोकओ । काईओ  
वाईओ माणसिओ । नस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो । अकरणिज्जो  
डुज्जाओ डुबिचिंतिओ । अणायारो अणहियवो । असावग-  
पावग्गो । नाणेत्तह दंसणे चरित्ता चरित्ते । सुए सामाइए  
तिएहंगुत्तीणं । चत्तएहंकसायाणं । पंचएहंमणुबयाणं । तिएहं  
गुणबयाणं । चत्तएहं सिक्खावयाणं । वारसविहस्स सावग ध-  
म्मस्स । जंखंमिअं जंविराहिअं । तस्स मिहामिडुक्कडं ॥\*॥

॥\*॥ ठाणेकमणे चंकमणे आउत्ते । अणाउत्ते हरिअकाय  
संघट्टे बीयकायसंघट्टे थावरकायसंघट्टे उप्पइयासंघट्टे । सब्बस्स  
वि देवसिअ । डुच्चितिय डुप्पासिय डुच्चिठ्ठिअ । इह्वाकारेण  
संदिसह । इहंतस्समिहामिडुक्कडं ॥ १ ॥\*॥ संथाराउवट्टण-  
की । आउट्टणकी । परिअट्टणकी । पसारणकी । उप्पइयासं-  
घट्टणकी । अच्चक्खु विसयकायकी । सब्बस्सविराइअ । डुच्चिं-  
तिअ डुप्पासिअ डुच्चिठ्ठिअ । इह्वाकारेणसंदिसह । इहं-  
तस्स मिहामिडुक्कं ॥ १ ॥\*॥ इह्वाकारेणसंदिसह जगवन्  
अभूठिओमि अप्पितर । देवसिअंखामेउं । इहंखामेमि देव-  
सिअं । जंकिंचि अपत्तिअं परपत्तियं । जत्ते पाणे विणए वेया-  
वच्चे । आलावे संलावे । उच्चासणे । समासणे अंतरजासाए  
उवरिजासाए । जंकिंचि मज्जविणय परिहीणं सुहुमंवा वायरंवा ।

तुप्पेजाणह अहंनजाणामि । तस्स मिळामिउक्कमं ॥ \* ॥  
॥ इति गुरुवंदणा ॥ \* ॥

॥ \* ॥ करेमि जंतं सामाइयं । सावज्जंजोगं पच्चक्खामि ।  
जावनियमं पज्जुवासामि । दुविहं तिविहेणं । मणेणं वायाए  
काएणं । न करेमि न कारवेमि । तस्स जंतं । पडिक्कमामि । निंदामि  
गरहामि । अप्पाणं बोसिरामि ॥ \* ॥ करेमि जंतं पोसहं । आहार  
पोसहं, देसजं । सब्बं वा । सरीरसक्कार पोसहं । सब्बं बंजचरे  
पोसहं । सब्बं अब्बावार पोसहं । सब्बं चजविहे पोसहे । साव  
ज्जंजोगं पच्चक्खामि । जावदिवसं अहोरत्तिं वा पज्जु वासामि ।  
दुविहं तिविहेणं । मणेणं वायाए काएणं । न करेमि न कारवेमि ।  
तस्स जंतं । पडिक्कमामि निंदामि । गरहामि अप्पाणं बोसिरामि  
॥ \* ॥ आयरियजवज्जाए सीसेसाहम्मिए कुलगणेवा । जेमे कया-  
कसाया । सब्बे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सब्बस्स समणसंघस्स । जग  
वज्जं अंजलिं करिय सीसे । सब्बं खमावइत्ता । खमामि सब्बस्स अहि-  
यंपि ॥ २ ॥ सब्बस्स जीव रासिस्स । जावज्जं धम्मनिहियनिय-  
चित्तो । सब्बं खमावइत्ता । खमामि सब्बस्स अहियंपि ॥ ३ ॥ \* ॥  
सुवर्णशालिनी देयाद् । द्वादसांगी जिनोद्धवा । श्रुतदेवी सदा-  
मह्य । मसेषश्रुतसंपदं ॥ १ ॥ चतुवर्णायसंघाय । देवी जवन-  
वासिनी । निहत्य दुरितान्येषा । करोतुसुखमकृतं ॥ २ ॥ यासां  
क्षेत्रगतास्संति । साधवः श्रावकादयः । जिनाज्ञां साधयंतस्ता ।  
रक्षंतु क्षेत्रदेवताः ॥ ३ ॥ \* ॥

॥ \* ॥ जय महायश २ जय महाजाग जय चिंतिय  
सुहफलय । जय समत्थ परमत्थजाणय । जय २ गुरु  
गरिम गुरु । जय उहत्तंसत्ताणताणय । थंनणयठिय पासजिण ।

सत्तएहंपिमेसणाणं अठ्ठएहं पवयणमाईणं । नवएहं बंजचेर  
गुत्तीणं दसविहेसमणधम्ममे । समणाणं जोगाणं । जंखंमिअं  
जं विराहिअं । तस्समिच्चामिउक्कमं ॥\*॥

॥ श्रावकआलोयणा ॥

॥\*॥ इच्चाकारेण संदिसह जगवन् । देवसियं आलोएमि  
इत्थं आलोएमि । जोमे देवसिअो अइयारोकअो । काईअो  
वाईअो माणसिअो । उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो । अकरणिज्जो  
उज्जाअो उच्चिचिंतिअो । अणायारो अणव्वियवो । असावग-  
पावग्गो । नाणेत्तह दंसणे चरित्ता चरित्ते । सुए सामाइए  
तिएहंगुत्तीणं । चउएहंकसायाणं । पंचएहंमणुबयाणं । तिएहं  
गुणवयाणं । चउएहं सिक्खावयाणं । वारसविहस्स सावग ध-  
म्मस्स । जंखंमिअं जंविराहिअं । तस्स मिच्चामिउक्कडं ॥\*॥

॥\*॥ ठाणेकमणे चंकमणे आउत्ते । अणानत्ते हरिअकाय  
संघट्टे बीयकायसंघट्टे थावरकायसंघट्टे उप्पइयासंघट्टे । सब्बस्स  
वि देवसिअ । उच्चिंतिय उप्पासिय उच्चिठ्ठिअ । इच्चाकारेण  
संदिसह । इत्थंतस्समिच्चामिउक्कडं ॥ १ ॥\*॥ संथाराउवट्टण-  
की । आउट्टणकी । परिअट्टणकी । पसारणकी । उप्पइयासं-  
घट्टणकी । अच्चक्खु विसयकायकी । सब्बस्सविराइअ । उच्चिं-  
तिअ उप्पासिअ उच्चिठ्ठिअ । इच्चाकारेणसंदिसह । इत्थं-  
तस्स मिच्चामिउक्कमं ॥ १ ॥\*॥ इच्चाकारेणसंदिसह जगवन्  
अभूठिअोमि अप्पिंतर । देवसिअंखामेउं । इत्थंखामेमि देव-  
सिअं । जंकिंचि अपत्तिअं परपत्तियं । जत्ते पाणे विणए वेया-  
वच्चे । आलावे संलावे । उच्चासणे । समासणे अंतरजासाए  
उवरिजासाए । जंकिंचि मज्जविणय परिहीणं सुहुमंवा वायरंवा ।

तुभ्रेजाणह अहंनजाणामि । तस्स मिळामिउक्कमं ॥ \* ॥  
॥ इति गुरुवंदणा ॥ \* ॥

॥ \* ॥ करेमि जंते सामाइयं । सावज्जंजोगं पच्चक्खामि ।  
जावनियमं पज्जुवासामि । दुविहं तिविहेणं । मणेणं वायाए  
काणणं । न करेमि न कारवेमि । तस्स जंते । पडिक्कमामि । निंदामि  
गरहामि । अप्पाणं बोसिरामि ॥ \* ॥ करेमि जंते पोसहं । आहार  
पोसहं, देसउ । सबउ वा । सरीरसक्कार पोसहं । सबउ बंनचेर  
पोसहं । सबउ अवावार पोसहं । सबउ चउविहे पोसहे । साव  
ज्जं जोगं पच्चक्खामि । जावदिवसं अहोरत्तिं वा पंजु वासामि ।  
दुविहं तिविहेणं । मणेणं वायाए काणणं । न करेमि न कारवेमि ।  
तस्स जंते । पडिक्कमामि निंदामि । गरहामि अप्पाणं बोसिरामि  
॥ \* ॥ आयरियउवज्जाए सीसेसाहम्मिए कुलगणेवा । जेमे कया-  
कसाया । सबे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सबस्स समणसंघस्स । जग  
वउ अंजलिं करिय सीसे । सब्वं खमावइत्ता । खमामि सबस्स अहि-  
यंपि ॥ २ ॥ सबस्स जीव रासिस्स । जावउ धम्मनिहियनिय-  
चित्तो । सब्वं खमावइत्ता । खमामि सब्वस्स अहियंपि ॥ ३ ॥ \* ॥  
सुवर्णशालिनी देयाद् । द्वादसांगी जिनोद्भवा । श्रुतदेवी सदा-  
मह्य । मसेषश्रुतसंपदं ॥ १ ॥ चतुवर्णायसंघाय । देवी जवन-  
वासिनी । निहत्य दुरितान्येषा । करोतुसुखमकृतं ॥ २ ॥ यासां  
क्षेत्रगतास्संति । साधवः श्रावकादयः । जिनाज्ञां साधयंतस्ता ।  
रक्षंतु क्षेत्रदेवताः ॥ ३ ॥ \* ॥

॥ \* ॥ जय महायश २ जय महाजाग जय चिंतिय  
सुहफलय । जय समत्थ परमत्थजाणय । जय २ गुरु  
गरिम गुरु । जय उहत्तंसत्ताणताणय । थंजणयठिय पासजिण ।

नवियहन्नीमन्नवत्थु । नय अवणिंताणंतगुण । तुज्जतिसंज  
नमोत्थु ॥ १ ॥ ❀ ॥

## ॥ अथ सामायक पोसहपारवागाथा ॥

॥ ❀ ॥ नयवं दसन्नन्नदो । सुदंसणो थूलन्नद्वयरोय । सफ-  
लीकय गिहचाया । साहू एवंविहा हुंति ॥ १ ॥ साहूण वंद-  
णेणं । नासइ पावं असंकियाजावा । फासुअदाणे निज्जर ।  
अग्निग्गहो नाणमाईणं ॥ २ ॥ उउमत्थो मूढ मणो । कित्ति-  
मित्तंपि संजरइजीवो । जंचन संजरामि अहं । मिहामेदुक्कडं  
तस्स ॥ ३ ॥ जंजंमणेण चित्ति य । मसुहं वायाइजासियं  
किंचि । असुहं काएणकयं । मिहामे दुक्कडं तस्स ॥ ४ ॥  
सामाइय पोसहसंठियस्स । जीवस्स जाइ जो कालो । सोसफलो  
बोधवो । सेसो संसारफलहेऊ ॥ ५ ॥ ❀ ॥ सामायकविधै लीधी  
विधै कीधी विधिकरतां अवधि आसातना लागी होय  
दसमनका दस वचनका बारै कायाका । बत्तीस दूषणां मांह  
जो कोई दूषण लागो होय सो सहू मनकर वचनकर कायायेंकरी  
मिहामिदुक्कडं ॥ ❀ ॥ इति सामायिक पोसहपारवागाथा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सिरिथंनणयठियपाससामिणो । सेसतित्थसामीणं ।  
तित्थसमुन्नयकारणं । सुरासुराणंच सबेसिं ॥ १ ॥ एसमहं  
सरणत्थं । काउसग्गं करेमि । सत्तीए नत्तीए गुणसुठियस्स ।  
संघस्स समुन्नयनिमित्तं ॥ २ ॥ ❀ ॥ नमोस्तु वर्द्धमा-  
नाय । स्पर्द्धमानाय कम्मणा । तज्जाया व्याप्त मोहाय ।  
परोहाय कुतीर्थिनां ॥ १ ॥ येषां विकचारविंदराज्या । ज्यायः  
क्रमकमलावलिं दधत्या । सदृशै रिति संगतं प्रशस्यं ।

कथितं संतु शिवायते जिनेन्द्राः ॥ २ ॥ कषायतापाहृतं  
जंतुनिर्वृतिं । करोति यो जैनमुखांबुदोद्भूतः । सशुक्रमासोद्भव  
वृष्टिसन्निभो । ददातु तुष्टिं मयि विस्तरो गिरां ॥ ३ ॥  
श्वसितसुरभिगंधा लीढभृंगीकुरङ्गं । मुखशशिनमजस्रंविभ्रती  
याविनर्त्ति । विकचकमलमुच्चैः सास्त्वचिंत्यप्रज्ञावा । सकल  
सुखविधात्री । प्राणज्जाजां श्रुताङ्गी ॥ ४ ॥ \* इति वीरस्तुतीः ॥

॥ \* ॥ परसमयतिमिरतरणिं । नवसागरवारितरणवरत-  
रणिं । रागपरागसमीरं । वंदे देवं महावीरं ॥ १ ॥ निरुद्ध  
संसारविहारकारी । दुरन्तज्ञावारिगणानिकामं । निरन्तरं  
केवलि सत्तमावो । नवावहं मोहजरं हरंतु ॥ २ ॥ संदेहकारि  
कुनयागम रूढगूढ । संमोहपंकहरणामलवारिपूरं । संसार-  
सागरसमुत्तरणोरुनावं । वीरागमं परमसिद्धिकरं नमामि ॥ ३ ॥  
परिमलनरलोच्चा लीढलोलालिमाला । वरकमलनिवासे हार-  
नीहारहासे । अविरलनवकारा गारविडित्तिकारं । कुरुकम-  
लकरेमे मङ्गलं देविसारं ॥ ४ ॥ \* ॥ इति वीरस्तुतिः ॥ \* ॥

॥ \* ॥ कमलदलविपुलनयना । कमलमुखी कमलगर्भ  
समगौरी । कमलेस्थिता नगवती । ददातु श्रुतदेवतासौख्यं  
॥ १ ॥ ज्ञानादिगुणयुतानां । स्वाध्यायध्यान संयमरतानां ।  
विदधातुभुवनदेवी । शिवंसदासर्व साधूनां ॥ २ ॥ यस्याः क्षेत्रं  
समाश्रित्य । साधुभिः साध्यते क्रिया । साक्षेत्रदेवतानित्यं ।  
भूयान्नः सुखदायिनी ॥ ३ ॥ \* ॥ इति स्तुति ॥ \* ॥

॥ \* ॥ श्रीसेढीतटनीतटे पुरवरे श्रीस्थंजनेस्वर्गिरौ ।  
श्रीपूज्यान्नयदेवसूरिविवुधा धीशैः समारोपितः । संसक्तः स्तुति  
भिर्जलैः शिवफल स्फूर्यत फणापल्लवः । पार्श्वः कल्पतरुः समे



प्रथयतां नित्यं मनोवांछितं ॥ १ ॥ आधिव्याधिहरो देवो ।  
जीरावल्लिसिरोमणिः पार्श्वनाथोजगन्नाथो । नतुनाथो नृणां-  
श्रिये ॥ २ ॥ ❀ इति पार्श्वस्तुतिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ कल्याणकमलागेहं । नीलदेहं महासहं । नवखं माविधं-  
पार्श्वं । सदाध्यायामिमानसं ॥ १ ॥ इति ॥ ❀ ॥ चञ्च कसाय  
पनिमल्ल छुरण । दूजयमयणमाण मसमूरण । सरसपियंगु  
बन्नगयगामिय । जयउपास भुवणत्तय सामिय ॥ १ ॥ जसत-  
णुकंतिकरुप्पसिणिद्धउ सोहइफणमणिकिरणालिद्धउ । ननवज-  
लहरतडिलयलंठिय । सोजिणपासपयहउवंठिय ॥ १ ॥ ❀ ॥

इति श्रीपार्श्वनाथस्तुतिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं । सर्वकल्याणकारणं । प्रधानं  
सर्वधर्माणां । जैनं जयतु शासनं ॥ १ ॥ मङ्गलं जगवान्  
वीरो । मङ्गलं गौतमः प्रभुः । मङ्गलं स्थूलजद्राद्या । जैनो धर्म्मो-  
स्तु मङ्गलं ॥ २ ॥ ❀ ॥ शिवमस्तु सर्व जगतः । परिहितनि-  
रता ज्वंतु भूतगणाः । दोषाः प्रयान्तु नाशं । सर्वत्र सुखी  
ज्वतु लोकः ॥ ३ ॥ दासानुदासा इव सर्वदेवा । यदीय  
पादाब्जतले लुठन्ति । मरुस्थली कल्पतरुः सजीयात् । युग-  
प्रधानो जिनदत्त सूरिः ॥ ४ ॥ ❀ ॥ सिद्धांतसिंधुर्जगदेकबंधु ।  
युगप्रधानः प्रभुतां दधानां । कल्याणकोटी प्रकटीकरोतु ।  
सूरीश्वरो श्रीजिनजद्रसूरिः ॥ ५ ॥ ❀ ॥

॥ अथ साधुप्रतिक्रमण सूत्र ॥

॥ ❀ ॥ चत्तारि मङ्गलं । अरिहंता मङ्गलं । सिद्धा मङ्गलं ।  
साहू मङ्गलं । केवलिपणत्तो धम्मो मङ्गलं ॥ १ ॥ चत्तारि लो-  
गुत्तमा । अरिहंता लोगुत्तमा । सिद्धा लोगुत्तमा । साहू लो-

गुत्तमा । केवलिपन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो ॥ २ ॥ चत्तारिसरणं  
 पवज्जामि । अरिहंते सरणं पवज्जामि । सिद्धे सरणं पवज्जा-  
 मि । साहूसरणं पवज्जामि । केवलि पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि  
 ॥ ३ ॥ इत्थामि पम्भिमिन्नं ॥ पगामसिज्जाए । निगामसि-  
 ज्जाए । संथारा उवट्टणाए । परियट्टणाए । आउट्टणाए ।  
 पसारणाए । उप्पइया संघट्टणाए । कुइए कक्कराइए । ठीएजं-  
 नाइए । आमोसे ससरक्खामोसे आउलमानुलाए । सोअणव-  
 त्तिआए । इत्थी विप्परियासिआए । दिठ्ठी विप्परियासिआए ।  
 मण विप्परियासिआए । पाण नोयण विप्परियासिआए ।  
 जोमे देवसियो अइआरोकु । तस्समिच्चामि दुक्कमं ॥ पडि-  
 क्कमामिगोअरचरिआए । निरुखायरिआए । उग्घाडकवाड  
 उग्घाडणाए । साणावन्हादारा संघट्टणाए । मंमीपाहुडिआए  
 बलिपाहुडिआए । उवणापाहुडिआए । संकिए सहस्सागारे ।  
 आणेसणाए । पाणेसणाए । आणनोयणाए । पाणनोयणाए ।  
 वीअनोयणाए । हरिअनोयणाए पन्नाकम्मिआए । पुराक-  
 म्मिआए । अदिठ्ठहडाए । दगसंसठ्ठहडाए । रयसंसठ्ठहडाए ।  
 पारिसामणिआए पारिठावणिआए उहा सणनिक्खाए । जंउग्ग  
 मेणं उप्पायणेसणाए अपरिसुद्धं पम्भिगाहिअं । परिभुत्तंवा जंन-  
 परिठ्ठवणिअं । तस्समिच्चामिदुक्कडं ॥ ❀ ॥ पडिक्कमामि चा-  
 नक्कालं । सिज्जायस्स अकरणयाए उन्नतं कालं जंमोवगर-  
 णस्स । अप्पडिलेहणाए । दुप्पडिलेहणाए अप्पमज्जणाए  
 दुप्पमज्जणाए । अइक्कमे । वइक्कमे अइयारे अणायारे । जोमे-  
 देवसिउ अइआरोकु । तस्समिच्चामि दुक्कडं ॥ ❀ ॥ पडि-  
 क्कमामि एगविहेअसंजमे । पडिक्कमामि दोहिंवंधणेहिं । रागवं-

इणमेव निग्गंथं पावयणंसच्चं । अणुत्तरं । केवलियं पप्पिपुन्नं ।  
 नेआणयं । संसुद्धं । सल्लगत्तणं । सिद्धिमग्गं । मुत्तिमग्गं । नि-  
 ज्जाणमग्गं । निव्वाणमग्गं । अवितहमविसंधि । सब्बदुक्खपही-  
 णमग्गं । इत्थंछिआजीवा । सिज्जंति । बुज्जंति मुच्चंति । परि  
 निव्वायंति । सब्बदुक्खाणमंतंकरंति । तंधम्मं सदहामि । पत्ति-  
 आमि । रोएमि । फासेमि । पालेमि । अणुपालेमि । तंधम्मंस-  
 दहंतो । पत्तिअंतो । रोअंतो । फासंतो । पालितो अणुपालितो ।  
 तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स । अभुत्तिमि । आराहणाए ।  
 विरत्तमि विराहणाए । असंजमं परिआणामि । संजमं उवसं-  
 पज्जामि । अवंचं परिआणामि । वंचं उवसंपज्जामि । अकप्पं  
 परिआणामि । कप्पं उवसंपज्जामि । अन्नाणं परिआणामि ।  
 नाणं उवसंपज्जामि । अकिरिअं परिआणामि । किरिअं उव-  
 संपज्जामि । मिच्चत्तं परिआणामि । सम्मत्तं उवसंपज्जामि ।  
 अबोहिं परिआणामि । बोहिं उवसंपज्जामि । अमग्गं परि-  
 आणामि । मग्गं उवसंपज्जामि । जंसंजरामि । जंचन संजरामि ।  
 जं पप्पिक्कमामि । जंचन पप्पिक्कमामि । तस्स सब्बस्स ।  
 देवसिअस्स । अइआरस्स पप्पिक्कमामि । समणोहं संजय  
 विरय पप्पिहय पच्चक्खाय । पावकम्मो । अनियाणो । दिट्ठि  
 संपन्नो । मायामोसविवज्जित्ठ । अट्ठाइज्जेसु दीव समुद्देसु ।  
 पन्नरस कम्मभूमीसु । जावंति केविसाहू । रयहरण गुब्ब-  
 पप्पिग्गहधारा । पंचमहवयधारा । अठारसहस्स सीलांगधारा ।  
 अक्खयायारचरित्ता । तेसब्बे । सिरसा मणसा । मत्थएणवंदा-  
 मि ॥ खामेमि सब्ब जीवे । सब्बे जीवा खमंतुमे । मित्तीमे स-  
 ब्बभूएसु । वेरंमज्ज न केणई ॥ १ ॥ एवमहं आलोइअ नंदिअ ।

गरहिअ दुगुंठिअं सम्मं । तिविहेण पम्किंतो । वंदामि जिणे  
चनवीसं ॥ २ ॥ ❀ ॥ इति श्रीसाधुप्रतिक्रमणसूत्रं समाप्तं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सच्चित्त १ । दव २ । विगई ३ ॥ वाहण ४ । तंबो-  
ल ५ । बत्थ ६ । कुसुमेसु ७ ॥ पाणहि ८ । सयण ९ । विले  
वण १० ॥ बंन ११ । दिसि १२ । एहाण १३ । जत्तेसु १४ ॥  
इति चउद नियम गाथा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ वंदित्तू सुत्र ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वंदित्तु सबसिद्धे । धम्मायरिएअ सबसाहूअ । इहा-  
मि पम्किमिंतं । सावगंधम्माइआरस्स ॥ १ ॥ जोमे वया इआ-  
रो । नाणे तह दंसणे चरित्तेअ । सुहमोअ बायरोवा । तंनिंदे  
तंच गरिहामि ॥ २ ॥ डुविहे परिग्गहम्मी । सावज्जे बहुविहे-  
अ आरंजे । कारावणे अकरणे । पम्किमे देसिअंसवं ॥ ३ ॥  
जंबद्ध मिंदिएहिं । चनहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं । रांगेणव  
दोसेणव । तं निंदे तंच गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे  
ठाणेचंकमणे अणान्नोगे । अन्नित्तगे अनित्तगे । पम्किमे ॥ ५ ॥  
संकाकंखविगंगा । पसंसतहसंथवो कुलिंगीसु । सम्मत्तस्सइ  
आरे । पम्कि० ॥ ६ ॥ उक्काय समारंजे ॥ पयणेअ पयावणेअ  
जेदोसा । अत्तछाय परछा । उन्नयछाचेव तंनिंदे ॥ ७ ॥ पंच-  
एहमण्वयाणं । गुणवयाणंचतिएहमइआरे । सिक्खाणंच  
चनएहं ॥ पम्किमे० ॥ ८ ॥ पढमे अण्वयम्मी । थूलगपा-  
णाइवायविरईउं । आयरिअ मप्पसत्थे । इत्थपमायप्पसंगेणं  
॥ ९ ॥ बहबंधवविहेए । अइन्नारेजत्तपाणवुहेए । पढम वयस्स  
इआरे । पम्किमे० ॥ १० ॥ बीए अण्वयम्मी । परिथूलग  
अदिअवयण विरइओ । आयरिअ मप्पसत्थे । इत्थपमाय

प्पसंगेणं ॥ ११ ॥ सहस्सारहस्सदारे । मौसुवएसेअ कूमलेहे-  
 अ ॥ बीअवयस्सइआरे । पम्भिकमे० ॥ १२ ॥ तइएअणुवय  
 म्मी । थूलगपरदब्बहरणविरइउ । आयरिअमप्पसत्थे । इत्थ  
 पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥ तेनाहरुप्पउगे । तप्पमिरूवे विरुद्ध  
 गमणेअ । कूमतुल्लकूममाणे । पम्भिक० ॥ १४ ॥ चउत्थेअणुवय  
 म्मी । निच्चं परदारगमण विरइउ । आयरिअमप्पसत्थे । इत्थ-  
 पमा० ॥ १५ ॥ अपरिग्गहीया इत्तर । अणंग वीवाह तिब-  
 अणुरागे । चउत्थवयस्सइआरे । पम्भिक० ॥ १६ ॥ इत्तोअ-  
 णुव्वए पंचमम्मी । आयरिअमप्पसत्थंमि । परिमाणपरिहेए ।  
 इत्थ० ॥ १७ ॥ धणधन्नखित्तवत्थु रुप्पसुवणेअ कुविअ परि-  
 माणे । दुप्पएचउप्पयम्मी पम्भिक० ॥ १८ ॥ गमणस्सय परि-  
 माणे । दिसासुउहुं अहेयतिरिअंच । बुद्धिस्सइ अंतरद्धा ।  
 पढमम्मिगुणव्वएनिंदे ॥ १९ ॥ मज्झमिअ मंसंमिअ । पुप्फे-  
 अ फलेअ गंधमल्लेअ । उवजोग परीजोगे । बीअम्मिगुणव्वए  
 निंदे ॥ २० ॥ सच्चित्ते पम्भिवुद्धे । अप्पोलदुप्पोलिएअ आहारे ।  
 तुब्बोसहिन्नक्खणया । पम्भिक० ॥ २१ ॥ इंगाली वणसामी ।  
 जामी फोमीसु वज्जए कम्मं । वाणिज्जं चेव दंत लक्ख । रस  
 केस विसविसयं ॥ २२ ॥ एवं खुज्जंतपिल्लणंकम्मं । निल्लंठ-  
 णंच दवदाणं । सरदह तलावसोसं । असईपोसंच वज्जिजा  
 ॥ २३ ॥ सत्थग्गिमूसल जंतग । तणकठेमंतमूलजेसिज्जे ।  
 दिसेदिवावएवा । पम्भिक० ॥ २४ ॥ एहाणुवट्ठण वन्नगविलेवणे  
 सदरूवरसगंधे । वत्थासणआजरणे । पम्भिक० ॥ २५ ॥ कंदप्पे  
 कुक्कइए । मोहारि अहिगरण जोगअइरित्ते । दंसंमिअणठाए  
 तईअम्मिगुणव्वएनिंदे ॥ २६ ॥ तिविहेदुप्पणिहाणे । अणवठा

णेतहासइ विहुणे । सामाइय वितहकए । पढमे सिक्खा  
 वएनिंदे ॥ २७ ॥ आणवणे पेसवणे । सद्देखवेअ पुग्गलक्खेवे ।  
 देसाविगासिअम्मी । वीएसिक्खावएनिंदे ॥ २८ ॥ संथारुच्चार-  
 विही । पमायतह चेव जोयणाओए पोसहविहिविवरीए । तइ  
 एसिक्खावएनिंदे ॥ २९ ॥ सच्चित्तेनिक्खमणे ॥ पिहणेववएस-  
 मद्धरेचेव । कालायक्कमदाणे । चउत्थेसिक्खावएनिंदे ॥ ३० ॥  
 सुहिएसुअ दुहिएसुअ । जोमे असंजएसुअणुकंपा । रागेणव-  
 दोसेणव । तंनिंदेतंचगरिहामि ॥ ३१ ॥ साहूसुसंविजागो । नक  
 उं तव चरण करण गुत्तीसु । संतेफासुअदाणे । तंनिंदे तंचगरिहा-  
 मि ॥ ३२ ॥ इहलोएपरलोए । जीविअमरणेअ आससपण्णे ।  
 पंचविहो अइआरो । मामझं हुज्जमरणंते ॥ ३३ ॥ काएण  
 काइअस्स । पम्भिकमे वाइअस्सवायाए । मणसा माणसिअस्स ।  
 सबस्सवयाइयारस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवयसिक्खागारवेसु । सण्णा  
 कसाय दंमसु । गुत्तीसुअ समिईसुअ । जोअइआरो तंनिंदे ॥  
 ॥ ३५ ॥ सम्मदिठीजीवो । जइविहुपावं समायरेकिंचि । अप्पो  
 सिहोइवंधो । जेणननिद्धंधसंकुणइ ॥ ३६ ॥ तंपिहुसपम्भिकमणं ।  
 सप्परिआवंस उत्तरगुणंच । खिप्पं उवसामेई । वाहिब सुसि  
 विखउं विज्जो ॥ ३७ ॥ जहाविसं कुठगयं । मंतमूल विसारया ।  
 विज्जाहणंत मंतेहिं । तोतं हवइ निविसं ॥ ३८ ॥ एवं अठविहं  
 कम्मं । राग दोस समाज्जिअं । आलोअंतोअ निंदंतो । खिप्पं  
 हणइसुसावउं ॥ ३९ ॥ कयपावोविमणस्सो । आलोइअनिंदिअ  
 गुरुसगासे । होइअइरेगलहुउं । उहरिअन्नरुवन्नारवहो ॥ ४० ॥  
 आवस्सएण एएण । सावउं जइवि बहुरउं होइ । दुक्खाणमंत  
 किरिअं । काही अचिरेणकालेण ॥ ४१ ॥ आलोअणाबहुविहा



नयसंज्ञरिआपमिक्कमणंकाले । मूलगुण उत्तरगुणे । तंनिदेतंच  
 गरिहामि ॥ ४२ ॥ तस्सधम्मस्सकेवलिपणत्तस्स । अण्णुठ्ठि  
 मिआराहणाए । विरजमिविराहणाए । तिविहेणपमिक्कंतो ।  
 वंदामिजिणेचउवीसं ॥ ४३ ॥ जावंतिचेइआइं । उट्ठेअअहेअ  
 तिरिअलोएअ । सवाइंताइंवंदे । इहसंतोतत्थसंताइं ॥ ४४ ॥  
 ( जगवन् ) जावंति केविसाहू । जरहेरवए महाविदेहेअ । सब्बे  
 सितेसिपणज । तिविहेणतिदंरुविरिआणं ॥ ४५ ॥ चिरसंचि  
 य पाव पणासणीए । जव सय सहस्स महणीए । चउवीसजिण  
 विणिग्गयकहा । बउलंतुमेदीअहा ॥ ४६ ॥ मममंगलमारिहंता  
 सिद्धासाहूसुअंचधम्मोअ । सम्मदिठीदेवा । दिंतुसमाहिंचबो  
 हिंच ॥ ४७ ॥ पमिसिद्धाणं करणे । किच्चाण मकरणेहिं पमि  
 क्कमणं । असइहणेअतहा । विवरीअ परूवणाएअ ॥ ४८ ॥ खा  
 मेमिसवजीवे । सब्बेजीवाखमंतुमे । मित्तीमेसवभूएसु । वैरंमज्ज  
 नकेणइ ॥ ४९ ॥ एवमहंआलोइअनिंदिअ । गरहिअदुगुंठियंस  
 म्मं । तिविहेणपमिक्कंतो । वंदामिजिणेचउवीसं ॥ ५० ॥ ❀ ॥

॥ इति श्री श्रावकप्रतिक्रमणसूत्र समाप्तः ॥ ❀ ॥

॥❀॥ अथ दशपच्चकखाणविचार लिख्यते ॥❀॥

॥❀॥ तहां प्रथम चउदै नियमसंज्ञारै सो विगय देसावगा  
 सीयुक्तइसतरै पच्चकखाणकरै ॥❀॥ उग्गएसूरे नमोक्कारसहियं  
 ( मुंठसीं ) पच्चकखाइ चउविहंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइ  
 मं । साइमं । अण्णत्थणाओगेणं । सहस्सागारेणं । महत्तरागारे  
 णं । सब्बसमाहिवत्तियागारेणं । विगइउपच्चकखाइ । अण्णत्थणा  
 ओगेणं । सहस्सागारेणं । लेवालेवेणं । गिहत्थसंसिठेणं । उक्खि  
 त्तविवेगेणं । पडुच्चमक्खिएणं । पारिछावणियागारेणं । महत्तरा-

गारेणं । सबसमाहिवत्तियागारेणं ॥ देसावगासियं जोगपरिजोगं  
पञ्चक्खाइ । अण्णत्थणाजोगेणं । सहस्सागारेणं । महत्तरागारेणं ।  
सबसमाहिवत्तियागारेणं । वोसरइ ॥ इति नवकारसीपञ्च  
क्खाणं विगय देशावगासीयुक्तं ॥ १ ॥ ॥ \* ॥ ॥ \* ॥

॥ \* ॥ तथा जो श्रावक नियम संजारे नही । सो विगइका  
( अर ) देसावगासीका आगार नपचखै । निकेवल । नवकारसी  
आदिक पञ्चक्खाण करै ॥ यथा ॥ ॥ \* ॥ ॥ \* ॥

॥ \* ॥ उग्गएसूरे नमोक्कार सहियं पञ्चक्खाइ । चउविहंपि  
आहारं । असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अण्ण० । सह० ।  
वोसरइ । इति नवकारसी पञ्चक्खाण ॥ आगार ॥ २ ॥ ॥ श्री ॥

॥ \* ॥ पोरसिं ( मूठसिं ) पञ्चक्खाइ । उग्गए सूरे चउवि  
हंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अण्णत्थ० ।  
सहस्सा० । पण्णकालेणं । दिसामोहेणं । साहुवयणेणं । सब० ।  
वोसरइ ॥ विगइउ पञ्चक्खाइ । इत्यादि पुर्व्वकीपरैकहणा ॥  
इति पोरसी पञ्चक्खाण ॥ २ ॥ आगार ॥ ६ ॥ ॥ \* ॥

॥ \* ॥ इसीमाफक साढपोरसीका पञ्चक्खाण जाणना । इतना  
विशेष है । पोरसिं पञ्चक्खाइ ( इहां ) साढपोरसिंपञ्चक्खाइ  
कहणो ॥ इति साढपोरसीपञ्चक्खाण आगार ॥ ६ ॥ \* ॥ सूरे  
उग्गए । पुरमहुं अवहुं ( वा ) पञ्चक्खाइ । चउविहंपि आहारं ।  
असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अण्ण० । सह० । पण्ण० ।  
दिसा० । साहु० । मह० । सब्ब० । विगइउ पञ्चक्खाइ । इत्यादि  
पूर्व्ववत् । इति पुरमहुपञ्चक्खाण ॥ ३ आगार ७ ॥ \* ॥ ॥ श्री ॥

॥ \* ॥ पोरसिं साढपोरसिं ( वा ) पञ्चक्खाइ । उग्गएसूरे ।  
चउविहंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अण्ण० ।

एणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अण्णं । सहं । महं । सब्बं ।  
वोसरइ ॥ इति दिवसचरमपच्चक्खाण १० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दिवसचरमं पच्चक्खाइ ङुविहंपि आहारं । असणं ।  
खाइमं । अण्णं । सहं । महं । सब्बं । वोसरइ ॥  
इति दिवसचरमङुविहार पच्चक्खाण ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पाणहारदिवसचरमं पच्चक्खाइ अण्णं । सहं ।  
महं । सब्बं । वोसरइ ॥ ❀ ॥ इति पाणहार पच्चक्खाण ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जवचरमं पच्चक्खाइ । तिविहं चउविहंपि आहारं ।  
असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अण्णं । सहं । महं ।  
सब्बं । वोसरइ ॥ आगार ॥ ४ ॥ ( जवचरम दोआगार का पिण  
होय ) ॥ इति जवचरमपच्चक्खाण ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तथा गंठसहि । मुंठसहि । अंगुठसहि । प्रमुख अ  
जिग्रह पच्चक्खाणके पिण यह च्यार आगार । अण्णं । सहं ।  
महं । सब्बं । वोसरइ । पांचमो चोलपट्टागारेणं सो साधुके  
होय ॥ ❀ ॥ इति अजिग्रह पच्चक्खाण ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अहणं जंते । तुम्माणं समीवे । देसावगासियं पच्च  
क्खामि । दवउ । खित्तउ । कालउ । जावउ । दव्वउणं देसा  
वगासियं । खित्तउणं इत्थवा अणत्थवा । कालउणं महत्तथा  
रणापमाणे । जावनियमं पच्चक्खामि । जावउणं जावगहेणं  
नगहिज्जामि । ठलेणं नठलिज्जामि । अण्णकेविरायंकेणवा ।  
एसो परिणामो नपरिवज्जइ । ताअजिग्रह । अणत्थणानो  
गेणं सहस्सागारेणं । महत्तरागारेणं । सबसमाहिवत्तियागारे  
णं । वोसरइ ॥ इति देसावगासीपच्चक्खाण ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तथा साधु पच्चक्खाणकरै । तवदेसावगासी नहिं

पचखै । अरुतिविहार उपवासमें । आविलमें निवीमें एकासण  
प्रमुखमें पाणस्सका ६ आगारपचखै ( सो दिखावेहै ) पाणस्सा॥  
लेवाडेणवा । अलेवाडेणवा अत्थेणवा वहलेणवा ससित्थेणवा  
असित्थेणवा बोसरइ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ प्रत्याख्यान आगारार्थ लिख्यते ॥

॥ उग्गए सूरें नमोकार सहियं पचक्खाइ चउव्विहंपि आहारं । ( अर्थ )  
इहां गुरु कहै पचक्खाइ शिष्य कहै पचक्खामि ॥ पचक्खाइका अर्थ सर्व-  
ठिकाणें अंगीकार वाचक । जाणनो ( जैसें ) सूरज उदय हुवांवाद । नवका  
रसी ब्रत अंगीकार करूं । यह पचक्खाण ( महर्त्त ) दोघडी काल उपरांत ।  
जहां तक नवकार गुणकर पारूं नहिं । तहां तक ( चउव्वि० ) चारूं आहारनो  
त्यागरूप ब्रत अंगीकार करूं ॥ ( चार प्रकारको आहार लिखते हैं ) ।  
असणं ॥ पाणं ॥ खाइमं ॥ साइमं । ( असणं व्याख्या ) असण कहतां  
अन्न । चोषा ज्वारि वरटी मूंग चिणा गहुं प्रमुख सर्वधान । सत्तु गहुंको  
आदिलेके सर्व तरैको आटो ॥ सर्व तरैका साग । लाडू  
प्रमुख सर्वपकवान । सूरणादिक सर्वकंद । दूध दही मांसादिक । सर्वक-  
वली वस्तु । हींग विरहाली । लूण सैंधवादिक । इत्यादिक सर्व  
अशणमांहि जाणना ॥ १ ( पाणं । व्याख्या ) आढण जवोदक  
तुषोदक तंडुलोदक उष्णोदक शुद्धोदक सर्वतरेकाजल पाण आगारमें  
जाणना ॥ २ ॥ ( खाइमं । व्याख्या ) खादिम । सूंखनी नालेर  
खजूर द्राख सेक्योधान आंवा केला काकनी अखरोट खारक विदाम  
प्रमुख सर्व जातनोमेवो । सर्व जातनाफल ॥ खादिमजाणना ॥ ३ ॥  
( साइमं । व्याख्या ) स्वादिम । तंबोल सूंठि मिर्च पींपर हरै बहेना  
तुलसी कसेंलो काथो जेष्ठीमधु तज तमालपत्र इलायची लवंग वायवि-  
डंग अजमो अजमोद कुलिंजण चिणकबोवा कचूर नागरमोथ पांन  
मुपारी पुहकरमूल जवासामूल बावची बांजलठालि धवठालि खेजूर  
गाल खयरसार ए सर्वस्वादिम जाणना ॥ ४ ॥ अब अनाहार लिखतेहैं ॥  
नींवठालि मूल पांन सिली गोमुत्र गिलोय किरायतो अतिविष कूडउ सुक

डिराख रोहिणीताल पीपलामूल बच धमासन रीगणी एलियो चिणोठी कयर  
 बोरिनामूल ( इत्यादि ) अणाहार पिण इच्चासंयुक्त भोगना ( यहजो ) इच्चा  
 विना अनिष्ट पणें लीजै । जबतो अनाहारहै । जो इच्चासंयुक्त जावता ली-  
 जै तो आहार को दूषण लगै । ( अबपच्चक्खाणके आगारोंका अर्थ लिखते  
 हैं ) जिस पच्चक्खाणमें जितने आगार होय ॥ सो आगार रखके पच्चक्खाण  
 नियम करै ॥ अन्नत्थणा भोगेणं ॥ १ ॥ ( व्याख्या ) अनाभोगदाली ।  
 अनाभोग कहियै अत्यन्त विस्मृत होणेंसें ) किया जो ( पच्चक्खाण  
 यादनरहै । चूलकर कोई चीज मुंहमें घाली होय वा खाणेंमें आई होय  
 पिण जाण्यां पीठे तत्काल नाख देवै तो पच्चक्खाण भोजै नही । जाण्यां  
 पठै चूहण करै तो पच्चक्खाण भोजै ॥ १ ॥ पन्न कालेणं ।  
 ( व्याख्या ) कालकी प्रवृत्तता । आकाशै गर्द उडतीहोय । वा  
 आकाशै बढ़लगाया होय । तथा पर्वत प्रमुखकी ओट आजावे । सूरज  
 न दीसै । तब भ्रमसुं पच्चक्खाण काल संपूर्ण हुवो जाण कर भोजन  
 करै तो व्रत भंग न होय ॥ ३ ॥ सहस्सागारेणं । ( व्याख्या ) सहसा-  
 कार कहियै अत्यन्त उतावलकै जोगे । अथवा । अकस्मात् विलोवतां  
 तोलतां घृत प्रमुखनो भांटो मुखमें । पमे तो । व्रतभंग न होय ॥ २ ॥ दि-  
 सा मोहेणं ( व्या० ) दिशकों अजाणतो वैसे । जो दिशा चूल मनुष्य ।  
 पूर्वदिशाकुं पश्चिम दिशि जाणें । इस कारणसें । पच्चक्खाण काल पूर्ण-  
 हुवा विनां भोजन करै तो व्रतभंग न होय ॥ ४ ॥ साहुवयणेणं ( व्याख्या )  
 साधूकै बचनसे उगधाडा पोरिसी आदिक भ्रमसंयुक्त सुणके । पच्चक्खाण  
 काल पूरण हुवो जाणि कर भोजन करै तो व्रतभंग न होय ॥ ५ ॥ सब  
 समाहि बत्तिया गारेणं ( व्याख्या० ) पच्चक्खाण काल पूरण हुवां प्रथम  
 हीज अकस्मात् शूलादिक रोग नुपजै । तिससें कदास परिणामोंकी थिरता  
 नरहै । आर्त्त रौद्र ध्यान उत्पन्न होय । तब उसरोगीकुं रोग मिटावन वावत  
 औषधादिक देवै । वा आपलेवै । तो पच्चक्खाण भंग नही होय ॥ ६ ॥  
 महत्तरागारेणं ( व्या० ) पच्चक्खाण पालणेंसें । जितनी कर्मोंकी निर्जरा  
 होती है । उसनिर्जरासें अधिक निर्जरा होनेका कारण । और कोई

पुरुषसें वन नहीआवै । औसा जो । चैत्यसंघादि प्रयोजन होनेसें । पञ्चखाण काल पूरण हुवा विनां जोजन करै तो व्रत जंग न होय ॥ ७ ॥ सागारी आगारेणं ( व्या० ) गृहस्थ देखतां साधु जोजन न करै । औसी जिनराजकी आज्ञाहै । इसीसें कोई साधुनें एकासनादिक पञ्चखाण किया है । जोजन करनेकुं बैठहै । तिस वखत कोईक गृहस्थ साधु पास आय बैठे । तब साधु उस ठिकाणेंसुं उठ कर ओर ठिकाणें जायके जोजन करै तो व्रत जंग नहोय ॥ और गृहस्थकों यह आगार ऐसें है ) कि जिस पुरुषकी निजर लगती होय तो उस आयां उठि कर ओर ठिकाणें जोजन करै तो पञ्चखाण जंग नहोय ॥ ८ ॥ आनुद्वण पसारेणं ( व्या० ) पगप्रमुख जो एकठे करनेसें । तथा पसारनेसें । थोमासा आसन चल जाय । तो व्रतजंग नहोय ॥ ९ ॥ गुरु अनुद्वारेणं ( व्या० ) आपका गुरु आणेंसें । तथा । आपसें । कोई वना पुरुष आणेंसें । विनय निमित्तै । एकासणादि व्रतमें । जोजन करतो पिण आसन ठोरु उठ खडो होय । तोपिण व्रत जंग नहोय ॥ १० ॥ पारिष्ठावणियागारेणं ( व्या० ) ( सर्व पञ्चखाणां मे यह आगार साधुका है ) जो आहार नाखणेंसें बहुत जीव विराधना होती जाण कर ( गुरु कहै ) वह सरस आहार है परठोमति । ऐसी आज्ञा देवे ( तो ) एकासणादि व्रतधारी साधु । दूसरी वखत आहार करै । तो पिण व्रतजंग नहोय ॥ ११ ॥ लेवालेवेणं ( व्या० ) जोजन करनेका थाल प्रमुख जाजन । तिसकै मांहि घृतादिक विगय द्रव्यका अंश लगाहै । तिसकुं हाथ प्रमुख सें पूंढेरा । परंतु किंचित वेमालुमसा रह गया होय । उस जाजनमें आयंविजादि व्रतधारी जोजन कर लेवे । तो व्रत जंग नहोय ॥ १२ ॥ उक्खित्तविवेगेणं ( व्याख्या ) आयंविजादि पञ्चखाणमें ॥ नही खाणें जोग्य जो विगय द्रव्य प्रमुख । ( तिसका फरस ) खाणें जोग्य द्रव्यसें किंचित होगया होय । वहखाणें में आजवै । तो व्रत जंग नहोय । ॥ १३ ॥ गिहत्थ संसिठेणं ( व्या ) जोजन पुरुषै जिस सेती । औसा कुडडा आदि जाजन । विगय प्रमुख द्रव्य सें वेमालुम खरडा होय । प्रत्यक्ष निजरसें कदाचित्मालुम न होय । जो उस वासणसें जोजन पुरुषै



तो व्रत जंग न हो ॥ १४ ॥ पुरुषमुक्खिणं ( व्या० ) सर्वथा लूखी  
रोटी खाखराप्रमुख द्रव्य किंचिन्मात्र घृतादिकसुं वेमालुम चोपडनें में आया  
होय । परंतु घृतादिक का सवाद मालुम नही पडता होय । जो ( नीवी )  
पञ्चक्खाण मध्य ऐसा द्रव्यकुं खाणेंमें आजवेतो व्रतजंग न होय ॥ १५ ॥

॥ इति पंचदशा गाराणां लेशतोऽर्थ संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ दोचेव नमुकारो । आगाराब्बहुंति पोरसिए । सत्तेवय पुरमहे । एगास  
णंमि अठेव ॥ १ ॥ सत्तेग छाणस्सओ । अठे वय आयांबिलंमि आगारा । पंचे  
वयजत्तठे । षण्णाणे चरिमवत्तारी ॥ २ ॥ पंचचत्तरो अग्निग्गहे । निवीए  
अठ नवय आगारा । अप्पावरणे पंचत्त । हवंति सेसेसु चत्तारी ॥ ३ ॥

॥ ❀ ॥ इति आगार संख्यागाथा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ मुहपत्ती पडिलेहण ॥ ❀ ॥

॥ सूत्र अर्थ साचो सरदहुं १ ॥ सम्यक्तमोहनी २ ॥  
मिथ्यात्वमोहनी ३ ॥ मिश्रमोहनी ४ ॥ परिहरुं ४ ॥  
( यहच्यार पमिलेहण मुहपत्तीखोलतीवखत कही जै ) काम  
राग १ ॥ स्नेहराग २ ॥ दृष्टिराग ३ ॥ परिहरुं ( यह  
सातेवोल प्रथम कही जै ) । सुगुरु १ ॥ सुदेव २ ॥ सुधम्म ३ ॥  
आदरुं ॥ कुगुरु १ ॥ कुदेव २ ॥ कुधम्म ३ ॥  
परिहरुं ॥ ज्ञान १ ॥ दर्शन २ ॥ चारित्र ३ ॥  
आदरुं । ( यहनवपमिलेहणमावै हाथे करीजै ) । ज्ञानविरा-  
धना १ ॥ दर्शनविराधना २ ॥ चारित्रविराधना ३ ॥  
परिहरुं ॥ मनोगुप्ति १ ॥ वचन गुप्ति २ ॥ कायगुप्ति ३ ॥  
आदरुं ॥ मनोदंरु १ ॥ वचनदंरु २ ॥ कायदंरु ३ ॥  
परिहरुं ॥ ( यह नव पमिलेहण जीमणै हाथे करीजै ।  
यह पचवीस बोल मुहपत्तीका जाणना ॥ अब पचवीस पमिलेहण  
अंगनी कहतेहैं ॥ कृष्णलेस्या १ ॥ नीललेस्या २ ॥

कापोतलेस्या ३ ॥ परिहरुं ॥ माथै निलाडै ॥ रुद्धिगारव  
१ ॥ रसगारव २ ॥ सातागारव ३ ॥ मुखै परिहरुं  
मायाशल्य १ ॥ नियाणाशल्य २ ॥ मिढादंशणशल्य  
३ ॥ हीयै परिहरुं ॥ क्रोध १ ॥ मांन २ ॥ ( जीमणैकांधै  
काखे परि० ) ॥ माया १ ॥ लोभ २ ॥ ( मावे कांधै वगले  
परि० ) । हास्य १ ॥ रति २ ॥ अरति ३ ॥ ( मावे हाथेपरिहरुं ) ॥  
जय १ ॥ शोक २ ॥ डुगंठा ३ ॥ ( जीमणे हाथे परिहरुं ) ॥  
पृथ्वीकाय १ ॥ अप्पकाय २ ॥ तेऊकाय ३ ॥ ( मावे पगे परि  
हरुं ) । वाऊकाय १ ॥ वनस्पतीकाय २ ॥ त्रसकाय ३ ॥ ( जी  
मणैपगे परिहरुं ) ॥ इति मुहपत्ती पडिलेहणसंपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ थापनाचार्यनी पमिलेहणकरतां ॥ १३ ॥ बोलचिंतवी  
जै सो लिखिते हैं ॥ सुद्धस्वरूपधारुं १ ॥ ज्ञान २ ॥ दर्शन  
३ ॥ चारित्रसहित ४ ॥ सरदहणासुद्धि ५ ॥ प्ररूपणासुद्धि ६ ॥  
दर्शनसुद्धि ७ ॥ सहित पंचाचारपालूं ८ ॥ पलावुं ९ ॥ अनु  
मोडुं १० ॥ मनोगुप्त ११ ॥ वचनगुप्त १२ ॥ कायगुप्त १३ ॥  
एवं १३ ॥ बोल श्रीधर्मरत्नप्रकरण सूत्रवृत्तौ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ आलोयण लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आजूणा चार पहर दिवसमें । जोमें जीव विराध्या  
होय । सातलाख पृथ्वीकाय । सातलाख अप्पकाय । सातला  
ख ते ऊकाय । सातलाख वाऊ काय । दशलाख प्रत्येक वनस्प  
ती काय । चवदैलाख साधारण वनस्पतीकाय । दोयलाख  
वेन्द्री । दोयलाख तेंद्री । दोयलाख चउरिंद्री । चारलाख देव  
ता । चारलाख नारकी । चारलाख पंचेन्द्रीतिर्यच । चवदैला  
ख मनुष्य । एवं चारगती । चौरासीलाख जीवायोनिमें । जो

कोई जीवहणयो होय । हणायो होय । हणतां प्रते नलोजा  
 एयो होय । तेसहू । मन । वचन । कायाइंकरी । मिठामिडुक्कडं ॥  
 प्राणातिपात १ । मृषावाद २ । अदत्तादांन ३ । मैथुन ४ ।  
 परिग्रह ५ । क्रोध ६ । मांन ७ । माया ८ । लोभ ९ । राग  
 १० । द्वेष ११ । कलह १२ । अभ्याख्यान १३ । परपरीवा  
 द १४ । पैशुन्य १५ । अरति रति १६ । मायामृषावाद १७ ।  
 मिथात्वशल्य १८ । एअद्धारहपापस्थानक सेव्या होय । सेवा  
 या होय । सेवतांप्रते नलाजाण्यां होय । ते सहू मन वचन  
 कायाइं करी । मिठामि डुक्कडं ॥ ❀ ॥ ज्ञान । दर्शन । चारित्र  
 पाटी । पोथी । ठवणी । कमली । नवकरवाली । देवगुरुधम्म  
 नी आसातनाकरी होय । पनरैकर्मादाननी आसेवनाकरी होय  
 राजकथा । देशकथा । स्त्रीकथा । जोक्तकथा । करी होय ।  
 और जो कोई परनिंदा ये करी । पाप कियो होय । करायो होय  
 करतांप्रते अणुमोद्युं होय । ते सर्व । मन । वचन । कायाये  
 करी । दिवसअतीचार आलोयणेंकरी । पक्कमणा माहें  
 आलोचं । तस्स मिठामि डुक्कडं । इति लघुअतीचार ॥

॥ ❀ ॥ अथ पाखी चौमासी संवहरी वृद्धअतीचार ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नाणंमिदंसणंमिअ । चरणंमितवेय तहयविरयंमि ।  
 आयरणंआयारो । इह एसो पंचहाजणित्ठं ॥ १ ॥ अर्थः ॥ ज्ञाना  
 चार १ ॥ दर्शनाचार २ ॥ चारित्राचार ३ ॥ तपाचार ४ ॥  
 वीर्याचार ५ ॥ एवं पांचविधि आचारमांहि जोअतीचार ।  
 पक्षदिवसमांहि । सूक्ष्म बादर । जाणतां अजाणतां । हुअो  
 होय तेसहू मन वचन कायाइंकरी मिठामिडुक्कडं ॥ ❀ ॥ ( तत्र

ज्ञानाचारना आठअतीचार ॥ काले विणए बहुमाणे । उवहाणे  
तहयनिन्नवणे । वंजण अत्थतडुन्नए । अठविहो नाणमायारो  
॥ १ ॥ ज्ञान कालवेलामांहि पढिउंगुणिउं नही । अकालेपढिउं ।  
विनयहीन । बहुमांनहीन । उपधांनहीन । श्रीउपाध्यायकनें ।  
नहीपढिउं । अथवा अनेराकनें पढिउं । अनेरो गुरु कह्यो ।  
व्यंजन अर्थ तडुन्नय कूडोपढ्यो । देववांदणें । पडिक्कमणें ।  
सिज्झाय करतां पढतां गुणतां । कूडोअक्षर कानेंमात्रें । अधिको  
उठो । आगलपाठलज्जणयो । सूत्र अर्थ कूडाज्जणयो । ज्जणीनें  
वीसारयो । तपोधनतणेंधर्मे । काजो अणज्जधरयै । दांमीअण  
पमिलेही । वसती अणसोधी । असिझाई अणोजकालवेला  
मांहि । दसवैकालिक प्रमुख । सिद्धांतज्जणयो गुणयो । योगव  
ह्यांपखें ज्जणयो ॥ ज्ञानोपगरण ॥ पाटी पोथी ठवणी कवली  
सांपमा सांपमी वहीदस्तरी उलियाकागलप्रमुख प्रतें । आसातना  
हुई । पगलागो । थूकलागो । उंसीसैमूंकयो कनेंठतां आहार  
नीहारकीधो । ज्ञानद्रव्य ज्ञक्षणउपेक्षणकीधो । प्रज्ञापराधे  
विणास्यो । विणसतोउवेख्यो । ठतीसत्तें सार संजाल नकीधी । ज्ञान  
वंत प्रतें महरवह्यो । अवज्ञा आसातना कीधी । कोईप्रतें ज्जणतां  
गुणतां प्रद्वेष मत्सर अंतराय अपघातकीधो । मतिज्ञान ।  
श्रुतिज्ञान अवधिज्ञान । मनपर्यवज्ञान । केवलज्ञान । ए पांच  
ज्ञानतणी । असद्वहणाकीधी । कोई तोतलो वोवमोहस्यो वितक्यो ।  
आपणा जाणपणातणो गर्वचिंतव्यो ॥ ❀ ॥ अष्टविधज्ञा  
नाचारविषय जोअतीचार । पक्षदिवसमांहि । सूक्ष्मवादर  
जाणतां अजाणतां हुवोहोय । तेसहू मन वचन कायाइंकरी  
मिठामिडुक्कमं ॥ ❀ ॥ दशनाचारनाआठअतीचार ॥ ❀ ॥

निस्संकिय निक्कंखिअ । निवितिगिह्वा अमूढ दिठीअ । उवबू  
 हथिरीकरणे । वल्लपजावणे अठ ॥ १ ॥ देवगुरुधर्मतणेंविषै  
 निस्संकपणोनकीधो । तथाएकांत निश्चयधरयो नही । सगलाई  
 मत जलावे । एहवी श्रद्धाकीधी । धर्मसंबंधियाफलतणें विषै ।  
 निःसंदेहबुद्धिधरीनही । चारित्रिया साधु साधवीतणा मलिमली  
 नगात्रदेखी । दुगंगाजपजावी । मिथ्यात्वीतणी पूजा प्रजावना  
 देखी । मूढदृष्टि पणोकीधो । संघमांहि गुणवंततणी । अनुप  
 वृंहणा । अस्थिरीकरण । अवात्सल्य अप्रीति अन्नक्ति चिंतवी ।  
 संघमांहि थिरीकरण । वात्सल्यशक्तिबतें प्रजावनानकीधी ।  
 देवद्रव्यविणासिउ । विणसतुं उवेषीउ । बतीशक्तें सारसं  
 जाल नकीधी । साधर्मिकस्युं कलहकर्मकीधो । जिनजवनतणी  
 चौरासी आसातनाकीधी । गुरुप्रतें तेतीस आसातना कीधी ।  
 अधौत वस्त्रे देवपूजाकीधी । त्रिहुंठामपाखें देवपूज्या । वासकूपी  
 कलसतणो ठबकोलागो । मुखतणीवाफलागी । ठवणारिय  
 हाथ थकी पमिउ । पमिलेहवो वीसारयो । नवकरवालीनें पगलागो  
 ॥ ❀ ॥ दर्शनाचार विषय जोअतीचार० ॥ ३ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चारित्राचारना आठअतीचार ॥ पणिहाणयोगजुत्तो ।  
 पंचहिंसमईहिं तिहिंगुत्तीहिं । एस चरित्तायारो । अठविहो होइ  
 नायवो १ ॥ इरियासुमती १ ॥ ज्ञाषासुमती २ ॥ एषणासुमती  
 ३ ॥ आयाणजंरुमत्तनिक्खेवणासुमती ४ ॥ उच्चारपासवणखे  
 लजल्लसंधाणपारिछावणियासुमती ५ ॥ मनोगुप्ती १ ॥ वचनगुप्ती  
 २ ॥ कायगुप्ती ३ ॥ एवं पंचसुमती तीनगुप्ती । रूमीपरें पाली  
 नही ॥ ❀ ॥ साधुतणेंसदैव अष्टविध चारित्राचार विषईउजिको  
 अतीचार० ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ विसेषतः श्रावकतणे धर्मे श्रीसम्यक्तमूल बारहव्रत  
 श्रीसम्यक्ततणा पांच अतीचार ॥ ❀ ॥ संका कंख विगंगा । पसंत  
 तहसंथवो कुलिंगीसु ॥ संका श्रीअरिहंत तणी । बल अति  
 सय ज्ञानलक्ष्मी गांजीर्यादिकगुण । सास्वतीप्रतिमा । चारित्रि  
 याना चारित्र । जिनवचनतणो संदेहकीधो । ( आकांक्षा ) ब्रह्मा  
 विष्णु महेश्वर क्षेत्रपाल गोगो गोत्रदेवता ग्रहपूजा विणायग ।  
 हनुमंत । इत्येवमादिक । ग्राम गोत्र देश नगर जूजूआ । देव  
 देहराना प्रजावदेखी । रोगिं आतंकै । इहलोक । परलोकार्थे पू  
 ज्या मान्या । बौद्ध सांख्यादिक सन्यासी । जरमा । जगत ।  
 लिंगिया । योगी । दरवेश । अनेराई दर्शनियानो । कष्टमंत्र  
 चमत्कारदेखी । परमार्थ जाण्यांविन चूल्या । अनुमोद्या ।  
 कुशास्त्रसीख्या । सांजल्या । सराध । संवठरी । होली ।  
 बलेव । माहीपूनिम । अजापडिवा । प्रेतबीज । गोरत्रीज ।  
 विनायगचोथ । नागपांचम । जूलणाठठ । शीलसातम । द्रो  
 आठम । नठली नवम । अहवदसम । व्रतइग्यारस । वठ  
 बारस । धनतेरस । अनंतचौदस । आदित्यवार । उत्तराइन ।  
 नवोदक । ज्यागजोगउतारणा कीधा । पींपलपाणीघाल्या । घ  
 लाव्या । घरबाहिर । कूई तलाव नदी समुद्र कुरुपुन्यहेतु  
 स्नानकीधा । दांनदीधा । ग्रहण शनीश्वर माहमास नवरात्रि  
 नाहिया । अजाणनाथाप्या । अनेराई व्रतोलाकीधा कराव्या  
 विचिकिठा । धर्मसंबन्धियाफलतणो संदेहकीधो । जिणअरि  
 हंत । धर्मनाआगर । विश्वोपकार सागर । मोक्षमार्ग दातार ।  
 देवाधिदेवबुद्धै सुद्धजावै नपूज्या नमान्या । महातमाना जात  
 पाणीतणी दुगंगाकीधी । कुचारित्रिया देखी । चारित्रियाऊप



रि अज्ञावहुन । मिथ्यात्वीतणी प्रज्ञावना देखी । प्रसंसाकीधी ।  
 प्रीतिमांसी । दाक्षिण्यलगै तेहनोधर्म मान्युं ॥ \* ॥ श्रीसमकित  
 विषय । जो अतीचार । पक्षदिवसमांहि । सूक्ष्म वादर  
 जाणतां अजाणतां हुन होय ते सहू मन वचन कायाइंकरी मि  
 ङ्गामिदुक्कडं ॥ १ ॥ \* ॥ पहिले प्राणातिपात विरमणव्रतें पांच  
 अतिचार ॥ \* ॥ वह बंध ठविठेए । अइजारेनत्तपाणवुठेए० ।  
 द्विपद चौपद प्रतें रीस वसें गाढोघान प्रहारघाल्यो । गाढै बंध  
 नवांध्या । घणें नारपीड्या । निर्लांठन कर्मकीधा । चारपांणी  
 तणी वेला सारसंजालनकीधी । लहिणेंदेणें किणही प्रतें लंघा  
 व्युं । तेणें नूखै आपणजीम्या । अणगलपाणी वावरयो । रूढै  
 गल्यो नही । गलाव्योनही । अणगलपांणीजील्या । लूगमा  
 धोया । ईंधण अणसोध्योजाल्युं । साप कानखजूरा । सुलह  
 ला । माकरु । जूआं । गोगिंमा । साहतां मूआंदूषव्यां । रूढै  
 थानकनमूंक्या । कीडी । मकोसी । नदेही । घीवेली । कातरा  
 चूमेलि । पतंगिया । मेरुका । अलसिया । ईली । कूति ।  
 मांस । मसा । बगतरा । माखीप्रमुख । जेकेईजीव । विणठा  
 चांपिया । दूहव्या । माला हलावतां । पंखी काग चिमकला  
 ना ईमा फूटा । अनेरा एकेंद्रियादिक जिकेजीव । विणठा ।  
 चांप्या । दूहव्या । हालतां । चालतां । अनेरुं कांडकामकाज  
 करतां विद्वंसपणुं कीधूं । जीवरुद्धारूढै नकीधी । संखारोसूक  
 व्यो । सुल्याधान तावडैदीधा । दलाव्या । नरडाव्या । खाट  
 लातावमैजाटक्या । मूंक्या । मूंकाव्या । जीवाकुलनूमिनीपावी ।  
 बासीगार राखी । रखावी । दलणें खांडणें नीपणें । रूडी जय  
 णा नकीधी । आठमचउदसना नियमजागा । धूणीकरावी ॥

पहिला प्राणातिपातव्रतविषईउ । अनेरो० ॥ १ ॥ ❀ ॥ बीजो थूल  
मृषावाद विरमणव्रतें । पांचअतीचार ॥ ❀ ॥ सहस्सारहस्स  
दारे । मोसुवएसेय कूडलेहेय ॥ सहसाकार । किणएकप्रतें ।  
अयुक्तोआलदीधो । किणएकप्रतें । एकांतें वातकरतांदेखी ।  
तुझे तो राजविरुद्धचित्तवोढो । इत्यादिक कह्युं । स्वदारमंत्र  
नेदकीधो । अनेराई किणहीनो । मंत्र आलोचमर्मप्रकास्यो ।  
किणहीनें कूडी बुद्धिदीधो । कूडो लेखलिख्यो । कूडीसाखन  
री । थापणमोसोकीधो । कन्या । ढोर । गो । नूमि । संबंधि  
या । लहणें । दयणें । व्यवसायवाद वढावढिकरतां । मोटको  
जूठ वोल्युं । हाथ पग नणी गालदीधो । करम्कामोड्या ।  
अधर्मवचन बोल्या ॥ ❀ ॥ बीजै मृषावादव्रत० ॥ २ ॥ ❀ ॥  
तीजै अदत्तादानविरमणव्रतना पांच अतीचार ॥ तेनाहडप्प  
उगे । घरबाहिर खेत्र खलैपराईवस्तु । अणमोकलावी । लीधो  
दीधो । वावरी । चोरीनीवस्तु मोललीधो । चोरधामीत प्रतें  
संबलदीधुं । संकेतकह्युं । विरुद्ध राज्यातिक्रमकीधो । नवापु  
राणा सरसविरस सजीव निर्जीव वस्तुतणा जेलसंजेल कीधा  
खोटै तोल मान माप बुहस्या । माणचोरीकीधो । साटै लांच  
लीधो । माता पिता पुत्र कलत्र परिवार वंची । जूदीगांठ  
कीधो । किणहीनें लेखैपलेखे नूलव्युं । पडीवस्तु उलवीलीधो  
तीजै अदत्तादान व्रत० ॥ ३ ॥ ❀ ॥ चौथै स्वदारसंतोषमैथुनव्रतें  
पांच अतीचार ॥ अपरिगगहियाइत्तर । अणंग वीवाह तिब  
अणुरागे ॥ अपरिगृहीतागमन । इत्वर परिगृहीतागमन ।  
विधवा । वेस्या । स्त्रीकुलांगना । स्वदार सोकतणें विषै ।  
दृष्टिविपर्यासकीधो । सरागवचन बोल्या । आठम चउदस

अनेराई पर्व तिथितणा नियमज्ञागा । घरघरणा कीधा । करा  
 व्या । अनुमोदीया । कुविकल्प चिंतव्या । अनंगक्रीडा कीधी ।  
 परायाविवाहजोड्या । कामभोग तणै विषै तीब्राजिलाषकीधो ।  
 कुस्वप्नलाधा । नटविटपुरुषसुं हासुंकीधुं ॥ \* ॥ चौथेमे  
 थुनव्रतवि० ॥ ४ ॥ \* ॥ पांचमेंपरिग्रह परिमाणव्रतैपांचअति  
 चार । धण धन्नखित्तवत्थु । धनधान्य खेत्त वस्तु रूप सुवर्ण  
 कुप्प द्विपद चतुष्पद नवविध परिग्रहतणा । नियम उपरांत  
 वृद्धिदेखी । मूर्खालगै संक्षेपनकीधो । माता पिता पुत्र कलत्रा  
 दिकतणै लेखैकीधो । परिग्रहपरिमाणलेई पढ्यो नही । पढी  
 बीसारिउ । नियम बीसारिया ॥ पांचमै परिग्रहपरिमाण ब्र०  
 ॥ ५ ॥ \* ॥ ठेठेदिगविरमणव्रते पांच अतीचार ॥ \* ॥ गमण  
 रसय परिमाणे । ऊर्ध्वदिसि । अधोदिसि । तिर्यग्दिसि । जाय  
 वाआयवातणो नियम जे कोई अजाणैज्ञागो । एकगमा संको  
 डी । बीजी गमावधारी । विस्मृतिलगै । अधिकभूमिगया । पा  
 ठवणी आधी मोकली ॥ \* ॥ ठेठैदिग्व्रतवि० ॥ ६ ॥ \* ॥  
 सातमें भोगो पभोगपरिमाणव्रत ॥ जेहना भोजनआश्री पांचअ  
 तीचार ॥ अने कर्म हुंती १५ ॥ एवं २० अतीचार ॥ \* ॥ सच्चि  
 ते पम्बुद्धे । अपोलडुपोलयंचआहारे ० ॥ सच्चित्ततणै नियम  
 लीधै अधिक सच्चित्तलीधुं । तथा सच्चित्तमिलीवस्तु । अपका  
 हार । डुपकाहार । तुहोषधीतणोभक्षणकीधुं । होलाउंबी पहुं  
 क काकडीभरुथाकीधा । सुल्याधानप्रमुख भक्षण कीधा ॥ स  
 चित्तदबविगइ । पाणह तंबोलवत्थ कुसुमेसु । वाहणसयणविले  
 वण । बंनदिसिएहाणभत्तेसु ॥ १ ॥ एचवदै नियम । दिनप्रतें  
 संभारयासंक्षेप्यानही । लेईनियम ज्ञाग्या । बाबीस अन्नह । ब

तीस अनंतकायमांहि । आदो मूला गाजर पींमालू सूरण सेल  
 रा । काचीआंवली । गोल्हांखाधा । चोमासा प्रमुखमांहे । वा  
 सो कठोलनीरोटी खाधी । त्रिहुंदिवसनो दहीलीधुं । मधु म  
 हुडा माखण माटी । वेंगण पीलू पीचू पपोटा । पींपी विष ।  
 हीम । करहा । घोलवमा । अणजाण्याफल ठीवरुं । अथा  
 णूं । आमण बोर काचुं मीतुं । तिल । खसखस । काचाकोठ  
 वडाखाधा । रात्रीभोजन कीधुं । लगवगतीवेलाइं व्यालूकीधुं ।  
 दिवसउग्यांविणसीराव्या । तथा पनरैकम्मा दान । इंगालीक  
 म्मे । बणकम्मे सामीकम्मे । जामीकम्मे । फोमीकम्मे । दंत  
 वाणिज्ये । रसवाणिज्ये । केशवाणिज्ये । विषवाणिज्ये । जंत  
 पीलणकम्मे । निर्लेणकम्मे । दवग्गिदावणया । सरदहतलावसो  
 सणया । असईपोसणया । पांचवाणिज्य । पांचकम्म । पांचसा  
 मान्य । महारंज लीहाला कराव्या । ईटवाहनीवाहपचाव्या ।  
 धाणी चिणा पकवान करीवेच्या । वासीमाखणतपाव्या । अं  
 गीठाकीधा । कराव्या । तिलादिकसंचीया । फागुणमासउपरां  
 तराव्या । कूकमा । सूडाप्रमुखपोस्या । अनेरुंजेकोईबहुसाव  
 द्य कठोर कर्मादिक समाचरयो ॥ ❀ ॥ सातमाभोगोपभोगव्रंत  
 विष० ॥ ❀ ॥ ७ ॥ ❀ ॥ आठमा अनर्थ दंरु विरमणव्रतना पांच  
 अतीचार ॥ कंदप्पे कुक्कइए० । कंदर्पलगेविटनीपरै । हास्यकुतू  
 हल मुखादि अंगकुचेष्टाकीधी । मूरखपणालगै । किणहीनैअ  
 संबद्धवाक्य बोल्या । खांडा । कटारी । कुसि । कुहामा ।  
 रथ । ऊखल । मूसल । अगन । घरटीआदिक । सजकरी  
 मेल्या । मांग्या आप्या । कनकवस्तुढोरलेवराव्या । अनेरुंकांइ  
 पापोपदेसदीधुं । अंधोल नाहण दांतण पगधोअणपाणी ।

तेलअधिकआण्या । हींडोलैहीच्या । राजकथा । देसकथा ।  
 नुक्तकथा । स्त्रीकथा । पराईवात कीधी । आर्त्त रोद्र ध्यान  
 ध्याया । कर्कसबचन बोल्या । करडकामोडया । संजेडालाया  
 जैसा सांढकूकड मींढा श्वानादिजूता कलहकरताजोया खा  
 धिलगै अदेखाई चिंतवी । माटी । मीतुं । कण कपासिआ ।  
 काजविण चांप्या । तेह ऊपरवयठा । आलेवनस्यतीखुंदी ।  
 ठाठ । पाणी । घी । रस । तेल । गुल । आमलवेतस । वेरजादिक  
 तणा आजनउघाडा मूक्या । तेमाहि । कीडी कंथुआ माखी  
 नंदर । गिरोली प्रमुखजीवविणठा । सूडा प्रमुख जीव क्रीडा  
 हेतें वांधिराख्या । घणीनिद्राकीधी । रागद्वेष लगै । एकनेरिद्धि  
 परिवारबांठी । एकनें मृत्यु हाणि विमासी ॥ आठमाअनर्थ  
 दंडव्रतविष० ॥ ८ ॥ \* ॥ नवमें सामायकव्रतै पांच अती  
 चार ॥ \* ॥ तिविहेडुप्पणिहाणे । सामायकलीधै । मनआहट  
 दोहट चिंतव्युं । वचनसावद्यबोल्या । कायअणपडिलेह्युं हलाव्युं ।  
 उतीवेलाईं सामायकनलीधुं । सामायकलेई उघाडैमुखबोल्या । ऊं  
 घआवीकीधी । बीजदीवातणी उजोहीलागी । कण कपासी  
 यां माटी मीतुं नील फूल हरीकायना संघट्टहुआ । पुरुष तिर्य  
 चना संघट्ट हुआ । तथा स्त्री तिर्यची आजडी । मुहपत्तीउसंघ  
 ट्टी । सामायकअणपूरनंपारिनं । पारनंवीसारिनं ॥ नवमैसामा  
 यकव्रतविषय० ॥ ९ ॥ \* ॥ दशमैदेशावकासिक व्रतै पांचअ  
 तीचार ॥ \* ॥ आणवणे पेसवणे० ॥ आणवणप्पनगे । पेसवण  
 प्पनगे । सदाणुवाए । रूवाणुवाए । बहियापुग्गलपक्खेवे । नि  
 यमितभूमिकामांहि । वाहिरथकीकांई अणाव्युं । आपकन्हाथी  
 बाहिरमोकल्या । सादकरी । रूपदेखाडी । काकरोनाखी

आपणपुं ठतुं जणाव्युं ॥ ❀ ॥ दशमें देशावकासिकव्रत० ॥ १० ॥  
 इग्यारमेपोषधोपवासव्रतें पांच अतीचार ॥ ❀ ॥ संथारुच्चार  
 विही । पमायतहचेव जोअणानोए० ॥ पोसहलीधै । संथारात  
 णीनूमी बाहिरलाथंमिला । दिवसै सोध्यापडिलेह्या नही ।  
 मातरुं अणपडिलेहुं वावरिनुं । अणपुंजी नूमिकाइं परठ  
 विनुं । परठवतां चिन्तवणानकीधी । अणुजाणहजस्सुग्गहोन  
 कहुं । परठयांपूठै बारत्रिणि बोसिरामि २ नकहुं । पोसहशा  
 लामांहिं । पइसतां नीसरतां निस्सही आवस्सही कहवी वी  
 सारी । पृथवीकाय । अप्पकाय । तेऊकाय । वाऊकाय ।  
 वनस्पतीकाय । त्रसकाय । तणा संघट्टपरिताप उपद्रवहुआ  
 संथारा पोरसितणो । विधि नणउ वीसारिनुं । पोरसिमांहिनुं  
 ध्या । अविधिसंथारुंपाथरगुं । कालवेलायें पडिक्कमणुं नकीधुं  
 पारणादिकतणीचिंतानिपजावी । कालवेला देववांदवावीसारि  
 या । पोसहअसूरोलियो । सवारोपारियो । पब्बतिथि आवी  
 पोसहलीधोनही ॥ इग्यारमें पोषधोपवासव्र० ॥ ११ ॥ ❀ ॥  
 बारमें अतिथि संविजागव्रतै पांच अतीचार ॥ ❀ ॥  
 सच्चित्ते निक्खवणे० ॥ सच्चित्तवस्तु हेठै । ऊपरिथकै ।  
 महातमाप्रतेंअसूजतूं दानदीधुं । अदेवातणीबुद्धै सूजतुं फेडी  
 असूजतुंकीधुं । देवातणीबुद्धै असूजतुं फेडी । सूजतुंकीधुं । आ  
 पणफेडीपरायुं कीधुं । विहरवावेला टलगयां । असुरकरी महा  
 तमातेड्या । मउरलगैदानदीधुं । गुणवंत आव्यै जगति नसाचवी  
 । उतीसक्तिसाधर्मिक वातसल्यनकीधुं । अनेराईधम्मक्षेत्रसी  
 दाता । उतीशक्तैऊधख्यानही ॥ ❀ ॥ बारमेंअतिथिसंविजागव्र०  
 ॥ १२ ॥ ❀ ॥ संलेहणातणा पांचअतीचार ॥ इहलोए परलोए०



इहलोकासंसप्पज्जे । परलोगासंसप्पज्जे । जीविआसंसप्पज्जे ।  
मरणासंसप्पज्जे । कामजोगासंसप्पज्जे । इहलोक मनुष्यज्जव  
मान महत्त्व लोकतणी सेवा ठकुराई । बलदेव वासुदेव च-  
क्रवर्त्ति पदवांग्या । परलोक । इंद्र अहमिंद्र देवाधिदेव पदवी  
वांगी । सुखआये जीववातणी वांगकीधी । दुखआये मर  
वातणी वांग कीधी । काम जोग तणीइहा कीधी ॥ \* ॥ संलेह  
णाव्रतवि० ॥ \* ॥ तपाचारवारेजेदै ॥ उअभ्यंतर । उबाहिर ।  
अणसणमूणोइरिया ॥ अणसणकहीयेउपवास । ते पव्वति  
थि उतीशक्तिकीधुं नही । ( उणोदरी ) कवल पांचसातऊणार  
ह्यानही । ( द्रव्यसंक्षेप ) विगयप्रमुख परिमाणकीधुं नही ।  
आसनादिक कायकिलेस नकीधुं । ( संलीणता ) अंगोपांगसं  
कोच्यानही । नवकारसी । पोरसी । गंठसी । मूठसी । साढपो  
रसी । पुरमुट्ट । एकासणो । वैआसणो । निवी । आंबिलप्रमुख प  
च्चक्खाण पारवावीसाख्या । बैसतां नवकारजणयुनही । ऊठतां  
दिवश्वरम नकीधुं । निवीआंबिल उपवासादिकतपकरी । का  
चोपाणीपीधुं । वमनथयुं ॥ \* ॥ बाह्य तपव्रतवि० ॥ \* ॥ अभ्यं  
तरतप ॥ \* ॥ पायवित्तंविणज० । गुरुकनें मनसुद्धे आलोयण  
लीधीनही । गुरुदत्तप्रायवित्ततप लेखासुद्ध पुहचाडयुं नही ।  
देवगुरु संघसाहम्मीप्रते विनयसाचव्योनही । वाचना पृष्ठना  
परावर्त्तना अनुप्रेक्ष्या धर्मकथा लक्षण पंचविध सिज्जायकी  
धोनही । धम्म ध्यान शुक्लध्यान ध्यायोनही । कम्म क्य नि  
मित्त लोगस्स दस वीसनं काउसग्गकनकीधो ॥ \* ॥ अभ्यंतरत  
पविषइज० ॥ वीर्याचारना तीनअतीचार ॥ \* ॥ अणगुहियव  
लविरिउ । परक्कमइजोजहुंतठाणेसु । जुंजइ अजहाथामं । ना

यबोवीरियाचारो ॥ १ ॥ पढवै गुणवै विनय वेयावच्च देवपूजा  
सामायक दान शील तप जावना प्रमुख धम्मकृत्य तणे विषै ।  
मन वचन कायातणो ठतुं बलवीर्यगोपव्युं । रूडापंचांग खमा  
समण नदीधा वैठांपडिक्कमणंकीधुं ॥ ❀ ॥ वीर्याचारविष० ॥  
॥ ❀ ॥ नाणाइअठ अइवय । सम संलेहण पण पनरकम्मसेसु ।  
बारसतव विरिअ तिगं । चउवीसं सय अईयारा ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पमिसिद्धाणंकरणे० । जिनप्रतिषिद्ध । बावीसअजह ।  
वत्तीसअनंतकाय । बहुबीजजहण । महाअरंज महापरिग्रहादि  
क कीधा । नित्य कृत्य देवपूजासामायकादिक । तथा तीर्थ यात्रा  
दिक नकीधा । जीवाजीवादिविचारसद्दहियानही । आपणी कुम  
तिलगै उतसुत्तपरूपणाकीधी । प्राणा तिपात १ । मृषावाद २ । अद  
त्तादांन ३ । मैथुन ४ । परिग्रह ५ । क्रोध ६ । मान ७ । माया ८ ।  
लोभ ९ । राग १० । द्वेष ११ । कलह १२ । अभ्याख्यान १३ ।  
परपरिवाद १४ । पैशुन्य १५ । अरतिरति १६ । मायामृषावाद  
१७ । मिथ्यात्वशल्य १८ । एअद्धारहपापस्थानकमांहि ।  
जेकांइ कीधो कराव्यो अनुमोद्यो ॥ एवंप्रकारै श्रावकधर्मे ।  
श्री सम्यक्क मूलवारहव्रत चोवीसासो अतीचारमांहि जिको  
अतीचार । पक्कदिवसमांहि । सूक्ष्म वादर जाणतां अजाण  
तां हुवो होय ते सहू मन वचन कायायेंकरी मिहामिडुकडं ।  
इति श्री श्रावकूंकैवारहव्रतका अतीचार संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ जय तिहुअण वत्तीसीलि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जय तिहुअण वर कप्परुक्ख जय जिणधनंतरि ।  
जयतिहुअण कल्लाणकोस दुरिअ करि केसरि । तिहुअण जण

इहलोकासंसप्पन्नगे । परलोगासंसप्पन्नगे । जीविआसंसप्पन्नगे ।  
 मरणासंसप्पन्नगे । कामन्नोगासंसप्पन्नगे । इहलोक मनुष्यन्नव  
 मान महत्व लोकतणी सेवा ठकुराई । बलदेव वासुदेव च-  
 क्रवर्त्ति पदवांढ्या । परलोक । इंद्र अहमिंद्र देवाधिदेव पदवी  
 वांढी । सुखआये जीववातणी वांढकीधी । दुखआये मर  
 वातणी वांढ कीधी । काम नोग तणीइच्छा कीधी ॥ \* ॥ संलेह  
 णाव्रतवि० ॥ \* ॥ तपाचारवारेजेदै ॥ उअभ्यंतर । उबाहिर ।  
 अणसणमूणोइरिया ॥ अणसणकहीयेउपवास । ते पव्वति  
 थि उतीशक्तिकीधुं नही । ( उणोदरी ) कवल पांचसातऊणार  
 ह्यानही । ( द्रव्यसंक्षेप ) विगयप्रमुख परिमाणकीधुं नही ।  
 आसनादिक कायकिलेस नकीधुं । ( संलीणता ) अंगोपांगसं  
 कोच्यानही । नवकारसी । पोरसी । गंठसी । मूठसी । साढपो  
 रसी । पुरमुट्ट । एकासणो । वैआसणो । निवी । आंबिलप्रमुख प  
 च्चक्खाण पारवावीसाख्या । बैसतां नवकारणयुनही । ऊठतां  
 दिवश्चरम नकीधुं । निवीआंबिल उपवासादिकतपकरी । का  
 चोपाणीपीधुं । वमनथयुं ॥ \* ॥ बाह्य तपव्रतवि० ॥ \* ॥ अभ्यं  
 तरतप ॥ \* ॥ पायवित्तंविणउ० । गुरुकनें मनसुद्धै आलोयण  
 लीधीनही । गुरुदत्तप्रायवित्ततप लेखासुद्ध पुहचाडयुं नही ।  
 देवगुरु संघसाहम्मीप्रते विनयसाचव्योनही । वाचना पृष्ठना  
 परावर्त्तना अनुप्रेक्ष्या धर्मकथा लक्षण पंचविध सिज्जायकी  
 धोनही । धम्म ध्यान शुक्लध्यान ध्यायोनही । कम्म क्य नि  
 मित्त लोगस्स दस वीसनं काउसग्गकनकीधो ॥ \* ॥ अभ्यंतरत  
 पविषइउ० ॥ वीर्याचारना तीनअतीचार ॥ \* ॥ अणगुहियव  
 लविरिउ । परक्कमइजोजहुंतगणेसु । जुंजइ अजहाथामं । ना

यबोवीरियाचारो ॥ १ ॥ पढवै गुणवै विनय वेयावच्च देवपूजा  
सामायक दान शील तप जावना प्रमुख धम्मकृत्य तणे विषे ।  
मन वचन कायातणो उतुं बलवीर्यगोपव्युं । रूडापंचांग खमा  
समण नदीधा वैठांपडिक्कमणंकीधुं ॥ \* ॥ वीर्याचारविष० ॥  
॥ \* ॥ नाणाइअछ अइवय । सम संलेहण पण पनरकम्मेसु ।  
बारसतव विरिअ तिगं । चउवीसं सय अईयारा ॥ १ ॥ ॥ \* ॥

॥ \* ॥ पमिसिद्धाणंकरणे० । जिनप्रतिषिद्ध । बावीसअजह ।  
वत्तीसअनंतकाय । बहुबीजजहण । महाअरंज महापरिग्रहादि  
क कीधा । नित्य कृत्य देवपूजासामायकादिक । तथा तीर्थ यात्रा  
दिक नकीधा । जीवाजीवादिविचारसद्दहियानही । आपणी कुम  
तिलगै उतसुत्रपरूपणाकीधी । प्राणा तिपात १ । मृषावाद २ । अद  
त्तादांन ३ । मैथुन ४ । परिग्रह ५ । क्रोध ६ । मान ७ । माया ८ ।  
लोभ ९ । राग १० । द्वेष ११ । कलह १२ । अभ्याख्यान १३ ।  
परपरिवाद १४ । पैशुन्य १५ । अरतिरति १६ । मायामृषावाद  
१७ । मिथ्यात्वशल्य १८ । एअट्टारहपापस्थानकमांहि ।  
जेकांइ कीधो कराव्यो अनुमोद्यो ॥ एवंप्रकारै श्रावकधर्मे ।  
श्री सम्यक् मूलवारहव्रत चोवीसासो अतीचारमांहि जिको  
अतीचार । पक्खदिवसमांहि । सूक्ष्म बादर जाणतां अजाण  
तां हुवो होय ते सहू मन वचन कायायेंकरी मिठामिडुक्कडं ।  
इति श्री श्रावकूंकैवारहव्रतका अतीचार संपूर्णम् ॥ \* ॥

॥ \* ॥ अथ जय तिहुअण वत्तीसीजि० ॥ \* ॥

॥ \* ॥ जय तिहुअण वर कप्परुक्ख जय जिणधनंतरि ।  
जयतिहुअण कल्लाणकोस दुरिअ करि केसरि । तिहुअण जण

अविलंघियाण भुवणत्तय सामिअ । कुणसु सहाइ जिणेसपास  
 थंनणयपुरिअ ॥ १ ॥ तइं समरंत लहंतिजत्ति वर पुत्त कलत्तहि  
 ॥ धम्म सुवम्म हिरम्म पुम्म जण भुंजहि रज्जहि । पिकखहि  
 मुक्ख अंसंखसुक्ख तुहपासपसाइण । इयतिहुअण वरकप्प  
 रुक्ख सुक्खहि कुणमहजिण ॥ २ ॥ जरज्जर परिजुम्म कम्म  
 नहुठ सुकुठिण । चक्खुक्खीण खण्णखुम्म नरसल्लिअ सूलिण । तु  
 हजिणसरण रसायणेण लहुहुंति पुण्णव । जयधम्मंतरिपास  
 महवि तुहुं रोगहरोन्नव ॥ ३ ॥ विज्जाजोइस मंत तंत सिद्धिउ  
 अपयत्तिण । भुवणप्पुअ अठविह सिद्धि सिज्जइ तुहनामिण ।  
 तुह नामिण अपवित्तउवि जणहोइ पवित्तउ । तंतिहुअण क  
 ल्हाणकोस तुहुंपासनिरुत्तउ ॥ ४ ॥ खुद्वपत्तइ मंत तंत जंताइं  
 विसुत्तइ । चर थिर गरल गहुग्गखग्ग रिउवग्ग विगंजइ । दुत्थि  
 यसत्थ अणत्थ घत्थ नित्थारइदयकरि । दुरिअइं हरउ सुपा  
 सदेव दुरिअक्करिकेसरि ॥ ५ ॥ तुहआणा थंनेइजीम दप्पुद्धर  
 सुरवर । रक्खसजक्ख फणिंदविंद चोरानलजलहर । जलथल  
 चारि रउद्वखुद्व पसुजोइणिजोइअ । इयतिहुअण अविलंघिआ  
 णजयपास सुसामिअ ॥ ६ ॥ पत्थिअअत्थ अणत्थहित्थ नत्ति  
 अरनिप्पर । रोमंचंचिअ चारुकाय किण्णरनर सुरवर । जसु  
 सेवहिं कमकमलजुअल पक्खालिअकलिमल्लु । सोन्नवणत्तय  
 सामिपास महमद्वरिउवल्लु ॥ ७ ॥ जय जोइअ मणकमलन्न  
 सल्ल नयपंजरकुंजर । तिहुअणजण आणंदचंदन्नवणत्तय दि  
 णयर । जयमइमेयणि वारिवाह जयजंतुपिआमह । थंनणय  
 ठिअ पासनाह नाहत्तणकुणमह ॥ ८ ॥ बहुविहवप्पुअवप्पु सु  
 षुवप्पिउठप्पप्पहि । मुक्खधम्मकामत्थकाम नरनियनियसत्थ

हि । जंजायइ बहुदरसणत्थ बहुनामपसिद्धु । सोजोइअम  
 णकमलनसल सुहपासपवद्धु ॥ ९ ॥ जयविप्रलंरणजणिर  
 दसण थरहरिअ सरीरय । तरलिअनयण विसुणसुण गग्गर  
 गिरकरुणय । तइं सहसत्ति सरंतिहुंति नरनासिअ गुरुदर ।  
 महाविज्जवि सिअसइपास जयपंजरकुंजर ॥ १० ॥ पइं पासवि  
 विअसंतनित्त पत्तंतपवत्तिय । वाहपवाहपवूढरूढ दुहदाहसुपु  
 लिय । मण्हिमणसठणपुणअप्पाणंसुरनर । इयतिहुअण आ  
 णंदचंद जयपासजिणेसर ॥ ११ ॥ तुहकल्लाणमहेसुघंट टंका  
 रवपिल्लिअ । वल्लिरमल्लमहल्लनत्तिसुरवरगंजुल्लिअ । हल्लुप्फ  
 लिअ पवत्तयंतिनवणेहिमहूसव । इयतिहुअणआणंदचंद ज  
 यपास सुहुअव ॥ १२ ॥ निम्मल केवल किरणनियर विहुरिय  
 तमपयहर । दंसिअसयल पयत्थसत्थ वित्थरिअपहाजर । क  
 लिकल्लसिअ जणयूअलोय लोयणहअगोयर । तिमिरइं निरु  
 हरपासनाह जुवणत्तयदिणयर ॥ १३ ॥ तुहसमरणजल वरि  
 ससित्त माणवमइमेइणि । अवरारसरसुहुमत्थवोह कंदलदलरेइ  
 णि । जायइफलजर जरियहरिय दुहदाहअणोवम । इयमइ  
 मेइणिवारिवाह दिसपासमइं मम ॥ १४ ॥ कयअविकल क  
 ल्लाणवल्लि उल्लूरिअउहवणुं । दाविअसग्ग पवग्गमग्ग दुग्गइग  
 मवारणुं । जयजंतुहजणएणतुल्ल जंजणियहियावहु । रम्मध  
 म्मसोजयनपास जयजंतुपिआमहु ॥ १५ ॥ भुवणारणनिवा  
 सदरिअ परदरसणदेवय । जोइणिपूअणखित्तवाल खुद्दासुरपसु  
 वय । तुहउत्तठसुनठसुठु अविसंठुलचिठहि । इयतिहुअण व  
 णसींहपास पावाइ पणासहि ॥ १६ ॥ फणिफणफारफुरंतरय  
 ण करंजिअनहयल । फलिणीकंदलदल तमाल निल्लुप्पल



सामल । कमठासुरवसग्गवग्ग संसग्गअगांजिअ । जयपच्च  
 कखजिणेसपास थंनणयपुरठिअ ॥ १७ ॥ महमणुतरुपमा  
 णुनेय वायाविविसंठु । नियतणुरविअविणयसहाव आलस  
 विहिलंघु । तुहमाहप्पपमाणदेव कारुणपवत्तु । इयमइमा  
 अवहीरपासपालहिविलवंतु ॥ १८ ॥ किंकिंकप्पिणयेयकळुण  
 किंकिंवनजंपिण । किंवनचिठ्ठिअकिठ्ठदेव दीणयमविलंबिण ।  
 कासनकियनिप्फल्ललल्ल अह्महिंदुहत्तइ । तहविनपत्तुताणकिं  
 पि पइंपहुपरिचत्तइ ॥ १९ ॥ तुहुं सामिहुतुहुं मायवप्प तुहुं मि  
 त्तपियंकरु । तुहुंगइतुहुंमइतुंहिजताणतुहुंगुरुखेमंकरु । हउंदु  
 प्ररजारिअवरारानलनिप्पग्गु । लीणउतुहकमकमल स  
 रण जिणपालहिचंगु ॥ २० ॥ पइंकिविकयनीरोयलोयकिविपा  
 वियसुहसय । किविमइमंतमहंतकेवि किविसाहियसिवपय ।  
 किविगंजिअरिउवग्गकेवि जसधवलिअनूअल । मइअवहीर  
 हिकेणपाससरणागयवड्डल ॥ २१ ॥ पच्चुवयारनिरीहनाह निप्पण  
 पउअण । तुहुंजिणपासपरोवयार करुणिकपरायण । सत्तुमित्त  
 समचित्तवित्तिनयनिंदिअसममण । माअवहीरिअजुग्गउवि म  
 इंपासनिरंजण ॥ २२ ॥ हउंबहुविहदुहतत्तगत्तुहुंदुहनासणप  
 रु । हउंसुयणहकरुणिकठाणतुहुंनिरुकरुणाकरु । हउंजिणपा  
 सअसामिसालतुहंतिहुअणसामिअ । जंअवहीरहिमइंजखंत  
 इयपासनसोहिय ॥ २३ ॥ जुग्गाजुग्गविजागनाहनहुजोअणतु  
 हसम । नवणुवयारसहावजाव करुणारससत्तम । समविसमइ  
 किंघणनिएइ नुविदाहसमंतु । इयदुहबंधवपासनाहमइंपालथु  
 णंतु ॥ २४ ॥ नयदीणहदीणयमुएविअणविकिविजुग्गय ।  
 जंजोइय उवयारुकरइ उवयारसमुज्जय । दीणहदीणनिहीणजेण

तइंनाहिणचित्तन । तोजुग्गणअहमेवपास पालाहिमइं चंगन ॥  
 ॥ २५ ॥ अहअणुविजुग्गयविसेसकिविमणहिदीणह । जंपा  
 सविनवयारुकरइ तुहुंनाह समग्गह । सुच्चिअकिलकल्लाणजेण  
 जिणतुह्मपसीयह । किंअणुण तंचेव देव मामइंअवहीरह ॥  
 ॥ २६ ॥ तुहपत्थण नहु होइ विहल जिणजाणन किंपुण ।  
 हनंदुकिखन निरु सत्तचत्त दुक्कननस्सुयमण । तंमण्ण निमि  
 सेणएण एन विज्झइ लभ्भइ । सच्चंजंभुकिखयवसेण किं उंवरुप  
 च्चइ ॥ २७ ॥ तिहुअणसामिअ पासनाह मइंअप्पपयासित ।  
 किज्जनंजनियरूवसरिसुनमणुंवहुजंपित । अणुणजिणजगतुह  
 समोविदखिखणदयासत । जइअवगिणसितुंहिजअहहकिहहो  
 सुहयासत ॥ २८ ॥ जइतुहरूविणकिणविपेअ पाइणवेलवित्त  
 तनजाणुंजिणपासतुह्म हनंअंगीकरिअन । इयमहयत्तिअजंन  
 होइसातुहउहावण । रक्खंतहनियकित्तिणेयजुज्झइअवहीरण ॥  
 ॥ २९ ॥ एवमहारिहजत्तदेवइअणवणमहूसत । जंअणलिय  
 गुणगहण तुम्हमुणिजणअणिसिद्धत । इयमइंपसियसु पासना  
 हथंनणयपुरट्ठिअ । इयमुणिवर सिरिअन्नयदेव विणवइआणिं  
 दिअ ॥ ३० ॥ इतिश्रीस्थंननक पार्श्वनाथ स्तवनम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ परकीसूत्र लि० ॥ ❀ ॥

तित्थंकरेअ तित्थे । अतित्थसिद्धेयतित्थसिद्धेय । सिद्धेयजिणे  
 यरिसी । महारिसिनाणंचवंदामि ॥ १ ॥ जेयइमंगुणरयणसायर ।  
 मविराहिक्कणतिन्नसंसारा । तेमंगलंकरित्ता । अहमविआराह  
 णान्निमुहो ॥ २ ॥ मममंगलमरिहंता । सिद्धासाहूसुयंचवम्मो  
 यः । खंतीगुत्तीमुत्ती । अज्जवयामहवंचेव ॥ ३ ॥ लोगांसिसंज

याजंकरंति । परमरिसिदेसियमुयारं । अहमविठवट्टितं । म  
 हवयउच्चारणंकां ॥ ४ ॥ सेकिंतंमहवयउच्चारणा । महवयउच्चा  
 रणापंचविहापन्नत्ता ॥ राईजोयणवेरमणठठा ( तंजहा ) सवा  
 उपाणाइवायाउवेरमणं । सवानमुसावायाउवेरमणं । सवानअ  
 दन्नादाणाउवेरमणं । सवानमेहुणाउवेरमणं । सवानपरिग्गहा  
 उवेरमणं । सवानराईजोयणाउवेरमणं । तत्थइखलु पढमेजंतेम  
 हवए पाणाइवायाउवेरमणं ॥ सवजंतेपाणाइवायंपच्चरकामिं ।  
 सेसुहुमंवा वायरंवा तसंवा थावरंवा नेवसयं पाणेअइवाएज्जा  
 नेवन्नेहिं पाणेअइवायाविज्जा पाणेअइवायंतेवि अन्नेनसमणु  
 जाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए का  
 एणं नकरोमि नकारवेमी करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि  
 तस्सजंतेपडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसरामि ॥  
 सेपाणाइवायाएचउविहेपन्नत्ते ॥ (तंजहा) दवउं खित्तउं कालउं  
 ज्ञावउं दवउंणंपाणाइवाए ठसुजीवनिकाएसु खित्तउंणं पाणा  
 इवाए सयललोए कालउंणं पाणाइवाए दियावा रान्वा ज्ञावउंणं  
 पाणाइवाए रागेणवा दोसेणवा जंपियमएइमस्सधम्मस्स केव  
 लिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिडियस्स विणयमूलस्स  
 खंतीपहाणस्स अहिरणसोवणियस्स उवसमप्य जवस्स नववं  
 जचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स निक्खावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स  
 निरग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स  
 निवियारस्स निवित्तीलरकणस्स पंचमहवयजुत्तस्स असंनिहि  
 संचयस्स अविसंवाइयस्स संसार पारगाभियस्स निवाणगमण  
 पज्जवसाण फलस्स पुर्विं अन्नाणयाए असवणयाए अवोहि  
 ए अण्णिगमेणं अण्णिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिव

द्वयाए वाजयाए मोहयाए मंदयाए किडुयाए तिगारब गरुयाए  
चउक्खसानवगएणं पंचेंदियवसट्ठेणं पडिपुन्नजारीयाए सायासोक्ख  
मणुपालयंतेणं इहंवाजवे अन्नेसुवाजवग्गहणेसु पाणाइवान्  
कउवा कारिउवा कीरंतोवा परेहिंसमणुन्नान् तंनिंदामी गरि  
हामी तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयंनिंदामि  
पडुपन्नंसंबरेमि अणागयंपच्चरकामि सबंपाणाइवायं जावज्जीवाए  
अणिसिउहिं नेवसयं पाणे अइवाएज्जा नेवन्नेहिं पाणे अइवा  
याविज्जा पाणेअइवायंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि ( तंजहा ) अ  
रिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहुसक्खियं देवसक्खियं अप्प  
सक्खियं एवंहवई निक्खूवा निक्खूणीवा संजय विरय पडिहय  
पच्चक्खायपावकम्मे दियावा राउवा एगोवा परिसागउवा सुत्ते  
वा जागरमाणेवा एसखलु पाणाइवायस्स वेरमणे हिए सुहे  
खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सबेसिं पाणाणं सबे  
सिं जूयाणं सबेसिंसत्ताणं अडुक्खणयाए असोयणयाए अजू  
रणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणयाए  
अणुद्वणयाए महत्थे महागुणे महाणुजावे महापुरिसा  
णचिन्ने परमरिसिदेसिएपसित्थे तंडुक्खक्खयाए कम्मरकयाए  
मोक्खयाए बोहिलान्नाए संसारुत्तारणाए तिकट्ट उवसंपज्ज  
त्ताणं विहरामि पढमेज्जंते महवए उवठिउमि सव्वाउपाणाइ  
वायाउवेरमणं ॥ १ ॥ अहावरेदोच्चेज्जंतेमहवए मुसावायाउवेरम  
णं । सबंज्जंतेमुसावायंपच्चक्खामि । सेकोहावा लोहावा जयावा  
हासावा नेवसयं मुसंवएज्जा नेवन्नेहिंमुसं वायाविज्जा मुसंवा  
यंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं म  
णेणं वायाए काएणं नकरेमि नकारवेमि करंतपि अन्नंसमणु

जाणामि तस्सज्जेते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पा  
 णं वोसरामि । सेमुसावाए च उविहे पन्नत्ते ( तंजहा ) दव्वञ्च खित्तञ्च  
 कालञ्च जावञ्च दव्वञ्चणं मुसावाए सव्वदव्वे सु खित्तञ्चणं मुसावाए लोए  
 वा अलोएवा कालञ्चणं मुसावाए दियावा राञ्चवा जावञ्चणं मुसावा  
 ए रागेण वा दोसेण वा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवल्लिपन्नत्तस्स  
 अंहिंसा लक्खणस्स सच्चाहिष्ठियस्स विणयमूलस्स खंतिपहाण  
 स्स अहिरणसुवण्णियस्स उवसमप्पन्नवस्स नवबंनचेरगुत्तस्स  
 अप्पयमाणस्स निक्खवावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गिस  
 रणस्स संपरकालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्विया  
 रस्स निव्वित्ती लक्खणस्स पंचमहव्वय जुत्तस्स असंनिहि  
 संचयस्स अविसंवाईयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाणगमण  
 पज्जवशाणफलस्स पुर्विअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए  
 अण्णनिगमेणं अण्णनिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिवद्वयाए  
 वालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारव्वगरूयाए च उ  
 क्कसाओवगएणं पचेदियवसट्ठेणं पप्पिपुन्नं नारियाए सायासोक्ख  
 मणु पालयंतेणं इहंवा जवे अन्ने सुवा जवग्गहणे सु मुसावाओ  
 नासिओवा नासाविउवा नासिज्जंतोवा परेहिंसुमण्णान्नाञ्च तंनि  
 दामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अईयं  
 निंदामि पडुपन्नंसंबरेमि अण्णागयं पच्चक्खामि सव्वं मुसावायं जा  
 वज्जीवाए अण्णिस्सिउहिं नेवसयं मुसंवएज्जा नेवन्नेहिं मुसंवाया  
 विज्जा मुसंवायंतेवि अन्नेन समण्णजाणामि ( तंजहा ) अरिहंतस  
 क्खियं सिद्धसक्खियं साहुसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं  
 एवंहवई निक्खूवा निक्खूणीवा संजय विरय पडिहय पच्चक्खाय  
 पावकम्मे दियावा राञ्चवा एगञ्चवा परसागञ्चवा सुत्तेवा जागरमाणे

वा एसखलुमुसावायस्स वेरमाणे हि ए सुहे खमे निस्सेसिए आणु  
 गामिए पारगामिए सब्बेसिंपाणाणं सब्बेसिंजूयाणं सब्बेसिंजीवाणं  
 सब्बेसिंसत्ताणं अदुक्खण्याए असोयण्याए अजूरण्याए अति  
 प्पण्याए अपीडण्याए अपरियावण्याए अणुद्वण्याए महत्थे  
 महागुणे महाणुत्तावे महापुरसाणुचिन्ने परमरिसिदेसियपसत्थे  
 तंदुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोक्खयाए बोहिजाजाए संसारु  
 त्ताण्याए तिकट्टु उवसंपज्जत्ताणं विहरामि ॥ दोच्चेज्जंतेमहव्वए उव  
 छिन्नमिसव्वान्मुसावायान्वेरमाणं ॥ २ ॥ अहावरेतच्चेज्जंतेमहव्वए  
 अदिन्नादाणान्वेरमाणं सब्बज्जंते अदिन्नादाणंपच्चक्खामि ॥ सेगा  
 मेवा नगरेवा रणेवा अप्पंवा वहुंवा अणुंवा थूलंवा चित्तमंतंवा अ  
 चित्तमंतंवा नेवसयंअदिन्नंगिण्हियज्जा नेवन्नेहिंअदिन्नंगिएहावि  
 ज्जा अदिन्नंगिएहंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिवि  
 हं तिविहेणं मणेणं वायाए काणं नकरोमि नकारवेमि करंतंपि  
 अन्नं समणुजाणामि तस्सज्जंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहा  
 मि अप्पाणं वोसरामि सेअदिन्नादाणेचउविहे पन्नत्ते ( तंजहा )  
 दव्वओ खित्तओ कालओ जावओ दव्वउणं अदिन्नादाणे गहण  
 धारणिज्जेसु दव्वेसु खित्तउणं अदिन्नादाणे गामेवा नगरेवा रणेवा  
 कालउणं अदिन्नादाणे दियावा राउवा जावउणं अदिन्नादाणे रा  
 गेणवा दोसेणवा जंपियमए इमस्सधम्मस्स केवल्लि पन्नत्तस्स अ  
 हिंसाजक्खणस्स सच्चाहिठियस्स विणयमूलस्स खंतीपहाणस्स  
 अहिरण सुव्वणियस्स उवसमप्पज्जवस्स नव्वंजचेरगुत्तस्स अप्प  
 यमाणस्स निरकावित्तियस्स कुक्खीसंवलस्स निरग्गिसरणस्स  
 संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निवियारस्स नि  
 वित्ति जक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अवि



संवाइयस्स संसारपारगामियस्स निवाणगमणपज्जवसाणफल  
 स्स पुर्विअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अण्णिगमेणं अ  
 ण्णिगमेणवा पमाणं रागदोसपप्पिद्धयाए वालयाए मोहयाए म  
 दयाए किडुयाए तिगारवगरुआए चउक्कसाउवगएणं पंचेदिय  
 वसट्ठेणं पडिपुत्त नारियाए सायासोक्खमणुपालयंतेणं इहंवाज्जे  
 अन्नेसुवा जवग्गहणेसु अदिन्नादाणं गहियंवा गहावियंवा धिप्प  
 तंवा परेहिंसमणुत्ताउतंनिंदामि गरिहामि तिविहंतिविहेणं मणे  
 णं वायाए काएणं अईयं निंदामि पडुपन्नसंबरोमि अणागयंपच्च  
 क्खामि सबंजंतेअदिन्नादाणं जावज्जीवाए अणिस्सिउहिं नेवस  
 यंअदिन्नांगिएहज्जा नेवन्नेहिं अदिन्नांगिएहाविज्जा अदिहंमि  
 एहंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि (तंजहा) अरिहंतसक्खियं सिद्धस  
 क्खियं साहुसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवंहवई निक्ख  
 वा निक्खूणीवा संजय विरय पप्पिहय पच्चक्खायपावकम्मे दिया  
 वा राउवा एगउवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एसखलु  
 मेहुणस्सवेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगा  
 मिए सबेसिंपाणाणं सबेसिंजूयाणं सबेसिंजीवाणं सबेसिंसत्ताणं  
 अडुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपी  
 डणयाए अपरिआवणयाए अणुद्वणयाए महत्थे महागुणे म  
 हाणुत्तावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिएपसत्थे तंउक्ख  
 क्खयाए कम्मक्खयाए मोक्खयाए बोहिलान्नाए संसारुत्तारणा  
 ए तिकट्ट उवसंपज्जत्ताणं विहरामि ॥ तच्चेजंतेमहवएअण्णुत्ति  
 मिसवाउ अदिन्नादाणाउवेरमणं ॥ ३ ॥ अहावरेचउत्थेजंतेमहवए  
 मेहुणाउवेरमणं सबंजंतेमेहुणं पच्चक्खामि । सेदिबंवा माणुसं  
 वा तिरिक्खजोणियंवा नेवसयं मेहुणंसेविज्जा नेवन्नेहिं मेहुणं

सेवाविज्जा मेहुणंसेवंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए  
तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकारवेमि  
करंतंपी अन्नंन समणुजाणामि तस्सन्नंते पडिक्कमामि निंदामि  
गरिहामि अप्पाणं वोसरामि ॥ सेमेहुणेचउविहेपन्नत्ते ( तंजहा  
दवउ खित्तउ कालउ जावउ दवउणंमेहुणे रूवेसुवा रूवसहग  
एसुवा खित्तउणंमेहुणे उट्टलोएवा अहोलोएवा तिरियलोएवा  
कालउणं मेहुणे दियावा राउवा जावउणं मेहुणे रागेणवा दोसे  
णवा जंपियमए इमस्सधम्मस्स केवल्लिपणत्तस्स अहिंसाल  
क्खणस्स सच्चाहिठियस्स विणयमूलस्स खंतीपहाणस्स अहिर  
न्न सुवणियस्स उवसमप्प जवस्स नववन्नचेरगुत्तस्स अप्पय  
माणस्स निक्खावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गीसरणस्स  
संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निवियारस्स निवि  
त्तीलक्खणस्स पंचमहवय जुत्तस्स असंनिहि संचयस्स अ  
विसंवाहियस्स संसारपारगामियस्स निवाणगमण पज्जवसाण  
फलस्स पुब्बिअन्नाणयाए असवणयाए अबोहीए अण्णिगमेणं  
अन्निगमेणवा पमाएणं रागदोषपडिवद्धयाए वालयाए मोहयाए  
मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसानवगएणं पंचे  
दियवसट्ठेणं पडिपुन्नजारियाए सायासोरक मणुपालयंतेणं इहं  
वाज्जवे अन्नेसुवा जवग्गहणेसु मेहुणंसेवियंवा सेवावियंवा से  
विज्जंतंवा परेहिंसमणुणाउ तंनिंदामि गरिहामि तिविहं तिवि  
हेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं निंदामि पडुपन्नसंवरेमि अ  
णागयं पन्नक्खामि सव्वंमेहुणं जावज्जीवाए अणिस्सिउहिं नेव  
सयं मेहुणंसोविज्जा नेवन्नेहिं मेहुणं सेवाविज्जा मेहुणं सेवंतेवि  
अन्नेन समणुजाणामि ( तंजहा ) अरिहंतसक्खियं सिद्धस

क्खियं साहुसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवंहवइ जि  
 क्खूवा निक्खूणीवा संजयविरयपमिहय पच्चक्खाय पावकम्मे  
 दियावा राउवा एगोवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एस  
 खलु मेहुणस्सवेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए  
 पारगामिए सबेसिं पाणाणं सबेसिं चूयाणं सबेसिंजीवाणं सबेसिं  
 सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणया  
 ए अपीडणयाए अपरिआवणयाए अणुद्वणयाए महत्थे महागु  
 णे महाणुजावे महापुरिसाणुचिस्से परमरिसिदेसिएपसित्थे तंदु  
 क्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोक्खयाए बोहिलान्नाए संसारु  
 त्तरणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जत्ताणं विहरामि ॥ चउत्थेज्जंते महवए  
 उवठ्ठिउमिसवानं मेहुणानं वेरमाणं ॥ ४ ॥ अहावरेपंचमेज्जंतेमहव  
 ए परिग्गहानं वेरमाणं सबंज्जंतेपरिग्गहं पच्चक्खामि सेअप्पंवा व  
 हुंवा अणुंवा थूलंवा चित्तमंतंवा अचित्तमंतंवा नेवसयं परि  
 ग्गहं परिगिण्हिज्जा नेवन्नेहिं परिग्गहं परिगिण्हविज्जा परि  
 ग्गहं गिण्हंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं  
 तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरोमि नकारवेमि करंतंपि  
 अन्नंनसमणुजाणामि तस्सज्जंते पम्भिमामि निंदामि गरिहामि  
 अप्पाणं वोसरामि । सेपरिग्गहेचउविहेपन्नत्ते ( तंजहा ) दवउं खि  
 त्तउं कालउं जावउं दवउणंपरिग्गहे सचित्ताचित्तमसिसेसुदव्वेसु खि  
 त्तउणं परिग्गहे गामेसुवा नगरेसुवा रण्णेसुवा कालउणं परिग्गहे  
 दियावा राउवा जावउणंपरिग्गहे अप्पग्घेवा महग्घेवा रागेणवा  
 दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवल्लिपन्नत्तस्स अहिंसाल  
 क्खणस्स सच्चाहिठियस्स विणयमूलस्स खंतिपहाणस्स अहिरन्न  
 सुवान्नियस्स उवसमप्पन्नवस्स नववंज्जं ० अप्पय ० निक्खावित्तिय

स्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गीसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोस  
 स्स गुणगाहियस्स निबियारस्स निवत्तीलक्खणस्स पंचमहव्वय  
 जुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामिय  
 स्स निवांणगमणपक्कवसाणफलस्स पुब्बिअन्नाणयाए असवण  
 याए अबोहिए अण्णिगमेणं अण्णिगमेणवा पमाएणं रागदोसप  
 डिबद्धयाए वालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारव गरु  
 आए चत्तक्कसान्णवगएणं पंचेदियवसद्वेणं पडिपुन्न नारियाए सा  
 यासोक्ख मणुपालयंतेणं इहंवाज्जवेअन्नेसुवा ज्वग्गहणेसु परि  
 ग्गहो गहिज्जवा गहाविज्जवा घिप्पंतोवा परेहिंसमणुत्ताज्ज तंनिंदा  
 मि गरिहामि तिविहंतिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अईयंनिंदा  
 मि पडुप नंसंबरेमि अणागयं पच्चक्खामि सबंपरिग्गहं जावज्जी  
 वाए अणिस्सिज्जहिं नेवसयं परिग्गहं परिगिण्हिज्जा नेवन्नेहिंप  
 रिग्गहं परिगिण्हिज्जा परिग्गहं परिगिण्हंतेवि अन्नेनसमणु  
 जाणामि ( तंजहा ) ॥ अरिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहुस  
 क्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवंहवइज्जिक्खूवा ज्जिक्खूणी  
 वा संजय विरय पडिहय पच्चक्खाय पावकम्मं दियावा राज्जवा  
 एगोवा परिसागज्जवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एसखलुपरिग्गहस्सवं  
 रमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए स  
 व्वेसिंपाणाणं सव्वेसिंभूयाणं सव्वेसिंजीवाणं सव्वेसिंसत्ताणं अट्ठ  
 क्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीड  
 णयाए अपरियावणयाए अणुद्वणयाए महत्थेमहागुणे महा  
 णुत्तावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्थे तंहुक्खक्ख  
 याए कम्मक्खयाए मोक्खयाए बोहिलान्नाए संसारुत्तारणाए  
 त्तिकट्ट उवसंपक्कत्ताणंविहरामि ॥ पंचमेज्जंतेमहव्वए उवठ्ठिज्जमि

सवान् परिग्गहान्वेरमाणं ॥ ५ ॥ अहावरे षष्ठेजंतोवए राईजोयणा  
 न्वेरमाणं सवंचंतोराईजोयणं पच्चक्खामि ॥ सेअसणंवा पाणंवा  
 खाइमंवा साइमंवा नेवसयं राई चुंजिजा नेवन्नेहिं राई चुंजावि  
 जा राईचुंजंतोवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं  
 तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकारवेमि करतंपि  
 अन्नंनसमणुजाणामि तस्सजंतो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि  
 अप्पाणं बोसरामि । सेराईजोयणेचनविहेपन्नत्ते ( तंजहा ) दव्वन  
 खित्तन कालन जावन दव्वनं राईजोयणे असणेवा पाणेवा खाइ  
 मेवा साइमेवा खित्तनं राईजोयणे समयखित्ते कालनं राईजो  
 यणे दियावा रानवा जावनं राईजोयणे तिकखेत्रा कडुएवा कसा  
 इलेवा अंबिलेवा महुरेवा लवणेवा रागेणवा दोसेणवा जंपिय  
 मए इमस्स धम्मस्स केवल्लिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चा  
 हिठियस्स विणयमूलस्स खंतीपहाणस्स अहिरन्नसुवस्सियस्स  
 नवसमप्पन्नवस्स नवबंनचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स निक्खावि  
 त्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निरगिसरणस्स संपक्खालियस्स च  
 त्तदोसस्स गुणगाहियस्स निवियारस्स निवित्तीलक्खणस्स पं  
 चमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइयस्स सं  
 सारपारगामियस्स निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुर्विअन्ना  
 णयाए असवणयाए अबोहिए अण्णिगमेणं अण्णिगमेणवा  
 पमाणं रागदोसपक्खिद्वयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए कि  
 ड्डयाए तिगारव गरुआए चनक्कसानवगणं पंचेदियवसट्ठेणं  
 पडिपुन्नचारियाए सायासोक्खमाणुपालयंतो इहंवाज्जवेअन्नेसुवा  
 नवग्गहणेसु राईजोयणं चुत्तंवा चुंजावियंवा चुंजंतंवा परोहिंस  
 मणुन्नानं तंमिंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणंवायाए

काएणं अईयं निंदामि पडुपन्नंसंबरेमि अणागयं पच्चक्खामि स  
 वं राईन्नोयणं जावजीवाए अणिस्सउहिं नेवसयं राइंनुंजि  
 ज्जा नेवन्नेहिंराइंनुंजाविज्जा राइंनुंजंतेवि अन्नेनसमणुजाणा  
 मि ( तंजहा ) अरिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहुसक्खियं दे  
 वसक्खियं अप्पसक्खियं एवंहवइ निक्खूवा निरकूणीवा संज  
 य विरय पमिहय पच्चक्खायपावकम्मे दियावा राउवा एगोवा प  
 रसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एसखलु राईन्नोयणस्सवेरमणे  
 हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सब्बेसिंपाणा  
 णं सब्बेसिंनूयाणं सब्बेसिंजीवाणं सब्बेसिंसत्ताणं अडुक्खणयाए  
 असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरि  
 यावणयाए अणुइवणयाए महत्थेमहागुणे महाणुजावे महापु  
 रिसाणुचिन्हे परमरिसिदेसिएपसत्थे तंडुक्खक्खयाए कम्मरक  
 याए मोक्खयाए बोहिजान्नाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंप  
 ज्जत्ताणं विरामि ॥ उठेन्नंतेवए उवठ्ठिउमि सब्बाउ राईन्नोयणाउवे  
 रमणं ॥ ६ ॥ इच्चेइयाइंपंचमहवयाइं । राईन्नोयणवेरमणउठाइं । अत्त  
 हियठाए उवसंपज्जित्ताणंविहरामि ॥ १ ॥ अप्पसत्थायजेजोगा । प  
 रिणामायदारुणा । पाणाइवायस्स वेरमणे । एसवुत्तेअइक्कमे ॥ २ ॥  
 तिव रागायजान्नासा । तिवदोसातहेवय । मुसावायस्सवेरमणे ।  
 एसवुत्ते अइक्कमे ॥ ३ ॥ उग्गहंचअजाइत्ता । अविदिन्नेवउग्गहे ।  
 अदिन्नादाणस्सवेरमणे । एसवुत्तेअइक्कमे ॥ ४ ॥ सद्धारूवारसागं  
 धा । फासाणंपवियारणा । मेहुणस्सवेरमणे । एसवुत्तेअइक्कमे  
 ॥ ५ ॥ इद्धामुट्ठायगेहीय । कंखालोप्पेयदारुणे । परिग्गहस्सवे  
 रमणे । एसवुत्तेअइक्कमे ॥ ६ ॥ अयमत्तेआहारे । सूरखित्तेयसं  
 किए । राईन्नोयणस्सवेरमणं । एसवुत्तेअइक्कमे ॥ ६ ॥ दंसणना



णचरित्ते । अविराहिताछिन्नसमणधम्ममे । पढमंवयमणुरक्खे ।  
 विरयामोपाणाइवायान् ॥ १ ॥ दंसणनाणचरित्ते । अविराहिता  
 छिन्नसमणधम्ममे । वीयंवयमणुरक्खे । विरयामोमुसावायान् ॥ २ ॥  
 दंसणनाणचरित्ते । अविराहिताछिन्नसमणधम्ममे । तइयंवयमणु  
 रक्खे । विरयामोअदिन्नादाणान् ॥ ३ ॥ दंसणनाणचरित्ते । अ  
 विराहिताछिन्नसमणधम्ममे । चउत्थंवयमणुरक्खे । विरयामोमे  
 हुणान् ॥ ४ ॥ दंसणनाणचरित्ते । अविराहिताछिन्नसमणधम्ममे ।  
 पंचमवयमणुरक्खे । विरयामोपरिग्गहान् ॥ ५ ॥ दंसणनाणच  
 रित्ते । अविराहिताछिन्नसमणधम्ममे । ठंठंवयमणुरक्खे । विर  
 यामोराईन्नोयणान् ॥ ६ ॥ आलयविहारसमिन्न । जुत्तोगुत्तोछि  
 न्नसमणधम्ममे । पढमंवयमणुरक्खे । विरयामोपाणाइवायान् ॥ १ ॥  
 आलयविहारसमिन्न । जुत्तोगुत्तोछिन्नसमणधम्ममे । वीयंवयमणु  
 रक्खे । विरयामोमुसावायान् ॥ २ ॥ आलयविहारसमिन्न ।  
 जुत्तोगुत्तोछिन्नसमणधम्ममे । तइयंवयमणुरक्खे । विरयामोअदि  
 न्नादाणान् ॥ ३ ॥ आलयविहारसमिन्न । जुत्तोगुत्तोछिन्नसमण  
 धम्ममे । चउत्थंवयमणुरक्खे । विरयामोमेहुणान् ॥ ४ ॥ आल  
 यविहारसमिन्न । जुत्तोगुत्तोछिन्नसमणधम्ममे । पंचमवयमणुरक्खे ।  
 विरयामोपरिग्गहान् ॥ ५ ॥ आलयविहारसमिन्न । जुत्तोगुत्तो  
 छिन्नसमणधम्ममे । ठंठंवयमणुरक्खे । विरयामोराईन्नोयणान्  
 ॥ ६ ॥ आलयविहारसमिन्न । जुत्तोगुत्तोछिन्नसमणधम्ममे । ति  
 विहेणपमिक्कंतो । रक्खामिमहवएपंच ॥ ७ ॥ सावज्जजोगमेगं  
 मिच्चत्तंगमेवअस्साणं । परिवज्जंतोगुत्तो । रक्खामिमहवएपंच  
 ॥ १ ॥ अणवज्जजोगमेगं । सम्मत्तंगमेवनाणंतु । उवसंपन्नोजुत्तो  
 रक्खामिमहवएपंच ॥ २ ॥ दोचेवरागदोसे । दुन्नियजाणाइअट्ठरु

द्वाइं । परिवज्जंतोगुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३ ॥ उविहंचरित्तध  
म्मं । उन्नियजाणाइधम्मसुक्काइं । उवसंपन्नोजुत्तो । रक्खामिमहव्व  
एपंच ॥ ४ ॥ किन्हानीलाकाउ । तिन्निअलेसानुअप्पसत्थाउ । परि  
वज्जंतोगुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ५ ॥ तेऊपह्मासुक्का । तिन्नि  
यलेसानुसुप्पसत्थाउ । उवसंपन्नोजुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच  
॥ ६ ॥ मणसामणसच्चविकु । वायासच्चेणकरणसच्चेण । तिवि  
हेणविसच्चविकु । रक्खामि महव्वएपंच ॥ ७ ॥ चत्तारियउहसि  
जा । चत्तरोसन्नातहकसायाय । परिवज्जंतोगुत्तो । रक्खामि  
महव्वएपंच ॥ ८ ॥ चत्तारियसुहसिजा । चत्तविहंसंवरंसमाहिं  
च । उवसंपन्नोजुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ९ ॥ पंचेवयकामगु  
णे । पंचेवय अन्हवेमहादोसे । परवज्जंतोगुत्तो । रक्खामिमहव्व  
एपंच ॥ १० ॥ पंचेदियसंवरणं । तत्तोपंचविहसंवसज्जायं । उव  
संपन्नोजुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ११ ॥ उज्जीवनिकायवहं  
उप्पियन्नासानु अप्पसत्थाउ । परिवज्जंतो गुत्तो । रक्खामि मह  
व्वएपंच ॥ १२ ॥ उविहमप्पितरयं । वज्जंपियउविहंतवोकम्मं ।  
उवसंपन्नो जुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ १३ ॥ सत्तन्नयछाणाइं ।  
सत्तविहंचेवनाणविप्पंगं । परिवज्जंतो गुत्तो । रक्खामिमहव्व  
एपंच ॥ १४ ॥ पिंसणपाणंसण । उग्गहसतिकया महज्जय  
णा । उवसंपन्नोजुत्तो । रक्खामि महव्वएपंच ॥ १५ ॥ अठमय  
छाणाइं । अठयकम्माइतेसिवंधंच । परिवज्जंतो गुत्तो रक्खामि  
महव्वएपंच ॥ १६ ॥ अठयपवयणमाया । दिछाअठविहनिठि  
अठहिं । उवसंपन्नोजुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ १७ ॥ नवपाव  
नियाणाइं । संसारत्थाय नवविहाजीवा । परिवज्जंतोगुत्तो ।  
रक्खामि महव्वएपंच ॥ १८ ॥ नववज्जचेरगुत्तो । दुनवविहंवं

नचेरपमिसुद्धं । उवसंपन्नोजुत्तो । रक्खामिमहवएपंच ॥ १९ ॥  
 उवघायंचदसविहं । असंबरंतहयसंकिलेसंच । परिवज्जंतोगुत्तो ।  
 रक्खामिमहवएपंच ॥ २० ॥ चित्तसमाहिठाणा । दसचेवदसा  
 उंसमणधम्मंच । उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहवएपंच ॥ २१ ॥  
 आसायणंचसवं । तिगुणंडकारसंविवज्जंतो । उवसंपन्नोजुत्तो ।  
 रक्खामिमहवएपंच ॥ २२ ॥ एवंतिदंमविरत्तं । तिगरणसुद्धोतिसल्ल  
 निसल्लो । तिविहेणपमिक्कंतो । रक्खामिमहवएपंच ॥ २३ ॥ इच्चेयं  
 महवयउच्चारणं थिरत्तं सल्लुद्धरणं धिइवलंवसानं साहण्ठो पाव  
 निवारणं निकायणा न्नावविसोही पमाग्गहणं निज्जुहणाराह  
 णागुणाणं संबरजोगो पसत्थजाणोवत्तया जुत्तयानाणे परमठो  
 उत्तमठो एसतित्थंकरेइ रागदोसमहणेहिं देसिउपवयणस्ससारो  
 उज्जीवनिकायसंजमं उवसंवसिउ तिवुक्कसक्कयंठाणं अश्रुवगया  
 नमोत्थुते सिद्धबुद्धमुत्तनीरय निस्संगमाणमूरण गुणरयण सायर  
 मणंतमप्पमे नमोत्थू ते महइ महावीर वद्धमाण सामिस्स नमोत्थू  
 ते अरिहत्तं नमोत्थू ते नगवत्तं (तिकट्टु) इच्चेसा खलुमहवय उच्चा  
 रणाकया इत्थामोसुत्तकित्तणं कात्तं नमोतेसिंखमासमणाणं जेहिं  
 इमंवाइयं उव्विहमावस्सयंनगवंतं (तंजहा) सामाइयं १ चत्तवीस  
 त्थत्तं २ वंदणयं ३ पमिक्कमणं ४ कावसग्गो ५ पच्चक्खाणं ६  
 सवेहंपिएयंमि उव्विहे आवस्सए नगवंते ससुत्ते सअत्थे सग्गथे  
 सन्निज्जुत्तीए ससंगहणीए जेगुणावा न्नाववा अरिहत्तेहिं नग  
 वंतेहिं पन्नत्तावा परूवियावा तेन्नावेसइहामो पत्तियामो रोएमो  
 फासेमो पालेमो अणपालेमो तेन्नावेसइहंतेहिं पत्तयंतेहिं रोयं  
 तेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं (अंतोपरकस्स) जंवाइयं  
 पढियं परियट्ठियं पुढियं अणुपेहियं अणुपालियं तं उक्ख

कखयाए कम्मकखयाए मोक्खयाए बोहिलाप्पाए संसारुत्तार  
 णाए त्तिकद्दु उवसंपज्जत्ताणं विहरामी ( अंतोपक्खस्स ) जंनवाइ  
 यं नपढियं नपरियट्ठियं नपुढियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संते  
 वले संतेवीरिए संतेपुरसक्कारपरक्कमे तस्सआलोएमो पडिक्कमा  
 मो निंदामो गरिहामो विउट्टेमो विसांहेमो अकरणयाए अप्पुठेमो  
 अहारिहंतवोकम्मं पायव्वित्तंपडिवज्जामो ॥ तस्समिठ्ठामिउक्क  
 डं ॥ नमोतेसिंखमासमणाणं जेहंडमंवाइयं अंगवाहिरियं उक्का  
 लियं जगवंतं तंजहा दसवेयालियं कप्पियाकप्पियं चुल्लकप्प  
 सुयं महाकप्पसुयं उववाइयं रायप्पसेणियं जीवाप्पिगमो पन्नव  
 णा महापन्नवणा नंदीअणुजगदाराइं देविंदब्बु तंडुलवेयालियं  
 चंदाविज्जयं पमायप्पमायं पोरसिमंडलं मंरुलप्पवेसो गणिवि  
 ज्जा विज्जाचरणविणिब्बु ज्ञाणविज्जती आणविज्जती आयवि  
 सोही मरणविसोही संलेहणासुयं वीयरगसुयं विहारकप्पो च  
 रणविसोही आनरपच्चक्खाणं महापच्चक्खाणं सब्बेहिंपिएयंमि  
 अंगवाहिरिए उक्कालिए जगवंते ससुत्ते सअत्थेसग्गंथे सन्निज्जुत्ती  
 ए ससंगहणीए जेगुणावा ज्ञावावा अरिहंतंतेहिं जगवंतेहिं पन्नत्ता  
 वा परूवियावा तेजावे सद्वहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पा  
 लेमो अणुपालेमो ते जावेसद्वहंतंतेहिं पत्तियंतंतेहिं रोइंतंतेहिं फा  
 संतेहिं पालंतंतेहिं अणुपालंतंतेहिं ( अंतोपरक्खस्स ) जंवाइयं पढियं  
 परियट्ठियं पुढियं अणुपेहियं अणुपालियं तंदुक्खक्खयाए  
 कम्मक्खयाए मोक्खयाए बोहिलाप्पाए संसारुत्तारणाए त्तिकद्दु  
 उवसंपज्जत्ताणं विहरामि ( अंतोपक्खस्स ) जंनवाईअं नपढियं  
 न परियट्ठियं नपुढियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेवले संतेवी  
 रिए संतेपुरसक्कारपरक्कमे तस्सआलोएमो पडिक्कमामो निंदा

अप्पायंकाणं अन्नग्ग जोगाणं सुवयाणं सांयरिय उवझायाणं  
 नाणेणं दंसणेणं चरित्तेणं तवसाअप्पाणं जावेमाण्णं बहुसुत्तेण्णे  
 दिवसो पक्खो चोमासियो संवहरिओ वड्ढंतो अन्नोयत्तेकल्लाणेणं  
 पज्जु वड्ढिं सिरसा मणसा मत्थएणवंदामि तुप्पेहिंसम्मं । इतिगुरु  
 वचनं ॥ इहामिखमासमणो पुविंचेइयाइं वंदित्ता नमंसित्ता तुप्पेणं  
 पायमूले विहरमाणेणं जेकेई बहुदेवसिया साहुणोदिछा सम  
 णावा गामाणुगामडुइज्ज माणावा रायणिया संपुड्ढंति उमराय  
 णिया वंदंति अज्जयावंदंति अज्जयाउवंदंति सावयावंदंति  
 सावयाउवंदंति अहंपिनिसत्तो निक्कसाउ तिकट्टु सिरसा मण  
 सा मत्थएणवंदामि ॥ इतिशिष्यसाधू वचनं ॥ इहां गुरुवचन  
 अहमविवंदामेवि चेइयाइं ॥ २ ॥ अप्पुठ्ठिंमि तुप्पेणं संतियं  
 अहाकप्पंवा वत्थंवा पम्पिग्गहंवा कंबलंवा पायपुड्ढणंवा रजहर  
 णंवा अक्खरंवा पायंवा गाहंवा सिलोगंवा अठ्ठंवा हेउंवा पसि  
 णंवा वागरणंवा तुप्पेवि यत्तेणंदिन्नं मएअविणए अपमिच्चियं ॥  
 तस्समिहामि डुक्कं ॥ इतिसाधुवचनं ॥ ॥ इहां आय  
 रियसंतियं ॥ इति गुरुवाक्यं ॥ २ ॥ इहामि खमासमणो  
 अहमविपुवाइं कयाइंच मेकियकम्माइं आयारमंतरे विणयमं  
 तरे सेविउ सेवाविउ अवग्रहिउ सारिउ वारिउ चोइउ पडिचो  
 इउ वियत्तामे पडिचोयणा उवड्ढिउहिं तुप्पेणं तवत्तेयसिरिए  
 इमाउचाउरंतसंसारकंताराउसाहट्टु नित्थारिस्सामि तिकट्टु सिर  
 सा मणसा मत्थएणवंदामि ॥ इति शिष्यवचनं ॥ इहाचार्यव  
 चनं नित्थारगपारगाहोह ॥ इति श्रीपाद्विक्रामणकानि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सातेस्मरणस्तोत्र महाप्रज्ञाविक ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अजियंजिअसवन्नयं । संतिंच पसंत सवगयपावं । जयगुरुसं  
तिगुणकरे । दोविजिणवरेपणिवयामि ॥ १ ॥ गाहा ॥ ववगयमंगुलजावे ।  
तेहंविजलतवनिम्मलसहावे । निखममहप्पजावे । थोसामिसुदिठसप्रावे ॥ २ ॥  
गाहा ॥ सबडुक्खप्पसंतिणं । सबपावप्पसंतिणं । सयाअजिय संतिणं । नमो  
अजियसंतिणं ॥ ३ ॥ सिलोगो ॥ अजियजिणसुहपवत्तणं । तवपुरिसुत्तमनाम  
कित्तणं । तहयधिइमइपवत्तणं । तवयजिणुत्तमसंतिकित्तणं ॥ ४ ॥ मागहिआ ॥  
किरिआविहिसंचिय कम्मकिलेस विमुक्खयरं । अजियंनिचियंच गुणेहि  
महासुणिसिद्धियं । अजियस्सय संति महासुणिणोविअ संतिअरं । सययं म  
मणिवुइकारणयंचनमंसणिअं ॥ ५ ॥ आलिंणणिअं ॥ पुरिसाजइ ड  
क्खवारणं । जइयविमग्गह सुक्खकारणं । अजियं संति च जावउ । अन्न  
यकरे सरणंपवज्झा ॥ ६ ॥ मागहिआ ॥ अरइरइ तिमिरविरहिय । सुव  
रय जरमरणं । सुर असुर गरुड जुअगवइ । पयय पणिवइयं । अजिय  
महमविय सुनयनयनिउण मन्नयकरं । सरणमुवसरिअ जुविदिविज्जमहियं  
सययमुवणमे ॥ ७ ॥ संगययं ॥ तंचजिणुत्तम सुत्तमणित्तमसत्तधरं । अज्जव  
मद्व खंतिविमुत्ति समाहिनिहिं । संतिअरंपणमामि दमुत्तमतित्थयरं । सं  
तिमुणीममसंतिसमाहिवरंदिसउ ॥ ८ ॥ सोवाणयं ॥ सावत्थिपुव्वपत्थिवंचवर  
हत्थि मत्थयपमत्तवित्थिणसंथियं थिरसरिठवठं । मयगजलीजाय माणव  
रगंधहत्थिपत्थाणपठिअं । संथवारिहं हत्थिहत्थवाहुं । थंतकणगरुअगानि  
ख्हयपिंजरं । पवरलक्खणोवचिअ सोमचारुखं । सुइसुहमणाजिराम परम  
रमणिज्जवरदेवडुंहुहि । निनायमहुरयस्यसुहगिरं ॥ ९ ॥ वेढउ ॥ अजिअंजिआ  
रिणं । जिअसवन्नयंअवोहरिउ । पणमामिअहंपयउ । पावंपसमेउमेअयवं  
॥ १० ॥ रासाउउउ ॥ कुरुजणवयहत्थिणान्तर । नरीसरोपढमं । तउमहा  
चफ्फवट्टिओए । महप्पजावो । जोवावत्तरिपुरवरसहस्स । वरणगरणिगमज्जण  
वयवई । वर्त्तासारायवरसहस्साणजायमग्गो । चउदसवररयण नवमहानिहि  
चउसठिमहस्सपवरउवईण सुन्दरवई । जुलसीहयगयरहमयसहस्समामी ठन्न  
वइगामकोभिसामी । आसी जो जारहम्मिअयवं ॥ ११ ॥ वेढउ ॥ तंसंतिंसंति



अरं । संतिहं सवन्नया । संतिथुणामिजिणं संतिविहेनुमे ॥१२॥ रासाणंदियअं  
 इख्खागुविदेहनरीसर नरवसहामुणिवसहा । नवसारयससिसकजाणण विग  
 यतमा विहुअरया । अजियउत्तमतेअगुणेहिमहामुणि अमिअबला विज्जलकु  
 ला । पणमामितेअवन्नयसूरण जगसरणाममसरणं ॥ १३ ॥ चित्तलेहा ॥ देव  
 दाणबिंदचंदसूर वंदहठुठजिठपरम । लठरूवधंतरुप्पपट्टसेय सुधनिधिव  
 ल । दंतपंति संतिसत्ति कित्तिमुत्ति जुत्ति गुत्ति पवर । दित्ततेयबिंदधेयसवलोय  
 आविअप्पआवणे । पइअसमेसमाहिं ॥ १४ ॥ नारायण ॥ विमलससिक  
 लाइरेअ सोमं । वित्तिमिरसूरकलाइरेअ तेयं । तिअसवईगणाइरेअ रूवं । धर  
 णीधरपवराइरेअसारं ॥ १५ ॥ कुसुमजया ॥ सत्तेय सयाअजियं । सारीरेय  
 बले अजिअं । तवसंजमेय अजिअं । एसथुणामि जिण मजिअं ॥ १६ ॥  
 नुअंगपरिरिंगिअं ॥ सोमगुणेहिं पावइनतं नवसरयससि । तेय गुणेहिं पावइ  
 नतं नवसरयरवि । रूव गुणेहिं पावइनतं तियसगणवई । सारगुणेहिं पावइन  
 तं धरणिधरवई ॥ १७ ॥ खिज्जिअयं ॥ तित्थवरपवत्तअं तमरयरहिअं ।  
 धीरजण थुअच्चिअं चुअकलिकलुसं । संतिसुहपवत्तयं तिगरणपयण ।  
 संतिमहंमहामुणिं सरणमुवणमे ॥ १८ ॥ जलियअं ॥ विणणणय सिरर  
 इअंजलि रिसिगुणसंथुअंथिमिअं । विबुहाहिव धणवइनरवइ । थुअमहि  
 अच्चिअंबहुसो । अडरूगय सरयदिवायर । समहिअ सप्पन्नंतवसा । गयणं  
 गणविअरण । समुइअ चारण वंदिअंसिरसा ॥ १९ ॥ किसलयमाला ॥  
 असुरगरुलपरिवंदिअं । किन्नरोगनमंसिअं । देवकोमिसयसंथुअं । समण  
 संघपरिवंदिअं ॥ २० ॥ सुमुहं ॥ अन्नयं अणहं अरयं अरुअं । अजियं अजियं  
 पयणपणमे ॥ २१ ॥ विज्जुविलसियं ॥ आगयावरविमाणदिव्वकणग रहुरय  
 पहकरसइहिंहुलिअं । ससंजमोरयणखुज्जिअलुलिअचलकुंमलं । गयतिरीड  
 सोहंतमजलिमाला ॥ २२ ॥ वेढण ॥ जंसुरसंधासासुरसंधा । वेरविउत्ताजत्तिमुज्ज  
 ता । आयरन्नूसिअसंजमर्पिअ । सुहसुविह्मिअ सवबलोधा । उत्तमकंचणर  
 यणपरुविअ । आसुरन्नूसणआसुरिअंगा । गायसमोणयजत्तिवसागय । पंज  
 लिपेसिअसीसपणामा ॥ २३ ॥ रयणमाला ॥ वंदिऊणथोऊणतोजिणं । ति  
 गुणमेवय पुणोपयाहिणं । पणमिऊणयजिणंसुरासुरा । पमुइआ सन्नवणाइ

तोगया ॥ २४ ॥ खित्तयं ॥ तं महामुणिमहंपिपंजली । रागदोसजयमोहवज्जि  
 अं । देवदाणवनरिंदवंदिअं । संतिसुत्तममहातवंनमे ॥ २५ ॥ खित्तयं ॥ अंवर  
 रंतर वियारणिआहिं । ललियहंसवहुगामिणिआहिं । पीणसोणित्थणसालणि  
 आहिं । सकलकमलदललोयणिआहिं ॥ २६ ॥ दीवयं ॥ पीणनिरंतरथणजर  
 विणमिअगायलयाहिं । माणिकंचणपसिडिलमेहल सोहियसोणितडाहिं । वर  
 खिखिणि नेज्जर सतिलय वलय विजूसणिआहिं । रयकर चज्जर मनोहर सुंदर  
 दंसणिआहिं ॥ २७ ॥ चित्तक्खरा ॥ देवसुंदरीहिं पायवंदिआहिं वंदिआयज  
 स्सतेसुविक्रमाक्कमा । अप्पणोनेलाडएहिं मंणोड्डणप्पगारएहिं केहिंकेहिंवी ।  
 अवंगतिलयपत्तलेह नामएहिं चिद्धएहिं संगयं गयाहिं । जत्तिसन्निविठ्ठिंदणाग  
 याहिं हुं तितेवंदिआ पुणोपुणो ॥ २८ ॥ नारायण ॥ तमहंजिणचंदं । अजिअं  
 जिअमोहं । धुअसव्वकिलेसं । पयणपणमामि ॥ २९ ॥ नंदिअयं ॥ थुअवंदि  
 अस्सा । रिसिगण देवगणेहिं । तोदेववहुहिं । पयणपणमिअस्सा । जस्सजगुत्त  
 मसासणयस्सा । जत्तिवसागयपिंनियआहिं । देववररसावहुआहिं । सुरवररइ  
 गुणपंमिअयाहिं ॥ ३० ॥ चासुरिअं ॥ वंससदतंतितालमेलाए । तिउक्खरात्रि  
 राम सदमीसएकएअ । सुइसमाणे असुअसङ्गागीअपायजालवंदिआहिं ।  
 वलयमेहला कलावनेतरा जिराम सदमीसएकएय । देवनट्टिआहिं । हावजाव  
 विघ्नमप्पगारएहिं । नच्चिऊणअंगहारएहिं । वंदिआय जस्सतेसुविक्रमाक्कमा ।  
 तयंतिलोयसव्वसत्त संतिकारयं । पसंतसव्वपावदोसमेसहं । नमामिसंतिसुत्तमं  
 जिणं ॥ ३१ ॥ नारायण ॥ उत्तचामर पडागल्लुअजव मंमिआ । जयवर मगर तुरग  
 सिखिअसुलंगणा । दीव समुद्ध मंदिर दिसागय सोहिआ । सत्थियअ वसहसीह  
 सिखिअ सुलंगणा ॥ ३२ ॥ ललिययं ॥ सहावलठा समपइठा । अदोसपुठा  
 गुणोदिजिठा । पसायमिठा तवेणपुठा सिरीइइठा गिरीहिंछुठा ॥ ३३ ॥  
 वाण वासिआ ॥ तेतवेण थुअमव्वपावया । मव्वलोअदिअमूलपावया । संथु-  
 आ अजिअसंति पावया । हुंनुमेमिवसुहाण दावया ॥ ३४ ॥ अपरंतिका ॥  
 एवंतववल विज्जुतं ॥ थुअंमा अजियसंति जिणजुअलं । ववगयकम्मरयमत्तं ।  
 गयंगयं सामयंविमलं ॥ ३५ ॥ गाहा ॥ नंवहुगुणप्पसायं । सुव्वसुहेणपरमेण  
 अविसायं । नासंत्तमे विमायं । कुणउअपरिमाविअ पसायं ॥ ३६ ॥ गाहा ॥

तमोएउअ नंदिं । पावेउअ नंदिसेणमज्जिनंदिं । परमाविय सुहनंदिं । ममय  
 दिसउ संजमे नंदिं ॥ ३७ ॥ गाहा ॥ पक्खिअचान्ममासे । संवत्तर राइएय-  
 दिअहेअ । सोअवो सबोहिं । उवसग्गनिवारणो एसो ॥ ३८ ॥ जो पढइ जो  
 निसुणइ । उन्ननकालंपि अजिअ संति थुअं । नहु हुंति तस्सरोगा । पुव्वुप्पणा  
 विनासंति ॥ ३९ ॥ जइइत्तह परमपयं । अहवाकित्तीसु वित्थना जवणे तातिळु-  
 कुच्चरणे । जिणवयणे आयरंकुणह ॥ ४० ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
 ॥ ❀ ॥ इति श्रीअजितशांतिस्तवनं प्रथम स्मरणं ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ उद्धासिकम नक्खनिग्गयपहादंरुत्तलेणंगिणं । वंदा रूपं दिसंतइ  
 वपयनं निव्वाण मग्गावलं । कुंदिंहुज्जल दंतकंति मिसउ नीहंतनाणंकुरु ।  
 केरेदोवि इइज्जसोलसजिणे थोसामि खेमंकरे ॥ १ ॥ चरमजलहिनीरं जोमि-  
 णिज्जं जलीहिं । खयसमयसमीरं जोजणिज्जा गईए ॥ सयलनहयलंवा लंघए  
 जोपएहिं ॥ अजिअ महवसंतिं सोसमत्थोथुणेउं ॥ २ ॥ तहविहु बहुमाणु  
 द्वासिजत्तिप्परेण । गुणकणमिवक्त्ति हामिचिंतामणिब । अलमहवं अचिंता  
 णंतसामत्थजसिं । फलहइ लहुसवं वंविअं णिच्चिअंमे ॥ ३ ॥ सयलजयहि  
 आणं नामिमित्तेणजाणं । बिहडइलहुपुष्ठा । निष्ठदोवट्ठवट्ठं । नमिरसुरकिरीड  
 घटपायारविंदै । सययमजिअसंती ते जिणिं देज्जिवंदे ॥ ४ ॥ पसरइ वरकित्ती  
 वट्ठएदेहदित्ती । विलसइ नुविमित्ती जायए सुप्पवित्ती । फुरइ परमतित्ती  
 होइसंसारवित्ती । जिणजुअपयजत्ती हीअचिंतोरुसत्ती ॥ ५ ॥ ललियपयपयारं  
 चूरिदिवंगहारं । फुडघणरसज्जावो दारसिंजारसारं । अणिमिसरमणिज्ज दंसण-  
 छेअजीया । इवपणमणमंदा कासि नट्टोवहारं ॥ ६ ॥ थुणहअजिअसंती ।  
 तेकयासेससंती । कणययपसंगा बज्जाएजाणमुत्ती । सरज्जसपरिरंजा रंजिनिवा  
 णलत्ती । वणथणघुसिणंकु प्पंकपिंगीकयव ॥ ७ ॥ बहुविहनयजंगं वत्थुणिच्चं  
 अणिच्चं । सदसदण्णिलप्पा लप्पमेगंअणेगं । इयकुनयविरुद्धं सुप्पसिंदवजेसिं ।  
 वयणमवयणिज्जं ते जिणे संजरामि ॥ ८ ॥ पसरइतिअलोए ताव मोहंवरारं ।  
 जमइजय मसणं ताव मिठत्तवणं । फुरइफुरु फलंता णंतणाणं सुपूरो । पयन  
 मजिअसंती जाणसूरोनजाव ॥ ९ ॥ अरिकरि हरि तिएहु एहंभुचोराहि वाही ।  
 समररुमर मारी रुद्धुदोवसग्गा । पलयमजिअसंती कित्तेणजत्तिजंती । निवि

दतरतमोहा नक्खरा लंखिअव ॥ १० ॥ निचिअपुरिअदारु दित्तजाणगिजाला ।  
 परिगय मिव गोरं चित्तिअं जाण ख्वं । कणयनिहसरेहा कंतिचोरं करिजा ।  
 चरथिर मिह लठ्ठि गाढसं थंनिअव ॥ ११ ॥ अडविनिवडिआणं पत्थिवुत्तासि-  
 आणं । जलहिलहरिहीरं ताणगुत्तिठियाणं । जलिअ जलणजाला लिंगिआणं  
 चजाणं । जणयइ लहुसंतिं संतिनाहाजिआणं ॥ १२ ॥ हरिकरिपरिकिणं पक्कपा-  
 इक्कणुणं । सयलपुहवि रज्जं उड्डिअणसज्जं । तणमिच पफिलगं जेजिणासु-  
 त्तिमगं । चरण मणुपवणा हुंतुतेमे पसणा ॥ १३ ॥ ढणससिवयणाहिं । फुल्लनि-  
 चुप्पलाहिं थणन्नरन मिरीहिं मुठिगिज्जोदरीहिं । ललिअनुअलयाहिं पीण-  
 सोणित्थलीहिं । सयसुर रमणीहिं वंदिआ जेसि पाया ॥ १४ ॥ अरिस किफिअ  
 कुठ गंठि का साइसार । खयजर वणलूआ साससोसोदराणि । नहमुह दस-  
 ण्ठी कुठिकणाइरोगे । महजिण जुअपाया सुप्पसायाहरंतु ॥ १५ ॥ इयगुरु-  
 पुहतासे पक्खि ए चान्तासे । जिणवरपुगथुत्तं वड्ढेवा पवित्तं । पढह सुणह सि-  
 ज्जाएहजाएहचित्ते कुणह सुणह विग्गं जेण घाएहसिग्गं ॥ १६ ॥ इयविजया  
 जियसत्तुपुत्त सिरि अजिअ जिणेसर । तहअइरा विससेण तणय पंचमचक्कीसर ।  
 तित्थंकरसोल समसंति जिणवल्लहसंतह । कुरुमंगल ममहरमुपुरिअ मखिलंपि  
 थुणंतह ॥ १७ ॥ इति श्रीलघुअजितशांतिस्तवनं द्वितीयं स्मरणं २ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ नमिअणपणयसुरगण । चूडामणिक्खिणरंजिअंमुणिणो । चलणजु  
 अलं महाअय । पणासणंसंथवंबुद्धं ॥ १ ॥ सडिअकरचरणनहमुह । निबुडुनासा  
 विवणलावणा । कुठमहारोगानल । फुलिगनिद्वद्धसवंगा ॥ २ ॥ तेवुहचलणा  
 रादण । मलिलंजलिसेअवद्वियत्ताया । वणदवदद्वागिरिपायपुव पत्तापुणोलठ्ठि  
 ॥ ३ ॥ पुवायखुअजलनिहि । उप्पफक्खोलजीसणागवे । मंजंतअयविमं-  
 बुल । निज्जामयमुक्खवावारे ॥ ४ ॥ अवदल्लिअजाणवत्ता । खणेणपावंतिइठ्ठि-  
 यंरुल्लं । पासजिणचलणजुअलं । निच्चंचिअजेनमंतिनरा ॥ ५ ॥ खरपवाणुव-  
 अवणदव । जालावलिमिलिअमयल उमगहणे । नज्जंतमुअमयवहु । जीम-  
 णाखर्जीमणंमिवाणं ॥ ६ ॥ जगगुणोक्कमजुअलं । निव्वावियमयलनिहुअणा-  
 जेयं । जेसंजरेतिमणुआ नकुणइजलणोअयंतेमि ॥ ७ ॥ विलसंतनोगजी-  
 पण । फुलिआणणनपणवरलजीदालं । उग्गनुअंमंनवजलय । सव्वहंजीमणा-

यारं ॥ ८ ॥ मणंतिकीडसरिसं । दूरपरिच्छूढविसमविसवेगा । तुहनामक्खरफुड-  
 सिध । मंतगुरुआनरालोए ॥ ९ ॥ अडवीसुजिद्धतकर । पुलिंदसइलसद्वनी-  
 मासु । जयविहलुवणकायर । उल्लूरिअपहियसत्थासु ॥ १० ॥ अविलुत्तविहव-  
 सारा । तुहनाहपणाम मित्तवावारा । ववगयविग्वासिग्धं । पत्ताहियइत्तियंठाणं  
 ॥ ११ ॥ पज्जलिआनलनयणं । दूरवियारिअमुहंमहाकायं । नहकुलिसघाय-  
 विअलिय । गयंदकुंजत्थलाजोयं ॥ १२ ॥ पणयससंजमपत्थिव । नहमणिमा-  
 णिकपडिअपन्निमस्स । तुहवयण पहरणधरा । सीहंकुधंपि नगिणंति ॥ १३ ॥  
 ससिधवलदंतमुसलं । दीहकरूद्धालवट्ठि उट्ठाहं । महुपिंगनयणजुअलं । सं-  
 सलिलनवजलहरायारं ॥ १४ ॥ जीमं महागइंदं । अच्चासनंपितेनविगिणंति ।  
 जेतुहचलणजुअलं सुणिवइतुंगंसमव्रीणा ॥ १५ ॥ समरम्मतिकखखग्गा ।  
 त्रिघायपविधुअकवंदे । कुंतविणिज्जिन्न करिकलह । मुक्कसिक्कारपजरम्मि ॥  
 ॥ १६ ॥ निज्जिअदप्पुअरिउनरिंद । निवहानडाजसंधवलं । पावंतिपावपस-  
 मण । पासजिणतुहप्पजावेण ॥ १७ ॥ रोगजलजलणविसहर । चोरारिमयंदग-  
 यरणजयाइं । पासजिणनामसंकित्तेण । पसमंतिसवाइं ॥ १८ ॥ एवंमहाजय  
 हरं । पासजिणिंदस्ससंधवमुआरं । जवियजणाणंदयरं । कद्धाणपरंपरनिहाणं  
 ॥ १९ ॥ रायजयजक्खरक्खस्स । कुसुमिणुस्सउणरिक्खपीडासु । संजासु-  
 दोसुपंथे उवसग्गेतहयरयणीसु ॥ २० ॥ जोपढइजोअनिसुणइ । ताणंकइणो  
 यमाणतुंगस्स । पासोपावंपसमेउ । सयलजुवणच्चिअच्चलणो ॥ २१ ॥ ❀ ॥  
 इति श्रीपार्श्वजिनस्तवनं तृतीयस्मरणं ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तंजयउजएतित्थं । जमित्थतित्थाहिवेणवीरेण । सम्मंपवत्तिअंज-  
 वसत्त । संताणसुहजणयं ॥ १ ॥ नासिअसयलकिजेसा निहयकुजेसापसत्थ  
 सुहजेसा । सिरिवधमाणतित्थस्स । मंगलंदिंतुतेअरिहा ॥ २ ॥ निद्वक्कम्म-  
 वीआ । वीआपरमेठिणो गुणसमिधा । सिद्धा तिजयपसिद्धा । हणंतुडुत्थाणि-  
 तित्थस्स ॥ ३ ॥ आयारमायरंता । पंचपयारंसयापयासंता । आयरिआत-  
 हतित्थं । निहयकुतित्थंपयासंतु ॥ ४ ॥ सम्मसुअवायगावायगाय । सिअ-  
 वायवायगावाए । पवयणपन्निणीयकए । वणंतुसवस्ससंवस्स ॥ ५ ॥ निवा-  
 णसाहुणज्जअ । साहुणंजणिअसवसाहज्जा । तित्थप्पजावगाते । हवंतुपरमे



छिणोजइणो ॥ ६ ॥ जेहाणुगयंनाणं । निवाणफलंचरणमविहवइ । तित्थ  
 स्सदंसणंतं । मंगुलमवणेउसिद्धियरं ॥ ७ ॥ निव्वम्मोसुअधम्मो । समग्गजब्बंगि  
 वग्गकयसम्मो । गुणसुद्धिअस्ससंवस्स । मंगलंसम्ममिहदिसउ ॥ ८ ॥ रम्मोच  
 रित्तधम्मो संपाविअजवसत्तसिवसम्मो । नीसेसक्खित्तेसहरो । हवउसयासयल  
 संवस्स ॥ ९ ॥ गुणगणगुरुणो गुरुणो । सिवसुहमइणो कुणंतु तित्थस्स । सिरि  
 वद्धमाणपहुपयमिअस्स । कुसलंसमग्गस्स ॥ १० ॥ जियपन्निक्खाजक्खा ।  
 गोमुहमायंगयसुहपसुक्खा । सिरिवंजसंतिसहिआ । कयनयरक्खासिवंदितु  
 ॥ ११ ॥ अंवापडिहयमंवा । सिद्धासिद्धाइआपवयणस्स । चक्केसरिवइरुद्धा ।  
 संतिसुरादिसउसुक्खाणि ॥ १२ ॥ सोलसविज्जादेवीउ दिंतुसंवस्समंगलंविउत्तं ।  
 अबुत्तासहिआउ । विस्सुअसुयदेवयाइसमं ॥ १३ ॥ जिणसासणकय रक्खा ।  
 जक्खाचउवीससासणसुरावि । सुहजावासंतावं । तित्थस्ससयापणासंतु ॥ १४ ॥  
 जिणपवयणंमिनिरया । विरहाकुपहाउसवहासब्बे । वेयावच्चक्राविअ । तित्थ  
 स्सहवंतुसंतिकरा ॥ १५ ॥ जिणसमय सुद्धसमग्ग । वहिअजवाण जणिअसाह  
 ज्जो । गीयरई गीयजसो । सपरिवारोसुहंदिसउ ॥ १६ ॥ गिहयुत्तखित्तज  
 लयल । वणपव्वयवासिदेवदेवीउ । जिणसासणछिआणं । पुहाणिसवाणिनि  
 ह्णंतु ॥ १७ ॥ दसादिसिपालासक्खित्तपालया नवग्गहासनक्खत्ता । जोइणि  
 राहुग्गहकालपास कुलिअवपहरेहिं ॥ १८ ॥ सहकालकंटएहिं । सविछिवत्येहिं  
 कालवेत्ताहिं । सवेसवत्थसुहं । दिसंतुसवस्ससंवस्स ॥ १९ ॥ जवणवइवाण  
 मंतर । जोइसवेमाणिआयजेदेवा । धरणिंदसकसहिआ । दलंतुपुरिआइंति  
 त्यस्स ॥ २० ॥ चक्कंजस्सजलंतं । गहइ पुरउपणासिअनमोहं । तंतित्थस्स  
 जगवउ । नमोनमो वद्धमाणस्स ॥ २१ ॥ सोजयउजिणोवीरो । जस्सज्जाविमा  
 सणंजाजयइ । सिद्धिप्पहमाहणंकुपह । नामणंमवजयमहणं ॥ २२ ॥ सिरिउमं  
 जमेणपसुहा । हयजय निवहा दिसंतुतित्थस्स । सब्बजिणाणंगणिहारिणो ।  
 गहंवंउिअंसव्वं ॥ २३ ॥ सिरिवद्धमाणतित्थाहिवेण । तित्थंसमप्पिअंजस्स ।  
 मम्मंसुहम्मसामी । दिसउत्तुहं सयलसंवस्स ॥ २४ ॥ पयइपज्जदिआजे । जइ  
 णदिमंतुमयलसंवस्स इयरसुराविहुम्मं । जिणगणहरकहियकारिस्स ॥ २५ ॥



इयजोपद्वइतिसंजं । दुस्सज्जंतस्सनत्थि किंपिजए । जिणदत्ताणा एठिउ । सुनि-  
ठिअठोसुहीहोइ ॥ २६ ॥ ❀ ॥ इतिगणधरदेवस्तुतिः । चतुर्थस्मरणं ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मयरहिअंगुणगणरणं । सायरं सायरं पणमिऊणं । सुगुरुजण  
पारतंतं । उहिव थुणामितंचेव ॥ १ ॥ निम्महियमोहजोहा । निहयविरोहाप  
णठिसंदेहा । पणयंगिवग्गदाविअ । सुहसंदोहासुगुणगेहा ॥ २ ॥ पत्तसुज  
इत्तसोहा । समत्तपरतित्थजणियसंखोहा । पन्निग्गमोहजोहा । दंसिअसुम  
हत्थसत्थोवा ॥ ३ ॥ परिहरिअसत्थवाहा । हयदुहदाहासिवंबतरुसाहा । संपा  
विअसुहलाहा । खीरोदहिणुवअग्गाहा ॥ ४ ॥ सुगुणजणजणिअपुज्जा ।  
सज्जोनिरवज्जगहिअपवज्जा । सिवसुहसाहणसज्जा । जवगिरिगुरुचूरणेवज्जा ॥  
॥ ५ ॥ अज्जसुहम्मप्पसुहा । गुणगणनिवहासुरिंदविहियमहा । ताणतिसंजं  
नामं । नामंनपणासइजियाणं ॥ ६ ॥ पन्निवज्जिअजिणदेवो । देवायरिउरुंत  
जवहारी । सिरिनेमचंदसूरि । उज्जोयणसूरिणोसुगुरु ॥ ७ ॥ सिरिवज्जमा  
णसूरी । पयनीकयसूरिमंतमाहप्पो । पन्निहयकसायपसरो । सरयससंकुवसुह  
जणउ ॥ ८ ॥ सुहसीलचोरधप्परण । पच्चलोनिच्चलोजिणमयंमि । जुगपवरसुद्ध  
सिधंत । जाणउपणयसुगुणजणो ॥ ९ ॥ पुरउदुल्लह महिवल्लहस्स । अणहि  
ल्लवाडएपयडं । मुक्काविआरिऊणं । सीहेणवदवलिंगिगया ॥ १० ॥ दसमत्तेर-  
यनिसिविप्फुरंत । सव्वंदसूरिमयतिमिरं । सूरिणवसूरीजिणेसरेण । हयमहिअ-  
दोसेण ॥ ११ ॥ सुकइत्तपत्तकित्ती । पयडिअगुत्ती पसंतसुहसुत्ती । पहयपर-  
वाइदिक्की । जिणचंदजईसरोमंती ॥ १२ ॥ पयडिअनवंगसुत्तत्थ । रयणुक्को-  
सोपणासिअपउंसो । जवजीअजविअजणमण । कयसंतोसोविगयदोसो ॥ १३ ॥  
जुगपवरागमसारपरुवणा । करणबंधुरोधणिअं । सिरिअजयदेवसूरी । सुणिप-  
वरोपरमपसमधरो ॥ १४ ॥ कयसावय संतासो । हरिवसारंगजग्गसंदेहो । गय  
समयदप्पदलणो । आसाइअपवरकव्वरसो ॥ १५ ॥ जीमजवकाणणम्मिअ ।  
दंसिअगुरुवयणरणसंदेहो । नीसेससत्तगुरुत्त । सुरीजिणवल्लहोजयइ ॥ १६ ॥  
उवरठिअसच्चरणो । चउरणुग्गप्पहाणसच्चरणो । असममयरायमहणो । उट्टमु-  
होसहइजस्सकरो ॥ १७ ॥ दंसिअनिम्मलनिच्चल । दंतगणोगणिअसावउत्त-  
जत्त । गुरुगिरिगरुत्तसरहुव्व । सूरिजिणवल्लहोहोत्था ॥ १८ ॥ जुगपवरागमपी-

उसपाण । पोणियमणाकयाजवा । जेणजिणवव्वहेणं । गुरुणातंसव्वहावंदे ॥ १९ ॥  
 विप्फुरिअपवरपवयण । सिरोमणी बूढदुव्वह खमोय जोसेसाणंसेसुव्व । सहइ-  
 सत्ताण ताणकरो ॥ २० ॥ सच्चरिआणमहीणं । सुगुरुणंपारतंतमुव्वहइ जयइ-  
 जिणदत्तसूरी । सिरिनिलज्जणयमुणितिलज्ज ॥ २१ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥  
 ॥ ॐ ॥ इति श्रीगुरुपारतंत्र्यं पंचमस्मरणं ॥ ५ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ सिग्गमवहरज्जविग्गं । जिणवीराणाणु गामिसंवत्स । सिरिपास जि-  
 णोथंजण । पुरठिज्जनिठिआनिठो ॥ १ ॥ गोयमसुहम्मपमुहा । गणवइ णोविहि-  
 अन्नवसत्तमुहा । सिखिच्चमाणजिणतित्थ । सुत्थयंतं कुणंतुसया ॥ २ ॥ सकाइ  
 णोसुराजे । जिणवेयावच्चकारिणोसंति । अवहरिअविग्गसंवा । हवंतु तेसंवसंति-  
 करा ॥ ३ ॥ सिरिथंजणयठियपाससामि । पयपज्जमपणयपाणीणं । निद्वलिअ-  
 णुरिअविंदो । धरणिंदोहरज्जपुरिआइं ॥ ४ ॥ गोसुहपमुक्खजक्खा । पडिहय  
 पन्निक्खपक्खजक्खाते । कयसगुणसंधरक्खा । हवंतुसंपत्तिसिवसुक्खा ॥ ५ ॥  
 अप्पडिचकापमुहा । जिणसासण देवयानजिणपणिआ । सिद्धाइआ समेया ।  
 हवंतुसंवत्सविग्गहग ॥ ६ ॥ सकाएसासच्चत्तरपुरठिज्ज । वच्चमाण जिणजत्तो ।  
 सिरिवंजसंतिजक्खो । रक्खज्जसंव पयत्तेण ॥ ७ ॥ खित्तगिह गुत्तसंताण । देस  
 देवाहिदेवयानाज्ज । निवइपुरपहियाणं । जवाणकुणंतुसुक्खाणि ॥ ८ ॥ चक्के  
 सरिचकधरा । विहिपहरिज्जिणकंधरायणिअं । सिवसरणजग्गसंवत्स । सव्व  
 हाहरज्जविग्वाणि ॥ ९ ॥ तित्थवइवच्चमाणो । जिणेसरोसंगज्जमुसंवेण । जिण  
 चंदोजयदेवो । रक्खज्जजिण वल्लहपहुमं ॥ १० ॥ सोजयज्जवच्चमाणो । जिणेसरो  
 णेसरव्वहयतिमिरो । जिणचंदोजयदेवा । प हुणो जिणवल्लहाजेय ॥ ११ ॥ गुरु  
 जिणवल्लहपाण जयदेवपहुत्तदायगेवंदे । जिणचंदजिणेसरव्ववच्चमाण । तित्थस्स  
 चुट्टिकण ॥ १२ ॥ जिणदत्ताणंमम्मं । मन्नंनिकुणंनिजेयकारंति । मणमावयसा  
 वत्तसा । जयंतु साहम्मिआतेवि ॥ १३ ॥ जिणदत्तगुणेनाणाइणो । सयाजेय-  
 रंतिधानंति । दंसिअसिववायपाण । नमामिसाहम्मिआतेवि ॥ ६ ॥ ॐ ॥ इति  
 षष्ठं स्मरणं ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ उव्वसग्गहरंपासं । पासंवंदोमिकम्मधणमुक्कं ।  
 विमहरविसनिणामं । मंगलक्खाणआवासं ॥ १ ॥ इत्यादि ॥ जवेजवेपास-  
 जिणचंद ॥ २ ॥ ॐ ॥ इति श्रीपार्थ जिनस्तवनं ॥ इति सप्तस्मरणानि ॥ ॐ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ लघुशांतिपि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ शांतिंशांतिनिशांतं । शांतिंशांताशिवंनमस्कृत्य । स्तोतुशांतिनि-  
 मित्तं । मंत्रपदैःशांतयेस्तौमि ॥ १ ॥ उमितिनिश्चितवचसे । नमोनमोजगवते-  
 हतेपूजां । शांतिजिनायजयवते । यशस्विनेस्वामिनेदमिनां ॥ २ ॥ सकला-  
 तिसेषकमहा । संपत्तिसमन्वितायशस्याय । त्रैलोक्यपूजितायच । नमोनमः  
 शांतिदेवाय ॥ ३ ॥ सर्वामरसुसमूह । स्वामिकसंपूजितायनजिताय । नुवन  
 जनपालनोद्यत । तमायसततंनमस्तस्मै ॥ ४ ॥ सव्वपुर्तौव नाशन कराय ।  
 सर्वाशिव प्रशमनाय । दुष्टग्रहचूत पिशाच शाकनीनां प्रमथनाय ॥ ५ ॥  
 यस्येतिनाममंत्र । प्रधानवाक्योपयोगकृततोषा । विजया कुरुतेजनहित ।  
 मिति चतुता नमततं शांतिं ॥ ६ ॥ नवतु नमस्ते जगवति । विजये सुजये  
 परापरेरजिते । अपराजिते जगत्यां । जयतीति जयावहे नवति ॥ ७ ॥ सर्व-  
 स्यापिच संवस्य । नद्रकल्याण मंगलप्रददे । साधूनांचसदाशिव । तुष्टिपुष्टिप्र-  
 देजीयाः ॥ ८ ॥ नव्यानां कृतसिद्धे । निर्वृतिनिर्वाण जननि सत्वानां । अत्रयप्र-  
 दाननिरते । नमोस्तु स्वस्तिप्रदेतुभ्यं ॥ ९ ॥ नक्तानां जंतूनां । शुभावहे  
 नित्यसुद्यतेदेवी । सम्यग्दृष्टीनांच । धृति रति मति बुद्धि प्रदानाय ॥ १० ॥  
 जिनशासननिरतानां । शांतिनतानांच जगतिजंतूनां । श्रीसंपत्कीर्तियशो ।  
 वर्धनिजयदेवि विजयस्व ॥ ११ ॥ सलिलानल विषविषधर । दुष्टग्रह राज-  
 रोग रणत्रयतः राक्षसरिपुगणमारी । चौरैतिश्चापदादिभ्यः ॥ १२ ॥ अथ रक्ष  
 रक्ष सुशिवं । कुरु २ शान्तिं च कुरु कुरु सदेति । तुष्टिकुरु २ पुष्टिं । कुरु २ स्वस्ति  
 च कुरु कुरुत्वं ॥ १३ ॥ जगवति गुणवति शिवशांति । तुष्टि पुष्टि स्वस्तीह ।  
 कुरु २ जनानां । उमिति नमो नमो ज्ञाँ ज्ञीं ज्ञुँ ज्ञः । यः कः क्रीं फद फद  
 स्वाहा ॥ १४ ॥ एवं यन्नामाक्षर । पुरुस्सरंसंस्तुता जयादेवी । कुरुते शान्ति  
 निमित्तं । नमो नमः शान्तये तस्मै ॥ १५ ॥ इतिपूर्वसूरिदर्शित । मंत्रपद-  
 विदर्शितः स्तवः शांतेः । सलिलादिजयविनाशी । शांत्यादिकरश्च नक्ति मतां  
 ॥ १६ ॥ यश्चैनं पठति सदा । श्रयणोति नवयतिवा यथायोगं । सहिशान्ति-  
 पदं यायात् । सूरिः श्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥ ❀ ॥  
 इति लघुशान्तिस्तोत्रं ॥ ❀ ॥      ॥ ❀ ॥      ॥ ❀ ॥      ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ वृद्धशांति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ओ ओ नव्याः शृणुतवचनं प्रस्तुतं सर्वमेतत् । ये यात्रायां त्रिभुवन-  
 गुरोरार्हता भक्तिभाजः । तेषां शान्तिर्भवतु भवतामर्हदादिप्रभावा । दारोग्य  
 श्री धृति मतिकरी क्लेश विध्वंसहेतुः ॥ १ ॥ ओओनव्यलोकाइहहि भरतै रा-  
 वत विदेहसंभवानां । समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासनप्रकंपानन्तरं । अवधिना  
 विज्ञाय सौधर्माधिपतिः । सुघोषाघंटाचालनान्तरं । सकलसुरा सुरैर्द्रैः सह  
 समागत्य सविनयमर्हद्भटारकं गृहीत्वा । गत्वा कनकाद्रिशृंगे । विहितजन्मा-  
 भिषेकः । शान्तिं मुद्घोषयति ततोहं कृतानुकारमिति कृत्वामहाजनो येन  
 गतस्स पंथाः । इति नव्य जनैः सहसमागत्य । स्नात्रपीठे स्नात्रविधाय ।  
 शान्तिमुद्घोषयामि । तत्पूजा यात्रास्नात्रादि महोत्सवानन्तरं । इतिकृत्वा  
 कर्णं दत्वा निशम्यतां स्वाहा । ॐ पुण्याहं २ । प्रीयंतां २ भगवंतोऽर्हन्तः  
 सर्वज्ञाः सर्वदर्शिन । स्रैलोक्यनाथा । स्रैलोक्यमहिता । स्रैलोक्यपूज्या ।  
 स्रैलोक्योद्योतकराः ॥ ॐ श्रीकेवलज्ञानी ॥ १ ॥ निर्वाणी । २ । सागर । ३ ।  
 महायश । ४ । विमल । ५ । सर्वानुभूति । ६ । श्रीधर । ७ । दत्त । ८ । दामोदर । ९ ।  
 सुतेजा । १० । स्वामी । ११ । मुनिसुव्रत । १२ । सुमति । १३ । शिवगति । १४ ।  
 अस्ताग । १५ । नमीश्वर । १६ । अनिल । १७ । यशोधर । १८ । कृतार्थ । १९ ।  
 जिनेश्वर । २० । शुद्धमति । २१ । शिवकर । २२ । स्यन्दन । २३ । संप्रति  
 । २४ ॥ ❀ ॥ एते अतीतचतुर्विंशतितीर्थकराः ॥ ❀ ॥ ॐ श्रीरुषभ । १ ।  
 अजित । २ । संभव । ३ । अभिनन्दन । ४ । सुमति । ५ । पद्मप्रभ । ६ ।  
 सुपार्थ । ७ । चंद्रप्रभ । ८ । सुविधि । ९ । शीतल । १० । श्रेयांस । ११ ।  
 वासुपूज्य । १२ । विमल । १३ । अनन्त । १४ । धर्म । १५ । शान्ति । १६ ।  
 कुंतु । १७ । अर । १८ । मखि । १९ । मुनिसुव्रत । २० । नमि । २१ ।  
 नेमि । २२ । पार्थ । २३ । वर्द्धमान । २४ । प्रसुखावर्त्तमानजिनाः ॥ ❀ ॥  
 ॥ ॐ श्रीपद्मनाभ । १ । सूरदेव । २ । सुपार्थ । ३ । स्वयंप्रभ । ४ । सर्वा-  
 नुभूति । ५ । देवश्रुत । ६ । उदय । ७ । पेठाल । ८ । पोष्टिल । ९ । शत-  
 कीर्ति । १० । सुव्रत । ११ । अमम । १२ । निष्कषाय । १३ । निष्पुलाक  
 । १४ । निर्मम । १५ । चित्रगुप्ति । १६ । समाधि । १७ । संवर । १८ । यशो-

## ॥ ❀ ॥ अथ लघुशांतित्रि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ शांतिंशांतिनिशांतं । शांतिंशांताशिवंनमस्कृत्य । स्तोतुशांतिनि-  
 मित्तं । मंत्रपदैःशांतयेस्तौमि ॥ १ ॥ उमितिनिश्चितवचसे । नमोनमोऽगवते-  
 र्हेतेपूजां । शांतिजिनायजयवते । यशस्विनेस्वामिनेदामिनां ॥ २ ॥ सकला-  
 तिसेषकमहा । संपत्तिसमन्वितायशस्याय । त्रैलोक्यपूजितायच । नमोनमः  
 शांतिदेवाय ॥ ३ ॥ सर्वामिस्सुसमूह । स्वामिकसंपूजितायनजिताय । जुवन  
 जनपालनोद्यत । तमायसततंनमस्तस्मै ॥ ४ ॥ सर्व्वदुरितौघ नाशन कराय ।  
 सर्वाशिव प्रशमनाय । दुष्टग्रहचूत पिशाच शाकनीनां प्रमथनाय ॥ ५ ॥  
 यस्येतिनाममंत्र । प्रधानवाक्योपयोगकृततोषा । विजया कुरुतेजनहित ।  
 मिति चनुता नमततं शांतिं ॥ ६ ॥ ऋवतु नमस्ते ऋगवति । विजये सुजये  
 परापरैरजिते । अपराजिते जगत्यां । जयतीति जयावहे ऋवति ॥ ७ ॥ सर्व-  
 स्यापिच संघस्य । ऋद्रकल्याण मंगलप्रददे । साधूनांचसदाशिव । तुष्टिपुष्टिप्र-  
 देजीयाः ॥ ८ ॥ ऋव्यानां कृतसिद्धे । निर्व्वृतिनिर्वाण जननि सत्वानां । अत्रयप्र-  
 दाननिरते । नमोस्तु स्वस्तिप्रदेतुभ्यं ॥ ९ ॥ ऋक्तानां जंतुनां । शुभावहे  
 नित्यमुद्यतेदेवी । सम्यग्दृष्टीनांच । धृति रति मति बुद्धि प्रदानाय ॥ १० ॥  
 जिनशासननिरतानां । शांतिनतानांच जगतिजंतूनां । श्रीसंपतकीर्तियशो ।  
 वर्धनिजयदेवि विजयस्व ॥ ११ ॥ सलिलानल विषविषधर । दुष्टग्रह राज-  
 रोग रणप्रयतः राक्षसरिपुगणमारी । चौरैतिश्वापदादिभ्यः ॥ १२ ॥ अथ रक्ष  
 रक्ष सुशिवं । कुरु २ शान्तिं च कुरु कुरु सदेति । तुष्टिंकुरु २ पुष्टिं । कुरु २ स्वस्ति  
 च कुरु कुरुत्वं ॥ १३ ॥ ऋगवति गुणवति शिवशांति । तुष्टि पुष्टि स्वस्तीह ।  
 कुरु २ जनानां । उमिति नमो नमो ऋँ ऋँ ऋँ ऋँ । यः ऋः ऋँ फद फद  
 स्वाहा ॥ १४ ॥ एवं यन्नामाह्वर । पुरुस्सरंसंस्तुता जयादेवी । कुरुते शान्ति  
 निमित्तं । नमो नमः शान्तये तस्मै ॥ १५ ॥ इतिपूर्व्वसूरिदर्शित । मंत्रपद-  
 विदर्शितः स्तवः शांतेः । सलिलादित्रयविनाशी । शांत्यादिकरश्च ऋक्ति मतां  
 ॥ १६ ॥ यश्चैनं पठति सदा । श्रयणोति ऋवयतिवा यथायोगं । सहि शान्ति-  
 पदं यायात् । सूरिः श्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥ ❀ ॥  
 इति लघुशान्तिस्तोत्रं ॥ ❀ ॥      ॥ ❀ ॥      ॥ ❀ ॥      ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ वृद्धशान्ति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ओ ओ ज्ञव्याः शृणुतवचनं प्रस्तुतं सर्वमेतत् । ये यात्रायां त्रिभुवन-  
 गुरोर्हता जक्तिजाजः । तेषां शान्तिर्जवतु जवतामर्हदादिप्रजावा । दारोग्य  
 श्री धृति मतिकरी क्लेश विध्वंसहेतुः ॥ १ ॥ ओओओव्यलोकाइहहि जरतै रा-  
 वत विदेहसंजवानां । समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासनप्रकंपानन्तरं । अवधिना  
 विज्ञाय सौधर्माधिपतिः । सुवोषाधंटाचालनान्तरं । सकलसुरा सुरैर्द्रैः सह  
 समागत्य सविनयमर्हद्भट्टारकं गृहीत्वा । गत्वा कनकाद्रिशृंगे । विहितजन्मा-  
 न्निषेकः । शान्ति मुद्घोषयति ततोहं कृतानुकारमिति कृत्वामहाजनो येन  
 गतस्स पंथाः । इति ज्ञव्य जनैः सहसमागत्य । स्नात्रपीठे स्नात्रंविधाय ।  
 शान्तिमुद्घोषयामि । तत्पूजा यात्रास्नात्रादि महोत्सवानन्तरं । इतिकृत्वा  
 कर्णं दत्वा निशम्यतां स्वाहा । ॐ पुण्याहं २ । प्रीयंतां २ जगवंतोऽर्हन्तः  
 सर्वज्ञाः सर्वदर्शिन । स्वैलोक्यनाथा । स्वैलोक्यमहिता । स्वैलोक्यपूज्या ।  
 स्वैलोक्योद्योतकराः ॥ ॐ श्रीकेवलज्ञानी ॥ १ ॥ निर्वाणी । २ । सागर । ३ ।  
 महायश । ४ । विमल । ५ । सर्वानुचूति । ६ । श्रीधर । ७ । दत्त । ८ । दामोदर । ९ ।  
 सुतेजा । १० । स्वामी । ११ । मुनिसुव्रत । १२ । सुमति । १३ । शिवगति । १४ ।  
 अस्ताग । १५ । नमीश्वर । १६ । अनिल । १७ । यशोधर । १८ । कृतार्थ । १९ ।  
 जिनेश्वर । २० । शुद्धमति । २१ । शिवकर । २२ । स्यन्दन । २३ । संप्रति  
 । २४ ॥ ❀ ॥ एते अतीतचतुर्विंशतितीर्थकराः ॥ ❀ ॥ ॐ श्रीरुषज । १ ।  
 अजित । २ । संजव । ३ । अग्निनन्दन । ४ । सुमति । ५ । पद्मप्रज । ६ ।  
 सुपार्थ । ७ । चंद्रप्रज । ८ । सुविधि । ९ । शीतल । १० । श्रेयांस । ११ ।  
 वासुपूज्य । १२ । विमल । १३ । अनन्त । १४ । धर्म । १५ । शान्ति । १६ ।  
 कुंथु । १७ । अर । १८ । मन्त्रि । १९ । मुनिसुव्रत । २० । नमि । २१ ।  
 नेमि । २२ । पार्थ । २३ । वर्द्धमान । २४ । प्रसुखावर्त्तमानजिनाः ॥ ❀ ॥  
 ॥ ॐ श्रीपद्मनाभ । १ । सूरदेव । २ । सुपार्थ । ३ । स्वयंप्रज । ४ । सर्वा-  
 नुचूति । ५ । देवश्रुत । ६ । उदय । ७ । पेठाल । ८ । पोष्टिल । ९ । शत-  
 कीर्ति । १० । सुव्रत । ११ । अमम । १२ । निष्कषाय । १३ । निष्पुलाक  
 । १४ । निर्मम । १५ । चित्रगुप्ति । १६ । समाधि । १७ । संवर । १८ । यशो-



धर । १९ । विजय । २० । मल्लि । २१ । देव । २२ । अनन्तवीर्य । २३ ।  
जद्रंकर । २४ ॥ ❀ ॥ एते प्रावितीर्थकराजिनाः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शान्ताः शान्तिकराः प्रवन्तु मुनयो मुनिप्रवरा । रिपुविजयदुर्नि-  
हकान्तारेषु दुर्गमार्गेषु रक्षन्तु वो नित्यं । ॥ ॐ श्रीनाम्नि । १ । जितशत्रु  
। २ । जितारि । ३ । संवर । ४ । मेघ । ५ । धर । ६ । प्रतिष्ठ । ७ । मह  
सेननरेश्वर । ८ । सुग्रीव । ९ । दृढरथ । १० । विष्णु । ११ । वसुपूज्य । १२ ।  
कृतवर्म । १३ । सिंहसेन । १४ । जानु । १५ । विश्वसेन । १६ । शूर । १७ ।  
सुदर्शन । १८ । कुंज । १९ । सुमित्र । २० । विजय । २१ । समुद्रविजय  
। २२ । अश्वसेन । २३ । सिद्धार्थ । २४ ॥ ❀ ॥ वर्त्तमान चतुर्विंशतिजि-  
नजनकाः ॥ ❀ ॥ ॐ श्रीमरुदेवा । १ विजया । २ । सेना । ३ । सिद्धार्थ  
। ४ । सुमंगला । ५ । सुसीमा । ६ । पृथिवीमाता । ७ । लक्ष्मणा । ८ ।  
रामा । ९ । नन्दा । १० । विष्णु । ११ । जया । १२ । स्यामा । १३ । सुयशा  
। १४ । सुव्रता । १५ । अचिरा । १६ । श्री । १७ । देवी । १८ । प्रजावती  
। १९ । पद्मा । २० । वप्रा । २१ । शिवा । २२ । वामा । २३ । त्रिशला । २४ ।  
॥ ❀ ॥ वर्त्तमानजिनजनन्यः ॥ ❀ ॥ ॐ श्री गो मुख । १ । महायक्ष । २ ।  
त्रिमुख । ३ । यक्षनायक । ४ । तुम्बरु । ५ । कुसुम । ६ । मातंग । ७ । विजय  
। ८ । अजित । ९ । ब्रह्मा । १० । यक्षराज । ११ । कुमार । १२ । षण्मुख  
। १३ । पाताल । १४ । किन्नर । १५ । गरुड । १६ । गंधर्व । १७ । यक्षराज  
। १८ । कुबेर । १९ । वरुण । २० । नृकुटि । २१ । गोमेध । २२ । पार्थ । २३ ।  
ब्रह्मशांति । २४ ॥ ❀ ॥ वर्त्तमानजिनयक्षाः ॥ ❀ ॥ ॐ चक्रेश्वरी । १ ।  
अजितबला । २ । दुरितारी । ३ । काली । ४ । महाकाली । ५ । श्यामा  
। ६ । शांता । ७ । नृगुटी । ८ । सुतारका । ९ । अशोका । १० । मानवी  
। ११ । चंदा । १२ । विदिता । १३ । अंकुशा । १४ । कंदर्पा । १५ ।  
निर्वाणी । १६ । बला । १७ । धारणी । १८ । धरणाप्रिया । १९ । नरदत्ता  
। २० । गांधारी । २१ । अंबिका । २२ । पद्मावती । २३ । सिद्धायिका । २४ ।  
॥ ❀ ॥ वर्त्तमानचतुर्विंशति तीर्थकरशाशनदेव्यः ॥ ❀ ॥ ॐ स्त्री श्रीधृति  
कीर्त्ति कांति बुद्धि लक्ष्मी मेधा विद्या साधन प्रवेशनिवेशनेषु । सुगृहीतना-

मानो जयंति ते जिनेन्द्राः ॐ रोहिणी । १ । प्रज्ञप्ती । २ । वज्रशृङ्खला । ३ ।  
 वज्राङ्कुशा । ४ । चक्रेश्वरी । ५ । पुरुषदत्ता । ६ । काली । ७ । महाकाली । ८ ।  
 गौरी । ९ । गांधारी । १० । सर्वास्रमहाज्वाला । ११ । मानवी । १२ । वैरोद्या  
 । १३ । अच्युता । १४ । मानसी । १५ । महामानसी । १६ । एताः षोडशवि-  
 द्यादेव्यो रक्षंतुमे स्वाहा । ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृति चातुर्वर्णस्य श्रीश्रमण-  
 संघस्य शान्तिर्भवतु । ॐ तुष्टिर्भवतु । पुष्टिर्भवतु । ॐ ग्रहाश्रंद्र सूर्यो गारक  
 बुध बृहस्पति शुक्र शनैश्चर राहु केतु सहिताः सलोकपालाः सोम यम वरुण  
 कुबेर वासवादित्य स्कन्द विनायक येचान्येपि ग्राम नगर क्षेत्रदेवतादय स्ते  
 सर्वे प्रीयंतां २ अहोणकोस कोष्ठागारा नरपतयश्च भवंतु स्वाहा । ॐ पुत्र मित्र  
 भ्रातृ कलत्र सुहृत् स्वजनसंबन्धिवंधुवर्गसहिताः नित्यंचामोदप्रमोदकारिणो  
 भवंतु । अस्मिंश्च नृमंरुदे आयतननिवासिनां । साधु साध्वी श्रावक श्रावि-  
 काणां । रोगोपसर्ग व्याधिदुःख दौर्मनस्योपशमनाय शान्तिर्भवतु । ॐ तुष्टि  
 पुष्टि रुद्धि वृद्धि माङ्गल्योत्सवाः भवंतु । सदा प्रादुर्भूतानि दुरितानि पापानि  
 शाम्यंतु । शत्रवः पराङ्मुखा भवंतु स्वाहा । श्रीमते शान्तिनाथाय । नमः ।  
 शान्तिविधायिने । त्रैलोक्यस्यामराधीश । मुकुटार्चितां ह्ये ॥ १ ॥ शान्तिः  
 शान्तिकरः श्रीमान् । शान्तिः दिशतु मे गुरुः । शान्तिरेव सदातेषां । येषां  
 शान्तिर्गृहे गृहे ॥ २ ॥ ॐ उन्मृष्टरिष्ट दुष्ट ग्रहगति दुःस्वप्नदुर्निमित्तादि संपा-  
 दितहितसंपत् नामग्रहणं जयतु शांतिः ॥ ३ ॥ श्रीसंघपौरजनपद राजाधिपराज  
 संनिवेशानां । गोष्ठीपुरमुख्यानां । व्याहरणैर्व्याहरेद्वांति ॥ ४ ॥ श्री श्रमणसंघस्य  
 शान्तिर्भवतु । श्रीपौरलोकस्य शान्तिर्भवतु । श्रीजनपदानां शान्तिर्भवतु ।  
 श्रीराजाधिपानां शान्तिर्भवतु । श्रीराजसंनिवेशानां शान्तिर्भवतु । श्रीगो-  
 ष्ठीकानां शान्तिर्भवतु । ॐ स्वाहा २ ॥ ॐ ह्रीं श्री पार्वनाथाय स्वाहा । एषा  
 शान्तिः प्रतिष्ठा यात्रास्नात्रावसानेषु । शान्तिकल्पशं गृहीत्वा । कुंकुम चंदन  
 कर्पूरा गुरुद्रूप वास कुसुमांजलिसमेतः । स्नात्रपीठे श्रीसंघसमेतः । शुचिः शुचि  
 वस्त्र श्रद्धा चरणालंकृतः । पुष्पमाला कंठेऽकृत्वा । शान्तिमुदघोषयित्वा शान्ति-  
 पानीयं मस्तके दातव्यमिति । नृत्यंतिनृत्यं मणिपुष्पवर्षं । सृजंति गायंतिच  
 भंगलानि स्तोत्राणि गोत्राणि पठंति मंत्रान् । कल्याणप्राप्तोहि जिनाग्निपेके

॥ १ ॥ अहंतित्थयरमाया शिवादेवी । तुह्य नयरनिवासिनी अह्य शिवं तुह्य शिवं । असुहोवसमं शिवं जवतु स्वाहा ॥ १ ॥ शिवमस्तु सर्वजगतः । परहित-  
निरताजवंतु जूतगणाः । दोषाः प्रयांतु नाशं । सर्वत्र सुखी जवतु लोकः ॥ २ ॥  
उपसर्गाः ह्यं यांति । विद्यंते विघ्नवह्नयः । मनः प्रसन्नतामेति । पूज्यमाने  
जिनेश्वरे ॥ ३ ॥ ❀ ॥ इति श्रीबृहद्वांतिः समाप्ता ॥ ❀ ॥

### ॥ अथ दूजकी स्तुति ॥

॥ ❀ ॥ महीमंरुणं पुन्न सोवन्न देहं । जणाणंदणं केवल न्नाण गेहं । महा-  
नंद लब्धी बहु बुद्धिरायं । सुसेवामि सीमंधरं तित्थरायं ॥ १ ॥ पुरा तारगा जेह  
जीवाण जाया । जवस्संति ते सब जवाणताया । तहा संपयं जेजिणा वट्टमाणा  
सुहं दिंतु तेमे तिलोयप्पहाणा ॥ २ ॥ दुरुत्तार संसार कुबारपोयं । कलंका-  
वली पंक पक्खाल तोयं । मणोवंढित्थे सुमंदार कप्पं । जिणंदागमं वंदिमो  
सुमहप्पं ॥ ३ ॥ विकोसे जिणंदाणणं जोजलीणा । कळा रूव लावण सोहग्ग  
पीणा । वहंतस्स चित्तंमि णिच्चंमि जाणं । सिरी जारही देहिमे सुधनाणं  
॥ ४ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ इति श्री सीमंधरजीरी स्तुतिः ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ अथ पंचमी स्तुती ॥

॥ ❀ ॥ पंचानंतक सु प्रपंच परमानंद प्रदान कर्म । पंचानुत्तर सीम  
दिव्य पदवी वश्याय मंत्रोपमं । येन प्रोज्ज्वल पंचमी वस्तपो व्याहारि तत्का  
रिणां । श्रीपंचानन लांढनः सतनुतां श्री वर्धमानः श्रियं ॥ १ ॥ ये पंचाश्रव  
रोदसाधनपराः पंचप्रमादी हराः । पंचाणुव्रत पंचसुव्रत विधि प्रज्ञापना सादराः  
कृत्वा पंचरूषीक निर्जयमथो प्राप्तागतिं पंचमीं । तेमी संतु सुपंचमी व्रतचृतां  
तीर्थकराः शंकराः ॥ २ ॥ पंचाचार धुरीण पंचम गणाधीशेन संसूत्रितं । पंच ज्ञान  
विचारसार कलितं पंचेषु पंचत्वदं । दीपाजंगुर पंचमार तिमिरे ष्वेकाः दशी  
रोहिणी । पंचम्यादि फल प्रकाशनपटुं ध्यायामि जैना गमं ॥ ३ ॥ पंचानां  
परमेष्ठिनां स्थिरतया श्रीपंचमेरु श्रियां । जक्तानां जविनां गृहेषु बहुशो या पंच-  
दिव्यं व्यधात् । प्रह्वे पंचजने मनोमृत कृतौ स्वारत्नपंचालिका । पंचम्यादि  
तपोवतां जवतु सा सिद्धायिका त्रायिका ॥ ४ ॥ इति श्री ज्ञान पंचमीस्तुतिः ॥

॥ ❀ ॥ वीरं । देवं । नित्यं वंदे ॥ १ ॥ जैनाः । पादा । युष्मान् पांतु

॥२॥ जैनं । वाक्यं । जूया । हृत्यै ॥३॥ सिद्धा । देवी । दद्यात् । सौख्यं ॥ ४॥  
॥ ❀ ॥ इति लघ्वीस्त्रीभंदसि श्रीवीर स्तुतिः ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ अथ अष्टमी स्तुतिः ॥

॥ ❀ ॥ चञ्चुवीसे जिनवर प्रणमुंहुं नितमेव । आठम दिनकारियै चंद्राप्र-  
जुनी सेव । मूरति मनमोहै जाणें पूनिमचंद । दीठां दुख जायै पामेपरमानंद  
॥ १ ॥ मिल चोसठ इंद्र पूजै प्रजुजीना पाय । इंद्राणी अपहराकरजोनी गुण-  
माय । नंदीश्वर घ्रीपें मिल सुखरनी कोड । अछाही महोन्नवकरतां होना होरु  
॥ २ ॥ सेहुंजा सिखरें जाणी लाज अपार । चौमासे रहिया गणधर मुनि परि-  
वार । जवियणनें तारै देइ धरम उपदेश । दूध साकरथी पिण वाणी अधिक  
विशेस ॥ ३ ॥ पोसो पडिकमणो करियै ब्रतपचखाण । आठम तप करतां  
आठकरमनी हाण । आठमंगल थायें दिन २ कोडि कट्याण । जिन सुखसूरि  
कहै इम जीवत जनम प्रमाण ॥ ❀ ॥ इति अष्टमी स्तुतिः ॥ ८ ॥

## ॥ सर्वादिन स्तुतिः ॥

॥ ❀ ॥ मूरति मनमोहन कंचन कोमलकाय । सिद्धार्थ नंदन त्रिसला  
देवि सुमाय । मृगनायक लंठन सातहाथ तनु मान । दिन दिन सुख दायक  
स्वामी श्रीब्रधमान ॥ १ ॥ सुर नरवर किन्नर वंदित पद अरिर्विंद । कामित  
जर पुराण अजिनव सुरतरुकंद । जवियणनें तारै प्रवहण समनिसि दीस ।  
चोवीसे जिनवर प्रणमुं विसवावीस ॥ २ ॥ अर्थें करि आगम ज्ञाष्या श्रीज-  
गवंत । गणधर तेगुंध्या गुणनिधि ग्यान अनन्त । सुरगुरु पिण महिमा कहि-  
नसके एकन्त । समरुं सुखदायक मनसुध सूत्रसिद्धन्त ॥ ३ ॥ सिद्धायिका  
देवी वारे विघनविशेष । सहु संकट चूरै पूरै आम असेप । अहनिसि करजोडी  
मेवै सुर नर इंद्र । जंपई गुणगण इम श्रीजिनलाज सुरिंद ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥  
॥ ❀ ॥ इति श्रीमहावीर जिनस्तुतिः ॥ ९ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ अथ दशमी स्तुतिः ॥

॥ ❀ ॥ अश्वमेन नरेसर वामा देवी नंद । नवकर तनु निरुपम नील  
वरण सुखकंद । अहिलंठण मेवित पञ्चमावइ धराणिंद । प्रहज्जती प्रणमुं नि-

सहस्र बालि गुणिये गुणणो नवपदकेरो सारो जी । इण परि निरमल तप  
आदारिये आगम साख उदारो जी ॥३॥ विमल कमलदल लोयण सुंदर श्री  
चक्रेशरि देवी जी । नवपद सेवक जविजन कैरा विघनहरो सुरसेवीजी ।  
श्रीखरतरगढ नायक सदगुरु श्रीजिनभक्ति सुणिंदाजी । तासु पसायें इणपरि  
पन्नणें श्रीजिनलाज सुनिंदा जी ॥४॥ ❀ ॥ इति श्रीनवपदस्तुतिः ॥ ❀ ॥ १६ ॥

### ॥ अथ पर्युषणस्तुतिः ॥

॥ ❀ ॥ बलि बलिहुं ध्यावुं गाऊं जिणवरवीर । जिण परब पजूसण  
दाख्या धरमनी सीर । आसाढ चौमासे हुंती दिनपंचास । पडीकमणो  
संवहरी करिये त्रिणउपवास ॥ १ ॥ चौवीसे जिनवर पूजा सतरप्रकार ।  
करिये जलजावें जरिये पुण्यजंकार । बलिचैत्यप्रवाडें फिरतां लाज अनंत ।  
इम परब पजूसण सहुमें महिमावंत ॥ २ ॥ पुस्तक पूजावी नव वाचना  
यें वचाय । श्रीकल्पसूत्र जिहां सुणतां पाप पुलाय । प्रतिदिन परजावना  
धूप अगर उक्खेवो । इम जवियण प्राणी परब पजूसण सेवो ॥ ३ ॥ बलि  
साहमी बहल करिये वारंवार । केइ जावना जावे केइ तपसी सीलधार ।  
अरुदीह पजूसण इम सेवत आणंद । सुयदेवी सानिध कहै जिनलाज-  
सूरिंद ॥ ४ ॥ ❀ ॥ इति श्रीपर्युषणापर्व स्तुतिः ॥ ❀ ॥ १७ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ पनरैतिथोंका स्तवन लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुगुण सनेही साजण श्री सीमंधरस्वामि । अरज सुणो इक जग  
गुरु मुऊ आसा विसराम । पूरवविदेहें विजयजली पुष्कलावई नाम । जिहां  
विचरै जिनवरजी धनते नयरीगाम ॥ १ ॥ धनते लोक सुणै जे जोजनगा  
मनी वाणि । धनते महीयल चरणधरै जिहां जिनवर जाण । धनते जविजन  
जे रहै प्रनुताहरे परसंग । वदनकमल निरखी नितमाणै उहवअंग ॥ २ ॥ सुगुरु  
मुखै प्रनु सुजस तुह्णीणो सांजलकान । मिलवानें उलसै मनमाहरो धरुं इक  
ध्यान । जगति जुगति करवानी है मुजसगली जोर । पिण प्रनु लग पुहची  
जे तेहनही पगदोर ॥ ३ ॥ आमा डुंगर अतिघणा विचवहै नदियांपूरि  
किम मुजथी अवरायै प्रनुजी एतलीदूर । आंखडली उलजों करै जोयवा  
सुख जिनराज । पांखडली पाई नही ते विन किमसरै काज ॥ ४ ॥ वाट

डली वहतो कोई न मिलै सेंगूसाथ । कागलियो लिख आपुंहुं जिम  
तेहनें हाथ । जाणूं ससिहर साथे कहूं संदेशाजेह । पिण अलगो थई ऊपरि  
वामै निकलै तेह ॥ ५ ॥ जो कोई रीते प्रनुजो तुमथी एथ अवाय । तो इण  
जरतनावासी जविजन पावन थाय । साहिबनीतो सुनिजर सगलै सरिषी  
होय । पिणपोतानी प्रापति सारू फलप्रतिजोय ॥ ६ ॥ अलगोहुं पिणमाहरै  
तुमसुं साचीप्रीति । गुण गुणवंतना आवै हीयमे खिण २ चीत । हुंहुं सेवक  
तुंसे माहरो आतमराम । नहिंय विसारूं जीहुं जालगि ताहरो नाम ॥ ७ ॥  
साचै दिलथी मुजसुं धरज्यो धरमस्नेह । करुणाकर प्रनु कर जो मोपरि महिर  
अजेह । दूसमकाल तणो दुखदालो दीनदयाल । पालो विरुद संचालो  
निज सेवकसुं कृपाल ॥ ८ ॥ आसविलूधा अलग थकी पिण करै अरदास ।  
पिण मोटानी महिरउतां नविथाय निरास । केईवसै प्रनु पासे केइ वसेढे  
दूर । राजमहिरनी रीते सकलनें जाणें हजूर ॥ ९ ॥ शिवसुख दायक नायक  
लायक स्वामिसुरंग । ध्यायक ध्येय स्वरूपलहे निज आत्मनुमंग । सहिजे एक  
पलक जोथायै प्रनु तुजसंग । लाजनुदय जिनचंद्र लहै नितप्रेम अजंग १०॥  
॥ ❀ ॥ इति श्री सीमंधरस्वामी स्तवनं ॥ ❀ ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ श्रीसंखेश्वरपार्श्वजिन स्तवन ॥

॥ ❀ ॥ श्रीसंखेसर पास जिनेसर जेटियै । जवना संचित पाप परा सब  
मेटियै । मनधर जाव अनंत चरणयुग सेवता । अणहुंतें इककोमि चतुरविध  
देवता ॥ १ ॥ ध्यानधरूं प्रनुदूरथकी हुं ताहरो । जल जिमलीनो मीन  
सदा मनमाहरो । जव २ तुमहीजदेव चरणहुं सिरधरूं । जवसायरथी तार  
अरज आहीजकरूं ॥ २ ॥ जूख त्रिषा तप सीत आतम एनविसहे । तप जप  
संयम जारतणो नविनिरवहे । पिण जिणवरना नामतणी आसतवणी । एहिज  
ने आधार जगतगुरु अह्वजणी ॥ ३ ॥ तुम दरसण विनसामि जवो दधि हुं  
फिरयो । माहिया दुक्ख अनेक न कारज कोसरयो । मिलिया हिव प्रनु मुज्ज  
मदासुख दीजीयै । चउगइ संकट चूर जगतजस लीजीये ॥ ४ ॥ यादवपति  
श्रीकृष्ण नणी आरति हरी । सेनाकीध सचेत जरा दूरैकरी । परचा पुरण पास



रयण जिमदीपतो । जयवंतो जिणचंदसयल रिपुजीपतो ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
॥ ❀ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्तवनं ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ अथ द्वितियादिन सीमंधरस्तवन ॥

॥ ❀ ॥ सफल संसार अवतार ए हुं गिणुं । सामि सीमंधरा तुह्य जगतै  
जणुं । जेट्वा पायकमल जाव हीयमै घणो । करीय सुपमाय जे वीनहुं ते  
सुणो ॥ १ ॥ तुह्यसुं कूड अरिहंतसुं राखियै । जिसो अन्न तिसो कर जोनि करि  
जाषियै । अति सबल मुजु हियै मोह माया घणी । एक मन जगति किमकरुं  
त्रिजुवन धणी ॥ २ ॥ जीव आरति करै नव नवी परिगडै । रीसचट्को चढे  
लोचन वयरी नडै । नयण रस वयण रस काम रस रसीयो । तेम अरिहंत तूं  
हियडै नवि वसीउ ॥ ३ ॥ दिवसनै राति हियडै अनेरो धरुं । मूढमन रीजवा  
बलिय माया करुं । तूंहीज अरिहंत जाणै जिसो आचरुं । तेम कर जेम  
संसार सागर तरुं ॥ ४ ॥ कम्मवसि सुखनें दुख जेहुंसहुं । मनतणी वात  
अरिहंत कियेनै कहुं । करि दया करि मया देव करुणापरा । दुख हरि सुख  
करि सामि सीमंधरा ॥ ५ ॥ जाण संयोग आगम वयण पिणसुणुं । धर्म  
नकराय प्रनुपाप पोते घणुं । एक अरिहंततूं देव बीजो नही । एह आधार जग  
जाणज्यो अह्य सही ॥ ६ ॥ धण कणय माय पिय पुत्त परियण सह । हस्यो  
बोड्यो रम्यो रंगरातो बह । जय जयो जगतगुरु जीव जीवन धरा । तुह्य सम-  
वरु नही अवर वाल्हे सरा ॥ ७ ॥ अमिय सम वांणि जाणुं सदा सांजहुं ।  
वार वर परषदा मांहि आवी मिहुं । चित्तजाणुं सदा सामि पायजंजहुं । किम  
करुं ठाम पुंनर गिरि वेगलुं ॥ ८ ॥ जोलडा जगतितूं चित्तहारै किस्यै । पुण्य-  
संयोग प्रनु दृष्टिगोचर हुस्यै । जेहनें नांम मन वयण तन उल्लस्यै । दूरथी  
दूकना जेम हियडे वसै ॥ ९ ॥ जल जलो एणि संसार सह ए अन्नै । सामि  
सीमंधरा ते सह तुम पन्नै । ध्यान करतां सुपन मांहि आवीमिलै । देखियै  
नयण तो चित्त आरति टले ॥ १० ॥ सामि सोहा मणा नाम मन गह गहै ।  
तेहसुं नेह जे वात तुह्यची कहै । तुह्य पाय जेट्वा अति घणुं टलवहुं ।  
पंख जो होयतो सहिय आवीमिहुं ॥ ११ ॥ मेरुगिर लेखणी आज्ञकागल करुं ।  
खीर सागर तणा दूध खडिया जरुं । तुह्य मिलवा तणा सामि संदेमना । इंद्र

पिण लिखिय नसके अन्नै एवना ॥ १२ ॥ आपणें रंग जरि वात सुण जेतली ।  
ऊपजै सामि न कहाय सुख तेतली । सुणो सीमंधरा राज राजेसरा । लाननें  
कोनि प्रनुपूरि सवि माहरा ॥ १३ ॥ पुव्व जवि मोह वसि नेह हुवै जेहनें ।  
समरिये एणि संसार नित तेहनें । मेहनें मोर जिम कमल जमरोरमें । तेम  
अरिहंततूं चित्त मोरें गमें ॥ १४ ॥ खरो अरिहंतनो ध्यान हियमें वस्युं । वापमो  
पापहिव रहिय करस्यै किसुं । ठामि जिम गुरुडवर पंख आवे वही । ततखिण  
सर्पनी जाति नसकै रही ॥ १५ ॥ पापमें कज्ज सावज्ज सहु परिहरी । सामि  
सीमंधरा तुह पाय अणु सरी । सुध चारित्र कहियै प्रनू पालसुं । दुक्ख जंमार  
मंसार जय टालसुं ॥ १६ ॥ तुह हंदास हूं तुह सेवकसही । एहमें वात अरि-  
हंत आगलिकही । एवढी माहरी जगति जाणी करी । आप ज्यो वापजी सार  
केवल सही ॥ १७ ॥ कलश ॥ इम रुद्धि वृद्धि समृद्धि कारण पुरित वारण  
सहुकरो । उवज्जाय वर श्री चत्तिकाजै थुण्यो श्रीसीमंधरो । जयजयो जगत  
गुरु जीव जीवन करो सामि मया घणी । करजोडि बलि बलि वीनबुं प्रनु  
पूरि आस्या मनतणी ॥ १८ ॥ ॥ श्री ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ श्री ॥ ॥ ❀ ॥  
इति श्री सीमंधरजीरी वीनती संपूर्ण ॥ २ ॥ ॥ श्री ॥ ❀ ॥ श्री ॥ ❀ ॥

## ॥ अथ पंचमी वृद्धस्तवन ॥

॥ ❀ ॥ प्रणमुं श्रीगुरुपाय । निरमल न्यानउपाय । पांचमि तप जणुंए ।  
जन्म सफल गिणुंए ॥ १ ॥ चतुर्वीसमो जिनचंद । केवल न्यान दिणंद ।  
त्रिगने गहगह्योए । जवियणनें कह्योए ॥ २ ॥ न्यान वमो संसार । न्यान  
सुगति दातार । न्यान दीवो कह्योए । साचो सरदह्योए ॥ ३ ॥ न्यान लोचन  
सुविलाम । लोकालोक प्रकाम । न्यान विना पसुए । नर जाणें किसुंए ॥ ४ ॥  
अधिक आराधक जाण । जगवती सूत्रप्रमाण । न्यानी मर्वतुए । किरिया देश-  
तुए ॥ ५ ॥ न्यानी सामोसास । करम करे जेनास । नारकिने सहीए । कोड  
वरस कह्योए ॥ ६ ॥ न्यानतणो अधिकार । बोल्या सूत्र मजार । किरिया ने  
सहीए । पिण पात्रे कह्योए ॥ ७ ॥ किरिया सहित जो न्यान । हुवेतो अनि  
परधान । मोनेनें सुरोए । संख द्वे जखोए ॥ ८ ॥ महा निशीथ मजार ।  
पांचमि अह्मर सार । जगवंत ज्ञापियोए । गणधर साखियोए ॥ ९ ॥ ( टाल १

खनें । जिम जलधर आगम मोर ॥ सो० ॥ ५ ॥ किसकै हरि हर किसकै  
 ब्रह्मा । किसकै दिलमें राम । मेरै मनमें तूं वसै । साहिब सिव सुखनो  
 ठाम ॥ सो० अ० ॥ ६ ॥ माता वामा धन्य पिता जसु । श्रीअश्वसेन  
 नरेश । जनम पुरी वणारसी । धन धन काशीनो देस ॥ सो० अ० ॥ ७ ॥  
 संवत सतरैसै बाबीसै । वदि वैसाख वखाण । आठम दिन जलै जावसुं ।  
 मोरी जात्र चढी परिमाण ॥ सो० अ० ॥ ८ ॥ सानिध कारी विघन नि  
 वारी । पर उपगारी पास । श्रीजिनचंद जुहारतां । मोरी सफलफली सह  
 आस ॥ सो० अ० ॥ ९ ॥ इति श्री पार्श्वजिन स्तवनं ॥ ८ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ अथ दशमी वृद्धस्तवन ॥

॥ ❀ ॥ पास जिनेसर जगति लोए । गवडी पुर मंरुण गुण निलोए ।  
 तवन करिस प्रनु ताहरो ए । मन बांछित पूरो माहरो ए ॥ १ ॥ नयरी नाम  
 वणारसि ए । सुर नयरी जिन रिदै वंसी ए । तेण पुरीठै दीपतो ए । अश्वसेन  
 राजा रिपु जीपतो ए ॥ २ ॥ वामा तसुघरि नार ए । तसु गुणहि नलझै पार  
 ए । तासु ऊपर अवतार ए । तसु अतिसय रूप उदार ए ॥ ३ ॥ चवद सुपन  
 तिण निसि लह्याए । अनुक्रम करि तेसहु मन ग्रह्याए । पूबै नृपतिनें कहा ए ।  
 करजोनि कहा जे जिम लह्या ए ॥ ४ ॥ ( ढाल २ ) । प्रथम सुपनगज नि-  
 रख्यो । मायतणोमन हरख्यो । बीजै वृषज उदार । धरणी जिण धर्यो चार  
 ॥ ५ ॥ तीजै सिंह प्रधान । जसुबल कोयनमान । चउथै देखी श्री देवी ।  
 कमल वसै सुर सेवी ॥ ६ ॥ पांचमै पुष्पनी माला । पंचवरण सुविशाला ।  
 ठठे दीठोएचंद । ग्रहगण केरोएइंद ॥ ७ ॥ सातमैं सूरज सार । दूरकियो  
 अंधकार । आठमैं धजलहकंती । वरण विचित्र सोहंती ॥ ८ ॥ नवमैं पूरण  
 कुंज । जरियो निरमल अंज । देखि सरोवर दसमैं । मनह थयो अति विशमैं  
 ॥ ९ ॥ समुद्र इग्यारमैं ठामैं । खीर जलधि जसु नामैं । बारम देव विमान ।  
 वाजित्रध्वनि गीत गान ॥ १० ॥ तेरम स्तननी राशि । दहदिसि ज्योति प्रकाशि ।  
 सुपन चवदमैं ए दीठो । पावक धूमथी मीठो ॥ ११ ॥ सुपन कहा सुविचार ।  
 हरप्यो नृपउदार । पुत्ररतन होस्यै ताहरै । थास्यै उदय हमारै ॥ १२ ॥ ( जुहा )  
 चवदसुपन श्रवणसुणी । हरषकियो सुविचार । सुंदर सुत तुमे जनमस्यो । कुल

दीपक आधार ॥ १३ ॥ वामाप्रीतम वचन सुणि । आवी मंदर उत्ति । देव सुगु  
रुकीरत करी । जनम कियो सुकयत्य ॥ १४ ॥ इण अनुक्रमि ऊन्यो दिवस  
कीधा सुपन विचार । ते धरि पहुता आपणै । दीधा दान अपार ॥ १५ ॥  
( ढाल ) ३ ॥ ॥ ॥ हिवजनम्या जगगुरु जगत्रहुन जयकार । खिण इक नार  
कियै पायो सुख अपार । दिशिकमरी मिलकर सूत्रकरम निशिकीध । करि  
थानक पुहती बंझित तेहनो सिद्ध ॥ १६ ॥ तिणहीज निशि चौसठ इंद्रमिली  
तिहां आवै । लेई निज जगतै सुरगिर स्नात्र करावै । करि जनम महोछव  
जननी पास ठावै । तिहांथी सुर सत्रमिली दीप नंदीसर जावै ॥ १७ ॥ इम  
रयण विहाणी ऊगो दिवस उदार । घर २ गाईजै कीजै मङ्गलच्यार । इग्या  
रम दिवसै मिली सहू परिवार । तसु नाम दियो श्री उत्तम पास कुमार  
॥ १८ ॥ प्रभु वाधै दिन २ कलाकरी जिम चंद । त्रिहुं न्यान विराजित  
रूप जिसो देविंद । गुणकला विचक्षण विद्या तणोय निधान । योवन वय  
आयो परणायो राजान ॥ १९ ॥ ( ढाल ४ ) ॥ ॥ ॥ कुमर पदै प्रभु  
रहितां काल सुखै गमै ए । आयो मन वैराग संयम लेवासमै ए । तव लो  
गंतिय देव जणावै अवसरु ए । देई संवहरी दान याचक जन सुख करु  
ए ॥ २० ॥ स्वामी संयमलेइ इंद्रादिक सब मिल्या ए । देश विदेश  
विहार करी क्रम निरदल्या ए । पामीय केवल न्यान सुरै महिमा करी ए ।  
थापिय चतुविह संव सुगति रमणी वरी ए ॥ २१ ॥ ( ढाल ) ॥ ५ ॥  
॥ ॥ इम श्रीगौमी पास तणा गुण जे नर गावै । ते नर नारी इह पर  
लोगसु बंझित पावै । संव करी संव पत्ति जिके गवनी पुर जावै । चोर  
धाड संकट टले विघन बुराई न आवै ॥ २२ ॥ वरणराय पनुमावइ जास  
वहै सिर आण । सांवल वरण सुशोभित नवकर काय प्रमाण । कल्पवृद्ध  
चिन्तामणि काम गवी सम तोले । श्री गुणशेखर सीस समय रंग इण  
परिवोलै ॥ २३ ॥ इति श्री पार्श्व जिन स्तवनं ॥ १० ॥ ॥ ॥

॥ अथ एकादशी वृद्धस्तवन ॥

॥ ॥ ॥ समवसरण बैठा जगवंत । धरम प्रकासे श्री अरिहंत । बरे  
वरषदा बैठी जुडी । भिगमर सुदि इग्यारस वसी ॥ १ ॥ मछिनाथना ती

न कल्याण । जनम दिहाने केवल न्यान । अरि दीक्षा लीधी खूबनी ॥ मि० ॥ २ ॥ नमिनें ऊपनो केवल न्यान । पांच कल्याणक अति पर धान । ए तिथिनी महिमा ए वनी ॥ मि० ॥ ३ ॥ पांच चरत ऐस्वत इम हीज । पांच कल्याणक हुवै तिम हीज । पंचासनी संक्षा परगनी ॥ मि० ॥ ४ ॥ अतीत अनागति गिणतां एम । दोढसै कल्याणक थायै तेम । कुण तिथठै एतिथ जे वनी ॥ मि० ॥ ५ ॥ अनंत चौवीसी इण परि गिणो । लाज अनंत उपवासां तणो । ए तिथि सहु तिथि सिर राखनी ॥ मि० ॥ ६ ॥ मोन पणें रह्या श्री मखिनाथ । एक दिवस संयम ब्रत सा थ । मोनतणी परि ब्रत इम पनी ॥ मि० ॥ ७ ॥ अठपुहरी पोसो लीजीयै । चौविहार विधसुं कीजीयै । पिण परमादन कीजै धनी ॥ मि० ॥ ८ ॥ वरस इग्यार कीजै उपवास । जावजीव पिण अधिक उल्हास । ए तिथ मोक्ष त णी पावनी ॥ मि० ॥ ९ ॥ ऊजमणो कीजै श्रीकार न्यानना उपगरण इ ग्यार २ ॥ करो काउसगग गुरुपाये पनी ॥ मि० ॥ १० ॥ देहरै स्नात्र करी जै वली । पोथी पूजी जै मनरली । मुगति पुरी कीजै दूकनी ॥ मि० ॥ ११ ॥ मोन इग्यारस मोटो पर्व । आराध्यां सुखलहीयै सर्व । ब्रत पचक्खा ण करो आखनी ॥ मि० ॥ १२ ॥ जेसल सोल इक्यासी समें । कीधो तवन सहू मन गमै । समय सुंदर कहे करो द्याहनी ॥ मि० ॥ १३ ॥ ॥ ❀ ॥ इति श्री एकादसी वृद्ध स्तवनं संपूर्णं ॥ ११ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तुमेरे मनमें प्रभु तुंमेरे दिलमें । ध्यान धरुं पल २ में । पास जिणोसर अन्तर जामी । सेवकरुं ढिन २ में ॥ ( तुं० १ ) ॥ काहू को मन तरुणीसुं राच्यो । काहू को चित्त धनमें । मेरो मन प्रभु तुमहीसुं रा च्यो । ज्युं चातक चित्तधनमें । ( तुं० २ ) ॥ जोगीसर तेरी गति जाएं । अलख निरंजण ढिनमें । कनक कीरति सुख सागर तुमही । साहिब तीन जवनमें ॥ ( तुं ३ ॥ इति पार्श्व जिन स्तवनं ॥ ११ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ सास्वता असास्वता जिन विंव नमस्कार स्तवन ॥

॥ ❀ ॥ ( देशी सूरती ) प्रहनुगी प्रभु ध्यानधरुं नसुं सिद्ध अनन्त । त्रिजुवन मांहै नमणकरुं जेविबरहंत । जुवन पति व्यन्तर योतषि वैमानिक मांह । अ-

द्रुत सास्वता विंवनसुं मनधरि उवाह ॥१॥ पंचमेरु वेताढ्य हिमाचल निषध  
प्रमाण । नीलवंत चित्रसेल कुंरुज गजदंत वखांण ॥ रुचक नंदीसर मानु  
षोत्तर आदि सास्वता जांण । रिषज्ञानन चंद्रानन वारिषेण ब्रधमाण ॥ २ ॥  
आठकोरु अरुणपन लाख सत्ताणुं हजार ॥ चवसै ब्यासी चैत्य सास्वता  
मंगलकार । सहस अठावीस नवसै पचवीस कोरु मिलाय । तेपन लाख  
चवसै अठ्यासी जग जिनराय ॥ ३ ॥ केइ आचार्य मते आठकोरु सत्ता  
वन लाख । दोयसै अछाणुं त्रिजुवनमां सहुचैत्यनी साख । अछावन लाख  
पनरैसै वयालीसकोरु । अमृतीस सहस विंवसहु सतअसीकी जोरु ॥ ४ ॥  
मगध कोसल अंग बंग कलिंग काशी कुरुदेस । सोरठ कठ विदेह जां  
गल कुसावर्त्त कहेस । जंग सोवीर बेराट मलय सांफिल सूरसेन । वरण  
पंचाल दशार्ण कुणाल देसमें चैन ॥ ५ ॥ लाट विदर सिंधु देससहु  
केकइ अर्ध जांण । साढा पचवीस देश भरतमें आर्य प्रधान । दोय  
कोरु अछावन लाख ब्यासी हजार । नवसै तिहुत्तर ग्राम नगर मांहे विंव  
अपार ॥ ६ ॥ वसुसत सातअसी जंबुद्वीप सह आर्य होय । धातकी  
खंरु सहस एक सातसै चौतीस जोय । एताही अर्ध पुष्करमांहे देस गि  
णाय । ग्राम नगर मांहे विंव अनेक नसुं गुणगाय ॥ ७ ॥ सिधशेल उज्जि  
त शिखरगिरि मोटाधाम । अष्टापद चंपा पावापुरि शिवसुख ठाम । तारंगा  
अर्बुद राजग्रही क्षेत्र प्रमाण । अंतरीक धूलेवा राणपुरो जगजांण ॥ ८ ॥  
द्वीप असंख्या जल थल पर्वत सिखर सुहाय । कनक धातु पाखाण रयण  
सहु विवरहाय । इम त्रिहुंलोक असास्वती सास्वती थांपना देख । त्रि  
करण सुदै नित प्रति प्रणसुं सहु गुण लेख ॥ ९ ॥ थापना जगवंते कही  
आगम मांहे प्रमाण । अंग उपांग देखी मन निश्चय राखी सुजांण । जे  
उतसुत्र वचनके जाषक जासी निमोद । अनंत काल जमतां कृणजर नहिं  
पांमें विनोद ॥ १० ॥ सोम्य भूस्त प्रनुनी देखी जविपांमें बोध । आद्र कु-  
मरकी रीते देखो आगम सोध । द्रव्यजाव विधिसंयुक्त सुर नर पूजै जेय ।  
गुण पिमस्थ पदस्थ रूपस्थ रूपातीत जेय ॥ ११ ॥ रिषजादिक चौवीस  
तिथिकर नसुं मन लाय । गणधर सह संघ मंगलकारी नित प्रति थाय ।



जन्म मरण सह दुख दूर करो दीनदयाल । गह खरतर गुरु लक्ष्मीप्रदां  
 न मोहन प्रतिपाल ॥ १२ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
 इति त्रिनुवन मंरण सर्व जिन बिंब नमस्कार स्तवनं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ अथ वैराग्य सिज्जाय लि० ॥

॥ ❀ ॥ जूलो मन जमरा कांइजमें । जमियो दिवसनें रात । माया  
 रोवांध्यो प्राणीयो । जमीयो परमल जात ॥ १ ॥ जू० ॥ कुंज काचो  
 काया कारमी । जेहना करोरे जतन्न । विणसतां वार लागै नही । निरम  
 ल राखोरे मन्न ॥ २ ॥ जू० ॥ केहना गेरू केहना वाढरू । केहनां मा  
 यनै बाप । प्राणी जास्ये एकलो । साथे पुण्यनें पाप ॥ ३ ॥ जू० ॥ आ  
 स्यातोसूंगर जेवनी । मखो पगलां रै हेठ । धन संची संच कांई करो ।  
 कखो देवनी वेठ ॥ ४ ॥ जू० ॥ लख पति छत्र पति सबगए । गएलाखोंके  
 लाख । गरज करीरे गोखे वैसता । जए जलबल राख ॥ ५ ॥ जू० ॥ जव  
 सायर जल दुख जस्यो । तिरवो ठैरे जेह । विचमें बीह सबलो अढै । क  
 रमें वायनें मेह ॥ ६ ॥ जू० ॥ उलट नही मारग चालवो । जायवो पहिलै  
 रे पार । आगलि नही हटवाणीयो । संबल लेज्योरे साथ ॥ ७ ॥ जू० ॥  
 मूरख कहै धन माहरो । धन केहनो न थाय । वस्त्रविना जाय पोढवो । ल  
 ख पति लाकर मांय ॥ ८ ॥ जू० ॥ महमंद कहै वस्तु वोरीयै । जे कुबआ  
 वैरे साथ । अपणो लाज उवारीयै । लेखो साहिब हाथ ॥ ९ ॥ जू० ॥ इति ॥

## ॥ अथ क्रोधनी सिज्जाय लि० ॥

॥ ❀ ॥ कडुवारे फलजे क्रोधना । ग्यानी इम बोलै । रीसतणो रस जा-  
 णिई । हलाहल तोलै ॥ क० ॥ १ ॥ क्रोधें कोमि पूरवतणो । संजम फ  
 ल जाय । क्रोध सहित तप जे करै । ते तो लेखे न थाय ॥ २ ॥ क० ॥  
 साधु घणो तपियो हुं तो । धरतो मन वैराग । शिष्यना क्रोध थकी थयो ।  
 चंरु कोसियो नाग ॥ क० ॥ ३ ॥ आगि जुटै जे घर थकी । ते पहलुं  
 वरवालें । जलनो जोग जो नवि मिलै । तो पासेनुं पर जालें ॥ क० ॥ ४ ॥  
 क्रोध तणी गति एहवी । कहै केवल नांणी । हांणि करे जे हेतनी । जा

जवजो इमजाणी ॥ क० ॥ ५ ॥ उदय स्तन कहे क्रोधनें । काढजो गले सा  
ही । काया करजो निरमली । उपशम रसनाही ॥ क० ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
इति क्रोधसिज्जाय सं० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ अथ उपदेशमाला पोसह सिज्जाय जि० ॥

॥ ❀ ॥ जगचूनामणि नून । उसजो वीरो तिलोय सिरि तिलउ । एगो  
लोगा इच्चो । एगो चक्खू तिहुअणस्स ॥ १ ॥ संवठर सुसज्ज जिणो ।  
ठम्मासे वध्माण जिणचंदो । इइ विहरिया निरसणा । जएज्जाए उव माणेणं  
॥ २ ॥ जइता तिलोय नाहो । विसहइ बहुयाइं असरिस जणस्स । इय  
जीयंत कराइं । एस खमा सब्ब साहणं ॥ ३ ॥ न चइज्जाइ चाजेउ । महइ  
महा वध्माण जिण चंदो । उवसग्ग सहस्सेहिवि । मेरु जहा वाय गुंजा  
हिं ॥ ४ ॥ जइो विणीय विणउ । पढम गणहरो समत्त सुयनाणी । जाणंतो  
वि तमत्थं । विहिय हियउ सुणइ सब्बं ॥ ५ ॥ जं आण वेइ राया । पयइउ तं  
सिरेण इवति । इय गुरुजण सुह जणियं । कयं जलिउ डेहिं सोयब्बं ॥ ६ ॥ जह  
सुर गणाण इंदो । गह गण तारागणाण जहचंदो । जहय पयाण नरींदो । गण  
स्सवि गुरु तहा णंदो ॥ ७ ॥ बावुत्ति मही पाजो । न पया परि हवइ एस गुरु उव  
मा । जंवापुरउं काउं । विहरंति सुणी तहा सोवि ॥ ८ ॥ पफिरुवो तेयस्सी । जुग  
प्पहाणा गमो महुर वक्को । गंजीरो धिईमंतो । उवएस परोय आयरिउ ॥ ९ ॥  
अपरिस्सावी सोमो । संगह सीजो अजिग्गह मईय । अविकत्थणो अ  
चवजो । पसंत हियउ गुरु होई ॥ १० ॥ कइयावि जिण वरिंदा । पत्ता  
अयरामरं पंहं दानं । आयरिएहिं पवयणं । धारिज्जाइ संपयं मयलं ॥ ११ ॥  
आणुगम्मए जगवई । राय सुयज्जा सहस्स वंदेहिं । तहवि न कोइ माणं ।  
परियवइ तं तहा नूनं ॥ १२ ॥ दिण दिक्खियस्स दमगस्स । अज्जिमुहा  
अज्जवंदणा अज्जा । नेवइ आसण गहणं । सो विणउं सब्ब अज्जाणं  
॥ १३ ॥ वरमसय दिक्खियाए । अज्जाए अज्ज दिक्खिउं साहू ।  
अज्जिगमण वंदण नमंसणेण । विणणुण सो पुज्जो ॥ १४ ॥ धम्मो पुरस  
प्पज्जवो । पुरस वर देसिउं पुरस जिओ । जोएवि पइ पुरसो । किंपुण लोणु  
त्तमे धम्मं ॥ १५ ॥ संवाहणस्स रणो । तइया वाणारसीइ नवरीए । कन्ना

सहस्स महियं । आसी किरूववंतीणं ॥ १६ ॥ तहविय सा रायसिरी । उ  
 ल्हंती न ताइया ताहिं । उयरछिएण इक्केण । ताइया अंगवीरेण ॥ १७ ॥  
 महिलाणसु बहुयाणवि । मज्झात्त इह समत्त घर सारो । रायपुरिसेहिं  
 निज्झइ । जणेवि पुरसो जहिं नत्थि ॥ १८ ॥ किं परजण बहु जाणा  
 वणाहिं । वर मप्प सक्खियं सुकयं । इह जरह चक्खवट्ठी । प्रसन्न चंदोय  
 दिठ्ठंता ॥ १९ ॥ वेसो वि अप्पमाणो । असंजम पएसु वट्ठमाणस्स । किं परिय  
 त्तियवेसं । विसं नमारेइ खज्जंतं ॥ २० ॥ धम्मं रक्खइ वेसो । संकइवेसेण  
 दिक्खित्तमि अहं । उम्मग्गेण पमंतं । रक्खइ राया जणवत्तय ॥ २१ ॥ अप्पा  
 जाणइ अप्पा । जहठ्ठिं अप्पसक्खित्तं धम्मो । अप्पा कोइ तं तह ।  
 जह अप्प सुहावहं होई ॥ २२ ॥ जं जं समयं जीवो । आविस्सइ जेण  
 जेण जवेण । सो तंमि तंमि समए । सुहा सुहं बंधए कम्मं ॥ २३ ॥  
 धम्मो मएण हुंतो । तोनवि सी उन्ह वाय विज्जडित्तं । संवत्तर मणसीत्तं ।  
 बाहुबलि तह किलिस्संतो ॥ २४ ॥ नियगमइ विगप्पिय चिंतिएण । सत्तं  
 द बुद्धि चरिएण । कत्तो पारत्त हियं । कीरइ गुरु अणुवएसेणं ॥ २५ ॥  
 थच्चो निरोवयारी । अविणीत्तं गवित्तं निरवणामो । साहुजणस्स गरहित्तं ।  
 जणेवि वयणिज्जयं लहइ ॥ २६ ॥ थोवेणवि सप्पुरिसा । सणं कुमारुब्ब के  
 इबुज्जंति । देहे खण परिहाणी । जंकिर देवेहिं सेकहियं ॥ २७ ॥ जइ  
 ता लव सत्तम सुर । विमाण वासीवि परिवसंति सुरा । चिंतिज्जंतं सेमं ।  
 संसारे सासयं कयरं ॥ २८ ॥ कहत्तं जन्नइ सुक्खं । सुचिरेणवि जस्स पुक्ख  
 मत्ति हियए । जंच मरणावसाणे । जव संसाराणु बंधिच ॥ २९ ॥ उवएस  
 सहस्से हिवि । बोहिज्जं तो न बुज्जई कोई । जह बंजदत्त राया । उदाइ निव  
 मारत्तं चेव ॥ ३० ॥ गयकन्न चंचलाए । अपरिचत्ताइ राय लट्ठीए । जीवा  
 सकम्म कलिमल । जरिय जरातो पमंति अहे ॥ ३१ ॥ बोत्तूणवि जीवाणं ।  
 सट्ठकुरांति पावचरियाइ । जयवं जा सा सा सा । पच्चाए सो हू इणमो ते  
 ॥ ३२ ॥ पन्नि वज्झि ऊण दोसे । नियए सम्मंच पायवन्नियाए । तो किर  
 मिगावईए । उप्पन्नं केवलं नाणं ॥ ३३ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
 इति पोसह सिज्जाय समाप्ता उपदेश माला ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ राईसंधारा पोसहसिज्ञाय ॥ ❀ ॥

॥❀॥ निस्सिही २ एमो खमासमणाणं । गोयमाईणं महामुणीणं ।  
 ( नवकार ३ करोमिजंते ३ कहीयै ) । अणुजाणह चिठ्ठिजा । अणुजाणह  
 परमगुरु । गुण गण रयणे हिं मंभिअ सरीरा । बहु पन्निपुन्ना पोरिसी ।  
 राई संधारए ठामि ॥ १ ॥ अणु जाणह संधारं । बाहु वहाणेण वामपासेणं ।  
 कुकुन पाय पसारण । अंतरंतु पमज्जए चूमिं ॥ २ ॥ संकोइय संभासं ।  
 उवट्ठंतेय काय पन्निजेहा । दवाई उवज्जं । ऊसास निरुंजणा लोयं  
 जइमे हुज्ज पमानं । इमस्स देहस्सि माइरयणीए । आहार मुवहि देहं । सबं  
 तिविहेण वोसरिअं ॥ ४ ॥ आसव कसाय बंधण । कजहा जक्खाण पर  
 परीवानं । अरइ रई पेसुन्नं । माया मोसंचमिद्धत्तं ॥ ५ ॥ वोसरिसु  
 इमाइं सुक्खमग्ग । संसग्ग विग्ग चूआइं । दुग्गइ निबंधणाइं । अठारस  
 पाव छाणाइं ॥ ६ ॥ एगोहं नत्थि मे कोवि । नाह मन्नस्स कस्सवि । एवं  
 अदीण मणसो । अप्पाण मणुसासए ॥ ७ ॥ एगो मे सासजं अप्पा । नाणदं  
 सण संजुजं । सेसामे वाहिरा जावा । सव्वे संजोग लक्खणा ॥ ८ ॥ सं  
 जोग मूला जीवेणं । पत्ता दुक्खपरंपरा । तह्मा संजोग संबंधं । सबं तिवि  
 हेण वोसरे ॥ ९ ॥ अरिहंतो महदेवो । जाव जीवं सुसाहुणो गुरुणो ।  
 जिण पन्नत्तं तत्तं । इय सम्मत्तं मए गहियं ॥ १० ॥ चत्तारिमंगलं । अरि  
 हंता मंगलं । सिद्धामंगलं । साहु मंगलं । केवल्लि पन्नत्तो धम्मो मंगलं ।  
 चत्तारि लोयुत्तमा । अरिहंता लोयुत्तमा । सिद्धा लोयुत्तमा । साहु लो  
 युत्तमा । केवल्लि पन्नत्तो धम्मो लोयुत्तमो ॥ चत्तारि सरणं पवज्जामि ।  
 अरिहंते सरणं पवज्जामि । सिद्धेसरणं पवज्जामि । साहु सरणं पवज्जा  
 मि । केवल्लि पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥ अरिहंता मंगलं मज्ज ।  
 अरिहंता मज्ज देवया । अरिहंता कित्ति अत्ताणं । वोमिरामित्ति पावगं  
 ॥ १ ॥ सिद्धाय मंगलं मज्ज । सिद्धाय मज्ज देवया । सिद्धाय कित्ति  
 अत्ताणं । वोमिरामित्ति पावगं ॥ २ ॥ आयरिया मंगलं मज्ज । आयरिया  
 मज्जदेवया । आयरिआ कित्ति अत्ताणं । वोमिरामित्ति पावगं ॥ ३ ॥ उव  
 ज्जाया मंगलं मज्ज । उवज्जाया मज्ज देवया । उवज्जाया कित्ति

अत्ताणं । वोसिरामित्ति पावगं ॥ ४ ॥ साहूणो मंगलं मज्झ । साहूणो मज्झ  
 देवया । साहूणो कित्तिअत्ताणं । वोसिरामित्ति पावगं ॥ ५ ॥ पुढवि दग  
 अगणि मारुअ । इक्किं सत्त जोणि लक्खान् । वण पत्तेय अणंते । दस चउ  
 दस जोणि लक्खान् ॥ १ ॥ विगलिंदिएसु दो दो । चउरो चउरोय नारय सु  
 रेसु । तिरिएसु हुंति चउरो । चउदस लक्खाय मणुएसु ॥ २ ॥ खामेमि सब्ब  
 जीवे । सब्बे जीवा खमंतुमे । मित्तीमे सब्ब नूएसु । बैरं मज्झ न केणवि ॥ ३ ॥  
 एवमहं आलोइअ निंदिअ । गरहिअ दुगुंठिअं सम्मं । तिविहेण पडिकंतो  
 वंदामि जिणे चउवीसं ॥ ४ ॥ खमिअ खमाविअ मइ खमिअ । सब्बहजीव  
 निकाय । सिद्धह साख आलोयणह । मज्झह बैर नजाय ॥ ५ ॥ सब्बे जीवा  
 कम्मवसु । चउदह राज जमंतु । तेमइं सब्ब खमाविआ । मज्झवि तेह खमंतु  
 इति राई संधारा गाथा समाप्ता ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सदाकालका अवश्य कर्तव्य । सामायक, पम्फिमणा  
 अठपुहरी ( तथा ) चौ पुहरी पोसा, । देवबांदणा, पच्चक्खाण पारणा, ढ  
 म्मासी तप चिंतना, सर्वकी अनुक्रमें शास्त्रानुसारे विधि लि० ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रणम्य श्रीजिनार्धाशं । सदगुरुं च विशेषतः ।

श्राद्धाहोरात्र कृत्यानि । लिख्यन्ते लोकनाथया ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ प्रथम प्रज्ञात सामायक विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रावक दोय घडी रात्र रह्यां पोशहशालायै । अथवा गुरुकनें ।  
 अथवा घरनें एक प्रदेशें ( आवी ) प्रथम दिवस संध्याये पम्फिलेह्या वस्त्र पहिरी ।  
 ( जो ) गुरुरो योग न हुवै ( तो ) आप प्रमार्जित थानकै । खमासमण पूर्व  
 क तीन नवकार गुणी थापनाजी थापै ( पठे ) खमासमण देई कहै । इत्ठा  
 करेण संदिस्सह जगवन् । सामायक मुहपत्ती पम्फिलेहुं ( गुरु कहै पम्फि  
 लेह ) पठै इत्ठंकही । दूजी खमासमण देई । मुहपत्ती पम्फिलेहै । ऊजो हो  
 य खमा० कहै । इत्ठा० सं० ज० । सामायक संदिस्सावूं ( गुरु कहै संदि  
 स्सावेह ) पठै इत्ठंकही । वलेख० देनें कहै । इत्ठाका० सं० ज० । सामायि  
 क ठाठं ( गुरु कहै ठाएह ) पठै इत्ठं कही । खमासमण देई । अर्धावन  
 तकाय ऊजो थको । तीन नवकार गुणी कहैं । इत्ठकार जगवन पसान्ठकरी

सामायिकदंरु उच्चरावोजी ( गुरु कहै उच्चरावेमो ) पठै । करेमिजंते सामाश्यं  
( इत्यादि ) सामायकसूत्र । गुरुवचन अनुज्ञापण करतो थको । तीनवार उच  
री । खमासमण देई । इठाका० सं० ज० । इरियावहियं पडिकमामि ( गुरुकहै  
पम्किमह ) पठै इठं कही । इठामि पम्किमिउं इरियावहियाए ( इत्यादि  
पाठकहै ) इरियावही पम्किमी । एक लोगस्सनो कानुसगगकरी । एमो अ  
रिहंताणं कही । कानुसगगपारी । मुखें प्रगट लोगस्स कही । खमासमण देई  
इठा० सं० ज० । बैसणो संदिस्सावूं ( गुरु कहै संदिस्सावेह ) पठै इठं क  
ही । वले खमासमण देई । इठाका० सं० ज० । बैसणो ठाउं ( गुरु कहै ठा  
एह ) पठै इठं कही । खमासमण देई । इठाका० सं० ज० । सिज्जाय सं  
दिस्साउं ( गुरुकहै संदिस्सावेह ) पठै इठं कही । वलेखमासमण देई । इठा  
का० सं० ज० । सिज्जाय करूं ( गुरुकहै करेह ) इठं कही । वले खमासमण  
देई । ऊजो थको आठ नवकार सिज्जाय करै । तथा शीतकालादि हुवै  
( तो ) खमासमण देई । इठाका० सं० ज० । पांगरणो संदिस्सावूं ( गुरु कहै  
संदिस्सावेह ) पठै इठं कही । खमासमण देई । इठा० सं० ज० । पांगरणो  
पम्किघाउं ( गुरु कहै पम्किघाएह ) पठै इठं कही वस्त्रग्रहण करे । तथा  
सामायकवंत ( अथवा ) पोसहीता श्रावकप्रतें ( कोई ) सामायकवंत ( अथ  
वा ) पोसहीतो श्रावक वांदै ( तो ) वंदामो एहवुं कहै । जो कोई बीजो  
वांदै ( तो ) सिज्जायं करेह । एहवो कहै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
इति प्रज्ञात सामायक ग्रहणविधि ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ राई प्रतिक्रमण विधि लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ( द्वि ) एक खमा समण देई । इठाका० सं० ज० । चैत्यवंदन करूं  
( गुरुकहै करेह ) पठै इठं कही । जयजु सामी २ ( इत्यादि जय वीय राय  
सूधी चैत्यवंदन करै । पठै खमासमण देई । इठाका० सं० ज० । कुसुमिण दु  
स्सुमिण राई प्रायत्तिन विसोहणत्थं करेमि कानुसगगं ( गुरु कहै करेह )  
पठै इठं कही । कुसुमिण दुस्सुमिण राई प्रायत्तिन विसोहणत्थं करेमि का  
नुसगगं । अन्नत्थं ससिपणं ( इत्यादिकही ) ( ४ ) लोगस्सनो कानुसगग ।  
चंदेसु निम्मज्जरा ॥ सूधी चितवी । एमो अरिहंताणं कही । कानुसगग



पारी । मुखै लोगस्स कहै ( जो ) रात्रें मोटको गुण संबंधी दूसण लागो हुवै  
( तो ) कानसग्ग मांहें । सागरवरगंजीरा । सूधी चिंतवीयै ( इतिसंप्रदायः ।

॥ ❀ ॥ किहां इक पहिलां कुसुमिण दुस्समिण कानसग्ग करी । पढै  
चैत्यवंदन करवो कहोतै । पिण परमार्थ एकहीजतै । पढै । पम्किमण वेला  
सीम सिज्जाय ध्यान करै ॥ ❀ ॥ हिवै पम्किमण ठाववानो अवसर हुवां

॥ १ खमासमण देई ( श्री आचार्यजी मिश्र ) कही वांदीयै ॥ २  
खमासमण देई ( श्री नृपाध्यायजी मिश्र ) कही वांदीयै ॥ ३ खमासमणें ।  
जंगम युग प्रधान वर्तमान ऋदारक श्रीपुज्यजी का नाम कही वांदीयै ॥  
४ खमासमणें । सर्व साधूजीकुं वांदीयै ॥ इम च्यार खमासमणें पडि कम  
णो ठावी । इठकार समस्त श्रावको वांटूं ( कही ) गोडा लीयै वैसी मस्तक  
नमावी । दोय हाथे । मुहपत्ती मुखें देई । सबस्सवि राइय ( इत्यादि  
कहै ) पिण इठा करेण संदिस्सह इठं ( इसोन कहै ) पढे शक्रस्तव कही ।  
ऊजो थई । करोमि जंतो सामाइयं । सावज्जं जोगं पच्चक्खामि ( इत्यादि  
कही ) इठामि ठाउं कानसग्गं । जोमे राइउ ( इत्यादि पाठ कही )  
तस्सुत्तरी । अन्नत्थू ससिएणं कही । चारित्र शुद्धि निमित्तें ॥ १ लोगस्सनो  
कानसग्ग करी ( पारी ) दर्शन शुद्धि निमित्तें । लोगस्स कही । सबलो  
ए अरिहंत चेइयाणं करोमि कानसग्गं । वंदण वत्तिआ ए ( इत्यादि  
कही ) १ लोगस्सनो कानसग्ग करी ( पारी ) ज्ञानातीचार शुद्धि निमित्तें ।  
पुक्खर वर दीवट्ठे । ( कही ) सुयस्स भगवन् करोमि कानसग्गं । वंदणव  
त्तिआए ( इत्यादि कही ) कानसग्ग करै । कानसग्ग मांहें । आज्जणा  
चौपुहरी रात्रि मांहें । इत्यादि आलोयण पाठ चितवे ॥ ❀ ॥ ॥ ( अनें  
एनावैतो ) आठ नव कार चिंतवीयै । पढै कानसग्ग पारी । सिद्धाणं बुद्धाणं  
( कही ) संभासा प्रमार्जन पूर्वक वैसी ( मुहपत्ती पम्किमण ) पढै दो वांद  
णादैं ( ते इम ) अविग्रह बाहिर ऊजो थको । आधो नमी ॥ इठामि खमा  
स । वांदि० जाव० । नि० । अणुजाणह मेमिउग्गहं ( इतरो कही )  
ऋमि प्रमार्जतो थको । निस्सही कही । कांइक अवग्रह मांहि पैसी । संभा  
सा प्रमार्जो । ऊकइ वैसी । नावै हाथ मुहपत्ती लेई । नावे कान थी जी

मणा कान लगे निजान पूजो । मुहपत्ती आगे मेलही । तेहनें मध्यभागें  
 गुरुचरण कल्पना करी । अहो कायं ( इत्यादि आवर्त्त करी ) क्युं हिक ऊं  
 चो नमी । मस्तकें अंजली करी । गुरुसांही दृष्टिराखी । खमाणिजो जे  
 किजामो ( इत्यादि पाठ कहै ) पठै । फेर जत्ताजे । ( इत्यादि आवर्त्तन  
 कर ) ऊजो थई । पठै पगे नूमि पुंजतो । अवग्रह बाहिर स्वस्थानें आ  
 वी । आवस्सियाए ( इत्यादि पाठ ) सर्व कहै । बीजी वार बजे इम हीज  
 करे । ( पिण ) अवग्रह बाहिर न नीकलै । तिहां ऊजो ज सर्व पाठ कहै ।  
 आवस्सियाए पद न कहै । ( इम सर्वत्र जाणिवूं ) पठै अवग्रह मांहि रही  
 कहै । इत्ताका० सं० ज० । राइयं आलोवूं ( गुरु कहै आलोएह )  
 पठै । इहं आलोएमि जोमेराइउ ( इत्यादि पाठ ऊचरतो ) कानसग मां  
 हें चितव्या । रात्रिसंबंधी अतीचार । गुरु समह आलोवे । पठै । सबस्सवि  
 राइय ( इत्यादि पाठ कहै ) तिहां इत्ताका० सं० ज० एपद कहिवै  
 करी । आलोया अतीचार नों प्रायश्चित्त मांगै ( गुरु कहै पम्कि मह )  
 पठै । इहंतस्स मिठामि पुक्कं ( कही ) संमासा प्रमार्जी । आसणें  
 बैसी । जीमाणो गोमो ऊंचोरापी । नावो गोमो नीचो करी ( एहवूं कहै )  
 जगवन् सूत्रजणुं ( गुरु कहै जणह ) पठै इहं कही । ३ नवकार । ३ करेमि  
 जंते ( अथवा ) १ नवकार । १ करेमि जंते ( कही ) इठामि पम्कि  
 मि उं । जोमेराइउ ( इत्यादि कही ) वंदितू सुत्र । तंनिंदे तंच गरिहामि  
 ( सूधी कहै ) पठै ऊजो थई । अब्बु ठिजमि आराहणाए ( इत्यादि संपूर्ण  
 कही ) वे वांदणा देई ॥ अवग्रह मांहि थको हीज कहै । इत्ताका० ॥  
 सं० । ज० । अब्बुठिजमि अभितर । राइयं ( कही ) संमासा प्रमार्जन  
 पूर्वक गोडालीये बैसी । वेवांह पडिलेही । मुहपत्ती वाम हाथसुं मुखें  
 देई । दक्षिण हाथ गुरु सांझो करी । नीचो नम्यो थको । जंकिंचि अप्यत्तियं  
 ( इत्यादि संपूर्ण कहै ) तिवारे गुरु पिण मिठामि पुक्कंड कहै ) पठै । वे  
 वांदणादेई । नूमि प्रमार्जता । पठै पगे अवग्रह बाहिर आवी । आयरिय  
 उवझाए । इत्यादि गाथा ३ कहै । पठै । करेमि जंते० । इठामि ठामि  
 कानसगं । तत्सुत्तरी । ( इत्यादि कही ) कानसग करै । कानसग मांहे ।

श्रीवीर कृत षष्ठासीतप चित्तवै (जो) षष्ठासी तपन जाणे (तो) ६ लोगस्स,  
 अथवा, २४ नवकारनो कावसग्ग करै ऐसी प्रवर्त्तौ है । पढै जे पच्चक्खाण करावो  
 हुवै ( ते ) हियामांहि धारी । काउसग्ग पारी । लोगस्स कही । ऊकडूबैसी ।  
 सुहपत्ती पडिलेही । वे वांदणा देई । सकल तीरथ नामलेई । नमस्कार करी  
 ( कहै ) इह कार जगवन पसाउ करी पच्चक्खाण करावो जी ( पढै ) गुरु  
 मुखें पच्चक्खाण करै । गुरु अजावै थापना सम्हें ( अथवा ) साधमी मुखें  
 पच्चक्खाण करै ( पढै ) इहामो अणुसठि कही, बैसै ( तिवारै ) गुरु ?  
 थुई कहां पढै । मस्तकै अंजली करी । नमो खमासमणाणं ! नमो ज्ञात्ति  
 धा कही ॥ संसार दावानल इत्यादि ( अथवा ) नमोस्तु वर्ध मानाय । इ  
 त्यादि ( अथवा ) पर समय तिमर ( इत्यादि तीन गाथा जणी ) शक्रस्त  
 व कहै । पढै । ऊजो थई । अरिहंत चेईयाणं करोमि काउसग्गं । वंदणवत्ति  
 आए ( इत्यादि कही ) काउसग्ग मांहे १ नवकार चितवी । एक श्रावक प्रथ  
 म काउसग्ग पारी । नमोर्द्ध सिद्धा कही । एक गाथा स्तुति कहै । बीजा  
 सर्व काउसग्ग मांहे रह्या सुणें ( पढै ) णमो अरिहंताणं कही । काउसग्ग  
 पारै । इम आगै पिण जाणवो । ( पढै ) लोगस्स कही । सबलोए अरिहंत  
 चेइआणं । वंदणवत्ति० । अन्नत्थू० । ( इत्यादि कही ) १ नवकारनों का  
 उसग्ग करी ( पारी ) बीजी स्तुति कही । सिद्धाणं बुद्धाणं कहै । ( पढै ) वे  
 यावच्च गराणं० । अन्नत्थू० कही । १ नवकारका० करी । ( पारी ) नमो  
 र्द्धत सिद्धा कही । चौथी स्तुति कही । ( बैसी ) । नमोत्थुणं कहै । पढै  
 तीन खमासमणें । पूर्वोक्तरीतें । आचार्य । उपाध्याय । सर्व साधू वांदे ।  
 इति प्रजाती पम्किमण विधि. ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः इतना विशेष है ॥ ❀ ॥

॥ ❀ इतनी विधि कियां पाठे थिरता हुवै ( तो ) उत्तर दिशें । सीमंधर  
 स्वामी सांहमां बैसी । कम्म जूमी २ ( इत्यादि ) संपूर्ण चैत्यवंदन करै  
 ( प्रांतें ) अरिहंत चेईयाणं करोमि काउसग्गं । वंदणवत्ति० अन्नत्थू० कही ।  
 १ नवकार चितवी ( पारी ) सीमंधरस्वामीनी स्तुति कहै । इम हीज  
 थिरता हुवै ( तो ) श्रीसिद्धाचलजी नो चैत्यवंदन करै ॥ पढै पम्किमण

करै ( ते इम ) खमासमणदेई । इठाका० सं० ज० । पन्जिहेण संदिस्सानं  
 ( गुरु कहै संदिस्साएह ) बीजै खमासमणे । इठा० सं० ज० । पन्जिहेण  
 करं ( गुरु कहै करेह ) पठै । इठं कही । सुहपत्ती पन्जिहे । ( इमहीज  
 दोइ खमासमणें । अंग पन्जिहेण संदिस्सानं । अंग पन्जिहेण करं  
 ( कही ) धोतियो कणदोरो पन्जिहेही । खमासमणदेई । इठकार जगवन्  
 पसान करी पडिलेहण पडिलेहा वोजी ( इम कही ) थापनाचार्य पडिलेही ।  
 राखै ( अने ) जो गुर्वा दिक् थापनाचार्य पन्जिहेहै । तोपिण । खमासमण  
 देई आग्यामांगे । पठै खमासमण देई । इठा० सं० ज० । सुहपत्ती  
 पडि लेहुं ( गुरुकहै पडिलेहेह ) पठै इठं कही । सुहपत्ती पडिलेही । दोय  
 खमासमणें इठाका० सं० ज० । उही पडिलेहण संदिस्सानं । करं ( कही )  
 कंवल वस्त्रादि पडिलेहै । पठै । पोमहशाला प्रमाजी । काजो विधसुं  
 परती । खमाममण देई । इरियावही पडिकमें ( एमूलविध जाणवी ) ॥ ❀ ॥  
 इतरी स्थिरतानहुवै तो पिण दृष्टि पडिलेहण करवी । हिवणां पिण प्रायें  
 इमहीज करता दीसै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिवै सामायक पारणेंकी विधि कहैवै ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पठै सामायक पारे । १ खमासमण देई । सुहपत्ती पडिलेहै  
 फेर खमासमण देई इठा० सं० ज० । सामायक पारं ( गुरु कहै पुणोवि  
 कायव्वो ) पठै यथाशक्ति कही । वले खमासमण देई ( कहै ) इठाका०  
 सं० ज० । सामायक पारोभि ( गुरु कहै आयारोनमोत्तव्वो ) पठै तहत्तिक  
 ही । अर्ध नम्र ऊनो थको । तीननवकारगुणी । नीचो गोमार्जीयै बैसी ।  
 मस्तक नमार्वा । जयवंदमन्नजहो ( इत्यादी गाथा कहै ) ( अथवा ) पहिल्यां  
 सामायक पारी । पठै पडिलेहण करै ( इहां ) यथायोग्य अवमरे  
 गुरुनै सुहराई पठै ( ते इम एक खमासमण देई कहै । इठकार जगवन्  
 सुहराई सुवनप शरीर निरावाय संयम वात्रा सुखै निरखहेउजी । उ  
 पूज्यजी साता ( इत्यादि पृठी ) बीजो खमासमण देवै । श्रीजिन पनि सुरि  
 जीनी समाचारमें इम कहाँ वै ॥ ❀ ॥ इति सामायक पारणविधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ संध्याकाल सामायक विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिवै पाठलै पहुर धर्मशाला प्रमार्जी । वस्त्रादि पन्डितेहै । जो  
अवेलो आयो हुवै ( तो ) दृष्टि पन्डितेहण करै । पठै । गुरु आगै ( अथ  
वा ) थापनाचार्यजी आगै आवी । जूमी प्रमार्जी । आसण बांम पास मूं  
की । खमासमण देई ( कहै ) इत्ताका० सं० ज० । सामायिक मुह  
पत्ती पन्डितेहुं ( गुरु कहै पन्डितेहेह ) पठै इत्तं कही । बले खमासमणदेई  
इत्ताका० सं० ज० । सामायक संदिस्सां ( गुरु० संदिस्सावेह ) फेर  
खमासमण देई । इत्ताका० सं० ज० । सामायक ठां ( गुरु० ठाएह )  
पठै इत्तं कही । फेर खमासमण देई । अर्धावनत थई । तीन नवकार गु  
णी ( कहै ) इत्तकार जगवन् पसाउ करी सामायिक दंरु उच्चरावो जी  
( गुरु० उच्चरावेमो ) पठै । करेमि जंतै सामाइयं ( इत्यादि ) सामायक  
सूत्र गुरुवचन अनुज्ञाषण करतो थको । तीन वार उचरी । खमासमण देई ।  
इत्ताका० सं० ज० । इरिया वहियं पन्डिकमामि ( गुरु कहै पन्डिकमह )  
पठै इत्तं कही । इत्तामि पन्डिकमिउं । इरिया वहियाए ( इत्यादि पाठें इरि  
यावही पडिकमी । १ लोगस्स नो कानसग्ग करी । एमो अरिहंताणं क  
ही । कानसग्ग पारी । मुखें प्रगट लोगस्स कही । नीचावैसी । मुहपत्ती  
पडिलेही । वांदणा देई ( कहै ) इत्तकार जगवन् पसाउ करी पच्चक्खाण  
करावोजी पठै ( गुरु ) दिवस चरम पच्चक्खाण करावै ॥ गुरु अज्ञावै था  
पनाचार्य सम्हें ( अथवा ) स्वमुखें ( तथा ) वनेरा साधमी मुखें पचखै  
( अने ) जो तिविहार उपवास कीधो हुवै ( तो ) मुहपत्ती पन्डितेही ।  
पच्चक्खाण करै । वांदणा नद्यै ( अने ) जो चउविहार उपवास हुवै ( तो )  
पच्चक्खाण करवोठे नही । ते माटै । मुहपत्ती नही पन्डितेहै । एविस्तार वि  
धिजै । पठै १ खमासमण देई । इत्ताका० सं० ज० । सिझाय संदि  
स्सां ( गुरु कहै संदिस्सावेह ) पठै इत्तं कही । बले खमासमण देई ।  
इत्ता० । सं० । ज० । सिझाय करुं ( गुरु० करेह ) पठै इत्तं कही । ख  
मासमण देई । ऊजो थको ( मधुरस्वर ) नवकाररनी सिझाय करै ।  
पठै खमासमण देई । इत्ता० सं० ज० । वैसणो संदिस्सां ( गुरु० सं

दिस्सावेह ) फेर खमासमण देई । इत्ता० सं० ज० । वैसणो ठाउं ।  
 ( गुरु० ठाएह ) पठे इत्तं कही । जो शीतकालादि हुवे ( तो ) खमास  
 मण देई । इत्ता० सं० ज० । पांगरणो संदिस्साउं ( गुरु० संदिस्सावेह )  
 फेर खमासमण देई । इत्ता० सं० ज० । पांगरणो पन्निघाउं ( गुरु०  
 पन्निघाएह ) इत्तंकही शुभ्रध्यान करे ॥ ॐ ॥ इति संध्यासामायिक विधिः ॥

॥ ॐ ॥ अथ देवसी पन्निक्मण विधि लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ३ खमासमण देई ॥ इत्ता० सं० ज० । चैत्य वंदन करुं  
 ( गुरु कहै करेह ) पठे इत्तं कही । जयतिहुयण० । जय महायस ( प्र  
 मुख ) नमस्कार कही । नमोत्युणं कही । अरिहंत चेइयाणं० ( इत्यादि  
 पूर्वोक्त रीतें ) च्यारे थुई ए देव वांदे । च्यार खमासमणें आचार्यादिक  
 वांदी । पठे इत्तकार समस्त श्रावको वांडुं । इम कही गोमालिये वैसी ।  
 मस्तक नमावी । सबस्सावि देव सिय ( इत्यादि ) तस्स मिठामि डुकडं क  
 हे ( पिण ) इत्ता करेण संदिस्सह इत्तं ( एपद न कहै ) पठे ऊजा थई ।  
 करेमि जंते सामाइयं० । इत्तामि ठाउ कानु सग्गं । जोमे देवसिउं० ।  
 तस्सुत्तरी० ॥ अन्नत्थू ससिण्णं० ॥ ) इत्यादि कही ( कानुसग्ग करे ।  
 कानुसग्ग माहें । आज्जूणा चौपहरा दिवसमें ) ( इत्यादि पाठ मनमें चिं  
 तवी ) एमो अरिहंताणं कही । कानुमग्ग पारी । लोगस्स कहै । संन  
 शा प्रमार्जन पूर्वक वैसी । सुहपत्ती पन्निजेही । वे वांदणा देवै । पठे अवग्रह  
 मांदि ऊजो थको कहै ॥ इत्ता० सं० ज० ॥ देवसियं आलोऊं । गुरु कहै आ  
 लोएह । पठे । इत्तं आलोएमि० पाठ कहै । आज्जूणा चौपहर दिवस० । लवु  
 अतीचार आलोवे । पठे सबस्सावि देवसिय ( इत्यादि ) इत्ता करेण संदिस  
 ह । खूथी कहै । निवारै ( गुरु कहै पन्निक्मह ) पठे । इत्तं तस्स मिठामि  
 डुकडं ( कही ) संनशा प्रमार्जी । प्रमार्जित जूमें आसणें त्रैमी कहै ।  
 जगवन धूत्र जणुं ( गुरु कहै नणह ) पठे इत्तं कही । तीन नवकार ३  
 करेमि जंते ( अथवा ) ? नवकार ? करेमि जंते ( कही ) इत्तामि पन्नि  
 क्मिउं । जोमेदेवसीउं ( इत्यादि कही ) एक श्रावक वंदितू कहै । वी  
 जा सर्व सुणें । पठे ऊजो थई । अन्नठित्तिमि आराहणाए ( इत्यादि सं



पूर्ण पाठ कही ) वे वांदणा देवै । अवग्रह मांहिज ऊजो थको । इच्छाका०  
सं० ज० । अष्टाष्टिमि अष्टितर । देव सियं खामेनं ( गुरु कहै खामेह )  
पठै इहं खामेमि देवसियं ( कही ) गोमालीयै बैसी । वाम हाथें मुह पत्ती  
मुखें धरी । दक्षिण हाथ गुरु सनमुख करी । मस्तक नमावी ( सर्व पाठ  
कहै ) पठै विधिसुं वे वांदणादेइ । आयरिय उवझाए ( इत्यादि ३ गाथा  
कही ) करेमिजंते सामाइयं ॥ इच्छामि ठानं कानसगं ( इत्यादि कही )  
चारित्र शुद्धिनिमित्तै दोयलोगस्सनो कानसग करै ( पारी ) दर्शन शुद्धि  
निमित्तै प्रगट लोसस कही । सबलोए अरिहंतचे० । वंदण० । अन्नत्यू०  
कही ॥ १ लोससनों कानसग करै ( पारी ) ज्ञान शुद्धि निमित्तै ।  
पुक्खरवर दीवट्टे ( कही ) सुयस्म जगवन्त० । वंदण व० । अन्नत्यू कही ।  
१ लोससनों कानसग करै ( पारी ) सिद्धाणं ( कही ) वेयावच्च  
गराणं न कहै । पठै । सुयदेवयाए करेमि कानसगं । अन्नत्यू कही । एक  
नवकारनों कानसग करी । गुरु संयोग नही हुवै ( तो ) एक श्रावक  
कानसग पारी । नमोर्द्धत्तिद्धा० कही । श्रुतदेवतानी स्तुति कहै । ( गुरु  
हुवै तो गुरु कहै ) बीजासर्व स्तुति सुणकै कानसग पारें । पठै । खित्त  
देवयाए करेमि कानसगं । अन्नत्यू कही । एक नवकार चिंतवी । पूर्वली  
परें ( क्षेत्र देवतानी स्तुति कहै ) पठै ऊजो थको । १ नवकार कही ।  
संनशा प्रमार्जी । ऊकडू बैसी । मुहपत्ती पफिलेही । विधिसुं वे वांदणा  
देई । इच्छामो अणुसठिं कही । बैसै ( पठै गुरु एक स्तुति कहां पठै :  
श्रावक समस्त मस्तकें अंजली करी । एमो खमासणाणं । एमो र्द्धत्तिद्धा  
कही । एमोस्तु वर्ध मानाय ) इत्यादि तीन स्तुति कहै ( श्राविका ।  
एमो खमासमणाणं । कही । संसार दावानी तीन स्तुतिकहै । पठै एमो  
त्युणं कही । एक श्रावक खमासमण देई कहै । इच्छाका० सं० ज० ।  
स्तवन जणुं । बीजा सर्व खमासमण देई कहै । इच्छा० सं० ज० । स्तवन  
सांजलुं ( गुरु कहै जणहः सांजलहः ) पठै आसणें बैसी । नमो र्द्धत्तिद्धा०  
पूर्वक ! वमो स्तवन कहै । पठै तीन खमासमणें । आचार्य उपाध्याय  
सर्व साधू वांदी । चोथे खमासमणे इच्छा० सं० ज० । देवसी प्रायश्चित्त

विशुद्धि निमित्तं काउसग्न करं ( गुरु कहै करेह ) पठै इष्टं कही । देवसी  
 प्रायश्चित्त विमुद्धि निमित्तं । अन्नत्यू कही । च्यार लोगस्सनो काउसग्न  
 करै ( पारी ) लोगस्स कहै । पठै खमासमण देई । इच्छा का० सं०  
 ज० । खुदो वदव जहमावणत्यं करेमि काउसग्नं । अन्नत्यू० ) इत्यादि  
 कही ) च्यार लोगस्सनो काउसग्न करै ( पारी ) लोगस्स कहै ॥ वैसी ।  
 खमासमण देई । थंजणा पार्श्वनाथ जीनों चैत्य वंदन करै । जय वीयराय  
 कहां पठै खमासमण पूर्वक मस्तक नमावी ॥ सिरि थंजणायठिय पास  
 सामिणो ( इत्यादि दोय गाथा कहै ) ऊजा थई । वंदणव० अन्न० कही  
 ४लोगस्सनो काउसग्न करै ( पारी ) प्रगट लोगस्स कहै ( इम हीज ) दादा  
 जी श्रीजिन दत्त सूरिजीनो काउसग्न करै ) पारी मुखे लोगस्स कहै । पठै ।  
 दादाजी श्रीजिन कुशल सूरिजीनो काउसग्न करै । ( पारि ) मुखे लोगस्स  
 कहै पठै । गोदी शांति कहै ( जो ) शांति न आवे ( तो ) १६ नवकारनो  
 काउसग्न करै । पठै । ३ खमासमण देई । चतुक्सायनो चैत्यवंदन जय  
 वीयराय सूधी करै । सर्व मंगल कहै ॥ चतुक्सायनो चैत्यवंदन सूती बखत  
 करनेकाहै ( पिण ) हिवणा प्रवृत्ति ऐसीजहै ॥ पठै पूर्वोक्तरीतै मामा  
 यक पारे । इति देवसी पन्तिकमण विधिः संपूर्ण ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ अठपुहरी पोसह विधि लिख्यते ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ रात्रीनै पाउले विघनिये निद्रा दूर करीनै । पंचपरमेष्टि स्मरण  
 करी । गृहचिंता परिहरी । पर्वदिवस थकी । प्रथम दिवसे । पन्तिकेही राख्याजे  
 पोसहना उभरण लेई । पोसह शालायें थापनाचार्य समीप । अथवा  
 गुरूनो संयोग हुवे ( तो ) गुरूनै पासै आवी । नृमीप्रमार्जी । एक खमा  
 समण देई । इरियावही पन्तिकमें । पठै खमाममण देई । इच्छाका० सं०  
 ज० । पोसह सुहपत्ती पन्तिकेहुं । ( गुरु कहै पन्तिकेहेह ) इष्टं कही ।  
 खमासमण देई । सुहपत्ती पन्तिकेहै । पठै ऊजो थई । खमासमण देई ।  
 इच्छाका० सं० ज० । पोसह सन्दिस्माठं ( गुरु कहै सन्दिस्मावेह ) । पठै इष्टं  
 कही । खमासमण देई । इच्छाका० सं० ज० । पोसह ठाठं ) गुरूहै ।  
 ठाण्ह ( पठै इष्टं कही । खमाममण देई । ऊजो थई । आयो मरीर नमावी ।

मुखे मुहपत्ती देई । मधुर स्वरे । तीन नवकार गुणी कहै । इच्छाकार जग  
 वन पसान करी । पोसह दंरुक उचरावोजी ) गुरु० उचरावेमो ) । पठै करे  
 मिजंते पोसहं । आहा० । जाव अहोरत्तंवा० । अप्पाणंबो० ॥ एपाठ तीनवार  
 गुरुवचन अनुज्ञाषण करतो ऊचरै ॥ ❀ ॥ पठै एक खमासमणें । इच्छा  
 का० सं० ज० । सामायक मुहपत्ती पफिलेहुं ( गुरु कहै पफिलेहेह ) बीजी  
 खमासमण देई । मुहपत्ती पफिलेहै । पठै । दोय खमासमणें सामायक संदि  
 स्सानं । सामायक ठानं ( कही ) खमासमण देई । अर्द्धवनत गात्रऊजो  
 थको । तीन नवकार । तीन करेमि जंते ऊचरी । दोय खमासमणें ।  
 बैसणो संदिस्सानं । बैसणो ठानं । कही । पठै दोय खमासमणें । सिझाय  
 संदिस्सानं । सिझाय करं ( कही ) खमासमण देई । ऊजो थको । आठ  
 नवकारनी सिझाय करै । सीतादि परीसहै दोय खमासमणें । पांगरणं संदि  
 स्सानं । पांगरणं पफिग्यानं ( कहै ) । ए सर्व सामायक विधि पूर्वे कही है  
 तिमहीज करवी । ( पिणइतनो विशेष है ) पहिलां इरियावही पफिकमीहै ।  
 ते माटै । इहां सामायक दंरुक ऊचरयां पठै । इरियावही नही पफिकमी  
 जै ॥ ❀ ॥ पीठै चैत्यवंदन । जय बीयराय सूधी करी । कुसुमण्डुस्समिण  
 काउसगग करै । पठै पफिकमण वेला सीम सिझाय ध्यान करै । पठै पूर्वो  
 क्तरीतें पफिकमण करै ( पिण इतरो विशेषहै ) च्यारे थुई ए देव वांघां  
 पीठै । खमासमण देई ( कहै ) इच्छाका० सं० ज० । बहुवेलं संदिस्सानं  
 ( गुरु कहै ) संदिस्सावेह ( पठै इच्छा कही ) खमासमण देई ( कहै )  
 इच्छाका० सं० ज० । बहुवेलं करं ( गुरु कहै करेह ) पठै इच्छा कही ।  
 तीन खमासमणें ॥ श्री आचार्यजी मिश्र १ । श्रीउपाध्यायजी मिश्र २ ।  
 तीजै सर्व साधू वांदी । कम्म जूमिहि २ । ( इत्यादि नमस्कार जणें ) जो  
 पफिलेहण वेला नही हुवै ( तो ) सीमंधर स्वामीनो चैत्य वंदनादि करी ।  
 सिझाय करै । हिवै पफिलेहण वेला पफिलेहण करै ) । ते विधिपूढ्वैं लि-  
 खीठे । ( तोपिण ) संक्षेपें फेर लिखेंहें ॥ ❀ ॥ दोय खमासमणें । इच्छा  
 सं० ज० । पफिलेहण करं ( कही ) मुहपत्ती पफिलेहै । पठै दोय खमा  
 समणें । अंग पफिलेहण संदिस्सानं । अंग पफिलेहण करं ( कहै ) पठै

( गुरु वचन ) इत्तं कही । धोतियो कणदोरो पन्जिहेही । वस्त्र पहिरी ।  
 खमासमण देई । इत्तकार जगवन पसाजकरी पन्जिहेहण करावोजी । ( इम  
 कही ) । थापनाचार्य पन्जिहेही थापे । अने जो ( गुर्वादिक ) थापनाचार्य  
 पन्जिहेहें । ( तो ) पिण ( खमासमण देई । उक्त रीतें आग्यामांगै ।  
 पन्जे खमासमण देई । इत्ताका० सं० ज० । उपधि मुहपत्ती पन्जिहेहुं  
 ( गुरु कहै पन्जिहेहेह ) पन्जे इत्तं कही । मुहपत्ती पन्जिहेही । दोय खमास  
 मणें । इत्ताका० सं० ज० । उही पन्जिहेहण संदिस्सां ( गुरु० संदिस्सा  
 वेह ) उही पन्जिहेहण करुं ( गुरु० करेह ) पन्जे इत्तं कही । कंवल वस्त्रा  
 दि पन्जिहेही । पोसहमाला प्रमार्जी । काजो विधिसुं परिठवी । एक खमा  
 समण देई इरियावही पन्जिहमें ( इहां आचार दिन करमें कहोते )  
 ॥ ॐ ॥ दोयखमासमणें । इत्ताका० सं० ज० । वसती संदिस्सां । वसती  
 पन्जिहेहुं ( कही ) । वसती मात्रो प्रमुख प्रमार्जे ( इत्यादि ) पिण विधि  
 प्रपा प्रमुखमें न कह्यो ॥ ॐ ॥ हिवे एक खमासमणें । इत्ताका० सं०  
 ज० । सिंज्जाय संदिस्सां । ( गुरु कहै संदिस्सावेह ) बीजै खमासमणें ।  
 इत्ताका० सं० ज० । सिंज्जाय करुं । ( गुरु कहै करेह ) पन्जे इत्तं कही ।  
 नवकार ? कयन पूर्वक ( उपदेश माला ) प्रमुख सिंज्जाय करी । नवकार  
 एक कही । धर्म ध्यान करे । जणें गुणें वखाण सुणें ॥ ॐ ॥ इम करतां  
 पूण पुहुर दिन चढ्या । जगवाना पोरिसी शागम्या । बहु पन्जिपुन्ना पोरिसी ।  
 कही । खमासमण देई । इरियावही पन्जिहमी । दोय खमासमणें ।  
 इत्ताका० सं० ज० । पन्जिहेहण करुं । ( गुरु वचन ) । इत्तं कही । मुह  
 पत्ती पन्जिहेही । पान जोजन पात्र पन्जिहेही राखै । पन्जेसिंज्जाय ध्यानकरे ॥  
 ॥ ॐ ॥ हिवे काल वेलायें । आवस्तही पूर्वक देहरे जई । पांचेशकस्त  
 वे देववांदे ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥  
 ॥ ॐ ॥ हिवे पांचेशकस्तवे देववांदण विधि दो प्रकारमें लिखिये हैं  
 ॥ ॐ ॥ तीन प्रदक्षिणा देई । तीनवार नमस्कार करी । नृमि प्रमार्जी ।  
 पुरुष हुवै तो ) प्रज्जुजी सुं दक्षिणपासे बैसे । स्त्रीहुवै ते बांम पासे बैसे ।  
 पन्जे । इत्ताका० सं० ज० । चैत्य वंदन करुं । इत्तं कही । पन्जे नमोत्युणं

कहै । खमासमण देई । इरियावही पन्निक्में । एक लोगस्सनो कान्जसग  
करे । मुखें लोगस्स कहै । संभाशा प्रमार्जी बैसै । तीन ( तथा ) च्यार  
( तथा ) पांच आदि देई । नमस्कार कहै । जंकिं व नाम तित्थं । ( इत्यादि  
कही ) पठै । नमोत्थुणं कहै ( ऊजो थई ) अरिहंत चेई याणं करेमि का  
उमगं । वंदण वत्ती० । अनत्थू० । कही । १ नवकारनो कान्जसग करे  
( पारी ) एक थुईकी गाथा कहै ॥ पठै लोगस्स । सब लोए अरि० । वंदण०  
अनत्थू० । कही । १ नव० । ( पारी ) २ थुई की गाथा कहै । पठै ।  
पुक्खर वरदी० । सुअस्सज्जग० । वंदण० । अनत्थू० । कही । १ नव०  
का० ( पारी ) ३ थुई की गा० । पठै सिद्धाणं बुद्धाणं० । वेयाववगराणं० ।  
अनत्थू० । ( इत्यादि कथन पूर्वक ) चौथी थुईसे देववांदी । नमोत्थुणं कहै  
फेर अरिहंतचे० कही । इसीतरे । चार थुईए देव वांदी बैसे । नमोत्थुणं  
कहै । नमोर्द्ध सिद्धाचार्यो पा० ( इत्यादि कही ) पठै स्तवन कहै । पठै  
जय वीयराय कही । ( नमोत्थुणं ) सबे तिविहेण वंदामि पर्यंत कहै ॥ ❀ ॥  
इम पांचे शक्रस्तवे देववंदन विधिः ॥ ❀ ॥ प्रववन सारोधार प्रमुख ग्रंथमें  
कहीठै ) ॥ ❀ ॥ तथा चैत्य वंदन वृहद्भाष्यमें इम कह्योठै ॥ १ ॥ ❀ ॥  
नमस्कार कथन पूर्वक । शक्रस्तव कही । इरियावही प्रति क्रमणादि करौवली  
नमस्कार कथन पूर्वक शक्रस्तव कही । दोयवार च्यार थुईसे देववांदै । फेर  
शक्रस्तव कही । जावंति चेइयाई गाथा जणी । खमाममण पूर्वक । जा  
वंतिके० बीजी गाथा कही । स्तवन कहै । वली नमोत्थुणं कही । जय वीय  
राय कहे ॥ ❀ ॥ इति देव वंदण विधिः ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पठै निस्सही पूर्वक पोसहशाला मांहि आवी । इरियावही पन्नि  
क्में । पठै सिझाय ध्यान करै ॥ ❀ ॥ जो तिविहार उपवास कियो हुवै  
( तो ) पच्चक्खाण वेला पूर्ण हुवां । जलपीणेंकुं पच्चक्खाण पारै ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिवै पच्चक्खाण पारणें की विधि लिखिये है ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ खमासमण देई । इरियावही पन्निक्में । फेर एक खमा० । इ  
ठा० सं० ज० । पच्चक्खाण पारवा मुहपत्ती पडिलेहुं ( गुरु कहै पन्नि० )  
पठै इठं कही । खमा० देई । मुहपत्ती पन्निजेहै । फेर एक खमा० देई ।

इत्ता० सं० ज० । पाणहार अमुक पञ्चक्खाण पारुं ( गुरु कहे पुणोवि कायवो ) पठे यथाशक्ती कही । खमासमण देई । इत्ताका० सं० ज० । पाणहार पारियुं ( गुरु कहे आयारो नमोत्तवो ) पठे तहत्ति कही । १ नव कारगुणी । अमुक पञ्चक्खाण फासियं । पालियं । सोहियं । तोरियं । किट्टियं । आराहियं । जंच नआराहियं । तस्स मिट्ठामि डुक्कं ( कही ) चैत्य वंदन करे क्खणमात्र सिज्जाय करी । यथा संजवे । अतिथि संविज्जाग करी पाणी पीवै

॥ ॐ ॥ तथा उपधान वाही हुवै । ( तो ) पोरसी प्रमुख पञ्चक्खाण पारी । आहार करे । पठे आसण बैठो थको हीज । दिवस चरम पच्चखै । पठे । इरियावही पम्फिमी । चैत्य वंदन करे । ( ए चैत्यवंदन आहार संवरण निमित्ते ठे ) ॥ ॐ ॥ इति पञ्चक्खाण पारणकी विधि ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ पठे जो वहिर्द्धमि जावणो हुवै ( तो ) आवस्सहीकही । उप योगीथको । निर्जाव स्थंभिले जई । अणुजाणह जस्तुग्गहो कही । पूर्व । उत्तर । सूर्य ग्रामादिकर्त्तं पृष्ठि अणदेई । मल मुत्र परिठवै । प्राशुक जले शुद्ध थई । वार तीन बोसिरामि २ । एहवूं कहिवै करी । मल मुत्र बोसरावी पोसह शालायें । निस्सही पूर्वक ( पेसी ) इरियावही पम्फिमे । खमाममण देई । कहे । इत्ताका० सं० ज० । गमणा गमणं आलोयहं ( गुरु कहे आलोण्ह ) पठे इत्तं कही । गमणागमण आलोवै ॥ ॐ ॥ ( तेइम ) आवस्सही करी । प्राशुक देशें जई । संकाशा पूंजी । थंडिलो पडिलेही । उचार प्रश्रवण बोसरावी । निस्सही करी । पोसह शालायें आव्यो आवंति जंतेहिं । जंखंडियं । जंविरोहियं । तस्समिट्ठामि डुक्कं ॥ इम कही वेगै । पठे पम्फिलेहण वेला सीम सिज्जाय ध्यान करे ॥ द्विवै पात्रले पुहुर । इरियावही पडिक्कमी । खमाममण देई कहे । इत्ताका० सं० ज० । पम्फिलेहण करूं । ( गुरु कहेक० ) पठे इत्तं कही । दूजे खमास माणें । इत्ताका० सं० ज० । पोसहशाला प्रमार्जुं ( गुरु कहे ) प्रमार्जह पठे इत्तं कही । सुदपत्ती पम्फिलेही । दोव खमाममणें । अंग पम्फिलेहण संदिस्सातं । अंग पडिलेहण करूं । ( कहे ) पठे ( सुस्वचनें ) इत्तं कही सुदपत्ती पम्फिलेही । दंतामणो पूंजणी प्रमुख मोंप्रमार्जी । पोसहशाला प्रमा



जें ( पठै ) काजो शुद्ध करी । ऊधरी । एकांतें बिखरतो परठवी । शिखाव  
ही पन्किमी । खमासमण पूर्वक कहै । इच्छाकार जगवन पसान करी । प  
डिलेहणा पडिलेहावोजी । पठै थापनाचार्य पन्किलेही । थापे । गुरु समीपै  
( अथवा ) थापनाचार्य समीपै । एक खमासमण देई । इच्छाका०  
सं० ज० । मुहपत्ती पन्किलेहुं ( गुरु कहै पडिलेहेह पठै इच्छा कही ) खमा-  
समण देई । मुहपत्ती पडिलेहै । पठै दोय खमासमणें । इच्छा० सं० ज०  
सिझाय संदिस्सानं । सिझाय करुं ( कही ) उत्तरीतें कृणमात्र सिझाय  
करी । तिविहार उपवास कीधो हुवै । ( तो ) गुरुशाखें । पाणिहार पचखै  
॥ उपधानवाही प्रमुख । आहार कीधो हुवै ( तो ) वांदणां दोय देई । पच  
वखांण करै ॥ ❀ ॥ ( पठै ) एक खमासमण देई । इच्छाका० सं० ज० । उप  
धि थंमिला पन्किलेहण संदिस्सानं । बीजै खमासमणें । इच्छाका० सं० ज०  
उपधि थंमिला पडिलेहुं ( गुरुवचनें ) इच्छा कही । दोय खमासमणें । इच्छा  
का० सं० ज० । बैसणो संदिस्सानं । बैसणोठानं । कही ( बैसै ) वस्त्र कंबला  
दि पन्किलेहै । पुंजणी हुवै ( तो ) ते पिण । मुहपत्ती सुं पडिलेहै । उपवा  
सी तोठै । तेमाटें । सर्वपाठो कम्पिटो धोतीयो कणदोरो पन्किलेहै ॥ ❀ ॥  
उपधानवाही प्रमुख जोजन कीधो हुवै ( तो ) कम्पिटोदि पन्किलेह्यां पठै ।  
वस्त्रकंबलादि पन्किलेहै । ( एविशेष ठै ) । पठै कालबेला सीम सिज्जाय ध्या  
न करै ॥ ( पीछै ) उच्चार प्रश्रवण २४ थंमिला पडिलेहै ( जो ) चउदस  
हुवै । ( तो ) पाखी चउमासी पन्किमणो करै । संवठरियें संवठरी पन्कि  
मणो करै ॥ ❀ ॥ तिहां देवसी पन्किमणो पूर्वं लिख्योठै । तिमहीज करै ।  
( पिण इतरो विशेष ठै ) । इच्छा० । देवसियं आलोएमि । इत्यादि । देव  
सी आजोयां पठै । ठाणे कमणे । चंकमणे । ( इत्यादि पाठ कहै ) ( तथा )  
खुदो वदव कानुसगग कियां । पठै । दोय खमासमणें । इच्छाका० सं० ज०  
सिझाय संदिस्सानं । सिझाय करुं ( कही ) बैठो थको । तीन नवकार  
प्रमुख सिझाय करै इति ॥ ❀ ॥ पादिकादि तीन पन्किमणाकी विधि  
आगे लिखी है ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिवै पन्किमणो हुवां पठै । साधुनी वेयाच कर । पोरसी

म सिझाय ध्यान करे । जो लघुनीति प्रमुख करवी हुवै तो आसज्ज  
हितो थको । नृमि प्रमार्जे । थंमिज स्थानकें जई । देहसंका निवारै ।  
थ्रवण वोसरावी । स्वस्थानकें आवे । ( जगवन् ) बहु पन्निपुत्रा पोससी ।  
इम कही ) खमासमण देई । इरियावही पन्निममें । पौत्रे राई संधारा  
विधि करे ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिंवै राई संधारा विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ खमासमण देई । इठा० सं० ज० । राई संधारा मुहपत्ती पन्निजे  
। ( गुरु कहे पन्निजेह ) पौत्रे इठं कही । खमासमण देई । मुहपत्ती  
पन्निजेह । एक खमासमणें । इठा० सं० ज० । राई संधारो संदिस्साजं ।  
तीजे खमासमणें । इठा० सं० ज० । राई संधारो ठावूं ( पौत्रे ) गुरुवचनें ।  
इठं कही । चउकसाय पन्निम लुखरण । ( इत्यादि नमस्कार कथन पूर्वक  
जय बीयराय सूधी चेत्यवंदन करे । नृमि प्रमार्जी । संधारो उत्तर पटो  
पाथरै । पौत्रे शरीर प्रमार्जी । निस्सही २ इम कही । संधारै बेसी । तीन नव  
कार । तीन करमि जंते । कुचरी । एमो खमासमणें । गोयमाईणं महा  
मुणीणं । अणुजाणह चिठिजा । अणुजाणह परमगुरु । ( इत्यादि ) राई संधा  
रा गाथा जणी । वामहाथ सिराणे देई । मोवै । निद्रानावै । जांसीम । मुनि  
वर चरित्र चितवै । पसवानो फेरै ( तो ) शरीर संधारो प्रमार्जी फेरवै । जो  
देह शंकाये उठे ( तो ) पूर्वोक्त विधे देहशंका निवारो । इरियावही पन्नि  
कमें । पौत्रे जवन्ये पिण । तीन गाथानी मिझाय करी मोवै ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इति राई संधारा विधि कही ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिंवै रात्रीनें पात्रिले पुहर उठो । नवकारादि गुणी । इरियावही  
पडिकमें । खमासमण देई । कुमुमिण दुस्सुमिण काउसगग करी । पूर्वोक्त  
विधे सामायिक लेवै । इहां इरियावही न पन्निममें । पौत्रे दोय खमासमणें ।  
सिझाय संदिस्सावी । आठ नवकारगुणी । पन्निमण वेलासीम सिझाय  
करे । पडिकमण वेला हुवां । पन्निमणो पूर्वजी परे करे । ( पिण इतरो  
विशेषे ) । राई आलोवां पौत्रे । संधारा उवटणकी ( इत्यादि पाठ कहे )  
इम संपूर्ण पन्निमणो करी । पन्निजेहण वेलायें । पूर्वोक्त विधे पन्निजेहण

करी । धर्मशाला पूंजी । काजो ऊधरी । इरियावही पम्किमें । दोय खमास मणें । सिझाय संधिस्सावी । उपदेशमाला प्रमुख सिझाय करै । पढै पोसहपारै ॥

॥ ❀ ॥ हिंवै पोसहपारणेंकी विधि लिखियै है ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ खमासमण देई । मुहपत्ती पम्किलेहै । फेर । खमासमण देई कहै । इच्छा० सं० ज० । पोसह पारुं ( गुरु कहै पुणोवि कायबो ) पढै यथा शक्ति कही । खमासमण देई ( कहै ) । इच्छा० सं० ज० । पोसह पारचुं । ( गुरु कहै आयारो न मोत्तबो ) । पढै तहत्ति कहै । खमासमण देई । तीन नवकार अर्धावनत गात्र ऊजो थको गुणी । खमासमण देई । मुहपत्ती पम्किलेहै । पीढै खमाममण देई कहै । इच्छाका० सं० ज० । सामायक पारुं ( गुरु कहै पुणोवि कायबो ) पढै यथा शक्ति कही । खमासमण देई । इच्छाका० सं० ज० । सामायक पारचुं ( गुरु कहै आयारो न मोत्तबो ) पढै तहत्ति कही । खमाममण देई । अर्धावनत गात्र ऊजो थको । हाथ जोड्यां । मुहपत्ती मुखें दियां थकां । तीन नवकार गुणी । शंकासा पम्किले है । गोडालीयै बैसी । मस्तक नमावी । जयवं दस ननहो ( इत्यादि जावनारूप गाथा कहै ) पढै पोसहना उपगरण संवरी । देहरै जई । देव जुहारै । घरे आवी । आहार निष्यन्न हुवो देखी । साधु समीपें आवै । अतिथि संविज्ञाग व्रत साचवण निमित्तें । साधु जणी निमंत्रणा करी । घरे लेजावै । साधू पिण शुद्ध आहार लेई । स्वस्थानकें आवै । तिवार पढै साधूनें जे आहार दीधो । तेहनो हीज । शेष आहार आय करै ॥ इति अठपुहरी पोसह ग्रहण पारण विधिः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ हिंवै दिन ऊगां पढै पोसहलै तेहनों विधि लि० ॥

॥ ❀ ॥ वर थकी निश्चित थई । धर्मस्थानके आवी । सर्व उपगरण पम्किलेही । कचरो विधिसुं परितवी । इरिया वही पम्किमें । खमासमण पूर्व क आग्या मांगी । पोसह मुहपत्ती पम्किलेहै । आगे पोसह ग्रहणनी विधि पूर्व लिखी है । तिमहीज जाणवी ( पिण ) दिवस पोसह हीज करणो हुवै ( तो ) ( पोसह दंरुक ऊचरतां ) जावदिवसं पज्जुवासांमि । ( एह वो पाठ कहै ) अनें जो । अठपुहरी करवो हुवै ( तो ) जाव अहोरत्ति प

ज्जुवासामि । ( एहवो कहै ) पढे सामायिक विधि सर्व करी । चैत्यवंदण  
कुसुमिण पुस्सुमिण काउसग्ग करी । पम्भिकमणों करी । दोय खमासमणें  
बहु वेलं संदिस्सावे २ ( अनें जो ) पूर्वें पम्भिकमणो गुरु साथे करयो हु  
वे ( तो ) पम्भिकमणानें अंतें । पडिलेही राख्या । जे वख । ते पहरी । पोस  
ह सामायिक सर्व विधि करी । दोय खमासमणें । बहुवेलं संदिस्सावे ।  
२ ( तथा ) जो गुरु सें जूदो पडिकमणो करयो हुवे ( तो ) गुरु पासे आ  
वी । पोसह सामायिक सर्व विधि करी । आलोयण खामणादि निमित्तें ।  
मुहपत्ती पम्भिलेही । वे वांदणा देई । इत्थाका० सं० ज० । राइयं आलो  
ऊं । ( गुरु कहै आलोएह ) पढे राई आलोवे । फेर १ खमासमण देई । इ  
त्थाका० सं० ज० । अब्भुत्तिमि अब्भिंतर । राइयं खामेमि ( गुरु कहै  
खामेह ) पीठे सर्व पाठ कहै । राई खामें । पहिलां पडिकमणामें नवकारसी  
पचख्योथो । तेमाटें । पढे । गुरु शाखे पचक्खाण उपवासनो करै । पढे । दो  
य खमासमणें । बहुवेलं संदिस्सानं० ३ । ( ए तीन प्रकारका विकल्प जाण  
वा ) । हिवे पम्भिलेहणतो पूर्वें करीते । ( तो पिण ) । आदेश मांगवो ।  
( नेइम ) खमाममण देई । इत्था० सं० ज० पम्भिलेहण संदिस्सानं । वीजे  
खमासमणें । पडिलेहण करं ( कही ) मुहपत्ती पम्भिले हे । पढे । इमहीज  
दोय खमासमणें अंग पडिलेहण संदिस्सावी । मुहपत्ती पडिलेहे । पढे ।  
बले खमासमण देई । इत्थकार जगवन पसाउ करी पम्भिलेहण पम्भिलेहावो  
जी । ( इम कहै ) पढे । एक खमासमण देई । इत्थाका० सं० ज० । उपधि  
मुहपत्ती पम्भिलेहुं ( कही ) कोई वख अण पम्भिलेहो राख्यो हुवे ( तो )  
पडिलेहे । ( नहींतो ) कली आसण पडिलेहे । पढे दोय खमासमणें ।  
मिझाय संदिस्सावी । उपदेशमाला प्रमुख मिझाय करै । आगे सर्व क्रिया  
पूर्वें अठपुहरी पोसहमें लिखीते । तिमहीज जाणवी । पिण इहां । अठ  
पुहरी पोसहंतो ) पाउली रातें कली सामायिक न लेवै । जिणें दिवस सं  
बंधी चौपुहरी पोसह लीयो हुवे । ( ते ) पाउले पुहर । पचक्खाण क्रियां  
पढे । दोय खमासमणें । उहापडिलेहण संदिस्सानं । उही पडिलेहण करं ।  
( कहै ) पिण धंमिला पद नकहै । अनें धंमिला नहीं पडिलेहे । यह

निकेवल दिनसंबंधी पोसह ग्रहण करणेंमें विशेष विधिही सो बतलाई  
॥ ❀ ॥ इति दिन संबंधी पोसह ग्रहण विधि संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥❀॥ अथ रात्रि संबंधी चौपहरी पोसहनी विधि लि० ॥❀॥

॥ ❀ ॥ तिहां जिणें प्रथम चौपहरी । पोसो ऊचरयो है । पढै संध्यानी  
पन्निहण करतां । रात्रि पोसहनो जावथयो । ( तो ) पच्चक्खाण कियां  
पढै । दोय खमासमणें । पोसह मुहपत्ती पन्निहोही । तीन नवकार गुणी  
तीनवार पोसह दंरुक ऊचरै । ( तिहां ) जाव रत्ति पज्जुवासामि ( इम )  
पाठ ऊचरै । पढै । सामायक विधि पूर्वं लिखी है तिम करै ( पिण )  
सामायक उचरयां पढी । दोय खमासमणें । सिझाय संदिस्सावी । आठ  
नवकार कही । वैसणो संदिस्सावी । पांगरणो संदिस्सावै । पीढै । दोय  
खमासमणें । इत्ठाका० सं० न० । उही थंमिला पन्नि लेहण संदिस्साउं ।  
उही थंमिला पन्निहण करुं ( गुरु कहै करेह ) इत्ठंकही । उपधि  
पन्निहै ) आगे सर्वक्रिया पूर्वं लिखी तिम जाणवी । ( तथा ) जे श्रावक  
उपवासी तो । व्यग्रपणें । दिवसें पोसह न करी सक्यो । ते रात्रि पोस  
हनों जावथयां । पाढलै पुहर धर्म स्थानके आवै । जो वसती प्रमार्जी  
हुवै । ( तो सरयो ) नहींतो वसती प्रमार्जी । काजो परठवी । सर्व उपग  
रण पन्निहोही । इरियावही पन्निमें । पीढै चौबिहार पच्चक्खाण करी ।  
दोय खमासमणें । पोसह मुहपत्ती पन्निहोही । दोय खमा समण देई । पो  
सह संदिस्सावै । फेर । खमासमण देई । तीन नवकार गुणी । तीनवेर  
पोसह दंरुक ऊचरै । ( तिहां ) दिवस मेसं रत्ति पज्जुवासामि ( कहै ) संब्या  
हुवै । ( तो ) रत्ति पज्जुवासामि कहै पीढै । बिहुं खमासमणें सामायक  
मुहपत्ती पन्निहोही । दोय खमासमण देई । सामायक संदिस्सावै ।  
फेर खमासमण देई । तीन नवकार गुणी । तीन करेमिचंते ऊचरै । दोय  
खमासमण देई । सिझाय संदिस्सावी । आठ नवकार कहै । फेर दो खमा  
समण देई । वैसणो संदिस्सावी । शीतादिके वे खमासमण देई । पांग  
रण संदिस्सावै । पीढै । वे खमासमण देई । अंग पढिलेहण संदिस्सावी ।  
मुहपत्ती पन्निहोही । फेर वे खमा समण देई । उही थंमिला पन्निहण

संदिस्सावी । ( जो ) अण पमिलेह्यो उपगरण हुवै । ( तो ) पमिलेहै ( जो )  
सर्व उपगरण पमिलेह्या हुवै । ( तोपिण ) थानक शून्यता टालवा अणी ।  
वले आसण पमिलेहै । पमिकमण वेलासीम सिझाय ध्यान करै । पीठै ।  
उच्चार प्रश्रवणना ( २४ ) थंमिला पमिलेही पमिकमणों करै । ( तथा )  
पाठलीरातें । वली सामायक नलेवै । इतना निकेवल रात्रिसंबंधी पोमहलेवाना  
विकल्प जाणवा ) ॥ ❀ ॥ इति रात्रि पोसह विधि संपूर्णम् ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ २४ थंमिला पमिलेहण पाठ लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आगाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १ ॥ आगाडे  
मझे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ २ ॥ आगाडे दूरे उच्चारे पासवणे  
अणहियासे ॥ ३ ॥ आगाडे आसन्ने पासवणे अणहियासे ॥ ४ ॥  
आगाडे मझे पासवणे अणहियासे ॥ ५ ॥ आगाडे दूरे पासवणे अणहियासे  
॥ ६ ॥ ❀ ॥ आगाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ७ ॥ आगाडे  
मझे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ८ ॥ आगाडे दूरे उच्चारे पासवणे अहि  
यासे ॥ ९ ॥ आगाडे आसन्ने पासवणे अहियासे ॥ १० ॥ आगाडे मझे  
पासवणे अहियासे ॥ ११ ॥ आगाडे दूरे पासवणे अहियासे ॥ १२ ॥ ❀ ॥  
अणागाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १३ ॥ अणागाडे मझे  
उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १४ ॥ अणागाडे दूरे उच्चारे पासवणे  
अणहियासे ॥ १५ ॥ अणागाडे आसन्ने पासवणे अणहियासे ॥ १६ ॥  
अणागाडे मझे पासवणे अणहियासे ॥ १७ ॥ अणागाडे दूरे पासवणे  
अणहियासे ॥ १८ ॥ ❀ ॥ अणागाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे  
॥ १९ ॥ अणागाडे मझे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ २० ॥ अणागाडे  
दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ २१ ॥ अणागाडे आसन्ने पासवणे अहि  
यासे ॥ २२ ॥ अणागाडे मझे पासवणे अहियासे ॥ २३ ॥ अणागाडे दूरे  
पासवणे अहियासे ॥ २४ ॥ एथंमिला पमिलेहण पाठकहा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिंवै थंमिला कहां २ करणा सोकहे है ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ६ थंमिला सय्याकै दोनुं तरफ दहणें पासे ( ३ ) वामपासे ( ३ )  
पमिले है ॥ ६ थंमिला दरवजेकै जीतर पासे दहिणें ३ वामें ३ पमिले है ॥



६ थंमिला दरवळे के बाहर दोनुं पासे पमिले है ॥ ६ थंमिला ( जहां )  
 उच्चार प्रश्रवणकी जगा दोनुं तरफ पमिले है ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
 इति २४ थंमिला पमि लेहण विधि संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ अथ पाक्षिकादिक पडिक्कमण विधि लिख्यते ॥

॥ ❀ ॥ ( तिहां ) प्रथम बंदित्तू सूत्र पर्यंत । देवसिक पमिक्कमी । १ ।  
 खमासमण देई । देवसी आलोइयं पमिक्कंता । इत्ता० सं० ज० । पट्टी मुहप  
 त्ती पमिलेहुं । ( चौमासै ) चौमासी० मुह० ( संवत्तरीयें ) संवत्तरी मुहपत्ती  
 पमिलेहुं । पट्टै ( गुरुकहै पमिलेह ) पट्टै इत्तं कहै । दूजी खमासणदेई ।  
 मुहपत्ती पमिलेही । वांदणाधै । तिहां ( पक्खीमें ) पक्खो बइक्कंतो ।  
 ( चौमासी में ) चौमासी बइक्कंतो । ( संवत्तरीमें ) संवत्तरो बइक्कंतो । इम  
 यथा योग्य कहै । ( पट्टै गुरु कहै ) पुण्यवंतो देवसीनें स्थानिकै, पाक्खिक  
 ( चनुमासिक ) संवत्तरिक जणज्यो । ठीक जयणा करज्यो । मधुर स्वरै  
 पमिक्कमज्यो । खासै सो विवरा सुध खासज्यो । मांनलमें सावचेत रहज्यो  
 पट्टै सगलाही कहै । तहत्ति । पट्टै नुत्ती । इत्ताका० सं० ज० । संबुद्धा  
 खामणेणं । अब्बुद्धिज्जि अङ्गितर । पक्खियं ( ३ ) खामेणं ( गुरु कहै खामेह )  
 पट्टै मस्तकें अंजली करतो थको । इत्तं खामेमि पक्खियं ( ३ ) कही ।  
 गोमालीयें वैसी । मस्तक नमावी । दक्षिण हाथ गुरु साहमो करी  
 मुहपत्ती मुखें देई । ( पक्खियें ) पनरसन्हं दिवसाणं । पनरसन्हं राईणं ।  
 जंकिंचि अप्पत्तियं । ( इत्यादि सर्वपाठ कहै ) चनुमासे ॥ घणएहं मासाणं ।  
 अट्टएहं पक्खाणं । वीसोत्तरसो राईं दियाणं । जंकिंचि अप्पत्तियं  
 ( इत्यादि कहै ) संवत्तरीयें ॥ पुवाल सएहं मासाणं । चोवीसएहं पक्खा  
 णं । तिन्निमस्य सट्ठि राईं दियाणं । जंकिंचि अप्पत्तियं ( इत्यादिकहै )  
 तिवारे ( गुरु पिण मिठामि पुक्कं कहै ) । तिहां दोय साधु उचरता हुवै  
 ( तो ) पाखियें ( ३ ) चौमामीयें ( ५ ) संवत्तरियें ( ७ ) साधुनें खमावै । पट्टै  
 नुत्ती । अवग्रह मांहि रह्यो कहै । इत्ताका० सं० ज० । पक्खियं आलो  
 वूं ( गुरु कहै आलोएह ) पट्टै इत्तं आलोएमि । जोमे पक्खित्त ( ३ ) अइ  
 यारो कत्त ( इत्यादि सूत्र जणी ) संक्षेपै ( अथवा ) विस्तारं । पाखी

चौमासी । संवहरी । अतीचार आलोवै । पठै । सबस्सवि पक्खिय ( ३ )  
 इत्यादि । इत्ताकारेण संदिस्सह पर्यंत कहै । तिवारै ( गुरु कहै ) चउत्थे  
 ण पक्कमह ( चौमासै ) ठेण पक्कमह ( संवहरीयें ) । अट्टमेण पक्क  
 मह । इत्तं । तस्समित्तामि पुक्कडं ( कही ) द्वादशावर्त्त वांदणादेवै ।  
 पठै । इत्ता कारेण संदिस्सह जगवन् । देवसियं आलोइयं पक्किंता ( १ )  
 पत्तेय खामणेणं । अब्बुद्धिज्जमि अग्निंतर । पक्खियं । ( ३ ) खामेजं । ( गुरु  
 कहै खा० ) पठै । इत्तंखामेमि पक्खियं । ३ ( इत्यादि पाठ ) सर्व पूर्वे  
 कह्यो । तिम कही । मित्तामि पुक्कडं देई । खमावै । पठै । बे वांदणादेई ।  
 जगवन् देवसियं आलोइयं पक्किंता । पक्खियं ( ३ ) पक्कमावेह । ( गुरु  
 कहै सम्मं पक्कमह ) । पठै इत्तंकही । करेमि जंते सामाइयं । इत्तामि  
 ठामि कान्तसग्गं । जोमे पक्खियं ( ३ ) ( इत्यादि कही ) तस्सुत्तरी० अन्न  
 त्थू० कही । कान्तमग्ग करै ) गुरु पाखी सूत्र कहै । ते सांजलै । अनें  
 गुरु थकी जूदा पक्कमता हुवै ( तो ) एक श्रावक खमासमण देई । कहै  
 । जगवन सूत्र जणुं । ( गुरु० जणह ) । इसो वचन मनमें धारी ।  
 ( इत्तं कही । ऊजो थको । हाथ जोमी । मुहपत्ती मुखें देई । तीन नवकार  
 कही । मधुर स्वरै सूत्रार्थ मनमें चिंतवतो । ( बंदिचू सूत्र गुणें ) बीजाश्रा  
 वक । करेमि जंते० । इत्तामि ठाजं कान्तसग्गं । तस्सुत्तरी ( अन्नत्थू कही )  
 कान्तसग्गमें रह्या सुणें ( सूत्रप्रांते ) एमो अरिहंताणं कही ( कान्तसग्गपारी )  
 ऊजा थका तीन नवकार गुणी ( बैसै ) पठै तीन नवकार ( ३ ) करे  
 मि जंते कही । इत्तामि पक्कमिजं । जो मे पक्खियं ( ३ ) इत्यादि कही ।  
 ( बंदिचू सूत्र गुणें ) पक्कमे देवसियं सबं । ( एहनें ठिकाणें ) पक्कमे  
 पक्खियं । चौमासीयं । संवहरीयं ( सबं कहै ) पठै ऊजी । अब्बुद्धिज्जमि  
 आराहणाए ( इत्यादि परीपूर्ण जणी ) खमासमण देई । इत्ता० सं० ज० ।  
 मूल गुण उत्तरगुण अतीचार विशुद्धि निमित्तं । कान्तसग्ग करूं ( गुरु कहै  
 करेह ( पठै इत्तं कही । करेमि जंते सामा० । इत्तामि ठाजं कान्तसग्गं ।  
 तस्सु० । अन्नत्थू । ( इत्यादि कही ) पाखियें ( १२ ) लोगस्स । चौमासे ।  
 ( २० ) लोगस्स । संवहरीयें ( ४० ) लोगस्सनो कान्तसग्ग करै । एक नव

कार ऊपर । काउसग्न करी । ( पारी ) लोगस्स कहै । बैसी । सुहपत्ती  
 पन्निहेही । बे वांदणा देई । इत्ता० सं० ज० । समाप्ति खामणेणं । अ  
 ब्बुद्धिजंमि अङ्घ्रितर । पक्खियं । ( ३ ) खामेजं ( गुरु कहै खामेह ) पठै ।  
 इत्तं खामेमि पक्खियं । ( इत्यादि पाठ ) पूर्वे कह्यो । तिम कहै । ( पठै )  
 इत्ताका० सं० ज० । पाखी ( ३ ) खामणा खामूं ( गुरु कहै ) । पुण्यवंतो  
 च्यारवेर खमासमण देई । तीन २ नवकार कही । पाखी ( ३ ) समाप्त खा  
 मणा खामह । पठै । श्रावक एक खमासमण देई । मस्तक नींचो नमावी  
 तीन नवकार गुणें । इम च्यार वार कहे । पठै । ( गुरु कहै नित्यारग पार  
 गाहोह ( पठै । श्रावक कहै । इत्तं । इत्तामो अणुसंघि ( कही ) ( गुरु कहै )  
 पुण्यवंतो । पाखीनें लेखै । एक उपवास । ( अथवा ) दोय आंबिल ) अ  
 थवा ) तीन नीवी । ( अथवा ) च्यार एकासणां । ( अथवा ) बेहज्जार सि  
 ज्जाय करी । एक उपवासनी पैठ पूरज्यो । पाखीनें स्थानकै देवसिक ज  
 णिज्यो ॥ इम चौमासै एसर्व दुगणो कहणो । संवत्तरीयें त्रिगुणो कहणो  
 पठै जिणें तपकीधो हुवै । ते पइछियं कहै । न कीधो हुवै । ते कहै त  
 हत्ति । पठै बे वांदणां देई । अब्बुद्धिजंमि अङ्घ्रितर । देवसियं खामेमि ।  
 इत्यादि कहै ) पठै बे वांदणा देई । आयरिय उवझाए० तीन गाथा कहै ।  
 इम आगै सर्व विधि । देव सिक पक्कमणानी करै । पिण इतरो विशेष  
 है । श्रुत देवतानो काउसग्न करी । स्तुति कहै । पीठे जवण देवयाए करे  
 मि काउसग्नं ( इत्यादि विधें ) जवन देवतानों काउसग्न करी । स्तुतिकही ।  
 क्षेत्र देवतानो काउसग्न करै । ( तथा ) तीने पर्वे । वनो स्तवन अजित शां  
 ति कहणो । लघुस्तवन । उपसर्ग हर स्तोत्र कहणो । तथा पक्कमणो  
 पूरो हुवां । पठै । एक श्रावक गुर्वाझायें । नमोर्द्धत्तिघा कही । शांति  
 स्तोत्र १७ गाथा प्रमाण कहै । बीजा सर्वसुणें । जिणानें रात्री पोसह न  
 हुवै ( ते ) पोसह सामायिक पारी मांजलै ॥ ❀ ॥  
 इति पाहिकादि ( ३ ) पडिकमणविधिः कही ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥

॥ रात्री प्रतिक्रमण मांहें ठम्मासी तपचिंतन विधिः ॥

॥ ❀ ॥ श्रीमहावीर स्वामीना तीर्थमें उत्कृष्टो ठम्मामी तपहै ॥ रे जीव

ते करि सके । न करि सकुं । इडु एक दिन उडु । करि सके ( न करि सकुं )  
 इडु एकेक दिन उडु करतां । उगुण तीस दिन उणु ढुडुडुडुडु हुवे । तिहां  
 सूधी पूडुडुडु । पडु । ( पंडुडुडुडु ) करि सके । न करि सकुं । एक दिन उ  
 णु पंडुडुडुडु करि सके ( न करि सकुं ) । इडु एकेक दिन उडु करतां  
 उगुण तीस दिन उणु । पंडुडुडुडु लगे पूडुडुडु । पडु । ( चउडुडुडु ) एक  
 दिन उणु । दोय दिन उणु । इडुहीज त्रिडुडुडु । डुडुडुडु । डुडुडुडु । डुडुडुडु  
 ( एक डुडुडुडु करि सके ) । न करि सकुं । पडु । एक दिन उणु डुडुडुडु । सो  
 लह दिननो चौत्रीसडु तडु थडु । ते करि सके ( न करि सकुं ) । पडु । डे डे  
 डुडुडुडु डुडुडुडु । ( इडु ) डुडुडुडुडु करि सके ( न करि सकुं ) । ( इडु )  
 डुडुडुडु । अठु डुडुडुडु । डुडुडुडुडु । चौडुडुडुडु । डुडुडुडुडु । डुडुडुडु । अठुडु  
 डुडुडु । शोलडुडुडु । चौडुडुडुडु । डुडुडुडुडु । डुडुडुडु । अठुडु । डुडु । चउडुडु  
 तडु करि सके । ( न करि सकुं ) । ( इडु ) अंडुडुडु । निडु । एडुडुडुडु  
 डुडुडुडु । डुडुडुडु । नडुडुडुडु । ( तडुडु ) डुडु डुडुडुडुडु करडु हुवे ।  
 ( सो ) डुडुडु डुडु । डुडुडुडु डुडु ॥ इति ढुडुडुडु तडु डुडुडुडुडु विडुडु ॥

॥ \* ॥ अथ डुडुडुडुडु ॥ \* ॥

॥ \* ॥ डुडु ॥ श्रीजिन डुडु डुडुडु । निडुडुडुडु गडु डुडुडु । डुडुडु अ  
 डुडु डुडु गणु । सीस डुडु डुडुडुडु ॥ १ ॥ डुडु अडुडु अडुडुडु डुडु ।  
 डुडुडुडुडु सुडुडु । अडुडु विडु डुडुडु डुडु । डुडु डुडु अडुडुडु ॥ २ ॥

॥ \* ॥ अडुडु डुडुडुडुडु ॥ \* ॥

श्रीजिनडुडुडुडु डुडु विडु डुडु ॥ १ ॥ डुडुडु डुडुडुडु तडुडु डुडु डुडु  
 डुडु डुडुडुडु डुडुडुडु ॥ २ ॥ डुडुडुडु डुडुडु ॥ ३ ॥ डुडुडुडुडु  
 ॥ ४ ॥ डुडुडु डुडुडुडुडु ॥ ५ ॥ अडुडु डुडुडु ॥ ६ ॥ श्रीजिन डु  
 डुडुडु डुडुडुडु डुडु ॥ ७ ॥ शिवनिडुडु डुडुडु डुडु डुडु विडु डुडु  
 डु ॥ ८ ॥ डुडुडु डुडुडुडु अडुडु विडु डुडुडुडु ॥ \* ॥

इति अडुडु विडु डुडुडुडु डुडु डुडुडुडुडु ॥ \* ॥

॥ \* ॥

॥ ❀ ॥ अथ साधू (अने) श्रावक । दोनुं टंक पम्किमणो  
करे । तेहनो हेतु (नांव) सुतलब लिखतेहें ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तिहां पापसेती निवर्त्तन होणो (ते) पडिकमणो कहिये ॥  
तथा ॥ ग्यानाचार १ दर्शनाचार २ चारित्राचार ३ तपाचार ४ वीर्या-  
चार ५ (एपंच आचार सुद्धि निमित्तें) श्रीगुरु साखें । अनें गुरु  
अजावे । थापनाचार्य शाखे पम्किमणो करवो (तेहना ठ अध्ययनठै)  
सामाइयं १ । चउवीसत्थउ २ । वंदणयं ३ । पडिकमणं ४ । काउसग्गो ५ ।  
पच्चक्खाण ६ मिति (तिहां) सामायिकें करी चारित्राचारनी सुद्धिथायै ।  
चउवीसत्थें करी दर्शना चारनी सुद्धता थायै । वंदणें करी ग्यानादिक आ-  
चार सुद्धथाये । पम्किमणें करी ग्यानादिकना अतीचारांनी सुद्धि थायै ।  
अनें पम्किमणाथी जे अतीचार शुद्धनथाइ (ते) काउसग्गें शुद्धथाइ ।  
पच्चक्खाणें करी तपाचार शुद्धथाइ । अनें वीर्याचार इणें ठएकरी शुद्ध थाइ  
॥ हिवै देव वांदनादि अनुक्रमें पम्किमणो थापै । (तेहना हेतु कहै) ॥  
सुद्ध पम्किमणो मोहूनो कारण ठे । ते मंगल विना निर्विघ्नपणें प्रमाण नचढे ।  
तिसवास्तै धुरें अवश्य मंगल करवो । तिहां मंगल तो अनेक प्रकारनो है ।  
पिण श्रीदेव गुरु वंदन सरीखो वीजो मंगल कोई नही (तेमाटे) प्रथम  
नमस्कार शक्रस्तव पूर्वक च्यारे थुईए देववांदी । च्यारे खमासमणो गुरूवां  
दे ॥ लोकमें पिण पहिलां राजानें नमस्कार करी (पठै) प्रधान प्रमुखनें  
नमें । इहां राजा समान तीर्थकर (अने) प्रधानादिक समान आचार्या  
दिक ठै (इम मंगल कर) पम्किमणानें धुरे समस्त अतीचारनो वीजक  
(सवस्सवि देवसिय) इत्यादि कही मिठामि डुक्कं देवै । पठैं ज्ञानादिक  
मांहे । चारित्रना अधिकपणा हुंती । प्रथम चारित्राचार शुद्धि निमित्तें ।  
करेमि जंतै सामाइयं (इत्यादि तीन सूत्र जणें) तिहां समता परिणामें  
सर्व धर्म कार्यकरवा (ते माटें) प्रथम सामायिक आवश्यक कह्यो ॥ ❀ ॥  
पठै प्रजातनी पम्किलेहण थी मांमी । दिवसना कीधा अतीचार गुरु आगै  
आलोइवाठै । ते धारयां विना जली रीतें आलोवाइ नही (ते माटें) काउसग्ग  
करै । अतीचार मनमें धारै । पठै लोगस्त कहै (जे माटे) एसामायिका

दिक सुध मार्ग ( इहां ) रिषजादि चउवीस तीर्थकरे आपसेव्यो ( अनें ) न व्य जीवनें उपदिश्यो । ते कारणें । बीजै आवश्यके चउवीस जगवंतनीं स्त वना करवी कही ॥ ❀ ॥ पढै धर्ममांहे विनयना प्रधानपणा हुंती । गुरुनें वांदणा देई । अतीचार आलोइवा । अनें वांदणाढे । तेशरीर सुध विना नदेणी ( ते माटे ) प्रथम सुहपत्ती पम्लेही । सुधकरी । तिणथी काया पम्नि लेहै ॥ तीजै आवश्यके वांदणा देवी कही ॥ ❀ ॥ पढै गुरु आगै । अती चार आलोई प्रायश्चित्त मांगै ( गुरु कहै पम्निमह ) ( जे माटे ) कित ना इक अतीचार तो आलोयां थी सुध थया । अनें कितना इक न थया ( ते सुध करवानो ) चोथो आवश्यक पम्निमणो कह्यो ॥ ❀ ॥ तिहां उत्तम कार्य सर्व नवकार पूर्वक करवा ( ते माटे ) प्रथम नवकार कहै । अ नें समजाव धारी पम्निमबुं ( ते माटे ) पढै सामायिक सूत्र कहै । तिवार पढे साधु श्रावक आप आपणा अतीचार पम्निमवा निमित्तें सूत्रजणें । पढै समस्त अतीचार रूप जार निवर्त्तवे करी । हलको हुवो थको । ऊजो थई सूत्र पूर्ण करै । इम अतीचार पम्निमी । श्रीगुरुनें विषै पोतानो कीधो कोई अपराध खमाइवा निमित्तें । वांदणा देवै । पढै गुरु प्रमुखनें खमावी कानसग निमित्तें । फेर वांदणा देवै । ए वांदणा गुरुनें अपणो आधीन पणो जणाइवा निमित्तें पिण जाणवी । पढै ( श्रावक ) आयरिय उवझाए ( इत्यादी तीन गाथा जणें ) हिवे आलोयण पम्निमकणा थी शुध न थया ( जे ) चारित्रादिकना मोटा अतीचार ( ते ) शुध करवाने अर्थे पांचमो आ बश्यक कानसग करै ॥ ❀ ॥ तिहां । प्रथम सामायिकादि तीन सूत्र ज णी । चारित्राचार शुधि निमित्तें दोइ लोगस्स चिंतवै । इहां तीजी वार वले सामायक उव्वारण कीधो ( ते ) सर्व धर्म क्रिया समता परिणामें की थी सफल थाइ । ए अर्थे । पढै ज्ञान थी समकित अधिको है ( ते माटे ) दर्शनाचार शुधि निमित्तें लोगस्स कही । सबलोए ( इत्यादि ) सूत्र जणी । एक लोगस्सनो कानसग करै । पढै श्रुतज्ञानाचार शुधि निमित्तें । पुक्खरवर दीवट्टे ( कही ) सुयस्स जगवत्त ( इत्यादि जणी ) बीजो एक लोगस्सनो कानसग करै ( इहां ) प्रथम कानसग दोय लोगस्सनो कह्यो । ते ज्ञाना



दिक् थी चारित्रनो अधिकपणो ठे ( ते माटे ) वली । ग्यानादिकनी अपेक्षा  
 ये, चारित्रनें अतीचार घणा लागे । तोपिण कारण जाणवो । पढे ।  
 ज्ञान । दर्शन । चारित्राचार । निस्तीचार पणें आचरवाना फलजुत  
 श्रीसिद्ध जगवान, तिणारी स्तवना । सिद्धाणें बुद्धाणें ( इत्यादि जणें )  
 पढे । हिवणां उपगारी श्री महावीर स्वामीठे ( ते माटे ) जो देवाण  
 विदेवो ( इत्यादि तेहुंनी स्तवना करे ) पढे महा तीर्थपणा हुंती । उज्जित  
 शेल सिहरे ( इत्यादि तीर्थ स्तवना करे ) इम । चारित्र, दर्शन, ज्ञानाचार  
 सुद्ध करी । समस्त धर्म क्रियानो श्रुतज्ञान कारणठे ( तेमाटे ) श्रुति समु  
 धि निमित्तें । श्रुत देवतानों काउसगग करी स्तुति कहै । पढे जेहना क्षेत्र  
 में रहिये । क्षेत्र देवतानों काउसगग करी । स्तुति कहै । ( सिद्धांत माहें )  
 तीजै ब्रतें निरंतर अवग्रह याचना रूप जावना कहीठे । ते साचवणें नि  
 मित्तें ए काउसगग संजवै है । ए दोनुं काउसगग पूर्वधारीये आचरथा ठे ।  
 ( आवश्यक वृत्ति, चूर्णि, जाण्यादिक माहे ) श्रीहरिचद्र सूरि प्रमुख मोटे  
 आचार्ये कहाठे ( ते माटे ) प्रमाण है । पढे काउसगग थी । केई अती  
 चार सुद्ध न थया ते सुद्धकरवानें । ठो आवश्यक पच्चक्खाण कह्यो ॥ ❀ ॥  
 तेपूर्वे कीयो होय ( तो ) इहां तेहनें ठामें । मंगलीक निमित्तें । नवकार एक  
 कही । सुहपत्ती ( अने ) काया पमिलेही । श्रीगुरुनें वांदणादेई । इठामो  
 अणुसठि कहै । तुझारी आज्ञायें में पम्किमणो कीयो । एहवुं गुरुनें जणा  
 विवा निमित्तें । ए वांदणा कहा । इतरे पम्किमणो परिपूर्णथयो ॥ ❀ ॥  
 ( हिवै ) निर्विघ्नपणें पम्किमणो पूर्ण हुवा थकी घणो हर्ष ऊपनो । तिणें  
 करी । गुरु एक स्तुति कहां थकां । सर्व साधु श्रावक वर्द्धमान स्वरे । तीन  
 स्तुति कहै ( इहां गुरुना वचननें अंतें ) शिष्यादिक । नमो खमासमणा  
 णं ( एहवो गुरुनें नमस्कार कहै ) ते गुरु वचननो बहुमान रूपठे । पढे  
 शक्रस्तव कही । आचार्यादिकनें वांदै । सर्व धर्म क्रिया श्रीदेवगुरु भक्ति  
 पूर्वक सफल थायै ( ते माटे ) पम्किमणानें प्रारंभे ( तथा ) अंतें । देव गुरु  
 वंदन कह्यो ॥ ❀ ॥ हिवै पम्किमणां माहें । चारित्रादि सुद्धि निमित्तें । पूर्व  
 काउसगग कीधा ठे । तोपिण वली विशेष शुद्धि निमित्तें । च्यार लोगस्त

नो कानुसंग करी । मंगल निमित्तें लोगस कहै । जे साधु श्रावक आत्मा  
थीहुवै । ते ए हेतु समजी । विधि पूर्वक उपयोग सुं पम्किमणो करै ।  
ते लीलायें जवसमुद्र तरै । सिद्धि संपदा वरै ॥ ❀ ॥ आवश्यक वृत्त्यादेः । प्र  
ति क्रमण हेतवः । निबन्धा ज्ञापयोद्धृत्य । साधु श्राद्धादि हेतवे ॥ १ ॥ वा  
चकामृत धर्माणां । शिष्येणात्म हितेक्षणा । कृमाकल्याण गणिना । वीका  
नेर पुरे मुदा ॥ २ ॥ इति प्रतिक्रमण हेतवः संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री सीमंधरजिनचैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ जयजय त्रिभुवन आदिनाथ पंचमगति गामी ॥ जयजय करुणा  
शांतिदांत जविजन हितकामी ॥ जयजय इंद नरिंदवृंद सेवत सिरनामी ।  
जयजय अतिशय नंतवंत अंतर गति जामी ॥ १ ॥ पूर्व विदेह विराजताए ।  
श्री सीमंधर स्वामि । त्रिकरण सुध त्रिहुंकालमें । नित प्रति करुं  
प्रणाम ॥ २ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सीमंधरजिनस्तवन ॥ ❀ ॥

॥ पूर्वविदेह पुखलावती । जयोजगापतीरे । श्रीसीमंधरस्वामि प्रहसमनित  
नमुरे ॥ १ ॥ जगत्रय ज्ञाव प्रकाशता । जविप्रतिबो धतारे । उपगारी अरिहंत  
॥ प्रह० ॥ २ ॥ धन्यनयरी धन्यते नरा । धन्यते धरारे ॥ बिचरै जिहां जिन  
राज । प्र० ॥ ३ ॥ धन्य दिवश धन्य तेधनी । देखसुं आंखनीरे । जक्तिवन्तल  
जगवंत । प्रह० ॥ ४ ॥ महरनिजर अवधारजो । पतित उधारजोरे । जिनहरख  
वणें ससनेह । प्रहसम नितन मुरे ॥ ५ ॥ ॥ इति पदम् ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ श्रीसीमंधरसाहिबा । वीनतनी अवधारलालरे । परम पुरुष परमेसरू ।  
आतम परम आधारलालरे ॥ श्री० ॥ १ ॥ केवल ग्यान दिवाकरू । ज्ञांगे  
सादिअनंत लालरे ज्ञासक लोकालोकको । ग्यायक गेयअनंतलालरे ॥ श्री०  
॥ २ ॥ इंद्रचंद्रचकीसरू । सुरनर रहे कर जोरु लालरे । पदपंकज सेवे सदा ।  
अणहुंते इककोरु लालरे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ चरणकमल पिंजरवसे । मुऊ मन  
हंस नितमेवलालरे । चरणसरण मोहि आसरो । जवर देवाधिदेवलालरे ॥

॥ श्री० ॥ ४ ॥ अधमनुधारण जो तुमे । दूर हरो जवहुःखलाजरे । कहे जिन  
हरष मयाकरी । दे ज्यो अविचल सुखलाजरे ( श्री० ॥ ५ ॥

॥ इति सीमंधरजिनस्तवनम् ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री सिद्धगिरी चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ जय जय नाग्निरिंद नंद सिद्धाचलमंरुण । जय २ प्रथम जिणंद  
चंद जव हुःख विहंरुण । जयजय साधु सुरिंद वृंद वंदिय परमेश्वर ।  
जय २ जगदा नंद कंद श्री रिषज जिनेश्वर ॥ १ ॥ अमृत समजिन  
धर्म नोए । दायक जगमें जाण । त्वत्पद पंकज प्रीतिधर । निसदिन नमत  
कल्याण ॥ २ ॥ इति० ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ सिद्धो विज्ञाइचकी नमि विनमि मुणी पुंरुरियो मुणिं दो वाली पङ्कुव  
संबो जरह सुग मुणी सेलगो पंथगो अ रामो कोनी पंच द्रावड नखई नारु  
पंडुपुत्ता । मुत्ताएवं अणगे विमल गिरि महं तिथमेयं नमामि ॥ १ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सिद्धगिरी स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आज पुंरु गिरिजेठिया । प्रगट्यो परमआनंदा । मोह तिमर  
दूरेजए । जागा जवजयफंदा ॥ आ० ॥ १ ॥ मरुदेवार्जीकेलामला । नाग्निराय  
के नंदा रिषजजिनेसर सुखकरु । दिनमणिज्युंदीपंदा ॥ आ० ॥ २ ॥ पूर  
बनिनाणुं रायणतले । आया प्रथम जिणंदा । नेमिविना सहजिनवरै । इन  
गिरि कोसेवंदा ॥ आ० ॥ ३ ॥ कलुकाले इण जरतमें । तारण जाऊ ममंदा ।  
अनंत जीव मुगतैगया । वीतराग जार्पिंदा ॥ आ० ॥ ४ ॥ चौमुख जिननें  
आदले । नववसिर्विं सोहंदा । आत्मागुण निरमलकरी । मोहन सुःखपा  
वंदा ॥ आ० ॥ ५ ॥ ॥ ❀ ॥ इति सिद्धगिरी स्तवनम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सिद्धाचल गिरिजेठ्यारे । धन्य जाग हमारा । सि० ( देर ) एगि  
खरनी महिमा मोटी । कहतांनावेपारा । रायण रूख समोसरया स्वामी ।  
पूरव निनाणुं वारारे ॥ धन्य० सिद्धा० १ ॥ मूलनायक श्रीआदिजिनेसर ।  
चौमुख प्रतिमा चारा । अष्ट द्रव्यसुं पूजाजावे । समक्ति मूल आधारारे ॥

ध० सि० २ ॥ ज्ञाव जगति सुं प्रचुगुण गावे अपणा जनम सुधारा । यात्राकरी  
जविजन सुजज्ञावे नरक तिर्यंच गति वारारे ॥ ध० सि० ३ ॥ दूर देशांतर  
थी हूंआयो श्रवण सुणीगुण ताहरा । पतित उधारण विरुध तुमारो । एतीरथ  
जगसारारे ॥ ध० सि० ४ ॥ संबत अठार वयांसी आषाढै । वदि आठम  
जोमवारा प्रचुजीके चरण प्रताप संगमें । हमारतन प्रचुप्यारारे ध० सि० ५ ॥  
इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीआदिजिनचैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

जय २ जगदानंदन । जयजय वरनाभि नंदन जिणंद । जय २ करुणा  
सागर । मनोरथा अद्य फलतामे ॥ १ ॥ अद्य मे सफलं जन्म । अद्य मे सफला  
क्रिया । प्रयास सफलोमेद्य । दर्शना दादिमप्रजो ॥ २ ॥ प्रातरुत्थाय एनाहं ।  
मारुदेवो नमस्कृतः । हेलयामोहनृपाल । तेन नूनं नमस्कृतः ॥ ३ ॥ सुकृतं  
संचितं येनः । दुकृतं तेन सुंचितं । येनः प्रथमनाथस्य । चरणां जोजनं चितं  
॥ ४ ॥ त्रिचुवना जयदान विधायनी । त्रिचुवना द्रुति वंछित दायनी ।  
त्रिचुवनः प्रचुतः पदशालिने । जगवते रिषजाय नमोनमः ॥ ५ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीशान्तिजिनचैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

शांतये शांति कामाय । विघ्नशांति विधायिने । नमः शांति स्वरूपाय ।  
शांतिपदमुपेयुषे ॥ १ ॥ अशिवं शमया मास । गर्जसंस्थोपि यःपुराः । तन्ना  
माग्रहणादेवः । विघ्नासाम्यंति सांप्रतं ॥ २ ॥ श्रीशांति नाम मंत्रं यो । जपेत्  
निर्मल मानसः । श्रेयःसंपद्यते तस्य । पापशांतिर्नवेदपि ॥ ३ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

शोलम जिनवर शांतिनाथ सेवो सिरनामी । कांचन वरण सरीर कांति  
अतिशय अन्निरामी । अचिरा अंगज विश्वशेन नरपति कुलचंद । मृगलंठन  
धरपति कमल सेवइ सुरवृंद ॥ १ ॥ जगमांह अमृत देवए । जासु अखंफित  
आण । एकमने आराधतां । लहिये कोमिकल्याण ॥ २ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीनेमिजिनचैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

प्रहसम प्रणसुं नेमिनाथ जिनवर जयवंत । यादवकुल अवतंस हंस उत्तम

गुणवंत । समुद्रविजय शिवा देवीमात मति सहज उदार । सुंदर स्याम सरीर  
जोति सोहे सुखकार ॥ १ ॥ गढगिरनारइजिणें लह्योए । अमृत समतस बाण  
ध्यानधरंता एहनो । प्रगटे परम कल्याण ॥ २ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीपार्श्वजिनचैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

ॐ श्रीपार्श्वनाथाय । विश्वचिंतामणीयते । ॐ धरणेंद्र वैरोढ्या । पद्मादेवी  
सुतायते ॥ १ ॥ सिताष्ट दलमध्यस्थ । वरु पद्मासनायते । ॐ असिआजसांश्री ।  
लब्धा लक्ष्मीं नमोनमः ॥ २ ॥ ॐ दिक्पाला ग्रहाधीशं । यक्षणीयक सेविता ।  
ग्रहायुता हूजया । ह्यापरा जितयान्वितः ॥ ३ ॥ शांतिपुष्टि महापुष्टि ।  
धृति कीर्ति विधायिने । विष्णुवाजा नलवेत्ताला । सर्वाधि व्याधि नाशने ॥ ४ ॥  
श्रीशंखेश्वर मंरुण । पार्श्वजिन प्रणतिकल्प तरुकल्प । चूर्यदृष्ट व्रातं । पूर्य  
मे बांढितं नाथः ॥ ❀ ॥ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ २ ॥ ❀ ॥

॥ अग्निनव मंगल माला । करणं हरणं पुरंति पुरितस्य । श्री पार्श्वनाथ  
चरणं । प्रतिपन्नो प्रावतः सरणं ॥ १ ॥ आयासेन विना लक्ष्मी । विनाक्षेपेण  
वैज्रवं । विनै वत्तपसा सिद्धि । जपतां पार्श्वनामते ॥ २ ॥ पार्श्वजिनशा सनंते ।  
निवरु महामोह तिमर विध्वंसि । महिरत्न दीपकल्पं । तनोतु तेजो विवेकाख्यं  
॥ ३ ॥ तुरेषां चरणो जिह्वे । कुरुस्तोत्रं चरणोनमः । हर्षासु सुचितां दृष्टी ।  
आण्डु परमेश्वरः ॥ ४ ॥ जवे जवांतरे वापि । दुःखेवा यदिवा सुखे । पार्श्व  
ध्यानेनमयांतु । वासुराः पुन्य ज्ञासुराः ॥ ५ ॥ ❀ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ३ ॥ ❀ ॥

॥ अमर तरु कामधेनु । चिंता माणि काम कुंज माईया । तुहसामि पास  
सेवय । गयाईं सबेवि दासत्तं ॥ १ ॥ खंझिंजति जगंदर । ज्वर काश शास  
शूलतन निवहा । सिरि सामल पास पहु । तुह नाम पयंरु पवणेण ॥ २ ॥ जय  
धरणेंदनमंसिअ । पनमावइ पसुह सेविअ सुपास । ॐ श्री अर्क्ष ममसिद्धि  
कुणसु पास ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ ॐ ममहरतु जरं । ममहरतु विडुरं रुंरु मरं । हरतु चोरारि मारिवाही ।

हरतु ममं पास तित्थयरो ॥ १ ॥ एगंतर जरं निच्चजरं । सीअजरं उएहजरं वेला  
जरं । तह तइयजरं चउत्थजरं । हरतु ममं पास तित्थयरो ॥ २ ॥ जिण  
दत्ताणा पालण परस्ससंधस्स बिहि समुग्गस्स । आरोग्ग सोहग्गं अपवग्गं ।  
कुणउपास जिणो ॥ ३ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री बीरजिन चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

बडुं जगदाधार सार सिवसंपति कारण । जन्म जरा मरणादिरूप ञवताप  
निवारण । श्री सिद्धार्थ तात मात त्रिशला तनजात । सोवन वरण सरीखीर  
त्रिनुवन विह्वात ॥ १ ॥ अमृत रूपे राजताए । चउवीसम जिनजाण ।  
दुमा प्रमुख कल्याण गुण आपोकरिसुपसाय ॥ २ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ २ ॥ ❀ ॥

॥ वीरस्सर्व सुरासुरेंद्र महितो वीरं बुधा संश्रिताः । वीरेणा जिहतस्स  
कर्म निचयो वीराय नित्यं नमः । वीरास्तीर्थमिदं प्रवर्त्तमतुलं वीरस्य घोरं  
तपो । श्री वीरे धृतिकीर्ति कांति निचयः श्री वीरजद्रंदिशः ॥ १ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ तप गढ विशेष विधि संग्रह ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पंचिदिअ ॥ ❀ ॥

॥ पंचिदिअ संवरणो । तह नवविह बंजचेर गुत्तिधरो । चउविह कसाय  
सुको । इअ अठारस गुणेंहिं संजुत्तो ॥ १ ॥ पंचमह वयजुत्तो । पंचविहायार  
पालण समत्थो । पंच समिउं तिगुत्तो । ष्ठीसगुणो गुरु मज्ज ॥ २ ॥ इति ॥

❀ ॥ अथ खमासमाण ॥ ❀

॥ इहामि खमासमाणो वंदितुं जावणिज्जाए निसीही आए मत्थएण  
वंदामि ॥ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ सुगुरुनें शातासुख पृढा ॥

॥ इहकार सुहराइ सुहदेवसी सुखतप शरीर निरावाध सुख संजम जात्रा  
निर्वहोढोजी स्वामी शाताढेजी ज्ञात पाणीनो लाज देजोजी ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ सामायक पारवागाथा ॥ ❀ ॥

॥ सामाइय वयजुत्तो । जावमाणे होइ नियम संजुत्तो । षिन्नइ असुहं



कम्मं । सामाइअ जति आवारा ॥ १ ॥ सामाइअं मिउकए । समणो इव  
सावउ हवइ जह्वा । ए ए ए कारणेणं । बहुसो सामाइअं कुज्जा ॥ २ ॥ सामा  
यिक विधिं जीधुं विधिं पारिउं । विधिकरतां जे कोइ अविधि हुवो होय । ते  
सविहुं मन वचन कायार्थे करी मिहामि उक्कमं ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ जगचिन्तामणिचैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ इत्थाकारेण सं० । चैत्यवंदन करुं ॥ इत्थं ॥ जगचिन्तामणि जगनाह ।  
जगगुरु जगररकण । जगबंधव जगसत्थवाह । जगजाव विअरकण ॥ १ ॥  
अठावय संठविअ रूव । कम्मठ विणासण । चउवीसंपि जिनवर जयंतु अप्पमि  
हय सासण॥१॥ कम्मचूमिहिं कम्मचूमिहिं । पढमसंधयणि उकोसय सत्तरिसय ।  
जिणवराण विहरंतजप्पइ । नवकोडिहिं केवजिण । कोमि सहस्स नवसाहु  
गम्मइ । संपइ जिणवर वीसमुणि । विहुं कोमिहिं वरनाण । समणह कोमी  
सहसहुअ । थुणिजअ निच्चविहाण ॥ २ ॥ जयउसामी जयउसामी रिसह  
सत्तुंजि । उज्झित पहुनेमिजिण । जयउ वीर सच्चउरि मंरुण । ञरु अठ्ठहिं  
मुणिसुव्वय । महुरि पास उहउरिअ खंरुण ॥ अवर विदेहिं तिठ्यरा । चिहुं  
दिसि विदिसि जंकेवि । तीआणागय संपइअ वंडुं जिण सबेवि ॥ ३ ॥ सत्ता  
एवइ सहस्सा । जरकाठप्पन्न अठकोडीउ । वत्तीस बासिआइं । तिअजोए  
चेइए वंदे ॥ ५ ॥ पनरसकोडि सयाइं । कोमी बायाजजरक अडवन्ना । वत्तीस  
सहस असिआइं । सासय विंवाइं पणमामि ॥ ५ ॥ जंकिं चिनामतित्थं कहके  
नमोत्थुणं कहे ॥ जावंति चेइयाइं । जावंति केविसाहू ॥ नमोर्द्धतसिद्धा० ॥  
जुवसग्गहरं पासं ॥ कहके जावपूर्वक जो स्तवन बोलना होय सो बोलके दोनूं  
हाथ जोरु मस्तक चढाय जयवीराराय संपूर्ण कहे ॥

॥ ❀ ॥ अथ जयवीअराय ॥ ❀ ॥

॥ जयवीअराय जगगुरु । होउममं तुह पजावउ जयवं । जवनिवेउ ।  
मग्गा । एसारिया इठ फल सिद्धि ॥ १ ॥ लोग विरुद्धचउ । गुरु जण पूआ  
परत्थ करणंच । सुह गुरु जो गोतवथण सेवणा आज्ञव मखंम्मा ॥ २ ॥ वारि  
ज्जइ जइ विनिआ । एवंधणं वीअराय तुह समए । तहवि ममहुज्जा सेवा  
जवे जवे तुह चत्तणाणं ॥ ३ ॥ उरुक्क रक्कउ कम्म रक्कउ । समाहि मरणंच

बौहिला ज्योत्स्ना ॥ संपञ्जन महेश्वरं । तुहनाह पणाम करणेणं ॥ ४ ॥ सर्व  
मंगल मांगल्यं । सर्व कल्याण कारणम् ॥ प्रधानं सर्व धर्माणं जैनं जयति  
शासनम् ॥ ५ ॥ पीठे कुजाहोके ॥ अरिहंत चेइयाणं ॥ वंदण वत्तिआए ।  
अन्नत्थू कहके एक नवकारको कावसग्ग करके स्तुतिकहे ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ कल्याण कंदं स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ कल्याणकंदं पढमं जिणंदं । संतिंतवो नेमिजिणं मुणिंदं । पासं पयासं  
सुगणि कठाणं ॥ प्रत्तीय वंदे सिरि बद्ध माणं ॥ १ ॥ अपार संसार समुद्वपारं  
पत्ता सिवं दिंतु सुइकसारं । सबे जिणंदा सुर विंद वंदा । कल्याण वल्लीण  
विशाल कंदा ॥ २ ॥ निव्वाणमग्गे वरजाणकप्पं । पणा सियासे स कुवाइदप्पं ।  
मयंजिणाणं सरणं बुहाणं । नमामि निच्चंति जगप्पहाणं ॥ ३ ॥ कुंदिंदुगो  
हीरत्तुसार वन्ना । सरोज हत्थाकमले निसन्ना । वाए सिरि पुत्तय वग्गहन्ना ।  
सुहायसा अहसया पसत्था ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ विशाल लोचन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ विशाल लोचन दलं । प्रोद्यदंताशुकेशरं । प्रातर्वीर जिनेन्द्रस्य  
मुख पद्मं पुनातुवः ॥ १ ॥ येषा मन्निषेक कर्म कृत्वा । मत्ता हर्ष जरात् सुखं  
सुन्दराः । तूणमपि गणयंतिनैव नार्क । प्रातःसंतु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥ २ ॥  
कलंक निर्मुक्त ममुक्त पूर्णतं । कुतर्क राहु असनं सदोदयं ॥ अपूर्व चन्द्र जिन  
चन्द्र चाषितं । दिनागमे नौमि बुधैर्नमस्कृतं ॥ ३ ॥

॥ ❀ ॥ अथ जगवानादि बंदन ॥ ❀ ॥

॥ जगवानहं ॥ आचार्यहं ॥ उपाध्यायहं ॥ सर्वसाधुहं ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अतीचारनीट्गाथा ॥ ❀ ॥

॥ नाणंमि दंसणं मिय । चरणंमि तवेअ तहय विरियंमि । आयरणं आ-  
यारो । इअएसो पंचहा जणिओ ॥ १ ॥ काले विणए बहुमाणे । उवहाणे  
तहय निन्हवणे । वंजण अत्थ तट्टजए । अठविहो नाणमायारो ॥ २ ॥  
निस्संकिअनिकंखिअ । निव्वित्तिगिण्ठा अमूढ दिठ्ठिअ । उववूह थिरीकरणे ।  
वच्छत्त पञ्जावणे अठ ॥ ३ ॥ पणिहाण जोगजुत्तो । पंचहिं समइहिं तिहिं

युत्तीहिं । एसचरित्ता यारो । अठविहो होइ नायबो ॥ ४ ॥ वारस विहंमि  
वितवे । अझितर बाहिरे कुशलदिष्टे । अगिलाइ अणाजीवी । नायबो  
सोतवायारो ॥ ५ ॥ अणसण मूणोअरिया । वित्तीसंखेवणं रसच्चाओ । काय  
किलेसो संलीणआय । वझोतवोहोइ ॥ ६ ॥ पायवित्तंविण्ण । वेयावच्चं तहेव  
सिझोओ । जाणं उस्सग्गोविय । अझितरओ तवोहोइ ॥ ७ ॥ अणगूहिय  
वलविरिओ । परिकमइ जोजहुत्तमाज्जतो । जुंजइ अजहाथामं । नायबो  
वीरि आयारो ॥ ८ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सुत्रदेवता स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ सुअ देवया जगवई नाणा वरणी अकम्म संघायं । तेसिंखवेण सययं ।  
जेसिंसुअ सायरे जत्ती ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ खेत्रदेवता स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ जीसे खित्तेसाहु । दंसणनाणेहि चरण सहिएहिं । साहंति मुरकमगं ।  
सादेवी हरण डुरिआइ ॥ १ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अट्ठाइजेसुमुनिवंदन ॥ ❀ ॥

॥ अट्ठाइजेसु दीवसमुद्देसु । पन्नरससु कम्मचूमीसु ॥ जावंतकेविसाहु  
रयहरण गुठपणिग्गहधारा ॥ पंच महवय धारा, अठारस सहस्स सीलांगधारा ॥  
अरक यायारचरित्ता, तेसवे सिरसा मणसा मत्थएणवंदामि ॥ १ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ वरकनक ॥ ❀ ॥

॥ वरकनक शंख विट्ठम । मरकत घन सन्निभं विगतमोहं । सप्ततिशतं  
जिनानां । सर्वामर पूजितं वंदे ॥ १ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पोसह पारवा गाथा ॥ ❀ ॥

॥ सागरचंदो कामो । चंदवर्त्तिसो सुदंसणोधन्नो । जेसिंपोसह पणिमा ।  
अखंमिआजीविअंतेवि ॥ १ ॥ धन्नासलाहणिज्जा सुजसा आनंद कामदेवाय ।  
जेसिंपसंसइ जयवं । दद्वयंतं महावीरो ॥ २ ॥ पोसहविधेजीधुंविधे पारिजं ।  
विधिकरतां जे कोइ अविधिहुओहोइ । तेसविहुं मन वचन कायायेकरी  
मिठामिडुक्कं ॥ ३ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ जरहेसरनी सज्ञाय ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जरहेसर बाहुबली । अजय कुमारोअ ढंढण कुमारो ।  
 सिरिओ अणियानत्तो । अयमत्तो नागदत्तोअ ॥ १ ॥ मेअज्ज थूलिज्जदो । वय  
 ररिसि नंदिसेण सीहगिरी । कयवन्नोअ सुकोसल । पुंररिओ केसि कर  
 कंइ ॥ २ ॥ हल्ल विहल्ल सुदंसण । साल महासाल सालिज्जदोअ ।  
 ज्जदोअ दसन्नज्जदो । पसन्नचंदोअ जसज्जदो ॥ ३ ॥ जंबू पहु वंकचूलो । गय  
 सुकमालो अवंति सुकुमालो । धन्नो इलाइ पुत्तो । चिलाइपुत्तोअ बाहुमुणी  
 ॥ ४ ॥ अज्जागिरि अज्ज रक्खिअ । अज्ज सुहत्थी उदायगो मणगो । कालयसू  
 रिसंबो । पज्जुन्नो मूलदेवोअ ॥ ५ ॥ पन्नवो विन्हुकुमारो । अदकुमारो दढ  
 प्पहारीअ । सिज्जंस कूरगड्डुअ । सिज्जंनव मेहकुमारोअ ॥ ६ ॥ एमाइ  
 महा सत्ता । दिंतु सुहं गुणगणेहिं संजुत्ता । जेसिं नाम ग्गहणे । पावपवंधा  
 विलय जंति ॥ ७ ॥ सुलसा चंदन बाला । मणोरमा मयणरेहा दमयंती ।  
 नमया सुंदरी सीया । नंदा ज्जदा सुज्जदाय ॥ ८ ॥ राइमई रिसिदत्ता ।  
 पत्तमावई अंजणा सिरि देवी । जिठ सुजिठ भिगावई । पत्तावई चिह्वाणा ।  
 देवी ॥ ९ ॥ बंजी सुंदरी रुपिणी । रेवई कुंती सिवा जयंतीय । देवीई  
 दोवई धारणी । कलावई पुप्फचूलाय ॥ १० ॥ पत्तमावईय गोरी । गंधारी  
 लप्पणा सुसीमाय । जंबूवई सच्चन्नाया । रुपिणी कन्हठ महिसीओ ॥  
 ॥ ११ ॥ जक्खाय जक्खदिन्ना । जूआ तह चेवं जूअदिन्नाय । सेणा वेणा  
 रेणा । जअणीओ थूलिज्जदस्स ॥ १२ ॥ इच्चाई महासईओ । जयंति  
 अकलंक सील कलिआओ । अज्जावि वज्जई जासिं । जस पडहो तिहुअणे  
 सयले ॥ १३ ॥ इति सता सतीओनी सिज्ञाय ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ मन्हजिणाणं सिज्ञाय ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मन्ह जिणाणं आणं । मिहं परिहरह धर सम्मत्तं । ण्विह  
 आवस्सयंमि । उज्जुत्तो होई पइ दिवसं ॥ १ ॥ पवेसु पोसहवयं । दाणं  
 शीलं तवोअ जावोअ । सज्ञाय नमुक्कारो । परो वयारोअ जयणाअ ॥ २ ॥  
 जिणपूआ जिणथुणिणं । गुरुथुअ साहम्मिआण वट्ठवं । ववहारस्सय  
 सुञ्जी । रहयत्ता तिथ्ययत्ताय ॥ ३ ॥ उवशम विवेक संवर । जासा समिई

बज्जीव करुणाय । धम्मिअ जण संसग्गो । करणदमो चरिण परिणामो  
॥ ४ ॥ संघोवरी बहुमाणो । पुब्बय लिहणं पन्नावणा तित्थे । सट्ठाण  
किच्च मेअं । निच्चं गुरुवएसेणं ॥ ५ ॥ इति ॥ ५० ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ सकल तीर्थ वंदना ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सकल तीर्थ वंदूं करजोड । जिनवरनामें मंगल कोरु ।  
पहेलें स्वर्गें लाख बत्तीश । जिनवर चइत्य नमुं निशदीश ॥ १ ॥ बीजे  
लाख अठ्ठावीश कहा तीजे वारलाख सदेहा । चोथे स्वर्गे अरु लाख धार ।  
पांचमे वंदूं लाखज चार ॥ २ ॥ षष्ठे स्वर्गे सहस पचास । सातमें चालीश  
सहस प्रसाद । आठमें स्वर्गे ष हज्जार । नव दशमें वंदूं शत चार ॥ ३ ॥  
अग्यार वारमें त्रणशे सार । नवत्रैवेयके त्रणशे अठार । पांच अनुत्तर सर्वे  
मली । लाख चौराशी अधिका वली ॥ ४ ॥ सहस सत्ताणुं त्रैवीश सार ॥  
जिनवर जुंवन तणो अधिकार । लांवा शो जोजन विस्तार । पचास जुंवा  
बोहोत्तर धार ॥ ५ ॥ एकशो अशी बिंब परिणाम । सत्तासहित एक चैत्यें  
जाण । शो कोरु वावन कोरु संजाल । लाख चौराणुं सहस चौआल  
॥ ६ ॥ सातशे ऊपर साठ विशाल । सवी बिंब प्रणमुं त्रण काल । सात  
कोरुनें बोहोत्तर लाख । जुवनपतीमां देवल जाल ॥ ७ ॥ एकशो अशी  
बिंब प्रमाण । एक एक चइत्यें संख्या जाण । तेरशे कोरु निव्याशी कोरु  
साठ लाख वंदूं करजोरु ॥ ८ ॥ बत्तीशैनें ओगणसाठ । तिर्गालोकमां चइ  
त्यनो पाठ । त्रण लाख एकाणुं हज्जार । त्रणशे वीश ते बिंब जुहार ॥ ९ ॥  
व्यंतर योतिषीमां वली जेह । शाश्वता जिनवर वंदूं तेह । रिखन चंद्रानन  
वारिखेण । वर्द्धमान नामें गुणशेण ॥ १० ॥ समेत सिखर वंदूं जिनवीश ।  
अष्टापद वंदूं चौवीश । विमलाचल नें गढ गिरनार । आवूनुपर जिनवर जुहा  
र ॥ ११ ॥ शंखेश्वर केशरीयो सार । तारंगे श्रीअजित जुहार । अंतरीक  
वरकाणो पाश । जीरावलोनें थंजण पाश ॥ १२ ॥ गाम नगर पुर पाटण  
जेह । जिनवर चैत्य नमुं गुण गेह । विहरमान वंदूं जिन वीश । सिद्ध  
अनंत नमुं निशिदीश ॥ १३ ॥ अढी द्रोपमां जे अणगार । अठार सहस  
शीलांगना धार । पंच महाव्रत मुमती सार । पाले पलावे पंचाचार ॥ १४ ॥

बाह्य अङ्गितर तप उज्ज्वाल । ते शुनि वंदूं गुणमणि माल । नित नित ऊठी  
कीर्त्ति करूं । जीव कहे जव सायर तरूं ॥ १५ ॥ इति ॥ १५ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सकलार्हत स्तोत्र ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सकलार्हत प्रतिष्ठान । मधिष्ठानं शिव श्रियः । चूर्नुवः स्वस्वयीशान ।  
मार्हत्यं प्राणिदग्धहे ॥ १ ॥ नामाकृति द्रव्यत्रावैः । पुनत द्विजगज्जनं । हेत्रे  
कालेच सर्वस्मि । नर्हतः समुपास्महे ॥ २ ॥ आदिमं पृथिवीनाथ । मादिमं  
निःपरिग्रह । मादिमं तीर्थनाथं च । रुषजस्वामिनं स्तुमः ॥ ३ ॥ अर्हत मजितं  
विश्व । कमलाकर प्रास्करं । अम्लान केवला दर्श । संक्रांत जगतं स्तुवे ॥ ४ ॥  
विश्व जव्य जनाराम । कुल्या तुल्या जयंतु ताः देशना समये वाचः ।  
श्रीसंजव जगत्पतेः ॥ ५ ॥ अनेकांत मतांजोधि । समुत्तासन चंद्रमाः ।  
दद्या दमंद मानंदं । जगवान् जिनंदनः ॥ ६ ॥ द्युसत्किरीट शाणाग्रो । तेजितां  
जि नखावलिः । जगवान् सुमतिस्वामी । तनोत्वज्जिमता निवः ॥ ७ ॥  
पद्मप्रज प्रजोर्देह । प्रासः पुष्पांतु वः श्रियं । अंतरंगारी मथने । कोपादो  
पादिवारुणाः ॥ ८ ॥ श्रीसुपाश्वंजिनेन्द्राय । महेंद्र महितांजये । नमश्चतु  
र्वर्ण संघ । गगनाजोग प्रास्वते ॥ ९ ॥ चंद्रप्रज प्रजोश्चंद्र । मरीचि नि  
चियो ज्वला । मूर्त्ति मूर्त्तिसित ध्यान । निर्मितेव श्रियेऽ स्तुवः ॥ १० ॥ कराम  
ल कवद्रिष्वं । कलयन् केवलश्रिया । अर्चित्य महात्म्य निधिः । सुविधिर्वो  
धयेऽ स्तुवः ॥ ११ ॥ सत्वानां परमानंद । कंदो ज्जेदनवांबुदः । स्याद्रादामृत  
निस्पंदी । शीतलः पातुवो जिनः ॥ १२ ॥ नवरोगार्त जंतूना । मगदंकार दर्शनः  
निःश्रेयस श्रीरमण । श्रेयांसः श्रेयसेऽस्तुवः ॥ १३ ॥ विश्वोपकारकी चूत । तीर्थ  
कृत्कर्म निर्मितिः । सुरासुर नरैः पूज्यो । वासुपूज्यः पुनातुवः ॥ १४ ॥ विम  
ल स्वामिनो वाचः । कृतकहोद सोदराः । जयंति त्रिजगच्चेतो । जलनै  
र्मल्यहेतवः ॥ १५ ॥ स्वयंचू रमणस्पर्धि । करुणा रस वारिणा । अनंत  
जिदनंतावः । प्रयत्नतु सुखाश्रियां ॥ १६ ॥ कल्पद्रुमसधर्माण । मिष्टप्राप्तो  
शरीरिणां । चतुर्धा धर्मदेष्टारं । धर्मनाथं मुपास्महे ॥ १७ ॥ सुधासोदर  
वाग्ज्योत्स्ना । निर्मली कृत दिङ्मुखः । मृगलक्ष्मा तमःशांत्ये । शांतिनाथ  
जिनोस्तुवः ॥ १८ ॥ श्रीकुंथुनाथो जगवान् । सनाथो तिथयर्ध्वजिः । सुरा



सुर नृनाथाना । मेकनाथोऽस्तुवः श्रिये ॥ १९ ॥ अरनाथस्तु जगवां । श्र  
 त्थार्थारनजोरविः चतुर्थं पुरुषार्थश्री । विलासं वितनो तुवः ॥ २० ॥ सुरासु  
 र नराधीश । मयूर नव वारिदं । कर्मद्रुन्मूलने हस्ति । मल्लं मल्लि मज्जिष्ठु  
 मः ॥ २१ ॥ जगन्महा मोहनिद्रा । प्रत्यूषसमयोपम । मुनि सुव्रत नाथस्य  
 देशना वचनं स्तुमः ॥ २२ ॥ लुठंतो नमतां मूर्ध्नि । निर्मली कार कारिणं । वा  
 रि प्लवा इवनमेः । पातुं पादनखांशवः ॥ २३ ॥ यदु वंश समुद्रेंदुः । कर्म कहु  
 हुताशनः । अरिष्टनेमि र्जगवान् । नूयाद्रोऽरिष्ट नाशनः ॥ २४ ॥ कमठे धर  
 णेंद्रेच । स्वोचितं कर्म कुर्वति । प्रनुस्तुल्य मनो वृत्तिः । पार्थ नाथः श्रियेऽ  
 स्तुवः ॥ २५ ॥ श्रीमते वीरनाथाय । सनाथायाद्भुत श्रिया । महानंदासरोरा  
 ज । मरालायार्हते नमः ॥ २६ ॥ कृतापराधेपिजने । कृपामंथरतारयोः ।  
 ईषद्राष्यार्दयोर्जद्र । श्रीवीर जिननेत्रयोः ॥ २७ ॥ जयति विजितान्यतेजाः ।  
 सुरा सुराधीश सेवितः श्रीमान् । विमलस्त्रास विरहित । खिनुवन चूमामणि  
 र्जगवान् ॥ २८ ॥ वीरः सर्व सुरासुरेन्द्र महिता वीरं बुधाः संश्रिताः ।  
 वीरेणाग्निहतः स्वकर्म निचयो वीराय नित्यं नमः । वीरातीर्थ मिदं प्रवृत्त  
 मतुलं वीरस्य घोरं तपो । श्रीवीरे धृति कीर्त्ति कांति निचयः । श्रीवीरभद्रं  
 दिश ॥ २९ ॥ अवनि तल गतानां कृत्रिमा कृत्रिमानां । वरभुवन गतानां  
 दिव्य बैमानिकानां । इह मनुज कृतानां देवराजार्चितानां । जिनवर भुवना  
 नां प्रावतोहं नमामि ॥ ३० ॥ इति ॥ ५२ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ शान्तिकर स्तोत्र ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ संतिकरं संतिजिणं । जगसरणं जयसिरीइ दायारं । समरामि  
 जत्त पालग । निवाणी गरुक्कय सेवं ॥ १ ॥ ओं सनमो विप्पोसहि प  
 त्ताणं । संतिसामिपायाणं । जौं स्वाहा मंतेणं । सवाशिव पुरिअ हरणाणं  
 ॥ २ ॥ उं संतिं नमुक्कारो । खेलोसहि माइ जडि पत्ताणं । सो जौं नमो स  
 वो सहि । पत्ताणं चंदेइसिरीं ॥ ३ ॥ वाणी तिहुअण सामिणी । सिंरि देवो  
 जख्खराय गाणि पिग्गा । गह दिसिपाल सुरिंदा । सयावि रक्खवंतुजिणजत्ते  
 ॥ ४ ॥ रक्खवंतु ममरोहिणी । पन्नत्ती वज्जासिंखला सया । वज्जंकुमि चकेसरी  
 नरदत्ता कालि महाकाली ॥ ५ ॥ गोरी तह गंधारी । महजाला माणवीअ वइ

रुद्रा । अद्भुता माणसिआ । महामाणसिआओ देवीओ ॥ ६ ॥ जख्खा गोमुह  
महजख्खा । तिमुह जख्खेसु ठुंवरू कुसुमो । मायंग विजय अजिओ । बंजो  
माणओ सुर कुमारो ॥ ७ ॥ ञ्मुह पायाल किन्नर । गरुलो गंधव तहय  
जख्खिंदो । कुबेर वरुणो जिननी । गोमेहो पासमायंगो ॥ ८ ॥ देवीओ  
चक्केसरी । अजिआ डुरिआरी कालि महा काली । अचुअ संता जाला । सु  
तारया सोअ सिरिवद्धा ॥ ९ ॥ चंभा विजयंकुसि पन्नइत्ति । निवाणि अचुआ  
धरणी । वईरुद्र बुत्त गंधारी । अंब पन्मावई सिद्धा ॥ १० ॥ इअ तिथ्य  
रख्खण स्या । अन्नेवि सुरा सुरी चण्डहावि । व्यंतर जोइणि पमुहा । कुणंतु  
रख्खं सया अहं ॥ ११ ॥ एवं सुद्धिठि सुरगण । सहिओ संवस्स संति जिण  
चंदो । मझवि करेणु रख्खं । सुणि सुंदर सूरि थुअमहिमा ॥ १२ ॥ इअ  
संतिनाह सम्मद्धिठि । रख्खं सरइ तिकालं जो । सबोवद्धव रहिओ । सलहइ  
सुह संपयं परमं ॥ १३ ॥ तव गढ गयण दिणयर । जुगवर सिरि सोम सुं  
दर गुरूणं । सुपसाय लद्ध गणहर । विज्जा सिद्धिं जणइ सीसो ॥ १४ ॥

॥ ❀ ॥ श्री सीमंधर जिन चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सीमंधर परमात्मा । शिव सुखना दाता । पुख्खल वई विजये  
जयो । सर्व जीवना त्राता ॥ १ ॥ पूर्व विदेह पुंनरीगिणी । नयरीयें शो  
हे । श्री श्रेयांस राजा तिहां । जविअण मन मोहे ॥ २ ॥ चण्ड सुपन  
निर्मल लही । सत्यकी राणी मात । कुंथु अर जिन अंतरे । श्री सीमंधर  
जात ॥ ३ ॥ अनुक्रमे प्रनु जनमीया । बली यौवन पावे । मात पिता हरखें  
करी । रुक्मिणी परणावे ॥ ४ ॥ जोगवी सुख संसारनां । संजम मन ला  
वे । मुनिसुबत नमी अंतरे । दिहा प्रनु पावे ॥ ५ ॥ याती कर्मनो ह्य  
करी । पाम्या केवल नाण । वृखन्न लंछनें शोभता । सर्व ज्ञावना जाण ॥  
॥ ६ ॥ चौराशी जस गणधरा । मुनिवर एक शो कोड । अण जुवनमां जोअ  
तां । नहिं कोइ एहनी जोड ॥ ७ ॥ दस लाख कहा केवली । प्रनुजीनो  
परिवार । एक समय त्रएय कालना । जाणे सर्व विचार ॥ ८ ॥ उदय पेढा  
ल जिनांतरे ए । थाशे जिनवर सिद्ध । जस विजय जिन प्रणमतां । शुभ  
वंबित फल लीध ॥ ९ ॥ इति चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ पुनः द्वितीय चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री सीमंधर जग धणी । आज्ञरतें आवो । करुणावंत करुणा करी । अमने वंदावो ॥ १ ॥ सकल प्रक्त तुमें धणी ए । जो होवे अमनाथ । प्रवो प्रव हुं वूं ताहरो । नहीं मेळुं हवे साथ ॥ २ ॥ सयल संग ठंसी करी ए । चारित्र लेइशुं । पाय तुमारा सेविनें । शिवरमणी वरिशुं ॥ ३ ॥ ए अलजो मुजने घणो ए । पूरो सीमंधर देव । इहां थकी हुं वीनबुं । अवधारो मुज सेव ॥ ४ ॥ इति द्वितीय चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ श्री सिद्धगिरी चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ विमल केवल ज्ञान कमला । कलित त्रिचुवन हितकरं । सुरराज संस्तुत चरणपंकज । नमो आदि जिनेश्वरं ॥ १ ॥ विमल गिरिवर शृंग मंरुण प्रवर गुण गण चूधरं । सुर असुर किन्नर कोमि सेवित नमो ॥ २ ॥ करती नाटक किन्नरी गण गाय जिन गुण मनहरं । निर्जरावली नमें अहनिश ॥ नमो ॥ ३ ॥ पुंडरीक गणपति सिद्धि साधी । कोमि पण मुनि मन हरं । श्री विमल गिरिवर शृंग सिद्धा ॥ नमो ॥ ४ ॥ निज साध्य साधन सुरिंद मुनिवर । कोमिनंत ए गिरिवरं । मुक्ति रमणी वर्या रंगें ॥ नमो ॥ ५ ॥ पाताल नर सुरलोक मांही । विमल गिरिवर तो परं । नहि अधिक तीरथ तीर्थपति कहे ॥ नमो ॥ ६ ॥ इम विमल गिरिवर शिखर मंरुण । दुःख विहंरुण ध्याइ ये । निज शुद्ध सत्ता साधनार्थे परम ज्योतिनें पाइए ॥ ७ ॥ जित मोह कोह विबोह निद्रा । परम पद स्थिति जयकरं । गिरिराज सेवा करण तत्पर । पद्मविजय सुहित करं ॥ ८ ॥

## ॥ ❀ ॥ पुनः सिद्धगिरी चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री शेत्रुंजय सिद्ध क्षेत्र । दीठे दुर्गति वारे । जाव धरीनें जे चढे । तेने प्रवपार उतारे ॥ १ ॥ अनंत सिद्धनो एह ठाम । सकल तीरथ नोराय । पूर्व नवाणुं रिखप्रदेव । ज्यां ठवीआ प्रनुपाय ॥ २ ॥ सूरज कुंर सोहा मणो । कवरु जहू अन्निराम । नान्निरायां कुलमंरुणो जिनवर करुं प्रणाम ॥ ३ ॥ इति द्वितीय चैत्य ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ श्री परमात्मा चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ परमेश्वर परमात्मा । पावन परमिष्ठ । जय जगद्गुरु देवाधि  
देव । नयणे में दिष्ट ॥ १ ॥ अचल अकल अधिकार सार । करुणा रससिं  
धु । जगती जन आधार एक । निःकारण बंधू ॥ २ ॥ गुण अनंत प्रभुता  
हरा ए । किम ही कल्याण जाय । राम प्रभु जिन ध्यानथी । चिदानंद सु  
ख थाय ॥ ३ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ श्री सीमंधर जिन स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुणो चंदाजी सीमंधर परमात्म पासैं जावजो । मुऊ  
वीनतनी प्रेम धरीनें इण परें तुमें संजलावजो । ( ए आंकणी ) जे  
त्रण्य जुवननो नायकबे । जस चौशठ ईंद्र पायकबे । नाण दरसण जेहनें  
खायक बे ॥ सुणो० ॥ १ ॥ जेनी कंचन बरणी कायाबे । जस  
धोरी लंठन पायाबे । पुंरुरीगणी नगरीनो रायाबे ॥ सुणो० ॥ २ ॥  
बार पर्षदा मांहि बिराजै बै । जस चौत्रीश अतिशय ठाजैबे । गुण  
पांत्रीश वाणीयें गाजे बे । सुणो० ॥ ३ ॥ जविजननें ते परि बोहेबे । तुम  
अधिक शीतल गुण शोहेबे । रूप देखी जविजन मोहेबे ॥ सुणो० ॥  
॥ ४ ॥ तुम सेवा करवा रसीओ हुं । पण जस्तमां दूरें वसीओ हुं । महा  
मोह राय कर फसीओ हुं ॥ सुणो० ॥ ५ ॥ पण साहिब चित्तमां धरीयोबे  
तुम आणा खड्ग कर ग्रहीयोबे । तब कांडक मुज्जथी डरीयोबे ॥ सुणो० ॥  
॥ ६ ॥ जिन उत्तम पूठे हवे पूरो । कहे पद्म विजय थारुं शूरो । तो वा  
धे मुज मन अति नूरो ॥ सु० ॥ ७ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ श्री सिद्धगिरी स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आंखनीयें रे में आज । शेठुंजो दीठोरे । सवा लाख टकानो  
दहामोरे । लागे मुनें मीठोरे ( ए आंकणी ) सफल थयो मारा मननो ऊ  
माहो ॥ वाला मारा ॥ जवनो संशय जाग्योरे । नरक तिर्यंच गति दूर नि  
वारी । चरणे प्रभुजीनें लाग्योरे ॥ शेठुं० ॥ १ ॥ मानव जवनो लाहो लीधो  
वा० ॥ देहडी पावन कीधीरे । सोना रूपानें फूलडे बधावी । प्रेमें प्रदक्षिणा  
दीधीरे ॥ शेठुं० ॥ २ ॥ दूधडे पखालीनें केशर घोली ॥ वा० ॥ श्री आ

दीश्वर पूज्यारे । श्री सिद्धाचल नयणें जोतां । पाप मेवासी धूज्यारे ॥ शेवुं०  
 ॥ ३ ॥ स्वयमुख सुधर्मा सुरपति आगें ॥ वा० ॥ वीरजिणंद इम बोलैरे ।  
 त्रण जुवनमां तीरथ मोटुं । नहिं कोइ शेवुंजा तोलेरे ॥ शेवुं० ॥ ४ ॥ इंद्र  
 सरीखा ए तीरथनी ॥ वा० ॥ चाकरी चित्तमां चाहैरे । कायानी तो कासल  
 टाले । सूरज कुंफमां नाहैरे ॥ शेवुं० ॥ ५ ॥ कांकरे कांकरे श्रीसिद्धखेत्रें  
 वा० ॥ साधु अनंता शीधारे । ते माटे ए तीरथ मोटुं । उधार अनंता की  
 धारे ॥ शेवुं० ॥ ६ ॥ नागिराया सुत नयणे जोतां ॥ वा० ॥ मेह अमीरस  
 बूठयारे । उदयरतन कहे आज मारे पोतें । श्री आदीश्वर तूठयारे ॥ शेवुं०

### ॥ ❀ ॥ पुनः सिद्धगिरी स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ विमलाचल नित वंदियें । कीजै एहनी सेवा । मानुं हाथ ए  
 धर्मनो शिवतरु फल लेवा ॥ वि० ॥ १ ॥ उज्जाल जिन गृह मंरुली । ति  
 हां दीपे उत्तंगा । मानुं हिमगिरि विभ्रमें । आई अंबर गंगा ॥ वि० ॥  
 ॥ २ ॥ कोइ अनेरुं जग नहीं । ए तीरथ तोले । इम श्रीमुख हरिआगलें  
 श्री मीमंधर बोले ॥ वि० ॥ ३ ॥ जे सगला तीरथ करया । जात्रा फल  
 लहीयें । तेहथी ए गिरि जेटतां । शत गणुं फल कहीयें ॥ वि० ॥ ४ ॥  
 जनम सफल होय तेहनो । जे ए गिरि वंदे । सुजश विजय संपद लहे ।  
 तेनर चिरनंदे ॥ वि० ॥ ५ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ श्री पंच तीर्थ स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्लोक ॥ श्री शत्रुंजय मुख्य तीर्थ तिलकं श्री नागिराजंगजं  
 वंदे रैवत शैल मौलि मुकुटं श्रीनेमिनाथं यथा । तारंगे अजितं जिनं ऋगु  
 पुरे श्रीसुव्रतं स्थंजने । श्रीपार्थ्वं प्रणमामि सत्यनगरे श्रीवर्धमानं त्रिया  
 ॥ १ ॥ वंदेऽनुत्तर कल्प तल्प जुवने ग्रैवेयके व्यंतरे । ज्यौतिष्का मर मंदराद्रि  
 वसतो स्तीर्थकरा नादरान् । जंबू पुष्कर धातकीषु रुचके नंदीश्वरे कुं  
 डले । येचान्येपि जिना नमानि सततं तान् कृतिमाऽकृत्रिमान् ॥ २ ॥  
 श्री मध्नीरजिनास्य पद्म द्रुततो निर्गम्यते गौतम । गंगा वर्त्तन मेत्य या प्रवि  
 ष्ठे मिथ्यात्व वेनाद्वयकं । उत्पत्ति स्थिति संहति त्रिपथगा ज्ञानां बुधा  
 वृद्धिगा । मामे कर्ममलं हरत्व विकलं श्रीप्रादशांगी नदी ॥ ३ ॥ शक्र श्रंद्र

रवि ग्रहा श्र धरण ब्रह्मद्र शांत्यंबिका । दिगपालाः सकपर्दिगो मुखगणा  
श्रकेश्वरी प्रारती । येन्ये ज्ञानतपक्रिया व्रतिविधिः श्रीतीर्थयात्रादिषु । श्री  
संवस्य तुरा चतुर्विध सुरा स्ते संतु नद्रंकराः ॥ ४ ॥ इति श्रीपंचतीर्थ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नेमराजुल सिंहाय ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नदी जमुनाके तीर ऊमे दोय पंखीया ( ए देशी ) पिउजी पि  
उजीरे नाम जपुं दिन रातियां ॥ पिउजी चाल्या परदेश । तपे मोरी  
भातीयां । पग पग जोती वाट वालेसर कब मिले । नीर विठोह्यां मीनके ।  
तेजुं टलवलै ॥ १ ॥ सुंदर मंदिर सेज साहिब विण नविगमे । जिहारे वालेसर  
नाम तिहां मारुं मन जमे । जो होवे सज्जन दूर तोहि पासें बसे । किहां  
सायर किहां चंद देखी मन उल्लसे ॥ २ ॥ निःस्नेहीशुं प्रीत मकरजोको  
सही । पतंग जलावे देह दीपक मनमें नहीं । माणसनो विजोग  
म होजो केहनें । सालेरे साल समान हइआमां तेहने ॥ ३ ॥  
विरह व्यथानी पीरु जोवन वय अति दहे । जेनो पियु परदेश ते माणस  
दुःख सहे । फुरी फुरी पंजर कीध, काया कमला जिसी । हजुअ न आ  
व्योनेम मली नयणें हसी ॥ ४ ॥ जेने जेहशुं रंग टाल्यो ते नवी टलै  
चकवा रयणी विजोग तेतो दिवसें मलै । आंवा केरो स्वाद निंबू ते न  
वि करे । जे नाह्या गंगा नीर ते छिन्नर केम तरे ॥ ५ ॥ जे रम्या मालती  
फूल धतूरे केम रमे । जेहनें धीयशुं प्रेम ठे तेलै केम जमें । जेहनें चतुरशुं  
नेह ते अवरनें शुं करे । नव जोवन तजी प्रेम वैरागीथै फरे ॥ ६ ॥ रा  
जुल रूप निधान के पोहती सहसावनें । जइ बांधा प्रनु नेम संजम ले  
ई ऐकमनें । पांम्यां केवल ज्ञान के पोहती मन रली । रूपविजय प्रनुनेम  
जेटे आशा फली ॥ ७ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आज्ञाखा सिंहायः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आज्ञाखो तूटनें सांधो को नहींरे । तिण कारण मकरो जीव  
प्रमादरे । जरा आव्यानें शरणुं को नहींरे । हिंसा गोर्नीनें दया पालरे ॥  
आज्ञा ॥ १ ॥ कुटुंब कबीला नारी कारणेरे । मूरख संच्यां बहुला पाप  
र । चोर तणी परे ठंसी जूशेरे । सहीश इहलोक परलोक संतापरे ॥



आ० ॥ २ ॥ जुंवा चणाव्या मंदिर माजियारे । दे दे धरतीमें जुंडी नोंवरे  
 एक दिन अणजाण्युं जुठी चालवुरे । सुख दुःख सहेशे आपणो जीवरे  
 आ० ॥ ३ ॥ चक्रवर्ति हरिवल राणो केशवोरे । जो जो वली इंद्र मुरांनो  
 नाथरे ॥ जुगी जुगीनें उवेही आथम्यारे । जो जो कोइ अचरज वाली वा  
 तरे ॥ आ० ॥ ४ ॥ अथिर संसार तजी मुनी नीसरयारे । करता मुनि नव  
 जा विहाररे । जारंरु पंखीनी दीधी उपमारे । न धरे ममता नेह लगाररे ॥  
 आ० ॥ ५ ॥ चारित्रि पालै रूनी रीतशुरे । देवे मुनि अपनो उपदेशरे ।  
 तौको मुनिवर सिधासी मोक्षनेरे । जश लेई इह लोक परलोकरे ॥ आ० ॥  
 ॥ ६ ॥ शब्द रूप देखी समता धरोरे । मकरो मुनि ज्ञेयानुं अजिमानरे ।  
 रुषि चोथमज सूत्र देखिनेरे । जोरु कीधी जालोर मजाररे ॥ आ० ॥ ७ ॥

॥ ❀ ॥ पंचतीर्थी चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आज देव अरिहंत नमुं । समरुं तारुं नाम । ज्यां ज्यां प्रति  
 मा जिनतणी । त्यां त्यां करुं प्रणाम ॥ १ ॥ शेटुंजय श्रीआदिदेव । नेम  
 नमुं गिरनार । तारंगे श्री अजित नाथ । आवू रिखज जुहार ॥ २ ॥ अष्टा  
 पद गिरि ऊपरें । जिनचोवीशी जोय ॥ मणिमय मूरति मानशुं । जरतें  
 जरावी सोय ॥ ३ ॥ समेत शिखर तीरथ वडुं । ज्यां वीशे जिन पाय । वै  
 जारकगिरि ऊपरें । श्री वीर जिनेश्वर राय ॥ ४ ॥ मांरुवगढनो राजियो ।  
 नामें देव सुपाश । रिखज कहै जिन समरतां । पोहोचै मननी आश ॥ ५ ॥

॥ ❀ ॥ दूज तिथीको चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुविध धर्म जिणें उपदिश्यो । चोथा अजिनंदन । बीजें ज  
 न्या ते प्रजु । जवदुःख निकंदन ॥ १ ॥ पुविध ध्यान तुह्मे परिहरो ।  
 आदरो दोयव्यान । एम प्रकाश्युं सुमति जिन । ते चविया बीज दिन ।  
 ॥ २ ॥ दोय बंधन राग द्वेष । तेहनें जवि ताजियें । मुऊ परे शीतल जिन क  
 हे । बीज दिन शिव जजियें ॥ ३ ॥ जीवा जीव पदार्थनुं । करोनाण सुजाण  
 बीज दिनें वासुपूज्य परें । लहो केवल नाण ॥ ४ ॥ निश्चय नय व्यवहार  
 दोय । एकांत न ग्रहीयें । अर जिन बीज दिनें चवी । एमजिन आगल क  
 हीयें ॥ ५ ॥ वर्तमान चौबीशीये । एम जिन कल्याण । बीजदिनें केई पा

मीया । प्रभु नाण निर्वाण ॥ ६ ॥ एम अनंत चौवीशीयें । हुआ बहुत कल्याण । जिन उत्तम पद पझनें । नमतां होय सुख खाण ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ ग्यान पंचमीको चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ त्रिगडे बेठा वीरजिन । जखे जविजन आगे । त्रिकरणशुं त्रि हुं लोक जन । निसुणो मन रागें ॥ १ ॥ आराहो जवि जावसे । पांच म अजुवाली । ज्ञान आराधन कारणें । येहज तिथि निहाली ॥ २ ॥ ज्ञान विना पशु सारिखा । जाणो इण संसार । ज्ञान आराधनथी लह्युं । शिवपद सुखश्रीकार ॥ ३ ॥ ज्ञान रहित क्रिया कही । काश कुसुम उप मान । लोका लोकप्रकाशकर । ज्ञान एक परधान ॥ ४ ॥ ज्ञानी सासो सासमें । करे कर्मनो खेह । पूर्व कोमी वरसां लगे । अज्ञानेंकरे तेह ॥ ५ ॥ देश आराधक क्रिया कही । सर्व आराधकज्ञान । ज्ञान तणो सहिमा घणो । अंग पांचमे जगवान ॥ ६ ॥ पंच मास लघु पंचमी । जावजीव उत्कृष्टी । पंच वरश पंच माशनी । पंचमी करो शुभदृष्टी ॥ ७ ॥ एकावनही पंचनो ए । कानुसंग लोगस केरो । कुजमाणुं करो जावशुं । टाले जव फेरो ॥ ८ ॥ इण परें पंचमी आराहीयें ए । आणी जाव अपार । वरदत्त गुण मंजरी परें । रंग विजय लहोसार ॥ ९ ॥ इति चैत्य वंदन ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अष्टमीको चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ महा शुदि आठमनें दीने । विजया सुत जायो । तेम फागुण शुदि आठमें । संजव चव आयो ॥ १ ॥ चइतर वदनी आठमें । जनम्या रुषज जिणंद । दिहा पण ए दिन लही । हुआ प्रथम मुनिचंद ॥ २ ॥ माधवशुदि आठम दिनें । आठ कर्म करचा दूर । अग्निनंदन चौथा प्रभु । पाम्या सुख जरपूर ॥ ३ ॥ एहीज आठम ऊजली । जन्म्या सुमति जिणंद । आठजाति कलशें करी । न्हवरावे सुर इंद्र ॥ ४ ॥ जन्म्या जेठवदि आठमें । मुनि सुव्रत स्वामी । नेम आषाढ शुदि आठमें । पंचमी गति पामी ॥ ५ ॥ आवण वदनी आठमें । नमि जन्म्या जगज्जाण । तिम आवण शुदि आठमें । पासजीनो निर्वाण ॥ ६ ॥ जाद्रवा वदि आठम दिनें चविया स्वामी सुपास । जिन उत्तम पदपझनें । सेव्यांथी शिववास ॥ ७ ॥

॥ ❀ ॥ अथ एकादशीतुं चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शाशन नायक वीरजी । प्रभुकेवल पायो । संध चतुर्विध थाप  
वा । महसेन वन आयो ॥ १ ॥ माधव सित एकादशी । सोमल प्रियजयज्ञ  
इंद्रचूति आदे मल्या । एकादश विग्य ॥ २ ॥ एकादशसे चतुगुणा । तेह  
नों परिवार । वेद अर्थ अवलो करे । मन अजिमान अपार ॥ ३ ॥ जीवा  
दिक संशय हरीए । एकादश गणधार । वीरें थाप्या वंदियें । जिन शासन  
जयकार ॥ ४ ॥ मल्लि जन्म अर मल्लि पाश । वर चरण विजाशी ॥ रुष  
अजित सुमति नमी । मल्ली घनघाति विनाशी ॥ ५ ॥ पद्मप्रज्ञ शिव  
वास पास । जवजवना तोडी । एकादशी दिन आपणी । रिद्धि सगली जो  
डी ॥ ६ ॥ दश खेत्रें त्रिहुं काजनां । दैदशै कल्याण । वरस अग्यार एका  
दशी । आराधो वर नाण ॥ ७ ॥ अगीयार अंग लखावीयें । एकादश  
पाठा । पूजणी ठवणी विंटीणी । मसी कागज काठा ॥ ८ ॥ अगीयार  
अव्रत ठाम्वा ए । बहो पन्निमा अगियार । खिमाविजय जिन शासन ।  
सफल करो अवतार ॥ ९ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सीमंधर जिनवर सुखकर सहैव देव । अरिहंत सकजनी ।  
जाव धरी करूं सेव । सकलागम पारग गणधर जाखित वाणी ।  
जयवंती आणा ज्ञान विमल गुणखाणी ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
ए थुई चार वखत पण कहेवायते ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री सीमंधर जिनस्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री सीमंधर देव सुहंकर । सुनि मन पंकज हंसाजी । कुंथुअर  
जिन अंतर जनम्या तिहुअणयश परशंसा जी । सुब्रत नमि अंतर वरदी  
ह्मा शिक्षा जगत निरासेंजी । उदय पेढाल जिनांतरमां प्रभु जाशे शिव  
बहु पासें जी ॥ १ ॥ बत्रीश चउसठि चउसठि मलिया इग सय सठि  
उक्किछा जी ॥ चउ अरु अरु मली मध्यम कालें बीस जिनेश्वर दिछा  
जी ॥ दो चउ चार जवन्य दशजंबू धायई पुख्खर मज्जारें जी ॥ पूजो  
प्रणामो आचारांगें प्रवचन सार उधारें जी ॥ २ ॥ सीमंधर वर केवल पा  
मी जिनपद खवण निमित्तेंजी ॥ अर्थनी देशन वस्तु निवेशन देतां सु

एत विनीतैजी । द्वादश अंग पूरवयुत रचिया गणधर लब्धि विकसिया  
जी । अपङ्गवसिय जिनागम बंदो अह्वर पदना रसिया जी ॥ ३ ॥ आ  
णा रंगी समकित संगी विविध जंग व्रतधारी जी । चउबिह संघ ती  
रथ रखवाली सहु उपद्रव हरनारी जी । पंचांगुली सुरी शासन देवी  
देती तस जश रुधीजी । श्री शुजवीर कहे शिव साधन कार्य शकलमां  
सिधीजी ॥ ४ ॥ ❀ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ बीजतिथिकी स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दिन सकल मनोहर बीज दिवस सु विशेष । राय राणा प्र  
णमें चंद्र तणी ज्यां रेख । तिहां चंद्रविमानें शाश्वत जिनवर जेहे । हु  
बीज तणे दिन प्रणमुं आणि नेह ॥ १ ॥ अजिनंदन चंदन शीतल शीतल  
नाथ । अरनाथ सुमति जिन वासुपूज्य शिव साथ । इत्यादिक जिनवर  
जन्म ज्ञान निखाण । हुं बीज तणें दिन प्रणमूं ते सुविहाण ॥ २ ॥ पर  
काश्यो बीजें दुविध धर्म जगवंत । जेम विमला कमला विजल नयन  
विकसंत । आगम अति अनुपम जिहां निश्चय व्यवहार । बीजें सवि  
कीजें पातिकनो परिहार ॥ ३ ॥ गजगामिनी कामिनी कमल सुकोमल  
चीर । चक्रेसरि केसरी सरस सुगंध शरीर । कर जोम्ही बीजें हुं  
प्रणमूं तस पाय । इम लब्धिविजय कहे पूरो मनोरथ माय ॥ ४ ॥ इति

॥ ❀ ॥ अथ पंचमीनी स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रावण शुदि दिन पंचमी ए । जनम्या नेम जिणंद तो । श्याम  
वरण तन शोजतो ए । मुख शारदको चंद तो । सहस वरम प्रनु आउखो  
ए । ब्रह्मचारी जगवंत तो । अष्ट करम हेलें हणीए । पोहोता सुक्ति मजार  
तो । वासुपूज्य चंपापुरि ए । नेम सुक्ति गिरनार तो । पावापुरी नगरीमां  
वली ए । श्री वीरतणुं निर्वाण तो । समेत सिखर वीश सिद्ध हुआ ए । शिर  
बहुं तेहनी आण तो ॥ २ ॥ नेमिनाथ ज्ञानी हुवा ए । जाख्यो सार वचन  
तो ॥ जीवदया गुण बेलमी ए । कीजें ताम जतन तो । मृपा न बोली मा  
नवी ए । चोरी चित्त निवारतो । अनन्त तीर्थकर इम कहे ए । परहारियें  
परमार तो ॥ ३ ॥ गोमेद नामें जह जलो ए । देवीश्री अंबिका नाम तो । शा

सन सानिध्य जे करे ए । करै बलि धरमनां काम तो । तपगढ नायक गुण ति  
लो ए । श्री विजय सेन सूरिराय तो । रिखन दास पाय सेवतां ए । सफ  
ल करै अवतार तो ॥ ४ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ अथ अष्टमीनी स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मंगल आठ करी जस आगल आव धरी सुरराजाजी । आ  
ठ जातिना कलश करीने न्हवरावें जिनराजाजी । वीर जिनेश्वर जन्म  
महोत्सव करतां शिव सुख साधेजी । आठमनुं तप करतां अम घर मंग  
ल कमला बाधेजी ॥ १ ॥ अष्ट करम वयरी गजगंजन । अष्टापदपरे ब  
लीयाजी । आठमें आठ सरूप विचारी । मद आठे तस गलियाजी । अ  
ष्टमी गतिपरें पढोता जिनवर फरस आठ नहिं अंगजी । आठमनुं तप  
करतां अम घर नित्य नित्य बाधे रंगजी ॥ २ ॥ प्रातीहारज आठ वि  
राजे । समवसरण जिन राजेजी ॥ आठमे आठ शो आगम जाखी । अवि  
मन संशय जांजेजी । आठे जे प्रवचननी माता पाले निस्तीचारोजी ।  
आठमनें दिन अष्ट प्रकारें जीवदया चित्त धारोजी ॥ ३ ॥ अष्ट प्रकारी  
पूजा करीनें मानव अव फल लीजेजी । सिद्धाइ देवी जिनवर सेवी अ  
ष्टमहासिद्धि दीजेजी । आठमनुं तप करतां लीजे निर्मल केवल ज्ञान  
जी । धीर विमल कवि सेवक नय कहे तपथी कोडकड्याणजी ॥ ४ ॥

### ॥ ❀ अथ एकादशीनी स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ एकादशी अति रूअमी । गोविंद पूजे नेम । कोण कारण ए प  
र्व मोहोहुं । कहो मुऊशुं तेम । जिनवर कड्याणक अति घणां । एकशो  
ने पंचाश । तेणें कारण ए पर्व मोहोहुं । करो मौन उपवास ॥ १ ॥ अ  
ग्निआर श्रावक तणीप्रतिमा । कहै ते जिनवर देव । एकादशी एम अधिक  
सेवो । वन गजा जिमेख । चौबीश जिनवर सयल सुखकर जैसा सुरतरु चं  
ग । जेम गंगनिर्मल नीरजेहवुं करो जिनसुं रंग । अग्नीआर अंग लखाविये ।  
अग्नीआर प्राठासार । अग्नीआर कवली विंटाणां ठवणी पूंजणी सार । चावखी  
चंगी विविध रंगी शास्त्रतणें अनुसार । एकादशी एम नुजमो । जेम पामियें न  
वपार ॥ ३ ॥ वर कमलनयणी कमलवयणी कमल सुकोमल काय । नुजडंरु

चंद्र अखंड जेहनें समस्तां सुख थाय । एकादशी एम मन वशी गणि  
हर्ष पंकित शीश । शामन देवी विघन निवारो संघ तणां निश दीश ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ अथ स्नातस्याचवदशनी स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ स्नातस्या प्रतिमस्य मेरुशिखरे । शच्या विज्ञोः शैशवे । रूपा  
लोकन विस्मया हत रस भ्रांत्या भ्रमचक्षुषा । उन्मृष्टं नयन प्रज्ञा धवलि  
तं क्षीरोदकाशंकया । वक्रं यस्य पुनः पुनः सजयति श्रीवर्द्धमानो जिनः ॥  
॥ १ ॥ हंसां साहत पद्मेण कपिश क्षीराणां चो नृतैः । कुंजै रप्सरसां पं  
योधर नर प्रस्पर्धिभिः कांचनैः । येषां मंदर रत्नशैल शिखरे जन्माग्निषे  
कः कृतः । सर्वे सर्व सुरा सुरेश्वर गणै स्तेषां नतोहं क्रमान् ॥ २ ॥ अर्हद्भ  
क्त प्रसूतं गणधर रचितं द्वादशांगं विशालं । चित्रं बह्वर्थ युक्तं मुनिगण वृष  
जैर्ध्यायितं बुद्धिमद्भिः । मोक्षाग्रप्रारभृतं व्रत चरण फलं ज्ञेय ज्ञाव प्रदीपं ।  
प्रत्त्या नित्यं प्रपद्ये श्रुत मह मखिलं सर्व लोकैक सारं ॥ ३ ॥ निष्पंक  
व्योमनील द्युतिमल सदृशं बालचंद्राज दंष्ट्रं । मत्तं वंदारवेण प्रसूत मदज  
लं पूरयंतं समंतात् । आरूढो दिव्य नागं विचरति गगने कामदः कामरूपी ।  
यद्वाः सर्वानुचूति दिशतु मम सदा सर्व कार्येषु सिद्धि ॥ ४ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीशत्रुंजय स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री शत्रुंजय गिरि तीरथ सार । गिरिवर मांहे जेम मेरु उदार । ठा  
कुरराम अपार । मंत्र मांहिं नवकारज जाणुं । तारा मांहे जेम चंद्र बखाणुं ।  
जलधर मांहे जल जाणुं । पंखी मांहे जेम उत्तम हंस । कुल मांहे जिम  
रूपजनो वंश । नाजि तणो जे अंश । कृमावंत मांहे जेम अरिहंता । तपशू  
रा मुनिवर महंता । शत्रुंजय गिरि गुणवंता ॥ १ ॥ रूपज अजित संजव  
अनिनंदा । सुमतिनाथ सुख पूनम चंदा । पद्म प्रज सुख कंदा । श्रीसुपा  
र्य चंद्रप्रज सुविधी । शीतल श्रेयांस सेवो बहु बुद्धी । वासुपूज्य मति सुद्धी  
विमल अनंत जिन धर्म ए शांती । कंथु अर मखि नमुं एकांती । मुनिसुव्रत  
शुद्ध पंथी । नमी पाशने वीर चौवीश । नेम विना ए जिन त्रेवीश । सिद्ध  
गिरि आव्या ईश ॥ २ ॥ नरतराय जिन साथे बोले । स्वामी शत्रुंजय गिर  
कुण तोले । जिनहुं वचन अमोले । रूपज कहे सुणो नरतराय । ठहरी पा



लंता जे नरजाय । पातिक चूको थाय । पशु पंखी जेइए गिरि आवे । जव  
 त्रीजे ते सिद्धज थावे । अजरामर पद पावे । जिनमतमें शेडुंजो वखाण्यो ।  
 ते में आगम दिलमांहे आय्यो । सुणतां सुख उरआण्यो ॥ २ ॥ संघ पति  
 जस्त नरेसर आवे । सोवन तणां प्रासाद करावे । मणिमय मूरति ठावे । ना  
 निराया मरुदेवी माता । ब्राह्मी सुंदरी वहेन विख्याता । मूर्ति नवाणुं भ्राता  
 गोमुखनें चक्रेसरी देवी । शेडुंजय सार करे नित्य मेवी । तपगढ ऊपर हेवी  
 श्रीविजय सेन सूरीश्वर राया । श्री विजयदेवसूरी प्रणमी पाया । रुषज दास  
 गुणगाया ॥ ४ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सीमंधर जिन स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ महाविदेहखेत्रें सीमंधर स्वामी सोनाना सिंहासणजी । रूपानां  
 कोशीशा विराजे रत्नना दीवा दीपेजी । कुंकुमवर्णी गहुंली विराजे मोतीना  
 अद्भुत सारजी । त्यां बेठा सीमंधर स्वामी बोलै मधुरी वाणीजी ॥ १ ॥  
 केशर चंदन जरीरे कचोली । कस्तूरी वरासजी । पहलीरे पूजा अमारीरे  
 होजो जगम ते परजातजी ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सामायक लेवा विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम उंचे आसनें पुस्तक प्रमुख मुंकीनें । श्रावक, श्राविका, कटा  
 सणुं । मुहपत्ती, चरवलो लई । शुद्ध वस्त्रपहरी । जग्या पुंजी । कटासण ऊपर  
 बेशी, मुहपत्ती नावा हाथमां मुख पासें राखी । जमणो हाथ थापना जी सन्मु  
 ख राखी । एक नवकार गणी ( पंचिदिअ ) कही । इठामि खमासमण देई । इरि  
 या वहिया । तस्सउत्तरी । अन्नत्थ ऊससिएणं । कहै । एक लोगस्सनो ( अथवा )  
 चार नवकारनो क्राउसगग करे ( पारी ) प्रगट लोगस्स कहै । खमासमण  
 देई । इठ्ठाकारेण संधिसह जगवन् सामायक मुहपत्ती पन्निजेहुं ॥ इठ्ठं ॥  
 इमकही । मुहपत्ती, तथा, अंगनी पन्निजेहणना पंचाश बोल कही । मुहपत्ती  
 पन्निजेहीऐं । पत्ती खमासमण देई । इठ्ठाकारेण संधिसह जगवन् सामायक  
 संधिस्साउं ॥ इठ्ठं ॥ वली खमासमण देई । इठ्ठा० ॥ सामायक गानुं ॥ इ  
 ठ्ठं ॥ एम कही । बे हाथ जोम्नी । एक नवकार गणी । इठ्ठकार जगवन्  
 पसाय करी सामायक दंरुक उचरावोजी । पत्ती गुरु प्रमुख बनेज करेमि

जंते कहे । पढी खमासमण देई । इन्हा० वैसणो संदिस्सां ॥ खमा०  
इन्हा० ॥ वैसणो ठां ॥ खमा० इन्हा० ॥ सिझाय संदिस्सां ॥ खमा०  
इन्हा० ॥ सझाय करुं । इहं । एम कही । त्रण नवकार गणवा । पढी वे  
धनी सझाय धर्म ध्यान करुं । इति सामायक लेवानी विधि ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ सामायिक पारवा विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ खमासमण देई । इरिया वही पम्किमाथी (यावत्) लोगस्स सूधी  
कही ॥ खमा० ॥ इन्हा० ॥ मुहपत्ती पम्किहेहुं (एम कही) मुहपत्ती पम्किजे  
ही । खमासमण देई ॥ इन्हा० ॥ सामायिक पारुं । यथाशक्ती । वली खमास  
मण देई ॥ इन्हा० ॥ सामायिक पारयुं तहत्ती कही । पढी जमणो हाथ  
चरवला ऊपर अथवा कटासणा ऊपर थापी । एक नवकार गणी (सामाइय  
वयजुत्तो०) कहिए ॥ पढी जमणो हाथ थापना सामो सबलो राखीने एक  
नवकार गणीअें ॥ इति सामायिक पारवानो विधि ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ दैवशिक प्रतिक्रमण विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम सामायिक लीजें । पाणी वावरयुं होय (तो) मुहप  
त्ती पडि लेहवी । अनें आहार वावरयो होय (तो) वांदणां वेदेवा । तिहा बी  
जा वांदणांमां (आवसीआए) ए पाठन कहेवो । पढी यथा शक्ति पच्चरखा  
ए करुं । पढी खमासमण देई । इन्हा० कही । वनेरायें (अथवा) पोतें ।  
चैत्यवंदन कहेवुं । पढी जंकिंचि० । नमोय्युणं० कही । ऊजाथईने । अरिहंतचे  
इयाणं कही । एक नवकारनो काऊत्सग्ग करी । नमोऽर्हत्० । कहीनें । प्रथम  
थुई कहेवी ॥ पढी । लोगस्स० सबलोए अरिहंत चेइयाणं कही । एक नवकार  
नो काऊत्सग्ग पारीनें । बीजी थुई कहेवी ॥ पढी पुल्लवरदी० कही । सु  
अस्म जगवओ करेमि काऊत्सग्गं । वंदण० । कही । एक नवकारनो काऊ  
त्सग्ग पारी । बीजी थुई कहेवी । पढी सिझाणं बुझाणं कही । वेयावच्च ग  
राणं० करेमि काऊत्सग्गं । अन्नत्थू० । कही । एक नवकारनो काऊत्सग्ग  
पारी । नमोऽर्हत्० । कही । चौथी थुई कहेवी ॥ पढी वेशीनें नमोय्युणं कहेवुं  
(पढी) चार खमासमण देवापूर्वक । जगवानः आचार्यः उपाध्यायः सर्व सा  
धुभ्यः । प्रते थोज वंदन करीयें । पढी इन्हाकरेण० ॥ (दैवसिक प्रतिक्रमण.

ठातं ) एम कही । जमणो हाथ, चवला अथवा कटासणा ऊपर थापीने । इहं  
 सबस्सवि देवसिअ० ॥ कहेवुं ॥ पढी ऊजा थई । करेमि जंतें । इहामि ठामि  
 काउसग्गं । जोमे देवसिअो० ॥ तस्स उत्तरी० कहीनें ॥ अतीचारनी आठ  
 गाथानो काउसग्ग करवो । आठ गाथा न आवडे तो आठ नवकारनो का  
 उसग्ग करवो ॥ ते काउस्सग पारीनें लोगस्स कहवो । पढी बेसीनें । वीजा  
 आवश्यकनी सुहपत्ती पडिलेहीनें । वांदणा बे देवां ॥ पढी ऊजा थईनें । इह्वा  
 कारे० ॥ देवसिअं आलोउं ॥ इहं आलोएमि जोमे देवसिअो० ॥ कहीने  
 सात लाख कहेवा । पढी अठार पापस्थानक आलोइनें । सबस्सवि देवसि  
 अ । कहीने बेसवुं । बेसीनें एक नवकार गणी । करेमि जंतें । इहामि पमि  
 क्कमिउं कहीने ॥ वंदित्तु कहेवुं ॥ पढी वांदणां बे देवा । पढी । अष्टुठिओहं ।  
 अष्टितर देवमिअं खामीनें । वांदणां बे देवा । पढी ऊजा थई आयरिय उ  
 वझाए, कहीने । करेमि जंतें० ॥ इहामि ठामि० जोमे देवसिअो० ॥ तस्स  
 उत्तरी० ॥ कही । बे लोगस्स, अथवा, आठ नवकारनो काउसग्ग करवो । ते  
 पारीनें लोगस्स कही । सबलोए अरिहंत चेइयाणं । वंदण० कही । एक लोग  
 स्स ( अथवा ) चार नवकारनो काउसग्ग पारीनें । पुख्खवरदी० ॥ सुअस्स  
 जगवओ करेमि० ॥ वंदण० करीनें । एक लोगस्स ( अथवा ) चार नवका  
 रनो काउसग्ग करवो । ते पारीनें । सिद्धाणं बुद्धाणं० कही । सुअ देवया  
 ए करेमि काउसग्गं । अन्नत्थू० कही । एक नवकारनो काउसग्ग  
 करवो । ते पारी । नमोऽर्हत्० कही । ( पुरुषे ) सुय देवयानी पहेली  
 थुई कहेवी ( अने ) स्त्रीयें, कमल दलनी पहेली थुई कहेवी । पढी  
 खेत्र देवयाए करेमि काउसग्गं० ॥ एक नवकारनो काउसग्ग पारी ।  
 नमोऽर्हत्० कही । क्षेत्र देवतानी बीजी थुई । स्त्रीयें ( तथा ) पुरुषे वनेनें  
 कहेवी । पढी एक नवकार प्रगट गुणी ( बेसीने ) ठा आवश्यकनी सुह  
 पत्ती पडिलेहीने । बे वांदणां दीजे ( पढी ) सामायक, चउवीसथ्यो, वंदनक, प  
 मिकमणुं, काउसग्ग, अने पच्चखाण, करवुंजी । एम ए उ आवश्यक संज्ञा  
 रवा । पढी इहामो अणुसद्धिं । नमो खमासमणाणं० । कही । नमोऽर्हत्०  
 कहीनें पुरुष । नमोस्तु वर्धमानाय । कहे । अने स्त्रीयां संसार दावानी थुई त्रण

कहे । पत्नी नमोऽस्तुते कही स्तवन कहेवुं (पत्नी) वरकनक कही जगवान् आदे  
वांदवा । पत्नी जमणो हाथ उपधी ऊपर थापी । अद्वाइजोसु कहेवुं । पत्नी दे  
वसिअ पायडित्तनो कानसग्ग चार लोगस्स (अथवा) शोल नवकारनो क  
खो । ते कानसग्ग पारी । प्रगट लोगस्स कही । वेसीने । खमासमण देइ । इ  
द्वा० । सिझाय संदिसानं । विजुं खमासमण देई । इद्वा० सिझाय जणुं । एम  
सिझायनो आदेश मागी । एक नवकार गणी । सिझाय कहवी । पत्नी एक  
नवकार गणी । खमासमण देई दुःखखल्वओ कम्मखल्वओ नो कानसग्ग ।  
चार लोगस्सनो संपूर्ण (अथवा) शोल नवकारनो करवो । ते एक वनेरें  
(अथवा) पोतें पारीने । नमों ऽर्हत कही । लघुशांति कहीनें । प्रगट  
लोगस्स कहे (पत्नी) इरिया वही० ॥ तस्स उत्तरी० ॥ कही ॥ एक  
लोगस्स (अथवा) चार नवकारो कानसग्ग करी । प्रगट लोगस्स  
कहेवो । पत्नी चण्णसाय० ॥ नमुऽस्तुते कही ॥ जावन्ति वे । क  
हीने । ज्वसग्ग हरं० ॥ जयवीयराय० कही । मुहपत्ती पडिलेहवी । पत्नी  
इद्दामि० ॥ इद्वा० सामायिक पारं यथाशक्ति । इद्दामि० । इद्वा का० ॥  
सामायिक पास्सुं, तहत्ति कही पत्नी जमणो हाथ उपधी ऊपर थापी । ए  
क नवकार गणीने सामाइअ वयजुत्तो कहेवुं । पत्नी थापोलि स्थापना  
होय तो एक नवकार गणी उठे । एवं प्रतिक्रमण विधि कह्यो । वा  
की अंतरविधि मोहोटाथी समजवो । इति देवसी प्रतिक्रमण विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ राई प्रतिक्रमण विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम पूर्वली रीतें सामायिक लेवूं । पत्नी । इद्वा० । इद्वा० । कही  
कुसुमिण दुसमिणनो कानसग्ग चार लोगस्सनो (अथवा) शोल नव  
कारनो करी । पारी । प्रगट लोगस्स कहेवो । पत्नी खमासमण देई ।  
जगचिंतामणिनुं चैत्यवंदन जय वीयराय सुधी कहेवुं । पत्नी चार खमा  
सण पूर्वक । जगवान् । आचार्य । उपाध्याय । अनें सर्व साधु । प्रत्येकें  
वांदवा । पत्नी खमासमण वे देइ । सिझायनो आदेश मांगी । एक नवकार  
गणीनें । जरहे सरनी सिझाय कहीने (पारी) एक नवकार गणवो । पत्नी इद्वा  
कार सुहराईनो पाठ कहेवो । पत्नी इद्वाका० । राई प्रतिक्रमण ठाऊं । क

हीने । जमणो हाथ उपधी ऊपर थापीने । पढी । इहं सबस्सवि राइय दु  
 च्चितिय० ॥ कही । नमोत्थुणं ( तथा ) करेमि जंते कही । इहामि ठामि काउ  
 सग्गं० ॥ तस्स उत्तरी० कही ॥ एक लोगस्स ( अथवा ) चार नवकारनो का  
 उस्सग्ग । पारीनें । प्रगट लोगस्स कही । सबलोए अरिहंत० । कही । एक  
 लोगस्स ( अथवा ) चार नवकारनो काउसग्ग करवो । पढी । पुख्खर  
 वरदी० ॥ सुअस्स० ॥ वंदण० ॥ कही । अताचारनी आठ गाथानो ( अथवा )  
 न आवमे तो । आठ नवकारनो काउस्सग्ग पारी । सिघाणं बुघाणं कही  
 नें । त्रीजा आवश्यकनी सुहपत्ती पमिलेही । वांदणां वे देवा । ( तिहांथी  
 लेनें ) अण्णुठिओ खामि । वांदणां वे दीजें ( तिहां सुधी ) देवसीनी रीतें  
 जाणवुं । पण ( जे ) ठेकाणे देवसिअं आवे ( ते ) ठेकाणे राइयं कहेवुं ।  
 पढी आयरिअ उवझाए० ॥ करेमि जंते० ॥ इहामि ठामि० ॥ तस्स उ  
 त्तरी० कही ॥ तपचिंतामणि करतां न आवमे तो । चार लोगस्स ( अथवा )  
 शोल नवकारनो काउस्सग्ग करवो । ते पारी प्रगट लोगस्स कही । ठा  
 आवश्यकनी सुहपत्ती पमिलेही । वांदणां वे देवा । ( पढी ) सकल तीर्थ वंदन  
 करीनें । यथाशक्तियें पच्चख्खाण करवुं । पढी इह्वाकारेण संदिसह जगवन् ।  
 सामायिक, चउवीसत्थो, वंदन, पमिक्खण, काउसग्ग, पच्चख्खाण, क  
 र्खुं ठे जी । एम ठ आवश्यक संजारवा । पढी पच्चख्खाण करखुं होय तो  
 करखुं ठे जी ( अने ) धारखुं होय तो धारखुं ठेजी । एम कहेवुं । पढी इह्वा  
 मो अणुसंठिं० नमो खमासमणाणं० ॥ नमोऽर्हत्० । कहीने । विशाल  
 लोचन० ॥ नमोत्थुणं० ॥ अरिहंत चेइयाणं० ॥ कही । एक नवकारनो  
 काउसग्ग पारी । नमोऽर्हत् कही । कल्याणकंदं नी प्रथम थोय कहेवी  
 पढी लोगस्स० । पुख्खरवरदी० ॥ सिघाणं बुघाणं० कही ॥ अनुक्रमें चार  
 थोयो कहीए ठीए ( तिहां सुधी ) सर्व कहेवुं । पढी नमोत्थुणं० कही । जग  
 वान् आदि चारने । चार खमासमणें वांदवा । पढी जमणो हाथ उपधी ऊपर  
 थापी । अट्टाइज्जेसु कहेवुं । ( पढी ) सीमंधरस्वामीनुं चैत्यवंदन, स्तवन जयवीय  
 राय० ॥ काउसग्ग, थोय, पर्यंत कहीये । तिहां सुधी करवुं ॥ पढी खमासमण  
 पूर्वक श्रीसिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन, स्तवन, जयवीयराय, काउसग्ग० ॥

अने थोय कहीयें छियें । तिहां सुधी करुं । पणी सामायक पारवानी विधि  
नीरीते सामायक पारुं ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पक्खि प्रतिक्रमण विधि ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम दैवसिक प्रतिक्रमणमां वंदितु कही रहियें ( तिहां सुधी )  
सर्व कहेवूं । पण चैत्यवंदन, सकजाऽर्हतनुं, कहेवूं । अने थोयो, स्नातस्यानी  
कहेवी । पणी खमासमण देईनें । इच्छाकारेण संदिसह जगवान् । देवसिअं आ  
लोईअं पम्किंता । इच्छाकारेण० ॥ पक्खि मुहपात्ति पम्फिलेहुं । एम कही मुह  
पत्ती पम्फिलेहिये । पणी वांदणां वे दीजें । पणी इच्छाकारे० संबुद्धा खामणे  
णं अप्रुच्छिओहं अप्रितर । पक्खिअं खामेजुं इत्थं खामेमि पक्खिअं । पन्नरस  
दिवसाणं । पन्नरस राइआणं । जंकिंचि अपत्तियं० कही । इच्छाकारेण सं० ॥  
पक्खिअं आलोएमि इत्थं आलोएमि । जो मे पक्खिओ अईआरोकओ  
कही । इच्छाकारेण सं० ॥ पक्खी अतीचार आलोजुं ( एम कही ) वृद्धअतीचार  
कहियें । पणी एवंकारे आवक्तणे धर्मे श्री समकित मूल वारवत । एकशो चो  
वीश अतीचार मांहे । जे कोई अतीचार । पक्ख दिवस मांहे । सूक्ष्म वादर  
जाणतां अजाणतां हुओ होय तेसवे हुं मने वचने कायायें करी मिठामि  
डुक्कर्म ॥ सबस्सवि पक्खिअं डुच्चित्तिअ । डुप्पासिय । डुच्चिच्छिअ । इच्छाकारेण  
संदिसह जगवन् तस्स मिठामि डुक्कर्म ॥ इच्छाकारे जगवन् पसाओ करी प  
क्खीय तप प्रसाद करोजी । एम उच्चार करी आवी रीतें कहिए ॥ चउथ्येण  
एक उपवास । वे आंबिल । त्रण नीवि । चार एकासणा । आठ वे आसणा  
वे हजार सज्जाय । यथाशक्ति तपकरी प्रवेश करघो होय ( तो ) पइछी कहीए  
करवो होय ( तो ) तहत्ति कहीयें । न करवो होय ( तो ) अण बोल्या रही  
अं । पणी वांदणा ( वे ) दीजे । पणी इच्छाका० ॥ पत्तेअ खामणेणं अप्रुच्छि  
ओहं अप्रितर । पक्खिअं खामेजुं । इत्थं खामेमि पक्खिअं । पन्नरस दिवसाणं ।  
पन्नरस राइयाणं । जंकिंचि अपत्तियं० ॥ पणी वांदणा ( वे ) दीजें । पणी दे  
वसिअं आलोईअं पम्किंता । इच्छाका० ॥ जगवन्० पक्खिअं पम्फिमुं । स  
म्पं पम्फिमामि ॥ इत्थं ॥ एम कही । करेमिज्जते सामाइयं० कही ॥ इच्छामि  
पम्फिमिज्जं । जोमे पक्खिओ० कहेवो । पणी खमासमण देई । इच्छाकारेण



संदि० ॥ पक्खिसूत्रपढुं । एम कही । त्रण नवकार गणी । साधु न होय तो  
 त्रण नवकार गणीने । श्रावक वंदित्तु कहे । ( पढी ) सुअ देवयानी थुईकहेवी  
 पढी हेग बेसी । जमणो ढिंचण ऊजो राखी । एक नवकार गणी । करेमि  
 जंते० ॥ इच्चामि पडि० कही ॥ वंदित्तु कहेवुं ॥ पढी करेमिजंते० इच्चामि  
 ठामि काउसग्गं । जोमे पक्खिओ० ॥ तस्स उत्तरी० ॥ अन्नत्थ० ॥ कहीने  
 बार १२ लोगस्सनो काउसग्ग करवो ( ते लोगस्स ) चंदेसुनिम्मलयरा, सूधी  
 कहेवा ॥ ( अथवा ) अमृतालीश नवकारनो । काउसग्ग करी पारवो ॥  
 पारीनें । प्रगट लोगस्स कही । मुहपत्ती पम्फिहेहिनें । वांदणा बे दीजें । पढी  
 इच्चाका० ॥ समाप्ति खामणेणं । अश्रुष्ठिओहं अश्रितर० ॥ पक्खिअं  
 खामेऊ । इच्चं खामेमि पक्खिअं । पन्नरस दिवसाणं । पन्नरस राइ  
 याणं । जिंकिंचि अपत्तियं० कही । पढी खमासमण देईनें । इच्चाका० ॥  
 कही । पक्खि खामणा खामुं । एम कही खामणा चार खामवां ॥ पढी देव  
 सी प्रतिक्रमणामा वंदित्तु कह्या पढी । बे वांदणां देईनें ( तिहांथी ) ते सामा  
 यक पारीयें । तिहां सर्व सूधी देवसीनी पेठें जाणवुं । पण । सुअ देवयानी  
 थुईनें ठेकाणें, ज्ञानादिनी थोयो कहेवी । स्तवन अजित शांतिनुं कहेवुं ।  
 सज्जायनें ठिकाणें ऊवसग्गहरं ( तथा ) संसारदावानी थुई । चार कहेवी ॥  
 अनें लघुशांतिनें ठेकाणे मोहटी शांति कहेवी ॥ ❀ ॥ इति पक्खी प्रति० ॥

॥ ❀ ॥ अथ चौमासी प्रतिक्रमण विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ये ऊपर कह्या मुजव पक्खिना विधि प्रमाणे करवुं ( पण ) एदळुं  
 विशेष । जे बार लोगस्सना काउसग्गने ठेकाणे ( वीश ) लोगस्सनो काउस  
 ग्ग करवो ( अनें ) पक्खिना आगारनें ठिकाणे । चउमाशीना केहवा । यथा ।  
 तपनें ठेकाणे । ठठेणं बे उपवास । बार आंबिल । ठ निवी । आठ एकाश  
 णा शोल बे आसणा । चार हजार सज्जाय । ए रीते कहीए ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ संवत्सरी प्रतिक्रमण विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ एणऊपर लख्या मुजव । पक्खिना विधि प्रमाणे करवुं  
 ( पण ) बार लोगस्सना काउसग्गने ठेकाणे । चालीश लोगस्स ( अथवा ) ए  
 कशोनें शाठ नवकारनो काउसग्ग करवो ( अनें ) तपनें ठेकाणे । अठम जंते

( एटले ) त्रण उपवास ठ आंविज । नवनीवि । बार एकासणां । चौवीस वेआ सणां अने ठ हजार सझाय ( ए रीते कहेवुं ) अने पस्खिना आगारने ठेकाणें संवत्सरीना आगार कहेवा ॥ इति पंच प्रतिक्रमण विधिः संपूर्णः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पडिलेहण करवानो विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नवकार पांचिदिअ कही । इरीयावही पम्किमवी । थापना होय तो नवकार पांचिदिअ न कहेवुं । पढी तस्सउत्तरी कही । एक लोगस्स (अथ वा ) चार नवकारनो काज्जसग करी ! प्रगट लोगस्स कही । ऊजे पगे बेसी मुहपत्ति, चखलो, कटासणुं, उत्तरासण, धोतीजं, कंदोरो, आदिनो पम्फिलेहण करवूं । पढी काजो काढी । जीव कलेवर सचित्त आदि जोवुं । पढी काजो कहाम्नार थापनाजी सन्मुख ऊजो रही । इरिया वही पम्किमें । पढी । का जो परठववा जग्या शोधी । त्रणवार अणुजाणह जस्सगो कही । काजो परठवे । पढी त्रण वार, वोसिरे, कहे ॥ इति पडिलेहण करवानो विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पञ्चखाण पारवानो विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम इरियावहियाए पम्किमीयें ( पढी ) जगींचतामणिनुं चइत्यवंदन । जयवीयराय सुधी करवुं ( पढी ) मन्हजिणाणंती मझाय कही मुहपत्ती पम्फिलेही । इठामि ० ॥ इठका ० ॥ पञ्चखाण पारुं । यथाशक्ति इठामि ० ॥ इठका ० ॥ पञ्चखाण पारवुं । तहत्ति । एम कही । जमणो हाथ, कटासणां ( अथवा ) चखला ऊपर थापी एक नवकार गणी । पञ्चखाण करवुं होय ते कहेवुं । ते जखीयें जीयें ॥ उग्गएसूरे नमुकार सहिअं । पोरिसिं साढपोरसिं । गंठिसहियं मुंठिसहिअं पञ्चखाण करवुं चउविहार । आंविज, नीवि, एकासणुं, वे आसणुं, करवुं तीविहार । पञ्चखाण फासि अं । पालिअं । सोहिअं । तीरिअं । किट्ठिअं । आराहिअं । जंच न आरा हिअं । तस्स मिठामि पुक्कं । एमकही । एक नवकार गणवो ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीमहावीरजिन ठंद ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सेवो वीरनें चित्तमां नित्यधारो । अरिक्कोधनें मन्नथा दूरवारो । संतोष वृत्ती धरो चित्तमांहिं । राग द्वेषथा दूर थाओ उठ्ठाहिं ॥ १ ॥ पड्या मोहना पासमां जेह प्राणी । शुद्ध तत्त्वनी वात तेणें न जाणी । मनु जन्म

पामी वृथा कां गमोढो । जैन मार्ग ठंमी जुलाकां जमोढो ॥ २ ॥ अलो  
 जी अमानी नीरागी तजोढो । सलोजी समानी सरागी जजोढो । हरी ह  
 रादि अन्यथी शुं रमोढो । नदी गंग सूकी गलीमा पडोढो ॥ ३ ॥ केइ देव  
 हाथें असि चक्र धारा । केइ देव घाले गले रुंफ माला । केइ देव  
 उत्संगें राखे ठे वामा । केइ देव साथें रमें वृंद रामा ॥ ४ ॥ केइ देव जपे ले  
 ई जपमाला । केइ मांसजही महाविकराला । केइ योगिणी जोगिणी जोग  
 रागें । केइ रुद्रणी ठागनो होम मांगे ॥ ५ ॥ इसा देव देवी तणी आश  
 राखे । तदा मुक्तिनां सुःखने केम चाखे । जदा लोभना थोकनो पार ना  
 व्यो । यदा मधनो विंदुओ मन्नजाव्यो ॥ ६ ॥ जेह देवलां आपणी आ  
 श राखे । तेह पिंमनें मन्नशुं लेअ चाखे । दीन हीननी जीरु ते केम  
 जाजे । फुटो ढोल होये कहो केम वाजे ॥ ७ ॥ अरे मूढ भ्राता जजो  
 मोह दाता । अलोजी प्रचूने जजो विश्वख्याता । रत्न चिंता म  
 णि सारिखो एह साचो । कलंकी काचना पिंडशुं मत राचो ॥ ८ ॥ मंद  
 बुद्धी जेह प्राणी कहेढे । सवि धर्म एकत्व चूलो जमेढे । कीहां सर्ववाने  
 कीहां मेरु धीरं । कीहां कायरानें कीहां शूखीरं ॥ ९ ॥ कीहां स्वर्णथालं  
 कीहां कुंजखंमं । कीहां कोद्रवानें कीहां खीरमंडं । कीहां खीरसिंधु कीहां  
 द्वारनीरं । कीहां कामधेनु कीहां ठागखीरं ॥ १० ॥ कीहां सत्यवाचा की  
 हां कूडवाणी । कीहां रंकनारी कीहां रायराणी । कीहां नारकीनें कीहां  
 देव जोगी । कीहां इंद्र देही कीहां कुष्ट रोगी ॥ ११ ॥ कीहां कर्म वाती  
 कीहां कर्म धारी । नमो वीर स्वामी जजोअन्य वारी । जिसी सेजमां स्व  
 मथी राज्यपामी । राचे मंदबुद्धि हरि जेह स्वामी ॥ १२ ॥ अथिर सुःख सं  
 सारमां मन्न माचें । जना मूढमा श्रेष्ठशुं इष्ट वाजे । तजो मोह माया ह  
 रो दंजरोशी । सजो पुण्य पोशी जजो ते अरोशी ॥ १३ ॥ गति चार सं  
 सार अपार पामी । आव्या आश धारी प्रचू पाय स्वामी । तुहीं तुहीं तु  
 हीं प्रचू पर्मे रागी । जव फेरनी श्रृंखला मोह जागी ॥ १४ ॥ मानीये वीर  
 जी अर्जने एक मोरी । दीजे दासकुं सेवना चरण तोरी । पुण्य उदय हुओ  
 गुरु आज मेरो । विवेकें लहो में प्रचू दर्श तेरो ॥ १५ ॥ इति ॥ ॥ॐ॥

॥ ❀ ॥ अथ नवकारनो ढंद ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ वंढित पूरे विविध परें । श्री जिन शासन सार । निश्चै  
थीनवकार नित । जपतां जय जयकार ॥ १ ॥ अरुशठ अक्षर अधिक  
फल । नव पद नवे निधान । वीतराग श्रीमुख वदे । पंच परमेष्टि प्रधान  
॥ २ ॥ एकज अक्षर एक चित्त । समरथां संपति थाय । संचित सागर सा  
तनां । पातक दूर पुलाय ॥ ३ ॥ सकल मंत्र शिर मुकुट मणि । सद्गुरु ज्ञाषि  
त सार । सो ज्ञावियां मन शुद्धशुं । नित जपीयें नवकार ॥ ४ ॥ (ढंद हाटकी )  
नवकार थकी श्रीपाल नरेशर पाम्यो राज्य प्रसिद्ध । समशान विषे शिव  
नाम कुमरनें सोवन पुरिसो सिद्ध । नवलाख जपंता नरक निवारे पामें  
जवनो पार । सो ज्ञावियां जत्ते चोखें चित्तें नित जपीयें नवकार ॥ ५ ॥  
बांधी वरुशाखा ठीकें वेसी हेठल कुंरु हुताश । तस्करनें मंत्र समर्थो  
आवकें उज्यो ते आकाश । विधिरीतें जप्यां विषधर विष टाले ढाले  
अमृत धार ॥ सो० ॥ ६ ॥ बीजोरा कारण राय महाबल व्यंतर दुष्ट  
विरोध । जेणें नवकारें हत्या टाली पाम्यो यहू प्रतिबोध । नवलाख जपंतां  
थाये जिनवर इत्योढे अधिकार ॥ सो० ॥ ७ ॥ पक्षीपति शीख्यो  
मुनिवर पासें महा मंत्र मन शुद्ध । परजव ते राजसिंह पृथिवीपति पाम्यो  
परिगल रिद्ध । ए मंत्रथकी अमरापुर पोहतो चारुदत्त सुविचार ॥ सो० ॥  
॥ ८ ॥ संन्यासी काशी तप साधंतो पंचाग्नि परजाळे । दीठो श्रीपास  
कुमारे पन्नग अधवलतो ते टाले । संजलाव्यो श्रीनवकार स्वयंमुख इंद्र  
जुवन अवतार ॥ सो० ॥ ॥ ९ ॥ मनुशुद्धे जपतां मयणासुंदरी पामी प्रिय  
संयोग । इण ध्यानं कुष्ट टल्युं नुंवरनुं रगत पित्तनो रोग । नि  
श्चैशुं जपतां नवनिध थाये धर्म तणो आधार ॥ सो० ॥ १० ॥ घटमांहि  
कृष्ण जुजंगम घाल्यो । घरणी करवा घात । परमेष्टि प्रजावें हार फूलनो  
वसुधा मांहि विख्यात ॥ कमलावतीये पिंगल कीधो पाप तणो परिहार  
॥ सो० ॥ ११ ॥ गयणांगण जाती राखी गिहिणी पामी बाण प्रहार । पद  
पंच सुणंतां पांडुपति घर ते थइ कुंतानार । ए मंत्र अमूलक महिमा मंदिर  
जवदुःख जंजणहार ॥ सो० ॥ १२ ॥ कंवल संवर्ले कादव काढ्यां शकट

पांचशै माल । दीधे नवकारें गया देवलोकेँ विलसे अमर विमान । ए मं  
 त्रथकी संपति वसुधामां लही विलसे जैन विहार ॥ सो० ॥ १३ ॥  
 आगेँ चोवीशी हुई अनंती । होशे वार अनंत । नवकार तणी कोइ आद  
 न जाणे एम जाखै अरिहंत ॥ पूरव दिशि चारे आदि प्रपंचें समरथांसंप  
 तिसार ॥ सो० ॥ १४ ॥ परमेष्ठी सुरपद ते पण पामे जे कृत कर्म क  
 ठोर ॥ पुंनरगिरिऊपर प्रत्यक्ष पेख्यो मणिधरनेँ एकमोर । सह गुरु सन्मुख  
 विधियें समरतां सफल जनम संसार ॥ सो० ॥ १५ ॥ सूजीकारोपण तस्कर  
 कीधो लोहखरो परसिद्ध । तिहांसेठें नवकार सुणाव्यो पाम्यो अमरनी रुद्ध ।  
 शेठनेँ घर आवी विघ्न निवारयो सुरें करी मनोहार ॥ सो० ॥ १६ ॥ पंचपरमेष्टि  
 ज्ञानज पंचह पंच दान चारित्र ॥ पंच सिंझाय महा व्रत पंचहु पंच सुमति  
 समकित्त । पंच प्रमाद विषय तजो पंचह पालो पंचाचार ॥ ॥ सो० ॥  
 ॥ १७ ॥ कलश (ठप्पय) नित जपीयें नवकार सार संपति सुखदाय  
 क । सिद्ध मंत्र ए शाश्वतो एम जंपेश्री जगनायक । श्री अरिहंत सुसिद्ध  
 शुद्ध आचार्य जणीजें । श्री उवझाय सुसाधु पंच परमेष्टि थुणीजें । नव  
 कार सार संसारळे । कुशल लाजवाचक कहे । एक चित्तें आराधतां विधि  
 रुद्धि वंजित लहे ॥ १८ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ पुनः नवकार बंद ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुख कारण जवियण समरुं श्रीनवकार । जिन शासन आगम  
 चउदै पूरवसार । इण मंत्रनी महिमा कहितां नलहुं पार । सुरतरु जिम  
 चितित वंजित फल दातार ॥ १ ॥ सुर दानव मानव सेव करै करजोम ।  
 जुइ मंजल विचरै तारै जवियण कोम । सुरबंदै विलसेँ अतिसय जास अनंत ।  
 पहिले पद नमियै अरि गंजन अरिहंत ॥ २ ॥ जे पनरै जेदै सिद्ध थया  
 जगवंत । पंचमि गति पुहता अष्ट करम करिहंत । कल अकल सरूपी  
 पंचा नंतक जेह । जिनवर पाय प्रणमुं बीजैपद बलि एह ॥ ३ ॥ गठ  
 जार घुरंधर सुंदर ससिहर सोम । करि सारण वारण गुणवत्तीसे थोम । श्रुत  
 जाण शिरोमणि सागर जेम गंजीर । तीजै पद नमियै आचारज गुण धीर  
 ॥ ४ ॥ श्रुतधर गुण आगम सुत्र जणावैसार । तप विध संयोगे जापै अरथ

विचार । मुनिवर गुण युक्ता ते कहियै ज्वजाय । चौथै पद नमियै अह  
निश तेहना पाय ॥ ५ ॥ पंचाश्रव टालै पालै पंचाचार । तपशी गुण धारी  
बारी विषय विकार । तस थावर पीहर लोक मांहै जे साध । त्रिविधै ते  
प्रणसुं परमारथ गुण लाध ॥ ६ ॥ अरि करि हरि सायण नायण चूत  
वेत्ताल । सवि पापपणासै थास्ये मंगल माल । इण समख्यां संकट दूरदलै  
तत्काल । जंपै जिण गुण इम सुखर सीस रसाल ॥ ७ ॥ इति नवकार स्त०

॥ ❀ ॥ अथ श्रीनवकार मंत्र आत्म रक्षा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ परमेष्ठी नमस्कारं । सारं नव पदात्मकं । आत्मरक्षा करं वज्र  
पंजरान्नं स्मराम्यहं ॥ १ ॥ ॐ नमो अरिहंताणं । शिरस्कं शिर सिस्थितं  
। ॐ नमो सब सिद्धाणं । मुखे मुख पटवरं ॥ २ ॥ ॐ नमो आयारि  
याणं । अंगरख्या तिशायिनी । ॐ नमो ज्वझायाणं । आयुधं हस्तयो दृढं ।  
ॐ नमो लोए सबसाहूणं । मोचके पादयो सुजे । एसो पंच नमुंकारो । शिला  
वज्रमईतले । सब पावप्पणासणो । वप्रो वज्र मयोवही । मंगलाणंच स  
वोसिं । खादि रंगार घातका । स्वाहां तंच पदं ग्येयं । पढमं हवइ मंगलं ।  
वप्रो परि वज्रमयं । पिधानं देहरक्षणे । महाप्रज्ञावा रक्षेयं । कुद्रो पद्रव नाशनी  
परमेष्ठी पदोद्भूता । कथिता पूर्व सूरिभिः । यश्चैवं कुरुते रक्षां । परमेष्ठी पदे  
सदा । तस्यनस्या द्वयं व्याधी । राविश्चापि कदाचनः ॥ इति आत्मरक्षाः

॥ ❀ ॥ अथ श्री शंखेश्वर पार्श्वजिन बंद ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सेवो पाश संखेसरो मन शुद्धे । नमो नाथ निश्चै करी एक बु  
द्धे । देवी देवतां अन्यनें शुं नमो गो । अहो जव्यलोको जुजा कां  
जमो गो ॥ १ ॥ त्रैलोक्यना नाथने शुं तजो गो । पड्या पाशमां चूतने कां  
जजो गो । सुरधेनु बंभी अजा शुं अजो गो । महापंथ मूंकी कुपंथे जजो  
गो ॥ २ ॥ तजे कोण चिंतामणी काचमाटे । अहे कोण रामजने हस्ति  
साटे । सुरद्रुम उपार कुण आक वावे । महा मूढ ते आकुजा अंत पावे  
॥ ३ ॥ किहां कांक्रो ने किहां मेरुशृंगं । किहां केशरीने किहां ते कुरंगं  
किहां विश्वनाथं किहां अन्य देवा । करो एकचित्तं प्रनु पाश सेवा ॥ ४ ॥  
पूजो देव प्रज्ञावती प्राणनाथं । सह जीवने जे करे ते सनाथं । महा तत्व



जाणी सदा जेह ध्यावे । तेहनां दुःख दारिद्र्य दूरें गमावे ॥ ५ ॥ पामी मा  
नुषोने वृथा कां गमो गो । कुशीलें करी देहनें कां दमो गो । नहीं मुक्तिवासं  
विना वीतरागं । जजो जगवंतं तजो दृष्टिरागं ॥ ६ ॥ उदयरत्न ज्ञाखे स  
दा हेत आणी । दयाज्जाव कीजें मोहे दास जाणी । मोरे आज मोतीयडे  
मेह वृथा । प्रभु पाश शंखेश्वरो आपतूठा ॥ ७ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीगौतमाष्टक बंद ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वीर जिणेंसर केरो शीश । गौतम नाम जपो निशदीश । जो  
कीजें गौतमनुं ध्यान । तो घर विलशै नवे निधान ॥ १ ॥ गौतम नामें गि  
रिवर चढे । मनवंडित लीला संपजे । गौतम नामें नावे रोग । गौतम नामें  
सर्व संजोग ॥ २ ॥ जे वैरी विरुआ वंक्रा । तस नामें नावे दूक्रा । चूत  
प्रेत नविमंमे प्राण । ते गौतमनां करुं वखाण ॥ ३ ॥ गौतम नामें निर्मल  
काय । गौतम नामें बाधे आय । गौतम जिनशासन शणगार । गौतम ना  
में जय जयकार ॥ ४ ॥ शाल दाल सुरहा घत गोल । मनवंडित कापड  
तंबोल । घरेसुघरणी निर्मल चित्त । गौतम नामें पुत्र विनीत्त ॥ ५ ॥ गौत  
म उदयो अविचल ज्ञाण । गौतम नाम जपो जग जाण । मोहोटा मंदिर  
मेरुसमान । गौतम नामें सफल विहाण ॥ ६ ॥ घर मयगल घोरानी जोड  
वारू विलशै वंडित कोड । महीयल मानें मोहोटा राय । जो तूठे गौतमना  
पाय ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्यां पातिक टले । उत्तम नरनी संगत मले । गौतम  
नामें निर्मल ज्ञान । गौतम नामें बाधे वान ॥ ८ ॥ पुण्यवंत अवधारो सहु ।  
गुरु गौतमना गुण ठे बहु । कहे लावाय समय कर जोरु । गौतम  
तूठे संपति कोड ॥ ९ ॥ इति ॥ १०९ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री शोल सतीनो बंद ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आदि नाथ आदें जिनवर बंदी । सफल मनोरथ कीजियें ए ।  
प्रजातें ऊठी मंगलीक कामें । शोल सतीनां नाम लीजियें ए ॥ १ ॥ बाल  
कुमारी जग हितकारी । ब्राह्मी भरतनी बेहेनमी ए । घट घट व्यापक  
अहुर रूपें । शोल सतीमांहि जे बनी ए ॥ २ ॥ बाहुबल जगिनी सतीय  
शिरोमणि । सुंदरी नामें रिषज सुता ए । अंग स्वरूपी त्रिभुवन मांहे । जे

ह अनोपम गुणलता ए ॥ ३ ॥ चंदनवाला बालपणाथी । शीयलवती शुद्ध  
 आविका ए । अरुदना बाकुला वीर प्रतिलाभ्या । केवल लही व्रत आवि  
 का ए ॥ ४ ॥ ज्यसेन धुआ धारिणी नंदनी । राजिमती नेम वल्लभा ए ।  
 जोवन वेशें कामनें जीत्यो । संजम लेइ देव दुल्लभा ए ॥ ५ ॥ पंच जर  
 तारी पांरुव नारी । द्रुपद तनया वखाणीये ए । एक शो आठे चीर पूराणां  
 शीयल महिमा तस जाणीये ए ॥ ६ ॥ दशरथ नृपनी नारी निरुपम । कौ  
 शल्या कुलचंद्रिका ए । शीयल सल्लणी राम जनेता । पुण्य तणी प्रनालि  
 का ए ॥ ७ ॥ कोशंबिक ठामें शतानिक नामें । राज्य करे रंग राजीयो ए ।  
 तस घर वरणी मृगावती सती । सुरजुवनें जश गाजीयो ए ॥ ८ ॥ सुलसा  
 साची शीयले न काची । राची नहीं विषयारसें ए । सुखहुं जोतां पाप पु  
 लाए । नाम लेतां मन जुवसे ए ॥ ९ ॥ राम रघुवंशी तेहनी कामनी । ज  
 नकसुता शीता शती ए । जग सहु जाणे धीज करंतां । अनल शीतल थ  
 यो शीयलथी ए ॥ १० ॥ काचे तांतणे चालणी बांधी । कृथाथकी जल  
 काढीयुं ए । कलंक उतारवा सतीय सुजद्रा । चंपा वार लघाडीयुं ए ॥  
 ॥ ११ ॥ सुरनर वंदित शीयल अखंभित । शिवा शिवपद गामिनी ए । जेह  
 ने नामें निर्मल थड्यें । बलिहारी तस नामनी ए ॥ १२ ॥ हस्तिनागपुरे पां  
 फुरायनी । कुंतानामें कामिनी ए । पांरुव माता दशे दशारनी । बहेन पति  
 व्रता पद्मनी ए ॥ १३ ॥ शीयलावती नामें शीलव्रत धारिणी । त्रिविधें  
 तेहनें वंदीये ए । नाम जपंतां पातिक जाए । दरिशाण दुरित निकंदियें ए  
 ॥ १४ ॥ निषधा नगरी नलहनरिंदनी । दमदंती तस गेहिनी ए । संकट पडतां  
 शीयलज राख्युं । त्रिभुवन कीर्ति जेहनी ए ॥ १५ ॥ अनंग अजीताजग  
 जन पूजित । पुष्पचूला नें प्रभावती ए । विश्व विख्याता कामितदाता । शो  
 लमीसती पदमावती ए ॥ १६ ॥ वीरें आखी शाखें साखी । उदयरतन आखे सु  
 दा ए । बाहाणुं वार्ता जे नर जणशे । ते लेशे सुख संपदा ए ॥ १७ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री तीर्थमाला स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शेरुंजय रूपन समोसरया । जला गुण प्रचारे । सीधा साधु  
 अनंत । तीर्थ ते नसुरे । तीन कल्याणक तिहां थया । सुगते गयारे । ने

मीसर गिरनार ॥ ती० ॥ १ ॥ अष्टापद एक देहरो । गिरि सेहरोरे । जस्तें  
 जराव्या विंव ॥ ती० ॥ आवू चौमुख अतिजलो । त्रिजुवन तिलोरे । विम  
 ल वसई वस्तुपाल ॥ ती० ॥ २ ॥ समेतशिखर सोहामणो । रलीयामणोरे ।  
 सीधा तीर्थकर वीश ॥ ती० ॥ नयरी चंपा निरखीये । हीये हरखीयेरे । सीधा  
 श्री वासुपूज्य ॥ ती० ॥ ३ ॥ पूर्वदिशें पावापुरी । रुद्धें जरीरे । मुक्ति गया  
 महावीर ॥ ती० ॥ जेशलमेर जुहारीयें । दुःख वारीयेरे । अरिहंत विंव अ  
 नेक ॥ ती० ॥ ४ ॥ वीकानेरज वंदीयें । चिरनंदीयेरे । अरिहंत देहरा आ  
 ठ ॥ ती० ॥ सोरिसरो शंखेश्वरो । पंचासरोरे । फलोधी थंजणपाश ॥  
 ती० ॥ ५ ॥ अंतरीक अंजावरो । अमीऊरोरे । जीरावलो जगनाथ ॥  
 ती० ॥ त्रैलोक्य दीपक देहरो । जात्रा करोरे । राणपुरें रिसहेस ॥ ती० ॥  
 ॥ ६ ॥ श्रीनामोलाई जादवो । गोमी स्तवोरे ॥ श्रीवरकाणो पाश ॥ ती० ॥  
 नंदीश्वरनां देहरा । बावन जलारे । रुचक कुंफले चार चार ॥ ती० ॥ ७ ॥  
 शाश्वती अशाश्वती । प्रतिमा उतीरे । स्वर्ग मृत्यु पाताल ॥ ती० ॥ तीर्थ जात्रा  
 फल तिहां । होजो मुज इहांरे । समयसुंदर कहे एम ॥ ती० ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री राणकपुरजीतुं स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीराणपुरो रलीयामणुंरे लाल । श्री आदीसर देव । मन मो  
 हुरे । उत्तंग तोरण देहसुरे ला० ॥ निरखीजें नित्यमेव ॥ म० ॥ १ ॥ च  
 नवीश मंरुप चिहुं दिशेरे ला० ॥ चनुमुख प्रतिमा चार ॥ म० ॥ त्रिजुव  
 नदीपक देहरेरे ला० ॥ समोवरु नहीं संसार ॥ म० ॥ श्री० ॥ २ ॥  
 देहरी चोराशी दीपतीरे ला० ॥ मांड्यो अष्टापद मेर ॥ म० ॥ जलें  
 जुहारया ज्योयरांरे ला० ॥ सूतां ऊगी सवेर ॥ म० ॥ श्री० ॥  
 ॥ ३ ॥ देश जाणीतुं देहसुरे ला० ॥ मोटो देश मेवारु ॥ म० ॥ लख्ख  
 नवाणुं लगावि यारे ला० ॥ धन धनो पोरवारु ॥ म० ॥ श्री० ॥ ४ ॥ ख  
 स्तर वसई स्वांतशुरे ला० ॥ निरखंतां सुख थाय ॥ म० ॥ पांच प्राशाद वी  
 जा वलीरे ला० ॥ जोतां पातिक जाय ॥ म० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ आज कृता  
 रथ हुं थयोरे ला० ॥ आज जयो आणंद ॥ म० ॥ यात्रा करी जिनवर  
 तणीरे ला० ॥ दूरें गयुं दुख दंद ॥ म० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ संवत शोज

ठियंतैरे ला० ॥ मागशिर माश मजार ॥ म० ॥ राण पुं यात्रा करैरे  
ला० ॥ समयसुंदर सुखकार म० ॥ श्री० ॥ ७ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री सोमंधर जिन स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुक्खजवइ विजयें जयैरे । नयरी पुंमरीगणी सार । श्री  
सोमंधर साहिवारे । राय श्रेयांस कुमार । ( जिणंदराय धरज्यो धर्म सनेह )  
॥ १ ॥ ( आंकणी ) ॥ मोहोटा न्हाना अंतरोरे । गिरुआ नवि  
दाखंत । शशि दारिशाण सायर वधैरे । कैख वन विकसंत ॥ जि० ॥ २ ॥  
ठाम कुठाम न लेखवैरे । जग वरसंत जलधार । करदोय कुसुमें वासियैरे ।  
ढाया सवि आधार ॥ जि० ॥ ३ ॥ राय नें रंक सरिखा गणें रे । उद्योतें श  
शि सूर । गंगाजल ते विहु तणा रे । ताप करे सवि दूर ॥ जि० ॥ ४ ॥  
सरिखा सहुने तारवा रे । तिम तुमे ठो महाराज । सुजशुं अंतर किम क  
रो रे । बांह ग्रहानी लाज ॥ जि० ॥ ५ ॥ मुख देखी दीलुं करे रे । ते न  
वि होय प्रमाण । मुजरो माने सवि तणो रे । साहिव तेह सुजाण ॥ जि०  
॥ ६ ॥ वृषजलंजन माता सत्यकी रे । नंदन रुक्मणी कंत । वाचक जश  
इम वीनवे रे । जयजंजन जगवंत ॥ जि० ॥ ७ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री महावीर स्वामीनुं हालरिजं प्रारंज ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ माता विशला जुलावे पुत्र पालणे । गावे हालो हालो हालखानां  
गीत । सोना रूपानें वली रत्न जमिजं पालणुं । रेशम दोरी वूधरी वागे बुम  
बुम रीत । हालो हालो हालो हालो मारा नंदन ॥ १ ॥ जिनजी पार्थ प्रनुथी  
वरस अहीशे अंतरें । होशे चोवीशमो तीर्थकर जिन परमाण । केशी स्वा  
मी मुखथी पवी वाणी सांजर्ला । साची साची हुइ ते मारे अमृत वाण ।  
हा० ॥ २ ॥ चौदे स्वपनें होवे चक्रीके जिनराज । बीता वारे चक्री नहि  
हुवे चक्री राज । जिनजी पाश प्रनुना श्री केशी गणधार । तेहने वचनें  
जाण्या चोवीशमा जिनराज । मारी कुखें आव्या तारण तरण जिहाज ।  
मारी कुखें आव्या त्राय नुवन शिर ताज । मारी कुखें आव्या संव तीर  
थनी लाज । हुंतो शुण्य पनोती इंद्राणी थइ आज ॥ हा० ॥ सुजलें डो  
होलो उपन्यो जे वेसुं गज अंवाणीये । सिंहासन पर वेसुं चामर उत्र ध

राय । ए सह लक्ष्मण सुजने नंदन ताहरा तेजना । तेदिन संभारुने अनं  
 द अंग न माय ॥ हा० ॥ ३ ॥ करतल पगतल लक्ष्मण एक हजारनें आ  
 ठ ठे । तेहथी निश्चय जाण्या जिनवर श्री जगदीश । नंदन जमणी जंगें  
 लंछन सिंह विराजतो । में पहले सुपने दीठो विशवा वीश ॥ हा० ॥ ५ ॥  
 नंदन नवला बंधव नंदीवर्धनना तमे । नंदन जोजाइयोना देवरुओ सुकुमाल  
 हसशे जोजाइयो कही देवर माहरा लाम्का । हसशे रमशेनें वली चुंटी  
 खणशे गाल । हसशे रमशे ने वली तुंसा देशे गाल ॥ हा० ॥ ६ ॥  
 नंदन नवला चेना राजाना जाणेजठो । नंदन नवला पांचशें मामीना जाणे  
 ज ठो । नंदन मामलिआना जाणेजा सुकुमाल । हसशे हाथे उ  
 ठाली कहीने नाहना जाणजा । आंख्यो आंजी ने वली टवकुं करशे  
 गाल ॥ हा० ॥ ७ ॥ नंदन मामा मामी लावशे टोपी आगलां ।  
 रतने जमीआ जालर मोती कशबी कोर । नीला पीलानें वली राता स  
 खे जातिनां । पहेरावशे मामी मारा नंद किशोर ॥ हा० ॥ ८ ॥ नंदन  
 मामा मामी सूखरुली सह लावशे । नंदन गजुवे जरशे लाडू मोती  
 चूर । नंदन सुखमां जोडने लेशे मामी आमणां । नंदन मामी कहेशे जीवो  
 सुख जरपूर ॥ हा० ॥ ९ ॥ नंदन नवला चेडा मामानी साते सती । मा  
 री जत्रीजीने वेन तमारी नंद । ते पण गुंजो जरवा लाखणसाई लावशे ।  
 तुमनें जोड जोड होशे अधिको परमानंद ॥ हा० ॥ १० ॥ रमवा काजें  
 लावशे लाख टकानो धूधरो । वली शूमा मेनां पोपट ने गजराज । सार  
 स हंस कोयल तीतरने वली मोर जी । मामी लावशे रमवा नंद तमारे का  
 ज ॥ हा० ॥ ११ ॥ छप्पन कुमरी अमरी जलकलशें नवरावीआ ।  
 नंदन तमने अमनें केलीघरनी मांहे । फूलनी वृष्टि कीधी योजन एकने  
 मंजुलें । बहु चिरंजीवो आशीष दीधी तुमने त्यांहे ॥ हा० ॥ १२ ॥ तम  
 ने मेरू गिरिवर सुरपतियें नवराविआ । निरखी हरखी सुकृत लाज कमाय ।  
 सुखमा ऊपर वारुं कोटी कोटी चंद्रमा । वली तनपर वारुं ग्रह गणनो स  
 सुदाय ॥ हा० ॥ १३ ॥ नंदन नवला जणवा नीशालें पण मृंकशुं । गजपर  
 अंवाणी वेसानी मोहोटे साज । पसली जरगुं श्रीफल फोफल नागरवेजगुं ।

सुखमली लेशुं नीशाली आने काज ॥ हा० ॥ १४ ॥ नंदन नवला मोहो  
टा धाशोने परणावशुं । बहूवर सरखी जोमी लावशुं राजकुमार । सरखा  
वेवाइ वेवाणुंने पधरावशुं । वर बहू पोंखी लेशुं जोइ जोइने दीदार ॥ हा० ॥  
॥ १५ ॥ पीअर सासर मारा बेहु पकू नंदन ऊजला । माहरी कूखें  
आव्या तात पनोता नंद । माहरे आंगण वूठा अमृत दूधे मेहुला । मा  
हरे आंगण फलिआ सुरतरु सुखना कंद ॥ हा० ॥ १६ ॥ इणि परें गा  
युं माता त्रिशला सुतनुं पालणुं । जे कोइ गाशे लेशे पुत्र तणा साम्राज ।  
बलीमोरा नगरें वरणव्युं बीरुं हालरुं । जय जय मंगल होजो दीपविजय  
कविराज ॥ हा० ॥ १७ ॥ इति० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ निंदावारक सझाय ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ निंदा मकरजो कोइनी पारकीरे । निंदानां बोल्या महा पापरे  
वयर विरोध बाधे घणोरे । निंदा करतां न गणे माय वापरे ॥ निं० ॥ १ ॥  
दूर बलंती कां देखो तुहरे । पगमां बलती देखो सहु कोयरे । परना मैला  
में धोयां लूगडांरे । कहो केम ऊजला होयरे ॥ निं० ॥ २ ॥ आप सं  
जालो सहुको आपणोरे । निंदानी मूको परी टेवरे । थोमे घणे अवगुणे  
सहु प्रस्यारे । केहनां नलिया चुए केहनां नेवरे ॥ निं० ॥ ३ ॥ निंदा करे  
ते थाये नारकी रे । तप जप कीधुं सहु जायरे । निंदा करो तो करजो आ  
पणी रे । जेम बूटकवारो थायरे ॥ निं० ॥ ४ ॥ गुण ग्रहजो सहुको  
तणोरे । जेहमां देखो एक विचाररे । कृष्णपरें सुख पामशोरे । समयसुं  
दर सुखकारे ॥ निं० ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री आनंदधनजी कृत स्तवन सं० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ करम परीक्षाकरण कुमरचल्योरे ॥ ए देशी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कृष्णजिनेश्वर प्रीतम माहरोरे । ऊन चाहुंरे कंत । रीज्यो  
साहेब संग न परिहरेरे । जांगे सादि अनंत ॥ कृष्ण० ॥ १ ॥ प्रीत स  
गाईरे जगगां सहु करे रे । प्रीत सगाई न कोय । प्रीति सगाईरे निरुपाधि  
क कहरे । सोपाधिक धन सोय ॥ कृष्ण० ॥ २ ॥ कोई कंत कारण  
काष्ट प्रहृण करेरे । मिलसुं कंतने धाय ए मेलो नवि कहीवे संजोरे ।



मेलो ठाम न ठाम ॥ रुषज० ॥ ३ ॥ कोई पति रंजन अति घणो तप  
करे । पति रंजन तन ताप । ए पति रंजनमें नवि चित्त धर्युरे । रंजन  
धातु मिलाप ॥ रुषज० ॥ ४ ॥ कोई कहे लीलारे अलख अलख तणीरे ।  
लख पूरे मन आस । दोष रहित ने लीला नवि धेरे । लीला दोष वि  
लास ॥ रुषज० ॥ ५ ॥ चित्त प्रसन्नरे पूजन फल कह्युरे । पूज अखंभित  
एह । कपट रहित थई आतम अरपणारे । आनंद घन पद एह ॥ रुष० ॥ ६ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री अजित जिन स्तवनम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मारुं मन मोह्युरे श्रीविमलाचलें ॥ ए चाल ॥ ❀ ॥

पंथडो निहाळुं रे बीजा जिनतणोरे । अजित २ गुण धाम । जे तें जीत्यारे  
तेणे हुं जीतियोरे । पुरुष किस्सुं मुऊ नाम ॥ पंथ० ॥ १ ॥ चरम नयण करी  
मारग जोवतोरे । जूलो सयल संसार । जेणे नयणे करी मारगजोड्येरे । नयण  
ते दिव्य विचार ॥ पंथ० ॥ २ ॥ पुरुष परंपर अनुभव जोवतां रे । अंधो अंध पु  
लाय । वस्तु विचारें जो आगमें करी रे । तो चरण धरण नही ठाय ॥ पंथ०  
॥ ३ ॥ तर्क विचारें रे वाद परं परारे । पार न पडोचे कोय । अजिमते वस्तु  
वस्तुगते कहे रे । ते विरला जग जोय ॥ पंथ० ॥ ४ ॥ वस्तु विचारें रे दिव्य  
नयण तणोरे । विरह पड्यो निरधार । तरतम जोगेरें तरतम वासनारे । वा  
सित बोध आधार ॥ पंथ० ॥ ५ ॥ काल लवधि लही पंथ निहाळसुरे ।  
ए आस्या अविलंब । ए जन जीवैरे जिनजी जाणजोरे । आनंद घन मत  
अंब ॥ पंथ० ॥ ६ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री संजवजिन स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रातनी रमीनें किहां थी आवियारे ॥ ए चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ संजवदेव त धुर सेवो मवेरे । लही प्रभु सेवन जेद । सेवन का  
रण पहेली जूमिकारे । अजय अद्वेश अखेद ॥ संजव० ॥ १ ॥ जयचंच  
लताहो जे परिणामनी रे । द्वेष अरोचक जाव । खेद प्रवृत्तीहो करतां  
थाकीर्ये रे । दोष अवोध लखाव ॥ संजव० ॥ २ ॥ चरमावर्तहो चरम  
करण तथा रे । जव परिणति परि पाक । दोष टले वली दृष्टी खुजे जलोरे  
प्रापति प्रवचन वाक ॥ संजव ॥ ३ ॥ परिचय पातिक वातिक सावसं

रे । अकुशल अपचय चेत । अथ अध्यात्म श्रवण मनन करीरे । परीशी  
जन नय हेत ॥ संजव० ॥ ४ ॥ कारण जोगेहो कारज नीपजेरे । एमां  
कोई न वाद । पण कारण विण कारज साधीयरे । ए जिन मत उनमाद ॥  
संजव० ॥ ५ ॥ सुगंध सुगम करी सेवन आदेरे । सेवन अगम अन्नप  
देजो कदाचित सेवक याचनारे । आनंदधन रस रूप ॥ संजव० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री अग्निनंदन जिन स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आज निहेजोरे दीसे नाहलो ॥ ए चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अग्निनंदन जिन दरिशाण तरसीये । दरशाण दुर्लभदेव । मत २ जेदेरे  
जो जई पूढीये । सह्य थापे अह मेव ॥ अग्नि० ॥ १ ॥ सामान्ये करी दरशाण दोह  
लुं । निरणय सकल विशेष । मदमें घेर्योरे अंधो किम करे । रवि शशि रूप  
विलेख । अग्नि० ॥ २ ॥ हेतु विवादें हो चित्त धरी जोईये । अति दुरगम नय  
वाद । आगमवादें हो गुरुगमको नही । ए शवलो विषवाद ॥ अग्नि० ॥ ३ ॥  
घाती डूंगर आमा अतिवणा । तुज दरिशाण जगनाथ । धीठाई करी मार  
ग संचरुं । संगू कोई न साथ ॥ अग्नि० ॥ ४ ॥ दरिशाण २ रटतो जो फरुं  
तो रण रोज समान । जेहने पीपासा हो अमृत पाननी । किम चाजे विष  
पान ॥ अग्नि० ॥ ५ ॥ तस्स न आवेहो मरण जीवन तणो । सीजे जो  
दरिशाण काज । दरिशाण दुर्लभ सुलभ कृपा थकी । आनंदधन महाराज  
॥ अग्नि० ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री सुमति जिनस्तवन लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग वसंत ( तथा ) केदारो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुमति चरण कज आत्म श्रपणा । दरपण जिम आविकार ।  
सुग्यानी ॥ मति तरपण बहु सम्मत जाणिये । परिसरपण सुविचार ॥ सु  
ग्यानी ॥ सुमति० ॥ १ ॥ त्रिविध सकल तनु धर गत आत्मा । वहिरात  
म धुरि जेद ॥ सु० ॥ बीजो अंतर आत्म नामरो । परमात्म अविच्छेद ॥  
सु० ॥ सुमति० ॥ २ ॥ आत्म बुद्ध हो कायादिक अहो । वहिरात्म अ  
घरूप । सुग्यानी । कायादिकनो हो साखी धर रह्यो । अंतर आत्म रूप  
॥ सुग्यानी ॥ सुमति० ॥ ३ ॥ ज्ञानानंदेवो पूरण पावनो । वरजित सकल

उपाधि ॥ सुग्यानी ॥ अतिंद्रिय गुण गण मणि आगरू । इय परमातम  
साध ॥ सुग्यानी ॥ सुमति० ॥ ४ ॥ वहिरातम तज अंतर आतमा । रूप थई  
थिर जाव ॥ सु० ॥ परमातमनुं हो आतम जाववूं । आतम अरपण दाव  
सु० ॥ सुमति० ॥ ५ ॥ आतम अरपण वस्तु विचारतां । जरमटले मति  
दोष ॥ सु० ॥ परम पदार्थ संपति संपजे । आनंदघन रस पोष सु० ॥  
सुमति० ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री शीतलजिनस्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गुणह विसाला मंगलीक माला ॥ ए चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शीतल जिनपति ललित त्रिजंगी । विविध जंगी मन मो  
हैरे ॥ करुणा कोमलता तीक्ष्णता । उदाशीनता सोहैरे ॥ शी० ॥ १ ॥  
सर्व जंतु हित करणी करुणा । कर्म विदारण तीक्ष्णारे । हाना दाना रहित  
परणामी । उदाशीनता विक्ष्णारे ॥ शी० ॥ २ ॥ परदुःख भेदन इच्छा  
करुणा तीक्ष्ण पर दुख सीजेरे । उदाशीनता उन्नय विजक्ष्ण । एक ठामें  
केम सीजेरे ॥ शी० ॥ ३ ॥ अन्नयदान ते मलक्षय करुणा । तीक्ष्णता  
गुण जावैरे । प्रेरण विण कृत उदाशीनता । इम विरोध मति नावैरे ॥ शी० ॥  
॥ ४ ॥ शक्ति व्यक्ति त्रिचुवन प्रचुता । निग्रंथता संयोगैरे । योगी योगी व  
क्ता मौनी । अनुपयोगि उपयोगैरे ॥ शी० ॥ ५ ॥ इत्यादिक बहु जंग त्रि  
जंगी । चमत्कार चित्त देतीरे । अचरिजकारी चित्र विचित्रा । आनंदघन  
पद लेतीरे ॥ ❀ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीकुंथुजिनस्तवनप्रारंभः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रागगुर्जरी अंबरदेहो मुरारी हमारो० ए चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मनहुं किमही न वाजे हो ॥ कुंथुजिन म० ॥ जिम जिम  
जतन करीनें राखुं । तिम तिम अलखुं जाजे हो ॥ कुं० ॥ १ ॥ रजनी वास  
र वसती ऊजम । गयण पायालें जाय । साप खायने मुखहुं थोथुं । एह  
उखाणो न्याय हो ॥ कुं० ॥ २ ॥ सुगतितणा अजिजापी तपीया । ज्ञानने  
ध्यान अभ्यासें । वयरीहुं कांइ एहहुं चिते । नाखे अवलें पासें हो ॥ कुं०  
॥ ३ ॥ आगम आगम धरने हाथें । नावे किणविध आंकुं । किहां कणे

जो हठकरी हठकूं। तो व्याज ताणी परें वांकूं हो ॥ कुं० ॥ ४ ॥ जो ठग  
कहुं तो ठगतो न देखुं। साहुकार पण नाही। सर्व मांहेने सहुथी अज  
गुं। ए अचरिज मन मांही हो ॥ कुं० ॥ ५ ॥ जे जे कहुं ते कान न धारे।  
आपमते रहे कालो ॥ सुर नर पंक्ति जन समजावे। समजे न महा  
रोसालो हो ॥ कुं० ॥ ६ ॥ में जाण्युं ए लिंग नपुंसक। सकल मरदनें ठेजे।  
बीजी वानें समरथ ठे नर। एहनें कोइन जेजे हो ॥ कुं० ॥ ७ ॥ मन  
साध्युं तेणें सगळुं साध्युं। एह वात नही खोटी। एम कहे साध्युं ते नवी  
माणुं। ए कहिवतले मोटी हो ॥ कुं० ॥ ८ ॥ मनडुं पुराराध्य ते वस आणुं।  
ते आगमथी मतिआणुं। आनंदवन प्रनु माहरुं आणो। तो साचुं करी  
जाणुं हो ॥ कुं० ॥ ९ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ देव वांदवानो विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम इरियावही पडिकमवाथी मांमीनें (यावत्) लोगस्स कही  
पत्नी उत्तरासण करी। चैत्यवंदन। नमुत्थुणं कही, अरुधुं जयवीअराय।  
आप्तव मखंन सूधी हाथ जोमी। कहे। (वली) चैत्यवंदन, कहीने। नमुत्थु  
णं। कही। (यावत्) चार थोयो कहीये नीयें तिहां सूधी वधुं कहेवुं। पत्नी नमु  
त्थुणं कही। (वली) चार थोयो कहीयें त्यां सुधी वधुं कहेवुं। पत्नी नमुत्थुणं  
(तथा) वे जावंती कही। स्तवन कही। अरुधुं जयवीअराय आप्तवमखं  
न सूधी कही। पत्नी चैत्यवंदन कही। नमुत्थुणं कही। (आखो) जय वीय  
राय कहेवो ॥ इहां सवारें देव वांदवां। (तेमां) मन्ह जिणाणं नी सज्जाय  
कहेवो। अने मध्यान्हे (तथा) सांजे देव वांदवामां सज्जाय न कहेवो ॥  
इति देव वांदवानो विधि ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ज्ञान विमलजी कृत, चउमाशी देववंदन विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम इरियावही पडिकमी काउसग करी। लोगस्स० कही  
एक खमासमाण देई। इच्छाका० श्री श्यन्नजिन आराधनार्थ चैत्यवंदन कहुं।  
एम कही चैत्यव० करे ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री आदि जिन चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम जिनेसर श्यन्न देव। सब्बथी चविया। वदि चउथें

आषाढनी । शकें संस्तविया । अठमी चैत्रह वदि तणी । दिवसें प्रनुजा  
या । दिहा पण तिणहीज दिने । चउनाणी थाया । फागण वदि इग्या  
रसी ए । ज्ञान लहे शुभ ध्यान । महा वदि तेरशें शिव लह्या । परमानंद  
निधान ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इहां नमुत्थुणं । अरिहंत चेइयाणं । वंदण वत्तिया कही ।  
एक नवकारनो कावसग्ग पारी । ४ थुई कमसें कहियें । ते लिखिये ठीयें ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय जोमो प्रारंभः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रुषन्न जिन सुहाया श्री मरुदेवी माया । कनक वरण का  
या मंगला जासजाया । वृषन्न लंठन पाया देवनर नारी गाया । पण  
सय धनु ढाया ते प्रनु ध्यान ध्याया ॥ १ ॥ ए तीरथ जाणी जिन त्रेवी  
श उदार । एक नेम विना सवि समवसरया निरधार । गिरि कमणें आ  
वी पोहता गढ गिरनार । चैत्री पूनम दिनें ते वंदूं जय कार ॥ २ ॥  
ज्ञाता धर्म कथांगें अंत गरु सुत्र मजार । सिद्धा चलें सीधा बोलया  
बहु अणगार । ते माटें ए गिरि सवि तीरथ शिरदार । जिन जेठे थावे ।  
सुख संपति विस्तार ॥ ३ ॥ गौमुख चकेश्वरी शासननी रखवाल । ए ती  
रथ केरी सानिध करे संचाल । गिरुओ जस महिमा संपति कालें  
जास । श्रीज्ञान विमल सूरी नामे लील विलास ॥ ४ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इहां । नमुत्थुणं, जावंती (वे) कही नमोर्हत् कही स्तवन कहेवुं ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीआदिजिन स्तवन प्रारंभः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( ललनानी देशी ) आदि करन अरिहंतजी । उलगनी अवधार  
ललना ॥ प्रथम जिणेसर प्रणमीयें । वंजित फल दातार ॥ ललना ॥ १ ॥  
आदिकरण अरिहंतजी ( ए आंकणी ) उपगारी अवनी तले । गुण अनंत  
जगवान ॥ ललना ॥ अविनाशी अक्षयकला । वरते अतिशय धाम ॥  
ललना ॥ आ० ॥ २ ॥ गृहवासें पण जेहनें । अमृत फलनो आहार ॥ ल  
लना । ते अमृत फलनें लहै । ए जुगतुं निरधार ॥ ललना ॥ आ० ॥ ३ ॥ वंश  
इहाग ठे जेहनो । चढतो रस सुविशेष ॥ ललना ॥ अस्तादिक थया केवली  
अनुभव फल रस देख ॥ ललना ॥ आ० ॥ ४ ॥ नागिराय कुल मरुणो

मरु देवी सर हंम ॥ ललना ॥ रुषप्रदेव नित वंदियें । ज्ञान विमल अवतं  
स ॥ ललना ॥ ॥ ५ ॥ इति श्रीरुषप्र जिन स्त० ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पत्नी जय वीयराय अर्धो कहवुं । एक खमासमण देई । इच्छा०  
श्री अजितनाथजी आराधनार्थ चैत्यवंदन करुं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री अजित नाथ चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शुदि वैशाखनी तेरशें । चविया विजयंत । माह शुदि आठमे  
जनमिया । बीजा श्री अजित । माहशुदि नवमें थया । पोषी इग्यार  
स । उज्वल उज्वल केवली । थया अक्षय कृपारस । वैशाख शुक्ल पंचमी  
दिने ए । पंचम गति जहाजेह । धीर विमल कविरायनो । नय प्रणमे धरी  
नेह ॥ २ ॥ इति ॥ पत्नी नमोत्थुणं अरिहंत चे० कही । एक नवकारको  
कावसग करके । शुईकी गाथा कहै ( इसी तरै सब ठिकाणें विध करवो ) ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अजित जिन पतीनो । देह कंचन जरीनो । नविकजन नगीनो  
जेहथी मोहलीनो । हुं तुज पदलीनो । जेम जलमांहे मीनो । नवि होय  
ते दीनो । ताहरे ध्यानें पीनो ॥ १ ॥ इति अजित नाथ थोय ॥ २ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री संजवनाथ चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सत्तम ग्रेवेयक थकी । चविया श्री संजव । फागुण शुदि आ  
ठम दिनें । शुदि चउदसी अजिनव ॥ १ ॥ मृगशिर मासें जनमीया । त  
णी पूनम संजम । कार्तिक वदी पंचमी दिनें । लहे केवल निरूपम । पंच  
मी चैत्रनी उजली ए । शिव पोहोता जिनराज । ज्ञान विमल प्रनु प्रणम  
तां । सीऊ सगला काज ॥ ३ ॥ इति चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिन संजववार । लंगुनै अथधार । नवजलनिधि तारु । काम  
गद तीव दारु । सुरतर परिवारु । दूममाकाल मारु । शिव सुख किरता  
रु । तेहना ध्यान सारु ॥ १ ॥ इति थोय ममाप्त ॥ ३ ॥ ॥ ❀ ॥



॥ ❀ ॥ अथ श्री अग्निनंदन जिन चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जयंत विमान थकी चव्या । अग्निनंदन राया । वैशाख शुदि चौथे  
माघ सुदि बीजे जाया । माहाशुदि वारसें ग्रहिय दिख्ख । पोषशुदि चउदस ।  
केवल शुदि वैशाखनी । आठमे शिव सुख रस । चउथा जिनवरनें नमी ए ॥  
चउगति भ्रमण निवार । ज्ञान विमल गणपति कहे । जिन गुणनो नही पारा ॥

॥ ❀ ॥ अथ स्तुति प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अग्निनंदन वंदो । साम्य माकंद कंदो । नृप संवर नंदो । घ  
षिता शेष कंदो । तम तिमिर दिणंदो । लंछनें वानरिंदो । जस आगल  
मंदो । सौम्य गुण सार दिंदो ॥ १ ॥ इति थोय ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री सुमतिनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रावण शुदि बीजे चव्या । मेहलीनें जयंत । पंचमी गति दाय  
क नमुं । पंचम जिन सुमति । शुदि वैशाखनी आठमें । जनम्या तिम सं  
जम । शुदि नवमी वैशाखनी । निरुपम जस शम दम । चैत्र इग्यारस ऊज  
ली ए । केवल पामें देव । शिव पाम्या तिणे नवमीये । नय कहे करो तस  
सेव ॥ १ ॥ इति चैत्य वंदन ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुमति सुमति आपें दुःखनी कोमि कापे । सुमति सुजन  
व्यापे । बोधिनु बीज व्यापे । अविचल पद थापे । जाप दीप प्रतापें ।  
कुमति कदही नावें । जो प्रनु ध्यान व्यापे ॥ १ ॥ इति सुमति जिन ॥ ५ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री पद्म प्रज्ञ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नवम ग्रेवेयकथी चव्या । माहावदि उठ दिवसें । कातीवदि वा  
रसें जनम । सुर नर सवि हरषे । वदि तेरस संजम ग्रहे । पद्मप्रज्ञ स्वामी  
चैत्री पूनम केवली । वलि शिवगति पामी । मृगाशिर वदि इग्यारसें । रक्त  
कमल समवान । नय विमल जिन राजनुं । धरीयें निरमल ध्यान ॥ १ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पद्मप्रज्ञ सोहावे । चित्तमां नित्य आवे । मुगति वधु मनावे ।

रक्त तनु कांति पावे । दुःख निकट नावे । संतती सौख्य पावे । प्रभु  
गुणगण ध्यावे । अष्ट महा सिद्धि थावे ॥ १ ॥ ❀ ॥ ६ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री सुपार्श्वजिन चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ठठा त्रैवेयकथी चवी । जिनराज सुपास । जादखा वदि आठ  
मे । अवतरिया खास । जेठ मुक्क बारसी जणया । तस तेरसे संजम । फा  
गुण वदि ठठे केवली । शिव लहे तस सत्तमि । सत्तम जिनवर नामथी ए ।  
साते ईति समंत । ज्ञान विमल सूरि निठु लहे । तेज प्रताप महंत ॥ १ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ फले कामित आशे नामथी दुःख नाशे । महिम महि प्रकाशे सा  
तमा श्री सुपासे । सुरनर जस दास । संपदानो निवास । गाय त्रवि गुणरास  
जेहना धरी उवास ॥ १ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ७ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री चंद्र प्रज्जिन चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चंद्रप्रज्ज जिन आठमा । चंद्रप्रज्ज सम देह । अवतरीया विजयं  
तथी । वदि पंचमी चैत्रेह । पोष वदि बारसें जनमीया । तस तेरसे साध  
फागुण वदिनी सातमे । केवल निराबाध । जाद्रव सातम शिव लह्या ए ।  
पूरी पूरण ध्यान । अठ महासिद्धि संपजे । नय कहे जिन अजिधान ॥ १ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शुभ नरगति पामी उधमें धर्मधामी । जिन नमो शिरनामी  
चंद्र प्रज्ज नाम स्वामी । मुज्ज अंतरजामी जेहमां नहिय स्वामी । शिवगति  
वरगामी मेवना पुण्ये पामी ॥ १ ॥ इति ॥ ८ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सुविधिनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गोरा सुविध जिणंद नाम । बीजुं पुष्प दंत । फागुण वदि नव  
में चव्या । मेहली सुर आनंत । मृग शिर वदि पंचमें जाण्या । तस ठठे  
दिक्षा । कान्ती शुद्धि बीजे केवली । दिये बहु परे शिक्षा । शुद्धि नवमी जा  
द्रवा तणी ए । अजर अमर पद दीय । धीर विमल सेवक कहे । ए नमतां  
सुखहोय ॥ १ ॥ इति स्तवनं ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुविधि जिन जदंत । नाम वली पुष्प दंत । सुमति तरुणि  
कंत । संतथी जेह संत । कीयो कर्मदुरंत । लछि लीला वरंत । जव ज  
लधि तरंत । तेनमीजे महांत ॥ १ ॥ इति थोय ॥ ❀ ॥ ९ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री शीतलनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्राणत कल्पथकी चव्या । शीतल जिन दशमा । वदि वैशा  
षनी ठे । जाणि दाघज्वर प्रशम्या ॥ महावदि बारस जनम दिख्या । तस  
बारसें लीध । वदि पोष चउदश दिने । केवली परसिध । वदि बीजे वै  
शाखनी ए । मोह गया जिनराज । ज्ञान विमल जिनराजथी । सीजे स  
गला काज ॥ १ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुण शीतल देवा बालही तुझ सेवा । जेम गज मन रेवा ।  
तुंही देवाधि देवा । पर आण वदेवा शमठे नित्यमेवा । सुख सुगति लहे  
वा हेतु दुःख खपेवा ॥ १ ॥ इति ॥ ❀ ॥ १० ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री श्रेयांसनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अच्युत कल्पथकी चव्या । श्रेयांस जिणंद । जेठ अंधारी दि  
वस ठे । करत बहु आनंद । फागुण वदि बारसें जनम । दीहा तस ते  
रस । केवली माह अमावसि । देसना चंदन रस । वदि श्रावण त्रीजे ल  
हा ए । शिव सुख अखय अनंत । सकल समीहित पूरणो । नय कहे ए  
जगवंत ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सविजिन अवतंस । जास इख्याग वंश । विजित मदन कंस  
शुद्ध चारित्रहंस । कृत जय विध्वंस । तीर्थनाथ श्रेयांस । वृषभ ककुद अं  
श । ते नसुं पुण्य वंश ॥ १ ॥ ❀ ॥ ११ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री वासु पूज्य चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्राणतथी इहां आविया । ज्येष्ठ शुद्धी नवम । जनम्या फागु

ए चौदशी । अमावसी संजम । माह शुद्धि बीजे केवली । चौदशि आप  
दी । शुद्धि शिव पाम्या कर्म कष्ट । सवि दूरे काढी । वासुपूज्य जिन वारम  
ए । विद्रुम रंग काय । श्री नयविमल कहे इस्तुं । जिन नमतां सुख थाय

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वसुदेव नृप तात । श्री जयादेवी मात । अरुण कमलगात  
महिष लंठन विख्यात । जसगुण अवदात । शीत जाणे निवात । होय नि  
सुखशात । ध्यावतां दिवस रात ॥ १ ॥ इति ॥ ❀ ॥ १२ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ विमलनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अठम कल्पथकी चव्या । माधव शुद्धि वारस । शुद्धि महात्री  
जाया । तस चोथे व्रत रस । शुद्धि पोष ठेठ लह्या । वर निर्मल केवल  
वदि सातमि आपाढनी । पाम्या पद अविचल । विमल जिणेसर वंदि  
ए । ज्ञान विमल करी चित्त । तेरसमो जिन नितु दिये । पुण्य परिघ  
वित्त ॥ १ ॥ इति ॥ ❀ ॥ १३ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ विमल विमल जावे वंदतां दुःख जावे । नव निधि घर अ  
वे विश्वमां मान पावे । सुवर लंठन फावे ज़ोमिजर स्वेद थावे । म  
विनति जणावे । स्वामिनुं ध्यान ध्यावे ॥ १३ ॥ इति विमलनाथ स्तुति ।

॥ ❀ ॥ अथ श्री अनंतनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्राणत थकी चविया इहां । श्रावणवदि सातम । वैशाखवदि  
तेरसी दिनें । जनम्या चतुदस रातम । वदि वैशाखे चतुदसि । केवल पुण्य प  
म्या । चैत्रशुद्धि पंचमीदिने । शिववनिता काम्या । अनंतजिनेश्वर चतुदस  
ए । कीधा छुम्नन अंत । ज्ञानविमल कहेनामयी । तेज प्रताप अनंत ॥ १४ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अनंत जिन नमीजें कर्मनो कोट बीजें । शिव सुख फल ली  
जें मिदि लीला वरीजें । वीधि बीज मोह दीजें एदुं काज काजें । सु  
मन अति रीजे स्वामिनुं कार्य सीजें ॥ १ ॥ ❀ ॥ १५ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री धर्मनाथ जिन चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वैशाख सुदि सातमे । चविया श्री धर्म । विजय थकी माह मास  
नी । शुदि त्रीजे जनम । तेस माहिं ऊजली । लीये संजम चार । पोषि  
पूनमे केवली । गुणना चंडार । जेठी पांचमि ऊजली ए । शिवपद पाय्या  
जेह । नय कहे ए जिन प्रणमतां । बाधे धर्म सनेह ॥ १५ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ धर्म जिन पतीनो ध्यान रस मांहे जीनो । वरमण शचीनो ।  
जेहने वर्ण लीनो । त्रिनुवन सुख कीनो लंठने वज्र दीनो । नवि होय ते  
दीनो जेहने तुं वसीनो ॥ १ ॥ ❀ ॥ इति ॥ १५ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ श्री शांतिनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चाद्रवा वदि सातम दिने । सब्बथी चविया । वदि तेरस जेठे  
जाया । दुःख दोहग समीया । जेठि चउदस वदि दिने । लीये संजमवेम ।  
केवल उज्ज्वल पोसनी । नवमी दिन खेम । पंचम चक्री परवडा ए । शोल  
मा श्रीजिनराज । जेठ वदि तेरशें शिव लह्या । नय कहे सारो काज ॥ १६ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिन पति जयकारी पंचमो चक्रधारी । त्रिनुवन सुखकारी सप्त  
अय ईतिवारी । सहस चउसठनारी चउद रत्नाधिकारी । जिन शांति जीतारी  
मोहे हस्ति मृगारी ॥ १ ॥ शुभ्र केशर घोली मांहे कर्पूर चोली । पेहरी सीत  
पटोली वासियें गंधधूली । जरी पुष्पपटोली टालीयें दुःख होली । सवि  
जिनवर टोली पूजीयें जाव लोली ॥ २ ॥ शुभ्र अंग इग्यार तेम उपांग  
वलि वार । मूल मुत्रते चार नंदी अनुयोगद्वार । दशपयन्न उदार वेदखद वक्ति  
सार । प्रवचन विस्तार प्राप्य निर्युक्तिसार ॥ ३ ॥ जय जय जय नंदा जैन  
सुरिंदा । करे परमानंदा टालता दुःखप्रंदा । ज्ञानविमल सुरिंदा साम्य  
कंदा । वरविमल गिरिंदा ध्यानथी नित्य चदा ॥ ४ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( मोतीमानी देशी ) सकल समोहित सुरतरु कंदा । शांति कर

ए श्री शानि जिणंदा । साहिवा जिनराज हमारा । मोहना जिनराज हमारा ॥ सा० ॥ ( ए आंकणी ) त्रिकरण शुभ चरण तुज विलगो । पलक मात्र न रहूं हिवे अलगो ॥ सा० ॥ १ ॥ विलगो ते अलगो केम जाशे । ठं ड्यो पण तुहें नवि ठंडाशे ॥ सा० ॥ प्रनु तुह्मे कोइशुं नेह न जावो । ची तराग कही सवि समजावो ॥ सा० ॥ २ ॥ बीजा अवर कहो एम समजे पण ठेरु दीधायी रीजे ॥ सा० ॥ बालकना हठथी नवि चाले । जे मांगे ते मावित्र आले ॥ सा० ॥ ३ ॥ नक्तिखांची मन मांहे आण्यो । सहज स्वप्नावें पण में जाण्यो ॥ सा० ॥ माहरे एक प्रतिज्ञा सार्ची । तुम पदसे वा अंकें जाची ॥ सा० ॥ ४ ॥ कवजे आव्यानो बूटीजें । जेह सुह मांगे तेहज दीजें ॥ सा० ॥ अजेद पण जो मनमां मलशो । कवजेथी प्रनु तो नीकलशो ॥ सा० ॥ ५ ॥ अखखय जाव निधी तुम पाम । आपी दासने पूरो आश । ज्ञान विमल समकित प्रनुताई । दीधी साहेव एह बडाई ॥ सा० ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री कुंथुनाथ जिन चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रावण वदि नवमी दिनें सब्बथी चविया । वदि चतुदश वेशा खनी जिन कुंथु जणीया । वदि पंचमी वेशाखनी लीये संजम जार । शुदि त्रीजें चैत्रहतणी जहे केवल सार । पडवा दिन वेशाखनीए पाम्या अ विचल ठाण । ठठा चर्का जयकर ज्ञानविमल सुख खाण ॥ १७ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिन कुंथु दयाला ठाग लंठन सुहाला । जस गुण शुभ मा ला कंठे पेंढरो विशाला । नमति जवि त्रिकाला मंगल श्रेणि माला । त्रिजुव न तेजाला ताहरे तेज माला ॥ १७ ॥ इति कुंथुनाथ जिन स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री अरनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सरवारथरी आविया पागुण शुदि बीजें । मृगशिर शुदि द शमी जाण्या अग्देव नर्माजे । मृगशिर शुदि एकादशी संजम आदरीयो काती उज्जल बारमें । केवल गुण वरीयो । शुदि दशमी मृगशिर तणी ए शिवपद जहे जिननाथ । सत्तम चर्कानें नमुं नय कहे जोमी हाथ ॥ १८ ॥



॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अरजिन ए जुहारुं कर्मनो क्लेश वारुं । अहनिश संभारुं ताह  
रुं नाम धारुं । कृत जय जय कारुं प्राप्त संसार सारुं । नविहोय ते सारुं  
आपणो आप तारुं ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री मल्लिनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चव्या जयंत विमानथी फागुण शुदि चउथें । मृगशिर शुदि  
इग्यारसैं जनम्या निग्रंथे । ज्ञान लह्या एकादिनें कल्याणक तीन । फागु  
ण सुदि वारमें लहे शिव सदन अदीन । मल्लिजिणेसर नीजमाए । उगणी  
शमा जिनराज । अणपरण्या अणचूप पद । जवजल तरण जहाज ॥ १९ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिन मल्ली महिला वानढे जेहनीला । ए अचरिज लीला स्त्री  
तणें नाम पीला । दुशमन सवि पील्या स्वामि जोढे वसीला । अविचल  
सुख लीला दीजियें सुणि रंगीला ॥ १९ ॥ इति मल्लिजिन स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री मुनि सुव्रत जिन चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अपराजितथी आविया । श्रावण शुदि पूनम । आठम जेठ  
अंधारमी । थयो सुव्रत जनम । फागुण शुदि वारस व्रते । वदि वारसैं ज्ञान  
फागुणनी तेम जेठनी । नवमी कृष्ण निर्वाण । वर्ण श्याम गुण उज्जवा । ति  
हुयण करे प्रकाश । ज्ञान विमल जिनराजना । सुरनर नायक दास ॥ २० ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मुनि सुव्रत स्वामी हुं नमुं शीश नामी । मुळ अंतर जामी का  
मदाता अकामी । दुःखदोहग वामी पुण्यथी सेव पामी । शम्या सर्व दा  
रामी राज्यता पूर्ण पामी ॥ १ ॥ इति ॥ २० ॥ ॥ ❀ ॥ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री नमीनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आशो शुदि पूनम दिने प्राणतथी आया । श्रावणवदि आ  
ठम दिनें नमी जिनवर जाया । वदि नवमी आपाढनी थया तिहां अणगा

२ । मृगाशिर शुदि इग्यारसें वर केवल धार । वदि दशमी वैशाखनी ए । अ  
खय अनंता सुख । नय कहे श्री जिननामथी । नासे दोहग दुख ॥ २१ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नमी जिनवर मानो जेह नही विश्वज्ञानो । सुत वप्पा मानो  
पुण्य केरो खजानो । कनक कमल वानो कुंज ठे जे कृपानो । सविनुवन  
प्रमानो तेहशुं एक तानो ॥ २१ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री नेमिनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अपराजितथी आविया । काती वदि वारस । श्रावण शुदि पंचमी  
जाया । यादव अवतंस । श्रावण सुदि ठे संजमी । आसोज अमावस नाण ।  
शुदि आषाढनी आठमे । शिवसुख लहे प्रमाण । अरिठ नेमि अणपरणीया ए ।  
राजिमतीना कंत । ज्ञान विमल गुण एहना । लोकोत्तर व्रतंत ॥ २२ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गया शस्त्रागारें शंख निज हाथ धारें । कियो शब्द प्रचारें वि  
श्व कंथो तिवारें । हरि संशय धारे । एहनी कोड सारे । जयो नेम कुमारे ।  
बालथी ब्रह्म चारे ॥ १ ॥ चार जंबू द्वीपें विचरंता जिन देव । अमधान  
की खंमे सुरनर सारे सेव । अरु पुष्कर अरधें इणिपरें बीस जिनेश । मंग  
तिण सोढे पंच विदेह निवेश ॥ २ ॥ प्रवचन प्रवहण शम अवजल नि  
धिने तारे । कोह्लादिक मोटा मठतणा जय वारें । जिहां जीवदया रस स  
रस सुधारस दाख्यो । जवि जाव धरीनें चित्त करीनें चाख्यो ॥ ३ ॥ जिन  
शासन सान्निध्य करी विघन विहारे । समकित दृष्टी सुर महिमा जास वधारे ।  
शेवुंज गिरि मेवो जिम पामो जवपार । कवि धीर विमलनो शिष्य कहे  
सुखकार ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रहो रहोरे यादव दो घनीया । दोघनीयां दोचार घनीयां । रहो  
रहोरे यादव० ॥ ( ए आकणी ) । मोज महिराण शिवदेवी जाया । तुम ठो  
आधार अन्वडीयां ॥ १ ॥ रहो० ॥ नाह विवाह चाह करीआए । कहुं जावन

फिर रथ चमीयां ॥ रहो० ॥ पशुय पोकार सुणीय किय करुणा । ओम्दी  
 ए पशुपंखी चमीयां ॥ रहो० ॥ २ ॥ गोद विठाऊं में बली जाऊं । करुं वीन  
 ति चरणे पमीयां ॥ रहो० ॥ पियुविण दीहते वरिस समोवड । न गमें  
 स्वपनमें सेजडीयां ॥ रहो० ॥ ३ ॥ विरह दिवानी बिलपति जोवन । वामी  
 वनधर सेरडीयां ॥ रहो० ॥ अष्टजवांतर नेह निवाहत । नवमे जवते वीठ  
 मीयां ॥ रहो० ॥ ४ ॥ सहसा वनमांहे स्वामि सुणीनें । राजुल रैवत गिरि  
 चमीयां ॥ रहो० ॥ पियुकर निजशिरे हाथे देवा । ब्रतचाखे चारित्र शेलडीयां ॥  
 रहो० ॥ ५ ॥ जादववंश विनूषण नेमजी । राजुल मीठी वेलमीयां ॥ रहो० ॥  
 ज्ञानविमल गुणे दंपती निरखत । हरषत होत मेरी आंख मीयां ॥ रहो० ॥ ६ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री पार्श्वनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कृष्ण चोथ चैत्रहतणी प्राणतथी आया । पोषवदि दशमी ज  
 नम त्रिनुवन सुख पाया । पोषवदि इग्यारशें लहे मुनिवर पंथ । कमठासुर  
 उपसर्गनो टाल्यो पलीमंथ । चैत्रकृष्ण चोथह दिनें ए । ज्ञानविमल गुण  
 नूर । श्रावण शुदि आठमें लह्या । अविचल सुख जरपूर ॥ २३ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जलधर अनुकारें । पुण्य वल्ली वधारे । कृत सुकृत संचारे वि  
 वननें जे विनारे । नवनिधि आगारें कष्टनी कोडि वारे । सुऊ प्राणाधारे  
 मात वामा मल्हारे ॥ १ ॥ अर जनम सुहावे वीर चारित्र पावे । अनुजव  
 लयलावे केवल ज्ञान पावे । षट्जे कल्याण संप्रतिजे प्रमाणें । सवि जिनवर  
 प्राण श्री निवासाहि ठाण ॥ २ ॥ दश विधि आचार ज्ञानना जिहां विचार  
 दश सत्य प्रकार पञ्चख्वाणादि विचार । मुनि दश गुण धार जेजया जिहां  
 उदार । ते प्रवचन सार ज्ञानना जे आगार ॥ ३ ॥ दश दिशि दिशि पाला  
 जे महा लोग पाला । सुरनर महिपाला शुद्ध दृष्टी कृपाला । नय विमल  
 विशाला ज्ञान लह्नी मयाला । जय मंगल माला पास नामें सुखाला ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ थारे माथे पचरंगी पाव सोनेरो ठोगलो मारुजी ॥ ए देशी ॥

प्रनुपामजिणोसर नुवन दिनेसर संकरो ॥ साहिबजी ॥ ली  
ला अलवेसर धीरम मंदर नूधरो ॥ साहिबजी ॥ तुं अगम अगोचर कृत  
शुचि सुंदर संवरो ॥ सा० ॥ पद नमित पुरंदर तनुं ठवि निरमल जलधरो ।  
सा० ॥ १ ॥ तुं अक्षय अरूपी ब्रह्मसरूपी ध्यानमां ॥ सा० ॥ ध्याये जे  
जोगी तुमगुण जोगी ज्ञानमां ॥ सा० ॥ व्यवहार प्रकासी निश्चयवासी  
निजमते ॥ सा० ॥ जिन आतम दरसी अमल अजेसी नयमते ॥ सा० ॥  
॥ २ ॥ षट् दर्शन प्राप्ते युक्ति निरासे शासन ॥ सा० ॥ स्यादवाद विशा  
ले सहज समाजे प्रावने ॥ सा० ॥ तुं ज्ञानने ज्ञाने आतम ध्याने आत  
मा ॥ सा० ॥ परमागम वेदी जेद अजेदी नही तमा ॥ सा० ॥ ३ ॥  
एक अनेके बहुत विवेके देखिये ॥ सा० ॥ आतम ततकामी अगुण अ  
कामी लेखिये ॥ सा० ॥ सविगुण आरामी ओ बहु नामी ध्यानमां ॥ सा० ॥  
आपेगत नामी अंतरजामी ज्ञानमां ॥ सा० ॥ ४ ॥ तुं अनीयत चारी नि  
यत विचारी योगमां ॥ सा० ॥ अध्यातम सेली एम बहु फेली आगमे ॥  
सा० ॥ तुं धर्म संन्यासी सहज विलासी समगुणे ॥ सा० ॥ मोहारि विना  
शी तुं जित काशी कविप्रणे ॥ सा० ॥ ५ ॥ ज्ञान दर्शन सायक गुणमणी  
जायक नाथ ते ॥ सा० ॥ दुर्गति दुःख वायक गुणनिधि दायक हाथ ते ॥  
सा० ॥ जित मन मथ सायक त्रिनुवन नायक रंजणो ॥ सा० ॥ अनेकांति  
एकांती तुं वेदांती अगंजणो ॥ सा० ॥ ६ ॥ ध्यानानलयोगे पुदगल जोगे ते  
दद्या ॥ सा० ॥ अंतररिपु हणीया मूलथी खणीया नविरह्या ॥ सा० ॥ तुंहेतु  
मर्मायो सुखर नमियो सहकृते ॥ सा० ॥ ७ ॥ जगथी न्यागे चरित्र तृमार्गे कृणजहे  
॥ सा० ॥ ७ ॥ उम तुम गुण शुणीये कर्मने हणीये पलकमां ॥ सा० ॥ पाण नवि  
अवगणिये मेवक गणीये ललकमां ॥ सा० ॥ वामाचे नंदा त्रिनुवन इंदो सं  
शुणे ॥ सा० ॥ ज्ञानविमल सूरिंदा तुमपय वंदा गुण जणे ॥ सा० ॥ ८ ॥ इति ॥ ॥

॥ ॐ ॥ अथ श्री वर्धमान जिन चैत्यवंदन ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ शुद्धि आषाढ उठ दिवसे प्राणन्या चर्वाया । तेरम चैत्रह शुद्धि  
दिने त्रिशज्याये जर्णीया । श्रृंगशिर वदि दशमी दिने आपे संजम आराधे

फिर रथ चमीयां ॥ रहो० ॥ पशुय पोकार सुणीय किय करुणा । ओम्दी  
ए पशुपंखी चमीयां ॥ रहो० ॥ २ ॥ गोद विज्ञान में बली जानें । करुं वीन  
ति चरणे पमीयां ॥ रहो० ॥ पियुविण दीहते वरिस समोवड । न गमें  
स्वपनमें सेजडीयां ॥ रहो० ॥ ३ ॥ विरह दिवानी विलपति जोवन । वामी  
वनघर सेरडीयां ॥ रहो० ॥ अष्टजवांतर नेह निवाहत । नवमे जवते वीठ  
मीयां ॥ रहो० ॥ ४ ॥ सहसा वनमांहे स्वामि सुणीनें । राजुल रैवत गिरि  
चमीयां ॥ रहो० ॥ पियुकर निजशिरे हाथे देवा । व्रतचाखे चारित्र शेलडीयां ॥  
रहो० ॥ ५ ॥ जादववंश विनूषण नेमजी । राजुल मीठी वेजमीयां ॥ रहो० ॥  
ज्ञानविमल गुणे दंपती निरखत । हरषत होत मेरी आंख मीयां ॥ रहो० ॥ ६ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री पार्श्वनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कृष्ण चोथ चैत्रहतणी प्राणतथी आया । पोषवदि दशमी ज  
नम त्रिजुवन सुख पाया । पोषवदि इग्यारशें लहे सुनिवर पंथ । कमठासुर  
उपसर्गनो टाल्यो पलीमंथ । चैत्रकृष्ण चोथह दिनें ए । ज्ञानविमल गुण  
द्वर । श्रावण शुदि आठमें लह्या । अविचल सुख जरपूर ॥ २३ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जलधर अनुकारें । पुण्य वल्ली वधारे । कृत सुकृत संचारे वि  
वननें जे विमारे । नवनिधि आगारें कष्टनी कोडि वारे । मुळ प्राणाधारे  
मात वामा मल्हारे ॥ १ ॥ अर जनम सुहावे वीर चारित्र पावे । अनुजव  
लयलावे केवल ज्ञान पावे । षट्जे कल्याण संप्रतिजे प्रमाणें । सवि जिनवर  
प्राण श्री निवासाहि ठाण ॥ २ ॥ दश विधि आचार ज्ञानना जिहां विचार  
दश सत्य प्रकार पञ्चख्वाणादि विचार । मुनि दश गुण धार जेजया जिहां  
उदार । ते प्रवचन सार ज्ञानना जे आगार ॥ ३ ॥ दश दिशि दिशि पाळा  
जे महा लोग पाळा । सुरनर महिपाळा शुद्ध दृष्टी कृपाळा । नय विमल  
विशाला ज्ञान लह्या मयाळा । जय मंगल माला पास नामें सुखाळा ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ थारे माथे पचरंगी पाव सोनेरो ठोगलो मारुजी ॥ ए देशी ॥

प्रनुपामजिणेसर जुवन दिनेसर संकरो ॥ साहिवजी ॥ ली  
ला अलवेसर धीरम मंदर चूधरो ॥ साहिवजी ॥ तुं अगम अगोचर कृत  
शुचि सुंदर सुंदरो ॥ सा० ॥ पद नमित पुरंदर तनुं ठवि निरमल जलधरो ।  
सा० ॥ १ ॥ तुं अकृत्य अरूपी ब्रह्मसरूपी ध्यानमां ॥ सा० ॥ ध्याये जे  
जोगी तुमगुण जोगी ज्ञानमां ॥ सा० ॥ व्यवहार प्रकासी निश्चयवासी  
निजमते ॥ मा० ॥ जिन आतम दरसी अमल अजेशी नयमते ॥ सा० ॥  
॥ २ ॥ षट् दर्शन चासे युक्ति निरासे शासन ॥ सा० ॥ स्यादवाद विशा  
लें सहज समाजे जावने ॥ सा० ॥ तुं ज्ञानने ज्ञाने आतम ध्याने आन  
मा ॥ सा० ॥ परमागम वेदी जेद अजेदी नही तमा ॥ मा० ॥ ३ ॥  
एक अनेके बहुत विवेक देखिये ॥ सा० ॥ आतम नतकामी अगुण अ  
कामी लेखिये ॥ सा० ॥ संविगुण आरामी हो बहु नामी ध्यानमां ॥ सा० ॥  
आपेगत नामी अंतरजामी ज्ञानमां ॥ सा० ॥ ४ ॥ तुं अनीयत चारी नि  
यत विचारी योगमां ॥ मा० ॥ अध्यातम सेली एम बहु फेला आगमें ॥  
मा० ॥ तुं धर्म मन्यासी सहज विलासी समगुण ॥ मा० ॥ मोहारि विना  
शी तुं जित काशी कविजणे ॥ सा० ॥ ५ ॥ ज्ञान दर्शन सायक गुणमणी  
जायक नाथ ठे ॥ सा० ॥ पुर्गति पुःख धायक गुणनिधि दायक हाथ ठे ॥  
मा० ॥ जित मन मथ सायक त्रिजुवन नायक रंजणो ॥ मा० ॥ अनेकांति  
एकांती तुं वेदांती अगंजणो ॥ सा० ॥ ६ ॥ ध्यानानलयोगे पुद्गल जोगे ते  
दहा ॥ मा० ॥ अंतरंगिणु हणीया मूलयी खणीया नविरहा ॥ मा० ॥ तुं हेतु  
समीयो सुखर नमियो सहृदये ॥ सा० ॥ जगधी न्यारी चरित्र तुमारी कुणलहे  
॥ मा० ॥ ७ ॥ इम तुम गुण शुणीये कर्मने हणीये पलकमां ॥ सा० ॥ पण नवि  
अवगाणिये सेवक गणीये ललकमां ॥ सा० ॥ वाणचे नंदा त्रिजुवन इंदा सं  
शुणे ॥ मा० ॥ ज्ञानविमल नृसिंहा तुमपय वंदा गुण जणे ॥ सा० ॥ ८ ॥ इति ॥ ॥

॥ ॥ अथ श्री वर्धमान जिन चैत्यवंदन ॥ ॥

॥ ॥ शुद्धि आषाढ ऋतु दिवसे प्राणतथी चवीया । तेरम चैत्रह शुद्धि  
दिने विशुद्धीये जाणीया । मृगाशिर वदि दशमी दिने आपे संजम आराधे



शुद्धि दशमी वैशाखनी वर केवल साधै । काती कृष्ण अमावसीए । शिव  
गति करे उद्योत । ज्ञान विमल गौतम लहे । पर्व दीपोत्सव होत ॥ २४ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ लह्यो जवजल तीर धर्म कोटीर हीर । दुरति रज समीर मोह  
मूसार सीर । दुरित दहन नीर मेरुथी अधिक धीर । चरम श्री जिनवीर  
चरण कटपट्ट कीर ॥ १ ॥ इम जिनवर माला पुण्य नीर प्रवाला । जग  
जंतु दयाला धर्मनी शास्त्र शाला । कृत सुकृत सुगाला ज्ञान लीला विशाला  
सुरनर महिपाला वंदता ठे त्रिकाला ॥ २ ॥ श्री जिनवर वाणी छ्वादशांगी  
रचाणी । सगुण रयण खाणी पुण्य पीयूष पाणी । नवम रस रंगाणी सिद्धि  
सुखनी निशाणी । दुह पीलण घाणी सांजलोजाव जाणी ॥ ३ ॥ जिनमत  
रखवाला जे वली लोग पाला । समकित गुणवाला देव देवी कृपाला । करो मं  
गल माला टालिने मोह हाला । सहज सुख रमाला बोध दीजें विशाला ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आज गईथी हुं समवसरणमें ॥ ए चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वंदो वीर जिणेंसर राया । त्रिशला माता जायाजी । हरि लंछन कंचन  
वनकाया । मुज मन मंदिर आयाजी ॥ वंदो वीर ० ॥ १ ॥ दुषम समये शासन जे  
हना । शीतल चंदन ढायाजी । जे सेवतां जविजन मधुकर । दिन दिन होत स  
वायाजी ॥ वंदो ० ॥ २ ॥ ते धन्य प्राणी सदगति जाणी । जस मनमां जिन  
आयाजी । वंदन पूजन सेवन कीधी । तेकाजननी मायाजी ॥ वंदो ० ॥ ३ ॥ कर्म  
कठिन जेदन बलवत्तर । वीर विरुद्ध जिन पायाजी । ए कल मल अतुली बल  
अरिहा । दुशमन दूर गमायाजी ॥ वंदो ० ॥ ४ ॥ वंछित पूरण संकट चरण  
तुं मात पिता तुं सहायाजी । मिहपरें चारित्र आराधी । मुजश निशान व  
जायाजी ॥ वंदो ० ॥ ५ ॥ गुण अनंत जगवंत विराजे । वर्धमान जिनराया ।  
जी । धीर विमल कवि सेवक नय कहे । शुद्ध समकित गुण दायाजी ॥ वंदो ० ॥  
॥ ५ ॥ इति ॥ इहां । पूरण जय वीरराय कहेवो ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री शाश्वता अशाश्वता जिन चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सकल मंगलकार एही । सिद्ध सकल पयछाण । स्याद्वाद सा

धन पद एही अध्यात्म गुणगण ॥ १ ॥ ( सहीए नमो जिणाणं ) ॥ २ ॥ ए  
 ( आंकणी ) ॥ विहुं तेरलख सग कोमि जवणवई । सासय जिणहरमाणं ।  
 तेरशें नव्याशी कोमी सगमाठि विंवह परिमाणं ॥ ३ ॥ सही० ॥ मेरु  
 वेताढ्य वखारा कंचन । यमक कुंढह जाणुं । एकत्रीश ओगाण्यासी  
 जिनवर । मानवलोके वखाणुं ॥ ४ ॥ स० ॥ त्रिलख इक्यासी सहस चारसो  
 व्याशी अधिक विंव जाणुं । रुचक कुंडल नंदीसर प्रमुखें । सुंदर अशी चेइया  
 णुं ॥ ५ ॥ स० ॥ अशत शय सहसा चालीसा । विंवतणुं परिमाणं ।  
 सरवाले वत्रीशमें गुण सछी । तिर्यक् लोके चेइयाणं ॥ ६ ॥ स० ॥ प्रतिमा  
 त्रण लख सहस एकणुं । चउसय तेवीस परिमाणं । साठ चौवारा अवर  
 त्रिवारा । रुचक कुंड नंदीठाणं ॥ स० ॥ वार देवलोके नवमेवेयके । अ  
 उत्तर पंच विमाणं । लाख चोराशी सहस सत्ताणुं । त्रैवीश चेई जाणुं  
 ॥ ७ ॥ स० ॥ एकसो वावन कोमि लख चोराणुं । सहस चुमालीस  
 आणुं । सातशें साठ ऊपर उर्व लोके । जिन पन्निमा मन आणुं ॥ ८ ॥  
 ॥ स० ॥ त्रिचुवन मांहे मासय जिनहर । सगवन्न लख वसें व्याशी । आठ  
 कोमि अथ प्रतिमा संख्या । सुणजो सम कित वामी ॥ १० ॥ स० ॥ पन्न  
 रशें कोडी वेतालीश कोमी । तेम अछावन्न लख्या । उत्रीश सहस अशी व  
 लि साधिक । मासय विंवनी संख्या ॥ ११ ॥ स० ॥ एकसो वीश त्रिवारे  
 प्रतिमा । चोनुखें शत चौवीश । पांच सत्ता तिहां साठ वधारो । एकशत  
 अशी जगीश ॥ १२ ॥ स० ॥ इण्ण चंद्रानननें वर्धमान । वारिखेण  
 चत्तनामें व्यंनर ज्योतिषी मांहे अमंख्या । जिन घर पन्निमा मानें ॥ १३ ॥  
 स० ॥ मक्ख सुगसुर जावना जावे । ममकिण गुण दीपावे । परित्त संमार  
 करी शिव जावे । कुमति नेम न जावे ॥ १४ ॥ स० ॥ पानाजनें तिर्यक  
 लोके । पणमय धणु परिमाण । कथें मग्गकर पणमय धणु भाणुं । मासय  
 अमासय जाण ॥ १५ ॥ स० ॥ तीर्थ विशेष वर्जा शामय विणु । शंखजा  
 दिक वट्टजा । ते मविहनें त्रिविधें नमनां । पातक जावे मगजा ॥ १६ ॥  
 स० ॥ ज्ञानविमल भनूनाम जर्पता । जहाये कोडि कट्ठाण । मनह  
 मनोअ मगजा सीजे । जनम मक्ख सुविद्याण ॥ १७ ॥ स० जवहर

एा कीधी केवल पशुवां देखीनेहो० के ॥ पशु० ॥ पूरण पाळी प्रीत वली निज  
 नारनहो० ॥ वली० ॥ आपी संजम चार पोहोंचामी पारनहो० ॥ पो० ॥ ४ ॥  
 जण जणशुं जे प्रीत करे ते जन घणाहो० ॥ करे० ॥ निरवाहे धरी नेहके ते  
 विरजा सुण्या हो० ॥ ते वि० ॥ राजिमतीनो कंत वखाणे कविजना हो० ॥  
 वखा ॥ तुहेतो दीधो ठेहके तेहना थिरमना हो० के ॥ तेहना० ॥ ५ ॥ जादव  
 नाथ सनाथ करो मुजने सदाहो० ॥ करो० ॥ दिअो मुज शिर हाथ होवे जेम  
 संपदा हो० ॥ होवे० ॥ जलि जलि मरे पतंग दीवानें मन नही हो० ॥  
 दीवा० ॥ नाणें मन असवार घोडो दौने सहीहो० ॥ घोडो० ॥ ६ ॥ सबला  
 साथे प्रीत निवलनें नवि कही हो० ॥ निवल० ॥ पण लागीजे थोमी, किहां  
 जात्रे वही हो० ॥ किहां० ॥ जे सज्जनशुं होय ते जीरु न मंजीयेहो० के ॥  
 जीरु० ॥ तुमचा मुनि ज्यारे होत्रे तो, कर्मनें मंजीयेहो० के ॥ कर्म० ॥ ७ ॥  
 तो दुश्मन होय दूर, कोणे नविगंजीयेहो० ॥ कोणे० ॥ प्राणाधार पवित्रके, द  
 रशन दीजीयेहो० के ॥ दर० ॥ ज्ञानविमल सुखपूर, मलीनें कीजीये हो०  
 म० ॥ ८ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ श्री आबूतीर्थ स्तवन० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चालो चालोने राज गिरिधर रमवा जइयें ( ए चाल ) ॥ ❀ ॥  
 ॥ ❀ ॥ आवो आवोने राज श्री अर्बुद गिरिवर जइयें ॥ श्री जिनवर  
 नी प्रीति करीनें आतम निर्मल थइयें ॥ आवो० ॥ आंकणी ॥ विमल व  
 सहीना प्रथम जिणेसर । सुख निरखें सुख पइयें । चंपक केतकी प्रमुख  
 कुसुम वर । कंठे टोकर ठवियें ॥ आवो ॥ १ ॥ जिमणे पासे लुणग वसही  
 श्री नेमीसर नमीयें । राजि मती वर नयणें निरखी । दुःख दोहग सवि गमी  
 यें ॥ आवो० ॥ २ ॥ सिद्धाचल श्री रूपज जिणेसर । रैवत नेम समरी  
 यें । अे दो वसिनी यात्रा करता । विहुं तीरथ चित्त धरीयें ॥ आवो० ॥ ३ ॥  
 मंरुप मंरुप विविध कोरणी । निरखी हियडै ठरियें । श्री जिन वरना वि  
 व निहाली । नरप्रव सफलो करीयें ॥ आवो० ॥ ४ ॥ अविचल गढ  
 आदीश्वर प्रणमी । अशुभ कर्म सवि हरीयें । पाश शांति निरखी जव  
 नयणें । मन मोह्यो डुंगरीयें ॥ आवो० ॥ ५ ॥ पार्जे चढतां उजम

ब्राधे । जेम घोडे पाखरीयें । सकल जिनेसर पूजी केशर । पाप पडल सवि  
हरीयें ॥ आवो० ॥ ६ ॥ अेकण ध्यानं प्रनुने ध्यातां । मनमांहि नवि म्नीयें  
ज्ञान विमल कहे प्रनु सुपसायें । सकल संव सुख करियें ॥ आवो० ॥ ७ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री अष्टापद गिरि स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अष्टापद गिरि यात्रा करणकुं । रावण प्रतिहरी आया । पुष्प  
क नामें विमानें वेशी । मंदोदरी सुहाया ॥ १ ॥ श्री जिन पूजीयें लाल ।  
समाकित निर्मल कीजें । नयणें निरखी हो लाल । नरजव सफलो कीजें ।  
हीयमे हरखी लाल । समता संग करीजें । ( आंकणी ) चनुमुख चनुगति ह  
रण प्रसादें । चनुवीसे जिनवेठा । चनुदिशि सिंहासन समनामा । पूरुवदिशि  
दोय जिठा ॥ श्री० ॥ २ ॥ संजव आदें दक्षिण चारे । पश्चिमे आठ सुपासा ।  
धर्म आदि उत्तर दिशि जाणो । एवं जिनचनुवीशा ॥ श्री० ॥ ३ ॥ वेठा सिंह  
तणें आकारे । जिन हर जस्ते कीधा । खण विंव मूरति थापीनें । जगजश  
वाद प्रसिद्धा ॥ ४ ॥ करे मंदोदरी राणी नाटक । रावण तांत बजावे । मादल वी  
णा ताज तंवूरो । पगरव ठम ठम कावे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ जक्ति जावें एम नाटक  
करतां । तूटी तंती विचारें । साधी आप नसा निज करनी । लघु कजाथुं  
ततकाजें ॥ श्री० ॥ ६ ॥ द्रव्य जावथुं जक्ति न खंडी । तो अकृप पद साधुं  
समाकित सुखरु फल पामीनें । तीर्थकर पद जाधुं ॥ श्री० ॥ ७ ॥ इणि  
परें जविजन जे जिन आगें । बहुपरें जावना जावे । ज्ञान विमल गुण तेह  
ना अट निश । सुर नर नाचक गावे ॥ श्री० ॥ ८ ॥ इति० ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री समेत शिखर स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ समेत शिखर गिरि नेटीयेंरे । मेटवा जवना पाम । आत  
म सुख वरवा जणीरे । ए तीर्थ गुण निवासेरे ॥ १ ॥ जविवां मे  
वो तीर्थ ऐह । समेत शिखर गुण गेहरे ॥ जवि० ॥ से० ॥ ( ए आ  
कणी ) ॥ समेत शिखर कजपें कळोरे । वीश हुंक अधिकार । वीश तीर्थकर  
शिव वरचारे । बहु सुनिनें परिवारे ॥ ज० ॥ २ ॥ से० ॥ मिद क्षेत्र मां हे व  
स्यां । जाले नय व्यवहार । निश्चय निज स्वरूपमांरे । दांय नय प्रनुजीना  
मार ॥ ज० ॥ ३ ॥ से० ॥ म० ॥ आगम वचन विचारारे । अति दुर्ग

मनयवाद । वस्तु तत्व जिणे जाणीयेरे । ते आगम स्यादवादरे ॥ ज्ञ० ॥ ४ ॥  
 से० ॥ स० ॥ जय रथ राय तणी परेरे । जात्रा करो मनरंग । जव दुःखने  
 देइ अंजलीरे । थाये सिद्धि वधूनो संगरे ॥ ज्ञ० ॥ ५ ॥ स० ॥ समकित युत  
 जात्रा करेरे । तो शिव हेतु थाय । जव हेतु किरिया त्यागथीरे । आतम गुण  
 प्रगटायरे ॥ ज्ञ० ॥ ६ ॥ से० ॥ जेह समयें सम कित थयोरे । तेह समयें  
 होय नाण । ज्ञान विमल गुरु ज्ञाखीयोरे । आवश्यक ज्ञाध्यनी वाणरे ॥  
 ज्ञ० ॥ ७ ॥ से० ॥ स० ॥ इति चौमाशी देववंदन विधिः ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री पर्युषणपर्व स्तुतिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सत्तरजेदी जिन पूजा रचीनें स्नात्रमहोद्भव कीजैजी । ढोल द  
 मामा जेरी नफेरी जलरिनाद सुणीजैजी । वीरजिन आगल जावना जावी  
 मानवजव फल लीजैजी । परब पजूसण पूख पुण्यें आव्या इम जाणी  
 जैजी ॥ १ ॥ मास पास वली दशम दुवालस चत्तारी अठ कीजै  
 जी । ऊपर वलि दशदोय करीनें जिन चौवीश पूजीजैजी । बमा कल्पनो  
 ठठकरीनें वीरवखाण सुणीजैजी । परवानें दिन जन्म महोत्सव धवल मं  
 गल वरतीजैजी ॥ २ ॥ आठ दिवसलगे अमर पलावी अठमनुं तप कीजै  
 जी । नागकेतुनी परै केवल लहियै जो सुजजावें रहियैजी । तेलाधर दिन  
 त्राण कल्याणक गणधर वाद वदीजैजी । पास नेमीसर अंतर त्रीजै रुपज च  
 रित्र सुणीजैजी ॥ ३ ॥ बारशै सुत्रनें समाचारी संवत्सरी पम्किमियेजी ।  
 चैत्यप्रवामी विधिसुंकीजै सकल जंतुनें खामीजैजी । पारणानें दिन सामीव  
 त्सल कीजै अधिक वमाईजी । मान विजय कहै सकल मनोरथ पुरो देवी  
 सिद्धाईजी ॥ ४ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री नेम राजीमती वारमाशो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सीयालै खाह जलीरे लाल ( ए चाल ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तोरणथी रथ फेरीयोरे लाल । नीबुर नेम कुमार । प्रेमविलुधी प  
 दमणी हो लाल । वीनवै राजुजनार ॥ १ ॥ ( हो रंगीला नेम, सुणमांहरी अर  
 स ) । सहीयांसुं राजुज कहै हो लाल । मगसिर नायो पीउ । प्रीतम विण  
 पाहरो हो लाल । धीरज न धरे जीव ॥ २ ॥ हो० ॥ पोसमहीनो आ

वीयो हो लाल । आयो मोडुख देण । तो सूरतने सांवलाहो लाल । देखण  
तरसेनेण ॥ ३ ॥ हो० ॥ माहमहीनो सीपमेहो लाल । प्रीतमंग पोढे नारि  
प्रीतम विणहुं एकली हो लाल । केमरहुं निरधार ॥ ४ ॥ हो० ॥ होली  
खेले हेतसुरे लाल । फागुणमें नरनारी । हुं किणसुं खेळुं हिवे हो लाल । पाम  
नही भरतार ॥ ५ ॥ हो० ॥ चैतमहीने चांदणीरे लाल । संजोगण सुख  
देण । विरहणने वालम विनारे लाल । रोवन जावे रेण ॥ ६ ॥ हो० ॥ वन  
हरीया वेमाखमेरे लाल । मांजरही महकाय । अरजसुणी अवला नणी हो  
लाल । तपन मिटावो आई ॥ ७ ॥ हो० ॥ जेठ नपे लु आकरो हो लाल ।  
दाऊ कोमल गान । ससनेही साहिब विनारे लाल । कुण पूरे मुज्वात ॥ ८ ॥  
हो० ॥ आसाढे कार्जा घटा हो लाल । उनमि आयो मेह । कंत मिल्या नि  
ज नारसुरे लाल । धरती मिलीया मेह ॥ ९ ॥ हो० ॥ श्रावण चमकै दाम  
नी हो लाल । वनवरमे ऊमलाड । डण स्त सूतां एकजी हो लाल । क्युं क  
रि रेण विहाड ॥ १० ॥ हो० ॥ कार्जा कालाहण मिली हो लाल । चाद्र  
वढे वरखंत । अरज सुणीने साहिवा हो लाल । पुरो मोमन खंत ॥ ११ ॥  
हो० ॥ आशोजे आंसुरे हो लाल । नाह विना निमि दीम । सारन पूगी  
साहिबे हो लाल । राखिरह्यो मनरीस ॥ १२ ॥ हो० ॥ कार्ती दिढ तानी  
करोगे लाल । जाइ मिली गिरनार । देखी सुख निज नाहनो हो लाल । मफ  
ल गिणें अवनार ॥ १३ ॥ हो० ॥ संयमले पीत में हवै होलाज । पामे न  
वनो पार । डणपर पाजे प्रीतमी हो लाल । धन धन ते नरनारि ॥ १४ ॥ जे  
कीर्धा पसुऊपर हो लाल । मो परिकरिज्यो देव । चंदजणी ओकरि दयाहो  
लाल । प्रनुचरणगी मेव ॥ १५ ॥ हो० ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥  
इति श्री नेमिराजुल वारे मासो संपूर्णम् ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥  
॥ ॐ ॥ अजीमगंजे नेमिजिन नूतन चैत्य प्रतिष्ठा स्त० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ केशरियाने ऊयाजको० ( इस चालमें ) ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ आज भाखि प्रनु दग्गण में पायो । मेरो रोम रोम झुलमायो



आ० ॥ अनंत काल जब जल माहि जमतां । मिथ्या मत जसमायो । कुमति नारसंग इतजत मोलत । चेतन बहु दुःख पायो ॥ आ० ॥ १ ॥ पुन्य संयो गै नरजवपामी । सुमति नारसंग चायो । हीनपुण्यते मोह पकरकै । विषय क षाय रमायो ॥ आ० ॥ २ ॥ सुगुरु प्रसादै प्रजुगुण महमा । श्रवण सुणी हरषायो । अवसर पाय नेम पद पंकज । अलि जिम चित्त लुजायो ॥ आ० ॥ ३ ॥ समुद्र विजै सिवादेवीके नंदन । सहु सुर नर दिल जायो । इंद्र इं द्राणी मंगल गावत । मोतियन चोक पुरायो ॥ आ० ॥ ४ ॥ धन्य धनी धन्यजाग हमारो । आनंद आज सवायो । तारण तरण बाल ब्रह्मचारी नेम जिनंद वधायो ॥ आ० ॥ ५ ॥ पूरब देश अजीमगंजमें । श्री संघ चित्त जमायो । स्थापना चैत्य बिंब की करने । जिनधम जगदीपायो ॥ आ० ॥ ६ ॥ सिखि सागर रजनीस नंद सन् । माधव सुद सुनि जायो । श्री जिन चंद सुरिंदके श्री वर । हितप्रिय मोहन गायो ॥ आ० ॥ ७ ॥ १९४३ वै । सु । ७ ॥ अजीमगंजे पंचायती श्री नेमिजिन नूतन चैत्य प्रतिष्ठा स्तवनं ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ नवपद स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ जीया चतुर सुजाण । नवपदके गुण गायरे ॥ जी० ॥ नवपद महिमा जगमें मोटी । गणधर पारन पायरे जी० ॥ १ ॥ करम निकाचित दूर करणकों । सुंदर सुद्ध उपायरे ॥ जी० ॥ २ ॥ इनको पुष्ट आलंबन करतां अजरामर सुखपायरे ॥ जी० ॥ ३ ॥ ए जिनजए आगामी होयगे । नवप द संग पसायरे ॥ जी० ॥ ४ ॥ परम कृपा शिव रमणी वरके । शमर श मर गुणगायरे ॥ जी० ॥ ४ ॥ इतिपदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥❀॥ सकल शाश्वता अशाश्वता चैत्य नमस्कार स्त० ॥❀॥

॥ ❀ ॥ सद्रक्त्या देवल्लोके रवि शशि नुवने व्यंतराणां निकाये । नक्ष त्राणां निवासे ग्रहगण पटले तारकाणां विमाने । पाताले पन्नगेंद्र स्पृष्टिक मणिकणे ध्वस्तसांद्रां धिकारे । श्री मर्त्तियं कराणां प्रति दिवस महं तत्र चे त्यांनिबंदे ॥ १ ॥ वेताढ्ये मेरुशृंगे रुचक गिरवरे कुंभले हस्तिदंते । वटारै कुट नंदीश्वर कनक गिरौ नेपथे नीलवंते । चित्रेशैले विचित्रे यमक गिरवरे चक्रवाले हिमाद्रौ ॥ २ ॥ श्री० ॥ श्री शैले वंध्य शृंगे विमल गिरवरे अर्जुदे पाव

के वा । सम्पत्ते तारकेवा कुलगिरि शिखरे टापदे स्वर्ण शैले । सहाद्रो चोऊ  
यते विपुल गिरवरे गुह्यरे रोहणाद्रौ ॥ ३ ॥ श्री० ॥ आपाढे मेदपाटे द्वित  
तट मुकटे चित्रकोटे त्रिकोटे । लाटे नाटेच धाटे विकट घन तटे देवकूटे  
विराटे । कर्णाटे हेमकूटे निकट तरकटे चित्रकोटेच जोटे ॥ श्री० ॥ ४ ॥  
श्री माले मालवेवा मलपति निखले मेखले पिठलेवा । नेपाले नाह  
लेवा कुवलय तिलके मिंघले मेखलेवा । डाहले कोशलेवा विगलित  
मलिले जंगलेवा तवाले ॥ श्री० ॥ ५ ॥ अंगे वंगे कलिंगे सुगत जनपदे  
सुप्रियागे तिलंगे । गोमे चोमे मुँद्रे वर तर द्रविणे उद्रीयाणे पुँद्रे । आद्रे  
माद्रे पुँद्रे द्रवियल कुवले कर्त्ति कुञ्जे सुराष्ट्रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥  
चंपायां चंद्र मुख्यां गजपुर मथुरा पत्तने चोऊयिन्यां । कौशल्यां कौशला  
यां कनक पुरवरे देवगिर्यां मकाश्यां । नासिक्ये राजगेहे दशपुर नगरे ऋदले  
तांमलिप्यां ॥ ७ ॥ श्री० ॥ स्वर्गे मर्त्येन रक्षे गिरि शिखर क्षदे स्वर्नदी  
नीरतीरे । शैलाग्रे नागलोके जलनिधि पुलने नृत्हाणां निकुंजे । ग्रामे रावे  
वनेवा स्थल जल विपमे दुर्गमध्ये त्रिसंध्यं ॥ ८ ॥ श्री० ॥ इत्थं  
श्री जैन चैत्यं स्तुति मति मनसा अक्तिआजां प्रमिवात् । प्रोद्यत्कल्याण  
हेतुः कलि मलि हरणे ये पठन्ते विशिष्टं । तेषां श्री तीर्थ यात्रा फल मति  
मतुलं जायते मानवानां । कार्यं सिद्धि स्तवोच्चै प्रभवति मततां चित्त मानंद  
कारी ॥ ९ ॥ इति श्री तीर्थ माला स्तुति संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री आदिजिन आरती ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अपहरा करती आरती जिन आगे । हारे जिन आगेरे जिन  
आगे । हारे गंगा अविचल सुव्रता मांगे । हारे नाजीनंदन पाश ॥ अप  
हरा ॥ १ ॥ नाचै नाच नाचती पाव ठमके । हारे दोयचरणे ऊपर  
ऊमके । हारे मोवन धृवरी वमके । हारे जेती फुदनी बाल ॥ अप०  
॥ २ ॥ नाजमृदंगनै बांशजी कपवीणा । हारे रुमा गावती स्वर्जोणा ।  
हारे मधुर सुरा सुर नयणां । हारे जेती सुखमुं निहाल ॥ अप० ॥ ३ ॥  
धन्य धरदती मानने प्रनूजाया । हारे नोगी कंचन वरणां काया । हारे मैती  
भूखान्ये पाया । हारे नोगी देख्यो दीदार ॥ अप० ॥ ४ ॥ प्राणजीवन

परमेश्वर प्रभुप्यारो हारे प्रभु सेवक हुं हुं तारो । हारे जवो जवना दुख  
ना वारो । हारे तुमे दीनदयाल ॥ अप० ॥ ५ ॥ सेवकजाणी आपणो चित्त  
धरजो । हारे मोरी आपदा सगली हरजो । हारे सुनि माणक सुखीउ क  
रजो । हारे जाणी पोतानुं बाल ॥ अप० ॥ ६ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्राद्ध दिन कृत्य ( तथा ) देव वंदन जाण्यसैं  
मंदर जाणैकी पूजन करनेकी विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम श्रावक दो च्यार वसी रात्ररहते उठके ( प्रथम ) दिलमें न  
वकार मंत्रका स्मरण करै ॥ में कोणहुं, क्या मेरी जातिहै, क्या मेरा कृत्य  
है, क्या मेरा धर्महै ( इत्यादि ) धर्म जागरणासैं दिलकों सावचेत करै (पीठे)  
मलमूत्रकी बाधा दूर करके, अंगशुचीनूत करै ॥ सामायक, प्रतिक्रमणादि  
करके, विधिसंयुक्त घरदेराशरकी पूजाकरै ( पीठे ) यथाशक्ती अन्ना वस्त्र  
आभूषण पहरके, घोसा, हाथी, रथ, पालखी, सिपाई, नोकर, जाई, बंधु  
( इत्यादि ) परिवार सहित पूजाके लायक, फल फूल प्रमुख, उत्तम, द्रव्य हाथ  
में लेके । जव्यजीवोंकों मोक्ष मार्ग दिखाता हुआ, जिनशाशनकी प्रज्ञाव  
ना करता हुआ, जिनमंदर जावै । जिनमंदरमें प्रवेश करके १० त्रिक विधि  
शाचवन करै ( सो १० त्रिक लिखतेहै ) ( पहिला त्रिक ) ३ निस्सही )  
कहणैका ( जिसमें ) १ निस्सही, जिनमंदरमें पैशतेही कहै ( कहे पीठे )  
संसार घर संबंधी कुठजी कार्य विचारणा न करै ॥ १ ॥ ( दूसरी ) निस्सही,  
प्रदक्षिणा तीन दिये पीठे कहै । जिन मंदरमें फूटा टूटा ठीककरानैकी  
सारसंज्ञाल रखीथी सोजीगोमै । इहां द्रव्य पूजा करणी मोकली रही  
॥ २ ॥ तीसरी निस्सही कहे पीठे, निकेवल जाव पूजा करै । पिण द्रव्य  
पूजा न करै ॥ ❀ ॥ यह प्रथम निस्सही त्रिक कहा ॥ ❀ ॥ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूसरा त्रिक ) ज्ञान त्रिककी आराधना करनेकों प्रभुके द  
क्षिणावर्त्तसैं तीन प्रदक्षिणादेवै ॥ ❀ ॥ ( तीसरा त्रिक ) मूल नायकजीके  
विषकों पंचांग मिलाके, तीन बेर नमस्कार करै ॥ ३ ॥ ( चौथा त्रिक ) प्र  
भुकी अंग १ । अग्र २ । जाव ३ ॥ त्रिविध प्रकार पूजा करै ॥ ( अब  
निस्सही किये पीठे । कृत्य, अकृत्य ( तथा ) पूजा विधि, संक्षिप्त लिखते हैं ॥

निस्सही किये पीठे, मनोगुप्ती, वचन गुप्ती, काय गुप्ती, करके युक्त रहै । पां चो इंद्रियांको बशमें रखै । गमनां गमनमें उपयोगी रहै । गीतादिक अन्य का सुनके चित्तमें व्याकुलता न रखे । कुञ्जी देव कार्यकों ठोमके और कार्यकी विचारणा न करै । राज कथादि संपूर्ण विकथा ठोमै । जन्म ( और ) कर्मके, अनुगत वचन न बोले ( अर्थात् ) कोईके माता पितादिक का किया थका, खोटा कार्यकों प्रगट न करै ( तथा ) कर्मानुगत वचन आंधेकों आंधा, गोलैकों गोला ( इत्यादि वचन ) नबोलै ॥ निस्सही किये पीठे, जिन मंदरमें धर्म संयुक्त, आत्म हितकारी, प्रमाणोपेत वचन बोलना चाहिये ॥ ( जिसनें ) मन, वचन, कायाके, खोटै व्यापारोंका निषेध अपनी आत्मासें कियाहे ( उसके जावसें ) निस्सही होय ( और ) जिसनें दूषणका त्याग न कियाहे । उसके केवल शब्द उच्चारण मात्र, द्रव्य निस्सही होय ( इसवास्ते ) पूजायोग्य उत्तम वस्त्र पहरके, आठतहके उज्जल वस्त्रसें सुखकोश बांधे । धूपादिकसें अंग अपना सुध करै । जावसें, दूशरी निस्सही कहते, सुलगुंजारैमें प्रवेश करै । जयणा संयुक्त पूजा करै । पूजा करते हुए, शरीरमें खाज न खुणै । खेल खंखार न करै । निकेवल जगवानकी स्तवनामें चित्त रखे । प्रथम सुगंधयुक्त जल पंचामृतसें स्नात्र करावै । सु कमाल अन्ना कोमल सुगंध युक्त वस्त्रसें जगवानका अंगलूहै । कपूर कस्तूरी मिश्रित सुध केशर चंदनका विलेपनकरै ॥ मुजवर्ण, मुजगंध युक्त, जीवादि रहित, निहोस, गुलाब, चंपा, चंपेली, केवला, जाई, जुई, मोगरादिक पुष्पसें पूजा करै । अष्टांग धूप अगरवत्ती खेवै ॥ मंगलदीप करै । अखंर उज्जल अहूतासें प्रभूके सन्मुख अष्ट मंगलीक लिखै ॥ दर्पण १ । चद्रामण २ । वर्धमान सरावसंपुट ३ । श्रीवत्स ४ । मन्वयुग ५ । कलश ६ । स्वस्तिक ७ । नंदावर्त्त ८ । ( ऐसा ) अष्ट मंगलकी रचना करै । पंच वर्ण फूलोंमे अष्ट मंगलीक पूजे । सुंदर कुंकुम मिश्रित चंदनसें हत्योदेवै । उत्तम नैवेद्य चढावै । अन्ना खाद्य फल चढावै । ( इत्यादि ) पूजाकीविधि आरती पर्यंत । राय प्रशेणी, ग्याताधर्म कथा, जीवाभिगमादि, सिधांतोंमें लिख्ये मुजव करै ( पीठे ) अंतरंग जत्तीसें प्रभूके सन्मुख नाटक करै ॥ ( जैसे )

देवेंद्र, दानवेंद्र नारद, इनोंने ( तथा ) उदाई राजाकी, राणी प्रजावतीने  
द्रोपदीने नाटक किया ( और ) रावण प्रमुख, कई जीवोंने अष्टापदादि  
ऊपर नाटक करके, तीर्थकर गोत्र उपार्जन किया ( तैसें ) प्रभूके सन्मुख  
शंकारहित होके । उत्तम पुरुष नाटक करै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( अब ) जल चंदन पुष्पादिकसें पूजा करै ( सो ) अंगपूजा  
॥ १ ॥ प्रभूके सन्मुख नैवेद्य प्रमुख चढावै ( सो ) अग्र पूजा ॥ २ ॥ प्र  
भूके सन्मुख शक्रस्तवादि गीत गान नाटकादिक करै ( सो ) प्राव पूजा  
॥ २ ॥ ( यह द्रव्य पूजाका विचार गव्भिर्जत चोथा त्रिक कहा ) ॥ ❀ ॥  
( अब पांचमा त्रिक ) ॥ ❀ ॥ तीन अवस्था विचारणी ॥ पिनस्थ ( १ ) प  
दस्थ ( २ ) रूपातीत ॥ ३ ॥ इसमें पिनस्थ अवस्थाके तीन जेद ॥ जन्मा  
वस्था ॥ १ ॥ राज्यावस्था ॥ २ ॥ श्रमणावस्था ॥ ३ ॥ ( और ) केवल अ  
वस्थाको विचार करणा ( सो ) पदस्थ अवस्था ॥ निरंजनाकार ( सो )  
सिद्धावस्था । तिसकुं रूपातीत अवस्था कहतेहै ॥ ❀ ॥ ( अब षष्ठात्रिक )  
तीन दिशा ठोरुके प्रभूके सामनें निजर रखै । उर्ध्व १ ॥ अध २ ॥ तिर  
ही ३ ॥ दहणी । बांइ । पिठानी । निजर नही करै ॥ ❀ ॥ ( अब सातमा  
त्रिक ) तीन बेर धरती प्रमार्जकै । उस ठिकाणें चैत्यवंदन करै ॥ ❀ ॥  
( अब आठमा त्रिक ) ॥ ❀ ॥ वर्णादिक तीन संपदाका ॥ हरफशुद्ध उ  
च्चारण करै ( सो ) वर्ण शुद्धि ॥ १ ॥ हरफोंके अर्थपर आलंवन रखै  
( सो ) अर्थशुद्धि २ ॥ आलंवन एक जिन प्रतिमाका रखै ( सो )  
मन शुद्धि ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ( अब नवमात्रिक ) ॥ ❀ ॥ तीन मुद्रा  
करनी ॥ जोग मुद्रा १ ॥ जिनमुद्रा २ ॥ मुक्ताशुक्ति मुद्रा ३ ॥ ( इसमें )  
जोग मुद्रा किसकुं कहते है ॥ पद्म कोशाकारे । दोनों हाथ परस्पर अंगु  
ली मिलानी । एजोग मुद्रायें सक्रस्तव कहिये १ ॥ कान्तसग मुद्रा ( सो )  
जिन मुद्रा २ ॥ ( और ) दोसीपका जोमा निस आकार हाथ रखना । ( सो )  
मुक्ता शुक्तिमुद्रा ३ ॥ इस मुद्रासें प्रणिधान ( जय वीरराय ) इत्यादि करै  
( अब दशमात्रिक ) ॥ ❀ ॥ प्रणिधान तीन ॥ जिन वंदन प्रणिधान १ ॥  
मुनि वंदन प्रणिधान २ । प्रार्थना प्रणिधान ३ ॥ इसमें ( जो ) जावति चे

इयाई ( इत्यादि ) इहसंतो तत्थ संताई ( तक ) जिन वंदन प्रणिधान १ ॥  
जावंति केवि साहु ( इत्यादि ) तिविहेण तिदंरु विरियाणं ( इहां तक ) सु  
नि वंदन प्रणिधान २ ॥ जय वीयरायसें ( लेके ) आज्ञवम खंमा तक । प्रा  
र्थना रूप प्रणिधान ३ ॥ ❀ ॥ ( ऐसे दशत्रिकका पहला द्वार कहा ) ॥ ❀ ॥  
( अब पांच अग्निगमन साचवणेंका दूसरा द्वार कहतेहैं ) ॥ ❀ ॥ सचित्त  
द्रव्य कुशमादिक अपनेपास होय, उसकुं अलग रख देना १ ॥ ( और )  
राज चिन्ह, मुगट, ढत्र, खरूंग, चामर, पादुका, अचित्त वस्तू गोमना । आ  
जृषण प्रमुख पहस्था रखना २ । मन एकाग्र करना ३ ॥ एक पट्ट उत्तरासंग  
करना ४ ॥ जिन विंव देखतेही ( नमो जुवण वंधुणो ) ऐसें नमस्कार करना  
॥ ५ ॥ ❀ ॥ ए दूसरा द्वार कहा ॥ ❀ ॥ ( अब तीसरा द्वार दो दिशीका )  
पुरष दहणी दिशा बैठा । जगवंतकों बांदे ॥ स्त्री बांइ दिश बैठके जगवंत  
को बांदे ॥ ❀ ॥ ( अब चौथा द्वार तीन अग्निग्रह ) ॥ ❀ ॥ अग्निग्रह देव  
बांदणांमें कहाहे ॥ ( जघन्य ) नव हाथ दूर बैठके देव बांदे १ ॥ ( मध्यम )  
नव हाथसें उपरांत बैठके देव बांदे २ ॥ ( उत्कृष्ट ) ६० हाथ दूर बैठके  
देव बांदे ३ ॥ ( अब पांचमा द्वार चैत्यवंदनका ) ॥ ❀ ॥ ( सो ) जघन्य १ ॥  
मध्यम २ ॥ उत्कृष्ट ३ ॥ तीन जेद है ( तिहां ) एमो अरिहंताणं ( इत्या  
दिक कहके ) वा । एक दोय गाथाका नमस्कार कहके । शक्रस्तव कहना  
( ए जघन्य चैत्य वंदन १ ) जिस देव वंदनमें स्थापनार्हत स्तवदंरुक ।  
नमोत्थुणसें ( लेके ) अरिहंत चेइयाणं ( इत्यादिक संपूर्ण कही ) एक  
स्तुति कहे ( सो ) ॥ मध्यम चैत्यवंदन ( तथा ) कोई आचार्य कहे ॥ पांच  
दंरुक सहित । थुई गाथा ( ४ ) कहे ( सो ) मध्यम चैत्यवंदन कहिये ॥ ( तथा )  
विधिपूर्वक शक्रस्तवादि पांच दंरुक । जय वीयराय पर्यंत । आठे थुई ए  
देव बांदे । ( सो ) उत्कृष्ट चैत्य वंदन कहिये ॥ ❀ ॥ ( अब छठा द्वार  
पंचांग प्रणिपात करे । दो जानु । दो हाथ ( और ) मस्तक ( ए ) पांच  
अंग मिलायके जमीनमें लगावे ॥ ❀ ॥ ( अब सातमा द्वार ) ॥ ❀ ॥ जव  
न्ये एक गाथासें लेकर उत्कृष्ट एक सो आठ श्लोक ( तथा ) काव्यसें प्रभु  
की स्तवना करे ॥ ❀ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥



## ॥ ❀ ॥ अथ मोटी पंचतीर्थ आरती ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पहली रे आरती प्रथम जिणंदा । शत्रुंजय मंरुण रुषन जिणं  
दा ॥ जय जय आरती आदिजिणंदकी ॥ दूसरी आरती मरुदेवी नंदा ।  
जुगला धरम निवार करंदा ॥ जय० ॥ १ ॥ तीशरी आरती त्रिनुवन मो  
हे । रत्न सिंघासन मारा प्रनुजीनें सोहे ॥ जय० ॥ चौथी आरति नित्य  
नवी पूजा । देव रुषन देव अवर न दूजा ॥ जय० ॥ २ ॥ पांचमि आर  
ति प्रनुजीनें जावे । प्रनुजीना गुण सेवक इम गावे ॥ ज० ॥ ३ ॥ ❀ ॥  
आरती कीजें प्रनु शांति जिणंदकी । मृगलंठनकी में जानुं बलिहारी ।  
जय जय आरती शांति तुमारी । विश्वसेन अचिराजीको नंदा । शांति  
जिणंद मुख पूनमचंदा ॥ जय० ॥ ४ ॥ आरति कीजें प्रनु नेम जिणंद  
की । शंख लंठनकी में जानुं बलिहारी ॥ आ० ॥ समुद्रविजय शिवा  
देवीको नंदा । नेमि जिणंद मुख पूनमचंदा ॥ आ० ॥ ५ ॥ आरति  
कीजै प्रनु पाश जिणंदकी । फणिंदलंठनकी में जानुं बलि हारी ॥ आ० ॥  
अश्वसेन वामा देवीको नंदा । पाश जिणंद मुख पूनमचंदा ॥ आ०  
॥ ६ ॥ आरति कीजै महावीर जिणंदकी । सिंह लंठनकी में जानुं ब  
लिहारी ॥ आ० ॥ शिघारथ त्रिशलाको नंदा । वीरजिणंद मुख पूनम  
चंदा ॥ आ० ॥ ७ ॥ आरति कीजें प्रनु चौवीश जिणंदकी । चौवीश  
जिणंदकी में जानुं बलिहारी । चरणकमल नित सेवत इंदा । चौवीश जिणं  
द मुख पूनम चंदा ॥ आ० ॥ ८ ॥ कर जोमी सेवक इम बोले । नहि  
कोइ माहरा प्रनुजीनें तोले ॥ आ० ॥ ९ ॥ ❀ ॥ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥



॥ श्रीः ॥



॥ ❀ ॥ किंकर्पत्तरु रे अयांण चित्तु मणजितरि । किंचितामणि का  
मधेनु आराहोवहुपरि । चित्रावेली काजकिसै देसंतर लंघत । रयणरासि  
कारण किसै सायरतलंघत । चवदह पूरवसार युगे लक्षौ ए नवकार । सय  
लकाज महियलसैरै पुत्तरतरै संसार । केवलजिजासिय रीतिजिके नवकार  
आराहै । जोगविमुक्ख अनंत अंत परमपयसाहै । इणजाणें सुरीरिधि  
पुत्त सुहविलसै बहुपरि । इणजाणें सुरलोक इंदपद पामेंसुन्दरि । एहमंत्र  
सासतो जगे अचित्त चिंतामणिएह । समरण पापसवे टलै रिधिसिधि नि  
यगेह ॥ २ ॥ नियसिर ऊपर जांण मझचित्तवे कमलनर । कंचनमय अ  
ठदलसहित तिहांमांहिकनकवर । तिहांवैठा अरिहंतदेव पनुमासण फिट  
कमाणे । मेयवत्थ पहरेवि पढमपय चित्तु नियमाणे । निवारिय चण्डगडग  
माण पामिय सासयमुक्ख । अरिहंतजाणइं तुमलहो जिमअजरामर सुक्ख  
॥ ३ ॥ पनरजेय तिहां सिध वीयपद जे आराहै । रातेविद्रुमतणें वणनि  
यसोहग साहइ । रातीधोवत पहिर जपइ सिधहिं पुवइं दिसि । सयल  
जोय तिहां नरहहोइ ततखिणसइंवासि । मूलमंत्र वसीकरण अवरसहु जगधं  
ध । मणिमूर्त्ती ओषधकरइ बुद्धिहीण जाचंघ ॥ ४ ॥ दक्षिणदिसपंखडी जपे  
णमो आयरियाणं । सोवनवणह सोससहित उवणसहनणं । रिधि सिधि  
कारणें लाज ऊपर जे व्यावइ । पहिरवि पीलावत्यतेह मनवंत्रियपावइ ।  
इण जाणेंनवनिधिहुवै रोगकदेनविहोइ । गजरथ हयवरपालखी । चामर

उत्र सिरजोइ ॥ ५ ॥ नीलवण उवजाय सीस पाढंता पन्निम । आराहिजै  
 अंग पुवधारंत मणोरम । पन्निमदिश पंखडी कमल ऊपर सुहजाणं ।  
 जोवो परमाणंद देवगय तासु विमाणं । गुरु लघु जे लक्खै विपुर तिहां  
 नरबहुफल होइ । जावविहुणा जे जपै तिहां फलसिद्ध न कोइ ॥ ६ ॥  
 सर्वसाधु उत्तरविभाग सांमला बइछा । जिण धर्मलोय पयासयंत चारित  
 गुणजिछा । मणवयण काएहिं जपै जे एकै जाणै । पंचवण तिहां नाणजा  
 ए गुण एहपमाणें । अनंतचोवीसी जगहुईए । होसी अवर अनंत । आ  
 दिकोई जाणें नही इण नवकारह मंत ॥ ७ ॥ एसो पंच नमोकारो । पद  
 दिशिअगनेहिं । सब पावप्पणासणो पदजप नेरोहिं । वायवदिस जाएह मं  
 गलाणंचसवेसिं । पढमंहवइमंगलं ईसाणपएसिं । चिहुंदिस चिहुं विदिसै  
 मिलिय अठदल कमल ठवेइ । जो गुरु लघु जाणी जपै सो घणपापखवेइ  
 ॥ ८ ॥ इणप्रजावधरणिंदहुत्त पायालहसामी । समली कुमर उप्पण जित्त  
 सुरलोयहगामी । संबल कंवल वेवजध पहुता देवांकप्पे । सूलीदीधो चोर  
 देव थयोनवकारह जप्यें । शिवकुमार मनवंचिकरि । जोगीलीयो मसांण ।  
 सोनापुरसो सीधलो । इणनवकार प्रमाण ॥ ९ ॥ ठाँकैवैठो चोर एक  
 आकासैगामी । अहिफिट्टी हुइ फूलमाल नवकारह नामी । वाढरुआ  
 चारंत बाल जलनदीप्रवाहै । वींध्यो कंटहि उयर मंत जपियो मनमांहै ।  
 चित्या काज सवे सरै । ईरति परति विमास । पालितसूरि तणी परै । विद्या  
 सिद्धआकास ॥ १० ॥ चोरधाड संकट टलै राजावसिहोवै । तित्थंकर सो  
 होइ लाखगुणविधिसुं जोवै । साइण माइण चूत प्रेत वेताल न एहवइ ।  
 आधि व्याधि ग्रहतणी पीड ते किमहि न होवइ । कुठ जलोदर रोग सवे  
 नासइ एणहमंत । मयणासुंदरितणीपरै नवपय जाण करंत ॥ ११ ॥ एक  
 जीह इनमंत्रतणा गुण किता वखाणुं । नाणहीण ठनुमत्थएह गुण पारन  
 जाणुं । जिमसेहुंजै तित्थराज महिमा उदयवंतो । तिममंतह धुरि एह  
 मंत्रराजा जैवंतो । तित्थंकरगणहरपाणिय चउदे पूरवसार । इणगुण अंत  
 न कोलहइ गुणगुरुत्त नवकार ॥ १२ ॥ अढसंपय नवपय सहित इगमठ  
 लघु अक्षर । गुरुअक्षर सत्तेव एहजाणो परमाक्षर । गुरुजिणवत्तहसुरिज

णै सिवसुखहकारण । नरय तिरियगइ रोग सोग बहुदुख निवारण ।  
जल थल पवय वन गहन समरण हुवे इकचित्त । पंचपरमेष्टि मंत्रहतणी  
सेवा देज्यो नित्त ॥ १३ ॥ इति पंच परमेष्टि नमस्कारमहात्म्यसंपूर्णम् ॥

॥ ❀ ॥ अथ तिजय पढुत्त स्तोत्र ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तिजय पढुत्त पयासं । अठ महा पाडिहेर जुत्ताणं । समय  
खित्त छिआणं । सरेमि चकं जिणिंदाणं ॥ १ ॥ पणवीसा य असोया । पन  
रस पणास जिणवर समूहो । नासेउ सयलदुरिअं । जविआणं जत्तिजुत्ता  
णं ॥ २ ॥ वीसा पणयाला विअ । तीसा पणहत्तरी जिणवरिंदा । गह जूअ  
रुख साइणी । दोखसगं पणासेउ ॥ ३ ॥ सत्तरि पणतीसाविअ । सठी पंचे  
व जिणगणोएसो । वाहि जल जलण हरि करि । चोरारि महाजयं हरउ  
॥ ४ ॥ पणपणाय दसेवअ । पणठी तहयचेव चालीसा । रुखंतु मे सरीरं  
देवा सुरपणमिआ सिद्धा ॥ ५ ॥ उँ हरहुंहः सरसुंसः । हरहुंहः तहयचेव  
सरसुंसः । आलिहअ नामगपं । चकं किर सवउ जहं ॥ ६ ॥ उँ रोहिणि  
पणत्ति वज्जअंखला । तहय वज्जअंकुसिआ । चकेसरि नरदत्ता । कालि महा  
कालि तहयगोरी ॥ ७ ॥ गंधारि महाजाला । माणवि वइरुट तहयअवुत्ता ।  
माणसि महमाणसिआ । विजादेवीउ रुखंतु ॥ ८ ॥ पंचदस कम्मचूमिसु  
उप्पणं सत्तरिं जिणाणसयं । विविहरयणाण वणो । वसोहिअं हरउ दुरि  
आइं ॥ ९ ॥ चउतीस अइसय जुआ । अठ महापाडिहेर कयसोहा । ति  
त्ययरा गयमोहा । जाए अवा पयत्तेण ॥ १० ॥ उँ वरकणय संखाविहुम ।  
मसगय घणसंनिहं विगय मोहं । सत्तरिसयं जिणाणं । सवामरपूइअं वंदे  
स्वाहा ॥ ११ ॥ उँ नुवणवइ वाणमंतर । जोइसवासी विमाणवासीअ । जे  
केवि छुठदेवा । ते सबे उवसमंतु मे स्वाहा ॥ १२ ॥ चंदण कप्पूरेणं । फजहे  
जिहिऊण खालिअपीअं । एगंतर गहसुग्गय । साइणिअं पणासेइ ॥  
१३ ॥ इय सत्तरिसय जंतं । सम्मंमंतं डुवार पणिलिहिअं । दुरिआरि विजय  
तंतं । निअंतं निअमंचेह ॥ १४ ॥ इति सप्तत्युत्तरशतजिनचक्र स्तोत्रं ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ दोसावहार स्तोत्र ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोसावहारदक्खो । नालीयायर वियासिगोपसरो । रयणत्तयस्सज  
एण । पासजिणो जयन्तु जयचक्खू ॥ १ ॥ कयकुवलय पम्बोहो । हरिणं  
कियविग्गहो क्खानिलन्तु । विहियार विंद महणो । दियराओ जयन्तु पास  
जिणो ॥ २ ॥ कंतीइनिज्जिणंतो । सिंदूरं पुहविनंदणो कूरो । जयजंतुअम  
यवको । सुमंगलो जयन्तु पहुपासो ॥ ३ ॥ उप्पलदजनीजरुई । हरिमंजुल  
संथुओ इजाणंदो । रयणीयरदारन्तु मह । बूहोपसीयज्ज पासजिणो ॥ ४ ॥  
नाहियवाय वियट्ठो । नायत्थोणायरायकयपून् । सिरिपासनाहदेवो । देवाय  
रिन्तु सुहंदिसन्तु ॥ ५ ॥ रायावट्ट समुज्जल । तणुप्पह मंजुलोमहान्छूई । असुरे  
हिंनमिज्जंतो । पासजिणिंदो कवीजयन्तु ॥ ६ ॥ तिमिरासि समारूढो । संतो  
डुक्खावहोजयंमिथिरो । बहुल तमासरिससरी । जहचक्खुसुन्तु जयन्तुपासो  
॥ ७ ॥ कवलीकयदोसायर । मायंमरुहं अहो तणुविमुक्कं । लोयाअरणीअयं ।  
पासजिणं सत्तमंसरह ॥ ८ ॥ डुरिआइं पासनाहो । सिहावमाली नहो न  
वणकेज्ज । दूरंतमरासीन्तु । सत्तमठाणठिन्तु हरन्तु ॥ ९ ॥ इय नवगह थुइग  
अं । जिणपहसूरीहिं गुंफिअं थवणं । तुहपास पढइ जोतं । असुहाविग्गहा  
नपीडंति ॥ १० ॥ इति नवग्रहस्तुतिगर्भित श्रीपार्श्वजिनस्तोत्रम् ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ जगद्गुरु ९ ग्रहस्तोत्र ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जगद्गुरु नमस्कृत्य । श्रुत्वा सदगुरुनापितं । ग्रहशांतिं प्रवि  
ख्यामि । लोकानां सुखहेतवे ॥ १ ॥ जिनेन्द्राः खेचराज्ञेया । पूजनीया  
विधिक्रमात् । पुष्पैर्विलेपनैर्धूपैः । नैवेद्यैः स्तुष्टिहेतवे ॥ २ ॥ पद्मप्रज्ञस्यमार्त्तनः  
चंद्र श्रद्धप्रज्ञस्यच । वासुपूज्योन्मिपुत्रो । बुधोप्यष्टजिनेश्वराः ॥ ३ ॥  
विमलानंतधर्माणां । शांतिं कुंथु नमि स्तथा । वर्धमानो जिनेन्द्राणां । पादपद्मे  
बुधंन्यसेत् ॥ ४ ॥ रज्ज्नाजितसुपार्थो । श्राजिनंदनशीतलो । सुमतिःसंज्ञ  
वःस्वामी । श्रेयांसश्चबृहस्पतिः ॥ ५ ॥ सुविद्ये कथितः शुक्रः । सुव्रतश्च  
नैश्वरः । नेमिनाथोऽनवेन्द्राहुः । केतुः श्रीमत्त्रिपार्थवो ॥ ६ ॥ जन्मलक्षेचरा  
शौच । यदा पीरन्ति खेचराः । तदा संपूजयेद्ग्रीमान् । खेचरैः सहितान् जि  
नान् ॥ ७ ॥ पुष्पैर्गन्धादिभिर्धूपैः । नैवेद्यैः फलसंयुतैः । वर्णसदृश दानैश्च

वासोन्निर्दक्षिणान्वितैः ॥ ८ ॥ ॐ आदित्यसोम मङ्गल । बुधगुरुशुक्र शनैश्च  
रोराहुः । केतुः प्रमुखा खेटा । जिनपतिपुरतोवतिष्ठंतु ॥ ९ ॥ जिननामकृतोच्चा  
रा । देशनक्षत्रवर्णके । स्तुताश्च पूजिताऽक्षतया । ग्रहाः संतुमुखावहा ॥ १० ॥  
जिनानामग्रतः स्थित्वा । ग्रहाणां तुष्टिहेतवे । नमस्कारशतं च तया । जपेदष्टो  
त्तरं नरं ॥ ११ ॥ ऋद्रवाहु स्वाचेदं । पंचमः श्रुतकेवली । विद्याप्रवादतः  
पूर्वाद् । ग्रहशांतिर्विनिर्मितः ॥ १२ ॥ इति श्रीनवग्रहशांतिकारकजिनस्तोत्रं ॥

॥ ❀ ॥ अथ धम्मो मंगल स्वाध्याय ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ धम्मो मंगलमुक्किठं । अहिंसा संजमो तवो । देवावि तं नमंसंति ।  
जस्स धम्मसयामणो ॥ १ ॥ जहा दुम्मस्स पुण्फेसु । जमरो आविअइरमं ।  
नय पुण्फं किल्लामेइ । सोअपीणेइअप्पयं ॥ २ ॥ एमेए समणावुत्ता । जेलोए  
संति साहुणो । विहंगमाव पुण्फेसु । दाणजत्तेसणेस्या ॥ ३ ॥ वयंच वि  
त्तिजब्जामो । नवकोइजवहम्मइ । अहागडे सूरीयंते । पुण्फेसुजमरो जहा  
॥ ४ ॥ महुकारसमावुद्धा । जे जवंति अणिस्सिआ । णाणापिंरयादंता ।  
तेणवुच्चंति साहुणोत्तिवेमि ॥ ५ ॥ दुमपुप्फियानामअयणंसम्मत्तं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ जिनपंजरस्तोत्र ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्द्धं अर्द्धदभ्योनमोनमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्द्धं सिद्धेभ्यो  
नमोनमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्द्धं आचार्येभ्योनमोनमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्द्धं उपा  
ध्यायेभ्यो नमोनमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्द्धं श्री गौतमस्वामि प्रमुख सर्वसाधुभ्यो  
नमोनमः ॥ १ ॥ एषः पंचनमस्कारः । सर्वपापहृदयंकरः । मंगलानां च सर्वे  
षां । प्रथमं जवतिमंगलं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं जएविजए । अहंपरमात्मनेनमः ।  
कमलप्रजसूरिद्रो । ज्ञापतेजिनपंजरं ॥ ३ ॥ एकजत्तोपवासेन । त्रिकालं यः  
पठेदिदं । मनोज्ञं लपितं सर्वं । फलं सलज्जतेषुवं ॥ ४ ॥ नृशज्या ब्रह्मचर्येण  
क्रोधलोभविवर्जितः । देवताग्रेषु विनात्मा । पापमासैर्जज्जते फलं ॥ ५ ॥  
अर्द्धं तं स्थापयेन्मुर्वनि । सिद्धं च क्लृप्तं लाटके । आचार्यं श्रोत्रयोर्मध्ये । उपा  
ध्यायंतु घ्राणके ॥ ६ ॥ साधुवृंदं मुखस्याग्रे ॥ मनःशुद्धं विधाय च । सूर्यचंद्र  
निरोधेन । सुधीः सर्वार्थसिद्धये ॥ ७ ॥ दक्षिणे मदनद्वेषी । वामपार्श्वे स्थितो



जिनः । अंगसंधिषु सर्वज्ञ । परमेष्ठिशिवंकरः ॥ ८ ॥ पूर्वाशांश्रीजिनोरहो ।  
 दाग्नेयिविजितेन्द्रियः । दक्षिणाशांपरंबह । नैरुतिचत्रिकालवित् ॥ ९ ॥ प  
 श्रिमाशां जगन्नाथो । वायवंपरमेश्वरः । उत्तरांतीर्थकृतसर्वा । मीशानां चानि  
 रंजनः ॥ १० ॥ पातालजगवानर्ह । नाकाशं पुरुषोत्तमः । रोहिणी प्रमुखा  
 देव्यो । रत्नकुलं कुलं ॥ ११ ॥ ऋषभो मस्तकं रत्ने । दजितोपिविलोचने ।  
 संभवः कर्णयुगलं । नाशिकां चाग्निनंदनः ॥ १२ ॥ उष्टौ श्रीसुमती रत्ने ।  
 दंता न्यग्रप्रभो विभुः । जिह्वां सुपार्श्वदेवोयं । तालु चंद्रप्रभो विभुः ॥ १३ ॥  
 कंठं श्रीसुविधीरत्ने । हृदयं श्रीसुशीतलः । श्रेयांसोवाहुयुगलं वासुपूज्यः  
 करप्रयं ॥ १४ ॥ अंगुली विमलोरत्ने । दनंतोसौस्तनावपि । सुधर्मो प्युदरा  
 स्थोनि । श्रीशांतिर्नाग्निमंजलं ॥ १५ ॥ श्रीकुंथुर्गुह्यकं रत्ने । दरोरोमकटीतटं ।  
 मल्लिरूपृष्ठिवंशं । जंघेचमुनिसुव्रतः ॥ १६ ॥ पादांगुलीर्नमीरत्ने । श्रीने  
 मिश्वरणप्रयं । श्रीपार्श्वनाथः सर्वांगं । वर्धमानश्चिदात्मकं ॥ १७ ॥ पृथिवी  
 जलतेजस्क । वाय्वाकाशमयं जगत् । रत्नेदशेषपापेभ्यो । वीतरागो निरंजनः  
 ॥ १८ ॥ राजप्रारेष्मशानेवा । संग्रामेशत्रुसंकटे । व्याघ्रचौराग्निसर्पादि ।  
 चूतप्रेतप्रयाश्रिते ॥ १९ ॥ अकालमरणप्राप्ते । दारिद्र्यापत्समाश्रिते । अपु  
 त्रत्वेमहादोषे । मूर्खत्वेरोगपीनिते ॥ २० ॥ माकिनी शाकिनी ग्रस्ते । महा  
 ग्रह गणार्दिते । नद्युत्तारे ध्ववैषम्ये । व्यसनेचापदिस्मरेत् ॥ २१ ॥ प्रातरेव  
 समुत्थाय । यः स्मरेजिनपंजरं । तस्य किंचिद्भयं नास्ति । लभ्यते सुखसंपदं  
 ॥ २२ ॥ जिनपंजर नामेदं । यः स्मरत्यनुवासनं । कमलप्रभराजेंद्रः । श्रि  
 यंसलज्जतेनरः ॥ २३ ॥ प्रातःसमुत्थाय पठेत्कृतज्ञो । यस्तोत्रमेतज्जिनपंज  
 राख्यं । आसादयेत्सः कमलप्रज्जाख्यं । लक्ष्मीं मनोवांछितपूरणाय ॥ २४ ॥  
 श्रीरुद्रपत्नीयवरेण्यगठे । देवप्रज्ञाचार्यपदाब्जहंसः । बार्दींद्रचूनामणिरप्ये  
 नो । जीयाच्छुः श्रीकमलप्रज्जाख्यः ॥ २५ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इति श्रीजिनपंजरस्तोत्रसंपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इस महाप्रज्ञावीक जिनपंजरस्तोत्रको सुध्वगुरुकेपास सीखके  
 प्रज्ञातसमै सदागुणै तो कोई शरीरमें उपद्रव न होय ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ लघु जिनसहस्रनामः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नमस्त्रिलोकनाथाय । सर्वज्ञाय महात्मने । वद्वे तस्यैव नामा  
नि । मोक्ष्यसौख्याज्जिलापया ॥ १ ॥ निर्मलः शाश्वतो शुद्धः । निर्विकल्पो  
निरामयः । निःशरीरो निरातङ्को । सिद्धः सूक्ष्मो निरञ्जनः ॥ २ ॥ निष्कलं  
को निरालङ्को । निर्मोहो निर्मलोत्तमः । निर्जयो निरहङ्कारो । निर्विकारो  
थनिष्क्रियः ॥ ३ ॥ निर्दोषो निरुजः शांतः । निर्जघो निर्ममः शिवः । निस्त  
रङ्गो निराकारो । निष्कर्म्मो निष्कलप्रभुः ॥ ४ ॥ निर्वादो निरूपज्ञानः । नि  
रागो निरव्योजिनः । निःशब्दः प्रतिमश्लेषः । उक्कृष्टो ज्ञानगोचरः ॥ ५ ॥  
निःसङ्गात् प्राप्तकेवल्यो । नैष्टकः शब्दवर्जितः । अर्निद्यो महापृतात्मा । जग  
त्तशिखर शेखरः ॥ ६ ॥ निःशब्दो गुणसंपन्न । पापताप प्रणाशनः । सोपि  
योगात् शुभ्रप्राप्तः । कर्मघोतिवलावहः ॥ ७ ॥ अजरौ अमरः सिद्धः । अ  
र्वितः अह्यो विभुः । अमूर्तः अच्युतो ब्रह्म । विष्णुरीश प्रजापतिः ॥ ८ ॥  
अर्निद्यो विश्वनाथश्च । अजो अनुपमोजवः । अप्रमेयो जगन्नाथ । बोधरूपो  
जिनात्मकः ॥ ९ ॥ अव्ययः सकलाराध्यो । निष्पन्नो ज्ञानलोचनः । अद्वे  
द्यो निर्मलो नित्यः । सर्वसल्यविवर्जितः ॥ १० ॥ अजेयः सर्वतोभद्रः ।  
निष्कषायो भ्रवांतकः । विश्वनाथः स्वयंबुद्धः वीतरागोजिनेश्वरः ॥ ११ ॥  
अंतको सहजानंदः । अवाद्मानसगोचरः । असाध्यः शुद्धश्चैतन्यः । कर्म नो  
कर्मवर्जितः ॥ १२ ॥ अनंतो विमल ज्ञानी । स्पृहीश्च निष्प्रकाशकः । कर्म्मो  
जितो महात्मानः । लोकत्रयशिरोमणिः ॥ १३ ॥ अव्यावायो वरः शंभुः ।  
विश्ववेदी पितामहः । सर्वचतुर्हितो देव । सर्वलोकसरायकः ॥ १४ ॥ आ  
नंदरूपचैतन्यो । जगवां स्त्रिजगद्गुरुः । अनंतानंतधीशक्तिः । सत्यव्यक्तव्य  
यात्मकः ॥ १५ ॥ अष्टकर्म्मविनिर्मुक्तः । सप्तधातुविवर्जित । गौरवादित्रया  
दूरः । सर्वज्ञानादिमंयुतः ॥ १६ ॥ अजयः प्राप्तकेवल्यः । निर्माणो निरपे  
क्षकः । निष्कलं केवलज्ञानी । मुक्तिसौख्यप्रदायकः ॥ १७ ॥ अर्नामयो  
महाराध्यो । वरदो ज्ञानपावकः । सर्वेशः सत्सुखावासः । जिनेन्द्रो मुनिमंस्तुतः  
॥ १८ ॥ अन्यूनपरमज्ञानी । विश्वतत्त्वप्रकाशकः । प्रभुश्चो जगन्नाथः । प्र  
स्तुतः पुण्यकारकः ॥ १९ ॥ शंकरः सुगतो रौद्रः । सर्वज्ञो मदनांतकः । ईश्व

रो जुवनाधीशः । सचित्तः पुरुषोत्तमः ॥ २० ॥ सदोजातमहात्मानं । विमुक्तो  
 मुक्तिवत्तनः । योगीन्द्रो नादिसंसिद्धः । निरीहो ज्ञानगोचरः ॥ २१ ॥ सदा  
 शिवां चतुर्वक्रः । सत्सौख्य त्रिपुरांतकः । त्रिनेत्रः त्रिजगत्पूज्यः । कल्याणको  
 ष्टमूर्तिकः ॥ २२ ॥ सर्वसाधुजनैर्वंद्यः । सर्वपापविवर्जित । सर्वदेवाधिकोदेवोः ।  
 सर्वचत हितंकरः ॥ २३ ॥ स्वयंविद्यो महात्मानं । प्रसिद्धः पापनाशनः ।  
 तनुमात्रश्रिदानंदः । चैतन्यश्चैत्यवैभवः ॥ २४ ॥ सकलातिशयोदेव । मु  
 क्तिस्थो महतांमहः । मुक्तिकार्याय संतुष्टो । निरागः परमेश्वरः ॥ २५ ॥ महा  
 देवो महावीरो । महामोहविनाशकः । महाभावो महादर्शः । महामुक्तिप्र  
 दायकः ॥ २६ ॥ महाज्ञानी महायोगी । महातपो महात्मकः । महर्षि  
 को महावीर्यो । महान्तिकपदस्थितः ॥ २७ ॥ महापूज्यो महाबन्धो । महा  
 विघ्नविनाशकः । महासौख्यो महापुंसो । महामहिमश्च्युतः ॥ २८ ॥ मुक्ता  
 मुक्तिजसंबोधः एकानेकविनिश्चलः । सर्वबंधविनिर्मुक्तो । सर्वलोकप्रधानकः  
 ॥ २९ ॥ महाशूरो महाधीरो । महादुःखविनाशकः । महामुक्तिप्रदोधीरो । म  
 हाहृद्यो महागुरुः ॥ ३० ॥ निर्मारोमारविध्वंसी । निष्कामो विषयाच्च्युतः । ज  
 ग्वंतो महाशांतो । शान्तिकल्याणकारकः ॥ ३१ ॥ परमात्मा परंज्योतिः ।  
 परमेष्ठी परमेश्वरः । परमात्मा परानंदोः । परंपरम आत्मकः ॥ ३२ ॥ प्रस्तुता  
 नंतविज्ञानी । सख्यानिर्वाणसंयुतः । नाकृतिं नाहरोवर्णी । व्योमरूपो जिता  
 त्मकः ॥ ३३ ॥ व्यक्ताव्यक्तजसंबोधः । संसारहेदकारणः । निखद्यो महा  
 राध्यः । कर्मजिघर्षनायकः ॥ ३४ ॥ बोधसत्सु जगद्बन्धो । विश्वात्मा नर  
 कांतकः । स्वयंचू पापहृत्पूज्यः । पुनीतो विभवः स्तुतः ॥ ३५ ॥ वर्णातीतो म  
 हातीतो । रूपातीतो निरंजनः । अनंतज्ञानसंपूर्णो । देव देवेशनायकः ॥ ३६ ॥  
 वरेण्यो जवविध्वंसी । योगिनां ज्ञानगोचरः । जन्ममृत्युजरातीतः । सर्वविघ्नहरो  
 हरः ॥ ३७ ॥ विश्वदृक्प्रव्यसंबंधः । पवित्रो गुणसागरः । प्रसन्नः परमा राध्यः  
 लोकालोकप्रकाशकः ॥ ३८ ॥ रत्नगर्जो जगत्स्वामी । इंद्रबन्धः सुरचितः ।  
 निष्प्रपंचो निरातंकः । निःशेष क्लेशनाशकः ॥ ३९ ॥ लोकेशो लोकसंसेव्यो  
 लोकालोक विलोकनः । लोकोत्तमो त्रिलोकेशो । लोकाग्र शिखरस्थितः

॥ ४० ॥ नामाष्टकसहस्राणि । ये पठन्ति पुनः पुनः । ते निर्वाणपदंयांति ।  
मुच्यतेनात्र संशयः ॥ ४१ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
॥ ❀ ॥ इति ऋद्रवाहुस्वामिना विरचितं लघुसहस्रनाम संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ बुटकर महाप्रज्ञावीकस्तोत्र ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सकलमङ्गल केलिनिवेशनं । सहृदयं हृदयं गमदेशनं । अजि  
नतोत्तम भक्तिसुरेश्वरं । नमत शीतलनाथ जिनेश्वरं ॥ १ ॥ सहजसुन्दर सङ्गुण  
मन्दिरं । विमल केवलबोध विकस्वरं । अतिसुवर्णसुवर्ण समद्युतं । प्रवरवंधुरल  
क्षणसंयुतं ॥ २ ॥ ( युग्मं ) यदीयभक्ति भविनां भवे भवे । भवेदजीष्टार्थनिदा  
नमद्भुतं । सएव नन्दात्म समुद्भवो जिनः । समर्चनीयः खलुशीतलः प्रभुः ॥ ३ ॥  
कर्माभितप्तान् भविनः सुशीतलान् । कुर्वन्मुदावाक् सुधया दयापरः । सदेव  
देवो भवतात्सदेव मे । सदिष्ट सिद्ध्यै जिनराजशीतलः ॥ ४ ॥ अधिगतशि  
वशर्मा वीतमोहादिकर्मा । दृढरथ तनुजन्मा सर्वतः साधधर्मा । त्रिदशमहित  
मूर्तिः स्मृतिमत्पुण्यकीर्तिः । जयतु गतभवार्तिः शीतलः सौम्यमूर्तिः ॥ ५ ॥  
॥ ❀ ॥ इति श्रीशीतलजिनःस्तोत्रम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ विशदगुण विचित्रं सच्चरित्रं दधानो । दलित दुरतिराशि विश्वविश्वा  
वदातः । प्रकट महिमरम्यो दुर्मतीनामगम्यो । जयतु जिनपतिः श्रीपार्श्वचि  
तामणीशः ॥ १ ॥ कमठ कुमतिवल्ली मूल सुन्मूलयन्ती । पदमकृतपदाब्जे यस्य  
चङ्गीवपद्मा । अविकृतमति कायोत्सर्गमुद्रान्वितोसौ । जगतिबहुमतोस्मान्  
पातुवामांगजन्मा ॥ २ ॥ अविचलमणिविभ्रत सत्फलानां सहस्रं । बहुलविम  
लजास्व दनूपणोच्चासिगात्रः । गुस्तर वरजक्त्या सक्तचित्ताङ्गजार्जा । भवतु  
शिवसमृद्धये चाश्वसेनिर्जिनेन्द्रः ॥ ३ ॥ कुपितकारिमृगेश व्याजदावानलाब्धि  
प्रहरणगदगुप्यातंकशंकापहर्ता । विकसितमुखपद्मः सत्पुरेस्सूरताख्ये । जयतु  
नुजगलद्भीभ्राजमानोजिनेन्द्रः ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
॥ ❀ ॥ इति पार्श्वजिनस्तोत्रम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ यस्य ज्ञानदयासिन्धो । दर्शनश्रेयसे ध्रुवं । सश्रीमानपार्श्वतीर्थेशो  
निषेव्यः मत्ततं सतां ॥ १ ॥ वामासूनोर्यशः पुंजे । रगावस्थानवागुणाः । स्मर्यते  
येन सस्मार्या । भवेत् प्राचीन बहिर्षा ॥ २ ॥ विहाय विषयासक्तान् ।

संसारिक सुरासुरान् । सेव्यता मत्तयोधीराः । पार्श्व देवो परःप्रभुः ॥ ३ ॥  
 जिनाः सर्वार्थदानेन । येन कल्पद्रुमाग्रपि । नवेदम्यर्चितो लोके ।  
 सश्रियेचामृतायच ॥ ४ ॥ संस्तुतो मधुरश्लोकैः । जैनलाजप्रदायकः ।  
 कल्याणकारको नृयात् । श्रीमान्शंखेश्वरःप्रभुः ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
 ॥ ❀ ॥ इति श्रीसमस्यामयीशंखेश्वरपार्श्वजिनस्तुतिः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ लक्ष्मीनिदानं गुरुकर्मदानं । मरुर्मदानं जगतेददानं । यक्षेशपा  
 र्श्वं शितपादपार्श्वं । नुवामिपार्श्वं नवेदपार्श्वं ॥ १ ॥ स्मेरातसीसूनसमप्र  
 ज्ञावा । समप्रज्ञावा नवेदीयमूर्तिः । विज्ञाति वामांप्रज्ञव त्रिलोके । नवेत्रि  
 लोकेन समर्चनीय ॥ २ ॥ तवेशपत्यं कजमादरेण । हृद्यादधाना जनताद  
 रेण । मुक्तानवेदेकपदे पराया । निर्वेशवनसौख्यपरंपरायाः ॥ ३ ॥ निःशेषनू  
 वर्षितदानवारी । र्यन्मानसे त्वं ध्रियसे सदैवासएव गव्युत्तम दानवारी । प्रोच्चारि  
 तोद्दामयशाःसदैवः ॥ ४ ॥ देवाधि देवाधिहर स्त्वमेव ॥ सुज्ञान सुज्ञानप्रि बुद्धरू  
 पः । सारांग सारांग वितीर्णनूयः । कल्याण कल्याणकृदंगज्जाजां ॥ ५ ॥ येरर्च्यसे  
 त्वं वरवेद्यराज । मनोजिरामैः सुमनोजिरामै । कर्माप्रिधैरुषितनृधनास्ते ।  
 विसारिलोकेश विसारि लोके ॥ ६ ॥ इत्थं ते जिनपुंगवस्य न्रगवन् प्रोद्दाम  
 धामान्वितं । पादाब्जं परज्जागृत्तत्रिनुवन स्तुत्यंस्तुवन्तोनिशं । दत्तं कर्मविप  
 क्त्वा पद्मदलने न्रव्या न्रवंतु कृमाः । कल्याणाश्रय मुक्तिमाप्नुमखिलं तीर्त्वा  
 न्रवांजोनिधिं ॥ ७ ॥ इति विविधयमकयुक्तश्रीपार्श्वजिनस्तुतिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शालिनीवृन्दः ॥ ❀ ॥ गौरीग्रामे स्तंजने चारुतीर्थे । जीराव  
 ल्यां पत्तने लोद्रवाख्ये । वाणारस्यांचापि विख्यातकीर्तिश्रीपार्श्वेशं नोमि शंखे  
 श्वरस्थं ॥ १ ॥ इष्टार्थानां स्पर्शने पारिजातं । वामादेव्यानन्दनं देववंद्यं ।  
 स्वर्गेनृमौ नागलोके प्रसिद्धं ॥ श्रीपा० ॥ २ ॥ त्रित्वाजेद्यं कर्मजालं विशालं ।  
 प्राप्यानन्तं ज्ञानरत्नंचिरत्नं । लब्धामंदानंद निर्वाणसौख्यं ॥ ३ ॥ श्रीपा० ॥  
 विश्वाधीशं विश्वलोके पवित्रं । पापागम्यं मोक्षलक्ष्मीकलत्रं । अंजोजातं सर्व  
 दा सुप्रसन्नं । श्रीपा० ॥ ४ ॥ वर्षेस्म्येखंगदोर्नागचंद्र । संख्येमासे माधवे  
 कृष्णपक्षे । प्राप्तं पुण्ये दर्शनं यस्य तंच ॥ श्रीपा० ॥ ५ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इति शंखेश्वरजिनस्तवः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ विशदसद्गुण राजि विराजितं । धनधना धननाद विजाजितं ।  
 प्रजत प्रक्तिजरेण रमेश्वरं । जगति पार्थजिनेश मनेश्वरं ॥ १ ॥ विविधवर्ण  
 विचूषितविग्रहाः । विहितदुर्दमदर्पकनिग्रहाः । वसुधुगार्कमिताः सुकृताकराः ।  
 जिनवराः प्रभवंतु शिवंकरा ॥ ३ ॥ रुचिरवर्ण निवद्धमनिन्दितं । सुमनसां  
 प्रकरैरभिवादितां । निखिलसाधुजनाः खलुनिर्मितं । जिनमतं नमतां चितश  
 मेदं ॥ ३ ॥ सकलप्रव्य सरोजविकाशिका । कुमतिसंत मसोच्चयनाशिका ।  
 जिनवरानन पद्मगतोन्मुदा । प्रवतु वाग्जिनलाज शुभार्थदा ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ इति पार्थजिनस्तोत्रम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीमत्पार्थ जिनेश्वरस्यविलसद् ज्ञानामृतांजोनिधेः । सद्भावेन  
 परस्वरूपविरते मुक्त्यास्पदेतस्थुषः । सद्भूतप्रतिविवतस्तु सुतरां गौमीपुरोद्भा  
 सिनः । सोलासं प्रणिपत्य सत्य मनसा तत्रैव नित्यं स्मरे ॥ १ ॥ यत्पादां  
 बुज दर्शनोत्सुकधियो प्रव्या ब्रजंतोर्ध्वनि । स्पृश्यन्ते नहि दुष्टजंतुनिवहैर्वन्ये  
 नैवा तस्करैः । नैवोज्ज्वलदवानलैर्जलचराकीर्णैर्जलैर्जातुनो । सः श्रीपार्थविजु  
 र्व्यचिन्त्यमहिमा दृश्योनकेषां प्रवेत् ॥ २ ॥ हित्वान्तः करणाद्भुतं कुटिलतां  
 मोहादिनोद्भावितां । धृत्वा निर्मलजावनांच विधिना यद्भक्तिमातन्विता । जभ्य  
 न्ते नरराज निर्जर वर श्रेणी सुखानिक्रमा । न्मुक्तिश्री रपि सैव सुद्धमनसा संसे  
 व्यतां विश्वपाः ॥ ३ ॥ ❀ ॥ इति श्रीगौडीपार्थजिनस्तोत्रं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आद्यः श्रीऋषभ स्ततो जितजिनः श्रीसंभवस्तीर्थकृत् । सुश्रीमान  
 जिनंदनश्च सुमतिः श्रीसद्गुणप्रजः । पृथ्वीकुक्षिजव सुपार्थजिनपस्तीर्थेशचं  
 द्रप्रजः । सर्वज्ञः सुविधिर्जिनो मुनिमतः श्रीशीतलः सौम्यदृक् ॥ १ ॥ श्रेयांस  
 प्रनुवासुषुज्य विमला ननेश धर्मेश्वराः । शांतिः कुंतु रर स्ततो जिनरिपु मूर्ति  
 जिनः सुव्रतः । अर्हंतो नमिनेमिश्रमुनिपो विश्वत्रये विश्रुतो । श्रीमत्पार्थजिनः  
 प्रसिद्धमहिमा श्रीवर्द्धमानः प्रभुः ॥ २ ॥ एते श्रीजिनपुङ्गवाः परमचिद्रूपाश्च  
 तुर्विंशति । निश्शेषोत्तम प्रव्यजंतुहृदयां प्रौजप्रबोधोद्यतः । वंद्यन्ते सुरवृन्दव  
 द्यविशदश्लोकप्रजानिर्जय । श्रीसंपत्तिनिवाम विक्रमपुरे सद्भक्तिः प्रत्यहं ॥ ३ ॥  
 ॥ ❀ ॥ इति चतुर्विंशति जिनस्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥



॥ ❀ ॥ अथ मंगलाष्टकं लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीमन्नम्र सुरासुरेन्द्रमुकुट प्रद्योतिरत्नप्रभा । आस्वत्पादनखेन्दव  
प्रवचनां ज्योधौ व्यवस्थायिनः । ये सर्वे जिनसिद्धसूरिसुगता स्ते पाठकासाधवः  
स्तुत्या योगिजनैश्च पंचगुरवः कुर्वतु मे मङ्गलं ॥ १ ॥ सम्यग्दर्शनबोधवृत्तमम  
लं रत्नत्रयं पावनं । मुक्तिश्रीनगरायनं जिनपतेः स्वर्गापवर्गप्रदः । धर्मः सु  
क्तिसुधाश्च चैत्यमखिलं जेनालयं श्यालयं । प्रोक्तंतत्रिविधं चतुर्विधं ममीकुर्व  
तु मे मङ्गलं ॥ २ ॥ नात्रेयादिजिनाधिपा स्त्रिनुवने ख्याताश्चतुर्विंशतिः । श्री  
मन्तो ऋतेश्वरप्रचृतयो येचक्रिणो द्वादश । ये विष्णु प्रतिविष्णु जाङ्गलधराः  
सप्ताधिकाविंशती । त्रैलोक्ये जयदा त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वतु मे मङ्गलं ॥ ३ ॥  
कैलाशे वृषजस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरी । चंपायां वसुपूज्य सज्जिनपतेः ।  
सम्पेदशैलेर्हतां । शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो । निर्वाणा  
विनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वतु मे मङ्गलं ॥ ४ ॥ ज्योति व्यंतर प्रावनामरगृहे  
मेरौकुलाद्रौस्थिता । जंबू शाल्मलि चैत्यशाखिषु तथा वद्भार रूपादिषु ।  
इक्ष्वाकारगिरौच कुंभजनगे द्वीपेच नंदीश्वरे । शैलेयेमनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्व  
तु मे मङ्गलं ॥ ५ ॥ यो गर्जावतरोपिजयत्यर्हतां जन्मात्रिषेकोत्सवे । योजातः  
परिनिक्रमे वचज्जवो यः केवलज्ञानप्राक् । यः कैवल्यपुरप्रवेश महिमासंज्ञावितः  
स्वर्गिभिः कल्याणानिच तानिपंचसततं कुर्वतु मे मङ्गलं ॥ ६ ॥ येषंचौपधिरुद्धयः  
श्रुततपो रुद्धिगता पंचये । येचाष्टांगमहानिमित्तकुशला येषौविधाचारणा ।  
पंचज्ञानधराश्च येषिबलिनो ये बुद्धि रुद्धीश्वरा । सप्तैते सकलाश्च ते गण  
नृताः कुर्वतु मे मङ्गलं ॥ ७ ॥ देव्याश्चाष्ट जयादिका त्रिगुणिता विद्या  
दिका देवता ॥ श्रीतीर्थंकर मातृकाश्च जनका यक्षाश्च यक्षीश्वराः । द्वात्रिंश  
तत्रिदशा ग्रहा निधिसुरा दिक्कन्यकाश्चाष्टधा । दिक्पाला दश इत्यमीसुरगणाः  
कुर्वतु मे मङ्गलं ॥ ८ ॥ इत्थं श्रीजिनमङ्गलाष्टकमिदं कल्याण कालेर्हतां ।  
पूर्वाह्णेपि महोत्सवेपि सततं श्रीसौख्यसंपत्करं । ये श्रूयन्ति पठन्ति तैश्च  
मनुजै र्धर्मार्थकामान्विता । लक्ष्मीराश्रयते विपायरहिताः कुर्वतु मे मङ्गलं ॥ ९ ॥  
॥ इति श्रीमङ्गलाष्टकं संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ परमात्मास्तोत्रः ॥ ❀ ॥

॥ शिवं शुद्धं बुद्धं परं विश्वनाथं । नदेवं नबन्धु नैकर्म नकर्त्ता । नअंगं न संगं नइच्छा नकामं । चिदानन्दरूपं नमोवीतरागं ॥ १ ॥ नबन्धो नमोहो नरा गादिलोकं । नजोगं नजोगं नव्याधि नैशोकं । नक्रोधं नमानं नमाया नलोभं (चि०) ॥ २ ॥ नहस्तो नपादौ नघ्राणं नजिह्वा । नचक्षु नैकर्णं नवक्त्रं ननिद्रा । नस्वादं नखेदं नवर्णं नमुद्रा । (चि०) ॥ ३ ॥ नजन्मं नमृत्यु नमोदं नचिन्ता । नकुलद नजीतं नकृष्यं नतुंदा । नस्वामी नभृत्यं नदेवो नमर्त्या । चि० ॥ त्रिदंसे त्रिखंसे हरे विश्वव्यापं । ऋषीकेश विभ्रंशकर्म्मरिजालं । नपुण्यं नपापं नअध्या नप्राणं (चि०) ॥ ५ ॥ नवाल्यं नवृद्धं नविम्रि नमृदा । नवेद्यं नजेद्यं नमूर्ति नैमीहा । नकृष्णं नशुक्लं नमोहं नतंद्रा । (चि०) ॥ ६ ॥ नआद्यं नमध्यं नमंत्यं नमन्या । नद्रव्यं नक्षेत्रं नदृष्टो नअव्या । नगुर्वो नशिष्यो नआद्यो नदीनं ॥ (चि०) ॥ ७ ॥ इदंज्ञानरूपं स्वयंतत्त्ववेदी । नपूणी नशून्यं सचेतन्यरूपं । अन्योन्निजिणिं नपरमार्थमेकं । (चि०) ॥ ८ ॥ आत्मा रामगुणाकरं गुणानिधि श्रैतन्यरत्नाकरं । सर्वेच्छूतगतागते सुखदुःख ज्ञातात्वया सर्वगं । त्रैलोक्याधिपति स्वयंस्वमनसाध्यायंति योगेश्वराः । वंदे तंहरिवंश हर्षहृदयं श्रीमान् चूडच्युतः ॥ ९ ॥ ❀ ॥ इति श्रीपरमात्मास्तोत्रं ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ नमस्कारस्तोत्र. ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दर्शनं देवदेवस्य । दर्शनं पापनाशनं । दर्शनं स्वर्गसोपानं । दर्शनं मोक्षसाधनं ॥ १ ॥ दर्शनेन जिनेन्द्राणां । साधूनां वंदनेनच । नतिष्ठति चिरं पापं । त्रिदहस्ते यथोदकं ॥ २ ॥ दर्शनं जिनसूर्यस्य । संमारध्वांतनाशनं । बोधनंचित्तपद्मस्य । समस्तार्थप्रकाशकं ॥ ३ ॥ दर्शनं जिनचंद्रस्य । सद्धर्माभृतवर्षणं । जन्मदाघविनासाय । वृद्धाणंसुखवारिधेः ॥ ४ ॥ जिनेज्जि जिनेज्जि । जिनेज्जि दिनेदिने । सदामेस्तु सदामेस्तु । सदामेस्तु जवे जवे ॥ ५ ॥ नदित्राता नदित्राता । नदित्राता जगत्रये । वीतरागममोदेवो । न नृनो न जविश्यति ॥ ६ ॥ अन्यथाशरणं नास्ति । त्वमेवशरणं मम । तस्मात् सर्वप्रयत्नेन । रक्षतु जिनेश्वर ॥ ७ ॥ वीतरागं सुखंदृष्ट्वा । पद्मरागममपन्नं । नैकजन्म कृतपापं । दर्शनेन विनश्यति ॥ ८ ॥ अर्हंतो मंगलं नित्यं

सिद्धाजगतिमंगलं । मंगलंसाधवोमुख्यं । धर्मःसर्वत्रमंगलं ॥ ९ ॥ लोको  
त्तमाइहार्हतः सिद्धालोकोत्तमाः सदा । लोकोत्तमोयतीशानां । धर्मोलोको  
त्तमोर्हतां ॥ १० ॥ शरणं सर्वदाहृतः । सिद्धाशरणमंगलां । साधवः शरणं  
लोके । धर्मशरणमर्हतां ॥ ११ ॥ इति श्रीनमस्कारस्तोत्रं संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ऋषिमंजल स्तोत्र ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आद्यंताक्षरसंलक्ष्णं । महारंवाप्ययत्स्थितं । अग्निज्वाला समंना  
द । विंदुरेखा समन्वितं ॥ १ ॥ अग्निज्वालासमाक्रांतं । मनोमलविशोधकं  
देदीप्पमानं हृत्पद्मे । तत्पदं नौमि निर्मलं ॥ २ ॥ अर्क्ष मित्यक्षरंब्रह्म । वाच  
कंपरमोष्ठिनः सिद्धचक्रस्य संप्रीजं । सर्वतः प्रणिदध्महे ॥ ३ ॥ ॐ नमो  
हृद्भ्य ईशेभ्यः । ॐ सिद्धेभ्योनमोनमः । ॐ नमः सर्वसूरिभ्यः । उपाध्यायेभ्यः  
ॐ नमः ॥ ४ ॥ ॐ नमः सर्वसाधुभ्यः । ॐ ज्ञानेभ्योनमोनमः । ॐ नम  
स्तत्त्वदृष्टिभ्य । श्रारित्रेभ्यस्तु ॐ नमः ॥ ५ ॥ श्रेयसेस्तु श्रियेस्त्येत । द  
हृदाद्यष्टकंशुभ्रं । स्थानेष्वष्टसुविन्यस्तं । पृथग्बीजसमन्वितं ॥ ६ ॥ आद्यं  
पदंशिखारंक्षे । त्परंरंक्षेत्तुमस्तकं । तृतीयं रंक्षेत्रेरेरे । तुर्यंरंक्षेचनासिकां ॥ ७ ॥  
पंचमंतु मुखरंक्षेत् । षष्ठंरंक्षेच्चयंटिकां । नाभ्यंतं सप्तमंरंक्षे । द्रक्षेत्पादांतमष्टमं  
॥ ८ ॥ पूर्वप्रणवतः सांत । सरेफोप्रचब्धिपंचपान् । सप्ताष्टदशसूर्याकान् ।  
श्रितोर्विंदुस्वरान्पृथक् ॥ ९ ॥ पूज्यनामाक्षरात्राद्याः । पंचातोज्ञानदर्शन ।  
श्रारित्रेभ्यो नमो मध्ये । ज्ञां सांतह समलंकृतः ॥ १० ॥ ❀ ॥ ॐ । ज्ञां ।  
ज्ञी । ज्ञुं । ज्ञूं । ज्ञे । ज्ञे । ज्ञां । ज्ञः । असिआज्ज्ञा ज्ञानदर्शनचारित्रेभ्यो  
नमः ॥ ❀ ॥ जंबूवृक्षधरोप्रीपः । क्षारोदधिसमावृतः । अर्हदाद्यष्टैरष्ट ।  
काथाधिष्टैरलंकृतः ॥ ११ ॥ तन्मध्य संगतोमेरुः । कूटजक्षैरलंकृतः । उच्चै  
स्त्वैस्तरस्तार । स्तारामंजुमंमितिः ॥ १२ ॥ तस्योपरिसकारांतं । बीजम  
ध्यास्यसर्वगं । नमामि विंमार्हत्यं । जलादस्थं निरंजनं ॥ १३ ॥ अक्षयं  
निर्मलंशांतं । बहुलं जायत्यतोभितं । निरीहं निरहंकारं । सारं सारतरंय  
नं ॥ १४ ॥ अनुधत्तं शुभ्रं स्फीतं । सात्त्विकं राजसंमतं । तामसं चिर  
संबुधं । तेजसंशर्वरीसमं ॥ १५ ॥ साकारं च निराकारं । सस्मं विरसंपरं  
परापरं परातीतं । परंपर परापरं ॥ १६ ॥ एकवर्णं द्विवर्णं च । त्रिवर्णं

तुर्यवर्णकं । पंचवर्णं महावर्णं । सपरंच परापरं ॥ १७ ॥ सकलं निष्कलं  
 तुष्टं । निर्वृतं भ्रांतिवर्जितं । निरंजनं निराकारं । निर्लेपं वीतसंश्रयं ॥ १८ ॥  
 ईश्वरं ब्रह्मसंबुधं । बुधं सिधं मतंगुरु । ज्योतीरूपं महादेवं । लोकालोक  
 प्रकाशकं ॥ १९ ॥ अर्हदाख्यस्तु वर्णीतः सरेफोर्विंदुमंफितः । तुर्यस्वरस  
 मायुक्तो । बहुधानादमालितः ॥ २० ॥ अस्मिन्बीजे स्थिताः सर्वे । वृष  
 प्राद्याजिनोत्तमाः । वर्णेर्निजैर्निजैर्युक्ता । ध्यातव्या स्तत्रसंगताः ॥ २१ ॥  
 नादश्रंद्रसमाकारो । विंदुर्नीलसमप्रभः । कलारुणसमासांतः । स्वर्णान्नः सर्व  
 तोमुखः ॥ २२ ॥ शिरःसंलीन ईकारो । विनीलोवर्णतः स्मृतः । वर्णानुसारसं  
 लीनं । तीर्थकृन्मंरुजंस्तुमः ॥ २३ ॥ चंद्रप्रभ पुष्पदंतो । नादस्थितिसमा  
 थितौ । विंदुमध्यगतौनेमि । सुवर्तौ जिनसत्तमौ ॥ २४ ॥ पद्मप्रचुवासुपूज्यौ ।  
 कलापदमधिष्ठितौ । शिरईस्थितिसंलीनौ । पार्श्वमक्षीजिनेश्वरौ ॥ २५ ॥  
 शेषास्तीर्थकृतःसर्वे । हरस्थाने नियोजिताः । मायाबीजाह्वरंप्राप्ता । श्रुतुर्वि  
 शतिरर्हतां ॥ २६ ॥ गतरागद्वेषमोहाः । सर्वपापविवर्जिताः । सर्वदाः सर्व  
 कालेषु । ते प्रवंतु जिनोत्तमाः ॥ २७ ॥ देवदेवस्ययश्चक्रं । तस्य चक्रस्य या  
 विभ्रा । तयाह्लादित सर्वाङ्गं । मामांहीनस्तु काकिनी ॥ २८ ॥ देवदेवस्य० ।  
 मामांहीनस्तु राकिनी ॥ २९ ॥ देवदे० । मामांहीनस्तु लाकिनी ॥ ३० ॥  
 देव० । मामांहीनस्तु काकिनी ॥ ३१ ॥ देवदे० । मामांहीनस्तु शाकिनी  
 ॥ ३२ ॥ देव० । मामांहीनस्तु हाकिनी ॥ ३३ ॥ देव० । मामांहीनस्तु  
 याकिनी ॥ ३४ ॥ देव० । मामांहींसंतुपणगाः ॥ ३५ ॥ देव० । मामांहिं  
 संतु हस्तिनः ॥ ३६ ॥ देवदे० । मामांहींसंतु राक्षसाः ॥ ३७ ॥ देव० ।  
 मामांहींसंतुवाहयः ॥ ३८ ॥ देव० । मामांहींसंतु सिंहकाः ॥ ३९ ॥ देव० ।  
 मामांहींसंतु दुर्जनाः ॥ ४० ॥ देव० । मामांहींसंतु नृमिषाः ॥ ४१ ॥ श्री  
 गौतमस्ययामुद्रा । तस्यायानुविजन्धयः । तांनि रम्युद्यतज्योति । रत्नसर्व  
 निधीश्वराः ॥ ४२ ॥ पातालवासिनो देवा । देवानृपांति वासिनः । स्वर्वा  
 सिनोपि ये देवाः । सर्वे रत्नंतु मामितः ॥ ४२ ॥ येष्वविजन्धयो येतु ।  
 पद्मावविजन्धयः । ते सर्वे मुनयोदेवाः । मामं रत्नंतु सर्वदा ॥ ४४ ॥ दु  
 र्जनानृनवेत्तालाः । पिशाचामुज्जालतया । ते सर्वे प्युपशाम्यंतु । देवदेव

ल्यं ॥ १३ ॥ संपूर्णमंजुशशांककलाकलाप । शुभ्रागुणास्त्रिभुवनं तवलंघ  
 यंति । ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वरनाथमेकं । कस्तान्निवारयति संचरतोयथेष्टं  
 ॥ १४ ॥ चित्रं किमत्रयदिते त्रिदशांगनाम्नि । त्रीतं मनागपिमनो नविकार  
 मार्गं । कल्पान्तकालमरुता चलिताचलेन । किमंदराद्रिशिखरं चलितंकदा  
 चित् ॥ १५ ॥ निर्धूमवर्त्ति रपवर्जित तैलपूरः । कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रग  
 टी करोषि । गम्यो न जातु मरुतां चलिता चलानां । दीपोपरस्त्वमसिना  
 थ जगत्प्रकाशः ॥ १६ ॥ नास्तं कदाचिदुपयासिनराहुगम्यः । स्पष्टी क  
 रोषि सहसायुगपज्जांति । नांजोधरोदरनिरुद्धमहाप्रज्ञावः । सूर्यातिशायिम  
 हमासि मुनींद्रलोके ॥ १७ ॥ नित्योदयं दलितमोहमहांधकारं । गम्यं न  
 राहुवदनस्य नवारिदानां । विभ्राजते तव सुखाब्ज मनल्लपकांति । विद्योतय  
 ज्जागद पूर्वशशांकविंबं ॥ १८ ॥ किं शर्वरीषु शशिनान्हि विवस्वतावा ।  
 युष्मन्मुखेदुदलितेषु तमस्सुनाथ । निष्पण्णशालिवनशालिनिजीवलोके । कार्यं  
 कियज्जाजधरेर्ज्जज्जारनमैः ॥ १९ ॥ ज्ञानं यथा त्वयि विज्ञाति कृतावकाशं ।  
 नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु । तेजःस्फु रन्मनिषु याति यथा महत्वं । नैवंतु  
 काचसकले किरणाकुलेपि ॥ २० ॥ मन्त्रेवरं हरिहरादय एव दृष्टा । दृष्टे  
 पु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति । किं वीक्षितेन प्रवतानुवियेन नान्यः । कश्चि  
 न्मनोहरतिनाथ प्रवांतरेपि ॥ २१ ॥ स्त्रीणां शतानि शतशो जनयंति पुत्रान्  
 नान्याश्रुतं त्वदुपमं जननीप्रसूता । सर्वादिशोदयति ज्ञानि सहस्ररस्मिं । प्रा  
 च्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालं ॥ २२ ॥ त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस ।  
 मादित्यवर्णममलं तमसःपुरस्तात् । त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्यु । ना  
 न्यः शिवः शिवपदस्य मुनींद्रपन्थाः ॥ २३ ॥ त्वामव्ययं विनु मर्चित्य मसंख्य  
 माद्यं । ब्रह्माण मीश्वर मनन्त मनङ्गकेतु । योगीश्वरं विदितयोग मनेक मेकं ।  
 ज्ञानस्वरूप ममलं प्रवदन्तिसन्तः ॥ २४ ॥ बुद्धस्त्वमेव विबुधाक्षितबुद्धिवोधा ।  
 त्वं शं करोसि भुवनत्रय शंकरत्वात् धातासिधीर शिवमार्गं विधेर्विधानात् । अथ  
 कं त्वमेव जगवन् पुरुषोत्तमोसि ॥ २५ ॥ तुभ्यं नम स्त्रिभुवनार्त्तिहराय नाथ ।  
 तुभ्यं नमः क्षितितज्जामलनृपणाय । तुभ्यं नम स्त्रि जगतः परमेश्वराय । तुभ्यं  
 नमो जिनप्रवो दधिशोपणाय ॥ २६ ॥ कोविन्मयोत्र यदि नामगुणैरशेषै ।

स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश । दोषैरुपात्त विबुधाश्रयजातगर्वैः । स्वप्नां  
तरेपि न कदाचिदपीक्षितोसि ॥ २७ ॥ उच्चैरशोक्तस्संश्रितमुन्मयूखा । मा  
ज्जाति रूपममलं प्रवतो नितान्तं । स्पष्टोत्तसत्किरणमस्ततमोवितानं । विम्बं  
स्वेरिवपयोधरपार्श्ववर्त्ति ॥ २८ ॥ सिंहासने मणिमयूख शिखाविचित्रे । वि  
भ्राजते तव वपुः कनकावदातं । विम्बं वियद्भिलसदंशुजतावितानं । तुङ्गो  
दयाद्रिशिरसीव सहस्र रश्मेः ॥ २९ ॥ कुंदावदातचलचामरचारुशोभं । वि  
भ्राजते तव वपुः कलधौतकांतं । उद्यच्छांक शुचिनिर्झर वारिवार । सुच्चै  
स्तदं सुरगिरेरिवशातकोभं ॥ ३० ॥ अत्रत्रयं तवविभ्राति शशांककांतं । सुच्चैः  
स्थितंस्थगितज्ञानुकरप्रतापं । सुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धिशोभं । प्रख्यापयत्  
त्रिजगतःपरमेश्वरत्वं ॥ ३१ ॥ उन्निद्रहेम नवपंकज पुंजकांति । पर्युत्तसन्नख  
मयूख शिखाभिरामौ । पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्रधत्तः । पद्मानि तत्र वि  
बुधाः परिकल्पयन्ति ॥ ३२ ॥ इत्थं तथा तव विभ्रूति रज्जुजिनेन्द्र । धर्मोप  
देशन विधौ न तथा परस्य ॥ यादृक् प्रजादिनकृतः प्रहतान्यकारा । तादृ  
क्कुतो ग्रहगणस्य विकशिनीपि ॥ ३३ ॥ श्रयोतन्मदा विलविलोल कपोल  
मूल । मत्तभ्रमद्भ्रमरनाद विवृद्धकोपं । ऐरावताभमिन्नमुद्यत मापतन्तं । दृष्ट्वा  
त्रयं प्रवतिनोप्रवदाश्रितानां ॥ ३४ ॥ त्रिलोचकुञ्ज गजदुज्ज्वल शोणिताक्त ।  
सुक्ताफल प्रकरचूषित चूमिजागः । वक्षकमः क्रमगतं हरिणाधिपोपि । नाक्रा  
मति क्रमयुगाचलसंश्रितंते ॥ ३५ ॥ कल्पान्तकालपवनोद्यतवन्धिकल्पं ।  
दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिङ्गं । विश्वं जिवत्सुमिव सम्मुखमापतन्तं ।  
त्वं नामकीर्त्तनजलं शमयत्यशेषं ॥ ३६ ॥ रक्तेक्षणं समदकोविल कंठनीजं ।  
क्रांद्योद्यतं फणिनमुत्तफण मापतन्तं । आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशंकः ।  
त्वन्नाम नागदमनी हृदि यस्य पुंमः ॥ ३७ ॥ वल्लग्नचरद्ग गजगर्जित श्रीमना  
द । भाजोवर्जं बलवता मपि नृपतीनां । उद्यद्दिवाकरमयूख शिखापवित्रं ।  
त्यर्त्तर्त्तनात्तमऽवागुन्निद्रासुपेति ॥ ३८ ॥ कुन्ताग्रचिन्नगजशोणितवारिवा  
ह । वेगावतारगणानुरग्योद्यन्मि । युदे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षः । त्व  
त्पादपंकजवनाश्रयिणी लज्जन्ते ॥ ३९ ॥ अंजोनिधौ कृत्तिनर्त्तापणनक्रचक्र ।  
पार्श्वानपीठप्रयदेख्यगवाक्वाग्नौ । रङ्गतरंगशिखरस्थितयानपात्रा । त्वामं



विहायज्वतः स्मरणाद्भवन्ति ॥ ४० ॥ उद्भूतजीषणजलोदरजार चुम्नाः ।  
 शौच्यांदशा मुपगताश्च्युतजीविताशाः । त्वत्पादपंकज रजोमृतदिग्धदेहा । म  
 र्त्याज्वन्ति मकरध्वज तुल्यरूपाः ॥ ४१ ॥ आपादकंठसुरशृङ्खलवेष्टिताङ्गा ।  
 गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्टजंघाः । त्वन्नाममंत्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः । सद्यः  
 स्वयं विगत बंध जया ज्वन्ति ॥ ४२ ॥ मत्त द्विपेद्र मृगराज दवानलाहि  
 संग्रामवारिधि महोदरबन्धनोत्थं । तस्याशु नाशमुपयाति जयं जियेव । य  
 स्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥ ४३ ॥ स्तोत्रस्रजं तव जिनेद्रगुणैर्निबद्धां ।  
 ज्ञत्तया मया रुचिरवर्णं विचित्रपुष्पां । धत्तेजनो य इह कंठगतामजस्रं ।  
 तं मानतुंग मवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४ ॥ इति श्रीजक्तामरस्तोत्रम् ॥ २ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ कल्याणमंदिरस्तोत्र ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कल्याणमन्दिर मुदारमवद्यजेदि । जीता जयप्रदमनिन्दित मंह  
 पद्मं । संसारसागरनिमज्जदशेषजंतु । पोतायमानमज्जिनम्यजिनेश्वरस्य ॥ १ ॥  
 यस्यस्वयं सुरगुरुरारिमांबुराशेः । स्तोत्रं सुविस्त्रुतमति नैविनुर्विधातुं । तीर्थेश्व  
 रस्य कमठस्मयधूमकेतो । तस्याहमेष किजसंस्तवनं करिष्ये ॥ २ ॥ (युग्मं ॥)  
 सामान्यतोपि तव वर्णयितुं स्वरूप । मस्मादृशाः कथमधीश ज्वंतधीशाः ।  
 धृष्टोपि कोशिकशिशु र्यदिवादिवांयो । रूपं प्ररूपयति किं किजधर्म रश्मेः ॥  
 ॥ ३ ॥ मोहकृया दनुजवन्नपि नाथमर्त्यो । नूनं गुणान् गुणयितुं न तव कृमेत ।  
 कल्पान्तवान्तपयसः प्रकटोपि यस्मा । न्मीयेत केन जलधे ननु रत्नराशिः  
 ॥ ४ ॥ अभ्युद्यतोस्मि तवनाथ जडाशयोपि । कर्तुंस्तवं लसदसंख्य गुणाकर  
 स्य । बालोपि किं ननिजबाहु युगं वितत्य । विस्तीर्णतां कथयति स्वधि  
 यांबुराशेः ॥ ५ ॥ ये योगिनामपि न यांति गुणास्तवेश । वक्तुं कथं ज्वति  
 तेषु ममावकाशः । जातातदेव मसमीक्षित कारितेयं । जल्पन्ति वा निजगि  
 रा ननु पक्षिणोपि ॥ ६ ॥ आस्ताम चित्यमाहिमा जिनसंस्तवस्ते । नामा  
 पिपाति ज्वतो ज्वतो जगंति । तीव्रातपो पहतपांथ जनान्निदाघे । प्रीणा  
 ति पद्मसरसः सरसोनिजोपि ॥ ७ ॥ हृष्टांतिनि त्वयिविजो शिथलीज्वन्ति ।  
 जंतो कृणेन निवडाअपि कर्मबंधाः । सद्यज्जुजङ्गममया इवमध्यजाग ।  
 मभ्यागते वनशिखंनिनिचंदनस्य ॥ ८ ॥ मुच्यंत एव मनुजाः सहसाजिनेद्र ।

रोद्रे स्पद्रवशतै स्वयिवीक्षितेपि । गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे । चोरे  
 रिवाशुपशवः प्रपलायमानेः ॥ ९ ॥ त्वंतारको जिनकथं जविनां तएव । त्वा  
 मुग्रहंति हृदयेन यदुत्तरंतः । यद्ग्राहति स्तरति यज्जाज मेघवृत्त । मंतर्गतस्यम  
 स्तः सकिञ्चानुज्ञावः ॥ १० ॥ यस्मिन्नहर प्रभृतयोपि हतप्रज्ञावा । सोपि  
 त्वया रतिपतिः कृपितः कृणेनः । विध्यापिता हुतनुजः पयसाथ येन । पीतं  
 न किं तदपि दुर्ध्वस्त्वेन ॥ ११ ॥ स्वामिण तुल्य गरिमाणमपि प्रपन्ना ।  
 स्वांजंतवः कथमहो हृदयेदधानाः । जन्मोदधिं लघुतरंत्यतिलाववेन । चिं  
 त्यो न हंतमहतां यदिवा प्रज्ञाव ॥ १२ ॥ क्रोधस्त्वया यदि विज्ञो प्रथमं  
 निरस्तो । ध्वस्तास्तदावतकथं किञ्चकर्मचोराः । प्लोपत्यमुत्र यदिवा शि  
 शिरापिज्ञोके । नीलद्रुमानि विपिनानि न किं हिमानी ॥ १३ ॥ त्वां योगि  
 नो जिन सदा परमात्मरूप । मन्वेपयंति हृदयां बुजकोशदेशे । पूतस्य नि  
 र्मलस्त्वेर्यदिवा किमन्य । दहस्य संजविपदं ननु कर्णिकाया ॥ १४ ॥ ध्याना  
 जिनेश जवतो जविनः कृणेन । देहं विहाय परमात्मदशां व्रजंति । तीव्रान  
 लापुपलज्ञाव मुपास्यलोके । चामीकरत्वमचिरा दिवधातुजेदाः ॥ १५ ॥  
 अन्त सदैव जिन यस्य विज्ञाव्यसेत्वं । जव्यै कथं तदपि नाशयसे शरीरं ।  
 एतत्स्वरूप मथ मध्यविवर्तिनोहि । यद्विग्रहं प्रसमयंति महानुज्ञावाः ॥ १६ ॥  
 आत्मा मनीषि चिस्त्वं त्वदज्ञेदबुद्ध्या । ध्यातो जिनैर्द्रजवतीह जवत्प्रज्ञावः ।  
 पानीयमप्य मृतमित्यनु चिंत्यमानं । किं नामनो विषविकार मपाकरोति ॥ १७ ॥  
 त्वामेव वीततमसं परवादिनोपि । नूनं विज्ञो हरेहरादि धियाप्रपन्नाः । किंका  
 चकामजिभिरी शसितोपि शंखो । नो गृह्यते विविधवर्ण विपर्ययेण ॥ १८ ॥  
 धर्मोपदेशममये सविधानुज्ञावा । दास्तांजनो जवति ते तरुप्यशोक । अ  
 भ्युज्जो दिनपतो समहीरुहोपि । किंवा विबोधमुपयाति न जीवलोकः ॥ १९ ॥  
 चिञ्चविज्ञो कथमवाहसुखवृत्तमेव । विष्वक्पतत्यविरलासुरपुष्पवृष्टिः । त्वज्जो  
 चरे सुमनसां यदिवासुनीश । गठंति नून मथएवहि बंधनानि ॥ २० ॥  
 स्थाने गजोर्हृदयोदधिमंजवायाः । पीयूषतां तव गिरः समुदीरयन्ति । पीत्वा  
 वतः परमसंमदमंगजाजो । जव्याव्रजंति तस्माप्यजरामरत्वं ॥ २१ ॥ स्वा  
 मिन् सुदूरमवनम्य समुत्पन्नो । मन्ये वदंति सुचयः सुरचामरौघाः । यस्मै

नतिं विदधते मुनिपुंगवाय । ते नूनमूर्ध्वगतयः खलु शुद्धजावाः ॥ २२ ॥  
 श्यामं गङ्गीरगिर मुज्ज्वलहेमरत्न । सिंहासनस्थमिहज्ज्व्य शिखंस्निस्तां ।  
 आलोकयन्ति रजसेन नदन्तमुच्चैः । श्रामीकराद्रिशिरसी वनवांबुवाहं ॥ २३ ॥  
 उज्ज्वता तवशाति द्युतिमंरुलेन । लुप्तवद्वविरशोक तर्ह्वचूव । सानिध्यतो  
 पि यदिवा तव वीतराग । निरागतां ब्रजति कोन सचेतनोपि ॥ २४ ॥ ओ  
 ओ प्रमादमवधूय जजध्वमेन । मागत्यनिर्वृतिपुरी प्रति सार्थवाहं । एतन्नि  
 वेदयति देव जगत्त्रयाय । मन्ये नदन्नजिनजः सुरदुन्दुभिस्ते ॥ २५ ॥ उद्यो  
 ति तेषु ज्वता जुवनेषु नाथ । तारान्वितोविधुरयं विहताधिकारः । मुक्ताक  
 लापकलितो वसितातपत्र । व्याजातत्रिधाष्टततनुर्ध्रुवमभ्युपेतः ॥ २६ ॥ स्वेन  
 प्रपूरित जगत्त्रय पिङ्गितेन । कांति प्रताप यशसामिव संचयेन । माणिक्य हे  
 म रजत प्रविनिर्मितेन । शालत्रयेणजगवन्नजितोविज्ञासि ॥ २७ ॥ दिव्य  
 सजो जिन नमत् त्रिदशाधिपाना । मुत्सृज्यरत्नरचितानपि मौलिबंधान् । पा  
 दौ श्रयंति ज्वतो यदिवा परत्र । त्वत्सङ्गमे सुमनसो नरमन्तएव ॥ २८ ॥  
 त्वं नाथ जन्म जलधेर्विपराङ्मुखोपि । यत्तारयस्य सुमतो निजपृष्ठजगान् ।  
 युक्तं हि पार्थिव निपस्य सतस्तवैव । चित्रं विज्ञो यदसिकर्म विपाकशून्यः ॥ २९ ॥  
 विश्वेश्वरोपि जनपालक दुर्गतस्त्वं । किंवाह्वर प्रकृतिरप्य लिपिः त्वमीश ।  
 अज्ञानवत्यपिसदैव कथंचदेव । ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्वविकाशहेतुः ॥ ३० ॥  
 प्राग्ज्जार संचृतनज्जांसि रजांसिरोषा । दुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि ।  
 गायापितै स्तवननाथ हता हताशो । अस्तस्त्वमीजि रयमेव परंदुरात्मा ॥ ३१ ॥  
 यज्जर्जूर्जित घनौघमदभ्रजीम । भ्रश्यत्तडिन्मुशल मांसलघोरधारं । दैत्येन  
 मुक्त मथदुस्तरवारिदध्रे । तेनैव तस्य जिनदुस्तर वारिकृत्यं ॥ ३२ ॥ ध्वस्तोर्ध्व  
 केशविकृताकृतिमर्त्यमुंरु । प्रालंबचृद्भयदवक्रविनिर्यदग्निः । प्रेतत्रजः प्रतिज  
 वंतमपीरितोयः । सोस्याज्वत्प्रतिजवं ज्वदुःखहेतुः ॥ ३३ ॥ धन्यास्त एव  
 जुवनाधिप ये त्रिसंध्य । माराधयंति विधिवद्विधतान्यकृत्याः । जतयुल्लसत्पु  
 लकपद्मलदेहदेशाः । पादभ्रयं तवविज्ञो जुविजन्मजाजः ॥ ३४ ॥ अस्मि  
 णपार ज्ववारिनिधौ मुनीश । मन्येन मे श्रवणगोचरतां गतोसि । आक  
 र्णितेतु तवगोत्र पवित्रमंत्रे । किंवा विपद्भिपथरी सविधंसमेति ॥ ३५ ॥ ज

न्मांतरेपि तव पादयुगं नदेव । मन्ये मया महित मीहित दानदहं । तेनेह  
जन्मनि मुनीश पराजवानां । जातो निकेतन महं मथिता शयानां ॥ ३६ ॥  
नृनं नमोहतिमिरा वृतलोचनेन । पूर्वविप्रो सकृदपि प्रविजोक्तोसि । मर्मा  
विधौ विधुरयंति हिमामनर्थाः । प्रोद्यत्प्रबंधगतयः कथमन्यथै ते ॥ ३७ ॥  
आकर्णितोपि महितोपि निरीकृतोपि । नृनं नचेतसि मया विधृतोसिभक्त्या ।  
जातोस्मि तेन जनवांधवदुःखपात्रं । यस्मात्क्रियाः प्रतिफलंति नञावशून्याः  
॥ ३८ ॥ त्वं नाथ दुःखिजनवत्सल हे शरण्य । कास्यायपुण्यवसते वशिनांवरे  
एय । भक्त्या नते मयि महेश दयाविधाय । दुःखांकुरोदजन तत्परतां विधेहि  
॥ ३९ ॥ निःसंख्यसारशरणंशरणंशरण्य । मासाद्यसादितरिपुप्रथितावदातं ।  
त्वत्पादपंकजमपि प्रणिधानवंध्यो । बध्योस्मिचेद्भुवनपावनहाहतोस्मि ॥ ४० ॥  
देवेन्द्रबंधविदिताखिलवस्तुसार । संसारतारकविप्रोभुवनाधिनाथ । त्रायस्व  
देव करुणा हृदिमां पुनीहि । सीदंत मद्यजयद व्यसनांबुराशे ॥ ४१ ॥ यद्य  
स्तिनाथ प्रवदंति सरोरुहाणां । भक्तेःफलं किमपिसंतत संचितायाः । तन्मे  
त्वदेक शरणस्य शरण्यभूयाः । स्वामीत्वमेव भुवनेत्र भवांतरेपि ॥ ४२ ॥ इ  
त्थंसमाहितधियो विधिवज्जिनेन्द्र । सांद्रोक्षसत्पुलक कंचुकितांगभगाः । त्व  
द्रिं वनिर्म्मज सुखांबुजवक्ष्यथा । येसंस्तवंतवविप्रो रचयंतिभक्त्याः ॥ ४३ ॥  
जननयनकुसुदचंद्र । प्रभामुराः स्वर्गसंपदोनुक्ता । ते विगलितमलनिचया ।  
अचिरान्मोहं प्रपद्यते ॥ ४४ ॥ ॐ ॥ इति कल्याणमंदिरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥ ॐ ॥

## ॥ ॐ ॥ अथ सेतुंजरास ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ श्रीरसदेसरपायनमी । आणीमनआणंद । रासभणुं रजियाम  
णो । सेतुंजेनोसुखकंद ॥ १ ॥ संवतच्यारसनोतरे । हुवाधनेसरसूर । निण  
सेतुंजमहानमकियो । शिजादित्यहन्नूर ॥ २ ॥ वीरजिणंदसमोसरया । से  
तुंजेजगरजेम । इन्द्रादिक आगलिकलो । सेतुंजमाहानमण्णम् ॥ ३ ॥ सेतुं  
जतीरथ सारिणो । नहीजे तीरथकोय । स्वर्गभृत्य पातालमे । तीरथसगजाजो  
य ॥ ४ ॥ नामैनवनिधिंमंपजे । दीठांठुरितपुजाय । भेदेत्तां भवभयज्जे । से  
वंतांसुखयाय ॥ ५ ॥ जंघुनामैदीण । दक्षिणभरतमजार । सौरठदेससुहाम  
णो । तिहां जे तीरथसार ॥ ६ ॥ ॐ ॥ ठालपहिंदीः रामगिरि ॥ ॐ ॥

॥ सेतुंजोनें श्रीपुंमरीक । सिद्धक्षेत्रकहुं तहतो क । विमलाचलनेकरुं परणाम ।  
 एसेतुंजैना इकवीसनांम ॥ १ ॥ सुरगिरिनें महागिरि पुन्यरास । श्रीपद पर्वत  
 इंद्रप्रकास । महातीरथपूर्वेसुखकाम ए० ॥ २ ॥ सासतोपर्वतनें दृढशक्ति । मुक्ति  
 निलो तिणकीजेनक्ति । पुष्पदंत महापदम सुठाम । ए० ॥ ३ ॥ पृथ्वीपीठ  
 सुजद्र कैलाश । पातालमूल अकर्मकतास । सर्वकाम कीजै गुणग्राम । ए०  
 ॥ ४ ॥ श्रीसेतुंजैना इकवीसनांम । जपैजवेठाअपणैठांम । सेतुंजजात्रानोफल  
 लहे । महावीरजगवंतइमकहै ॥ ५ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ ❀ ॥ सेतुंजोपहिलैअरै  
 असीजोयणपरमांण । पिहुलो मूल जुंचपण । बीसजोयणजाण ॥ १ ॥ सि  
 त्तरजोयणजाणवो । बीजै अरैविशाल । बीसजोयणजुंचोकह्यो । मुजुवंदणा  
 त्रिकाल ॥ २ ॥ साठजोयणतीजैअरै । पिहुलो तीरथराय । सोलजोयण  
 जुंचोसही । ध्यानधरुं चितलाय ॥ ३ ॥ पचासजोयण पिहुलपण । चौथै  
 अरै मजार । जुंचो दमजोयण अचल । नितप्रणमै नरनार ॥ ४ ॥ वार जो  
 यण पंचम अरै । मूलतणै विशतार । दोजोयण जुंचोअरै । सेतुंजतीरथ  
 सार ॥ ५ ॥ सातहाथ ठैअरै । पिहुलो परवतएह । जुंचोहोस्यै सउध  
 नुष । सासतोतीरथएह ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ जिनवरसुं मेरोमनलीणो ॥ ❀ ॥  
 केवलन्यानी प्रमुखतीर्थकर । अनंतसीधाइणठामरे । अनंतवली सीजसै इ  
 णठामै । तिणकरुं नितपरणामरे ॥ १ ॥ सेतुंजैसाधुअनंतासीधा । सीजसीव  
 लीय अनंतरे । जिणसेतुंजतीरथ नहीजेत्यो । तेगरजावासकहंतरे ॥ सेतुं०  
 ॥ २ ॥ फागुणसुदि आठमनें दिवसै । रिपजदेव सुखकारे । रायणरुंख समोस  
 स्थास्वामी । पूरवनिनाणूं वाररे । से० ॥ ३ ॥ जगतपुत्रचैत्रीपूनमदिन ।  
 इणसेतुंज गिरिआयरे । पांचकोडिसूं पुंमरीकसीधा । तिण पुंमरीक कहायरे ।  
 से० ॥ ४ ॥ नमि विनमि राजाविद्याधर । वेवेकोडिसंवातरे । फागुणसुदिदशमी  
 दिनसीधा । तिणप्रणमुं परजातरे । से० ॥ ५ ॥ चैत्रमामवदि चउदसनेदिन  
 नमिपुत्री चौसठिरे । अणसणकरि सेतुंजैगिर ऊपर । एसहुसीधा एकठरे ।  
 से० ॥ ६ ॥ पोतरा प्रथम तीर्थकर केरा । द्रावरुने वारिखिछरे । कार्तासुदि  
 पूनमदिनसीधा । दशकोडिसूं मुनिशिखरे । से० ॥ ७ ॥ पांचे पांरुव इणगिरमी  
 धा । नवनारद रिषिरायरे । संव प्रज्जुन गयाइहां मुगते । आठेकरमुखपायरे ।



मे० ॥ ८ ॥ नेमिविना तेवीसतीर्थकर । समोसस्था गिरिशंगरे । अजित  
 शांति तीर्थकरवेजं । रक्षा चोमासोरंगरे ॥ से० ॥ ९ ॥ सहससाधुपरिवार  
 संघाते । थावचा सुकशाधरे । पांचसे साधुसुं सेजगमुनिवर । सेतुंजे सिवसुख  
 जाधरे ॥ से० ॥ १० ॥ असंख्यातामुनि सेतुंजैसीधा । जस्तेसरने पादरे ।  
 राम अने जस्तादिक सीधा । मुक्तितणी एवादरे ॥ से० ॥ ११ ॥ जालिमया  
 लीने उवयाली । प्रमुख साधुनीकोफिरे । साधुअनंता सेतुंजैसीधा प्रणमुं  
 वेकरजोफिरे ॥ से० ॥ १२ ॥ ॐ ढालचौपाईनी ॥ ॐ ॥ सेतुंजैनाकहुं  
 सोलज्वार । तेसुणिज्यो सहुको सुविचार । सुणतां आणंद अंगनमाय ।  
 जनमजनमना पातिकजाय ॥ १॥ रुषजदेव अयोध्यापुरी । समवसस्था स्वामी  
 हितकरी । जस्तगयो वंदणनैकाज । येउपदेसदियोजिनराज ॥ २॥ जगमांहे मोटा  
 अरिहंतदेव । चौसठ इंद्र कैजसुसेव । तेहथीमोटो संवकहाय । जेहने प्रणमें  
 जिनवरराय ॥ ३ ॥ तेहथीमोटो संववीकह्यो । जस्तसुणीने मनगहगह्यो । जस्त  
 कहैतेकिमपामिये । प्रनु कहै सेतुंजे जात्राकिये ॥ ४ ॥ जस्तकहै संववीपद  
 सुझ । थेआपोहुं अंगजतुझ । इंद्रैआएयाअकृतवास । प्रनु आपे संववीपदता  
 स ॥ ४ ॥ इंद्रैनिणवेला ततकाल । जस्त सुजद्रा विहुंनैमाज । पहिरावी घर  
 संप्रेभिया । सखरमोनाना रथआपिया ॥ ६ ॥ रिषजदेवनी प्रतिमावली ।  
 रत्नतणीदीधीमनरली । जस्ते गणधर वस्तेडिया । सांतिक पोष्टिक सहु निहां  
 किया ॥ ७ ॥ कंकोत्रीमृंकी सहुदेग । जस्तनेढायोसंवआसेस । आयोसंव  
 अयोध्यापुरी । प्रथमथकी रथजात्राकरी ॥ ८ ॥ संव जगति कीधी अनिवणी ।  
 संवचलायो सेतुंजाजणी । गणधर बाहुवलकेवली । सुनिवरकोडि माथेलि  
 यावली ॥ ९॥ चक्रवर्तिनी मगलारिधि । जस्ते माथे लीधीसिद्धि । हयगवरथ  
 पायक परवार । तेनो कहुतां नावैपार ॥ १० ॥ जस्तेसर संववीकहवाय ।  
 मारगचैत्य उवरतीजाय । संव आयो सेतुंजैपास । सहुनीपुगी मननीआस  
 ॥ ११ ॥ नवणे निरख्यो सेतुंजराय । माणि माणक मोल्वांसुं वधाय । निण  
 ठामे रही महोठवकियो । जस्ते आणंदपुर वामियो ॥ १२ ॥ संवसेतुंजा  
 जपर चह्यो । फरसंता पानिक ऊठपड्यो । केवजन्यानी पगला निहां ।  
 प्रणम्यारावण संखने जिहां ॥ १३॥ केवलन्यानी गनात्रनिमित्त । ईशानेंद्र आ



एणीसुपवित्त । नदीसेत्रुंजै सोहामणी । जरतेंदीगी कौतुकजणी ॥ १४ ॥ गणधर  
 देवतणे उपदेस । इंद्रैवलिदीधो आदेस । श्रीआदिनाथ तणोदेहरो । जरत  
 करायो गिरिसेहरो ॥ १५ ॥ सोनानो प्रसाद उत्तंग । रतन तणी प्रतिमा  
 मनरंग । जरतै श्रीआदीसरतणी । प्रतिमाथापी सोहामणी ॥ १६ ॥ मरुदेवानी  
 प्रतिमाजली । माहीपूनिम थापीरली । ब्राह्मी सुंदरी प्रमुखप्रासाद । जरतैथाप्या  
 नवलैनाद ॥ १७ ॥ इमअनेक प्रतिमाप्रासाद । जरतकराया गुरुसुप्रसाद । जरत  
 तणोपहिलो उधार । सगलोही जाणै संसार ॥ १८ ॥ ॐ ॥ ठाज सिधूसो  
 आसाउरी ॥ ॐ ॥ जरत तणें पाटै आठमें । दंरु वीरज थयो रायोजी । जरत  
 तणीपर संघकीयो । सेत्रुंजसंघवी कहायो जी ॥ १ ॥ सेत्रुंजैउधारसांजलो ।  
 सोलमोटा श्रीकारोजी । असंख्यात वीजावलि । तेह नकहुं अधिकारोजी  
 से० ॥ २ ॥ चैत्यकरायो रूपातणो । सोनानो विंवसारोजी । मूलगोविं  
 वज्रमारीयो । पढिमदिश तिणवारोजी । से० ॥ ३ ॥ सेत्रुंजैनी जात्राकरी ।  
 सफलकियो अवतारोजी । दंरुवीरज राजातणो । एवीजो उधारोजी ॥ से०  
 ॥ ४ ॥ सोसागरोपम वितिक्रम्या । दंरुवीरजथी जिवारोजी । ईशानेंद्रकरा  
 वीयो । एतीजो उधारोजी ॥ से० ॥ ५ ॥ चौथा देवलोकनो धणी । माहेंद्र  
 नाम उदारोजी । तिणसेत्रुंजैनो करावीयो । ए चौथो उधारोजी ॥ से०  
 ॥ ६ ॥ पांचमा देवलोकनोधणी । ब्रह्मेंद्र समकित धारोजी । तिणसेत्रुंजैनो  
 करावीयो । ए पांचमो उधारोजी ॥ से० ॥ ७ ॥ जुवनपती इंद्रनोकीयो । ए  
 ठठो उधारोजी । चक्रवर्तिसगरतणोकीयो । ए सातमो उधारोजी ॥ से० ॥ ८ ॥  
 अग्निनंदन पासै सुणयो । सेत्रुंजनो अधिकारो जी । व्यंतरेंद्र करावीयो ।  
 ए आठमो उधारोजी । से० ॥ ९ ॥ चंद्रप्रनुस्वामिनोपोतरो । चंद्रशेखरनाम  
 मल्हारोजी । चंद्रजसराय करावीयो । ए नवमो उधारोजी । से० ॥ १० ॥  
 शांतिनाथनी सुणीदेशना । शांतिनाथ सुत सुविचारोजी । चक्रधर राय क  
 रावीयो । ए दशमो उधारोजी । से० ॥ ११ ॥ दशरथसुत जगदीपतो । मुनि  
 सुवत स्वामी वारोजी । श्रीरामचंद्र करावीयो । ए इग्यारमो उधारोजी ॥ से०  
 ॥ १२ ॥ पांरुवकहै अग्नेपापीया । किमबूटां मोरीमायोजी । कहैकुंती  
 सेत्रुंजतणी । यात्रकीयां पाप जायोजी ॥ से० ॥ १३ ॥ पांचेपांरुव संव

करी । सेतुंज जेदयो अपारोजी । काष्टचैत्य विंवलेपना । ए वारमो उधारोजी ।  
 से० ॥ १४ ॥ मम्माणी पापाएनी । प्रतिमां सुंदरसरूपोजी । श्रीसेतुंजैनो  
 संवकरी । थापी सकल सरूपोजी । से० ॥ १५ ॥ अठोत्तर सोवरसांगयां  
 विक्रमनृपथी जिवारोजी । पोखाडजावरु करावीयो । एतेरमो उधारोजी ।  
 से० ॥ १६ ॥ संवत वार तिनोत्तरै । श्रीमाली सुविचारोजी । बाह्रमदे मुहते  
 करावीयो । ए चवदमो उधारोजी ॥ से० ॥ १७ ॥ संवत तेरै इकोत्तरै । देसल  
 हर अधिकारोजी । समरै साहकरावीयो । ए पनरमो उधारोजी । से० ॥ १८ ॥  
 संवत पनर सत्यासीयै । वेसाखवदि सुजवारो जी । करमेंमोसी करावीयो ।  
 एसोलमो उधारोजी ॥ से० ॥ १९ ॥ संप्रतिकालै सोलमो । एवरतेबेउधा  
 रोजी । नितनित कीजै बंदना । पामीजै जवपारोजी ॥ से० ॥ २० ॥ डुहा ।  
 वज्रसेतुंज महातमकहुं । सांजलो जिमठे तेम । सूरिधनेसरइमकहै । महावी  
 रकह्यो एम ॥ १ ॥ जेहवो तेहवो दरसणी । सेतुंजै पुजनीक । जगवंतनो वेसवां  
 दतां । जाजहुवैतहतीक ॥ २ ॥ श्रीसेतुंजाऊपरै । चैत्यकरावैजेह । दल  
 परमाण समोजहै । पड्योपमसुखदेह ॥ ३ ॥ सेतुंज ऊपर देहरो । नवो  
 नीपावैकोय । जीणांघार करावतां । आठगुणो फजहोइ ॥ ४ ॥ सिरऊपरि  
 गागरधरी । स्नात्र करावै नारि । चक्रवर्तिनी स्त्रीथई । सिवसुख पामेंसारा ॥ ५ ॥  
 काती पूनिम सेतुंजे । चढिनं करै उपवास । नारकी सोसागर समो । करै करमनो  
 नास ॥ ६ ॥ कातीपरब मोटो कह्यो । जिहां सीधा दशकोनि । ब्रह्म स्त्री वा  
 जकहत्या । पापथी नाखैगोर ॥ ७ ॥ सहस्रलाख श्रावग जणी । जोजन  
 पुन्यविशेष । सेतुंज साधु पणिजाजतां । अधिको तेहथी देख ॥ ८ ॥ ॐ ॥  
 ढाल ५ ॥ ॐ ॥ धन २ अववंतीसुकुमालनें एहनी ॥ ॐ ॥ सेतुंजैगयां पाप  
 वृद्धे थै । लीजै आजोयण एमोजी । नप जप कीजै तिहां रही । तीर्थकर  
 कट्यो तेमोजी ॥ १ ॥ से० । जिणमोनानी चोरीकरी । ए आजोयणतामोजी ।  
 चैत्रीदिन सेतुंज चढी । एककरै उषामोजी ॥ २ ॥ से० ॥ वस्तु तणी  
 चोरीकरी । मान आंविज सुध थायोजी । कानी सातदिन नपकीयां ।  
 रतनहरण पाप जायो जी ॥ ३ ॥ से० ॥ कांसी पीतल तांदा रजतनी । चोरी  
 कीधी जेणोजी । सातदिवस पुरमहकरै । तो वृद्धे गिरि एणोजी ॥ ४ ॥ से० ।

मोती प्रवाला मूंगीया । जिण चोरया नरनारोजी । आंबिलकरि पूजाकरै ।  
 त्रिणटक सुद्ध आचारोजी ॥ ५ ॥ से० ॥ धान पाणी रसचोरीया । जे जेते  
 सिद्धदेवोजी । सेतुंज तलहटीसाधुनें । पमिलाजें सुध चित्तोजी ॥ ६ ॥ से० ।  
 वस्त्राजरण जिणेंहरया । तेवूटै इण मेलोजी । आदिनाथनी पूजाकरै ।  
 प्रहज्जतीवहुवेलोजी ॥ ७ ॥ से० ॥ देवगुरुनो धनजेहरै । तैसुद्धथायेएमोजी ।  
 अधिकोद्रव्य खरचै तिहां । पात्रपोषै बहुप्रेमोजी ॥ ८ ॥ से० ॥ गायत्रिसंघो  
 नामही । गजनोचोरणहारोजी । द्यैतेवस्तु तीरथै । अरिहंतध्यान प्रकारोजी  
 ॥ ९ ॥ से० ॥ पुस्तक देहरापारका । तिहां लिखै अपणो नामोजी । वूटै  
 ठम्मासीतपकीयां । सामायक तिणठामोजी ॥ १० ॥ से० ॥ कुंवारी परिव्राजका  
 सधव अथव गुरु नारोजी । ब्रतजांजै तिणनें कह्यो । ठम्मासी तप सा  
 रोजी ॥ ११ ॥ से० ॥ गौ विप्र स्त्री वालक रिषी । एहनोघातक जेहोजी । प्रतिमा  
 आगै आलोवतां । वूटै तप करि तेहोजी ॥ १२ ॥ से० ॥ ॐ ॥ ढाल ६ कुं  
 मरज्जलै आवीयोए ॥ एहनी ॥ ॐ ॥ संप्रतिकालै सोलमोए । एवरतैठै  
 उच्चार । सेतुंज यात्रा करुंए । सफलकरुं अवतार ॥ १ ॥ से० ॥ ठहरी  
 पालतां चालीयैए । सेतुंज केरी वाट ॥ से० ॥ पालीताणें पडुचीयैए । संघ  
 मिट्या बहुथाट ॥ २ ॥ से० ॥ ललितसरोवर पेपीयैए । वलि सत्तानीवाव ।  
 से० ॥ तिहां विसरामोलीजियैए । वरुनैचौतरै आवि ॥ ३ ॥ से० ॥ पाली  
 ताणें पाजनीए । चढीयै उठिपरजात ॥ से० ॥ सेतुंजनदीय सोहामणीए । दूर  
 थकीदेखंत ॥ ४ ॥ से० ॥ चढियै हिंगुलाजनें हरैए । कलिकुंमनमीयै पास ।  
 से० ॥ वारीमांहे पैसीयैए । आणी अंग उच्चास ॥ ५ ॥ से० । मरुदेवी दूं  
 क मनोहरुए । गजचढी मरुदेवी माय ॥ से० ॥ शांतिनाथ जिनसोलमोए ।  
 प्रणमीजैतसुपाय ॥ से० ॥ ६ ॥ वंस पोखाडै परगमोए । सोमजीसाहमल्हार ।  
 से० । रूपजी संघवी करावीयोए । चौमुख मूलउच्चार ॥ से० ॥ ७ ॥ चौमुखप्रतिमा  
 चरचीयैए । जमतीमांहि जलाविंव । पांचेपांमवपूजियैए । अदनुतआदिप्रलंब  
 से० ॥ ९ ॥ खरतरवसहीखांतिसुंए । विंव जुहारुं अनेक ॥ से० ॥ नेमिनाथ चवरी  
 नसुंए । टालुंअलगनभ्रैग ॥ से० ॥ ९ ॥ धरमडुवार मांहेनीसरुंए । कुगतिकरुं  
 अतिदूर ॥ से० ॥ आवुं आदिनाथदेहरैए । करमकरुं चकचूर ॥ से० ॥ १० ॥

मूलनायक प्रणमुंमुदाए । आदिनाथ जगवंत ॥ से० देवजहारुं देहरेण । ज  
मतीमांहि जमंत ॥ से० ॥ ११ ॥ सेतुंजेऊपरि कीजीयेण । पांचेठाम सनात्र ।  
से० । कलश अठोत्तरसो करुण । निरमल नीरसुगात्र ॥ से० ॥ १२ ॥ प्रथ  
म आदीसर आगलेण । पुंमरीक गणधार ॥ से० ॥ रायणतलपगजानमुंण ।  
शांतिनाथ सुखकार ॥ से० ॥ १३ ॥ रायणतलपगजानमुंण । चौसुखप्रति  
माच्यार ॥ से० ॥ बीजीचूमि विंवावलीए । पुंमरीकगणधार ॥ से० ॥ १४ ॥  
सूरजकुंरुनिहालीयेण । अतिजलीज्जकाजोल ॥ से० ॥ चेजणातलाई सिध  
सिलाए । अंगफरमुं उल्लोल से० ॥ १५ ॥ आदिपुरपाजे ऊतरुंण ।  
सिधवरुलुंविमरांम ॥ से० ॥ चैत्यप्रवाड इणपरि करीए । सीधावंजितकाम ॥  
से० ॥ १६ ॥ जात्राकरी सेतुंज तणीए । सफलकीयो अवतार ॥ से० ॥  
कुसलखेममुं आवीयोए । संवसहृपरिवार ॥ से० ॥ १७ ॥ सेतुंजरास सो  
हामणोण । सांजलज्यो सहुकोइ ॥ से० ॥ घर बैठां जणेंजावसुंण । तसुजा  
त्राफजहोइ ॥ से० ॥ १८ ॥ संवत सोल वयांभीयेण । सावणवादिमुखकार ।  
से० ॥ रासजण्यो सेतुंजतणोण । नगर नागोर मजार ॥ से० ॥ १९ ॥ गिस्वो  
गठखरतरतणोण । श्रीजिनचंदसुरीस । से० । प्रथमसिष्य श्रीपूजनाए । स  
कलचंद सुजगांस ॥ से० ॥ २० ॥ ताससीसजगजाणीयेण । समैसुंदरउवजाय ।  
से० । रामरच्यो तिणरुवडोए । सुणतां आणंदथाय ॥ से० ॥ २१ ॥  
॥ ॐ ॥ इति श्रीसेतुंजरास संपूर्णम् ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ श्रीसम्मेतसिखरजीकोरास ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ वांदी वीम जिनेसरु । स्वसुं रासरमाज । तीरथ शिखर  
समेतनी । महिमा वडी विशाल ॥ १ ॥ मोटो तीरथ महियजे ।  
प्रगट्यो शिखर समेत । कोडाकोडी मुनिवरु । सिद्धि गण इह्येन  
॥ २ ॥ तीरथ शिखर समेत । फरस्यां पापपुजाय । जविजन जेदो  
जावसुं । ज्युं सुख संपद थाय ॥ ३ ॥ महिमा मित्तसुंमेतनी । कहि  
नमकै कविकोय । गुण अनंत जगवंतना । निमण तीरथ होय ॥ ४ ॥  
दाल ॥ १ ॥ चौपईनो ॥ ॐ ॥ गिस्वर शिखर समो नहीकोय । एहनी महिमा  
मयजग होय । वीसजिनेसर मुगतेगया । मुनिजन ध्यानधरीनै रखा ॥ १ ॥

प्रथम अयोध्यानगरी जली । तिहां जितशत्रु नरेसर बली । विजया राणी  
 नें सुतजाण । अजित कुमार सहुगुणनीखाण ॥ २ ॥ जसुइंद्रादिक सेवा  
 करै । इंद्राणी अतिजठव धरै । तीर्थकरनी पदवी लही । अंतर अरिजिण  
 साध्या सही ॥ ३ ॥ अनुक्रम इमजोगवतां जोग । पुन्यप्रसाद मिल्यो सहु  
 जोग । अवसर दै संवत्तर दांन । संजम लीनो आप सुजान ॥ ४ ॥ कर्मख  
 पावी पाम्यो ग्यान । केवलदर्शन लह्योप्रधान । विचरै पुहवी मंरुज मांहि ।  
 जव्यजीव प्रतिबोधन तांहि ॥ ५ ॥ सिंह सेनादिक गणधरजया । पंचा  
 णवै संख्या सहु थया । एकलाख मुनिवर परिवरया । श्रावक श्रावकणी  
 बहुकरया ॥ ६ ॥ तीन लाख बलि तीस हजार । साधवियां जाणो सुवि  
 चार । श्रावक सहस अठाणुं सही । दोय लाख संख्या गहगही ॥ ७ ॥  
 पांच लाख पेंतालीस हजार । श्रावकणी संख्या सुविचार । बहुत्तर लाख  
 पूरवनो आय । कंचनवरण सरीरसुहाय ॥ ८ ॥ साढा च्यारसै धनुष स  
 रीर । मानलह्यो प्रनु गुण गंजीर । गजलांठन प्रनुजीनो जाण । अमृतसम  
 जसुमीठी वाण ॥ ९ ॥ अनुक्रम प्रनुजी सिखरसमेत । गिरवर पर आव्या  
 निजहेत । सहस मुनिस्वरनें परिवार । मासखमण अणसण कर सार  
 ॥ १० ॥ चेत्री सुदि पूनिमनें दिनें । सुक्तिगए प्रनु तीरथइणें । नूचर खे  
 चर किनरसुरी । इंद्रादिक सहु जठव करी ॥ ११ ॥ थाप्यो तीरथ मोटो  
 मही । अठाइ महोजठव कियोसही । ए तीरथनी जात्राकरै । ते जवियणअह  
 यसुख लहे ॥ १२ ॥ डुहा ॥ ❀ ॥ श्रीसंजव जिनराजजी । गएइहांनिर्वाण ।  
 शिखरसमेत सुहामणो । प्रगट्यो तीरथ जाण ॥ १ ॥ ❀ ॥ सुगुणसनेही  
 साजन श्रीसीमंधरस्वाम, एचाल ॥ सावत्थी नगरी जरी धनसंपद सहुथोक ।  
 जेतारीनृप राजकरै सुखियासबलोक । सेनाराणी मीठीवाणी गुणनी खाण ।  
 जेहनें सुत श्रीसंजव जनम्या सकज सुजाण ॥ १ ॥ कंचनवरण सरीरमनोहर  
 प्रनुनोजाण । लंठन अश्वतणो सोहै प्रनुनो परधान । साठलाख पूरवनो  
 प्रनुनो आयुप्रमाण । धनुख च्यारसै जवपणो प्रनुदेह बखाण ॥ २ ॥ एकसो  
 दोय संख्यायें प्रनुनें गणधर होय । दोयलाखमुनि जेहनें गुणवरता जगजो  
 य । तीन लाख श्रमणी बली ऊपर महम उत्तीस । नूमंरुज विचरै प्रनु श्रीमं

अव जगदीस ॥ ३ ॥ तीन लाख बलि सहस्र त्रयाणुं श्रावक लोक । पदलख  
महम उर्तीम श्रावकणी संख्याथोक । त्रिमुख यक्ष अरु दुरितादेवी सानिध  
कार । विचरंतां प्रनु सकल संघमें जय जय कार ॥ ४ ॥ सहस्र श्रमण परिवारे  
प्रनुजी शिखर समेत । एकमास संलेखणकीनी निज पदहेत । इण गिरि ऊपर  
पायो प्रनुजी पद निखाण । तीरथमहिमां महियल मोटी थइय सुजाण  
॥ ५ ॥ ॐ छुहा ॐ ॥ अग्निनंदन जिन वंदिये । पायो पद निखाण । शिखर  
समेत सुहामणो । जेटो तीर्थसुजाण ॥ १ ॥ सहस्रश्रमणसुं सुकसंजमधरो  
एचाज ॥ ॐ ॥ नगरी अजोध्या सुरपुरी समजली । मंवरराजा सोहेमनरली ।  
सिद्धार्थी राणी तसुनंदण । अग्निनंदण जिन प्रगट्याचंदण ( उल्लाजो ) चंदण  
सोवन वरणसोहे धनुष साढीतीनसे । सुंदर शरीर प्रमाण द्युनिकर कपिलंजन  
तेनित वसे । पूर्वलाख पचास आयु गणधर इकसो सोलण । तीनलाख सुनि  
ठलाख आर्या सहस्र त्रिसत्सोलण ॥ १ ॥ ( चाल ) सहस्रअठ्यासी दोलख  
श्राद्धनी । संख्या चौलखमत्तावीसनी । श्रावकएयांरी संख्या जाणण । नायक  
यक्ष कालिकाठाणण ( उल्लाजो ) ठाणण शिखर समेत ऊपर मासएक संलेख  
णा । इकसहस्र साधू परवरथा प्रनु सुक्ति पहुचे पेपणा । इमही अयोध्या मेव  
नखर देवी मान सुमंगला । श्रीसुमति जिनवर जण नंदन सदाहोत सुमंगला  
॥ २ ॥ ( चाल ) सोवनवर्ण धनुषप्रनुतीनसे । जंजनकोच सोहे सुजगे हसे । पूर्व  
लाख पच्यासी आउण । इकसो गणधर गुणगण जाउण ( उल्लाजो ) जाउण  
सुनि त्रिणलाख सोहे सहस्रवीस प्रमाणण । पणलक्ष त्रीस हजार साध्वी श्रावक  
दोय लक्षजाणण । संख्या इक्यासी महम ऊपर श्रावका इम आर्नाये ।  
पणलाख मोले सहस्र तुंवर महाकाली मांनिये । श्रीशिखर ऊपर नातमंख्या  
सहस्र साधुसुरंगण । करमासकी संलेखणा प्रनुमुक्तिपुहता चंगण ॥ ३ ॥ ( चाल )  
इम कोसंघी नगरीनातण । धनुषनात सुमीमामातण । पदमप्रनुतसु अंगजना  
थण । जंजनकमल तणो सुजहाथण ( उल्लाजो ) हाथण धनुषप्रमाणपुगअहा  
इसे वनृकहो । तीन लाख पूरव यिनकहावे एकसो गणधर जहो । लखतान ती  
सहस्र साधू बीसमहम लखचारण । साध्वी दोयलख महम त्रिहंतर श्राव  
कमंख्या सातण ॥ ४ ॥ ( चाल ) पांचलाख बलि पांचहजारण । श्रावकएयांरी



संख्यासारण । कुसुमदेव स्यामादेवी कही । लालवरण तनुसोहै प्रनुसही ।  
 ( ज्वालो ) सोहए सिखरसमेत ऊपर आठसेत्रिण मुनिवरा । करमास संले  
 खन प्रनुनी सेव करहे सुरवरा । श्रीपदमप्रचूजी मुक्तिपहुता गिरेशिखर  
 महिमाजई । तसु चरणपंकज बालवंदै हृदय आणंद गहगही ॥ ५ ॥ पुहा ॥  
 श्रीसुपास जिणंदना । पदपंकज आराम । जविजन भ्रमर सुसेवतां । पामें  
 वंजितकाम ॥ १ ॥ श्रीसीमंधर साहिबा, ए चाल ॥ ॐ ॥ नगर वणारसी  
 सोजता । राजा तात प्रतिष्टलालरे । देवी पृथ्वीमातजी । स्वस्तिकजंघन  
 सिष्टलालरे ॥ १ ॥ श्रीसुपार्थजिणंदजी । वीस पूरबलख आयुलालरे । धनुष  
 दोयसैदेहनो । कंचनवरण सुहाय लालरे ॥ २ ॥ श्री० ॥ पंचाणवै गणधर  
 कहा । साधू त्रिणलाख होय लालरे । च्यारलाख तीस ऊपरै । सहस साध  
 वियां जोय लालरे ॥ ३ ॥ श्री० ॥ सहससतावन लक्ष्मी । श्रावकसंख्या  
 थाय लालरे । च्यारलाख बलीत्रिणवै । सहस श्रावकणीजाय लालरे ॥ ४ ॥  
 श्री० ॥ मातंगयक्ष सांतासुरी । पांचसै मुनि परवार लालरे । करिअणसण  
 सुगतैगया । नामजियां निस्तार लालरे ॥ ५ ॥ श्रीसु० ॥ नगर चंद्रपुर इण  
 परै । राजातात महेस लालरे । देवी मातालक्ष्मणा । सुत चंद्राप्रनु वेशला  
 लरे ॥ ६ ॥ श्रीचंद्राप्रनु वंदियै । चंद्रवरण तनुदेह लालरे । लंघन चंद्रतणो  
 जलो । धनुषदोढसै देह लालरे ॥ ७ ॥ श्रीचं० ॥ जविक कमल प्रतिबोधना  
 सेवै सुर नर यक्ष लालरे । दसलाखपूरब आऊखा । तेणवै गणधर दक्षला  
 लरे ॥ ८ ॥ श्रीचं० ॥ दोयलख सहस पचाणवै । मुनिश्रमणी तीनलक्ष ला  
 लरे । असीसहस संख्याकही । श्रावकबलि दोयलक्षलालरे ॥ ९ ॥ श्रीचं० ॥  
 लाखपचास ऊपरवली । आविका चनुलक्षधार लालरे । सहसइकाणवै ऊ  
 परै । प्रनुजीनो परिवार लालरे ॥ १० ॥ श्रीचं० ॥ विजयदेव नृकुटीसुरी ।  
 सहससाधु परिवार लालरे । संलेखन इकमामनी । पुहता मुक्तिमजार लालरे  
 ॥ ११ ॥ श्रीचं० ॥ पुहा ॥ जय श्रीसुविध जिनेसरू । जगपति दीनदया  
 ल । समेतसिखर सुगतैगया । जविजनके प्रतिपाल ॥ ढाल ॥ ॐ ॥ श्रीविम  
 लाचलसिरतिजो एचाल ॥ ॐ ॥ नयर काकंदी नरपति । एम पितासुग्रीव ।  
 देवीरामा मातासुत । जए सुविधसुजजीव ॥ १ ॥ रजतवरण समतनुमत । ध

नुप एकपरिमाण । दोय लाख पूरव कह्यो । प्रनुनो आयु सुजाण ॥ २ ॥ अठ्या  
मी संख्याजये । गणधर परम प्रधान । लख दो मुनि विंशति सहस । इकल  
खश्रमणीजाण ॥ ३ ॥ दोयलह आवक कहा । अरु गुणतीसहजार । एक  
त्तर चौलख सहस । आवकणी सुविचार ॥ ४ ॥ सुरीसुतारा सुरअजित ।  
श्रीसंव मानिधकार । सहससाधु परिवारसुं । आए सिखर सुचार ॥ ५ ॥ मामसं  
लेखण कर प्रनु । मुक्तिगए इहठोर । तीरथ महिमा महियले । प्रगटी च्यारुं  
ऊर ॥ ६ ॥ इमहीज शीतलनाथनो । हिवसुणज्यो अधिकार । नदिलपुर दृढ  
स्थ पिता । मातनंदा सुखकार ॥ ७ ॥ लंठन सुन्न श्रीवठनो । श्रीशीतल जिन  
चंद । कंचनवरण नेऊधनुष । मानसरीर अमंद ॥ ८ ॥ एकलाख पूरव क  
ह्यो । प्रनुनो आयुप्रमाण । इक्यामी गणधर कहा । मुनि इकलाख सुजाण  
॥ ९ ॥ एकलाख चाजीससहस । श्रमणी संख्या ऊर । सहस तयासी दोय  
लख । आवक संख्या जोर ॥ १० ॥ सहस अठावन लहचौ । आवकणी सु  
विचार । देवी असोका ब्रह्मयदु । सहस संव मानिधकार ॥ ११ ॥ सिखरम  
मेत सहस्रएक । साधुने परिवार । मुक्तिगए प्रनुमासकी । संलेखन करसार  
॥ १२ ॥ ॐ ॥ ढाल ॥ धन २ संपतिसाचो राजा एहनी ॥ ॐ ॥ सिंहपुरी  
नगरी तिहाराजा । विण्णुनरेसर तातजी । कंचनवरण श्रेयांस प्रनुजी । उप-  
ज्या विण्णु सुमातजी ॥ १ ॥ नमोरे २ श्री त्रिनुवन राजा । खड्ग लंठन प्रनु  
पायजी । धनुष अमी देहमान चौरासी । लाख वरमनो आयुजी ॥ २ ॥  
न० ॥ गणधर बहुतर महसचौरासी । मुनि श्रमणी तीन लहजी ।  
तीन सहस बलि सहस गुण्यामी । आवक पुण दोय लखजी ॥ ३ ॥ नमो० ॥  
अडनाजीस सहस बलि चौलख । आविका जाणो सारजी । जहू अमर  
सुरा मानवी जाणो । श्रीसंव मानिध कारजी ॥ ४ ॥ न० ॥ सहस मुनीमरले  
परिखो । प्रनुजी सिखर ममेतजी । माम संलेखन कर प्रनुपुढना । मुक्तिम  
हित सुखहेतजी ॥ ५ ॥ न० ॥ हिव कंषितपुर नात नूपति । श्रीकृतवर्मसुमा  
तजी । स्वामादेवी अंगजल्यना । विमलनाथजगतानजी ॥ ६ ॥ न० ॥ सूकरलं  
ठन गोपनकाया । साठधनुष देहीमानजी । साठलाख वठनो आयु । शिष्य म  
तावन जानजी ॥ ७ ॥ न० ॥ साठसहस मुनि अन्नय इकलख । श्रमणी आवक

जाणजी । आठसहस दोयलह् आविका । चौलह्संख्या आणजी ॥ ८ ॥ न० ॥  
 षण्मुख सुरवर विदितादेवी । प्रभुजी शिखरसमेतजी । षट्हजार साधुपरिवारे ।  
 मुक्तिगए सुखहेतजी ॥ ९ ॥ न० ॥ नगरी नाम अजोध्या नरवर । सिंहसेन जगसार  
 जी । सुजसामात तिणें सुतजायो । प्रभुजी अनंतकुमारजी ॥ १० ॥ न० ॥ लंठन  
 श्येन सोवनसमकाया । धनुषपचास प्रमाणजी । तीसलाख वठरनोआयु । गण  
 धर पचवीस आणजी ॥ ११ ॥ न० ॥ ढासठसहसमुनीसरसोहै । वासठश्रमणीह  
 जारजी । ढहजार लाख दोय आवक । आवकणी इमधारजी ॥ १२ ॥ न० ॥  
 च्यारलाख बलि चवदहजारए । अंकुसादेवी होयजी । पातालयह् श्रीसिंधके  
 सानिध । कारी नितप्रति जोयजी ॥ १३ ॥ न० ॥ आठसैमुनिवरनें परिवारे । शि  
 खरसमेत प्रधानजी । माससंलेखन करगिरऊपर । पुहतापद निरवाणजी ॥ १४  
 ॥ न० ॥ ॐ ॥ पुहा ॥ ॐ ॥ अैसें धर्मजिणेसरू । पुहता पदनिर्वाण । शिखर  
 समेत गिरंदपर । नमो २ जगन्नांण ॥ १५ ॥ जगतगुरु त्रिशलानंदनजी एचा  
 ल ॥ ॐ ॥ रत्नपुरी नगरीधणीजी । जानुराय सुजाण । राणीसुव्रता मातनेंजी ।  
 धर्मनाथ गुणखाण ॥ १ ॥ जगतपति धर्मजिनेसरसार ॥ धनुषपेंतालीस तनुक  
 ह्योजी । वज्रलंठन सुखकार ॥ २ ॥ ज० ॥ चौतीसगणधर मुनिकह्याजी । चौ  
 सठसहस प्रमाण । श्रमणी वासठ सहस स्युंजी । आवक दोयलह्मान ॥ ३ ॥  
 ज० ॥ च्यारसहस बलि ऊपरांजी । चौलाख एक हजार । आवकणी सं  
 ख्याकहीजी । दसलह् आयुविचार ॥ ४ ॥ ज० ॥ किंनरसुर यत्तासुरीजी ।  
 एकसहस परिवार । समेत शिखर सुगतेगयाजी । बांदू वारहजार ॥ ५ ॥ ज०  
 हथणापुर विश्वसेननाजी । अचिरामान नुदार । शांतिजिनेसर जनमियाजी ।  
 त्रिभुवन जय २ कार ॥ ६ ॥ ( जगतपति शांति जिनेसरसार ) ॥ मृगलांठन  
 सोवनसमोजी । देही धनुषचालीस । आयुवरषइकलाखनोजी । षतीस गणधर  
 सीस ॥ ७ ॥ ज० ॥ वासठसहस मुनि ठसेजी । इगसठ श्रमणी हजार । दो  
 यलाख आवककह्या जी । ऊपरनेऊ हजार ॥ ८ ॥ ज० ॥ सहसत्रयाणं आ  
 विका जी । तीनलाख परिवार । गरुडयह् देवीसुरी जी । श्रीसिंध सानिधकार  
 ॥ ९ ॥ ज० ॥ नवसे मुनि परिवारस्युंजी । आया शिखर समेत । मासखमणकर  
 मुक्तिमें जी । पुहता निजपदहेत ॥ १० ॥ ज० ॥ अैसें हथिणा पुर नजोजी

राजासुर सुतान । कुंथुनाथ जिन जनमीयाजी । कंचनतनु श्रीमात ॥ ११ ॥  
 ( जगतपति कुंथुजिनेसर सार ) ॥ ऋगजंजन पेंतालीसनोजी । धनुषदेहनो  
 मान । सहस्र पंचाणवे वरपनोजी । आयु प्रनुनोजान ॥ १२ ॥ ज० ॥ पेंती  
 सगणधर दीपताजी । साठसहस्र मुनि जान । उगै साठसहस्र वजीजी । श्र  
 मणी संख्यामान ॥ १३ ॥ ज० ॥ सहस्र गुणियासी लहनीजी । आवक सं  
 ख्या होय । सहस्र इक्यासी तीन जाखनी जी । आविका संख्याजोय ॥ १४ ॥  
 ज० ॥ मातसै साधू परवरयाजी । देवीबला गंधर्व । कुंथुनाथ सुगते गयाजी ।  
 भाससंजेखणसर्व ॥ १५ ॥ ज० ॥ ॐ ॥ पुहा ॥ ॐ ॥ श्रीअरिनाथ जिनं  
 दनो । कहस्युं अत्र अधिकार । श्रोता सुणज्यो प्रेमधर । थास्यैलाजअपार  
 ॥ १ ॥ ( देसीविठियानी ) अरेजाजा श्रीजिनकुशल सूरि सरू पृ चा० ॥  
 ॥ अरेजाजा श्रीअरिनाथ जिनेसरू । जिहां नगरी अयोध्या चंदरेजाजा ।  
 तात सुदर्शन मातजी । नंदादेवी ना नंदरे जाजा ॥ २ ॥ श्री अ० ॥ जंजन  
 नंदावर्तनो । वीसधनुष देहीनो मानरे जाजा । कंचनवरण सुहामणो । आयु  
 सहस्र चोरामी प्रमाणरे जाजा ॥ ३ ॥ श्री० ॥ इकजाख आवक ऊपरे ।  
 वजी संख्या अधिकी जाणरे जाजा । सहस्रवहृत्तर तीननी । लह आविका  
 संख्या आणरे जाजा ॥ ४ ॥ श्री० ॥ देवदेवी मानिधकरे । इकमहस्र  
 मुनि परिवारे जाजा । मुक्ति गण इणगिरि प्रनु । कर माममंजेखन साररे जा  
 जा ॥ ५ ॥ श्री० ॥ मिथिलानगरी प्रजावनी । मात पिता श्री कुंज  
 सयरे जाजा । जंजनकजस्य पचीसनो । वष्टु धनुष गोवनमम कावरे जा  
 जा ॥ ६ ॥ ( श्रीमल्लिनाथ जिनेसरू ) ॥ महस्र पचावन बर्ननी । थित ग  
 णधरअठार्वामरे जाजा । अविक्कमल प्रतिबोधना । जगनायक श्रीजगदीशरे  
 जाजा ॥ ७ ॥ श्रीम० ॥ चार्जीस महस्र मुनीसरू । अमणी पचावनमहस्ररे  
 जाजा । महस्र त्रयामी लहनी । आवकनी संख्या साररे जाजा ॥ ८ ॥  
 श्रीम० ॥ आविका मिजसहस्रनी । लहनीन संख्या सुविचाररे जाजा ।  
 महस्र मुनी पांखाखुं । गण मुक्ति संजेखण धाररे जाजा ॥ श्रीम० ॥ राज  
 मदी राजा पिता । सुयोव पचावनी मातरे जाजा । श्यामवर्ण तनु शोचनी ।  
 जे कपिल जंजन विग्यातरे जाजा ॥ ९ ॥ ( श्रीमुनिभुवनेश्वरिजी ) ॥ धनुष

बीस देही तणो । आयुवद्धर तीसहजारे लाला । अष्टादश गणधर थया ।  
 तीससहस मुनीसर सारे लाला ॥ १० ॥ श्रीमु० ॥ श्रमणी सहस पचीसनी ।  
 संख्यावहुत्तर हजारे लाला । इक लहू ऊपरि श्राविका । तीन लहू प  
 चास हजारे लाला ॥ ११ ॥ श्री मुनि० ॥ वरुणयहू देवी जली । नर  
 दत्ता सानिधकारे लाला । सहस मुनि परिवारसैं । गए मुक्ति महल सुख  
 सारे लाला ॥ १२ ॥ श्री० ॥ विजयपिता विप्रामातजी । सोवन सम  
 श्रीनमिनाथ रे लाला । नीलकमल लंठन कह्यो । वपु धनुख पनर आयु  
 साथरे लाला ॥ १३ ॥ ( श्रीनमिनाथ जिनेसरू ) ॥ दसहजार वरस तणो ।  
 गणधर सित्तर परमाणे लाला । बीस इकतालीस महस किम । साधु  
 साधवी संख्या जाणरे लाला ॥ १४ ॥ श्रीनमि० ॥ इकलख सित्तर सहस  
 नी । तीनलहू सहस बलि होयरे लाला । श्रावक संख्या श्राविका । अ  
 नुक्रमकरि संख्या जोय रे लाला ॥ १५ ॥ श्री० ॥ विचरंता चूमंरुजै ।  
 आया सिखर समेत मजार रे लाला । भकुटी यहू गंधारी सुरी । इक स  
 हस मुनि परिवारे लाला ॥ १६ ॥ श्री० पुहा ॥ ॐ ॥ परमेसर श्री पास  
 नी । महिमा जगति विख्यात । सिखर सिरोमणि सहसफण । जगजी  
 वन जगतात ॥ १ ॥ ॐ ॥ ढाल ॥ आदरजीव कृमागुण आदर एहनी ॥  
 ॥ ॐ ॥ जय जय परमपुरुष पुरषोत्तम । पारस पारस नाथ जी । सांवरिया  
 साहिव जग नायक । नाम अनेक विख्यात जी ॥ २ ॥ जय २ सिखर  
 समेत सिरोमणि । श्रीसांवरिया पास जी । ध्यावै सेवै जेनरतेहनी । पूरे  
 वंजित आसजी ॥ २ ॥ जय० २ ॥ कासीदेस वणारसि नगरी । श्रीअथसेन  
 नरिंद जी । वामा माता जग विख्याता । तेहना सुत सुख कंदजी ॥  
 ॥ ३ ॥ जय० २ ॥ पन्नग लंठन नीलवरण ठवि । देही शुज नवहाथ  
 जी । आयू एक सो वरस प्रमाणे । गणधर दस प्रभु साथजी ॥ ४ ॥  
 जय० २ ॥ सोल सहस मुनिवर अरुश्रमणी । कही अमृतीस हजार जी ।  
 चूमंरुज विचरे जविजनकुं । बोधबीज दातारजी ॥ ५ ॥ ज० ॥ चोमठ स  
 हम लाख डक श्रावक । गुणचालीस हजार जी । तीन लाख श्रावकणी  
 संख्या । पार्थ यहू सुर सारजी ॥ ६ ॥ ज० ॥ बीस जिनेसर सुगते पुह

ता । महिमा थइयअपार जी । तिणए तीरथ प्रगट्यो जगमें । मुक्तितणी  
दातार जी ॥ ७ ॥ जय० २ ॥ बहरी पाले जेनर जावै । जैटे सिखर गि  
रिंद जी । ते नर मनवंजित फल पामें । ए सुरतरुनो कंदजी ॥ ८ ॥ जय० २ ॥  
बहुविध संव तणी करै भक्ति । संघपति नाम धराय जी । सफल करै  
संपद निज पामी । जेहनो मुजस सवाय जी ॥ १० ॥ जय० ॥ परप्रव  
सुरनर संपद पामें । जात्रा करै गहगाटजी । साधमी बज्ज सुनि भक्ती ।  
पूजा उठव थाट जी ॥ ११ ॥ जय० ॥ हुंक हुंक पर चरण प्रचूना ।  
पूजो भविजन जाव जी । ध्यान धरो जिनवरनो मनमें । आनंद अधि  
क उठाव जी ॥ १२ ॥ ज० ॥ रास रच्यो श्रीसिखर गिरिनो । सुणतां न  
वनिधि थाव जी । तिणए भविजन जाव धरीनैं । सुण ज्यो मनथिर जाय  
जी ॥ १३ ॥ ज० ॥ खरनर गठपति महिमा धारी । कीरति जग विख्यात  
जी । जय श्रीजिन सौभाग्य सूरिसर । अमृतवचन सुगात जी ॥ १४ ॥  
ज० ॥ तासुपमायै रासरच्यो ए । अमृत समुद्रनैं मीस जी । बाजचंद्र निज  
मति अतुमारै । सोधो विबुध जगोम जी ॥ १५ ॥ ज० ॥ संवत जगणसै मित  
कोत्तरे । सुदि वैशाख सुढाल जी । रास अजीमगंज मांदि कीनो । जण  
तां मंगल माल जी ॥ १६ ॥ ज० ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥  
इति श्री सिखरजीको रास संपूर्णम् ॥ २०१ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ गौतम रास लिख्यते ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ वीरजिणेसर चरण कमल कमलाकय वामो । पणमवि पत्रणिसु  
नायि माल गोयम गुरु रासो । मण तणु वयाणे कंत करवि निसुणहु जो  
भविष्या । जिम निवमै तुम देह गेह गुण गण गह गहिया ॥ १ ॥ जंघुदीव  
मिर भरत खित खोणी तज मंफण । मगहदेम नेणियनरेम रिउदल बज खंम  
ण । धणवर गुरुर गाय नाम जिहां गुण गण मज्जा । विण्यवमै वसु नुइ तरय  
वसु पुरयो नज्जा ॥ २ ॥ ताणपुन मिरि ईदचूय नृपजय पमिजे । चवदह  
बिज्जा विविठरुच नारी रस खुबो । विनय विवेक विचार तार गुण गणह  
मनोहर । गान हाथ सुममाण देह रुयहि रंजावर ॥ ३ ॥ नयण वयाण कर  
चरण जणवि पंखज्जपामिय । तेजहि तारा चंद सरि आकाम नमानि



य । रूवहि मयण अनंग करवि मेल्यो निरधामिय । धीरम मेरु गंजोर सिंधु  
 चंगम चय चामिय ॥ ४ ॥ पेखवि निरुवम रूव जास जणजंपै किंचिय  
 एकाकी किल जित्त इत्थ गुण मेल्या संचिय । अहवा निच्चय पुव जम्म  
 जिणवर इण अंचिय । रंजा पनुमा गवारि गंग रतिहा विधि वंचिय ॥ ५ ॥  
 नय बुध नय गुरु कविण कोय जसु आगल रहियो । पंचसयां गुण पात्र  
 ढात्र हीमंपर वरियो । करय निरंतर यज्ञ करम मिथ्या मति मोहिय । अण  
 चल होस्ये चरमनाण दंसणह विसोहिय ॥ ६ ॥ ( वस्तु ) ॥ ❀ ॥ जंबूदी  
 व जंबूदीव जरह वासंमि । खोणीतल मंरुण । मगह देस सेणिय नरेसर ।  
 वरगुवर गाम तिहां । विप्प वसै वसजूइ । सुंदर तसु पुहवि ज्ञा । स  
 यल गुण गण रूव निहांण । ताणपुत्त विज्ञानिलो । गौयम अतिहि सुजाण  
 ॥ ७ ॥ ( ज्ञास ) ॥ चरम जिणेसर केवलनांणी । चोविहसंव पइछा जाणी ।  
 पावापुर सामी संपत्तो । चउविह देव निकायहिं जुत्तो ॥ ८ ॥ देवहि समवस  
 रण तिहांकीजै । जिणदीठे मिथ्या मत बीजै । त्रिनुवन गुरु सिंहासन बैठा ।  
 ततखिण मोह दिगंतपइछा ॥ ९ ॥ क्रोध मान माया मदपूरा । जाये नाठा  
 जिम दिन चोरा । देवडुंडुजी आगासे वाजी । धरमनरेसर आव्यो गाजी  
 ॥ १० ॥ कुसम वृष्टि विरचै तिहां देवा । चउसठ इंद्रज मांगेसेवा । चामरउ  
 त्र सिरोवरि सोहै । रूवहि जिणवर जगसहु मोहै ॥ ११ ॥ उपसम रसजर  
 वर वर संता । जोजनवाणि वखाण करंता । जांणवि वर्धमान जिण पाया ।  
 सुर नर किन्नर आवइराया ॥ १२ ॥ कंत समोहिय जलहल कंता । गयण  
 विमाणहि रण रण कंता । पेखवि डंद चूइ मनचिंते । सुरआवे अम जइ  
 हुवंते ॥ १३ ॥ तीर तरंडक जिमते वहिता । समवसरण पुहता गह  
 गहिता । तो अजिमानें गोयमजंपै । इण अवसर कोपै तणुकेपै ॥ १४ ॥  
 मूढा जोक अजाण्युं बोलै । सुर जाणंता इम कांड मोलै । मो आगल  
 कोइ जाण जणीजै । मेरु अवर किम ओपम दीजै ॥ १५ ॥ ( वस्तु )  
 वीर जिणवर वीरजिणवर नांण संपन्न पावापुर सुरमहिय । पत्तनाह संसारता  
 रण । तिहिं देवड निम्माहिय । समवसरण बहु सुख कारण । जिणवर  
 जग उज्जोयकरे । तेजहिकर दिनकार । सिंहामण सामी ठव्यो । हुन तो

जय जय कार ॥ १६ ॥ ( ज्ञास ) तोचढियो वणमाण गजे । इंद नृइ नृय  
 देवतो ॥ हुंकारो कर्मचारिय । कवणसु जिणवर देवतो ॥ जोजन नृमि समो  
 सरण । पेखवि प्रथमारंजतो ॥ दहदिस देखे विबुध वधू । आवंती सुरं  
 जतो ॥ १७ ॥ मणिमय तोरण दंरु ध्वज । कोसीसै नवघाटतो ॥ वय  
 रविवर्जित जंतुगण । प्राती हारिज आठतो ॥ सुर नर किन्नर असुर वर ।  
 इंद्र इंद्राणी रायतो ॥ चित्त चमकिय चितवण् । सेवतां प्रनुपायतो ॥ १८ ॥  
 सहस्र किरण मांसी वीरजिण । पेखवि रूप विस्माजतो ॥ गृहअचंजव संजव  
 ए । साचो ए इन्द्रजाल तो ॥ तो बोलावइ त्रिजग गुरु । इंद्रनृइ नामेण  
 तो ॥ श्रीमुख मंसा मामि सवे । फेरै वेदपण तो ॥ १९ ॥ मान मेल  
 मदठेल करे । जगतहिं नाम्यो सीसतो ॥ पंचमयांसुं व्रत जियो ए । गो  
 यम पहिलो सीसतो ॥ बंधव संजम सुणवि करे । अगननृइ आवेयतो ॥  
 नाम लेई आनाम करे । ते पिण प्रतिबोधेय तो ॥ २० ॥ इण अनुक्रम  
 गणहर खण । थाप्पा वीर इग्यारतो ॥ तो उपदेशे नुवन गुरु । संयम  
 सुं व्रतवार तो ॥ विहुं उपवासै पारणो ए । आपणपे विहरंत तो ॥ गो  
 यम मंयम जगसयल । जय जय कार करंत तो ॥ २१ ॥ ( वस्तु )  
 ॥ ॐ ॥ इंद्र नृइ २ चढियो बहुमान । हुंकारो करि कंप तो । मम  
 वसरण पटुतो तुरंततो ॥ जेहसंसा मामिसवे । चरमनाह फेरै फुरंततो ॥  
 बोधबीजमंजाय मने । गोयम जवहि विरत ॥ दिक्कल्लेई सिख्यामही ।  
 गणहरपयनंपत्त ॥ २२ ॥ ( ज्ञास ) ॥ ॐ ॥ आज हृओ सुविद्याण ।  
 आज पंचेलम पुण्यनरो । दीठा गोयमनामि । जो निय नयणे अभियज्जते ॥  
 ममवसरण मज्जार । जे जे मंसा उपजै ए । ते ते फ नपगार । काण्ण पृष्ठे  
 मुनिपवरो ॥ २३ ॥ जीहां दीजै दीव । तीहां केवल उपजै ए । आपकनें  
 अणहुंत । गोयम दीजै दान इम । गुरु उपर गुरु प्रणि । सार्मा गोयम नप  
 त्रिय । अणवल केवल नाण । रागज राखे रंगरं ॥ २४ ॥ जो अष्टापद  
 मेल । वंदै चह चत्तरीन जिण । आनम जयधि वनेण । चरम मर्मा मो  
 जनुनि । इय देगणा निरुणें ॥ गोयम गणहर मंचारिय । तापम पत्तरसाण  
 ॥ जो मुनि दीठो आवतोण ॥ २५ ॥ तप मोमिय निय अंग । अग्रां म

गतिन ऊपजैए । किमचढस्यै दृढकाय । गज जिम दीसै गाजतोए । गिरु  
 ओ ए अजिमान । तापस जो मन चितवै ए । तो मुनि चढियो वेग ।  
 आलंबवि दिनकर किरण ॥ २६ ॥ कंचण मणि निष्पन्न । दंरु कलस  
 ध्वज बरु सहिय । पेषवि परमाणंद । जिणहर ज़रतेसर महिय । निय २  
 काय प्रमाण । चिहुं दिसि संठिय जिणह विंव । पण मवि मन उवांस ।  
 गोयम गणहर तिहां वसिय ॥ २७ ॥ वयर सामिनो जीव । तिर्यक जृंजक  
 देवतिहां । प्रतिबोध्या पुंरुरीक । कंडरीक अध्ययनजणी । बलता गोयमसाम  
 सवि तापस प्रतिबोध करे । लेई आपण साथ । चाले जिम जूथाधिपति  
 ॥ २८ ॥ खीरखारु घृत आण । अमिय बूठ अंगूठ ठवे । गोयम एकण  
 पात्र । करावै पारणो सवे । पंचसयां सुजजाव । उज्जल जरियो खीर मिसे  
 साचा गुरु संयोग । कवलत केवल रूप हुय ॥ २९ ॥ पंचमयां जिणनाह ।  
 समवसरण प्राकारत्रय । पेषवि केवल नाण । उप्पन्नो उज्जोयकरे । जाणें जण  
 विपीयूष । गाजंती घनमेघजिम । जिणवांणी निसुणेवि । नाणीहुआ पंचस  
 यां ॥ ३० ॥ ( वस्तु ) इण अनुक्रम २ नाणसंपन्न । पनरैसै परिवारिय । हरिय  
 डुरिय जिणनाह वंदइ । जाणेवि जगगुरु वयण । तिहिंनाण अप्पाण निंदइ ।  
 चरमजिनेसर इमजणे । गोयम मकरिस खेव । ढेहजाय आपणसही । हो  
 स्यां तुल्लावेव ॥ ३१ ॥ ( ज्ञास ) ॥ ❀ ॥ सामियो ए वीरजिणंद । पूनमचंद  
 जिम उल्लासिय । विहरियो ए ज़रह वासंमि । वरसवहुत्तर संवसिय । ठवतो  
 ए कणय पत्तमेण । पायकमल संघै सहिय । आवियो ए नयणा णंद । नयर  
 पावापुर मुरमहिय ॥ ३२ ॥ पेपियोए गोयम सामि । देवसमा प्रतिबोधकरे  
 आपणोए त्रिसलादेवि । नंदन पुहतो परमपए । बलतोए देव आकास ।  
 पेषवि जाण्यो जिणसमेंए । तो मुनिए मनविषवाद । नादजेद जिमऊपनो  
 ए ॥ ३३ ॥ इणसमें ए सामियदेख । आपकनारुं टालियो ए । जाणतोए  
 तिहुअणनाह । लोक विवहारन पालियो ए । अतिजलोए कीवलो सामि ।  
 जाण्यो केवल मांगस्येए । चितव्योए बालक जेम । अहवा केने लाग  
 स्येए ॥ ३४ ॥ हूं किमए वीरजिणंद । जगतहिं ज़ोलै ज़ोलव्योए । आ  
 पणोए उंचलो नेह । नाह नसंपे साचव्योए । साचोए एवातराग । नेह

न हेजे वालियो ए । तिणममं गोयमचित्त । राग वैरागे वालियोए ॥ ३५ ॥  
 आवतो ए जो उल्लट । रहितो रागो साहियो ए । केवलण नाण उपन्न ।  
 गोयम सहिज उमाहियो ए । तिहुअणए जय जय कार । केवल महिमा  
 सुर करे ए । गण धत्ता करय बखाण । जविआ जवजिम निस्तरै ए ॥ ३६ ॥  
 ( वस्तु ) ॥ पढम गणहर २ वरपपञ्चाम । गिहवासं संवसिय । तीमवरस संजम  
 विवृसिय । सिरिकेवल नाणपुण । वारवरस तिहुअण नमंसिय । राजग्रही नयरी  
 ठव्यो । वाणवड वरसान । सामी गोयम गुण निजो । होस्ये भिवपुर ठाठ ॥ ३७ ॥  
 ( ज्ञास ) ॥ ॥ ॥ जिमसहकारे कोयजटहुके । जिम कुममावन परमान महके ।  
 जिमचंदन मोगंधनिधि । जिम गंगाजल लहिरियां लहके । जिमकणया  
 चज तेजे जजके । तिम गोयम सोजाग निधि ॥ ३८ ॥ जिम मानसरोवर  
 निवसे हंसा । जिम सुरतस्वर कणय वनंसा । जिम मह्यररा जीव  
 वने ॥ जिम स्यणावर स्यणे विलसे । जिम अंवर नारा गण विकसे । तिम  
 गोयम गुरु केलवने ॥ ३९ ॥ पुनम निमि जिम समियर मोहै । सुरतर  
 महिमा जिम जगमोहै । पूरव दिसि जिम सहस करो । पंचानन जिम  
 गिरवर राजे । नखइ वर जिम मंगलगाजे ॥ तिम जिन मानन सुनि  
 पवरो ॥ ४० ॥ जिम गुरु नस्वर मोहै माखा । जिम उत्तम मुख मधुरी  
 प्रापा । जिम वन केतकि मह मोहै ए । जिम नृमीपति नृवजल चमके ।  
 जिम जिनमंदिर घंटाणके । गोयम लवधे गहगहोण ॥ ४१ ॥ चिंताम  
 णि करचढीयो आज । सुत्तरु मारे वंजिय काज । कामकुंज सह वसिष्ठ  
 आए । कामगवी पूरे मनकामी । अष्ट महामिधि आवे धामी । सामी गो  
 यम अणुसरोए ॥ ४२ ॥ पणवट्टर पहिलो पजणीजे । मायावीजो श्रवण  
 सुणीजे । श्रीमति सोजा संजवो ए । देवां बुर अगिहंत नमीजे । विनय  
 पट्ट उज्जायधुणीजे । इण मंत्रे गोयम नमो ए ॥ ४३ ॥ परवर वगतां  
 कांय वरीजे । देम देगानर कांय नमीजे । क्वाण काज आयाम करो ।  
 पहनतो गोयम नमरीजे । काज गमगल ननविण नीजे । नवनिधिबिलमे  
 तिहां चरे ॥ ४४ ॥ चवदय सय वारोन्नर वरमे । गोयम गणहर केवल दि  
 वरो । कांयो कवल उपगारणे । आदहि मंगल ए पजणीजे । परवमोन्नव

પહિજો દીજૈ । રિધિ ટ્ઠિ કલ્યાણ કરો ॥ ૪૫ ॥ ધનમાતા જિણ ઝયૈ  
ધારિયો । ધન્ય પિતા જિણ કુલ અવતરિયો । ધન્ય સુગુરુ જિણ દીસિયો  
૯ । વિનયવંત વિદ્યાજંઘાર । તસુગુણ પુહવિ નલમ્મજ્ઞ પાર । વરુજિમ સા  
સ્થા વિસ્તરો ૯ । ગોયમ સ્વામિનો રાસ જાણીજૈ । ચત્તવિહસંવ રલિયાયત  
કીજૈ । રિધિ ટ્ઠિ કલ્યાણ કરો ॥ ૪૬ ॥ કુંકુમ ચંદન ઝમો દિરાવો ।  
માણક મોતિયાં ચોક પૂરાવો । સ્યણ સિંધાસણ વૈસણો ૯ । તિહાંવૈઠી ગુરુ  
દેસના દેસી । જાવિક જીવના કાજ સરેસી । નિત નિત મંગલ ઝદય કરો  
॥ ૪૭ ॥ ઇતિ ગોતમરાસ સંપૂર્ણમ્ ॥ ઇતિ પદ રાસઃ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ રાગ પ્રજાતી જેકૈ । પ્રહન્ગમતે સૂર । જૂઝા ઝોજન સંપ  
જૈ । કુરલા કરે કપૂર ॥ ૧ ॥ અંગૂઠે અમૃત વસૈ । લઘ્વિતણા જંઘાર ।  
જે ગુરુ ગોતમ સમરિયૈ । મનવંઠિત દાતાર ॥ ૨ ॥ પુંઝરીક ગોયમ મુહા ।  
ગણધર ગુણ સંપન્ન । પ્રહઝઝીને પ્રણમતાં । ચવદૈસૈ વાવન્ન ॥ ૩ ॥ સંતિ  
સ્વમં ગુણકલિયં । સુવિણિયં સવ્વલધિ સંપણં । વીરસ્સ પઢમસીસં । ગોયમસા  
મી નમંસામી ॥ ૪ ॥ સર્વારિષ્ઠ પ્રણાસાય । સર્વાઝીઠાર્થદાયને । સર્વલઘ્વિ  
નિધાનાય । ગોતમસ્વામિને નમઃ ॥ ૫ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ અથ સ્તુતિ સંગ્રહ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ પંચ વિદેહ વિષે વિહરંતા । વીસ જિનેસર જગ જયવંતા ।  
ચરણકમલ તસુ નામું સીસ । અહનિસિ સમરું તે જગદીસ ॥ ૧ ॥ પંચમે  
રૂ પાસૈ ઝઝકંતા । સોઠૈ વીસ મહા ગજદંતા । તિણ ઝપારિ ટૈ જિણવર વી  
સ । તે જિણવર પણમું નિસિ દીસ ॥ ૨ ॥ ગણહર કહિય ડુવાલસઅંગ ।  
થાનકવીસ જાણ્યા તિહાં ચંગ । તિણઝપારિ જે આણૈ રંગ । તેનર પામૈ  
સુસ્થ અંગ ॥ ૩ ॥ જિણસાસણ દેવી ચત્તવીસ । પૂરૈ મુઝમન તણીજગી  
સ । સંવત્તણા જેવિયન નિવારૈ । તિહુ અણ જન મન વંઠિત સારૈ ॥ ૪ ॥  
॥ ❀ ॥ ઇતિ વીસવિહરમાણસ્તુતિઃ ॥ ૨ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ અથ શ્રીપાર્શ્વજિન સ્તુતિ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ મમ દમોત્તમ વસ્તુ મહાપણં । સકલ કેવલ નિર્મલ સદગુણં ।  
નગર જેસલમેર વિન્દુપણં । જજતિ પાર્શ્વજિનં ગતદૂષણં ॥ ૧ ॥ સુર નરેશ્વર

नम्र पदांबुजाः । स्मर महीरूढ जंग मतंगजाः । मकल तीर्थकराः सुख  
कारका । इह जयंतु जगज्जन तारकाः ॥ २ ॥ श्रवति यः सुकृती जिन  
शासनं । विपुल मंगलकेलि विजामनं । प्रबल पुण्य स्मोदय धारिका ।  
फलति तस्य मनोरथ मालिका ॥ ३ ॥ विकट संकट कोटि विनामिनी ।  
जिनमत्ताश्रित सौख्य विकामिनी । नर नरेश्वर किण्णर सेविता । जयतु मा  
जिनशासन देवता ॥ ४ ॥ ॐ ॥ इति श्रीपार्श्वजिनस्तुतिः ॥ ३ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ श्रीआदिजिन स्तुति ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ वर मुत्तियहार सुतारगणं । परचित्त कलत्त सुपत्तधणं । पयपंकय  
ठप्पय देवगणं । श्रीअन्वुय वंदूं आदिजिणं ॥१॥ नित्यलोच नममिय पायलुआ  
। वणमोह महीरूढ मुत्तिगया । परिपालिअ निच्चल जीवदया । ममहुंतु जि  
णागम सुक्खमया ॥२॥ पणवंगि महात्तम रोरहरं । कज्जाण पयोरूढ बुद्धिकरं ।  
सुहमग्ग कुमग्ग पयामकरं । पणमामि जिणागम मन्दि करं ॥ ३ ॥ सिरिइंद  
समुज्जल गायजया । सुहज्जाण विणम्मिय पणजया । असुरिंद सुरेद सुरप्पाण  
या । ममवाणि सुहाणि कुणेनुसया ॥४॥ ॐ ॥ इति श्रीआदिजिनस्तुतिः ॥४॥

॥ ॐ ॥ अथ श्रीवीरजिन स्तुति ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ यदंजि नमना देव । देहिनः मंति सुस्थिताः । तस्मै नमोस्तु  
वीराय । सर्वविघ्नविघातिने ॥ १ ॥ सुरपति नत चरण युगान् । नानेवजि  
नादि जिनपती त्रौमि । यद्वचन पाजनपदा । ऊर्जाजलि ददतु दुःखेभ्यः  
॥ २ ॥ वदंति वृद्धारूपाणा व्रतो जिनाः । मदर्थतो यद्वचयंति सूत्रतः । गणा  
धिपा स्तार्थ समर्थन हूणे । तदंगिना मस्तु मतं नु मुत्तये ॥ ३ ॥ शक्रः  
सुरा सुरचरे लल्लदेवताभिः । नयंज शान्त सुखाय ममुद्यताभिः । श्रीवर्द्ध  
मान जिनदत्त मतप्रवृत्तान् । जय्यान् जनान्नयतु नित्य ममज्जजेभ्यः ॥ ४ ॥  
इति श्रीमहावीरस्तुतिः अणोजानं ॥ ५ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ श्रीअजितजिन स्तुति ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ विभनापक ज्ञापक जिनशत्रु विजयानंद । पदलुग नितप्रणमे  
देव जनैरेवेद । नावजहिरी नहिरी मव मनधनीये जमंद । श्रीअग्गसहिरे  
वंसे प्रजितजिणंद ॥ १ ॥ आन मानीहात्त प्रतियय वलि चोतीम ।



दिलरंजण देसन तेहना गुण पेंतीस । अगणित रिधधारी आचारीमां  
ईस । एहगुणना धारक वांछुं जिनचौवीस ॥ २ ॥ सुध अरथ अनोपम  
जिन प्राप्ति सिधांत । स्याद्वाद नयादिक हेतु युक्त नविभ्रांत । पाप कर  
दम पाणी सदगतिनी सहिनाणी । सुणियै नितप्रविका आगमकेरी वाणी  
॥ ३ ॥ सासणनी सार्चिदेवी सानिधकारी । दुख कष्ट निवारण सेवीजै  
सुखकारी । साचै मनसमरै ते सुख लाज अपारी । जिनलाज पर्यपै हो  
ज्यो जय जय करी ॥ ❀ ॥ इति अजितनाथ स्तुतिः ॥ ६ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीशीतलजिन स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुख समकित दायक कामित सुरतरु कंद । दृढरथ नृपराणी  
नंदा केरोनंद । जहलपुर सामी फेमै प्रवनाफंद । चित्तचोखै नमियै श्रीशी  
तल जिनचंद ॥ १ ॥ अतीत अनागत हुआ होस्ये अनंत । संप्रतिका  
लै जेक्षेत्रविदेह विचरंत । त्रिहुं प्रवणे ठवणा सासय असासय संत । ते  
सगला त्रिकरण प्रणमुं श्री अरिहंत ॥ २ ॥ कालिक उक्तालिक अंग अ  
नंगपविष्ठ । नय अंग निखेपा स्यादवाद मित सिद्ध । प्रविजन उपगारी  
प्रारी जिन उपदेश । श्रुत अवणे सुणतां नासै कोनिकलेस ॥ ३ ॥ ब्रह्म  
जह्नु असोका सासन सुरि सुविचार । संघ सानिधकारी निरमल समकि  
तधार । चिंता दुखचूरै पूरय मनहजगीस । ध्यान तेहनो धरीयै कहै जिनजा  
प्र सूरीस ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ इति श्रीशीतलजिनस्तुतिः ॥ ७ ॥

॥ ❀ ॥ अथ समवसरण प्रावगर्जित स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मिल चौविहसुरवर विरचे त्रिगडो सार । अढी गाऊ उंचो  
पिहृजो जोयण वार । विच कनक सिंहासन पदमासन सुखकार । श्री  
तीरथनायक वैसै चौमुखधार ॥ १ ॥ तीनठत्र शिरोवारि चामर ढाले डंद  
देव छुंछुनि वाजै प्राजै कुमतीफंद । चामरुलपूठे जलके जाण दिणंद । ति  
हुअण जन मन मोहै सयलजिणंद ॥ २ ॥ द्रव्य प्रावसु ठवणा नाम नि  
खेपाच्यार । जिण गणहर प्राप्या सूत्रसिधांत मजार । जिनवरनी पक्किमा जि  
नसारिपी सुखकार । सुप्रभावै वंदो पूजो जग जय कार ॥ ३ ॥ दुःखहर  
णी भंगलकरणी जिनवरवाणी । प्रवन्नेद कृपाणी मीठी अमिय समानी । म

नसृष्टे आणी प्रतिवृत्तो नविप्राणी । सुयदेविषमार्थे पामे जयति सुनांणी ।  
४ ॥ ॐ ॥ इति श्रीसमवसरण नावगर्जितस्तुतिः ॥ ८ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ श्रीनेमिजिन स्तुति ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ सुर अमुर बंदिय पायपंकज मयणमल्ल अहोर्जितं । वन  
सुवन स्याम सरोर सुंदर शंख खंजन सोर्जितं । सिवा देवि नंदन त्रिजग  
वंदन नविक कमल दिनेश्वरं । गिरनार गिरिवर मिश्वर वंदुं नेमिनाथ जि  
नेश्वरं ॥ १ ॥ अष्टापदे श्रीआदि जिनवर वीर जिनपादापुरे । वासुपूज्य  
चंपापुरियमोधा नेमि स्वय गिरिवरे । सम्पेत मिश्वरे वीर जिनवर सुगति  
पट्टता मुनिवरु । चतुर्वीर जिनवर तेहवंदुं सयल संघे सुखकरु ॥ २ ॥  
उग्यार अंग उपांगवारि दसपयत्रा जाणिये । उठेद ग्रंथ प्रसत्य अत्या  
च्यार मूल वखाणिये । अनुयोग प्रार उदार नंदी सूत्र जिनमत गाइये ।  
इह वृत्ति चरणि प्राप्य पेंतालीस आगम ध्याइये ॥ ३ ॥ पुहुं दिसें वा  
लक दोय जेहनें मदाजवियण सुखकरु । पुखहरे अंवा छंद सुंदर पुरिय  
दोहग अप हरु । गिरनार मंरुण नेमि जिनवर चरण पंकज सेविये ।  
श्रीसंघ सहनें मदामंगल करो अंवा देविये ॥ ४ ॥ ॥ ॐ ॥  
इति गिरनार मंरुण श्रीनेमि जिनस्तुतिः ॥ ९ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ श्रीदेवार्थे । विश्वेवर्थे । पूर्णानंदं । उत्तमावंदे ॥ १ ॥ तीर्थो  
धोशाः । श्रुतदेशाः । सर्वेज्जीष्टं । शं कुर्वे तु ॥ २ ॥ अर्हमाचो । वाचो  
सुत्तया । कृताः सद्भिः । पापं शनतु ॥ ३ ॥ शान्ता कान्ता । मित्रा देवी ।  
शान्ते दांत्ये । शश्वद्भ्याम् ॥ ४ ॥ इति श्रीर्वार प्रभु स्तुतिः ॥ १० ॥ ॥

॥ ॐ ॥ अथ श्रीशीतलजिन स्तुति ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ त्रिभुवन जन नायक दायक वंजित दान । नवि कमल वि  
कामन गायन स्वर समान । मणसुं बहुजाये नंदारणी नंद । श्रीभूत न  
हिरै शीतलनाथ जिणंद ॥ १ ॥ उज्ज्वल गुण धारी अविकारी अखंड ।  
नविजन हितकारी मोहिमावंत महंत । उपगारी अविच्छन्न जयकारी जग  
दीन । नित निरमल चित्ते वंदो जिन चौवीन ॥ २ ॥ जिहं नेगम मंगल  
आदिरत्नय सुविचार । स्यादस्ति प्रभुत्वं वज्रि समजंगि विस्तार । पेंताम

गुणैकरी सोत्रे अति सुविसाल । तेकंठे ठवियै जिनवाणी वरमाल ॥ ३ ॥  
 कमलासन सोहै नील वरण तनुकांत । निज च्यार जुजै करि राजै  
 अतिसय वंत । श्रीदेवी अशोका सोक हरण सुखकंद । इम जत्ते पञ्च  
 णै श्रीजिनलाज सूरिंद ॥ ४ ॥ ❀ ॥ इति श्रीशीतल जिनस्तुतिः ॥ ११ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीपार्श्वजिन स्तुतिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री सर्वज्ञं ज्योतीरूपं विश्वाधीसं देवेंद्रं । काम्याकारं लीलागारं  
 साध्वाचारं श्रीतारं । ज्ञानोदारं विद्यासारं कीर्त्तिस्फारं श्रीकारं । गीर्वाणै  
 र्वन्द्यं सानंदं जत्तया वन्दै श्रीपार्श्व ॥ १ ॥ जागृप्तीपे जंबूद्वीपे स्वर्णे शशेले  
 श्रीशैले । चंचच्चक्रे ज्योतिश्चक्रे तुगत्वाढ्ये वैताढ्ये । श्रेयस्कारे वहुस्कारे  
 देवावासे सोल्लासे । येवर्त्तन्ते सर्वाधीशा स्तेसौख्यं वो देयासुः ॥ २ ॥ स  
 म्यग् ज्ञानं शुद्धध्यानं श्रुत्वा ध्यानं सन्मानं । त्रैलोक्य श्रीरामारम्यं विप्रद्रम्यं  
 प्राकाम्यं । अर्हद्भक्तां जोजोद्धतं शश्वत्पूतं संगीतं । लक्ष्मीकांतं वणो  
 पेतं वंदेव्यक्तं सिद्धांतं ॥ ३ ॥ जव्यानां जत्तयानां कल्याणं कुर्वती विश्रा  
 णा । शीर्षे सौमीरं कोटीरं तारं हारं वहुोजे । विख्याता जोगेंद्रोपेता सा  
 लंकारा प्रल्हादं । यष्टंती पद्मादेवी सद्बुद्धिं वृद्धिं वैदुष्यं ॥ ४ ॥ ❀ ॥  
 इति श्री पार्श्वजिन स्तुतिः ॥ १२ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीदीपमाला स्तुतिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पापायां पुरि चारु पष्टपसा पर्यंकपर्यासनः । दमापाल प्रभु  
 हस्तपाल विपुल श्रीशुकवशालामनु । गोसे कार्तिक दर्श नागकरणे तूर्यार  
 कांते शुभे । स्वातौ यः । शिवमाप पाप रहितं संस्तौमि वीर प्रभु ॥ १ ॥ यज्ञ  
 र्जागमनोद्भव व्रतवर ज्ञानाह्वरासि कृणे । संचयाशु सुपर्व संततिरहो चक्रे  
 मह स्तव कृणात् । श्रीमन्नाजिज्जवादि वीरचरमा स्ते श्री जिनाधीश्वराः ।  
 संघाया नवचेतसे विद्धतां श्रेयांस्यनेनांसिच ॥ २ ॥ अर्थात्पूर्वमिदं जगाद  
 जिनपः श्रीवर्द्धमानाजिधः । तत्पश्चा ज्ञानायका विरचयां चक्रुस्तदां सूत्रतः ।  
 श्रीमत्तीर्थ समर्थनेक ममये सम्यग् दशां नृस्पृशां । नृयाज्ञावुक कारकं  
 भवचनं चेतश्चमत्कारियत् ॥ ३ ॥ श्रीतीर्थाधिप तीर्थ ज्ञावनपराः सिद्धायि  
 का देवता । चंचच्चक्रधरा सुरासुर नता पायादपायादसौ । अर्हन् श्रीजि

नचंद्रगी स्तुमतिनो ज्य्यात्मनः प्राणिनो । याचके वम कष्टहस्ति निवने  
मार्दलविकीर्त्तिं ॥ ४ ॥ इति दीपमालिका स्तुतिः ॥ १३ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ पुनः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ मिश्रार्थ ताता जगत विख्याता त्रिमलादेवी माय । तिहां ज  
गगुरु जनम्या मव पुखविरम्या महावीरजिनराय । प्रनुजेई दिक्षा कर हित  
शिर्या देईमंवठरीदान । बहु करमखपेवा शिवसुखलेवा कीधो तपशुज्ज्यान  
॥ १ ॥ वर केवलपामी अंतरजामी वदिकार्ता शुजदीम । अमावसुजाते  
पिगलारोते सुगतिगया जगदीम । वलि गौतम गणधर मोटासुनिवर पाम्या  
पंचमज्ञान । थयातत्वप्रकासी शीलविजासी पढुतासुगति निदान ॥ २ ॥  
सुरपति मंचरिया स्तनचयरिया रानथई तिहां कार्जी । जन दीवा कीधा कार  
जसीधा निसाथई उजबार्जी । सहलुके हरखी निजरेनिरखी परवकियो दी  
बार्जी । वलि जोजन जगते निज निज सगते जीमे सेवसुहार्जी ॥ ३ ॥  
मिश्रायिकादेवी वियनहरेवी वंछित दे निरधारि । करे मंयनेमाना जिमजग  
माना एहवी शकति अपारी । जिणगुण इमगावे शिवसुखपावे सुणग्यो  
अविजनप्राणी । जिनचंदजतीसर महासुनीमर जेपे एहवी वार्णी ॥ ४ ॥  
॥ इति श्री दीपमालिका स्तुति ॥ १४ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ मोटा ओटा स्तवन संग्रह ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ मनमोहन महाराज । नीन नुवन मिताज ॥ आते लाल ॥ नगर  
ब्रह्मन पुर रज्जीया जी ॥ १ ॥ पाम जिणंद प्रथान । निगमन सुगुण निधान ॥  
आते लाल ॥ वामा सुत वामि आर्गीया जी ॥ २ ॥ मेवक नामंजाल । कर्मय  
सर्ग नतकाल ॥ आते लाल ॥ मंकर महु प्रनु पारि हरखार्जी ॥ ३ ॥ चिन्ता  
करी चक्रचर । प्रमथ्यो आनंद पुर ॥ आते लाल ॥ वाट विगमता पिणरुजी  
जी ॥ ४ ॥ प्रनुजीने परमाद । वाना महु विलवाद ॥ आते लाल । मन वंछित  
नगर महु फल्यार्जी ॥ ५ ॥ ध्यान समाधिनी थाप । मिर्जावाडो प्रनु आप ॥  
आते लाल ॥ देव्यो दसगण वलि मदाजी ॥ ६ ॥ अमृत भर्म सुजाण । मोम  
दामा फल्यार्ण ॥ आते लाल ॥ वाचक इम वानर्जी करे जी ॥ ७ ॥ ॥ ॐ ॥  
॥ ॐ ॥ इति श्रीमन मोहन पार्यनाथ स्तवनम् ॥ ॥ ३ ॥ ॐ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ श्री पार्श्व जिनस्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जय २ श्रीजिन राज । जग जन अन्तर जामी । तारण तरण  
जिहाज । परमात्म परिणामी ॥ १ ॥ परम पुरुष परमेस । परमानन्द प्र  
धान । परम प्रकास विसेश । निरमल ज्ञान निधान ॥ २ ॥ जगपति पा  
स जिह्म । प्रभु तुल्य हो उप गारी । सुनियै सेवक जान । ऐसी अरज  
हमारी ॥ ३ ॥ मोह महामद चूलि । में बहुकाल गमायो । निजपर जा  
व विवेक । सुध सुजाव नपायो ॥ ४ ॥ निरमल चेतन जाव । कर्म कल  
कित कीनो । ताकारण गुण गोनि । पर ओगुण चित दीनो ॥ ५ ॥ निज  
अवगुण सुणिकान । दिलमें रोस जराउं । अज्ञता निज गुणगान ।  
सुनिवैकुं ऊमाहुं ॥ ६ ॥ आश्रव पांचे असुध । दिलसैं दूर नजावै । कुम  
ति कदाग्रह जोग । समता सुध न आवै ॥ ७ ॥ अब कठु पुण्य संयोग ।  
प्रभु तुल्य मुद्रा देखी । सुध अध्यात्म लीन । जाव असुध उवेखी ॥ ८ ॥  
निरखि २ प्रभुविंव । मनमें आनंदपाऊं । गाऊं तुल्यगुणग्राम । देव अवर  
नविचाहुं ॥ ९ ॥ करुणाकरि प्रभुमुझ । आत्म निरमल कीजै । सुधदसा  
प्रगटाय । मोह विकलता गीजै ॥ १० ॥ अब २ निजपद सेव । प्रभु सेवककुं  
दीजै । श्री जिन प्रक्ति पसाय । सुमति विजाश वरीजै ॥ ११ ॥ ॥ ❀ ॥  
॥ ❀ ॥ इति श्री पार्श्वजिन स्तवनं ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रविका श्रीजिनविंव छुहारो ॥ आत्म परम आधारोरे । ( प्र  
विकाश्रीजि० ) जिनप्रतिमा जिनसारपी जाणो । नकरो संकाकाई । आ  
गमवाणीने अनुसारे । राखो प्रीत सवाईरे ॥ प्र० श्री० ॥ १ ॥ जे जिनविं  
व स्वरूप न जाणें । तेकहिये किम जाणें । भूला तेह अज्ञानें जरिया । न  
ही तिहां तत्वपिठाणोरे ॥ प्र० श्री० ॥ २ ॥ अंवरु आवक श्रेणिक राजा ।  
रावण प्रमुख अनेक । विविध परे जिन जगति करंता । पाम्या धरम वि  
वेकरे ॥ प्र० श्री० ॥ ३ ॥ जिन प्रतिमा बहु जगते जोतां । होय नि  
श्चय जगार । परमारथ गुण प्रगटे पूरण । जोज्यो आद्र कुमाररे ॥ प्र०  
श्री० ॥ ४ ॥ जिनप्रतिमा आकरे जलचर । ते बहु जलधि मजार । तेदेखी

बहुला मन्त्रादिक । पाण्या विग्न प्रकारे ॥ ज० श्री० ॥ ५ ॥ पांचमा अंगे  
जिन प्रतिमानो । प्रगटपणे अधिकार । सुगोयाजसुर जिनवर पूज्या । राय  
पमेणी मज्जारे ॥ ज० श्री० ॥ ६ ॥ दशमं अंगे अहिंसादाखी । जिनपूज्या  
जिनराज । एहवा आगम अरथमरोनी । करिये केम अकाजरे ॥ ज० श्री  
॥ ७ ॥ समकित्त धारी सतीय द्रुपदी । जिनपूज्या मनरंगी । जोज्यो एहनो  
अरथ विचारी । ठठे ग्याता अंगेरे ॥ ज० श्री० ॥ ८ ॥ विजय सुरे जिम  
जिनवर पूजा । कीधी चित्राथिर राखी । द्रव्य जाव विहुं जेदे कीनी । जीवा  
जिगम ते माखीरे ॥ ज० श्री० ॥ ९ ॥ इत्यादिक बहु आगम साखे । कोइ  
संका मति कर ज्यो । जिनप्रतिमा देखी नित नवजो । प्रेम धणो चित्त धर  
ज्योरे ॥ ज० श्री० ॥ १० ॥ चिंतामणि प्रनुपासपमायै । सरधा हो  
ज्यो सवाई । श्रीजिनजाज सुगुरु उपदेसै । श्रीजिन चंद्र सवाईरे ॥ ११ ॥  
ज० श्री० ॥ इति श्रीचिन्तामणि पार्श्वजिनस्तवनं ॥ ६ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ पुनः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अंतरजामी सुण अजवेसर । महिमा विजग तुमारी । सांजल  
नें आयो तुमतीरे । जन्ममरण दुखवारो ॥ १ ॥ ( सेवक अरज करेनेहो  
राज । अम्हनें शिवसुख आलो ) ॥ ( आंकणी ) महुकोनां मनवंजित  
पुरो । चिंता सहुनी चुरो । एह विरुद्धे राज तुझारो । किम राखो ओ दुरो  
सेव० ॥ २ ॥ सेवकनें विज विजतो देखी । मनमें महिरन धरसो । कष्टणामा  
गर किम कहवामो । ज्यो उपगार नकरसो ॥ सेव० ॥ ३ ॥ लटपटनी हिव  
कामनही ते । परतिन दग्गण दीजे । धुंवारो धीळं नहीमाहिव । पेट पड्या  
पतीजे ॥ ४ ॥ श्री संलेसर मंरुण साहिव । वीनतनी अवधारो । क  
हे जिनहो मयाकर मृजपर । जवगावरयी नारो ॥ सेवक० ॥ ५ ॥ ॥ ॐ ॥  
इति श्री पार्श्वजिनस्तवनं ॥ ॐ ॥ ६ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ पुनः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ जयकारी जिनराज । पुरमादाणीरे । बाभासुत वरदाय । निगम  
लनाणीरे ॥ १ ॥ पांचकमज प्रनुर्गंग । निरगम निरग्योरे । वीनकमज मृज  
मंग । ध्यानमहरस्यारे ॥ २ ॥ बदन महोदय देख । चंद्र लजाणीरे । गगन



भ्रमें निसदीस । इम मन आणुरे ॥ ३ ॥ सुरमणि ज्युं सुखकार । नयण वि  
 राजे रे । हृदय कमल सुविलास । थाल ज्युं ठाजे रे ॥ ४ ॥ प्रनु कर चर  
 ण विलोक । पंकज हारयो रे । ततखिण निज संवास । जलमें धारयो रे  
 ॥ ५ ॥ इम सरवंग उदार । श्रीजिन राया रे । साचै पुण्य संयोग । सा  
 हिव पायारे ॥ ६ ॥ प्रनु गुण अनुभव नीर । सांग सुरंगै रे । टाल्यो पा  
 तिक पंक । आतम संगै रे ॥ ७ ॥ वरस अढार चौतीस । वदि वैशाखे रे ।  
 मनु हर पांचम दीस । सहु संघ साखे रे ॥ ८ ॥ नगर महेवा मांहि ।  
 पास जुहारया रे । श्रीजिन चंद सुणिंद । वंढित सारया रे ॥ ९ ॥ ❀ ॥  
 इति पार्थ्व जिन स्तवनं ॥ ❀ ॥ ७ ॥      ॥ ❀ ॥      ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ श्रीरूपनजिन स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( ढाल ) पाटो धरजी पाटीयै पधारो ए० ॥ सुणि २ सेवुंज गि  
 रस्वामी । जगजीवन अंतरजामी । हुंतो अरजकरं सिरनामी । कृपानिध  
 वीनती अवधारो ॥ १ ॥ प्रवसायर पार उत्तारो । निज सेवक वानवधारो ॥  
 कृ० ॥ प्रनु मूरति मोहन गारी । निरख्यां हरखे नरनारी । जानुं वारी हुं वार  
 हजारो ॥ कृ० ॥ २ ॥ हिव किसिय विमासण कीजे । मुज ऊपर महिर  
 धरीजे । दिलरंजन दरसन दीजे ॥ कृ० ॥ ३ ॥ आज सयल मनोरथ फ  
 लिया । प्रव प्रवना पातिक टलिया । प्रनु जो मुज सैमुख मिलिया ॥ कृ० ॥  
 ॥ ४ ॥ समरयां संकट टलि जायै । नव नव नित मंगल थायै । मुज आ  
 तम पुण्य प्ररायै । कृ० ॥ ५ ॥ कर जोनी वीनति कीजे । केसर चंदन च  
 रचीजे । दिन धन धन तेह गिणी जे ॥ कृ० ॥ ६ ॥ प्रनु दरस सरस  
 लहितोरो । अति हरखित हुवो चित्त मोरो । जिम दीठां चंद चकोरो  
 ॥ कृ० ॥ ७ ॥ परतिख प्रनु पंचमे आरे । विममा नय संकट वारे । सहु  
 सेवक काज सुधारै ॥ कृ० ॥ ८ ॥ सेवो स्वामि सदा सुखदाई । कमाण न रहै  
 वर काई । वाधे संपति सोन सवाई ॥ कृ० ॥ ९ ॥ नागिराय कुजवर चंदा ।  
 प्रव जन मन नयण आणंदा । ओलगे सुर असुर सुरिंदा ॥ कृ० ॥ १० ॥  
 जयकारी रिपन जिणंदा । प्रहसम धर परम आणंदा । वंदे श्रीजिन नक्ति  
 सुरिंदा ॥ कृ० ॥ ११ ॥ इति श्री रूपन देवजी स्तवन संपूर्णम् ॥      ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ श्रीविमलजिन स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ घर अंगण सुरतर फल्योजी । कवण कनक फल खाय ।  
 गयवर वांध्यो वारणेंजी । खर किम आवैदाय ॥ १ ॥ विमल जिन माहरे  
 तुझसुं प्रीति । सुर सकलकित सुं मिल्यां जी । हीयडो हीमे केम ॥ वि० २ ॥  
 ॥ २ ॥ मन गमता मेवा लहीजी । कुणखल खावा जाय । आदर साहिव  
 नो लहीजी । कुणल्ये रांक मनाय ॥ वि० ॥ ३ ॥ पाच उते कुण काचने  
 जी । अजव पसारै हाथ । कुण सुरतर थी ऊठिनें जी । वांवल धाले वा  
 य ॥ वि० ॥ ४ ॥ देव अवर जो हुं करूं जी । तो प्रनु तुमची आण ।  
 श्री जिनराज प्रबो प्रबेजी । तुंहीज देव प्रमाण ॥ वि० ॥ ५ ॥ ॥ ❀ ॥  
 इति श्री विमल जिन स्तवनं ॥ ९ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ श्रीशीतल जिन स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मोरा साहिव हो श्री सीतलनाथकि । वीनती सुणो इकमोरमी ।  
 डुख नांजे हो जग दीन दयाल कि । बात सुणामें तोरमी ॥ १ ॥ ( मो० )  
 निण तोरैहो हुं आयो पायकि । सुऊ मन आत्या ठे वणी । कर जोडी  
 हो कहूं मननी बातकि । तुं सुणि जे त्रिनुवन धणी ॥ २ ॥ ( मो० ) हुं  
 प्रमियोहो प्रब समुद्र मजार कि । डुख अनंता में सदा । ते जाणें हो  
 तुं हाज जिन राज कि । में किमजावें ते कदा ॥ ३ ॥ ( मो० ) प्राग जो  
 गे हो तोरो श्री जगवंत कि । दसण नयणें निरखियो । मन मान्यो हो  
 मोरै तुं प्रखिन कि । हियमो हेजे हरखियो ॥ ४ ॥ ( मो० ) एक निश्चै  
 हो में कीयो आज कि । तुऊ विण देव बीजो नही । विनामणि हो जो  
 पायो मज्ज कि । काच झटै कहो कुण मही ॥ ५ ॥ ( मो० ) पंचानृ  
 नरो जिण प्रोजन कीव कि । खल खाववा मनकिम धावै । कंठ तांडहो  
 जो असु पीवनो । खाये जल कहो कुण पीवै ॥ ६ ॥ ( मो० ) मोनी  
 कोहो जो परमो हारकि । चिग्मटि कुण पट्टिरे हावै । जसु गांठ हो  
 जान कोनि गल्य कि । व्याज कही दाम कुण नावै ॥ ७ ॥ ( मो० )  
 पर गांठ हो जो प्रगट्यो नियानो । देन देनांतर कुण प्रेम । मोना  
 नोहो जो पाल्यो सीवनो । पातुगार्द कुण धर्म ॥ ८ ॥ ( मो० ) जिण

कीयो हो जवहर व्यापार कि । मणि हारी मन किम गमें । जिण कीयो  
 हो सदा हाल हुकम्म कि । ते तूं कारो किम खमें ॥ ९ ॥ ( मो० ) तूं  
 साहिव हो मोरो जीवन प्राण कि । हुं सेवक प्रभु ताहरो । सुज जीवत  
 हो आज जनम प्रमाण कि । जव दुख जागो माहरो ॥ १० ॥ ( मो० ॥  
 तुज मूरति हो देखंता प्राय कि । समवसरण सुज संजरे । जिन प्रतिमा  
 हो जिन सरिषी जाण कि । मूरख जे सांसो करै ॥ ११ ॥ ( मो० ) तुह  
 दरसण हो सुज आणंद पूर कि । जिम जग चंद चकोरमा । तुह नामें  
 हो मोरा पाप पुजाय कि । जिम दिन भुगै चोरमा ॥ २ ॥ ( मो० ) तुह  
 दरसण हो सुज मन उठरंग कि । मेह आगम जिम मोरमा । तुह नामें  
 हो सुख संपत्ति थाय कि । मन वंछित फल मोरडा ॥ १३ ॥ ( मो० )  
 हुं मांगुं हो हिव अविहम प्रेम कि । नित नित करुं निहोरमा । सुज दे  
 ज्यो हो स्वामी जव जव सेव कि । चरण न ठोरुं तोरमा ॥ १४ ॥ ( मो० )  
 कलश ॥ इम अमर सर पुर संव सुख कर मात नंदा नन्दनो । सकलाप शी  
 तल नाथ स्वामी सकल जन आनंदनो । श्रीवठ लंढन वरण कंचन रूप  
 सुंदर सोह ए । एतवन कीयो सगय सुंदर सुणित जनमन मोहए ॥ १५ ॥  
 इति श्री शीतल नाथ जिन स्तवनम् ॥ १२ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ८४ आसातना स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( ढाल ) विलसै रुक्मिणी ॥ जय २ जिण पास जगत्र धणी ।  
 सोजा ताहरी संसार सुणी । आयो हुं पिण धर आस घणी । करिवा  
 सेवा तुम चरण तणी ॥ १ ॥ धन २ जे न पडै जंजाले । उपयोग सुं वेसे  
 जिन आले । आसातना चञ्जारी टाले । सास्वता सुख ते हीज संजाले  
 ॥ २ ॥ जे नाखे श्लेखम जिन हरमें । कलह करै गाली जूयरमें । धनुषादि  
 कला सीखण हूके । कुरखो तंजोल जखें थूके ॥ ३ ॥ सुरै वायवडी जडु  
 नीत तणी । संझा कुंगुलिया दोष सुणी । नख केस समारण रुधिर क्रिया ।  
 चांदीनी नाखे चांचडिया ॥ ४ ॥ दांतणनें वमन पीये कावो । खावे धांणी  
 फुर्ला खावो । सूत्रे वेसामण विमरावे । अज गज पसुनें दामण दावे ॥ ५ ॥  
 गिर नासा कान दसन आवे । नख गाज वणुपना मल नाखे । मिजणो

લેણી કરે મંત્રણી । વિદ્યુત્ત અપણી કરે ધન ધરણી ॥ ૬ ॥ વેસે પગ  
 જપારે પગ ચઢિયાં । થાપે ઢાંણા ઝમે દેહણીયાં । સૂકવે કપ્પરુ પપ્પરુ વ  
 નિયાં । નાર્ગાય ઝિપે નૃપભય પમિયાં ॥ ૭ ॥ શોકે રોવે વિકથાજ કહે ।  
 ઇહાં સંસ્થ્યા વેનાર્જાસ જોહે । હથિયાર વઢેને પશુ વાંધે । તાપે નાંણો પ  
 રસ્થેરાંધે ॥ ૮ ॥ જાંજી નિમહી જિન રૂદ પેમે । ધરે ઝવને મંત્રપમે વેસે ।  
 પહિરે વસ્ત્ર ઝને પનહી । ચામર વીજે મનઠામ નહી ॥ ૯ ॥ તનુ તેજ સચિત્ત  
 પત્ત પૂજ લીવે । નૃપણ તજિ આપ કુરૂપ થીવે । દરમણી સિર ઝંજલિ  
 નયેરે । ઇમ મામે ઉત્તરા સંગ ન કરે ॥ ૧૦ ॥ ઝોગો સિર પેચ મોરુ જો  
 મે । દાઢિયે રમને વેમે હોમે । સયણાંસું હુદાર કરે સુજરો । કરે ઝંરુ વેષ્ટા  
 કહે વચન સુરો ॥ ૧૧ ॥ ધરે ધરણી જગમે ઝવંઠી । સિર ઝુંથે વાંધે પાલં  
 ઠી । પસારે પગ પહરે ચાલનીયાં । પગ ઝટક દિરાવે હુર વમીયાં ॥ ૧૨ ॥  
 કર દમ જૂઠે મેથુન મંમે । જૂથા વલિ ઝાંઠ તિહાં ઝમે । ઝવાઢે ઝુજ કરે ।  
 વયદાં । કાઢે વ્યાપાર તણી કયદાં ॥ ૧૩ ॥ જિનહર પરનાલનો નીરયેરે ।  
 ઝંધોલે પીવાઠામ ઝરે । દૂષણ જિન ઝવનમે પદાસ્થ્યા । દેવ વંદન જાપ્યમે  
 જે જાપ્યા ॥ ૧૪ ॥ સુહાની શ્રાવક મગતિઝતાં । આમાતન ટાલે વાર  
 સતાં । પરમાદ વસે કોઈ થાવે । આલોયાં પાપ સહજાયે ॥ ૧૫ ॥ તેંધોજ  
 નેં જોજન પાન બૂઝા । મજ મૂઝ મયન સ્ત્રી જોગ દૂઝા । નૃપણ પનહી  
 ઇ જવન્ય દમે । વરજ્યા જિન મંદિર માંહિવમે ॥ ૧૬ ॥ દ્રવ્યતનેં જાવત  
 દોય પૂજા । પહનાહીજ ખેદકથા દૂજા । સેવા પ્રનુની મન સુદ કરે । વંઝિ  
 ત સુલ લીજા તેહ વરે ॥ ૧૭ ॥ ( કજશ ) ॥ ૧૮ ॥ ઇમ જવ્યપ્રાણી જાવ  
 પ્રાણી વિવેકી શુજ વાતના । જિન ત્રિવ અરચે પરી વરજે ઝોગમી આમાતના ।  
 તે મોત્ર મોર્થે કલ ઝપાર્જે નમે જેહને વેવર્જી । ઝવ જ્ઞાય શ્રી દ્રમમોહ વંદે જૈન  
 સામન ને મલી ॥ ૧૯ ॥ ઇતિ શ્રીચોરામી આમાતના સ્તવન ॥ ૨૦ ॥ ॐ ॥

॥ ૨૧ ॥ અથ ૨૪ જિનદેહમાન સ્તવન ઝિરુચતે ॥ ૨૨ ॥

॥ ૨૩ ॥ પ્રાણમું શ્વર જિનેતર પાવ । ધનુષ પાંચમે ઝંચીકાવ । ઝાંજો  
 ઝવિત જિન નૃમ મન વસે । ગાન ધનુષ માદાન્યાલે ॥ ૧ ॥ તોજો મું  
 નપ સુલ દાતાર । ઝંચો કાવ ધનુષ મોચ્યાર । ઝવિતેંદન જિનમું મનજી

न । देह धनुषसो साढा तीन ॥ २ ॥ पंचम सुमति नाथ जगवान । धनुष  
 तीनसो देहीमान । पदम प्रभु पूरे मन आस । देह धनुष दोयसे पंचास  
 ॥ ३ ॥ सामि सुपारस सत्तम होय । देह प्रमाण धनुषसो दोय । चंद्रा प्र  
 नु जिन सुज मन वसै । देह प्रमाण धनुष दोढसै ॥ ४ ॥ सुविध नाथ न  
 मियै सुविवेक । ऊंच प्रमाण धनुषसो एक । सीतल नाथ नमें जगसवे ।  
 देह प्रमाण धनुष जसुनिवे ॥ ५ ॥ श्रीश्रेयांस नसुं ऊजसी । ऊंच प्रमाण  
 धनुष तनु असी । वासपूज्य वारम जिन चंद । मान धनुष सित्तर सुख  
 कंद ॥ ६ ॥ विमल विमल गुणकरि गंजीर । साठि धनुष जसुमान सरीर ।  
 अनन्त ज्ञान अनन्त प्रकास । देह प्रमाण धनुष पंचास ॥ ७ ॥ पनरम ध  
 रमनाथ जगदीस । मान धनुष जसु पेंतालीस । शांति करण सोलम जिन  
 शांति । देह धनुष चालीस सोजंति ॥ ८ ॥ सतरम कुंथु जिन जगदाधार ।  
 मान धनुष पेंतीस उदार । अर अठारम दीन दयाल । तीस धनुष तनु अति  
 सुविशाल ॥ ९ ॥ मल्लि नाथ जिन उगुणीसमो । मान पचीस धनुष पय  
 नमो । बीसम मुनिसुब्रत अरिहंत । बीस धनुष तनु मान कहंत ॥ १० ॥  
 इक्कीसम नमि जिन राजान । पनरै धनुष तनु रूप निधान । बावीसम श्रीने  
 मि जिणंद । दस धनु दीपे जाण दिणंद ॥ ११ ॥ तेवीसम श्रीपारस नाथ ।  
 नील वरण सोहै नव हाथ । चौवीसमा जिनवर श्रीवीर । सात हाथ जगना  
 थ सरीर ॥ १२ ॥ इण परि ए जिणवर चौवीस । प्रणमें प्रहसम धरीय जगी  
 स । तांघर रिद्धि सिद्धि उठंग । रंगविनें प्रणमें मुनि रंग ॥ १३ ॥ ॥ ❀ ॥  
 इति श्रीचौवीस जिन देह मान स्तवनं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ २४ जिन आयुप्रमाण स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रूपन देव प्रणसुं जिनराय । लाख चोराशी पूरव आय । बीजो  
 अजित जसु सूत्रै साख । आठ बहुत्तर पूरवलाख ॥ १ ॥ तीर्थकर संजव  
 तीसरो । आठलाख पूरव साठिरो । अजिनंदन पूरे मन आस । आठला  
 ख पूरव पंचास ॥ २ ॥ सुमतिनाथ पंचम जगदीस । आठ लाख पूरव  
 चालीस । श्रीपदम प्रभुनी ए थितिजाण । लाख तीस पूरव परि  
 माण ॥ ३ ॥ श्रीसुपार्थ लाख पूरव बीस । दस लाख पूरव चंद प्रभु ईस ।

सुविध नाथ जख पूख दोष । इक जख पूख शीतल यिति होष ॥ ४ ॥  
 आठ वरस चोरासी लाख । श्रीश्रेयांस तणो श्रुत साख । लाख बहुत्तर व  
 रसां तणो । वासु पुज्य परमाद्युष गिणो ॥ ५ ॥ विमल आठ जख साठि  
 वरीस । वरस अनंत तणो जख तीस । लाखवरस दस धरम दिणंद । ला  
 ख वरस श्रीशान्ति जिणंद ॥ ६ ॥ वरस सहस्र यिति पंचाणवे । श्रीकुंथु ना  
 थ तणोमंजवे । सहस्र चोरासी अर जिनतणी । मात्रि सहस्र पंचावन  
 तणी ॥ ७ ॥ वरस संपूरण त्रीस हजार । सुनि सुवत परमान उदार । वी  
 स सहस्र नमिजिन यिति तणी । वरस महस्र नेमीमर तणी ॥ ८ ॥ पास  
 वरस एकसो सुख कंद । वरस बहुत्तर वीर जिनंद । शयन तणा तेरे  
 अवतार । सात चंद्र मंतीमर वार ॥ ९ ॥ सुवत जव नव नव नेमीम ।  
 पार्थ वीर दश सत्तावीस । त्रिहुं त्रिहुं जव सतरे जगदीस । सगला जव  
 एकसो अमतीस ॥ १० ॥ सिद्धि लही महनें धन धन । गणधर चवदे  
 से वावन्न । महनें सुनि जख अठावीस । महस्र ऊपर अमतालीस ॥ ११ ॥  
 लाख चमाज उयांज हजार । पडधिक बहु माथवी सोच्यार । आवक ला  
 ख पचावन घुरे । अमतालीस महस्र ऊपर ॥ १२ ॥ एक कोमि आविका  
 सुजगीस । लाख पांच महस्र अमतीस । ए मंव चतुर्विध सह जिन त  
 णे । रंगाविनें प्राणो हिन घणें ॥ १३ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥  
 इति श्रीचोवीस जिन आद्यु प्रमाण स्तवनं ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ ६३ शिलाका पुरुष स्तवन लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ( बाज १ ) धरम महाख्य साराथि सारं । एवाज ॥ ॐ ॥ सदगुरु  
 चरणरमल मनधारं । वेमठ उत्तम नरनाधिकारं । पत्रणसु श्रुत अनुसारं ।  
 जेहनें नाम जिये निमनारं । प्रापण सफलहुवे अवतारं । पामो जे जव  
 पारं ॥ १ ॥ शयन प्रजित मंजव प्रजिनंदन । सुमति पदम प्रभु नयना नंदन  
 सत्तम नेम सुपास । चंद्र प्रभुनें सुविध सीतल जिन । श्रेयांस वासपुज्य  
 जिण सुरमणि । विमलगुणें कज्जास ॥ २ ॥ अनंत धर्म श्रीशान्ति जिनसर  
 कुंथुनाथ अमालि सुंदर । सुनि सुवत नमि नेमि । पार्थ वीर जिन चोवीस  
 जगपटल जगगुरु जगदीस । प्राणजीवे धर प्रेम ॥ ३ ॥ ( बाज २ ) प्रथ



म सुपनगज निरखो एचाल ॥ ॐ ॥ प्रथम जगतनर इंद्र । बीजो सगरसु  
 रिंद । मधवा तीजो उदार । चौथो सनतकुमार ॥ ४ ॥ पांचम सांति चक्रीस ।  
 ठठो कुंथु गणीस । सातमो अर नरनाथ । आठम मुञ्जुमि सनाथ ॥ ५ ॥ न  
 वमो पदमनेरस । हरपेण दसम कहेस । इग्यारम जय ताम । बारम ब्रह्म  
 दत्त नाम ॥ ६ ॥ एह चक्रीसर वार । खेत्रजस्त सिणगार । मधवा सनत  
 कुमार । पुहता स्वरग मजार ॥ ७ ॥ मुञ्जुम अने ब्रह्मदत्त । सत्तम निरय  
 निरत्त । आठ थया सिवगामी । तेप्रणसुं सिरनामी ॥ ८ ॥ ( ढाल ३ ) ॥ ॐ ॥  
 मुनिवर आर्य सुहस्ति एचाल ॥ ॐ ॥ पहिलो त्रिपष्टि जाण । द्विपष्टि दूसरो  
 तीजो स्वयं प्रभु जाणिये ए । पुरषोत्तम ए चौथो । पंचम परगनो । पुरुष  
 सिंह प्रमाणीये ए ॥ ९ ॥ ठठो पुरुष पुंरुरीक । दत्त तिम सातमो । लक्ष्म  
 ण नामें आठमोए । नवमो कृष्णनेरस । एनव केसवा । प्रहज्जो एपिण नमुए  
 ॥ १० ॥ तिहां पहिलो वासुदेव । नारकी सातमो । आगला पंच ठठो  
 गयाए । सातमो पंचम नैर । चौथी आठमो । नवमो तीजी नारीयाए ॥ ११ ॥  
 अचल विजयनें जद्र । सुप्रभु सुदर्शण । आनंद नंदन सुजमतीए । रामचंद्र  
 बलजद्र । बलदेव एनव । आठ थया तिहां सिवगती ए ॥ १२ ॥ बलजद्र  
 ब्रह्म देवलोक । काल उसप्पणी । जास्यै सिवकृष्ण सासणेंए । अथवा नि  
 पुलाक नाम । तीर्थकर होस्ये । चवदमो इम बहुश्रुत जणेंए ॥ १३ ॥  
 ( ढाल ) कुमार पणें प्रभु रहतां काल सुखे गमैंए एचाल ॥ ॐ ॥ अस्वग्रीवनें  
 तारक मेरुक बालि मधु तिसा ए । निशुंज बलय प्रल्हाद रावण जरासिंधु  
 जिसा ए । ए नव प्रति वासुदेव नरक गति गामिया ए । ते पिण जाव जि  
 णेस केई प्रणसुं मुदा ए ॥ १४ ॥ ( ढाल ५ ) सफल संसारनो ॥ ॐ ॥ सां  
 तिनें कुंथु अरि एहजव एकही । चक्रधर तीर्थकर दोय पदवी लही । वीर  
 वासुदेव अरिहंत जव जू जूझा । देह तिण साठ पिण जीव गुण सठ थया  
 ॥ १५ ॥ वासुदेव बलीय बलदेव केरा पिता । एकहीज थाय नवण जे  
 खे वता । तीन चक्रधर तणा मिलिय वारे टल्या । एम त्रेसठना तात इक  
 वन मिल्या ॥ १६ ॥ तीन चक्रवन तणा ढाल दीजै जिमै । माय महुनी  
 यई माठ जेखे इमै । एह नर खणनो ध्यान नित जे धरै । तेह सुर पद लही

मोक्ष पदवी करे ॥ १७ ॥ ( कलश ) इमं शुण्वा तीर्थकर चक्षीमर वासु  
देव बलदेव ए । प्रति वासुदेव सुमेवजेहनी करे नुर नर सेव ए । त्रेमठ  
मिलाका पुरय उत्तम जगे जयवंता मदा । प्रहममे तेहना चरण पंकज नमे  
मृनि वसतो सुदा ॥ १८ ॥ इति त्रेमठ मिलाका पुरय स्तवनं ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अजितशांतिजिनस्तवन लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मंगल कमला कंदए । सुखसागर धुनिमचंदए । जगगुरु अजि  
य जिणंदए । शांतीमर नयणानंदए ॥ १ ॥ विहुं जिनवर प्रणमेवए । वि  
हुं गुणगाडम संखेवए । पुण्य जंमार जेसए । मानवजव सफल केसए  
॥ २ ॥ कोरुहि जालपचासए । सागर जिणसासण चासए । सिद्धजिणे  
सुख वंसए । उवझाय सरोवर हेसए ॥ ३ ॥ इण अवगर तिहां राजीयोए ।  
राजा जितशत्रु जग गजीयोए । विजया तसुवर नारए । विहुं रमयति  
पामामाए ॥ ४ ॥ कूखहि जिन अवतारए । निणराय मनाव्योहारए । उयरव  
स्यो दसमानए । पनु पूरी जणणी आसए ॥ ५ ॥ विहुं जण मन आणंदी  
योए । सुतनाम अजिअजिण तो दीयोए । निहुअण सयल उठाहए । कम  
कम बाधे जगनाहए ॥ ६ ॥ हंस धवल सारम तापीए । गति सुजजित नि  
जगति निरजापीए । मलपति चाले गेलए । जाणे नयण अमोम रेलए  
॥ ७ ॥ अवसन समो संसारए । बलि न्यान विवेक विचारए । शुणदेखी गज  
गहगहोए । जंजण मिसि पगजागी रहोए ॥ ८ ॥ जोवनवय जब आवायोए ।  
तब घरमणी परिणावियोए । पायमाथे नव काजए । प्रनु पाले पुदवीराजए  
॥ ९ ॥ हिव दधणाउर ठामए । विश्वमेण नरमर नामए । राणी अचिरा देवए ।  
मनहर सुखमाणे बैवए ॥ १० ॥ चवद्ध सुपने परवरयोए । अचिरा उये सुत  
अवतरयोए । मानवदेव चक्षाणीयोए । चाक्षीमर जिणवर जाणीयोए ॥ ११ ॥  
देम नयर हउ संतए । निणनाम दीयो निरि शानए । जिणगुण कृण जाणे  
कर्दाए । विहुं नृपणे नरु उपमानहोए ॥ १२ ॥ नयण सज्जणी तिरणतोए ।  
बननिधे बीहे एकलोए । नयण समाधि निर्गवए । इणनयणे नारायिमावए  
॥ १३ ॥ गीतही गम सुरंगए । भिण पनणे लोक सुंगए । तो उज्जयो  
शशि मेकए । निगमान्यो नाम कर्जेकए ॥ १४ ॥ इणकर हग अनि नज

जल्योए । जयजंजण स्वामी सांजल्योए । आणंदीयो मनआपणोए । पा  
 यसेवै मिस लंढण तणोए ॥ १५ ॥ लीलापति परणें धणीए । नव नवीय कु  
 मरि रायां तणीए । बल बल अरियण जोगवैए । पीयराय जलीपर जोगवैए  
 ॥ १६ ॥ कुमरतणें मंजुल समेंए । पंचाससहस वरसां गमेंए । तौतेजै दिणयर  
 जिसोए । ऊपन्नो चक्रयण तिसोए ॥ १७ ॥ साधी जरह ठहखंरुए । वरतावी  
 आंण अखंरुए । चवदरयण नवनिहि सहीए । वसु सोलसहस जक्खे अही  
 ए ॥ १८ ॥ सहसबहुत्तर पुरवराए । वत्तीस मौनवध नरवराए । पायक गामे  
 कोरुए । भिन्नवै नमैं वेकरजोरुए ॥ १९ ॥ हय गय रह वर जूजुवाए । लखचौरा  
 सी मंदिर हुवाए । लाख त्रि वाजित्र धम धमैए । वत्तीस सहस नाटक रमेए ।  
 ॥ २० ॥ रूपजिसी सुरसुंदरीए । लक्ष्मण लावन्य लीला जरीए । जंगम सौ  
 हग देहरीए । इसी चौसठसहस अंतेजरीए ॥ २१ ॥ अवरज रिद्धि प्रकार  
 ए । मणि कंचण रयण जंमारुए । ते कहिवा कुण जाणए । वपु वपुरे पुण्य  
 प्रमाणए ॥ २२ ॥ इम चक्कीसर पंचमोए । चौथो दूसमशूशम समोए ।  
 वरस सहस पचवीसए । सबपूरी मनह जगीसए ॥ २३ ॥ इणपरि विहुं  
 तिर्यंकराए । चिरपाली राज विविहपराए । जाणी अवसर सारए । विहुं  
 लीधो संजमचारए ॥ २४ ॥ विहुं खमदम धीरम धरीए । विहुं मोह मयण  
 मद परहरीए । विहुं जिण जाण समाणए । विहुं पाम्यो केवलनाणए  
 ॥ २५ ॥ विहुं देवहि कोरुहि महिय । विहुं चौतीसे अतिसय सहिय ।  
 समवसरण विहुंठाणए । विहुं जोयणवांणि बखांणए ॥ २६ ॥ नाचे रण  
 कत नेउरीए । विहुं आगलि इंद्र अंतेजरीए । टिग मिग जोवै जग सहए  
 रंगहि गुणगावै सुखहुए ॥ २७ ॥ विहुंसिर ठत्र चमर विमल । विहुं पगतल  
 नव सोवन कमल । विहु जिन तणें बिहारए । नविरोग नसोग नमारिण  
 ॥ २८ ॥ विहुं उवयार नुवणजरीए । विहुं सिद्धि रमणि सयंवरीए । विहुं  
 जंजी जवकंदए । विहुं उदयो परमाणंदए ॥ २९ ॥ इम बीजोनें सोलमोए ।  
 जांणे चिंतामणि सुरस्तरुसमोए । थुणिअ तिसंज विहाणए । तिहां इह  
 परिजव नवि द्वाणए ॥ ३० ॥ विहुं उठव मंगलकरण । विहुं संवसयल  
 छरियहरण । विहुं वरकमल वयण नयण । विहुं श्री जिनराय नुवण

रयण ॥ ३१ ॥ उमजगते जोजिमवर्णाए । श्रीअजिय शांति जिण शुइ  
जणीए । मरण विहं जिणपायए । सिरि मेरुनंदन ज्वजायए ॥ ३२ ॥  
इति श्री अजिन शांतिजिन वृक्षस्तवन संपूर्णम् ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ सुहृपत्ती पम्पिजेहण स्तवन ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ( दाज कपूर हुवे अनि कुजलोरे एवाज ) ॥ ॐ ॥ वरधमान  
जिनवर तणाजी । चरण नमुं चित्तजाय । ग्यान क्रिया जिण उपदिसे जी ।  
शिव सुखतणो उपाय ॥ १ ॥ ( अविक जन धर श्रीजिन उपदेस । वृद्धे कर्म  
कलेस ज० ) ॥ पम्पिजेहण सुहृपति तणीजी । जार्पात्रे पचवीम । तिहां  
एजाव विचारीये जी । उम जार्पे जगदीम ॥ २ ॥ ( ज० ) प्रथम वेपास  
विजोकिये जी । सूत्र अरयनी दृष्टि । एपम्पिजेहण दृष्टिनी जी । करे ध  
र्मनी पुष्टि ॥ ३ ॥ ( ज० ) ममकिन मिथ्या मिश्रनीजी । मोहनी तीन  
नो त्याग । कामराग नेहराग नें जी । तज वज्जि तिम दृष्टिराग ॥ ४ ॥  
( ज० ) गीण वधू तक गुरु धर्की जी । वाम हाथ करनाउ । नव असो  
मा आदरो जी । नव पलोमा गमाउ ॥ ५ ॥ ( ज० ) देव नत्व गुरु नत्व  
मुं जी । धर्म नत्व गुरु मार । कुगुरु कुदेव कुधर्मनो जी । तीन तणो परिहार  
॥ ६ ॥ ( ज० ) ग्यान दसण चारित्रना जी । संग्रह तीन आचार ।  
तजो विराधन तीन एजी । गुरु अरय अवधार ॥ ७ ॥ ( ज० ) मन वच  
कायानो सदाजी । गुपति गृही जे सुद । परिहरीये वज्जि जाणनें जी ।  
तीने दंम विसुद ॥ ८ ॥ ( ज० ) पम्पिजेहण पचवीमए जी । सुहृ पत्ती  
नी मार । हिव पम्पिजेहण अंगनी जी । ने पिण चतुर विचार ॥ ९ ॥  
( ज० ) हास्य पयति रति दोयनें जी । सुद करो वाम बांद । नजि जय  
शोक दुर्गमना जी । दक्षिण पिण करे माद ॥ १० ॥ ( ज० ) सुखी ले  
स्या तीन एजी । ते शिर धी फां हू । तिदि न्ना शाना गाखो जी । करि  
भुल थी नकनर ॥ ११ ॥ ( ज० ) काद मलय तीन ऊर धकी जी । माया  
नियण मिथ्याद । च्यार कणाय ये वगलये जी । कोयादिक फांज्याना ॥ १२ ॥  
( ज० ) मज सदकाय विराधना जी । कणए विहं सुद होय । ए पम्पिजे  
हण अंगनी जी । पचवीमि हूं जोय ॥ १३ ॥ ( ज० ) उम पम्पिजेहण जे

करै जी । धर मन ग्यान विवेक । सकल करम दूरे करै जी । पामें सुख  
अनेक ॥ १४ ॥ ( ज० कलश ) इम वीरजिणवर तणा मुख थी अरथ गण  
धर सांजली । कहै सूत्र वाणी मन सुहाणी सुणो जवियण मन रखी । ऊ  
झाय वर सिरि लठ्ठकीरति मुख थकी ए संग्रही । मुह पती पम्पिलेहण  
तणी विधि लठ्ठि वल्लभ गणि कही ॥ १५ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
इति श्रीमुह पत्ती पम्पिलेहण स्तवनं ॥ १४ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सिद्धगिरि स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री विमलाचल शिर तिलो । आदीसर अरिहंत । जुगला धर  
म निवारणो । जयजंजण जगवंत ॥ १ ॥ श्री० ॥ मुऊ मन ऊजट अति  
घणो ( रे ) सोदिन सफल गिणोस । स्वामी श्रीरिसहे सरू । जव नयणे नि  
रखेस ॥ २ ॥ श्री० ॥ जंगम तीरथ विहस्ता । साधु तणें परिवार । आदि  
जिणंद समोसरथा । पूख निनांणुंवार ॥ ३ ॥ श्री० ॥ अचरा विजया नंद  
ने । जग बंधव जगतात । इण गिरि चन्मासै रह्या । थिवर कहै ए वात  
॥ ४ ॥ श्री० ॥ पामें शिव सुख सासता । गणधर श्री पुंमरीक । पुंमरगिरि  
तिण कारणें । जगति करो निर जीक ॥ ५ ॥ श्री० ॥ नमिनें विनमि स  
होदरू । विद्याधर बलवंत । सेहुंज सिखर समोसरथा । जे गरुवा गुणवं  
त ॥ ६ ॥ श्री० ॥ थावचा मुनिवर सुक । सहस २ परिवार । पंथग वय  
णे जागीयो । सो सेलग अणगार ॥ ७ ॥ श्री० ॥ पांख पांच महाबली ।  
सुणी जादव निखाण । ते सीधा सिद्धा चलै । सुर नर करै वखाण ॥ ८ ॥  
श्री० ॥ इम सीधा इणडंगरे । मुनिवर कोना कोनि । पाज चढंता सांज  
रे । ते प्रणसुं कर जोडि ॥ ९ ॥ श्री० ॥ जे वाघणि प्रति वूजवी । ते दर  
वाजे जोय । गोमुख यहु कवड मिली । सानिध कारी होय ॥ १० ॥  
श्री० ॥ जे विधसुं यात्रा करै । सुर नर सेवकतास । राज समुद्र गुण गा  
वतां । अविचल लीलविजास ॥ ११ ॥ श्री० ॥ इति सेहुंजय स्तवनं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री रिपज जिनेसर स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ज्ञान जिनेसर दिनकर साहिव । वानतनी अवधारोरे ( ज  
गनातारू । मुऊ तारोजी कृपा निधि स्वामी ) ॥ जग जमवाद प्रगट्टे ता

हरो । अविचल सुख दातारोरे ॥ ज० ॥ १ मु० ॥ निजगुण जोक्ता पर गुण  
लोप्ता । आतम सगति जगायारे ॥ ज० अविनासी अविचल अविकारी  
शिववासी जिन रायारे ॥ ज० मु० ॥ इत्यादिक गुण श्रवणे निसुणी ।  
हुं तुम चरणे आयोरे ॥ ज० ॥ तुम रींजावण हेतै ततखिण । नाटक खेलम  
चायोरे ॥ ज० ॥ ३ मु० ॥ काल अनंत रह्यो एकेंद्री । तरु साधारण पा  
मीरे ॥ ज० ॥ वरस संख्याता बलि विकलेंद्री । वेषधर्या दुख धामीरे ॥ ज०  
॥ ४ ॥ मु० ॥ सुर नर तिरि बलि नरक तणीगति । पंचेंद्रीपणो धार्योरे  
ज० ॥ चोवीसे दंडक मांहि जमियो । अबतो हुं पिण हार्योरे ॥ ज० ॥ ५ ॥  
मु० ॥ जवनाटक नितकरतो नवनव । हुं तुज आगलि नाच्योरे ॥ ज० ॥  
समर्थ साहिव सुरतरु सरिषो । निरखी तुजनें जाच्योरे ॥ ज० ॥ ६ ॥ मु० ॥  
जो मुज नाटक देखी रींज्या । तो मुज वंजित दीजैरे ॥ ज० ॥ जो नविरीं  
ज्या तो मुज जाषो । बलि नाटक नवि कीजैरे ॥ ज० ॥ ७ ॥ मु० ॥ लालच  
धरि हु सेवा सारुं । तुं दुखडा नविकापेरे ॥ ज० ॥ दातासेती सूबजलेरो ।  
बहिलो ऊतर आपैरे ॥ ज० ८ मु० ॥ तुज सरिषा साहिव पिण महारो ।  
जो नवि कारज सारोरे ॥ ज० ॥ तो मुज करम तणी गति अवलो । दोस  
नकोई तुमारोरे ॥ ज० ९ मु० ॥ दीनदयाल दयाकरि दीजै । सुध समकि  
त सहिनाणीरे ॥ ज० ॥ सुगुण सेवकना वंजित पूरो । तेहीजगुण मणिखाणी  
रे ॥ ज० १० मु० ॥ वर्ष अठारै गुणतालीसै । ज्येष्ठसुदी सोमवारोरे ॥ ज० ॥  
लालचंद प्रतिपददिन जेव्या । वीकानेर मजारोरे ॥ ज० ११ मु० ॥ ॥ ❀ ॥  
इति श्री कृष्ण देवजी स्तवनं ॥ १६ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री महावीर वीनती लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वीर सुणो मोरी वीनती । कर जोमीहो कहूं मननी बात । बाल  
कनी परिवीनबुं । मोरा सामीहो तूं त्रिचुवन तात ॥ १ ॥ वी० ॥ तुम दरसण वि  
णहुं जम्यो । जव मांहेहो सामी समुद्र मजार । दुख अनंता में सह्या । ते  
कहितांहो किमआवै पार ॥ २ ॥ वी० ॥ पर उपगारी तुंपनु । दुखजांजैहो जग  
दीनदयाल । तिणतोरै चरणें हुं आवीयो । सामी मुजनेंहो निज नयण निहा  
ल ॥ ३ ॥ वी० ॥ अपराधी पिण ऊधर्या । तें कीधीहो करुणा मोरासाम ।



हुं तो परम जगत ताहरो । तिणतारोहो नहीं दीलनो काम ॥ ४ ॥ वी० ॥  
 शूलपाणि प्रति बूझ्या । जिण कीधाहो तुज्जे उपसर्ग । मूंक दीयो चंरुको  
 सीये । तें दीधोहो तसु आठमोसर्ग । ५ ॥ वी० ॥ गोशालो गुनही धणु ।  
 जिण बोल्याहो तोरा अवरणवाद । ते बलतो तें राखीयो । सीतलेस्याहो मूं  
 की सुप्रसाद ॥ ६ ॥ वी० ॥ ए कुण्ठे इंद्रजालीयो । इम कहितां हो आ  
 यो तुमतीर । ते गोतमनें तें कीयो । पोतानोहो प्रचुतानो वजीर ॥ ७ ॥  
 वी० ॥ वचन उत्थाप्या ताहरा । जे जगड्योहो तुज्जसाथ जमाल । तेहनें  
 पिण पनरै जवे । सिव गामीहो तें कीधो कृपाल ॥ ८ ॥ वी० ॥ अमत्तो रिषि  
 जेरम्यो । जल मांहेहो बांधी माटीनी पाल । तिरती मूंकी काचली । तें तारयो  
 हो तेहनें ततकाल ॥ ९ ॥ वी० ॥ मेघकुमर रिषि दूहव्यो । चितचूकोहो चारि  
 तथी अपार । एकावतारी तेहनें । तें कीधो हो करुणा जंमार ॥ १० ॥ वी० ॥  
 वार वरस बैस्याघरे । रह्यो मुंकीहो संयमनोजार । नंदखेण पिण ऊधरयो ।  
 सुर पदवीहो दीधी अतिसार ॥ ११ ॥ वी० ॥ पंच महाव्रत परिहरी । ग्र  
 हवासैहो बसिया वरस चौवीस । ते पिण आद्रकुमारनें । तें तारयो  
 हो तोरी एह जगीस ॥ १२ ॥ वी० ॥ राय श्रेणक राणी चेजणा ।  
 रूप देखीहो चित चूका जेह । समवसरण साधु साधवी । तें कीधा  
 हो आराधिक तेह ॥ १३ ॥ वी० ॥ विरत नहीं नहीं आखनी । नहीं  
 पोसोहो नहीं आदर दीख । ते पिण श्रेणिकरायनें । तें कीधोहो सामी आ  
 पसरोख ॥ १४ ॥ वी० ॥ इम अनेक तें ऊधरया । कहूं तोराहो केता  
 अवदान । सारकरो हिवमाहरी । मनमांहेहो आणो मोरनी वात ॥ १५ ॥  
 वी० ॥ सूधो संजम नविपलै । नही तेहवोहो मुज दरसण नाण । पिण  
 आधारठे एतलो । इक तोरोहो धरुं निश्चल ध्यान ॥ १६ ॥ वी० ॥ मेह  
 महीतज वरसतो । नविजोवैहो सम विखमी ठाम । गरुआ सहिजे गुण क  
 रे । स्वामी सारो हो दोरा वंजित काम ॥ १७ ॥ वी० ॥ तुम नामें सुख संपदा  
 तुम नामें हो दुख जायै दूर । तुम नामें वंजित फलै । तुम नामें हो मुज  
 आणंद पूर ॥ १८ ॥ वी० ॥ ( कज्जश ) ॥ ॥ इम नगर जेशजमेर मंम  
 ण तीर्थकर चौवीसमो । सामना धीसर मिह लंगन सेवतां सुरतर समो ।

जिणचंद त्रिसला मात नंदन सकल चंद कला निलो । वाचना चारज स  
मय सुंदर संधुण्यो त्रिनुवन तिलो ॥ १९ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
इति श्री महावीर जिन स्तवनं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चौवीस दंरुक स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( ढाल आदर जीव ह्रमागुण आदर ) एचाल ॥ ❀ ॥ पूर म  
नोरथ पासजिनेसर । एहकरुं अरदासजी । तारण तरण विरुद तुऊ सांज  
लि । आयो हुं धरि आस जी ॥ १ ॥ ( पू० ) इण संसार समुद्र अथागै  
अमियो अजल मांहि जी । गिल गिचिया जिम आयो गिडतो । साहिब  
हाथे साहिजी ॥ २ ॥ ( पू० ) तुं ग्यानीतो पिण तुऊ आगै । वीतक कहीयै  
वात जी । चौवीसे दंरुक हुं अमियो । वराणुं तेह विख्यात जी ॥ ३ ॥ ( पू० )  
साते नरक तणी इक दंरुक । असुरादिक दस जाणजी । पांच थावर नें  
तीन विकलेंद्री । उगणीस गिणती आणजी ॥ ४ ॥ ( पू० ) ॥ पंचेंद्री तिर्यंच  
नें मानव । एह थया इकवीस जी । व्यंतर ज्योतिषीनें वेमानिक । इम दंरुक  
क चौवीस जी ॥ ५ ॥ ( पू० ) पंचेंद्री तिर्यंच अनें नर । परयाप्ता जे हो  
य जी । एचौविह देवां मे उपजै । इम देवां गति दोय जी ॥ ६ ॥ ( पू० )  
असंख्यात आऊखै नर तिरि । निहचै देवज थायजी । निज आऊखे सम  
के उठै । पिण अधिकै नवि जायजी ॥ ७ ॥ ( पू० ) अवनपती कै व्यंतर  
तांई । समूर्तिम तिर्यंच जी । सरग आठमा तांई पुहचै । गरजज सुकृत सं  
चजी ॥ ८ ॥ ( पू० ) आऊ संख्यातै जे गरजज । नर तिर्यंच विवेक  
जी । बादर पृथवीनें बलिपाणी । वनस्पती प्रत्येक जी ॥ ९ ॥ ( पू० ) परि  
याप्ता इण पांचें ठामें । आवी उपजै देवजी । इण पांचामाहें पिण आगै ।  
अधिकाई कहूं हेवजी ॥ १० ॥ ( पू० ) तीजा सरग थकी मांमी सुर ।  
एकेंद्री नवि थाय जी । अठम थी ऊपरिला सगला । मानव मांहै जायजी  
॥ ११ ॥ ❀ ॥ ( पू० ) ( ढाल २ आज निहेज्योरे दीसै नाहलोएचाल । )  
॥ ❀ ॥ नरक तणी गति आगति इण परै । जीवजमें संसार । दोय ग  
तिनें दोय आगति जाणीयै । बलीय विशेष विचार ॥ १२ ॥ ( न० ) संख्या  
तै आऊ परयापता । पंचेंद्री तिर्यंच । तिम हीज मनुष्य एहिज वे नरक

में । जायै पाप प्रपंच ॥ १३ ॥ ( न० ) प्रथम नरक लागि जाय असन्नि  
 यो । गोह नकुल तिम वीय । गृध्र प्रमुख पंखी वीजी लगे । सींह प्रमुख चो  
 थीय ॥ १४ ( न० ) पंचमी नरकै सीमा सापणी । ठी लगे स्त्री जाय ।  
 सातमीये मांणस के मांजलो । ऊपजै गरज्ज आय ॥ १५ ॥ ( न० ) न  
 रक थकी आवै बिहुं दंरुके । तिरयंच के नर थाय । ते पिण गरज्ज नें  
 परयापता । संख्या ती जसुआय ॥ १६ ॥ ( न० ) नारकियांनैं नरकयो  
 नीसरयां । जे फल प्रापत होय । उतकृष्टे जांगै करि तेकहुं । पिण निश्चै  
 नही कोय ॥ १७ ॥ ( न० ) प्रथम नरकथी चवि चक्रवर्त्ति हुवे । वीजी  
 हरि बलदेव । तीजी लागि तीर्थकर पद लहे । चोथी केवल हेव ॥ १८ ॥  
 ( न० ) पंचमी नरकनो सरव विरति लहे । ठी देस विरत्त । सातमी न  
 रक नो समक्ति हीज लहे । न हुवै अधिक निमित्त ॥ १९ ॥ ( न० ॥  
 ढाल ३ ) ॥ ❀ ॥ ( करम परीक्षा करण कुमर चढ्यो रे ) ए चाल ॥ ❀ ॥  
 मानव गति विण सुगति हुवै नहीरे । एहनो इम अधिकार । आज्ञा संख्या  
 ते नर सहु दंरुकेरे । आवी लहे अवतार ॥ २० ॥ ( मा० ) तेऊ वाऊ दंरुक  
 वेतजीरे । वीजा जे बावीस । तिहांथी आया थायै मानवीरे । सुख दुःख कर्मस  
 रीस ॥ २१ ॥ ( मा० ) नर तिरयंच असंखी आज्ञेरे । सातमी नरकना  
 तेम । तिहां थी मरनें मनुष्य हुवै नही रे । अरिहंत जाप्यो एम ॥ २२ ॥  
 ( मा० ) वासुदेव बल देव तथा बलीरे । चक्रवर्त्तिनैं अरिहंत । सरग नर  
 गना आया ए हुवेरे । नर तिरथी न हुवंत ॥ २३ ॥ ( मा० ) चोविह दे  
 व थकी चवि ऊपजैरे । चक्रवर्त्ति बल देव । वासुदेव तीर्थकर ए हुवे रे ।  
 वैमानक थकी वेव ॥ २४ ॥ ( मा० ) ( ढाल ४ नाञ्जि अने मरुदेवा ) ए चाल  
 ॥ ❀ ॥ हिव तिरयंच तणी गति आगति कहीयै अशेष । जीवज्मै इण  
 परजव मांहे करम विशेष । आज्ञा संख्याती जे नर तिरयंच विचार । ते म  
 गला तिरयंचा मांहे लहे अवतार ॥ २५ ॥ जिण तिरयंचां मांहे आवै  
 नारक देव । ते कहा पद्मिनी तिण कारण नकहुं हेव । पंचेंद्री तिरयंच  
 संख्याते आज्ञे जेह । ते मरी चिहुं गतिमां जावै इहां नही संदेह ॥ २६ ॥  
 थावर पांच तीने विकलेंद्री आवै कहावे । तिहां थी आज्ञासंख्याता नर ति

रयंचमें आवे । विकल चवी लहै सरब विरति पिण सुगति न पावै । तेऊ बाऊ थी आयो तेहनें समकितनावै ॥ २७ ॥ नारक वरजीनें सगलाही जीव संसार । पृथ्वी आऊ वनस्पती मांहे लहै अवतार । एतीने इहांथी चवि आवै दसे ठामें । थावर विकल तिरी नर मांहे उतपत पामें ॥ २८ ॥ पृथ्वी काय आदि देई दस दंरुके एह । तेऊ बाऊ मांहे आवी उपजै तेह । मनुष्य विना नवमांहे तेऊ बाऊ बे जावै । विकलेंद्री ते दसमांहे जावै पूठा ही आवै ॥ २९ ॥ एम अनादि तणो मिथ्याती जीव एकंत । वनस्पती मांहे तिहां रहीओ काल अनंत । पुढवी पाणी अगनि अनेंचोथो वलि वाय । काल चक्र असंख्याता तांइ जीव रहाय ॥ ३० ॥ बेइंद्री तेइंद्री अनें चौरिंद्री मजारै । संख्याता वरसां लगै जमियो करम प्रकारै । सात आठ जव लागि तां नर तिरयंचमें रहियो । हिव मानव जव लहिनें साधुनो वेषमें रहियो ॥ ३१ ॥ राग छेष बूटे नही किम हूवे बूटकवार । पिण्ठै महारे मनसुध ताहरो एक आधार । तारण तरण में त्रिकरण सुधै अरिहंत लायो । हिव संसार घणो जमिवो तो पुदगल आधो ॥ ३२ ॥ तुं मन वंछित पूरण आपदाचूरण सामी । ताहरी सेवजही तो में नवनिध सिध पामी । अवरन कांइ इच्छेण जव तुंहीज देव । सूधै मन एक होज्यो जव जव ताहरीसेव ॥ ३३ ॥ ( कलश ) ॥ इम सकल सुखकर नगर जेशल मेर महिमा दिन दिनें । संवत्तसतरे उगणतीसै दिवस दीवालीतणें । गुण विमलचंद समान वाचक विजेहरष सुसीसए । श्री पासना गुण एम गावै धरमसी सुजगीसए ॥ ३४ ॥ ॥ ❀ ॥ इति श्री चौवीस दंरुक स्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ इरियावही मिळामि दुक्कसंख्या स्तवन लि० ॥

॥ ❀ ॥ प्रभु प्रणमुरे पास जिणेसर थंजणो एहनी ॥ ❀ ॥ पद पंकज रे प्रणमी वीरजिनंदना । त्रिकरण सुधरे करि मुनिवर पय वंदना । अमै तरे पम्किमी जिम इरियावही । श्रीवीर नीरे वाणी तहत्तकरि सरदही । ( ७० ) सरदही वाणी मन सुहाणी चित्त आणी तेवली । मिळामि दुक्कस तणी संख्या कहिसुं जिम कही केवली । नूदग जजण तिम वाऊ वण सइ विगल पण इंद्री तणी । कस्तां विराहण करम वंध्या दूर ते करिवा ज

णी ॥ १ ॥ ( चाल ) पुढवी दगरे वाऊ तेऊ वणस्सई । पण थावररे वादर  
 सुहम दसेथई । प्रत्येकजरे वणस्सई इग्यारह थया । बावीसेरे पऊत्तग अ  
 पऊत्तया । ( उलालो ) पऊत्त अपऊत्तग वखाण्या विगल तिय बहजालए ।  
 जल थल खचर जुयंग पुइपण इंद्रिय तिरि अरुआलए । घम्मादि साते न  
 रक पुढवी नारकी तिहां सात जे । ते चवद जेदै करी जाणो पऊत्तय अ  
 पऊत्त जे ॥ २ ॥ ( चाल ) पनरह विधरे सुर गिण परमाहम्मिया । किल  
 विखियारे त्रिविध करम ते निम्मिया । जंजिय दसरे नव लोगांतिक जाणियै  
 सोलह विधरे व्यंतर देव वखाणियै । ( उलालो ) वखाणियै दसविध जुवन  
 पतिना तार रवि शशि रिषि गहा । चर थिर दसेविध जोइसी सुर वखाण्या  
 जिणवर जहा । बारह विमानक पण अणुत्तर नवग्रीवकै नव ज्ञाया । पऊत्त  
 अपऊत्तग अठाणु अधिक सतसंख्यागिण्या ॥ ३ ॥ ( ढाल २ ) मेघ आगम सही  
 ए० ॥ पंचजरत बलि ऐरवत पंच पंच विदेहवर नृमिका ए । खेत्र ए पनरह  
 करम नृमि जाणीयै असि कसि मसिहि आजीविकाए । हेमवत खेत्र  
 बलि तिम हरिवर्ष रम्यक ऐरायवत सहीए । मेरुपिण पाखती चारि २ खेत्र  
 दस कुरु अकरम नृमीकहीए ॥ ४ ॥ हिमगिरि सिहरीय दाढ चीयारि ल  
 वण समुद्रमांहि विस्तरीए । सात २ अंतर दोय पामै दीप ठप्पन्न अन्तर  
 धरीए । दोइसै जेद पुइ आगला जाणि मणुय पऊत्त अपऊत्तयाए । एक  
 सौ एक समुठिम जेद तीनसै तीनमणुआ थयाए ॥ ५ ॥ ( ढाल ३ ) ॥  
 ( हिव जनम्या जगगुरु० ) ए० ॥ पणसय त्रेसठिविध जीवसहस्रे एह  
 अजिहय आदिक दस गुणित करीजै तेह । पणसहस ठसै बलि त्रीस अ  
 धिकते जाणि । ते रागै दोसै पुगुणा करी वखाण ॥ ६ ॥ हुइ सहस इ  
 ग्यारह पुइसय साठि प्रमाण । ए प्रवचनवाणी जाणी हितउर आण ।  
 मनवच काया करि त्रिगुणाकारि त्रिअंक । तेतीस महस सत सातअसी  
 निःसंक ॥ ७ ॥ बलि करण करावण अनुमति त्रिगुणा किद । इकलकल  
 सहसइग तिसय चालीस प्रमिद । अतीत अनागत वर्तमान बलिकाल ।  
 जे थइयविगयना तिणी त्रिगुण संज्ञाज ॥ ८ ॥ तीन लाख सहस च्यार  
 वेसै अधिक तेथाय । अरिहंत प्रमुख उह माखै त्रिगुणा जाय । इम लाख

अठारह बलि सहस्र चत्तवीस । इकसो बीसोत्तर हुइ संख्या निसदीस ॥ ९ ॥ ( ढाल ४ ) चोपईनी ॥ ❀ ॥ इण परि मिठामि डुकमंदई । जविक तरया जवजल निविकेई । तरै अठै बलि आगलि तरिसी । निरमल केवल लखमी वरिसी ॥ १० ॥ इरियावही धरम गंगाजल । न्हाण करै आतमक रि निरमल । सैं सुखजाषै वीर जिणैसर । सूत्रकरी गूंथै ते श्रुतधर ॥ ११ ॥ इम पम्किमी सुनिवर अइमत्तो । वीरसीस केवल पदपत्तो । त्रिकरण सुध तसु पय प्रणमी जै । मानव जनम सफल इम कीजै ॥ १२ ॥ ( कलश ) ॥ ❀ ॥ इम वीरजिणवर ग्यान दिणयर सयललोय सुहंकरो । तियलोय सामी सिद्धिगामी सुद्ध धरम धुरंधरो । उवजाय लक्ष्मी कीर्ति सीसै जैनवाणी मन धरी । गाणि लल्लिवल्लज तवन करि इम संथुणयो जावै करी ॥ १३ ॥ इति इरियावही मिठामि डुकम संख्या स्तवनं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पंचसमवाय स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सिद्धार्थ सुतवंदियै । जगदीपक जिनराज । वस्तुजाव सब जाणियै । जिन आगम थी आज ॥ १ ॥ स्यादवादथी संपजै । सकल वस्तु विख्यात । सप्तजंगी रचना विना । बंधन बैसे वात ॥ २ ॥ वाद वदै नय जूजुआ । आप आपणें ठाम । पूरण वस्तु विचारतां । कोई न आवै काम ॥ ३ ॥ अंध प्ररूपै एहगज । ग्रही अवयव एकेक । दृष्टिवंत लहै पूर्णगज । अवयव मिली अनेक ॥ ४ ॥ संयुत सकल नयै करी । जुगत २ सुध बोध । धन जिनसासन जगजयो । तिहां नही कोई विरोध ॥ ५ ॥ ( ढाल १ आ साजरी राग ॥ ) श्रीजिन सासन जगजयकारी । स्यादवाद शुद्धसरूपरे । नयएकांत मिथ्यात्वनिवारण । अकल अजंग अनूपरे ॥ ६ ॥ श्री० । कोई कहै एकाल तणें वस । सकल जगत गत होयरे । काले उपजै विणसे काले । अवरन कारन कोयरे ॥ ७ ॥ श्री० । काले गर्ज धरै जगवनिता । काले जनमें पृतरै । काले बोले काले चाले ! काले जाले वर सूतरै ॥ ८ ॥ श्री० ॥ काले दूध थकी दही थायै । काले फल परिपाकरे । विविध पदार्थ काले उपायै । अंतकरै वेवाकरे ॥ ९ ॥ श्री० ॥ जिन चत्तवीसे वारचक्रवै । वासुदेव बलवंतरे । काले कविलत कोई नदीसै । जसुकरता सुर सेवरे



॥ १० ॥ श्री० ॥ उत्सर्प्यणि अवसर्पणि आरा । ठै ठै जूजूयें जांतरे । पटारि  
 काल विशेष विचारो । निन्ननिन्न दिन रातरे ॥ ११ ॥ श्री० ॥ काले बाल  
 विलास मनो हर । यौवन कालाकेशरे । बुद्धपणें हुयवलि २ दुर्वल । सकति  
 नही लवलेसरे ॥ १२ ॥ श्री० ॥ ( ढाल २ गिरु आ गुण श्रीवीरजी ए चाल ) ॥  
 ॥ ॥ तव सुजाव वादी वदैजी । कालकिमुं करै रंक । वस्तु सुजावै नीपजे  
 जी । विणसै तिमज निस्संक ॥ १३ ॥ ( विवेकी जुओ २ वस्तु सु  
 जाव ) ॥ ठै योग जोवनवती जी । बांजणि न जणें बाल । मूंनही  
 महिला सुखे जी । करतल ऊगै न बाल ॥ १४ ॥ वि० ॥ विणस जाव  
 नवि संपजै जी । किमह पदारथ कोय । अंब नलागै नींवैजी । वागवसंते  
 जोय ॥ १५ ॥ वि० ॥ मोर पांज कुणचीतरै जी । कुण करै संध्या रंग । अंगवि  
 विध सविजीवनाजी । सुंदर नयन कुरंग ॥ १६ ॥ वि० ॥ कांटा बोरवंबूल  
 नाजी । कुणें अणियाला कीध । रूप रंग गुण जूजूआजी । तस फल फू  
 ल प्रसिध ॥ १७ ॥ वि० ॥ विसहर मस्तके नितवसैजी । मणिहरै विस तत  
 काल । परवत थिर चल वायरोजी । ऊरध अगननी जाल ॥ १८ ॥ वि० ॥  
 मठ ठुंव जलमां तरैजी । बूमे काग पाहाण । पंख जाति गयणें फिरै जी ।  
 इणपरै सहिज विनाण ॥ १९ ॥ वि० ॥ वाय सुंठ थी उपसमें जी । हरडै  
 करै विरेच । सीजैतहि कणकांगमो जी । सकल सुजाव अनेक ॥ २० ॥  
 वि० ॥ देश विशेषै काठनोजी । जुयमां थायै पाखाण । संख अस्थिनो नी  
 पजै जी । क्षेत्र सजाव प्रमाण ॥ २१ ॥ वि० ॥ रवि तातो शशि सीयलो जी ।  
 प्रव्या दिक बहु जाव । ठए द्रव्य आपापणा जी । न तजै कोई सुजाव  
 ॥ २२ ॥ वि० ॥ ॥ ( ढाल ३ ) कपूर हुवै अति ऊजलो रे एचाल ॥ काल  
 किमुं करै बापमोरे । वस्तु सुजाव अकज्ज । जो नहोइ प्रवतव्यता जी ।  
 तो किम सीजै कज्ज रे ॥ २३ ॥ ( प्राणी मकरो मनजंजाल ) ॥ एतो जा  
 वा जाव निहाल रे ॥ प्रा० ॥ जलधितरै जंगल फिरै जी । कोमि यतन करै  
 कोय । अणजावी होवै नहीं जी । जावी होय ते होय रे ॥ २४ ॥ प्रा० ॥  
 आंवा मोर वसंतमां जी । माले कोई लाख । खरद्या केई खांखट्टी जी । केई  
 आंवा केई साख रे ॥ २५ ॥ प्रा० ॥ बांजल जिम प्रवतव्यता जी । जि

ए २ दिशे उजाय । परवस मन माणस तणो जी । तृण जिम पूठे धाय रे  
 ॥ २६ ॥ प्रा० ॥ नियत वसै विण चितव्युं जी । आवी मिल ततकाल ।  
 वरसां सोनुं चितव्यो जी । नियम करै विसराल रे ॥ २७ ॥ प्रा० ॥ आठमो  
 चक्रि सुजूमि तेजी । समुद्र पड्यो विकराल । ब्रह्मदत्त चक्री तणा जी ।  
 नयन हरै गोवाल रे ॥ २८ ॥ प्रा० ॥ कोकूहा कोयल करै जी । किम रा  
 खीसरे प्राण । आहेनी शर ताकीयो जी । ऊपर जमें सींचाणरे ॥ २९ ॥  
 प्रा० ॥ आहेनी नागें मस्यो जी । बाण लग्यो सींचाण । कोकूहो उनी गयो  
 जी । जोउ नियत परमाणरे ॥ ३० ॥ प्रा० ॥ सख हएया संग्राम मांजी । रानपड्यां  
 जीवंत । मंदिर मांहे मानवी जी । राख्याही नरहंतरे ॥ ३१ ॥ प्रा० ॥ (ढाल ४  
 राग मारुणी मनोहरणी ) ॥ ❀ ॥ काल स्वभाव नियत मति कूनी । कर्म करै  
 ते थाय । कर्म नरय तिरय नर सुर गति । जीव जवंतरै जाय ॥ ३२ ॥ (चेत  
 न चेतज्योरे कर्म न बूटै कोय ) ॥ कर्म राम वस्या वनवासे । सीता पामी  
 आल । कर्म लंका पति रावणनुं । राज्य थयो विसराल ॥ ३३ ॥ चे० ॥ कर्म  
 कीमी कर्म कुंजर । कर्म नर गुणवंत । कर्म रोग सोग दुख पीमित । जनम  
 जायै विलसंत ॥ ३४ ॥ ( चे० ) कर्म वरस लगे रिसहेसर । उदक न पा  
 में अन्न । कर्म जिननें जोउ गिमारै । खीलारोप्या कन्न ॥ ३५ ॥ चे० ॥ कर्म  
 एक सुख पालै वसै । सेवक सेवै पाय । एक हय गय चढ्या चतुर नर ।  
 एक आगल उजाय ॥ ३६ ॥ चे० ॥ उद्यम मानी अंधतणी परि । जगहीं  
 नै हाहूतो । कर्म बली ते लहै सकल फल । सुख जर सेजै सूतो ॥ ३७ ॥  
 चे० ॥ उंदर एकै कीधो उद्यम । करंमीयो करकोले । मांहे घणा दिवसनो  
 नूखो । नागरह्यो ममकोले ॥ ३८ ॥ चे० ॥ त्रिवर करी मूषक तसु सुखमां  
 दीये आपणुं देह । मार्ग लही वन नाग पधार्या । कर्म मर्म जोवो एह  
 ॥ ३९ ॥ चे० ॥ ( ढाल ५ मी ) ॥ ( तो चोढियो घण मान गजै एंचाल )  
 ॥ ❀ ॥ हिव उद्यम वादी जणें ए एच्यारे असमत्यतो । सकल पदारथ  
 साधवा ए । उद्यम एक समरत्यतो ॥ ४० ॥ उद्यम करतां मानवी ए । स्युं  
 नविसीजै काजतो । रामें रयणायर तणी ए । लीधो लंका राजतो ॥ ४१ ॥  
 कर्म नियतिनें अनुसरे ए । जेहमां सत्वन होयतो । देवल बाध सुख पंखि

या ए । पिउ पैसंता जोयतो ॥ ४२ ॥ विण उद्यम किम नीकले ए । तिल  
 माहेंथी तेजतो । उद्यम थी ऊंची चढैए । जोवो ऐकेंद्रिय बेलतो ॥ ४३ ॥  
 उद्यम करतां इकसमें ए । जेह नसीजै काजतो । ते फिर उद्यमथी हुवैए ।  
 जो नवि आवे वाजतो ॥ ४४ ॥ उद्यम करि ऊर्यां विनाए । नविरंधायै अ  
 न्नतो । आवी न परै कोजीयोए । सुखमां खेपै जतन्नतो ॥ ४५ ॥ कर्म पूत  
 उद्यम पिताए । उद्यम कीधा कर्म तो । उद्यम थी दूरे टले ए । जोउ कर्म  
 नों मर्म तो ॥ ४६ ॥ दढप्रहार हत्या करीए । कीधा पापअनंततो । उद्य  
 मथी षट मासमां ए । आप थया अरिहंत तो ॥ ४७ ॥ टीपे २ सरवर जे  
 ए । काकरे २ पालतो । गिर जेहवा गढ नीपजे ए । उद्यम सकल निहाजतो  
 ॥ ४८ ॥ उद्यमथी जल विंदुओए । करे पाहाणमां ठामतो । उद्यम थी  
 विद्या जणें ए । उद्यम जोमै दामतो ॥ ४९ ॥ ( ढाल ६ ) एठिंमी किहा राखी  
 एदेशी ॥ ❀ ॥ एपांचेही वाद करंतां । श्री जिनचरणे आवे । अमीयरसे  
 जिन वयण सुणीनें । आणंद अंग नमायेरे ॥ ५० ॥ ( प्राणी समकित मतिम  
 न आणोरे । नय एकांत मताणोरे । ते मिथ्या मत जाणोरे । आंकणी ) ॥  
 एपांचे समुदाय मिल्या विण । कोई काज न सीजै । आंगुल जोगे कवल  
 तणी पर । जे बूजै तें सीजैरे ॥ ५१ ॥ प्रा० ॥ आग्रह आणी कोई एकने ।  
 एहमां दिये वनाई । पिण सेनामिल सकल रणं गण । जीतै सुजट  
 लमाईरे ॥ ५२ ॥ प्राणी० । तंतुसज्जावै षट उपजावै । काल क्रमें वणाई  
 जवतव्यता होयें तें नीपजे । नही तो विघन घणाईरे ॥ ५३ ॥ प्राणीस० ।  
 तंतुवाय उद्यम ज्ञोक्तादिक । ज्ञाग्य सबल सहकारी । एपांचे मिल सकल प  
 दार्थ । उत्तपत जोवो विचारी रे ॥ ५४ ॥ प्राणी० ॥ नियति वसें हलुकर्म थइने  
 निगोद थकी नीकलियो । पुण्यें मनुज जवादिक पामी । सदगुरूनें जई  
 मिलियोरे ॥ ५५ ॥ प्रा० ॥ जवथितनो परपाक थयो तव । पंक्ति  
 वीर्य उलसियो । जव्यस्वजावै शिव गति गामी । शिव पुर जईनें वसियोरे  
 ॥ ५६ ॥ प्रा० ॥ वर्द्धमान जिन इण परि वीनवै । सासन नायक गावो ।  
 संघ सकल सुख दाई जेहथी । स्यादवाद रसपावोरे ॥ ५७ ॥ प्रा० ॥ ( कल  
 श ) इम धर्म नायक सुगति दायक वीर जिनवर संयुणयो । सय सतर संवत

बन्हिलोचन वर्ष हर्ष धरी घणो । श्री विजय देव सूरिंद पट्ठर विजय प्रजु  
मुणिंदए । कीर्त्ति विजय वाचक सीस इण परि विनय कहै आणंदए ॥५८॥  
इति पंच समवाय स्तवनं समाप्तम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ १४ गुणठाणास्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ थंजणपुर श्रीपास जिणंदो ॥ एवाल ॥ ❀ ॥ सुमतिजिणंद सु  
मतिदातार । वंडुं मनसुध वारंवार । आणीजाव अपार । चवदै गुणथानक  
सुविचार । कहिस्युं सूत्र अरथ मनधार । पामें जिम जवपार ॥ १ ॥ प्र  
थम मिथ्यात कह्यो गुणठाणो । बीजो सास्वादन मन आणो । तीजो मि  
श्र वखाणुं । चोथो अविरत नाम कहाणो । देशविरति पंचम परमाणो  
गठो प्रमत्त पिठाणुं ॥ २ ॥ अपरमत्त सत्तम सलहीजै । अठम अपूरव क  
रण कहीजै । अनिवृत्ति नाम नवम्म । सूखमलोत्त दसम सुविचार । उपशां  
त मोह नाम इग्यार । खीणमोह बारम्म ॥ ३ ॥ तेरम सयोगी गुणधाम ।  
चउदम थयो अयोगी नाम । वरणुं प्रथम विचार । कुगुरु कुदेव कुधम्म  
बखाण । तेह लह्ण मिथ्या गुणठाण । तेहना पंचप्रकार ॥ ४ ॥ ( ढाल २ )  
सफल संसारनी ॥ ❀ ॥ जेह एकान्त नय पट्ट थापी रहै । प्रथम एकान्त  
मिथ्यामती ते कहै । ग्रंथ उत्थापि थापै कुमति आपणी । कहै विपरीति  
मिथ्यामती ते जणी ॥ ५ ॥ जैन शिव देव गुरु सहु नमें सारिखा । तृतीय  
ते विनय मिथ्यामती पारिखा । सूत्र नवि सरदहै रहै विकल्प वणें । सं  
सयी नाम मिथ्यात चोथो जणें ॥ ६ ॥ समज नही काय निज धंधरातो  
रहै । एह अज्ञान मिथ्यात पंचम कहै । एह अनादि अनंत अजव्यनै ।  
कारिय अनादि थिति अंत सुजव्यनै ॥ ७ ॥ जेम नर खीर घृत खंरु जीमनै वमें ।  
सरस रस पाय बलि स्वाद केहवोगमें । चौथ पंचम गठे ठाण चढिनै पमै ।  
किणहि कषाय वसिआय पहिले अमै ॥ ८ ॥ रहै विच एक समयादि षट  
आवली । सहीय सासादनै थिति इसी सांजली । हिव इहां मिश्रगुण ठाण  
त्रीजो कहे । जेह उत्कृष्ट अंतर महुस्त लहै ॥ ९ ॥ ( ढाल ३ ) बेकर  
जोमीताम ॥ एहनी ॥ ❀ ॥ पहिला चार कषाय । शमकरि समक्ती ।  
कैतो सादि मिथ्यामती ए । ए बेहिज लहै मिश्र । सत्य असत्य जिहां ।

सरदहणावेनुं ठतीए ॥ १० ॥ मिश्र गुणालय मांहि । मरण लहै नही । आ  
 उबंध नपमै नवो ए । कैतो लहै मिथ्यात । कै समकित लहै । मतिसर  
 स्त्री गति पर जवै ए ॥ ११ ॥ च्यार अप्रत्याख्यान । उदय करी लहै । म  
 तिबिण किहां समकित पणो ए । ते अविरत गुणठाण । तेतीस सागर ।  
 साधिक थिति एहनी जणो ए ॥ १२ ॥ दया उपशम संवेग । निरवेद आ  
 सता । समकित गुण पांचे धरैए । सहु जिन वचन प्रमाण । जिन सास  
 न तणी । अधिक २ उन्नत करै ए ॥ १३ ॥ केईक समकित पाय । पुदग  
 ल अरधतां । उत्कृष्टा जवमें रहै ए । केईक जेदी गंठि । अंतर महुरतें ।  
 चढतें गुण सिवपद लहै ए ॥ १४ ॥ च्यार कषाय प्रथम्म । त्रिणवलि मोह  
 नी । मिथ्या मिश्र सम्यक्तनीए । साते प्रकृतिजास । परही उपसमें । ते  
 उपसम समकित धणी ए ॥ १५ ॥ जिण साते ह्य कीध । ते नर ह्यायकी ।  
 तिणहीज जव सिव अनुसरैए । आगलि बांध्यो आउ । तातें तिहां थकी ।  
 तीजै चोथे जवतरे ए ॥ १६ ॥ ( ढाल ४ ) इणपुर कंवल कोइन लेसी ॥  
 ए चाल ॥ ❀ ॥ पंचम देसविरति गुणठाण । प्रगटै चउकमी प्रत्याख्यान ।  
 जेण तजे बावीस अन्नह । पाम्यो श्रावकपणो प्रतह ॥ १७ ॥ गुण इक  
 बीस तिके पिण धरै । साचावारै बत संजारै । पूजादिक षट्कारज साधै ।  
 इग्यारै प्रतिमा आराधै ॥ १८ ॥ आरत रोद्र ध्यान हुवे मंद । आयो मध्य  
 धरम आनंद । आठ बरस ऊणी पुवकोरु । पंचम गुण ठाणें थिति जोरु  
 ॥ १९ ॥ हिव आगै साते गुणथान । इक २ अंतर महुरत मान । पंच  
 प्रमाद वसै जिण ठाम । तेण प्रमत्त ठो गुणधाम ॥ २० ॥ थिवर कजप  
 जिन कलप आचार । साधै षट् आवश्यक सार । उद्यत चोथा च्यार क  
 षाय । तेण प्रमत्त गुणठाण कहाय ॥ २१ ॥ सूधो राखे चित्तसमाधै । धर  
 मध्यान एकांत आराधै । जिहां प्रमाद क्रिया विधनासै । अपरमत्त सत्तम  
 गुण जासै ॥ २२ ॥ ( ढाल ५ ) नदी यमुनाकै तीर उमै दोय पंखीया ॥  
 ए चाल ॥ ❀ ॥ पहिले अंसै अष्ठम गुणठाणा तणें । आरंजै दोयश्रेणि  
 संखेपै ते गणें । उपशम श्रेणि चढे जे नरहुवे उपसमी । कृपक श्रेणि ह्याय  
 क प्रकृति दशह्य गमी ॥ २३ ॥ तिहां चढता परिणाम अपूर्व गुण ल

हैं । अष्ठम नाम अपूर्व करण तिणें कहै । सुकल ध्याननो पहिलो पायो  
आदरै । निरमल मन परिणाम अमिग ध्यानें धरै ॥ २४ ॥ हिव अनिवृत्त  
करण नवमो गुण जाणियै । जिहां जाव थिर रूप निवृत्ति न जाणियै ।  
क्रोध माननें माया संजलणा हणें । उदै नही जिहां वेद अवेद पणों ति  
हों ॥ २५ ॥ जिहां रहै सूखम लोचन कांडक शिव अजिलखै । ते सूखम  
संपराय दशम पंक्ति देखै । संत मोह इण नाम इग्यारम गुण कहे । मोह  
प्रकृति जिण ठाम सहु उपसम लहै ॥ २६ ॥ श्रेणिचढ्यो जो काल करै  
किणही परै । तो थायै अह मिंद्र अवर गति नादरै । च्यारवार सम श्रेणि  
लहै संसारमें । एक जवै दोय श्रेणि अधिक न हुवै किमें ॥ २७ ॥ चढि  
इग्यारम सीम समी पहिलै परै । मोह उदै उत्कृष्ट अरध पुगदल रमै ।  
खिपक श्रेणि इग्यारम गुणठाणो नही । दशम थकी बारम्म चढै ध्यानें रही  
॥ २८ ॥ ( ढाल ६ एक दिन कोई मागध आयो पुरंदर पास ) ॥ ए चाल  
॥ ॐ ॥ खीण मोह नामें गुण ठाणो बारम जाण । मोह खपायो नैनो आयो  
केवल नाण । प्रगट पणें जिहां चारित अमल यथा आख्यात । हिव आगै  
तेरम गुणठाण तणी कहै बात ॥ २९ ॥ घातीय चौकनी ह्यगई र  
हीय अघातीय एम । प्रकृति पच्यासी जेहनें जूना कापर जेम । दरसण  
ज्ञान वीरज सुख चारित पंच अनंत । केवल ज्ञान प्रगट थयो विचरै श्री  
भगवंत ॥ ३० ॥ देखै लोक अलोकनी ठानी परगट बात । महिमावंत अ  
ढारे दूषण रहित विख्यात । आठेवरसे जणी कही इक पूरव कोमि । उत्कृ  
ष्ट तेरम गुण ठाणें ए थिति जोमि ॥ ३१ ॥ कर सेलेसी करण निरुध्या  
मन वच काय । तेण अयोगी अंत समझ सहु प्रकृति खपाय । पांचे लघु  
अक्षर ऊचरतां जेहनो मान । पंचम गतिपरमें सिवपद चउदम गुणथान ।  
॥ ३२ ॥ त्रीजै बारमें तेरमें मांहे न मरै कोइ । पहिलो बीजो चोथो पर  
जव साथे होइ । नारक देवनी गतिमांहे लाजै पहिलाच्यार । धुरजा पांच  
तिरी मांहिमाणुए सर्व्व विचार ॥ ३३ ॥ ( कज्जश ) ॥ इम नगर बाहरु मेरुमं  
रण सुमति जिण सुपसानलै । गुणठाण चवद विचार वरायो जेद आग  
ननें जलै । संवत्त सतरसे षत्तीसै श्रावण वदि एकादसी । वाचक विजय श्री



हरष सानिध कहै मुनि इम धर्मसी ॥ ३४ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
इति श्री चतुर्दश गुण स्थान विचार स्तवनं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ समवसरण विचार गर्भित स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दुहा ) श्रीजिन सासन सेहरो । जगगुरु पास जिणंद । प्रण  
मी जेहना पाय कमल । आवी चौसठ इंद्र ॥ १ ॥ तीर्थकर आवै तिहां ।  
त्रिगमो करै तयार । सम कित करणी साचवै । एह कहुं अधिकार ॥ २ ॥  
करै प्रसंसा समकिती । मिथ्यात्वी होवै मूंक । सूर्य देख हरखै सहू । धणें  
अंधारै बूक ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ढाल वीर बखाणी० एचाल ॥ ❀ ॥ आप अरिहंत  
जलै आविया जी । गावै अपठरह गंधर्व । समवरण रचै सुरवराजी । सं  
खेपे ते कहुं सर्व ॥ ४ ॥ आ० ॥ जुवन पति वीश इंद्रें मिल्या जी । सोलह  
व्यंतर सार । जोइश दु दश वेमाणिय जुड्या जी । चौसठ इंद्र सुविचार  
॥ ५ ॥ आ० ॥ पवन सुरपुंज परमार जैजी । नृमि योजन समजान । मेघ  
कुमार रचै मेघनें जी । करीय सुगंध भिक्कान ॥ ६ ॥ आ० ॥ अगर कपूर  
सुन्न धूपणाजी । करय श्री अगन कुमार । वांणव्यंतर हिव वेगसुं जी ।  
रचय मणिपीठका सार ॥ ७ ॥ आ० ॥ पुहुप पंच वरण ऊरध सुखे जी ।  
वरष ए जानु परिमाण । जवणवइ देव त्रिगमो जलो जी । करय ते सुणत  
सुजाण ॥ ८ ॥ आ० ॥ रचय गढ प्रथम रूपा तणोजी । सोवन कांगरे सा  
र । रवि शशि रयण कोसीसको जी । कनक नो वीय प्रकार ॥ ९ ॥ आ० ॥  
रतन गढ रतननें कांगरै जी । रचय वेमाणि सुरराज । जलो त्रीजोगढ जी  
तरैजी । जीहां विराजै जिनराज ॥ १० ॥ आ० ॥ जौंत ऊंची धणुं पांचसै  
जी । सवा तेत्रीस विसतार । धनुषसै तेरगढ आंतरोजी । प्रोल पंचास ध  
णु च्यार ॥ ११ ॥ आ० ॥ दश पंच २ त्रिहुं गढतणी जी । पावनी वीश ह  
जार । थाक श्रम नहीय चढतां थकां जी । एक कर उच्चविस्तार ॥ १२ ॥  
आ० ॥ पंच धणु सहस पृथवी थकी जी । उच्च रहै त्रिगढ आकाश । ते  
हतल सहू यथा स्थित वसै जी । नगर आराम आवाश ॥ १३ ॥ आ० ॥  
तोरण चिहुं २ दिस तिहां जी । नील मणि मोर-निरमाण । दुसय धणु मध्य  
मणि पीठिका जी । उच्च जिण देह परिमाण ॥ १४ ॥ आ० ॥ च्यार आस

ए तिहां चिहुं दिसेंजी । मोतीयें जाक जमाल । सम विचकूण ईसाणमें  
 जी ॥ देव ठंदो सुविसाल ॥ १५ ॥ आ० ॥ देव पुंडुजि नाद उपदिसै जी ।  
 जिन गुण गावसी तेह । अह जिम आइं शिर ऊपरें जी । गाजसी तेह गुण  
 गेह ॥ १६ ॥ आ० ॥ (ढाल) सफल संसारनी ॥ ❀ ॥ पुवदिशि आसणें आइ  
 वैसै पहू । सुरकृत चौमुख रूपदेखे सहू । दीपै अशोक तरु वार गुण देह  
 थी । देखि हरषै सहू मोर जिम मेहथी ॥ १७ ॥ मोतियां जालि त्रिण ठत्र सु  
 विसालए । रूप चिहुं चिहुं दिसें चामर ढालए । योजन गामनी बांणि  
 श्री जिनतणी । जगवंत उपदिसें वार परषद जणी ॥ १८ ॥ प्रदक्षिणा  
 रूपथी अगनिकूणें करी । गणधर साधवी तिम वैमाणीय सुरी । ज्योतषी  
 जुवणनी वितरी स्त्री पणें । नैरुत कूण जिन वाणि ऊजी सुणें । त्रिहुं तणा  
 पति वाय कूणमें जाणए । सुर वैमाणीय नर नारि ईसाण ए । वारह परष  
 दा मद मठर ठोरु ए । चूख त्रिष बीसरै सुणें कर जोरुए ॥ १९ ॥ पूठ  
 चामरुल तेज प्रकास ए । जोयण सहस धज ऊंच आकास ए । जल  
 हलै तेज ध्रुम चक्र गगनैं सही । महक सहू वारणें धूप धांणा सही  
 ॥ २० ॥ वाहण वहिल सहुधरीय पहिलै गढै । होइ पग चारि नरनारि  
 ऊंचा चढे । जिन तणी वाणि सुणि जीव तिरजंच ए । वैर तजि वीय  
 गढ रहै सुख संच ए ॥ २१ ॥ पुण्यवंत पुरषते परषद वारमें । सुणें जिन  
 वाणि धन गणय अवतार में । चौविह देव जिण देव सेवा रचै । मणिम  
 यी मांहिली प्रोलमांहे वसै ॥ २२ ॥ चिहुं दिसि वाटली वावि चौ जाणी  
 यै । विदसि चौकूण दोइ २ वखाणिये ॥ आठ जिहां वावि जल अमृत  
 जेम ए । स्नान पानें वषु निरमल हेम ए ॥ २३ ॥ जय विजय जयंत  
 अपराजिया । मध्य कंचण गढै प्रोल वसंतिया । तुंवरु पुरुष खटंग अर्चि  
 माल ए । रजतगढ प्रोलना एह रखवाल ए ॥ २४ ॥ पहिल त्रिगम्भो नहुअ  
 जिण पुर ग्राम ए । देव महर्षिक रचै तिण ठाम ए । करण वारवार नहीं का  
 रण कोई ए । आठ प्रातीहारज ते सही होइ ए ॥ २५ ॥ जिण समवसर  
 णनी रुद्धि दीठी जीयै । तेह धन धन्य अवतार पायो तिये । पास अरदा  
 स सुणी वंजित पूरज्यो । हिव मुऊ ताहरो सुद्ध दरसण हुज्यो ॥ २६ ॥

( कलश ) इम समवसरणें रुद्धिवरणें सहू जिनवर सारखी । सरद है ते लहे सुख समकित परम जिन धर्म पारखी । प्रकरण सिद्धांते गुरु परंपर सुणी सहू अधिकार ए । संस्तव्यो पास जिणंद पाठक धर्म वर्धन धार ए ॥ २७ ॥ इति समव सरण विचार जाषा गर्भिजत स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ आवूजी तीर्थ महिमा स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जात्रीना जाई आवूजीनी जात्र करे ज्यो । जात्र जणी उमहे ज्यो । तुहे नरनव लाहो जीज्योरे ॥ जात्री० ॥ पंचतीरथी मांहेभाजे । आवू मारुमै देस विराजैरे ॥ जा० ॥ स्वर्गथी वादै लागो । उंचो अंबरीयै जाइ लागोरे ॥ १ ॥ जा० ॥ एतो देवांनो वास कहावै । निरखंता त्रिपति नथावेरे ॥ जा० ॥ एतो इंगरीयानो राजा । एहनीठे वारह पाजारे ॥ २ ॥ जा० ॥ बहरितु वास वणाव्यो । एतो चंपला अंबलां भायोरे ॥ जा० ॥ सरवर जरणा जाजा । जिहां तिहां वनवेढ्यां आजारै ॥ ३ ॥ जा० ॥ जार अढारे वणराई । एतो इहांहीज निजरे आईरे ॥ जा० ॥ दह दिस परमल आवै । फूलमानो रंग सुहावेरे ॥ ४ ॥ जा० ॥ ऊपर चूमि विसाला । देव ल दीठा रलीयालारे ॥ जा० ॥ विमल मंत्री वरदाई । चक्रेसरि देवि सहाईरे ॥ ५ ॥ जा० ॥ पोरवारु वंस वदीतो । जिण दल पतिसाही जीतोरे ॥ जा० ॥ देवल तेण करायो । पाहण आरास मंरायोरे ॥ ६ ॥ जा० ॥ जीणी २ कोरणी जेरयो । दल मांखण जेम उकेरयोरे ॥ जा० ॥ नवी २ जांतिवनाई । जिहां तिहां कोरणीया जिणाईरे ॥ ७ ॥ जा० ॥ उत्तरे पाहणजेतो । जोपीजै पाहण ते तोरे ॥ जा० ॥ आदिजिणैसर सामी । प्रतिमा थापी हित कामीरे ॥ ८ ॥ जा० ॥ उगणीस कोरु सोनईया । द्रव्य लागति करि जस लीयोरे ॥ जा० ॥ करजो डीनै आगै । मंत्री जिनवर पाय लागैरे ॥ ९ ॥ जा० ॥ पृष्ठे चढीया हा थी । मंराणा पति साह साथीरे ॥ जा० ॥ इण देवल सम वडकोई । चूम मल मांहे न होईरे ॥ जा० ॥ १० ॥ वलि तिण वंस विगताला । वस्तुपाल अने तेजपालारे ॥ जा० ॥ देवनमी रिद्धिपाई । इहां तियां पिण सफल क राईरे ॥ ११ ॥ जा० ॥ तेहवो जिणहर पासैं । वारकोरुनी लागति आसैरे जा० ॥ देवराणी जेठाणी । आदानी अजव कहाणीरे ॥ १२ ॥ जा० ॥

इहां देवल सोह वधारी । नेमनाथजी वाल ब्रह्मचारीरे ॥ जा० ॥ कसवट  
पांहुण केरी । सूरति सुरमा रंग हेरीरे ॥ १३ ॥ जा० ॥ देवल वामो दीठो ।  
तेतो लागै नयणे मीठोरे ॥ जा० ॥ तिहां केई देवल पासै । लोकजोवै घ  
णो तमासोरे ॥ १४ ॥ जा० ॥ त्रिणगान आगल जाईयै । देवल देखी सुख  
लहीयैरे ॥ जा० ॥ चौमुख प्रतिमा च्यारो । आदिनाथ देव जुहारोरे ॥ १५ ॥  
जा० ॥ सोवनमें साते धातो । जिग मिग रही दिनने रातोरे ॥ जा० ॥ म  
ण चवदैसै चम्मालौ । जिण बिंवनो चार निहालोरे ॥ जा० ॥ १६ ॥  
श्रीमाली नोम सोनागी । जिणवरथी जसुलय लागीरे ॥ जा० ॥ एहनी  
करणी वाह वाहो । इहांलीधो लखमी लाहोरे ॥ १७ ॥ जा० ॥ ए डुंगरी  
यै आवी । जिण जात्रकरै मनचावीरे ॥ जा० ॥ जिहां तिहां पूज रचावै ।  
नाटकीया नाच करावेरे ॥ १८ ॥ जा० ॥ रातीजोगो दिवरावो । जिणवर  
ना जस गुण गावोरे ॥ जा० ॥ साहमी वढल कीज्यो । जातरुलीनो ज  
स लीज्योरे ॥ १९ ॥ जा० ॥ आगेथी आवी चाली । वातां केई अचरिज  
वालीरे ॥ जा० ॥ सुणीयैबै जे कोई । अहिनाणें जो ज्यो तेईरे ॥ २० ॥  
जा० ॥ ए तीरथ गुणगावे । जात्रानो फलते पावैरे ॥ जा० ॥ ए तीरथ स  
म तोले । कुणआवै रूप चंद वोलैरे ॥ २१ ॥ जा० इति आबूजी स्तवनं ॥ ❀ ॥  
॥ ❀ ॥ अथ श्रीशीतल जिन चैत्य प्रतिष्ठा स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ऋषी जिनपूजोरे शीतल जिन पतीरे । नयना नंदन चंद । प्रनु  
जी विराजैरे सूरति बिंदैरे । नंदा देवीना नंद ॥ १ ॥ ऋ० ॥ जग हितकारी  
रे जिनजी अवतरचारै । श्रीदृढरथ नृप गेह । श्रीवढ सोहैरे लांठन सुंदरूरे ।  
कनकवर्ण प्रनुदेह ॥ २ ॥ ऋ० ॥ विषय निवारीरे संयम संग्रहोरे । लाधुं के  
वल नांण । सघन घनाघन जिमधम दरसतारे । विचरथा त्रिनुवन चांण  
॥ ३ ॥ ऋ० । वेदनी प्रमुख जे सेष रह्या हुतारे । च्यार अघाती कर्म ।  
दूर निवारचारै अनुक्रम तेहनैरे । पाम्युं शिव पद सर्म ॥ ४ ॥ ऋ० ॥ संप्र  
तिकालैरे श्रीजिन राजनोरे । पूजीजै प्रतिबिंब । प्रतिदिन लहीयैरे प्रनु सुप्र  
साद थीरे । वांठित फल आविलंब ॥ ५ ॥ ऋ० ॥ श्रीजिनवरनो बिंब वि  
लोक्तांरे । उकृत दूर पुलाय । इंद्रियनिग्रह सुग्रह संपजैरे । समक्ति पिण दृढ

थाइ ॥ ६ ॥ ज० ॥ श्रीसङ्गुना मुखथी सांजल्यारे । एहवा वचन विलास ।  
 ते बहुमानेरे निज चित्तमें धर्यारे । नेमीसुत जाईदास ॥ ७ ॥ ज० ॥ चैत्य  
 कराव्युंरे सुंदर सोजतोरे । मनधारे अधिक उलास । शीतल प्रनुनोरे विंव  
 जरावीयोरे । सहस फणा बलि पास ॥ ८ ॥ ज० ॥ वरस अठारह सत्तावीसमेंरे ।  
 माधव मास मजार । उज्जाल द्वादसी दिवसे थापीयारे । विंव अनेक उदार ॥ ९ ॥  
 ज० ॥ एकसो इक्यासी सहु मेलै थयारे । विंवादिक सुविचार । कीध प्रतिष्ठा  
 ते दिन तेहनीरे । विधपूर्वक मन धार ॥ १० ॥ ज० ॥ श्री जिनलाज सूरि  
 श्वर दीपतारे । श्रीखर तर गढ जाण । तासपसाय में शीतल जिन थुणपारे ।  
 विबुध कृमाकल्याण ॥ ११ ॥ ज० ॥ ❀ ॥ इति शीतल जिन स्तवनं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अढाई द्वीप २० विरहमान स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वंडुं मनसुध विहरमाण जिणोसर बीस । दीप अढीमें दीपै जै  
 वंता जगदीस । केवल ग्यांननें धारे तारे करि उपगार । किण २ ठामें कु  
 ण २ जिन कहिस्युं सुविचार ॥ १ ॥ पेंतालीस लक्ष जोयण मानुक्ष क्षेत्र  
 प्रमाण । बलियाकारै आधै पुष्करसीमा जाण । दोय समुद्रे सोहे दीप  
 अढाई सार । तिणमें पनरे करमा चूमीनो कहूं अधिकार ॥ २ ॥ पहिलो  
 जंबूदीप समै विच थाल आकार । लांबो पिहुलो इकलख जोयणनें विसतार ।  
 मोटो तेहनें मध्य सुदरशण नामें मेर । तिणथी दिसा विदिसांनी गिणती च्या  
 रे फेर ॥ ३ ॥ मेरुथकी दक्षिणदिसि एहजरत सुजक्षेत्र । पांचसे ढाईस  
 जोयण ढकला तेहनो क्षेत्र । उत्तरखंभमें एहवो ऐरवतक्षेत्र कहाय । इण  
 विहुं करमांचूमी अरा ढई फिरता जाइ ॥ ४ ॥ तेत्रीस सहस्र ठसे चौरा  
 सी जोयण जाण । च्यारकला ए महाविदेह विखंज वखाण । वावीससे तेरे  
 जोयण एकविजै पहुलाण । एहवी वत्तीस विजय विराजे जेहनें ठाण ॥ ५ ॥ मे  
 रुविचे कर पूरव पठिम दोय विजाग । सोलै २ विजय तिहां विचरे श्रीवीतराग ।  
 सासते चौथे आरे तारे श्रीअरिहंत । एहवो महाविदेह करम चूमि त्रीजीनंत  
 ॥ ६ ॥ पूरवविदेह विजै पुष्कलावति आठमी ठाम । पुंरुकीकणीनगरी तिहां श्री  
 सीमंधर स्वांम । वप्रविजै पचीसमी विजया पुरनो नाम । पठिम विदेह बीजो शु  
 गमंधर कीजै प्रणाम ॥ ७ ॥ तिमहीज नवमी वडविजै बलि पूरवविदेह । नयर सु

सीमा त्रीजो बाहु नमुं धरि नेह । नलिनावर्त्त चौबीसमी पन्निम विदेह वखाण ।  
 वीतसोका नगरी तिहां चौथो सुवाहु जांण ॥ ८ ॥ ए च्यारेई जिणवर जंबूछीप  
 मजार । महाविदेह सुदरशण मेस्तणें परकार । एहवो जंबूछीप महागढ  
 जेम गिरंद । खाई रूपे दोइलख जोयण लवणसमंद ॥ ९ ॥ ( ढाल दीवाली  
 दिन आवीयो एचाल ) ॥ दीपे त्रीजो दीपए । धन २ धातकीखंरु । पिहुलो  
 चिहुं लख जोयणे । मंरुल रूपे मंरु ॥ १० ॥ दी० ॥ दोइ जस्त दोइ ऐखत ।  
 दोइ वलि महाविदेह । करमचूमी षट्ठै जिहां । उणहीज नामें एह ॥ ११ ॥  
 दी० ॥ पूरव पन्निम धातकी । खंरु गिणीजै दोउ । विजयमेरु पूरव दिसे ।  
 पन्निम अचलमेरु जोइ ॥ १२ ॥ दी० ॥ इक २ मेरुनैं आंतरै । करमचूमि तीन  
 २ । निज २ मेरुथी मांनिनैं । लेखो चिहुं दिस लीन ॥ १३ ॥ दी० ॥ श्रीसुजात  
 जिन पांचमो । ठठो स्वयंप्रचू ईस । रिषजानन जिन सातमो । समरीजे  
 निस दीश ॥ १४ ॥ दी० ॥ अनंत वीरज जिन आठमो । ए च्यारेजिन राय ।  
 पूरव धातकी खंरुमें महाविदेह रहाय ॥ १५ ॥ दी० ॥ पहिली चिहुं जिननी  
 परै । विजय नगर दिशिठाण । तिणहीज नामें अनुक्रमें । विजय मेरु अहि  
 नाण ॥ १६ ॥ दी० ॥ नवमो सूर प्रनु नमुं । दसमो देवविशाल । इम वज्रधर  
 इग्यारमों । त्रिकरण नमुं त्रिहुंकाल ॥ १७ ॥ दी० ॥ बारमो चंद्रानन जिन ।  
 पन्निम धातकी मांहि । विचरै च्यारे जिणवरा । अचलमेरु उठाहि ॥ १८ ॥  
 दी० ॥ एहवो धातकी खंरुए । परदहणा परकार । अछलख जोयण बींटीयो  
 समुद्र कालोदधि सार ॥ १९ ॥ दी० ॥ ( ढाल ३ पहिली प्रतिमा एकणमा  
 सनी० एचाल ) ॥ कालोदधिनें पैलै पारए । बींट्यो चूनी जेम विचालए ।  
 सोलह लख जोयण विसतारए । दीप पुष्कर वर अति सुखकारए । ( उ० )  
 सुखकार पुष्कर दीप त्रीजो तेहनें आवैपगे । विचपड्यो परवत मानुषोत्तर  
 मनुष्यक्षेत्र तहांलगै । तिण आधिकर अछलाख जोयण अरधपुष्कर एक  
 ए । तिहां करमचूमी ठए कहीजै धातकी खंरु जेमए ॥ २० ॥ ( ढाल ) आ  
 धे पुष्करनें पूरव दिसे । मंदरनामें मेरु तिहांवसे । पन्निम विष्णुमाली मेरुए ।  
 इहां किण इतरो नामें फेरए । ( उ० ) फेरए इतरो इहां नामें अवरठामें को  
 नही । एक एक मेरे तीन तीने करमचूमी तिहां कही । इम जस्त ऐखत महा



विदेहै नांमसरखो हेतए । तिणहीज नामें विजै सगली सासता ध्रमखेतए ॥ २१ ॥ ( ढाल ) धातकीखंमै तिम पुष्कर सही । इहां खेत्रांनी रचनां वि  
 ध कही । वार २ कहतांए विसतारए । पहिला परलेज्यो सुविचारए । ( न० )  
 सुविचार वाकी तेहसगलो नगर तिमहीज मनगमें । पूरवै पष्ठिम जेहनीते  
 तेह तिमहीज अनुक्रमें । श्रीचंद्रबाहु जुजंग ईसर नेम च्यार तिर्थ करा ।  
 पूरवै पुष्कर अरधमां हे सरवजीव सुखंकरा ॥ २२ ॥ ( ढाल ) वैरसेन बंडु  
 जिन सतरमो । श्रीमहाजद्र अठारम नित नमो । देवजसा जगणीसम देव  
 ए । जसोरिध वीसम जिण देवए । ( न० ) जिणच्यार पुष्कर अरध मां  
 हि कहा पष्ठिम जागए । तिहां मेरु विद्युन्मालि चिहुंदिशि विचरता बीत  
 रागए । चौरासी पूरवलाख वरसां आन इक २ जिनतणो । पांचसै धनुष  
 सरीर सोहे सोवन वरण सुहामणो ॥ २३ ॥ ( ढाल ) कालजयन्यै एजिण  
 वीसए । हिव नतकृष्टे जेदकहीसए । एकसो सत्तरि तिहां जिणवर कहे ।  
 पांचे भरते जिमपांचे लहै । ( न० ) जिणलहै पांचे तेमपांचे ऐरवत मि  
 ल दशहुवा । इक २ विदेहै वत्तीस विजयां तिहां पिणठै जू जू आ । एक  
 सो सत्तरि एम जिनवर कोम्निवसय बलि केवली । नव सहस कोमी अवर  
 सुनिवर वंदीयै नित ते वली ॥ २४ ॥ ( ढाल ) इहां भरतें ऐरवतें आजए  
 पांचमें आरे नही जिनराजए । धन २ पांचे महाविदेहए । विचरै वीसे जिन  
 गुणगेहए । ( न० ) गुणगेह दोष अठार वरजित अतिसया चौतीसए ।  
 चौसठि इंद नरिंद सेवित नमुं ते निसदीसए । तिहां आज तारण तरण  
 विचरै केवली दोय कोमए । दोईसहस कोमि सुसाधु बीजा नमुं वे कर जो  
 रुए ॥ २५ ॥ ( कलश ) इम अढीदीपै पनर करमाचूमि खेत्र प्रमाणए । सि  
 धांत प्रकरण मांहजाण्या वीस विहरमाणए । श्रीनगर जेशजमेर संवत  
 सतर गुणतीसै समै । सुख विजय हरप जिणंद सानिध नेहधारि ध्रमसीनमें ॥  
 ॥ २६ ॥ इति श्रीमेरुपर्वत कर्मचूम्यादि विचार गर्भितं विंशति विहरमा ए  
 जिनानां वृद्धिस्तवनं ॥ ❀ ॥ १ जंबुद्वीप, २ धातकी खंम, आयो पुष्करद्वीप,  
 एवं २ ॥ द्वीपमें ५ भरत ५ ऐरवत, ५ महाविदेह, १५ कर्मचूम्यामें विचरता  
 सास्वता २० विहरमानको मेरा नमस्कार हुवो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सकल शास्वताचैत्य नमस्कार स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( ढाल वेकर जोनीताम एचाल ) ॥ रिषजानन ब्रधमान । चंद्रानन  
जिन । वारिषेण नामें जिणाए ॥ १ ॥ तेह तणा प्रासाद । त्रिचुवन सासता  
प्रणमुं विंव सोहामणाए ॥ २ ॥ चेईहर सगकोमि । लाख बहुत्तर । चे  
ईय प्रतिमा सो असीए ॥ ३ ॥ तेरेसै निव्यासी कोमि । साठ लाख सुंद  
र । चुवनपती मांहि मन वसीए ॥ ४ ॥ वारै देव लोक प्रासाद । चौरासी  
लाख । सहस छिन्नूनें सातसैए ॥ ५ ॥ ( ढाल २ आव्यो तिहां नरहर एचाल )  
॥ ❀ ॥ हिवे नव ग्रीवैकै पंचानुत्तर सार । चेईहर त्रणसय त्रेवीसा सुविचार  
प्रत्येकै प्रतिमा बीसासो तिहां जाण । अरुत्रीस सहस सत साठ अठै गु  
ण खाण ॥ ६ ॥ नंदीसर बांवन कुंमल रुचिक वखाण । चऊ २ चेई हर  
साठ सवे त्रिहुं ठाण । इकसो चौबीसे गुण प्रतिमा चिहुंनाम । चारसै  
चालीसा सात सहस प्रणमाम ॥ ७ ॥ नंदीसर विदिसै सोलस कुलगिरि  
तीस । मेरुवन अस्सी दस कुरु गजदंते बीस । मानुषोत्तर परवत च्यार २  
इखुकार । असो अति सुंदर वहास्कार मजार ॥ ८ ॥ ( ढाल ३ ) ॥ दिग्गज  
गिरचालीस । असीद्रह सुजगीस । कंचन गिर वरुए । एक सहस धरुए  
॥ ९ ॥ वृत्त दीरघ वैताढ्य । बीस सतरसो आढ्य । सत्तर महानदीए । पं  
च चूला सदीए ॥ १० ॥ जंबू प्रमुख दसरुख । इग्यारैसै सत्तर सुख । कुं  
मत्रणसय असीए । बीस जमग वसी ए ॥ ११ ॥ ( ढाल ४ ) ॥ त्रिण सहस सो  
एक निवाणुरे । जिनवर प्रासाद वखाणुं । बीस सो ए अंक गुणीयैरे । ती  
र्थकर प्रतिमा थुणीये ॥ १२ ॥ त्रिण लाख सहस बलि व्यासीरे । प्रतिमा  
आठ सोनै असी । सरवाले सब मेली जैरे । जिनवर प्रासाद नमीजै ॥ १३ ॥  
आठ कोमि सत्तावन लक्खारे । दोयसै निव्यासी कयरुखा । हिव प्रतिमा  
ग्यांन कहीजैरे । जिनवरनी आण वहीजै ॥ १४ ॥ पनरैसै बैतालीस को  
मीरे । अरुवन लख अधिके जोनी । छत्तीस सहस अधिक कहीयेरे । प्रति  
मा सगली सरदहीये ॥ १५ ॥ ( ढाल ५ मी ) ॥ जोइस वितर प्रतिमा सा  
सती । असंख्यात बलि जेहोजी । पाय कमल तेहना नित प्रणमीये । सो  
वन वरण सुदेहोजी ॥ १ ॥ विनय करी जिन प्रतिमा वंदीये । सुंदर सकल

सरूपोजी । पूजै प्रतिमा चोविह देवता । वलिय विद्याधर जूपोजी ॥ २ ॥  
 वि० ॥ जिन प्रतिमा बोली जिन सारखी । हित सुख मोह नी दानोजी । न  
 वियणनें जवसायर तारवा । प्रवहण जेम प्रधानोजी ॥ ३ ॥ वि० ॥ जीवाग्नि  
 गम प्रमुख मांहि जाषीयो । एसहु अरथ विचारोजी । सांजालितां जण  
 तां सुख संपदा । हियमै हरष अपारोजी ॥ ४ ॥ वि० ॥ (कलश) ॥ इम सास  
 ता प्रासाद प्रतिमां संधुण्या जिनवर तणा । चिहुं नांम जिण चंद तणा  
 त्रिजुवन सकलचंद सुहावणा । वाचना चारज समय सुंदर गुणजणें अजिरा  
 मए । त्रिहुं काल त्रिकरण शुद्ध होय ज्यो सदा मुज परणांमए ॥ ❀ ॥  
 इति शास्वता जिनचैत्य विंबसंख्या स्तवनं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीधरमनाथ स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हांरे हुंतो जखवागईथी त्रटजमुनाके तीरजो० एचाल० ॥ हांरे  
 ह्वारे धरमजिणं दसुं लागी पूरण प्रीतजो । जीवरुजो जलचाणो जिनजीनी  
 ऊजगैरेलो । हांरेमुनें थास्पें कोइक समेंप्रचु सुप्रसन्न जो । वातरुजीतवथास्पे  
 माहरी सवि वगेरेलो ॥ १ ॥ हांरेकोई पुर्जननो जंजेरयो माहरो नाथजो । ऊजव  
 स्पे नहिक्यारे कीधी चाकरीरेलो । हांरेमोरा स्वामीसरीषो कुणठे पुनियां माहिं  
 जो । जईयेरे जिम तेहने घर आस्याकरीरेलो ॥ २ ॥ हांरेजससेव्यांसेती स्वार  
 थनी नसिद्धजो । ठालीरे सीकरवी तेहथीगोठडीरेलो । हांरेकाई झूठुंसायते मि  
 ठाइनें माटेंजो । क्याहीरे परमारथनी नहि प्रीतडीरेलो ॥ ३ ॥ हांरेप्रचु अंतरजां  
 मी जीवनप्राणाधारजो । वायोरे नवि जाण्यो कलियुग वायरो रेलो । हांरेमोरा  
 लायक नायक जगति वज्रल जगवांनजो । वारूरे गुणकेरा साहिव  
 सायरूरे लो ॥ ४ ॥ हांरेप्रचु लागी मुजनें ताहरी माया जोरजो । अज  
 गारे रह्याथी होइत जोगलोरेलो । हांरे कुण जाणें अंतर गतिनी विण  
 महाराजजो । हेजेरे हसी बोलो ठंभी आंमजोरेलो ॥ ५ ॥ हांरेताहरे  
 मुखनें मटके अटक्युं माहरुं मन्नजो । आंखरुजी अणीआली कांमण  
 गारीयुंरेलो । हांरे माहरा नयणां लंपट जोवे खिण खिण तुज्जो । रातीरे  
 प्रचुरागे नरहे वारीयांरेलो ॥ ६ ॥ हांरे प्रचु अजगा तोपिण जाणज्यो करीनें

हजूरजो । ताहरीरे बलिहारी हुंजाजं वारणें रेखो । हांरे कवि रूपविबुधनो मो  
हन करै अरदासजो । गिरुआ थई मन आंणो जलट अतिवणो रेखो ॥ ७ ॥  
इति श्री धर्म नाथ जिन स्तवनं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ दर्शन द्वार स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ समकित द्वारगुंजारे पेसतांजी । पापपडल गयादूरे । मोहन मरुदे  
वीनो लाम्बोजी । दीठो मीठो आनंदपुरे ॥ १ ॥ स० ॥ आयूवरजित सातेकर्म  
नीजी । सागर कोना कोमी हीणरे । स्थिती पढम करणें करी जीवनेंजी । वीरज  
अपूरवनो घरलीधरे ॥ २ ॥ स० ॥ जुंगलजागी आद कषायनीजी । मिथ्यातमो  
हनी सांकलसाथरे । बार उघामा सम संवेग नांजी । अनुजव जवनें वेठो नाथरे  
॥ ३ ॥ स० ॥ तोरण बांधु जीवदया तणुंजी । साथीयो पूरो सरधारूपरे । धूपघ  
टी प्रनुगुण अनुमोदनाजी । द्विगुण मंगल आठ अनूपरे ॥ ४ ॥ स० ॥ सें  
बरपांणी अंगपखालणेंजी । केशर चंदन उत्तम ध्यानरे । आतम गुण रुची मृग  
मद मह महेंजी । पंचाचार कुशम परधानरे ॥ ५ ॥ स० ॥ जाव पूजानें पा  
वत आतमाजी । पूजो परमेसर पुन्यपवित्ररे । कारणजोगें कारज नीपजेजी  
खिमा विजय जिन आगम रीतरे ॥ ६ ॥ स० ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
इति श्री आदीश्वरजिन स्तवनं संपूर्णं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ श्रीअष्टापद तीर्थ स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मनडो अष्टापद मोहो माहरो जी । नाम जपुं निसदीसजी । च  
त्तारी अष्ट दश दोय वंदियाजी । चिहुंदिस जिन चौबीसजी ॥ १ ॥ म० ॥ जो  
जन जोजन अंतरेंजी । पावरु साजा आठजी । आठ जोजन जंचो देहरोजी  
दुख दोहग जाये नाठजी ॥ २ ॥ म० ॥ जरतें जराव्या जजा देहराजी । सोजै  
प्यारा थंजजी । आप मूरति करे सेवनाजी । जाणो जोईजै जजजी ॥ ३ ॥ म० ॥  
गौतमस्वामि तिहां चढ्याजी । आंणी जागीरथ गंगजी । गोत्र तीर्थकर बां  
धियोजी । रावण नाटक रंगजी ॥ ४ ॥ म० ॥ देवे नदीधी सुजनें पांखनीजी  
आहुं केस हजूरजी । समय सुंदर कहै वंदनाजी । ग्रह जगमते सूरजी ॥ ५ ॥  
म० ॥ इति श्री अष्टापद स्तवनं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

सरूपोजी । पूजै प्रतिमा चोविह देवता । वलिय विद्याधर चूपोजी ॥ २ ॥  
 वि० ॥ जिन प्रतिमा बोली जिन सारखी । हित सुख मोह नी दानोजी । न  
 वियणनें प्रवसायर तारवा । प्रवहण जेम प्रधानोजी ॥ ३ ॥ वि० ॥ जीवात्रि  
 गम प्रमुख मांहि प्राणीयो । एसहु अरथ विचारोजी । सांजालितां अण  
 तां सुख संपदा । हियमै हरष अपारोजी ॥ ४ ॥ वि० ॥ (कलश) ॥ इम सास  
 ता प्रासाद प्रतिमां संथुण्या जिनवर तणा । चिहुं नांम जिण चंद तणा  
 त्रिचुवन सकलचंद सुहावणा । वाचना चारज समय सुंदर गुणअणें अत्रिरा  
 मए । त्रिहुं काल त्रिकरण शुद्ध होय ज्यो सदा मुऊ परणामए ॥ ❀ ॥  
 इति शास्वता जिनचैत्य विंबसंख्या स्तवनं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीधरमनाथ स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हांरे हुंतो प्रस्वागईथी त्रटजमुनाके तीरजो० एचाल० ॥ हांरे  
 ह्यारे धरमजिणं दसुं लागी पूरण प्रीतजो । जीवरुलो ललचाणो जिनजीनी  
 उज्जगैरेलो । हांरेमुनें थास्पें कोइक समेप्रनु सुप्रसन्न जो । वातरुलीतबथास्पे  
 माहरी सवि वगेरेलो ॥ १ ॥ हांरेकोई पुर्जननो प्रजेरयो माहरो नाथजो । उजव  
 स्पे नहिक्यारे कीधी चाकरीरेलो । हांरेमोरा स्वामीसरीषो कुणठे पुनियां माहिं  
 जो । जईयेरे जिम तेहने घर आस्याकरीरेलो ॥ २ ॥ हांरेजससेव्यांसेती स्वार  
 थनी नसिद्धजो । ठालीरे सीकरवी तेहथीगोठडीरेलो । हांरेकांई झूठुंखायते मि  
 ठाइनें माटेंजो । क्याहीरे परमारथनी नहि प्रीतडीरेलो ॥ ३ ॥ हांरेप्रनु अंतरजां  
 मी जीवनप्राणाधारजो । वायोरे नवि जाण्यो कलियुग वायरो रेलो । हांरेमोरा  
 लायक नायक प्रगति बल्लज प्रगवानजो । वारूरे गुणकेरा साहिव  
 सायरूरे लो ॥ ४ ॥ हांरेप्रनु लागी मुऊनें ताहरी माया जोरजो । अल  
 गारे रक्षाथी होइउ प्रोगलोरेलो । हांरे कुण जाणें अंतर गतिनी विण  
 महाराजजो । हेजेरे हसी बोलो ठंभी आंमलोरेलो ॥ ५ ॥ हांरेताहरे  
 सुखनें मटकें अटक्युं माहरुं मन्नजो । आंखरुली अणीआली कांमण  
 गारीयुरेलो । हांरे माहरा नयणां लंपट जोवे खिण खिण तुऊजो । रातीरे  
 प्रचुरागे नरहे वारीयां रेलो ॥ ६ ॥ हांरे प्रनु अलगा तोपिण जाणज्यो करीनें

हजूरजो । ताहरीरे वलिहारी हुंजाजं वारणें रेजो । हांरे कवि रूपविबुधनो मो  
हन करै अरदासजो । गिरुआ थई मन आंणो ऊलट अतिघणो रेजो ॥ ७ ॥  
इति श्री धर्म नाथ जिन स्तवनं ॥ ❀ ॥      ॥ ❀ ॥      ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ दर्शन द्वार स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ समकित द्वारगुंजारे पेसतांजी । पापपडल गयादूररे । मोहन मरुदे  
वीनो लामलोजी । दीठो मीठो आनंदपूररे ॥ १ ॥ स० ॥ आयूवरजित सातेकर्म  
नीजी । सागर कोमा कोमी हीणरे । स्थिती पढम करणें करी जीवनेंजी । वीरज  
अपूरवनो घरलीधरे ॥ २ ॥ स० ॥ जुंगलजागी आद कषायनीजी । मिथ्यातमो  
हनी सांकलसाथरे । बार उघामा सम संवेग नांजी । अनुभव जवनें वेठो नाथरे  
॥ ३ ॥ स० ॥ तोरण बांधुं जीवदया तणुंजी । साथीयो पूरो सरधारूपरे । धूपघ  
टी प्रचुगुण अनुमोदनाजी । द्विगुण मंगल आठ अनूपरे ॥ ४ ॥ स० ॥ सं  
वरपांणी अंगपखालणेंजी । केशर चंदन उत्तम ध्यानरे । आतम गुण रुची मृग  
मद मह महेंजी । पंचाचार कुशम परधानरे ॥ ५ ॥ स० ॥ जाव पूजानें पा  
वत आतमाजी । पूजो परमेसर पुन्यपवित्ररे । कारणजोगें कारज नीपजेजी  
खिमा विजय जिन आगम रीतरे ॥ ६ ॥ स० ॥      ॥ ❀ ॥      ॥ ❀ ॥  
इति श्री आदीश्वरजिन स्तवनं संपूर्णं ॥ ❀ ॥      ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीअष्टापद तीर्थ स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मनडो अष्टापद मोहो माहरो जी । नाम जर्पु निसदीसजी । च  
त्तारी अठ दश दोय वंदियाजी । चिहुंदिस जिन चौबीसजी ॥ १ ॥ म० ॥ जो  
जन जोजन अंतरेजी । पावन साजा आठजी । आठ जोजन ऊंचो देहरोजी  
हुख दोहग जाये नाठजी ॥ २ ॥ म० ॥ जरेत जराव्या जजा देहराजी । सोजै  
प्यारा थंजजी । आप मूरति करे सेवनाजी । जाणो जोईजै ऊजजी ॥ ३ ॥ म० ॥  
गौतमस्वामि तिहां चढयाजी । आंणी ज़ागीरथ गंगजी । गोत्र तीर्थकर बां  
धियोजी । रावण नाटक रंगजी ॥ ४ ॥ म० ॥ देवे नदीधी सुजने पांखनीजी  
आहुं केम हजूरजी । समय सुंदर कहै वंदनाजी । ग्रह जगमते सूरजी ॥ ५ ॥  
म० ॥ इति श्री अष्टापद स्तवनं ॥ ❀ ॥      ॥ ❀ ॥



॥ ❀ ॥ अथ श्री अजित जिन स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( अनंत जिन आपज्योरे ) ॥ एवाल ॥ ज्ञानादिक गुण संपदोरे  
तुज अनंत अपार । तेशांजलतां ऊपनीरे । रुचि तिण पारउतार ॥ १ ॥ अजि  
तजिन तारज्योरे । तारज्योदीन दयाल । अजित जि० ( आंकणी० ) जे जे  
कारणजेहनोरे । सांमग्री संयोग । मिलतां कार्य नीपजेंरे । कर्त्ता तनय प्रयोग  
॥ २ ॥ अ० ता० ॥ कार्य सिद्धि कर्त्ता वसुरे । लहि कारण संजोग । निज  
पद कारक प्रभु मिल्योरे । होय निमित्त मजोग ॥ ३ ॥ अ० ता० अ०  
अज कुल गत केसरी लहेंरे । निज पद सिंघ निहाल । तिम प्रभुजक्तें प्रवि  
लहेंरे । आतिम शक्ति संचाल ॥ ४ ॥ ( अ० ता० ) ॥ कारण पद कर्त्ता पणोरे  
करि आरोप अज्जेद । निज पद अर्थी प्रभुथकीरे । करै अनेक उमेद ॥ ५ ॥  
( अ० ता० अ० ) अहवा परमात्म प्रभूरे । परमानंद स्वरूप । स्पाध्राद सत्तार  
सीरे । अमल अखंरु अनूप ॥ ६ ॥ ( अ० ता० अ० ) आरोपित सुख भ्रमट  
ल्योरे । नास्यो अव्याबाध । समरयो अजि लाखी पणोरे । कर्त्ता साधन साध्य  
॥ ७ ॥ अ० ता० अ० ॥ ग्राहकता स्वांमिद्वतारे । व्यापक जोक्ता जाव । का  
रणता कारज दशारे । सकल ग्रहं निज जाव ॥ ८ ॥ अ० ता० अ० ॥  
अधा जासन रमणतारे । दांनादिक परिणांम । संकल थया सत्तारसीरे । जिन  
वर दरशन पांमि ॥ ९ ॥ अ० ता० अ० ॥ तिणें निर्यामक माहणोरे । वैद्य गोप  
आधार । देवचंद सुख सागरूरे । जाव धरम दातार ॥ १० ॥ अ० ता० अ० ॥  
इति श्री अजित जिन स्तवनं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सिंशायमाला लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ढंढण रिषजीनें बंदणा ॥ हुंवारी ॥ उत्तकृष्टो अणगारे ॥  
हुंवारी लाल ॥ अजिग्रहलीधो एहवो ॥ हुं० ॥ लेस्युं सुध आहाररे  
॥ हुं० ॥ १ ॥ ढं० ॥ नितप्रति ऊठै गोचरी ॥ हुं० ॥ नमिलौ शुध आ-  
हाररे ॥ हुं० ॥ मूल नले अणसूजतो ॥ हुं० ॥ पंजर कीधो गातरे ॥ हुं०  
॥ २ ॥ ढं० ॥ हरिपूठै श्रीनेमिनें ॥ हुं० ॥ मुनिवर सहस्र अढाररे ॥ हुंवा ॥  
उत्तकृष्टो कुण एहमै ॥ हुं० ॥ मुज्जे कहो विचाररे ॥ हुंवा० ॥ ढंढ० ॥  
॥ ३ ॥ ढंढण अधिको दाखियो ॥ हुं० ॥ श्रीमुख नेमि जिणंदरे ॥ हुं० ॥

कृष्ण ऊमाहो वांदवा ॥ हुं० ॥ धन जादव कुल चंदरे ॥ हुं० ॥ ४ ॥ हुं० ॥  
 गलियारें मुनिवर मिल्या ॥ हुं० ॥ वांधा कृष्णनेरसरे ॥ हुं० ॥ किणही  
 मिथ्यात्वी देखनें ॥ हुं० ॥ आयो जावविसेसरे ॥ हुं० ॥ ५ ॥ हुं० ॥ मुज  
 घरआवो साधुजी ॥ हुं० ॥ ल्यो मोदक ठै सुखे ॥ हुं० ॥ मुनिवर विहरीनें  
 पांशुरया ॥ हुं० ॥ आया प्रजुजीनें पासरे ॥ हुं० ॥ ६ ॥ हुं० ॥ मुजलव धै मोदक  
 मिल्या ॥ हुं० ॥ कहोनें तुमे किर पालरे ॥ हुं० ॥ लवधिनही बन्न ताहरी ॥ हुं० ॥  
 श्रीपति लवधि निधानरे ॥ हुं० ॥ ७ ॥ हुं० ॥ एलेवा जुगतो नहीं ॥ हुं० ॥  
 चाल्या परठवा काजरे ॥ हुं० ॥ ईदनिवाहें जाइनें ॥ हुं० ॥ चूरें कर्म समाजरे  
 ॥ हुं० ॥ ८ ॥ हुं० ॥ आणी चढती जावना ॥ हुं० ॥ पाम्यो केवल नाणरे  
 ॥ हुं० ॥ ढंढणरिषि सुगतें गया ॥ हुं० ॥ कहै जिन हरष सुजाणरे ॥ हुं० ॥ ९ ॥  
 हुं० ॥ इति ढंढण मुनी सिंहाय संपूर्णम् ॥ ❀

॥ ❀ ॥ अथ धन्नारिषि सिंहाय ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीजिन वांणी रे धन्ना । अमीय समाणी मोरा नंदन । मन  
 नैतो मानीरे नंदन ताहरे ॥ १ ॥ तुं अतिही वैरागीरे धन्ना । धरमनो  
 रागी मोरा नंदन । माहरो तो मनरोरे किम परचावसुं ॥ २ ॥ दस  
 दिसि दीसै रे धन्ना । तो विनसूनी ( मो० ) । अनुमति देतारे जीन  
 व्है नही ॥ ३ ॥ वत्तीसे नारीहो धन्ना । अतिही पियारी । ( मो ) ।  
 बाणी तो वोलेरे मधुर सुहामणी ॥ ४ ॥ बालकतो कामणीरे धन्ना । वय  
 पिण तरुणी । ( मो० ) । गज गति चालेरे चाल सुहा वणी ॥ ५ ॥ ए  
 घरमंदिर धन्ना । ए सुख सज्या । ( मो० ) । कोमिवत्तीसे धननो तूं धणी  
 ॥ ६ ॥ ए धन मांणोरे धन्ना । वय पिण जाणो । ( मो० ) । जोगवि ले-  
 ज्योरे जोग सुहा मणो ॥ ७ ॥ बज अति दोहिलोरे धन्ना । नहीय सुहेजो  
 ( मो० ) । सुगम नही ठैरे साधु कहावणो ॥ ८ ॥ घर घर चिह्ना हो धन्ना ।  
 सुस्तणी सिख्या । ( मो ) । कहनी तो रहणीरे नही ठै सारपी ॥ ९ ॥ इक  
 वारे सुणीयै हो धन्ना । आगम जणीयै । ( मो० ) । जिनवर जांणोहो  
 पुकर जोगठे ॥ १० ॥ बनवासै रहणा हो धन्ना । परीसह सहनो । ( मो ) ।  
 कोमल केसारे लोच करावणो ॥ ११ ॥ साचो तें जाण्यो हो अम्मा । ऊ

ठन आख्यो ( मोरी अम्मा ) डुकर मारग जननी दाखीयो ॥ १२ ॥ सुख  
 अजिलाषी हे अम्मा । जूनन आखी । ( मोरी अम्मा ) । कायरमारग जननी  
 दाखीयो ॥ १३ ॥ एजग स्वारथी हे अम्मा । नही परमारथि । ( मोरी अम्मा )  
 बीर बखाएयोरे परषदा सहु सुएयो ॥ १४ ॥ में इम जाएयो हे अम्मा ।  
 बीर बखाएयो । ( मोरी अम्मा ) । एधन जोवन आजु थिर नही ॥ १५ ॥  
 अनुमति दीजै हे अम्मा । ठीलन कीजै । ( मोरी ) । जोखिण जाइसु फिर  
 आवै नही ॥ १६ ॥ अनुमति आपी हो अम्मा । जीव सुखपायो ॥ ( मो० )  
 संजम लीधोरे मनमां गह गह्यो ॥ १७ ॥ ठठ २ पारणें हे अम्मा । विग  
 य निवारण ॥ ( मो० ) ॥ बीरबख्याएयो सुरनर आगलै ॥ १८ ॥ सुख सं  
 जम पालै हे अम्मा । दूषण टालै ॥ ( मो० ) ॥ अंग इग्यारह अरथ रु  
 ना जणें ॥ १९ ॥ संजम पाल्यो हे अम्मा । नव पख वारु ॥ मो० ॥  
 मास संथारै हो सरबारथ सिद्धि लह्यो ॥ २० ॥ ❀ ॥ ❀ ॥  
 इति श्रीधनारुषि सिंशाय संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ कर्म सिंशाय लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ देव दानव तीर्थकर गणधर । हरिहर नखर सबला । कर्म प्र  
 माणें सुख दुख पाम्यां । सबल हुवा महा निबलारे प्राणी । कर्म समो  
 नही कोई ॥ १ ॥ आदी सरजीनें कर्म अटारया । बरस दिवस रह्या  
 चूखा । बीरनें वारै बरस दुख दीधा । उपना ब्राह्मणी कूखैरे ॥ प्रा० ॥ २ क० ॥  
 साठ सहस सुत मारया एकणदिन । जोध जुवान नर जैसा । सगर हुवो  
 महापुत्रनो दुखियो । कर्म तणा फल असारे ॥ प्रा० ॥ ३ क० ॥ बत्तीस  
 सहस देसारे साहिब । चक्री सनत कुमार । सोले रोग शरीरमें उपना ।  
 कर्म कीयो तनु ठारे ॥ प्रा० ॥ ४ क० ॥ कर्म हवाल कीया हरीचंदनें  
 बेची सुतारा राणी । बार बरस लगमाथै आएयो । नीच तणें घर पाणीरे  
 प्रा० ॥ ५ क० ॥ दधिवाहन राजानी बेटी । चावी चंदनवाला । चौपदज्युं  
 चौहटामें बेची । कर्म तणा ए चालारे ॥ प्रा० ॥ ६ क० ॥ संजूम नामें आ  
 ठमो चक्री । कर्म सायर नाख्यो । सोलै सहस जहू ऊजा देखै । पिण  
 किणही नविराख्योरे ॥ प्रा० ॥ ७ क० ॥ ब्रह्मदत्त नामें बारमो चक्री । क

मैं कीधो आंधो । इमजाणी प्राणी थेकांड । कर्म कोई मति बांधोरे ॥  
 प्रा० ॥ ८ क० ॥ ढप्पन कोरु यादवनो साहिव । कृष्ण महावल जाणी ।  
 अटवी मांहि मूंवो एक लमो । विज २ करतो पाणीरे ॥ प्रा० ॥ ९ क० ॥  
 पांनव पांच महा झुजारा । हारी द्रोपदा नारी । वारै वरस लग बनरु  
 बनिया । जमिया जेम जीख्यारीरे ॥ प्रा० ॥ १० क० ॥ बीस जुजा दस  
 मस्तक हुंता । लखमण रावण मारयो । एक लमै जग सहु नर जीत्यो  
 ते पिण कर्मसुं हारयोरे ॥ प्रा० ॥ ११ क० ॥ लखमण राम महा बल  
 वंता । अरु सतवंती शीता । कर्म प्रमाणे सुख दुःख पाय्या । बीतक बहु  
 तसवीतारे ॥ प्रा० ॥ १२ क० ॥ समक्तिधारी श्रेणिक राजा । वेढै वांध्यो  
 मुसकै । धरमी नरनें करम धकायो । करमसुं जोरन किसकारे ॥ प्रा० ॥  
 १३ क० ॥ सतीय सिरोमणी द्रौपदी कहीयै । जिन सम अवरन कोई ।  
 पांच पुरुषनी हुइ ते नारी । पूरव कर्म कमाईरे ॥ प्रा० ॥ १४ क० ॥  
 आज्ञानगरी नोजे स्वामी । साचो राजा चंद । मांई कीधो पंखी कूक  
 ढो । कर्म नाख्यो ते फंदरे ॥ प्रा० ॥ १५ क० ॥ ईशरदेव पारवती नारी  
 करता पुरुष कहावै । अहिनिस महिल मसाणमें बासो । निख्या ओजन  
 खावैरे ॥ प्रा० ॥ १६ क० ॥ सहस किरण सूरज परितापी । रातदिवस रहै  
 अटतो । सोलकला ससिधर जगचावो । दिन २ जायें घटतोरे ॥ प्रा० ॥  
 १७ क० ॥ इम अनेक खंड्या नर करमें । जांज्या ते पिण साजा ।  
 रुद्रि हरण करजोनीनें वीनवै । नमो २ करम महाराजारे ॥ प्रा० ॥ १८  
 क० ॥ इति श्री कर्मसिंहाय संपूर्णम् ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ शीता सिंहाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जल जलती मिलती घणीरे । जालो जाल अपाररे । सुजाण  
 शीता । जाणें केसू फूलियारे जाल । राता खैर अझाररे ॥ सु० ॥ १ ॥ धी  
 ज करे शीतासतीरे जाल । सील तणें परिमाणरे ॥ सु० ॥ लखमण राम  
 खुशीययारे जाल । निरखे राणो राणरे ॥ सु० ॥ २ ॥ स्नान करी निरमल  
 जलेंरे जाल । पावक पासें आयरे ॥ सु० ॥ ऊनी जाणें सुरङ्गनारे जाल ।  
 अनुपम रूप दिखायरे ॥ सु० ॥ ३ ॥ नर नारी मिलीया घणारे जाल । ऊ

जा करै हाय हायरे ॥ सु० ॥ जस्म हुसी इण आगमेंरे लाल । राम करै  
 अन्यायरे ॥ सु० ॥ ४ ॥ राघव बिन बांढयो हुवैरे लाल । सुपनेही मन  
 कोयरे ॥ सु० ॥ तोमुज अगनि प्रजालज्योरे लाल । नहीं तो पाणी होयरे  
 सु० ॥ ५ ॥ इम कहि पैठी आगमेंरे लाल । तुरत अगनि थयो नीररे ॥ सु० ॥  
 जाणें द्रह जलसुं जरयोरे लाल । जीलै धरम सुधीररे ॥ सु० ॥ ६ ॥ देव  
 कुशम बरषा करैरे लाल । एह सती सिरदाररे ॥ सु० ॥ शीता धीजै ऊतरी  
 रे लाल । साख जरैसंसाररे ॥ सु० ॥ ७ ॥ रलियायत सहुको थयारे लाल ।  
 सगलै थया उठरंगरे ॥ सु० ॥ लखमाण राम खुसी थयारे लाल । शीता  
 शील सुरंगरे ॥ सु० ॥ ८ ॥ जगमांहें जस जेहनोरे लाल । अविचल शील  
 कहायरे ॥ सु० ॥ कहै जिन हरष सती तणारे लाल । नित प्रणमी जै पा  
 यरे ॥ सु० ॥ ९ ॥ इति शीतासती सिंशाय समाप्तम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अनाथी रुषि सिंशाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रेणिक रय वानी चढयो । पेखियो मुनी एकंत । बर रूप कां  
 तै मोहियो । राय पूठैरे कहैरे बिरतंत ॥ १ ॥ श्रेणिकराय हुंरे अनाथीनि  
 ग्रंथ । तिणमें लीधोरे साधूजीनो पंथ ॥ ( श्रे० ) ॥ इण कोसंबी नगरी  
 वसैं । मुजपिता परघल धन । परवार पूरै परवरयो । हुं हुं तेहनोरे पुत्र  
 रतन्न ॥ श्रे० ॥ २ ॥ इक दिवस मुज वेदना । ऊपनी ते न खमाय । मात  
 पिता सहु झूरी रह्या । तोही पिणरे समाधि न थाय ॥ श्रे० ॥ ३ ॥ गोरमी  
 गुणमन ऊरमी । ऊरमी अबला नार । कोरमी पीनामें सही । नही कीधीरे  
 मोरमी सार ॥ श्रे० ॥ ४ ॥ बहु राज बैद्य बुलाइया । कीधला कोमि उ  
 पाय । बावना चंदन लेपिया । पिण तोहीरे दाह नविजाय ॥ श्रे० ॥ ५ ॥  
 वेदना जो मुज उपसमें । तो लेबुं संजम जार । इम चितवतां वेदन गई  
 ब्रत लीधोरे हरष अपार ॥ श्रे० ॥ ६ ॥ जग मांहि को केहनो नही । तेज  
 णी हुंरे अनाथ । बीत रागनो धरम बाहरो । कोइ नहीरे सुगतिनो साथ  
 श्रे० ॥ ७ ॥ करजोमी राजा गुणस्तवै । धन धनतूं अनंगार । श्रेणिक सम  
 कित तिहां लहै । वांदी पुंहचैरे नगरमजार ॥ श्रे० ॥ ८ ॥ सुनिवर अनाथी

गावतां । कर्मनी तूटे कोमि । गणि समय सुंदर तेहना । पाय बांदैरे बे  
करजोमि ॥ श्रे० ॥ ९ ॥ इति अनाथी मुनी सिञ्जाय समाप्तम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ प्रतिक्रमण सिञ्जाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ करि पम्किमणो जावसुं । दोयवनी मुज जाण ॥ लालरे ॥  
परजवजातां जीवने । संवल साचो जाण ॥ लालरे ॥ १ ॥ ( करि पम्किम  
णो जाव सुं० ) ॥ श्रीमुख वीरसमुच्चरे । श्रेणिकराय प्रतिबोध ॥ ला० ॥  
लाखखंभी सोना तणी । दीयै दिन प्रतिदान ॥ ला ॥ २ ( करि० ) ॥ लाख  
बरस लग तेहने । इम दीयै द्रव्य अपार ॥ ला० ॥ इक सामायकनी तु  
ला । नावै तेह लगार ॥ ला० ॥ ३ ( करि० ) सामायक परसादथी ।  
जहीयै अमरविमान ॥ ला० ॥ धरमसींह मुनिवर कहै । मुगति तणो ए नि  
दान ॥ ला० ॥ ४ ( करि ) ॥ ❀ ॥ इति प्रतिक्रमण सिञ्जाय संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सप्तव्यसन सिञ्जाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सात विसननारे संग मतां करो । सुण तेहनों सुविचार ॥ विवे  
की ॥ सात नरक नारे जाई सातेई । आपै दुख अपार ॥ विवेकी । १  
सा० ॥ प्रथम जुवानेरे विसनपड्यां थकां । पांमव पांच प्रसिद्ध ॥ विवेकी ॥  
नलराजा पिण इण विसने पड्यो । खोइ सहू राज रिद्ध ॥ वि० २ सा० ॥  
दूसरे मांस जहण अवगुण घणां । करै परजीव संहार ॥ वि० ॥ महा स  
तकनी नारी रेवती । नरक गई निरधार ॥ वि० ३ सा० ॥ तीजै मदरा पा  
न विसनतजी । चितधरी बली चाह ॥ वि० ॥ दीपायणारिष दुहव्यो जाद  
वें । छारकानो थयो दाह ॥ वि० ४ सा० ॥ चोथे विसने वेश्यावर वसे ।  
लोकमें न रहे लाज ॥ वि० ॥ कयवन्नादिकनो गयो कायदो । कुविसने  
रे काज ॥ वि० ५ सा० ॥ पाप आहेमें कुविसन साचवै । प्राणी हणीयें  
प्रहार ॥ वि० ॥ मारी मृगली श्रेणिक नृप गयो । पहिली नरक मज्जार ॥  
वि० ॥ ६ सा० ॥ उठे चोरीने विसने करी । जीव जहे दुखजोर ॥ वि० ॥  
मुंज देवराजायै मारीयो । चावो हुंमक चोर ॥ वि० ७ सा० ॥ परस्त्रीय सं  
गत कुविमनसातमें । हाणि कुजस बहु होय ॥ वि० ॥ राणो रावण शीता  
अपहरी । नास लंकानोरे जोय ॥ वि० ८ सा० ॥ इम जाणी अव्य तुमे आ



दरो । सीख सुगुरुनीरे सार ॥ बि० ॥ इण जव परजव आणंद अति घणा ।  
कहै ध्रमसी सुखकार ॥ बि० ९ सा० ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ उपदेस सिशाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दमका नांहि जरोसा साहै । करले चलनेका सामान ॥ १ ॥  
तन पिंजरसैं निकश जाइगा । बिनमें पंढी प्राण ॥ द० १ ॥ लख चौरासी  
जोजन जटक्यो । उपनों गरजा धान । सवानवमास बश्यो अंधकूपमें । मनु  
ष्यरूप सनमान ॥ द० २ ॥ उत्तम कुलमें जनम लियो है ॥ सुखमें खाण अ  
रुपाण । जीरपम्यां तेरै कोइयन साथी । साथी दान अरु ध्यान ॥ द० ॥  
॥ ३ ॥ आशा त्रिशनां विकथा निद्रा । कुमता रूप निधान । दिन २ बधै  
पापकी संगत । व्यापैं क्रोध अरुमान ॥ द० ॥ ४ ॥ चलते फिरते सोवत  
जागत । करत खाण अरुपाण । बिन २ आयु घटतहैं तेरो । होत देहकी  
हाण ॥ द० ॥ ५ ॥ माल मुलक अरु सुखसंपत में । होय रह्या गलता  
न । देखत २ विनस जायगा । मतकर मान गुमान ॥ द० ६ ॥ जूठा सब  
यह जगत पसारा । नारी विषकी खान । माया ममता आदिके बैरी ।  
इनसैं कहा पहचान ॥ द० ७ ॥ पांचूं चोर मुंसैं वर तेरो । इन की  
खोटी बाणि । अठबैरी तेरे संग फिर तुहै । मोह बना सुलतान ॥ द० ॥  
॥ ८ ॥ कोइ रहणें पावे नही जगमें । यह तु निहचै जानि । अजहुं ठां  
मि समजि कुटलाई । मूरख तर अज्ञान ॥ द० ॥ ९ ॥ जाई बंध अरु स  
जन संबंधी । राखै तेरा मान । अंतसमें कोई कामन आवै । किसपै मान  
गुमान ॥ द० ॥ १० ॥ जप तप शील पालो मुज संगत । देह सुपात्रे  
दान । सैंहित साध चरण चितल्यावो । प्रनु जज तज अजिमान ॥ द० ॥  
॥ ११ ॥ इति उपदेश सिज्जाय संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जंजं विहिणा लिहिअं । तंतं परिणमइ सयल लोयस्स । इह जा  
णे विणुधीरा । विहुरेवि नकायरा हुंती ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ बाहूबलजीनी सिशाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ईसर आंवा आंबलीरे । एचाल ॥ ❀ ॥ बाहूबल चारित ली  
योरे । साचो धरिबैराग । जस्तेसर इम वीनवैरे । वार २ पाय लाग । हरप

अर मुजसुं बोलज्योरे ( थानें वावाजीरी आण । थानें ऋषभ देव जीरी  
 आण । थेतो मकरो खेंचा ताण । थेतो माहरै जीवन प्राण ) । हरप० ।  
 मुज सुंवो० । ( आंकमी ) ॥ १ ॥ हुंतो जाई ताहरोरे । जेमें कीधो दोस ।  
 तो पिण खमज्यो जाई नारे । गस्वा नकरै रोस ॥ ह० ॥ २ ॥ आवो बां  
 ह देई मिलांरे । जोवो आंख उधार । बोलो मीठा बोलनारे । पूरो मननो  
 लाम ॥ ह० ॥ ३ ॥ खीलो नाखुं तोमनेंरे । जिण कुज जाई वेढ । नायो  
 आयुध सालमेंरे । ज्युं वांजण घर ढेढ ॥ ह० ॥ ४ ॥ ज्ञानीना उजंजनारे ।  
 किमसंजलायै कान । जातां पांव वहे नहींरे । तुजनें मुंकी रान ॥ ह० ॥  
 ॥ ५ ॥ तूं जीत्यो हूं हारीयोरे । देव जेरे ठे साख । तुज सरिखो जगको  
 नहीरे । मुज सरिषाठे लाख ॥ ह० ॥ ६ ॥ माथे सूरज आवीयोरे । प  
 सीनो सारो गात । बैसो जोजन जीमियेंरे । खारक दाख निवात ॥ ह० ॥  
 ॥ ७ ॥ निन्नाणं एकण मतेंरे । मुजनें लोत्री जाण । ते सहु मुजनें परि हरयोरे  
 ज्युं वरसाले ढाण ॥ ह० ॥ ८ ॥ तुंमाहरै जीवन आतमारे । तुंहीज माहरै बांह ।  
 दिस सूनी जाई विनारे । आवोनें वरजांह ॥ ह० ॥ ९ ॥ बोल घणाई  
 बोलियारे । अस्तेसर महाराज । हाथीना दांत जे नीकट्यारे । ते पाठान  
 बीजाय ॥ ह० ॥ १० ॥ अजिमांनी सिर सेहरोरे । बाहूवल रिपिराय  
 सीधा करम खपायनेंरे । विमल कीरति गुणगाय ॥ ह० ॥ ११ ॥ ॥ ❀ ॥  
 इति बाहूवल सिंहाय संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चेलणा महासती सिंहाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वीखांदी वलतां थकांजी । चेलणा दोठेरे निग्रंथ । राति वन  
 मांदि काउसग रह्यो जी । साधतो मुगतिनो पंथ ॥ १ ॥ वीर वखाणी  
 राणी चेलणा जी । सतीय सीरोमणि जाण । चेडा राजानी माने सुता  
 जी । श्रेणिक शीयल परमाण ॥ २ ॥ वी० ॥ शीत ठंठार सबजो पमे  
 जी । चेलणा प्रीतम साथ । चारितीयो चित्तमें वस्यो जी । मोवडि बाहिर  
 रह्यो हाथ ॥ ३ ॥ वी० ॥ ज्वक जागी कहें चेलणा जी । किम करतो  
 हृस्ये तेह । कुसती मन माहि ए कुणवस्यो जी । श्रेणिक पन्थोरे मंदेह  
 ॥ ४ ॥ वी० ॥ अंतेंज परो जालज्यो जी । श्रेणिक दीवोरे आदेम । जग

वंत सांसो ज्ञांजियो जी । चम कियो चित्तनरेस ॥५॥ वी० ॥ वीरवांदी बल  
तां थकां जी । पैसतां नगर मजार । धुंवानो धोर देखी करीजी । जा जा  
हरे अजय कुमार ॥ ६ ॥ वी० ॥ तातनो वचन पाली करी जी । बतलि  
यो अजय कुमार । समय सुंदर कहै चेलणा जी । पामिया जवतणो पार  
॥ ७ ॥ वी० ॥ इति चेलणा महासती सिंशाय संपूर्णम् ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ बाहूबलजी सिंशाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राजतणा अति लोनीया । जस्त बाहूबल ऊँरैरे । मूँठि उपा  
नी मारिवा । बाहूबल प्रतिबूँरैरे ॥ १ ॥ बीरा ह्वारा गजथकी ऊतरो । बा  
ह्वी सुंदरी जसैरे । रुषज जिणैसर मोकली । बाहूबलनें पासैरे ॥ १ ॥ वी०  
( गजचढ्यां केवल न होईरे ) ॥ २ ॥ वी० ॥ लोचकरी चारितलीयो । व  
लि आयो अजिमानोरे । लघु बंधव वांडुं नही । कानसग रह्यो मुज ध्या  
नोरे ॥ ३ ॥ वी० ॥ बरस दिवस कानसग रह्यो । बेलनियां वींटाणोरे ।  
पंखी माला मांणीया । सीत ताप सूकाणोरे ॥ ४ ॥ वी० ॥ साधवी वचन  
सुणया इसा । चमक्यो चित्तमजारोरे । हय गय रथमें परिहरया । पिण न  
विमुंक्यो अहंकारोरे ॥ ५ ॥ वी० ॥ वैरागै मन वालीयो । मुंक्यो निज  
अजिमानोरे । पांव उपानी वांदिवा । ऊपनों केवल नाणोरे ॥ ६ ॥ वी० ॥  
पहुतो केवलि परषदा । बाहूबल रिषि रायारे । अजर अमर पदवी लहै ।  
समय सुंदर वंदै पायारे ॥ ७ ॥ वी० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
इति बाहूबल सिंशाय संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अरणकमुनी सिंशाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अरणक मुनिवर चाल्यागोचरी । तमकै दाऊँ सीसोजी । पाय उ  
जराणारे बेलूपर जलै । तन सुकमाल मुनीसो जी ॥ १ ॥ अ० ॥ मुख कमला  
णोरे मालतीफूलज्युं । ऊजो गोखने हेठोजी । खरै डुपहुरैरे दीठो एकलो ।  
मोही माननी मीठोजी ॥ २ ॥ अ० ॥ वयण रंगीलैरे नयणे वेधियो । रिषथं  
भ्यो तिणवारो जी । दासीनें कहै जाय उंतावली । उरिष तेडी आणो जी  
॥ ३ ॥ अ० ॥ पावन कीजै रिषिघर आंगणो । बहिरो मोदक सारो जी । नव  
जोवन रस काया कांडदहो । सफल करो अवतारो जी ॥ ४ ॥ अ० ॥ चंद्रा

वदनीरे चारित चूकव्यो । सुखविलसै दिन रातोजी । इकदिन गोखैरे रमतो  
सोगटै । तब दीठी निज मातो जी ॥ ५ अ० ॥ अरणक अरणक करती  
मायफिरै । गलियै गलियै मजारो जी । कहि किण दीठोरे माहरो अरण  
लो । पूठै लोक हजारो जी ॥ ६ अ० ॥ उत्तर तिहां थीरे जननी पाय न  
म्यो । मनमें लाज्यो तिवारोजी । धिग्र धिग्र पापीरे माहरा जीवनें । एहमें  
अकारज कीधो जी ॥ ७ अ० ॥ अगन धुखंतीरे सीला ऊपरै । अरणक  
अणसण कीधो जी । समय सुंदर कहै धनते मुनिवरू । मनवंडित फल सी  
धोजी ॥ ८ अ० ॥ इति अरणक मुनि सिंज्ञाय संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ साचित्त अचित्त सिंज्ञाय ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( ढालचौपईनी ) ॥ प्रवचन अमरी समरी सदा । गुरुपद पंकज  
प्रणमीसुदा । वस्तु तणा कहुं काल प्रमाण । साचित्त अचित्त विधि लहै जिम  
माण ॥ १ ॥ विहुं रतु मिली चौमासा मान । पटरतु मिलीनें वरिस प्रमां  
ण । वर्षा शीत उष्ण त्रिणकाल । त्रिहुं चौमासें वरस रसाल ॥ २ ॥ श्रावण  
आद्रव आसू मास । काती इम वरसाला वास । मागसिर पोस माहनें फा  
ग । ए च्यारे सीयाला लाग ॥ ३ ॥ चैत्र वैशाखनें ज्येष्ठ आसाढ । उष्णकाल  
एच्यार अगाढ । वर्षा शरद शशिर हेमंत । वशंत ग्रीष्म पदरतु इम तंत ॥ ४ ॥  
राध्युं विदल रहै चतुयाम । उदन आठपुहुर अजिरांम । प्रहरसोल दधि कां  
जी बाढ । पठै रहैतो जीवनिवास ॥ ५ ॥ पापड लोइया बटक प्रमाण ।  
च्यारपहुर तिम पोलीमाण । पनर दिवस वर्षापकवान । ग्रीसदिवस सीयाला  
माण ॥ ६ ॥ बीस दिवस उन्हालै रहै । पठै अजह्म थाये जिनकहै । मात्र प्रसुख  
नीवी पकवान । चलितरसै तसकाल प्रमाण ॥ ७ ॥ धान धोयण ठवमी पर  
माण । दोयवमी जरवाणी जाण । फल धोयण एक प्रहर प्रमाण । त्रिफला  
जल ठवमीनुं मान ॥ ८ ॥ त्रिणवारे उक्कलितुं जेह । सुद्ध उष्णजल कहियै  
तेह । प्रहर तीन चउ पंच प्रमाण । वर्षा शीत उन्हालै जाण ॥ ९ ॥ श्रा  
वण आद्रवमै दिनपंच । मिश्रजोड अणचालित संच । मिगसर पोसै त्रिण  
दिन जाण । आसू काती चउदिन मान ॥ १० ॥ माह फागुणै कड्यो पण  
याम । चैत्र वैशाख चउप्रहर प्रमाण । जेठ आसाढ प्रहर त्रिण जोय । ति

ए नुपरांत सच्चित ते होय ॥ ११ ॥ गोहं शालि षण्धान कपास । जव त्रि  
एवरसैं अचित्त होय खास । विदल सर्व तिल तूवरदाल । पांच वरसैं होइ  
अचित्त विशाल ॥ १२ ॥ अलसी कोद्रव कांगनें ज्वार । सातेवरसैं अचि  
त्त विचार । शीत ताप वर्षादिक जोय । सच्चित जोनि अचित्त तेहोय  
॥ १३ ॥ हररै पींपर मिरच विदाम । खारक द्राख एला अजिराम । जोय  
ए शत जल वटमां वहै । साठिजोयण थलमांहै रहै ॥ १४ ॥ सच्चित्तवस्तु  
प्रवहणनी जेह । थाइं अचित्त प्रवचन कहै एह । धूम अगनि परीयापणैं  
करी । अचित्तयोनि तसथायै खरी ॥ १५ ॥ बारपहुर रहै जगलीराव ।  
सोलपहुर राईता अजाब । कमाह विगय परिसेक्यो धान । पहिरचोवीस  
गोमूत्रनुमान ॥ १६ ॥ अति खारं घृत कालातील । पलटाई वर्णादिक रील ।  
काचो दूधरहै बहुबार । एह अज्रह कहै मुनिसार ॥ १७ ॥ हुंढणीयादिक  
विदलनीदाल । सेक्या धानपरैं तसकाल । च्यारपहुर सीरो लापसी ।  
विदलपरै ते प्रवचन वसी ॥ १८ ॥ प्रथम दिवस प्रारंजी गियो । काल  
प्रमाण सवि केहनुं जण्यो । चलित रस जेहनो जिहांथाय । तिहां ते वस्तु  
अज्रह कहिवाय ॥ १९ ॥ धवलो सैंधव कह्यो अचित्त । श्राद्ध विधैं अख्यरां  
प्रतीत । एकालादिक उहरां जेथाय । तेह अचित्त थापना न थाय ॥ २० ॥  
गीतारथनें वयणैं जोय । आचीरण अनाचीरण होय । आई धान अंकुर नीक  
लैं । तबते वस्तु अज्रहमां जिलैं ॥ २१ ॥ गेरू मणसिल जवण हरियाल ।  
आवै जलवट मांहि रसाल । तेह अचित्त होइ प्रवचन साखि । पिण ले  
वानी नही तसुजाखि ॥ २२ ॥ इम बोल्यो जवजेश विचार । विस्तर प्रवचन  
सारोधार । धीरविमल पंक्ति सुपसाय । कवि नय विमल कहै सिंझाय ॥ २३ ॥  
इति सच्चित्त अचित्त वस्तु स्वरूप सिंझाय ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ १९ दोश कानसगग सिंझाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सकल देव समरी अरिहंत । प्रणमी सदगुरु गुणें महंत । उगणी  
सदोष कानसगग तणा । बोलुं श्रुतअनुसारै सुणया ॥ १ ॥ घोटक दोष कह्यो  
बलिह । बांको पगराखे बलिजेह । लत्तादोष बीजो हवैसुणो । मील हजा  
वै जे अति घणो ॥ २ ॥ उंठीगण लैई जेरहै । थंजदोष ते तीजो कहै । मा

लदोष चौथो कह्यो एह । मस्तक अरुकावी रहैजेह ॥ ३ ॥ पग अंगूठा मे  
लीरहे । उध्दोषते पंचमकहै । बेजं पग जेलाकरै जेह । नउल दोष ठठो  
कह्यो एह ॥ ४ ॥ गुह्यठामि राखै निजहाथि । शवरी दोष कह्यो जगनाथ ।  
मुख चालना करै अति घणी । खलित दोष अछम तेसुणी ॥ ५ ॥ घूंघट ता  
णीने जेरहे । बहुदोष ते नवमो लहै । लरु थडतूं पहिरै पहिरणुं । दशमें  
दोष लंबोत्तर जणुं ॥ ६ ॥ हृदय स्थल आन्नादितरहै । ते थण दोष इग्यारमो  
लहै । वस्त्रासुं ढांक्यो सविदेह । संयति दोष बारसमो एह ॥ ७ ॥ ज्ञापण चा  
लोकरै अति घणुं । प्रमुहदोष तेरसमो जणुं । अंगुली हलावै संख्याकाज ।  
चवदमो दोष कह्यो जिनराज ॥ ८ ॥ नेत्र तणा चालाजे करै । वायस दोष  
पनरमो धरै । पहिरावस्त्र संकोमी रहे । कपित्थदोष सोलसमो लहै ॥ ९ ॥  
मस्तक धूणावै अतिघणुं । ते सिरकंप सतरमो जणुं । महिरानी परि जे बडव  
मै । वासणी दोष अठारमो चमै ॥ १० ॥ मूकदोष कह्यो जगणी समो । तेह  
करी कानसग मतगमो । त्रिणदोष एमाहिला टलै । सोल दोष साधवीने मिलै  
॥ ११ ॥ लंबुत्तर १ थणने २ संयती ३ । दोष एह बोड्या जगपती । बहुदोष चौ  
थो जवमिलै । च्यार दोष आविकाने टलै ॥ १२ ॥ कानसगथी समता मुख  
थाय । कठिन कर्मनी कोमि पुलाय । कानसग करतां सवि मुख होइ । कानस  
ग सम तप नकह्यो कोय ॥ १३ ॥ दोष रहित कानसग कीर्जाये । जिम स  
हिजे शिवफल लीजीये । पंक्ति धीर विमलनो सीस । कवि नय विमल कहै  
निशिदीश ॥ १४ ॥ इति कानसगना १९ दोष सिद्धाय संपूर्ण ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ आलोचना स्वरूप सिद्धाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल मफल संसार एचाल) ॥ ए धन सासन वीरजिनवर तणो । जा  
स परमाद उपगार थायै वणो । सूत्र सिद्धांत गुरु मुख थकी सांजर्जा । लहीय  
सम कित अने विरति लहीये बली ॥ १ ॥ धर्मनो ध्यान धर तप जप खप  
करै । जिण थकी जीव संसार सागर तिरे । दोष जागा जिके गुरु मुख आलो  
इये । जीव निर्मल हुवे वस्त्र जिम धोइये ॥ २ ॥ दोष जागै तिके च्यार प्र  
कारना । धुरथकी नामने अरथ ते धारणा । किणही कारण वमै पापजे की  
जीये । प्रथम ते नाम संकष्य कहीर्जाये ॥ ३ ॥ कीर्जाये जेह कंदर्प प्रमुपै



ए नुपरांत सच्चित ते होय ॥ ११ ॥ गोहूं शालि षमधान कपास । जव त्रि  
एवरसैं अचित्त होय खास । विदल सर्व तिल तूवरदाल । पांच वरसैं होइ  
अचित्त विशाल ॥ १२ ॥ अलसी कोद्रव कांगनें ज्वार । सातेवरसैं अचि  
त्त विचार । शीत ताप वर्षादिक जोय । सचित्त जोनि अचित्त तेहोय  
॥ १३ ॥ हरमैं पींपर मिरच विदाम । खारक द्राख एला अन्निराम । जोय  
ए शत जल वटमां वहै । साठिजोयण थलमांहै रहै ॥ १४ ॥ सचित्तवस्तु  
प्रवहणनी जेह । थाइं अचित्त प्रवचन कहै एह । धूम अग्नि परीयापणैं  
करी । अचित्तयोनि तसथायै खरी ॥ १५ ॥ बारपहुर रहै जगजीराव ।  
सोलपहुर राईता अजाव । कमाह विगय परिसेक्यो धान । पहिरचोवीस  
गोमूत्रनुमान ॥ १६ ॥ अति खारुं घृत कालातील । पलटाई वर्णादिकरील ।  
काचो दूधरहै बहुबार । एह अन्नक कहै मुनिसार ॥ १७ ॥ हुंढणीयादिक  
विदलनीदाल । सेक्या धानपरैं तसकाल । च्यारपहुर सीरो लापसी ।  
विदलपरैं ते प्रवचन वसी ॥ १८ ॥ प्रथम दिवस प्रारंजी गियो । काल  
प्रमाण सवि केहनूं जणयो । चलित रस जेहनो जिहांथाय । तिहां ते वस्तु  
अन्नक कहिवाय ॥ १९ ॥ धवलो सैंधव कह्यो अचित्त । श्राद्ध विधैं अख्यरां  
प्रतीत । एकालादिक उंहरां जेथाय । तेह अचित्त थापना न थाय ॥ २० ॥  
गीतारथनें वयणैं जोय । आचीरण अनाचीरण होय । आई धान अंकुर नीक  
लै । तवते वस्तु अन्नकमां जिलै ॥ २१ ॥ गेरू मणसिल लवण हरियाल ।  
आवै जलवट मांहि रसाल । तेह अचित्त होइ प्रवचन साखि । पिण ले  
वानी नही तसुजाखि ॥ २२ ॥ इम वोढ्यो लवलेख विचार । विस्तर प्रवचन  
सारोधार । धीरविमल पंक्ति सुपसाय । कवि नय विमल कहै सिंझाय ॥ २३ ॥  
इति सचित्त अचित्त वस्तु स्वरूप सिंझाय ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ १९ दोश काउसग्ग सिंझाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सकल देव समरी अरिहंत । प्रणमी सदगुरु गुणें महंत । उगणी  
सदोष काउसग्ग तणा । बोळुं श्रुतअनुसारै सुण्या ॥ १ ॥ घोटक दोष कह्यो  
बलिण्ह । वांको पगराखै बलिजेह । लत्तादोष बीजो हवैसुणो । मील हला  
वै जे अति घणो ॥ २ ॥ उंठीगण लेई जेरहै । थंजदोष ते तीजो कहै । मा

लदोष चौथो कह्यो एह । मस्तक अरुकावी रहैजेह ॥ ३ ॥ पग अंगुठा मे  
 लीरहे । उद्धिदोषते पंचमकहै । बेजं पग जेलाकरै जेह । नउल दोष ठो  
 कह्यो एह ॥ ४ ॥ गुह्यठामि राखे निजहाथि । शवरी दोष कह्यो जगनाथ ।  
 मुख चालना करै अति घणी । खलित दोष अष्टम तेसुणी ॥ ५ ॥ घूंघट ता  
 णीनें जेरहे । बहुदोष ते नवमो लहे । लरु थडतूं पहिरै पहिराणुं । दशमें  
 दोष लंबोत्तर जणुं ॥ ६ ॥ हृदय स्थल आढादितरहे । ते थण दोष इग्यारमो  
 लहे । वस्त्रासुं टांक्यो सविदेह । संयति दोष बारसमो एह ॥ ७ ॥ ज्ञापण चा  
 लोकरै अति घणुं । जसुहदोष तेरसमो जणुं । अंगुली हलावै संख्याकाज ।  
 चवदमो दोष कह्यो जिनराज ॥ ८ ॥ नेत्र तणा चालाजे करै । वायस दोष  
 पनरमो धरै । पहिरयावस्त्र संकोमी रहै । कपित्थदोष सोलसमो लहे ॥ ९ ॥  
 मस्तक धूणावै अतिघणुं । ते सिरकंप सतरमो जणुं । महिरानी परि जे बडव  
 नै । वारुणी दोष अठारमो चमै ॥ १० ॥ मूकदोष कह्यो उगणी समो । तेह  
 करी कानसग मतगमो । त्रिणदोष एमाहिला टले । सोल दोष साधवीनें मिलै  
 ॥ ११ ॥ लंबुत्तर १ थणनें २ संयती ३ । दोष एह बोल्या जगपती । बहुदोष चौ  
 थो जवमिलै । च्यार दोष आविकाने टले ॥ १२ ॥ कानसगथी समता मुख  
 थाय । कठिन कर्मनी कोमि पुलाय । कानसग करतां सवि मुख होइ । कानस  
 ग सम तप नकह्यो कोय ॥ १३ ॥ दोष रहित कानसग कीजीये । जिम स  
 हिजै शिवफल लीजीये । पंक्ति धीर विमलनो सीस । कवि नय विमल कहै  
 निशिदीश ॥ १४ ॥ इति कानसगना १९ दोष सिद्धाय संपूर्ण ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ आलोचन स्वरूप सिद्धाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल सफल संसार एवाल) ॥ ए धन सासन वीरजिनवर तणो । जा  
 स परमाद उपगार थाये घणो । सूत्र सिद्धांत गुरु मुख थकी सांजली । लहीय  
 सम किन अनें विरति लहीये बली ॥ १ ॥ धर्मनो ध्यान धर तप जप स्वप  
 करै । जिण थकी जीव संसार सागर तिरे । दोष लागी जिके गुरु मुख आलो  
 ड्यै । जीव निर्मल हुवे वस्त्र जिम धोइये ॥ २ ॥ दोष लागै तिके च्यार प्र  
 कारना । धुरथकी नामनें अरथ ते धारणा । किणही कारण वसे पापजे की  
 जीये । प्रथम ते नाम मंकप्य कहीजीये ॥ ३ ॥ कीजीये जेह कंदर्प प्रमुपै

करी । दोष ते वीय परमादसंज्ञा धरी । कूदतां गर्वतां होय हिंसा जिहां ।  
 दर्पण नांमकरी दोष तीजो तिहां ॥ ४ ॥ विणसतां जीव जीवनेगि नरकरै  
 जिको । चौथो आकुट्टियादोष ऊपजै तिको । अनुक्रमैं च्यारए अधिक  
 इक एकथी । दोष धर प्रायश्चित्त लेह विवेकथी ॥ ५ ॥ (ढाल २ ) अन्यदिवस  
 कोई मागधआयो पुरंदरपास ए चाल ॥ ६ ॥ पाटी पोथी कवली नवकरवाली  
 जोय । ग्याननानुपगरण तणी आशातन कीधी होय । जघन्यथी पुरमहु  
 एकासणो आंविज उपवास । अनुक्रम एह आलोयण सुगुरु वतार्इतास  
 ॥ ६ ॥ एजो खंमति थायै अथवा किहांइ गमाय । तोवलिनवा करायां दो  
 ष सहु मिटजाय । थापना अणपमिलेहां पुरमहुनो तपधार । गिरतां एकास  
 णनै गमतां चौथ विचार ॥ ७ ॥ दर्शनना अतीचार तिहां पुरमहुजघन्य ।  
 एकासण आंविज अष्ठम चिहुंजेदे मन्न । आशातन गुरु देवनी साहमीसुं  
 अप्रीति । जघन्य एकासणनी आलोयण चढती रीत ॥ ८ ॥ अनंतकाय  
 आरंज विनास्यां चौथ प्रसिद्ध । वि ति चउरिंद्री त्रसायां एकासणथी वृद्ध ।  
 बहु वि ति चौरिंद्रिय हणयां वि ति चउ उपवास । संकल्पादि चिहुंविधि  
 पुगुणा पुगुण प्रकाश ॥ ९ ॥ उद्देही कुलिया वना कीडी नगरा जंग । व  
 हुत जलोयां मूक्या दसउपवास प्रसंग । वमन विरेचन कृमिपातन आंवि  
 ल इक एक । जीवांणी ढोलंतां दोइउपवास विवेक ॥ १० ॥ संकल्पादिक  
 एक पंचेद्री उपद्रव होइ । दोइ त्रिण आठ दसे उपवासै आलोयण जोइ ।  
 बहुपंचेद्री उपद्रव ठठ अष्ठमें दश वीश । चिहुं प्रकारै चढती आलोयण  
 सुणलेसीस ॥ ११ ॥ पंचेद्रीनै लकमी प्रमुखैं कीध प्रहार । एकासण आंवि  
 ल उपवासनै ठठ विचार । साध समहें लोकसमहें राजसमह । कृमा आ  
 लदीयां पुइचौथरु ठठ प्रतह ॥ १२ ॥ उपवास दश दंभायां तेम मरायां वीस ।  
 इकलख असीसहस नवकार गुणो तजिरीस । पख चौमाश वरस लग इक  
 त्रिण दश उपवास । अधिको क्रोधकरै तो आलोयण नहिं तास ॥ १३ ॥  
 सूआवरुना दोषकीयां गुरु ऊपर रोस । जीवविराधन कीधा बहु असतीना  
 पोस । करीय पुवाजस बारहजार गुणो नवकार । मित्रा पुकर देई  
 आलोवो वारोवार ॥ १४ ॥ ( ढाल ३ ) वेकर जोमीतांम ॥ एचाल ॥ विणकी

धां पचखाण । विणदीधा बांदणा । पम्किमणा विध पांतरैए । अणोजाने.अ  
सिंहाय । तिहां आविधे ज्ञायां । इक २ आंविज आचरैए ॥ १५ ॥ गंत  
सीनें एकत्र । निवी आंविज । जांगे आलोयण इमेए । एक पांच षट् आठ ।  
नवकरवालीय । गुण नवकार अनुक्रमेए ॥ १६ ॥ उपवासजंग उपवास ।  
आंविज लुपरां । अधिकोदंर वखाणीयैए । पांचम आठम आदि । जंगकी  
या बली । फिरग्रही पातिक हाणीयैए ॥ १७ ॥ ऊखल मृशल आग । चूलो  
वरदीये । दीधे अठम तपकरैए । मांगीसूई दीध । कातरणी बुरी । आंविज  
चढता आदरैए ॥ १८ ॥ जीव करावै युद्ध । रात्री जोजन । जल तिरणो खे  
लण जूओए । पापतणा उपदेश । परद्रोह चितव्यां । उपवासइक २ जूजूओ  
ए ॥ १९ ॥ पनरै करमादांन । नियमकरी जंग । मद्यमांस माखण जण्या  
ए । आलोयण उपवास । संकप्पादिक । चिहुं जेदे चढता लिख्याए ॥ २० ॥  
बोल्या मिरखावाद । अदत्ता दांनत्युं । जवन्य एकासण जांणीयै ए । अति  
उत्कृष्टी एण । जांण आलोयण । उपवास दस २ आंणीयै ए ॥ २१ ॥ ( ढाल  
४ ) ॥ सुगण सनेही मेरे लाला ( एचाल ) चौथै व्रत जांगे अतीचार । ज  
वन्य ठठ आलोयण धार । मध्यइ दस उपवास विचार । उत्कृष्टा गुण लख न  
वकार ॥ २२ ॥ परिग्रह विरमणदोष प्रसंग । तीन गुण व्रत मांहै जंग । च्यार  
सिद्धा व्रतनें अतीचारे । आंविज त्रिणप्रत्येकें धारै ॥ २३ ॥ सीजतणी नव  
वाक्कि कहाय । तिहां जोलागो दोष जणाय । त्रियनें फरस हुआं आविवेके ।  
इक आंविज कीजे प्रत्येकें ॥ २४ ॥ साबु अनें आवक पोसीध । एकेंद्रीस  
चित्त संघट्टे कीध । बीसर जोलें सचित्त जल पीध । दंरु एकासण आंविज  
दीध ॥ २५ ॥ विण धोआं विण जूह्या पात्रे । एकासण तिम पुरमठ मात्रे । गई  
मुह पत्ती आंविज सारो । तिम नवै अठम अवधारो ॥ २६ ॥ च्यार आगार  
ठगंभी राखै । व्रत पचखाण करे षट् साखै । दोषे भिडामि दुक्कर दाखै । आ  
लोयणलेतां अजिजाखे ॥ २७ ॥ आलोयणनो अनि विस्तार । पुरो कहितां  
नावै पार । तोपिण संक्षेपे तंतसार । निरमल मन करतां विस्तार ॥ २८ ॥  
धन श्रीवीर जिनेमर स्वांमी । जस्तु आगम वचनें विधि पामी । जीतकल्प  
ठांणांगे आदि । बली परंपर गुरु सुप्रसाद ॥ २९ ॥ ( कलश ) इम जेह ध

रमी चित्त विरमी पाप सर्व आलोइनें । एकांत पूतै गुरु वतावै शक्तिवय  
तसु जो इनें । बिधएह करसी तेहतिरसी धरमवंत तणै धुरै।ए तवन श्रीधरमसी  
ह कीधो चौपनें फल वधि पुरै ॥ ३० ॥ इति आलोयण स्तवन संपूर्णम् ॥

॥ इहां क्रोधका सिझाय प्रतिक्रमण विधमें लिषआएहें ॥

॥ ❀ ॥ अथ मानकी सिझाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रेजीव मान नकीजियै । मानें विनय नआवैरे । विनय विना विद्या  
नहीं । तोकिम समकित पावैरे ॥ १ ॥ रे० ॥ समकितविन चारित्र नहीं । चारित्र  
विण नहीं मुक्तीरे । मुक्तिना सुखठे सास्वता । तेकिम जहीइं जुक्तीरे ॥ २ ॥ रे० ॥  
विनय बन्धो संसारमां । जगमांहे अधिकारीरे । मानें गुणजाये गली । प्रा  
णी जोज्यो विचारीरे ॥ ३ ॥ मानकियो जो रावणें । ते तो रामें मारघोरे ।  
दुरजोधन गरवै करी । अंतैवर ते हारघोरे ॥ रे० ॥ ४ ॥ सूका लाकना  
सारिखो । दुख दाई ए खोटेरे । उदय रतन कहै माननें । देज्यो तुमे देसो  
टोरे ॥ रे० ॥ ५ ॥ ❀ ॥ इति मानकी सिझाय संपूर्ण ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ मायाकी सिझाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ समकितनूं मूल जाणीये जी । सत्य वचन साख्यात । साचा  
में समकित वसें जी । मायामां मिथ्यातरे ( प्रांणी मकरिस माया लगार  
॥ १ ॥ मुख मीठी जूठे मनेंजी । क्रूर कपटनो कोट । जीजैतो जी जी  
करै जी । चितमां ताके चोटेरे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ आप गरजें आघो पमै जी ।  
पिण न धरे विसवास । मनसुं राखे आंतरोजी । ए मायानो पासरे ॥ प्रा०  
॥ ३ ॥ जेसुं बांधी प्रीतमी जी । तेसुं रहे प्रतिकूल । मयल नठंमे मन त  
णोजी । ए मायानो मूलरे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ तप कीधो माया करीजी । मि  
त्र सुं राखैरे जेद । मलि जिनेसर जाणजो जी । तो पाम्या स्त्री वेदरे  
प्रा० ॥ ५ ॥ उदय रतन कहै सांजलोजी । मेलो मायानी बुद्धि । सुगति  
पुरी जावा तणोजी । ए मारगठे सुधरे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ लोभकी सिझाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तुमे लक्ष्मण जो ज्यो लोभनारे । लोभै जन पामें खोभनारे ।

लोचें माहा मन मोहला करेरे । लोचें दुखट पंथे संचरैरे ॥ तु० ॥ १ ॥  
 तजे लोच तेहना लेजं जामणारे । बलि पाय नमीनें करं खामणारे । लो  
 चे मरजादा नरहै केहनीरे । तुमे संगत मेलो तेहनीरे ॥ तु० ॥ २ ॥  
 लोचे घर मेहली रणमां मरैरे । लोचें उंचते नीचुं आचरैरे । लोचें पापज  
 णी पगला जैरे । लोचें अकारज करतां न औसरैरे ॥ तु० ॥ ३ ॥ लो  
 चे मनहुं नरहें निरमळरे । लोचें सगण नासं वेगळुरें । लोचें नरहै प्रेतनें  
 पावतुरे । लोचे धन मेले बहु एगठुरे ॥ तु० ॥ ४ ॥ लोचें पुत्र प्रतें पिता  
 हणारे । लोचें हत्या पातिक नविगणारे । ते तो दाम तणें लोचें करीरे ।  
 ऊपर मणिधर थायें ते मरीरे ॥ तु० ॥ ५ ॥ जोतां लोचनें थोच दीसे न  
 हीरे । एहवो सूत्र सिध्दाने कहुं सहीरे । लोचें चक्री संचूम नामें जुवोरे ।  
 ते तो समुद्र मांहे बूनी मुंवोरे ॥ तु० ॥ ६ ॥ इम जाणीनें लोचनें ठंरु  
 ज्योरे । एक धर्म सुं ममता मंरुज्योरे । कवि उदय रतन जाषे सुदारे । वंडुं  
 लोच तजे तेहनें सदारे ॥ ७ ॥ इति श्री लोचकी सिझाय संपूर्ण ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ भरत चक्रवर्ति सिझाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ भरतजी मनहीमें वैरागी । मनहीमें वैरागी । भरतजी म०  
 ॥ टेक ॥ सहस वत्तीस सुगट वद्ध राजा । सेवा करे बडजागी । चौसठ  
 सहस अंतेवारि जाके । तोही न हुवा अनुरागी । ( भरतजी मनहीमें  
 वैरागी ) ॥ १ ॥ लाख चोरासी तुरंगम जाके । ठन्नुं कोडहै पागी । लाख  
 चोरासी गजरथ सोहियें । सुरता धरम सुं लागी ॥ भर० ॥ २ ॥ च्यार  
 कोड मण अन्नज उपमे । छंण दशलाख मण लागे । तीन कोड गोकुल  
 नित हूजे । एक कोडि हलमागी ॥ भर० ॥ ३ ॥ सहस वत्तीस देस वरु  
 जागी । जण मखके त्यागी । ठन्नुं कोड गांमके अधिपति । तोही न  
 हुआ अनुरागी ॥ भर० ॥ ४ ॥ नव निध रतन चउगमा वार्जे । मन चिंता  
 सरव जागी । कलक कीरत मुनिवर वंदतहे । दीजो सुमति में मांगी  
 ॥ ५ ॥ भर० ॥ ❀ ॥ इति भरतजीकी स्वाध्याय संपूर्ण ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गर्भाधान उत्पत्ति विचार वैराग्यसि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ उत्पत्ति जोय जीव आपणी । मनमांहि विमाम । गरजावासे



जीवमो । वसीयो नवमास ॥ १ ॥ ३० ॥ नार तणी नाजीतलै । जिन व  
 चनें जोय । फूलतणी जिम नालिका । तिम नामी ठै दोय ॥ २ ॥ ३० ॥  
 तसुतल जोनि कहीजियै । वर फूल समान । आंव तणी मांजर जिसो ।  
 तिहां मांस प्रधान ॥ ३ ॥ ३० ॥ रुधिर श्रवै तिहां मांसथी । रिठुकाल स  
 दीव । रुधिर शुक्र जोगै करी । तिहां उपजै जीव ॥ ४ ॥ ३० ॥ जे अ  
 पावन पवनें करी । वासित दुरगंध । तिणथानक तूं ऊपनो । हिव हूउ  
 अंध मंध ॥ ५ ॥ ३० ॥ नामी वांसतणी घणुं । जरीयै रूघाल । तातीलोह  
 सिलाकर्ते । जालै ततकाल ॥ ६ ॥ ३० ॥ तिम महिलानी जोन में । ठै नव  
 लख जीव । पुरुष प्रसंगे तेसहू । मरि जाय सदीव ॥ ७ ॥ ३० ॥ ऊपजै नर  
 नारी मिल्यां । पांचेइंद्री जेह । तेह तणी संख्या नही । तजो कारज एह  
 ॥ ८ ॥ ३० ॥ नवलख जीव टिकै तिहां । उत्कृष्टीवार । जीव जघन्य पणें  
 टिकै । एक दोय त्रिण च्यारि ॥ ९ ॥ ३० ॥ जीव जघन्य तिहां रहै ।  
 महुस्त परिमाण । बार वरसनी थिति तिहां । उत्कृष्टी जाण ॥ १० ॥  
 ३० ॥ तिहां गरजै कोइ जीवमो । जंपै जग दीस । फिर नर आवंतो  
 रहै । संबत्सर चोवीस ॥ ११ ॥ ३० ॥ महिला वरस पिचावनें । कहीयै  
 नीरबीज । पिचहत्तर वरसां पठै । थायै पुरुष अबीज ॥ १२ ॥ ३० ॥ जी  
 मणी कूखै नर वसे । तिम वामें नारि । बीच नपुंसक जाणीयै । जिन वच  
 न विचार ॥ १३ ॥ ३० ॥ हिव सामान्य पणें इहां । आयो गरजावास ।  
 सातदिना ऊपरि रहै । नरगत नवमास ॥ १४ ॥ ३० ॥ आठ वरस तिर  
 यंच रहै । उत्कृष्टे काल । गरजा वासै जोगव्यां । इम बहु जंजाल ॥ १५ ॥  
 ३० ॥ कारमण कार्ये कर लीयो । पहिलो आहार । शुक्र अनें श्रोणित  
 तणो । नही झूठ लिगार ॥ १६ ॥ ३० ॥ परजापत पूरी नही । तिहां वि  
 सवा बीस । तिण आहारै तुंथयो । ऊदारक मीस ॥ १७ ॥ ३० ॥ पवन  
 अठै उदरे तिको । ऊपजाये अंग । अगनिकरै थिर तेहनें । जल सरस  
 सुरंग ॥ १८ ॥ ३० ॥ कउन पणें प्रथवी रचै । अवगाह आकास । पांच  
 चूत शरीरमें । इम करै प्रकाश ॥ १९ ॥ ३० ॥ बारै महुस्त तां पठै । वि  
 लसे नरनारि । गरजतणी उत्पति तिहां । नही अवर प्रकार ॥ २० ॥

७० ॥ कलिल हुवै दिन सातमै । अखुद दिन सात । अखुदथी पेसी  
 वधे । घनमांस कहात ॥ २१ ॥ ७० ॥ मांसतणी वोदी हुवै । अमृताली  
 स टंक । प्रथम मास जिनवर कहै । मन धरो निस्संक ॥ २२ ॥ ७० ॥  
 सुथिर मांसबीजे हुवै । हिवै तीजै मास । करम तणें वसि ऊपजै । मा  
 ता मन आस ॥ २३ ॥ ७० ॥ चोथै मासै मातना । प्रणमें सहु अंग ।  
 हाथ अने पग पांचमैं । तिम सुतकोसंग ॥ २४ ॥ ७० ॥ पित्त रुधिर ठठे  
 पमै । सातमैं इण संच । नव धमणी नस सातसै । पेसी सय पंच ॥ २५ ॥  
 ७० ॥ रोमराय पिण सातमैं । साढी तीन कोमि । उपजे ऊणें केतलै ।  
 इम आगम जोड ॥ २६ ॥ ७० ॥ आठमै मासैं नीपनो । इम सकल शरीर ।  
 ऊंधै शिर वेदन सहै । जंपै जिनवीर ॥ २७ ॥ ७० ॥ शोणित शुक्र सले  
 पमा । लघुनें वरुनीत । वात पित्त कफ गरजथी । थायै नरनीत ॥ २८ ॥  
 ७० ॥ मात तणी सुंहदी लगै । बालकनो नाल । रस आहार करै तिहां ।  
 आवै तत काल ॥ २९ ॥ ७० ॥ जनर्ना ल्ये आहार ते । जाय नाडो ना  
 ड । रोम इंद्री नख चख वधे । तिम मीजीने हारु ॥ ३० ॥ ७० ॥ सबहु  
 अंगे ऊजसे । सरवंग आहार । कवल आहार करै नही । गरजै सुविचार  
 ॥ ३१ ॥ ७० ॥ मास बीजे किण जीवनें । थायें ज्ञान विजंग । अथवा  
 अवधि कही जीये । तिण ज्ञान प्रसंग ॥ ३२ ॥ ७० ॥ कटक करै बैकी  
 यणें । झुजी नरके जाय । को जिन वचन सुणी करी । मरी सुर पिण  
 धाय ॥ ३३ ॥ ७० ॥ ऊंधैमुख गोमा हीये । सहि तो बहु पीरु । दृष्टि  
 आगलि विहुं हाथसुं । रहे सुछीजीरु ॥ ३४ ॥ ७० ॥ नरविण वख ज  
 लादिकै । ऊपजै आधान । अथवा विहुं नारी मिट्यां । कह्यो गरज  
 विधान ॥ ३५ ॥ ७० ॥ कोई उत्तम चितवै । देखी छुख वास । पुन्य करी  
 तिम नीकहुं । नार्क गरजावास ॥ ३६ ॥ ७० ॥ ऊंतकोमि चांपै सुई ।  
 कोई समकाल । तिणथी गरजै अठगुणी । सहै वेदन बाल ॥ ३७ ॥ ७० ॥  
 माता नखी नखीयो । सुखणी सुखथाय । माता सुती ते सुवै । परवस दि  
 न जाय ॥ ३८ ॥ ७० ॥ गरज थकी छुख लखगुणो । जामैं जिनवार ।  
 जन्मथयां छुल बीमो । धिग मोह विकार ॥ ३९ ॥ ७० ॥ उपज्या अशु

चि पणै जिहां । मल मूत्र कलेस । पिंरु अशुचि करि पूरीयो । किहां  
 सुचि लवलेस ॥ ४० ॥ जु० ॥ तुस्त रुदन करतो थको । जामें जिणवार ।  
 मात पयोधर मुख ठवै । पीयै दूध तिवार ॥ ४१ ॥ जु० दिन दिन दीसै  
 दीपतो । करै रंग अपार । लारु कोरु माता पिता । पूरै सुविचार ॥ ४२ ॥  
 जु० ॥ श्रोत्र इग्यारै नारिनें । नव नरनें जाण । रात दिवस वहिता रहै ।  
 चेतो चतुर सुजाण ॥ ४३ ॥ जु० ॥ सात धातु साते त्वचा । ठै सातसै  
 नारु । नवसै नाडी पिंरुमें । तिम तीनसै हारु ॥ ४४ ॥ जु० ॥ संधि एकसो  
 साठठै । सत्तोत्तरसो मरम । तीन दोष पेसी पांचसै । ढांकीठै चरम ॥ ४५ ॥  
 जु० ॥ रुधिर सेर दस देहमें । पेसाव सरीष । सेर पांच चरवी तिहां । दोय  
 सेर पुरीष ॥ ४६ ॥ जु० ॥ पित्त टांक चोसठ अठै । वीरज बत्तीस । टांक  
 बत्तीस सलेखमां । जाणैं जगदीस ॥ ४७ ॥ जु० ॥ इण परमाण थकी यदा ।  
 उठो अधिको थाय । व्यापै रोग शरीर में । नवि चालै काय ॥ ४८ ॥ जु० ॥  
 पोख्यो पहिलै दाहकै । इम बधियौ अंग । खान पान नूषण जला । करै  
 नवनवा अंग ॥ ४९ ॥ जु० ॥ हिव बीजै दसकै जणयो । विद्या विवध प्र  
 कार । तीजै दसकै तेहनें । जाग्यो काम विकार ॥ ५० ॥ जु० ॥ जिण था  
 नक तुं ऊपनो । तिणमें मन जाय । चौथे दसकै धन तणो । करै कोमि उ  
 पाय ॥ ५१ ॥ जु० ॥ पहुतो दसकै पांचमें । मनमें ससनेह । वेदावेटी पो  
 तरा । परणावै तेह ॥ ५२ ॥ जु० ॥ ठठै दसके प्राणीयो । बले परवस था  
 य । जरा आवी जोवन गयो । तृण्णा तोही न जाय ॥ ५३ ॥ जु० ॥ आवै  
 दसकै सातमें । हिव प्राणी तेह । बल जागो बूढो थयो । नारी न धरै स  
 नेह ॥ ५४ ॥ जु० ॥ आठमें दसकै मोसलो । खुलिया सहु दांत । कर  
 कंपावै सिर घुणें । करै फोकट वात ॥ ५५ ॥ जु० ॥ नवमें दसकै प्राणी  
 यो । तन सूकत जाय । सालै वचन बहुवां तणां । दिन झूरतां जाय  
 ॥ ५६ ॥ जु० ॥ खाट पड्यो खूं खूं करै । सहु गाली देह । हाल हुकम  
 हालै नही । दीयो परजन ठेह ॥ ५७ ॥ जु० ॥ आंख गलै वेष्टुफ मिलै ।  
 परे मुंहमें लाल । वेदा वेटीनें बह । नकरै सार संजाल ॥ ५८ ॥ जु० ॥  
 दसमें दसके आवीयो । तव पूरी आय । पुण्य पाप फल जोगवी । प्राणी

परजव जाय ॥ ५९ ॥ ३० ॥ दस दृष्टांते दोहिलो । लह्यो नर जव सार ।  
 श्री जिन धरम समाचरो । यामो जिम जवपार ॥ ६० ॥ ३० ॥ चरण  
 पणें जे तप तपे । पाले निरमल शील । ते संसार तरी करो । लहे अविच  
 ल लील ॥ ६१ ॥ ३० ॥ कोमि स्तन कवमी सटे । कांई गर्मेरे गिंवार ।  
 धरम पखे पिण जीवने । नही कोई आधार ॥ ६२ ॥ ३० ॥ काया माया  
 कारमी । कारमो परिवार । तन धन जोवन कारिमो । साचो धरम संजार  
 ॥ ६३ ॥ ३० ॥ चवदे राज प्रमाण ए । ते लोक महंत । जन्म मरण  
 करि फरसियो । तेवार अणंत ॥ ६४ ॥ ३० ॥ आप सवारथिया सह । न  
 ही केहनो कोय । विण स्वारथ अण पूजतां । सुत पिण बेरी होय ॥ ६५  
 ३० ॥ जरा न आवै जांलगै । जांलग सबल शरीर । धरम करो जीवतां ल  
 गै । होइ साहस धीर ॥ ६६ ॥ ३० ॥ आरजदेस लह्यो हिवै । लाधो  
 गुरु संयोग । अंग थकी आलस तजो । करो मुकृत संयोग ॥ ६७ ॥ ३० ॥  
 श्री नमिराय तणी परै । चेतो चित मांहि । स्वारथना सहुको सगा । को  
 ई किरासो नांहि ॥ ६८ ॥ ३० ॥ जोग संजोग तजीसहू । थया जे अणगार  
 धन धन तसु माता पिता । धन धन अवतार ॥ ६९ ॥ ३० ॥ सुरतरु सुरमाण  
 सारिखो । सेवो जिन धरम । जिणथी सुख संपति वधै । कीजे तेहिज क  
 र्म ॥ ७० ॥ ३० ॥ तंफुल वेयाली अडे । एहनो अधिकार । तिणथी ऊध  
 रनें कह्यो । नहीं ऊठ लिगार ॥ ७१ ॥ ३० ॥ ( कजश ) इह जेनधर्म  
 विचार सांजलि लीये संयम जार ए । परि सींह केरा सदा पाले नेम नि  
 रती चार ए । संसारना सुख सकज जोगवि ते लहे जवपार ए । श्रीजि  
 न हरण सुसीम रंगे इम कहे श्रीमार ए ॥ ७२ ॥ ३० ॥ ॐ ॥ ॐ ॥  
 इति उपदेश बहुत्तरी मंथनी ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

॥ अथ विजयसेव विजयासेवाणीको चोढालियो लि० ॥

॥ ॐ ॥ ग्रह ऊठारे पंच परमेष्टि सदा नमं । मनसुधरे तेहनें चरणे  
 नित नमं । धुरि तेहनेंरे अरिहंत मिद्ध वखाणिये । आचारजरे उपाध्याय  
 मन आणिये । ( उखालो ) आणिये निज मन जाव सुदे उपाध्याय नमं  
 वली । जे पनरु करम नमि मांहे साधु प्रणमं ते वली । जिम कृष्ण

पहनै सुक्लपट्टवलि शील पाल्यो ते सुणो । भरतारनै स्त्री विन्हे तेहनो चरित  
 जावैसुं जणो ॥ १ ॥ ( ढाल ) भरत क्षेत्रैरे समुद्र तीर दक्षिण दिसै । कन्हदेसैरे  
 विजय सेठ श्रावक वसै । शील ब्रतरे अंधारा पहनो लियो । बाला पणैरे  
 एहवो निश्चो मन कियो । ( उद्वालो ) मन कीयो एहवो तेण निश्चै पख्य  
 अंधारै पालस्युं । हुं शील निश्चै एह विरुज विषय सेवा टालस्युं । इक अठै  
 सुंदर रूप विजया नाम कन्या तेवली । तिण शुक्ल पहनो शील लीधो सुगुरु  
 जोगै मन रखी ॥ २ ॥ ( ढाल ) कर्म जोगैरे मांहो मांहि ते विहुं तणो । शुभ्र  
 दिवसैरे हुओ विवाह सुहामणो । तब विजयारे शोलै श्रृंगार जला करी ।  
 पिउ मंदिररे पोहती मन उद्धट धरी । ( उद्वालो ) मन धरी उद्धट अधिक  
 पहुती पिया पासै सुन्दरी । ते देखि हरषै सेठ बोलै शील निश्चो संजरी ।  
 सुऊ शील निश्चो पख अंधारै तेहना दिन तीनठै । ते नेम पाली सुक्लप  
 ख्य हुं जोग जोगवस्युं पठै ॥ ३ ॥ ( चाल ) इम सांजलरे विजया तब वि  
 लखी थई । पिऊ पूठैरे किम चिंता तुज्जनें जई । तब विजयारे कहै शुक्ल  
 पट्ट ब्रतमें लीयो । ब्रत चोथेरे बाला पण निश्चो कीयो । ( उद्वालो ) बाला  
 पणैमें कीयो निश्चै शुक्लपट्ट ब्रत पालस्युं । तो उजै पट्ट हिव शील पाली  
 नियम दूषण टालस्युं । तुह्मे अवरनारी परणने हिव सुक्ल पट्ट सुख जोगवो  
 कृष्ण पट्ट निज नियम पाली अजिग्रह इम जोगवो ॥ ४ ॥ ( ढाल ) तब व  
 लतारे तसु भरतार कहै इसो । विषया रसरे कालकूट विषहै तिसो । ते ठं  
 नी रे शील ब्रत दोनुं पालस्यां । एह वार्त्तारे मात पिता न जणावस्यां ॥ ५ ॥  
 मात पिता जब जाणस्ये तब दिख्य लेसां धरदया । इम अजिग्रह जेइनें ते  
 जाव चारित्र्या थया । एकत्र सज्या सयन करतां खम्भ धारा ब्रत धरे ।  
 मन वचन काया करी सूधो शील वेजुं आचरे ॥ ५ ॥ ( ढाल ) ॥ विमल के  
 वली एक । चंपा नयरीयै । ततखिण आवि समोसरयाए । आणी अधिक विवे  
 क । श्रावक जिण दास । कहै विनय गुण परिवरयो ॥ ६ ॥ सहस चोरासी साधु  
 सुऊ घर पारणो । करै मनोरथ तो फलै ए । केवल ज्ञान अगाध । कहै  
 श्रावक सुणो । एह वाततो नवि मिलैए ॥ ७ ॥ किहां एतला अणगार । किहां  
 वलि सृजतो । जातपाणी नही एतजोए । तो हिव तेह विचार । करो तुह्मे

जिम तिम । फल अह हुवै तेतलोए ॥ ८ ॥ अठै हिवै कवदेस । सेठ  
विजय बली । विजया जार्या तसु घरेए । जावयती अह वास । तेहनें जोजन  
दीधां फल हुवै तेतलोए ॥ ९ ॥ जिणदास कहै जगवंत । तेमांहि एतजा  
कुण गुण कुण बतठै घणा ए । केवली कहै अनंत । गुण तसु शीलना ।  
कृष्ण शुक्लपद्म बत तणा ए ॥ १० ॥ ( ढाल ) ३ ॥ दानकहै जगहुं बनो  
एचाल ॥ केवलीनें मुख सांजली । श्रावक तेजिनदासरे । कवदेसें हिव आ  
वीयो । पूरे निज मन आसरे ॥ ११ ॥ ( धन २ शील सुहामणो ) ॥ शी  
ल समो नही कोईरे । शीलै देव सानिध करै । शीलथी शिव सुख होईरे  
॥ ध० ॥ १२ ॥ सेठ विजय विजया जणी । जगतसुं जोजन देईरे । सहस  
चोरासी साधुना । पारणानो फल लेईरे ॥ ध० ॥ १३ ॥ मात पितां पूछे  
तेहनें । एहनो शील बखाणरे । केवलीनें मुख जिम सुणयो । तिम कहै ते  
गुण जाणरे ॥ ध० ॥ १४ ॥ सहस चोरासी साधुनें । पारणो दीये कोई  
जायरे । कृष्ण शुक्ल पद्म दंपती । जोजननो फल थायरे ॥ ध० ॥ १५ ॥  
मात पिता जवजाणीयो । प्रगट हुओ संबंधरे । सेठ विजय विजया जी  
यो । चारित्र अप्रतिबंधरे ॥ ध० ॥ १६ ॥ ( ढाल ) ४ ॥ केवलीनें पासै ।  
चारित्र लेई उदार । मन ममता मूकी । पालै निरस्ती चार ॥ १७ ॥ आठ क  
रम खपावी । पाम्यो केवल नाण । ते सुगतै पहुता । दंपती सुगण सुजा  
ण ॥ १८ ॥ तेहना गुण गावै । जावै जे नर नार । ते वंजित सुख लहै ।  
पहुंचै जवनै पार ॥ १९ ॥ ( कजस ) इम कृष्णपद्मनें शुक्ल पख्ये शील  
पाल्यो निरमलो । ते दंपतीना जाव सुखे सदा सुज गुण सांजलो । जिम  
पुरिय दोहरा दूर जायै सुख थायै बहुपरे । बलि सकल मंगल मनह वं  
जित कुशल नित घर अवतरे ॥ इति कृष्ण शुक्ल पद्म चौदा० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ इखुकार राजा नृगुप्रोहित सि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ महिला में बैठी राणी कमलावती । जीणीतो उमै मारगखेह ।  
जोवै तमासो इखुकार नगरमें । कोनिक ज्यनो मनमें एह ॥ १ ॥ ( सांजल  
है दासी आज नगरमें बहदो किम घणो ) । कातो परधान सखी रंभीया ।  
काकोई लुंठ्या राजा गांव । काकोई गांवयो धन नीसरयो । गाना रखा ठे



ठामो ठाम ॥ २ ॥ सां० ॥ आ० ॥ नातो परधान बाइजी मनीया । ना को  
 राजा जुंढ्या गांव । जगू परोहित धन तज नीसरयो । राजारै धन लेवा  
 चाव ॥ ३ ॥ ( सांजल हे राणी हुकम करो तो कोई गानो इहां धरां ) ॥ वे  
 दांतो तिणरा संजम लीयो । वरज्यो घणुं ही पिता मात । ते पिण चारित ले  
 वा ऊमहा । जगू जशा तिणें मोह लल चात ॥ ४ ॥ ( सांजल हे० हु  
 क० ) ॥ इम सुण कमलावती राणी इम कहै । इहां तो कमी नहीं काय ।  
 सांजलनें राणी माथो धुणीयो । राजारी ममता नही ठाय ॥ ५ ॥ ( सां०  
 दासी राजानें एवातां जुगती नही ) । महिलांसुं राणी कमलावती ।  
 आईतै राजारे हजूर । वचन कहै राजानें आकरा । जाएणें पोरस चढियो  
 बोलै सूर ॥ ६ ॥ ( सांजलहो राजा ब्राह्मण ठोमी रिक्क्युं आदरो ) । कर  
 जोमी कमला कहै । सांजल कंत सुजाण । ब्राह्मण जेरिद्ध परिहरी । ते  
 तो घर मांहै मत आण । ( सां० । राजा० ) ॥ ७ ॥ एरिद्धसुं अपणें  
 कांई घणो हुसी । राजारा मोटा ठै जाग । वमियै आहाररी बांठा कुण  
 करै । कै कुतरा कै काग ॥ ८ ॥ सां० ॥ राजा० । ब्रा० । वमियो आ  
 हार पीठो नर जखे । नही परसंसवा जोग । जगू प्रोहित रिद्ध तजनीस  
 रयो । थे जाण्यो ठै आसीह्वारे जोग ॥ ९ ॥ ( सां । राजा ब्रा० ) ॥  
 संकलपियोमो पाठो किमलीयै । सांजलहो महाराज । दान दियो थे  
 पहिलां हाथसुं । ते पूठो लेतांनावै थानें लाज ॥ १० ॥ ( सां राजा ब्रा०  
 निहचैतो मरणो राजा इक दिनें । ठोमीनें काम विसेष । बीजो तो जगमें  
 सरणो को नही । तारै जिनजीरो धम एक ॥ ११ ॥ ( सां० राजा ) ॥  
 सगलै जगतरो धन जेलो करी । थे वालो जंमारां रै मांहि । तो पिण  
 त्रिसना राजा पापणी । त्रिपत न मनमो थाय ॥ १२ ॥ ( सां० ब्रा० ) ।  
 सांजलनें इखुकार राजा बोलीयो । तुं जापैनी वचन संजाल । कातनें रा  
 णी जेलो बाजीयो । काकोई कीधी मतवाल ॥ १३ ॥ ( सां० । राणी  
 राजानें करमा वचन न बोलीयै ) । नांतो राजाजी जेलो बाजीयो । नाकोई  
 कीधी मत वाल । ब्राह्मणरो वमियो धन थे आदरो । वरजण आईहो  
 नूपाळ ॥ ( सां० राजा ब्रा० ) ॥ १४ ॥ बलतो राला राणीनें इम कहै ।

इसमी बैरागण थाय । अजूतो निजरां आवै नही । तुं बेठी ठे वर मांय  
 ( सां० । राणी राजानें कर० ) ॥ १५ ॥ उत्तर बाजीतो दीसै नही । इसमी  
 आई ठे मतवाल । हुंतो वर ठोमीनै नीसरी । थे पिण ठोमो हो चूपाज ।  
 ( सां० । राजा आग्या देवो तो संयम आदरुं ) ॥ १६ ॥ रतन जन्तरो  
 राजा पींजरो । तिणमें सूवटो पडियो फंद । इण रीतै हुं थारै राजमें ।  
 रहिनै पासुं आणंद । ( सां० राजा आग्या ) ॥ १७ ॥ सनेह रूपिया  
 तांतण तोरुनै । आरंज धनसुं रहस्यां दूर । विरक्त थई मोन पणें रह्या ।  
 थे पिण होयज्यो सूर ॥ ( सां० राजाआ० ) ॥ १८ ॥ दवतोलागी हो राजा  
 वन मऊ । हिरण सिसा बलै मांय । गिरधपंखी ज्युं आमिष देखनै । मन  
 मांहें हरपित थाय । ( सां० राजा राग द्वेषरा जंगल रह्या ) ॥ १९ ॥  
 मांहो मांहै खेधो ईसको । दस प्राण रहित कीधो काल । दुसमणतो म  
 नमें हरष पांम्यो वणो । जाणें ते माहरो मिटियो साज । ( सां० हो-रा  
 जा रागद्वेष ) ॥ २० ॥ इण दिष्टांतै लोनी मूरख थका । मुरजरह्या जोग  
 मांहि । पेलानें छुलियो देखी चेतै नही । लागी राग द्वेषरी लाय ॥ ( सां०  
 राजा राग० ) ॥ २१ ॥ मांसरी बोटी पंखीरी चांचमां । नरपासै पंखी प  
 मियो आय । आमिष सम जोग ठोरुनै । चारित्र जेस्यां चित्त लाय ॥  
 ( सां० प्राणी संयमथी सुखपांमीये ) ॥ २२ ॥ महज पिजंगादिक अथि  
 रते । ते पांम्या ठे आपणें हाथ । कामजोगमें रक्त होय रह्या । ते तज  
 होयसां नाथ ॥ ( सां० राजा सं० ) ॥ २३ ॥ पांचे इंद्रचारो जोग ठोरुनै ।  
 द्रव्य जावै हजकाथाय । सहज वाउ पंखीनीपरै । विचरस्यां अपणी दाय ॥  
 ( सां० प्राणी सं० ) ॥ २४ ॥ गिरध पंखीज्युं जोग जाणजो । एह काम  
 वधारै संभार । सापज्युं मोर थकी मरतो रहे । ज्युं पापसुं संकस्यां इण  
 वार ॥ ( सां० । प्राणी सं० ) ॥ २५ ॥ मोक नजी संतोषसुं । जेस्यां संय  
 मजार । समता नजी समता अहो । करस्यां उग्र विहार ( सां० प्राणी सं० )  
 ॥ २६ ॥ नन धन जीवन कारमो । चंचल बीज समान । खिण २ मूट्टे  
 आउखो । मूरख करै गुमान ॥ ( सां० प्राणी सं० ) ॥ २७ ॥ हर्ताज्युं  
 बंधण तोरुनै । आपे वनसुखे जाय । कर्म बंधण तूटै संयम जियां । सुणो

कहुं तु महाराय ॥ ( सां० राजा सं० ) ॥ २८ ॥ इम सुणनें इखुकार राजा  
 चेनियो । ठोमीनें मोटको राज । कायरनें तो ए तजतां दोहिलो । विप्र  
 सहित सारघा काज ॥ ( सां० राणी सं० ) ॥ २९ ॥ मोह न राख्यो परिग्रह  
 ठोमके । पायो जिन धरम सुजाण । तपस्या सगलांही आदरी । उत्कृष्टो  
 पराक्रम आण ॥ ( सां० प्राणी सं० ) ॥ ३० ॥ सुधसंयम पालै सदा । सु  
 मति गुपति दयाल । जमरानी परै करै गोचरी । रिष टालै दोष वयांल ॥  
 ( सां० प्राणी सं० ) ॥ ३१ ॥ तारण तरण जिहाज बै । जव्य जीवनै उ  
 तारै पार । केवल ज्ञान उपायनें । सुख पाम्यां श्रीकार ॥ ३२ ॥ ( सां०  
 प्राणी सं० ) । मोहनिवारी प्राणी समजनें । निरमल जावना जाव । ठए  
 जणा थोना कालमें । सुगति बिराज्या जाय । ( सां० प्राणी सं० ) ॥ ३३ ॥  
 राजा सहित राणी कमलावती । जृगु पुरोहित जशा नार । प्रोहित जृगुना  
 दोय दीकरा । शिव सुख पाम्यो सार ॥ ३४ ॥ ( सां० प्राणी सं० ) इति  
 श्री इखुकार राजा जृगु प्रोहितरो अधिकार संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥❀॥(अब नव पदके (९) चैत्यवंदन (९) स्तवन(९)थुई लिखते हैं॥❀॥

॥ ❀ ॥ अथ अरिहंतपद चैत्यवंदन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री इष्टदेवाय नमः ॥ ❀ ॥ जय २ श्री अरिहंत जानु । जवि क  
 मल विकाशी । लोकालोक अरूपि रूपि । समवस्तु प्रकाशी ॥ १ ॥ समुद्रा  
 त सुज केवलै । द्वय कृत मल राशी । शुक्ल चरम शुचि पादसें । जयो वर  
 अविनाशी ॥ २ ॥ अंतरङ्ग रिपु गण हणीए । हुय अप्या अरिहंत ।  
 तसु पद पंकजमें रहित । हीर धरम नित संत ॥ ३ ॥ इति अरिहंत पद  
 चैत्यवंदनं ॥ जिंकिंचि० । नमोर्द्धत् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ प्रथम पद स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( पूजो मनरली, हां हो दादा कुशल सुखिंद पू० एदेशी ) ॥  
 श्रीतेरमगुण वसिकै कंत । कर्मकुं जंजै श्री अरिहंत । ( मन मानले ) । अष्ट  
 समय में समय तीन । सर्व आहार थी होवें हीन ॥ ( म० ) वादर काये  
 मन वच जोग । तनु २ में फुन दढ तनु योग ॥ ( म० ) सुखम कायते मन  
 वच रोक । निज वीर्यें ताकुं कर फोक ( मन० ) ॥ २ ॥ संझी मात्रके मन

व्यापार । वेइंद्रीने वाक्य प्रचार ( म० ) आदि समय रह्यो पणक सुजी  
व । मुखम लह्यो तिण जोग अतीव ( म० ) एषां योग थी समयें एक ।  
हीना संख गुणो कर ठेक ( मनमा० ) समया संखें जोग निरोध । कृत्वा  
जो लह्यो जोगी सोध ( मन० ) वेद समें ना हारता पाय । कुशल कहै  
ते श्री जिनराय । ( म० ) तेरमे गुणमें गुण समें देव । आपोसा जगकुं  
नितमेव ( म० ) ॥ ५ ॥ इति अरिहंतपद स्तवनम् ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अरिहंत पदस्तुतिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सकल द्रव्य पर्याय प्ररूपक लोकालोक सरूपो जी ।  
केवल ग्यान की ज्योति प्रकाशक अनंतगुणें करि पूरो जी । तीजें  
जव थानक आराधी गोत्र तीर्थकर नूरोजी । वारे गुणांकरी एहवा अरिहंत  
आराधो गुण नूरोजी ॥ इति अरिहंत पदस्तुतिः ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सिद्धपद चैत्यवंदन ॥ २ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री शैलेसी पूर्वप्रांत । तनु हिनत जागी । पुत्र पञ्चपसंगसैं  
ऊरधगत जागी ॥ १ ॥ समय एकमें लोकप्रांत । गये निगुण निरागी ।  
चेतन नूपें आत्मरूप । सुदिसा लही सागी ॥ २ ॥ केवल दंसण नाण थी  
ए । रूपातीत स्वभाव । सिद्ध जये तनु हीर धर्म । वंदे धारि सुज भाव ॥ ३ ॥  
इति सिद्धपद चैत्यवंदन ॥ २ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सिद्धपद स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ थारै महिला ऊपर मेह जरोखे वाजली ॥ ( ए चाल ) ॥ ❀ ॥  
अष्ट वरस नग मास हीना कोडी पूर्वमें ( म्हा० राजाज ही० ) । उनकृष्टो  
करे वास सयोगी धाममें ( म्हा० म० ) ॥ अजोगी के अंत नजे जव ज्य  
ता ( म्हा० न० ) । शैलेसीलहे कर्म दले गुणश्रेणिना ( म्हा० द० ) ॥ १ ॥  
झखाहर पंच काल गहे ते योगमें । ( म्हा० २० ) तेरम प्रकृतिनो अन्त करानें  
अन्तमें ( म्हा० क० ) गमन करे नगरजमें अक्रिय होयनैं ( म्हा० अ० ) पुत्र  
पयोग असंग स्वभाव अवंधनैं ( म्हा० स्व० २ ) इष्ट गुण नवपरमाणु जोजन  
लहे कही ( म्हा० जो० ) वहुंज विगदा भाश निराजवन मही ( म्हा० नि० )  
मध्ये जोजन अष्ट वनाकृति अन्तमें ( म्हा० व० ) मही पदार्थ हीन जणी

सिद्धांतमें ( म्हा० प्र० ) ॥ ३ ॥ तनुपञ्जारा नाम शिलासैं जोयनें ( म्हा० शि० )  
 युंग लोचनमें जाग अलोककुं स्पर्शनें । लघु अंगुल बत्तीस प्रमाणऽवगाहना  
 ( म्हा० प्र० ) इद्धिधनु शतपंच गुणासैं हीनता ( म्हा० ) मिलिया एकमें नंत  
 अबाधा नालही ( म्हा० अ० ) अष्ट प्राणधरि रम्य सिरीही जो सही ( म्हा०  
 सि० ) बीजोपद श्रीसिद्ध धरो मन गेहमें ( म्हा० धरो० ) कुशलजये जग  
 जीव मिलोगा तेहमें ( म्हारा० मि० ) ॥ ५ ॥ ❀ ॥ इति सिद्धपद स्तवनम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सिद्धपदस्तुतिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अष्ट करमकुं धमन करीनें गमन कियो सिववाशी  
 जी । अव्या बाध सादि अनादि चिदानंद चिदराशी जी । पर  
 मातम पद पूरण विलाशी अघ घन दाघ विनाशी जी । अनंत चतुष्टमय  
 शिवपद ध्यावो केवल ग्यानी ज्ञाशी जी ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
 इति सिद्धपद स्तुतिः ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ तृतीय पद नमस्कारः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिन पदकुल सुखरस अनिल । मितरस गुण धारी । प्रवल  
 सवल घन मोहकी । जिणते चमुहारी ॥ १ ॥ रुज्वादिक जिनराज गीत ।  
 नयतन विस्तारी । जव कूपै पापें पमत्त । जगजन निस्तारी ॥ २ ॥ पंचा  
 चारी जीवके । आचारिज पदसार । तिनकुं बंदे हीर धर्म । अछोत्तर सो  
 वार ॥ ३ ॥ इति आचार्य पद नमस्कारः ॥ ३ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ आचार्य पद स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( नणदल बींदलीलै एचाल ) ॥ ❀ ॥ खंती खरुगथी जेणें ।  
 हाण्यो क्रोध सुजट सम देणेंहो । ( गणपति गुणपेखी ) । मान महागि  
 रि बयरे । अति सोज्जन मदव बयरें ( होग० १ ) दंजरूप विश बेली । वर  
 अज्जत्र कीलै ठेलीहो ( ग० ) । सुर्वा बेलथी जरियो । लोह सागर सुत्तें  
 तरियोहो ( ग० ) ॥ २ ॥ मदन नाग मद हीनो । जिण दम शम जंत्रें की  
 नोहो ( ग० ) मोह महामत्त ताम्बो । पुण बैराग सुगरें पाड्यो हो ( ग० )  
 ॥ ३ ॥ दोश गयंद वस कीनो । धरि उपशम अंकुस लीनो हो ( ग० ) अं  
 तरंग रिपुजेद्या । सुर वर पिण जिण णिपेद्याहो ( ग० ४ ) रस कृति गुणथी

लीनो । सुत्र अरथे आगम पीनोहो ( ग० ) आचारिज पद एहवो । धरी  
जीव कुशलता सेवोहो ( ग० ) ॥ ५ ॥ इति आचार्य स्त० ॥ ३ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ आचार्यपद स्तुतिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पंचाचारकुं पालै उजवाले दोष रहित गुणधारी जी ।  
गुण उत्तीमे आगमधारी छद्दश अंग विचारी जी । प्रबल सबल  
घनमोह हरणकुं अनिल समो गुणवाणी जी । कृमा सहत जे संयम पालै  
आचारज गुणध्यानीजी ॥ इति आचार्य पद स्तुति ॥ ३ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चतुर्थ पद नमस्कारः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ धन धन श्री उवजाय राय । सठता घन जंजन । जिनवर दिसत  
डुवाल संग । कर कृत जन रंजन ॥ १ ॥ गुणवण जंजण मण गयंद ।  
सुय शृणि कियगंजण । कुणालंध लोय लोयणें । जत्थय सुय मंजण ॥ २ ॥  
महा प्राणमें जिन लह्यो ए । आगमसें पद तुर्य । तिनपें अहि निश हीर  
धर्म । बंदे पाठक वर्य ॥ ३ ॥ इति उपाध्याय चेत्य० ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ उपाध्याय पद स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शांवलिया अजगा रहोनें । ( एचाल ) हुयनें ३ दूरी हुयनें ।  
चेतन जापे सठनें ( दूरीहोयनें ) तुं मुऊपास क्युं आवे ( दू० ) तुऊनें  
कुण वतलावे । ( दू० आंकाणी ) तो संगे निज पंचेंद्रीनो । रचना चरम  
तुलाणो । नाणावरणी खय उपशमसे । ज्ञावेंद्री मंमाणो ( दू० ) ॥ १ ॥  
द्रव्ये ते परजासेंकीना । जाति नाम व्यपदेश । एवंतो गो तुरग गजादिक  
किण कर्म उपदेश ( दू० ) ॥ २ ॥ इत्यादिक बहु मुऊकुं शंका । तेरे संगे जा  
गी । नीलवर्ण की शमतासेती । मैजयो तोमुं रागी ( दू० ) ॥ ३ ॥ उप क  
होयें हणीयो नवियानो । अधियां लाजत आव । आधीनां मन पीमाना  
में । मायो येन विजाय ( दू० ) ॥ ४ ॥ आधिक्ये स्मरीवे वर आगम । सुत्र  
में ते उवजाय । ततमेवार्ते हणि मउताकुं । चेतन कुशलता पाय ( दू० )  
॥ ५ ॥ इति चतुर्थ पद स्तवनम् ॥ ❀ ॥



॥ ❀ ॥ अथ उपाध्याय पद स्तुतिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अंग इग्यारै चउदै पूख गुण पचवीसना धारी जी ।  
सूत्र अरथधर पाठक कहियै जोग समाधि विचारी जी । तप गुण  
सूरा आगमपूरा नय निहोपै तारी जी । मुनि गुणधारी बुध विस्तारी  
पाठक पूजो अविकारी जी ॥ ❀ ॥ इति उपाध्याय स्तुति ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पंचमपद नमस्कारः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दंशण नाण चरित्त करी । वर शिवपद गामी । धर्म शुक्लसु  
चि चक्रसैं । आदिम खय कामी ॥ १ ॥ गुण पमत्त अपमत्ततैं । जये  
अंतरजामी । मानस इंदिय दमनचूत । शम दम अजिरामी ॥ २ ॥ चारुति  
घन गुण गण जरयो ए । पंचम पद मुनिराज । तत्पद पंकज नमतहै  
हीर धर्मके काज ॥ ३ ॥ इति साधुपद चैत्यवंदनं ॥ ५ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ साधु पद स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मालन मालन मति कहो ( एचाल ) निकषाया जगजन कहै ।  
धारे चउगति वसनसैं रोसहो ( मुनिदजी ) राग हीन जय तुं करै । ( साहि  
बा ) शिव रमणीसैं हेतहो ( मुनिदजी ) ॥ १ ॥ सर्वप्रमादतजी रहै ( सा० )  
जठैपूरव कोरहो ( मु० ) शत सोगम आगम करै ( सा० ) लघुकाले गुण  
आदिहो मु० ॥ २ ॥ स्त्यानर्धि निद्राजुदै सा० । पामैं कर्म निकंद हो ( मु० )  
प्रचला निद्रामैं रही ( सा० ) । बारम गुणनो वास हो ( मु० ) ॥ ३ ॥  
स्थिति रस घात प्रमुख करै ( मा० ) जो गुण संख्या तीत हो ( मु० ) तो  
पिण तिण जगमें लही ( सा० ) त्रिक घन गुणनी ख्यात हो ( मु० ) ॥ ४ ॥  
रयण त्रयसैं शिव पथैं ( सा० ) साधन परवर जीव हो ( मु० ) । साधु हुवइ  
तसु धर्ममें ( सा० ) कुशल जवतु जगती बहो ( मु० ) ॥ ५ ॥ इति ॥ ५ ॥

॥ ❀ ॥ अथ साधू पद स्तुतिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुमति गुपतिकर संजम पालै दोष बयालीश टालैजी  
पटकाया गोकल रख वालै नवविध ब्रह्मव्रत पालैजी । पंच महाव्रत  
सूधा पालै धर्म शुक्र उजवाले जी ॥ कृपक श्रेणिकारि कर्म खपावै  
दुमपद गुण उपजावै जी ॥ इति साधू पदस्तुति ॥ ५ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ दर्शनपद नमस्कार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हुय पुगल परियट । अट्ट परमित संसार । गंठिजेद तव क  
रिलहै । सब गुण आधार ॥ १ ॥ ह्यायक वेदक शशि असंख । उवशम  
पण वार । विनाजेण चारित्र नाण । नही हुवै शिव दातार ॥ २ ॥ श्रीसुदे  
व गुरु धर्मनीए । रुचि लल्लन अजिराम । दर्शनकुं गाणि हीर धर्म । अह  
निश करत प्रणाम ॥ इति दर्शनपद नमस्कारः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ दर्शनपद स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रामचंद्रके वाग आंवो मोह रह्योरी ( ए चाल ) ॥ ❀ ॥  
देव श्रीजिनराज । गुस्ते साधु जणयोरी । धर्म जिनेश्वर प्रोक्त । जल्लण बोधि  
तणोरी ॥ १ ॥ बोधलाजके काज । सप्तम नरक जलोरी । तेण विना सुर  
लोक । तातें अधिक बुरोरी ॥ २ ॥ मिथ्या तापे तप्त । बोधही गंहलहेरी ।  
उपशम ख्यायक वेद । ईश्वर तीन कहेरी ॥ ३ ॥ जव सायर हे अपार ।  
फुण अस्ताव कह्योरी । जसु लाजै ते होय । गोसपद मात्र खरोरी ॥ ४ ॥  
यदजावें अप्रमाण । नाण चारित्त जलारी । बोध धर्ममें जीव । लाजै कु  
शल कलारी ॥ ५ ॥ इति दर्शनपद स्तवनं ॥ ६ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ दर्शन पदस्तुतिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिनपन्नत्त तत्व सूधासरवै समकित गुण उज वालै  
जी । जेद ठेद करि आतम निरखी पशु टाली सुर पावै जी । प्रत्या  
ख्यानें समतुल्य जाण्यो गणधर अरिहंत सूरजी । ए दर्शण पद नित  
नित बंदो जवसागरको तीरा जी ॥ इति दर्शनपद स्तुति ॥ ६ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ग्यानपद नमस्कार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ द्विप्रादिक रस राम वह्नि । मित आदम नाण । जाव मिला  
पसैं जिन जनित । सुय वीश प्रमाण ॥ १ ॥ जवगुण पल्लव उहि दीय ।  
मण लोचन नाण । लोकालोक सुरूप जाण । इक केवल जाण ॥ २ ॥  
नानावरणी नासथीए । चेतन नाण प्रकाश । सप्तम पदमें हीर धर्म । नित  
चाहत अवकाश ॥ इति ज्ञानपद चैत्यवन्दनं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ग्यानपद स्तवन ॥ लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ह्यारै अति उरंगे ( ए चाल ) जिनवर ज्ञाषित आगम ज्ञाणि  
या । तत्व यथास्थिति गमिया जी ( म्हारै जगजनतारू ) ते उत्तम  
वर नाण कहायै । जवि जन अहनिशि चाहै जी ( म्हा० ) ॥ १ ॥ ज  
ह्वा जह्वा कुपंथ सुपंथा । पेयापेय अग्रंथाजी ( म्हा० ) देव कुदेव अहित  
हित धारी । जाणें जेण विचारी जी ( म्हा० ) ॥ २ ॥ श्रुति मति दोयढे इं  
द्रो सारू । तेण परोक्ष विचारूजी । ( म्हा० ) उही मण केवल है वारू ।  
जीव प्रतक्ष सुधारू जी ( म्हा० ) ॥ ३ ॥ अयवि जस्स बलें जगजाणें ।  
लोकादिक अनुमानें जी । ( म्हा० ) त्रिजुवन पूजै जासु पसायें । धारी  
शुभ्र अद्यवसायें जी ( म्हा० ) ॥ ४ ॥ नाणा वरणी उपशम हूयथी । चे  
तन नाणकुं बिलशैजी ( म्हा० ) । सप्तम पदमें जविजन हरषै । निशदिन  
कुशलता निरखै जी ( म्हा० ) । इति नाणपद स्तवनं ॥ ७ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ग्यान पदस्तुतिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मतिश्रुत इंद्रो जन्नित कहियै लहीये गुण गंजरीरो जी ।  
आतमधारी गणधर विचारी द्वादश अंग विस्तारोजी । अवाधि मनपर्यव  
केवल बलि प्रत्यक्ष रूप अवधारोजी । ए पांच ग्यानकुं बंदो पूजो जविजननें  
सुखकारो जी ॥ ❀ ॥ इति ज्ञानपदस्तुति ॥ ७ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अष्टमपद नमस्कार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जस्स पयायें साहु पाय । जुग २ समितेंद । नमन करै सुभ्र  
जावलाय । फुण नरपति वृन्द ॥ १ ॥ जंपै धरि अरिहंतराय । करि कर्म  
निकंद । सुमति पंच तीनगुप्तिधुत । दै सुक्ख अमंद ॥ २ ॥ इणु कृति मान  
कषाय थीए । रहित लेस सुचिवंत । जीव चरत्तकुं हीरधर्म । नमन करत  
नितसंत ॥ ३ ॥ इति चारित्रपद चैत्यवंदनं ॥ ८ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चारित्र पद स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ निर्विकल्प अज निर्गुणी । विदाज्ञास निस्संग ( सुग्यानी सां  
जलो ) मृत्तिहीन चेतन करै । रूपी पुदगल रंग ॥ ( सुग्यानी सां० )

॥ १ ॥ स्यर्धक कारण वर्गणा ॥ कार्ये कारण जाव ( सु० ) कृत्वा जोग  
सुधामता । लब्धा संखस्वजाव ( सु० ) ॥ २ ॥ पर्याप्ता लघु जोगमें । वृ  
द्धि लहै जुगमान ( सु० ) मध्ये वसु समयें लहै । अंते द्वौ तेजाण ( सु० )  
॥ ३ ॥ सहकारी मानस सुखा । कारण रम्य बलेण ( सु० ) प्राप्ताघस प्र  
कारता । सप्त प्रभृतका तेन ( सु० ) ॥ ४ ॥ तद्रोधन रूपी जलो । चेतन  
संयमधाम ( सु० ) कर धन मिल पद धर्ममें । कुशल जवतु अन्निराम  
( सु० ) ॥ ५ ॥ इति चारित्रपद० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चारित्र पदस्तुतिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ करम अपचय दूर खपावै आतम ध्यान लगावै जी ।  
बारै जावना सूधी जावै सागरपार उतारै जी । षट्खंरु राजकुं दूर तजीनें  
चक्री संजमधारै जी । एहवो चारित्रपद नित बंदो आतम गुण हि  
तकारै जी ॥ इति चारित्र पद स्तुतिः ॥ ८ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ तपपद नमस्कार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री रुषजादिक तीर्थनाथ । तज्जव शिव जाण । बिहिअंतै रपि  
बाह्य । मध्य द्वादश परिमाण ॥ १ ॥ बसु कर मित आमोसही । आदि  
क लब्धि निदान । जेदै समतायुत खिणें । दृग्धन कर्म विमान ॥ २ ॥ नव  
मो श्रीतपपद जलोए । इच्छा रोध सरूप । बंदनसैं नित हीरधर्म । दूरजवतु  
जवकूप ॥ ३ ॥ इति तपपद चैत्यवंदनं ॥ ९ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ तपपद स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वारश जेद जणया जिनराजै । बाह्य मध्यतणा जगकाजैरे । ( शि  
वपद श्रेणि ) । तिण जव सिद्धितणा वरग्याता । जिनवर पिण तपना कर्ता  
रे ॥ १ ॥ ( शि० ) शमता सहिते जिनते जारी । जली कर्म चसु पिणहारी  
रे ( शि० ) जीव कनकसैं कर्म कचोरा । दहै तप पावनका जोरारे  
( शि० ) ॥ २ ॥ तप तरुवरना कुशमहै रुद्धि । देव नरनी फलते सिद्धी  
रे ( शि० ) पाप सकलहै तमनी राशी । तप जान्दसैं जाये नाशी रे  
( शि० ) ॥ ३ ॥ जस्स पसाये लहियै वारू । लब्धां सगली जगहित कारू  
रे ( शि० ) अति डुकर फुण साध्यता हीना । काम तातें वारू कीनारे ।

( शि० ) ॥ ४ ॥ इच्छा रोधन रूपी कहियै । तपपदही चेतन बहियैरे  
 ( शि० ) पाठक हीर धर्म कृपासैं । नवपद कुशलाकूं प्रासेरे ॥ शि० ॥ ५ ॥  
 इति श्रीतपपद स्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ तपपदस्तुतिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इच्छारोधन तपते प्राण्यो आगम तेहनो साखी जी ।  
 द्रव्य प्रावसैं द्वादश दाखी जोगसमाधि राखी जी । चेतन निजगुण  
 परणित पेखी तेहीज तप गुण दाखी जी । लबधि सकलनो कारण देखी  
 ईश्वरसैं मुख प्राणी जी ॥ इति तपपदस्तुतिः ॥ ९ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ २४ जिन चैत्यवंदन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री मद्बृषज सर्वज्ञ । वृषजांक सुवर्णरुक् । जय देवाधिदेवार्ह ।  
 नान्नि राजेन्द्र नन्दन ॥ १ ॥ युगस्पादौ त्वयायेन । ज्ञान त्रय युतेन यत् ।  
 जनन्या मरुदेवायाः । पावनं जठरं कृतं ॥ २ ॥ इति रुषज स्तुतिः ॥ १ ॥

॥ ❀ ॥ अर्हता जितनाथेन । गजलांढन शालिना । जित शत्रूमहीपाल ।  
 पुत्रेण कनकत्विषा ॥ ३ ॥ विजया कुक्षि रत्नेन । जगवंस्त्वयका जिनः ।  
 जिता रागादयो येन । वंदेत्वां सर्वदा मुदा ॥ ४ ॥ इत्य जितस्तुतिः ॥ २ ॥

॥ ❀ ॥ जितारि नृपतेर्वर्यात् । शंजवः शंजवान्निधः । शेनायानंदनो हे  
 म । वर्णो गंधर्व लांढनः ॥ ५ ॥ सर्व सौख्यप्रदो मुख्य । ज्ञान दर्शन संयु  
 तः । सुनीनां पुङ्गवो देवो । नित्यं दिशतुमांजिनः ॥ ६ ॥ इति शंजव स्तुतिः ॥ ३ ॥

॥ ❀ ॥ सिद्धार्थानंदनं सार्व । वीतरागं जगत्पतिं । श्री संवर समुत्पन्नं  
 प्लवगांकं हिरण्यजं ॥ ७ ॥ अग्निनन्दन नामानं । विशुद्ध हृदयः सदा । यस्तौ  
 ति परयाज्जत्या । सना लोकेऽग्निनंदते ॥ ८ ॥ इत्यग्निनंदन स्तुतिः ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ मेघान्निध धरित्रीश । तनयो मङ्गलप्रदः । कौंच लक्ष्ण नृधेम ।  
 मरीचि मङ्गलांगजः ॥ ९ ॥ सत्यं सुमति नाथेश । सुमतिं तनुसत्तमां । जवि  
 नां पुण्यकर्तृणां । स्वर्ग सौख्यवलिप्रदं ॥ १० ॥ इति सुमति स्तुतिः ॥ ५ ॥

॥ ❀ ॥ सुशीमा पुत्र सत्कोक । नदद्युति धराधर । धरा निध नृपोद्भूत । पद्म  
 लक्ष्ण धारक ॥ ११ ॥ जवाब्धौ जवसंकीर्ण । दुस्तरे पततां नृणां । प्राणाय  
 सततं देव । पद्मप्रज जिनेश्वर ॥ १२ ॥ इति पद्मप्रज स्तुतिः ॥ ६ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीसुपार्श्वार्जिधो देवः । पृथ्वीजः स्वस्तिकांकनृत् । प्रतिष्ठ नृप  
संजात । श्रामीकर करोजिनः ॥ १३ ॥ समुद्र इव गंजीरः । कर्मणां भेदने  
परः । यः सार्वः परमब्रह्मा । स्तनौमि सदा विभू ॥ १४ ॥ इति सुपार्श्व स्तुतिः ७

॥ ❀ ॥ चंद्रप्रज्ञ प्रज्ञोकांत । चंद्रलक्षण संयुत । स्तमापति द्विविज्ञान ।  
तमो व्यूह विनासनः ॥ १५ ॥ संसार जलधेर्नाथ । महसेन नृपोद्भवः । लक्ष्म  
णा पुत्र मांस्वामि । नव केवल बोधनृत् ॥ १६ ॥ इति चंद्रप्रज्ञ स्तुतिः ८ ॥

॥ ❀ ॥ ( अत्राद्यह्नवबंधः श्लोकः ) ॥ संस्तु तो वो ददत्वाशु । सुरासुर  
नरेश्वरैः । सुविधिर्वाञ्छित शर्म । सुग्रीव नृपनंदनः ॥ १७ ॥ यस्यासीज्जननी  
रामा । माननीया दिवौ कसां । मान मुक्तो वदातोयो । मायौ मकरलांढिनः  
॥ १८ ॥ इति सुविधनाथ स्तुतिः ९ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( चामर बंधाविमौ ) ॥ श्रीमन्नीलनाथेश । नन्दा दृढरथात्मजा ।  
प्रास्वत्सुवर्ण वदेह । श्रीवत्सांघ्रांक धारकः ॥ १९ ॥ त्वदीय चरणांजोः ।  
सेवकानां वपुर्नृतां । प्राक् कृतं वृजनव्यूहं । दुष्टं शंजोद्यहे विजौ ॥ २० ॥  
इति शीतलनाथ स्तुतिः १० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ विष्णु वैशार्क वदेवो । विष्णु पुत्रो हिरण्यजः । श्रेयो वृद्धि करो  
जस्रं । खरुगलांढिन नृजिनः ॥ २१ ॥ हित्वा कर्म रिपून् सार्व । श्रेयांस श्रै  
यसैः सह । परज्ञान मयेनत्वं । महानन्दपदं परं । इति श्रेयांस स्तुतिः ॥ २१ ॥

॥ ❀ ॥ वरी वर्त्ति तरामीहा । जवतां जवतां यदि । जटिति छेदितुं चि  
त्ते । ज्ञोन्नव्याः प्राप्नु महारं ॥ २३ ॥ तदाज्ञजध्व मेनंहि । वासुपूज्यं जया  
सुतं । वसुपूज्य कुलोत्तंसं । महिषां कंच रक्तजं ॥ २४ ॥ इति वासुपूज्य स्तुतिः २

॥ ❀ ॥ श्रीमद्भिमलनाथेन्द्र । कृतवर्म समुद्भव । शूकरांक धर श्यामा ।  
पुत्रकल्याण दीधिते ॥ २५ ॥ चंद्रवाभिमल ज्ञान । त्वदीय स्मरणं विना । कुर्व  
न्नप्येतिनो ब्रह्म । प्रक्रियां नातिविस्तरां ॥ २६ ॥ इति विमलस्तुतिः ॥ २३ ॥

॥ ❀ ॥ हेमवर्णस्य पुत्रस्य । सुयशः सिंह सेनयोः । देवस्य श्येनचिन्हस्य ।  
वर्यान्त गुणोदधेः ॥ २७ ॥ इंद्रादयोपि यस्यांतं । गुणानां लेजिरे नहि ।  
अनन्तस्य गुणान्तस्य । ह्रमोवक्तुं नरः कथं ॥ २८ ॥ इत्यनन्तस्तुतिः ॥ २४ ॥

॥ ❀ ॥ सुवतापुत्र वज्रांक । ज्ञानुवंशार्कसन्निभ । कनकप्रज्ञ सर्वज्ञ । ध



र्मनाथान्निवेश्वर ॥ २९ ॥ तवागोपि पुरश्चारी । नूतले यात्यशोकतां । अनु  
त्तरफलाः संति । सतां संगत योषिहि ॥ ३० ॥ इति धर्मनाथ स्तुतिः ॥ १५ ॥

॥ ❀ ॥ विश्वसेन धरावीशं । नन्दनं मृगलक्षणं । आचिरेयं सुवर्णगं । क  
लायामि जिनेश्वरं ॥ ३१ ॥ तं श्रीमन्नांति नामानं । यस्याग्रे कुर्वते मुदा ।  
प्राज्यां सुमनसां वृष्टिं । विबुधा विबुधप्रियां ॥ ३१ ॥ इति शांतिनाथ स्तुतिः

॥ ❀ ॥ श्रीयुतायाः श्रियपुत्र । श्रेयस्कर हिरण्यज । सूरि नूपति संजात ।  
ह्वागलक्षणधारक ॥ ३३ ॥ कुंथुनाथजिनेशस्य । तीर्थंकर जगत्पते । मदीयं  
पापसंदोहं । जवांतर कृतं घनं ॥ ३४ ॥ इति कुंथुनाथ स्तुतिः ॥ १७ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुदर्शन नृपोद्भूतं । नन्दावर्त्ताक संयुतं । अञ्जोज वन्निरालेपं ।  
देवीपुत्रं सुवर्णजं ॥ ३५ ॥ जगन्मुख्यागुणाः सर्वे । धुर्य्यप्रनुतया जिनं । च  
रीकर्मि नमस्तस्मा । अरायपरमात्मने ॥ ३६ ॥ इत्यरनाथ स्तुतिः ॥ १८ ॥

॥ ❀ ॥ कुंज प्रजावती पुत्रौ । नीलवर्णौ वटांकनृत् । जगन्मित्र इव ध्वा  
न्त । नाशना प्रिदितः सदा ॥ ३७ ॥ तत्र त्रय युतोन्नाति । देवयो विष्टपत्र  
ये । तस्य श्रीमन्निनाथस्य । स्मरणेन मुदा सखे ॥ ३८ ॥ इति मन्निनाथ स्तुतिः

॥ ❀ ॥ सुमित्र नृपतेः सूनो । पद्माकुक्षि पवित्रकृत् । कुर्म लक्षण नृधर्म  
दायक श्यामलव्रवे ॥ ३९ ॥ मुनिसुव्रत देवेन । क्षीणकर्म्मोरि मंज । देहि  
त्वं मेव्ययीजावं । पदं तत्पुरुषोत्तमः ॥ ४० ॥ इति मुनिसुव्रत स्तुतिः ॥ २० ॥

॥ ❀ ॥ श्रीमद्भिजय नृपाल । कुलोत्तंस हिरण्यरुक् । वप्रासुत नमिना  
थ । नीलोत्पल सदंकनृत् ॥ ४१ ॥ यस्ते पंच जनोदेवः । निन्दाच कुस्तेश्व  
यं । स एति परमज्ञानं । कोपि न ह्यत्र संशयः ॥ ४२ ॥ इति नमिनाथ स्तुतिः ।

॥ ❀ ॥ शिवायास्तनयेवर्य्ये । समुद्रविजयोद्भवे । हरिवंश हरो शंभो ।  
शंखांके कमल प्रजे ॥ ४२ ॥ त्यक्त राजी मती स्नेहे । नेमनाथे जितस्मरे ।  
सिद्धि प्रमदयामाजा । प्रत्यक्षेपि जिनेश्वरे ॥ ४४ ॥ इति नेमनाथ स्तुतिः २२

॥ ❀ ॥ अश्वशेनाख्य नृपाल । सुतेन परमेष्ठिना । वामेयेन दितायेन ।  
कमठ स्यान्निमानता ॥ ४५ ॥ तस्मै श्रीपार्श्वनाथाय । नमोस्तु मामकं  
सदा । पवनासन चिन्हाय । नीलवर्णाय सञ्जवे ॥ ४६ ॥ इति श्रीपार्श्वनाथ स्तु०

॥ ❀ ॥ श्रीमत्सिद्धार्थ वंशार्क । त्रिशलेय जगन्मणे । महा नाद ध्वजा

हंत । कल्याणं कर सर्व्वदा ॥ ४७ ॥ चरमस्तीर्थ कृद्गीर । मोहेजहनने मृ  
गात् । त्वङ्गक्ति दत्तचित्ताय । कमलां देहिमे जिनः ॥ ४८ ॥ इति स्तुः ॥ २४ ॥

॥ ❀ ॥ इति श्रीकृमा कल्याणजी कृत २४ जिनेश्वर स्तवना संपूर्णम् ॥

॥ ❀ ॥ अथ बुट्कर नमस्कार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ यत्र श्रीजरतेश्वरः शुचिमनाः पूर्वादि दिक्कृमात् । तीर्थेशः  
किल युग्मवर्णवसुदिक संख्यान संख्यश्रियः । साधु स्थापयतिस्म विस्मित  
हृदा दृश्यं नगाधीश्वरं । तं चाष्टापद तीर्थराजमनिशं द्रष्टुं समीहे स्वयं ॥ १ ॥  
इत्यष्टापद स्तुतिः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ लसद्भि पंचाशदधीश्वरालयै । विराजिते श्रीमति शाश्वताश्रये ।  
नन्दीश्वरे घ्नीपवरे जिनेश्वरान् । वंदे प्रमोदाद्भवतीति शांतये ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥  
इति नंदीश्वर स्तुतिः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शकल कुशलवल्ली पुष्करावर्त मेघो । दुरिततिमिर ज्ञानुः कटप  
वृक्षोपमानुः । ज्वजल निधिपोतः सर्व संपत्ति हेतुः । स ज्वतु सततंबः श्रे  
यसे पार्श्व देवः ॥ इति श्री पार्श्व जिन स्तुतिः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दर्शनाद्दुरित ध्वंसी । वंदना प्रांगित प्रदः । पूजना त्पूरकः श्री  
णां । जिनः साक्षात्सुरद्रुमः ॥ १ ॥ इति जिन स्तुतिः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुवर्ण वर्णं गजराजगामिनं । प्रलंब बाहु सुविशाल लोचनं ।  
नरा मरेंद्रै स्तुतपादपंकजं । नमामि प्रक्त्या रुषजं जिनोत्तमं ॥ १ ॥ ❀ ॥  
इति आदिजिन स्तुतिः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नमस्कार समोमंत्रः । शत्रुं जय समोगिरिः । वीतराग समो  
देवो । न जूतो न जविष्यति ॥ १ ॥ दिष्टे तुह मुहकमले । तिन्निविण्ठाइ  
निरवसेसाई । दारिद्र्यं दोहगं । जम्मंतर संचियं पावं ॥ १ ॥ पाताले यानि  
बिंबानि । यानि बिंबानि जूतले । स्वर्गेऽपि यानि बिंबानि । तानि वंदे निर  
न्तरं ॥ १ ॥ प्रशमरसनिमग्नं दृष्टियुग्मं प्रशन्नं । वदनकमलमंकः कामिनीसं  
गशून्यः । कर युग मपि यत्ते शस्त्र संबंध वंध्यं । तदासि जगति देवो वीतराग  
स्त्वमेव ॥ १ ॥ ❀ ॥ इति सर्व जिन स्तुतिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हत्था जेह सुलक्खणा । जे जिनवर पुजन्त । एकाण धम्मं वा

हिरा । परधर कम्मकरंत ॥ १ ॥ ऋव बीजांकुर जनना । रागाद्याः क्लृप्त्य सु  
पागता यस्य । ब्रह्मा वा विष्णुर्वा । हरो जिनोवा नमस्तस्मै ॥ १ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ सदाके देववंदनमें ( तथा ) दशमें दिन । उंजी पारणकी  
विधिमें कहणेंका ( चै० ) ( स्त० ) थुई लि० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नवपद चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जो घुरि सिरि अरिहंत मूलदढ पीढिपइठिउ । सिद्धि सूरि उव  
जाय साहु चिहुंसाहगारिठिउ । दंसण नाण चरित्त तवहिं परसाहें सुन्द  
रु । तत्तक्खर सर वग्ग लद्धि गुरुपय दल मंवरु । दिशिवाज जक्ख जक्खणी  
पमुह सुर कुसुमेहि अलंकियउ । सो सिद्धचक्र गुरुक्कपतरु अह्म मम वंढि  
यदियउ ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः नवपद चैत्यवंदन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री अरिहंत उदार कांति । अति सुन्दर रूप । सेवो सिद्ध अ  
नन्तशांत । आतम गुण नूप ॥ १ ॥ आचारज उवजाय साधु । शमता रस  
धाम । जिनजाषित सिद्धांतशुद्ध । अनुजव अजिराम ॥ २ ॥ बोधबीज गुण  
संपदाए । नाण चरण तव शुद्ध । ध्यावो परमानन्दपद । ए नवपद अवि  
रुद्ध ॥ ३ ॥ इह परजव आनन्द कंद । जगमांहि प्रसिद्धौ । चिंतामणि  
सम जास जोग । बहु पुण्यै लद्धौ ॥ ४ ॥ तिहु अण सार अपार एह  
महिमा मनधारो । परिहर परजंजाल जाल । नित एह संजारो ॥ ५ ॥  
सिद्धचक्र पदसेवतां । सहजानन्द स्वरूप । अमृतमय कल्याण निधि ।  
प्रगटे चेतन नूप ॥ ६ ॥ इति श्री सिद्धचक्र नमस्कार संपूर्णम् ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नवपद वृद्धस्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुरमणी समसहु मंत्रमां । नवपद अजिरामीरे लोय । (अहो  
नव०) करुणा सागर गुणनिधी । जग अंतरजामीरे लो० । (अहो जग०)  
॥ १ ॥ त्रिनुवन जनपूजित सदा । लोकालोक प्रकासीरे । लो० (अहो  
लोका०) । एहवा श्री अरिहंत जी । नमुं चित्त उखासीरे लो० । (अ०  
न०) २ । अष्ट कर्म दलक्ष्य करी । थया सिद्ध सरूपीरे लो० । (अ०  
थ०) सिद्ध नमो ऋवि जावथी । जे अगम अरूपीरे लो० ( अ० जे )

॥ ३ ॥ गुण ठत्तीसे सोजता । सुंदर सुखकारीरे लो० । ( अ० सु० ) आ  
चारज तीजै पदै । वंदु अविकारीरे लो० । ( अहोव० ) ॥ ४ ॥ आगम  
धारी उपशमी । तप पुविध आराधीरे लो० । ( अ० त० ) चोथै पद पाठ  
क नमो । संवेग समाधीरे लो० । ( अ० सं० ) ॥ ५ ॥ पंचाचार पाजणपरा  
पंचाश्रव त्यागीरे लो० । ( अहोप० ) गुण रागी मुनि पांचमें । प्रणमुं वर  
जागीरे लो० । ( अ० प्र० ) ॥ ६ ॥ निज परगुणनें उजखै ॥ श्रुत श्रद्धा  
आवै रे लो० । ( अ० श्रु० ) ठहै गुण दरशण नमो । आतम शुज जावै  
रे । ( लो० अ० आ० ) ॥ ७ ॥ ग्यान नमो गुण सातमें । जे पंच प्रकारै  
रे लो० ( अ० जे० ) लोकादिक षट् द्रव्यना सहजाव विचारैरे लो  
( अ० स० ) ॥ ८ ॥ आठमें चारित्र पद नमो । परजाव निवारी रे  
( लो० अ० प० ) खंत्यादिक दस धर्मनो । जेह ठै अधिकारी रे लो० ।  
( अ० जे० ) ॥ ९ ॥ नवमें वलि तपपद नमो । बाह्याभ्यंतर जेदैरे लो० ।  
( अ० बा० ) बांध्या काल अनंतना । जे कर्म उठेदै रे लो० । ( अ० जे० )  
॥ १० ॥ ए नवपद बहुमानथी । ध्यावै शुज जावै रे लो० । ( अ० ध्या० )  
नृप श्री पाजतणी परै । मन वंछित पावैरे लो० । ( अ० म० ) ॥ ११ ॥  
आसू चैत्रक माशमां । नव आंबिल करियैरे लो० । ( अ० न० ) नवउंजी  
विधियुत करी । शिव कमला वरियैरे लो० । ( अ० शि० ) ॥ १२ ॥ सिद्ध  
चकनी बहुपरै । वर महिमा कीजैरे लो० । ( अ० व० ) श्री जिनजात्र  
कहै सदा । अनुपम जश लीजैरे लो० । ( अ० अ० ) ॥ १३ ॥ इति० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनःनवपद स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( राग मारु ) ॥ तीरथनायक जिनवरू जी । अतिसय जास  
अनूप । सिद्ध अनन्त महागुणी जी । परमानंद सरूप । ( जविक मन  
धारज्योरे ) ॥ १ ॥ धारज्यो नवपदध्यान ( ज० श्री आचारज गणधरूरे ।  
गुण ठत्तीश निवास । पाठक पदधर मुनिवरू जी । श्रुतदायक सुविलास  
( ज० ) ॥ २ ॥ सुमति गुपतिधर सोजता जी । साधू शमतावंत । सम्यग्  
दर्शन सुंदरू जी । ज्ञान प्रकाश अनन्त । ( ज० ) ॥ ३ ॥ संवर साधना  
चरण ठे रे । तप उत्तम विधि होय । ए नवपदना ध्यान थीरे । निरुपाधिक

सुख होय । ( ज० ) ॥ ४ ॥ अमृतसम जिनधर्मनोरे । मूलए नवपद जा  
ए । अविचल अनुभव कारणे जी । नितप्रतिनमत कल्याण ( ज० ) ॥ ५ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( राग प्रज्ञाती ) नवपद ध्यान धरोरे ( जविका न० ) मन व  
च काया कर एकंते । विकथा दूर हरोरे ( न० ॥ १ ॥ मंत्रजमी अरुतंत्र  
वणेरा । इन सबको विसरोरे । अरिहंतादिक नवपद जपने । पुण्य जंमार  
जरोरे ॥ २ ॥ ( न० ) अरुसिध नव निध मंगल माला । संपति सहज व  
रोरे । लालचंद याकी बलिहारी । शिवतरु बीज खरोरे ॥ ३ ॥ ( नव० ) ॥  
इति श्रीसिद्धचक्र स्तवनं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नवपद थुई लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नित प्रति हुं प्रणमं सिद्धचक्र सुज जाव । हिवकारज सिद्धि  
नो लाधो एह उपाय । तुज नाम पसार्ये आरति व्याधि पुजाय । इग तुज  
अनुग्रहथी सुख संपति सुज थाय ॥ १ ॥ श्री अरिहंत नमिये सिद्ध सूरी  
ज्वझाय । मुनिवर त्रिक करने दंशण नाण सुहाय । दुगविधि चारित्तें बुध  
विध तप मन जाय । ये नवपद ध्यावतां निरुपम शिव सुख थाय ॥ २ ॥  
विद्या परवादैं जानो ए अधिकार । श्रीगुरु उपदेशें सिद्धचक्र उधार । प्रवच  
न अनुसारें जाण्यो एह विचार । जविजन नित ध्यावो सुरतरु गुणजंमार  
॥ ३ ॥ जिनधरम अनुरागी चक्रेसरि सुखकार । सेवकनें आपै सुख संपति  
परिवार । हिव निद्धि ज्दयकरि चारित्र नंदी मन जाय । जिनचंद सूरी सर  
खरतर पति सुपसाय ॥ ❀ ॥ इति नवपद स्तुतिः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ जैतीसंयुक्त नवपदजुली करण विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( प्रथम ) आसोज शुदि ७ ( अथवा ) चैत्रसुदि ७ सें जुनी स  
रू करै । ( कदास ) तिथि बढी हुवे तो ठठ मे, बढी होय तो, आठिम  
सें सरू करै । ( पिण ) आंचिल नव पूनिमतक करै । ( तिहां ) प्रथम चू  
मि शुद्ध करके । मांरणादिक सें चित्रत करै । पीठे बाजोट ऊपरि सिद्ध  
चक्र थापे त्रिकाल पूजा करें । ( सोलिखते हैं ) प्रज्ञात समय राई पम्कि  
मणो करिके । पीठे बख पम्किहे । ( जहां ) सिद्ध चक्र स्थापना हे । तहां

आयके पांच शक्रस्तवे देव बांदै। पीठे नव चैत्ये। (अथवा) नव प्रतिमा आगे। नव चैत्यवंदण करै। वास हेष पूजा करै। पीठे केसर चंदनसें पूजा करै। पीठे मध्यान्ह समय, पांचशक्र स्तवे देव बांदै। पीठे गुरु पासे आयके। राई आलोवे। अब्जुठिनिमि खमायके आंबिलनो पचक्खाण करै। प्रथम अरिहंत पदका वरण सपेद है। (इससें) आंबिल में चावल (अनें) गरम पाणी यह दोइ द्रव्य लेसुं। औसो आंबिल पचखै। (पीठे) अरिहंत पदके बारे गुण है सो चिंतविके बारै नमस्कार करै। सो लिखते हैं (प्रथम सर्व ठिकाणें) इच्छामिखमासमाणो। वं० इत्यादि कहिके नमस्कार करै ॥

॥ ❀ ॥ अरिहंतके १२ गुणः ॥ ❀ ॥

- १ ॥ अशोक वृद्ध प्रति हार्य संयुताय श्री अरिहंताय नमः ॥
- २ ॥ पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरि० ॥
- ३ ॥ दिव्यध्वनि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरि० ॥
- ४ ॥ चामरयुग प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरि० ॥
- ५ ॥ स्वर्ण सिंहासण प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरि० ॥
- ६ ॥ ज्ञामंजुल प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरि० ॥
- ७ ॥ दुंदुभिप्रातिहार्य संयुताय श्रीअरि० ॥
- ८ ॥ त्रयत्रय प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरि० ॥
- ९ ॥ ज्ञानातिशय संयुताय श्रीअरि० ॥
- १० ॥ पूजातिशय संयुताय श्रीअरि० ॥
- ११ ॥ वचनातिशय संयुताय श्रीअरि० ॥
- १२ ॥ अपाया पगमातिशय संयुताय श्रीअरि० ॥

॥ ❀ ॥ इत्यादि नमस्कार करके। अन्नत्थू मसियेणं। (कहिके) १२ बारे लोगस्सको कानुसग्ग करै। एकलोगस्स प्रगट कहै। पीठे स्वस्थान क जाके। चैत्यवंदन करै। पचक्खाण पारिके। आंबिल करै। पहले जल पीवे (जव) चैत्यनंदन करिके पीवै। पीठे फेर चैत्यनंदन करिके तिविहार पचक्खाण करै। ( उँ क्षी एमो अरिहंताणं )। इस पदको २००० गुणनो करै। श्रीपालजीको चरित्र नवपद महिमा सुणें। पूरा पहिर दिन



रहणेंसें ( तीसरीवेर ) पांच शक्रस्तवे देव वांदै । सामायक लोके दिन बते पम्किमणो करै । आरतीके समय, दीप, धूप, कुशम, पूजा करै । ( अथवा ) पहिले आरती प्रमुख करिके पीठै पम्किमणो करै । ( सोनेके समय ) इरिया वही पम्किमके । चैत्यबंदन करिके । राई संधारा गाथागुणके सोवै । निद्रा न आवे ( जहांतक ) नवपदका गुण स्मरण करै ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ द्वितीय दिवश विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अब इसीतरे दूसरे दिन प्रजाति करणी सब करिके, सिद्धपदका जाल वर्ण है । ( इसीसें ) गहुंके रोटीको ( आंविल करै ( उँझी एमो सिघाणं ) इसपदको गुणणो दो हज्जार करै । सिद्धपदके आठगुण है । सो ( ८ ) गुणांको गुरु नमस्कार करावै ( सो लिखते हैं ) ।

॥ ❀ ॥ सिद्ध पदके ( ८ ) गुण ॥ ❀ ॥

१ ॥ अनन्त ज्ञान संयुताय श्रीसिधाय नमः ॥

२ ॥ अनन्त दर्शन संयुताय श्रीसि० ॥

३ ॥ अव्यावाध गुण संयुताय श्रीसि० ॥

४ ॥ अनन्त चारित्र गुण संयुताय श्रीसि० ॥

५ ॥ अद्वय स्थिति गुण संयुताय श्रीसि० ॥

६ ॥ अरूपी निरंजन गुण संयुताय श्रीसि० ॥

७ ॥ अगुरुजघु गुण संयुताय श्रीसि० ॥

८ ॥ अनन्त वीर्य गुण संयुताय श्रीसि० ॥

॥ ॥ यह आठे नमस्कार करिके । अन्नत्यूसासि० आठ लोगस्सकौ कानुसगग करै । एक लोगस्स कहिके पारै । पीठै पूर्वोक्त करणी अनुक्रमसें करै ॥ ❀ ॥ इति द्वितीय दिवश विधिः ॥ २ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ तृतीय दिवश विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पूर्वोक्त विधिसें प्रजात कर्त्तव्य करै । आचार्यपद पीले वर्ण है ( इसीसें ) चिणाकी दाजका आंविल करै । ( उँझी एमो आयरियाणं ) इस पदको गुणनो दोहज्जार करै । आचार्य पदके ( ३६ ) गुण याद कर के उत्तीस नमस्कार करै ( सो लिखते हैं ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आचार्य पदके ( ३६ ) गुण ॥ ❀ ॥

- १ ॥ प्रतिरूप गुणसंयुताय श्री आचार्याय नमः ॥
- २ ॥ सूर्यवत्तेजस्वी गुणसंयुताय श्री आचार्याय नमः ॥
- ३ ॥ युगप्रधानागम संयुताय श्री आचार्याय नमः ॥
- ४ ॥ मधुरवाक्य गुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- ५ ॥ गांजीर्य गुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- ६ ॥ धैर्य गुण संयुताय श्रीआ० ॥
- ७ ॥ उपदेश गुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- ८ ॥ अपरिश्रवी गुण संयुताय श्रीआचा० ॥
- ९ ॥ सौम्य प्रकृति गुण संयुताय श्रीआ०
- १० ॥ शील गुण संयुताय श्री० ॥
- ११ ॥ अविग्रह गुण संयुताय श्री० ॥
- १२ ॥ अविकथक गुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- १३ ॥ अचपल गुण संयुताय श्रीआ० ॥
- १४ ॥ प्रसंत वदनगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- १५ ॥ कृमा गुण संयुताय श्रीआ० ॥
- १६ ॥ रुज्जुगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- १७ ॥ मृदु गुण संयुताय श्रीआ०
- १८ ॥ सर्व संगसुक्तिगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- १९ ॥ द्वादश विधि तपगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- २० ॥ सप्तदशविध संयमगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- २१ ॥ सत्यव्रतगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- २२ ॥ शौचगुण संयुताय श्रीआ०
- २३ ॥ अकिंचन गुण संयुताय श्रीआ०
- २४ ॥ ब्रह्मचर्यगुण संयुताय श्रीआ०
- २५ ॥ अनित्य जावना जावकाय श्रीआ०
- २६ ॥ अशरण जावना जावकाय श्रीआ०

२७ ॥ संसार स्वरूप जावना जावकाय श्रीआ० ॥

२८ ॥ एकत्व स्वरूप जावना जावकाय श्रीआ० ॥

२९ ॥ अन्यत्व जावना जावकाय श्रीआ० ॥

३० ॥ अशुचि जावना जावकाय श्रीआ० ॥

३१ ॥ आश्रव जावना जावकाय श्रीआ० ॥

३२ ॥ संवर जावना जावकाय श्रीआ० ॥

३३ ॥ निर्जरा जावना जाव काय श्रीआ० ॥

३४ ॥ लोक स्वरूप जावना जाव काय श्रीआ० ॥

३५ ॥ बोधदुर्लभ जावना जावकाय श्रीआ० ॥

३६ ॥ धर्म दुर्लभ जावना जावकाय श्रीआ० ॥

॥ ❀ ॥ यह ठत्तीस नमस्कार करिके । अन्नत्यू ससिएणं ( इत्यादि ) कहि  
के । ठत्तीस ( ३६ ) लोगसको कानसग करै । एक लोगस ऊंचै स्वरसें  
कहिके पारै । यथोक्त करणी । अनुक्रमसें करै ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चतुर्थ दिवश विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( उँ क्षी णमो उवझायाणं ) इस पदको ( २ ) हजार गुणनो  
करै । हरया मूंगाकी दाल प्रसुखका आंवल करै । उपाध्याय पदके ( २५ )  
गुण यादकरि के नमस्कार करै ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ उपाध्यायके ( २५ ) गुण ॥ ❀ ॥

१ ॥ आचारांग सुत्र पठन गुण युक्ताय श्रीउपाध्याय नमः ॥

२ ॥ सुयगंगांग सुत्र पठन गुण युक्ताय श्रीउपाध्याय नमः ॥

३ ॥ श्रीठाणांग सुत्र पठन गुण युक्ताय श्रीउ० ॥

४ ॥ श्रीसमवायांग सुत्र पठन गुण युक्ताय० ॥

५ ॥ श्रीजगवती सुत्र पठन गुण युक्ताय० ॥

६ ॥ श्रीज्ञाता सुत्र पठन गुण युक्ताय० ॥

७ ॥ श्रीउपाशकदशा सुत्र पठन गुण युक्ताय० ॥

८ ॥ श्रीअन्तगद्दशा सुत्र पठन गुण युक्ताय० ॥

९ ॥ श्रीअणुत्तरोववाई सुत्र पठन गुण युक्ताय० ॥

- १० ॥ श्रीप्रश्न व्याकरण सूत्र पठन गुण यु० ॥
- ११ ॥ श्रीविपाक सूत्र पठन गुण यु० ॥
- १२ ॥ उत्पाद पूर्व पठन गुण यु० ॥
- १३ ॥ आग्रायणी पूर्व पठन गुण युक्ताय० ॥
- १४ ॥ वीर्य प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ताय० ॥
- १५ ॥ अस्ति प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ताय० ॥
- १६ ॥ ज्ञान प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ता० ॥
- १७ ॥ सत्य प्रवाद पूर्व पठन गुण यु० ॥
- १८ ॥ आत्म प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ताय० ॥
- १९ ॥ कर्म प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ताय० ॥
- २० ॥ प्रत्याख्यान प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ताय० ॥
- २१ ॥ विद्या प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ताय० ॥
- २२ ॥ अविध्य प्रवाद पूर्व पठन गुण यु० ॥
- २३ ॥ प्राणायाम प्रवाद पूर्व पठन गुण यु० ॥
- २४ ॥ क्रिया विशाल पूर्व पठन गुण यु० ॥
- २५ ॥ लोक बिंदुसार पूर्व पठन गुण यु० ॥

॥ ❀ ॥ इस रीतसे पचवीश नमस्कार करै ( खमाहोके ) अन्नत्यूस० ( इत्यादि कहिके ) पचवीश लोगस्सका कानुस्सग करै । एक लोगस्स क हके पारे । ( पीढे ) पुर्वोक्त करणी करै । इति चतुर्थ दिवश विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पंचम दिवश विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( उँ ङ्गी एमोलोए सबसाहूणं ) इस पदको ( २ ) हजार गुणनो करै । साधु पद काले वर्ण है ( इससे ) उमदका आंवल करै । सर्व साधु पदके सत्तावीश गुण चितवके नमस्कार करै ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ साधु पदके ( २७ ) गुण ॥ ❀ ॥

- १ ॥ प्राणातिपात विरमणव्रत युक्ताय श्रीसाधवे नमः ॥
- २ ॥ मृषावाद विरमण व्रत यु० श्रीसा० ॥
- ३ ॥ अदत्तादान विरमण व्रत यु० श्रीसा० ॥

- ४ ॥ मैथुन विरमण ब्रत यु० श्रीसा० ॥  
 ५ ॥ परिग्रह विरमण ब्रत यु० श्रीसा० ॥  
 ६ ॥ रात्रिभोजन विरमणब्रत यु० श्रीसा० ॥  
 ७ ॥ पृथ्वीकाय रत्नकाय श्रीसा० ॥  
 ८ ॥ अण्णकाय रत्नकाय श्रीसा० ॥  
 ९ ॥ तेजकाय रत्नकाय श्रीसा० ॥  
 १० ॥ वायुकाय रत्नकाय श्रीसा० ॥  
 ११ ॥ वनस्पतिकाय रत्नकाय श्रीसा० ॥  
 १२ ॥ त्रसकाय रत्नकाय श्रीसा० ॥  
 १३ ॥ ऐकेंद्री जीव रत्नकाय श्रीसा० ॥  
 १४ ॥ वेइंद्रीजीव रत्नकाय श्रीसा० ॥  
 १५ ॥ तेइंद्री जीव रत्नकाय श्रीसा० ॥  
 १६ ॥ चौरिंद्रीजीव रत्नकाय श्रीसा० ॥  
 १७ ॥ पंचेंद्रीजीव रत्नकाय श्रीसा० ॥  
 १८ ॥ जोज निग्रह काय श्रीसा० ॥  
 १९ ॥ कृमा गुण युक्ताय श्रीसा० ॥  
 २० ॥ शुभ्र जावना जाव काय श्रीसा० ॥  
 २१ ॥ प्रतिलेखनादि क्रिया शुद्धकारकाय श्रीसा० ॥  
 २२ ॥ संयम योग युक्ताय श्रीसा० ॥  
 २३ ॥ मनोगुप्ति युक्ताय श्रीसा० ॥  
 २४ ॥ वचनगुप्ति युक्ताय श्रीसा० ॥  
 २५ ॥ काय गुप्ति युक्ताय श्रीसा० ॥  
 २६ ॥ सीतादि द्वाविंशति परीशहसहण तत्पराय० ॥  
 २७ ॥ मरणांत उपसर्ग सहण तत्पराय श्रीसा० ॥

॥ ❀ ॥ इस रीतसे सातवीश नमस्कार करे ( खमा होके ) अन्नत्य  
 स० ( इत्यादि कहिके ) सातवीश लोगस्सका कान्तसग करे । एक लोग  
 स्स कहके पारे ( पीठे ) पूर्वोक्त करणी करे । ( यह पंच परमेष्टि पदके

सर्व गुण मिलाएँसें) ( १०८ ) होय ( इसीसें ) जैनमें मालाके दाणे (१०८) होते हैं ॥ इति पंचम दिवश विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ षष्ठम दिवस विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( उं ङ्गी णमो दंसणस्स ) इस पदको (२) हजार गुणनो करै । दर्शन पद सपेद वर्ण ( इससें ) तंडुलका आंबिल करै । सम्यक्तके सतस ठि गुण चितवके नमस्कार करै ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सम्यक्तके सतसठि नेद लि० ॥ ❀ ॥

- १ ॥ परमार्थ संस्तवरूप श्री सददर्शनाय नमः ॥
- २ ॥ परमार्थ ज्ञातृसेवन रूप सददर्शनाय नमः ॥
- ३ ॥ व्यापन्नदर्शन वर्जन रूप सददर्शनाय नमः ॥
- ४ ॥ क्रुदर्शन वर्जन रूप सददर्शनाय नमः ॥
- ५ ॥ शुश्रूषा रूप सददर्शनाय नमः ॥
- ६ ॥ धर्म राग रूप सददर्शनाय नमः ॥
- ७ ॥ वैयावृत्त रूप सददर्शनाय नमः ॥
- ८ ॥ अर्ह धिनयरूप सददर्शनाय नमः ॥
- ९ ॥ सिद्ध विनयरूप सददर्शनाय नमः ॥
- १० ॥ चैत्य विनयरूप सददर्शनाय नमः ॥
- ११ ॥ श्रुत विनयरूप सददर्शनाय नमः ॥
- १२ ॥ धर्म विनयरूप सददर्शनाय नमः ॥
- १३ ॥ साधुवर्ग विनयरूप सददर्शनाय नमः ॥
- १४ ॥ आचार्य विनयरूप सददर्शनाय नमः ॥
- १५ ॥ उपाध्याय विनयरूप सददर्शनाय नमः ॥
- १६ ॥ प्रवचन विनयरूप सददर्शनाय नमः ॥
- १७ ॥ दर्शन विनयरूप सददर्शनाय नमः ॥
- १८ ॥ संसारे जिनसार मिति चिंतनरूप सद० ॥
- १९ ॥ संसारे जिनमतिसार मिति चिंतनरूपस० ॥
- २० ॥ संसारे जिनमतिस्थित साध्वादिसार मिति चिंतनरूप सद० ॥



- २१ ॥ शंका दूषण रहिताय सदृशनाय नमः ॥  
 २२ ॥ कांक्षा दूषण रहिताय सदृशनाय नमः ॥  
 २३ ॥ विचिकित्सा रूप दूषण रहिताय० ॥  
 २४ ॥ कुदृष्टि प्रशंसा दूषण रहिताय० ॥  
 २५ ॥ तत्परिचय दूषण रहिताय० ॥  
 २६ ॥ प्रवचन प्रज्ञावक रूप स० ॥  
 २७ ॥ धर्मकथा प्रज्ञावक रूप स० ॥  
 २८ ॥ वादी प्रज्ञावक रूप स० ॥  
 २९ ॥ नैमित्तिक प्रज्ञावकरूप स० ॥  
 ३० ॥ तपस्वी प्रज्ञावकरूप सदृ० ॥  
 ३१ ॥ प्रज्ञप्तयादि विद्या नृत्प्रज्ञावकरूप स० ॥  
 ३२ ॥ चूर्ण जनादि सिद्धप्रज्ञावकरूप स० ॥  
 ३३ ॥ कविप्रज्ञावकरूप सदृशनाय नमः ॥  
 ३४ ॥ जिनशाशने कौशलता नृषणरूप स० ॥  
 ३५ ॥ प्रज्ञावना नृषणरूप स० ॥  
 ३६ ॥ तीर्थसेवा नृषणरूप स० ॥  
 ३७ ॥ धैर्यता नृषणरूप सदृशनाय नमः ॥  
 ३८ ॥ जिनशाशने नृक्ति नृषणरूप० ॥  
 ३९ ॥ उपशम गुणरूप सदृशनाय नमः ॥  
 ४० ॥ संवेग गुणरूप श्रीस० ॥  
 ४१ ॥ निर्वेद गुणरूप श्री सदृशनाय नमः ॥  
 ४२ ॥ अनुकंपा गुणरूप श्रीस० ॥  
 ४३ ॥ आस्तिका गुणरूप श्रीस० ॥  
 ४४ ॥ परतीर्थकादि वंदन वर्जन रूप श्रीस० ॥  
 ४५ ॥ परतीर्थकादि नमस्कार वर्जनरूप श्रीस० ॥  
 ४६ ॥ परतीर्थकादि आलाप वर्जनरूप श्रीस० ॥  
 ४७ परतीर्थकादि मंलाप वर्जनरूप ॥

- ४८ परतीर्थकादि अशनादि दानवर्जनरूप श्रीस० ॥  
 ४९ ॥ परतीर्थकादि गंधपुष्पादि प्रेषण वर्जनरूप श्रीस० ॥  
 ५० ॥ राजाभि योगाकार युक्त श्रीस० ॥  
 ५१ ॥ गणाभि योगाकार युक्त श्रीस० ॥  
 ५२ ॥ वलाभि योगाकार युक्त श्रीस० ॥  
 ५३ ॥ सुराभि योगाकार युक्त श्रीस० ॥  
 ५४ ॥ कांतार वृत्याकार युक्त श्रीस० ॥  
 ५५ ॥ गुरु निग्रहकार युक्त श्रीस० ॥  
 ५६ ॥ सम्यक्त चारत्र धर्मस्य मूलमिति चिंतनरूप श्री० ॥  
 ५७ ॥ चारत्र धर्म पुरस्य द्वार मिति चिंतन० श्रीस० ॥  
 ५८ ॥ चारत्र धर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतन० श्रीस० ॥  
 ५९ ॥ चारत्र धर्मस्याधार मिति चिंतन० श्रीस० ॥  
 ६० ॥ चारत्र धर्मस्य प्राजन मिति चिंतन० श्रीस० ॥  
 ६१ ॥ चारित्र धर्मस्य निधि सन्निभ मिति चिं० श्री० ॥  
 ६२ ॥ अस्ति जीवेति श्रद्धानस्थान युक्त श्रीस० ॥  
 ६३ ॥ सचजीव नित्येति श्रद्धान स्थान युक्त श्री० ॥  
 ६४ ॥ सचजीव कर्माणि करोतीति श्रद्धान स्थान यु० श्री० ॥  
 ६५ ॥ सचजीव कृत कर्माणि वेदयतीति श्रद्धान स्थान यु० ॥  
 ६६ ॥ जीवस्यास्ति निर्वाणमिति श्रद्धान स्थान युक्त श्री० ॥  
 ६७ ॥ अस्ति पुनर्मोक्षो पायेति श्रद्धान स्थान यु० श्रीस० ॥

॥ ❀ इस गीतसैं सतसठि नमस्कार करै । ( खनाहोके ) अन्नत्यू ससि  
 एणं ( इत्यादि कहिके ( ६७ ) लोगस्स ( अथवा ) ७ लोगस्सको काव  
 सगग करै । एक लोगस्स कहके परै । ( पीछे पूर्वोक्त करणी करै ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सप्तम दिवश विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( उँँ क्षी एमो नाणस्स ) इस पदको ( २ ) हजार गुणनो करै ।  
 ज्ञान पद लज्जल वर्ण है ( इससैं ) तंहुलका आंखिल करै । इकावन जेद  
 ग्यान पदके चिंतवके नमस्कार करै ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ ज्ञानपदके ( ५१ ) जेद लि०

- १ ॥ स्पर्शनेंद्री व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
- २ ॥ रसनेंद्री व्यंजनावग्रह मति ज्ञानाय नमः ॥
- ३ ॥ घ्राणेंद्री व्यंजनावग्रह मति ज्ञानाय नमः ॥
- ४ ॥ श्रोत्रेंद्री व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
- ५ ॥ स्पर्शनेंद्री अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
- ६ ॥ रसनेंद्री अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
- ७ ॥ घ्राणेंद्री अर्थावग्रह मति ज्ञानाय नमः ॥
- ८ ॥ चक्षुरिंद्री अर्थावग्रह मति ज्ञानाय नमः ॥
- ९ ॥ श्रोत्रेंद्री अर्थावग्रह मति ज्ञानाय नमः ॥
- १० ॥ मनऽर्थावग्रह मति ज्ञानाय नमः ॥
- ११ ॥ स्पर्शनेंद्री ईहा मति ज्ञानाय नमः ॥
- १२ ॥ रसनेंद्री ईहा मति ज्ञानाय नमः ॥
- १३ ॥ घ्राणेंद्री ईहा मति ज्ञानाय नमः ॥
- १४ ॥ चक्षुरिंद्री ईहा मति ज्ञानाय नमः ॥
- १५ ॥ श्रोत्रेंद्री ईहा मति ज्ञानाय नमः ॥
- १६ ॥ मनं करी ईहा मति ज्ञानाय नमः ॥
- १७ ॥ स्पर्शनेंद्री अपाय मति ज्ञानाय नमः ॥
- १८ ॥ रसनेंद्री अपाय मति ज्ञानाय नमः ॥
- १९ ॥ घ्राणेंद्री अपाय मति ज्ञानाय नमः ॥
- २० ॥ चक्षुरिंद्री अपाय मति ज्ञानाय नमः ॥
- २१ ॥ श्रोत्रेंद्री अपाय मति ज्ञानाय नमः ॥
- २२ ॥ मन करी अपाय मति ज्ञानाय नमः ॥
- २३ ॥ स्पर्शनेंद्री धारणा मति ज्ञानाय नमः ॥
- २४ ॥ रसनेंद्री धारणा मति ज्ञानाय नमः ॥
- २५ ॥ घ्राणेंद्री धारणा मति ज्ञानाय नमः ॥
- २६ ॥ चक्षुरिंद्री धारणा मति० ॥

- २७ ॥ श्रोत्रेन्द्री धारणा मति० ॥  
 २८ ॥ मनो धारणा मति ज्ञानाय नमः ॥  
 २९ ॥ अक्षर श्रुत ज्ञानाय नमः ॥  
 ३० ॥ अनक्षर श्रुत ज्ञानाय नमः ॥  
 ३१ ॥ संज्ञी श्रुतज्ञानाय नमः ॥  
 ३२ ॥ असंज्ञी श्रुतज्ञानाय नमः ॥  
 ३३ ॥ सम्यक् श्रुतग्यानाय नमः ॥  
 ३४ ॥ मिथ्या श्रुतग्यानाय नमः ॥  
 ३५ ॥ सादि श्रुतग्यानाय नमः ॥  
 ३६ ॥ अनादि श्रुतग्यानाय नमः ॥  
 ३७ ॥ सपर्य वसति श्रुतग्यानाय नमः ॥  
 ३८ ॥ अपर्य वसति श्रुतग्यानाय नमः ॥  
 ३९ ॥ गमिक श्रुतग्यानाय नमः ॥  
 ४० ॥ अगमिक श्रुतग्यानाय नमः ॥  
 ४१ ॥ अंग प्रविष्ट श्रुत० ॥  
 ४२ ॥ अनंग प्रविष्ट श्रुत० ॥  
 ४३ ॥ अणुगामि अवधिग्यानाय नमः ॥  
 ४४ ॥ अणूणगामि अवधिग्यानाय नमः ॥  
 ४५ ॥ वद्धमान अवधि० ॥  
 ४६ ॥ हीयमान अवधि० ॥  
 ४७ ॥ प्रतिपाती अवधि० ॥  
 ४८ ॥ अप्रतिपाती अवधि० ॥  
 ४९ ॥ कञ्जमति मनः पर्यवग्यानाय नमः ॥  
 ५० ॥ विपुलमति मनः पर्यवग्यानाय नमः ॥  
 ५१ ॥ लोका लोक प्रकाशक श्री केवलग्यानाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ इस रीतसे ( ५१ ) नमस्कार करे । ( खमा होके ) अन्नत्य उत्ससिणं ( इत्यादि कहै ) ( ५१ ) लोगस्तका काजसग करिके । प्रगट

लोगस्स कहै । पाँचै सर्व पूर्वोक्त करणी करै । इति सप्तम दिवश विधिः ॥ ७॥

॥ ❀ ॥ अथ अष्टम दिवश विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( उं ह्रीं एमो चारित्तस्स ) इस पदको ( २ ) हजार गुणनो करै । चारित्र पदका उज्ज्वल वर्ण है । ( इसीसैं ) तंदुलका आंबिलकरै । सि त्तर जेद चारित्र पदके । चितवके नमस्कार करै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चारित्र पदके ( ७० ) जेद लि० ॥ ❀ ॥

१ ॥ प्राणाति पात विरमणरूप चारित्राय नमः ॥

२ ॥ मृषावाद विरमणरूप चारित्राय नमः ॥

३ ॥ अदत्तादान विरमण रूप चारित्राय नमः ॥

४ ॥ मैथुन विरमण रूप चारित्राय नमः ॥

५ ॥ परिग्रह विरमण रूप चारित्राय नमः ॥

६ ॥ कृमा धर्म रूप चारित्रेभ्यो नमः ॥

७ ॥ आर्यव धर्म रूप चारित्रेभ्यो नमः ॥

८ ॥ मृदुता धर्म रूप चारित्रेभ्यो नमः ॥

९ ॥ मुक्तधर्म रूप चारित्रेभ्यो नमः ॥

१० ॥ तपो धर्म रूप चारित्रेभ्यो नमः ॥

११ ॥ संयम धर्म रूप चारित्रेभ्यो नमः ॥

१२ ॥ सत्य धर्म रूप चारि० ॥

१३ ॥ शौच धर्म रूप चारि० ॥

१४ ॥ अकिंचन धर्म रूप चारि० ॥

१५ ॥ वंन धर्म रूप चारि०

१६ ॥ प्रथवी रक्षासंयम चारित्रेभ्यो नमः ॥

१७ ॥ उदग रक्षा संयम चारि० ॥

१८ ॥ तेज रक्षा संयम चारि० ॥

१९ ॥ वायु रक्षा संयम चारि० ॥

२० ॥ वनस्पति रक्षा संयम चारि० ॥

२१ ॥ वेइंद्री रक्षा संयम चारि० ॥

- २२ ॥ तेइंद्री रक्ता संयम चारि० ॥
- २३ ॥ चौरिंद्री रक्ता संयम चारि० ॥
- २४ ॥ पंचेन्द्री रक्ता संयम चारि० ॥
- २५ ॥ अजीवं रक्ता संयम चारि० ॥
- २६ ॥ प्रेक्षा संयम चारि० ॥
- २७ ॥ उपेक्षा संयम चारि० ॥
- २८ ॥ अतिरक्त वस्त्र प्रक्तादि परठण त्यागरूप संयम चारि० ॥
- २९ ॥ प्रमार्जन रूप संयम चारि० ॥
- ३० ॥ मनः संयम चारि० ॥
- ३१ ॥ वाक्संयम चारि० ॥
- ३२ ॥ काया संयम चारि० ॥
- ३३ ॥ आचार्य वैयावृत्यरूप संयम चारि० ॥
- ३४ ॥ उपाध्याय वैयावृत्यरूप संयम चारि० ॥
- ३५ ॥ तपस्वी वैयावृत्यरूप चारि० ॥
- ३६ ॥ लघुशिष्यादि वैयावृत्य रूप चारि ॥
- ३७ ॥ गिलाण साधु वैयावृत्यरूप चारि० ॥
- ३८ ॥ साधु वैयावृत्य रूप चारि० ॥
- ३९ ॥ श्रमणो पाशक वैयावृत्यरूप चा० ॥
- ४० ॥ संघ वैयावृत्यरूप चारि० ॥
- ४१ ॥ कुल वैयावृत्य रूप चारित्रे० ॥
- ४२ ॥ गण वैयावृत्य रूप चारि० ॥
- ४३ ॥ पशुपंम्गादि रहित वशति वसण ब्रह्म गुप्त चारि० ॥
- ४४ ॥ स्त्री हास्यादि विकथा वर्जन ब्रह्म गुप्त चा० ॥
- ४५ ॥ स्त्री आशन वर्जन ब्रह्म गुप्त चा० ॥
- ४६ ॥ स्त्री अंगोपांग निरीक्षण वर्जन ब्रह्म०
- ४७ ॥ कुड्यंतर सहित स्त्री हाव नाव सुणन वर्जन ब्रह्म० ॥
- ४८ ॥ पूर्व स्त्री संभोग चितन वर्जन ब्रह्म० ॥



- ४९ ॥ अति सरस आहार वर्जन ब्रह्म० ॥  
 ५० ॥ अति आहारं करण वर्जन ब्रह्म० ॥  
 ५१ ॥ अंग विचूषा वर्जन ब्रह्म०  
 ५२ ॥ अणशण तपोरूप चारित्र्येभ्योनमः ॥  
 ५३ ॥ ऊणोदरी तपो रूप चा० ॥  
 ५४ ॥ वित्ति संखेव तपो रूप चा० ॥  
 ५५ ॥ रस त्याग तपो रूप चा० ॥  
 ५६ ॥ कायकिजेस तपो रूप चा० ॥  
 ५७ ॥ संलेखणा तपो रूप चा० ॥  
 ५८ ॥ प्रायश्चित्त तपो रूप चा० ॥  
 ५९ ॥ विनय तपो रूप चा० ॥  
 ६० ॥ वेयावच्च तपो रूप चा० ॥  
 ६१ ॥ सिज्जाय तपो रूप चा० ॥  
 ६२ ॥ ध्यानतपो रूप चारित्र्येभ्योनमः ॥  
 ६३ ॥ उपसर्ग तपो रूप चा० ॥  
 ६४ ॥ अनंत ग्यान संयुक्त चा० ॥  
 ६५ ॥ अनंत दर्शन संयुक्त चा० ॥  
 ६६ ॥ अनंत चारित्र संयुक्त चा० ॥  
 ६७ ॥ क्रोध निग्रह करण चा० ॥  
 ६८ ॥ मान निग्रह करण चा० ॥  
 ६९ ॥ माया निग्रह करण चा० ॥  
 ७० ॥ लोभ निग्रह करण चारित्र्येभ्यो नमः ॥

॥ ❀ ॥ इस रीतसें ( ७० ) नमस्कार करै । ( खमा होके ) । अत्रत्यूससि  
 एणं० ( इत्यादि कहै ) ( ७० ) लोगस्मका काउसगग करिके । एक लोगस्स  
 कहै ( पीछे ) पूर्वोक्त करणी सब करै । इति अष्टम दिवस विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नवम दिवश विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( उँ झी एमो तवस्स ) इस पदको ( २ ) हजार गुणनो करै ।

तप पदका उज्ज्वल वर्ण है (इसीसें) तंजुलका आंवल करै । पचास जेद तप प  
दके चित्तवके नमस्कार करै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ तप पदके ( ५० ) जेद लि० ॥ ❀ ॥

१ ॥ यावत् कथक तपसे नमः ॥

२ ॥ इत्वर तप जेद तपसे नमः ॥

३ ॥ बाह्य ऊणोदरी तपजेद तपसे नमः ॥

४ ॥ अभ्यंतर ऊणोदरी तपजेद तपसे नमः ॥

५ ॥ द्रव्यतप वित्ती संखेप तपजेद तपसे नमः ॥

६ ॥ क्षेत्रतप वित्ती संखेप तपजेद तपसे नमः ॥

७ ॥ कालतप वित्ती संखेप तपजेद तपसे नमः ॥

८ ॥ जाव तप वित्ती संखेप तपजेद तपसे नमः ॥

९ ॥ काय किलेस तपजेद तपसे नमः ॥

१० ॥ रस त्याग तपसे नमः ॥

११ ॥ इंद्री कषाय जोग विषयक संजीणता तपसे नमः ॥

१२ ॥ स्त्री पशु पंरुकादि वर्जितस्थान अवस्थित संजीण ता० ॥

१३ ॥ आलोयण प्रायश्चित्त तपसे नमः ॥

१४ ॥ पन्तिकमण प्रायश्चित्त तपसे नमः ॥

१५ ॥ मिश्र प्रायश्चित्त तपसे नमः ॥

१६ ॥ विवेक प्रायश्चित्त तपसे नमः ॥

१७ ॥ उपसर्ग प्रायश्चित्त तपसे नमः ॥

१८ ॥ तप प्रायश्चित्त तपसे नमः ॥

१९ ॥ जेद प्रायश्चित्त तपसे नमः ॥

२० ॥ मूल प्रायश्चित्त तपसे नमः ॥

२१ ॥ अणवस्थित प्रायश्चित्त तपसे नमः ॥

२२ ॥ पारंचिय प्रायश्चित्त तपसे नमः ॥

२३ ॥ त्याग विनय रूप तपसे नमः ॥

२४ ॥ दर्शन विनय रूप तपसे नमः ॥

- २५ ॥ चारित्र्य विनय रूप तपसे नमः ॥  
 २६ ॥ गुर्वादिक मनविनय रूप तपसे नमः ॥  
 २७ ॥ वचन विनयरूप तपसे नमः ॥  
 २८ ॥ काय विनयरूप तपसे नमः ॥  
 २९ ॥ उपचारक विनयरूप तपसे नमः ॥  
 ३० ॥ आचार्य वेयावच्च तपसे नमः ॥  
 ३१ ॥ उपाध्याय वेयावच्च तपसे नमः ॥  
 ३२ ॥ साधू वेयावच्च तपसे नमः ॥  
 ३३ ॥ तपस्वी वेयावच्च तपसे नमः ॥  
 ३४ ॥ लघु सिख्यादि वेयावच्च तपसे नमः ॥  
 ३५ ॥ गिलाण साधु वेयावच्च तपसे नमः ॥  
 ३६ ॥ श्रमणो पाशक वेयावच्च तपसे नमः ॥  
 ३७ ॥ संव वेयावच्च तपसे नमः ॥  
 ३८ ॥ कुल वेयावच्च तपसे नमः ॥  
 ३९ ॥ गण वेयावच्च तपसे नमः ॥  
 ४० ॥ वायणा तपसे नमः ॥  
 ४१ ॥ प्रवृत्तातपसे नमः ॥  
 ४२ ॥ परावर्त्तना तपसे नमः ॥  
 ४३ ॥ अनुप्रेक्षा तपसे नमः ॥  
 ४४ ॥ धर्म कथा तपसे नमः ॥  
 ४५ ॥ आर्त्तध्यान निवृत्त तपसे नमः ॥  
 ४६ ॥ रोद्रध्यान निवृत्त तपसे नमः ॥  
 ४७ ॥ धर्म ध्यान चिंतन तपसे नमः ॥  
 ४८ ॥ शुक्लध्यान चिंतन तपसे नमः ॥  
 ४९ ॥ बाह्य उपसर्ग तपसे नमः ॥  
 ५० ॥ अभ्यंतर उपसर्ग तपसे नमः ॥

॥ ॐ ॥ इस रीतसे ( ५० ) नमस्कार करे । ( खडा होके ) अस्त

ससि एणं ( इत्यादि कहै ) ( ५० ) लोगस्सका काउसग्ग करिके ।  
एक लोगस्स कहै । ( पीठे ) पूर्वोक्त करणी करै ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ तपस्या ग्रहण करणैको गुरुकेपास जाणेकी  
विधिः लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम शुभ दिन, शुभ वनी देखके अन्ना वस्त्र आचूषण पहरै ।  
लिलामुके तिलक करै ॥ दोव । सरसुं । मस्तकमें धारण करै । हाथके मो  
ली बांधके । अक्षत । सुपारी । श्रीफल । नेवेद्य । यथाशक्ति रोकनाणो  
लेके । नवकार गुणतोथको । गुरुके पास जावै । आदशावर्त बांदणा कर  
के । ग्यान पूजा करै । पीठे बहुत प्रमोदवंत होके । गुरुके मुखसें उजी  
तप ग्रहण करै ( सो ) तपस्या ग्रहण करणेकी विधि आगे लिखेंगे ॥  
इति तपस्याग्रहण करणैको पोशाल जाणेकी विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ संक्षेप ऊजमणा विधिः लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पंच वर्णके धान्यसें सिद्धचक्रको मंजुन करै । सिद्धचक्रजी के  
चौ तरफ तीन गड चूनीके आकार बनावे । पहिले गडमांहे । अष्टदल  
कमलके आकार नवपद स्थापन करै । पद २ के वर्ण गुण प्रमाणें ।  
रत्नादिक चढावे । ( और ) पंचवर्णके फूल । पंचवर्णके धान्य । नवना  
खेरका गोटा रंगके । जिसपदका जैसा वर्ण होइ ( तैसे ही ) रंग  
का गोला चढावै । पंच वर्णी । नव धजा चढावै ॥ दूसरे वलयमें । सोले  
श्रीफल ( अथवा ) पूंगी फल चढावै । तीसरे वलयमें ( ४८ ) बुहारा  
चढावै ॥ नव निधानके ठिकारणें ( ९ ) नव वना फल चढावै ॥ दश दिग्पा  
ल । नवग्रहको । पक्कान्न प्रमुख चढावै ॥ इत्यादिक विधिसंयुक्त । सिद्ध  
चक्र स्थापना । घर देहरासर आगे करै । ( और ) जिनमंदिर मांहे । बाह्य  
मंडपे ५ ॥ ७ हाथ प्रमाणें मंजुन रचना करै । विस्तारसें सब विधि गुरुके  
वचनसें करके । नवपदजीकी पूजा पढायके कलस ढाले । धवल मंगल  
गीतगान गावै । वाजिन्न बजावै । ( इसीतिरे ) महा महोत्सव । उदार चि  
त्तसें करै । मंगल दीप आरती प्रमुख करै । दूसरे दिन विसर्जन करै ॥

इति संक्षेप सिद्धचक्र मंजुन विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ सिद्धचक्र संखेप उद्यापन विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अब दशमैं दिन गुरूके पास आके उंजी तपकों पारें । तप पारण की विधि आगे लिखेंगे । ( तथा ) उद्यापनमें ग्यान भक्तिके कारण । ९ पूठा । ९ विटांगणा । ९ पुस्तक । ९ लेखण । ९ ठवणी । ९ जिल मिल । ९ रुमाल । ९ मोरा । ९ मिजासणा । ९ थापना । ९ चंद्रआ । ९ पूठि आ । ९ आरती । ९ कलश । ९ जापमाला । ९ मंदर । ९ प्रतिमा । ९ तिलक । ९ सुगट । ( इत्यादिक ) अनेक नव नव चीज वणावै । शक्ति न होय तो यथाशक्ती रोकनाणो चढावै । देव पदको देवपदमें देवै । गुरु पद को गुरु पदमें देवे । ग्यानपदको ग्यानखाते लगावे । इत्यादिक यथाजोग्य शुभ क्षेत्रे खरच करै ॥ इति सिद्धचक्र संखेप उद्यापन विधिः ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ द्वादशमास सकल पर्वाधिकार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तत्र प्रथम चैत्रमास चतुर्पर्वाधिकारः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चैत्रमास में । चैत्र सुद ७ सें लेके, चैत्र सुद १५ पर्यंत ९ दिन अति उत्तम है । ( सो ) अति उत्तमता का कारण कहते हैं । बारें मासमें तीन अछाही महोत्सव आता है । ( जिसमें ) । चैत्र आसोज का दोय अछाई महोत्सव सास्वता है । चैत्र सुद ८ ( सें ) चैत्र सुद पूनम आसोज सुद ८ ( सें ) आसोज सुद १५ ( यह ) दोनों मासके आठ दिनोंमें । निश्चै सेती । च्यासुनिकाय के देवता इंद्र सब जेला होके । आठमा नंदीसर घ्राप जावे ( पुन्याहं २ ) कहते थके । अष्ट द्रव्यसें पूजन करे । गीत गान नाटकादिकसें अनेक तरेकी भक्ति करे । पीछे नवमें दिन । अपणें २ जन्मकुं सफल मानते हुए । अपनैं २ । देवलोक जावे । ( इसी मासक ) तीसरी अछाई आसाठ चौमासेकी ( १४ ) पीछे । ( ४२ ) दिन जानेंसें । संवत्सरी पर्व साचवणें को आठ दिन अछाई महोत्सव करे । अब यह नव दिनोंमें । चार पर्वसेवन करणे योग्य है ॥ ❀ ॥ प्रथम नवपद जीकी उंजी । इसी नव दिनोंमें विधिसंयुक्त करे । ( सो ) विधिपूर्व लिखी है । इससें इहां न लिखी । यह सिद्ध चक्रमंजु ( और ) नवपदजी की उंजीका अधिकार ( दशमा विद्या प्रवाद पृर्वसें ) उद्घरण करके । जय्य

जीवोंके अनंत सुखप्राप्तिके कारण । चवदैं पूर्वधारक श्री ऋद्रवाहु स्वामी जीनें प्रशिक्ष किया । ( इसीसे ) सर्व ज्ञव्य जीवोंके यह तप प्रमाण है । यह तपकों अपनी कुंयुक्ति लगायके । जो पुरुष खंमन करते हैं । उस का अनंत संसार । जगवानका वचनसें माजूम होता है ( शास्त्रोंमे लिखा है ) हे गोतम । अपनी कुटलताईसें ( जो ) सुत्रको एक हरफ उत्था पण करेगा ( सो ) अनंत संसार बढावेगा । ( सुत्र किसकुं कहते हैं ) सु त्तं गण हर रइयं । तहेव पत्तेय बुद्धि रइयंच । सुय केवलिणा रइयं । अ भिन्न दस पुविणा रइयं ॥ १ ॥ ( अर्थ ) गणधरोंका रचाहुवा ( तेसेंही ) प्रत्तेक बुद्धिका रचा हुआ । श्रुतकेवली चवदैं पूर्वधारी का रचा हुवा । संपूर्ण दश पूर्वधारीका रचा हुआ कों । जगवाननें सुत्रकी संज्ञा कही है इसीसें प्रमाण है ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अष्टापदउत्तीकरण विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इसी चैत्रमासमें सुद ( ८ ) से लेके । पूर्णमासी तक । ( केई ज्ञव्य जीव ) अष्टापदजीकी उत्ती करते हैं ( जिसमें ) पन्तिकमणा । देववंदन । देवपूजा । इत्यादिक सर्व विधि नवपदजीकी उत्ती तुल्य करै ( इतना विशेष है ) श्रीअष्टापद तीर्थाय नमः । ( इसी पदको ) २००० गुणनो ( वा ) बीस जाप करै । अरिहंत पदके १२ गुणकों नमस्कार क रै । आंबिल ( वा ) एकासणेंको पञ्चक्खाण करै । पीठे पूर्णमासीके दिन अष्टापदजी पर्वतकी स्थापना करके । विधिसंयुक्त ( २४ ) जगवंतकी पूजा करै ( एसें ) चैत्र । आसोज । दो उत्ती करणेंसें । चार वर समें । एक उत्ती करनेसें आठ वरसमें संपूर्ण होय । पीठे भक्तिसंयुक्त ऊ जमणो करै ( साहमी वठल करै ( इत्यादि ) विशेष विधि गुरुके मुखसें जानके करै ) ॥ ❀ ॥ इति द्वितीय अष्टापद उत्ती पर्वधिकारः कथितः ॥

॥ ❀ ॥ श्रीवीरजिन जन्म कल्याणक पर्वधिकारः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( अब तीसरो पर्व ) चैत्र सुद १३ के दिन । श्रीमहावीरस्वामी को जन्म कल्याण जयो है ( इसीसें ) सर्व ठिकाणें । धर्मरागी पुरुष गुरुके मुखसें समझके जलयात्रादिक संपूर्ण जन्मकल्याणकको महोत्त



व करै । ( एसेही ) रुद्धीवंत श्रावककों, धर्मका उद्योत के खातर, सर्व जगवंतके कल्याणकके दिन ( जो ) कल्याणक होय । उसीका महोत्सव करना चाहिये । ऐसी शक्ति न होय ( तो ) शासनके अधिपति । देवाधिदेव ( श्रीमहावीर स्वामीके ) च्यवन कल्याणकसें लेके । निर्वाण कल्याणक पर्यन्त । ( जिस दिन ) जो कल्याणक होय । उसीका महोत्सव पूजन करणा चाहिये ( इसीसे ) धर्मका उद्योत होय । श्रीसंघमें परम आनंद होय ॥ ❀ ॥ इति शासनाधिपति जन्मकल्याणक पर्वाधिकारः कथितः॥

॥ ❀ ॥ चैत्री पूनम पर्वाधिकारः ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चैत्री पूनम पर्वका अधिकार ( समाचारी शतकानुसारे ) लिखते है ॥ ❀ ॥ प्रथम चावलके पुंजसें सेतुंजय पर्वतकों स्थापन करै । ( तिसपर ) पट्टा रखके । श्रीपुंरुरीक गणधर ( वा ) श्रीरुषभ देव स्वामी का विंवस्थापन करै । अद्भुत मोत्यां करके पर्वतकों बधावै । केशर चंदनसें पर्वतकों पूजे । सब श्रीसंघ इकठे होके । पर्वतके चौफेर तीन प्रदक्षणा देवै । पीठे पूजन सुरू करै ( यथा ) ॥ ❀ ॥ दश ( १० ) बीश ( २० ) तीश ( ३० ) चत्ता ( ४० ) पन्ना ( ५० ) पुष्पदामेण लहई । चउत्थ ठठम अठम दसम दुवाजसम फलाइंच ॥ १ ॥ अब प्रथम ( १० ) प्रकारसें पूजनके अधिकार लिखते है ॥ ❀ ॥ एकाग्रचित्तसें । अष्टमंगलीक आगे रखके शुद्धोदकसें मूलप्रतिमा कों न्हवण करावै । पीठे श्रीसंघ खमा होके । दश नमस्कार उच्चार पूर्वक । १० फूल ( तथा ) १० फूलमाला चढा के । प्रतिमाके १० तिलक करै । ( यथाशक्ति ) सुपारी । नालेर ( इत्यादि ) सर्व चीज उत्कृष्टसें दश २ ॥ जघन्ये नालेर १ सुपारी १० और फलफूल यथासंभव चढावै । धूप खेवै । कपूरकी आरती करै । पीठे सिद्ध गिरि गुणगर्जित चैत्यवंदन करके । पांचशक्र स्तवे देव वांढे । १० खमा समण देके ( श्रीसिद्धदेव पुंरुरीक गणधराय नमः ) इस पदकों १० बेर नमस्कार करै । पीठे ( श्रीसेतुंजय पुंरुरीक आराधनार्थ करेमि काउसगं ) । अन्नत्थ मसि० कहके । १० लोगस्सका कावसगं करै । ( इहां केई आचार्य कहै ) बहुत उत्सव होय । बेजा कम रहै । ( तब ) एक लोगस्स

को कावसग्ग करै । १० जैतीके ठिकाणें १० गाथाको स्तवन कहै । पीठे अनेक प्रकारका बाजित्र बजावै ॥ ❀ ॥ इति प्रथम पूजाविधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( अब इसी तरे ) बीश । तीश । चालीश । पचाश यह च्या रौपूजाके जेद जान लेना । ( इतनाही विसेष है ) दूशरी पूजामें १० के ठिकाणें २० की विधिकरै ॥ तीसरी पूजामें १० के ठिकाणें ३० की विधि करै ॥ चौथी पूजामें १० के ठिकाणें सब विधि ४० की करै ॥ पांच मी पूजामें सब विधि ५० की करै ॥ ( तथा ) सिद्ध क्षेत्र श्रीपुंमरीकाय नमः । इस पदको २००० गुणनो करै । उत्कृष्टसें पांचू पूजामें । जूदी २ धजा चढावै । जघन्यसें पांच पूजा किये पीठे १ धजा चढावै । यह तप । गुरूके मुखसें लेके । जघन्ये १ वरस । ( वेसी होसकै तो ) ७ वरस । उ तत्कृष्टसें १२ वरस । विधि संयुक्त तपस्या करै । गुरूके मुखसें उपदेश सु णें । संपूर्ण तप हुवां पीठे । सिद्ध गिरीकी यात्रा करै । ग्यान पूजा करै । गुरु भक्ती करै । साहमी वल्ल करै । ( यह ) चैत्रीपूनमके दिन । श्री ऋषभ देव स्वामीके । प्रथम गणधर श्री पुंमरीकजी । पांचकोनि साधू साथ अक्षय सुखको प्राप्तजये ( इसीसें ) प्रथम श्रीभरत चक्रवर्त्ति । चैत्री पूनमको आराधन करके । श्री पुंमरीक गणधर की प्रतमा स्थापन करके । ( यह ) चैत्री पूनम पर्व प्रसिद्ध किया ॥ यह चैत्री पूनम आराधन करनें से । इस भवमें अनेक सुख संपदा प्राप्त होय । स्त्रियोंके पुत्र पुत्र्यादिक की बांछा पूरण होय । ( और ) आधि व्याधि सोग संताप सब दूर होय । परभवमें देवादिक रुद्धिप्राप्त होय । क्षीण कर्मों होनेसें अक्षय सुखको प्रा प्त होय ॥ इति चैत्र मास पर्वाधिकारः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चैत्री पूनम स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( ढाल ) पयप्रणमैरे जिन वरना सुपसाउजे । पुंमरगिरे गा इसहुं सुभ जावले । मति सुरगिरे सहस जीभ जो सुख हुये । किम ते नररे विमला चलना गुण तवे । ( उल्लाखो ) किम तवे गुणगण एह गि रिना जिहां मुनि सीधा बहु । गिरायना गुणते अनंता कहै जिणवर सु ख सहु । निज जनम सफलो करण कारण केतला गुण जापिये । तिर

यंच नारक तणी गतिना दुःख दूरै राखियै ॥ १ ॥ ( चाल )  
 जिन राजारे पहिलो आदि जिनेसरू । तसु नंदनरे चक्रवर्ति जरेतेसरू ।  
 तसु अंगजरे पुंमरीक गुण गण निलो । शम दम रसरे विनय विवेक गुणे  
 जलो ( उल्लाजो ) गुणजलो अनुक्रम आदि जिनवर पास संयम सिवपु  
 री । पुंमरीक गणधर प्रथम विहरै सुमति गुप्तै संचरी । पण कोमि साथे  
 विमल गिरवर सुगति पदवी पाव ए । सुदि चैत्र पूनिम तेण ए गिरी  
 पुंमरीक कहावए ॥ २ ॥ ( चाल ) हिव चैत्रीरे पूनिम पर्व सुहामणो । सेतुं  
 जैरे आराध्यां फल हुवै घणो । मन सुद्धेरे आपणपै थानक रही । आ  
 राध्यांरे यात्र पुन्य पामें सही ( उल्लाजो ) ते पुन्य पामें दान तप जप ध  
 र्म ध्यान मने धरै । बहु जाव जतैं त्रिविध पूजा आदि जिनवरनी करै ।  
 जावना जावै तेण दिवसै पंच कोमि गुणो फलै । अनुक्रमे ते नर सुगति  
 पामी सिद्ध सुंदरने मिलै ॥ ३ ॥ ( चाल ) दश वीशारे तीश चालीश पूजा  
 कही । पन्नासारे श्रावक निरती सरदही । चउथ ठठेरे अठम दसम दुवा  
 लसैं । पूजा फलरे अनुक्रम ए मुळ मन वसैं । ( उल्लाजो ) मनवसै पूज  
 कपूर धूवै मासखमण फले वली । सामन्न धूवे पक्खनो फल जे करै मननी  
 रली । हिव पूजनी विधि जेम गुरु मुख सुणीअठे परंपरा । ते मोहमाया कप  
 टठंभी सुणो जवीयण सादरा ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ( ढाल ) तंडुल राशि विमल गिर  
 थापी । तसुऊपरि पट्टादिक आपी । प्रतिमा आदि जिणेंसर केरी । पुंमरी  
 कनी थापी निवेरी ॥ ५ ॥ सेतुंज गिरिनें मन चिंतीजै । करमतणा मज दूर  
 करीजै । मोती तंडुल करीय वधावो । तीन प्रदक्षिण पूजरचावो ॥ ६ ॥ मंग  
 लीक पहिला तिहां आठ । करमबंध दूरै करि आठ । प्रतिमा मूल सनात्र  
 करेवा । जिनवरना गुणहीयडै धरेवा ॥ ७ ॥ ऊजाथई नवकार गुणंता ।  
 दश दश जैती तिलक करंता । माला पुष्प पुंगीफल ढोवो । मेरु अरण  
 वर धूप जुखेवो ॥ ❀ ॥ ( ढाल ) शक्र स्तव पांचे देववांदै । जवन्यना वंदण  
 पाप उदै । दशे नमस्कार करंत जैती । राखी करी दृष्टि जिनेंद्र सेती ॥ ९ ॥  
 आराधिवा कीजै कान्तमग्न । जिणें कीयै जाजै कर्म वग्न । लोगत्स उ  
 ज्जोय दसे वखाणुं । वेत्ता प्रमाणें अहिं एगआणुं ॥ १० ॥ इणें प्रकारे 'गुर

पूज एह । इसी परै बीजी च्यार तेह । दशां तणी वृद्धि तिहां गिणीजै ।  
 एक चित्त सूधै मुज पुन्य कीजै ॥ ११ ॥ धजा तणी रोप तिहां करीजै ।  
 एकेक पूठे अथवा गिणीजै । सहुत्तरै आरति मंगलेवो । पठै प्रनु आगलि  
 ते करेवो ॥ १२ ॥ ( कजश ) इम करिय पूजा यथायोगै संघपूजा आद  
 रो । साहमी वल्ल करो जविका जव समुद्र लीलावरो । संपदा सोहग  
 तेह मानव रुद्धि वृद्धि बहुलहै । श्री अमरमाणिक सीस सुपरै साधु की  
 रति इम कहै ॥ १३ ॥ इति श्रीचैत्री पूनिम स्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नंदीसर द्वीप स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नंदीसर बावन जिनालै । शाश्वता चोमुखसोहैरे । रुखजा  
 नन चंद्रानन वारषेण । वरधमान मन मोहैरे ( नं० ) ॥ १ ॥ आठमो द्वीप  
 नंदीसर अदनुत । बलयाकार विराजैरे । तेहनें मध्य चिहुं दिश शोजत ।  
 अंजन गिरवरत्ताजैरे ॥ २ ॥ ( नं० ) जोयण सहस चउरासी ऊंचा । ऊंच  
 पणै अजिरामारे । मूलै पृथुल सहसदश जोयण । उबारि सहस इक स्या  
 मारे ॥ ३ ॥ ( नं० ) ते ऊपर प्राशाद प्रनुना । अति उत्तंग उदारारे । सा  
 धूजंघा विद्याचारण । बांदै विविध प्रकारारे ॥ ४ ॥ ( नं० ) चैत्ये चैत्ये एक  
 सो चोवीस । विंव संख्या सविदाखीरे । ध्यावो सेवो जविजन जत्तै । सुध  
 आगम करि साखीरे ॥ ५ ॥ ( नं० ) ऊंचपणै सहु जोयण बहुत्तर । सो  
 जोयण आयामारे । पिहुलपणै पंचास जोयणना । प्रनु प्राशाद सुठामारे  
 ॥ ६ ॥ ( नं० ) धनुष पांचसै आयत प्रनुनी । विविध स्तनमय कायारे । जि  
 न कल्याणक उठव करवा । सुरपति जगतै आयारे ॥ ७ ॥ ( नं० ) अंजन  
 अंजन चिहुं गिरी उवरे । चोमुख बावि विशालारे । बावि बावि विच इक  
 इक पर्वत । राजतरंग रमाजारे ॥ ८ ॥ ( नं० ) चौसठि सहस जोयण उत्तंगै ।  
 दश सहस सम पिहुलारे । चिहुंदिशि सोज सोहै दधिमुख गिर । तिहां प्रा  
 शाद सुविमजारे ॥ ९ ॥ ( नं० ) बावि बाविनें अंतर विदिशै । रतिकर पर्व  
 त रुमारे । दोय दोय संख्या ए जगदीसै । कहा नही एकूमारे ॥ १० ॥  
 ( नं० ) जोयणसहस मान दश ऊंचा । दश दश सहस विस्तारारे । उबारि स  
 म संठाण जगदगुरु । निश्चय ए निरवारारे ॥ ११ ॥ ( नं० ) ते ऊपर प्राशा

द सतोरण । अंजनगिरि परि माणेंरे । जिन प्रतिमानी संख्या तेहिज । श्रीजि नराज वखाणेंरे ॥ १२ ॥ ( नं० ) इम प्राशाद प्रचूना बावन । नंदीसर वरद्री पैंरे । द्रव्य जाव विध पूज करंता । मोह महाजड जीपैंरे ॥ १३ ॥ ( नं० ) प्रवचन सार उधार प्रकरणें । जीवाजिगमैं जाणोरे । इम अधिकार है ग्रंथ अनेकैं । इहां संका मत आणोरे ॥ १४ ॥ ( नं० ) जिम सुरपति विरचै ति हां पूजा । ते अनुभव इहां ल्यावोरे । ध्यावो जिम पावो परमात्म । जैन चंद्र गुणगावोरे ॥ १४ ॥ ( नं० ) इति नंदीसर द्वाप स्तवनम् ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नंदीश्वर तपस्याकरण विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शुभदिन शुभ घनी गुरुके पास नंदीश्वर तप ग्रहण करै । नंदीश्वर द्वीपके चारूं दिश तरफ ( ५२ ) चैत्यकी अपेक्षायें । अमावसके अ मावस ( ५२ ) उपवास करै । जिस दिन जो माहाराजके नामका उपवास होय । उसी नामको २००० गुणनो करै ( सो लिखते है ) ॥ ❀ ॥

॥ १ ॥ ऋषजाननजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ❀ ॥ २ ॥ श्रीचंद्राननजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ❀ ॥

॥ ३ ॥ श्रीवारुणजी सर्व० ॥ ४ ॥ ❀ ॥ श्रीवर्द्धमानजी सर्व० ॥ ❀ ॥

( यह ) च्यार नामकों ( ४ ) बेर सुलटा ( ४ ) बेर उलटा गिणें । अनुक्रमें ( १३ ) उपवास करनेसैं एक उंजी होय ॥ ( ४ ) बार उंजी करणेंसैं, यह तप संपूर्ण होय । पीठे शक्ति माफक ऊजमणो करै । नंदीसर द्वीप को मंरुज वणावै । पूजा करावै । ( इत्यादि महामहोत्सव करके ) । ग्यान पूजा करै । साहमी वल्ल करै । मंरुज पूजाकी विसेष विधि गुरुके वचनसैं जाणके करै । इति नंदीसर तपस्याधिकारः ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ वैशाख मासमध्ये पर्वाधिकार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वैशाखके महिनेमें ( मिति ) वैशाख सुद ३ है ( सो ) अक्षय तृतीया नामसैं पर्व प्रसिद्ध है ( इस दिन ) श्रीरुद्र देव स्वामीके । चारित्र ग्रहण कियां पीठे । वारै माशीका पारणा । सोमयश राजके पुत्र । श्रीश्रे यांस कुमारजीके हाथसैं । इहुरस सेती हुवा ( उसी समय ) उत्तम दानकें प्रज्ञावसैं । सर्व देवगण प्रमोदवंत होके । सुगंध जलकी वर्षा ॥ १ ॥ सुगंध पुष्पोंकी वर्षा ॥ २ ॥ ( १२ ॥ ) कोरु सोनड्योकी वर्षा ॥ ३ ॥ आकास

सैं अहो दानं २ ऐसैं उदघोषणा ॥ ४ ॥ देव दुंदुभि वाजित्र ॥ ५ ॥ ऐसैं पांच द्रव्य प्रगट किये । श्रेयांस कुमरका जश तीन जुवनमें विस्तरण हु आ । ( इसी दिनसैं ) आहार देणैंकी विधि सबकों मालुम हुई । इस दान के प्रज्ञावसैं श्रेयांस कुमर अक्षय सुखकों प्राप्त हुवा । ( इसीसैं ) अक्षय तृतीया पर्व श्रीसंवमें परम मंगलकारी है । इस पर्वके आणेंसैं । अठे वस्त्र आचूषण पहरके । जगवंतके मंदर जावैं । अष्ट द्रव्यसैं पूजन करे । स्नात्र । अष्ट प्रकारी । सत्तरजेदी ( इत्यादिक ) पूजा करावे ॥ पीठे गुरुके मुख सैं, एकासणादिक पञ्चक्खाण करके । पर्वकी महमा सुणैं । अपने घरमें मंगलीक नोजन तैयार होणेंसैं । गुरुकों बहरायके । सर्व कुटुंब इकठे होके जीमें । और ( जो ) मंगल कार्य करणा होय ( सो ) इसी दिन करे । ( इस माफक ) इस पर्वकों जो जव्यजीव सेवन करेंगे । तसीके तप तेज सदा बढ़ते रहेंगे । अलं विस्तरेण ॥ इति अक्षय तीज पर्वोधिकारः

॥ ❀ ॥ अथ तृतीय ज्येष्ठमाशा पर्वोधिकारः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ज्येष्ठ कृष्ण त्रयोदशी ( १३ ) के दिन ( शोलमा ) श्रीशांति नाथ स्वामीका निर्वाण कल्याणक है । ( इसीसैं ) यह दिन वरुा उत्तम है । सर्व ठिकाणें श्रीसंघ इकठे होके । विधि संयुक्त शांति पूजाका महोत्सव करावैं । शांति जल लेजाके । अपने २ घरमें ठांटें । इस शांति पूजाके करानेंसैं । मारी हेजा । ( इत्यादि समुदाइक रोग ) कजी श्री संघमें व्याप्त न होय ( अथवा ) कोई श्रावकके घरमें रोग चालो रहतो होय ( वा ) बहुत चिंता रहती होय ( तो ) इसी दिन शांति पूजाका उत्सव करणा चाहिये । ( इसीसैं ) आधि व्याधि ग्रहादिककी पीना सर्व दूर होय । अनेक मंगल श्रेणी प्रवर्त्तन होय ॥ इति ज्येष्ठवद ( १३ ) पर्वोधिकारः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आषाढ माश मध्य पर्वोधिकार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आषाढ सुद १४ के दिन । चैमाशी १४ इस नामसैं पर्व प्रसिद्ध है ( सो ) लिखते हैं ॥ ( यथा ) सामायका वस्यकपोपथानि । देवार्चन स्नात्र विलेपनानि । ब्रह्मक्रिया दान तपो मुखानि । जव्या श्रतुर्मासक मंरुनानि ॥ १ ॥ ( अर्थ ) नोजनव्या पुतानि सामायकादि धर्म कृत्यानि । चतुर्माश



कस्य मंडनानि अलंकार नूतानि विद्यन्ते ॥ अहो ज्ञव्य प्राणी जीवो ( यह )  
 सामायक कों आदलेके ( जो ) धर्म कृत्यहै ( सो ) चौमासै के मंरुनहै ।  
 अलंकार समानहै । ( यथा शक्ति ) यह चौमासे पर्वमें । केइ जीव । सा  
 मायक । पम्किमणा । पोशा । करै । केइ जगवानके मंदरमें नानाप्रकार  
 की पूजा करै । केइ शीलव्रत पालै । केइ सुपात्र दान देवै । केइ नाना प्र  
 कारकी तपस्या करै जैसो धर्मकाम अपणी शक्तिसँ बण आवै ( सो  
 करै ) इसमें विरोध नहीं । कोई प्रकारसँ धर्मका उद्योत करणा  
 चाहियै ( जिससँ ) सर्व श्रीसंघमें कल्याण माला प्रगट होय । और चौमा  
 शी ( १४ ) के दिन । सर्व मंदर दर्शन करनेकों जावै । पांच शक्र स्त  
 व देव बांदै । पीठे गुरुके पाम जाके । चौमासे पर्वका व्याख्यान सुणै ।  
 सर्व चीजका प्रमाण करके । उपरांत सोगन लेवै । सांजकों चौमाशी प  
 म्किमणो करै । ( इसी माफक ) काती चौमाशै । फागुण चौमाशैकों  
 पिण सेवन करै ॥ इति चतुर्मास पर्वधिकारः कथितः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रावण मास मध्ये तपस्याधिकार कथ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रावण मासमें कई ज्ञव्य जीव । मम्माई आदिक खेत्रोंमें ।  
 नाना प्रकारकी पूजा नाटकादिउत्सव, अंगी रचना करायके चौमाशै पर्व-  
 का उद्योत करते हैं । ( इसी माफक ) सर्वठिकाणें नाना प्रकारकी पूजा  
 कराणी चाहियै । और बहुत ठिकाणें की श्रावकायां इस महिनें में  
 कई तरैकीतपस्या करै है । ( जिसमें ) उत्तम फलकी दें वाली कई  
 तपस्या ( विधि प्रपाक ग्रंथसँ ) उद्धरण करके । संखेपविधिसँ इहां लिखतेहैं ॥

॥ ❀ ॥ अथ वुटकर तपस्या विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुरिमट्ट ? । एकासण ? । नीवी ? । आंवल ? । उपवास  
 ? । ( यह ? उज्जी ) इसी तरै पांच उज्जी करै । तपो दिन २५ । ऊजमणें  
 ( २५ ) । लाइ चढावै ॥ ❀ ॥ इति इन्द्रि जय तप ॥ ? ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ एकासण ? । नीवी ? । आंवल ? । उपवास ? । ( इसी  
 तरै ) उज्जी च्यार करै । तपो दिन १६ । ऊज मणें १६ लाइ चढावै ॥ ❀ ॥  
 ॥ ❀ ॥ इति कपाय जयतपः २ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नीवी १ । आंबिल १ । उपवास १ । ( इसी तरे ) उंजी ३ । करै । तपोदिन ९ । ऊजमणें नव । लाडू चढावै ॥ ❀ ॥ इति योगशुद्धि तपः ॥ ३ ॥

॥ ❀ ॥ इकसार उपवास ३ । ( अथवा ) एकांतर उपवास ३ । ऊजमणें ज्ञान पूजा करै ॥ ❀ ॥ इति नाणतपः ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इकसार उपवास ३ । ( अथवा ) एकांतर उपवास ३ । ऊजमणें स्नात्र पूजा करावै ॥ ❀ ॥ इति दर्शन तपः ॥ ५ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इकसार उपवास ३ (अथवा) एकांतर उपवास (३) ऊजमणइ । मोतम स्वामीको पूजा करै ॥ इति चारित्र तपः ॥ ६ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अष्ठम १ । ठठ १ । उपवास १ । एकाशण १ । एकल ठाणो १ । दत्ति १ । नीवी १ । आंबिल १ । ( यह एक उंजी ) इसी तरे, उंजी आठ करै । तपोदिन ( ८८ ) ऊजमणें रूपानो बृह । सोनानो कुहानो करायके । ग्या न खाते देवै ॥ इति आठ कर्म सूरुण तपः ॥ ७ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ज़ाद्रवा वदि चउथसैं लेके । पनरै दिन पर्यंत (इकसार) एका शणा ( अथवा ) विआशणा करै । वर देहरासर आगे ( अथवा ) अठै ठिकाणें कलश स्थापन करै । एक सुठी चावल सदा कलशमें ज़ेरै । संव ठरीके दिन कलश ऊपर नालेर रखके । महोत्सव पूर्वक मंदर लाके । देव आगे रखे । स्नात्र पूजा करै । ज्ञान पूजा करै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

इति अहयनिधि तपः ॥ ८ ॥ ❀ ॥ श्रीवासु पूज्य पूजा पूर्वक । रोहणी नक्षत्र दिने । उपवास । ( वा ) नीवी । आंबिल । सात वरशः सात मास करै ( श्रीवासु पुज्य स्वामी मर्वझाय नमः ) इम पदको २००० गुणानो करै । गुरुके पास स्तवन सुणें ( सो ) स्तवन आगे लिखेंगे ॥ ऊजमणें ज्ञानके उपगरणसैं । ज्ञान भक्ति गुरुभक्ति करै ॥ इति रोहिणी तपः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुदपहके पांचमके दिन । श्रीनेमि । अंबिका, पूजा पूर्वक । पांच एकाशणादिक तप करै । अंबिका देवीको बेस चढावै ॥ ❀ ॥ इति अंबिका तपः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुद पहमें इग्यारसके दिन । सिद्धांत पूजापूर्वक । मोन संयुक्त उपवास करै ॥ इति श्रुत देवता तपः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

कस्य मंडनानि अलंकार चूतानि विद्यन्ते ॥ अहो ज्ञव्य प्राणी जीवो ( यह )  
 सामायक को आदलेके ( जो ) धर्म कृत्य है ( सो ) चौमासे के मंन है ।  
 अलंकार समान है । ( यथा शक्ति ) यह चौमासे पर्वमें । केइ जीव । सा  
 मायक । पक्कमणा । पोशा । करै । केइ जगवानके मंदरमें नानाप्रकार  
 की पूजा करै । केइ शीलव्रत पालै । केइ सुपात्र दान देवै । केइ नाना प्र  
 कारकी तपस्या करै जैसो धर्मकाम अपणी शक्तिसें बण आवै ( सो  
 करै ) इसमें विरोध नहीं । कोई प्रकारसे धर्मका उद्योत करणा  
 चाहियै ( जिससे ) सर्व श्रीसंघमें कल्याण माला प्रगट होय । और चौमा  
 शी ( १४ ) के दिन । सर्व मंदर दर्शन करनेको जावै । पांच शक्र स्त  
 व देव बांदै । पीठे गुरूके पाम जाके । चौमासे पर्वका व्याख्यान सुणै ।  
 सर्व चीजका प्रमाण करके । उपरांत सोगन लेवै । सांजको चौमाशी प  
 क्कमणो करै । ( इसी माफक ) काती चौमाशै । फागुण चौमाशैको  
 पिण सेवन करै ॥ इति चतुर्मास पर्वाधिकारः कथितः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रावण मास मध्ये तपस्याधिकार कथ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रावण मासमें कई ज्ञव्य जीव । मम्माई आदिक खेत्रोंमें ।  
 नाना प्रकारकी पूजा नाटकादिउत्तव, अंगी रचना करायके चौमाशै पर्व-  
 का उद्योत करते हैं । ( इसी माफक ) सर्वठिकाणें नाना प्रकारकी पूजा  
 कराणी चाहियै । और बहुत ठिकाणें की श्रावणयां इस महिने में  
 कई तैरेकी तपस्या करै है । ( जिसमें ) उत्तम फलकी दें वाली कई  
 तपस्या ( विधि प्रपाक ग्रंथसे ) उद्धरण करके । संखेपविधिसें इहां लिखते हैं ॥

॥ ❀ ॥ अथ बुटकर तपस्या विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुरिमट्ट ? । एकासण ? । नीवी ? । आंविल ? । उपवास  
 ? । ( यह ? उज्जी ) इसी तैरे पांच उज्जी करै । तपो दिन २५ । ऊज मणें  
 ( २५ ) । लाडू चढावै ॥ ❀ ॥ इति इंद्रि जय तप ॥ ? ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ एकासण ? । नीवी ? । आंविल ? । उपवास ? । ( इसी  
 तैरे ) उज्जी च्यार करै । तपो दिन २६ । ऊज मणें २६ लाडू चढावै ॥ ❀ ॥  
 ॥ ❀ ॥ इति कषाय जयतपः २ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नीवी ? । आंविल ? । उपवास ? । ( इसी तरे ) उंजी ३ । करै । तपोदिन ९ । ऊजमणें नव । लाइ चढावै ॥ ❀ ॥ इति योगशुद्धि तपः ॥ ३ ॥

॥ ❀ ॥ इकसार उपवास ३ । ( अथवा ) एकांतर उपवास ३ । ऊजमणें ज्ञान पूजा करै ॥ ❀ ॥ इति नाणतपः ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इकसार उपवास ३ । ( अथवा ) एकांतर उपवास ३ । ऊजमणें सात्र पूजा करावै ॥ ❀ ॥ इति दर्शन तपः ॥ ५ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इकसार उपवास ३ (अथवा) एकांतर उपवास (३) ऊजमणइ । गोतम स्वामीकी पूजा करै ॥ इति चारित्र तपः ॥ ६ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अठम ? । ठठ ? । उपवास ? । एकाशण ? । एकल ठाणो ? । दत्ति ? । नीवी ? । आंविल ? । ( यह एक उंजी ) इसी तरे, उंजी आठ करै । तपोदिन ( ८८ ) ऊजमणें रूपानो वृद्ध । सोनानो कुहानो करायके । ग्या न खाते देवै ॥ इति आठ कर्म सूरुण तपः ॥ ७ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्राद्रवा वदि चउथसैं लेके । पनरै दिन पर्यंत (इकसार) एका शणा ( अथवा ) विआशणा करै । घर देहरासर आगे ( अथवा ) अठै ठिकाणें कजश स्थापन करै । एक सुठी चावल सदा कजशमें जरै । संव ढरीके दिन कजश ऊपर नालेर रखके । महोत्सव पूर्वक मंदर लाके । देव आगे रखे । सात्र पूजा करै । ज्ञान पूजा करै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

इति अहयनिधि तपः ॥ ८ ॥ ❀ ॥ श्रीवासु पूज्य पूजा पूर्वक । रोहणी नक्षत्र दिने । उपवास । ( वा ) नीवी । आंविल । सात वरश- सात मास करै ( श्रीवासु पुज्य स्वामी भवैजाय नमः ) इस पदको २००० गुणनो करै । गुरुके पास स्तवन सुणें ( सो ) स्तवन आगे लिखेंगे ॥ ऊजमणें ज्ञानके उपगरणसैं । ज्ञान भक्ति गुरुभक्ति करै ॥ इति रोहिणी तपः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुदपहके पांचमके दिन । श्रीनेमि । अंविका. पूजा पूर्वक । पांच एकाशणादिक तप करै । अंविका देवीको विस चढावै ॥ ❀ ॥ इति अंविका तपः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुद पहरमें इग्यारसके दिन । सिद्धांत पूजापूर्वक । मोन संयुक्त उपवास करै ॥ इति श्रुत देवता तपः ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ❀ ॥

१० । पूनमसें सरू करै । पारणें साधू पम्पिलात्रै । ग्यान पूजा करै ॥ ❀ ॥  
इति दालिद्र हरण तपः ॥ २८ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ एकेंद्रियें उपवास १ । वैद्रीयें षष्ठ १ । तैद्रीयें अठम १ । चौरेंद्री  
यें दशम १ । पंचेद्रीयें द्वादशम १ । ष्कार्यें चतुर्दशम १ । तप करै । ऊज  
मणें, सुखमीसें, स्त्री ६ जीमावै ॥ ❀ ॥ इति ष्कार्य आलोयण तपः ॥ २९ ॥  
॥ ❀ ॥ नीवी ( आठ ) निरंतर करै । इति सासू सुखतपः ॥ ३० ॥ ❀ ॥  
॥ ❀ ॥ आंवल ( आठ ) निरंतर करै ॥ इति सुसरसुख तपः ॥ ३१ ॥ ❀ ॥  
॥ ❀ ॥ षष्ठ ( पांच ) करै ॥ इति पुत्री सुख तपः ॥ ३२ ॥ ॥ ❀ ॥  
॥ ❀ ॥ अठम ( पांच ) करै इति बेटा सुख तपः ॥ ३३ ॥ ॥ ❀ ॥  
॥ ❀ ॥ उपवास ( आठ ) एकांतरकरै ॥ इति जर्तार सुख तपः ॥ ३४ ॥ ❀ ॥  
॥ ❀ ॥ निवी ( पांच ) निरंतर करै ॥ इति जेठ सुख तपः ॥ ३५ ॥ ❀ ॥  
॥ ❀ ॥ एकाशणा ( पांच ) निरंतर करै ॥ इति देवर सुखतपः ॥ ३६ ॥ ❀ ॥  
षष्ठ ५ । एकाशणा पांच । एकांतर करै ॥ इति पिता माता सुख तपः ॥ ३७ ॥

॥ ❀ ॥ इत्यादिक कई तरैकी तपस्या बहुत ठिकारैकी श्राविका करै  
है । ( इसीसें ) सर्व श्राविकाके उपगारार्थ शास्त्रोंसें उद्धरण करके । संखे  
प विधिसें इहां लिखी है । वेसी शक्ति होय ( तो ) पूजा । साहमी वृज  
तीर्थ यात्रा । ( इत्यादिक ) सातुं शुभखेत्रोंमें । अण्णा धन खरच करै ।  
धर्मका उद्योत करै । इस तपस्या के प्रभावसें । ( इस जन्ममें ) संसार सं  
बंधी दुखदालिद्र दूर होके । सर्व कुटुंबमें सुख संपदा होय । ( परजन्ममें )  
देवादिक रुक्मी प्राप्त होय । ( किंहुना ) इति बुटकर तपस्या विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चाद्रवमाशमध्ये पर्वाधिकार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चाद्रवमहिनेमें । मिति चाद्रवासुद ४ ( तथा ) कई मतके अ  
पेक्षाये ५ तिथिकों । संवत्तरी नामसें पर्वप्रशिद्ध है । ( प्रथम इस संवत्तरी  
पर्वकी महमा कहते हैं ) ( जेसें ) जगत्रमें अनेक मंत्र है । पर नवकार  
मंत्र समान कोई मंत्र नहीं ( १ ) तीर्थोंमें शत्रुंजय समान कोई तीर्थ  
नहीं ( २ ) पांच दानमें । अन्नदान । सुपात्रदान । समान कोई दान  
नहीं ( ३ ) गुणमांहे विनयगुण ( ४ ) । व्रतमांहे ब्रह्मव्रत ( ५ ) । नियम

मांहे संतोष नियम ( ६ ) । तपमांहे उपशम तप ( ७ ) दर्शनमांहे जैन दर्शन ( ८ ) । जलमांहे गंगाजल ( ९ ) । अलंकारमांहे चूमामणि ( १० ) ज्योतिषी मांहे चंद्रमा ( ११ ) । तेजवंत मांहे सूर्य ( १२ ) । तुरंग मांहे पंच वल्लभ किशोर ( १३ ) नृत्यकलावंत मांहे मोर ( १४ ) गज मांहे ऐरावण ( १५ ) दैत्यमांहे रावण ( १६ ) । वनमांहे नन्दनवन ( १७ ) । काष्ठ मांहे चंदन ( १८ ) साहसीक मांहे विक्रमादित्य ( १९ ) । न्यायवंत मांहे श्रीराम ( २० ) रूपवंत मांहे काम ( २१ ) । सती मांहे शीता ( २२ ) । सुगंध मांहे कस्तूरी ( २३ ) वस्तु मांहे तेजनतूरी ( २४ ) । वाजित्रमांहे जंजा ( २५ ) स्त्रीमांहे रंजा ( २६ ) धातुमांहे स्वर्ण ( २७ ) दातारमांहे कर्ण ( २८ ) । गौ मांहे कामधेनु ( २९ ) । वृक्ष मांहे कल्पवृक्ष ( ३० ) । जलमांहे अमृत ( ३१ ) स्नेहमांहे घृत ( ३२ ) । ( इत्यादिक ) सर्व वस्तु में एक एक चीज उत्तम होती है । ( इसी माफक ) सर्व पर्वमें उत्कृष्ट रा जाधिराज श्री संवत्तरी पर्व ( दूसरो नाम ) श्रीपर्यूपणा पर्वको । जगवंत श्री महावीर स्वामीजीनें उत्तम वर्णन कियो ॥ ❀ ॥ ( अब श्री पर्यूपण पर्व आनेसें ) ( प्रथम ) श्रीमाधुके करने योग्य धर्मकृत्य कहते है ॥ ❀ ॥ संवत्तरी प्रतिक्रमण करे ॥ १ ॥ लोचकरावै २ तेलैका तप करे ३ ॥ सर्व मंदरोमें जगवंतकी जाव स्तवना करे ४ । सर्व श्रीसंवसें खमावै ५ । यह पंचकारणके वास्ते, श्रीतीर्थकर गणधरोनें श्रीपर्यूपणा पर्व प्रवर्त्तन किया ॥

॥ ❀ ॥ अब शुद्धश्रावक संवत्तरी पर्व आराधन करनेको, आठदिन अ छाही महोत्सव करे ( सो ) कल्पलता शास्त्रसें लिखतेहैं ॥ ❀ ॥ प्रथम श्रुतज्ञानकी प्राप्ति करे । कल्पसूत्रजीको विधि संयुक्त अपने घर लेजावे । रात्री जागरण करावै । ( प्रज्ञान समय ) नगरके सर्व श्रीसंवको निमंत्रण करे । यथायोग्य सत्कार सन्मान करे । पीठे पुस्तक ग्राहक पुरुष सर्वसें उत्तम वस्त्र आचूषण पहरे । मुगट, उत्र, चामर, ( इत्यादिक महत ) सा ख्यात इंद्र महाराजको रूप बनाके हाथी ऊपर ( अथवा ) पालखी ऊपर बैठे । अष्टमंगलीक रचित थालमें पुस्तक धरके । अपने दोनूं हाथमें थाल रखे । दोनूं तरफ पुरा अठा वस्त्र आचूषण पहरे । चमर टाले ।



अनेक प्रकारके वाजित्र वाजते हुये । दानें देते हुये, नाना प्रकारके श्रुत ज्ञानके गुण वर्णन करते हुये । नगरमें प्रदक्षिणा तुल्य फिरके । गुरुके पास आवै । गुरु पिण खना होके । विनय संयुक्त पुस्तककों नमस्कार करके आ गै रखै । श्री संघके आज्ञासैं वाचना पूर्वक वाचै ॥ १ ॥ नगरमें सब ठिकाणें अमारि परुहो फेरावै । दूशरो अपने बचनसैं ( तथा ) द्रव्यसैं । कसाई धोवी । जमुजुंजा ( इत्यादिक ) सर्वके आरंभ ठोमावै ॥ २ ॥ सुपात्र दान देवै ॥ ३ ॥ विदाम, सुपारी, नालेरादिककी, परजावना करै ॥ ४ ॥ श्रीवीतराग देवकी उदार प्रक्तिसें पूजा करै । चौदसके दिन । संबठरीके दिन चतुर्विध श्रीसंघ इकठे होके । सर्व मंदर दर्शन करनें को जावै ॥ ५ ॥ सचित्तका परिहार करै ॥ ६ ॥ ब्रह्मचर्य पालै ॥ ७ ॥ चतुर्थ । षष्ठ ॥ अष्ठमादिक । तप करै ॥ ८ ॥ अपने २ वित्तके अनुसारै, जन्म कल्याणक को महोत्सव करै ॥ ९ ॥ अठ पहरी पोशो करै ॥ १० ॥ संबठरी प्रतिक्रमण करै ॥ ११ ॥ निशल्य होके सर्व श्रीसंघसैं खमावै ॥ १२ ॥ पारणिके दिन पोशह पन्तिकमणें वाले साधमीं जाइयोंकी प्रक्ति करै ॥ १३ ॥ गुरु प्रक्ति करै ॥ १४ ॥ संबठरी दान देवै । साहमी बठल करै ॥ १५ ॥ इस विधि संयुक्त ( यह ) कल्पसुत्र एकचित्त सुणनेंसें, आराधन करनेसें, आठ जवमें सिद्धि स्थानककों प्राप्त होय । ( और ) कई उत्तम जीव । अत्यंत शुद्ध जाव रखके । अष्ठमादिक तप करिके युक्त, कल्प सुत्रजीकों वाचते है । और सुणनें वाले, प्रमाद, निद्रा, विकथा, ठोरुके । अष्ठमादिक तप करके युक्त । इकचित्तसैं शुद्ध जाव रखके । इकवीश वेर सुणते है ( सो ) पुरुष देवगतिकों प्राप्त होके । तीशरै जव सिद्धि स्थानकों प्राप्त होते है ॥ ❀ ॥ इस पर्युषणा पर्वके महोत्सव ( जो ) जव्यजीव करते है । ( सो ) धन्य है । धर्मके प्रजावीक है । अपणें लक्ष्मीसैं धर्मका उद्योत करै है । उसी पुरुषांकों नमस्कार है ॥ ❀ ॥ ( अब कल्प सुत्रजीका महात्म कहते है ) ॥ ❀ ॥ यह कल्पसुत्र, नवमा पूर्वसें उद्घरण किया हुवा । दशाश्रुत स्कंधका आठमा अध्ययन है । सर्व श्रीसंघके मंगलके कारण । श्रुतकेवली । श्रीजदवाहु स्वामी प्रसिद्ध किया है । यह कल्पसुत्रके अनंते विषय है । ( जेसैं ) सर्व

नदीकी बाजूके जितने कण होय ( तिससैं पिण ) एक सूत्रके अनन्ते विषय हे । इस कल्पसूत्रके महात्म ( जो ) देवाचार्य । हजार जीव करके कहै ( तो पिण ) महात्मका एक अंश कह सकता नहीं । ऐसा इस पर्वका महात्म जानके ( जो ) ज्व्यजीव शुद्ध जावसैं सेवन करेंगे ( सो ) अनेक तरैसैं, रुधी, वृधी, सुख, सौभाग्यकों, प्राप्त होंगे ( और ) परब्रह्ममें देवादिक रुधी पायके मुक्तिसुखकों प्राप्त होंगे ॥ इति पर्यूपण पर्वधिकारः ॥ ६ ॥

॥ ❀ ॥ अथ आश्विनमास मध्ये पर्वधिकार लि० ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आशोज महिने में । मिति आशोज सुद ७ सैं लेके । आशोज सुद १५ तांड़ । नवपद उंजी ( तथा ) अष्टा पद उंजी विधि संयुक्त करे । सो सर्व विधि पूर्वं लिखी है । उसी माफक करे ॥ ❀ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ कार्तिक मास मध्ये पर्वधिकार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कार्तिक महिने में । मिति कार्तिकवद अमावस है ( सो ) दीपमालिका नामसैं पर्व प्रशिद्ध है । ( यह ) दीपमालिका पर्व कवसैं प्रशिद्ध हुआ ( सो लिखते है ) चौबीसमा तीर्थकर । श्रीमहावीर स्वामी । समस्त साधु, साध्वी, साथ विचरते थके । अंतकी चोमाशी पावापुरी आयके रहे ( उहां ) आगामी कालके सर्व जाव । ज्व्यजीवोंके आगे प्ररूपण किये । फेर । आपणा अंतसमय जानके । हस्तिपाल राजाके शुक्लशालामें आयके रहे । ( अपने पर ) गौतम स्वामीका बहुत स्नेह देखके । निजीक गाम में, एक देव शर्मा ब्राह्मणकों । प्रतिबोध देनके लिये जेजा । ( पिडाडी ) पडाशन धारन करके । सोले पहर अखरु देशना देते हुये । पूरण बहुत्तर बरशको आऊखो पालके ( इसी ) अमावसके दिन । पिठजी दो बनी रात्र रहनसैं सिद्धि स्थानकों प्राप्त जए । जिम समय जगवंतका निर्वाण कल्याणक हुआ ( उस समय ) चौसठ इंद्र देवता गणके आने जानेंसैं बना उद्योत हुआ । और ( जो ) सर्व राजा, पोषधमें बैठे हुए थे ( सो ) जाव उद्योतका अस्तपणा देखके । सर्व ठिकाणें रत्न धरके द्रव्य उद्योत किया । एकमके प्रातसमें देवतावोंके आते जाते वचन सुणके । श्रीगौतम स्वामी को केवल ज्ञान उत्पन्न हुवो । ( दूजके दिन ) सुदर्शना वैन । अपना

जाई नंद वर्धन राजाको घरमें बुलायके जिमाया । शोक दूर करायो । ( जिस  
सें ) जाई बीज प्रवर्त्तन हुई । ( इसीसें ) यह दीवाली पर्व वरुण उत्तम है । इस  
दीवालीके रात ( जो ) गुणनो करै ( सो लिखते हैं ) ॥ ॥ ❀ ॥

१ ॥ श्री महावीर स्वामी सर्व ज्ञाय नमः ॥

२ ॥ श्री महावीर स्वामी पारंगताय नमः ॥

३ ॥ श्री गौतम स्वामी सर्वज्ञाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ इस एक २ पदको २००० गुणनो करै । उपवास करै । रा  
त्री जागण करै । निर्वाणके समय अष्ट द्रव्यसें थालजरके मंदर जावै ।  
रोशनी करै । निर्वाण कल्याणककी आरती करै । दीपमाला चैत्यवंदन करके  
स्तवन बोले । निर्वाण कल्याणक अधिकार सुणें । गौतम रास सुणें । ( इत्या  
दिक ) उदार चित्तसें सर्व ठिकाणें दीवाली पर्वका उठव करना चाहिये ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ निर्वाण आरती लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जय जगदीशर अति अलवेशर । वीर प्रचूराया ॥ पतित उधारण  
भव प्रयत्नजण । बोधबीज दाया ॥ ( जय २ जिनराया । आरति करुं मन  
जाया । होय कंचनकाया ) ॥ १ ( ज० ) ॥ कृत्रीकुंभ नगर अति सुंदर ।  
सिद्धार्थ राया । सुदि आसाढ षष्ठके दिवशै । त्रिशला कुक्षुआया ( ज० )  
॥ १ ॥ चवद सुपन देखी अति उत्तम । निज प्रीतम जापे । अर्थ प्रेद  
सहु निश्चै करनें । जिन गुण रस चाखे ( ज० ) ॥ २ ॥ चैत्र सुदी तेरश  
दिन उत्तम । सहु ग्रह उच्चपावै । जन्म लेई दिश कुमरी सहुना । आशन  
कंपावै ( ज० ) ३ ॥ उठव कर जावै निज थानक । इंद्र सहु आवै ।  
मेरु शिखरपर स्नात्र महोठव । करि आनंद पावै ( ज० ) ॥ ४ ॥ वसु  
धारा वृष्टीकर सहु सुर । निज थानक जावै । सिद्धार्थ करे जन्म महो  
ठव । अचरज सहु पावै ( ज० ) ॥ ५ ॥ कंचन वरण नेज अति दीपत ।  
हरिजंघन ठाजै । कुज इस्वागु अंग सहु लक्षण । शशिज्युं मुख राजे  
( ज० ) ॥ ६ ॥ दान संवत्तर दे प्रभु लेवै । चारित्र सुख दाई । मार्गमीख  
दशमी वद पहे । उत्तम तरु पाई ( ज० ) ॥ ७ ॥ बार वरश उग्रस्थ प  
णामें । हुकर तप पावै । माधव सुद दशमी के दिनकुं । दोख सहु टालै

( ज० ) ॥ ८ ॥ केवल पाय सर्वासुर संगै । पावा पुर आवै । गुणगण  
लंकृत देशना देकै । संघ सहु पावै ॥ ९ ॥ नृमंजल विच बहुतजीवकुं  
अविचल सुख देवै । नर सुर इंद्र सबीमिल पूजे । जगमें जश लेवै ( ज० )  
॥ १० ॥ चरम चौमाशि पावापुरि करकै । अंत समय जाणी । हस्तिपा  
लकी शुक्ल शालमें । सोलै पहर बाणी ( ज० ) ॥ ११ ॥ पर्यकासन ठठ  
तपस्या । इक चित गुणधामी । कार्तिक कृष्ण अमावसके दिन । शिवक  
मला पामी ( ज० ) ॥ १२ ॥ इंद्रादिक निर्वाण महोत्तव । करि प्रभु गु  
ण गावै । देवमुखै गणधर गुरु गोतम । सुणनै पठतावै ( ज० ) ॥ १३ ॥  
वीतराग गुण मनमें धारी । अनित्यजाव जावै । केवल ग्यान प्रगट हुय  
ततखिण । सुर नर गुण गावै ( ज० ) ॥ १४ ॥ पंच कल्याणक शाशन  
पतिकी । आरति ज्यो गावै । शिवसुख लक्ष्मी प्रधान मिलै जव । मोहन  
गुण पावै ( ज० ) ॥ १५ ॥ इति पंच कल्याणक आरती संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री दीपमाला चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जय जय श्री जिन वर्धमान । सोवन समवान । सिंह लंछन  
सिद्धार्थराय । त्रिशला सुत ज्ञान ॥ १ ॥ वरस बहुत्तर आऊदेह । करसन  
प्रमाण ॥ ऋषजादिक सम जासवंस । इक्ष्वाग सम जाण ॥ २ ॥ ठठनत्त  
संजम जियोए । कुंभ्याम पुर ठाम । गणधर इग्यारे सहित । आपो शिव पुर  
स्वाम ॥ ३ ॥ चवद सहस मुनि स्वामि सीस । वत्तीस सहस । श्रमणी श्रावक  
एक लाख । गुणसठ सहस ॥ ४ ॥ तीन लाख श्राविका । वत्ती सहस अठार ।  
सुर मातंग सिद्धाईका । नित सानिधकार ॥ ५ ॥ एकार्का पावा पुरीए ।  
ठठनत्त मुजाण । प्रभु पोहता अमृत पदे । करो संघ कल्याण ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ पीठे जंकिचिनामतित्वं० । नमोत्पुणं० । कहौ । दीपमाला निर्वा  
णक कल्याणकको स्तवन बोलै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ निर्वाण कल्याणक स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मारग देशक मोह नोरै । केवल ग्यान निधान । जावदया मागर  
प्रभूरे । पर उपगारी प्रधानोरै ॥ १ ॥ ( वीर प्रभु सिद्ध थया ) संघ स  
कल आधारोरै । हिव इण नरतमां । कुण करस्ये उपगारोरै ॥ २ ॥ ( वीर

प्रभु सिद्ध थया ) । नाथ विह्वणी सैन्य जूरे । वीर विह्वणोरे संघ । साथे  
 कुण आधार थीरे । परमानंद अन्नंगोरे ॥ ३ ॥ ( वीर० ) मात विह्वणा  
 वालज्युरे । अरहो परो अथमाय । वीर विह्वणा जीवमारे । आकुल व्याकुल  
 थायैरे ॥ ४ ॥ ( वी० ) ॥ शंसय ठेदक वीरनोरे । विरहते केम खमाय ।  
 जे दीठें सुख ऊपजैरे । ते विण किम रहिवायोरे ॥ ५ ॥ ( वी० ) ॥ निर्यो  
 मक जव समुद्रनोरे । जव अटवी सत्यवाह । ते परमेश्वर विन मिल्यांरे ।  
 किम बाधे उठाहोरे ॥ ६ ॥ ( वी० ) ॥ वीर थकां पिण श्रुततणोरे । हुंतो  
 परम आधार । हिवणा श्रुत आधारठेरे । एह जिन आगम सारोरे ॥ ७ ॥  
 ( वी० ) ॥ इण काले सब जीवनैरे । आगमथी आनंद । ध्यावो सेवो जवि  
 जनारे । जिन पस्मिमा सुख कंदोरे ॥ ८ ॥ ( वी० ) ॥ गणधर आचारज  
 सुनीरे । सहुनै इणपरि सिद्ध । जव जव आगम संगथीरे । देवचंद्र पद  
 लीधोरे ॥ ९ ॥ ( वी० ) ॥ इति निर्व्वर्ण कल्याणक स्तवनं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ग्यान पंचमी पर्व्वधिकारः २ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूशरो कार्तिक महिनेमें कार्तिक सुद पंचमी । ( सो ) ग्या  
 नपंचमी नामसँ पर्व्व प्रशिद्ध है । ( इस दिन ) सर्व्व जव्य जीवांको ज्ञानको  
 विशेष आराधन करना चाहिये । ज्ञानके समान संसारमें उत्तम पदार्थ  
 कोईबी नहीं । सर्व्व तत्वमें ज्ञान समान कोई तत्व नहीं । मोक्ष मार्ग  
 साधनको ज्ञान समान कोई उपाय नहीं । इस ज्ञान पंचमीको आराधनसँ  
 अनेक दुष्ट कर्म विच्छेद होय । गुंगापणो, मूर्ख पणो, वक्रपणो, ( और )  
 कोढादिकके रोग सर्व्व दूर होय । ( अनुक्रमें ) ज्ञानावरणी कर्मके दूय  
 होनसँ पांचों ज्ञान प्रगट होय ( जैसे ) वरदत्त गुणमंजरीके रोगादिकके  
 सर्व्व उपद्रव दूर होके । मनोरथ पूर्णजए । उसी माफक ( जो ) ज्ञानपंच  
 मीका आराधन करेगा । उसीका मनोरथ पूर्ण होगा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ग्यान पंचमी देव वंदन विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम पवित्र स्थानके । चौकी पट्टे ऊपर ग्यानको स्थापन करे ।  
 तिस आगे पांच माथिया करे । फल, फूल, प्रमुख चढ़ावे । पांच वर्नाको  
 दीपक चढ़ावे । अगर कपूरको धूप खेवे । पूजा पढके । वाम द्वेय, कपूर

सं: ग्यान पूजा करै । यथा शक्ती । रोकनाणो चढावै । ( तथा ) पूठा, विदां गणादि चढावै । ( ज्ञानपूजा लिखते हैं ) ॥ ❀ ॥ नमंति सामंत मही वनाहं । देवाय पूयं सुविहेय पुर्वि । जत्तीय चित्तं मणिदामएहिं । मंदार पुष्पं पसवेहि नाणं ॥ १ ॥ तहेव सद्दा मणि मुत्तिएहिं । सुगंधपुष्पेहि वरंसि एहिं । पूयंति वंदंति नमंति नाणं । नाणस्सजाजाय जवक्खयाय ॥ २ ॥ यह पूजा पढके, ज्ञान पूजा करै । ( इसी तरे ) द्रव्य पूजा करके ( पीठे ) जावपूजा करै ( सो लिखते हैं ) । १ खमासमण देके । इरिया वही पम्किमें । लो गस्स कहै । ( बैठके ) मुहपत्ती पम्जिहै । अणुजाणह । मेमी उग्गहं ( इत्यादिक ) दो वांदणा देवै । पीठे पांच खमा समण देके । ज्ञानको नमस्कार कहै ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ज्ञानको नमस्कार लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सकल वस्तु प्रतिज्ञाश जानु निरमलसुख कारण । सम्यग्दर्शन पुष्टहेतु जव जलनिधि तारण । संयम तप आनंद कंद अन्नाण निवारण मार विकार प्रचार ताप तापित जिन ठारण ॥ १ ॥ स्याद्वाद परिणाम धर्मपरणाति पम्बोहण । साहु साहुणी संव सर्व आराधन सोहण । मोह तिमर विध्वंस सूर मिथ्यात्व पणासण । आतमशक्ति अनंत शुद्ध प्रनुता परगासण ॥ २ ॥ मति श्रुति अवधि विसुद्ध नाण मणपङ्कज केवल । जेद पचास द्वायोपशमिक एक द्वायिक निरमल । दोय परोक्ष प्रथम तिहां दुगपरतह दीप्ततः । सकल प्रतह प्रकाश जास ध्रुव केवल अपरामित ॥ ३ ॥ धर्म सकलनो मूल शुद्ध त्रिपदी जिन जाशे । बाहिर अंग प्रधान खंध गणधर सुप्रकाशे । शाखा श्रीनिर्युक्ति ज्ञाप्य पम्बिशाखा दीपे । चूरण टीका पत्र पुष्प संशय मज जीपे ॥ ४ ॥ पंचांगी सार बोध कह्यो जिन पंचम अंगे । नंदी अनुयोग द्वार शाख मानो मन रंगे । वीरपरंपर जीत अनुजव उपगारी । अभ्यासो आगम अगम निरूप्य सुखकारी ॥ ५ ॥ मोह पंकहर नीरसम सिद्धांत अवाधे । देव चंद्र आणासहित नय जंग अगाधे । ए श्रुतज्ञान सोदामणो । सकल मोक्ष सुखकंद । जगतै सेवो जविकजन । यामो परमानंद ॥ ६ ॥ ❀ ॥ इति ज्ञानस्तुति ॥ ❀ ॥ ( इत्यादि ) नमस्कार क



हिके । एमोत्थुणं० । जावंति चेइयाइं० । जावंति केवि साहुं० । नमोर्हत्तिं०  
 ( कहके ) प्रणसुं श्रीगुरु पाय० ( इत्यादि ) ज्ञानके स्तवन बोलै । जय  
 वीयराय० कहै । वंदण० । अनत्थू० कहके । एक नवकारको कानुसग  
 करै । थुई कहै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थुई लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ देविंद वंदिय पएहि परुवियाणि । नाणाणि केवल मणोहि म  
 ई सुयाणि । पंचावि पंचम गई सिय पंचमीए । पूया तवो गुणरयाण जि  
 याणदिंतु ॥ १ ॥ ❀ ॥ यह स्तुति कहके । ( ज्ञान आराधवा निमित्तं करे  
 मि कानुसगं ) तस्सुत्तरी । अन्नत्थू० कहके । १ लोगस्सको कानुसग  
 करे ( पारके ) बोधा गाधं० ( इत्यादि गाथा पढके ) पीढे आज्ञाणि वो  
 हियनाणं । सुयनाणं चेव उहिनाणंच । तह मणपज्जव नाणं । केवलनाणं  
 च पंचमयं ॥ १ ॥ यह गाथा कहके । इहामि खमा० । श्रीमति ज्ञानाय  
 नमः॥ १ ॥ श्रीश्रुतिज्ञानाय नमः ॥ २ ॥ श्रीअवधिज्ञानाय नमः ॥ ३ ॥ श्री  
 मनः पर्यव ज्ञानाय नमः ॥ ४ ॥ समस्त लोकालोक आस्कर श्री केवल ज्ञा  
 नाय नमः ॥ ५ ॥ ( इसी तरै ) पांच नमस्कार करै । थिरता होय तो ( ५१ )  
 ज्ञानके गुणांको नमस्कार करै ( सो ) पूर्वे नवपदजीके गुणनेमें लिख्या है ।  
 उमी माफक करै । पीढे ( उँ क्षी एमो नाणस्स ) इस पदको २००० गु  
 णनो करै । कम थिरता होय ( तो ) ५ जाप करै । ज्ञान पंचमीका व्या  
 ख्यान सुणें । थिरता होय ( तो ) इग्यारै अंगकी सिझायों पढे ( वा ) सुणें  
 ( सो ) इग्यारै अंगकी सिझायों लिखतेहैं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ प्रथम आचारांग सिझाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( ढाल हठीलानी ) पहिलो अंग सुहामणोरे । अनुपम आ  
 चारांगरे । ( सुगुण नर ) वीर जिनंदे आपियोरे लाल । उववाई जाम उवं  
 गरै ( सु० ) ॥ १ ॥ बलिहारीए अंगनीरे लाल । हुं जानं वारं वारै ( सु० )  
 विनये गोचरी आदोरेरे लाल । जिहां साधु नणो आचारै ( सु० वलि० )  
 ॥ २ ॥ सुयखंध दोयडे जेहनारे । प्रवर अध्ययन पचवीशरे ( सु० ) उद्देशा  
 दिक् जाणियेरे लाल । पिच्याशी सुजर्गासरे ( सु० व० ) ॥ ३ ॥ हेतु जुग

निकर सोजतारे । पद अद्वार हजारै ( सु० ) । अद्वार पदनै ठेहमैरे लाल ।  
संख्याता श्रीकारै ( सु० व० ) ॥ ४ ॥ गमा अनंता जेहमारै । वलि अ  
नन्त पर्यायैरे ( सु० ) । अस परित्ततोठे इहांरे लाल । थावर अनन्त कहा  
यैरे ( सु० व० ) ॥ ५ ॥ निवद निकाचित सासतारे । जिनप्रणीतए जावरे  
( सु० ) सुणतां आतम ऊजमैरे लाल । प्रगटे सहिज स्वजावरे ( सु० व० )  
॥ ६ ॥ सुगुण श्रावक वारू श्राविकारे । अंगै धराय उदासरे ( सु० ) विधि  
पर्वक तुमे मांजलोरे लाल । गीतारथ गुरु पासरे ( सु० व० ) ॥ ७ ॥ ए सि  
धांत महिमानिलोरे । ऊतारै जव पारै ( सु० ) विनयचंद्र कहै माहैरे ला  
ल । ए हीज अंग आधारै ( सु० वलि० ) ॥ ८ ॥ इति आचारांग सिझाय ॥ १

॥ ❀ ॥ अथ सुयगंगांग सूत्र सिझाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( टाज रसीयानी ) । बीजोरे अंग तुमे मांजलो । मनोहर श्रीसु  
गंगांग ( मोरा साजन ) । त्रिणसै तेशठ पाखंडी तणो । मत खंड्यो धर रंग  
( मो० ) ॥ १ ॥ ( मीठीरे लागै वाणी जिन तणी ) जागै जेहथीरे ग्यांन ( मो  
रा सा० ) । ए वाणी मन जाणी माहैरे । मानुं सुवारै समान ( मोरा० ) ( मी  
ठी० ) ॥ २ ॥ रायपसेणी उवांगठे जेहनो । एतो सुत्र गंजीर मो० । बहुश्रु  
त अरथ जाणै सह । हीर नीर धनुर तीर ( मो० मी० ) ॥ ३ ॥ एहनारे  
सुयखंध दोयठे । वलि अध्ययन तेवीश ( मो० ) ॥ उद्देशा समुद्देशा जिहां  
जला । संख्यायैरे तेवीश ( मो० मीठी० ) ॥ ४ ॥ नय निक्षेप प्रमाण जग्या ।  
पद उत्तीश हजार ( मो० ) । संख्याता अद्वार पद मांहे । कुण लहे तेहनोरे  
पार ( मो० मीठी० ) ॥ ५ ॥ गमा अनंता पर्याय वली । जेद अनन्त जिण  
मांहे ( मो० ) । गुण अनन्त अस परित्त कहा । थावर अनन्त जेमांहि  
( मो० मी० ) ॥ ६ ॥ निवद निकाचित जेमा सयकता । जिनपन्नतारे जाव  
( मो० ) । जार्पारे सुंदर एह प्ररूपणा । चरण करण नोरे जाव ( मो० मीठी )  
॥ ७ ॥ करीयै जगत जगत ए सुत्रनी । निहश्चे लहीयैरे मुक्ति ( मो० ) । विनयचं  
द्र कहै प्रगटे एह थी । आतम गुणनोरे शक्ति ( मो० मीठी० ) ॥ ८ ॥ ❀ ॥  
इति श्रीसुयगंगांग सिझायः ॥ २ ॥

॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ( ३ ) गणान्ग सूत्र सिंहाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दाल ) आठ टकै कंकणो लीयोरी ( ए चाल ) वीजो अंग  
जलो कह्योरे । ( जिनजी ) नामें श्रीगणान्ग । ( मोरो मन मगन थयो ) ।  
हांरे देखी २ जाव । हांरे जीवाजीव स्वजाव ( मो० ) सबल जगत करी  
गजतोरे । जि० । जीवाजिगम नृपांग ( मो० ) ॥ १ ॥ एह अंग सुज मन व  
स्योरे । जि० ॥ जिम कोकिल दलअंब ( मो० ) गुहिर जाव कर जाग  
तोरे ॥ जि० ॥ आजतो एह आलंब ( मो० ) ॥ २ ॥ कूट शेल सिखरी सिलारे ।  
जि० ॥ काननमें बलिकुंरु ( मो० ) गहर आगर द्रह नदीरे ॥ जि० ॥ जेहमें  
अठेरे उदंरु ( मो० ) ॥ ३ ॥ दश ठाणा अतिदीपतारे ॥ जि० ॥ गुण पर्याय प्र  
योग ॥ मो० ॥ परित्त जेहनी वाचनारे ॥ जि० ॥ संख्याता अनु योग  
( मो० ) ॥ ४ ॥ वेष्ट शिलोक निजुत्तसुरे ॥ जि० ॥ संगहणी पमि चि  
त्त ( मो० ) ए सहु संख्याता जिहांरे ॥ जि० ॥ सुणतां नलसे चित्त  
( मो० ) ॥ ५ ॥ सुयखंध इक राजतोरे । जि० । दश अध्ययन नुदर ( मो० )  
उद्देशादिक वीशठेरे । ( जि० ) पद बहुत्तर हजार ( मो० ) ॥ ६ ॥ रागी  
जिन शासन तणोरे ॥ जि० ॥ सुणें सिधांत वषाण ( मो० ) । विनय चंद्र  
कहै ते हुवेरे ॥ जि० ॥ परमारथरा जाण ( मो० ) ॥ ७ ॥ ॥ ❀ ॥  
इति श्रीगणान्ग सूत्र सिंहायः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ( ४ ) समवायांग सूत्र सिंहाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दाल ) थारा महिलां ऊपर मेह ज्वोके वीजली ( ए चाल )  
॥ ❀ ॥ चौथो समवायांग सुणो श्रोता गुणी हो लाल ॥ सुणो० ॥ पन्नवणा  
नृपांग करी सोजावणी हो लाल ॥ करी सो० ॥ अरध मागधी जापा साखा  
सुरतणी हो लाल ॥ साखासु० ॥ समकित जाव कुसुम परमल व्यापी वणी  
हो लाल ॥ पर० ॥ १ ॥ जीव अजीवनें जीवाजीव समास थी हो लाल ॥  
जीव० ॥ जहीयै एहथी जाव विरोध कांड नथी हो लाल ॥ वि० ॥ जांगा  
तीन स्वसमयादिकना जाणीयै हो लाल ॥ यादि० ॥ लोक अलोकनें लो  
कालोक वखाणीयै हो० ॥ लो० ॥ २ ॥ एक थकी ठे सत समवाय प्ररूपणा हो ला  
ल ॥ सम० ॥ कोना कोरु प्रमाणक जीव निरूपणा हो० ॥ जी० ॥ बारस

विह गणि पिटक तणी संख्या कही हो० ॥ त० ॥ सासता अरथ अनंतकि  
 ठै एहना सही होलाज ॥ ठै० ॥ ३ ॥ सुय खंध अध्ययन उद्देशादिके ज  
 ला हो लाज ॥ उ० ॥ संख्यायें एक एक प्रत्येकै गुणनिजा हो० ॥ प्रत्ये० ॥  
 पद एक लाख चौमाज सहस ते उत्तरा हो० ॥ स० ॥ पदनें अग्र उद्ग्र सं  
 द्वाता अद्वरा हो० ॥ सं० ॥ ४ ॥ आप्य चूर्णि निर्युक्ति करी सोहै सदा हो०  
 करी० ॥ सुणतां जेद गंजोर त्रिपत न होय कदा हो० ॥ त्रिप० ॥ जेहनमावै  
 अंगकि अन्तरगतिहसी हो० ॥ अन्त० ॥ जलवरसं ते जोर कुणन हुवै  
 खुसी हो० ॥ कुण० ॥ ५ ॥ जाग्यो धरम सनेह जिणंदसुं माहरो हो० ।  
 जिणं० ॥ तजिया शास्त्र मिथ्यात सुत्र जाण्यो खरो हो० ॥ सु० ॥ जिम मा  
 लती लहीभृंग करीनें नविरहै हो० ॥ करी० ॥ ईश्वर शिर सुरगंग तजी परि  
 नवि वहै हो० ॥ तजी० ॥ ६ ॥ एप्रवचन निग्रंथ तणी जुगतै बनो हो० ॥  
 तणी० ॥ साकर सेजनी द्राष थकी पिण मीठनो हो० ॥ थकी० ॥ सुं कही  
 ये बहुवात विनयचंद्र इम कहै हो० ॥ वि० ॥ एहना सुणनें जाव श्रोता  
 अति गहगहै हो० ॥ श्रोता० ॥ ७ ॥ इति श्रीसमवायांग सूत्रसिझाय सं० ॥ ४॥

॥ ❀ ॥ अथ ( ५ ) जगवती सूत्र सिझाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( ढाल पंथीमानी ) । पंचम अंगे जगवती जाणीयेरे । जिहां जि  
 नवरना वचन अथाहरे । हिमवंत परवत सेती नीकल्यारे । मानुं परतिख  
 गंगप्रवाहरे ( पं० ) ॥ १ ॥ सूरपन्नती नामें परगमीरे । जेहनी ठेउदाम  
 ज्वांगरे । सूत्र तणी रचना दर्शया जिसीरे । मांहिला अरथ ते सजल तरं  
 गरे ( पं० ) ॥ २ ॥ इहां तो सुयखंध एक अति जजोरे । एक मो एक  
 अध्ययन उदारै । दश हज्जार उद्देशा जेहनारे । जिहां किण प्रण उत्तीश  
 हज्जारै ( पं० ) ॥ ३ ॥ पद तो दोयलाख अरथे जर्यारे । ऊपरि सहस  
 अठयासी जाणैरे । लोकालोक स्वरूपनी वर्णनारे । विवाह पन्नती अधिक  
 प्रमाणैरे ( पं० ) ॥ ४ ॥ करियै पूजा अनें परजावनारै । धरियै मदगुरु  
 ऊपररागरे । सुणियै सूत्र जगवती रागसुरै । तो होय जव मागरनो त्यागरे  
 ( पं० ) ॥ ५ ॥ गोतम नामें द्रव्य चढाइयैरे । सम्यक् ज्ञान उदय होय जेमेरे । कीजै  
 माधु तथा साहमी नाणीरे । जगति युगति मन आणो प्रेमरे ( पं० ) ॥ ६ ॥

इण विधिसुं एह सूत्र आराधतां रे । इण अब सीजे वंजित काजरे । परअव  
विनय चंद्र कहै तेलहैरे । मोहन मुगति पुरीनो राजरे ( पंच० ) ॥ ७ ॥  
इति श्रीजगवती सूत्र सिंहाय सं० ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( ६ ) ज्ञातासूत्र सिंहाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( ढाल ) कितलख लाग़ा राजाजीरै मालियै । ( एदेशी ) ।  
ठो अंग ते ज्ञाता सूत्र वखाणियै जी । जेहना ठै अरथ अधिक उदंरु हो  
( ह्मांरा सुणजो धरिनेह सिंघांतनी वातनीजी ) । श्रवणे सुणतां गाढो रस ऊ  
पजे जी । मधुर ता तार्जित जिम मधु खंरु हो ( ह्मां० ) ॥ १ ॥ जंबुदीव  
पन्नत्ती उपांगठै जेहनो जी । इण मांहे जिन पूजानी विधि जोरहो ( ह्मां० )  
अर्चिक सुणि परम शांतिरस अनुजवै जी । चर्चिक सुणि करै सम सोर  
हो ( ह्मां० ) ॥ २ ॥ नगर उद्यान चैत्य वनखंरु सोहामणो जी । समवस  
रण राजाना मातनें तातहो ( ह्मां० ) धरमाचारज धर्म कथा तिहां दा  
खवी जी । इहलोक परलोक रुधि विशेष सुहात हो ( ह्मां० ) ॥ ३ ॥ जो  
ग परित्याग प्रवज्या पर्षदाजी । सूत्र परिग्रह वारू तप उपधान हो ( ह्मां० )  
संलेहण पचखाण पादपोष गमनताजी । स्वर्ग गमन शुभकुल उत्पत्ति  
हो ( ह्मां० ) ॥ ४ ॥ बोधिलाज वजितंतते अंतकृया कहीजी । धर्मकथाना  
दोयठै सुअखंध हो ( ह्मां० ) । पहिलाना उगणीश अध्ययन ते आजठै जी ।  
बीजाना दशवर्ग महा अनुबंध हो ( ह्मां० ) ॥ ५ ॥ जंठ कोमि तिहां स  
चल कथानक जाषिया जी । जाप्यावलि उगणीस उद्देश हो ( ह्मां० ) ।  
संख्याता हज़ार ज्ञाता पद एहना जी । एह थकी जायै कुमति कजेश हो  
( ह्मां० ) ॥ ६ ॥ विनय करै जे गुरुनो बहु परै जी । तेहनें श्रुत सुणतां  
बहु फल होय हो ( ह्मां० ) । ते रसिया मन बसिया विनय चंद्रनें जी ।  
सो मांहे मिले जोयां एक के दोय हो ( ह्मां० ) ॥ ७ ॥ ❀ ॥

इति श्री ज्ञाता धर्म कथाङ्ग सिंहायः ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ( ७ ) उपाशकदशा सूत्रसिंहाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( ढाल विनियानी ) । हिवै मातमो अंग ते सांजलो । उपाशक  
दशानामें चंगरे । अमणो पाशकनी वर्णना । जसु चंदपन्नत्ती उपांगरे ॥ १ ॥

मन जागो मोरो सुत्रयी । एतो जव वैराग तरंगरे । रसराता ज्ञाता गुण  
लहे । परमारथ सुविहित संगरे ( म० ) ॥ २ ॥ इण अंगे सुयखंध एकठे  
अध्ययन नुदेश विचाररे । दशसंख्यायें दाखव्या । पद पिणसंख्यात हजाररे  
( म० ) ॥ ३ ॥ आणंदादिक आवक तणो । सुणतां अधिकार रसाज रे ।  
रस जागो जागो मोहनी । श्रोता जननें तनकाजरे ( म० ) ॥ ४ ॥ श्रोता  
आगलतो वाचनां । गीतारथ पामें रीजरे । जे अर्ध दग्ध समजे नही । ते  
हसुं तो करवी धीज रे । ( म० ) ॥ ५ ॥ दश आवकतो इहां जापिया ।  
पण सूत्र आण्यो नहीं कोयरे । ते माटे शुद्ध आवक जणो । एक अरथ  
नी धारणा होय रे ( म० ) ॥ ६ ॥ माचो होय ते प्ररूपीयें । निस्संकपणें  
सुजर्गासरे । कवि विनय चंद्र कहै सुंथयो । जो कुमती करस्ये रीसरे  
( म० ) ॥ ७ ॥ इति श्रीउपाशक दशांग सिझायः ॥ ७ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( ८ ) अंतगरुदशांग सिझाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( ठाल ) वीर वखाणी राणी चेलणाजी । इस चालमें ॥ ❀ ॥  
आठमो अंग अंतगरु दशाजी । सुणी करो कान पवित्र । अंतगरु केवली  
जे धया जी । तेहनारे इहां आठ चरित्र ॥ १ ॥ कर्म कठिन दल  
चूरता जी । पूरता जगतनी आस । जिनवर देव इहां जासताजी । मा  
सता अर्थ सुविलास ( आ० ) ॥ २ ॥ सकल निहोष नय अंग यीजी । अंग  
ना जाव अंग । सहज सुखरंगनी तलिकार्जी । कल्पिका जासु उवांग  
( आ० ) ॥ ३ ॥ एक सुय खंध इण अंगनोजी । वर्ग ते आठ अनिराम  
आठ नुदेशा ते वर्जाजी । संख्याता महस पद ठाम ॥ ( आ० ) ॥ ४ ॥ आ  
ठमा अंगना पाठमें जी । एहवो अठेरे मीठाम । मरम अनुभव रस उपजे  
जी । संपजे पुण्यनीगम ( आ० ) ॥ ५ ॥ विषय जंपट नर जे हुवे जी ।  
निरविषयी सुण्या थाय । जिम महाविष विषधर नणो जी । नागमंत्रे सुण्या  
जाय ( आ० ) ॥ ६ ॥ अमृत वचन सुख वगमती जी । सरस्वती करोरे पमा  
य । जिम विनय चंद्र इण सूत्रनाजी । तुरतजहे अजिमाय ( आ० ) ॥ ७ ॥  
इति श्रीअंतगरु दशांग सिझायः ॥ ८ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥



अहम्मदावाद मजारकि । जामकरी ए अंगनी ( स० ) वरल्या जय जय कार  
कि ॥ ४ ॥ संवत सतर पचावनें ( स० ) । वरषा ऋतु नञ माशकि । दशमी  
दिन शुदि पद्मां ( सु० ) पूरण थई मन आसकि ॥ ५ ॥ श्रीजिन धर्मसूरी  
पाटवी ( स० ) । श्रीजिनचंद्र सूरीसकि । खरतर गठना राजीया ( स० ) त  
सु राजे सुजगीसकि ॥ ६ ॥ पाठक हरख निधानजी । सहे० । ज्ञान ति  
लक सुपसायकि । विनय चंद्र कहै में करी ( स० ) । अंग इग्यार सिझा  
यकि । ( सहे० ) ॥ ७ ॥ इति श्रीइग्यारै अंग सिझायः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ज्ञानको स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग ठुमरी ॥ ❀ ॥ मरैरे मनमांनी ज्ञानजरी । ( मे० ) परनुप  
गारी सुगुरु बताई । पांचुं जेदे करी । मति श्रुति अवाधि अवर मन पर्यव ।  
केवल बोधवरी । ( मे० ) ॥ १ ॥ तपकर अग्नि मूस दंशनकी । करमें धनल  
करी । सक्रिय संयम करतासुं मिल । सिद्ध रसानधरी । ( मे० ) ॥ २ ॥  
पूरण पुन्य मिली मोय सजनी । सकला नन्ददरी । बालकहै अब विसरत  
नाहीं । पल ङिन एकवरी । ( मे० ) ॥ ३ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः आगम स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रुत अतिहजलो । संयसकल आधार नमुं त्रिनुवन तिलो । ( आं  
कणी ) अरथै श्री वीर जिणंद आख्यो । सूत्रें श्रीगणधर गुरु ज्ञाप्यो ।  
तदुजय थी जे मुनिवर राख्यो ॥ १ ॥ ( श्रु० ) । जेह थी जगजाव सकल  
जाणें । नय एकान्त मुनि जन नविताणें । निश्चइ व्यवहार ते मन आणें ॥ २  
( श्रु० ) जिहां अङ्ग उपाङ्गठे अतिरूडा । षष्ठेद पइन्ना नहिं कृमा । मृ  
लसुत्र नन्दी अनुयोग चूमा ॥ ३ ॥ ( श्रु० ) । जिहां निर्युगती सुत्रे संगी  
बलि ज्ञाप्य चूरणि टीका चङ्गी । पंचम अंगे कही पंचाङ्गी ॥ ४ ॥ ( श्रु० )  
जिहां साधु आवक मारग लहियै । संवेग पखी बलि मग्दहियै । एत्रिण  
विन जवमारग कहियै ॥ ५ ॥ ( श्रु० ) । जेहनी अनुपेहा नित करियै ।  
उपचारै दृषण परिहरियै । आराध्यां निज अनुभव वरियै ॥ ६ ॥ ( श्रु० )  
जिन आगमना जे गुणगावै । शुद्धाशय जे मनमें ध्यावै । ते कृमा क  
ल्याण सदा पावै ॥ ७ ॥ ( श्रु० ) ॥ इति आगम स्त० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ कार्तिक चौमाशाधिकार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कार्तिक महिनेमें मिति कार्तिक सुद १४ कैदिन । सत्र मन्दर दर्शन करनेको जाना । व्याख्यान सुणना । सामायकादिक धर्मकृत्य करना ( इत्यादिक ) सर्व अधिकार पूर्व, आसाढ चौमाशे तुल्य जानके कार्तिक चौमाशेका सेवन करे ॥ इति कार्तिक चौमाशा सेवनविधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ कार्तिक पूर्णमाशीका अधिकार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम कार्तिक वद १ सें सेहंजरास सुणें निवी ( वा ) एका शणा, व्याशणादिक तप करे । दोनुं टंक पक्कमणो करे । देव वंदनादिक करे । ( ॐ ह्रीं श्री सिद्धदेव अनन्तसिधाय नमः ) इसीको एक जाप सदा करे । शक्ति होय ( तो ) सिद्ध गिरी यात्रा करनेको जावे । काती पूनमके दिन विस्तार संयुक्त सिद्धगिरीकी पूजा करावे । अठाही महोत्सव करे । विस्तारसे देववंदनादिक विधि करे ( २१ ) बेर सेहंजरास सुणें । ॐ ह्रीं श्री सिद्धदेव अनन्त सिधाय नमः । इसी पदसे ( २१ ) जेती देवे । ( कदास ) सिद्ध गिरी जाणें की सक्ती न होय ( तो ) जहां सिद्ध गिरीका पटमंड्या होय । उहां महोत्सव संयुक्त दर्शन करनेको जावे । पूजादिक सब विधि करे । ठठ भक्त करके ( वा ) चतुर्थ भक्त करके । इस पर्व को आराधन करे । गुरुभक्ति करे । साहमी वठल करे । ( इत्यादिक ) विधिसंयुक्त सिद्धगिरीकी सेवना करनेमें । सर्व अशुभ कर्म विध्वंस होके मंगलमाला प्रवर्त्तन होय ॥ ❀ ॥ ( इस दिन ) श्री द्रावरु वारखिद्ध यमुख दशकोमि साधु सिद्धिस्थानक प्राप्त जए ( जिससे ) इस दिन ( जो ) धर्मकृत्य किया हुआ, निस्संदेह दशकोमि गुणा फले । ( इस ) भरतक्षेत्रमें सिद्धगिरी के समान कोई उत्तम तीर्थ नहिं । ( में पिण मनु ) जगणीसे तीशमें । चैत्रीपूनमको यात्रा करता हुवा । सब जगवंतके विबोका दरशण करके गिणती किया ( सो ) बारै हजार । तीनसे । अठावन १२३५० विंव हुआ । और बहुत ठिकाणें चरणोंकी स्थापना हे । अनन्ता साधु अणमण लेके परम पदको प्राप्त जए हैं ( इसीसे ) जो आसन जव्ही जीव होंगे ( सो ) सुवन्नावसे

इस तीर्थकों सेवन करेंगे । और जो सेवन करते हैं । उसी पुरुषोंको नमस्कार है । उसी पुरुषोंके जीवतव्य धन्य है ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सिद्धगिरीके स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( देशी गरवानी ) । ते दिन क्यारे आवसी हे । ( जोरे वहिनी ) । जासुं सिद्धाचलनी जात ( मोरी सहीयां हे ) । पाजै चढतां प्रेम सुंहे । ( जोरे वहिनी ) । गाइयै गुण अखियात । ( मोरी सहीयां हे । तेदि० ) ॥ १ ॥ अदनुत जुंचो देहरो हे । ( जोरे वहिनी ) मूल नायक आदिनाथ । ( मोरी सहीयां हे ) । जोली जगत जली परै हे । ( जोरे० ) निरख्यां होय सनाथ । ( मोरी० ते० ) ॥ २ ॥ नाही निरमल नीरसुं हे । ( जोरे० ) पहिर खीरोदक चीर । ( मोरी० ) केसर जरीय कचोलनी हे । ( जोरे० ) पूजसुं सुगुण सुधीर । ( मोरी० ते० ) ॥ ३ ॥ रूमी रायण ढांहीहे । ( जोरे० ) आदि जिणंद उदार । ( मोरी० ) तिहां जगनाथ समो सरया हे । ( जोरे० ) पूरव निनाणुं वार । ( मोरी० ते० ) ॥ ४ ॥ इण गिर वरियै ऊपरा हे । ( जोरे० ) सीधा साधु अनंत । ( मोरी० ) चौमाशे रखा दोय जिनवरा हे । ( जोरे० ) आजि त जिणेश्वर शांति । ( मोरी० ते० ) ॥ ५ ॥ चेलणा तलाई सिद्ध सिद्धा हे । ( जोरे० ) अदनुत उलका जोल । ( मोरी० ) सिद्धवरु सेहुंजै नदी वहे । ( जोरे० ) करियै नित रंगरोल । ( मोरी० ते० ) ॥ ६ ॥ इण मूंगर दीठां थकां हे । ( जोरे० ) ऊपजे परमानंद । ( मोरी० ) गहिरी गिरवर ढांही हे । ( जोरे० ) चौहे नित जिणचंद ( मोरी० तेदि० ) ॥ ७ ॥ इति सिद्धाचलजी स्तवनम् ॥ १ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आज आपे चालो सहीयो सिद्धाचल गिरजइयै ॥ सुणि वहनी ए गिरनी महिमा । आदिजिनंद इम जाखी । जग्यादिक नरपतिनै आगल । इंद्रादिक सहु साखीरे ( आज० ) ॥ १ ॥ इण गिरवरियै काल अनंते । साधु अनन्ता सीधा । जनम मरणनां दुख नोमीनै । अमल अखय गुण लीधारे ( आ० ) ॥ २ ॥ इण गिर सनमुख पगला जस्तां । आतम सुख सुजावे । कोरु जवांरा पातिक कीधा । एक पलकमें जावैरे ( आ० ) ॥ ३ ॥ मासतो तीरथ ए सेहुं जो । जोतां जागै मीठो । तीन जुवनमें इण गिर

तोले । बीजो कोईन दीठोरे ( आ० ) ॥ ४ ॥ नीरंजनसुं नेह धरीने । आगे  
 उजग करस्यां । अद्भुत आदि जिनेसर निरखी । प्रेम सुधारस पीस्यांरे  
 ( आ० ) ॥ ५ ॥ पुहसुगंधा लेइ पचरंगा । हार सुगंधा गूंथी । पहिरावी  
 प्रनु कंठे लहिस्यां । शिव भागनी सूथीरे ( आ० ) ॥ ६ ॥ गहिर स्वरे जिन  
 वर गुण गातां । यात्र निनाणूं करिये । मन गमती जमती विचजमतां ।  
 जव सायर निसतरियेरे ( आ० ) ॥ ७ ॥ पूरवनिनाणूं वार प्रथम जिन । राय  
 एरुंखे आया । ते तीरथ सुज जावे फरसी । करिये निरमलकायारे ( आज० )  
 ॥ ८ ॥ लाज उदै ए गिरवर लहिये । कहै इम केवल नाणी । श्रीजिनचंद स  
 दा हित बढल । प्रेम घणै चित आणीरे ( आ० ) ॥ ९ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( श्रीचंद्रा प्रनु प्राहुणोरे ए देशी ) ॥ ❀ ॥ नमोरे नमो सेहुंज  
 गिरीरे । त्रिकरण शुद्ध त्रिकालरे । पाप पम्पू दूरे टलेरे । तूटे करम  
 जंजालरे । ( नमो० ) ॥ १ ॥ पूरव निनाणूं समोसरघारे । प्रथम  
 जिनंद जगदीशरे । वावीशम जिनवर विनारे । समो सरया तेवीशरे ।  
 ( नमो० ) ॥ २ ॥ साधु अनन्त अणशण ग्रहीरे । सीधा एहीज ठोमरे ।  
 काल आगामी बलि सीजस्येरे । साधु अनन्ती कोमिरे ( नमो० ) ॥ ३ ॥  
 अनंत कट्याणक नृमिकारे । महिमावंत महन्तरे । भासतां तीरथ ए सही  
 रे । अतिशय जास अनन्तरे ( न० ) ॥ ४ ॥ कोमि जवंतर जेकियारे  
 पातिक विविध उपाय रे । मेहुंजे सनमुख चालतां रे । पग पग ते सह  
 जायरे । ( नमो० ) ॥ ५ ॥ धनदिन तेहीज जाणसुरे । वहिस्तुं मेहुंज केरी वा  
 दरे । नहरा यथाविध पाजस्थूरे । मंघ सहित गहिगादरे ( नमो० ) ॥ ६ ॥  
 पगपग उठव अति घणारे । पग पग याचक दानरे । प्रेम जगति सादरमा  
 तणीरे । जीर्णोद्धार प्रधान रे ( नमो० ) ॥ ७ ॥ धन ते गिर राय निरखसुरे ।  
 बढ़ती भंगल मालरे । मणि मोर्ताबडे वधावस्तुं रे । रजत मोवन जद धालरे  
 ( नमो० ) ॥ ८ ॥ धन दिन ते गिर फलमस्तुं रे । कलस्तुं पावन मोरी का  
 यरे । जगति लुगति नृहारसुरे । नात्रि नन्दन जिन रायरे ( नमो० ) ॥ ९ ॥  
 द्रव्य जाव करसुं सुदारे । पूजा विविध प्रकार रे । जावे जावना जावसुं रे ।

करसुं सफल अवतारे ( नमो० ) ॥ १० ॥ रतनत्रयी जमती जलो रे । देसुं  
ते धर बुद्धिरे । जव जव भ्रमण निवारसुं रे । लहिसुं आतम सुद्धिरे ॥ ( न  
मो० ) ॥ ११ ॥ विध फरसण मन माहरोरे । मोहि रह्यो दिन रातरे । पुन्य  
प्रबल थी पामियो रे । उज्जलगिरी केरी जातरे ( नमो० ) ॥ १२ ॥ नाथ धूलेवा  
सु पसाय थीरे । कारज सगला सिधे । कहै जिन हरष सूरी सदारे ।  
होय जो मंगल वृद्धे ( नमो० ) ॥ १३ ॥ इति सिद्धा० ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( देशी पंथीडानी ) ॥ अंग उमावो मोनें अतिघणो । जेटवा वि  
मल गिरंदरे । ( पंथीमा ) । नाजिराया कुल चंदलो । जिहां वसै मरुदेवी नन्द  
रे । ( पंथीमा ) । वहिलुं बोलैरे पंथी ह्मांरा वहिलुं बोलैरे ॥ १ ॥ सेत्रुंजो  
बै कितनीक दूरे ( पंथीमा वहि० ) । पाली ताणो नगर सुहामणो । रूमी  
लजिता सरनी पालरे ( पंथीमा ) जिहां अंबजारे वरुजा घणा । जुक  
रही चंपलानी मालरे ( पंथीमा वहि० ) ॥ २ ॥ धन ते पंखी पारेवमा ।  
सेत्रुंज वसिया बै सोरे ( पंथीमा ) । ऊमाहो करीनें जे घर रहै । मांणस  
नहीं ते ढोर रे । ( पंथीमा वहिलुं० ) ॥ ३ ॥ सेत्रुंज वाटैजी चालतां ।  
जीणी जीणीऊमै खेहरे । ( पंथीमा ) । मैला थायै संघना कापमा । निरमल  
थायै देहरे । ( पंथीमा वहिलुं० ) ॥ ४ ॥ ऊंचो देहरो आदि नाथ रो ।  
आगल चौक विसाल रे ( पंथीमा ) । जिहां मिलमिल घणा मानवी ।  
गावै प्रनुगुण मालरे । ( पंथीमा वहिलुं० ) ॥ ५ ॥ घस केसर जरवाटका ।  
पूजे जिनवर अंगरे । ( पंथीमा ) । फूलाहंदो सौहै प्रनुसिर सेहरो । दि  
वलानी जोति अंगरे । ( पंथीमा व० ) ॥ ६ ॥ ए गिरवर दीठां माहरे ।  
ऊपजै परम आनन्दरे । ( पंथीमा ) मोनें जेटणरोजी कोमठै । प्रेम बाणें  
जिनचंदरे । ( पंथीमा व० ) ॥ ७ ॥ इति सिद्धाचलजी स्तवनम् ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जात्रानिनाणुं करिये विमल गिरि ( जात्रा० ) ॥ पूरवनिनाणुं  
वार सेत्रुंज गिरि । ऊपजजिनंद समोसरिये ( विम० जा० ) । कोडि सदस  
जव पातिक तूटे । सेत्रुंज मामें रुग जरिये । ( विमल० जा० ) १ ॥ चौ

थ षष्ठ दोय अष्टम तपस्या । करि चढियै गिरवारियै । ( वि० जा० ) पुंन  
रीक पद जपियै हरखैं । अव्यवसाय शुभ धरियै ( वि० जा० ) ॥ २ ॥  
पापी अजबो निजर न देखैं । हिंसक पिण ऊधारियै ( वि० जा० ) । नूमि  
संधारीनैं नारिणो संग । दूर थकी पर हरियै ( वि० जा० ) ॥ ३ ॥ अकल  
आहारीनैं सचित्त परि हारी । गुरु साथे पद चरियै ( वि० जा० ) पक्कम  
णा दोय विधसुं कीजै । पाप परल विष हरियै ( वि० जा० ) ॥ ४ ॥ कलि  
काले ए तीरथमोटो । प्रवहण सम जवदारियै ( वि० जा० ) । उत्तम ए गिर  
वर सेवतां । पदम कहे जवतारियै । ( विम० जात्रा० ) ॥ ५ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आज बधाई म्हांरै रंग बधाई । मोतीयमे० । ए चाल ॥ ❀ ॥  
॥ ❀ ॥ सिद्धगिरी जेटो जवि जावे । ज्युं सुखसंपति आनंद थावै ।  
सि० ॥ ए गिरवरकै जेटणसेती । पूरव संचित अघ सहु जावै ॥ सि० ॥  
॥ १ ॥ रायणखे रिपज जिनेसर । पूरव निनाणुं आया स्वजावै ॥ सि० ॥  
पुंन गिरकी महमा जिननैं । जरतादिक सब जनकुं सुणावै ॥ सि० ॥ २ ॥  
सामतो तीरथ तीन नुवनमें । शिवपुरि पाज प्रत्यक्ष कहावै ॥ सि० ॥ को  
मि अनंत साधू इण ऊपर । मुक्तिगये इण गिरके प्रजावै ॥ सि० ॥ ३ ॥  
एकवार गिरकुं जेटणसे । सहम कोरुना पातक जावै ॥ सि० ॥ नाचिरा  
य मरुदेवीके नन्दन । आदिजिनंद जेट्यां सुखपावै ॥ सि० ॥ ४ ॥ अदनु  
तर्विव अनोपमसोचित । चोसुख जिनवर अति मनजावै ॥ सि० ॥ देशदे  
शानरमें बहु नरगाण । आय जलीविध पूज रचावै ॥ सि० ॥ ५ ॥ कपूर क  
स्तूरी केसर धोली । मनसुध प्रनुके चरणो चढावै ॥ सि० ॥ आज हमारे  
सुरतर प्रगट्यो । मनमें हरष आनन्द जरावै ॥ सि० ॥ ६ ॥ आज रखी  
कंचनमड जरां । विमलाचल जेट्या सुजजावै ॥ सि० ॥ सुर्शिदावाद अ  
जीमगंजमें । गोत्र दूधेच्या प्रगट कहावै ॥ सि० ॥ ७ ॥ मोहतिमर अघ  
दूर करणकों । बुध सिंह यात्राकरी सुजजावै ॥ सि० ॥ गगन जोग ग्रह  
इंद्र संवहर । चैत्रज्ज्वल नेरस मन जावै ॥ सि० ॥ ८ ॥ आग्रहमें श्रीथ



जयराजकुं । साथ जलोविध यात्रा करावै ॥ सि० ॥ संघ साथ श्री लक्ष्मी  
प्रधानना । शिष्य मोहन प्रजुना गुणगावै ॥ सि० ॥ ९ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिनविं व संख्यागर्भित सेतुं जरास लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ आदिजिनंद दिनंदसम । ज्योति रूप जगतेय । आ  
तम गुण परकास कर । जवियणकुं सुख देय ॥ १ ॥ वाग्देवी प्रणमी  
करी । सद्गुरु सीस नमाय । सिद्ध क्षेत्रका गुण कहूं । सुमतानें सुपसाय ॥  
२ ॥ सुमता वचने चालतां । सदा सुरंगी देह । सुरपति नरपति सहुनमें ।  
पामें शिवसुख तेह ॥ ३ ॥ सुमता जिम चेतन जणी । समजावे चित आय ।  
प्रथम बात एही कहूं । सुणो जवी चितलाय ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ढाल १ मारू  
जीकी ॥ ❀ ॥ सुमता कहे चेतन जणी । साहिवजी । ठोमो मिथ्या जालहो ।  
इक चित्ते एगिरि सेविये ॥ सा० ॥ ज्यो निज गुण नी चाहहो ॥ इक० ॥ १ ॥  
काल अनादीसैं रह्यो ॥ सा० ॥ कुमति कथन बस होयहो । जवमांहे जमतां  
दुखसह्या ॥ सा० ॥ २ ॥ जन्म मरणकरि नव नवा ॥ सा० ॥ नटज्युं वेश व  
नां बहो । चनुगतिमें नाटक तुम कियो ॥ सा० ॥ ३ ॥ नरक निगोदमें  
तुम रह्या ॥ सा० ॥ कृण नहिं पाम्यो सुख हो । किम जूजो दुख देखी  
जिसा ॥ सा० ॥ ४ ॥ देव मनुष्य अवतार में ॥ सा० ॥ मोह विटंबणा दुः  
ख हो । चित्तधरने दुर्जन ठांफिये ॥ सा० ॥ ५ ॥ बल अपणो फोरयां वि  
नां ॥ सा० ॥ दुर्जन नपके पायहो । जशलीजे दुर्जन दूय करी ॥ सा० ॥  
६ ॥ सुजकुं कदेय न संजरी ॥ सा० ॥ तोपिण अवसर देखहो । तुमआगे  
बात सहू कही ॥ सा० ॥ ७ ॥ उत्तम नर जिणनें कह्यो ॥ सा० ॥ होय  
गुण अवगुण जाणहो । बलि जाणें मित्र कुमित्रनें ॥ सा० ॥ ८ ॥ सुजमें  
प्रेम धरी करी ॥ सा० ॥ कीजे वचन प्रमाण हो । जिन मार्ग उत्तम  
आदरो ॥ सा० ॥ ९ ॥ चारित्र धर्मनी आगन्या ॥ सा० ॥ धारो शिर  
पर आजहो । जिम पामो रंग बधामणा ॥ सा० ॥ १० ॥ सुध सरधा  
जलकुं ग्रही ॥ सा० ॥ बोवो समकित बीज हो । नवपल्लव धर्म तरु दूये ॥  
सा० ॥ ११ ॥ उत्तम नर सुरपति पणो ॥ सा० ॥ पुष्प सुगंधी जाण हो ।  
फलडणका शिव सुख पांमस्यो ॥ सा० ॥ १२ ॥ उत्तम ग्यांन प्रकाशमें ॥

सा० ॥ सहृ देखे निजरूप हो । परमात्म पदकुं पिठाणिये ॥ सा० ॥ १३ ॥  
 तुं सुज वल्लभहे मदा ॥ सा० ॥ तुम गुण अपरं पारहो । परमात्म पद  
 तुंही अठे ॥ सा० ॥ १४ ॥ पिण निश्चे व्यवहार में ॥ सा० ॥ निश्चे नयकुं  
 जाणहो । व्यवहारे शुद्ध क्रिया करी ॥ सा० ॥ १५ ॥ निज निज शक्ती  
 अनुसरे ॥ सा० ॥ पाले व्रत मन शुद्धहो । नव पदनो ध्यान हिये धरी ।  
 सा० ॥ १६ ॥ सिद्ध गिरी प्रवहण चढी ॥ सा० ॥ वेगो शिवपुर जायहो ।  
 प्रव सायर पार पामो सुखे ॥ सा० ॥ १७ ॥ इण परे सुमता आयके ॥  
 सा० ॥ समजावे जवि चित्तहो । सुखपांमे समजे जविजिके ॥ सा० ॥  
 ॥ ॐ ॥ ( पुहाः ) ॥ इणपर सुमता वयणसुण । आसन जर्वा जीव । हरख धरी  
 व्रत आदरे । धर्म अमृत रस पीव ॥ १ ॥ सिद्ध गिरी इक अवमरे । आयावीर  
 जिणंद । इन्द्रादिकसह आयने । बांधा धर आणंद ॥ २ ॥ सिद्ध गिरीना गु  
 णसह । सुणवा जवि चित्तधार । प्रनुपद पंकज नमण कर । बैठा करी इक्तार  
 ॥ ३ ॥ जगवन्न दीनी देशना । सिद्धगिरी सम आज । जगमें कोई तीरथ  
 नहीं । परतिख शिवपुर पाज ॥ ४ ॥ काल अनादीसैं रह्यो । नाम ठाम पर सिद्ध  
 साधु अनंता इण गिरे । अणसण जर्हा सिव लिद्ध ॥ ५ ॥ नामजियां सहृ ज  
 यदले । दुख दाजिद्र हुये दूर । दिनदिन अधकीसंपदा । पांमे सुख जरपूरा ॥ ६ ॥  
 ॥ ॐ ॥ ( ठाल २ ) ॥ जंवृद्धीप मांहे कद्योरे जाल दक्षिण चरत प्रमाणरे ।  
 ( जविकनर ) सहृ देशां मांहे सिरेरे जाल । सोरठ देश चखाणरे ॥ ज० १ ॥  
 इण गिरनी महमा बसीरे जाल । कहे न मके कोई पाररे ॥ ज० ॥ ( वीर  
 जिनंदे जाषिवोरे जाल ) ॥ २ ॥ विमलाचल प्रणमुं सदारे जाल । आद्य  
 गुणां ममनांगरे ॥ ज० ॥ चर बैठां शुभ जावथीरे जाल । ध्यान कीयां  
 सुख पांमरे ॥ ज० ॥ वी० ॥ ३ ॥ प्रथम अनादी कालमें जाल ।  
 अनंत सीधा इहां आयरे ॥ ज० ॥ अनंत साधु बलि सीधसीनेजाल । प्रण  
 मुं ए गिरितायरे ॥ ज० ॥ वी० ॥ ४ ॥ फागुण सुदि दशमी दिनें जाल ।  
 पुरव निर्माण वाररे ॥ ज० ॥ आदि जिणंद समोमख्योरे जाल । चरण नमुं सु  
 खकारे ॥ ज० ॥ वी० ॥ पुंम्लीक गणधर नमुं जाल । पंचकोदि  
 मुनिमाथं ॥ ज० ॥ चैत्री पृथम दिन आयनें जाल । जाली शिवपुर वा

थरे ॥ ज० ॥ बी० ॥ ६ ॥ नमि विनमि दोदो कोमसेरे लाल । इणगिरि कीनो  
 वासरे ॥ ज० ॥ फाणुण सुद दसमी दिनेरे लाल । अविचल ज्योति प्रका  
 शरे ॥ ज० ॥ ७ ॥ नमि पुत्री चौसठ कहीरे लाल । अणशण लही शिव  
 पायरे ॥ ज० ॥ द्रावड संग काती पूनमेरे लाल । दसकोमि सीधा इहां आ  
 यरे ॥ ज० ॥ बी० ॥ ८ ॥ राम जस्त पांमव कहारे लाल । बलि नारद नव  
 आयरे ॥ ज० ॥ थावच्चा सेलंग मुनीरे लाल । जालि मयाजी शिव पायरे ।  
 ज० ॥ बी० ॥ ९ ॥ अजित शांति चौमासो रह्यारे लाल । अविजीवां हित  
 काजरे ॥ ज० ॥ नेम विना सह आवियारे लाल । एशिव पुरनी पाजरे ।  
 ज० ॥ बी० ॥ १० ॥ साधु अनंता प्रतिकंकरेरे लाल । सीधा ध्यान लगायरे  
 ज० ॥ मनमोहन गिरि सेवतांरे लाल । पातिक दूर पुजायरे ॥ ज० ॥ बी०  
 ॥ ११ ॥ ( पुहाः ) ॥ करजोमी नितप्रतिनमुं । सह साधु मनजाय । सेहुं  
 ज महातम ग्रन्थसे । जेद सुणो चितलाय ॥ १ ॥ जस्ता दिकसें आजलग  
 सोले उधार कहाय । ग्रंथान्तर में जेहना । जेद कहा समजाय ॥ २ ॥ सं  
 प्रतिकाले एरह्यो । षोडसमो उधार । करमचंद मोसी तणो । जशरह्यो जग वि  
 स्तार ॥ ३ ॥ देव जुवन जिम सोजता । नववसि चैत्यना जाव । सुरपति नर  
 पति सहनुमें । प्रगट्यां आतमदाव ॥ ४ ॥ सहु विंवनी संख्या कहूं । जेनव  
 वसिमें होय । मूलनायक वसिनांममें । प्रगट कहूं हुं जोय ॥ ५ ॥ ( ढाल ३ )  
 ॥ ॥ नमोरे नमो सेहुंजगिरीरे । ( ए चाल ) ॥ ॥ प्रणमुं ए गिरिरायनेरे ।  
 धन्य दिवस थयो आजरे । सुमतानें सुपसायथीरे । मनवंडित फल्या काजरे  
 ॥ १ ॥ प्र० ॥ प्रथम विमल वसि आयनेरे । पूज्या जिनप्रति विंवरे । सह  
 चैत्यामें सोजतारे । ढप्पनसे ढप्पन विंवरे ॥ २ ॥ प्र० ॥ नात्रिराय सुत जा  
 णियेरे । मूल नायक ढवि शांतिरे । मोतीवसीमें विंवरह्यारे । पचवीशसे वया  
 लीस कांतिरे ॥ ३ ॥ प्र० ॥ वालावसिमें सोजतारे । च्यारसे षट् विंवजाणरे ।  
 मूलनायक दोहुं वसीतणारे । आदिनाथ गुणखाणरे ॥ ४ ॥ प्र० ॥ अजुन  
 विंव मनोहररे । इग्यारै कर ऊंचो जाणरे । विस्तारमान नवहाथनोरे । सुज्व  
 लज्ज जिम प्राणरे ॥ ५ ॥ प्र० ॥ चौथी प्रेमावसि हुं नमुंरे । आदिनाथ जग  
 नाथरे । पांचसे अम्लीश जिहां रह्यारे । विंव मिल्यां सह साथरे ॥ प्र०

॥ ६ ॥ अजितनाथ स्वामी तणीरे । पांचमी हेमावसि थायरे । अमसठ  
ऊपर तीनसैरे । विंवनसुं गुण गायरे ॥ प्र० ॥ ७ ॥ ऊजमवसी ठठी जाणियैरे  
पद्मप्रभु जगजाणरे । रिखनानन चंद्राननैरे । बारिखेण ब्रधमानरे ॥ ८ ॥  
प्र० ॥ वावन जिनांजा सास्वनरे । चौमुख नंदीसर जावरे । च्यासे गुणती  
श मोजतारे । विंव अनोपम रावरे ॥ ९ ॥ प्र० ॥ मूलनायक पार्श्व प्रनुत  
णीरे । प्रतिमा साकरवसि मांयरे । और तयांसी विंवठैरे । नयणेदीठां मुख  
पायरे ॥ ११ ॥ प्र० ॥ आदिनाथ जीपावसीरे । वीशविंव सुविसालरे । नव  
मी खरतरवसि विंवनीरे । ओपमा रविजिम जालरे ॥ १३ ॥ प्र० ॥ आदी  
शर चौमुख तणीरे । प्रतिमा चार मुख दायरे । और विंव तेवीशसैरे । पंच  
दश देण्यां मनजायरे ॥ १२ ॥ प्र० ॥ वारै सहस त्रिणसे ऊपरैरे । अठाव  
न बलि होयरे । इम नववसि महु विंवनीरे । संख्या कहीमें जोयरे ॥ १३ ॥  
प्र० ॥ पांमव मंदर जाणियैरे । मरुदेवी ठुंक मुखकाररे । शाशनदेवीनी मंद  
रीरे । नेमचवरी धर्मधाररे ॥ १४ ॥ प्र० ॥ रायण तल पगलानसुरे । गणधर  
मंदर जायरे । चवदैसे वावन तणारे । नित नित प्रणसुं पायरे ॥ १५ ॥ पुं  
रुकीक ठविमोहनीरे । देण्यां मनवम थायरे । जीमकुंर सुचिजल जख्योरे ।  
सूर्यकुंर जलनायरे ॥ १६ ॥ प्र० ॥ त्रिण पद् वारै गान्नीरे । जमती देव  
तीनरे । उजका जोल दरशण करीरे । सिद्धमिला सिद्धचीणरे ॥ १७ ॥ प्र० ॥  
चेलणा तलाई सोजतीरे । अजित शांति खुंज आतरे । जाम्वाहंगर हस्त  
गिरीरे । कदमगिरी कीनीजातरे ॥ १८ ॥ प्र० ॥ इत्यादिक दरशण करीरे ।  
मिस्वरु मेनुं आयरे । अगिणत चरण प्रभुतणारे । नमाणकरुं मन लायरे  
॥ १९ ॥ प्र० ॥ देवपुगी जिम मोजतारे । मंगर अनिहि विसालरे । सहज  
नपदना जात्रवीरे । पूजे महम मिल जालरे ॥ २० ॥ प्र० ॥ इम सिद्धगि-  
रि मन लावनैरे । विकरण नसुं त्रिहुं कालरे । ओर नसुं महु जख्यनैरे । जे  
शुध आग्या पालरे ॥ २१ ॥ प्र० ॥ प्रतिदिन एगिखर चढीरे । अष्टद्रव्य  
लेई हायरे । द्रव्य जाव पूजा करैरे । मोहन महु जगनायरे ॥ २२ ॥ प्र० ॥  
॥ ॥ ( पुढा ) ॥ इण परि संख्या विंवनी । करि आनम सुखदाय । अधि  
क विंव कोइ थापमी । नमसुं चित्त लगाय ॥ १ ॥ मंदबुद्धि संयोगसे । रही

होय कहु चूल । तोपिण ओगुण ठांरुके । संघ हुवै अनुकूल ॥ २ ॥ प्रबल  
 पुन्य संयोगसें । मुऊ सरिया सबकाज । दरसण पायो गिरितणो । पाम्योजग  
 जश आज ॥ ३ ॥ दान शील तप जावना । जेद धरमना च्यार । जावविनां  
 सहु ठारसम । जाव सहु सुखत्यार ॥ ४ ॥ जिन प्रतिमा जिन सारखी । जग  
 वन् वचन प्रमाण । जाव धरो प्रनु पूजतां । जहिये सुख निर्वाण ॥ ५ ॥  
 शिव सुखसें वेसुखजिके । मिथ्या दृष्टी जीव । जिन प्रतिमा उत्थापकर  
 बांधे जवनी नीव ॥ ६ ॥ धन्य दिवश जे जगमें । मुऊ आवे शुभ जाव ।  
 मन तंठित सुख जब मिले । प्रगटै निज गुण दाव ॥ ७ ॥ चिंतामणि सुरत  
 रसमो । एतीरथ सुखकार । दिनप्रति गुणकोसमरके । पामुं जवजल पार ॥ ८ ॥  
 ( ढाल ) सेहुंजसाधु अनंतासीधा ( इस चालमे ) एतीरथनी अद्भुत महमा । था  
 रो चित्तमजारे । पंचप्रमाद विषय सुखठंभी । जेटो गिरि सुखकारे । एती० ॥ १ ॥  
 मनुषा जन्म पायके जेजवि । जेटै नहिं गिरि एहरे । तेनर गरजावासै कहिये  
 पशुसम गिणती तेहरे ॥ ए० ॥ २ ॥ जो तीरथनी महिमा सुणके । उत्थापे निज  
 बुद्धिरे । ते नर काल अनंतो जमसी । दुर्लभ पांमें सिद्धरे ॥ ए० ॥ ३ ॥ इम जां  
 णी मन जावधरीनें । जवि मिल आवेधायरे । ठहरी संयुत गिरकुं सेवे । प्रात ऊठ  
 मन जायरे ॥ ए० ॥ ४ ॥ इह जव परजव मांहेकीधा । जे नर पाप अधोरे । ते  
 इण गिरके फरसण सेती । दूरहोय सहु चोरे ॥ ए० ॥ ५ ॥ रोग सोग स  
 हुनांमें नासे । तूटै करम कठोरे । दुष्ट देव देवी कामण सहु । जागे तीरथ जो  
 रे ॥ ए० ॥ ६ ॥ आलोयण लेई प्रनु साखे । पापमेल सहु धोयरे । क्षिणमें  
 निजगुण उज्ज्वलपांमें । रजक दृष्टांत तुं जोयरे ॥ ए० ॥ ७ ॥ समकित धारी जे  
 सुखरनी । थापनारही इहां जोयरे । धर्मबंधव जाणी वसुद्रव्यै । पूजा करे स  
 हु कोयरे ॥ ए० ॥ ८ ॥ देव सहाये सहु संघमांहे । आनंद मंगल होयरे । ईत  
 उपद्रव जय नहिंज्यापे । दुख दालिद्र सहु खोयरे ॥ ए० ॥ ९ ॥ तीरथ यात्रा  
 कर तीरथनी । जगति करो मन शुद्धरे । तीर्थकर पिण तीर्थनमीनें । देउपदेश सुबु  
 द्धिरे ॥ ए० ॥ १० ॥ निज निज शक्ति प्रमाणें जेजवि । सेलखेत्र निज वित्तरे । ख  
 रचे निज मन जाव धरीनें । पांमें सहु जगकिन्तरे ॥ ए० ॥ ११ ॥ जिम ती  
 रथ गुण गुरु सुख सुणिया । परतिख पांम्या आजरे । इण विध विवचरण म

हु वंदी । सारथा आनम काजरे ॥ ए० ॥ १२ ॥ धन ए चैत्री पूनम दिवसो  
मन् जगणीमे तीशरे । धन्यवनी धन्यवेला एहीज । पाम्यां त्रिजुवन ईशरे ॥ ए०  
॥ १३ ॥ दीन दयाल दया निध उत्तम । रिपजदेव जिनरायरे । एहीजदेवरहा  
त्रिजुवनमें । मोहनगुणनां दायरे ॥ ए० ॥ १४ ॥ (पुहाः) ॥ करजोमी वीनतिकरुं  
सुणोगरीवनिवाज । कर्म सवन दूरेकरी । दीजे त्रिजुवन राज ॥ १ ॥ मोसे  
अधम संसारमें । कर्म सवन वस होय । तप जप संयम नहिपले । किमपांसुं पद  
तोय ॥ २ ॥ जे तुमरी आग्याधरे । तेहनें दोजगराज । एहमें प्रनु अचरज नहि ।  
अचरज मुजनें काज ॥ ३ ॥ शशिगुण माहरोदेखके । खमिये सहु अपराध । तुं  
मरा वचन हियेवस्या । अचल अमृत रस स्वाद ॥ ४ ॥ तीन तत्व चोलरंगमें ।  
रंगाणी मुजदेह । अवमिथ्यात पतंगको । रंगचढे नहिरेह ॥ ५ ॥ तुम  
सहाये जोमाहगे । चेतन निजगुणपाय । तो अविचल आग्याधरुं । तन मन व  
चन जगाय ॥ ६ ॥ इम वीनति प्रनुनी करी । समकित निरमल काज । द्र  
व्य क्षेत्र काल जाव विन । मिलेन शिवपुर राज ॥ ७ ॥ रत्न जमित सिंहा  
सणें । रयण आचूपाण सार । अद्भुत स्थ बैठे प्रनु । उठव करे नर नार ॥ ८ ॥  
( ढाल ) ॥ आज महोत्सव रंगरखीरी ( इस चालमे ) । आज उठवदिन मुजमन  
जायो ॥ आ० ॥ संवसहु मिल गावे वधाई । स्थ बैठा सोहे जिन रायो ॥ आ० ॥  
॥ १ ॥ वीणा मृदंग ताल कंसाजा । मधुर ध्वनी अंबर रहिजायो ॥ आ० ॥ २ ॥  
सुशिदावाद पूरव दिश नजे । अर्जामगंज गंगापार वसायो ॥ आ० ॥ ३ ॥ बुध  
सिंह विमनचंद मिलजाई । गोत्र पुयेड्या मांय कहायो ॥ आ० ॥ ४ ॥ गिरि  
महमासुण जाव धरीनें । विधसें यात्र करी सुखपायो ॥ आ० ॥ ५ ॥ पुन्य  
संयोग मिल्यो मोय सजनी । आनंद दायक मंत्र सवायो ॥ आ० ॥ ६ ॥ आ  
ज अंगणमोय सुस्तद फलियो । पुखदाजिद्र सह दृग्गमायो ॥ आ० ॥ ७ ॥  
आजमनोरथ सह मुक फलिया । आज आनंद मंगल वसायो ॥ आ० ॥ ८ ॥  
गुरु खतर जिन आग्या पाजक । सोहे हंससुरि महारायो ॥ आ० ॥ ९ ॥ पा  
ठक पद जायक गुणमोहित । सुगुण प्रमोद चेतन गुण पायो ॥ आ० ॥ १० ॥  
विद्या विशाल वाचक मुखदायक । पंक्ति लक्ष्मी प्रधानपसायो ॥ आ० ॥ ११ ॥  
नास्तुशील मोहन हित जाणी । उत्तम ए नीत्य गुणगायो ॥ आ० ॥ १२ ॥



होय कहु चूल । तोपिण ओगुण ठांमके । संघ हुवै अनुकूल ॥ २ ॥ प्रबल  
 पुन्य संयोगसें । सुऊ सरिया सबकाज । दरसण पायो गिरितणो । पाम्योजग  
 जश आज ॥ ३ ॥ दान शील तप जावना । जेद धरमना च्यार । जावविनां  
 सहु ठारसम । जाव सहु सुखत्यार ॥ ४ ॥ जिन प्रतिमा जिन सारखी । जग  
 वन् वचन प्रमाण । जाव धरी प्रनु पूजतां । लहिये सुख निर्वाण ॥ ५ ॥  
 शिव सुखसें वेसुखजिके । मिथ्या दृष्टी जीव । जिन प्रतिमा उत्थापकर  
 बांधे जवनी नीव ॥ ६ ॥ धन्य दिवश जे ऊगमें । सुऊ आवे शुभ जाव ।  
 मन तंठित सुख जब मिले । प्रगटै निज गुण दाव ॥ ७ ॥ चिंतामणि सुरत  
 रूसमो । एतीरथ सुखकार । दिनप्रति गुणकोसमरके । पामुं जवजल पार ॥ ८ ॥  
 ( ढाल ) सेहुंजसाधु अनंतासीधा ( इस चालमे ) एतीरथनी अद्भुत महमा । धा  
 रो चित्तमजाररे । पंचप्रमाद विषय सुखठंभी । जेटो गिरि सुखकाररे । एती० ॥ १ ॥  
 मनुषा जन्म पायके जेजवि । जेटै नहिं गिरि एहरे । तेनर गरजावासै कहिये  
 पशुसम गिणती तेहरे ॥ ए० ॥ २ ॥ जो तीरथनी महिमा सुणके । उत्थापे निज  
 बुद्धिरे । ते नर काल अनंतो जमसी । दुर्लभ पांमें सिद्धरे ॥ ए० ॥ ३ ॥ इम जां  
 णी मन जावधरीनें । जवि मिल आवेधायरे । बहरी संयुत गिरकुं सेवे । प्रात ऊठ  
 मन जायरे ॥ ए० ॥ ४ ॥ इह जव परजव मांहेकीधा । जे नर पाप अधोरे । ते  
 इण गिरके फरसण सेती । दूरहोय सहु चोरे ॥ ए० ॥ ५ ॥ रोग सोग स  
 हुनांमें नासे । तूटै करम कठोररे । दुष्ट देव देवी कामण सहु । जागे तीरथ जो  
 रे ॥ ए० ॥ ६ ॥ आलोयण लेई प्रनु साखे । पापमेल सहु धोयरे । क्षिणमें  
 निजगुण उज्ज्वलपांमें । रजक दृष्टांत तुं जोयरे ॥ ए० ॥ ७ ॥ समकित धारी जे  
 सुरवरनी । थापनारही इहां जोयरे । धर्मबंधव जाणी वसुद्रव्यै । पूजा करे स  
 हु कोयरे ॥ ए० ॥ ८ ॥ देव सहाये सहु संघमांहे । आनंद मंगल होयरे । ईत  
 उपद्रव जय नहिं व्यापे । दुख दालिद्र सहु खोयरे ॥ ए० ॥ ९ ॥ तीरथ यात्रा  
 कर तीरथनी । जगति करो मन शुद्धे । तीर्थकर पिण तीर्थनमीनें । देउपदेश सुबु  
 धिरे ॥ ए० ॥ १० ॥ निज निज शक्ति प्रमाणें जेजवि । सेजखेत्र निज वित्तरे । स  
 रचे निज मन जाव धरीनें । पांमें सहु जगकित्तरे ॥ ए० ॥ ११ ॥ जिम ती  
 रथ गुण गुरु सुख सुणिथा । परतिख पांम्या आजरे । इण विध विवचरण म

हु बंदी । सारया आतम काजरे ॥ ए० ॥ १२ ॥ धन ए चैत्री पूनम दिवशे  
 सन् उगाणीसे तीशरे । धन्यधनी धन्यवेला एहीज । पाय्यां त्रिनुवन ईशरे ॥ ए०  
 ॥ १३ ॥ दीन दयाल दया निध उत्तम । रिपनदेव जिनरायरे । एहीजदेवरह्या  
 त्रिनुवनमें । मोहनगुणनां दायरे ॥ ए० ॥ १४ ॥ (पुहाः) ॥ करजोमी वीनतिकरुं  
 सुणोगरीवनिवाज । कर्म सवन दूरेकरी । दीजे त्रिनुवन राज ॥ १ ॥ मोसे  
 अधम संसारमें । कर्म सवन बस होय । तप जप संयम नहिपले । किमपांसुं पद  
 तोय ॥ २ ॥ जे तुमरी आग्याधरे । तेहनें दोजगराज । एहमें प्रनु अचरज नहि ।  
 अचरज सुजनें काज ॥ ३ ॥ शशिशुण साहरोदेखके । खमिये सह्र अपराध । तुं  
 मरा वचन हियेवस्या । अचल अमृत रस स्वाद ॥ ४ ॥ तीन तत्व चोलरंगमें ।  
 रंगाणी सुजदेह । अवमिथ्यात पतंगको । रंगचढे नहिरेह ॥ ५ ॥ तुम  
 सहाये जोमाहरो । चेतन निजगुणपाय । तो अविचल आग्याधरुं । तन मन व  
 चन लगाय ॥ ६ ॥ इम वीनति प्रनुनी करी । समकित निरमल काज । द्र  
 व्य क्षेत्र काल जाव विन । मिलेन शिवपुर राज ॥ ७ ॥ रत्न जम्ति सिंहा  
 सों । रयण आचृषण सार । अद्भुत स्थ बैठे प्रनु । उठव करे नर नार ॥ ८ ॥  
 ( ढाल ) ॥ आज महोठव रंगरजारी ( इस चालमे ) । आज उठवदिन सुजमन  
 जायो ॥ आ० ॥ संघमहु मिल गावे वधाई । स्थ बेठा सोहे जिन रायो ॥ आ० ॥  
 ॥ १ ॥ वीणा मृदंग ताल कंमाळा । मधुर ध्वनी अंबर रहितायो ॥ आ० ॥ २ ॥  
 सुशिवावाद पृथ्व दिश ठाजे । अजीमगंज गंगापार वमायो ॥ आ० ॥ ३ ॥ बुध  
 सिंह विसनचंद मिलजाई । गोत्र पुवेज्या मांय कहायो ॥ आ० ॥ ४ ॥ गिरि  
 महमासुण जाव धरीनें । विधमें यात्र करी सुखपायो ॥ आ० ॥ ५ ॥ पुन्य  
 मंयोग मिल्यो मांय सजनी । आनंद दायक मंत्र सवायो ॥ आ० ॥ ६ ॥ आ  
 ज अंगणमोय सुस्तर फलियो । सुखदाजिद्र सह्र दूरगमायो ॥ आ० ॥ ७ ॥  
 आजमनोरथ सह्र मुज फलिया । आज आनंद मंगल बरतायो ॥ आ० ॥ ८ ॥  
 गुरु स्तर जिन आग्या पातक । सोहे हंसनूरि महारायो ॥ आ० ॥ ९ ॥ पा  
 ठक पद लायक गुणमोहित । सुगुण प्रमोद चेतन गुण पायो ॥ आ० ॥ १० ॥  
 विद्या विशाल वाचक सुखदायक । पंक्ति लक्ष्मी प्रधानयमायो ॥ आ० ॥ ११ ॥  
 तासुशीश मोहन हिन जांणी । उत्तम ए नोरथ गुणगायो ॥ आ० ॥ १२ ॥

होय कटु चूल । तोपिण ओगुण ठांमके । संघ हुवै अनुकूल ॥ २ ॥ प्रबल  
 पुन्य संयोगसैं । मुऊ सरिया सबकाज । दरसण पायो गिरितणो । पाम्योजग  
 जश आज ॥ ३ ॥ दान शील तप जावना । जेद धरमना च्यार । जावविनां  
 सहु ठारसम । जाव सहु मुखत्यार ॥ ४ ॥ जिन प्रतिमा जिन सारखी । जग  
 वन् वचन प्रमाण । जाव धरी प्रनु पूजतां । लहिये सुख निर्वाण ॥ ५ ॥  
 शिव सुखसैं वेसुखजिके । मिथ्या दृष्टी जीव । जिन प्रतिमा उत्थापकर  
 बांधे जवनी नीव ॥ ६ ॥ धन्य दिवश जे ऊगमें । मुऊ आवे शुज जाव ।  
 मन तंजित सुख जब मिले । प्रगटै निज गुण दाव ॥ ७ ॥ चिंतामणि सुस्त  
 रूमो । एतीरथ सुखकार । दिनप्रति गुणकोसमरके । पामुं जवजल पार ॥ ८ ॥  
 ( ढाल ) सेहुंजसाधु अनंतासीधा ( इस चालमे ) एतीरथनी अद्भुत महमा । धा  
 रो चित्तमजाररे । पंचप्रमाद विषय सुखठंणी । जेटो गिरि सुखकाररे । एती॥ १॥  
 मनुषा जन्म पायके जेजवि । जेटै नहिं गिरि एहरे । तेनर गरजावासै कहिये  
 पशुसम गिणती तेहरे ॥ ए० ॥ २ ॥ जो तीरथनी महिमा सुणके । उत्थापे निज  
 बुद्धिरे । ते नर काल अनंतो जमसी । दुर्लज पांमें सिद्धरे ॥ ए० ॥ ३ ॥ इम जां  
 णी मन जावधरीनैं । जवि मिल आवेधायरे । बहरी संयुत गिरकुं सेवे । प्रात ऊठ  
 मन जायरे ॥ ए० ॥ ४ ॥ इह जव परजव मांहेकीधा । जे नर पाप अधोररे । ते  
 इण गिरके फरमण सेती । दूरहोय सहु चोररे ॥ ए० ॥ ५ ॥ रोग सोग स  
 हुनांमें नासे । तूटै करम कठोररे । दुष्ट देव देवी कामण सहु । जागे तीरथ जो  
 ररे ॥ ए० ॥ ६ ॥ आलोयण लेई प्रनु साखे । पापमेल सहु धोयरे । द्विणमें  
 निजगुण उज्ज्वलपांमें । रजक दृष्टांत तुं जोयरे ॥ ए० ॥ ७ ॥ समकित धारी जे  
 सुखरनी । थापनारही इहां जोयरे । धर्मबंधव जाणी वसुद्रव्ये । पूजा करे स  
 हु कोयरे ॥ ए० ॥ ८ ॥ देव सहाये सहु संवमांहे । आनंद मंगल होयरे । ईत  
 उपद्रव जय नहिं ब्यापे । दुख दालिद्र सहु खोयरे ॥ ए० ॥ ९ ॥ तीरथ यात्रा  
 कर तीरथनी । जगति करो मन शुद्धे । तीर्थकर पिण तीर्थनमीनैं । देउपदेश सुबु  
 द्धिरे ॥ ए० ॥ १० ॥ निज निज शक्ति प्रमाणें जेजवि । सेलखेत्र निज वित्तरे । ख  
 रचे निज मन जाव धरीनैं । पांमें सहु जगकित्तरे ॥ ए० ॥ ११ ॥ जिम ती  
 रथ गुण गुरु सुख सुणिया । परतिख पांम्या आजरे । इण विध विवचरण म

हु बंदी । सारखा आतम काजरे ॥ ए० ॥ १२ ॥ धन ए चैत्री पूनम दिवशै  
मन् जगणीसे तीशरे । धन्यधनी धन्यवेला एहीज । पाम्यां त्रिनुवन ईशरे ॥ ए०  
॥ १३ ॥ दीन दयाल दया निध उत्तम । गिषन्नदेव जिनरायरे । एहीजदेवरह्या  
त्रिनुवनमें । मोहनगुणनां दायरे ॥ ए० ॥ १४ ॥ (हुहाः) ॥ करजोमी वीनतिकरुं  
सुणोगरीवनिवाज । कर्म सघन दूरेकरी । दीजे त्रिनुवन राज ॥ १ ॥ मोसे  
अधम संसारमें । कर्म सघन बस होय । तप जप संयम नहिपजे । किमपांसुं पद  
तोय ॥ २ ॥ जे तुमरी आग्याधरे । तेहनें दोजगराज । एहमें प्रनु अचरज नहि ।  
अचरज मुऊनें काज ॥ ३ ॥ शशिगुण माहरोदेखके । खमिये सहृ अपराध । तुं  
मरा वचन हियेवस्या । अचल अमृत रम स्वाद ॥ ४ ॥ तीन तत्व चोलरंगसें ।  
रंगाणी मुऊदेह । अबमिथ्यात पतंगको । रंगचढे नहिरेह ॥ ५ ॥ तुम  
सहाये जोमाहरो । चेतन निजगुणपाय । तो अविचल आग्याधरुं । तन मन व  
चन लगाय ॥ ६ ॥ इम वीननि प्रनुनी करी । समकित निरमल काज । द्र  
व्य क्षेत्र काल जाव विन । मिलेन शिवपुर राज ॥ ७ ॥ रत्न जम्ति सिंहा  
सणें । रयण आचृपण सार । अद्भुत स्थ बैठे प्रनु । उठव करे नर नार ॥ ८ ॥  
( ढाल ) ॥ आज महोठव रंगरजारी ( इस चालमे ) । आज उठवदिन सुऊमन  
जायो ॥ आ० ॥ संघसहृ मिल गावे वधाई । स्थ बैठा सोहे जिन रायो ॥ आ० ॥  
॥ १ ॥ वीणा मृदंग ताल कंसाला । मधुर ध्वनी अंबर रहितायो ॥ आ० ॥ २ ॥  
सुशिदावाद पुरव दिश ठाजे । अजीमगंज गंगापार वसायो ॥ आ० ॥ ३ ॥ बुध  
सिंह विसनचंद मिलजाई । गोत्र दुधेड्या मांय कहायो ॥ आ० ॥ ४ ॥ गिरि  
महमात्तुण जाव धरीनें । विधसें यात्र करी सुखपायो ॥ आ० ॥ ५ ॥ पुन्य  
संयोग मिल्यो मोय सजनी । आनंद दायक संव मचायो ॥ आ० ॥ ६ ॥ आ  
ज अंगणमोय सुखरु फलियो । दुखदालिद्र सहृ दूखमायो ॥ आ० ॥ ७ ॥  
आजमनोरथ सहृ सुऊ फलिया । आज आनंद मंगल वरतायो ॥ आ० ॥ ८ ॥  
गुरु सन्नर जिन आग्या पाजक । मोहे हंससूरि मढारायो ॥ आ० ॥ ९ ॥ पा  
ठक पद जायक गुणमोत्रित । सुगुण प्रमोद चेतन गुण पायो ॥ आ० ॥ १० ॥  
पिया विशाल वाचक सुखदायक । पंक्ति जहमी प्रधानपसायो ॥ आ० ॥ ११ ॥  
तात्तुशीश मोदन हिन जांणी । उत्तम ए तीरथ गुणगायो ॥ आ० ॥ १२ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रावधर धन्य दिन आज सफलो गिण्यो । आजमें सजनि आ  
नंद पायो ॥ जा० ॥ हर्ष धरि निजरि जरि विमलगिर निरखकर । रजत  
माणि कनक मोतिय वधायो ॥ जा० ॥ १ ॥ पग पगै उमगधर पंथनित  
पूछतां । धन्य दोय चरण जिहां तलक आयो । आज धनदीह जागी सु  
कृतकी दिशा । आज धनदीह दिन सुजश गायो ॥ जा० ॥ २ ॥ दूर दूर  
गत टलिय यात्र विधसुं करी । पुन्य जंमार पोतै जरायो । वदत जिनराज  
मनरंग सुरगिर सिखर । रिपज जिनचंद सुरतरु कहायो ॥ जा० ॥ ३ ॥  
॥ इति सिधगिरी स्तवनं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
इति कार्तिक मास चतु पर्वाधिकारः ॥ ८ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मार्गशीर्ष मास पर्वाधिकार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मिगसर महिनेमें मितो मिगसर सुद ११ ( सो ) मोन इग्या  
रस नामसें पर्व प्रसिद्ध है । इस दिन देढसें कल्याणक हुये ( सो लि  
खते हैं ) जन्म । दिक्षा । केवलज्ञान । यह । तीन कल्याणक । श्रीमल्लिनाथ  
स्वामीके हुये । श्री अरनाथ स्वामीनें दिक्षा अंगीकार करी ॥ श्रीनामि  
नाथ स्वामीनें केवल ग्यान उत्पन्न जयो । ( ऐसें ) इस जस्तक्षेत्रमें वर्त  
मान चौबीशीके पांच कल्याणक हुए ( इसी माफक ) पांच जस्त । पांच  
ऐरवतमें । चौबीशीके पांच२ कल्याणकमिजानेसें । पच्चास कल्याणक हुये  
अतीत । अनागत । वर्तमान । कालके अपेक्षाये । देढसें कल्याणक हुये ।  
इसीसें यह दिन वरमा उत्तमहै ( इस दिन ) मोन संयुक्त उपवास करै । अठ  
पहरी पोसो करके । मोन इग्यारसको गुणनो करै । पोशहकी शक्ति न हो  
य ( तो ) देशावगासी लेके गुणनो करै । ( ऐसें ) इग्यारै वरशमें, इग्यारै  
उपवास करै । और ( जो ) इग्यारस करनेकी इच्छा हो ( तो ) मासमें बंद  
सुदकी । दोनुं एकादशी । इग्यारै वरश, इग्यारै माहिनां करै । यह तपस्या  
करतां इग्यारै अंग शुद्धजावसें सुणें । इग्यारै अंग लिखायके देवै । पढनें  
वालुं का सहाय्य करै । तपस्या ग्रहण करनेको ( पारनेको ) शुरूके सुससें  
विधि करै । यथा शक्ति आगम पूजा साहमी वृत्त करै ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ मोन एकादशीको गुणनो लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जंबूद्वीपे भरतक्षेत्रे  
अतीत २४ जिनपंच कल्या  
णक नामः ॥ ❀ ॥ १ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम ॥ ❀ ॥

४ ॥ श्रीमहायश सर्वज्ञाय नमः ॥  
६ ॥ श्रीसर्वानुवृत्ति अर्हते नमः ॥  
६ ॥ श्रीसर्वानुवृत्तिनाथाय नमः ॥  
६ ॥ श्रीमर्वानुवृत्तिसर्वज्ञाय नमः ॥  
७ ॥ श्री श्रीधरनाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ जंबूद्वीपे भरतक्षेत्रे  
वर्तमान २४ जिन पंच  
कल्याणक० ॥ ❀ ॥ २ ॥

२१ ॥ श्रीनामि सर्वज्ञाय नमः ॥  
१९ ॥ श्री मल्लि अर्हते नमः ॥  
१९ ॥ श्री मल्लिनाथाय नमः ॥  
१९ ॥ श्री मल्लि सर्वज्ञाय नमः ॥  
१८ ॥ श्री अरिनाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ जंबूद्वीपे भरतक्षेत्रे  
अनागत २४ जिन पंच  
कल्याणक० ॥ ❀ ॥ ३ ॥

४ ॥ श्री ग्वर्यमनु सर्वज्ञाय नमः ॥  
६ ॥ श्री देवश्रुत अर्हते नमः ॥  
६ ॥ श्री देवश्रुत नाथाय नमः ॥  
६ ॥ श्री देवश्रुत सर्वज्ञाय नमः ॥  
७ ॥ श्री उदय नाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ धातकीखंमे पूर्वभरते  
अतीत २४ जिन पंचकल्या  
णक नामः ॥ ❀ ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ द्वितीय ॥ ❀ ॥

४ ॥ श्रीअकलंक सर्वज्ञाय नमः ॥  
६ ॥ श्रीसुजंकर अर्हते नमः ॥  
६ ॥ श्रीसुजंकरनाथाय नमः ॥  
६ ॥ श्रीसुजंकर सर्वज्ञाय नमः ॥  
७ ॥ श्रीसप्तनाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ धातकीखंमे पूर्वभरते  
वर्तमान २४जिनपंच कल्या  
णक नामः ॥ ❀ ॥ ५ ॥

२१ ॥ श्री ब्रह्मेन्द्र सर्वज्ञाय नमः ॥  
१९ ॥ श्री गुणनाथ अर्हते नमः ॥  
१९ ॥ श्री गुणनाथ नाथाय नमः ॥  
१९ ॥ श्री गुणनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥  
१८ ॥ श्री गंगिलनाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ धातकी खंडे पूर्वभरते  
अनागत २४ जिन पंच  
कल्याणक नामः ॥ ❀ ॥ ६ ॥

४ ॥ श्री मांप्रति सर्वज्ञाय नमः ॥  
६ ॥ श्री मुनिनाथ अर्हते नमः ॥  
६ ॥ श्री मुनिनाथ नाथाय नमः ॥  
६ ॥ श्री मुनिनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥  
७ ॥ श्री विशिष्ट नाथाय नमः ॥



॥ ❀ ॥ पुष्करार्द्धपूर्वजरते  
अतीत २४ जिन पंच  
कल्याणक० ॥ ❀ ॥ ७ ॥

॥ प्रथम ॥

४ ॥ श्रीमृषु सर्वज्ञाय नमः ॥  
६ ॥ श्रीव्यक्त अर्हते नमः ॥  
६ ॥ श्रीव्यक्त नाथाय नमः ॥  
६ ॥ श्रीव्यक्त सर्वज्ञाय नमः ॥  
७ ॥ श्रीकलाशत नाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ पुष्करार्द्धपूर्वजरते  
वर्तमान २४ जिनपंच  
कल्याणक० ॥ ❀ ॥ ८ ॥

२१ ॥ श्रीअरण्यवास सर्वज्ञाय नमः ॥  
१९ ॥ श्री योगनाथ अर्हते नमः ॥  
१९ ॥ श्री योगनाथ नाथाय नमः ॥  
१९ ॥ श्री योगनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥  
१८ ॥ श्री अयोग नाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ पुष्करार्द्ध पूर्वजरते  
अनागत २४ जिन पंच  
कल्याणक नामः ॥ ❀ ॥ ९ ॥

४ ॥ श्री परमसर्वज्ञाय नमः ।  
६ ॥ श्री शुद्धार्ति अर्हते नमः ॥  
६ ॥ श्री शुद्धार्ति नाथाय नमः ॥  
६ ॥ श्री शुद्धार्ति सर्वज्ञाय नमः ॥  
७ ॥ श्री निष्केश नाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ धातकीखंमे पश्चिमजरते  
अतीत २४ जिन पंच कल्याण  
क नामः ॥ ❀ ॥ १० ॥

॥ द्वितीय ॥

४ ॥ श्रीसर्वार्थ सर्वज्ञाय नमः ॥  
६ ॥ श्रीहरिचद्र अर्हते नमः ॥  
६ ॥ श्रीहरिचद्र नाथाय नमः ॥  
६ ॥ श्रीहरिचद्र सर्वज्ञाय नमः ॥  
७ ॥ श्रीमगधाधि नाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ धातकीखंमे पश्चिमजरते  
वर्तमान २४ जिन पंच कल्या  
णक नामः ॥ ❀ ॥ ११ ॥

२१ ॥ श्रीप्रयत्न सर्वज्ञाय नमः ॥  
१९ ॥ श्री अहोन्न अर्हते नमः ॥  
१९ ॥ श्री अहोन्न नाथाय नमः ॥  
१९ ॥ श्री अहोन्न सर्वज्ञाय नमः ॥  
१८ ॥ श्री मल्लि सिंह नाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ धातकीखंमे पश्चिमजरते  
अनागत २४ जिन पंच  
कल्याणक० ॥ ❀ ॥ १२ ॥

४ ॥ श्री आदिकर सर्वज्ञाय नमः ॥  
६ ॥ श्री धनद अर्हते नमः ॥  
६ ॥ श्री धनद नाथाय नमः ॥  
६ ॥ श्री धनद सर्वज्ञाय नमः ॥  
७ ॥ श्री पौष नाथाय नमः ॥

॥ ॐ ॥ पुष्करार्द्ध पश्चिमज  
रते अतीत २४ जिन पंच  
कल्याणक० ॥ ॐ ॥ १३ ॥

॥ प्रथम ॥

४ ॥ श्री प्रज्ज्वलसर्वज्ञाय नमः ॥  
६ ॥ श्री चारित्रनिधि अर्हतेनमः ॥  
६ ॥ श्री चारित्रनिधि नाथाय नमः ॥  
६ ॥ श्री चारित्रनिधि सर्वज्ञाय नमः ॥  
७ ॥ श्री प्रथमजिन नाथाय नमः ॥

॥ ॐ ॥ पुष्करार्द्ध पश्चिमजरते  
वर्तमान २४ जिन पंच  
कल्याणक० ॥ ॐ ॥ १४ ॥

२१ ॥ श्री स्वामि सर्वज्ञाय नमः ॥  
१९ ॥ श्री विपरीत अर्हते नमः ॥  
१९ ॥ श्री विपरीत नाथाय नमः ॥  
१९ ॥ श्री विपरीत सर्वज्ञाय नमः ॥  
१८ ॥ श्री प्रमाद नाथाय नमः ॥

॥ ॐ ॥ पुष्करार्द्ध पश्चिमजरते  
अनागत २४ जिन पंच  
कल्याणक० ॥ ॐ ॥ १५ ॥

४ ॥ श्री अघटि सर्वज्ञाय नमः ॥  
६ ॥ श्री भ्रमणेन्द्र अर्हते नमः ॥  
६ ॥ श्री भ्रमणेन्द्र नाथाय नमः ॥  
६ ॥ श्री भ्रमणेन्द्र सर्वज्ञाय नमः ॥  
७ ॥ श्री गिरिचन्द्र नाथाय नमः ॥

॥ ॐ ॥ जंबूद्वीपे ऐरवतक्षेत्रे  
अतीत २४ जिन पंच  
कल्याणक० ॥ ॐ ॥ १६ ॥

॥ द्वितीय ॥

४ ॥ श्री दयांतसर्वज्ञाय नमः ॥  
६ ॥ श्री अजिनंदन अर्हते नमः ॥  
६ ॥ श्री अजिनंदन नाथाय नमः ॥  
६ ॥ श्री अजिनंदन सर्वज्ञाय नमः ॥  
७ ॥ श्री रुनेश नाथाय नमः ॥

॥ ॐ ॥ जंबूद्वीपे ऐरवतक्षेत्रे  
वर्तमान २४ जिन पंच कल्या  
णक नामः ॥ ॐ ॥ १७ ॥

२१ ॥ श्री शामकाष्ट सर्वज्ञाय नमः ॥  
१९ ॥ श्री मरुदेव अर्हते नमः ॥  
१९ ॥ श्री मरुदेव नाथाय नमः ॥  
१९ ॥ श्री मरुदेव सर्वज्ञाय नमः ॥  
१८ ॥ श्री अतिपार्थनाथाय नमः ॥

॥ ॐ ॥ जंबूद्वीपे ऐरवत क्षेत्रे  
अनागत २४ जिन पंच क  
ल्याणक नामः ॥ ॐ ॥ १८ ॥

४ ॥ श्री नंदिपेण सर्वज्ञाय नमः ॥  
६ ॥ श्री वनधर अर्हते नमः ॥  
६ ॥ श्री वनधर नाथाय नमः ॥  
६ ॥ श्री वनधर सर्वज्ञाय नमः ॥  
७ ॥ श्री निर्वाण नाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ धातकीखंडे पूर्वऐरवते  
अतीत २४ जिन पञ्च कल्या  
एक नामः ॥ ❀ ॥ १९ ॥

॥ प्रथमः ॥

४ ॥ श्री सौदय सर्वज्ञाय नमः ॥  
६ ॥ श्री त्रिविक्रम अर्हते नमः ॥  
६ ॥ श्री त्रिविक्रम नाथाय नमः ॥  
६ ॥ श्री त्रिविक्रम सर्वज्ञाय नमः ॥  
७ ॥ श्री नारसिंह नाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ धातकीखंडे पूर्वऐरवते  
वर्तमान २४ जिन पंच  
कल्याणक नामः ॥ ❀ ॥ २० ॥

२१ ॥ श्री खेमन्त सर्वज्ञाय नमः ॥  
१९ ॥ श्री संतोषित अर्हते नमः ॥  
१९ ॥ श्री संतोषित नाथाय नमः ॥  
१९ ॥ श्री संतोषित सर्वज्ञाय नमः ॥  
१८ ॥ श्री काम नाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ धातकीखंडे पूर्वऐरवते  
अनागत २४ जिन पंच  
कल्याणक० ॥ ❀ ॥ २१ ॥

४ ॥ श्री सुनिनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥  
६ ॥ श्री चन्द्रदाह अर्हते नमः ॥  
६ ॥ श्री चन्द्रदाह नाथाय नमः ॥  
६ ॥ श्री चन्द्रदाह सर्वज्ञाय नमः ॥  
७ ॥ श्री दिलादित्य नाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ पुष्करार्द्ध पूर्व ऐरवते ॥  
अतीत २४ जिन पंचकल्या  
एक नामः ॥ ❀ ॥ २२ ॥

॥ द्वितीय ॥

४ ॥ श्री अष्टाहिकसर्वज्ञाय नमः ॥  
६ ॥ श्री वणिक अर्हते नमः ॥  
६ ॥ श्री वणिक नाथाय नमः ॥  
६ ॥ श्री वणिक सर्वज्ञाय नमः ॥  
७ ॥ श्री उदयज्ञान नाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ पुष्करार्द्ध पूर्वऐरवते  
वर्तमान २४ जिन पंच  
कल्याणक० ॥ ❀ ॥ २३ ॥

२१ ॥ श्रीतमोकन्दन सर्वज्ञाय नमः ॥  
१९ ॥ श्री सायकाह अर्हते नमः ॥  
१९ ॥ श्री सायकाह नाथाय नमः ॥  
१९ ॥ श्री सायकाह सर्वज्ञाय नमः ॥  
१८ ॥ श्री खेमन्त नाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ पुष्करार्द्ध पूर्वऐरवते  
अनागत २४ जिन पंच  
कल्याणक नमः ॥ २४ ॥

४ ॥ श्री निर्वाण सर्वज्ञाय नमः ॥  
६ ॥ श्री रविराज अर्हते नमः ॥  
६ ॥ श्री रविराज नाथाय नमः ॥  
६ ॥ श्री रविराज सर्वज्ञाय नमः ॥  
७ ॥ श्री प्रथमनाथ नाथाय नमः ॥

॥ धातकीखंमे पश्चिमएर  
ते अतीत २४ जिन पंच  
कल्याणक० ॥ ॥ २५ ॥

॥ ॥ प्रथम ॥ ॥

॥ श्रीपुरुष सर्वज्ञाय नमः ॥  
॥ श्रीअवबोध अर्हते नमः ॥  
॥ श्री अवबोध नाथाय नमः ॥  
॥ श्रीअवबोध सर्वज्ञाय नमः ॥  
॥ श्रीविक्रमेश नाथाय नमः ॥  
॥ धातकीखंमे पश्चिम एर  
ते वर्तमान २४ जिन पंच  
कल्याणक नामः ॥ ॥ २६ ॥

११ ॥ श्रीसुशान्त सर्वज्ञाय नमः ॥  
१२ ॥ श्रीहर अर्हते नमः ॥  
१३ ॥ श्रीहर नाथाय नमः ॥  
१४ ॥ श्रीहर सर्वज्ञाय नमः ॥  
१५ ॥ श्रीनन्दकेश नाथाय नमः ॥

॥ ॥ धातकीखंमे पश्चिमएर  
वते अनागत २४ जिन पंच  
कल्याणक नामः ॥ २७ ॥

१६ ॥ श्रीमहाभूमेन्द्र सर्वज्ञाय नमः ॥  
१७ ॥ श्रीअमोचिन अर्हते नमः ॥  
१८ ॥ श्रीअमोचिन नाथाय नमः ॥  
१९ ॥ श्रीअमोचिन सर्वज्ञाय नमः ॥  
२० ॥ श्रीभूमेन्द्र नाथाय नमः

॥ ॥ इति श्रीमौन एकादशी गुणानो मंपूर्णम् ॥ ॥

॥ धातकीखंमे पश्चिमएरवते  
अतीत २४ जिन पंच  
कल्याणक नामः ॥ ॥ २५ ॥

॥ ॥ प्रितीय ॥ ॥

४ ॥ श्रीअश्वत्थ सर्वज्ञाय नमः ॥  
५ ॥ श्रीकुटिल अर्हते नमः ॥  
६ ॥ श्रीकुटिल नाथाय नमः ॥  
७ ॥ श्रीकुटिल सर्वज्ञाय नमः ॥  
८ ॥ श्रीवर्धमान नाथाय नमः ॥  
॥ धातकीखंमे पश्चिम एरवते  
वर्तमान २४ जिन पंच  
कल्याणक० ॥ ॥ २६ ॥

२१ ॥ श्रीनन्दिक वर्धमानाय नमः ॥  
२२ ॥ श्रीधर्मचन्द्र अर्हते नमः ॥  
२३ ॥ श्रीधर्मचन्द्र नाथाय नमः ॥  
२४ ॥ श्रीधर्मचन्द्र सर्वज्ञाय नमः ॥  
२५ ॥ श्रीविवेक नाथाय नमः ॥

॥ ॥ पुष्कराद्ध पश्चिमएर  
वते अनागत २४ जिन पंच  
कल्याणक० ॥ ॥ २७ ॥

४ ॥ श्रीकलाप सर्वज्ञाय नमः ॥  
५ ॥ श्रीविमोम अर्हते नमः ॥  
६ ॥ श्रीविमोम नाथाय नमः ॥  
७ ॥ श्रीविमोम सर्वज्ञाय नमः ॥  
८ ॥ श्रीआराण नाथाय नमः ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ एकेक कल्याणक की एकेक माला गुणनेसें देढसें माला होय ( जो ) ज्यजीव शुद्ध चित्तसें गुणेंगे ( सो ) अल्प ज्वमें अनंत सुखको प्राप्त होंगे इति मार्गशीर्ष मास पर्वधिकारः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ पोष मास मध्ये पर्वधिकार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पोष महिनेमें, मिति पोषवद १० ( सो ) पोष दसमी नामसें पर्व प्रसिद्ध है । इस दिन श्रीपार्श्वनाथ स्वामीका जन्म कल्याणक है । इसी से यह दिन श्री संवमें परम आनंदकारी है । इस दिन श्रीपार्श्वनाथ स्वामीको अधिकार सुणें । एकाशणादिकको पञ्चक्खाण करै । जहां श्रीपार्श्वनाथ स्वामीके नामसें तीर्थ प्रसिद्ध होय । उहां यात्रा करणें को जावै । कदास यात्रा करनें को न जाय सकै ( तो ) जहां श्रीपार्श्वनाथ स्वामी की स्थापना होय । उहां महोत्सव संयुक्त दर्शण करनेंको जावै । जलयात्रा दिक महोत्सव करकै अष्टोत्तरी स्नात्र करावै ( अथवा ) पंचकल्याणकजी की ( वा ) सतर जेदी पूजा करावै । रात्री जागरण करावै । तोरण बांधै । गीत गान नाटकादिकसें अनेक तरे के उत्सव करै ( और ) जन्म कल्याणकादिक ॥ पाश जिनेसर जगति लोए० ॥ वाणी ब्रह्मा वादनी० ॥ इत्यादिक पार्श्वनाथ स्वामीके गुण गर्विजित स्तवन पढ़ै । ( वा ) सुणें । इसी तरे इस पर्वको सेवन करनेंमें । आधि व्याधि सोग संताप सर्व दूर होंगे । अनेक तरेसें रुद्धि वृद्धि सुख सौभाग्यको प्राप्त होंगे ॥ ❀ ॥ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ जन्म कल्याणकको स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीचंद्रा प्रभु जिनवर साहब सुणियो० ( इस चालमें ) । पोश दसम दिन पारश प्रभुको । जन्म ज्यो सुखदाई । ( में वारी जाहुं० ) । काशी देश त्रिणागसी नगरी । अस्वशेन कुल आई । ( में० ) वामांतर अवतार लियो है ॥ सहृ जीवन गुण दाई ॥ ( में ) १ ॥ एक सहम अष्टोत्तर लक्षण । अनुपम रूप सुहाई । ( में० ) । नील वरण उवि तीन ग्यानयुत । पार्श्व प्रभु वरदाई । ( में वा० । २ । पो० ) । नरक जीव पिण क्षिण सुख पावन । दिश कुमरी मिलआई । ( में० ) सनिका कर्म क

री निजथानक । गई सहृ हस्य जराई ( मेंवा० । ३ । पो० ) ॥ आशन  
 कंपित सहृ सुखरना । देख ग्यांन जेद पाई । कोमा कोमि देव देवांगना  
 मिल सहृ आगल धाई । ( मेंवा० पोश० ) ४ ॥ सुरपति सक पंख  
 रूपे कर । मेरु मिखर ले जाई । ( में० ) । नात्र महोत्तव अधिक आ  
 नंदमें । वसुविध पूज रचाई । ( मेंवा० । ५ । पो० ) । वत्तीसवध ना  
 टक प्रनु आगल । तत्तार्थेई तान सुणाई । ( में० ) सात तीन इक्कीश जे  
 द कर । मिष्ट वचन गुण गाई । ( मेंवा० । ६ । पो० ) । इम उत्तवकर  
 प्रनुकों लेई । माता पास बैठाई । ( में० ) । रत्नकुट्टि धारक तूं जगमें ।  
 तूंमहृ सुर नर माई । ( मेंवा० पो० ) । ७ । हरखधरी धनधान्य बहुविध ।  
 राजरिद फैलाई । ( में० ) नंदीशर अछाई महोत्तव । करि सहृ थानक  
 जाई । ( मेंवा० ॥ ८ ॥ पोश० ) । अथसेन कुलकम आचारे । जन्मउ  
 त्तव अथकाई । ध्वजतोरण वाजित्र बहु विध । मंगलध्वनि बरताई । ( में  
 वा० पोश० ) ॥ ९ ॥ इम प्रनु जन्म कल्याणक दिवसे । सहृ संव हरख  
 बधाई । ( में० ) लक्ष्मी प्रधान मोहन प्रनुमेवै । अहनिशि ध्यान लगाई ।  
 ( मेंवा० पो० ) । १० ॥ ॐ ॥ इति जन्म कल्याणक स्तवनं ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ श्रीगौडीपार्श्वजिन वृद्धस्तवन लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ( वृद्ध ) बाणी ब्रह्मावादनी । जागे जग विख्यात । पाशवणा गु  
 णगावतां । सुज सुख वमझोमान ॥ १ ॥ नारंगे अणद्वजपुरे । अद्वमदा वा  
 दे पाश । गौरीनो धर्णी जागतो । सहृनी पुरे आस ॥ २ ॥ शुज बेला  
 शुजदिन वरु । सहृन पत्रमंभाण । प्रतिमा ते उह पाशनी । थई प्रतिष्ठा  
 जाण ॥ ३ ॥ ॐ ॥ ( दाज ) ॥ ॐ ॥ गुणहि विशाला मंगलीक माता ।  
 वामानो सुन नाचोजी । धण कण केवण माणि माणकदे । गौरीनो धर्णी  
 जाचोर्जा ॥ ४ ॥ ( गु० ) अजहणपुर पाखण भांहे प्रतिमा । तुक्क नणें धर हूनीजी ।  
 धधनी नृमि धधनीपाटा । धधनी वान्नि विगूनी जी ॥ ५ ॥ ( गु० ) जागंनो ज  
 हजहने कहिये । सहृणो तुक्कने आपेजा । पाश जिनेमर देली प्रतिमा । से  
 वरु तुज मंतापेजा ॥ ६ ॥ ( गु० ) पह उर्तीने पण्ट कज्जे । मेवा  
 गोर्तीने देजे जी । अधिको मज्जेजे उजी मज्जेजे । दफा पांचगे लेजेजा



॥ ७ ॥ ( गु० ) नहिं आपिस तो मारीस सुरमीस । मोर बंध बंधास्यैजी ।  
 पुत्र कजत्र धन हय हाथी तुज । लाउ घणी घर जास्यै जी ॥ ८ ॥ ( गु० ) मारग  
 पहिलो तुजने मिलस्यै । साहथवाह जे गोठीजी । निजवट दीलो चोखा चे  
 द्या । वस्तु बहै तमुपोठी जी ॥ ९ ॥ ( गु० ) ॥ ॥ ( दूहा ) ॥ ॥ मनसुं वीहनो तुरक  
 सो । मानें वचन प्रमाण । बीबीनें सुहणा तणो । संजलावै सहिनाण ॥ १० ॥  
 बीबी बोले तुरकनें । वसा देव है कोइ । अवसताव परगटकरो । नहीं तर मारै  
 सोय ॥ ११ ॥ पाठलीरात परोमीयै । पहली बंधै पाज । सुहणा माहें से  
 ठनें । संजलावै यह राज ॥ १२ ॥ ॥ ( ढाल ) ॥ ॥ एम कही यह  
 आयो राते । सारथ बाहुनें सुहणें जी । पाशतणी प्रतिमा तुं लेजे । लेतो  
 शिरमत धुणे जी ॥ १३ ॥ ( एम० ) पांचशैटका तेहनें आपे । अधिको म  
 आपिस वारोजी । जतन करी पुहचाने थानकि । प्रतिमा गुण संजारो  
 जी ॥ १४ ॥ ( एम० ) तुजनें होसी बहु फलदायक । जाई गोठीनें सुण  
 जे जी । पूजीस प्रणमीस तेहनापाया । ग्रहज्जीनें थुणजे जी ॥ १५ ॥ ( एम० )  
 सुहणो देईनें सुरचाढ्यो । अपने थानक पहुतो जी । पाटण माहें सारथवाह  
 हींडे तुरकनें जोतो जी ॥ १६ ॥ ( ए० ) ॥ तुरकै जातां दीगो गोठी । चो  
 खा तिलक लिखामै जी । संकेत पहुतो साचोजाणी । बोजावै बहुजामै  
 जी ॥ १७ ॥ ( ए० ) मुज घरि प्रतिमा तुजनें आपुं । श्रीपाश जिणैसर केरी  
 जी । पांचसै टका जो मुज आपे । मोलन मांगुं फेरीजी ॥ १८ ॥ ( ए० )  
 नांणो देई प्रतिमा लेई । थानक पहुतो रंगैजी । केशर चंदन मृगमद बोली  
 विधसुं पूजा रंगैजी ॥ १९ ॥ ( ए० ) गादी रूनी रूनी कीधी । ते माहि  
 प्रतिमा राखैजी । अनुक्रम आव्या परिकरमांहे । श्री संघनें सुरसाखै जी  
 ॥ २० ॥ ( ए० ) उठव दिन २ अधिकाथायै । सत्तर जेद सनाचो जी ।  
 ठाम २ ना दरशण करवा । आवै लोक प्रजातो जी ॥ २१ ॥ ( ए० ) ॥ ॥  
 ( दूहा ) इकदिन देखै अवधिसुं । परिकर पुरनो जंग । जतनकरुं प्रतिमा  
 तणो । तीरथ अठे अजंग ॥ २२ ॥ सुहणो आपे सेठनें । थज अठवी  
 नज्जाम । महिमा थास्यै अति वणी । प्रतिमा तिहां पुहचाड ॥ २३ ॥ कुश  
 ल खेम तिहां अठे । तुजनें मुजनें जाणि । संका ठोनी काम करि । कर

तो मकरि संकाणि ॥ २४ ॥ ॐ ॥ ( हाज ) ॥ ॐ ॥ पाश मनोरथ पूरा करै ।  
 वाहण एक वृषज जो तैरै । परिकर्यी परियाणो करै । इक थल चढ बीजै  
 उत्तरै ॥ २५ ॥ वारै कोम आच्या जेतलै । प्रतिमा नविचालै ते तलै ।  
 गोठी मनह विमामण थई । पास जुवन मंभावुं सही ॥ २६ ॥ आ अटवौ  
 किमकहं प्रयाण । कुटको कोइ नदीसै पाहाण । देवल पाम जिनेमर तणो  
 मंभावुं किम गरथे विणो ॥ २७ ॥ जलविन श्रीसंवरहस्ये किहां । सिखा  
 वदो किम आवे इहां । चितातुर थयो निद्रालहै । यहाराज आवीनै कहै  
 ॥ २८ ॥ गुंढली ऊपर नांणो जिहां । गरथवणो जाणी जे तिहां । स्व  
 स्तिक सोपारानै ठाणि । पाहाण तणो उखटस्ये खाणि ॥ २९ ॥ श्रीफल  
 सजल तिहां किज जुओ । अमृत जल नीरसरमी कृओ । खाराकृआ तणो  
 इह मैनाण । नृमि पड्यो ठे नीजो ठाण ॥ ३० ॥ सिखावदो सीरोही वसै ।  
 कोटपराजवियो किममिसै । तिहां थकी तूं इहां आण जे । सत्यवचन मा  
 हरो मान जे ॥ ३१ ॥ गोठीनो मनथिर थापियो । सिखावदनें सुहाणो दि  
 यो । रंगगमीनै पूरुं आस । पाश तणो मंमे आवास ॥ ३२ ॥ सुपन मांहे  
 मान्यो नेवैण । हेम वरण देखाडयो नेण । गोठी मनह मनोरथ हुवा । सि  
 खावदने गया तेम्वा ॥ ३३ ॥ सिखा वदो आवे सूरमो । जामे खारखान  
 वृत चूरमो । घमै घाट करै कोरणी । लगन जल पाया रोपणी ॥ ३४ ॥  
 धंज २ कीधी पृतली । नाटक कोतिक करनी रखी । रंग मंरूप रलियाम  
 णो रमे । जोनां मानवनों मन वमे ॥ ३५ ॥ नापायो पूरो प्रासाद । स्वर्गस  
 मो मंमे आवास । दिवश विचारी डंमो बढयो । ननखिण देवल ऊपर  
 चढयो ॥ ३६ ॥ शुज लगन शुज वेलावास । पत्रामण बैठा श्रीपास । मणि  
 मोठा भेरममान । एकल मिल वगने खै वान ॥ ३७ ॥ वान पुराण मं सां  
 जला । तवन मांदि सूर्या सांकरा । गोठी तणा गोतगीया छे । थोत्र करीनै  
 पर्नै पडे ॥ ३८ ॥ ॐ ॥ ( हहा ) ॥ विवन विनारण जगि । तेहनो  
 अकल मरूप । भोत करै श्रीमंवरमै । देखामे नि ॥ ३९ ॥ गिहओ  
 गोनी पाशजिन । आपे अयजंनार । नादि ॥ श्रीमंवरनै । आस्या पूरण  
 हार ॥ ४० ॥ नील पलाणै नीलहय ।

मानवी । वाट दिखावण हार ॥ ४१ ॥ ❀ ॥ ( ठाल ) ॥ वरण अठार तणो  
 लहै जोग । विघन निवारै टाले रोग । पवित्र थई समरै जे जाप । टाले  
 सगला पाप संताप ॥ ४२ ॥ निरधननइ धरि धननो सूत । आपै अपुत्री  
 यानें पुत्र । कायरनैं सूरापण धरै । पार उतारै लछी वरै ॥ ४३ ॥ दो जा  
 गीनैं दे सोजाग । पग विहूणानैं आपै पग । ठाम नहीं तेहनैं धैठाम । मन  
 बंभित पूरै अजिराम ॥ ४४ ॥ निरधार्यानैं धे आधार । जवसायर उतारै  
 पार । आरतीयानी आरत जंग । धरै ध्यान ते लहै सुरंग ॥ ४५ ॥ समरचां  
 साद दीये यक्ष राज । तेहना मोटा अठै दिवाज । बुद्धि हीणनैं बुद्धि प्र  
 कास । गूंगानैं धै वचन विलास ॥ ४६ ॥ दुखियानैं सुखनो दातार । जय  
 जंजण रंजण अवतार । बंधन तूटै वेनी तणा । श्री पार्श्वनाम अक्षर सम  
 रणा ॥ ४७ ॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ ❀ ॥ श्री पार्श्वनाम अक्षर जपे । विश्वानर विक  
 राज । हस्त यूथ दूरैटलै । दुधर सींह सियाल ॥ ४८ ॥ चोरतणा जयचक्र  
 वै । विष अमृत नुफकार । विषधरनो विष उतारै । संग्रामें जय जय कार ॥ ४९ ॥  
 रोग सोग दाजिद्र दुख । दोहग दूर पुजाय । परमेश्वर श्री पाशनो ।  
 महिमा मंत्र जपाय ॥ ५० ॥ ❀ ॥ ( कनखानी चाल ) २ ॥ ❀ ॥  
 नंजितुं नंजितुं नंज नपशम धरी । नंजितुं श्री श्रीपार्श्व अक्षर जपंतै ॥ नृत्तनैं  
 प्रेत जोटिंग व्यंतर सुरा नपसमै । वार इक्कीश गुणंतै ॥ ५१ ॥ ( नं० ) दु  
 धरा रोग सोगा जरा जंतनैं । ताव एकांतरा दुत्तपंतै । गर्जबंधन व्रणं सर्प  
 विहू विषं । चालिका बालमेवा ऊखंतै ॥ ५२ ॥ ( नं० ) साइणी माडणी रोहणी  
 रंकणी । ठोटका मोटका दोषहुंतै । दाढ उंदरतणी कोल नोला तणी । स्वा  
 नं रंगाल विकरालदंतै ॥ ५३ ॥ ( नं० ) धरणेंद्र पदमावती ममरसोजावती ।  
 वाट आधि । चटवी अटंतै । लखमी लोपुं मिलै सुजश बेलावलै । मयल  
 आस्या फलै मन जंते ॥ ५४ ॥ ( नं० ) अष्ट महाजय हरै कान पीनाद  
 लै । उतारै सूज मीमग । वदत वर प्रीतसुं प्रीति विमला प्रभू । श्रीपार्श्व  
 जिन नाम अजिराम मंतै ॥ ( नंजितुं ) ॥ ❀ ॥ इति श्रीगोपी पार्श्व  
 नाथजी वृद्धस्तवन मं० ॥ ❀ ॥ ३१ ॥ शिवाश पर्वोधिकारः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ माघ मास मध्ये पर्वाधिकार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ माघ महिनेमें, मिति माघ वदि १३ ( सो ) मेरु तेरस नाम  
 सें पर्व प्रसिद्ध है । ( इस दिन ) श्रीरुषभ देव स्वामीको निर्वाण कल्या  
 णक है । ( इसीसे ) जगवंत महाराज इसदिनको उत्तम कहा है । ( इस  
 दिन ) चौविहार उपवास करै । रत्नामई, पांचमेरु जगवानके आगे चढा  
 वै । बीचमें १ बसो मेरु । च्यारुं दिश ढोढामेरु । ( ऐसैं ) पांच मेरु चढावै ।  
 ऐसी शक्ती न होय ( तो ) सोनेके । चांदीके ( वा ) धृतके । मेरु करके च  
 ढावै । आगे चारुं दिश तरफ चार चार नंदावर्त्त करै । अष्टप्रकारी  
 सत्तर जेदी । पूजा पढायके । अष्ट द्रव्यसें पूजाकरै ॥ ❀ ॥ पीठे ॥ १ ॥  
 श्रीरुषभदेव स्वामी पारंगताय नमः ) ॥ इसी पदको दो हजार गुणनो करै ।  
 और जो कोई तेरसके दिन पोशह करै ( तो ) पूजादिक सब विधि पार  
 णेके दिन करै । अतिथि संविज्ञाग करके पारणो करै । इसी विध संयुक्त  
 १३ तेरै वरश ( अथवा ) १३ तेरै मास तपस्या करै । पीठे शक्ति माफ  
 क बहुत उठवसें उद्यापन करै । तीर्थोंकी यात्रा करै । साहमी वठल  
 ( करै ॥ इहां दृष्टांत कहतेहैं ॥ ( जैसे ) अयोध्या नगरीमें । अनन्तवीर्य रा  
 जाको पुत्र । पिंगल राय कुमार । गांगिल मुनीके पास । इस पर्वका अ  
 धिकार सुनके । तपस्या करी । तपस्याके करनेसे । सर्व रोग दूर हुये ।  
 तपस्या पूर्ण होनेसें । तेरै १३ मंदर बनवाया । १३ तेरै रत्नां मई । सुवर्ण  
 मई । रूपे मई । प्रतिमा स्थापन करी ॥ १३ बेर संघ सहत तीर्थों की या  
 त्रा करी । तेरै बेर साहमी वठल किया । बहुत प्रकारसें ज्ञान जक्ति  
 करी । अंतमें महसेन कुमारको राज्य देके । श्रीसुव्रताचार्य समीपे दिक्षाग्र  
 हण करी । अनुक्रमे चवदे पूर्वको पढके । सर्व कर्मको क्षय करके । अ  
 नंत सुखको प्राप्त हुवा । इसी का विस्तार संबन्ध । मेरु तेरशका बखाण  
 सुणनेसें मालुम होगा । जो जव्य जीव इस पर्वको विधि संयुक्त सेवन  
 करेगा । ( सो ) इस जवमें परजवमें अनेक सुखको प्राप्त होगा ॥ ❀ ॥  
 इति माघ मास पर्वाधिकारः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥

मानवी । वाट दिखावण हार ॥ ४१ ॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ॥ वरण अठार तणो  
 लहै जोग । विघन निवारै टालै रोग । पवित्र थई समरै जे जाप । टालै  
 सगला पाप संताप ॥ ४२ ॥ निरधननइ धरि धननो सूत । आपै अपुत्री  
 यानें पुत्र । कायरनैं सूरापण धरे । पार उतारै लह्यो वरै ॥ ४३ ॥ दो जा  
 गीनैं दै सोजाग । पग विहूणानें आपै पग । ठाम नहीं तेहनें छैठाम । मन  
 बंढित पूरै अजिराम ॥ ४४ ॥ निरधारयानें छे आधार । जवसायर ऊतारै  
 पार । आरतीयानी आरत जंग । धरै ध्यान ते लहै सुरंग ॥ ४५ ॥ समरघां  
 साद दीये यक्ष राज । तेहना मोटा अठै दिवाज । बुद्धि हीणनैं बुद्धि प्र  
 कास । गूंगानें छै वचन विलास ॥ ४६ ॥ दुखियानें सुखनो दातार । जय  
 जंजण रंजण अवतार । बंधन तूटै वेनी तणा । श्री पार्श्वनाम अक्षर सम  
 रणा ॥ ४७ ॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ ❀ ॥ श्री पार्श्वनाम अक्षर जपै । विश्वानर विक  
 राज । हस्त यूथ दूरेटलै । दुधर सींह सियाल ॥ ४८ ॥ चोरतणा जयचक्र  
 वे । विष अमृत नुस्कार । विषधरनो विष ऊतारै । संग्रामें जय जय कार ॥ ४९ ॥  
 रोग सोग दाजिद्र दुख । दोहग दूर पुजाय । परमेशर श्री पाशनो ।  
 महिमा मंत्र जपाय ॥ ५० ॥ ❀ ॥ ( कम्बुखानी चाल ) २ ॥ ❀ ॥  
 नंजितुं नंजितुं नंज उपशम धरी । नंजि श्री श्रीपार्श्व अक्षर जपंतै ॥ चूतनैं  
 प्रेत जोटिंग व्यंतर सुरा उपसमे । वार इकवीश गुणंतै ॥ ५१ ॥ ( नं० ) दु  
 धरा रोग सोगा जरा जंतनैं । ताव एकांतरा दुत्तपंतै । गर्जबंधन व्रणं मर्प  
 विहू विषं । चालिका बालमेवा ऊखंतै ॥ ५२ ॥ ( नं० ) साइणी राइणी रोहणी  
 रंकणी । ठोटका मोटका दोषहुंतै । दाढ नंदरतणी कोल नोला तणी । स्वा  
 न रंगल विकरालदंतै ॥ ५३ ॥ ( नं० ) धरणेंद्र पदमावती समरसोजावती ।  
 वाट आधा चटवी अटंतै । लखमी लोहुं मिलै सुजश वेलावलै । सयल  
 आस्या फलै मन जंते ॥ ५४ ॥ ( नं० ) अष्ट महाजय हरै कान पीनाद  
 ले । ऊतारै सृज मोमि । वदत वर प्रीतसुं प्रीति विमला प्रभू । श्रीपार्श्व  
 जिन नाम अजिराम मंतै ॥ ५५ ॥ ( नंजितुं ) ॥ ❀ ॥ इति श्रीगोपी पार्श्व  
 नाथजी वृक्षस्तवन सं० ॥ ❀ ॥ ३५ पंचमाश पर्वधिकारः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ माघ माश मध्ये पर्वाधिकार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ माघ महिनेमें, मिति माघ वदि १३ ( सो ) मेरु तेरस नाम  
 सें पर्व प्रसिद्ध है । ( इस दिन ) श्रीरुषभ देव स्वामीको निर्वाण कल्या  
 णक है । ( इसीसे ) जगवंत महाराज इसदिनको उत्तम कहा है । ( इस  
 दिन ) चौविहार उपवास करै । रत्नामई, पांचमेरु जगवानके आगे चढा  
 वै । बीचमें १ बमो मेरु । च्यारुं दिश ढोढामेरु । ( ऐसैं ) पांच मेरु चढावै ।  
 ऐसी शक्ती न होय ( तो ) सोनेके । चांदीके ( वा ) धृतके । मेरु करके च  
 ढावै । आगे चारुं दिश तरफ चार चार नंदावर्त्त करै । अष्टप्रकारी  
 सत्तर जेदी । पूजा पढायके । अष्ट द्रव्यसें पूजाकरै ॥ ❀ ॥ पीठे ॥ १ ॥  
 श्रीरुषभदेव स्वामी पारंगताय नमः ) ॥ इसी पदको दो हजार गुणनो करै ।  
 और जो कोई तेरसके दिन पोशह करै ( तो ) पूजादिक सब विधि पार  
 णके दिन करै । अतिथि संविज्ञाग करके पारणो करै । इसी विध संयुक्त  
 १३ तेरै वरश ( अथवा ) १३ तेरै माश तपस्या करै । पीठे शक्ति माफ  
 क बहुत उठवसें उद्यापन करै । तीर्थोंकी यात्रा करै । साहमी बठल  
 ( करै ॥ इहां दृष्टांत कहतेहैं ॥ ( जैसें ) अयोध्या नगरीमें । अनन्तवीर्य रा  
 जाको पुत्र । पिंगल राय कुमार । गांगिल मुनीके पास । इस पर्वका अ  
 धिकार सुनके । तपस्या करी । तपस्याके करनेसे । सर्व रोग दूर हुये ।  
 तपस्या पूर्ण होनेसे । तेरै १३ मंदर बनवाया । १३ तेरै रत्नां मई । सुवर्ण  
 मई । रूपै मई । प्रतिमा स्थापन करी ॥ १३ बेरु संव सहत तीर्थों की या  
 त्रा करी । तेरै बेर साहमी बठल किया । बहुत प्रकारसें ज्ञान भक्ति  
 करी । अंतमें महसेन कुमारको राज्य देके । श्रीसुव्रताचार्य समीपे दिहाय  
 हण करी । अनुक्रमें चवदे पूर्वको पढके । सर्व कर्मको कृत्य करके । अ  
 नंत सुखको प्राप्त हुवा । इसी का विस्तार संबन्ध । मेरु तेरशका बखान  
 सुणनेसें माखुम होगा । जो जव्य जीव इस पर्वको विधि संयुक्त सेवन  
 करेगा । ( सो ) इस जवमें परजवमें अनेक सुखको प्राप्त होगा ॥ ❀ ॥  
 इति माघ माश पर्वाधिकारः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥



॥ ❀ ॥ अथ फाल्गुन मास मध्ये पर्वाधिकार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ फाल्गुन महिनेमें, मिति फाल्गुन सुद १४ ( सो ) तीसरे चौ मासे की चौदश नामसें पर्व प्रसिद्ध है । इस दिनको ( सर्व कर्त्तव्य ) आषाढ चौमासे तुल्य करें । सो पूर्वे लिख्यो हे ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इहां विशेष होलीको अधिकार लिखते हैं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रमण जगवंत श्रीमहावीर स्वामी । चार मासमें, ६ ढमोटका पर्व कहा । ३ तीन चौमाशा । २ दो ञ्जी । १ पर्यूपणा । एवं ६ । ( जिसमें ) २ ञ्जी । १ पर्यूपणा । यह ३ पर्वका अष्टाई महोत्सवतो सर्व ठिकाणें ज व्य जीव करतेहैं । और कार्तिक चौमाशेका उत्सव प्रायें बहुत ठिकाणें होता है । ( परंतु ) कलकत्ते जैसा महोत्सव कोई ठिकाणें देखा नहीं । ( और ) फाल्गुन चौमाशेका उत्सव मुर्शिदाबादमें अठ्ठा होता है । पर कोई महोत्सव में आज्ञा विरुद्ध जो काम होय ( सो ) प्रशंसनीक नहीं । एकतो जगवंतके समोसरणके साथ । आज कालके । अमीर लोक । धूपकै रुसै, खेह के रुसै । आपतो जाते नहीं ( निकवेल ) असमज पुरुषाकों चेज देतेहैं । पीठे वे पुरुष मदोन्मत्त हुए थके । कूदतां, नाचतां, जागतां, । सम वसरणकों उगाला देते लेजाते हैं । ( उसमें ) जितनी आशातना होती है । जितना कर्मबंधता हैं । उसका जागी हम नहीं ॥ जगवंत को धर्म विनय मूल १ । दया मूल २ । चारित्र मूल ३ है । ( इसमें ) धन्य है जिसके माता, पिता ( सो ) विनय विवेक संयुक्त शुद्धभावसें । सर्व धर्मकार्य करके धर्मको उद्योत करेंहैं । उसी पुरुषाकों नमस्कार हे । उमी महोत्सवकी प्रशंसना है । ( इसीसें ) आत्मारथी धर्मज्ञ पुरुष है ( सोतो ) शेषका चौमाशा पर्व जानके । सर्व ठिकाणें । जगवंतके धर्मको उद्योत करते थके । शुभ ध्यानरूप अग्नीसें ( अष्टकर्म ) रूपी काष्ठकों जलाके होली करते हैं । ( पीठें ) सुबोध जलमें स्नानकरके अत्यन्त सुन्दरता को प्राप्त होते हैं ॥ अब द्रव्ये जावे दो प्रकारमें, होलीका अधिकार कहणों की इत्थायें ( प्रथम ) द्रव्य होलीका अधिकार लिखते हैं ॥ ❀ ॥

इम फाल्गुण मासमें चौदश पूर्णमासी के दिन ( कई ) अज्ञानी जीव

विवेकमें, श्री जिनधर्ममें, विकल हुए थके । नीच जातके परंपराकों प्राप्त हुए थके । लकम ठाणादिक जलायके अग्निमई द्रव्य होलिका करै है । महा उत्तम चौमाशै पर्वका विराधन करै है । ( दूसरे दिन ) मलमुत्रादिकमें क्रीमा करै है । खोटा वचन बोलै है । रासज माथे चढ़ै है । अनेक जीवांकों दुःख उत्पादन करै है । ( ऐसे जीव ) शुद्ध बीतराग देवकी आग्याओ मके । ज्ञान ज्ञरमा के कुल परंपराकों प्राप्त होते है । मिष्टान्न भोजनका खाणा भोमके । विष्टाको भोजन करते हैं । दूधका पीणा भोमके । जानते थके पिसाब पीते हैं । ( ऐसे पुरुष ) निकेवल कर्मके बंध सघन करके । नीच गतिकों उपार्जन करते हैं । अनर्थदंभमें अनन्त जव संसारकी स्थिति बांधते हैं । ( इस वास्ते ) आत्मार्थी जव्यजीवांकों । इस माफक । द्रव्य होली करनी उचित नहिं । ( निकेवल ) जाव होली करनी उचित है ॥ वसंतके स्तवन बोलै । रात्री जागण करावै । जगवानके मंदरमें पूजा करावै । महोदव निकालै । नाना प्रकारके नाटक करै । साहमी बजल करै । साधमीं जाई आपसमें नाना प्रकारकी क्रीमा करै । ( आगे ) राजा लोक श्री वसंत ऋतु आनेमें सज्जन संबंधी साथ । नाना प्रकारके । जल । चंदन । केशर । अवीर । गुलाल । इत्यादिकमें क्रीडाकरी ( सोतो ) फेरजी शास्त्रोंमें देखते हैं । ( परंतु ) यह मल मुत्रादिकमें खेलना । होली जलानी । पादत्राण खाणा । जंम चेष्टा करनी । अपने धर्मकी मर्यादा । अपने कुलकी मर्यादा । सर्व भोमके । ज्ञांड ज्ञरमाके गोदी बैठना । ज्ञान ज्ञरमा के कुलकी मर्यादा करनी । ऐसी क्रीमा उत्तम पुरुषोंके ( और ) जिनधर्म वाले जव्य जीवोंके । कोई ठिकाणें करनी कही नहीं । यह क्रीमा निकेवल महामिथ्यात्वी नीच पुरुषोंने चलाई ही । उसी पुरुषोंके देखादेख प्रायें अज्ञानी जीवः सबकोई करनेकों लग गए । ( देखो बड़ा आश्चर्य है ) । जव मंदरजीमें पूजादिक महोदवका काम होता है । उस वखत बहुत कों फुरसत न होती है । ( और जो केइ आते है ) । उनोंकों स्त्रात्रिया होनेमें । अगामी नाटक करने में । बनी लज्जा माछम होती है । ( और होलीके दिन ) माता, पिता, जाई वैन, सर्वकी लज्जा भोमके । बहुत

दिलमें खुसी होके । पागलके माफक । उपानत खाते फिरते हैं । मन आवे ज्युं बोलतेहैं । कोई बेइयादिक का नाटक करायकै हज्जारें बगशीस कर देते हैं । मनमें जानें, हमनें बड़ा नाम किया । पर अहो जाइयो । इसमें तुमारा कुछ नाम नहीं है । निकेवल महा अशुभ कर्म पैदा होता है । तुमारा कल्याण जवई होगा । ऐसी उमंगसें सर्व की लज्जा ठोमके । जगवानका उठव करो । रात्री जागण करो । नाटक करो । धर्मका उद्योत करो । ( इसी तरे ) होली खेलो ( सो ) तुमारा इह जव बी सुधेंगे । परजवबी सुधेंगे । ( यह ) द्रव्य, जावे, दौनुं होलीका, यथावस्थित स्वरूप लिखा है । इसको आत्मार्थी धर्मज्ञ पुरुष तो देख करके प्रसन्न होंगे । यह खोटे मारग को बंध करने की प्ररूपणा रखेंगे । ( और जो ) महामूर्ख अज्ञानी जीव होंगे ( सो ) अपने खेलनेके वास्ते । सच्ची बातकोंनी कुयुक्ती लगायके जुठ ठहरावेंगे । महारोस धारण करेंगे । ( जैसें ) कोइके पिताको गाली देनेसें रोस उत्पन्न होय ( इसी तरे ) यह जंम चेष्टा की निंदना देखके महारोस धारण करेंगे । ( और जो ) मध्यस्थ जीव होंगे ( सो ) ऐसा बोलेंगे । यह बात सच है । किसका पर्व है । किसका खेलना है । निकेवल इसमें अनर्थ दंरु लगता है । ( परंतु ) हम इकेजा क्या करें । सर्व जाई बंधकों खेलते देखके । हमसें रहा जाता नहीं । इससें खेलने हैं । ( पर ) यह पृथा बंध होयतो अठोहै । ( इसीसें ) अहो देवानुप्रियो सर्व ठिकाणें यह नीच खेलकों ठोमके । उत्तम खेल खेलनेकी प्रवर्तना करो । जिससें तुमारा तप तेज सदा बढ़ता रहे । सदा आनन्द रहे । यह वारै माश के सर्व कर्तव्य । मैंने अपनी बुद्धिसें न लिखा है । ( किंतु ) प्राचीन आचार्योंके व्याख्यानकी पद्धति देखके । सर्व बालजनके उपगारार्थे संक्षिप्तसें शुद्ध जाषामें प्रगट किये हैं ( इसमें ) आगम विरुद्ध उगो अधको कहनेमें आयो होय ( तो ) त्रिकरण सुधे मिठामि डुकर देताहुं । ( और ) नीच कर्मके बंध ठोमानेकों । कठोर वचनजी बोला है ( सो ) चाचके । गुणको ग्रहण करना । परंतु रोस धारण न करना । मेरे तो शुद्ध नवकार मंत्र गुणने वाले हैं ( सो ) सर्व परम मित्र है । सर्वके तप तेज बढ़ते देख

कै, मेरा चित्तमें परम आनंद होता है । ( और ) त्रिकरण शुद्धै सर्व जीवा  
जोनिसें वेर वेर खमाता हुं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ खमिय खमाविय में खमिय । सबह जीव निकाय । सिद्धह  
साख आलोयण । मझह बैर नजाय ॥ १ ॥ सवे जीवा कम्मवसु । चवदह  
राज जमंत । तेमें सब खमाविआ । मझवितेह खमंतु ॥ इति फाल्गुन मा० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ जाव होली खेलनके स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ( रागधमाल ) होरी खेलियै नखहुन ऐसोदाव । ( हो० )  
दयामिठाई अति जलीरे । तप मेवा परधान । सील अथाणो अति जलो  
( वारी ) संयम नागर पान । ( हो० ) ॥ १ ॥ लेस्या मादल जाव रुफरे  
क्रोध मान दोय ताल । पांच सुमतिको अरगजो ( वारी ) नवतत्व लेहु  
गुलाल । ( हो० ) ॥ २ ॥ सुमता केसर घोलीयेरे । दमवाको ठिरकाव ।  
ग्यांन पिचरको पकरके ( वारी ) । सुगति बधू चितलाय । ( हो० ) ॥ ३ ॥  
ऐसा साज बनायकैरे । रूपदेव गुण गाय । श्री जिनचंद इम खेलतां  
( वारी ) जव जव पातिक जाय । ( हो० ) ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग वसंत होरी तालयत् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जय बोलोरे पाश जिनेशरकी ॥ ( ज० ) ॥ मस्तक सुगुटसोहै  
मनमोहन । अंगीया सोहै केशरकी । ( जे० ) ॥ १ ॥ त्रिभुवन ज्योति अखं  
फित तनकी । स्याम घटा जैसी जलधरकी ॥ ( ज० ) ॥ २ ॥ बालपणमें  
अदनुत ग्यानसुं । करुणा कीधी विषधरकी ॥ ( ज० ) ॥ ३ ॥ कमठ उभा  
य वायज्युं वादल । जीतकरी अपनैं धरकी ॥ ( ज० ) ॥ ४ ॥ मात वामा  
उयेरे जिनजायो । राणी अश्वसेन नरेसरकी ॥ ( ज० ) ॥ ५ ॥ अष्ट कर  
म दल सबल खपाए । श्रेणि चढ्या जे शिवपुरकी ॥ ( ज० ) ॥ ६ ॥ कहै  
जिन चंद मेरे प्रभुपारम । जैसी ढाया सुरतरु की ॥ ( ज० ) ॥ ७ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः वसन्त होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मधुवनमें जाय मची होरी ॥ ( म० ) ॥ ग्यान गुलाल अवीर न  
भावो । सुमता केशर रंगघोली ॥ ( म० ) ॥ १ ॥ अमृत रूप धरम जिन  
वरको । सुवह्मा कहै करजोडी ॥ ( म० ) ॥ २ ॥ इति पदं ॥ ३ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः वसंत होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ यादव मनमेरो हरलीयोरे ॥ ( या० ) ॥ संजम दूती कान लगी  
जव । शिवनारीपर चित्त दीयोरे ॥ ( या० ) ॥ १ ॥ तोरणथी रथ फेर चले  
हो । नवप्रव नेह अलग कीयोरे ॥ ( या० ) ॥ २ ॥ मोह जोरु गिरनार  
सिधाए । नेमि जिणंदने कहा कीयोरे ॥ ( या० ) ॥ ३ ॥ तुमहो तीन जु  
वनके साहिब । सुरनर कहै तुमे चिरंजीयोरे ॥ ( या० ) ॥ ४ ॥ वारवार  
मेरी वंदना हुयज्यो । चंद कहै मन हरखीयोरे ॥ ( या० ) ॥ ५ ॥ इतिपदं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः वसन्त होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इक सुणले नाथ अरज मेरी ( इ० ) ॥ १ ॥ इह संसार गहर  
तर सिंधु । जमर पमत जिहां जवफेरी ( इ० ) ॥ २ ॥ क्रोधादिक बहु  
मगर मद्ध है । ग्रहत जंतु नकरत देरी ॥ ( इ० ) ॥ ३ ॥ ऐसे जलधिसैं पार  
करो तो । तारण तरण विरुदतेरी ॥ ( इ० ) ॥ ४ ॥ धरम जिनेसर जग  
परमेश्वर । दूरकरो दुखकी बेरी ॥ ( इ० ) ॥ ५ ॥ परम कृपागुण दायक  
लायक । अनुपम कीरति जगतेरी ॥ ( इ० ) ॥ ६ ॥ इति पदं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सांवरो सुखदाई । जाकी जवि वराणि न जाई । ( आंकमी ) ।  
श्री अश्वसेन वामानन्दनकी । कीरति त्रिनुवन गाई । समेत सिखर गिर  
मंरुन प्रनुको । देख दरश हरखाई । हृदय मेरो अति हुलसाई ( सांव० )  
॥ १ ॥ आज हमारे मुरतरु प्रगट्यो । आज आनन्द बधाई । तीन नुवन  
को नायक निरख्यो । प्रगटी पूर्व पुणयाई । सफल मेरो जनम कहाई ॥  
( सांव० ) ॥ २ ॥ प्रनुके सरस दरश चिन पाये । जव जव जटक्योमें जाई  
अव नेरो चरण शरण चित चाहत । वाल कहै गुण गाई । प्रनुजीमें  
लगन लगाई ( सां० ) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः रागिणी वसन्त ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नैना हरखाइ । आज नेरी मूरत निरखी ॥ ( नै० ) ॥ जवजव  
संचित पाप करम सब । देखत दूर पुजाई । सुमति बधारण कुमति बिना

रण । ज्ञान विमल जलसाइ ॥ ( आज० ) ॥ १ ॥ वामानन्दन अतिठवि  
सुन्दर । महिमा वरणी नजाई । दीन दयाल दयाकर दीजै । आनन्द हरख  
सवाई ॥ आ० ॥ २ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मनमोहन गजगतकी गामनी । आज चली गिरनार कामिनी  
॥ ( म० ) ( आंकनी ) ॥ सुंदर रूप बनाय सखी सब । सिखरसेज जेसैं  
चमके दामनी ॥ ( म० ) ॥ १ ॥ नेम प्रजुको व्याह मनायो । मोसैं प्रीति  
लगाइ जामनी ॥ ( म० ) ॥ तोरण आय चले मोह ठोमी । कौन चूक  
मोपे काढी जामनी ॥ ( म० ) ॥ २ ॥ मेंन तजुंगी नव जव कैरी । प्रीत  
बनी जैसी इंडु दामनी ॥ ( म० ) ॥ ३ ॥ राजल पहली प्रीतम सेती । वा  
लकहे जई सुगति गामनी ॥ ( म० ) ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रंग लग्यो गुरु ज्ञान । होरी चेतन खेलै । ( रंग० ) शील सुरंगी  
चीरमंगाये । पहिरे आप सुजान ॥ ( हो० ) ॥ पर मन्दिर तज अविचल  
जीजै । धर्म दया धर ध्यान ॥ ( हो० ) ॥ हिल मिल आप परमरस चाखे  
सुमति सखी पहिचान ॥ ( हो० ) ॥ ज्ञान गुलाज लाज रंग लागे । सौत्रै  
अदनुत वान ॥ ( हो० ) ॥ सुमति अवीर उडाय जगतमें । बैठे शिव पुर  
थान ( हो० ) अनुभव राग मगन गुण गावै । तप जप सुन्दर तान ( हो० )  
ऐसा खेल जविक जन धारे । वंछित पावै दान ( हो० ) इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ( ताल यत् ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चिदानन्द खेलै फाग । हो हो होरी आई ॥ मन मृदङ्ग वजे त  
न मांहि । गावत आगम राग ( हो० ) ॥ ज्ञान गुलाज सदा रङ्ग लागे  
खेलत सुनत सुहाग ( हो० ) समकित केशर चीर रङ्गाउं । पहिरो मन  
वेराग ( हो० ) ॥ लाख चौराशी रामत ठांमी । च्यारुं गतिमें जाग ( हो० )  
अविचल सुख पंचम गति पावै । योग यतन कर जाग ॥ ( हो० ) ऐसा  
खेल जविक जन धारे । पावै जव दधि पार ( हो० ) चेतनता सुव होय  
जगत में । समकित के रङ्गजाग ( हो० ) ॥ ❀ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥



## ॥ ❀ ॥ ( पुनः होरी ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ होरी आई, मेरो मन जयो. प्रसन्न प्रसन्न जयो. प्रसन्न न न न हे  
( हो० ) ब्रज वनिता मिल नेम कुमार सङ्ग । फाग रमत हिये हसन हसन  
हसननन ननहे ( हो० ) ॥ १ ॥ बाजे तेताल मृदंग जाँऊ रफ । बी  
णा की धुनि जिम मेघ गरजन गरजन गरजन नन नहे ( हो० ॥ २ ॥  
उम्त गुलाल लाल जए बादल । हरि हलधर हीये हरखन हरखन हरखन  
नननहे ( हो० ) ॥ ३ ॥ सबल आधार चरण जिनजीको । सेवक को नित  
दीजीये दरशन दरशन दरशन न न नहे ( हो० ) ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ ( पुनः होरी ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ होरी खेलो नेमसें धाय धाय । पुरजनकी लाज मेरी करे  
बलाय ( हो० ) ज्ञान गुलाल अवीर उभावो । कृपा करो रङ्ग लाय लाय  
( हु० हो० ) ॥ १ ॥ शील संजम व्रत पान मिठाई । ध्यान धरुङ्गीमें  
गाय गाय ( हु० हो० ) ॥ २ ॥ अष्ट कर्म की खेह उभावो । ज्ञान हि  
येमें लाय लाय ( हु० हो० ) ॥ ३ ॥ जगत चन्दकी अरज बीनती । श  
रण गहीमें तेरी जाय २ ( हु० हो० ) ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मेरे घटकी गगरया रङ्गसें जरी । शिव पुरकी बात पूहुं कवकी  
खरी । ( मे० ) परम जोत प्रनु सिद्ध सिला पर । परमात्म निज ध्यान  
धरी । ( शि० ) ॥ १ ॥ मोहन रङ्गजरो रंग शिवपुर । अजर अमर पद  
सुखकरी ( शि० मे० ) ॥ २ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ में नें देखी अनोखी होरीरे ( में० ) सहसा वनकी कुंजगजिन  
में । अनुपम मोर मच्यो री ( अ० ) ॥ १ ॥ यादवपति श्रीनेमकुमारजी ।  
सुमतामखी मिल गौरी ( अ० ) ॥ २ ॥ सुमता केशरजर पिचकारी ।  
मारत है बर जोरी ॥ ( अ० ) ॥ ३ ॥ ज्ञानगुलाल उमै अतिजारी । अ  
वीर उमै जगजोरी । ( अ० ) ॥ ४ ॥ कपूर कहै प्रनु मोकुं खेलावो । अर  
ज सुणो डक मोरी ( अ० ) ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ पुनः होरी ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इकसुणलै नाथ अरज मेरी इस चालमें ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तुमे ध्यावोरे अंतरीक पारसकुं ॥ तु० ॥ अंतरीक प्रनुके ध्यावणसैं  
दूरकरे दुख दालिद्रकुं ॥ तु० ॥ अस्वसेन कुलमें चिंतामणि । जिमरवि ऊगो  
सरदरुतुकुं ॥ तु० ॥ १ ॥ बांमानर अवतार लियोहै । जव्यजीवनैं तारणकुं  
॥ तु० ॥ नील वरण तनज्योति अखंमति । लंठन अहि सुखकारणकुं ॥ तु० ॥  
॥ २ ॥ दक्षिणदिशमें सिरपुर नगरे । जिहां जेठ्या जिनराजकुं ॥ तु० ॥  
पार्थप्रनुको दरशण पायो । दूर हुआ जव जटकणसुं ॥ तु० ॥ ३ ॥ प्रगट  
प्रनुको अतिशय पेख्यो । अधर रहत जूमि ऊपरकुं ॥ तु० ॥ कपूर कस्तूरी  
केशर चंदन । अष्टद्रव्य लेके पूजनकुं ॥ तु० ॥ ४ ॥ अष्टकरम शत्रूकुं जीपके ।  
जायचढ्या राजशिवपुरकुं ॥ तु० ॥ दूधेड्या गोत्र उत्तम बुधसिंहपति । वि  
शनचंद हितकारणकुं ॥ तु० ॥ ५ ॥ जगणीसैं गुणतीसैं फागुण । यात्राकरी सुद  
तेरशकुं ॥ तु० ॥ श्री अजेराज ग्यानकुं चाहे । मुक्ति कमल इठा पूरणकुं  
॥ तु० ॥ ६ ॥ इति श्रीअंतरीक पार्थजिन स्तवनं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ पुनः होरी राग काफी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ बावो रूपन बैठे अलबेले । मारो गुलाल मुठी जरके ।  
बावो० ॥ मुठी जरके पसली जरके ॥ बावो० ॥ चुआ चुआ चंदन और  
अरगजा । केशरकी मटकी जरके ॥ बावो० ॥ १ ॥ रतन जडित शिर  
उत्र विराजे । अंगी जनाव जमी जरके ॥ बावो० ॥ २ ॥ बाहैं बाजूबंध  
बहिरखा विराजे । फूलनके गजरे सरके ॥ बावो० ॥ नाजिराया मल्हे  
बीको नंदन । रमियैं जवि आदेशरसैं ॥ बावो० ॥ आदिखान है दास तु  
मारो । तार लीओ अपनो करकैं ॥ बावो० ॥ ४ ॥ ॥ इति ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नेमन जाणैं मोरी पीर । पीर पर रर रर रर । नेमन जाणैं० ॥  
तोरणथी रथ फेरवी चाल्या । दाऊयो हैयमा केरो हीर । हीर अर रर रर रर ॥  
नेम० ॥ १ ॥ चंदबदनी मृग लोवणीरे । प्रेमनो मारयो सुनैं तीर । तीर तर  
ररररर ॥ नेम० ॥ २ ॥ आंशुनां जरती धरणी दलीरे । जाणे आशाढो

नीर । नीर ऊरररररर ॥ नेम० ॥ ३ ॥ शिवराज कहे नेम राजुलेंरे । कर्म  
रूपीआं फाड्या चीर । चीर चरररररर ॥ नेम० ॥ ४ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ पुनः होरी राग टप्पो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गिरिराजकुं हमारी वंदनारे । जिनराजकुं हमारी वंदनारे ॥  
अब दुःख वारण शिवसुख कारण । देखत अब नहीं फंदनारे ॥ गिरि० ॥  
॥ १ ॥ नाजिराया मरु देवीको नंदन । प्रणमुं रुषजं जिनंदनारे ॥ गिरि०  
॥ २ ॥ निशि वासर प्रनु ध्यान तुमारो । जिम चातक दिल चंदनारे ॥  
॥ गिरि० ॥ ३ ॥ चतुर कुशल कहे शरण तुमारो । सिधगिरि कर्मनिकंद  
नारे ॥ गिरि० ॥ जिन० ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः राग होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दरशन कीयो आज सिखरगिरिको ॥ दर० ॥ देख्यो मधु  
वन शीता नालो । ताको नीर वहेहे अति नीको ॥ दर० ॥ १ ॥ वीश को  
शथी दरशन दीठो । जागो जरम सकल जियको ॥ दर० ॥ २ ॥ वीशे ठुंके  
वीश गोमटनी । तामें चरण जिनेसरको ॥ दर० ॥ ३ ॥ अब जिनवरके  
शरणे आयो । रसतो पायो मुगति पदको ॥ दर० ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सिध गिरि जीको दरशन करले ॥ संव यात्रा । संवयात्रा  
करनेसैं पाप कटत है । सिध० ॥ ( आंकणी ) कोटि अनंता इन गिरि  
सिधा । ताकुं शीश नमय ले ॥ संव० ॥ ॥ १ ॥ रिखज जिनेश्वरजीको  
दरशन । शुद्ध आतम पावन करले ॥ संव० ॥ २ ॥ रूपचंद कहे नाथ  
निरंजन । अब अबका दुःखहरले ॥ संव० ॥ ३ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मेरो चेतन खेले होरीरे । ऐसी होरी । आज वरजोर रही ॥  
मेरो० ॥ मन कर मोज प्रेमकर पाणी । करुणा केशर घोरी ॥ ऐसी० ॥ १ ॥ दया  
मिठाई तप बहु मेवा । समरस विमल कटोरी ॥ ऐसी० ॥ २ ॥ गुरुके वचन  
वारी मृदंग वजतहे । दे रफ ज्ञान कटोरी ॥ ऐसी० ॥ ३ ॥ दान कहे  
सुमता सखीयनसैं । चरण रहो छग छग जोरी ॥ ऐसी० ॥ ४ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अनंतानंत प्रनुजीनी वाणी । आशातना तजरे प्राणी ॥  
अनंता० ॥ श्री शीतल जिन शीतल वचने । जाव दया चित्त आणी  
अनंता० ॥ १ ॥ जे जीव देव द्रव्यने खावे । थई लोभ वशे अन्नाणी ॥  
अनंता० ॥ २ ॥ सागर शेठ परें दुःख पामी । थई नारकीये शं प्राणी ॥  
अनंता० ॥ ३ ॥ देवद्रव्य जे विधि ए वधारे । ते जिन थई वरे शिवराणी ॥  
अनंता० ॥ ४ ॥ धर्मचंदकर जोडी रागें । तारजो केवल नाणी ॥ अनंता० ॥ ५ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॥ मोहे अपने रंगमें रंगदे ॥ मेरे साहेब । मेरे साहेब ।  
आदि जिणंद चंद ॥ मोहे० ॥ ( आंकणी ) ॥ रंग तुंही रंग रेज तुंही  
हे । संजम रंग मोहे रंगदे ॥ मोहे० ॥ १ ॥ रंग मिथ्यात लग्यो हे  
अनादि को । सो अब इनकुं खिनदे ॥ मो० ॥ २ ॥ रत्नत्रयी रुद्धि तेरीमें  
देखी । मो अब मुजकुं सजदे ॥ मो० ॥ ३ ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र रंग हे ।  
वाविच केवल धरदे ॥ मोहे० ॥ ४ ॥ कहत नूधरदास ममकित पावे ।  
आप समाना करदे ॥ मोहे० ॥ ५ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मेरे पाश प्रनुजीके रंग मरुप मांहे । खेलत संत वशंत ॥  
ज्ञान गुलाल विवेक अरगजा । विनय अवीर विलसंत ॥ मेरे० ॥ १ ॥  
प्रनुगुण प्रेम पिचरकी बूटत । समता सखिय मिलंत ॥ आगम लहर  
फूली फूलवाडी । मुनिवर भ्रमर गुंजंत ॥ मेरे० ॥ २ ॥ अंग आचूषण  
पंचेंद्रिय वश । गुरु सेवा मजहंत ॥ बार जावना गहेर कसुंवा । पीवत मन  
हरखंत ॥ मेरे० ॥ ३ ॥ अद्भुत पंचमहाव्रत वागा । पहिरे तन शोहंत ॥  
कहे जिन चंद्र प्रनुकी कृपासे । निरखे नवल वशंत ॥ मेरे० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रंग मच्यो जिन द्वार ॥ चालो खेली ए होरी ॥ पाशजीके  
दस्वारे ॥ चालो० ॥ फागुनके दिनचार ॥ चालो० ॥ रंग० ॥ ( आंकणी )  
॥ कनक कचोली केशर घोली । पूजो विविध प्रकारे ॥ चालो० ॥ १ ॥

कृष्णागस्को धूप घटत हे । परिमल महके अपाररे ॥ चालो० ॥ २ ॥  
 लाल गुलाल अवीर उभावत । पाशजीके दरवाररे ॥ चा० ॥ ३ ॥ जर  
 पिचकारी गुलालकी बिरको । वामा देवी कुमाररे ॥ चालो० ॥ ४ ॥  
 ताल मृदंग वीण रुफ वाजे । जेरी जुंगल रण काररे ॥ चालो० ॥ ५ ॥  
 सब सखीयन मिल नाटक करके । गावत मंगल साररे ॥ चालो० ॥ ६ ॥  
 रत्नसागर प्रभु जावना जावे । सुख बोले जयकाररे ॥ चालो० ॥ ७ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नेमजीसें कहीयो मोरी । शामरेसें कहीयो मोरी । तोरण  
 आए कोनें जर माए । गोरु चले अजिमानी ॥ अरे लाला ॥ गोरु  
 चले० ॥ पशुवन के शिर दोष चढायो । तोनी प्रीत पुरानी ॥ दयादिलमें  
 नही आनी ॥ ( शामरेसें० ) ॥ १ ॥ चूक पनी सो मुहसें कहीयो । ऐसी  
 ना करी ए शोधानी ॥ अरे० ॥ आठ जवोंकी प्रीत बंधाणी । नवमे चले क्युं  
 जानी ॥ शाम तेरी सुरत पिठानी ( शामरेसें० ) ॥ २ ॥ या जोरी जुगमें  
 पूर नेह लागी, राजुल गुलकी बानी ॥ अरे० ॥ बीनति सुन अमर पद दीजो  
 रंग विजय सुखदानी ॥ आवा गमन निदानी ( शामरेसें० ) ॥ ३ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ महाराज तोरे मंदिरमे बरसे रंग । हारे हो । श्री चिंतामणि पाश  
 प्रभुजी ( तोरे मंदिरमें० ) ॥ टेके ॥ ज्ञान गुलाल अवीर अरगजा । सुमता  
 नीर सुचंग ( हारे हो० ) ॥ १ ॥ अनुभव लहर फूली फूलवानी । दिन  
 दिन चढते रंग ( हारे हो० ) ॥ २ ॥ उपशम वागा अंग अनोपम । शुक्ल  
 ध्यानके संग ( हारे हो० ) ॥ ३ ॥ अमरचंद चिंतामणि चित्त धर । तुजथुं  
 आविहरु रंग ( हारे हो० ) ॥ ४ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तोरी अंगीयां बनी है सुरंग । (हां रे हो) श्री चिंतामणिपाश ॥  
 प्रभुजी तोरी० ॥ सुविवेकी श्रावक मिल आए । आणी जाव अजंग ॥ हारे  
 हो श्री० ॥ ग्रह बंधीकी जांत जली है । बुंदीया नव नव रंग ॥ हारे हो श्री  
 चिं० ॥ १ ॥ जरकस जामो खूब बन्यो है । कोर केवना मंग ॥ हारे हो

श्री चिं० ॥ मस्तक मुकुट काने दोय कुंजल । बाजूबंद सुचंग ॥ हारे हो  
 श्री चिं० ॥ २ ॥ फूलनकी गजमाल सोजत है । सौरंग वास सुगंध ॥ हारे  
 हो श्री चिं० ॥ त्रिभुवन साहव तखत विराजे । महिरवान मन रंग ॥ हारे  
 हो श्रीचिं० ॥ ३ ॥ सुर नर याकी सेवा करत है । रात दिवश धर रंग ॥  
 हारे हो श्री चिं० ॥ मुनिजर है साहेवकी सवपर । संव है सकल सुरंग ॥  
 हारे हो श्री चिं० ॥ जावना जावो जिन गुण गावो । अमर घणें लुहरंग ॥  
 हारे हो श्री चिं० ४ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( पुनःहोरी ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चिंतामाणि चित्त ध्यावो रे । वंजित फल पावो ॥ सकल जविक  
 जन मिलकर आवो । राग फाग गुण गावोरे ॥ वंजित० ॥ १ ॥ अवीर गुलाल  
 लाल संग लावो । जर जर सुगीया उमावोरे ॥ वं० ॥ कुंकुम केशरकुं ठिरका  
 वो । जाव शुक्ल जल जावोरे ॥ वं० ॥ २ ॥ अंगी चंगी पुहप बनावो  
 दीपक ज्योति दीपावोरे ॥ वं० ॥ दरस सरस करकें सुख पावो । पुण्य जंमार  
 जरावोरे ॥ वं० ॥ ३ ॥ वाजित्र वाजा विविध बजावो । नृत्य संगीत नचावो  
 रे ॥ वं० ॥ अमर सिंधुर आनंद बधावो । जिनजीसें लय लावोरे ॥ वं० ४ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मत नारो पिचकारीरे । मेंतो सगरी चीज गई ॥ म० ॥ ताल  
 मृदंग बजत मन मांहि । गावत आगम राग ॥ लाल मेंतो सगरी चीज गई  
 ॥ मत० ॥ १ ॥ ज्ञान गुलाल सदा रंग लागो । खेलत सुमति सोहाग ॥ पी  
 या मेंतो सगरी चीज गई ॥ २ ॥ समकित केशर चीर रंगानुं । पहिरुं मन  
 वैराग ॥ लाल मेंतो० ॥ ३ ॥ लख चौराशी रामत जोड़ुं । चारों गति सो  
 हाग ॥ पिया मेंतो० ॥ ४ ॥ ऐसा खेल खेले सब प्यारी । शिव सुंदरी व  
 रमांग । लाल मेंतो० ॥ ५ ॥ ज्ञानमागर प्रभु विविध प्रकारें । इण विध  
 खेले फाग ॥ लाल मेंतो० ॥ ६ ॥ ❀ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हारे तुंनो जिन जज विजय न कर हो । होरीके खेलइया ॥  
 हां० ॥ ( आंकाणी ) ॥ समता लहेर मयममां जीजी । ममता लहेर पारहर



हो ॥ हो० ॥ १ ॥ विनय संजारीमें जरि पिचकारी । हारे तुंतो, शिवरमणीकुं  
 वरहो ॥ हो० ॥ ज्ञान गुजाल जरी तिहां जोरी । हारे तुंतो, खेल वसंत वर  
 वर हो ॥ हो० ॥ २ ॥ शील सुगंध आचूषण अंगे । हारे तुंतो, आतम अ  
 नुभव वर हो ॥ हो० ॥ ज्ञान विज्ञान फूली फूल वारी । हारे तुंतो, गुंजत  
 मनमधुकर हो ॥ हो० ॥ ३ ॥ वामानंदन पाश जिनेमर । हारे तुंतो, जगना  
 यक जग गुरहो ॥ हो० ॥ श्रीजिनलाज कहे प्रभु संगे । हारे तुंतो, सम  
 तारस अनुसर हो ॥ हो० ॥ ४ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नेम मिलेतो बातां कीजीये ॥ होप्यारे ॥ नेम मि० ॥ टेक ॥  
 मेंहुं तुमारी खिजमतगारी । प्रेमका प्याला पीजीए ॥ हो० ॥ ने० ॥ १ ॥  
 हम है केतकी तुम हो जमरा । फिर फिर वासना लीजीयें ॥ हो० ॥ ने० ॥ २ ॥  
 मेंहुं धरती तुम हो मेहुला । कवहुं तो मिलना कीजीयें ॥ हो० ॥ ने० ॥ ३ ॥  
 नेम राजुल मिल मुक्ति सिधाए । रूपचंद पद दीजीये ॥ हो० ॥ ने० ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आतमतत्व विचारो ज्ञानसें । कर्म कटे ज्युं शुक्ल ध्यानसें ॥  
 आ० (आंकणी) ॥ पुद्गल जीव सरूप पिठान्यो । ममता मिट गई सारी जान  
 सें ॥ कर्म कटे ज्युं शुक्ल ध्यानसें ॥ आ० ॥ १ ॥ क्रोधादिक अरी अंधकार सम-  
 नाश ज्यो सब ज्ञान जानसें ॥ आ० ॥ २ ॥ परमात्म पद पावत सोई ।  
 विनय जगत पद अचल थानसें ॥ आ० ॥ ३ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ लाल तेरे नयनोंकी गति न्यारी ॥ एतो उपशम रसकी कयारी  
 ॥ लाल० ॥ ( आंकणी ) ॥ कामक्रोधादिक दोष रहित हे । नयन ज्ये अ  
 विकारी ॥ निद्रा सुपनदशा नहिंयामें । दर्शनावरण निवारी ॥ लाल० ॥ १ ॥  
 ओरनयनमें काम क्रोध हे । बहुत जरी हे खुमारी ॥ परधन देख हरनकी  
 इच्छा । यामें हे हुरियारी ॥ लाल० ॥ २ ॥ ऐसा लठ्ठन हे नयनोंमें । क्युं  
 पामे जव पारी ॥ ओही विचार करो दिल अपने । होत कर्मसें जारी ॥

लाल० ॥ ३ ॥ धर्म बिना कोई सरनां नहिं हे । एसो निश्चे धारी ॥ विनय  
कहे प्रभु प्रजन करो नित । ओही तारन हारी ॥ लाल० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दर्शन विन जीव संसार जम्यो ॥ दर्शन० ॥ चोराशी लख  
योनी जटकत । लहि मानव प्रव युंहि गम्यो ॥ द० ॥ १ ॥ पुन्यउदय श्रा  
वक कुल पायो । वटमें ज्ञान उद्योग जयो ॥ द० ॥ २ ॥ माया ममता में  
निशदिन तुं । विषय विकारुं नहिं विरम्यो ॥ द० ॥ ३ ॥ सार विवेक तुं धार  
रे चेतन । जटकत भ्रममें क्युं जटक्यो ॥ द० ॥ ४ ॥ कहत कृपाकल्याण  
निरंतर । प्रज प्रगवंत तेरो पापशम्यो ॥ द० ॥ ५ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मत बोमो ह्वानें युंहीरे । कोई चूक बतावो ॥ मत० ॥ अवीर गुलाल  
जाव सब रमतां । हमशुं कदेय न खेलोरे ॥ को० ॥ १ ॥ रथ फेरी प्रभुजी घर  
आये । चढिया ठे गिरनारी रे ॥ को० ॥ २ ॥ बहुत हठाशुं व्याह स्वायो,  
जीव देख दया आणी रे ॥ को० ॥ ३ ॥ राजुज ऊनी अरज करत हे । एक  
वार फिर जोवोरे ॥ को० ॥ ४ ॥ नेमि राजुज मिल मुक्ति सिधाए । पहेली  
राजुज नारीरे ॥ को० ॥ ५ ॥ ❀ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अटक्यो चित्त हमारो री । जिन चरण कमलमें ॥ अट० ॥ शीत  
लनाथ जिनेसर साहिब । जिनवर प्राण आधारो री ॥ जि० ॥ १ ॥ माता  
नंदादेवीको नंदन दृढरथ नृपको प्यारो री ॥ जि० ॥ २ ॥ श्रीवत्स लंछन  
जनम प्रहिलपुर । कुज डब्बाग नुदारो री ॥ जि० ॥ ३ ॥ नेबु धनुष शरी  
र सुशोजित । कनक वरण अनुकारो री ॥ जि० ॥ ४ ॥ एक लक्ष पूरव आ  
यु कहिये । नाम लीआं निस्तारो री ॥ जि० ॥ ५ ॥ दीनदयाल ज  
गत प्रतिपालक । अब मोहे पार नुतारो री ॥ जि० ॥ ६ ॥ हरखचंद का  
माहेय मचे । हुंतो दास तुमारो री ॥ जि० ॥ ७ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मंगल स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मंगल राजे गिरनार । नेम पद मंगल है ( देवा० ) मंगल रा

जिमती पद मंगल । मंगल रह नेमि राज ( ने० ) मंगल गणपति मंगल  
पाठक । सब तपसी विचसार ( ने० ) मंगल धन धन्ना सुनि नायक । मं  
गल सब अनगार ( ने० ) जय जय खेम कुशल गुरु जंपै । आनन्द धन  
अवतार ( ने० ) । इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इम माश द्वादश मध्य जे सहु पर्व सेवन कारनें । सहु बा  
लजन उपगार कारन शुद्ध प्राणा सारनें ॥ संवत् रसानलनंदवसुधा प्राद  
शित एकादशी । गुरु गढ खस्तर कलिकता पुर मोहन प्राणा उपदिशी  
॥ १ ॥ ❀ ॥ इति द्वादशमाश पर्वधिकारः ॥ १२ ॥ सं १८३६ ॥

॥ ❀ ॥ अथ द्वादश माश मध्ये प्रसिद्ध पर्वधिकार कथनानंतर । सांप्र  
ति मखिलजिन पंचकल्याणक स्वरूप मुच्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिस माशमें जितने दिन जगवंतके कल्याणकके हैं । सो स  
र्व जव्यजीवोंके सेवन करने योग्य है । परंतुकोण तिथकों क्या कल्याण  
कहै । सो जाण्या बिना सेवन कर सकते नही । ( और विशेष में )  
पंच कल्याणक तपस्या करनेवाले जव्यजीवोंके अवस्य पंच कल्याणक टीप  
शुणने बिना काम चलता नहीं । इसीसे गुणनो करने माफक विधि प्रपा  
कसे पंच कल्याणक टीप लिखते हैं ॥

॥ ❀ ॥ अथ पंच कल्याणक टीप लि० ॥ ❀ ॥

( कार्तिक कृष्णपक्षे ) ॥ ५ ॥ ( कार्तिक शुक्लपक्षे ) ॥ २ ॥

५ ॥ श्रीसंजवनाथजी सर्वज्ञाय० ॥ ३ ॥ श्रीसुविधिनाथजी सर्वज्ञाय० ॥  
१२ ॥ श्रीपद्मप्रभुजी अर्हते नमः ॥ १२ ॥ श्रीअरनाथजी सर्वज्ञाय० ॥  
१२ ॥ श्रीनेमिनाथजी परमेष्ठि० ॥ ( मार्गशीर्ष शुक्लपक्षे ) ॥ १ ॥  
१३ ॥ श्रीपद्मप्रभुजी नाथाय० ॥ १० ॥ श्रीअरनाथजी अर्हते नमः ॥  
३० ॥ श्रीवर्द्धमानजी पारंगताय० ॥ १० ॥ श्रीअरनाथजी पारंगताय० ॥  
( मार्गशीर्ष कृष्णपक्षे ) ॥ ४ ॥ ११ ॥ श्रीअरनाथजी नाथाय० ॥  
५ ॥ श्रीसुविधिनाथजी अर्हते० ॥ ११ ॥ श्रीमखिनाथजी अर्हते० ॥  
६ ॥ श्रीसुविधिनाथजी नाथाय० ॥ ११ ॥ श्रीमखिनाथजी नाथाय० ॥

- १० ॥ श्रीवर्धमानजी नाथाय नमः ॥ ११ ॥ श्रीमहिनाथजी सर्वज्ञाय ॥  
 ११ ॥ श्रीपद्मप्रभुजी पारंगताय ॥ ११ ॥ श्रीनमिनाथजी सर्वज्ञाय ॥  
 ( पौष कृष्णपक्ष ) ॥ ५ ॥ १४ ॥ श्रीसंजवनाथजी अर्हते ॥  
 १० ॥ श्रीपार्थ नाथजी अर्हते ॥ १५ ॥ श्रीसंजवनाथजी नाथाय ॥  
 ११ ॥ श्रीपार्थ नाथजी नाथाय ॥ ( पौष शुक्लपक्ष ) ॥ ५ ॥  
 १२ ॥ श्रीचंद्राप्रभुजी अर्हते नमः ॥ ६ ॥ श्रीविमलनाथजी सर्व ॥  
 १३ ॥ श्रीचंद्राप्रभुजी नाथाय ॥ ९ ॥ श्रीशांतिनाथजी सर्व ॥  
 १४ ॥ श्रीशीतलनाथजी सर्वज्ञाय ॥ ११ ॥ श्रीअजितनाथजी सर्वज्ञाय ॥  
 ( माघ कृष्णपक्ष ॥ ५ ॥ ) १४ ॥ श्रीअजिनंदनजी सर्वज्ञाय ॥  
 ६ ॥ श्रीपद्मप्रभुजी परमेष्ठिने ॥ १५ ॥ श्रीधर्म नाथजी सर्वज्ञाय ॥  
 १२ ॥ श्रीशीतलनाथजी अर्ह ॥ ( माघ शुक्लपक्ष ) ॥ ९ ॥  
 १२ ॥ श्रीशीतलनाथजी नाथाय ॥ २ ॥ श्रीअजिनंदजी अर्हते ॥  
 १३ ॥ श्रीरूपनदेवजी पारंगता ॥ २ ॥ श्रीवासुपुज्यजी सर्वज्ञाय ॥  
 ३० ॥ श्रीश्रेयांसजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ३ ॥ श्रीविमलनाथजी अर्हते ॥  
 ( फाल्गुन कृष्णपक्ष ) ॥ १० ॥ ३ ॥ श्रीधर्म नाथजी अर्हते ॥  
 ६ ॥ श्रीसुपार्थनाथजी सर्वज्ञाय ॥ ४ ॥ श्रीविमलनाथजी नाथाय ॥  
 ७ ॥ श्रीसुपार्थ नाथजी पारंग ॥ ८ ॥ श्रीअजितनाथजी अर्हतेनमः ॥  
 ७ ॥ श्रीचंद्राप्रभुजी सर्वज्ञाय ॥ ९ ॥ श्रीअजितनाथजी नाथाय ॥  
 ९ ॥ श्रीसुविधिनाथजी परमेष्ठि ॥ १२ ॥ श्रीअजिनंदनजी नाथाय ॥  
 ११ ॥ श्रीरूपनदेवजी सर्वज्ञाय ॥ १३ ॥ श्रीधर्म नाथजी नाथाय ॥  
 १२ ॥ श्रीश्रेयांसजी अर्हते नमः ॥ ( फाल्गुन शुक्लपक्ष ) ॥ ५ ॥  
 १२ ॥ श्रीमुनिसुव्रतजी सर्वज्ञाय ॥ २ ॥ श्रीअरुनाथजी परमेष्ठिने ॥  
 १३ ॥ श्रीश्रेयांसजी नाथाय ॥ ४ ॥ श्रीमहिनाथजी परमेष्ठि ॥  
 १४ ॥ श्रीवासुपुज्यजी अर्हते नमः ॥ ८ ॥ श्रीसंजवनाथजी परमेष्ठि ॥  
 ३० ॥ श्रीवासुपुज्यजी नाथाय ॥ १२ ॥ श्रीमहिनाथजी पारंगता ॥  
 ( चैत्र कृष्णपक्ष ) ॥ ५ ॥ १२ ॥ श्रीमुनिसुव्रतजी नाथाय ॥

४ ॥ श्रीसुपार्श्व नाथजी परमेष्टि०

४ ॥ श्री पार्श्व नाथजी सर्वज्ञाय०

५ ॥ श्रीचंद्राप्रभूजी परमेष्टि० ॥

८ ॥ श्रीआदिनाथजी अर्हते० ॥

८ ॥ श्रीआदिनाथजी नाथा० ॥

( वैशाख कृष्णपक्ष ) ॥ ९ ॥

१ ॥ कुंथुनाथजी पारंगताय० ॥

२ ॥ श्रीशीतलनाथजी पारंग० ॥

५ ॥ श्रीकुंथुनाथजी नाथाय० ॥

६ ॥ श्रीशीतलनाथजी परमेष्टिने० ॥

१० ॥ श्रीनमिनाथजी पारंग० ॥

१३ ॥ श्रीअनंतनाथजी अर्हते० ॥

१४ ॥ श्रीअनंतनाथजी नाथा० ॥

१४ ॥ श्रीअनंतनाथजी सर्व० ॥

१४ ॥ श्रीकुंथुनाथजी अर्हते० ॥

( ज्येष्ठ कृष्णपक्ष ) ॥ ८ ॥

८ ॥ श्रीमुनिसुव्रतजी अर्हते० ॥

९ ॥ श्रीमुनिसुव्रतजी पारंग० ॥

१३ ॥ श्रीशांतिनाथजी अर्हते० ॥

१३ ॥ श्रीशांतिनाथजी पारंग० ॥

१४ ॥ श्रीशांतिनाथजी नाथाय० ॥

( आषाढ कृष्णपक्ष ) ॥ ३ ॥

४ ॥ श्रीआदिनाथजी परमेष्टि० ॥

७ ॥ श्रीविमलनाथजी पारंग० ॥

९ ॥ श्रीनमिनाथजी नाथाय० ॥

( चैत्र शुक्लपक्ष ) ॥ ८ ॥

३ ॥ श्रीकुंथुनाथजी सर्वज्ञाय० ॥

५ ॥ श्रीअजितनाथजी पारंग० ॥

५ ॥ श्रीसंभवनाथजी पारंग० ॥

५ ॥ श्रीअनंतनाथजी पारंग० ॥

९ ॥ श्रीसुमतिनाथजी पारंग० ॥

११ ॥ श्रीसुमतिनाथजी सर्वज्ञा० ॥

१३ ॥ श्रीवर्धमानजी अर्हते० ॥

१५ ॥ श्रीपद्मप्रभूजी सर्वज्ञाय० ॥

( वैशाख शुक्लपक्ष ) ॥ ८ ॥

४ ॥ श्रीअग्निनंदनजी परमे० ॥

७ ॥ श्रीधर्म नाथजी परमेष्टि० ॥

८ ॥ श्रीअग्निनंदनजी पारंग० ॥

८ ॥ श्रीसुमतिनाथजी अर्हते० ॥

१० ॥ श्रीवर्धमानजी सर्वज्ञाय० ॥

१२ ॥ श्रीविमलनाथजी पारंग० ॥

( ज्येष्ठ शुक्लपक्ष ) ॥ ४ ॥

५ ॥ श्रीधर्मनाथजी पारंग० ॥

९ ॥ श्रीवासुपूज्यजी परमेष्टिने० ॥

१२ ॥ श्रीसुपार्श्व नाथजी अर्हते० ॥

१३ ॥ श्रीसुपार्श्व नाथजी नाथाय० ॥

( आषाढ शुक्लपक्ष ) ॥ ३ ॥

६ ॥ श्रीवर्धमानजी परमेष्टि० ॥

८ ॥ श्रीनेमनाथजी पारंग० ॥

१४ ॥ श्रीवासुपूज्यजी पारंग० ॥

( श्रावण कृष्णपक्षे ) ॥ ४ ॥ ( श्रावण शुक्लपक्षे ) ॥ ५ ॥

३ ॥ श्रीश्रेयांसजी पारंगताय० २ ॥ श्रीसुमतिनाथजी परमेष्टि० ॥

७ ॥ श्रीअनंत नाथजी परमेष्टि० ५ ॥ श्रीनेमिनाथजी अर्हते नमः ॥

८ ॥ श्रीनमिनाथजी अर्हते नमः ॥ ६ ॥ श्रीनेमिनाथजी नाथाय० ॥

९ ॥ श्रीकुंथुनाथजी परमेष्टिने नमः ॥ ८ ॥ श्रीपार्श्व नाथजी पारंग० ॥

( चाद्रवा कृष्णपक्षे ) ॥ २ ॥ १५ ॥ श्रीसुनिसुव्रतजी परमे० ॥

७ ॥ श्रीचंद्राप्रभूजी पारंगता० ॥ ( चाद्रवा शुक्लपक्षे ) ॥ १ ॥

७ ॥ श्रीशांतिनाथजी परमे० ॥ ९ ॥ श्रीसुविधिनाथजी पारंग० ॥

८ ॥ श्रीसुपार्श्वनाथजी परमे० ॥ ( आश्विन शुक्लपक्षे ) ॥ १ ॥

( आश्विन कृष्णपक्षे ) ॥ २ ॥ १५ ॥ श्रीसुविधिनाथजी परमेष्टि० ॥

१३ ॥ श्रीमहावीरजी गवर्जाप० ॥ ॥ ❀ ॥ इति पंचकल्याणक संपूर्ण ॥

२० ॥ श्रीनेमिनाथजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ❀ ॥ गवर्जापहार षष्ठमप्यस्तिः ॥

॥ ❀ ॥ अथ पंचकल्याणक विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम शुभदिन शुभ वनी गुरुके पास । पंचकल्याणक तप ग्रहण करें । उपवास ( वा ) आंखिल एकासणा दिक्को पञ्चख्वाण करें । तीन टंक देव वंदन करें । पश्चिमणो करें । ( जिस दिन ) जो महाराजको कल्याणक होय । उसीको २००० गुणनो करें । और ( पाश जिनेसर जगति लोण० ) इत्यादि पंच कल्याणक जावगर्जित स्तवन पढ़े ( वा ) सुणें । जहां जगवंत के कल्याणक नृमि होय । ( जहां ) वने महोत्सवसे संव सत्त यात्रा करने को जावे । विधिमंयुक्त यात्रा करें । और सर्व जगवन्तों के पंच कल्याणकको उठव करें । ( जो ) शक्ति न हो ( तो ) शाश नके अधिपति श्रीमहावीर स्वामी के पद कल्याणकका उठव जरूर करें ॥ ❀ ॥ अब २३ जगवंत को अपेक्षाये पांच श्रीवीर प्रभूकी अपेक्षाये पद कल्याणक संक्षेप उठव विधि लि० ॥ ❀ ॥ १ ॥ चवन कल्याणक को ( परमेष्टिनेनमः ) कहिये ( इस दिन ) चवद स्वप्नादिक की पूजा करायके । चवन कल्याणकको उठव करें । हीन चढ़ावे ॥ १ ॥ ❀ ॥



॥ ❀ ॥ २ ॥ जन्म कल्याणक कों ( अर्हते नमः ) कहीयै ( इस दिन ) जलयात्रादिक महोत्सव करै । अष्टोत्तरी स्नात्रादिक करावै । वस्त्र चढावै ॥ २ ॥ ❀ ॥ ३ ॥ दिहा कल्याणक कों ( नाथाय नमः ) कहीयै ( इस दिन ) समोसरण निकालै । अशोकवृक्षादिकके नीचै स्थापन करै । दिहाको उठव करै । घृत गुरु बस्त्रादिक चढावै । शक्तिमाफक दान देवै ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ४ ॥ केवल ग्यान कल्याणककों ( सर्वज्ञाय नमः ) कहीयै । ( इस दिन ) समोसरणमें जगवंतकों स्थापन करै । आठ प्रातिहार्य प्रगट करै । नाना प्रकारके उठव करै । वस्त्र आचरूपण चढावै । सपेदगोला चढावै ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ५ ॥ निर्वाण कल्याणककों ( पारंगताय नमः ) कहीयै । ( इस दिन ) निर्वाण कल्याणक के प्रावगर्भिजत उठव करै लामूचढावै ॥ ५ ॥ ( और ) ठठा गब्जर्पाहार कल्याणकका उठव करणा होय तो चवण कल्याणकके उठव समान करै ॥ ६ ॥ ( इसी तौर ) सर्व कल्याणकके उठव करै । तपस्या पूर्ण होनें सैं । पंचकल्याणक जीकी पूजा करावै । गुरुभक्ति करै । साहमी बठल करै । ( इत्यादिक विधि संयुक्त यह तपस्या ( जो ) जव्य जीव करेंगे ( सो ) अनन्त सुख कों प्राप्त होंगे ॥ इति पंचकल्याणक तपस्या धिकारः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पख वासैंको स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सीमंधर करजो मया ( एदेशी ) जंबुद्वीप सोहामणो । दक्षिण भरत उदार । राजग्रही नगरी जली । अलिका पुर अवतार ॥ १ ॥ ( श्री मुनिसुव्रत स्वामी जी ) । समरंता सुख थाय । मनवंडित फल पामीयै । दोहग दूरपुलाय ॥ २ ॥ ( श्री० ) राज करै तिहां राजियो । सुमित्र नरेसर नांम । पटराणी पद्मावती । शीलगुणें अजिराम ॥ ३ ॥ ( श्री० ) श्रावण ऊजल पूनमै । श्रीजिनवर हरिवंश । माताकुक्षि सरोवरै । अवतरीयो रायहंस । ( श्री० ) ॥ ४ ॥ जेठपढम पक्ष अष्टमी । जायो श्री जिनराय ॥ जनम महोत्सव सुरकरै । त्रिनुवन हरख नमाय ( श्री० ) ॥ ५ ॥ शामल वरण सोहामणो । निरुपम रूपनिधान । जिनवर लंठन काठवो । वीशधनुष तनुमान ( श्री० ) ॥ ६ ॥ परणी नार प्रजावती । जोगपुरंदर

साम । राजलीला सुखजोगवै । पूरे वंडित काम ( श्री० ) ॥ ७ ॥ तत्र  
 लोगांतिक देवता । आवि जंपै जयकार । प्रनु फागुणवादि वारसै । लीधो  
 संजम जार ( श्री० ) ॥ ८ ॥ शुभ फागुणवादि वारसै । मनधर निरमल  
 ध्यान । च्याकरम प्रनुचरिया । पाम्यो केवलग्यान ( श्री० ) ॥ ९ ॥  
 ( ढाल २ ) सुखकारण जवियण ( एहनी ) ॥ ततखिण तिहां मिजिया चलिया  
 सुरनर कोमि । प्रनुना पदपंकज प्रणवै वेकरजोमी । वेकरजोडी मठर ठोमी  
 समवसरण विरतंत । माणक हेम रूपमय त्रिगडो ठत्र त्रय जलकंत । सिं  
 हासन वैठा तिहां स्वामी चोविह धर्मप्रकासै । वारै परखदा वैठी आगलि  
 सुणै मन उल्लासै ॥ २४ ॥ तपनें अधिकारै पखवासा तपसार । पस्वि  
 थी कीजै पनरह तिथ जुदार । पनरह तिथि कीजै गुरु मुख लीजै जिस  
 दिन हुवै उपवास । श्रीमुनिसुवत नाम जपीजै वांदी देव उल्लास । तप  
 कुजमणै रजत पालणो सोवन पृतलीचंग । मोदक थाल देहरै मूंकी जि  
 नवर म्नात्र सुरंग ॥ ११ ॥ तप करियै निरन्तर अहुरव दर्शनी जेम ।  
 मनवंडित केरा सुखपामी जे तेम । पुत्र मित्र परिवार परं अति वल्लभ ज  
 स्तार । जस कीरत सोजाग वस्त्राई महियल महिमा जाण । परजव सुग  
 ति फल जहीयै एतपनें प्रमाण ॥ १२ ॥ थिर थापी चतुर्विध संव तणो  
 अधिकार । जखवठ प्रमुख नगरादिक करिया विहार । विहार करी प्रतिवो  
 धे खंदक पंचसयां परिवार । कात्तिकसेठ जितसठ तुंगम सुवतनाम तु  
 मार । तीश सहम वस्त्र आऊखो पालै जग दया सार । श्रीमम्मेत सिख  
 परमेसर पुहता सुगति मजार ॥ १३ ॥ इम पंच कल्याणक शुणिया त्रि  
 नुवन नाथ । मुनिसुवन स्वामी वीशमो जिनवरनाथ । वीशमो जिनवर नाथ  
 जगत गुरु प्रयजंजण जगवंत । निराकार निरंजन निरूपम अजरामर अ  
 रिहंत । श्रीजिनचंद विनय शिरोमणि सकल चंद गणिसीस । वाचक सम  
 य सुन्दर इम पत्रणै पूरो मनह जगीम ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
 १ ॥ इति पखवासा स्तवन संपूर्णम् ॥ ४४ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पखवासा तप विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम शुभ दिन गुरुके पास तप ग्रहण करके सुद ( १ )

पडिवासें । पूर्णमासी तक । इकसार पनरै उपवास करै । जो शक्ती न हो  
 ( तो ) प्रथम सुद पक्षकी पडवा १ । द्वितीय सुद पक्षकी दूज २ ( ऐसे ) अ  
 नुक्रमसें पनरै सुदपक्षमें तपस्या पूर्ण करै । श्री मुनिसुब्रत स्वामीके पंच  
 कल्याणक जावगर्वित स्तवन पढ़ै । गुरुको संयोग होय ( तो ) गुरुके  
 पास सुणें ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीमुनिसुब्रत स्वामी सर्वज्ञाय नमः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इसीको ( २००० ) दो हजार गुणनो करै । और तपस्या  
 ग्रहण करनेकी ( तथा ) दैवबंदनादिककी विधि । पूर्वे खुलासा लिख दी  
 नी है । उसी मुजब बिबेकी जीव सब तपस्या की विधि करै । विधि संयु  
 क्त करने से उत्तम फल मिलता है ॥ ❀ ॥ इति पखवासा विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ दश पञ्चखाण स्तवन लि० ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहाः ) ॥ सिद्धार्थ नंदन नमूं । महावीर जगवंत । त्रिगुणै  
 बैठा जिनवरू । परषदवार मिलंत ॥ १ ॥ गणधर गौतम तिण समें । पूढे  
 श्रीजिनराय । दश पञ्चखाण किंसा कहा । कीयां कवण फल थाय ॥ २ ॥  
 ( दाल ) ॥ १ ॥ सीमंधर करज्योमया ( एदेशी ) ॥ श्रीजिनवर इम उपदिशै  
 सांजल गोयम स्वाम । दश पञ्चखाण कियां थकां । लहीयें अविचल  
 ठाम ॥ श्री० ॥ ३ ॥ नवकारसी १ । बीजी पोरसी २ ॥ साढ पोरसी  
 ३ । पुरमट्ट ४ ॥ एकासण ५ ॥ नीवी ६ ॥ कही ॥ एकजठाण ७ ॥ देव  
 ट्टि ॥ ( श्री ४ ) ॥ दात ८ । अंघिल ९ । उपवास १० । ही ॥ एहीज दश  
 पञ्चखाण । एहना फल सुण गोयमा । जू जूवा करूं वखाण ॥ ( श्री० ५ ) ॥  
 रतन प्रज्ञा १ । शर्कर प्रज्ञा २ ॥ वालुक ३ । तीजी जाण ॥ पंक प्रज्ञा  
 ४ । तिम धूम प्रज्ञा ५ ॥ तम प्रज्ञा ६ । तम तम ७ । ठाम । ( श्री०  
 ६ ) ॥ नरक सात कही एसही । करम कठिन करजोर । जीव करम वस  
 ते सही । उपजै तिण हीज ठोर ( श्री० ७ ॥ ) ठेदन जेदन तामना । नूख  
 त्रिषा बलित्रास । रोम रोम पीमा करै । परमाहम्मी तास ( श्री० ८ ) ॥  
 रात दिवश खेत्रवेदना । तिलजर नहीं जिहां सुख । किया करम जे प्रोग  
 वै । पामें जीव बहुसुख ( श्री० ९ ) ॥ इकदिनरी नवकारसी । जे करै जाव

विशुद्ध । सो वरस नरकनो आऊखो । दूर करे ज्ञानबुद्धि ( श्री० १० ) ॥ नित्य करे नवकारसी । ते नर नरक न जाय । नरहै पापबलि पाठजा । निरमल होवै जी काय ( श्री० ) ॥ ११ ॥ द्वाज २ ॥ श्रीविमलाचल सिर तिजो ( ए चाल ) ॥ सुण गोतम पोरसी कियां । महामोठो फलहोय । जावसुं जे पोरसी करै । पुरगति ठेदै सोय ( सु० १२ ) । नरक मांहें जे नारकी । वरशें एक हज्जार । करम खपावै नरकमें । करता बहुत पुकार ( सु० १३ ॥ ) एक दिवश नी पोरसी । जीव करै इकतार । करमहणें सहस एकता । निहचैसुं गण धार ( सु० ) १४ ॥ पुरगति मांहें नारकी । दसहज्जार प्रमाण । नरक आयु खिण एकमें । साढपोरसी करै हाण ( सु० ) १५ । पुरमट्ट करै नित जीवजे । नरकै ते नविजाय । लाख वरश करमनं देहे । पुरमट्ट करम खपाय ( सु० ) १६ ॥ लाख वरश दश नारकी । पामें दुःख अनंत । इतरा करम एकासणें । दूर करै मनखंत ( सु० ) १७ ॥ एककोफि वरसांजगे । करम खपावै जीव । नीवीय करतां जावसुं । पुरगति हणें सदाव ( सु० ) १८ ॥ दश कोनी जीव नरकमें । जितरो करै कर्म दूर । तितरो एकजठांणही । करैमही चकचूर ( सु० ) १९ ॥ दात करता प्राणीयो । सो कोनी परमाण । इतरा वरश पुरगति तणा । ठेदै चतुर सुजांण ( सु० ) २० ॥ आंवि जनो फल बहु कह्यो । कोनी एक हजार । करम खपावै इणपरे । जाव आंविल अधिकार ( सु० ) २१ ॥ कोनी सहस दशवरशही । सहे दुःख नरक मजार । उपवाम करै इक जावसुं । तो पामें सुगति मजार ( सु० ) २२ ॥ द्वाज ३ ॥ केकेइ वरजाथो ( एदेशी ) ॥ लाख कोनी वरसां जगे । नरकै करतां रीवरे । ( गोतम गणधारी ) ठठम तप करतां थकां । सही नरक निवारै जीवरे ( गो० २३ ) नरकै वरश कोन लाखही । जीव जहें तिहां दुःखरे । ते दुःख अठम तप हुंती । दूरकनी पामें सुखरे ( गो० ) २४ ॥ वेदन जेदन नारकी । कोना कोफि वरनोइरे । कुगति कृमनिनं पर हरो । दशमें एतो फल होइरे ( गो० २५ ) नितकासू जल पीवतां । कोना कोनी वरशनी पापरे । दूरकरै खिण एकमें । निश्चेहोय निः पापरे ( गो० २६ ) वलिय विशेषे फल कह्यो । पांचम करै उपवामरे । पामेंग्यां

न पांचेजला । करता त्रिजुवन परकासरे ( गो० ) २७ ॥ चवदश तप वि  
धसुं करे । चवदह पूरव होय धाररे । इम अनेक फल तपतणा । कहितां  
वलि नावै पाररे ( गो० २८ ) ॥ मन वचने काया करी । तप करै जेनर नार  
रे । इग्यारै वरश एकादशी । करतां लहै जवपाररे ( गो० २९ ) ॥ आठम तप  
आराधतां । जीव न फिरै संसाररे । अनंत जवांना पापथी । बूटै जीव निर  
धाररे ( गो० ३० ) ॥ तप हुंती पापी तरया । निसतरीयो अरजुन मालरे  
दृढप्रहारि तपसै तिरयो । चउहत्याना बूटा जालरे ( गो० ३१ ) ॥ तपना  
फल सूत्रे कया । पच्चक्खाण तणा दश जेदरे । अवर जेद पिण्ठै घणा ।  
करतां ठेदै त्रय वेदरे ( गो० ३२ ) ॥ कलशः ॥ ❀ ॥ पच्चक्खाण दश  
विध फल प्ररूप्या महावीर जिण देवए । जे करै जवियण तप अखंफित तासु  
सुरपय सेवए । संवत्त निधिगुण अश्व शशि वलि पोशसुद दशमी दिनें ।  
पदम रंग वाचक सीसगणिवर रामचंद्र तपविधि जणें ( गो० ३३ ) ॥  
॥ इति दश पच्चक्खाण वृद्ध स्तवनं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ १० पच्चक्खाण तपविधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ यह दश १० पच्चक्खाणके स्तवनमें । खुलासा दश पच्चक्खा  
णके जेद ( और ) बेला । तेला । पांचम । आठम । चौदश । ( इत्यादिक )  
तपस्या करनेके फल । जगवंत श्री महावीर स्वामीके । वचन माफक ।  
उत्तम पुरुषोंने रचना करी है । ( इसीसे ) धर्मरागी पुरुष । इसी स्तवनकों  
पढके । तपस्या करनेमें आदरवंत होताहै । और कोईके दश पच्चक्खाण  
तप करनेकी इच्छा हो ( तो ) पहलै दिन । नवकारसी । दूशरे दिन पोर  
सी ( इसी तरै ) स्तवन मुजब १० पच्चक्खाण तप । दश दिवशे सेवन  
करै । सदा स्तवन सुणें । गुरुको संयोग न हो ( तो ) आपपटै । अंतमें पू  
जाकरावे । शक्ती माफक उद्यापन करै ( इसी तपस्याके प्रसाद ) खोटी ग  
तिकों दूर करके । अन्ही गतिके बंध बांधै । महा ऐश्वर्यवंत होय । जाग्य  
वंत होय ॥ ❀ ॥ इति दश पच्चक्खाण तप विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ वीश स्थानक स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीमिन्नाचल जेटिये ( एदेशी ) ॥ वीश थानक तपसेवाये ।

कर करि सुज परिणांम लाल रे । तीजे जव सेव्योथको । बांधै तीर्थ कर  
नाम लालरे । ( वी० ) ॥ १ ॥ तप रचना अधकी कही । ग्याता अंग म  
जार लालरे । सुणजो जवि तुमे जावसुं । चितसं करिये उचार लालरे  
( वी० ) ॥ २ ॥ सुविहत गुरु पासै ग्रहे । वीश थानक तप एह लाल  
रे । निरदूषण सुजमहुरते । उचरीजे समनेह लालरे ( वी० ) ॥ ३ ॥ अ  
रिहंत १ । सिद्ध २ । प्रवचननसुं ३ ॥ सूरि ४ । थिवर ५ । उवजाय ६ ।  
लालरे ॥ साधु ७ । नाण ८ । दंसण ९ । अरु ॥ विनय १० । नसुं उल  
साय लालरे ( वी० ) ॥ ४ ॥ चारित्र ११ । वंज १२ । क्रियापदे १३ ॥  
तप १४ । गोयम १५ । जिण १६ । ईस लालरे ॥ चारित्र १७ । ग्यान  
न १८ । श्रुत १९ । जणी ॥ नसुं तीर्थ २० । पदवीश लालरे ( वी० ) ॥  
५ ॥ वीश दिवशमें एकही । पद गुणनो कस्मेव लालरे । अथवा दिन वी  
शालगे । वीशे पद गुणमेव लालरे ( वी० ) ॥ ६ ॥ एकउजी पदमासमें ।  
पूरीजो नविहोय लालरे । फेरनवी करणी पने । पिठजी निष्फल जोय  
लालरे ( वी० ) ॥ ७ ॥ ठठ अष्ठम उपवाससुं । अथवा देखी शक्ति  
लालरे । पोसहकर आराधिये । देववांदे निज भक्तिलालरे ( वी० ) ॥  
॥ ८ ॥ संपूरण पद सेवतां । पोसहरो नही जोग लालरे । तोही सात  
पदेसही । पोसह करिये संजोग लालरे ( वी० ) ॥ ९ ॥ सूरि, थिवर  
पाठक, पदे । साधु, चारित्र, सुजाण लालरे । गौतम, तीर्थपदे, सही ।  
सात थानक मनमान लालरे । ( वी० ) ॥ १० ॥ पद पद दीठ करे सदा  
दोय दोय जाप हजार लालरे । पम्किमणो दोय टंकही । करिये पूजा  
सार लालरे ( वी० ) ॥ ११ ॥ शक्ति सुजव तप कीर्जिये । एक उजी  
करो वीश लालरे । वीशा वीशी च्यासो । तप मंख्या कही एम लालरे  
( वी० ) ॥ १२ ॥ जिसदिन जो पद तप करे । तिसके गुण चितधार  
लालरे । काउसग्ग पर दहणा । सुख जणिये नवकार लालरे ( वी० ) ॥  
१३ ॥ जिस पदकी स्तवना सुणे । कीजे जिन पद भक्ति लालरे ( वी० )  
॥ १४ ॥ मृतक जनम रिनु काजमें । कविधारयो उपवास लालरे । मोजेखे  
नहिं जेतयो । निक्केवन्न तपजाम लालरे ( वी० ) ॥ १५ ॥ सावझ त्या



ग पणो करै । सोकन धारै चित्त लालरे । शील आचूषण आदरै । सुखसुं  
बोलै सत्य लालरे । ( वी० ) ॥ १६ ॥ जेठ आपाठ वैशाखमें । मिगसर फागु  
ण माह लालरे । एषद् माशे मांहिनें । व्रत ग्रहीयै वरु जाग लालरे ( वी० )  
॥ १७ ॥ तप पूरण हुवां थकां । ऊजमणो निरधार लालरे । कीजै शक्ति  
विचारनें । उठव विवध प्रकार लालरे ( वी० ) ॥ १८ ॥ बीश बीश गिणती  
तणा । पुस्तक पृठा आदि लालरे । ग्यान तणी पूजा करै । मुंकीजे हठ  
वाद लालरे ( वी० ) ॥ १९ ॥ फलबधी नगरनी आविका । कीधी विध चित्त  
लाय लालरे । जनम सफल करवा जणी । ओहीज मोह उपाय लालरे  
( वी० ) ॥ २० ॥ ( कलश ) ॥ ❀ ॥ इम वीर जिनवर तणी आग्या धार चित्त  
मजारण । सहुदेख आगम तणी रचना रची तप विधसारण । वसुनंद सि  
धी चंद्र वरसे चेत्र मास सुहंकरू । मुनि केसरी शशि गह्व खरतर जणी  
स्तवना मन हरू ॥ २१ ॥ इति बीश स्थानक तप स्तवनं संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ बीश स्थानक तपकरण विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तिहां प्रथम शुभ सुहुर्तके दिन । नंदी स्थापना पूर्वक । सुवि  
हित गुरुके समीप । बीश स्थानक तप । विधिपूर्वक उच्चरै । एक उंजी दो  
माशसें लेकै ( यावत् ) ठम्माशें पूरी करै । ( कदाचित् ) ठम्माश मध्ये पूरी  
नकर सकै ( तो ) वा उंजी गिणती में नहीं । और नवी करणी पमें । एक  
उंजीके बीश पद है ( तिहां ) कोई बीश दिनमें । बीशो पद जुदा २ गिणें  
कोई बीशों दिनमें एकजपद गिणें । दूसरै बीशों दिनमें दूसरो पद । ( ऐसं )  
बीशों पदकी बीश उंजी करै । तिहां पदाराधनके दिन प्रबल शक्तिवंत ।  
अष्टम तप करिके आराधै । बीश अष्टमें एकउंजी होय ( ऐसं ) बीश उंजी  
( ४०० ) अष्टमें आराधै । और तिससें होनशक्ति ठठ तप करके आराधै ।  
तिससें होनशक्ति चौविहार उपवास करके आराधै । तिससें हीन शक्ति  
त्रिविहार उपवास करके आराधै । तिससें हीन शक्ति आंबिल ( तथा ) ति  
विहार एकाशणा करके आराधै । तिहां शक्तिवान प्राणी । सर्व तपस्याके  
दिन अठ पहरी पोसह करै । ( हीन शक्ति ) दिन पोसह करै । बीशों  
पद पोसह सेती आराधै ( जो ) पोसह शक्ति सर्व पदमें न हो ( तो )

आचार्य पदे १ उपाध्याय पदे २ थिवर पदे ३ साधू पदे ४ चारित्र पदे ५  
गौतम पदे ६ तीर्थ पदे ७ यह सात ध्यानके तो पोसहज करके आराधे ।  
तथापि शक्ति न हो (तो) तिस दिन देशावगासिककरे । सावद्य व्यापार  
त्यजे । सो पिण नहोइ ( तो ) यथाशक्ति तप करी आराधे । अपणी हो  
ननात्रावे (तथा ) मृतक जातक का सूतकमें उपवासादि तप न गिणें, न  
जावे । छियां पिण क्तु समय का तप न गिणें ( तथा ) तपके दिन पोसह  
साहित करे (तो) बहोत श्रेयकारी है । सो न होसके । (तो) तपके दिन  
उत्तय टंक पम्किमण करे । तीन टंक देव वंदन करे । दो सहस्र (२०००)  
एक पदका जप करे । ब्रह्मचर्य पाले । नृमि शयन करे । तपके दिन अ  
तिसावद्य आरंभ व्यापार न करे । असत्य न बोले । सर्व दिन तप पदके  
गुण कीर्तनमें रहे । ( तथा ) तपके दिन पोसह करे ( तो ) पारणोंके दिन  
जिन भक्ति करके पारणो करे । ( जो ) तपके दिन पोसह नहो ( तो ) उ  
सी दिन श्रीजिन भक्ति करे । करावे । जावना जावे । ( तथा ) तपके  
दिन पदके गुण जेद प्रमाण संख्याई काउसग्न करे । ( तावन्मात्र ) तद्रूप  
स्मरण पूर्वक खमासमण देई वंदना करे । उस पदका गुण यादकरके  
उदात्त स्वरे स्तवना करे । हर्षित रहे ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ वीश स्थानक गुणनो और काउसग्नका प्रमाण  
लिखते हैं ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ( एमो अरिहंताणं ) ( २००० ) गुणनो । लोगस्स १२ काउस  
ग्ग ॥ ॐ ॥ १ ॥ ॐ ॥ ( एमो सिद्धाणं ) ( २००० ) गुणनो । लोगस्स १५  
काउसग्न ॥ ॐ ॥ २ ॥ ॐ ॥ ( एमो पवयणास्स ) ( २००० ) दो हजार  
गुणनो । लोगस्स ७ काउसग्न ॥ ॐ ॥ ३ ॥ ॐ ॥ ( एमो आयसियाणं )  
( २००० ) दो हजार गुणनो । लोगस्स ३६ काउसग्न ॥ ॐ ॥ ४ ॥ ॐ ॥  
( नमो धेराणं ) ( २००० ) दो हजार गुणनो । लोगस्स १५ काउसग्न  
॥ ॐ ॥ ५ ॥ ॐ ॥ ( एमो उवप्पायाणं ) ( दो हजार गुणनो । लोगस्स २५ का  
उसग्न ॥ ॐ ॥ ६ ॥ ॐ ॥ ( एमो जोए सबसाहुणं ) २००० गुणनो । लोग  
स्स २७ काउसग्न ॥ ॐ ॥ ७ ॥ ॐ ॥ ( एमो नाणस्स ) २००० गुणनो । लो

गस्स ५ कान्तसग्ग ॥ ❀ ॥ ८ ॥ ❀ ॥ ( एमो दंसणस्स ( २००० ) गुणनो ।  
 लोगस्स १७ कान्तसग्ग ॥ ❀ ॥ ९ ॥ ❀ ॥ ( एमो विनयसंपणाणं ) २०००  
 गुणनो । लोगस्स १० कान्तसग्ग ॥ ❀ ॥ १० ॥ ❀ ॥ ( एमो चारित्तस्स )  
 २००० गुणनो । लोगस्स ६ कान्तसग्ग ॥ ❀ ॥ ११ ॥ ❀ ॥ ( एमो वंजव्वय  
 धारीणं ) २००० गुणनो । लोगस्स ९ कान्तसग्ग ॥ ❀ ॥ १२ ॥ ❀ ॥ ( एमो  
 किरिआणं ) २००० गुणनो । लोगस्स २५ कान्तसग्ग ॥ ❀ ॥ १३ ॥  
 ॥ ❀ ॥ ( एमो तवस्सीणं ) २००० गुणनो । लोगस्स १५ कान्तसग्ग  
 ॥ ❀ ॥ १४ ॥ ❀ ॥ ( एमो गोयमस्स ) २००० गुणनो । लोगस्स १७ कान्त  
 सग्ग ॥ ❀ ॥ १५ ॥ ❀ ॥ ( एमो जिणाणं ) २००० गुणनो । लोगस्स १०  
 कान्तसग्ग ॥ ❀ ॥ १६ ॥ ❀ ॥ ( एमो चरणस्स ) दो हज्जार गुणनो । लोगस्स  
 १२ कान्तसग्ग ॥ ❀ ॥ १७ ॥ ❀ ॥ ( एमो नाणस्स ) २००० गुणनो । लो  
 गस्स ५ कान्तसग्ग ॥ ❀ ॥ १८ ॥ ❀ ॥ ( एमो सुअनाणस्स ) २००० गुण  
 नो । लोगस्स १० कान्तसग्ग ॥ ❀ ॥ १९ ॥ ❀ ॥ ( एमो तित्थस्स ) २०००  
 गुणनो । लोगस्स पांच कान्तसग्ग करै ॥ ❀ ॥ २० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
 इति वीश स्थानिक गुणनो संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

इत्यादि विधिसंयुक्त वीशों उज्जीमें सर्व पदके उठव महोठव प्रजावना  
 ऊजमणा पूर्वक करै । जिन शाशन के उन्नतिके कारण करै । इतनी  
 शक्ति न हो ( तो ) एक उज्जी तो विशेष उठवादि सहित करणी चाहिये ॥  
 इहां विधि प्रपाक ग्रंथसें वीश स्थानक सेवनविधि संक्षेप मात्र लिखी है  
 ( जो ) गुरुको संयोग हुय । तबतो विस्तारसें वीशों पदकी जूदी जूदी वि  
 धि गुरुके मुखसें समझकै करै ( जो ) गुरुका जोग न हो ( तो ) विवेक सं  
 युक्त इस विधिकों देखकै वीश स्थानक तप सेवन करै । वीश स्थानक तवन  
 पढे ( वा ) सुणें । वीश स्थानकजीकी पूजा करावै । अपनी शक्ति माफक  
 वीश वीश ग्यानोपरगण करावै । । देव पदको देव खाते लगावै । ग्यान पद  
 को ग्यान खाते लगावै । गुरु पदको गुरु खाते लगावै । सर्व तीर्थोंकी यात्रा  
 करै । साहमी बठज करै ( इत्यादिक ) द्रव्ये जावै विधिसंयुक्त मुद्र जावसें  
 ( जो ) जव्य जीव यह वीश स्थानक पदकों सेवने करेंगे ( मो ) जिन नाम

कर्मको उपाजिन करके । तीशरे जव अनंत सुखको प्राप्त होंगे । इत्यलंविस्त  
रेण ॥ ❀ ॥ इति वीशस्थानक तपउत्ती विधि संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ रोहणी तप स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शाशण देवत सांमणीए । मुऊ सानिध कीजे ॥ नृलो अहुर  
जगति जणी । समजार्ड दीजे ॥ मोटो तप रोहण तणोए । जिणरा गु  
ण गावुं ॥ जिम सुख सोहण मंपदाए वंजित फल पावुं ॥ १ ॥ दक्षिण ज  
स्ते अङ्गदेस ठे चंपानयरी । मववा राजा राज करे तिण जीता बैरी । पाट  
नणी राणी रुवनीए लखनी इण नामें । आठ पुत्र जाया जिणें ए मनमें  
सुख पांमैं ॥ २ ॥ रोहणी नामें पुत्रिकाए सबकुं सुखकारी । आठां पुत्रां  
ऊपराए तिणजगें प्यारी । बाधे चंद्र तणी कजाए जिम पख उजवाले ।  
तिम ते कुमरी धाय माय पांचे प्रतिपाले ॥ ३ ॥ कुमरीरूपे रुवनीए घर  
अङ्गण बैठी । दीठी राजा खेलतीए तिण चिंता पैठी । तीन जुवन विच  
एहवी ए नहीं दूजी नारी । रंजा पनुमा गवर गंग इण आगल हारी ॥  
४ ॥ पुरुष न दीमैं कोइ इसो जिणनें परणावुं । आख्यां आगल साल व  
धे तिण चयन न पावुं । देश २ ना राजवीए ततखिण तेनाया । सबल  
मजार्ड साथ करी नरपति पिण आया ॥ ५ ॥ वीतशोक राजा तणोए ठे  
कुमर सोजागी । कन्या कैरी आखनीए तिण सेती लागी । ऊजा देखे म  
कज लोक चढीया केई पाला । चित्रसेन रे कंठ ठवी कुमरी बरमाजा ॥  
६ ॥ देव अनें देवांगनाए जपे जय २ कार । रलियायत थयो देखनें ए मारो  
मंसार । करजोनी कहे लोक वखन कन्यारो जानो । वीत शोकनो कुमर  
थयो शिर ऊपर जानो ॥ ७ ॥ इम वीवाह थयो जलो ए दीया दान अपा  
र । घर आया पराणी करीए हरख्यो परिवार । वीतशोक निज पुत्रनणी  
अपणी पाट दीयो । आपण मंयम आदरी ए जगमें जश लीधो ॥ ८ ॥  
हाल ॥ ❀ ॥ प्रनु प्रणमुरे पाशजिनेमर थंनणो ( पद्देशी ) ॥ ❀ ॥ तिण नयरीरे  
चित्रसेन राजा थयो । सुख मांहे रे केतजां काज बढी गयो । इण  
अवमरे आठ पुत्र हुवा जजा । चढनें पखरे चंद्र जिमी चढनी कजा  
( जजाजो ) चढनी कजा हिव राय बैठी पाम बैठी रोहणी । मातमी नृमें

कंत सेती करै कीमा अति धणी । आठमो बालक गोद ऊपर रंगसुं रांणी  
 लियो । पुत्रनें प्रीतम आंख आगल देखतां हरखे हियो ॥ ९ ॥ ( चाल )  
 इक कामणरे गोख चढी द्रष्टे पडी । शिर पीटैरे दीनस्वरे रोवै खनी । बूढा  
 पणरे मनगमतो बालक सुंओ । हुं एकजरे तिण अधिकेरो दुखहुवो ( उ० )  
 दुखहुवो देखी रोहणी हिव कहै इम प्रीतम जणी । एनार नाचै अनें कूदै कहो  
 किम मोटा धणी । एहवो नाटक आजतांइ में कदे देख्यो नही । मुऊनें  
 तमासो अनें हाशो देखतां आवै सही ॥ १० ॥ ( चाल ) ॥ इण वचनेंरे री  
 सांणो राजा कहै ॥ तूपापणीरे परतणी पीमा नवि लहै । ए दुखणीरे पुत्र  
 सुंए तरु फड करै । जब बीतैरे वेदना जाणी जै तरै । ( उ० ) जाणै तरै  
 तुं वात दुखनी गरब गहली कामनी । इम कही राजा हाथ जाल्यो तेह  
 ना बालक जणी । सातमी जुंयथी तलै नाख्यो तिसे हाहारवथयो । रोहणी  
 हसती कहै प्रीतम पुत्र नीचै किम गयो ॥ ११ ॥ ( चाल ) हिव राजारे  
 पुत्र तणें शोकै करी । थयो मुरबितरे रोवै अति आंख्यां जरी । पन्तो सु  
 तरे सासणदेवत जांणियो । कंचन मइरे सिंहासन वैसांणियो । ( उद्वालो )  
 वैसांणियो करजोर आगै करै नाटक देवता । गोदीखिलावै के हसावै पा  
 य पंकज सेवता । ऊपनो जूपतिनें अचंओ देखी ए कारण किसो । जो  
 कोई ग्यानी गुरुपधारै पूढियै सांसो इसो ॥ १२ ॥ ( चाल ) चिंतवतांरे चा  
 रितिया आया तिसै । राजा पिणरे पुहतो वांदणनें तिसै । सुण देशनारे  
 पूढै प्रश्न सुहामणो । कहो स्वामीरे पूरव जव बालक तणो ॥ ( उद्वालो )  
 बालक तणो जवचूप पूढै कहै इण पर केवली । रोहणी राणीरो जवांतर  
 अनें राजानो बली । श्रीगुरु पासे पाढले जव रोहणी तप आदरयो । तप  
 तणें सगते साधु जगते तुम्ह जवसायर तरयो ॥ १३ ॥ ( चाल ) कहै राजा  
 रे किम रोहणितप कीजीयै । विधि जापोरे जिम तुम पासे लीजीयै । तव  
 मुनिवररे विध रोहणरा तप तणी । इम जंपैरे चित्रसेन राजा जणी ॥  
 ( चाल ) राजा जणी विधएह जंपै चंद्र रोहण तप आवियै । उपवास कीजे  
 लाज लीजे जली जावना जाविये । बारमा जिनवर तणी प्रतिमा पूजियै म  
 नरइसु । इम सात वरसां लगे कीजे तजी आलस अइसु ॥ १४ ॥ ॥ ॥

(दाल)३ ॥ ॐ ॥ वीरसुणो मोरी वाननी (एचाल) ॥ ॐ ॥ तप करियै रोहणि  
तणो । बली करियैहो उजमणो एम । तप करतां पातिक ट्ये । तिण कीजै  
होनपसेतो प्रेम ॥ १५ ॥ ( त० ) ॥ देव छहारी देहरे । तिण आगे हो कीजै  
वृक्ष अशोक । गुणनो वारम जिन तणो । जला नेवज हो धरीये सहु थो  
क ॥ १६ ॥ त० ॥ केशर चन्दन चरचीये । कीजै आगे हो आठे मङ्गलीक ।  
विधसुं पुस्तक पूजीये । ते पांमें हो शिवपुर तहतीक ॥ १७ ॥ ( त० ) ॥ सेवा  
कीजै साधूनी । वलि दीजै हो सुंह मांग्यादान । संतोपी जै साहमी । मन  
रुझे हो कर २ पकवान ॥ १८ ( त० ) पाटी पोथी पुंठणा । मिस लेखण  
हो जिल मिज सुजगीस । नवकरवाली बीटणा । गुरु आगे हो धरो सत्ता  
वीम ॥ १९ ( त० ) ॥ चौथो व्रत पिण तिणदीन । इम पाजे हो मन आण  
विवेक । इण विध रोहणि आदरे । तेपांमें हो आनन्द अनेक ॥ २० ॥  
॥ ॐ ॥ ( दाल ४ धरम करो जिनवर तणो ) ॥ ॐ ॥ इम महिमा रोहण तणी ।  
श्रीग्यानी गुरु परकासेरे । चित्रसेनने रोहणी । वाशपूज्य निर्विकर पासे रे ॥  
२१ ( इ० ) ॥ इणपर रोहणि आदरी । ऊपर उजमणो कीधोरे । चित्रसे  
नने रोहणी । मनसूधै संजम लीधोरे ॥ २२ ( इ० ) ॥ आठे पुत्रे आदरी । दि  
ख्या वारम जिन आगेरे । वलि नानाविध तप तपे । धरम तणी मति जागेरे ॥  
२३ ( इ० ) ॥ करि अणमण आराधना । लहि केवल शिवपद पाधारे । जि  
नवाणी आणी हीये । प्रभु चरणां चितलाया रे ॥ २४ ( इ० ) ॥ मनमोहन  
महिमानिलो । मंतवियो शिवपुर गामीरे । मनमान्या माहिब तणी । हिव  
पुन्ये सेवा पामी रे ॥ २५ ( इ० ) ॥ ॐ ॥ कलश ॥ ॐ इम गगन दुग सु  
नि चंद्र वग्मे ( १७२० ) चौथ आवण सुद जली । में कही रोहण तणी महि  
मा सुगुरु सुख जिय मांजली । वाश पूज्य अमनें थया सुप्रशन चितनी चि  
ता दती । श्रीमारजिन गुण गावतां हिव सकल मन आश्या फली ॥ २८ ॥  
इति रोहणी तप स्तवन संपूर्णम् ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ रोहणी तपविधिः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ शुभ दिन गुरुके पास रोहणी तप ग्रहण करे । रोहणी नक्ष  
त्रके दिन उपवास करे । वात्सा श्री वाश पूज्य स्वामीका पूजन करे । आ



गै अष्ट मंगलीक रचना करे । अष्ट द्रव्य चढावै । देव बंदनादिक करकै  
धर्मोपदेश शुणें ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीवाश पुज्यस्वामी सर्वज्ञाय नमः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इसी को ( २००० ) गुणनो करे । ऐसैं सात वरश ( यह )  
तप करनेसैं । सुख शौजाग्य बधैगा । विशेष अधिकार । यह रोहणी तप  
का स्तवन सुणनेसैं मालुम होगा ( अलं विस्तरेण ) इति रोहणीतप विधिः॥

॥ ❀ ॥ अथ ठम्माशी तप स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गोतम स्वामीरे बुध दो निरमली । आपो करिय पसाय । म  
हावीर स्वामी जे जे तप कीया । तेहनो कहिसुं विचार ( बलि २ बांडुं  
वीरजी सुहामणा ) ॥ १ ॥ जावठ जंजण सेव्यां सुख करै । गातां नवनि  
धि थाय । वारैं वरसां वीरजी तपकीयो । दूरकरै सहु पाप ( व० )  
॥ २ ॥ वे करजोमी एहुं वीनबुं । श्रीजिन शाशन राय । नाम लियांथीं  
नव निधि संपजै । दरशण पुरित पुलाय ( व० ) ॥ ३ ॥ नव चौमाशा जिन  
जीरा जांणियै । एक कियो ठम्माश । पांचे ऊणा ठ बलि जाणीयै । वार  
के को जी माश ( व० ) ॥ ४ ॥ बहुतर माश खमण जग जीपता । ठ दो  
माशीरे जाण । तीन अढाई दो दो कीया । दो दोढमाशी वखाण ( व० )  
॥ ५ ॥ चद्र महाचद्र शिवगति जाणीयै । उत्तम एहना प्रकार । विचमें पा  
रणो स्वामी नवि कीयो । नवि कीयो चौथो आहार ॥ ४ ॥ ( व० ) तिहुं  
उपवासे प्रतिमा वारमी । कीया वारै जी माश । दोयसै बेला जिनजीरा  
जाणीयै । इम गुणतीस विलास ( व० ) ॥ ६ ॥ तीनसै पारणा जिनजीरा  
जांणीयै । तीन गुणतीश पचाश । एहमें स्वामी केवल पामिया । पांम्या सु  
गति आवास ( व० ) ॥ ६ ॥ ( कलशः ) इम वीर जिनवर सयल सुखकर  
अतही पुकर तप करी । संयम सुपाली कर्म टाली स्वामी शिवरमणी वरी ।  
सेवक पजणैं वीर जिनवर चरण बंदित तुमतणा । संसार कृप पंन राखी  
आपो स्वामी सुखवणा ॥ ७ ॥ ॥ ❀ ॥ इति ठम्माशीतप स्तवनं ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ठम्माशी तप विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शाशनके अधिपति श्री महावीर स्वामी । सर्वसैं उत्कृष्ट ठम्माशी

तप कियो । ( इमीसैं ) इस कालमें संवयण बल पराक्रमके हीनपणासैं इ  
कसार उम्माशी तप न कर सकै ( तोपिण ) उम्माशीके ( १८० ) उपवास  
करनेसैं । जवन्य उम्माशी तपके फलको प्राप्त होय । और देववन्दनादि  
सर्व क्रिया करे । उम्माशी तपका स्तवन शुणें । इस उम्माशी तपके स्तव  
नमें । सर्व तपस्या की संख्या कही है ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

१ ॥ श्री महावीर स्वामी नाथाय नमः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥

इसी को ( २००० ) गुणनो करे । जगवंत श्रीमहावीर स्वामीके नाम  
सैं तीर्थ प्रसिद्ध होय । उहां यात्रा करनेको जावे । अनेकतरंगें शुद्धी  
वना जावे । शक्ति माफक उद्यापन करे । इस तपस्याके प्रसाद लघुकर्मों  
होके अनन्त सुखको प्राप्त होय ॥ ❀ ॥ इति उम्माशी तप विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ वारै माशी तप स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दानं उद्धत धरी दीजीये । ( एदेशी ) ॥ ❀ ॥ त्रिनुवन नायक तुं ध  
णी । आदि जिणेश्वर देवरे । चौसठइंद्र करे सदा । तुजपद पंकज सेवरे  
( त्रिनु० ) ॥ १ ॥ प्रथम नृपाल प्रनु तुंथयो । इण अवसरपणी कालरे ।  
तुज सम अवरनको प्रनु । तुं प्रनु दान दयालरे ( त्रि० ) ॥ २ ॥ प्रथम ती  
र्थ कर तुं मही । केवल ग्यान दिनंदरे । धर्म प्रज्ञापक प्रथम तूं । तूंही  
हे प्रथम जिनंदरे । ( त्रि० ) ॥ ३ ॥ अंतर अरिजे आत्म तणा । काल  
अनादि यितिजेहरे । ते तप शक्तिये तेहण्या । आत्म वीरज गुण  
गेहरे ( त्रि० ) ॥ ४ ॥ ताहरी शक्ति कुण कह सकै । जेहनो अंत न  
पारे । आदश माशनो तप करघो । तेह अपानक मारे ( त्रि० ) ॥ ५ ॥  
एह उत्कृष्ट तप वरणव्यो । आगममें जिन राजरे । ते करवुं अति आकरुं  
तप विना किम मरे काजरे ( त्रि० ) ॥ ६ ॥ तीनशे माठ उपवास ते । जे  
इण पंचम कालरे । अवसर आदरे क्रम विना । ते पिण जवि सुविसालरे  
( त्रि० ) ॥ ७ ॥ ए तप सुरुमुख आदरे । शास्त्र नयें अनुसारे । पम्किम  
णादिक जावरी । सुद्ध क्रिया मन धारे ( त्रि० ) ॥ ८ ॥ चित्तनमाधि सुज  
जावरी । धरे ताहरो ध्यानरे । ते नर उत्तम फल जेहे । बलिजहे उत्तम  
ग्यानरे ( त्रि० ) ॥ ९ ॥ काल अनादि संसारमें । जन्म मरण नाणा दु

कखरे । ते लह्या धर्म पायांविनां । तप विनां किमहुवे सुक्खरे ( त्रि० )  
 ॥ १० ॥ हिव लह्यो नर जव पुन्यथी । बलिलह्यो श्रीजिनधर्मे । तत्त्वनी  
 रुचिथईहे मुजे । हिव मिट्यो मन तणो जर्मेरे ( त्रि० ) ॥ ११ ॥ जव २  
 एक जिनराजनो । सरण हो ज्यो सुख कारे । कुगुरु कुदेव कुधर्मनो । मे  
 कियो हिवै परिहाररे ( त्रि० ) ॥ १२ ॥ दर्शन ग्यान चारित्र ए । मोक्ष  
 मार्ग सुविसालरे । जव २ जे मुऊ संपजै । तो फलै मंगल मालरे ( त्रि० )  
 ॥ १३ ॥ श्रीजिनशाशन तप कह्यो । ते तप सुस्तरु कंदरे । धन २ जेनर आ  
 दरे । काटै ते करमनो फंदरे ( त्रि० ) ॥ १४ ॥ ( कलशः ) इम नाजि  
 नंदन जगत वंदन सकल जन आनंदनो । मैथुण्यो धन दिन आजनो सु  
 मात मरुदेवी नंदनो । संवत सुनेत्रा कास निधि शशि नयर श्रीवालूचरे  
 श्रीजिन सौजाग्य सुरिंदके सुपसाय विजयविमल वरे ॥ १५ ॥ ॥ ❀ ॥  
 इति श्री बारै माशी तप स्तवन संपूर्णः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ बारै माशी तपविधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथमतिर्थकर श्री रुषजदेव स्वामी उत्कृष्ट बारै माशी तपस्या  
 करी ( इसीसैं ) जव्य जीव बारै माशी तपस्याका जाव लायके ( ३६० )  
 तीन सैं साठ उपवास करै । जिस दिन व्रत होय उसदिन देववंदनादि क्रिया  
 करै । बारै माशी तपका स्तवन सुणें ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ १ ॥ श्री रुषजदेव स्वामी नाथाय नमः ॥ ❀ ॥

इसीको ( २००० ) गुणनो करै । तपस्या पूर्ण होनसैं सिद्धगिरी यात्रा  
 करनेको जावै । शक्तिमाफक उद्यापन उठव करै । इस तपस्याके प्रशाद  
 जव्य जीवोंके कभी दुख दो जाग्य प्राप्ती न होय । सदा तप तेज बढ़त  
 रहे । इति बारै माशी तपस्याविधिः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अठाईस लब्धी तप स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दुहा ) प्रणमं प्रथम जिनेसरु । शुद्धमनं सुखकार । लब्धि  
 अठावीस जिन कही । आगमनं अधिकार ॥ १ ॥ प्रण व्याकरणं प्रगट  
 जगवती सुत्रमजार । पन्नवणा आवस्यके । बारु लब्धि विचार ॥ २ ॥  
 आंविज तप कर ऊपजै । लब्धां अठावीस । एहिव परगट अखसुं । सां

मलज्यो सुजगीस ॥ ३ ॥ ( दाल ) ॥ ❀ ॥ सफल संसारनी ॥ ❀ ॥  
 प्रभुक्रमे हेव अधिकार गाथा तणें । लवधिना नाम परिणाम सारिषा जणें ।  
 रोग सह जाइ जसु अंग फरस्यां सही । प्रथम ते लवधि ते नाम आमो  
 सही ॥ ४ ॥ जासु मल सुत्र उगध समा जाणीये ॥ वीय विष्णोसही लवधि  
 खाणीये । श्लेषम उगध सारिखो जेहनो । तीजी खेलोसही नाम ते तेह  
 सो ॥ ५ ॥ देहना मैलथी कोड दूरे हुवे । चोथी जलोसही नाम तेह  
 सो ठवे । केश नख रोम सह अंग फरसे सही । रहै नही रोग सज्योसही  
 ते कही ॥ ६ ॥ एक इंद्रिय करी पांच इंद्रिय तणा । जेद जाणें तिका नाम  
 पंजिन्नणा । वस्तु रूपी सह जांणिये जिण करी । सातमी लवधि ते अ  
 धि ग्यानं करी ॥ ७ ॥ ❀ ॥ ( दाल ) आव्यो तिहां नरहर ( ए चाल ) ॥  
 । ❀ ॥ हिव आंगुल अदीये ऊणो मानुष क्षेत्र । संग्या पंचेंद्री तिहां जे  
 समय विचित्र । तसु मननो चिंतित जाणें थूल प्रकार । ते कृष्णमति नामें  
 प्रथम लवधि विचार ॥ ८ ॥ संपूरण मानुष क्षेत्रे संज्ञावंत । पंचेंद्रिय  
 जे ते तसु मन वार्ता तंत । सुखम परजाये जाणें सह परिणाम । ए नवमी  
 कर्हाये विपुलमती सुत्र नाम ॥ ९ ॥ जिण लवधि प्रजावे उनी जाय  
 आकाश । ते जंवा विज्ञाचारण लवधि प्रकाश । जसु वचन सरापे लि  
 णमें खेसंथाय । ए लब्ध इग्यारमी आसी विम कहवाय ॥ १० ॥  
 सह सुखम वादरदेखे लोकालोक । ते केवल लवधी बारमिये सह  
 योक । गणधर पद जहीये तेसु लवधि प्रमाण । चवदम लवधे करी चव  
 द पूरव जाण ॥ ११ ॥ तीर्थकर पदवी वामें पनरमी लवधि । मोलम सु  
 लदाई चक्रवर्ति पदारीइ । वज्रदेव तणो पद जहिये सतरमी सार । अ  
 श्वारमि आखा वासुदेव विस्तार ॥ १२ ॥ भिसरी वृत्त खीरे मेल्या जेह  
 सवाद । पदवी जेहे वाणो जगणी मम परमाद । तणीयो नविनूजे सुत्र  
 अरथ सुविचार । ते कुष्टिक बुनी वीशम लवधि विचार ॥ १३ ॥ एके प  
 द जणीये आवे पद लख कोन । इक वीशमी लवधी पायाणु मारणी  
 जोन । एके अरथे करी उरजे अरथ अनेक । बावीसम कर्हाये राज  
 बुधि सुविचार ॥ १४ ॥ ❀ ॥ ( दाल ) ॥ ❀ ॥ कपूर हुवे अति उज्जलो

कखरे । ते लह्या धर्म पायांविनां । तप विनां किमहुवै सुक्खरे ( त्रि० )  
 ॥ १० ॥ हिव लह्यो नर ज्व पुन्यथी । वलिलह्यो श्रीजिनधर्मे । तत्त्वनी  
 रुचियईहे मुजे । हिव मिट्यो मन तणो जर्मेरे ( त्रि० ) ॥ ११ ॥ ज्व २  
 एक जिनराजनो । सरण हो ज्यो सुख कारे । कुयुरु कुदेव कुधर्मनो । मे  
 कियो हिवै परिहाररे ( त्रि० ) ॥ १२ ॥ दर्शन ग्यान चारित्र ए । मोह  
 मारग सुविसालरे । ज्व २ जे मुऊ संपजै । तो फलै मंगल माजरे ( त्रि० )  
 ॥ १३ ॥ श्रीजिनशाशन तप कह्यो । ते तप सुरतरु कंदरे । धन २ जेनर आ  
 दरे । कोटै ते करमनो फंदरे ( त्रि० ) ॥ १४ ॥ ( कलशः ) इम नात्रि  
 नंदन जगत वंदन सकल जन आनंदनो । मेथुण्यो धन दिन आजनो मुऊ  
 मात मरुदेवी नंदनो । संवत सुनेत्रा कास निधि शशि नयर श्रीबालूकरे  
 श्रीजिन सौजाग्य सुरिंदके सुपसाय विजयविमल वरे ॥ १५ ॥ ॥ ❀ ॥  
 इति श्री वारै माशी तप स्तवन संपूर्णः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ वारै माशी तपविधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथमतिर्थंकर श्री रुषजदेव स्वामी उत्कृष्ट वारै माशी तपस्या  
 करी ( इसीसे ) ज्वय जीव वारै माशी तपस्याका जाव लायके ( ३६० )  
 तीन सै साठ उपवास करै । जिस दिन व्रत होय उसदिन देववंदनादि क्रिया  
 करै । वारै माशी तपका स्तवन सुणें ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ १ ॥ श्री रुषजदेव स्वामी नाथाय नमः ॥ ❀ ॥

इसीको ( २००० ) गुणनो करै । तपस्या पूर्ण होनेसे सिद्धिगिरी यात्रा  
 करनेको जावै । शक्तिमाफक उद्यापन उठव करै । इस तपस्याके प्रसाद  
 ज्वय जीवोंके कभी दुख दो जाग्य प्राप्ती न होय । सदा तप तेज बढ़तो  
 रहे । इति वारै माशी तपस्याविधिः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अठाईस लब्धी तप स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( पुहा ) प्रणमं प्रथम जिनेसरु । शुद्धमनं सुखकार । लवधि  
 अठावीस जिन कही । आगमनं अधिकार ॥ १ ॥ प्रण व्याकरणं प्रगट  
 जगवती सुत्रमजार । पन्नवणा आवस्यके । बारु लवधि विचार ॥ २ ॥  
 आंखिल तप कर ऊपजै । लवधां अठावीस । एहिव परगट अरथसुं । सां

अजन्मो सुजगीस ॥ ३ ॥ ( ढाज ) ॥ ॐ ॥ सफल संसारनी ॥ ॐ ॥  
 अनुक्रमे हेंव अधिकार गाथा नणें । लब्धिना नाम परिणाम सरिषा जणें ।  
 रोग सह जाइ जसु अंग फरस्यां सही । प्रथम ते लब्धि ते नाम आमो  
 सही ॥ ४ ॥ जासु मज सुत्र उषध समा जाणायें ॥ वीथ विष्णोसही लब्धि  
 वखाणीये । श्लेषम उषध सारिखो जेहनो । तीजी खेजोसही नाम ते तेह  
 नो ॥ ५ ॥ देहना मेलथी कोढ दूरे हुवे । चोथी जखोसही नाम तेह  
 नो ठवे । केश नख रोम सह अंग फरसे सही । रहे नही रोग सज्जोसही  
 ते कही ॥ ६ ॥ एक इंद्रिय करी पांच इंद्रिय तणा । जेद जाणें तिका नाम  
 संचिन्ना । वस्तु रूपी सह जाणियें जिण करी । सातमी लब्धि ते अ  
 वधि ग्यान करी ॥ ७ ॥ ॐ ॥ ( ढाज ) आव्यो तिहां नरहर ( ए चाज ) ॥  
 ॥ ॐ ॥ हिव आंगुल अदीये ऊणो मानुष द्वेत्त । संग्या पंचेंद्री तिहां जे  
 वसय विचित्र । तसु मननो चिंतित जाणें थूल प्रकार । ते कृत्तमति नामें  
 अष्टम लब्धि विचार ॥ ८ ॥ संपूरण मानुष द्वेत्ते संज्ञावंत । पंचेंद्रिय  
 जे ते तसु मन वार्ता तंत । सुखम परजायें जाणें सह परिणाम । ए नवमी  
 कहीये विपुलमती सृज नाम ॥ ९ ॥ जिण लब्धि प्रभावे उनी जाय  
 आकाश । ते जंवा विज्ञाचारण लब्धि प्रकाश । जसु वचन सरापे खि  
 णमें खेसंथाय । ए लब्ध इग्यारमी आसी विम कहवाय ॥ १० ॥  
 सह सुखम वादरदेत्ते लोकालोक । ते केवल लब्धी वारमिये सह  
 थोक । गणधर पद लहीये तेरम लब्धि प्रमाण । चवदम लब्धे करी चव  
 दे पृथ्व जाण ॥ ११ ॥ नार्थकर पदवी वामें पनरमी लब्धि । सोलम सु  
 खदाई चक्रवर्ति पदारीवि । वज्रदेव तणो पद लहीये सतरमी सार । अ  
 त्तरामि आत्मा वासुदेव विस्तार ॥ १२ ॥ मिसरी वृत्त सौरे मेल्या जेह  
 सवाद । एठवी जेहे वाणी उगणी मम परमाद । जणीयो नविनूजे सुत्र  
 अरथ सुविचार । ते कृष्टिक बुद्धी वीशम लब्धि विचार ॥ १३ ॥ एके प  
 द जणीये आवे पद लख कोम । इक वीशमी लब्धी पायाणु सारणी  
 जोम । एके अरथे करी उजै अरथ अनेक । वार्वीमम कहीये बीज  
 बुद्धि सुविवेक ॥ १४ ॥ ॐ ॥ ( ढाज ) ॥ ॐ ॥ कपूर हुवे अति ऊजलो



रे ( एचाल ) ॥ ❀ ॥ सोलह देश तणी सहीरे । दाहक सगति वखाण ।  
 तेह लवधि तेवीसमीरे । तेजोलेस्या जाण ॥ १५ ॥ ( चतुरनर सुण ज्यो ए  
 सुविचार ) । आगममें अधिकार । वारू लवधि विचार ( च० ) चवदह  
 पूरव धर मुनिवरूरे । उपजन्ता संदेह । रूप नवो रचि मोकलै रे । लवधि  
 आहारक एह ( च० ) ॥ १६ ॥ तेजो लेस्या अगनिने रे । उपशम वा जल  
 धार । मोटी लवधि पचवीश मीरे । शीतो लेस्या जाण ( च० ) ॥ १७ ॥  
 जेण सगति सुं विकुरवै रे । विविध प्रकारै रूप । सदगुरु कहै ठावीसमीरे ।  
 वेक्रिय लवधि अनूप ( च० ) ॥ १८ ॥ एकणपात्रे आदमीरे । जीमावै केई  
 लाख । तेह अक्षीण महाणसीरे । सत्तावीसमी साख ( च० ) ॥ १९ ॥  
 चूरै सेन चक्कीसनीरे । संघादिकनें काम । तेह पुलाक लवधि कहीरे ।  
 अष्टावीशमी नाम ( च० ) ॥ २० ॥ तेज शीत लेस्या विहुरे । तेम पुलाक  
 विचार । जगवती सूत्रमें जाषियो रे । ए त्रिहुंनो अधिकार ( च० ) ॥  
 २१ ॥ पन्नवणा आहारनीरे । कलपसूत्र गणधार । तीन तीन इक २ मिली  
 रे । वारू आठ विचार ( च० ) ॥ २२ ॥ प्रण व्याकरणें कहीरे । वाकी  
 लवधां वीश । सांजलतां सुख ऊपजैरे । दोलत हुवै निशि दीश ( च० )  
 ॥ २३ ॥ ❀ ॥ ( कलशः ) ॥ ❀ ॥ संवत्त सतरैसे ठवीशै मेरु तेरस दिन  
 जलै । श्रीनगर सुख कर लूणकरणसर आदि जिन सुपसावलै । वाच  
 ना चारज सुगुरु सांनिध विजय हरष विलासए । श्रीधर्म वर्धन स्तवन न  
 णतां प्रगट ग्यान प्रकाश ए ॥ २४ ॥ इति ( २८ ) लब्धि स्तवनं ॥

॥ अथ अष्टाईस लब्धि तप विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( शुभदिन ( गुरुके पास ) । २८ लब्धि तप ग्रहण करै । अ  
 नुक्रमसें २८ उपवास करै । स्तवन सुणें । ( जिस दिन ) जो लब्धी को  
 उपवास होय । उसी लब्धी के नामको गुणनो करै । तप पूर्ण होनेसें । श  
 क्ति माफक उद्यापन करै । यह तपस्या करनेसें निर्मल बुद्धि उत्पन्न होय ।  
 सदा आनंद रहे ॥ ❀ इति २८ लब्धि तप विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ १४ पूर्व स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ बेकर जोमी ताम ( एचाल ) । जिनवर

श्री ब्रधमान । चरम तीर्थकर । ग्रह ऊठी प्रणसुं सुदा ए ॥ श्रुतधर श्रीग  
णधार । सूरि शिरोमणी । नमतां नवनिधि संपदाए ॥ १ ॥ चवदे पूरव ना  
म । सुत्रे जृज्जवा । वीरजिणंदे जार्पायाए ॥ नेहिव सुगुरुपमाय । वरणव  
स्युं इहां । आगममें जिम उपदिस्याए ॥ २ ॥ पहिला पूर्व उत्पाद १ । दूजो  
अग्रायणी २ । वीर्यवाद ३ तीजो नसुंए ॥ अस्ति नास्ति प्रवाद ४ । सत्ता  
जाणी ये । नारगरयण ५ पंचम गिणुंए ॥ ३ ॥ ठठो सत्यप्रवाद ६ । सत्तम  
आतम ७ । कर्म प्रवाद अठम गिणोए ८ ॥ प्रत्याख्यान प्रवाद ९ । नामें  
नवम । विद्या प्रवाद दशमो कह्योए १० ॥ ४ ॥ इग्यारम नाम कट्याण  
११ । प्राणायु वारमो १२ । क्रिया विलास तेरम जणोए १३ ॥ विंछुसार  
इण नाम १४ । चवदे एकह्या । साख थकी में संग्रह्याए ॥ ५ ॥ ( ढाल २ )  
श्रीविमलाचल सिरतिलो ( एदेशी ) ॥ उत्पादपूर्वसोहामणो । कोटी पद परि  
माण । पटजाव प्रगट्टे ते जिहां । त्रिपदी जावविनांण ॥ १ ॥ सर्वद्र  
व्य पर्यय तणो । जीव विशेष प्रमाण । दूजो पूर्व अग्रायणी । त्रिभू लख  
पद जांण ॥ २ ॥ पदलख सत्तर जेहनी । संख्या परगट एह । वीर्य प्रवल  
ता जीवनी । जापी तीजें तेह ॥ ३ ॥ चौथे पूर्वे जे कयो । अस्ति नास्ति  
प्रवाद । पदसंख्या साठ लाखनी । सप्त जंगी स्याद्वाद ॥ ४ ॥ ग्यानप्रवाद  
पद पंचमो । सूत्रे आणयो जोरु । मत्पादिक पाण जेदसुं । पद संख्या इक  
कोरि ॥ ५ ॥ सत्य प्रवाद ठठोकहुं । जापुं मत्व स्वरूप । संख्यापद इग को  
रुनी । जापी अगम अट्टप ॥ ६ ॥ नित्यानित्यपणो इहां । आतमद्रव्य  
सुजाव । उर्वीम पद कोरु जेहना । सुत्रेआण्यां जाव ॥ ७ ॥ कर्मप्रवाद  
तणो हिवे । प्रगट पाण अधिकार । लाख अमी पद जेहना । कोटी इग  
निरधार ॥ ८ ॥ नवमो पूर्व कहुं हिवे । नामें प्रत्याख्यान । लाख चौसशी  
जेहवा । पद संख्याचित्त आन ॥ ९ ॥ अनिमय गुणसंयुत जणी । साधन  
गाव्य निदांन । विद्या अट्टपम मातशे । कोरु दस लख जान ॥ १० ॥  
कट्याण नाम इग्यारमो । उर्वीम कोरु प्रमाण । ज्योतिष शास्त्र विचारणा  
चौषीह देवकट्याण ॥ ११ ॥ प्राणायु पद वारमो । नृपत्र लख इग कोरु ।  
प्राण निरोधन जे क्रिया । शास्त्रे आणयो जोरु ॥ १२ ॥ ख्याविव्यादिक जे

कीया । उंद क्रिया सुविसाल । पद संख्या नव कोरुनी । तेरमी किरिया  
 विशाल ॥ १३ ॥ लोकसार विंदु चवदमो । नामें अरथ निहाल । पद सं  
 ख्या इग कोडनी । लाख पचवीश संजाल ॥ १४ ॥ लोकप्रत्यय देखल  
 जणी । संख्या गज परिमाण । सोलसहस अरु तीनशै । नर तयांसी जाण  
 ॥ १५ ॥ पूरव संख्या एकही । गुणमालाथी देख । आगै बुधजन सोध  
 ज्यो । वाकी देशविशेष ॥ (ढाल३) वीर जिणेसर उपदिशै (ए चाल) ॥ सूत्रे  
 गुंथै गणधरा । अरथे अरिहंत जाणैरे । ते श्रुत ग्यान नमुं सदा । पाप तिमर  
 जिमनासैरे ॥ १ ॥ (वाणीरे जिनंदनी) सुणज्यो चित हित आणीरे ।  
 तत्व रमणता अनुसरै । संपूरण गुण खाणीरे (वा०) ॥ २ ॥ विषय कषाय  
 तजी करी । ग्यान जगत उरधारीरे । विधि संयुत जिन मंदिरै । प्रभुमुखपा  
 श जुहारीरे (वा०) ॥ ३ ॥ तप जप संयम आदरी । श्रीश्रुत ग्यान निधा  
 नोरे । सदगुरु चरण नमी करी । संवर जोग प्रधानोरे (वा०) ॥ ४ ॥ अ  
 कृत लेई ऊजला । गुंहली सुंदर कीजैरे । नांण दंसण चारित्रनी । ढिगली  
 तीन धरीजैरे (वा०) ॥ ५ ॥ चवद पूर्व व्रत इणपरै । सुगुरु संजोगै लेईरे ।  
 विधिसुं पुस्तक पूजीयै । चित अति आदर देईरे ॥ ६ ॥ (वा०) इम तप सं  
 पूरण थयां । ऊजमाणो हिव कीजैरे । घरसारु धनखरचनें । नर जव लाहो  
 लीजैरे (वा०) ॥ ७ ॥ पूठा परत विटांगणा । पूरव नाम प्रमाणोरे । नवकर  
 वाली कोथली । लेखण ठवणी जाणोरे ॥ ८ ॥ देहरै देवजुहारनें । आरती मं  
 गल कीजैरे । सनात्र पूजा बलि साचवी । तत्वसुधारम पीजैरे ॥ ९ ॥  
 (वा०) इण पर तप आराधतां । दुरगति कारण ठेदैरे । चवदह रज्जु  
 सिरोमणि । जीव अकृत्य गतिवेदैरे ॥ १० ॥ (वा०) तप आराधन विध  
 जणी । आगम वचने जोईरे । जवियण पिणतुमे आदरो । ज्युं जव भ्रम  
 ण न होईरे ॥ ११ ॥ (वा०) (कलशः) इमसयल सुख कर गढ खरतर तपै  
 रविजिम कांतए । सौजाग्य सूरि सुणिंद इण पर कह्यो पूर्ववृत्तंत ए । सं  
 वत अठारै वरश ठिन्नू नयर श्री बालूचरे । ए स्तवन जणतां श्रवणसुणतां  
 सयल मन वंडित फले ॥ १२ ॥ ॐ ॥ इति चवदे पूर्व स्तवनं संपूर्णम् ॥ ॐ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ( १४ ) पूरव तपविधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चवद्वे पूर्वकी तपस्याके ( १४ ) उपवास करे । ( जिस दिन जो पूर्वका उपवास होय । उसी पूर्वके नामसे ( २००० ) गुणनो करे । स्तवन सुणें । इस स्तवनमें १४ पूर्वके नाम । और विधि सर्व लिखी है । उसी मुजव विवेकी जीव गुरुमें समझके करे । यह तपस्याके करनेसे ज्ञाना वरणादि कमका हयोपशम होय । शुभ ज्ञानका उदय होय ॥ ❀ ॥ इति १४ पूर्व तपविधिः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ तिलक तपस्या स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ ❀ ॥ सासण देवी सारदा । वाणी सुधारस वे ल । बालक हितप्रणी वगसिये । सुबुधि सुरंगी रेल ॥ १ ॥ नवम अंग जि नपूजतां । मनजहि सुत्रपरिणाम । तप तिलके फल पामिये । दवदंती गु णधाम ॥ २ ॥ ❀ ॥ ( डाल ) ॥ ❀ ॥ वीर जिणेश्वर उपदिसे ( एदेशी ) ॥ कमला जिम कुंज पुरे । नुज वल नरपतिजामेरे । पदमनी पदम सु वासना । श्वेतगज स्वप्नेनीमेरे ( पदम० ) ॥ १ ॥ परत्तख्य फल ए पुन्य ना । प्रसर्वासुता पुरे माशेरे । दवदंती नाम दीपती । गुणमणि बुद्धि प्रका शेरे ( प० ) ॥ २ ॥ चौमठ कला विचहणा । रूप गुण करी रंजारे । देव गुरु धर्म दीपावती । व्रतधारी दृढ वंजारे ( प० ) ॥ ३ ॥ प्रतिमा पूजे श्रीसांतीनी । देवे दीधी त्रिकालो रे । मात पिता प्रमोदसुं । स्वयंवर वर माजारे । ( पदमनी० ) ॥ ४ ॥ उवजाया धिपश्री निपदनो । नल लिखी यो निजामेरे । आनन्दसुं पंथआवतां । पूरव पुन्य सुवासे रे ( प० ) ॥ ५ ॥ मझमरवणी तमजरी । मधु ख कुंज इहां वनमेरे । माणि जाले तेज दिनमणी । जाग्रत देखी अहो मनमेरे ( प० ) ॥ ६ ॥ ग्यानधारी गुरु कोइ मिले । पूजये पट प्रमोदरे । कर्म बले सुनि आर्षाया । परमह जीत मदभोरे ( प० ) ॥ ७ ॥ पंच जीत पंच माजना । राजता दुस्मद मजजारे । मंजम श्रुव मं जालना । उदम शिव सुत कमजारे ( प० ) ॥ ८ ॥ ( दूहा ) माणि तेजे सुनि नरउये । ग्ययकी सी मन्तार । देवे तीन प्रदक्षिणा । विधसे चरण सहार ॥ ९ ॥ देशना सुण पावन क्या । ग्यान सुधारम पाय । को तप परत्तव तिल

क्रीया । भेद क्रिया सुविशाल । पद संख्या नव कोमनी । तेरमी किरिया  
 विशाल ॥ १३ ॥ लोकसार विंदु चवदमो । नामें अरथ निहाल । पद सं  
 ख्या इग कोडनी । लाख पचवीश संजाल ॥ १४ ॥ लोकप्रत्यय देख  
 जणी । संख्या गज परिमाण । सोलसहस अरु तीनशै । उर तयांसी जाण  
 ॥ १५ ॥ पूरव संख्या एकही । गुणमालाथी देख । आगै बुधजन सोध  
 ज्यो । वाकी देशविशेष ॥ (ढाल ३ ) वीर जिणेसर उपदिशै (ए चाल ) ॥ सूत्रे  
 गुंथे गणधरा । अरथे अरिहंत जाणैरे । ते श्रुत ग्यान नमुं सदा । पाप तिमर  
 जिमनासैरे ॥ १ ॥ ( वाणीरे जिनंदनी ) सुणज्यो चित हित आणीरे ।  
 तत्व रमणता अनुसरै । संपूरण गुण खाणीरे ( वा० ) ॥ २ ॥ विषय कषाय  
 तजी करी । ग्यान जगत उरधारीरे । विधि संयुत जिन मंदिरै । प्रभुमुखपा  
 श जुहारीरे ( वा० ) ॥ ३ ॥ तप जप संयम आदरी । श्रीश्रुत ग्यान निवा  
 नोरे । सदगुरु चरण नमी करी । संवर जोग प्रधानोरे ( वा० ) ॥ ४ ॥ अ  
 कृत लेई ऊजला । गुंहली सुंदर कीजैरे । नांण दंसण चारित्रनी । ढिगली  
 तीन धरीजैरे ( वा० ) ॥ ५ ॥ चवद पूर्व व्रत डणपरै । सुगुरु संजोगै लेईरे ।  
 विधिसुं पुस्तक पूजीयै । चित अति आदर देईरे ॥ ६ ॥ ( वा० ) इम तप सं  
 पूरण थयां । ऊजमणो हिव कीजैरे । घरसारु धनखरचनें । नर जव लाहो  
 लीजैरे ( वा० ) ॥ ७ ॥ पूठा परत विटांगणा । पूरव नाम प्रमाणोरे । नवकर  
 वाली कोथली । लेखण ठवणी जाणोरे ॥ ८ ॥ देहरै देवजुहारनें । आरती मं  
 गल कीजैरे । सनात्र पूजा वलि साचवी । तत्वसुधारम पीजैरे ॥ ९ ॥  
 ( वा० ) इण पर तप आराधतां । दुरगति कारण भेदैरे । चवदह रज्जु  
 सिरोमणि । जीव अकृत्य गतिवेदैरे ॥ १० ॥ ( वा० ) तप आराधन विध  
 जणी । आगम वचने जोईरे । जवियण पिणतुमे आदरो । ज्युं जव भ्रम  
 ण न होईरे ॥ ११ ॥ ( वा० ) ( कलशः ) इमसयल सुख कर गत्र खरतर तपे  
 रविजिम कांतए । सौजाग्य सूरि सुणिंद इण पर कह्यो पूर्ववृत्तंत ए । सं  
 वत अठारै वरश त्रिभूं नयर श्री बालूचरे । ए स्तवन जणतां श्रवणसुणतां  
 सयल मन वंछित फले ॥ १२ ॥ इति चवदै पूर्व स्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ ❀ ॥ अथ ( १४ ) पूरव तपविधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चवद्वै पूर्वकी तपस्याके ( १४ ) उपवास करे । ( जिस दिन जो पूर्वका उपवास होय । उसी पूर्वके नामसे ( २००० ) गुणनो करे । स्तवन सुणें । इस स्तवनमें १४ पूर्वके नाम । और विधि सर्व लिखी है । उसी मुजब विवेकी जीव गुरुसे समझके करे । यह तपस्याके करनेसे ज्ञाना वरणादि कमका कृपोपशम होय । शुभ ज्ञानका उदय होय ॥ ❀ ॥ इति १४ पूर्व तपविधिः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ तिलक तपस्या स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दृहा ) ॥ ❀ ॥ सासण देवी सारदा । बांणी सुधारस बे ल । बालक हितजणी वगसिये । सुवृधि सुरंगी रेल ॥ १ ॥ नवम अंग जि नपूजता । मनजहि सुजपरिणाम । तप तिलके फल पामिये । दवदंती गु णधाम ॥ २ ॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ वीर जिणेश्वर उपदिसे ( एदेशी ) ॥ कमला जिम कुंमज पुरे । जुज बल नरपतिजामोरे । पदमनी पदम सु वासना । श्वेतगज स्वर्भेनीमोरे ( पदम० ) ॥ १ ॥ परतरख्य फल ए पुन्य ना । प्रसवीसुता पूरे माशेरे । दवदंती नाम दीपनो । गुणमाणि बुद्धि प्रका शेरे ( प० ) ॥ २ ॥ चौमठ कजा विचकूणा । रूप गुण करी रंजारे । देव गुरु धर्म दीपावती । बतधारी दृढ वंजारे ( प० ) ॥ ३ ॥ प्रतिमा पूजे श्रीसांतीनी । देवे दाधी त्रिकालो रे । मात पिता प्रमोदसुं । स्वयंवर वर मालोरे । ( पदमनी० ) ॥ ४ ॥ गुवजाया धिपश्री निपदनो । नज जिखी यो निजकिं । आनन्दसुं पंथप्रावतां । पूरव पुन्य जुवां रे ( प० ) ॥ ५ ॥ मझमखणी जमजरी । मधु ख कुंत इहां वनेमोरे । माणि जाले तेज दिनमणी । जायत देखी अहो मनमोरे ( प० ) ॥ ६ ॥ ग्यानधारी गुरु कोइ मिले । पृष्ठथै गृष्ट प्रसन्नो रे । कर्म बजे नृनि प्रावीया । परंगत जीत मदन्नोरे ( प० ) ॥ ७ ॥ पंच जीत पंच माजना । दाजना दुल्मह नवलारे । संजम शुध सं जाजना । उद्यम शिव सुख कमजारे ( प० ) ॥ ८ ॥ ( दृहा ) माणि तेजे नृनि तरुंये । ग्ययकी श्री जस्तार । देवे तीन प्रदक्षिण । विधसुं चरण जुहार ॥ ९ ॥ देशना गुण पावन भया । ग्यान सुधाका पाय । को तप परजव निज



कहे । कहिये श्रीसुनिराय ॥१०॥ ॐ ॥ (ढाल) नरथनृपजावसुं ए (एचाल) ॥  
 मधुर स्वर सुनिवर कहेए । नाणी गुरु सुपसाय । दीपक सहु लोकनाए ॥  
 कर्म सुजासुज परजवै ए । इह जव फल निपजाय । कर्म गति वांकीए  
 ॥ ११ ॥ उहि नाण जव प्रागनो ए । नृप सुणें निरमल जाव । समकित सा  
 हीयो ए । धर्मवतीको नृप बधु ए । जांएयोहे तत्व प्रस्ताव । साची जिन वा  
 सनाए ॥ १२ ॥ चौथ प्रमुख नृप चंपसुं ए । किरिया शुद्ध करी एह । जल  
 चित्त जावसुं ए ॥ नवांग पूजै तिलकसुं ए । चौठे जिन चौबीश । रयण  
 कंचण जड्याए ॥ १३ ॥ ॥ तिलक २ सें पांमियो ए । समकित एह सर्ता  
 स । जनम सफलो गिणें ए । जगवन तपविधि जाणीयै ए । नल कहे बोध  
 चरीस । पीहर षट्कायनाए ॥ १४ ॥ आदिनाथ अरिहंतनाए । पद उपवास क  
 हीस । त्री चौ बीहारस्युं ए ॥ चौथ दोय जिन बीरनाए । अजिता दिक वा  
 बीस । आणा गुरु शिर वहीए ॥ १५ ॥ पोषध तीश त्रीनें थयाए । पूजन ति  
 लक चढाय । तारक जगदीसनें ए । उद्यापन संघ जक्तिसुं ए । जन्म सफ  
 ल नल राय । सूधेमन साधीयै ए ॥ १६ ॥ सुण वांणी सम कित ग्रहेए ।  
 पयप्रणमी गुरु बीर । चित्त उमाहीयो ए ॥ इण पर जे जवि आदरै ए । थायै  
 चरम शरीर । मूल सुख शाशतो ए ॥ १७ ॥ कलशः ॥ श्रीशांतिदाता त्रिज  
 गत्राता जविक ध्याता सुखकरा । इम सतीय साध्यो तप आराध्यो सुजश  
 वाध्यो शिव घरां । आगमे आखै सुरीय साखै सगुरु जापै सुण यथा । सुद्ध  
 ध्यावै जविक जावै विजय विमल जिनवर कथा ॥ १८ ॥ ॥ ॐ ॥  
 इति तिलक तपस्या स्तवन संपूर्णम् ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ तिलक तपस्या विधिः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ शुभ दिन गुरुके पाम । तिलक तपस्या ग्रहण करके । तीश (३०)  
 उपवास करे । (प्रथम) श्रीरूपजदेव स्वामीके (६) उ उपवास करे (जव) ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ १ ॥ श्रीरूपज देव स्वामी सर्वज्ञाय नमः ॥ ॐ ॥

इस पदको ( २००० ) गुणनो करे । फेर श्रीमहावीर स्वामीके ( २ )  
 दो उपवास करे । ( जव ) ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

१ ॥ श्रीमहावीरस्वामी सर्वज्ञाय नमः ॥ ॐ ॥

इस पदको ( २००० ) गुणनो करे । और श्रीअजितनाथ स्वामीको आदलेके ( २२ ) वाईस जगवंतके ( २२ ) उपवास करे जब

॥ ॐ ॥ १ ॥ श्रीअजितनाथ स्वामी सर्वज्ञाय नमः ॥ ॥ ॐ ॥

इसी अनुक्रममें वाईस जगवंतको गुणनो करे । ( जिस दिन ) जो महाराजके नामको उपवास होय । उसी नामको ( २००० ) गुणनो करे । और सर्व विधि स्तवनमें लिखी है । उसी मुजब करे ॥ इति तिलक तपस्या विधिः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ शोलियेको स्तवन लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ वीर जिनेसर ज्ञापीयोरे लाल । बहु व्रतमें सिर ताज ( जवि प्राणारे ) । कपाय गंजन तप आदरो रेनाज । इण्थी पातिक जाय ( ज० वी० ) ॥ १ ॥ क्रोध वरप तप आदरेरे लाल । क्रोध गमावे फलनाम ( ज० ) । मान करे जे प्राणियारे लाल । ते जगमें न सुहाय ( ज० ) ॥ २ ॥ व्रतमें माया आदरीरे लाल । स्त्री पणो पायो मखिनाथ ( ज० ) रूप परावत कीया घणारेलाल । आपाद चूति गणिका माथ ( ज० ३ वी० ) च्यार कपाय वै मूलगारे लाल । उत्तम सोले जेद ( ज० ) इम जव २ ज मनो थकोरे लाल । जीव पामें बहु खेद ( ज० ४ वी० ) एकाक्षण व्रत जे करेरे लाल । लाख वरस दुख हांणरे ( ज० ) नौवी व्रत दूजो कळोरे लाल । एथारो जिन वर बांण ( ज० ५ ) आंखिनो फल बहु कळोरे लाल । उपजे लवधि अपार ( ज० ) उपवास कर्ता जावसुंरे लाल । पामें जवनो पार ( ज० वी० ६ ) इम दिन शोलै तप करेरे लाल । पूरण एवत थाय ( ज० ) देव गुरु पूजा करेरे लाल । निण्थी पातिक जाय ( ज० ७ ) ए तप आदरयो करेरे लाल । मन वंछित फल थाय ( ज० ) नर सुर रि नि पिण जोगवेरे लाल । निश्चे सुगति जाय ( ज० वी० ) ॥ ८ ॥

इति १६ कपाय गंजन स्तवन मंपूर्णम् ॥ इति शोलिया तप विधिः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ शोलिये तपकी विधि लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ क्रोध १ । मान २ । माया ३ । लोभ ४ । ( यह ४ कपाय में ) जन्तवान धंधियो १ । प्रव्याख्यानियो २ । प्रव्याख्यानियो ३ । मं जजणो ४ । ( इस मासक ) एकेक कपायके न्यार न्यार जेद करनेमें

१६ जेद हुय ( यह ) १६ जेद कषायके दूर करने कौ । प्रथम एकाशणो  
१ । निवी २ । आंविज ३ । उपवास ४ । इसी अनुक्रमसे १६ दिन तप  
करै । स्तवन सुणें । तप पूर्ण होणेंसे । यथाशक्ति उद्यापन करै ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ( ४५ ) पेंतालीस आगम तप विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शुभ दिन गुरूके पास पेंतालीश आगम तप ग्रहण करै । २  
दूज । ५ पांचम । ११ इग्यारस । ( इत्यादि ) ग्यान तिथिकै दिन । अनु  
क्रम से उपवास ( वा ) एकाशणा करै । ( जिस दिन ) जो आगमको तप हो  
य । उसी आगमको गुणनो करै । सिधांत लिखावै । सिधांत सुणें । प  
ढनें वालुंको सहाज्य करै । अपने शक्तिमाफक । सर्व ठिकाणें ज्ञानकी  
वृद्धि करे । ( प्रणमुं श्रीगुरुपाय० ) इत्यादि ज्ञानके स्तवन सुणें । ऐसे ( ४५ )  
दिन तपस्या पूर्ण होनेसे । पेंतालीस ( ४५ ) आगम की पूजा करावै । मं  
दर पोशालमें ग्यानका उपगरण चढावै । ( इत्यादि ) अत्यन्त खुशी होके  
( ४५ ) आगमका आराधन करै । यह तपस्या के करनेसे । मूरखपणा दूर  
होके । शुद्ध आत्म ज्ञानकी प्राप्ति होय ॥ ❀ ॥

अब ( ४५ ) ( आगमके नामलिखते हैं ) ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम इग्यारै अंगको गुणनो ॥ ❀ ॥

- १ ॥ श्रीआचाराङ्गजी सूत्राय नमः ॥ १ ॥
- २ ॥ श्रीसुयगमांगजी सूत्राय नमः ॥ २ ॥
- ३ ॥ श्रीठाणांगजी सूत्राय नमः ॥ ३ ॥
- ४ ॥ श्रीसमवायांगजी सूत्राय नमः ॥ ४ ॥
- ५ ॥ श्रीजगवतीजी सूत्राय नमः ॥ ५ ॥
- ६ ॥ श्रीज्ञाताधर्मजी सूत्राय नमः ॥ ६ ॥
- ७ ॥ श्रीउपाशग दसाजी सूत्राय नमः ॥ ७ ॥
- ८ ॥ श्री अन्तगम दसाजी सूत्राय नमः ॥ ८ ॥
- ९ ॥ श्रीअनुत्तरोववाइजी सूत्राय नमः ॥ ९ ॥
- १० ॥ श्रीप्रसन्नव्याकरणजी सूत्राय नमः ॥ १० ॥
- ११ ॥ श्रीविपाकजी सूत्राय नमः ॥ ११ ॥

॥ ॐ ॥ अथ वारे उपांग नामः ॥ ॐ ॥

- १ ॥ श्रीज्जवाइजी सूत्राय नमः ॥ १२ ॥
- २ ॥ श्रीरायपमेणीजी सूत्राय नमः ॥ १३ ॥
- ३ ॥ श्रीजावात्रिगमजी सूत्राय नमः ॥ १४ ॥
- ४ ॥ श्रीपन्नवणाजी सूत्राय नमः ॥ १५ ॥
- ५ ॥ श्रीजंबुर्माप पन्नतीजी सूत्राय नमः ॥ १६ ॥
- ६ ॥ श्रीचंदपन्नतीजी सूत्राय नमः ॥ १७ ॥
- ७ ॥ श्रीसूरपन्नतीजी सूत्राय नमः ॥ १८ ॥
- ८ ॥ श्रीकण्ठियार्जी सूत्राय नमः ॥ १९ ॥
- ९ ॥ श्रीकण्ठवर्त्मियार्जी सूत्राय नमः ॥ २० ॥
- १० ॥ श्रीपुष्पीयार्जी सूत्राय नमः ॥ २१ ॥
- ११ ॥ श्रीपुष्पचूर्जियार्जी सूत्राय नमः ॥ २२ ॥
- १२ ॥ श्रीवर्द्धादमाजी सूत्राय नमः ॥ २३ ॥

॥ ॐ ॥ अथ उ छेदको गुणानो ॥ ॐ ॥

- १ ॥ श्रीव्यवहार छेद सूत्राय नमः ॥ २४ ॥
- २ ॥ श्रीब्रह्मकल्पजी सूत्राय नमः ॥ २५ ॥
- ३ ॥ श्रीदिनाश्रुतस्त्वयजी सूत्राय नमः ॥ २६ ॥
- ४ ॥ श्रीनिर्शायजी सूत्राय नमः ॥ २७ ॥
- ५ ॥ श्रीमहानिर्शायजी सूत्राय नमः ॥ २८ ॥
- ६ ॥ श्रीजानकत्रयजी सूत्राय नमः ॥ २९ ॥

॥ ॐ ॥ अथ दश पयन्ना नामः ॥ ॐ ॥

- १ ॥ श्रीचोशरण पयन्नाजी सूत्राय नमः ॥ ३० ॥
- २ ॥ श्रीमंथारपयन्नाजी सूत्राय नमः ॥ ३१ ॥
- ३ ॥ श्रीतंजुपयन्नाजी सूत्राय नमः ॥ ३२ ॥
- ४ ॥ श्रीचंद्राविज्जिया सूत्राय नमः ॥ ३३ ॥
- ५ ॥ श्रीगणविज्जिया सूत्राय नमः ॥ ३४ ॥
- ६ ॥ श्रीदेवविज्जिया सूत्राय नमः ॥ ३५ ॥

- ७ ॥ श्रीवीरथुवोजी सूत्राय नमः ॥ ३६ ॥  
 ८ ॥ श्रीगठाचारजी सूत्राय नमः ॥ ३७ ॥  
 ९ ॥ श्रीजोतिष्करंजी सूत्राय नमः ॥ ३८ ॥  
 १० ॥ श्रीमहापञ्चक्खाणजी सूत्राय नमः ॥ ३९ ॥  
 ॥ ❀ ॥ मूलसूत्रजी का नामको गुणनो ॥ ❀ ॥  
 १ ॥ श्रीआवस्यकजी सूत्राय नमः ॥ ४० ॥  
 २ ॥ श्रीउत्तराध्ययन जी सूत्राय नमः ॥ ४१ ॥  
 ३ ॥ श्रीउधनिर्युक्तिजी सूत्राय नमः ॥ ४२ ॥  
 ४ ॥ श्रीदशमीकालकजी सूत्राय नमः ॥ ४३ ॥  
 १ ॥ श्रीअनुयोगप्रारजी सूत्राय नमः ॥ ४४ ॥  
 २ ॥ श्रीनंदीसूत्रजी सूत्राय नमः ॥ ४५ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ११ गणधर तपस्या विधिः ॥ ❀ ॥

॥❀॥ शुद्ध दिन गुरुके पाश ( ११ ) गणधर तप ग्रहण करे । ( ११ ) दिन उपवाश ( वा ) एकाशणा करे । ( जिस दिन ) जोगणधर महाराजको तप होय । उसी नामको ( २००० ) गुणनो करै ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ( ११ ) गणधरोंका नाम लिखते हैं ॥ ❀ ॥

- १ ॥ श्रीइंद्रनृती गणधराय नमः ॥  
 २ ॥ श्रीअशिनृति गणधराय नमः ॥  
 ३ ॥ श्रीवायुनृति गणधराय नमः ॥  
 ४ ॥ श्रीव्यक्तनृति गणधराय नमः ॥  
 ५ ॥ श्रीसुधर्मास्वामी गणधराय नमः ॥  
 ६ ॥ श्रीमंजित स्वामी गणधराय नमः ॥  
 ७ ॥ श्रीमोयपुत्रजी गणधराय नमः  
 ८ ॥ श्रीअकंपितजी गणधराय नमः ॥  
 ९ ॥ श्रीअचलजी गणधराय नमः ॥  
 १० ॥ श्रीमेतार्यजी गणधराय नमः ॥  
 ११ ॥ श्रीप्रन्नवजी गणधराय नमः ॥

॥ यह ( ११ ) गणधर । जगवंत श्रीमहावीर स्वामी के पास अर्थ शुणकै । सर्व सूत्रके रचना करने वाले जए । ( इसी से ) सर्व जव्यजीव । परम मङ्गल जानकै । यह तपस्या करै । शुद्ध ज्ञावसें गणधरपद आराधन करै । गोतमरास सुणें । पूर्ण होनेसें । गणधर महाराजकी पूजा करै । आचार्यादिककी भक्ती करै । ( यथाशक्ति ) परमान्न भोजनसें साहमी बढल करै ॥ इति एकादश गणधर तपविधिः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नवकार तपविधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शुभ दिन गुरुके पास नवकार तप ग्रहण करै । जिस पदका जितना हरफ होय । इतनाई उपवास करै । उसी पदको ( २००० ) गुणनो करै । ( सो लिखते हैं ) ॥

१ ॥ एमो अरिहंताणं । उपवास ॥ ७ ॥

२ ॥ एमो सिद्धाणं । उपवास ॥ ५ ॥

३ ॥ एमो आयरियाणं । उपवास ॥ ७ ॥

४ ॥ एमो उवझायाणं । उपवास ॥ ७ ॥

५ ॥ एमो जोए सबसाहणं । उपवास ॥ ९ ॥

६ ॥ एसो पंच एमुक्कारो । उपवास ॥ ८ ॥

७ ॥ सबपावप्पणासणो । उपवास ॥ ८ ॥

८ ॥ मङ्गलाणंच सबेमिं । उपवास ॥ ८ ॥

९ ॥ पढमंहवइ मङ्गलं । उपवास ॥ ९ ॥

॥ ❀ ॥ ऐसें नवकार मंत्रका । ६८ उपवास करै । ( किंकपत्तरु रे अयाण० ) इत्यादि नवकार मंत्रका फलगर्भित स्तवन सुणें ( सो ) पूर्वे लिख्यो है । तप पूर्ण होनेसें । यथाशक्ति नवपदको उठव करै । ( यह ) नवकार मंत्र १४ पूर्वको सार नृत है । जो जव्यजीव शुद्धज्ञावसें सेवन करेंगे ( सो ) अनेक सुखको प्राप्त होंगे । इति नवकार तपविधि संपूर्ण ॥

॥ ❀ ॥ अथ सर्व तपस्या प्रथम गुरुके पास ग्रहण करै ( सो ) विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( प्रथम ) ५ साथिया करै । ( नमंत० ) यह गाथा



पढकै । शक्ति माफक ग्यान पूजा करै । इरियावही पन्तिकमें । एकलोगस्स को कानुसग्ग करै । ( पारकै ) प्रगट लोगस्स कहै । नीचा बैठकै । सु हपत्ती प्रफिलेहै । दो वांदणा देवै । स्थापनाजीकों खमासमण देई ( जगवन् ) अमुक तप गहणत्थं चेइयं वंदावेह । ( इसो कहकै ) चैत्य वंदन करै । एमोत्थुणं ( इत्यादि ) अरिहंत चेइयाणं० ( अनत्थू ) कहकै ( ४ ) थुई कहै । चौथीगाथा कहकै । नीचाबैठै । एमोत्थुणं कहै । ( ऊना होकै ) ( श्रीशांतिनाथ स्वामी आराधनार्थं करेमि कानुसग्गं ) । अनत्थू कहकै ? लोगस्सको कानुसग्ग करै ( पारकै ) नमोऽर्हत सिद्धा । कहकै ॥ श्रीमते शांतिनाथाय । नमः शांति विधायिने । स्वेलोक्य स्यामराधीस । मुकुटाभ्यर्चितां क्षिये ॥ १ ॥ यह थुई कहै ( शांतिदेवता आराधनार्थं करेमि कानुसग्गं ) अनत्थू० कहै ॥ शांतिः शांतिकरः श्रीमान् । शांतिं दिशतु मे गुरुः । शांतिरेव सदा तेषां । येषां शांतिर्गृहे गृहे ॥ १ ॥ यह थुई कहै । पीठे श्रुतदेवता । क्षेत्र देवता । जुवन देवताको कानुसग्ग अनुक्रम से करै । एक एक नवकारको कानुसग्ग करकै । अपणी २ थुई कहै । पीठे ( शासन ) देवताको कानुसग्ग ? नवकारको करै ॥ या पाति शासनं जैनं । सद्य प्रत्यूह नाशनी । साचिप्रेत समृध्यर्थं । नृयाठासनदेवता ॥ १ ॥ यह थुई कहकै ( समस्त वेयावृत्तिकर आराधनार्थं करेमि कानुसग्गं ) अनत्थू० एक नवकारको कानुसग्ग करै । ( पारकै ) श्रीशक्र प्रमुखा यक्षाः । जिनशासन संस्थिताः । देवान् देव्य स्तदन्येपि । संवरहंत्वपायतः ॥ १ ॥ यह थुई कहकै । नीचावैसै । नमोत्थुणं कहकै । जयवीयराय ताई । चैत्यवंदन करै । खमासमण देकै । जगवन् ( अमुक तप गहणत्थं करेमि कानुसग्गं ) एक लोगस्सको कानुसग्ग करै ( पारकै ) लोगस्स कहै । खमासमण देकै । ३ नवकार गुणें । फेर खमासमण देकै ( इत्थकार जगवन् ) अमुक तप गहण दंरुक उच्चरावो जी । गुरु कहै उच्चरावेमो । ( ऐसा कहै ) ॥ अहणहं जंते । तुह्माणं समीवे । अमुकतवं उवसंपज्जत्ताणं विहरामि । ( तंजहा ) दवउ । खित्तउ । काजउ । जावउ । दवउणं अमुकतवं । खित्तउणं इत्थवाअनत्थवा । काजउणं जावपरिमाणं । जावउणं जावगहेणं नगहिज्जामि । उलेणं न

अलिङ्गामि । सन्निवाणं नञविङ्गामि । जाव अणेणवा । केणइ रोगायंकादि प  
रिणामवसेण । एसो मे परिणामोनपरिवज्जइ । तावमे एसतवो । (अन्नत्थ) राया  
न्नियोगेणं गणान्नियो गेणं । वलान्नियोगेणं देवान्नियोगेणं । गुरुनिग्गहेणं । वि  
त्तीकंतारेणं । अन्नत्थणा जोगेणं । सहस्सागारेणं । महत्तरागारेणं । सबसमाहि  
वत्तियागारेणं वोसरामि ॥ जोतप ग्रहण करै उसी तपका नाम लेके । गुरुके  
पास ३ वेर यह पाठ सुणै ॥ गुरु न हो ( तो ) थापनाचार्यजी समझे । तीन  
वेर यह पाठ पढ़ै ॥ ( पीठे गुरु कहै ) हत्थेणं । सूत्तेणं । अत्थेणं । तट्टुज  
एणं । सम्मं धारिणीयं । गुरुणोहिं बुद्धाहि नित्यारगपारगाहोहि । ( ऐसोगु  
रु कहै ) पीठे खमासमण देके ( गुरु मुखै ) पञ्चख्वाण करै । ( अथवा )  
गुरु न हो ( तो ) आपमुखै करै । इति सर्व तपस्या ग्रहणविधिः संपूर्णम् ॥

॥ ❀ ॥ अथ सर्व तप पारण विधिं लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम ग्यान पूजा करके । इरियावही पन्निक्कमे । ( अमुक तप  
पारिवा० ) मुहपत्ती पन्निजेहैं । २ वांदणा देवै । इच्छाकारेण संदिसह  
जगवन् तुप्पेअहं अमुक तप पारावेह ( गुरु कहै पारावेमो ) इच्छामि  
खमासमणो० । इच्छाकारेण संदिसह जगवन् । अमुक तप निख्खवणत्थं  
काउसग्गं करावेह । ( गुरुकहै करावेमो ) पीठे देववंदन करके । अमुकतप  
पारणार्थं करोमि काउसग्गं । अन्नत्थू कहकै । १ नवकारको कावसग्ग करै ।  
स्तुति गाथा कहै । पीठे एमोत्थुणं कहै । ( बैठकै ) जगवन् अमुक तप  
करतां । अविधि आसातनायें करी । जो दूषण लागो होय । सोमन वचन  
कायाये करी मिच्छामि पुक्कं । ( ओर ) ग्यान । जत्ति द्रव्यसैं जावसैं  
किया होय ( सां ) प्रमाण फलदायक होजो । ( गुरु कहै नित्यारगपार  
गाहोह ) । पीठे । पञ्चख्वाण करै ( अमुक तप आलोयण निमित्तं करे मि  
काउसग्गं ) अन्नत्थू कहै । ४ लोगस्सको काउसग्ग करै । प्रगट लोगस्स कहै ।  
पीठे उपगरण पात्र जत्तपानादिकसैं साधु जत्ति करै । अपनैं शक्ति माफक ।  
जैन विद्याभ्याम कराणें वाले । विद्यागुरुकी जत्ति करै । साहमी वठल करै ।  
पहरावणी करै । पीठे जाचकांको दान सन्मान करै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
इति सर्व तपस्या पारण विधि संपूर्णम् ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ सूतक विचार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुत्र जन्म होणेंसे १० दिन सूतक । पुत्री जन्म्यां दिन १२ सूतक । ( और ) जो स्त्रीकै पुत्र होय । उस स्त्रीकै एक माशको सूतक । पुत्र होते मरण पामें ( तो ) दिन १ सूतक ॥ परदेशे मृत्यु होइ ( तो ) दिन १ सूतक ॥ गाय । जेंश । घोडी । सांड । घर मांह व्यावै ( तो ) दिन १ सूतक । मरण हुवां कलेवर घर बाहर लेजाय । जहांतक सूतक । दाश दाशी अपनी नेष्टायें रहते । पुत्र पुत्रादिकका जन्म मरण हो ( तो ) दिन ३ सूतक ( और ) जितना महिनाको गर्ज गिरै । तितना दिन सूतक । ( अब ) कोईकै जन्म मरणका सूतक होनेसे १२ दिन देवपूजा न करै । ( जिसमें ) मृतकके सूतकमें । घरका मूलकांधिया १० दिन देवपूजा न करै । उर वरका तीन दिन देव पूजा न करै । ( और ) मृतकनें बूवा हो ( तो ) २४ पहर पडिक्रमण न करै ( जो ) सदाका अखंरु नियम हो । ( तो ) समता जाव रखके संवर पणामें रहै । पर मुखसें नवकार मंत्रकाजी उच्चारण करै नहीं । स्थापना जी कै हाथ लगावै नहीं । और जो मृतक को बूवा न हो ( तो ) आठ पहर पडिक्रमण न करै । जेंसकै जब बच्चा होय । तब १५ दिन पीठे दूध पीणो कट्यै । गायकै बच्चो होय ( तो ) १७ दिन पीठे दूध पीणो कट्यै । बकरीको दूध दिन ८ पीठे पीणो कट्यै ॥ ❀ ॥

॥ १ ॥ ऋतुवंती स्त्री चारदिन जांमादिकनें न बूवै ॥

॥ २ ॥ चार दिन प्रतिक्रमण न करै ॥

॥ ३ ॥ पांचदिन देवपूजा न करै ॥

॥ ४ ॥ रोगादिकारणें तीन दिवश उपरांत कोईस्त्रीकै

रक्त चलतादीसे जिसका विशेष दोष नहीं । सुद्ध विवेकसें पवित्र होकर दिन ५ पीठे थापना पुस्तक बूवै । जिन दर्शन करै । अग्रपूजा करै । परंतु । अंग पूजा न करै । साधुको पमिजात्रे ऋतुवंती तपस्या करै मो तो सफल होय ( परंतु ) ऋतुदिनमें जिनपूजा, प्रतिक्रमणादिक किया सफल न होय ॥ ऐमाचर्चरी ग्रंथमें कहाहै ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिसके घरमें जन्म मरणका सूतक होय । उहां १२ दिन साधु  
आहार पाणी न बहरे ॥ सूतकवाले घरका जल अग्निसें १२ दिन देव  
पूजा न करे ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ निशीथ सूत्रके १६ शोलमानुद्देशमें जन्म मरण सूतक घर  
दुर्गन्धीक कहा है ॥ ❀ ॥ गायके सुत्रमें २४ पहरपीठे । जेंशके सुत्रमें १६  
पहर पीठे । गान्धर, गवेडी, घोसीके, सुत्रमें ८ पहरपीठे । नरनारीके सुत्रमें  
चार पहर पीठे । समुर्धिम जीव उपजै ॥ ❀ ॥

( इत्यादि ) संक्षेप सूतकका विचार इहां लिखा है । विशेष विचार  
शास्त्रांतरसें जाणना ॥ इति सूतक विचार संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रावक चवदै नियमका प्रमाणकरै ( सो ) लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सच्चित्त १ । द्रव्य २ । विगई ३ ॥ पाणहि ४ । तंबोज ५ ।  
वत्थ ६ । कुसुमेसु ७ ॥ बाहण ८ । सयण ९ । विलेवण १० ॥ वंज ११ ।  
दिशि १२ । न्हाण १३ । जत्ते सु १४ । ( अर्थः ) ॥ श्रावक नितप्रति नि  
यम संज्ञावै । दिनमें जो वस्तु अपने अंग खातें लगे । उसीका प्रमाण  
रखै । उपरांत त्याग करै । तहां प्रथम ( सच्चित्त वस्तुको परिमाण करै )  
मट्टी सर्व जाति । पाणी सर्व जाति । जल, अग्नि, वायु । वनस्पतीका छेदन  
छेदन । तरकारी सर्वजाति । फल सर्वजाति । परवल । तोरी । केला । इत्या  
दि सच्चित्तका परिमाण करै ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूसरा द्रव्य परिमाण ) ॥ तहां धातु वस्तु की शली । ( तथा )  
अपणी आंगुली विना । जो वस्तु मुखमें दीजे । सो सर्व द्रव्यकी गिण  
ती में आवै । नामांतर । स्वादांतर । स्वरूपांतर । परिणामांतर । द्रव्यांतर  
होणेंसं द्रव्यांतर होइ । ( यथा ) गहुं एक द्रव्य । तिसकी पतली रोटी । फी  
णा रोटी । बेडवा रोटी । बाटी । यह सर्व द्रव्य जूदा कहिये । ( इस प्रकारे )  
सर्व द्रव्य खाणेंमें आवै । ज्ञात दाजि । रोटी । मांफियो । पलेव । तरकारी  
सर्व जाति । पापरु । खीचीया । जहू सर्व जाति । फिणी घेवर । हेसमी ।  
खाजा । ( इत्यादि समस्त द्रव्य परिमाण करै ) इहां उत्कृष्ट द्रव्यको ना  
म ले रखै ( तो ) एकही द्रव्य कहायै । ( जैसें ) मेवैकी खीचनीका नाम

लेके रखे ( सो ) अनेक द्रव्य निष्पन्न है ( परंतु ) एक द्रव्य कहिये ।  
इति द्रव्य प्रमाण दूसरा नियमः ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( तीसरा विगय परिमाण नियमः ) ॥ ❀ ॥ ( तहां ) दश विग  
यमें च्यार महाविगयका तो त्याग होताहै । ( और ६ विगय ) घृत १ । ते  
ल २ । मीठा ३ । दूध ४ । दही ५ । कमाह विगय ६ । धारणा प्रमाण रखे ।

॥ ❀ ॥ ( अथ चौथा पादत्राणनियमः । ) ॥ ❀ ॥ तहां । जूती । ख  
माऊ । मोजा । आपणा । इतना विराणा । ऐसैं दिन प्रते धारणाप्रमाण मो  
कलारखे ॥ इति पाणहि नियमः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( पांचमा तंबोल नियम मध्ये ) ॥ ❀ ॥ पान ( तथा ) बीना ।  
सुपारी । लवंग । इलायची । ठोटी । वनी । जायफल । जावंत्री प्रमुख सब  
स्वादिम वस्तु । किर्याणा प्रमुख सर्वजात धारणा प्रमाण रखे ॥  
इति तंबोल नियमः ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( छठा वस्त्र नियम मध्ये ) ॥ ❀ ॥ पोसाक १ । तथा ४ । बूटा  
वस्त्र ५ । तथा ७ । मोकला रखे । पोसाक १ मध्ये । पधनी १ । जामो १ ।  
कमरबंधो १ । धोती १ । इकपट्टो उत्तरासण १ । यह पांच वस्त्रकी एक  
पोसाक कहिये । जैसें नही कर सके ( तो ) ४० तथा ५० कपना दि  
न मध्ये मोकला । पराया वस्त्र चूल चूकमें आवे ( तो ) जयणा ॥ ❀ ॥  
इति वस्त्र नियमः ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

( ❀ ॥ अथ सातमा फूल नियमः ) ॥ ❀ ॥ तिहां गुलाब । चंपे  
ली । बेला । केवना । केतकी । कुंद । मचकुंद । सेवती । हजार कमल  
( इत्यादि ) सर्व फूलका धारणा प्रमाणें परिणाम करे ॥ ❀ ॥  
इति फूल नियमः ७ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( आठमा वाहन नियमः ) ॥ ❀ ॥ तिहां स्थ । गानी । घुम्व  
हिल । खरसल । कोच । पालकी । घोना । हाथी । चोपाला म्याना ।  
( इत्यादिक ) सर्व थल वाहन जानी ॥ मोर । पंखी । बतक । घुम्वोम ।  
लचकार । मगर । पनमोई । पलवार । बजरा । ( इत्यादिक ) सर्व नावजाति ।

सर्व निरस्ता । फिरता । चरता यह तीन प्रकारके वाहन धारणा प्रमाण रखे ॥ ❀ ॥ इति वाहन नियम ८ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( अथ शय्या नियमः ) ॥ ❀ ॥ तिहां पिलंग । खाट । तखत । चौकी । पट्टा गद्दी । खुरसी । बनावत । पट्टसूजनी । सेहंजी । डुलीचा । चांदणी । सीतल पट्टी । सफ । चटाई सर्वजाति । दरखतकी बालका । चम मैका । कांवला । सुखमल । कारचोपी ( इत्यादि ) धारणा प्रमाणै शय्या प्रमाण करै ॥ ❀ ॥ इति शय्यानियमः ९ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( अथ दशमा विलेपननियमः ) ॥ ❀ ॥ तिहां । सरसोंका । राईका । आठैका । तेल । फुलेल । सर्व जातिका । केशर । चंदन । कपूर कस्तूरी । रोजी ( इत्यादि ) शरीर सुख वास्ते । ( तथा ) रोगादिकारणें उपधादिकका विलेपन फोनां ऊपर मलम प्रमुख । आंखिमें अंजन ( इत्यादि ) अंगोपांगमें लगाणा ( सो ) विलेपन धारणा प्रमाणें परिमाण करै इति विलेपन नियमः १० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( अथ ब्रह्मचर्यनियमः ) ॥ ❀ ॥ तिहां रात्रिकों ( तथा ) दिन कों । सूर्यनोरैके दृष्टांत जोगादिकका प्रमाण करै । स्वप्नकी, मन, वचनकी, जयणा ॥ ❀ ॥ इति ब्रह्मचर्य नियमः ॥ ११ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( अथ दिशि नियमः ) ॥ ❀ ॥ तिहां । पूरव १ । पश्चिम २ । उत्तर ३ । दक्षिण ४ । अग्निक्लृण ५ । नैऋतक्लृण ६ । वायव्यक्लृण ७ । ईशानक्लृण ८ । अधोदिशि ९ । उर्ध्वदिशि १० । यह दश दिशिकों अपनै जा नैका प्रमाण करै । चिछी लिखणी । आदमी जेजणा । देशांतरकी चीछी वाचणी । तिसकी जयणा ॥ इति दिशि नियमः ) १२ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( अथ तेरमा स्नान नियमः ) ॥ ❀ ॥ तिहां । आजदिन मध्ये स्नान २ । तथा ४ । बेर मोकला । परंतु पाणीका तोज रखै ( तथा ) बरना प्रमुखका प्रमाण रखै । स्नान एक मध्ये इतनो पाणी खरच करूं । अधिक नहीं दोखूं ॥ ❀ ॥ इति स्नान नियमः १३ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( अथ चौदमा जात नियमः ) ॥ ❀ ॥ दिनमध्ये जात मेर २ तथा ४ । दो बेर ( तथा ) च्याखेर स्नान । उपरांत डुविहार । ( तथा )



चौविहार धारणा प्रमाणै रखै ( तथा ) दिनमध्ये जल पीणै में आ  
वै । तिसका प्रमाण रखै । तोलसैं तथा मापसैं ॥ ❀ ॥

इति चौदह नियम ज्ञाषा ॥ १४ ॥ समाप्तम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ द्वादश व्रतग्रहण करण विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम जिनजुवन ( अथवा ) जिन प्रतिमा आगै शुद्ध सपे  
द वस्त्र पहिरकै । चंदन केशरको तिलक करै । चावल चाढ़ै । पीठै । अ  
खंरु तंडुल सुठी ३ थाल मध्ये रखै । तिन ऊपर नाजेर रोकनाणो  
धरै । तीन प्रदक्षिणा देकै । इरियावही पम्किमे । ( इठ्ठकार० )  
सम्यक्त सामाई आरोहणार्थं चेइयाई वंदावेह ( गुरु कहै वंदावेमो )  
चैत्यवंदण करै । वाम पासै चावलांको साथियो करै । श्रीफल धरै ।  
पीठै गुरु वर्धमान विद्या अग्निमंत्रित श्रावक मस्तकै वास द्वेप करै ।  
वर्धमान स्तुतीसैं देववंदन करावै । पीठै सतरै थूईमें नवकार १ एकको का  
नुसग्न करै । पीठै शासन देवी निमत्तै लोगस्स ४ कानुसग्न करै । ( पार  
कै ) प्रगट लोगस्स कहै । पीठै नमस्कार ३ गुणकै । शक्रस्तव कहै ।  
नमोज्जत् सिद्धा० कहकै । वनो स्तवन कहै । पीठै जयवीरराय कहै ।  
इति नंदी विधिः ॥ पीठै खमासमाण देई । श्रुतसामायक । आरोहणार्थं  
कानुसग्न करावेह ( गुरु कहै करावेमो ) पीठै सम्यक्त सामाई आरोपणा  
र्थं करेमि कानुसग्न । च्यार ४ लोगस्सको कानुसग्न करै ( पारकै प्रग  
ट लोगस्स कहै । पीठै ३ बेर नवकार गुणकै । गुरुकै पास ३ बेर सम्यक्त  
दंमक उच्चरै ॥ ( गुरु ) पाठ बोलै । नशीकी मनमें धारणा रखै ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( सूत्रं ) ( अहन्नं जंते ) तुह्माणं समीवे मिठत्ताउ पम्किमा  
मि । सम्मत्तं उवसंपज्जामि । नोमेकप्पइ । अज्जप्पन्निइ अन्नतीत्थिएवा ।  
अन्नतीत्थि देवयाणिव । अन्नतीत्थि परिग्गहिय अरिहंतचेइयाणिव । वंदि  
त्तएवा । नमंसित्तएवा । पुविं अणालित्तएणं आलवित्तएवा ( तेसिं ) असणंवा ।  
पाणंवा । खाइमंवा । साइमंवा दानंवा । अणप्पाउंवा । तेसिं मंधमत्ताइं पेमि  
उंवा । ( नन्नत्थ ) रायान्नियोगेणं । गणान्नियोगेणं । वजान्नियोगेणं । देवा  
न्नियोगेणं । गुरुनिग्गहेणं । वित्ती कंतारेणं । तंचउविहं ( तंजहा ) दव्वउ ।

खित्तु । कालु । जावु । तत्थ ( दब्बु ) दंसणदब्बाइं अहिगिच्च । ( खित्तु )  
जाव जरह मज्झिमखंमे ( कालु ) जावज्जीवाए । ( जावु ) जाव ठजेणं  
न ठलिज्जामि । जाव सन्निवाएणं नजविज्जामि । जाव केणइ उम्माइ वसेणं ।  
एसो दंसण पाजण परिणामो नपरिवरुइ । तावमे एसो दंसणाजिग्गहो ।  
अन्नत्थणा जोगेणं । सहस्सागारेणं । महत्तरागारेणं । सबसमाहिवत्तिआ  
गारेणं । वोसिरइ ॥ ( पीठे ) उँ ङ्गो श्रीं अर्हं नमः ॥ ऐसे अक्षर श्रीगुरुकै  
पाश हाथमें लिखाकै । जिनप्रतिमाको वाशक्षेप चढावै । नवकार पढतो  
थको ३ प्रदक्षिणा देकै ( देव गुरु प्रते वांदै ) पीठे श्रुत सामायिक थिरी  
करणार्थे । सत्तावीश उत्साशप्रमाणें । एक लोगस्सको कानुसग्ग करै । एक  
लोगस्स कहकै पारे । पीठे सम्यक्तरूपी कल्पवृक्ष पायकै । अति आनंद  
सँ ऐसा अज्झिग्रह वचन बोलै ॥ अरिहंतो महदेवो । जावज्जीवं सुसाहुणो  
गुरुणो । जिन पन्नत्तंतत्तं । इय सम्मत्तं मए गहियं ॥ १ ॥ पीठे गुरु धम्म  
देशना देवै । मिथ्यात्व वरजै । नित्य चैत्यवंदन इतनी वेर करुंगा । इतना  
नवकार नित्य गुणुंगा । केशरादि द्रव्य वर्षप्रते इतना चढावुंगा । ग्यान दर्शन  
चारित्र्यके जक्ति अर्थे इतनो द्रव्य खरचुंगा । शील व्रत इतनी पर्वतिथि पा  
वुंगा । नित्य पञ्चक्खाण इस माफक करुंगा ( दिनको ) नवकारस्यादि व्रत  
( तथा ) रात्रीको चउविहार । त्रिविहार । छुविहार । प्रमुख । और । वा  
वीश अज्झ । वत्तीश अनंत काय । विदल प्रमुख सर्व ठोडुंगा । ( इत्या  
दि ) अपनी धारणा माफक सर्ववस्तुका प्रमाण । गुरुके सन्मुख करे  
१२ व्रत ग्रहण करै । वारैव्रतकी टीप सुणें । जिसमें लिया हुवा व्रतको  
अतीचार नलगै । ऐसा उपियोग सदा रखै ॥ इति सम्यक्कारोपण विधिः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ प्राणातिपातव्रत दंरुक लि० ( १ ) ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ( अहन्नं जंते ) । तुह्माणं ममीवे । थूलग पाणाइ वायं संकप्पि  
उ निरवराहं पञ्चक्खामि । जावज्जीवाए । एग विहं । एगविहेणं ( अथवा )  
छुविहं । त्रिविहेणं । मणेणं । वायाए । काएणं । न करेमि । न कारवेमि ।  
तस्स जंते । पडिकमामि । निंदामि ॥ गारिहामि । अप्पाणं वोसरामि ॥  
यह पहला व्रतका दंरुक बार ३ उचरावै ॥ १ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ❀ ॥ ( अहन्नं जंते । तुह्माणं समीवे । थूलगं मूसावायं । जीहा  
 ञ्छेयाइहेज्जं । कन्नालीयं । गोवालीयं । जोमालीयं । थापणमोसा । कूट्ठा  
 खीयं । पंचविहं पच्चक्खामि । दक्खिन्नाइ अविसए । दव्वं । खित्तं । कालं  
 न । जावन् । ॥ दव्वंणं मूसावायं । खित्तंणं इत्थवा अणत्थवा । कालंणं  
 जावज्जीवाए । जावन्णं जावगहेणं न गहिज्जामि । उलेणं न उलिज्जा  
 मि । अन्नेण केणवि रोगाइयं । एसो परिणामो न परिवरुइ । ताव अग्नि  
 ग्गह । पुविहं । तिविहेणं । अन्नत्थणा जोगेणं । सहस्सागारेणं । महत्त  
 रागारेणं । सब्ब समाहिवात्तियागारेणं बोसरइ ॥ २ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( अहन्नं जंते तुह्माणं समीवे ) । अदिन्नादाणं । खत्तखणणाइयं ।  
 चोरं काकरं । रायनिग्गह कारयं । सचित्ता चित्त वत्थुविसयं पच्चक्खामि । द  
 व्वं । खित्तं । कालं । जावन् ॥ दव्वंणं । अदिन्नादाणं । खित्तंणं इत्थवा  
 अणत्थवा । कालंणं जावज्जीवं । जावन्णं जावगहेणं न गहिज्जामि ।  
 उलेणं न उलिज्जामि । अणेण केणवि रोगाइयं । एसो परिणामो न परि  
 वरुइ । ताव अग्निग्गह । पुविहं । तिविहेणं । अन्नत्थं । सहस्सां । मह  
 त्तं । सब्बं । बोसरइ ॥ ३ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( अहन्नं जंते तुह्माणं समीवे ) । उदारिय वैक्कियजेयं । थूलमेहु  
 णं पच्चक्खामि । अहागहियजंगएणं । दिवं । तिरित्थं । माणासियं । एगवि  
 हं । एगविहेणं । पच्चक्खामि । दव्वं । खित्तं । कालं । जावन् ॥ दव्व  
 णं मेहुणं । खित्तंणं इत्थवा अणत्थवा । कालंणं जावज्जीवाए । जाव  
 णं । जावगहेणं न गहिज्जामि । उलेणं । अन्नं । सहं । महं ।  
 सब्बं । बोसरइ ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( अहन्नं जंते तुह्माणं समीवे ) । परिग्गहंपडुच्च । अपरिमियपरि  
 ग्गहं पच्चक्खामि । धणधन्नाइ नवविहवत्थु विसयं । इत्थापरिमाणं उवसंप  
 ज्जामि । अहागहियजंगएणं । ( नजहा ) दव्वं । खित्तं । कालं । जा  
 वन् । दव्वंणं । नवविहपरिग्गहं । खित्तंणं । इत्थवा अणत्थवा । कालं  
 णं जावज्जीवं । जावन्णं जावगहेणं । नगहिज्जामी । उले । अन्नं ।  
 सहं । महं । सब्बं । बोसरइ ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( अहन्नं जंते तुह्माणं समीवे । दिशिपरिमाणं पचख्वामि ।  
( तंजहा ) दव्वनं । खित्तनं । कालनं । जावनं । दव्वनं । दिशिपरिमाणं ।  
खित्तनं धारणा परिमाणं । कालनं जावज्जीवाए । जावनं । जावगहेणं  
न गहिज्जामि । जाव ङ्खे । तावअग्निग्गह । अन्नं । सहं । महं । स  
व्वं । वोसरइ ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( अहन्नं जंते तुह्माणं समीवे । जोगोवजोगवयं ( जोगेणं ) अ  
नंतकाय बहुवीया राईजोगेणाइं परिहरामि । ( कम्मओणं ) पन्नरस क  
म्मादाणाइं । इंगालकम्माइयाइं । बहु सावज्जाइं खरकम्माइयं । रायाजियो  
गंच परिहरामि । ( तंजहा ) दव्वनं । खित्तनं । कालनं । जावनं । दव्वनं  
जोगोवजोगवयं । खित्तनं इत्थवा अन्नत्थवा । कालनं जावज्जीवाए ।  
जावनं जावगहेणं नगहिज्जामि । ङ्खेणं । अन्नं । सहं । महं ।  
मव्व । वोसरइ ॥ ७ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( अहन्नं जंते तुह्माणं समीवे । अन्नत्थदंरं पचक्खामि । अव  
प्पाण । पापोपदेश । हिंसोपकरणदानं । प्रमाद चरितं । चउविहं अन्नत्थ  
दंरं । जहा सत्तिए परिहरामि ( तंजहा ) दव्वनं । खित्तनं । कालनं । जा  
वनं । दव्वनं अन्नत्थदंरं । खित्तनं इत्थवा अन्नत्थवा । कालनं जा  
वज्जीवाए । जावनं जावगहेणं नगहि । ङ्खेणं । अन्नं । सहं । महं ।  
सव्वं । वोसरइ ॥ ८ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( अहन्नं जंते ) तुह्माणं समीवे । सामाइयं । पोसहोववासं ।  
देसावगासियं । अतिथिसंविजागवयं । जहा सत्तिए पक्खिज्जामि । उच्चयं  
सम्मत्तमूलं । पंचाणुवयं सत्तसिक्खावयं । उवाजसविहं सावगयम्मं उवसं  
पज्जत्ताणं विहरामि ( तंजहा ) । दव्वनं । अन्नत्थणाजोगेणं । सहस्सागारेणं ।  
महत्तरागारेणं । सव्वसमाहि वत्तियागारेणं । वोसरइ ॥ षट्साख । उ उंडी ।  
च्यार आगार सहित पालं ९ । १० । ११ । १२ । ॥ ❀ ॥

इति श्रावकको संक्षेप वारै व्रत उवरावण विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ मुनिमालका लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ऋषे प्रमुख जिणपाय युग प्रणमुं । शिवमुख दायक मनह उ

छास । पुंमरीक श्री गोतम आदिक । गणधरगुरु मन कमल विकास ॥  
 ॥ १ ॥ ( प्रहसम सूधा साधु नमुंनित । ज्ञावे श्रमण सुगुरु जगवंत । नाम  
 ग्रहण करि पाप पखालूं । परमानंद सुमति विकसंत ॥ २ ॥ ( प्र० ) अरथ  
 महासुनि प्रथम चक्कीसर । बाहूवल उपशम जंमार । सूरयसा दिक आठ  
 मुनीसर । पाम्यो विमलाचल जव पार ॥ ३ ॥ ( प्र० ) रिखज वंस जे अनु  
 क्रम हुवा । मुनिवर कोनी लाख असंख । श्रीसेतुंजै शिवपुर सीधा । क  
 ल मल कालक मुंकी कंख ॥ ४ ॥ ( प्र० ) सगर प्रमुख निरुपम नव चक्रव  
 र्ति । साधु महावल संयम सींह । अचलादिक बलदेव अष्टमुनि । राम रिपी  
 सर नवम अवीह ॥ ५ ॥ ( प्र० ) श्रीप्रतिबुद्धि प्रमुह ठह सुंदर । श्रीमद्वि  
 नाथ पूखजव मित्र । पहुता परम यतीसर शिवपुर । पाली श्रीजिन आण प  
 वित्र ॥ ६ ॥ ( प्र० ) वंडुं विस्तु कुमार लवधि निधि । खंदग सूरना सीस सै पंच ।  
 कार्तिक सेठ सुसाधु कीर्त धर । श्रमण सुकोसल ब्रत निरवंच ॥ ७ ॥  
 ( प्र० ) श्रीयदुवंस अहोन्न सुसागर । प्रमुख आठ अणगार प्रधान । श्री  
 रहनेमि नेमि जिन बंधव । निरमल गुण गण रयण निर्धान ॥ ८ ॥ ( प्र० ) जा  
 ली मयालीनें उवयाली । पुरस सेण वारसेण प्रयुन्न । संव अनें अनिरुद्ध  
 रिपीसर । सत्यनेमि दृढनेमि सुधन्न ॥ ९ ॥ ( प्र० ) कुमार अनीकज सा  
 दिक षट्सुनि । गुणगिरुवो श्री गजसुकमाल । ढंढण रिप श्रीथावच्चा सुन ।  
 सहस साधु संजम सुकृपाल ॥ १० ॥ ( प्र० ) ( राग धन्याश्री ) ॥ ॥  
 सहस श्रमणसुं सुक संयम धरो । पंचसयांसुं सेलग मुनिवरो । सिद्ध थया  
 श्री पुंमर गिरवरो । करुणाकर प्रणसुं संपद करो । ( उल्ला० ) संपदकरो शम  
 दम रिपीसर साधु सारण सोहए । अंतर प्रकासे तिमर नासै जविक जन  
 मन मोहए । प्रत्येक बुद्ध प्रबुद्ध नारद मुनि प्रमुख पैतालए । दमदंत महा  
 रिप कुंजवारे साधु नमुं त्रिहुं कालए ॥ ११ ॥ ( चाल ) रंग रिपजदत्त र  
 तन त्रय मुणी । समरं देवानंदा साहुणी । पांचे पांमव प्रणसुं मुनिपती ।  
 कोशि पणशी बोधक जिनमती । ( उल्ला० ) जिनमती कालक पुत्र मेदल  
 थिवर आणंद रक्खियो । अणगारका सब धर्म ज्ञाप्यो साधि शिवपुर म  
 क्खियो । कालामवेसी पुत्र आतम अरथ साधक उपममइ । श्रीपुंमरीक

महासुनीसर प्रणमीयै सुज संयमी ॥ १२ ॥ ( चाल ) बंडुंवलकल चीरी  
 केवली । श्रीअमत्तो मुनिवर मनरली । श्रीकरकंडू डुमह नामि निग्ग  
 या । निज २ देसे नखर श्रीजुवा । ( उल्लाओ ) श्रीजुवा एरिपजादि देखी  
 थया वरु वइरागीया । संजम सिरि जजि मोह निद्रा तजीय जोगै जागी  
 या । प्रत्येक बुद्धा च्यार सिद्धा सिद्ध थया एकण समे । सुप्रसन्न चंद्र सु  
 निंद निरमम प्रेम प्रणमुं प्रहसमें ॥ १३ ॥ ( चाल ) खंते खुल्ल कुमार सु  
 ध्याईयै । लोहचासुनि चरणे लयलाइयै । कालउदाई प्रमुख महासुणी । सं  
 जम सुद्ध जयंती साहुणी ( उल्लाओ ) साहुणी जाणी जग वखाणी प  
 रम पद सुख पामीया । श्री श्रमण चद्र सुजद्र सुंदर अचल आतम रामीया ।  
 श्री सुप्रतिष्ठ यतीस सुव्रत साधुसुव्रत सेहरो । चारित्र रिष गुणवंत गोचद्र  
 गरुआ गरिमा सागरो ॥ १४ ॥ ( चाल ) सिरीसिव राय रिषीसर वंदीयै । दशा  
 रण चद्र नमुं छुख ठंदीयै । अर्जुन माली सुख संजम धरो । सुट्टह प्रहारी  
 शिवरमणी वरो । ( उ० ) शिवरमणीवरो श्रीकुरगहू कृमावंत प्रसिद्ध । बलि  
 च्यार उग्रविहार तपसी सहत सुविहत सिद्ध । कोडिन्न दिन्न अनें सेवाली  
 पनर शतक तिडोत्तरा । गोतम प्रबोधत सिद्ध पुहता नमुं चरण करणा धरा  
 ॥ १५ ॥ ( चाल ) गरुआ श्रीगुणसागर गाईयै । प्रथवी चंद्र प्रणम्यां सुख पाईयै ।  
 खंद कुमार सदा अजिनंदीयै । नमिह अरहमित्र मन आणंदीयै । ( उ० )  
 आणंदीयै मेतार्य मुनिवर जगतिमुं समरी करी । रूप इलापुत्र चिलापुत्र  
 मृगापुत्र हीयै धरी । श्रीइंद्रनाम निग्रंथ निर्मम धर्मरुचि धर्मागिरो । तेतली  
 पुत्र सुबुद्धि बोधित सु जितशत्रु सुनीसरो ॥ १६ ॥ ( चाल ) उदय २ कर  
 जगि २ जस तणो । श्रमणमुदंशण शील सुहावणो । श्रीअन्नयसुत आद्रकु  
 मारण । चित्त चतुरनर चित्त चमकारण । ( उ० ) चमकार सार सुजात रिपव  
 रदेव सांनिध जश धणी । गांगेय गिखो गुणगाजे सु जिनपावन हित ध  
 णी । श्रीधर्मघोष सुसीस धर्मरुचि साधु श्रीजिनदेव ए । श्रीकपिलरिपि ह  
 रिकेश बलिमुनि नित नमुं निरलेवण ॥ १७ ॥ ( चाल ) जति जयघोष वि  
 जयघोषे जुत । सेवुं श्रुतधर श्री देवजसुत । श्रीइच्छुकार नृपति कमलाव  
 नी । गणी नृगुसुत प्रोहित सुजमती । ( उ० ) सुजमती जेहनी जशा जा



र्या पुत्र दोय वखाणीये । ए नहुं लैई चारु चारित्र सुगति पुहता जाणीये ।  
 कृत्रिय सुनीसर साधु संजम धर्मरुचि सुमहाव्रती । निग्रंथ नाथ अनाथ बंडु  
 समुद्रपालसु संयती ॥ १८ ॥ ( चाल ) कुम्भापुत्र नमुं केवल कल्यौ । विध  
 सुं शीतल शिवकमला मिल्यो । धन २ धनो सुरगिर धीरए । वीरप्रशंस्यो  
 तपगुण वीरए । ( न० ) श्रीवीर दिखित श्रीसुबाहु नरनंद कुमारए । आ  
 दिक दसेरिष चरिय जेहना सुख विपाक उदारए । श्रीचंरुद्र सुशीत खंद  
 ग खिमानिधि कहीये इण कलै । कुरुदत्तसुत तीसग सरोरुह रिष नम्यां आ  
 स्याफलै ॥ १० ॥ ( चाल० ) अंगप्रमुख रिषच्यारे आदरी । विधिसुं संजम  
 सिद्धि वधू वरी । अजै कुमार मुनि अजयं करो । हल विहल सु आतम  
 हितकरो । ( न० ) हितकरो दयाधर मेघमुनिवर नंदिषेण आराधीये । सुनह  
 न्नं सर्वानुचूतो शमर शिवसुख साधीये । श्रीसींह साधु अनें उदायन चरम  
 राज रिषीसरो । श्रीशालनर सुधन मुनिवर समस्तां मंगल करो ॥ २० ॥  
 ( राग धन्यासरी ) ॥ वरु वैरागी वरनमुं । जुगवर जंवूसामि । प्रभव सि  
 व्यं प्रव परगमौ । सुजश यशो नर स्वामि ॥ २१ ॥ ( महासुनीसर नित  
 नमुं जी । नामें घर नवनिध । ( वाधै रिष समृद्ध ) ॥ २२ ॥ ( म० ) ॥ जग  
 मंचूति विजै जयो । नरबाहु कृतनर । जग जोगीसर जागतो । मुनिवर  
 श्रीधूलनर ॥ २३ ॥ ( म० ) नरबाहु स्वामी तणा । च्यारि शिष्य मुनिराय  
 शीत परीसह जिण सहा । सारखा २ आतम काज ॥ २४ ॥ ( म० ) ॥ अऊ  
 महागिरि जाणीये । अऊसुहति विशाल । संप्रति नृप पडि बोहीयो । श्री  
 अवंती सुकमाल ॥ २५ ॥ ( म० ) ॥ आरिजसांमि प्रसंसीयो । अऊसुनरमु  
 नीम । अऊमंगु महिमानिलो । सींहगिरीस मुणीस ॥ २६ ॥ ( म० ) ॥ धन  
 गिरि धिवर महासुनी । श्रीवयरस्वामि मुनिराय । अरहदिण मुनि अपह  
 र्यो । नरगुप्त निरमाय ॥ २७ ॥ ( म० ) ॥ वयरसेन विद्यावरु । श्रीरुद्र  
 गुरु दह । पूसमित्र गुण गह गहै । प्रनु पुरखलका पद ॥ २८ ॥ ( म० ) ॥  
 विजसाधु सुविधइ नरयो । श्री थंमिन्न सुमहिद्र । सूत्र अरथ स्तनं नरयो ।  
 कृमाश्रमण देवद्वि ॥ २९ ॥ ( म० ) ॥ पंचमकाल चरमासुनी । श्रीपुस शर  
 दयाल । सुनक्रिया खरतर सही । जिन आग्या प्रतिपाल ॥ ३० ॥ ( म० ) ॥

इम पनर कर्मचूमी जिके । हुआ हुस्ये अनंत । वर्तमान श्रीसाधुजी ।  
 रतनचंद्र गुणवंत ॥ ३१ ॥ ( म० ) ॥ ब्राह्मी सुंदरी राय मई । साहुणी चंदन  
 बाल । आदिक शीलवती सती । त्रिकरण सुव त्रिकाल ॥ ३२ ॥ ( म० ) ॥  
 संवत सोल ठत्तीसए । श्रीविमलनाथ सुरसाज । दिहा कल्याणक दिनें ।  
 गुंथी श्रीमुनि माल ॥ ३३ ॥ ( म० ) ॥ रिणीपुरे रत्नीया मणो । श्रीशीतल  
 जिण चंद । सूरविजैराजे सदा । संव अधिक आणंद ॥ ३४ ॥ ( म० ) श्रीमति  
 चंद्र मुगुरु तणें । सुपसाये सुखकार । चारित संघ वखाणीयै । सदा २ जय  
 कार ॥ ३५ ॥ ( म० ) मनहर श्रीमुनिमालका । गुणगण परमलपूर । कंठठ  
 वइ उत्तम जिके । पामें सुखचरपूर ॥ ३६ ॥ ( क० ) महामुनीसर गावतां  
 सुरतरु सफल समान । अष्ट महा सिद्धि वरफलै । सदा २ कल्याण ॥ ३७ ॥  
 ( म० ) ॥ इति मुनिमालका संपूर्ण ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वर्तमान चोवीसीवंधुं । मन सूधे नितमेवरी माई । रूपज अ  
 जित संचव अजिनंदन । सुमति पदम प्रनुसेवरी माई ॥ १ ॥ ( वर० )  
 श्रीमुपार्थ चंद्रप्रनु प्रणमुं । सुविध शीतल श्रेयांसरी माई । वाशपूज्य विम  
 ल अनंत धरम जिन । शांति कुंथु परसंसरी माई ॥ २ ॥ ( व० ) अरजि  
 न मल्लि अनें मुनि सुव्रत । नमि नेमि पाश जिणंदरी माई । चो वीशमा  
 श्रीवीर जिणेसर । प्रणमुं परमाणंदरी माई ॥ ३ ॥ ( व० ) ॥ ढाल २ ॥  
 प्रहशम सूधा साधु नमुं नित ( एहनी ) । नित नित अतीत चोवीशी नमी  
 यै । जेहना नाम प्रगट ए जाण । केवलन्यानीनें निरवाणी । सागर महा  
 जश विमल वखाण ॥ ४ ॥ ( नि० ) ॥ मर्व्वानुचूति श्रीधर दत्त जिनवर ।  
 दामोदर सुतजा श्री स्वामि । मुनिसुव्रत सुमति शिवगति जिन । श्री अ  
 स्ताग नेमीसर नाम ॥ ५ ॥ ( नि० ) ॥ अनिल यशोधर तेम कृ  
 तारथ । श्री जिनेसर सुधमति सुजगीस । शिवकर स्यंदन संप्रतिनामें ।  
 वंदीजे जिनवरचोवीश ॥ ६ ॥ ( नि० ) ( ढाल ३ ) सफल संसारनी ॥  
 जे नविस्मंति अनागए कालए । तेहचोवीश प्रणमीस त्रिहुं कालए । प्र  
 थम महाराज श्रेणक तणो जीवए । श्रीपद्मनाभ प्रणमीस सदीवए ॥ १ ॥  
 वीरनो पितरीयां नाम सुपासए । हुमी जिन वीय सुरदेव सुप्रकासए

कोणिक सुत उदाई नरिंदए । तीसरो तेह सुपास जिणंदए ॥ २ ॥ सि  
 प्य श्रीवीरनो पोष्टलो साधए । चोथो स्वयंप्रभु नांमआराधए । दृढायुष जी  
 व सिद्धांतमें जाणीयै । पंचम सर्वानुचूति प्रमाणीयै ॥ ३ ॥ कीर्त्त इण ना  
 म इक जीव कहीजीयै । देव श्रुत तेठो स्वामि स लहीजीयै । शंषश्रावक  
 ह्रस्ये उदयजिण सातमो । आणंदनो जीव पेढाल जिण आठमो ॥ ४ ॥  
 सुनंदनो जीव ते नवम पोष्टल जिण । शतक श्रावक शतकीर्त्ति दशमो भ  
 ण । देवकी जीव मुनिसुव्रत इग्यारमो । सत्यकी जीव ते अमम जिण बा  
 रमो ॥ ५ ॥ वासुदेव जीव निकषाय जिन तेरमो । बलदेव जीव निपुलाक  
 चवदम नमो । पनरमो निरमम देव सुलसाकही । रोहणी जीव चित्रगुप्त  
 सोलम सही ॥ ६ ॥ समाधि जिन सतरमो श्रावका रेवती । अठारमो शहा  
 ल जीव संवर जिनपती । दीपायन जीव यशोधर उगणीसमो । कृष्ण कोई  
 जीव ते विजय जिनवीशमो ॥ ७ ॥ मत्ति इकवीशमो जीवनारद तणो ।  
 देव बावीशमो अंबर श्रावक जणो । तेवीशमो अमर जीव अनंत वीरज  
 नमो । स्वाति बुध जीव ते जद्र चौवीशमो ॥ ८ ॥ एह आगाम चौवीश  
 जिण जांणीया । प्रवचन सार उधारथी आणीया । केई पर सिद्धनें केई  
 अप्रसिद्ध कहा । शास्त्र अनुसारथी साच कर सरदहा ॥ ९ ॥ ॐ ॥  
 ( ढाल २ ) ॥ ॐ ॥ आज नहेजोरे दीसे नाहलो ॥ ॐ ॥ विहर मान  
 जिण वीशे वंदीयै । महा विदेह विख्यात । सीमंधर युगमंधर बाहुजी । श्रीसु  
 बाहु सुजात ॥ ६ ॥ ( वि० ) स्वयंप्रभु रिपजानन अनंतवीरजी । सूर  
 प्रभु तेमविशाल । वज्रधर चंद्रानन चंद्रबाहुजी । जुजंग ईसर नेम जाल  
 ॥ ७ ॥ ( वि० ) वैरसेन महाजद्र नमुं बली । देवयशा यसो रिद्ध । अर्द्धा श्री  
 पमें विचरै आजए । नाम लीयै नव निद्ध ॥ ८ ॥ ( वि० ढाल ४ ) ॥ ॐ ॥  
 रे जीव जिन धर्म कीजीयै ॥ ॐ ॥ च्यार तीर्थकर शाश्वता । इणहंज  
 अजिधान । रूपजानन चंद्रानन । वारिपेण वर्द्धमान ॥ ९ ॥ ( च्या० )  
 अठकोमि ठप्पन लाखसुं । सत्ताणुं हजार । चउमै ठयासी देहरा । त्रिहुं लो  
 क मजार ॥ २० ॥ ( च्या० ) नवमै पणवीश कोमीया । त्रिव त्रेपन  
 लाख । महम अठावीश च्यारमै । अठ्यासी जाल ॥ २१ ॥ ( च्या० )

ठिन्नू जिणवर नामए । समर्यां सुखदाय । प्रणम्यां पाप मिटै परा । सम  
 कित सुख थाय ॥ २२ ॥ ( च्या० ) ॥ कलशः ॥ इम त्रिण चौवीशी वीश  
 विहरमांन चौजिण शाशता । संथुएयां सतरैसै त्रयांजै अधिक आंणी आ  
 सता । जिन स्तन चिंतामणि तणी परि प्रवज वंजित पूरण । ग्रहसमै त्रि  
 करण सुद्ध प्रणमै सदा जिनचंद सूरए ॥ २३ ॥ ❀ ॥ इति श्रीत्रिण चौवी  
 शी वीस विहर मान, चौजिण शाशता, एवं ठिन्नू जगवंत नाम स्तवनं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ उपधान तप स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीमहावीर धरम परगासै । बैठी परषदवारजी । अमृत वचन  
 सुणी अति मीठा । पामै हरष अपारजी ॥ १ ॥ सुणो २ रे श्रावक उपधा  
 न वहां विन । किम सूजै नवकारजी । उत्तराध्ययन बहुश्रुत अध्ययनै । ए  
 ह जणयो अधिकार जी ॥ २ ( सुणो० ) ॥ महा निशीथ सिधांत मांहे पि  
 ण । उपधान तप विस्तार जी । अनुक्रम सुद्धपरंपर दीसइ । सुविहित ग  
 ह आचार जी ॥ २ ( सु० ) ॥ तप उपधान वहां विन किरिया । तुठ  
 अलप फल जाण जी । जे उपधान वहा नर नारी । तेहनो जनम प्रमाणजी  
 ॥ ४ ( सु० ) ॥ तप उपधान कहो सिधांते । जो नवि मानै जेहजी । अरिहं  
 त देवनी आण विराधै । जमस्यै जव २ तेह जी ॥ ५ ( सु० ) ॥ अवड्या  
 घाटसमां नर नारी । विण उपधानै होय जी । किरिया करतां आदेश निरदे  
 श । काम सरै नही कोइ जी ॥ ६ ( सु० ) ॥ इक घेवरनै खांमै जरियो । अति  
 घणो मीठो थाय जी । एक श्रावक उपधान वहेतो । धन २ ते कहवायजी ।  
 ॥ ७ ॥ ( सु० ) ॥ ( टाल ) ॥ नवकार तणो तप पहिलो वीसरु जाण । इरिया  
 वहीनो तप बीजो वीसरु आण । इण विहुं उपधाने निश्चइ नांण मंमाण ।  
 चारे उपवासै गुरु मुख वेवे वांणि ॥ ८ ॥ पेंत्रीसरु बीजो णमोत्थुणं उप  
 धान । त्रिण वायण उगणांस तप उपवास प्रधान । अरिहंत चेई तप चो  
 थो चोकरु एह । उपवास अट्ठाई वाणएक गुण मेह ॥ ९ ॥ पांचमो जोग  
 स्स तप अठ्ठावीसरु नाम । साढापनरह उपवास वायणा त्रिणठाम । पुख्खर  
 वरदी तप ठठो उकड सार । साढात्रण उपवासै वांण एक सुविचार ॥ २० ॥  
 मित्राणं बुद्धाणं मानमो उपधान माल । उपवास करे इक चौविहार ततका

ल । एक वाणिकरै बलि गुरुमुख सरसरसाज । गठनायक पाशे पहरे  
 माल विशाल ॥ ११ ॥ माल पहरण अवशर आणी मनउठरंग । घर सारू  
 वारू खरचे धन बहु जंग । अति उठव कीजै राती जोगो दिल खोल ।  
 गीतगान गवावे पावे अति रंग रोल ॥ १२ ॥ ( ढाल ) ॥ ए साते उपधा  
 न । विधसों जे वहे । ते सूधी किरिया करै ए । खिण न करै परमाद । जीव  
 जतन करइ । पुंजि २ पगला जरै ए ॥ १३ ॥ न करै क्रोध कपाय ।  
 हम् २ हसे नही । मरम केहनो नवि कहै ए । नाएँ धरनोमोह । उत्कृष्टी  
 करै । साधु तणी रहणी रहै ए ॥ १४ ॥ पहुरसीम सिझाय । करपोरशि न  
 णी । जंचै स्वर बोलै नहीं ए । मनमां हें जावै एम । धन २ ए दिन । नरजव  
 मांहि सफल सही ए ॥ १५ ॥ जेसाते उपधान । विधसेती वहे । पाहरै  
 माल सोहावणीए । तेहनी किरिया शुद्ध । बहु फलदायक । करम निर्जरा  
 अति घणी ए॥१६॥परजव पामे रिद्ध । देव तणा सुख । वत्रीस वद्ध नाटक पमे  
 ए । लाजै लील विलास । अनुक्रम शिव सुख चढती पदवी जे चढै ए॥१७॥  
 (कलशः)॥इम वीरजिणवर जुवण दिणयर मात त्रिशला नंदणो । उपधानना  
 फल कहै उत्तम प्रवियजण आणंदणो । जिणचंद जुग परधान सदगुरु सकल  
 चंद सुनीसरो । तसुशीश वाचक समय सुंदर जणें वंछित सुख करो ॥ १८ ॥  
 ॥❀॥इति सात उपधानं गर्विजत श्रीमहावीर स्वामी वृद्ध स्तवन संपूर्ण॥❀॥

॥ ❀ ॥ ( इस ) स्तवनमें उपधान तप करनेकी सर्व विधि है । इसी  
 मुजव विवेकी जीव करै । और उपधान तप ग्रहण ( तथा ) माला पहर  
 ण विधि इहां न लिखी है ( सो ) सुद्ध गुरुके पास । विधि प्रपाक ग्रंथमें  
 जाणके करै ॥ ❀ ॥ इति तत्त्वं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ राग रागणी स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( राग कल्याण ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ टुक निजर महरदी करणाहो ॥ टु० ॥ मेंहुं अधम पापकी मू  
 र्त । मेरा दोस न धरणा हो ॥ ( टु० ) ॥ १ ॥ अष्ट जवनकी प्रांत हमा  
 रो । नवमें जव निखाहना हो ॥ ( टु० ) ॥ २ ॥ रूपचंद जगतनकी वीन  
 ती । आवागमण निवारणा हो ॥ ( टु० ) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ लोक चवदके पार किनारे । पूरण ब्रह्मका वासा है । ( लो० )  
पैंतालीस लाख जोजनकी सिला । फिटक रतन उजासा है । निरमल जो  
त विराजे साहिव । ग्यान ध्यान परकासा है ॥ ( लो० ) १ ॥ पंच वर  
ण की धजा फरूकै । क्याकहुं अजब तमासा है ॥ नाथ निरंजन नाम  
तुमारो । औरनकी क्या आसा है ॥ ( लो० ) २ ॥ चोसठ इन्द्र खमे वाके  
झरे । खिजमत बंदा खासा है ॥ रूपचंद कहै नाथ निरंजन । चरण क  
मलका दासा है ॥ ( लो० ) ३ ॥ ॥ ❀ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सवी सखि वन ठन ( सवी० ) ठाढे । नाभि नृपत जूके झरे  
आगे । ( स० ) रिपज कुमरको जनम जयो है । मंगल मुख्य उचारेरी ॥  
( स० ) १ ॥ ताल मृदंग खाव मधुरी धुनि । वीणा वाजे सुरतारे । नाचत  
हाव जाव करी राजत । तानलेत सुरतारेरी ( स० ) २ ॥ सुखनिता मित्त  
गाइ बधाई । मोतीयन चोक सवारे । जगबंधव जगपतिकुं निरखत । आ  
नंद हर्ष अपारेरी ॥ ( स० ) ३ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हो जिनतेंमे दरस परवारीयां ( हो० ) तुम विन जव २ में जट  
कंदा । अब मेंमी ओर निहारीयां ॥ ( हो० ) १ ॥ अष्ट करम मेंमे  
जार लगे है । उनकुं बेग विमारीयां । चरण मरण गहे आण तुसादे ।  
रूपचंद गुणगारीयां ॥ ( हो० ) २ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हारे हारा रिपजा जिणंदनें गजरो चढाउंरे ( ह्यां० ) चंवेली  
चंपा गुलाब ल्याउंरे । जाइ छई मोगरो मालती । विध गुंथाउंरे ( ह्यां० )  
१ ॥ अगर चंदन अहल नैवेद्य जाउंरे । धूप दीप फलसुगंध पुण्य पाउंरे  
( ह्यां० ) २ ॥ इष्ट धरम आदिनाथ जाव जाउंरे । रिपज दाम पूगे आस  
गुण गाउंरे ॥ ( ह्यां० ) ३ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥



॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मन लीनो हमारो जिन चरणारे । पोत जलधि जव तरणारे ॥  
( म० टेरे ) ॥ आदि पुरश जगतारण नि शुण्यो । कर्म विकट धन हरना  
रे ॥ ( म० ) १ ॥ नाभि तात मरुदेवी माता ॥ नंद रूपन सुख करनारे ॥  
( म० ) २ ॥ सल्यादिक प्रगट न जग तत्पर । कुमतांगन दलटरनारे ॥  
( म० ) ३ ॥ सारंग दृग शशिवदन मनोहर । अंग कनक सम वरनारे  
( म० ) ४ ॥ श्रीजिन हंस सूरीसर जंपे । जिन शमरण दिल धरनारे ॥ ( म० )  
॥ ५ ॥ इति श्री रूपन देव स्तवनम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( राग जिंजोटी ) ( २ ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अजित अजित जिन ध्यान । ( ह्यारे मनरे ) ( अ० ) ( टेरे )  
जितशत्रु विजयाको नंदनारे । वंदन त्रय युत ग्यान । ( ह्या० ) १ ॥ त्रिहुं  
जग तारन टारन अघ कोरे । वारुं तन धन ज्यांन ॥ ( ह्या० अ० ) २ ॥  
जिन वचनामृत पान करीजैरे । केवल निरमल ग्यान ॥ ( ह्या० ) ३ ॥ श्री  
जिन हंस सूरी प्रभु पाएरे । निवृति पुरिंदरम्यान ॥ ( ह्या० अ० ) ४ ॥  
इति श्रीअजित नाथ स्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ यह अरजी मोरी सहियां । मोहितारजो गह बहियां । ( य० )  
में नाहि जानुं सहियां ( य० ) । में तारण तरण सुण्यो वै । में यातें शरणो  
गहीयां । इनतें उवार लहियां ॥ ( मो० य० ) १ ॥ इन करमनके वस  
होयकै । में नटक्यो चिहुं गति महियां । में नाहि जानुं सहियां ॥ ( य० )  
२ ॥ हित करकै दास निहारै । कर जोडि पन्हिहुं पइयां । शिव देति क्युं  
न सहियां । ( मो० य० ) ३ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( राग काफी ) ( ५ ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुजरो मानी लीजै हो गोमीराय अरज सुणीन ह्यारो ( सु० )  
किरपा काज करी सेवकानें । दिलभर दरशण दीजै हो ( गो० ) १ ॥  
गुणनिधि गवडी दरशण दीजै । मकल करम दलजीजै हो ( गो० ) २ ॥  
रूप विबुध कहै मो मन पनणें । प्रह ऊठी प्रणमी जै हो ( गो० ) ३ ॥ इति

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तुमैना प्रनु इण दिल वसणावे । तेना तो गुण सुर गावं दाहो ॥ ( प्र० ) ॥ १ ॥ संतके सागर गुणके आगर । जोही व्यावे सो पावं दाहो ॥ ( प्र० ) ॥ २ ॥ तुमहो तत्वज्ञानके दाता । जविजन ताप मिटावं दाहो ॥ ( प्र० ) ॥ कहीं जिनचंद ऐसे प्रनुमेरे । चरणकमल चित लावं दाहो ( प्र० ) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हम जानतहै तुम तारोगे । ( हम० ) नाजिराय मरुदेवी को नंदन । मेरी और निहारोगे ॥ ( हम० ) ॥ १ ॥ आदि जिनेसर अन्तर जामी । खामी कबुन विचारोगे ॥ ( ह० ) ॥ २ ॥ जगजीवन जगतारक तुमहो । एही विरुद संजारोगे ॥ ( ह० ) ॥ ३ ॥ श्रीजिन सौजाग्य सुरिंद कुं साहिब । जवजल पार उतारोगे ॥ ( ह० ) ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पंथीना पंथ चलैगो । प्रनु जजलै दिन च्यार ॥ ( पं० ) कूठी काया कूठी माया । कूठो सब परवार ॥ ( पं० ) ॥ १ ॥ बालपणमें खेल गमायो । जोवन माया जाल ॥ ( पं० ) ॥ २ ॥ बूढापण आयो धरम न पायो । पीठे करत पुकार ॥ ( पं० ) ॥ ३ ॥ क्याले आयो क्याले जा सी । पापपुण्य दोय लार ॥ ( पं० ) ॥ ४ ॥ दया मया कर पाश ऐवंती । अब तेरोही आधार ॥ ( पं० ) ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नेवीशमा जिनराज । जोमै थांहे कोन छुमे गो ( ते० ) । अस्वसेन नात वामादेवी माता । तूं तारण मंसार ॥ ( जो० ) ॥ १ ॥ कमठ विचारण नागकुं तारण । संजलाव्यो नवकार ॥ ( जो० ) ॥ २ ॥ वि बुध कुशल कर जोमीनें वीनवे ॥ जव २ देज्यो दीदार ॥ ( जो० ) ॥ ३ ॥

॥ ❀ ॥ ( राग खंजायची ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कैसें काज सरे महाराजा विन ( कैसे० ) भ्रमन २ लख चौ

रामीमें । सुख दुखसें जीया रुजत फिरै ( म० कै० ) । ए रिषु कर्मवैरी न  
टकावै । जाहीसें मेरो प्राण नरे ॥ ( म० कै० ) ॥ २ ॥ जो जीव सुखकी  
बंठा चाहै । प्रनु सेव्यां सें सब काज सरे ॥ ( म० कै० ) ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राजरी वधाई वाजै ठे ( महा० ) । सरणाई सिरै नोवत वा  
जै । वनज्युं गाजैठे ॥ ( महा० ) १ ॥ इंद्राणी मिलमङ्गल गावै । मोतीयन  
चोक पुरावैठे ॥ ( महा० ) ॥ २ ॥ सेवग प्रनुजीसें अरज कोरै । चरणारी  
सेवा प्यारी लागैठे ॥ ( महा० ) ॥ ३ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( राग अरुणो ) ( १ ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मोतिनकी माला जिनगलसोहै ( मोति० ) मस्तक सुगुट सोहै  
मनमोहन । कुंरुज लागत वाला ॥ ( जि० ) ॥ १ ॥ नजोरी नजो तुम लो  
क सहिरके । नहीय नजै सो काला । माणकपर प्रनु महिर करो तो ।  
अपणा विरुद संजाला ( जि० ) ॥ २ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( राग सौरव ) ( १ ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रहे तुम आज क्युं जीवन दुराय ॥ ( रहे० ) ॥ जाव जीवन  
सखीयनमें प्यारी । हारी हाहा खाय ॥ ( रहे० ) ॥ १ ॥ अविरत बुंघट पट  
उधारो । अनुभव सुख निरखाय । एते परजी मान न मैले । मूले व्याज  
वढाय ॥ ( रहे० ) ॥ २ ॥ नव परिणित परिपाक इतै पर । आई धाई मा  
य । अति आग्रह सब ग्यान सारकुं । लीने कंठ लगाय ॥ ( रहे० ) ॥ ३ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हेमाय बांकरा कर्मगति जायना कही । चितत ओर वनत  
कवु ओरे । होनहार सो होय रही ॥ ( हेमाय बां० ) ॥ १ ॥ सकल  
साज मजीयो व्याहनकुं । राजकुं तव चाह नई । सुनी नेम गिरनार  
मिधाण । वदन विजख मुरजाय रही ॥ ( हेमाय बां० ) ॥ २ ॥ शीता स  
तायोही पति नगना । जानत सकल मही । । ऊठो दोष दियो जव स्व  
पति । पावक कुंरुमें धोज दही ॥ ( हे० बां० ) ॥ ३ ॥ क्रायक सुदृष्टी श्रे  
णक राजा । निज सुन कोणक बंधठई । सुध बुध विमरगई नरपतको

आपणकी अपघात लही ॥ ( हे० वां० ) ॥ ४ ॥ तिनमें रंक तिनकमें राजा ।  
अकल कथा किम जाण कही । उलट पलट वाजी नटसीकी । नवल सख  
में व्याप रही ॥ ( हे माय वां० ) ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ह्यांनु प्यारो लागै ठे जी । थारो उपदेस । ( ह्यांनुं ) ॥  
ग्यांन जगावण ओगुण भेटण । संशय रहे न जेस ॥ ( ह्यां० ) ॥ १ ॥  
मोहतिमिर दुःख दूर करनकुं । जगत वढावत हेत । चंद फतै नित एही चा  
हे । समकित सुखको खेत ॥ ( ह्यां० ) ॥ २ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मेरो पीया परसंग रमत है । में कैसें मनावूरी ( मे० ) । सो  
तन संग रेन दिन रमतां । मोहि न बुजावैरी ( मे० ) ॥ १० ॥ हाहा कर  
त सपी पड्यां परतहुं । कोई पीया मिलावैरी । विरहानल अति दुसह पी  
या विन । कोन बुजावैरी ( मे० ) ॥ २ ॥ सुमता संग ले अनुभव आ  
यो । सब परठ सुनावैरी । ग्यान सार प्यारी दोउं हिलमिल । सोरठ गावैरी  
( मे० ) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( राग सोरठ मलार ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वरपित वचन जरी हो ( सुगुरु मेरे ) ( व० ) श्रीश्रुत ग्यांन  
गगन ते कमठी । ग्यांन घटा गहरी हो ( सुगुरु मेरे ) ( व० ) ॥ १ ॥ स्याद  
वाद नय विजरी चमकित । देखत कुमति रुरी । अरथ विचार गुहर बुनि  
गरजित । रहत न एक घरी हो ॥ ( सुगुरु मे० ) ॥ २ ॥ श्रवानदी चढी  
अति जोरे । सुव सुजावधरी । सुजर जख्यो सुमता रसमागर । समकित  
नृमि हरीहो ॥ ( सुगुरु मेरे ) ॥ ३ ॥ प्रगटे पुन्य अंशुते चिहुं दिम । पा  
प जवाम जरी । चानक मोर पण्ड्या जविजन । बोलत जक्तिजरी हो ॥  
( सुगुरु मेरे व० ) ॥ ४ ॥ दया दान व्रत संयम खेती । जविक किमान  
करी । हरपचंद सुर नर शिव सुखकी । सहज सुजाव फली हो ॥ ( सु०  
व० ) ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ या घरी में रंग बन्यो है ह्मांरे । ( या० ) तत्वारथकी चर  
चा पाई । साधमीको संग ( व० या० ) ॥ १ ॥ श्री जिनराज दयानिधि  
जेटे । हरष जयो अंग अंग । ऐसी विध जव २ मां है मिलीयो । धर्मप्र  
साद अजंग ( व० या० ) ॥ २ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग मलार ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चिहुं ऊ वदरिया वरसे ( आलीरी ) । अब घरर घरर धन ग  
रजै ॥ ( चि० ) ॥ नेम प्रनु गिरनार सिधाए । देखणकुं जीया तरसे ॥ ( चि० )  
॥ १ ॥ दाधुर मोर सोर सुन अवणें । नयनजए वन जरसे ॥ ( चि० ) ॥ २ ॥  
हुंढत हुंढ सकल वन वनमें । कबहु पीयानां दरसे ॥ ( चि० ) ॥ ३ ॥ सो  
इ सफल जाएंगे सजनी । दिवस घरी जिन फरसे ॥ ( चि० ) ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मोरवा पपइया बोले पीउ २ धनमें । नेम पीया रहे सहसाव  
नमें ॥ ( मो० ) निशि अंधीयारी कारी बीजुरी रुरावै । दूजी विरह  
आकुल जइ तनमें ॥ ( मो० ) ॥ १ ॥ जिरमिर वरपत गरजत दाधुर ॥  
सोरकरत रहे नदीयां रनमें । ( मो० ) ॥ २ ॥ आणंद ए सम देखण चाहै ॥  
राजुल जइ है वैरागण तिनमें ॥ ( मो० ) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग विहाग ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ समऊ नर जीवन थोरो । थोरो थोरो थोरो । ( स० ) ॥ पल २  
आयु घटत तिन २ ही । गलत जात जैसें उरो ॥ ( स० ) ॥ १ ॥ या तनको  
तोही न जरोसो । तिन मासो तिन तोरो । जो कहु को सो अवही करजै ।  
पुन परहो जिम कोरो ॥ ( स० ) ॥ २ ॥ तन धन आदि सकल सामग्री  
गरज २ धनधोरो । रूपचंद तिसनाको बांध्यो । जान बूझ जयो जोरो ॥  
( स० ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मत कर मान गुमान । बोन धन ठगहै । ( म० ) बैजूकी

जौत उसको मोती । कोई घनी कोई पल है ॥ ( यो० म० ) ॥ १ ॥ नदियां  
गहिरी नाव पुराणी । तारण हारा जिन है । रूपचंद कहै नाथ निरंजन  
आखर जंगल घर है ॥ ( यो० म० ) ॥ २ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग मारु ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ निसदिन जोउं थारी वाटनी घर आवोनी ढोला । ( नि० ) मुऊ  
सरिखा तुऊ लाख है । मेरे तूही अमोला । ( नि० ) ॥ १ ॥ जौहरी मो  
ल करै लालनका । मेरा लाल अमोला । जिसके पटंतर को नहीं । उसका  
क्या मोला ॥ ( नि० ) ॥ २ ॥ कोन सुनें किसपैं कहूं । किसपे मांडूं खो  
ला । तेरे मुखदीठे टले । मेरे मनका जोला ॥ ( नि० ) ॥ ३ ॥ मीत वि  
वेक कहै हितकरतुं । सुमता सुन बोला । आणंदघन प्रनु आवसी । सेऊनी  
रंगरोला ॥ ( नि० ) ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग जैवंती ( १ ॥ ) ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आज तो हमारे जाग बीर प्रनु आए है । ( आ० ) चंदना  
खमी पुवार चित्तसैं करै विचार । देखत दीदार हीये हरष जराये है ॥  
( आ० ) ॥ १ ॥ आज मेरी आशफली । अली मेरे रंगरली । विकशी  
आतमकली । प्रनूपात्र पाएहै ॥ ( आ० ) ॥ २ ॥ धनदिन आजमेरो ग  
यो सब कर्म जेरो । सुकृत बहुतेरो । जगवान दिल जाए है ॥ ( आ० )  
॥ ३ ॥ सिद्धार्थ राय नंद मोहत सरद चंद । कहै जिनचंद चित आनंद  
वधाए है ॥ ( आ० ) ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग परज ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वावरोरे आज मनवो मारो ॥ ( वा० ) ॥ आपरंगीला वाकी  
मेज रंगीली । ओर रंगीलो वाको सांवरोरे ॥ ( आ० ) ॥ १ ॥ आपन आ  
वै वारी न लिख जेजै । प्रीतकरनकुं संतावरोरे ॥ २ ॥ आनंद घन पीया  
निजघर आवै । मिटगयो मोह संतावरोरे ॥ ( आ० ) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

॥ ❀ ॥ राग जंगली ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रृंगविहारी थारी तो उवि न्यारी ॥ ( रि० ) ॥ प्रथम तीर्थकर प्रथम  
जिनेसर । प्रथम यनी वन धारी हो ॥ ( रि० ) ॥ १ ॥ धनुष पांचमै मान



मनोहर । काया कंचन बानी हो ॥ ( रि० ) ॥ २ ॥ नागिराय मरुदेवीको  
नंदन । वापरजीया कुरवानी हो ॥ ( रि० ) ॥ ३ ॥ युगला धरम निवारण  
स्वामी । प्रनुठो पर उपगारी हो ॥ ( रि० ) ॥ ४ ॥ केवल पाय प्रनु मुक्ति  
सिधाए । आवागमन निवारी हो ॥ ( रि० ) ॥ ५ ॥ आनंद वन प्रनु एती  
वीनती । तुमपर जातं बलिहारी हो ॥ ( रि० ) ॥ ६ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुण मन हो न हार नदरेरे ॥ ( सु० ) ॥ चित कहु उर विचारत हे  
नर । ऊही ऊवनरे ॥ ( सु० ) ॥ १ ॥ ऊपर वाज पारधी नीचै । चिमियां कैसै  
वचैरे ॥ ( सु० ) ॥ २ ॥ होनहार वस मस्योहै पारधी । शर सींचाण मरेरे ।  
( सु० ) ॥ ३ ॥ होत पदारथ जावी जइया । क्युं जगचाह धरेरे ॥ ( सु० )  
॥ ४ ॥ उदय करमगत देख जगत की । जिनवर क्युं न जेरे ॥ ( सु० ) ॥ ५ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सहियोरी मिलचालो प्रनु पूजन काज ॥ ( स० ) ॥ समवशरन  
विच आप विराजै । वीरनाथ महाराज ॥ ( स० ) ॥ १ ॥ श्रेणक नृप  
चेलणा राणी । नक्ति करत है आज ॥ ( स० ) ॥ २ ॥ निज निज द्रव्य  
लीयै पुरके जन । उमंग उमंग सुज साज ॥ ( स० ) ॥ ३ ॥ वे प्रनु दीन  
दयाल जगतके । हितकर धर्म जिहाज ॥ ( स० ) ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( राग केहरवो ) ( २ ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मनवा जिणंद गुण गायरे ॥ ( म० ) ॥ याजिनजीके दरस सरम  
तैं । दुखदोहग मिट जायरे ॥ ( म० ) ॥ १ ॥ सुगुरु वचन परतीत मानजे ।  
आतमसुं लय लायरे ॥ ( म० ) ॥ २ ॥ अब २ में तो कुं सुखदाई । आनंद  
बंझित पायरे ॥ ( म० ) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चालो देखोरी मधुवनको राव ( चा० ) वामानंदन पाशजिने  
सर । शिरपरै वाके चवर दोलाय ॥ ( चा० ) ॥ १ ॥ तारण तरण जिनेमर  
जखेके । जेटे सहृ जवि चित सुख पाय ॥ ( चा० ) ॥ २ ॥ गंगा दरश  
उमाहोलागो । कवफलसुं वाके मन वच काय ॥ ( चा० ) ॥ इति पदम् ॥

॥ ❀ ॥ ( राग घाटो ) ( २ ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मेरो मन वशकर लीनो । जिनवर प्रनुपाश ( मे० ) ॥ १ ॥  
 शीयां कमल पांखनीयां । मुख सुंदर जास । ( मे० ) ॥ २ ॥ काने कुंरु  
 दोय जलकै । शशि सूरज सम जास ( मे० ) ॥ नीलवरण तन सोहै ।  
 नुवन परकास ॥ ( मे० ) ॥ ३ ॥ प्रनु तुम शरण रहीनै । समरुं सासोसा  
 ॥ ( मे० ) ॥ ४ ॥ लालचंद अरज सुणीनै । पुरो वंजित आश ॥  
 मे० ) ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राखुंरे हमारा घटमें । जिनराज नाम तेरा ॥ ( रा० ) ॥ जागै  
 जाव मेरा । अग्यानका अधेरा । जागा जया उजेरा ॥ ( रा० ) ॥ १ ॥  
 राति तेरी रागै । देख्यां विजाव त्यागै । अध्यात्म रूप जागै ॥ ( रा० ) ॥ २ ॥  
 द्रा प्रमोदकारी । रूपजेसजू तिहारी । लागत मोहि प्यारी ॥ ( रा० ) ॥ ३ ॥  
 लोक्यनाथ तुम ही । हम हे अनाथ गुन ही । करिये सनाथ हम ही ॥  
 रा० ) ॥ ४ ॥ प्रनुजी तिहारी साखे । जिन हर्ष सूरि जाखे । दिलमां  
 मया ही राखे ॥ ( रा० ) ॥ ५ ॥ ❀ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग ठुमरी जंगलो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुणो सुजाण नेमजी । हारे में खनी पुकारुं नेम तूही तूही तूही ।  
 ( सु० ) ॥ अरज करत हुं मे पड़्यां परतहुं । इतनी अरज मेरी मांनो  
 सुजाण ( नेमजी हां० ) ॥ १ ॥ विन अवगुण क्युं तजो मेरे साहिव  
 माहिर निजर मोपे आणो सुजाण ( नेमजी ) ॥ २ ॥ हरख चंद नेमी  
 राजेमार । हुं जव २ की चेरी सुजाण ( नेमजी० ) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नेरै दरमको चाह जग्यो । सखी स्याम वरण वन लाजारे  
 ( ने० ) । वनमें जाय प्रनु दिहा लीनी । हमकुं लार जगा जारे ( ते० ) ॥ १ ॥  
 जाय चहे प्रनु गिरनार जगर । अब कैमें विमराजारे ( ते० ) ॥ २ ॥ चैन  
 विजे कहै धन २ राजुज । प्रनु चरणां चित लायजारे ( ते० ) ॥ ३ ॥ इति

मनोहर । काया कंचन बानी हो ॥ ( रि० ) ॥ २ ॥ नाजिराय मरुदेवीको  
नंदन । वापरजीया कुरवानी हो ॥ ( रि० ) ॥ ३ ॥ युगला धरम निवारण  
स्वामी । प्रनुओ पर उपगारी हो ॥ ( रि० ) ॥ ४ ॥ केवल पाय प्रनु मुक्ति  
सिधाए । आवागमन निवारी हो ॥ ( रि० ) ॥ ५ ॥ आनंद वन प्रनु एती  
वीनती । तुमपर जातं बलिहारी हो ॥ ( रि० ) ॥ ६ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुण मन हो न हार नदरेरे ॥ ( सु० ) ॥ चित कटु उर विचारत है  
नर । ऊही ऊवनेरे ॥ ( सु० ) ॥ १ ॥ ऊपर वाज पारधी नींचै । चिमियां कैसें  
वचैरे ॥ ( सु० ) ॥ २ ॥ होनहार वस रुस्योहै पारधी । शर सींचाण मरेरे ।  
( सु० ) ॥ ३ ॥ होत पदारथ जावी नइया । क्युं जगचाह धरेरे ॥ ( सु० )  
॥ ४ ॥ उदय करमगत देख जगत की । जिनवर क्युं न नजैरे ॥ ( सु० ) ॥ ५ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सहियोरी मिलचालो प्रनु पूजन काज ॥ ( स० ) ॥ समवशरन  
विच आप विराजै । वीरनाथ महाराज ॥ ( स० ) ॥ १ ॥ श्रेणक नृप  
चेजणा राणी । नक्ति करत है आज ॥ ( स० ) ॥ २ ॥ निज निज द्रव्य  
लीये पुरके जन । उमंग उमंग सुज साज ॥ ( स० ) ॥ ३ ॥ वे प्रनु दीन  
दयाल जगतके । हितकर धर्म जिहाज ॥ ( स० ) ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( राग केहरवो ) ( २ ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मनवा जिणंद गुण गायरे ॥ ( म० ) ॥ याजिनर्जीके दरस सरस  
तें । दुखदोहग मिट जायरे ॥ ( म० ) ॥ १ ॥ सुगुरु वचन परतीत मानले ।  
आतमसुं लय लायरे ॥ ( म० ) ॥ २ ॥ जब २ में तो कुं सुखदाई । आनंद  
बंझित पायरे ॥ ( म० ) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चालो देखोरी मधुवनको राव ( चा० ) वामानंदन पाशजिने  
सर । शिरपरै बाके चवर दोजाय ॥ ( चा० ) ॥ १ ॥ तारण तरण जिनेसर  
जखके । नैट सहु नवि चित सुख पाय ॥ ( चा० ) ॥ २ ॥ गंगा दश  
उमाहोजागो । कवफरसुं बाके मन वच काय ॥ ( चा० ) ॥ इति पदम् ॥

## ॥ ❀ ॥ ( राग घाटो ) ( २ ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मेरो मन बशकर लीनो । जिनवर प्रनुपाश ( मे० ) ॥ १ ॥  
अखीयां कमल पांखनीयां । मुख सुंदर जास । ( मे० ) ॥ २ ॥ काने कुंम  
ल दोय जलकै । शशि सूरज सम जास ( मे० ) ॥ नीलवरण तन सोहै ।  
त्रिनुवन परकास ॥ ( मे० ) ॥ ३ ॥ प्रनु तुम शरण रहीनें । समरुं सासोसा  
स ॥ ( मे० ) ॥ ४ ॥ लालचंद अरज सुणीनें । पूरो वंझित आश ॥  
( मे० ) ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राखुरे हमारा बटमें । जिनराज नाम तेरा ॥ ( रा० ) ॥ जागै  
प्रभाव मेरा । अग्यानका अंधेरा । जागा जया जजेरा ॥ ( रा० ) ॥ १ ॥  
सूरति तेरी रागै । देख्यां विभाव त्यागै । अध्यात्म रूप जागै ॥ ( रा० ) ॥ २ ॥  
सुद्रा प्रमोदकारी । कृष्णसेज त्रिहारी । लागत मोहि प्यारी ॥ ( रा० ) ॥ ३ ॥  
त्रैलोक्यनाथ तुम ही । हम है अनाथ गुन ही । करियै सनाथ हम ही ॥  
( रा० ) ॥ ४ ॥ प्रनुजी तिहारी साखै । जिन हर्ष सूरि जाखै । दिलमां  
ज्या ही राखै ॥ ( रा० ) ॥ ५ ॥ ❀ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ राग तुमरी जंगलो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुणो सुजाण नेमजी । हांरे में खनी पुकारुं नेम तूही तूही तूही ।  
( सु० ) ॥ अरज करत हुं मे पड़्यां परतहुं । इतनी अरज मेरी मानो  
सुजाण ( नेमजी हां० ) ॥ १ ॥ विन अवगुण क्युं तजो मेरे साहिब  
महिर निजर मोषे आणो सुजाण ( नेमजी ) ॥ २ ॥ हरख चंद नेमी  
राजेमर । हुं प्रब २ की चेरी सुजाण ( नेमजी० ) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

## ॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तेरे दरमको चाह लगयो । सखी स्याम वरण बत लाजारे  
( ते० ) । बनमें जाय प्रनु दिहा लीनी । हमकुं जार लगा जारे ( ते० ) ॥ १ ॥  
जाय चढे प्रनु गिरनार ऊपर । अब कैमें विमराजारे ( ते० ) ॥ २ ॥ चैन  
विजे कहै धन २ राखल । प्रनु चरणों चित लायजारे ( ते० ) ॥ ३ ॥ इति

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ थारै सुखमारीहो वारी राज । प्यारीबूवी वरणी न जाय (थां०)  
सीस मुगट सोहै सिरटीको । काने थारै कुंमल सोजाय (थां०) ॥ १ ॥  
मोहन गारी सूरत सारी । देख्यां ह्यारो मनमो लोजाय (थां०) उज्जित  
नेन जए निरखत ही । थांसुं प्रनु प्रीतमजी लगाय (थां०) ॥ २ ॥ जव २  
पाश जिणंदजीकी सेवा । ऐसी ह्यारै दिलमेमे चाव (थां०) । वालक है  
तुमही प्रनु मेरे । ह्यारै प्रनु तुमही सहाय । (थां०) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

॥ ❀ ॥ ( राग काफी कानरौ ) ॥ ❀ ॥

ऐसी विधतैने पाईरे । कबु करणी करजा (अै०) उत्तम नर जव जैन  
धरम रुचि । सुगुरु सेवा सुख दाईरे । जसु पातक ऊरजा (अै०) ॥ १ ॥  
हिंसा जूआ झूट परत्रिया । परिग्रह मद फल चोरीरे । घट जायगा दरजा  
(अै०) ॥ २ ॥ तप जप संयम शीलदान कर । आनंद सुमति सुहाईरे ।  
जव जल निधि तरजा (अै०) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ ( राग कालंगमो ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मोहि अपनो कर जाणो प्रनुजी ॥ ( मो० ) ॥ मैं मतिहीण  
महा हठवादी । सो तुमसें नहीं गानो । राग द्वेष अरु मोह महामद ।  
बाधो खोट खजानो ॥ ( प्र० मो० ) ॥ १ ॥ ए रिपु कर्म पड्यो मुज के  
मे । किसविध बूटै पानो । कुमति कदा ग्रह मांहि ऊलूख्यो । ज्युं मदपा  
न वयानो ॥ ( प्र० ) ॥ २ ॥ हुं जववाशी तूं शिववाशी । जानें मकल  
जिहांनो । विरुद लाखीणो सांम संजारो । तो हिव किम चित तांणो ॥  
( प्र० ) ॥ ३ ॥ जक्ति सदाई शिवसुख दाता । संजवनाथ कहानो । श्रीजि  
न सोजाग्य सूरिने निजवर । दीजे सुखप्रधानो ॥ ( प्र० ) ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ ( राग जैरवी ) ( १ ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नेम जिणंद जी सें आखमर्जा । मोरी रेन दिवस नित जग र  
हारे ॥ ( मो० ने० ) ॥ पहर्जा आय उन दोस्ती कीर्ना । ले पीठे ठिठ्ठा  
य दईरे ॥ ( ने० ) ॥ २ ॥ पशुवन पर प्रनु दया करीने । शिवरमणीनें वर

लेईरे ॥ ( ने० ) ॥ २ ॥ केइ जविक रसना कर दोस्ती । रत्न विमल पद  
पाय लईरे ॥ ( ने० ) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आज प्रभु तोरै चरण लाग । मिथ्यात नांद में खोईरे ॥ ( आ० ) ॥  
दरशण कर परसण जयोमेरे । आनंद चित अब पोईरे ॥ ( आ० ) ॥ १ ॥  
तुम विन ओर न कोइ मेरै । देख्यो त्रिभुवन जोईरे ॥ ( आ० ) ॥ २ ॥ दास  
तुमारो करत वीनती । तुम प्रभु जव जव होईरे ॥ ( आ० ) ॥ इति पदम् ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रात गई अब प्रात होन जयो । क्या सोवे जीया जागरे  
( रा० ) दोय बडी तरुको अब रहीयो । ऊठ धरम में जागरे ॥ ( रा० ) ॥  
॥ १ ॥ जिनवाणी उर बीच धारलै । ऊर जरम सर्व त्यागरे ॥ ( रा० ) ॥ २ ॥  
आणंद सुगुरु वचन हित मानो । ए सूयो शिव मागरे ॥ ( रा० ) ॥ ३ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तुम विन दीनानाथ दयानिध कोन खबर ले मेरी । ( तु० ) भ्रम ।  
त फिरयो संसार जगतमें । मेढो जवनी फेरी । ( तु० ) ॥ २ ॥ ॥ जव २ के  
प्रभु तुम जगनायक । राखो शरण तेरी । उदय आमरो पकड़्यो तेरो  
शरन ग्रहीमें तेरी ॥ ( तु० ) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग विज्ञास ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जोरुनयो अब जाग वावरे ॥ ( जो० ) कोउ पुन्यते नर जव  
पायो । क्युं नृतो अब पाय दावरे ॥ ( जो० ) ॥ १ ॥ धन वनिता सुत  
नान भानको । मोहमगन एह विकल जावरे । को इन तेरो तूं नहीं का  
को । इह संजोग अनाद सुजावरे ॥ १ ॥ ( जो० ) ॥ २ ॥ आरज देश  
उत्तम गुरु संगत । पाई ते बहु पुन्य प्रजावरे । ग्यानसार जिनमाग लायो ।  
क्युं इवै अब पाय नावरे ॥ ( जो० ) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( राग खट् ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जागरे मव रत्न विहानी ( जा० ) उदयो उदयाचल रवि मंजव



पुन्यकाल क्युं सोवै प्रानी ॥ ( जा० ) ॥ १ ॥ कमल खंरु वन वन विकसा  
नी । अजुवन तेरी द्रग उवरानी । चेतन धर्म अनादि तुमारो । जरु संग  
तसें सुध विसरानी । ( जा० ) ॥ २ ॥ तुम कुल दोय अवस्ता पड़े ।  
नींद सुपन एजरु नीसानी । आतम रूप संचार आपणो । कव तुमारे  
वर कुमती वरानी ॥ ( जा० ) ॥ ३ ॥ सुध बुध जूली निरुपम रूपकी ।  
ताते वट वध होत कहांनी । निश्चै ग्यान स्वरूप तुमारो । ग्यांनसार पद  
निज रजधानी ॥ ( जा० ) ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग वेलाउल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सांवरो सलूणो सखी मेरे मन जावनो । रूप देखाय मेरो मन  
ललचावनो ॥ ( सां० ) ॥ १ ॥ तोरणसुं रथफेर चले पीया । ना जानुं ए  
काहिको रसावनो ॥ ( सां० ) ॥ २ ॥ नव जव नेह निजाहो नेम तुम ।  
याहीते कहा वदन पुरावणो । आनंद राजुल याकी प्रीत कपटकी । जयो  
पीया सुगत सखीको पांवनो ॥ ( सां० ) इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग ललित ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आज ऋषज वर आवै ( देखो माई आ० ) रूप मनोहर ज  
गदानंदन । सवहीके मन जावै ( दे० ) ॥ १ ॥ केई सुगताफज थाल विशाला ।  
केईमणि माणक लावै । हयगय रथ पायक केई कन्या । लेमनु वेग वधावै ॥  
( दे० ) ॥ २ ॥ श्रीश्रेयांस कुमार दानेसर । इहुरस दान वहि रावै ॥ उत्तम  
दान अधिक अमृत फज । साधुकीरत गुण गावै ॥ ( दे० ) ॥ ३ ॥ ॥ ❀ ॥  
इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग रामकली ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अंगन कलप फल्योरी । हमारे माई ( अं० ) । रुद्रि वृद्धि  
सिद्धि सुख संपति दायक । श्रीशांतिनाथ मिल्योरी ( ह० ) ॥ १ ॥ केशर  
चंदन मृग मद घोली । मांहि वरास मिल्योरी । प्रजित श्री शांतिनाथजी  
की प्रतिमा । अजग नदेग टल्योरी ॥ ( ह० अं० ) ॥ २ ॥ शरणे राख  
कृपाकर माहिव :- ज्युं पारेवो पल्योरी । समय सुंदर कहे तुझारी कृपासें ।  
हुं गहिं सु मोहिलोरी ( ह० अं० ) ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जठौनें मोरा आतमराम । जिन मुख जोवा जइयैरे ॥ जिनजी  
नो दरमण ते अति दोहिलो । ते किम सोहिलो जाणोरे । वार २ मानव  
जव पणवो । जुम्बो सुसकल दाणोरे ॥ ( ऊ० ) ॥ १ ॥ च्यार दिवशनो  
चटको मटको । देखीनें मतराचोरे । विनसी जातां वार न जागै । काया  
वट्ठे काचोरे ॥ ( ऊ० ) ॥ २ ॥ अनन्तगुणे जरियो हे जिनवर । पूख  
पुण्ये पायोरे । एहनें देखी दिलमें आनन्द । करतूं सदा सवायोरे ॥  
( ऊ० ) ॥ ३ ॥ हीरो हाथ अमोलक आयो । मूढ हिवै मति गमजोरे ।  
महिज मलुणा पाम जिणंद जीसुं । राजी हुय चित रमज्योरे ॥ ( ऊ० )  
॥ ४ ॥ मन मांणीता माहरा आतम । करजे सुकृत कमाईरे । लाज उदय  
जिनचंद्र जहीनें । वरतूं सिद्ध बधाईरे । ( ऊ० ) ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

॥ ❀ राग केदारो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जज मन नाजि नन्दन देव ( ज० ) ॥ ध्यान सुनीजन अफि  
ग धारे । सुर नर करत है सेव ॥ ( ज० ) ॥ १ ॥ चक्री नृपति वने सुर  
पति । वासुदेव बलदेव । नमत बह्मा रुद्र नारद । शेष मणिधर सेव ॥  
( ज० ) ॥ २ ॥ अशरन शरनहै विरुद जाको । जक्तिवज्जल जेव । राजसिंह  
प्रभु श्वप्न शिरपर । नाथ है नित मेव ॥ ( ज० ) ॥ ३ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ताळ ठुमरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आवोनेम रह जावो सदन । हम कौन मंतावोरे ( आ० )  
व्याहन आप सज्जे सजन । पसुवनको सुन देख रुदन । गिरनारी चले  
निज अफि वनन । तक्मोर बतावोरे ॥ ( आ० ) ॥ १ ॥ पूनम जेमे चं  
द्रवदन । मनमोहन मूरत स्याम वरन । मेरे नौकी जर्गी नव जवकी जगन  
मती ठेह दिखावोरे ॥ ( आ० ) ॥ २ ॥ मंयम हूती जागी श्रवण । प्रनुकुं  
मिलावे नीके भ्रमन । सब फूजे पंगे कोल वचन । रथ फेरी न जावोरे ॥  
( आ० ) ॥ ३ ॥ कपूर कह प्रनुजीके चरण । राहुज मन वैराग धरन ।  
जेहुं दोह नेम जिनजीके शरण । शिवपुर तो बतावोरे ॥ ( आ० ) ॥ ४ ॥

## ॥ ❀ ॥ ( खेमटा ताल दादरा ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथम जगकाम जये आगीवान । हे ना निकला मुखसैं क  
जी जगवान ॥ यार नहीं देखा समो सरणा । किया जवदधिमें उदर जर  
णा । दोरुजो लेते प्रचूसरणा । दूर दुःख होते जनम मरणा । बैठ जव वरमें  
जगाया नहीं ध्यान । राज शिवपुरमें हुवा अपमान । करो अब दे  
खके काल खगवान ॥ हे० ॥ १ ॥ नाम जो जिनके दान देते । तो आ  
तुं मद तुमसैं दूर रहते । यारजो जिनके चरण सेते । तो शपी सुमताकों  
तुमें देते । रहे तप जपमें सदा जोसूर । वरै वो जव जव अगम सुख नूर ।  
करै कपूर करम चकचूर । देखा जिन नूर हुवे दुख दूर । करो जव पार  
सुनो महरवान ॥ नानि० ॥ २ ॥ इति जिनपद स्तवनम् ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ ( राग पीलू ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आयो सही अब जानं कहां शरणागतकों शरणागत तेरी ।  
( आ० ) तोहू समान मिल्यो नहीं कोई । हूँद फिरयो धरती सब हेरी ।  
( आ० ) होय दयाल महा प्रनुजी अब । आन जई तुम सैं जट जेरी ॥  
( आ० ) ॥ १ ॥ दास कल्याण करै वीनती सुन । पारशनाथ सुपारस  
मेरी ॥ ( आ० ) ॥ २ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ ( राग खम्बाज ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वसी २ पल २ दिन २ निश दिन । प्रनुको समरण करजेरे ।  
( घ० ) प्रनु समरण सब पाप कटतहै । अणुन करम सब हरजेरे ॥ ( घ० )  
॥ १ ॥ मन वच काय लगी चरणन नित । ज्ञान हियेमें धर जेरे ॥ ( घ० )  
दोलन राम प्रनु गुणगावे । मनवंछित फल वरजेरे ॥ २ ॥ इति पदम् ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ शिखरगिरी स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तुमतो जले विराजो जी । शंखलिया महाराज शिखरपर न  
ले विराजो जी ॥ तेरै घाटे चौकी लागै । श्रावक जाण न पावे । हुकम  
कियो श्रीपाशजिनेसर । बांह पकर लेजावे ॥ ( तु० ) ॥ १ ॥ जुंवा नौंवा  
परवत सोहै । तले जिननका वासा । पैरु पैरु पर सिंह धमूकै । जिहां  
जिया तुझ वामा ॥ ( तु० ) ॥ २ ॥ टंक टंकपर धजा विराजे । जानरके

जणकारे । जालरके जणकारे सेती । वाजे अविचल वाजा ॥ ( तु० ) ॥ ३ ॥  
 दूर देशयी यात्री आवे । पूजा आण रचावे । अष्टद्रव्य पूजामें लावे ।  
 मनवंगित फलपावे ॥ ( तु० ) ॥ ४ ॥ सुर नर मुनिवर वंदन आवे । महा  
 परम सुख पावे । चंद्रखुस्याल चरणको सेवक । हरष हरष गुण गावे ॥  
 ( तु० ) ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ पुनः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ शिखर गिरेंद्र जुहारो । निज पातक दूर निवारोरे ॥ ( नविचां  
 शि० ) ॥ इण सम तीर्थ न कोई । में देखा सहु जग जोईरे ॥ ( न० सि० )  
 ॥१॥ वीश जिनेसर आया । इहां मुक्ति पुरी सुख पायारे ॥ ( न० ) ॥ कोना  
 कोनी मुनि सीधा । जिहां अजर अमरपद लीधारे । ( न० ) वीश चरण  
 जिन सोहे । नविजन चात्रक मनमोहरे ॥ ( न० ) ॥ २ ॥ ध्रुव मठ मंदिर  
 गजे । जिहां पास प्रभु महाराजरे ॥ ( न० ) ॥ ३ ॥ पावन तीर्थ एहवो ।  
 इहां संसय धरवो न केहोरे ( न० ) तीर्थ आसानन दालो । नविजन  
 गहरावत पालोरे ॥ ( न० ) ॥ ४ ॥ नर नव जाहो जीजे । इण तीर्थ म  
 हिमा कीजेरे ॥ ( न० ) मय उगणीस ते तीमे । अगहन मुदि पंचमी दी  
 सेरे ॥ ॥ ( न० ) ॥ ५ ॥ दूगम गोत्र सुहावे । नवि चंद गोविंद गुण गावेरे  
 ( न० ) । जात्रा करी मनरंगी । चंद्रशिखर नणें अनि चंगेरे ॥ ( न० ) ॥ ६ ॥

॥ ॐ ॥ पुनः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ शांवरिया जैसे वणें तेमें तारो ॥ ( इम चालमें ) ॥ शांवरि  
 यामें दीठो दरस निहारो । मेरो नव नव बाधा टारो ( शां० ) अश्वसेन नं  
 दन जगवंदन । जगबंधव जगप्यारो । नीजवरण द्युति श्रीजिनवरकी वामा  
 उदर अवतारो ॥ ( शां० ) ॥ १ ॥ कमठ विमाराण शिव सुखकारण । तारण  
 तरण निहारो । अजस्र अगोचर अगम अरूपी । नियामक सत्ववारो ॥  
 ( शां० ) ॥ २ ॥ शिखर गिरी मंडन जिनवरजी । अदनुन महिमा वारो ।  
 करजोनी दोउं वीनती करत है । बुधविंद अरजी धारो ॥ ( शां० ) ॥ ३ ॥

॥ ॐ ॥ पावापुरी स्तवन जि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ चरम प्रभु अरज हमारी धारो । मेरो आवागमन निवारो

( च० ) ( आंकसी ) सिद्धार्थ कुल जनम जियोहै । तिसला उदर अवतारो ।  
 सुरगण कोरु मिली सुरगिर पर । सात्र महोदव सारो ॥ ( च० ) १ ॥ व  
 सुविध पूज रचत जिनवरकी । सफल करत अवतारो । जय जय शब्द  
 करत सुर नखर । जय २ जगदाधारो ॥ ( च० ) २ ॥ बाल अवस्था अतु  
 ल बली प्रनु । सहजा अतिसय चारो । दिहा ले प्रनु केवलपायो । श्री  
 संघ आनंदकारो ॥ ( च० ) ३ ॥ सुंदर सूरत मोहनी मूरत । नाथ निरंज  
 न प्यारो । सीस मुगट सोहै अति सुंदर । गल मोतियनको हारो ॥ ( च० )  
 ४ ॥ समवसरणकी अदनुत महिमा । देखत नयना ठारो । प्रविजन चा  
 त्रक अति हरपावै । स्वामी नाथ निहारो ॥ ( च० ) ५ ॥ चरम चौमाशी  
 पावापुरिमें । कीधी जग हितकारो । शोलै पहर लग अरुग देसना । प  
 दनिरवाण पधारो ॥ ( च० ) ६ ॥ काल अनन्त प्रम्यो प्रव वनमें । कहत  
 न आवै पारो । अव तो प्रनुको सरण ग्रहीमें । कबहु न ठोड़ुं लारो ॥  
 ( च० ) ७ ॥ दूगरु गोत्रे इन्द्र चन्द्र सुत । चंद्र गोविंद ध्रमकारो । जात्रा  
 करी प्रनुकी उठरंगै । जनम कृतार्थ म्हांरो ( च० ) ८ ॥ सय उगणीस ते  
 तीस मनोहर । अगहन दशमी उजारो । सिपरचंद प्रनु शिवसुख दायक ।  
 पूरव पुन्य जुहारो ॥ ( च० ) ९ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग कैरवो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ में मुख देख्यो गोमी पारसको । मेरो जनम सफल प्रयो  
 आज ॥ आजरे में मुख देख्यो गोमी पारसको ॥ मेरो ० ॥ ( टेक )  
 अन्यदेवनकुं बहुत में ध्यायो । तोए न सरखोजी मेरो काज ॥ आ  
 जरे ० ॥ १ ॥ प्रव प्रव प्रटकत शरणे हुं आयो । अव तो रखोजी मोरी  
 लाज ॥ आजरे ० ॥ २ ॥ कमठ हरावन नागकुं तारन । संजलाव्यो नव  
 कार ॥ आजरे ० ॥ ३ ॥ रूपचंद कहे नाथ निरंजन । तारण तरण जहा  
 ज ॥ ( प्रलां० ) तारण तरण महाराज ॥ आ० ॥ ४ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ किरपा करोरे गोमीपाश जिनेसर । तुम स्वामी अंतरजा  
 मी ॥ टेक ॥ उंचे उंचे गढपर पासजी विराजे । चारे तरफ़ ज्ञानी ध्यानी  
 किरपा ० ॥ १ ॥ नील वरण तोरो अंग विराजे । वदनकी जाऊं बलिहा

री किर० ॥ २ ॥ बांहे बाळुबंध बहेरखा विराजे । कुंमलकी त्रिवि हे  
न्यारी ॥ किर० ॥ ३ ॥ हूँढत हूँढत में प्रनु पायो । पूरण पदवी अव पाई ॥  
किर० ॥ ४ ॥ नाथ निरंजन नाम तुमारे । रूपचंद पदवी पाई ॥ किर० ॥ ५ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मुजरा साहेव मुजरा साहेव । साहेव मुजरा मेरारे ॥ ॥ टेक ॥  
साहेव सुविधि जिनेसर स्वामी । चरण पखाळुं तेरारे ॥ मुजरा० ॥ १ ॥  
केशर चंदन चरचूं अंगें । फूल चढावुं सेरारे । घंट वजावुं अगर उखेवुं ।  
करुं प्रदक्षिणा फेरारे ॥ मुजरा० ॥ २ ॥ पंच शब्द वाजित्र वजावुं । नृत्य  
करुं अधिकेरारे ॥ रूपचंद गुण गावत हरखत । दाम निरंजन तेरारे ।  
मुजरा० ॥ ३ ॥ ❀ ॥ इति० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ घंट वाजे धननननन । इंद्रजोक हरख जयो । जनमे वर्ध  
मान कुंवर । वीतराग तननननन ॥ घंट० ॥ १ ॥ मृदंग ताळ गुण विशाल ।  
जखरी नाद जतनननन । घंट० ॥ २ ॥ रूपचंद रागरंग । होत ध्यान  
मगनननन ॥ घं० ॥ ३ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ निरंजन सांडआंरे । सांड मेरा दुक्ता मुजराजेत ॥ टेक ॥  
तुम हो तीर्थका देवनारे । हम गिरिवरका मोर ॥ स्म ज्म स्म ज्म मे  
हुला वरसे । कांड ठम ठम नाचे मोर ॥ निरंजन० ॥ १ ॥ हम गुण का  
ली कोयलारे । प्रनु गुण आंवा मोहोर । मांजरेके परमादसें कांड । करने  
लागी मोर ॥ निरंजन० ॥ २ ॥ तुमहो अमर देवनारे । हम केशरका  
ओर ॥ कनक कचौली हाथमां । कांड पूजा करुं रंगरोज ॥ निरंजन० ॥  
॥ ३ ॥ तुमहो मोनिकी खरीरे । हमगुण नंडा नेर । रूपचंदकी बेटी  
अरज हे । दिलजर दीगिनदार ॥ नि० ॥ ४ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग कल्याण ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गेसे मोहर विच कोनमा दीवानहे ॥ टेक ॥ पानीके कोट  
पवनके कांगरे । दश दरवाजे मंगान हे ॥ गेमे० ॥ १ ॥ पांच इंद्राके



त्रेवीश तस्कर । नगरकुं करत हैरान हे ॥ ऐसे० ॥ २ ॥ प्रजा पुकार सु  
नी तव जाग्यो । चेतन राय सुजाण हे ॥ ऐसे० ॥ ३ ॥ ज्ञानको वाण  
वचन रस जेदे । हाथमें लाल कमान हे ॥ ऐसे० ॥ ४ ॥ रूपचंद कहे  
तेहनें वारो । दुश्मन करत गुमान है ॥ ऐ० ॥ ५ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

### ॥ ॥ श्री आदिजिन स्तवन ॥ ॥

॥ ॥ आय रहो दिल बागमें । सुन प्यारे जिनजी ॥ (आंकणी)  
चुन चुन कलीयों तोरे चरणे चढावुं । गुण अनंता तोरा रागमें ॥ सुन० ॥  
॥ १ ॥ मरुदेवी नंदन आदि जिनेश्वर । खेल अनंता तोरा बागमें ॥ सुन० ॥  
॥ २ ॥ रूपचंद कहे नाथ निरंजन । जानें विकसित वन फागमें (सुन० ३)

### ॥ ॥ श्री नेमिजिन स्तवन लि ॥ ॥

॥ ॥ रहो रहोरे यादव दोय घमियां । दोय घमियांरे अब चार  
घमियां ॥ २० ॥ ए आंकणी ॥ प्रेमका प्याला वोहोत मसाजा । पीव  
त मधुरी सेजमीयां ॥ रहो० ॥ १ ॥ हाथशुं हाथ मिलाइ दीयो सांइ । फु  
लना विठावुं मेजमीयां ॥ रहो० ॥ २ ॥ राजल ठोमी चले गिरनारे । दी  
पत मोहन वेलमीयां ॥ रहो० ॥ ३ ॥ रूपचंद कहे नाथ निरंजन । मुक्ति  
वधू गुण वेलमीयां ॥ रहो० ॥ ४ ॥ इति ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

### ॥ ॥ श्री गौडी पार्श्वजिन स्त० ॥ ॥

॥ ॥ विराजो वंगलामें । विराजो मंदिरमें । प्रनु गोमीचा पारश  
नाथ ॥ वि० ॥ ए टेक ॥ चुवा चुवा चंदन और अरगजा । केशर में  
गरकाव ॥ वि० ॥ १ ॥ शिरसोनेको उत्र विराजे । मोतियमां तपेरे लिजाड  
॥ वि० ॥ २ ॥ अब सागरमें आइ पड्यो हुं । बांहे पकम सुज नार ॥  
वि० ॥ ३ ॥ रूपचंद कहे नाथ निरंजन । आवागमन निवार ॥ वि० ॥ ४ ॥

### ॥ ॥ श्री नेमिजिन स्तवन० ॥ ॥

॥ ॥ कीनें देखा हमारा स्वामी । स्वामी अंतर जामीरे ॥ की  
ने० ॥ टेक ॥ आठ जवनकी प्राति प्रकाशा । नवमें गया शिवगामीरे ॥  
कीने० ॥ १ ॥ सहसावनकी कुंज गलिनमें । मिल्वा सुने अंतरजामीरे ॥  
कीने० ॥ २ ॥ आप चले गिरनारकी ऊपर । नारी नारी केवल पामीरे ॥

कीने ॥ ३ ॥ कहे नथू प्रभू नेम नगीनो । कहुं उजं आज शिर नामीरे ॥  
कीने० ॥ ४ ॥ ॐ ॥ इति० ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

## ॥ ॐ ॥ राग आशावरी ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अबधू सो जोगी गुरु मेरा । उस पदका करेरे निवेडा ॥  
अबधू० ॥ टेक० ॥ तस्वर एक मूल विन आया । विन फूले फल  
लागा । शाखा पत्र नहीं कर उनकुं । अमृत गगन लागा ॥ अ०  
॥ १ ॥ तस्वर एक पंजी दोउ वेठे । एक गुरु एक चेला ॥ चेलनें  
जुग चुण चुण लाया । गुरु निरंतर खेला ॥ अ० ॥ २ ॥ गगन मंजुमें  
अधविच कृपा । उहां हे अमीका वासा ॥ सुगुरा होवे सो जर जर पी  
वे । नगुरा जावे प्यासा ॥ अ० ॥ ३ ॥ गगनमंजुमें गतआं विहानी ।  
धर्ती दूध जमाया । माखन था सो विरला पाया । नाउ जगत जरमाया  
॥ अ० ॥ ४ ॥ थड विन पत्र पत्र विन तुंवा । विन जिम्या गुण गाया ॥  
गावन बालेका रूप न रेखा । सुगुरु सोही बनाया ॥ अ० ॥ ५ ॥ आत  
म अनृजव विन नहीं जानें । अंतर ज्योति जगावें । वट अंतर परखे  
सोही मूरत । आनंदवन पद पावे ॥ अ० ॥ ६ ॥ इति ॥ ॐ ॥

## ॥ ॐ ॥ पुनः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अबधू ऐसो ज्ञान विचारी । वामें कोण पुरुष कोण नारी  
॥ अबधू० ( टेक ) बम्पनके घर न्हाती धोती । जोगीके घर चेला । कल  
मा पद पद चड़े तुलसी । आपही आप अकेली ॥ अबधू० ॥ १ ॥ सुस  
रो हमारे बालो जेजो । साह बाल कुंवारी । पिउजी हमारा पोटि पाल  
णीये । मैं हूं तुलावन हारी ॥ अबधू० ॥ २ ॥ नहीं हूं परणी नहि हूं  
वारी । पुत्र जणावन हारी । काळी दाढीको मैं कोइ नहीं ओझो । ह  
जग हूं बाल कुंवारी ॥ अबधू० ॥ ३ ॥ अदी आपमें साह खट्टी । गगन  
ऊंची नलाई । धर्तीको उड़ो आनकी पिओली । नाए न मोन जराणी  
॥ अबधू० ॥ ४ ॥ गगन मंजुमें गाय बीआणी । वसुधा दूध जमाई । स  
ऊं सुनो दाह विखोणां विखोवें । कोइ एक अमृत पाईरे ॥ अबधू० ॥ ५ ॥

नहीं जानें सासरीए नहीं जानें पीयरीये । पीयुजीकी सेज विगाड़ ॥ आनं  
दघन कहे सुनो जाइ साधो । ज्योतसें ज्योत मिलाईरे ॥ अवधू० ॥ ६ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ बेर बेर नहीं आवे । अवशर । बेर बेर नहीं आवे ( ए टेक )  
ज्युं जाणे त्युं करले जलाई । जनम जनम सुख पावे ॥ अवशर० ॥ १ ॥  
तन धन जोवन सबही जूठो । प्राण पलकमें जावे ॥ अवशर० ॥ २ ॥  
तन ठूटे धन कोण कामको । कायकूं कृपण कहावे ॥ अव० ॥ ३ ॥ जाके  
दिलमें साच वसत हे । ताकूं जूठ न जावे ॥ अव० ॥ ४ ॥ आनंदघन प्रनु  
चलन पंथमें । समरि समरि गुण गावे ॥ अव० ॥ ५ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग कैरवो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ए जिनके पाये लागरे । तुनें कहीयें केतो ॥ ए जिनकेपा० ॥  
( ए टेक ) ॥ आठोइ जाम फिरे मद मातो । मोह निंदरीयाभुं जागरे ॥  
तुने० ॥ १ ॥ प्रनुजी प्रीतम विन नहीं कोइ प्रीतम । प्रनुजीनी पूजा व  
णी मागरे ॥ तुनें० ॥ २ ॥ जवका फेरा वारी करो जिन चंदा । आनंदघन  
पाये लागरे ॥ तुनें० ॥ ३ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हारे चित्तमें धरोरे प्यारे चित्तमें धरो । एती शीख हमारी  
प्यारे चित्तमें धरो । ( ए आंकणी ) थोमासा जीवनकाज अरे नर ।  
कायेकूं ठज परपंच करो ॥ एती० ॥ १ ॥ कूड कपट परद्रोह करो  
तुम । अरे नर परजवथी न करो ॥ एती० ॥ २ ॥ चिदानंद जो ए  
नही मानो तो । जनम मरणके दुःखमें परो ॥ एती० ॥ ३ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग गौरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अवधू निरपद्ध विरला कोई । देख्या जग सब जोई ॥ अवधू०  
॥ टेक ॥ ममरस जाव जला चित्त जाके । थाप उत्थाप न होई ॥ अ  
विनाशीके घरकी वातां । जाणेंगे नर मोई ॥ अवधू० ॥ १ ॥ राव रंकमें  
नेद न जाणे । कनक उपज मम लेखे ॥ नारी नागणिको नहीं परिचय ।  
तो शिव मंदिर देखे ॥ अवधू० ॥ २ ॥ निदा स्तुति श्रवण सुर्णानें । हय

शोक नवि आणें ॥ ते जगमें जोगीमर पुरा । नित चढते गुणठाणें ॥  
अवधू० ॥ ३ ॥ चंद्रममान सौम्यता जाकी । मायर जेम गंजीरा ॥ अप्रमत्त  
चारुं परें नित्या । सुर गिरि सम शुचि धीरा ॥ अवधू० ॥ ४ ॥ पंकज  
नाम धराय पंकजुं । रहत कमल जिम न्यारा ॥ चिदानंद ऐसा जिन  
उत्तम । सो साहेबका प्यारा ॥ अवधू० ॥ ५ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ राग प्रजाती ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ चालणां जरूर जाकुं ताकुं केसा मोवणां ( ए आंकणी ) जया  
जव प्रातकाळ । माता धवरावे वाल । जगजन करत सकळ सुख धोव  
णां ॥ चा० ॥ १ ॥ सुरनिके बंध बूटे धूवरु जये अपृठे ॥ ग्वाल वाज  
मिलके । विलोवन विलोवणां ॥ चा० ॥ २ ॥ तज परमाद जाग तुंजी तेरे  
काज लाग ॥ चिदानंद साथ पाय । बृथा नही खोवणा ॥ चा० ॥ ३ ॥

॥ ॐ ॥ राग केरवो ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ समऊ परी । मोहे समऊ परी । जग माया अब ऊठी मोहे ॥  
समज० ॥ ए आंकणी ॥ काळ काळ तुं क्या करे मूरख । नहीं चरोसा प  
ल एक घरी ॥ जग० ॥ १ ॥ गाफिल तिनजर नांही रहो तुम । शिरपर  
धुमे तेरे काळ अरी ॥ जग० ॥ चिदानंद ए बात हमारी प्यारे । जाणो  
तुम चित मांहे खरी ॥ जग० ॥ ३ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ राग गजल ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ राजल पुकारे नेम पिया । ऐसी क्या करो ॥ सुके डोमके चजे हो  
चूक हममें क्यापरी ॥ राज० ॥ १ ॥ हुड़ आशकी निराश । उदाशीनतावर्मा ॥  
प्यारा वग नहीं हमेरा । प्रीतम पीरमें परी ॥ राज० ॥ २ ॥ हममें न्या न  
जाये । प्रीतम तुम बिना घरी ॥ मंथम जीर्जाये दयाल । दया धर्म आदरी ॥  
राज० ॥ ३ ॥ निशदिन हमेरा नाम । देते ज्ञानकी उरी ॥ सुनि चंदविज  
य सरण कमल । चितमें धरी ॥ राज० ॥ ४ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ राग धन्याश्री ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ कौन किसीको भित्त । जगत्तमें कौन किसीको भित्त ॥ ए आं  
कणी ॥ मात तात ऊँजात मजनसे । कांइ रहत निश्चित ॥ ज० ॥ १ ॥

सबही अपने स्वारथके है । परमारथ नहीं प्रीत ॥ स्वारथ विणसे सगो न  
होसी । मित्ता मनमें चित ॥ ज० ॥ २ ॥ उठ चलैगो आप इकेली ।  
तुंही सुं सुविदीत ॥ कोनहिं तेरो तुं नहीं किसको । एह अनादी रीत ॥  
ज० ॥ ३ ॥ तातेँ एक जगवान जजनकी । राखो मनमें नीत ॥ ग्यान  
सार कहे येह धन्याश्री । गायो आतम गीत ॥ ज० ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वधाई ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वाजत रंग वधाई नगरमें ॥ वा० ॥ जय जयकार जयो जि  
नशासन । वीर जिणंदकी पुहाइ ॥ न० ॥ वा० ॥ १ ॥ सब सखियन मिले  
मंगल गावे । मोतीअन चौक पुराइ ॥ न० ॥ वा० ॥ २ ॥ केशर चंदन  
जरीय कचोली । साहिब ज्योति सवाई ॥ न० ॥ वा० ॥ ३ ॥ हरखचंद  
प्रनु दरशन देखत । आवत नैन जराइ ॥ न० ॥ वा० ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग केरवो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जलांजी मेरो नेम चल्यो गिरनार । एकेली जानसैं ॥ मेरो० ॥  
राजुज ऊर्जी अरज करे ठे । ( जलांजी मेरी ) अरज सुनो महाराज ॥ एके  
ली० ॥ १ ॥ तोरण आय चले रथ फेरी । ( जलांजी उवांतो ) पशुवनकी  
सुनी ठे पोकार ॥ एकेली० ॥ २ ॥ सहसावनकी कुंजगजिनमें । ( जलांजी  
उवांतो ) पंच महाव्रत धार ॥ एकेली० ॥ ३ ॥ हरखचंद प्रनु राजुज विनवे ।  
( जलांजी मेरो ) होजो सुक्तिमें वास ॥ एके० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीमुपाश जिनराज ॥ ए देशी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आदीसर जिनराज । त्रिनुवनके महाराज ॥ आजहो आयो  
रे में शरणे प्रनुजी तुम तणें जी ॥ १ ॥ उवस्यो ग्यान अंकुर । प्रगव्यो  
पुण्य पट्टर । आजहो जागीरे सुज मनमें तुमनी सेवना जी ॥ २ ॥  
लगन लागी जरपूर । दोष गये सब दूर । आजहो गोडुं रे नहीं तुम प  
द सेवा सुखकरुजी ॥ ३ ॥ नागिराय कुज चंद । मरुदेवाके नंद । आज  
हो राखो रे प्रनु सुजकुं निज चरणे सदा जी ॥ ४ ॥ अमृत धर्म मुजाण ।  
शीश हृमा कल्याण । आज हो रामें रे प्रनु आगे आ विनती करेजा  
॥ ५ ॥ इति आदिजिनस्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ॐ ॥ राग केरवो ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ रसना सफत्र जई । में तो गुन गाये महाराज ॥ रसना ० ॥ (ए आं कणी ) ॥ परम आनंद प्रगट जयो मेरे । जत्र देखे जिनराज ॥ रसना ० ॥ १ ॥ अति उज्ज्वल जश सुन जिनजीको । संच्यो सुकृत समाज ॥ नाक नमन करतां प्रनुजीकुं । सारथा आतम काज ॥ रसना ० ॥ २ ॥ पदपंकज प्रनुके परमतही । दूर गई दुःख दाज । कहत कृपाकल्याण सुपाठक । अब मोहि अविचल राज ॥ रसना ० ॥ ३ ॥ इति ॥ ॐ ॥

## ॥ ॐ ॥ राग केदारो ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ गोमी गाइये मन रंग ॥ गो ० । एक ध्यानै एक तानै ॥ कर केदारे संग ॥ गोमी ० ॥ १ ॥ जात्रा कीजै अमृत पीजै । नीर बहेरी संग ॥ रोग शोग बलेश नासे । आजस नावे अंग ॥ गो ० ॥ २ ॥ पोडतां प्रनु नाम लीजै । आणी मन उतरंग ॥ अजय तेहने ऊंच मांहे । कदिय न होवे चित्त अंग ॥ गो ० ॥ ३ ॥ इति ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

## ॥ ॐ ॥ पुनः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ हारे हूं तो मोहोरे लाल । जिनसुखनानें मटके ॥ टेक ॥ नयण रमाया ने वयण सुखाया । चित्तहुं लोभुं चटके ॥ प्रनुजी केरी न कि करंतां । करम तणी कस तटके ॥ हारे ० ॥ १ ॥ सृज मन लोभी जमगुणी परे । जिनगुण कमलें अटके । रत्न चिंतामणि मुंकी राचे । कहों कोण काच तणे कटके ॥ हारे ० ॥ २ ॥ ए जिण शुणतां कोयादिक मट्ट । आम पानथी हटके ॥ केवलनानी बहु सुखदाणी । कुमति कुगतिने पटके ॥ हारे ० ॥ ३ ॥ ए जिनने जे दिलमां न आणे । तेतो नट्टया जटके ॥ जाव जनिथुं उत्रग कलां । वंजित सुखने मटके ॥ हारे ० ॥ ४ ॥ सृग्न मंनव जिनथर केरी । जोतां हट्ट हटके । नित्य जाज कहे प्रनु ए मोहोये । गुण गाऊं हूं तटके ॥ हारे ॥ ५ ॥ ॥ ॐ ॥

## ॥ ॐ ॥ राग काफी ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ प्रनुजीमें जागो क्यारे नेद मखारी । अब कैसे कर डूँडी ॥ प्र ० ॥ टेक ॥ भिग भिग जगमें बार्का जीयो । आपणा प्रनुजीमें नयेरी ॥



प्र० ॥ १ ॥ जो कोइ प्रनुजीसैं नेह करेगो । शिव पुरनां सुख लेहसेरी ॥  
प्र० ॥ २ ॥ सेवा राम प्रनु गांठ रेशमकी । लगी प्रीति नहीं तूटेरी ॥ प्र० ॥ ३ ॥

### ॥ ❀ ॥ राग रामगिरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रे जीव जिन धर्म कीजीये । धर्मनाचार प्रकार ॥ दान शीय  
ल तप जावना । जगमां एतंत सार ॥ रे जीव ॥ १ ॥ वरश दिवसनैं  
पारणैं । आदीश्वर अणगार ॥ डहुरस दान बहरावीयो । श्री श्रेयांस कुमार ॥  
रे जीव० ॥ २ ॥ चंपा पोल नुघामीयां । चालणीयें काढ्यो नीर ॥ शतीय  
सुजद्रा यश थयो । शीयल मेरु गंजीर ॥ रे जीव० ॥ ३ ॥ तप करी का  
या शोषवी । अरस निरस आहार ॥ वीरजिणंद वखाणीयों । धन ध  
नो अणगार ॥ रे जीव० ॥ ४ ॥ अनित्य जावना जावतो । धरतो निश्चल  
ध्यान ॥ भरत आरीसा नुवनमें । पाम्यो केवल ज्ञान ॥ रे जीव० ॥ ५ ॥  
जैन धर्म सुरतरु समो । जेनी शीतल बांय ॥ समय सुंदर कहे सेवतां ।  
मन वंछित फल पाय ॥ रेजी० ॥ ६ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सोइ सोइ सारी रेन गुमाइ । वेरन निद्रा तुं कहांसैं आई ॥  
सोइ० ॥ ए आंकणी ॥ निद्रा कहे मेंतो वालीरे जोली । बने बने सुनि  
जनकूं नाखुंरे ढोली ॥ सो० ॥ १ ॥ निद्रा कहे में तो जमकी दासी । एक  
हाथमें सुक्ती ऊर दूसरे हाथमें फासी ॥ सो० ॥ २ ॥ समयसुंदर कहे सुनो  
चाइ वर्नायां । आप डुबे सारी डुब गइ डुनियां ॥ सो० ॥ ३ ॥ इति ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ श्री चंद्राप्रभु स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चंद्रा प्रनुजीसैं ध्यानरे । मोरी लागी लगनवा ॥ चं० ॥ लागीज  
गनवा ठोमी न बूटे । जवलग घटमें प्राणरे ॥ मोरी० ॥ चं० ॥ १ ॥ दान शीय  
ल तप जावना जावो । जैन धर्म प्रतिपालरे ॥ मो० ॥ चं० ॥ २ ॥ हाथ जो  
रु कर अरज करत है । वंदत शेठखुशालरे ॥ मोरी० ॥ ३ ॥ इति ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ श्री वीरजिन स्तवन० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ने सुक्ति पुर गये रहेरे । वारी मकज करम दल लय कर ते ॥  
सु० ॥ ए टेक ॥ अविनाशी अविकार हे । परमानम शिवधामरे ॥ समाधान

मखंगे रूपी । मेरे मन वसे वमेरे ॥ वारी० ॥ १ ॥ शुद्ध बुद्ध अविद्ध हे । वहे  
अनादि अनंतरे ॥ वीर प्रभुके आगे गौतम । अमृत पद लहे लहेरे ॥ वारी० २

## ॥ ❀ ॥ राग काफी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ खतरा दूर करनां दूर करनां । एक ध्यान प्रभूका धरनां ॥ खतरा  
दूर करनां ॥ दू० ॥ टेक ॥ जवळग पांचो निर्मल करनां । तव जग जिन  
अनुमरनां ॥ खतरा० ॥ १ ॥ क्रोध मान माया परिहरनां । सुमति गुप्ति  
चित्त धरनां ॥ खतरा० ॥ २ ॥ संवर जाव सदा मन धरनां । आत्म पुर  
गति हरनां ॥ खतरा० ॥ ३ ॥ धन कण कंचन कुं क्या करनां । आखर एक  
दिन मरनां ॥ खतरा० ॥ ४ ॥ ज्ञान उद्योत प्रभु पाए परनां । शिव सुंदरी  
मुख वरनां ॥ खतरा० ॥ ५ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पानीमें मीन पियासीरे । सुन सुन आवत हांसीरे ॥ टेक ॥  
सुखसागर मग ठार जख्यो हे । तुं कां जयो उदासीरे ॥ पानी० ॥ १ ॥  
आत्मज्ञान विन नर जदकत हे । क्या मथुरा क्या काशीरे ॥ पा० ॥ २ ॥  
मान मुनि कहे ए गुरु साचो । सहजे मिले अविनाशीरे ॥ पा० ॥ ३ ॥ इति ॥

## ॥ ❀ ॥ गरवा चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ धन धन रे दीवाजी त्तारे आछनीरे । मेंतो उबी निरखी  
जिनराजनीरे ॥ धन धन रे दीवाजी त्तारे आजनीरे ॥ टेक ॥ पहेरी अंगी  
अलौकिक जाननीरे । मांही बुद्धी दीसे जांत जांतनीरे ॥ धन० ॥ १ ॥  
भाणी द्वारा मुकुटमां जड्या बहुरे । कानें कुंनजनी शोभा श्री कहुरे ॥  
धन० ॥ २ ॥ मुने किरपा कती ते हूं कहूं कशीरे । मोरे बाहाजे सुऊ  
गामुं जोयुं हसीरे ॥ धन० ॥ ३ ॥ पुनृ शांति जिणंद हृदये वस्यारे ।  
धई सुखशीनी चढती दशारे ॥ धन० ॥ ४ ॥ इति ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ धन धन आछनी दिन गलियामणोरे । सूरज सोनानो उग्यो  
सोहामणोरे ॥ धन० ॥ टेक० ॥ बाहणुं वार्ता प्रभुने चरणे नम्योरे । जिन  
राज ते माहरे मन गम्योरे ॥ धन० ॥ १ ॥ नव ग्रह ममा थया छारे प्रा

जथीरे । वली दशा ते श्री जिनराजथीरे ॥ धन० ॥ २ ॥ मुख जोतां ते  
 पुख सखे गयुरे । वालातुं ध्यान सदा चित्तमां रहुरे ॥ धन० ॥ ३ ॥ आपी  
 सेवा ते शुद्ध मनथीखरीरे । सूर शशी ऊपरें करुणा करीरे ॥ धन० ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ह्यारे आज आनंद वधामणारे । हुं तो लेनुरे बाहलाजीना प्रा  
 मणारे ॥ ह्यार० ॥ टेक ॥ मुने दास पोतानो जाणीयोरे । आथमतां ठेकाणे  
 आणियोरे ॥ ह्यारे० ॥ १ ॥ आप्युं दर्शन जे दुर्लभ देवनेरे । मुने कीधुं तु  
 रहेजे मारी सेवमेरे ॥ ह्यारे० ॥ २ ॥ एवो दीधो जरोसो साचा गुरूरे । प्र  
 नु विना जगत् मिथ्या सहूरे ॥ ह्यारे० ॥ ३ ॥ लहेर करीने महारा मन  
 रम्यारे । सूर शशीने जिनराजजी गम्यारे ॥ मारे० ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सवा लाख टकानी जाये एक घडी ॥ स० ॥ ए संसार जेमा  
 सांजिलां । वडपणा आया घोडे चमी ॥ मांगी तुंगीने बत्र धरयो । केनो  
 कंदोरो केनी कडी ॥ सवा० ॥ १ ॥ साधो जाई जिनने संचारो । जन्म  
 दशा जेम आवी चमी । कहे लोंवो जजतुं जगवंतने । मोहजवानी ए वात  
 खरी ॥ सवा० ॥ २ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ लावण्यां संग्रह ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अगड्डुं अगड्डुं वाजे चौघडा । सवाइमंका साहेवका । बननं ठ  
 ननं अवाज होता । महेल बनाया गगनोंका ॥ कल्याण पारशनाथ नाम  
 का । नित नित वाजे चौघमा । तीन लोकमें सच्चा साहेव । पार्श्वनाथ अव  
 तार बना ॥ १ ॥ वणारशी नगरीमें तेरा जनमहे । माता वामाके नंदा ॥  
 अश्वसेनके कुलमें शोजे । जैसा सरदपूनम चंदा ॥ स्वर्गलोकमें हुवा आ  
 नंदा । इंद्राणी मंगल गावे ॥ तेत्रीश क्रोम देवता मिलकर । उठव करने  
 आवे ॥ २ ॥ कोइ आवतां कोइ गावतां । कोइ नाम लेता देवा ॥ चोस  
 ठ इंद्र अरज करंता । चंद्र सूरज करता सेवा ॥ केई सुरनर साहेवके  
 आगे । अरज करंता खना खना ॥ जिनके सरूपकी पारन पावे । जिन  
 का गुण हे सबसे बना ॥ ३ ॥ दूर देशसे आया जोगी । बने जोर तपस्या

करता ॥ नीचें लगाता ज्वाला जोगी । बने बने जोकें खाना ॥ बार वरस  
की ऊमर प्रचुकी । गोटे पनमें बहोन कला ॥ बरोवरीके लीये सोवती ।  
तपशीकूं देखन्न चला ॥ ४ ॥ ज्ञान देखके बोले जोगीमें । ऐसी तपस्या क्युं  
करता ॥ उ जोगी तेरे बने लकमें । बना नाग इक अध जलना ॥ पारस  
नाथ जोगीशुं कहेता । तोवी जोगी नहीं सुनता ॥ लकडे दीये फेंक जंग  
लमें । लोक तमामा देखता ॥ ५ ॥ क्या कीया वे जोगी तुमने । बना नाग  
कों जला दीया ॥ दिया सार नवकार नागकूं । धरणीधर पदवीपाया ॥ बनी  
उमेदमें आया साहेब । संवत्सरीका दान दीया ॥ मान पिताकी आज़ा ले  
कर । महाराजने योग लीया ॥ ६ ॥ राज गोमके चले जंगलमें । लुगतीसें  
काऊमग कीया ॥ बडे धार गंजीर प्रचुने । तीन लोकमें नाम किया ॥  
लुग काजकी बडी धूपमें । नीरंजन निरंकार खडा । कमठासुरने कीया  
कडाका । ननमंडल वादल चला ॥ ७ ॥ उहि दिनको कमठासुरने । पीठ  
ला दावा जगवाया ॥ मेवमालिकी सेना लेकर । जलकूं जलदी बुलवाया ॥  
बडा कीया बनघोर जोरमें । पवन चलाया मतवाला ॥ कडड कडड कर  
हुया कलाका । चमक बाजका अलुवाला ॥ ८ ॥ मृशाल धारा मेव वरस  
ता । गगन गाजता चांताला । मात खूँकी बनी ऊनीमें । प्रनु खसा हे  
मतवाला ॥ नाक बरोवर आया पानी । नाथ निरंजन धार बना । पराजय  
नहि होय जित्ठका । ऐसा प्रनुका ध्यान चडा ॥ ९ ॥ संकटसें सिंहासन  
मोदयो । हवा घंटका अवाजा । अवाधि ज्ञानसें इंद्र देख्या । धाउ धाउ  
धरणी गजा । धरणीधर जलदामें आया । पदमावर्तीकूं मंग लीया ।  
पदमावर्तनि लीये शीशपर । शेषनागने उत्र कीया ॥ १० ॥ कोरु  
उत्ताय कीये कमठने । कुठ इलाज नही चलता । तगने वाला मा  
हैद उतरें । उजने वाला क्या करता । जीने श्री जिनराज हाके ।  
कमठ हाथ दो जोर लुना । धरणीधर साहेबके आगे । अजी कला  
खसा लुना ॥ ११ ॥ केवल पाय शिव दुखूं पहोंचे । पार्थनाथ शून मन  
वाला । लगी ज्योतमें ज्योत दीपकी । तप तेजका अलुवाला । वीरानगर  
में पार्थनाथका । देवल बनाया तेनाला । बने देवलमें इंद्र मोह । घंट

वाजता चौताला ॥ १२ ॥ बनी जगतमें सिंघासन कर । कोट बनाया देव  
लका । जगो जगोपर शिखर चढाया । दरवाजा शुभ केवलका । जामंडलके  
आगे सोजता । मूल गंजारा आरसका । पीछे पचीश देरीयां सोजित ।  
सिरे काम सिंघासनका ॥ १३ ॥ मूलनायकके ऊपर सोहे । सहस्र फणा  
प्रभु पारशका । चौमुखकी चतुराई बनी हे । बहु काम है सारसका । अ  
ठारसे पैंसठ सवाई । मुहूर्त फागुणमाश जला । सुदि त्रीजकुं तखतें बेठे ।  
जगो जगोपर नाम चला ॥ १४ ॥ देश देशके संघ बहु मिलकर । तेरे  
दर्शनकुं आया । जगत गुरु जिनराज जगतमें । बनी तेरी अकल माया ।  
धर्म चंद जोरता सवाईने । बना सामी वात्सल्य कीया । सकल संघकी  
आज्ञा लेकर । बडा शिखर नीशान दीया ॥ १५ ॥ करमचंदने देवचं  
दने । खेम चंदने खूब कीया । पारसनाथकुं तखत बेठाके । जगो जगो पर  
नाम कीया । कीर्ति विजय गुरु राजकुं प्रणमं । पायगुरूका राज बना ।  
गुलाबचंद साहेबके आगे । जिनशासनका काम बना ॥ १६ ॥ तेजा गा  
वत चंग रंगसें । ग्यान ध्यानसें खना खना ॥ हाथ जोड कर अरजी कर  
ता । पारसनाथजी तुंही बना ॥ बना काम तेरे हे साहेब । सुखसें नहि  
कहणें आता ॥ शिव रमणीकुं बरी हे जिनजी । जविजनकुं सुखके दाता ॥ १७ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नेमनाथजीकी लावणी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नेमनाथ मोरी अरज सुनीजै । मैं हुं दाशी चरनोकी । तोरन  
आइ फेर मत जाउ । तुमकुं सोगन यादवकी ॥ नेम० ॥ १ ॥ जान लेइ  
तुम व्याहन आए । लारे सेना माधवकी ॥ उप्पन कोरु यादव मिल  
आये । ए अवसर नहीं फिरनेकी ॥ नेम० ॥ २ ॥ रथ फेरी गिरिवरकुं मि  
धाये । हमकुं ठांकी नव प्रवकी । मेरे सामरे श्याम मजुने । मैं इहां नहीं  
अव रेनेकी ॥ नेम० ॥ ३ ॥ सुण जिनजी मैं तोकुं कतं हुं । देखुं सोजा  
गिरिवरकी । मात पिता बंधव मव ठंडी । जाथुं संगें यादवकी ॥ नेम० ॥  
॥ ४ ॥ हाथ जोरके वीनवे राहुज । बात सुनो पियु मुऊ घरकी । हमकुं  
ठोड चले निरधारी । अब हे प्रीतम सरणेकी ॥ नेम० ॥ ५ ॥ नेम कहे  
तुम सुनो हो राहुज । विषया रस है विष सारिखी । ये संसार अमार निरंतर ।

कर करनी ए तरनैकी ॥ नेम० ॥ ६ ॥ पियुर्जी पामें संयम लीनो । जि  
नमें कारज शरनैकी ॥ तपस्या करनैं उत्तम कीनी । ए अब पार ऊतरनैकी  
नेम० ॥ ७ ॥ पियुर्जी पहेंजां राखल नारी । पोहती सेज परमपदकी ॥  
केवल पामी नेम मियाण । येही शोभाहे जिनकी ॥ नेम० ॥ ८ ॥ चतुर  
कुशल ये कही लावनी । जिनसें काया ऊधरनैकी । अरिहंत ध्यान धरे  
दिलमांहे । फिर फेर नहिं फिरनैकी ॥ नेम० ॥ ९ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिनदाशजी कृत १० धन लावण्यां ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अरे तुम जपो मंत्र नवकार । सफल करले अपनो अवतार ।  
ध्यान तुम मनमें धरो नर नार । खाण दुःखको ए हे संसार । करो प्रभु  
न्याल अजी जिनदाश । रखो प्रभु सुख चरणोंके पाश ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मरक जा कुमति नार काली । तेरी संगतमें गई लाली ॥  
सोवत ममताकी में टाली । आतमा तपमें नहिं चाली ॥ अनंत अब वात  
गया खाली । वेदना निगोदकी जाली ॥ अमरपद जिनदाश मांगे । सदा  
यद प्रभुजीके लागे ॥ २ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शीश नित नसुं नानिनंदन । चरण पर चढ़े केशर चंदन ।  
कहत सब इंद्रादिक बंदन । कहत हे कर्मोका फंदन । साथी तैं शिवपुर  
को माधन । मरे जीवनकुं सुख कंदन । जिनंद गुण जिनदाश गावे ।  
सीस चरणोंसें नमावे ॥ ३ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ बोलत हैया मेरा हमकर । चढावुं चंदन चुवा बसकर । पैठा  
में धर्मोंमें धसकर । पाप दल दूर गया खसकर । चेतन हुवा खमा कमर  
कसकर । हटाया कर्मोका लसकर । श्री जिनराज उद्गाज खामा । शर  
ण जिनदाश जीया वासा ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ समस्त मन भैरा मनवाला । कुठें नहिं कोई हठकावाला ।  
बन्या नेरे हृदयें कुगुरु कावा । दिया नैं सुगतिहुं नावा । फेरती ममता  
की माला । बाजती जगबन पर चाला । दयामें दे दिया नावा । देखो  
जिनदासका चाला ॥ ५ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥



॥ ❀ ॥ कीया में गणधर प्रेमपती । मुझे वरदायक हे सरसती । करी  
निर्मल निग्रंथ मती । पृष्ठ पर खड़े जागता जती । मुझे बलवंत ऋई सो  
ल सती । मिटी मेरी दुर्गतकी सब गती । ऐसा वन जिनदाश गावे । अ  
चल पद नक्तिसें पावे ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ( ❀ ॥

॥ ❀ ॥ विकट वट दुर्गतका चारी । नीर ज्यां चरती कुमति नारी ।  
वरगी उन नैनोकी महारी । रुब्या केड़ कामी संसारी । इनोकी हो रही  
खुआरी । जीत्या कोइ सत्य धर्मधारी । प्रनु तुम परमास्थ पाया । शरण  
अब जिनदाश आया ॥ ७ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चेत नर निगोदका वासी । कराई जगमें तें हांसी । कुमतिकी  
पनी गले फांसी । सुमतिसुं रखी हे उदासी । कुमतिकी बसी सेज खासी ।  
मान रह्यो ममताकुं मासी । हियो खोल अरिहंतकों परखो । करो जिनदा  
श आप सरखो ॥ ८ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अफल नर तेरी जिंदगानी । शीख सुत्रोंकी नहिं मानी ॥  
कीया नहिं गुरु निग्रंथ ग्यानी । कानसें लगी कुमति रानी । जगतमें उतर  
गया पानी । गति तेरी दुर्गतिकी ठानी । सेवक तोरा जिनदाश बाजे ।  
सुधारोगे तुमही काजें ॥ ९ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सफल नर तेरी जिंदगानी । शीख सूत्रोंकी तें मानी । कि  
या निज गुरु निग्रंथग्यानी । कानसें लगी सुमति रानी । जगतमें अधिक  
चढ्यो पानी । गति तेरी सुर्गतिकी ठानी । मेवक तेरा जिनदाश बाजे ।  
सुधारोगे तुमहि काजें १० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चल चेतन अब उठ कर अपने । जिन मंदिर जइये । कीसी  
की चूंकी ना कहीयेंरे । कीसीकी चूंकी ना कहीयें ॥ चल ० ॥ ( ए आंक  
णी ) । चरन जिनवरजी का जेदो । चर ० ॥ अबजब संचित पाप करम स  
व । तन मनका मेदो । सुकृत काजें । महाराज । सुकृत ० ॥ जिनवरका शु  
ण भज लीजें । समकित अमृत रस पीजें । ज्ञान जिननक्तिको लहीयेंरे ॥  
ज्ञान ० ॥ चल ० ॥ १ ॥ करो मत मुन्वसें बडाई ॥ करो ० ॥ नजनामम तन म

नकी सुमतिमें घर रेनां जाई । रीतमें बोलो । मेरी जान । रीत० । आत्म स  
मतामें तोलो । मन जरम पारका खोजो । मौन कर तन मनमें रहियें रे ॥  
मौन० । चल० ॥ २ ॥ जोवन दिन चार तणो संगीरे ॥ जोवन० ॥ अं  
त ममय चेतन छु चाले । काया पनी नंगी । प्रीत सब तूटी । मेरी जा  
न ॥ प्रीत० ॥ आऊखाकी खरची खूटी । चेतनसें काया छूटी । सुख दुःख  
आप किया सहियें रे । सुख० ॥ चल० ॥ ३ ॥ जगतसें रहता ऊदा  
सी रे । जग० । परलया में जिनराज हरो । मेरी दुर्गतकी फासी । तजो  
सब धंदा । मेरी जान । तजो० । जिनवर सुख पुनम चंदा । जिनदास तुमा  
रा बंदा । मेरे एक जिन दर्शन चाहियें रे ॥ मेरे० ॥ चल० ॥ ४ ॥ १ ॥

॥ ॐ ॥ पुनः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ तुम जजो जिनेश्वर देव । सुगति पद पाईरे ॥ सुगति० ॥ अब  
अचल अखंति ज्योत । मदा सुखदाईरे ( ए आंकणी ) में रूखो चोराशी  
मांहे नृल्योमें जरम । नृल्यो० ॥ महारे उदय अनंता दुःख । बांध्यां जव  
कर्म ॥ में कदियक हुत रंक । फिरयो तजि शरम ॥ फिरयो० ॥ अह कदियक  
राजा जयो । गरथको गरम । जव गरव आण कर बोल्यो । पारका मर्म ।  
पार० । पाण निर्मल जगमें जैन । कीयो नहीं धर्म । अब मनस जनममें  
चेत घसी सुज आईरे । घसी० ॥ अब० ॥ १ ॥ में सुर नरका सुख वार ।  
अनंती पाया ॥ अनं० ॥ महारे शिव समताका सुख । हाथ नहिं आया  
में कुरुर ने कुदेव । जजा कर घ्यावा ॥ जजा० ॥ में उलज्यो अनादि  
अग्यान । विषयजोग जाया । में पड्यो लोचके फंद । जोन्तो माया ॥  
जोन्तो० ॥ पाण जग्यो अंत जव आय । काजने लाया । अब परहर सब  
धम्माद । धर्म कर जाईरे ॥ धर्म० ॥ अब० ॥ २ ॥ अब दुर्जन अवसर ल  
ही । तुं सुहन करे । तुं सुक० ॥ अब दान शीयल तप जाव । दीयामें  
धरे । तुं कर्मकी माना काट । पाप परिहरे ॥ पाप० ॥ अब बार बार क  
हुं नोहे । जगतमें नरे । तुं निर्मल नयणें देख । नरकसुं भरे ॥ नर० ॥  
तुं शीत सुगुरुकी मान । अग्यानी नरे । अब पर प्रीया कर जान वैन न  
जाईरे ॥ वैन० ॥ अब० ॥ ३ ॥ अब जिनवर मुक्त मन जायो मदा गुन गा

जुं ॥ सदा० ॥ अब इतनी किरपा करो । नरक नहीं जाऊं ॥ अब अब  
जब मांहीं देव । जिनेसरपातं जि० ॥ ये मन वच काया करी । चरण  
चित्त लाऊं । ए दया धरम हितकार । सदा में चाऊं ॥ सदा० ॥ ए चौरा  
शोके मांहे । फेर नहीं आऊं । युं अरज करे जिनदाश । कीरत ए  
गार्डरे ॥ कीरत० अब० ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुमति कुमति लावणी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हांरे तुं कुमति कलेसण नार । लगी क्युं केने ॥ लगी० ॥ च  
ल सरक खनी रहे दूर । तुजे कुण ठेने ( ए आंकणी ) हांरे तुं सुमतिको  
जरमायो । सुजे क्युं गोनी ॥ सुजे० ॥ मेरी सदा शाश्वती प्रीत । जिनकेमें  
तोनी ॥ तुज विन सुनी मेरी सेज । कहूं करजोनी ॥ कहूं० ॥ उठ चलो  
हमारे संग । सुखें रहो पहीनी । युं झर झर कुमति आंसु । आंखसें रेने ।  
आंख० ॥ चल० ॥ १ ॥ हांरे तेरी नरक निगोदकी सेज । सेती में रू  
ठ्यो सेति० ॥ पकज्यो साचो जिनराज । संग तेरो बुज्यो । तेरी मूरख  
मानें वात । हैयाको फूज्यो ॥ हैया० ॥ में सहेज हुवो हूं दूर तार तेरो  
तूज्यो । तुं कर दूरसें वात । आव मत नेने ॥ आ० ॥ चल० ॥ २ ॥ मेरी  
अनंतकालकी प्रीत । पलक नहीं पाजी ॥ पलक० ॥ सुमतिके लागों संग  
सुजे क्यो टाजी । तुं सुमतिको शिरदार । सुनावे गाजी ॥ सु० ॥ तेरी ह  
म दोतुं हे नार । गोरी उर काली । तुं हमकूं ठेले दूर । सुमतिकुं तेने ॥  
सुम० ॥ चल० ॥ ३ ॥ अब कुमतिको ललचायो । रती नहीं मगियो ।  
रती० ॥ सुन कर सूत्रकी शीख । साच होय लगियो । चेतन कुमतिके सेज ।  
दूरसूं मगियो ॥ दूर० ॥ जिनराज वचनको ग्यान । हेयेमें जगीयो । जिन  
दाश कुमति तुं वात । खोटी मत खेने ॥ खो० ॥ चल० ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तुम तजो जगनका ख्याल । इसका गानां ॥ इस० ॥ तेरी अ  
ल्प ऊमर खुद जाय । नरक उठ जानां । तें दिना चार जुग बीच । जिया  
हे वामा ॥ जिया० ॥ तेरे शिरपर बेठा काल । करेहे हामा । में बोतुं मा  
ची वात । ऊठ नहीं मासा ॥ ऊ० ॥ तूं सूता हे कुण निंद । किसी कर

आमा ॥ अब मेव देव जिनराज । खलकमें खामा ॥ खल० ॥ तेरा जो  
वन पतंगका संग । ऊठ सब आमा ॥ अब होये धरो मेरी सीख । समजरे  
दिवाना ॥ मम० ॥ तु० ॥ १ ॥ अब बुरी जर्जी मव वात । मोन कर रीजें  
मोन० ॥ ए सुख मीठा संगार । जेद नही दीजें ॥ कर वीतराग विशवाम ।  
हिये धर जीजें ॥ हिये० ॥ पाण नाच नारका संग । मांहे मन जीजें । अ  
व मान विमनको संग । प्रीत मन कीजे ॥ प्रीत० ॥ तोहे छुगति दे पहाँ  
चाय । तेरो तन ठीजे ॥ तुं सुख छुखका मिरदार । रंक नही राना ॥ रंक०  
तुम० ॥ २ ॥ तुं विसर गया जुग बीच । नाम जिनवरका ॥ नाम० ॥ पच  
रधा कुटुंबके काज । किया फंद बरका । ते दया धरम विन खोया जनम  
मव नरका ॥ जनम० ॥ ते पळे बांध्या पाप । कयाई मरखा ॥ अब लि  
या नही ते जाज । बखत पर करका ॥ बखत० ॥ तेरीवीति बात सब  
जाय । जनम ज्युं खरका ॥ अब सुणो सीख मृतरकी । सुजदरे शाना ॥  
सुज० ॥ तुम० ॥ ३ ॥ तेरी चरण मेज पर पोढ्या । आनंद दिल आया ॥  
आन० ॥ मेरी जमी नृप सब प्याम । सुधारम पाया । मेरे मिरपर तुम  
मिरदार । जिनमर गया ॥ जिने० ॥ में चालं चरनकी सेव । मफल कर  
काया । अब थो दोलत दर्शनकी । मेरे एहि माया ॥ मेरे० ॥ तुं अरज  
करे जिनदाश अलप गुण गाया । अब बुरा कुगुरु उपदेश । सुणो मत  
जाया ॥ धरे० ॥ तुम० ॥ ७ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ श्रीनेमिनाथ जावणी ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ दे गया दगा दिलदार । सुनो मेरी माई । सु० । जग रही नेम  
दर्शनकी । मन्म असनाई ( ए आंकाणा ) । अब अजब अर्जाजो नेम । ने  
रे मिर राजे ॥ मेरे० ॥ जादवकी देखी जान । जगत सब जाजे । एनो नेम  
नवल एकवाँद । जनोंवाँ जाजे । जनों० । सुर नर सब गावे गाव । गगन  
में गाजे । सब दीन दीन सब दुर्नायो । देवन जाई । दे० । ज० दे० ॥ १ ॥  
एव बढ्या नेम तौरनकुं आनंद दिल भर कर । आन० । मज प्राये सुरंगो  
माज । कीजोला पर कर । में पायो परमानंद हृदय दियो नर कर । नर  
र० ॥ ते गयो पति नेमनाथ । मेरो चित हर कर ॥ मखि सुख संपत प्रां

गनमें । आज चल आई ॥ आ० ल० ॥ दे० ॥ २ ॥ अब इण अवसरमें सुर  
त । श्यामकी लागी ॥ श्या० ॥ पशुअनकी सुनी पोकार । दया दिल  
जागी । जिन लही परवतकी वाट । तृष्णाकुं त्यागी ॥ तृष्णा० ॥ शिवर  
मणीके शिरविंद । वन्यो बैरागी । अब महेल चढी राजलकुं । खनी ठट  
काई ॥ खनी० ॥ ल० दे० ॥ ३ ॥ अब रतीके सरवरमें । टिके नही पानी ॥  
टिके० जिन गुण गाया नहीं जाय । अलप जिंदगानी । अब कठण  
जीव दुर्गतिको । वन्यो मै दानी ॥ व० ॥ जिनदाश करो अब पार । दया  
दिल आनी । अब शरण सतीके बैठ । लावनी गाई । ला० ल० ॥ दे० ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ श्री मगशी पार्श्वनाथकी लावणी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुलक विच मगशी पारशका । वाज रहा रंका । सुगतिगढ़  
जीत लीया वंकारे । सुग० सुलक० ( ए आंकणी ) कर्म दल वज्रकुं  
ह्वय कीयारे कर० । सुगति महेलमें केलि करे । अनुभव अमृत पीया ।  
शाशता जीया । महाराज । शा० । कल्याणक कारज कीया । अमरा पुर  
पदवी लीया । कमठ जशका कर गये फंका रे क० । सुल० ॥ १ ॥ प्रनु  
पारश प्रजले जाईरे । प्रनु० । जाव प्रमका मेट जोत । तेरी जगमें  
सवाई । टेककुं टालो । महाराज ॥ टेक० ॥ चंचल चित्तसें मत वालो ।  
गुमान गरवकुं गालो । गरवसें धूल मली लंका रे ॥ गर० ॥ सुलक० ॥  
॥ २ ॥ मेरे शुभ्र जाग्य उदय आया रे ॥ मेरे० ॥ इण पंचम आगमां हे  
प्रनु । मगशी पारश पाया । पापसें रुता । महाराज ॥ पाप० ॥ प्रवि जीव  
ध्यान दिल धरता । आवक नित समरण करता । मरण दुःख मिठ्यां मेरे  
अंगका रे ॥ मरण० ॥ सुलक० ॥ ३ ॥ महीमा मगशीकी अब जानी रे  
मही० ॥ लही उवरु मेरी आंख विलोया । परब विना पानी । में जि  
नवर जाच्या । महाराज ॥ में जिन० ॥ जिनदास जिनंदसें राच्या । मगशी  
पारश हे माचा । करो मत मनमें कोइ शंका रे ॥ करो० सुलक० ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ केशरीयानाथ लावणी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुणजो वातां राव सदा शिव । मत चढ जानां धूलैवा ॥  
गढ़पति ज्जका वमा अटंका । मत वेमौ तुम उन देवा । ( ए आंकणी )

सकतावन चंभावत बोले । हमहीं नोकर उनहींका । हींहुपति वाकूं हा  
थ जोमि । तीन नुवन शिर हे दीका ॥ सु० ॥ १ ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताज  
मचेही । सुर नर वाकूं ध्यावत हे । इंद्र चंद्र मुनि दर्शन आवे । मन  
की भोजां पावत हे ॥ सु० ॥ २ ॥ गया राज उनहींसें आवे । निर्धनिया  
कूं धन देवे । बांऊ खिलावे सुंदर जलका । मदा सुखी जेप्रनु सेवे ॥ सु०  
॥ ३ ॥ तारे जिहाज समुद्रयें जइनें । रोग निवारे जव जवका । नृप नृजं  
गम हरि करी नर्दायां । चोरन बंधन अरि दवका ॥ सु० ॥ ४ ॥ धों धों  
धों धों धोंसा बाजे । दशो दिशामें हे रुंका । जाठ तांतीया नहीं जलाइ ।  
मन बतलावो गढ वंका ॥ सु० ॥ ५ ॥ रानार्जाके ऊमरावकी । मानत  
नांहीं ये वार्ता । थारा किया थैहीज पावो । में नहीं आवुं थां मायां ॥ सु०  
॥ ६ ॥ सुंउ मरोडे चढे अग्निमानें । जेहर जरया हे निजरुंमे । शयनदेव  
हे साहिव रावा । देख तमासा फजरुंमें ॥ सु० ॥ ७ ॥ मयाराम सुत जणे  
मृजचंद । बडे सितांवर तुम देवा । फोज विस्तरगइ वर धर घोडा । ल  
ज्जारावो तुम देवा सु० ॥ ८ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ वैराग्य जावणी लिख्यते ॥ ॥

॥ ॥ जव तन दोस्ती हे इह मस्ती । काया मंगलकी । सासो स्वा  
स ममरले साहिव । आठ घटे दिलकी ॥ १ ॥ ( खबर नहीं हे जुगमें प  
लकी । सुरत करणा हो मोकरने । कण जाणें कलकी ) ( सु० ) तारा  
मंगल गवि चंद्रमा । सबही चलाचलकी । दिवस च्यारका चमत्कार हे ।  
बीजलियां नलकी ॥ ( सु० ) ॥ २ ॥ यो जग हे सुपनें की माया । उम  
चंद जलकी । विनम जावतां बेगन लागे । पुनियां जाय खलकी ॥ ( सु० )  
॥ ३ ॥ हेमाया देहमें जव लग । लुंमहि मङ्गल की । हेमा जंम चढ्या  
जव देही । भिठिया जंगलकी ॥ ( सु० ) ॥ ४ ॥ मन भावन तन चंचल हस्ती  
मस्ती हे बलकी । मदगुरु अंकुश दीया आनके । यानां जई नलकी ॥ ( सु० )  
॥ ५ ॥ भात पिता सुत बंधव जाई । सब जन मृजलकी । काया माया म  
वे कलकी । पुनरे कव की ॥ ( सु० ) ॥ ६ ॥ गुठ कयट कर बाबा जो  
मी । कद पानां नलकी । बांऊकी गांठ बंधी शिर तरे । केमें हांय नलकी



( ख० ) ॥ ७ ॥ देवधरम माहिबको समरण । ऐ वानां थलकी । राग द्वेप  
ऊपजे नहीं जिनकुं । वीनती अखेमलकी ॥ ( ख० ) ॥ ८ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अरज हमारी सुणो दीनपति । कौन जांति तिरणां । हम दु  
खी फिरन संसार चतुर गति । सो तुमसैं निरना ॥ ( अ० ) ॥ १ ॥ घोर  
घोर नरक कै भीतर । नाना दुख जरना । मारन तारन ठेदन जेदन । और  
देह धरनां ॥ ( अ० ) ॥ २ ॥ कबहुक तिरयंच योनि पायकै । गले पास  
परना । कृधा तृषा अरु शीत नृणाता । मार मारकरना ॥ ( अ० ) ॥ ३ ॥  
देव विनूति पायकै सुंदर । देख देख जुरना । जब माला सुर जावण लागी ।  
सोच किये मरना ॥ ( अ० ) ॥ ४ ॥ मनुषा जनम पायकै नद्वयो । कहूं  
नांही थिरनां । साहिब तुम सरणागत राखो । जनम मरण हरनां ॥ ( अ० )  
॥ ५ ॥ इति जावणी सं० ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मुक्ति जाणेंकी फिगरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) तीर्थकर महावीरनैं । कौशल गणधर साज । कानून  
प्रतुप्या है दया । सब जीवन हित काज ॥ १ ॥ दान शील तप जावना ।  
अशल खुजासा सार । जिणपुरपां धारण किया । पोहचा सुगति मजार  
॥ २ ॥ चवदै सहस साधु हुवा । आर्या उत्तीम हजार । लाखों श्रावक श्रा  
वका । पाया जब जल पार ॥ ३ ॥ ( चाल हीर रंजैका ख्यालकी ) ॥ ❀ ॥  
मेरी अदालत प्रनुजी कीजिये । जिन सामन नायक सुगती जाणेंकी फिगरी  
दीजिये ( जि० ढेर ) खुद चेतन मुदई बना है । आतुं करम मुदाजा । दावा र  
ना सुगति मारगका । धोखा देजाय टालाजी ( जि० ) ॥ १ ॥ नप कागद उष्टांम ।  
लिया । नलवाणां खिमा विचारी । सिझाय ध्यान मजसुंन बनाकर । अर  
जी आन गुजारी जी ( जि० ) ॥ २ ॥ में जाना था सुगति मारगमें । क  
रसुंनैं आवेरा । धोखा देकर राह नुलाया । लुंन लिया सब नेराजी ( जि० )  
॥ ३ ॥ बोहत खराब किया करसुंनैं । चौरागीकै मांही । दुख अर्नना पा  
या मेंनैं । अंत पार कबु नांही जी ( जि० ) ॥ ४ ॥ मंचे मिले चकोल  
कावनी । पंच महावत धारी । खूब देख मसोदा कीना । नवमें अजी का

री जी ( जि० ) ॥ ५ ॥ पांचे सुमती तीन गुणीए । आवुं गवा बुलावो ।  
 शीतल अगेसर वसा चौथरी । लुप्तकुं पृष्ठ मंगावोजी ( जि० ) ॥ ६ ॥ अरजी  
 गुजरी चेतन तेरी । हुवा सफीना जागी । हाजर आवो बुवाव लिखा  
 वो । जावो मावृती मारीजी ( जि० ) ॥ ७ ॥ आवुं सुदाजे हाजर आए ।  
 मोह सुगव्यार बुलाये । च्यार कषायर आठे मदकुं । माथ गवाई में जाए  
 जी ( जि० ) ॥ ८ ॥ ( टेर सुदाजेकी ) ॥ जिनसासन नावक । अठा दा  
 वा हे चेतनजीवका । ( जि० ) हमनें नहीं जलाया डमकुं । ए हमरे घर  
 आया । करजा लेकर हमनें खाया । ऐसा फरेव मचायार्जी ( जि० ) ॥ ९ ॥  
 धिपयत्रोग में गभिया चेतन । बाटा नफा न जाना । करजदार जब लारे  
 जारा । तब जागा पिस्तानार्जी ( जि० झू० ) ॥ १० ॥ हाजर खरे गवाह  
 हमारे । पृष्ठिये हाजनु सारा । बिनां, लिवां करजा चेतनमें । केसें करे  
 किनागजी ( जि० झू० ) ॥ ११ ॥ ( टेर ) ॥ चेतन कहे सतावी मांही ।  
 सुन शाशन भिगदार । डमानदार हे गवा हमारे । जाणें सब संसार जी ।  
 ( जि० मे० ) ॥ १२ ॥ में चेतन अनाथ प्रनृजी । करम फरेवी जारी । जीव  
 अन्ते गह चन्नकुं । लूट चौगरीमें मार जी ( जि० ) ॥ १३ ॥ बंदे ०  
 पंगित डण्डुटे । ऐसा दम बतलाया । धरम कला छे पाप कराया । ऐसा  
 करज चलायार्जी ( जि० मे० ) हिमा मांहीं धरम बलाया । तपस्या मेनी  
 भिगाया । इंद्रिय सुखमें मगन करीनें । अठा जाज फैलाया जी ( जि०  
 मे० ) ॥ १४ ॥ ऐसा करी इनसाफ प्रनृजी । अर्पात होन न पावे । हक  
 करी चेतनकी होवे । जनम मरण भिद जावेजी ( जि० ) । ग्यान दर्शन  
 करी सुनकी । दोनकुं मनजाया । चेतनकी भिगरी करदीनी । करनूका  
 करज बलाया जी ( जि० ) ॥ १५ ॥ अनज करज जोया करीका । चेत  
 नमेनी बिताया । सुध संजम जद करी जमानत । आगेका सुध मिटाया  
 जी ( जि० ) ॥ १६ ॥ आधर जोर मंचरुं धागे । तपस्यामें चितलायो ।  
 जलदी करज प्रदाकर चेतन । गोया नृगतिकों जावो जी ( जि० मे० )  
 ॥ १७ ॥ सुध संजम जदकरो जमानत । चेतन दिगरी धाई । फागुणसुद  
 दशमी दिन मंगत । मन उगरीमें अठाई जी ( जि० मे० ) ॥ १८ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ अनुभव पद निगरी लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ साहब अदालतपर बैठ । श्रीपारश प्रवीण जैन उत्तम चला  
एहे । शील है सिरदार और दान है दरोगा जाके दयारूपी वारण सत्त  
श्रावण पर आए है । ग्यान है चपरासी ताको लग्यो है मोहोसल ताकी  
मालजामनीमें श्री जिनवरजी लिखाये है । रोसकी रसुम और कमीसन लगे  
कर्मनकुं मोहकों म्याद इस तार लटकाए है ॥ १ ॥ बैठके लिखेगा जब जी  
वकी जुबानवंदी तवके कुछ स्वाल जबाब सत्तगुरनें बताए है । बोरु का  
रसाजी पायो पकड़यो अरिहंतजीको अनुभवपद पायवैकी निगरी करा  
य लाए है । अब तो दरकास मैंनें करी है तुमारे पास साहब जिनराज  
अरज मेरी सुणलीजीयै ॥ अष्टकर्म आवुं जाम करत है कारसाजी साह  
ब बुलाय इसकुं पिसे मान कीजीयै ॥ २ ॥ मैं तो हुं गरीब मेरी करेगा  
नुकीली कोन । पारश प्रवीण मेरी मिसल आज कीजीयै । हांरुं तो हाजर  
हब्बर हीमें रखां करुं । जीतूं तो लगाय जुगल चरनमें लीजीयै । अबतो  
फरीयाद नाथ करी है तुमारेपास मेरी दाद दीजियै तो रावरी बन्वाई है ।  
मुनसबकी बात और मामलत अदालतकी अबतोमें अफिलमान अरजी  
लगाई है । झूठ मूठ कारसाजी करत है पांच तीन साचो मत जैन जा  
की जैन अधिकाई है । मेरे ही पांच लोक मोहीकों झूठावत है ॥ जातेमें  
गवाही श्री जिनराजकी लिखाई है । बोरु कारसाजी पायो पकड़यो अ  
रिहंत जीको अनुभव पद पायवैकी निगरी कराय लाए है ॥ ❀ ॥

इति अनुभवपद पाणेंकी निगरी संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ उपदेशरूप लावणी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुकृतकी बात तेरे हाथ । स्तीनां रहीरे ॥ स्तीनां० ॥ शुदग  
लमें मान्यो सुख । कल्पना कहीरे ॥ सुकृत० ॥ जुग मांहे जैन  
निज सार । संघाते आवे ॥ संघा० ॥ इसकुं तज कर कयुं वेठो । विषय  
गुण गावे । अमृतकुं अलगी ढोल । विसन विपखावे ॥ विसन० ॥ शुग  
तिको मारग भेट । उवटमें जावे । थारी तुह जिंदगानी मांहे । विकल बुधि  
जईरे ॥ विकल० ॥ शुदगल० ॥ १ ॥ थारे धन दोलत जंमार जग्या हे

मोती ॥ जरया० ॥ शत्रु मज्जन मव वने । जगत होय गोती । कोई म  
मले नेल फुलेल । धोवे कोई धोती ॥ धोवे० ॥ सन्मुख उठ आवे अव  
ला । तेरो मुख जोती । ऐसी संपत एक त्रिमांहे । मख हव जड़ेरे ॥  
मख० ॥ पुद्गल० ॥ २ ॥ ते खट्खट खाया खूब लजाना खोया ॥ ख० ॥  
निशिदिन सुखनर सुंदारकी । मेजमें मोया । मजिया मोल माणगार । नारि  
में मोद्या ॥ नार० ॥ ते अंतर घटका मेल । स्त्री नहीं धोया । या नरक  
निगोदकी वाट । पकर कर लहारे ॥ पकर० ॥ पुद्ग० ॥ ३ ॥ मन मा  
तो घाठ मदमांहे । गरवमें बोले ॥ गर० ॥ में मुख संपतको नाथ । मेरी  
कुण तोले । पुर्वज करना पोकार । पजक नहीं खोले ॥ पज० ॥ आकर  
होय गद्या दशुर । चमर शिर होले । अब अवसर आयो हाथ । चेत तुं  
महारे ॥ चेत० ॥ पुद्गल० ॥ ४ ॥ कायामें कीयो लाम । बनाई चंगी ॥  
बना० ॥ पल जर पर बाख्यो पुन्य । तणो तिहा चंगी । पकरी पर जव  
की वाट होय कुण संगी ॥ होय० ॥ तेरो हंस गयो आकाश । काया  
परी नंगी । जिनदास कहे कर्मोसुं । जोर तेरो नहारे ॥ जोर० ॥ पुद्  
गल में मान्यो० ॥ ५ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ पुनः ॥ ॥ ॥

॥ ॥ तुम तजकर राजलनार तज्या सब वरे ॥ तज्या० ॥ में नसुं  
नेमके पाय । गया गिरियरे । में श्रीन पीयाकी कर कर पड़े जागी ॥ पड़े० ॥  
तुम त्याग चले वन तंरु । हुवे वेगारी । अब राजल मखी सती । नावमें  
त्यागी ॥ नाव० ॥ थारे अंतर घटमें ज्योत । ग्यानकी जागी । तुं रोती राजल  
नार नयण जर जरे ॥ नव० ॥ में नसुं ॥ १ ॥ में अज कर कर जोर ।  
बरो मन पत्तन ॥ कगे० ॥ मेरे शिपर तुम शिखार । देजे मोहे दश  
न । अवस्तुप सर्पायनका देस जग्यो मन तरगन ॥ जग्यो० ॥ मेरे ॥ आयो  
नयणमें नार । जग्यो नित्य वग्गन । मेरे नेम मिलनकी आश । मित्र  
किम करे ॥ मित्र० ॥ में० ॥ २ ॥ में नहिं कोनी नक्यार । पले क्युं  
रुडे ॥ बले० ॥ मेरे कर्म रुहुव परिवार । चार दिश रुटे । में जो रुट  
वले मांहे । जोवन मव रुटे ॥ जो० ॥ में चहुं दियाक माथ । श्रीत

क्युं तूटे । मेरे नेम विना नहि और । जगतमें वरे ॥ जग० ॥ में० ॥ ३ ॥  
 तुम तारी राज्ञ नार । सुगतिमें भेली ॥ सुग० ॥ पीछे नेम गये निरवाण  
 करम सब ठेली । मे नित जगे परजात । नमुं पद पहजी ॥ न० ॥ मेरे  
 नेम विना नहि और । जगतमें बेली । युं अरज करे जिनदाश । सु  
 णो जिनवररे ॥ सुणो० ॥ में० ॥ ४ ॥ २१ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आप समझका वर नहीं पाया । दूजैकुं क्या समझावे ॥  
 वंका फिरे जिनदाश-जगतमें । हीयो हाथमें नहीं आवे ( ए आंकणी )  
 दरस सवाद चाहनकी चित्तमें । चानक अधिकी आय जगे । इंद्रिका पर  
 वसमे पडियो । ग्यानकला कहो कैसें जगे । तृणानें जग जूट लीयो हे ।  
 कपट करी परधनकुं ठगे । खाय खाय लोही मांस बधार्यो । प्राणी किस  
 विध चले पगे । विषय विपतकी करे चूंथणी । चरचासुं चित्त नहीं लावे ॥ वं०  
 आ० ॥ १ ॥ अपने अवगुनकुं नहीं देखे । दूजाका अवगुण चाखे । हिंसाही  
 में हूओ हज्जरी । दया दूर दिलसें नाखे ॥ गुणवंतका गुण लोप मेरो मन ।  
 अवगुणके रसकुं चाखे ॥ तिनही प्रणमे रागधरा में । मरणें जिनवर किम  
 राखे ॥ ठग फांसीगर चोर अन्याई । धन मीसें इनकुं ध्यावे ॥ वं० आ० ॥ २ ॥  
 अवगुणकी मेरी खान आतमा । अजान होयसो मोहेपूजे । नहीं गाममें  
 रूख अंवको । एरुं अंव सरिखो सूजे । पारख नहीं हे हीये ग्यानकी ।  
 गुण अवगुनकुं कुण बूजे । गामर देख कहे भुज वरमें । कामधेनु इतनी  
 दूजे ॥ ऐसी मेरी अविनीत आतमा । अवगुन किम गाया जावे ॥ वं० आ०  
 ॥ ३ ॥ क्रोध मान मायामें मातो । लोभ मांहें लपक्यो रहतो । गरथ गु  
 मारना गमको गरजी । पीरु पारकी नहीं सैतो । जगति नहीं गुरु देव धर  
 मकी । कठण वचन मुखसें केतो । अंतर आंख न खुले हीयाकी । पृथ  
 परम पदकुं देतो ॥ स्वांग सजी जिनदाश जैनको । मात्र मुजकको  
 ठग खावे ॥ वंको० ॥ आप० ॥ ४ ॥ २९ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुगुरुकी जावणी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नमुं नमुं में गुरु निग्रंथकुं । वजिन मुद्राधारी हे । पुजत

ऊपर प्रेम न करता । मनकी ममता मारी है ॥ न० ॥ १ ॥ गरब गालकर  
 गुपति गोपवे । गन नियंत्रका न्यारी है । कनक कामिनीके नहिं छोरी ।  
 वेपूरा ब्रह्मचारी है ॥ न० ॥ २ ॥ उकायाके जीव अनाथी । उनके वे हित  
 कारी है । करम काटकर केवल पावे । ज्ञान गरब गुण जारी है ॥ न०  
 ॥ ३ ॥ शुद्ध श्रद्धामें सुमति मेवी । निज आत्मकुं नारी है । जिनवरकुं  
 जिनदाश वीनवे । उनके चरण बलिहारी है ॥ न० ॥ ४ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ कुगुरुकी जावणी ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ तहुं तहुं में उन कुगुरुकुं । कनक कामिनी धारी है । ज्ञान  
 ध्यानकी वान न जानें । अष्ट करममें जारी है ॥ त० ॥ १ ॥ कर्मा कपा  
 लें वनृत जेपेरी । शिरपर जटा बधारी है । कान फातकर मुद्रा पहेरता  
 उमके वरमें नारी है ॥ त० ॥ २ ॥ जोग जेई कर जीव विणामे । वे मद्य  
 मांश आहारी है । कृपा पंथी जगनकुं करता । सुखमें कहे आचारी है ॥  
 त० ॥ ३ ॥ कहूं ओगुण कुगुरुका कब लग । नाथ नहीं संसारी है ।  
 आप सुवे औरनकुं सुवावे । दुर्गंतिका अधिकारी है ॥ त० ॥ ४ ॥ समकि  
 त श्रद्धा जैन धर्मकी । नहिं कुगुरुको धारी है । जिनवरकुं जिनदाश वी  
 नवे । कुगुरु मंग सुवारी है ॥ त० ॥ ५ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ श्री नवपद जावणी ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ जगनमें नव पद जयकारी । पूजतां रोग दले जारी ( ए आ  
 काणी ) पथम पद तार्य पती राजे । दोष अष्टादशकुं त्वाजे । आठ मा  
 ताहारज राजे । जगन मनु गुण चारे राजे ॥ दोहा ॥ अष्ट करम दल  
 जीनके । मकल मित्र न थाय । मित्र अनेत नजी बीजे पद । एक मम  
 य शिव जाय । प्रगट ज्यो निज स्वरूप जारी ॥ जगन० ॥ १ ॥ सूरि प  
 दमें गौतम बैसी । उगा चंद्र सूरज जैसी । उगाखों राजा परदेशी ।  
 एक जवमांठे शिव जैसी ॥ दोहा ॥ चौथे पद पाठक ननु । श्रुत धारी न  
 बजाय । मंत्र साहू पंचम पद । धन धनो मुनिगय । बलाखों वीर मनु  
 जारी ॥ जगन० ॥ २ ॥ ॥ द्वय ज्यो श्रद्धा पावे । नम नैवगादिक पा  
 वे । विना ए ज्ञान नहिं किरिया । जैन दर्शनमें मंत्र नरिया ॥ दोहा ॥



ज्ञान पदारथ सातमें । पदमें आतमराम । रमतां रम्य अध्यातमें । निज  
 पद साधे काम । देखता वस्तु जगत सारी ॥ जगत० ॥ ४ ॥ जोगकी  
 महिमा बहु जाणी । चक्रधर ठोमी सब राणी । यती दश धरम करी सोहे ।  
 सुनि आवक सब मन मोहे ॥ दोहा ॥ कर्म निकाचित कापवा । तपकुमार  
 करव्याय । कृमायुत नवसुं पद धरे । कर्म मूल कट जाय । जजो तुम नवपद  
 सुखकारी ॥ पू० ज० ॥ ४ ॥ श्री सिद्धचक्र जजो जाई । अचामल तप वि  
 धिसें थाई । पाप त्रिहुं जोगें परिहरजो । जाव श्रीपाल परें करजो ॥ दोहा ॥  
 संवत लगणीस सत्तरा समें । जेपुर श्री जिन पाश । चईत्र धवल पृनम दिनें  
 सकल फली मुज आश । बाल कहे नव पद ठवी प्यारी ॥ जगत० ॥ ५ ॥ ६ ॥

॥ ❀ ॥ श्री केशरीयानाथ जावणी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) आदिकरन आदिम जगत । आदि जिणंद जिनराज ॥

धूलेवनाथ जाचो धणी । वरनुं श्री महाराज ॥ १ ॥

॥ ❀ ॥ कास्यप गोत्र ईक्षाग वंशमें । मरुदेवा जननी जायो । नाजि  
 नरेसर वंश उजालन । आदि धर्म जश प्रगटायो ॥ १ ॥ चौसठ सुरपति  
 देव देवी मिल । मंदिर गिरपे न्हवरायो । इसो क्षत्र निधि प्रगट कल्प  
 तरु । सुरनर मुनिजन नित्य ध्यायो ॥ २ ॥ खरुग देशमें नगर धूलेवें ।  
 जास दमामा घुरता हें । जाकी महिमा अपरंपारा । कविजन कीर्ति क  
 रता हे ॥ ३ ॥ आदौ मूरत काल असंख्यकी । पूजी सुरगण असुरिंदा ।  
 सुरपति नरपति वंदित पद जुग । बलि पूजित सरज चंदा ॥ ४ ॥ लाख  
 अग्यार हजार पंचाशी । वरश पांचशे पंचासा । इतनें वरश पर जंका  
 गढमें । पूजित रावण गुनरासा ॥ ५ ॥ रामचंद्र शीता अरु लज्जमन । ए  
 मूरत पूजन ल्याए । नयरी अयोध्या जाते अधविच । नयर उजेणी ठह  
 राए ॥ ६ ॥ प्रजापाल नरपतिकी तनया । सुंदरि मयणां धरमनकी । बाप  
 कर्म अरु आप कर्मकी । जई लसाई मरमनकी ॥ ७ ॥ आप कर्मके  
 ऊपर नृपनें । कुष्टी वरपें परणाई । मयणां चिनें कांई नवाई । कर्म ल  
 खी सो बनि आई ॥ ८ ॥ इकदिन जिन पूजन मुख्यंदन । आई श्री जिन  
 मंदिगें । वंदन पूजन करके इकचिन । ध्यान धरे मन कंदरपें ॥ ९ ॥ इति ॥

## ॥ ❀ ॥ मोतिदाम वंद ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तुंदी अग्निंत तुंदी जगवंत । तुंदी जिनगंज तुंदी जगमंत ।  
तुंदी जगनाथ तुंदी प्रतिपाज । तुंदी मनमोहन तुंदी दयाज ॥ १ ॥ तुंदी  
जवनेजन आव सूर्य । तुंदी आरि गंजन रंजन नृप । तुंदी अविनामी तुं  
ंदी बीतराग । तुंदी महाराज तुंदी बरुनाग ॥ २ ॥ तुंदी गुणधाम तुंदी विस  
राम । तुंदी नवनिधि तुंदी बरुनाम । तुंदी अवनाश तुंदी अविनाश । तुंदी  
मतिवंत तुंदी मतिवास ॥ ३ ॥ तुंदी गुन केवल स्य अनंत । तुंदी जगत्पार  
नाग्न नंत । तुंदी जगध्येय तुंदी जगध्यान । तुंदी चिद्रूप तुंदी जग आ  
न ॥ ४ ॥ तुंदी मम तात तुंदी मम मात । तुंदी मम भ्रात तुंदी मम गत  
तुंदी सरणागत राखण द्वार । तुंदी दुख दोहग टाळणद्वार ॥ ५ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ जावणीकी चालमें ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ करुं अरज एक तोपें जिनपति । कंत कुष्टमें नहीं डरते ॥ पूरव  
करमके लिखित लेख जे । किसके टारे नहीं दरे ॥ १ ॥ पण तुज शान्त ज  
गत हेलना । जगत डेंढरा वाजत हे । आप कर्म अरु जैन धर्मके । फल पाईये  
यो लाजत हे ॥ २ ॥ यो दुख मोमें नहीं जात नहीं । आदिनाथ जग रखपा  
ला । कल्या करके रोग निवारत । गुन कीजें जग प्रतिपाजा ॥ ३ ॥ यहु मम  
अ होय फल बीजोरो । हाथ नाणो फल तव दीनो । मयणा तव उज्जाम  
जई । मन चिते मव कागज मोनो ॥ ४ ॥ तोदिन नमण नीर तनु फरमें  
गुष्ट गेन सब नागत हे । कामदेव अरु अमर समोवन । नृप श्रीपाज  
मोटावन हे ॥ ५ ॥ या कीमत प्रनु विहागी नृनज । प्रगट प्रखल हे जय  
मेने । आसु चैत्र माममें महिमा । देश देशमें प्रनु नेरो ॥ ६ ॥ फिर वागद  
देश समोद नगमें । जगपर प्रनु कल्या कीनी । कितने करुण जग मोनो  
महिमा । अपिचल नृनज दिन दीनी ॥ ७ ॥ दिनेयक दुष्कान जयो तव ।  
पादशाह जगता पायो । ह्वन नृन पथ्यरको नृन । जेन सुखमें उलगयो  
॥ ८ ॥ बहुत दिनां जग कीर्ता जगद । थाको यो वाचा बोले । देव हिंदको  
बनो जागती । तुं पांउन हि हि नोले ॥ ९ ॥ सुनो बात काजी नृ  
खां तुम । एक बातने जांगेगा । नौ मायण प्रतिपाज कहाई । गोवधमें

ये नासैगा ॥ १० ॥ गोवध करन लगे जब निजरे । देख शके क्यों प्रति  
पाला । करन युद्धजब जये महाबल । शस्त्र जमो ऊरु विकराला ॥ ११ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) महा युद्ध करने लगे । घाव चोराशी अंग ॥ ❀ ॥

॥ करी मजोखा गाम्जनी । आये धुलेव सुरंग ॥ १ ॥

॥ ❀ ॥ लावणी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गाम धुलेवे वंश जालमें । गुप्त रहे हैं प्रनु धरती । गाय एक  
कोडी वनीयनकी । आई वांहां चरती ॥ १ ॥ सवे तिहां पयधारा  
शिरपर । सांज समें फिर नहीं दूजे । रीस करी तब गोपालन पर । गो  
पाल थरथर धूजे । दूजे दिन गो लारें आयो । जह्यो जेद कह्यो वनीयनपें ।  
शेठ आय जब नजरें देख्यो । चकित जयो हैं तन मन पें ॥ ३ ॥ मध्य  
रातमें सुपनो दीनो । रूपन नाथकी मूरत है । बाहिर निकासो करो लाप  
शी । जीतर मूरत पूरत है ॥ ४ ॥ नव दिनमें सब घाव मिलासी । मत  
काढे तुं नव दिनमें । कियो शेठनें हुकुम प्रमाणें । आये संव बहु ठ दिन  
में ॥ ५ ॥ कै उपवासी कै व्रतधारी । कै अखुआणे पाउंचले । कई लोक  
कुं छुःकर बाधा । कब प्रनुको दरसन मिले ॥ ६ ॥ युं सब लोकां दरस त  
रसकी । कहे लोक मूरत काढो । लाओ लाओ महाराजकी मूरत । संव  
सवे लीनो आसो ॥ ७ ॥ जवर दस्तसें दिवस सातमें । लापशी बाहिर  
तवकीने । अंस अंमजर ब्रण रहा ए । संव लोक दर्शन दीने ॥ ८ ॥ फिर  
सुपनेमें द्रव्य दिखायो । संवे मिल देवल कीनो । मध्य विराजे रूपन तख  
तपर । कलियुगमें यों जश लीनो ॥ ९ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) संवत अठार त्रेसठमें । जान सदा शिवराय ॥

॥ ❀ ॥ कियो धंगानो छुष्टनें । जाखुं वरन वनाय ॥ १ ॥

॥ ❀ ॥ मोतिदाम वंद ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सदाशिवराय चिते मन एह । लुंटे बहुयाम जमीपर जेह । जि  
खां पति नाथ धुलेव कहाय । जखो लग द्रव्य जंमार सुनाय ॥ १ ॥ जावां  
अब लुंटाण गाम धुलेव । अहं सब माज जई तत्र खेव । आयो निज फोज  
लेइ दजगाज । तोषां दीयसाय जीया बहु माज ॥ २ ॥ कंष्ट दीय जार जी

ए फीरंगाण । उंठां जर माथ जीये कोकवाण । तवां बहु लोक कहे महा  
राज । नही इह कारन कृत्य अकाज ॥ ३ ॥ ए तोवह जाजल देव कहाय ।  
रहे नहीं लाज तिहांरि कांय । तवां फिर बोले मदाशिव नृप । अहुं मव माज  
अवां चढी चूप ॥ ४ ॥ इसो कहि आवत पुष्ट कर । कीयो नजराणह  
नाथ हजर । रख्यो नहीं नाथ तवां नजराण । जयो मन चाफित मान गिलाण  
॥ ५ ॥ तवां मन चिंत जंमारी बुलाय । मीठे वच बोज मवे ललचाय । लई  
संग धाय सुकाम मजार । कियो नव कृच लई सब तार ॥ ६ ॥ करे तव गाम  
पुकार पुकार । जंमारी मवेय पुकार पुकार । करो अब बाहर नाथ दयाल ।  
गयो किहां आज मरीव निवाज । चढो अब बाहर राखण लाज ॥ ७ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ दूहा ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ उण मयें कोक शेठको । वहाण तारण काज । गये अधि  
ष्टायक नाथजी । जेहं गण वहां गाज ॥ १ ॥ सुणो अरज पृथ्वीनाथजी ।  
सहेर धूलेव मजार । कियो अकारज पुष्टन । शीघ्र चजो जन तार ॥ २ ॥  
आण वुस्त महाराजजी । कवा जन संचाल । दो घोले दोहुं चढे । जेहं  
अरु प्रतिपाल ॥ ३ ॥ जिह कोप आपें कियो । दश दिशि फोज हजार  
मार मार चौ तरफतें । जई लनाई त्वार ॥ ४ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ चुलंगप्रयात वंद ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ कुरु कुरु कुरु बहे कोक वाण । मणगां मणगां नीर तरकस्य  
वाण । धुवाके धनाके बहे नाज गोला । जिगा कंक्या जम्मग नवण  
गोला ॥ १ ॥ किनें जंगपें शतरा घाव लागे । किनें मारवें कंसने दूर  
लागे । किनें दंतपें निरण लेवें वगका । किनें धरथरें ग्राम होवें निराका  
॥ २ ॥ किनें खुला उजला प्रकारे । किनें दान होके खुदापें संचारे ।  
किनें नाथपें केशरां जन माने । किनें नाथहुं जागनी जांत जाने ॥ ३ ॥  
मदाशीवने घाव लग्यो प्यारे । एनी दाड जगधेन दोनुं महारे । बसो को  
प जानी मवे फोज चाली । हुड केशरी नाथरी जांत वाली ॥ ४ ॥ न  
दाशीवने जालही पटक जानी । मदापांचभे रुकसो नून दीनी । इमो  
नाथ धूलेवरी मई गाली । सदा केशरी नाथरी जांत वाली ॥ ५ ॥ ॐ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) या विध कलियुग जगजना । तारुया कै जिनराज ॥

दीप विजय कविराजकुं । महेर करो महाराज ॥ १ ॥

॥ ❀ ॥ तुंही नवनिध तुंही अरुसिध । तुंही मन वंछित वंछित रि  
तुंही सिरदार तुंही किरतार । तुंही सरणागत दीनदयाल ॥ १ ॥ तुंही क  
कुंज तुंही कामधेन । तुंही सुखदुःख तुंही ममसेन । तुंही दक्षणावर्त दाय  
देव । तुंही विसराम तुंही वरुसेव ॥ २ ॥ तुंही मम प्राण आधार जरूर । तु  
मम इच्छित दायक नूर । तुंही मम चूप तुंही पतशाह । तुंही मम रि  
नार अगाह ॥ ३ ॥ तुंही मम मंत्र तुंही मम यंत्र । तुंही मम सत्य तुंही मन  
त्र । तुंही गठनायक तुंही श्री पूज्य । तुंही मम पुज्य तुंही जग पूज्य ॥ ४

॥ ❀ ॥ लावणी चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नाथ धुलेवा कीरत सुनके । देश देश नृप आवत हे । केश  
गरकाव रहेंते । केशर नाथ कहावत हे ॥ १ ॥ सहेर परगणे देश देशा  
फिरे दुहाई नाथनकी । हिंदु सुसल वरु राणा हाजर । पूरे इच्छित स  
मनकी ॥ २ ॥ जलवट थलवट वाट घाटमें । रण रावल दुःख दूर हरे  
एकचित्त ध्यानें जे नित समरे । अखय खजाना अजर जरे ॥ ३ ॥ धिधिम  
धिधिमप धमप धमप मप । ताल पखावज राजतहें । गमगम दो गमगम  
गमगम । धोंधों नोवत बाजतहें ॥ ४ ॥ हिंदूपति पतशाह उदेषुर । प्रीर्मा  
हके राजनमें । एह लावणी खूब बनाई । सकल संघके सागनमें ॥ ५ ॥  
संवत अठार पचोत्तर वर्षे । फागुण सुदि तेरस दिवसौ । मंगलकेदिन दी  
विजयकुं । दरशन परसन दो उलसे ॥ ६ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀

॥ ❀ ॥ कलश उप्पय उंद ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ समवसरन जब शरन । तीन लोक कलिमल हरन । बु  
वरसत जल धरन । जरन पोष पावन करन । जुगल धर्म नीती हरन । स  
करम ओष धन जरन । मोह भव अरि दरन । सुकनु वरन शुभ चरन  
इंद्र चंद्र पद जुगल सेवन । जगद निरुद्ध तारन तरन । दीप विजय कवि  
ज बहादुर । श्यम नाथ अशरन शरन ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀

॥ ॐ ॥ ज्येष्ठ नाथ महाराज । सवे पुनःपुनः प्रजन । ज्येष्ठ नाथ  
महाराज । सवे नृप मनोजन । ज्येष्ठ नाथ प्रथ्विनाथ । समर्थो बाहर धार्य  
ज्येष्ठनाथ पृथ्विनाथ । मंगल नाम गवायें । दीप विजय कविराज बहादुर  
खलक सुलक हाजर रहे । कलि लुग जयो देवतुं । सुरसर सबकीस्त कहे ॥ २॥

॥ ॐ ॥ श्री नेमनाथकी जान वाणन जावणी ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ नेमकी जान बनी जारी । देखनकुं आवे नर नारी ( ए आंक  
णी ) अनंता घोटा ओर हाथी । मनखरी गिनती नहीं आती । ऊँ पर  
धजा जो पररानी । धमकमें धिखती थररानी ॥ दोहा ॥ समुद्र विजयका  
जाम्ना । नेम लुंका नाम । राजुजदेकुं आवे परणवा । उग्रमेन घर ठा  
म । प्रमन जई नगरी सब मारी । नेमकी जान बनी जारी ॥ १ ॥ क  
सुंवल बाधा अति जारी । काने कुंमल उविहे नारी । किलंगी कुरा सुख  
कारी । माज गजे मोतीयनकी डारी ॥ दोहा ॥ काने कुंमल उग्र मगे ।  
शोश मुगट उलकार । कानि जानुंकी कहे उग्रमा । शोचा अधिक अपार  
वाज राया बाजा टंकगारी ॥ नेम ॥ २ ॥ वृद्ध रही उनकी उहराई । व्या  
हमें आवे बड़े नाई । उरोसे गजुजदे आई । जानकुं देखी सुख पाई ॥  
दोहा ॥ उग्रमेनजी देखेंके । मनमें करे विचार । बहोन जीव करि पकड़ा ।  
बानो जग्यो अपार । कगी सब जोजनकी त्यारी ॥ नेम ॥ ३ ॥ नेमजी  
नोरण पर आवे । पशु जीव नवही कृपलाण । नेमजी वचन परमाये ।  
पशु जीव कायेंके जाये ॥ दोहा ॥ बाकी जोजन होवगी । जान वासते  
ण । गुरु वचन सुनी नेमजी । घर घर कांपे देह । जावनें चरगये गिर  
नारी ॥ नेम ॥ ४ ॥ पांतिहुं गजुजदे आई । हाथ जय पकड़्यो तिनमां  
हीं । कहां नृ जांच भंग जाई । और क कहें मुकताई ॥ दोहा ॥ मेर  
नोरण सेवरी । हांगवा नेम कुमार । और नृवनमें घर नही । कांटी करो  
विचार । दीहा जद गजुजने धारी ॥ नेम ॥ ५ ॥ मोह्यो मरही समरावे ।  
हिमें गजुजके नहीं आवे । जगत सब जहो दुखवावे । मेरमननेम कुमार जावे ।  
दोहा ॥ मोह्यो कंकण देवमा । मोह्यो नदसर हार । काजल हांकी पान लो  
धारे । त्याग्यो सब माला । मोह्यो नदही विजलाणी ॥ नेम ॥ ६ ॥



॥ ❀ ॥ (दूहा) या विध कलियुग जगजना । तारया के जिनराज ॥

दीप विजय कविराजकुं । महेर करो महाराज ॥ १ ॥

॥ ❀ ॥ तुंही नवनिध तुंही अमरसिध । तुंही मन वंछित वंछित रिध  
तुंही सिरदार तुंही किरतार । तुंही सरणागत दीनदयाल ॥ १ ॥ तुंही का  
कुंज तुंही कामधेन । तुंही सुखद तुंही ममसेन । तुंही दहणावर्त्त दायक  
देव । तुंही विसराम तुंही वरुसेव ॥ २ ॥ तुंही मम प्राण आधार जरूर । तुंही  
मम इच्छित दायक नूर । तुंही मम चूप तुंही पतशाह । तुंही मम रिध न  
नार अगाह ॥ ३ ॥ तुंही मम मंत्र तुंही मम यंत्र । तुंही मम सत्य तुंही मन त  
त्र । तुंही गवनायक तुंही श्री पूज्य । तुंही मम पुज्य तुंही जग पूज्य ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ लावणी चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नाथ धुलेवा कीरत सुनके । देश देश नृप आवत हे । केशर  
गरकाव रहेंते । केशर नाथ कहावत हे ॥ १ ॥ सहेर परगणे देश देशावा  
फिरे दुहाई नाथनकी । हिंदु मुसल वरु राणा हाजर । पूरे इच्छित सब  
मनकी ॥ २ ॥ जलवट थलवट वाट घाटमें । रण रावल दुःख दूर हरे ।  
एकचित्त ध्यानें जे नित समरे । अखय खजाना अजर जरे ॥ ३ ॥ धिधिमप  
धिधिमप धमप धमप मप । ताल पखावज राजतहें । गरुगरु दो गरुगरु दो  
गरुगरु । धोंधों नोबत वाजतहें ॥ ४ ॥ हिंदूपति पतशाह उदेषुर । जीमसि  
हके राजनमें । एह लावणी खूब बनाई । सकल संघके सागनमें ॥ ५ ॥  
संवत अठार पचोत्तर वर्षे । फागुण सुदि तेरस दिवसौ । मंगलकेदिन दीप  
विजयकुं । दरशन परसन दो उलसे ॥ ६ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कलश ठप्पय ठंद ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ समवसरन जब शरन । तीन लोक कलिमल हरन । धुनि  
वरसत जल धरन । जरन पोष पावन करन । जुगल धर्म नीती हरन । सब  
हरम ओघ धन जरन । मोह मल्ल अरि दरन । सुकठ वरन शुद्ध धरन  
इंद्र चंद्र पद जुगल सेवन । जगद विरुद्ध तारन तरन । दीप विजय कविरा  
ज बहादुर । स्वयं नाथ अशरन शरन ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ॐ ॥ ज्यन्त नाथ महाराज । मवे दुःखदाजिद्र जंजन । रूपन्त नाथ  
महाराज । मवे नृप मनंजन । ज्यन्त नाथ पृथ्विनाथ । समख्यों वाहर धायें  
ज्यन्तनाथ पृथ्विनाथ । मंगल नाम गवायें । दीप विजय कविराज बहादुर  
खलक मुलक हाजर रहे । कजि जुग जयो देवतुं । सुरतर सबकीरत कहे ॥ २॥

॥ ॐ ॥ श्री नेमनाथकी जान वर्णन लावणी ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ नेमकी जान बनी चारी । देखनकुं आये नर नारी ( ए आंक  
णी ) अनंता बोझ ओर हारी । मनखरी गिनती नहीं आती । उंठ पर  
यजा जो फरती । धमकमें धिखती थरती ॥ दोहा ॥ समुद्र विजयका  
जामजा । नेम तुलुका नाम । राजलदेकुं आये परणवा । उपमेन घर ठा  
म । प्रसन चई नगरी सब भारी । नेमकी जान बनी चारी ॥ १ ॥ क  
हुंवल बाधा अति चारी । काने कुंमल उबिहे न्यारी । किलंगी तुरा सुख  
कारी । साज गजे मोतीयनकी डारी ॥ दोहा ॥ काने कुंमल उग मगे ।  
शोश सुगट छलकार । कोनि जानुंकी करुं उगमा । शोना अधिक अपार  
वाज रत्ता वाजा टंकमारी ॥ नेम० ॥ २ ॥ नृट रही उनकी उहराई । व्या  
टमें आवे बडे जाई । जरोखे राजलदे जाई । जानकुं देखी सुख पाई ॥  
दोहा ॥ उपमेनजी देखेके । मनमें करे विचार । बहोत जीव करि एकठा ।  
बानी चरयो अपार । करी सब नोजनकी त्यागी ॥ नेम० ॥ ३ ॥ नेमजी  
नोरण पर आवे । पशु जीव सबही कुखलाए । नेमजी वचन फरमाये ।  
पशु जीव कार्यके जाये ॥ दोहा ॥ याको नोजन होवमी । जान बानते  
पट । पट वचन लुनी नेमजी । थर थर कांये देह । जायमें चढगये गिर  
नारी ॥ नेम० ॥ ४ ॥ पीसेहुं राजलदे जाई । हाथ जब पकड़ो निनमां  
ही । कटां हुं जवि भरी जाई । और कर हेरुं सुकनाई ॥ दोहा ॥ भेरे  
नोरण लखला । होगया नेम कुखार । ओर नुबनमें बर नहीं । कोही करो  
विचार । दोहा जद महत्तने धारि ॥ नेम० ॥ ५ ॥ नाहेल्यां नबही समजये ।  
हिये गजलके नहीं आवे । जगन नर कुलो दरगागे । भेरे लनेम कुमार आवे ।  
दोहा ॥ नोह्या फेर्या शोका । नोह्या नयन दार । काजन्त दोही पान सो  
पान । व्याख्यो सब मजगार । नोह्यां सबही बिलखाली ॥ नेम० ॥ ६ ॥

तज्या सब सोले सिणगारा । आचूषण रत्नजडित सारा । लगे मोहे सबही  
सुख खारा । ठोरु कर चाली निरधारा ॥ दोहा ॥ मात पिता परिवारकुं । तज  
तां न लागी वार । विजोग कर चली आपशुं । जाय चढी गिरनार । क  
स्ती ठोनी मा प्यारी ॥ नेम० ॥ ७ ॥ दया दिल पशुवनकी आई । त्याग  
जब कीनो तिनमाई । नेमि जिन गिरनारे जाई । पशुके बंधन बुढवाई ॥  
दोहा ॥ नेम राजुल गिरनारें । लीनो संजम दान । नवलराम करी ला  
वनी । उपन्यो केवल ज्ञान । जिनौकी किरिया बुधि सारी ॥ नेम० ॥ ८ ॥

॥ ❀ ॥ श्री पार्श्वजिन आरती, लावणी चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आरति करुं श्रीपार्श्व प्रभुकी । जन्म बनारशी हे जिनका ।  
घननं घननं वाजे बंट घण । ऐसा ध्यान धरुं जिनवरका ॥ आ० ॥ १ ॥  
जब कमठासुर कोप कियो तब । त्याम घटा विजुरी चमका । गिरुओ  
गाजजल मूशालधारा । धरु धरडका जन शंका ॥ आ० ॥ २ ॥ थरर आ  
सन कंपे सुरको । तब धरणीधर चित्त चमका । फण विस्तार हजार किये  
तब । ऊमक जाय प्रभु तन ठंका ॥ आ० ॥ ३ ॥ जब पदमावति सब सि  
णगारे । नाथेइ नाचतले फिरका । ध्रमक ध्रमक धौं मादल वाजत । घननं  
घुग्घुरके घरका ॥ आ० ॥ ४ ॥ धौधौ २ कट नोवत वाजे । धौधौ कट छुंद  
जि धौका । याविधगीत संगीत वजन सब । गांधर्व गान करे जिनका ॥ आ०  
॥ ५ ॥ तननं तरर तंत ताल सब । रुफ मौमौ करते मंका । जेराण फेर  
णके ऊणकोरे । जागरुदी जालरके ऊंका ॥ आ० ॥ ६ ॥ सुर नर इंद्र सब  
जे जे करते । जीवत सफल जया जिनका । अमृत उदय तिणवेर जयो  
सुख । को विस्तार कहे तिनका ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आदि जिनेशर पारणो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आदि जिनेशर कियो पारणो । आ रस सेलडी ॥ आ० ॥  
( टंक ) वना एकमो आठ शेलमी । रस जिरियाते नीका । उजट आव  
श्रेयांस वहिरावे । मांरुदिवी आ वृकारे ॥ आ० ॥ १ ॥ देव छुंछुनी वाज  
रहीहे । सोनइयांरो वरखा । वारे माशगुं कियो पारणो । गइ नृप सब  
तिरखारे ॥ आ० ॥ २ ॥ अदि मिदि कारज मनो कामना । वर वर मंग

लाचार । दुनियां हरख वधामणा सिरै । आखात्रीज तिवारे ॥ आ० ॥  
॥ ३ ॥ संकट काटो विघन निवारो । राखो हमारी लाज । वे कर जोनी  
नान्ह कहिता । ऋषभ देव महाराजरे ॥ आ० ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री नेमिनाथ चौमासो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ढाई घटा गगनमें कारी । राजलकुं विरह दुःख जारी ॥ ग०  
॥ टेक ॥ चौमासा लग्या रस जीना । अलि आपाढ रंग महीना । चारुं  
तरफसें वादल पीना । वीजुलीनें चमकनां कीना । दिज होज धमकता सी  
ना । में अबला सखी पति हीना ( उमाना ) सरसरर चलत समीर । थर  
ररर करत सीर । रुसरर रुत समीर । अलि कैसी करुं तदबीर बुरी  
तकदीर । पीया बिन प्यारी । राजलकुं विरह दुःख जारी ॥ ग०  
॥ १ ॥ श्रावनमें श्याम घनघोर । जरजोर बोलते मोर । दादुर मिल  
करते दोर । पिऊ पिऊ पपैया सोर । ऊर लग्यो बुंद ऊकजोर । विच  
चमके दामिनी कोर । ( उमावणी ) खरुखरुख ख घन माला । तडडडड ज  
ल परनाला । अडडडड नाला खाला । में दुःखी हुइ बेहाल हीयेमें ।  
साल हुई जलधारी ॥ रा० ॥ २ ॥ आद्रवमें पवन प्राचीना । वादलमें धनु  
प रंगीना । जंगलमें नदी स्वरजीणा । ज्युं वाजे मनोहर बीणा । अबए  
सें कहो क्या जीना । प्रीतमनें मुजे दुःखदीना । ( उमाना ) युं विलपत मुख  
सुरजाई । सखीयन मिल दोरु जगाई । युं विलखत वचन सुनाई । सखी  
देखो पीयाकी रीत । तोरुके प्रीत गये गिरनारी ॥ रा० ॥ ३ ॥ आश्विनमें जरा  
नहीं धीर । यादु चंद जये वे पीर । उठ चली नेमके तीर । काटनकुं कर्म जं  
जीर । प्रीतमसें लीयो अकसीर । व्रत संजम समकित हीर । ( उमाना ) शिव  
राजल नेम सिधाये । इंद्रादिक जश गुण गाये । जविजन मिल शीश नमा  
ये । मुनि कहे कपूराचंद प्रेमसें उंद । जाऊं बलिहारी ॥ रा० ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ श्री अजितनाथ महाराजकी लावणी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री अजितनाथ महाराज । गरीबनिवाज । जरूर जिनवरजी ।  
सेवक शिरनामें तनें उबारै अरजी । कर माफी मारावांक । रुलीयो रांक ।  
अनंता प्रवमें ॥ २ ॥ आव्यो वुं ताराशरण । बली दुःख दवमें । क्रोधादिक

धुक्ता चार । खरेखर खार । लग्या मुजकेने ॥ २ ॥ वली पापी ह्यारो नाथ ।  
 ठेक ठेके । आ मुजरो मुज जगवान । करं गुणगान । ध्यानमां धरजी  
 ॥ २ ॥ सेवक० ॥ १ ॥ में पूरण कर्या ठे पाप । सुणजो आप । कहूं कर  
 जोमी ॥ २ ॥ मुज जुंमामां जगवान । जूल नहीं थोमी । जीवहिंसा अ  
 परंपार । करी किरतार । हवेशुं करबुं ॥ २ ॥ ऊठूं बहु बोली । साधनेंशुं  
 हरबूं । तुज खोजामां मुज शीश । जाण जगदीश । गर्मे ते करजी ॥ २ ॥  
 सेवक० ॥ २ ॥ में किया बहुत कुकर्म । धरा नहीं धर्म पूर्ण हूं पापी ॥ २ ॥  
 अवलो थई तारी आण । मैज उत्थापी । मै मूरख निंदा वणी । मुनि पर  
 तणी । करी हरखायो ॥ २ ॥ परदारा देखी लवान । हुं लजचायो । किं  
 कर कहे केशवलाज । आणीने ब्हाल । दुःख तुं हरजी ॥ २ ॥ सेवक० ॥ ३ ॥

॥ ❀ ॥ श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ लावणी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मम्माई सहरमें चिंतामणि जेठ्या चिंताचूरका ॥ टेक ॥ सब देशां  
 काशी सिरै, सिरे नगर वणारशी धार । सहुराजा शिरसेहरो' सिरे अश्वसेन कुज  
 तारजी ॥ म० १ ॥ बामाकूखे अवतरया, सिरे नीलवरण तनधन्न । सतवरपांको  
 आयु कहीजै नवकर देहरतन्नजी ॥ म० २ ॥ मस्तक मुगुट काने युगकुंमज,  
 हियमें नवसर हार अंगियां सहुरयणेजमी, सिरे पीठजामंनज सारजी ॥ म०  
 ॥ ३ ॥ तेजै रविजिम दीपता, सिरे मुखजिम पूनम चंद । हियमें हेजे निरख  
 तां सिरे सब इंद्रिनो वृंदजी ॥ मम्माई० ॥ जगणीसे गुणतीसमें, सिरे चैत्रक  
 णपद जाण । यात्रकरी मुजवेद तिथीकों, संघवी बुधमिंह जाणजी ॥ म० ॥  
 ५ ॥ लुंपक गणमें सोजता, सिरे अजयराज जिनदास । संघ सहाये जेठिया,  
 करे मुक्ति कमल अरदासजी ॥ म० ६ ॥ ❀ ॥

इति श्री वंवाई मंण श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ लावणी मंपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वीठोना. श्रीगौमी पार्श्वनाथ लावणी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वीठोडा मांहे प्रगट यवारे गौमी पाशजी ॥ वी० टेक ॥ मध्य  
 देशमें गाम वीठोना, उत्तम धरती पाय । चंदनमल लोढाकों सुपनो मिलिया  
 पुन्यपमायजी ॥ वी० १ ॥ मंघमाथ चंदनमल वनमें जोवे चिहं दिशके ।  
 प्रितीयशुक्र नन्नरुद्र तिथीकों, दीठो अद्वैतदे रजी ॥ वी० २ ॥ अद्वैतदेस मग

नहुय दिजमें, अरजकरी करजोर । अचरजवाली वात हुई जब, प्रगट जया  
 जुंय फोरजी ॥ ३ ॥ ताम्रपात्रमें प्रनुमस्तकपर जीवत अहिफण सार । केशर  
 चंदन पुष्पादिकसें, पूजन अति मनुहरजी ॥ वी० ४ ॥ देशदेशके नविजन  
 सुनके, उमंगधरी चितआय । गोर्माचा पारशका दर्शन, करतां दिलसुखपा  
 यजी ॥ वी० ५ ॥ रजतवर्ण दोयहीरा जलकत, रविजिम तेजदी पाय । अति  
 शय गुणपूरत प्रनु परितख, शांति सूरत सुखदायजी ॥ वी० ॥ ६ ॥ अधिक  
 संवकी नक्तिदेखके, प्रनु रहे दिन इक्कीस, जाद्रवदसुद तृतिया रजनीको  
 अट्टश विशवावीशजी ॥ वी० ७ ॥ कलयुगमें ए अचरजकारी, महमा अध  
 की देख, नविजीवां मन आनंद उपनो, कुमति कदाग्रह रेखजी ॥ वी० ८ ॥  
 धन्यधनी धन्य जाग हमारो, पायो प्रनुदीदार, नंदअनिल निधि चंद्र संवत्तर,  
 सुजमहुस्त तिथिवारजी ॥ वी० ९ ॥ करजोडी पारसप्रनु ध्यावे, सफल हुवे  
 अवतार । लक्ष्मीप्रधान मिले शिवसंपद, मोहन हरख अपारजी ॥ वी० १० ॥  
 इति लावणी संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ श्रीरूपन जिनस्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पोढो पोढोजी रूपन विहारे । निद्रावश नयण तिहारे ॥ पो० ॥  
 प्रनुआलस अंग हुलशाई । पृठे मरुदेवा माई ॥ पो० ॥ १ ॥ प्रनु नंदा  
 सुमंगलाराणी । उन रुच रुच सेज संजारी ॥ पो० ॥ २ ॥ प्रनु नवलसुं  
 नेह सनेहा । मनवंत्रित फल देहा ॥ पो० ॥ ३ ॥ प्यारे सेवक हित कर  
 गावे । मनवंत्रित फल पावे ॥ पो० ॥ ४ ॥ अजर अमर पद पावे । कर  
 जोमी शीश नमावे ॥ पो० ॥ ५ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ दीवालीको स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ धन धन मंगल एरे सकल दिन । पूजी प्रजार्ते चालीरे ॥ ❀ ॥  
 आज ह्यारे दीवाली अलुवाली ॥ १ ॥ गावो गीत बधावो गुरुने । मोतीमे था  
 ल पुरावो । चार चार आगे चतुर सुहागण । चरण कमल चित्त सारीरे ॥  
 आज० ॥ २ ॥ धन धुन धन तेरा दिवशी । काले काली चउदश । पाप ह  
 णीजे पोंसो कीजे । कर्म मेलो सर्व टालीरे ॥ आज ह्यारे० ॥ ३ ॥ अमावस  
 की परब दीवाली । फरती ऊक ऊमाली । घर घर तो दीवडीया जलके



रात दीसे अलुवालीरे ॥ आज ह्वारे० ॥ ४ ॥ अमावसकी पिठली राते ।  
 आठ करम सहु टाली । श्री महावीर निरवाणे पोहोता । अजरामर मुक्त  
 कारीरे ॥ आज ह्वारे० ॥ ५ ॥ पन्निवा नें वली जुहार पटोला । ए रत रूमी  
 सारी ॥ गुरु गौतमनां चरण पखाली । रीऊ पामी रढीयालीरे ॥ आज  
 ह्वारे० ॥ ६ ॥ बीजें तो वली जावरु बीज । बेनरमी अति बाहाली ॥  
 ए पांचे दिन होय रे पनोता । एवे एवे हरखे गाईरे ॥ आज ह्वारे० ॥ ७ ॥  
 हरखविजय पंक्ति इम बोले । करोसहु सेव सुंहाली ॥ रूपविजय पंक्ति  
 गुणगावे । जय जय वाजे तालीरे ॥ आज ह्वारे० ॥ ८ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ पुनः दीपमाला स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ह्वारे दीवाली रे थई आज । प्रनु मुख जोवाने ॥ सरथा सरथारे से  
 वक्तां काज । प्रवदुख खोवाने ॥ टेक ॥ महावीर स्वामी सुगते पहोता  
 ने । गौतम केवल ज्ञान रे ॥ धन अमावस्या धनदीवाली ह्वारे । वीर  
 प्रनु निरवाण ॥ जिनमुख० ॥ ह्वारे दीवाली० ॥ १ ॥ चारित्र पाट्या नि  
 र्मलाने । टाल्या ते विषय कपाय रे ॥ एवा प्रनुने वांदिये तो । उत्तारे प्रव  
 पार ॥ जिन० ॥ मा० ॥ २ ॥ बाकुला बोहोरथा वीरजी ने । तारी चंदन  
 वाला रे ॥ केवल जई प्रनु सुकते पोहोता । पाम्या प्रवनो पार ॥ जि  
 न० ॥ मा० ३ ॥ एवा मुनिने वांदीयेंजे । पंचमज्ञानने धरतारे । ममवसरण  
 देई देशना रे ॥ प्रनु तारथा नरने नार ॥ जिन० मा० ॥ ४ ॥ चौबीशमा जि  
 नेसरु ने । मुकति तणा दातार रे ॥ कर जोनी कवियण एमप्रणे । मारो प्र  
 वनो फेरो टाल ॥ जिनमुख० ॥ मा० ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ आत्मजघुता स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ यो जिनदास जठो रे जठो ॥ येने लेइ लाकडी कटो ॥ यो० ॥  
 सुकृत सामो पग नहिं भरतो । ग्यान हीयाको खूटो ॥ सुधारयो सुयरे न  
 हिंघडतां । जेसो लकडको तुंठो ॥ यो० ॥ १ ॥ जणवा गुणवाका गुण  
 नहिं आया । कोरोही पकड्यो पृठो ॥ गपोडा सुण कर लोक पूजता ।  
 ए अलग भाजको वृठो ॥ यो० ॥ २ ॥ पंडित गुरुकी सोवत पाई । चेत्यो  
 नहिं हीयाको छूटो । साचा नरको संग न करतो । कूड कपट नहिं छूटो ।

यो० ॥ ३ ॥ ऊठोहि बोले ऊठोहि चाले । कपट करे एक मूठो ॥ साचो  
एह असार देखके । जिनदाश सबसुं रूठो ॥ यो० ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मंगल स्तवन राग सामेरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कीजे मंगल चार । आज घरे नाथ पधारया ॥ कीजे० ॥  
( आंकणी ) ॥ पहेलुं मंगल प्रनुजीकुं पूजुं । वसी केशर घनसार ॥ आज०  
॥ १ ॥ बीजुं मंगल अगर उखेवुं । कंठे ठवुं फुल हार ॥ आज० ॥ २ ॥  
त्रीजुं मंगल आरती उत्तारुं । घंट वजावुं रणकार ॥ आज० ॥ ३ ॥ चोथुं  
मंगल प्रनु गुण गावुं । नाचुं ते थैथेकार ॥ आज० ॥ ४ ॥ रूपचंद कहे  
नाथ निरंजन । चरण कमल जातुं वार ॥ आज० ॥ ५ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीनेमनाथजीको नवरसो प्रारंभः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ढाल पहली, गर्वाकी देशीमें ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ समुद्र विजय कुल चंदलो । शामलियाजी । शिवादेवी मात  
मलार । वरपातलियाजी । एक दिन रमवा नीसरया ॥ शा० ॥ आ  
व्या आयुधशाला मांहे ॥ व० ॥ १ ॥ सारंग धनुष चढावियुं ॥ शा० ॥  
तेणे मोल्या आकाशें इंद्र ॥ व० ॥ चक्र उपासीनें फेरव्युं ॥ शा० ॥ गदा  
लीधी कमरांहे ॥ व० ॥ २ ॥ नेमें शंख वजामीयो ॥ शा० ॥ तेणें मो  
ल्या माहिना मेर ॥ व० ॥ शेष नाग तिहां सज सल्या ॥ शा० ॥ खल ज  
लीया सायर सर्व ॥ व० ॥ ३ ॥ गिरिवर टंक तूटी पड्यां ॥ शा० ॥ थरहर  
कंठे लोक ॥ व० ॥ कोइक वेरी उपनो ॥ शा० ॥ इम करता कृष्ण  
विचार ॥ व० ॥ ४ ॥ आव्या तिहां उंतावला ॥ शा० ॥ जिहां ठे नेम कुमार ॥  
व० ॥ रूपचंद रंगें मल्या ॥ शा० ॥ ताहरुं बल जोवानी खंत ॥ व० ५ ॥

॥ ❀ ॥ ढाल बीजी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कृष्णें कर लंवावायो ॥ हसी बोलीजी । तुमें वालो नेम कुमार ।  
अंतर खोलोजी । कमलनाल परें वालीयो ॥ हसी० ॥ कृष्ण नवि लागी वार  
॥ अंत० ॥ १ ॥ नेमें कर लंवावीयो ॥ हसी० ॥ कृष्ण नवि वाल्यो जाय ॥  
अंत० ॥ हायें कृष्ण हिंचोलिया ॥ हसी० ॥ तिहां हरि मन जंखो  
थाय अंत० ॥ २ ॥ नारी जो परणावीये ॥ ह० ॥ तो बल उठेहं धाय ॥

अं० ॥ एम विचारी कृष्णजी ॥ ह० ॥ निजअंतेउर समजाय ॥ अं० ॥ ३ ॥  
 नेम विवाह मनायवा ॥ ह० ॥ सज्ज थाउं सगली नार ॥ अं० ॥ रूपचंद रंगें  
 मिल्या ॥ ह० ॥ ताहरुं अतुली बलअरीहंत ॥ अंत० ॥ ४ ॥ ॐ ॥

### ॥ ॐ ॥ ढाल त्रीजी ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ राधाजी ने स्वमणी । मोरा गिरधारी । सत्यजामा जांबुवती  
 नार । सुकुटपर हुं वारी । चंद्रावती शिणगारीयें ॥ मोरा० ॥ गोपी मली  
 वत्तीश हजार ॥ सुकुट० ॥ १ ॥ विवाह मानो नेमजी । देवर मोरा जी ।  
 मने करवाना बहु कोरु । ए गुण तोराजी । नारी विनातुं आंगणुं ॥ देवर०  
 ॥ जेम अलूणो धान ॥ ए गुण० ॥ २ ॥ नारी जो घरमां वदे ॥ देवर० ॥  
 तो पामें प्राहुणा मान ॥ ए गुण० ॥ नारी विना नर हाली जिस्सा ॥ देवर०  
 वली वांढा कहशे लोक ॥ ए गुण० ॥ ३ ॥ ठोकरवाद न कीर्जीयें ॥ देव० ॥  
 ॥ तमें मकरो ताणो ताण ॥ ए गुण० ॥ रूपचंद रंगें मल्या ॥ देवर० ॥  
 हवे उत्तर आपे नेम ॥ ए० ॥ ४ ॥ ॐ ॥

### ॥ ॐ ॥ ढाल चौथी ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ नेम कहे तमे सांजलो ॥ मोरी चाजी जी । ए किशो काम  
 विकार । में गत पामी जी । नारी मोहें जे पड्या ॥ मोरी० ॥ ते रुक्मिया  
 गति चार ॥ में० ॥ १ ॥ रावण सरिखो एलव्यो ॥ मोरी० ॥ जे लइ गवो  
 शीता नार ॥ में० ॥ नारी विपनी कृपली ॥ मो० ॥ मायानी मोहन बेल ॥  
 में० ॥ २ ॥ उपन्न कोमि जादव मिल्या ॥ मोरी० ॥ इम कहे ते वारो वार  
 ॥ में० ॥ रूपचंद रंगें मल्या ॥ मोरी० ॥ नेम नहिं परणे निरधार ॥ में० ॥ ३ ॥

### ॥ ॐ ॥ ढाल पांचमी ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अवला बोल न बोलीयें । वर राजाजी । तमें परणो नेम कु  
 मार । मकरो दिवाजाजी । एकवीश तीर्थकर थया ॥ वर० ॥ ते तो सर्व  
 पग्या नार ॥ मकरो० ॥ १ ॥ नारी खाण स्तन तर्णा ॥ वर० ॥ तेनुं मृ  
 द्य केंगें नवि थाय ॥ मकरो० ॥ नारीमहिथी नर नीपना ॥ वर० ॥ तुम  
 सरिखा श्रीजगवान । मकरो० ॥ २ ॥ नेम न बोले सुखधकी ॥ वर० ॥ मां  
 रुयो विवाह मंजान ॥ मकरो० ॥ जयमेन वर बैठकी ॥ वर० ॥ ३ ॥ ते

नामें राजल नार ॥ मकरो० ॥ ३ ॥ लीखुं लगन जतावहुं ॥ वर० ॥ आ  
 प्या लीला श्रीफल हाथ ॥ मकरो० ॥ जीमण लाहू लापशी ॥ वर० ॥  
 वली सेवइयो कंसार ॥ मकरो० ॥ ४ ॥ आगी जलेवी पातली ॥ वर० ॥  
 वली मांहे घेवरनो जाग ॥ मकरो० ॥ खारी पुरीने दहीथरा ॥ वर० ॥ व  
 ली खाजाने मगदाल ॥ मकरो० ॥ ५ ॥ लाखण साई हेशमी ॥ वर० ॥  
 मांहे मोतीचूरनो स्वाद ॥ मकरो० ॥ कूर रांधो कमोदनो ॥ वर० ॥ मां  
 हे मसूरनी दाल ॥ सवल ॥ दिवाजाजी ॥ ६ ॥ खारक खजूर नें दोपरा ॥  
 वर० ॥ वली चारोलीने द्राख ॥ सवल० ॥ जवंग सोपारी एजची ॥ वर० ॥  
 वली पानना बीमा चार ॥ सवल० ॥ ७ ॥ सज्जन कुटुंब संतोषीया ॥  
 वर० ॥ बहु कीधी पेरामणी सार ॥ सवल० ॥ जान लेई यादव चढ्या ॥  
 वर० ॥ पाखरीया केकाण ॥ सवल० ॥ ८ ॥ हाथी रथ शणगारीया ॥  
 वर० ॥ केशरिया असवार ॥ सवल० ॥ इंद्र जोवाने आविया ॥ वर० ॥  
 इंद्राणी गावे गीत ॥ सवल० ॥ ९ ॥ तोरण आव्या नेमजी ॥ वर० ॥ ते  
 नें निरखे राजल नार ॥ सवल० ॥ रूपचंद रंगें मढ्या ॥ वर० ॥ ए जोवा  
 सरखी जान ॥ सवल० ॥ १० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ढाल ठी ॥ ॥

॥ ॥ सखी कहे वर शामलो ॥ ए दीसेजी ॥ ते निरखे राजल नार  
 हड्डुं हीसे जी ॥ काजा गयवर हाथीया ॥ ए दी० ॥ वली कालो मेघ  
 मलार ॥ हड्डुं० ॥ १ ॥ काली अंजन आंखनी ॥ ए दीसेजी ॥ तेनुं मृज  
 केणे नवि थाय ॥ हड्डुं० ॥ काजी कस्तूरी कही ॥ ए दीसेजी ॥ काजा  
 कृष्णागरु केश ॥ हड्डुं० ॥ २ ॥ रूपचंद रंगें मढ्या ॥ ए दीसे जी ॥  
 सखि शामलीयो जस्तार ॥ हड्डुं० ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ढाल सातमी ॥ ॥

॥ ॥ पशुअ पौकार सुणी करी । शुभ लीयी जी । विचारे श्रीवीनरा  
 ग । तेणें दया कीर्धीजी । जो परणुं तो पशु मरे ॥ शु० ॥ सूकी अनुकंपा  
 जाज तेणें० ॥ १ ॥ इम जाणी रय वाजीयो ॥ शु० ॥ फेरवतां दीनदयाल

अं० ॥ एम विचारी कृष्णजी ॥ ह० ॥ निजअंतेउर समजाय ॥ अं० ॥ ३ ॥  
 नेम विवाह मनायवा ॥ ह० ॥ सज्ज थाउ सगली नार ॥ अं० ॥ रूपचंद रंगें  
 मिल्या ॥ ह० ॥ ताहरुं अतुली बजअरीहंत ॥ अंत० ॥ ४ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ ढाल त्रीजी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राधाजी ने रुक्मणी । मोरा गिरधारी । सत्यनामा जांबुवती  
 नार । मुकुटपर हुं वारी । चंद्रावती शिणगारीयें ॥ मोरा० ॥ गोपी मली  
 वत्तीश हजार ॥ मुकुट० ॥ १ ॥ विवाह मानो नेमजी । देवर मोरा जी ।  
 मने करवाना बहु कोरु । ए गुण तोराजी । नारी विनानुं आंगणुं ॥ देवर०  
 ॥ जेम अलूणो धान ॥ ए गुण० ॥ २ ॥ नारी जो घरमां वदे ॥ देवर० ॥  
 तो पामें प्राहुणा मान ॥ ए गुण० ॥ नारी विना नर हाली जिसा ॥ देवर०  
 वली बांठा कहशे लोक ॥ ए गुण० ॥ ३ ॥ ठोकरवाद न कीजीयें ॥ देवर० ॥  
 ॥ तमें मकरो ताणो ताण ॥ ए गुण० ॥ रूपचंद रंगें मल्या ॥ देवर० ॥  
 हवे उत्तर आपे नेम ॥ ए० ॥ ४ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ ढाल चोथी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नेम कहे तमे सांजजो ॥ मोरी ज्ञानी जी । ए किशो काम  
 विकार । में गत पामी जी । नारी मोहें जे पड्या ॥ मोरी० ॥ ते रुक्मिन्या  
 गति चार ॥ में० ॥ १ ॥ रावण सरिखो एलव्यो ॥ मोरी० ॥ जे लइ गयो  
 शीता नार ॥ में० ॥ नारी विषनी कूपली ॥ मो० ॥ मायानी मोहन बेल ॥  
 में० ॥ २ ॥ अपन्न कोमि जादव मिल्या ॥ मोरी० ॥ इम कहे ते वारो वार  
 ॥ में० ॥ रूपचंद रंगें मल्या ॥ मोरी० ॥ नेम नहिं परणे निरधार ॥ में० ॥ ३ ॥

### ॥ ❀ ॥ ढाल पांचमी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अवला बोल न बोलीयें । वर राजाजी । तमें परणो नेम कु  
 मार । मकरो दिवाजाजी । एकवीश तीर्थकर थया ॥ वर० ॥ ते तो सर्व  
 पराया नार ॥ मकरो० ॥ १ ॥ नारी खाण रतन तणी ॥ वर० ॥ तेहुं मृ  
 ल्य केणें नवि थाय ॥ मकरो० ॥ नारीमाहेथी नर नीपना ॥ वर० ॥ तुम  
 सरिखा श्रीजगवान । मकरो० ॥ २ ॥ नेम न बोले मुखथकी ॥ वर० ॥ मां  
 मच्यो विवाह मंराण ॥ मकरो० ॥ उग्रसेन घर वेढी ॥ वर० ॥ ते

नामें राजुल नार ॥ मकरो० ॥ ३ ॥ लीबुं लगन उतावहुं ॥ वर० ॥ आ  
 प्या लीला श्रीफल हाथ ॥ मकरो० ॥ जीमण लाहू लापशी ॥ वर० ॥  
 वली सेवइयो कंसार ॥ मकरो० ॥ ४ ॥ आढी जलेवी पातली ॥ वर० ॥  
 वली मांहे घेवरनो जाग ॥ मकरो० ॥ खारी पुरीने दहीथरा ॥ वर० ॥ व  
 ली खाजाने मगदाल ॥ मकरो० ॥ ५ ॥ लाखण साई हेशमी ॥ वर० ॥  
 मांहे मोतीचूरनो स्वाद ॥ मकरो० ॥ कूर रांधो कमोदनो ॥ वर० ॥ मां  
 हे मसूरनी दाल ॥ सबल दिवाजाजी ॥ ६ ॥ खारक खजूर नें दोपरा ॥  
 वर० ॥ वली चारोलीने द्राख ॥ सबल० ॥ लवंग सोपारी एलची ॥ वर० ॥  
 वली पानना वीमा चार ॥ सबल० ॥ ७ ॥ सज्जन कुटुंब संतोषीया ॥  
 वर० ॥ बहु कीधी पेरामणी सार ॥ सबल० ॥ जान लेई यादव चढ्या ॥  
 वर० ॥ पाखरीया केकाण ॥ सबल० ॥ ८ ॥ हाथी रथ शणगारीया ॥  
 वर० ॥ केशरिया असवार ॥ सबल० ॥ इंद्र जोवाने आविया ॥ वर० ॥  
 इंद्राणी गावे गीत ॥ सबल० ॥ ९ ॥ तोरण आव्या नेमजी ॥ वर० ॥ ते  
 नें निरखे राजुल नार ॥ सबल० ॥ रूपचंद रंगें मढ्या ॥ वर० ॥ ए जोवा  
 सरखी जान ॥ सबल० ॥ १० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ठाल ठी ॥ ॥

॥ ॥ सखी कहे वर शामलो ॥ ए दीसेजी ॥ ते निरखे राजुल नार  
 हड्डुं हीसे जी ॥ काला गयवर हाथीया ॥ ए दी० ॥ वली कालो मेघ  
 मजार ॥ हड्डुं० ॥ १ ॥ काली अंजन आंखनी ॥ ए दीसेजी ॥ तेनुं मूल  
 केणे नवि थाय ॥ हड्डुं० ॥ काली कस्तूरी कही ॥ ए दीसेजी ॥ काला  
 कृष्णागरु केश ॥ हड्डुं० ॥ २ ॥ रूपचंद रंगें मढ्या ॥ ए दीसे जी ॥  
 सखि शामलीयो भरतार ॥ हड्डुं० ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ठाल सातमी ॥ ॥

॥ ॥ पशुअ पोकार सुणी करी । शुध लीधी जी । विचारे श्रीवीतरा  
 ग । तेणें दया कीर्धीजी । जो पराणु तो पशु मरे ॥ शु० ॥ मूकी अनुकंपा  
 जाल तेणें० ॥ १ ॥ इम जाणी रथ वालीयो ॥ शु० ॥ फेरवतां दीनदयाळ



॥ तेणें० ॥ पशुबंधन सर्व तोमीया ॥ शु० ॥ ते सर्व गया वनमांहे ॥ तेणें०  
॥ २ ॥ रूपचंद रंगें मल्या ॥ शु० ॥ प्रभु दीधुं वरसीदान ॥ तेणें० ॥ ३ ॥

॥ ❀ ॥ ढाल आवमी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राजिमती धरणी ढल्या ॥ मोरा वहालाजी ॥ अवगुण विण  
दीनानाथ ॥ हाथ नजाल्यो जी ॥ आंगण आवी पाठा वल्या ॥ मोरा०  
द्वत्री कुलमां लगावी लाज ॥ हाथ० ॥ १ ॥ तमें पशु तणी करुणा  
करी ॥ मोरा० ॥ तमने माणसनी नहिं मेर ॥ हाथ० ॥ आठ जव थया  
एकठा ॥ मोरा० ॥ कीधा तुमशुं रंग रोल ॥ हाथ० ॥ २ ॥ नवमे ज्वें  
तमें नेमजी ॥ मोरा० ॥ मुजने कां मेली जान ॥ हाथ० ॥ मारी आशा अं  
वर जेवनी ॥ मोरा० ॥ तमें केम उपासी कंत ॥ हाथ० ॥ ३ ॥ में कूना  
कलंक चढाविया ॥ मोरा० ॥ जाख्या अण दीठा आल ॥ हाथ० ॥ में  
पंखी घाल्या पांजरे ॥ मोरा० ॥ वली जलमां नाखी जाल ॥ हाथ० ॥  
॥ ४ ॥ में साधुने संतापीया ॥ मोरा० ॥ में माय विढोड्यां बाल ॥ हाथ० ॥  
में कीमी दर उघामियां ॥ मोरा० ॥ मरमना वोल्या बोल ॥ हाथ० ॥ ५ ॥  
अणगल पाणी में जरया ॥ मोरा० ॥ में गुरुनें दीधी गाल ॥ हाथ० ॥ में  
कठिण करम कीधा हशे ॥ मोरा० ॥ ते आवी लागा पाप ॥ हाथ० ॥  
॥ ६ ॥ इम करतां राजुल आविया ॥ मोरा० ॥ श्रीनेमीशरनी पास ॥ हाथ०  
॥ रूपचंद रंगें मल्या ॥ मोरा० ॥ राजुल लियो संयम जार ॥ हाथ० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ढाल नवमी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीनेम राजीमती एकठा ॥ साहेलनीयां ॥ जइ चढिया श्रीगिर  
नार ॥ जिनगुण वेलनियां ॥ पूठथी राजुल आवियां ॥ सा० ॥ संजम वती  
राजकुमार ॥ जिन० ॥ १ ॥ आझा लेइ राजुल एकली ॥ सा० ॥ गिरनार  
उपर गुफामांहे ॥ जिन० ॥ वाटें जातां वर्षा थई ॥ सा० ॥ ज्रीजाणां रा  
जुलनांचीर ॥ जि० ॥ २ ॥ गुफा मांहे जइ शूकव्या ॥ सा० ॥ लागुं ते  
काचुं नीर ॥ जिन० ॥ अति सुकुमाल सोहामणुं ॥ सा० ॥ राणी राजीम  
तीनुं शरीर ॥ जिन० ॥ ३ ॥ रहनेमि तपस्या करे ॥ सा० ॥ देखि राजिमती  
निचोवे चीर ॥ जिन० ॥ प्रगट थई ते बोलीयो ॥ सा० ॥ जार्जी म

करो मन ऊदास ॥ जिन० ॥ ४ ॥ नेम गयो तो ननु थयुं ॥ सा० ॥ आप  
णे करथुं भोग विलास ॥ जि० ॥ उत्तम कुलनो ऊपनो ॥ सा० ॥ तुं बोल वि  
चारी बोल ॥ जि० ॥ ५ ॥ संयम रत्नने हारीया ॥ सा० ॥ बली  
कीधी व्रतनी घात ॥ जिन० ॥ रहनेमी तव बोलीयो ॥ सा० ॥ माता रा  
जीमती उगार ॥ जि० ॥ ६ ॥ नेमीसर कर्ने मोकल्या ॥ सा० ॥ फरी ली  
धो संयम नार ॥ जि० ॥ नेम राखल केवल लई ॥ सा० ॥ पोहोता सु  
क्ति मजार ॥ जिन० ॥ ७ ॥ पीयू पहेली सुगते गयी ॥ सा० ॥ राजीम  
ती तेणि वार ॥ जि० ॥ रूपचंद रंगे मल्या ॥ सा० ॥ प्रनु उत्तारो नवपार ॥  
जिन० ॥ ८ ॥ ॐ ॥ इति नवस्सो सं० ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ दान शील तप नाव चौ ढालियो ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ प्रथम जिणेसर पाय नमी । पामी सुगुरुप्रसाद ॥ दान शीय  
ल तप नावना । बोलिश बहु संवाद ॥ १ ॥ वीर जिणंद समोसरया । रा  
जगृही उद्यान । समवसरण देवें रच्युं । वेठा श्रीवर्द्धमान ॥ २ ॥ वेठीवारे  
परखदा । सुणवा जिनवर वाण ॥ दान कहे प्रनु हुं वनो । सुजने  
प्रथम वखाण ॥ ३ ॥ सांजलजो सहको तुमे । कुण ठे सुझ समान  
अरिहंत दीक्षा अवसरें । आपे पहिलुं दान ॥ ४ ॥ प्रथम पहोर दातारनुं ।  
लीये सह कोई नाम । दीधारी देउज चढे । सीजे वांगित काम ॥ ५ ॥ ती  
र्थकरने पारणें । कुण करशे सुज होड ॥ वृष्टि करुं सोवन तणी । साढी  
बाहर कोरु ॥ ६ ॥ हुं जग सगळुं वश करुं । सुज मोहोटी ठे वात ॥ कु  
ण कुण दानथकी तरया । ते सुणजो अवदान ॥ ७ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ढाल पहेली, लजना कीदेशी ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ धन सारथवाह साधुने । दीधुं वृत्तुं दान । लजना । तीर्थकर  
पद में दीधुं । तिणे सुजने अजिमान । लजना ॥ १ ॥ दान कहे जग  
हुं वनो । सुज सारिखुं नहिं कोय ॥ लजना ॥ रुद्रि समृद्धि सुख संपदा ।  
दाने दोलत होय ॥ लजना ॥ दा० ॥ २ ॥ सुसुख नामें गाथापनि । पन्निजा  
ग्यो आणगार ॥ लजना ॥ कुमार सुबाहु सुख लक्ष्मं । तेनो सुज उगार  
॥ लजना ॥ दा० ॥ ३ ॥ पांचशें मुनिने पारणुं । देतो बोहोरी आण ॥ ल

लना ॥ जस्त थयो चक्रवर्त्ति जलो । ते पण सुज फल जाण ॥ ललना ॥  
 दा० ॥ ४ ॥ माश खमणने पारणें । पमिजाभ्यो रुषिराय ॥ ललना ॥  
 शालिजद्र सुख जोगवे । दान तणे सुपसाय ॥ ललना ॥ दा० ॥ ५ ॥ आप्या  
 जमदना बाकुला । उत्तम पात्र विशेष ॥ ललना ॥ मूलदेव राजा थयो ।  
 दानतणां फल देख । ललना ॥ दा० ॥ ६ ॥ प्रथम जिणेंसर पारणें । श्री  
 श्रेयांस कुमार । ललना । सेलमीरस वहरावीयो । पाम्यो जवनो पार । ल  
 लना ॥ दा० ॥ ७ ॥ चंदनवाजा बाकुला । पमिजाभ्या महावीर । ललना ।  
 पंचदिव्य परगट थया । सुंदररूप शरीर ॥ ललना ॥ दा० ॥ ८ ॥ पूख  
 जव पारेवडुं । शरणे राख्युं सूर ॥ ललना ॥ तीर्थकर चक्रवर्त्ति पणें । प्रगट्यो  
 पुण्यपमूर । ललना ॥ दा० ॥ ९ ॥ गजजवें शशलो राखियो । करुणा  
 कीधी सार ॥ ललना ॥ श्रेणिकनें घर अवतरयो । अंगज मेघ कुमार ललना ॥  
 दा० ॥ १० ॥ एम अनेक में उच्चर्या । कहतां नावे पार ॥ ललना ॥ समयसुं  
 दर प्रनु वीरजी । मुज पहिलो अधिकार ललना ॥ दा० ॥ ११ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शील कहे सुण दान तुं । किस्यो करे अहंकार । आडंबर  
 आठे पहोर । याचकशुं व्यवहार ॥ १ ॥ अंतराय वलि ताहरे । जोग  
 करम संसार । जिनवर कर नीचा करे । तुजने पडो धिक्कार ॥ २ ॥ गर्व  
 मकर रे दान तुं । मुज पुठै सहु कोय । चाकर चाले आगले । तो शुं  
 राजा होय ॥ ३ ॥ जिन मंदिर सोना तणुं । नबुं निपावे कोय । सोवन को  
 नी दान दिये । शीयल समुं नहि कोय ॥ ४ ॥ शीलें संकट सविटलें ।  
 शीलें जश सोजाग ॥ शीलें सुर सानिध करे । शीयल वनो वैराग ॥  
 ५ ॥ शीलें सर्प न आजमे । शीलें शीतल आग । शीलें अरि करी  
 केशरी । जय जाये सवि जाग ॥ ६ ॥ जनम मरणना जयथकी । में तो  
 नाव्या अनेक । नाम कहुं हवे तेहना । सांजलजो सुविवेक ॥ ७ ॥ ❀ ॥  
 ॥ ❀ ॥ ढाल वीजी ॥ पास जिणंद जुहारियें ए देशी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शील कहे जग हुं वनो । मुज वात सुणो अति मीठीरे ॥  
 लाजव लावे लोकनें । में दान तणी वात दीठीरे ॥ शी० ॥ १ ॥

कलह कारण जग जाणीये । वली विरति नही पण कांइरे । ते नारद में  
सीज्या । सुज जुन ए अधिकईरे ॥ शी० ॥ २ ॥ बांहे पहेर्या बेरखा । शं  
सराजाये दूषण दीधोरे । काप्यो हाथ कलावती । ते में नवपत्रव कीधोरे ॥  
शी० ॥ ३ ॥ रावण घर शीता रही । तो रामचंद्रें घर आणीरे । शीतानुं  
कलंक उत्तारीयुं । में पावक कीधो पाणीरे ॥ शी० ॥ ४ ॥ चंपा वार उ  
घाम्वा । वली चालणीये काढ्युं नीरोरे । सतीय सुजद्रा जश थयो । में  
तस कीधी नीरोरे ॥ शी० ॥ ५ ॥ राजा मारण मांनियो । राणी अजयाये  
दूषण दाख्योरे । शूली सिंहासन में कीयो । में शोठ सुदर्शन राख्योरे ॥  
शी० ॥ ६ ॥ शीज सन्नाह मंत्रीसेरें । आवतां अरिदल थंभ्योरे । तिहां पण  
सानिधमें करी । वली धरम कारज आरंभ्योरे ॥ शी० ॥ ७ ॥ पहिरण चीर  
प्रगट किया । में अछोत्तरशो वारोरे । पांमव नारी द्रौपदी । में राखी माम  
उदारोरे ॥ शी० ॥ ८ ॥ ब्राह्मी चंदन बालिका । वली शीलवती दमदंती  
रे । चेम्हानी साते सुता । राजिमती सुंदरी कुंतीरे ॥ शी० ॥ ९ ॥ इत्या  
दिक में उवरया । नर नारीनां वृंदोरे । समयसुंदर प्रनु वीरजी । पहिले सुज  
आणंदोरे ॥ शी० ॥ १० ॥ ❀ ॥ - ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ ❀ ॥

॥ ॐ ॥ तप वोढ्युं वटकी करी दाननें तुं अवहील ॥ पण सुज आग  
ल तुं किर्युं । सांजलरे तुं शीज ॥ १ ॥ सरसा भोजन ते तज्या । न  
गमे मीठा नाद । देह तणी शोभा तजी । तुज्जमां किर्यो मवाद ॥ २ ॥ ना  
रौथकी मरतो रहे । कायर किर्युं वखाण । कृम कपट बहु केजवी । जि  
म निम राखे प्राण ॥ ३ ॥ को विरलो तुज आदरे । ठंमी सह संसार । आ  
प एक तुं सांजतो । बीजा सांजे चार ॥ ४ ॥ कर्म निकाचित तोडवा ।  
नांजुं जव जय जीम । अगिहत सुजने आदरे । वरश उमाशी मीम ॥ ५ ॥  
रुचक नंदीमर ऊपरें । सुज लव्यें सुनि जाय । चैत्य छहारे शाश्वता ।  
आनंद अंग न माय ॥ ६ ॥ मोढोटा जोयण लाखना । लखु कुंथु आका  
र । हय गय रथ पायक तणां । रुप करे आणगार ॥ ७ ॥ सुज कर फरसे  
उपशमे । कुशादिकता रोग । लब्धि अठावीश उपजे । उत्तम तप संजो

ग ॥ ८ ॥ जे में तारखा ते कहुं । सुणजो मन उखास । चमत्कार वित्त  
पामशो । देशो मुजु शांवास ॥ ९ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ढाल त्रीजी ॥ नणदलनी देशी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दृढप्रहार अति पापीयो । हत्या कीधी चार हो । सुंदर । ते  
पण तिण जव उधरयो । मूक्यो मुक्तिमजार हो ॥ सुंदर ॥ १ ॥ तप सारि  
खुं जगको नही । तप करे कर्मनुं सूरुहो ॥ सुंदर ॥ तप करवुं अति दो  
हिहुं । तपमां नहीको क्रूर हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ २ ॥ सात माणस नित  
मारतो । करतो पाप अघोर हो ॥ सुंदर ॥ अर्छनमालीमें उधरयो । बेधा  
कर्म कठोर हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ ३ ॥ नंदीषेणनें में कियो । स्त्रीबलज वसुदे  
व हो ॥ सुंदर ॥ बहुत्तर सहस अंतेजरी । सुख जोगवे नित्यमेव हो ॥ सुंदर ॥  
तप० ॥ ४ ॥ रूप कुरूप कालो घणों । हरिकेशी चंडाल हो ॥ सुंदर ॥  
सुर नर कोसी सेवा करे । ते में कीधी चाल हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ ४ ॥  
विष्णुकुमर लब्धे कियुं । लाख जोयणनुं रूप हो ॥ सुंदर ॥ श्रीसंव केरे  
कारणें । ए मुजु शक्ति अनूप हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ ६ ॥ अष्टापद गो  
तम चढ्या । बांधा जिन चोवीश हो ॥ सुंदर ॥ तापस पण प्रतिवृज्ज्या  
तेणें मुजु अधिक जगीश हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ ७ ॥ चौद सहस अण  
गारमां । श्री धनो अणगार हो ॥ सुंदर ॥ वीण जिणंद वखाणीयो । ए पण  
मुजु अधिकार हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ ८ ॥ कृष्ण नरेसर आगले । डुकर  
कार कहाय हो ॥ सुंदर ॥ दंडण नेमी प्रशंसीयो । मुजु महिमा सवि तेह  
हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ ९ ॥ नंदीषेण वोहोरण गयो । गणिकार्ये कीधी  
हास हो ॥ सुंदर ॥ वृष्टि करी सोवन तणी । में तसु पूरी आश हो ॥ सुंदर ॥  
तप० ॥ १० ॥ एम बज्रद्र प्रमुख बहु । तारखा तपसी जीव हो ॥  
सुंदर ॥ समय सुंदर प्रनु वीरजी । पहिलो मुजु प्रस्तावहो ॥ सुंदर तप० ॥ २

॥ ❀ ॥ ढाल चौथी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जाव कहे तप तुं कियुं । उेरुं करे कषाय । पूर्व कोसी जों  
तप तपे । कृष्णमां खेरु थाय ॥ १ ॥ खंधक आचारज प्रते । ते बाल्यो  
सवि देश । अष्टजु नियाणुं तुं करे । कृमा नही जव लेश ॥ २ ॥ ग्रीपाय

न रुषि दूहव्या । सांव प्रद्युम्न सनाह । ते तव क्रोध करी तिहां । कीधो  
 प्रारिका दाह ॥ ३ ॥ दान शीयल तप सांजलो । मकरो ऊठ गुमान । जो  
 क सहुको साखदे । धर्म ज्ञाव प्रधान ॥ ४ ॥ आप नहुंसक ठो त्रणे ।  
 घे व्याकरण ते साख । काम सरे नहि कोइनुं । ज्ञाव ज्ञेणें में पाख ॥ ५ ॥  
 रस विण कनक न नीपजे । जल विण तरुअर वृद्धि । रसवति रस न  
 हि जवण विण । तिम मुज विण नहि सिद्धि ॥ ६ ॥ मंत्र यंत्र मणि औ  
 षधी । देव धर्म गुरु सेव । ज्ञाव विना ते सवि वृथा । ज्ञाव फले नितमेव  
 ॥ ७ ॥ दान शील तप जे तुमें । निज निज कहा वृत्तंत । तिहां जो ज्ञा  
 व न हुंत तो । कोइ सिद्धी नवि हुंत ॥ ८ ॥ ज्ञाव कहे में एकजे । तारखा  
 बहु नर नार । सावधान थइ सांजलो । नाम कहुं निरधार ॥ ९ ॥ ॐ ॥

### ॥ ॐ ॥ ढाल चौथी ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ कानन मांहे काउसगग रह्योरे । प्रसन्नचंद रुषिराय । ते में की  
 धो केवलीरे । ततकृण करम खपाय ॥ १ ॥ सोजागी सुंदर । ज्ञाव वनो  
 संसार । ए तो बीजो मुज परिवार ॥ सो० ॥ दानादिक विण एकजोरे ।  
 पोहोचाहुं जवपार ॥ सो० ॥ २ ॥ ( ए आंकणी ) वंश उपर चढी खेलतो  
 रे एलापुत्र अपार । केवल ज्ञानीमें कियोरे । प्रतिबोध्यो परिवार ॥ सो०  
 ॥ ३ ॥ जूख तृषा खमें अनि घणीरे । करतो कूर आहार । केवल माहि  
 मा सुर करेरे । कूरगड्ढ अणगार ॥ सो० ॥ ४ ॥ लाजथी लोअ बाधे घ  
 णोरे । आण्यो मन वैराग । कपिल थयो मुनि केवलीरे । ते मुजनें सो  
 जाग ॥ सो० ॥ ५ ॥ अणिका सुत गढनो धणीरे । द्वीणजंवा वलि जा  
 ण । कीधो अंतगम केवलीरे । गंगाजल गुणखाण ॥ सो० ॥ ६ ॥ पन्न  
 रस तापस जणीरे । दीधी गौतमें दिक्ख । ततकृण कीधा केवलीरे । जां  
 मुज मानी शीख ॥ सो० ॥ ७ ॥ पालक पापीयें पीजियारे । खंयक सूरि  
 ना शिष्य । जनम मगगधी डोक्यारे । आपे मुज आशीष ॥ सो० ॥ ८ ॥  
 चंद्र रुद्रनें चालतारे । दीधो दंमप्रहार । नव दीक्षित थयो केवलीरे । ते गुरु  
 पण नेणी वार ॥ सो० ॥ ९ ॥ धन रय कारक नाधुनेंरे । पडिलाभ्यो उवांस ।  
 मृगलो ज्ञावना ज्ञावनेरे । पोहोतो स्वर्ग आवास ॥ सो० ॥ १० ॥ निज



अपराध खमावतीरे । मुंक्क्यो मनर्थो मान । मृगावताने में दियुंरे । निर्मल  
 केवल ज्ञान ॥ सो० ॥ ११ ॥ मरुदेवी गज ऊपरेंरे । देखी पुत्रनी रुद्र ।  
 मुजने मनमांहे धर्योरे । ततहण पामी सिद्ध ॥ सो० ॥ १२ ॥ वीर वंदन  
 चाल्यो मारगेंरे । चांप्यो चपल तुरंग । दर्दुरनामें देवतारे । तेह थयो मुज  
 संग ॥ सो० ॥ १३ ॥ प्रनुपाय पूजन नीसरीरे । दुर्गला नामें नार । काल  
 धर्म विचमां करीरे । पोहोती स्वर्ग मजार ॥ सो० ॥ १४ ॥ कायानी शोभा  
 कारिमीरे । रूप किसुं अजिमान । जस्त आरीशा जुवनमांरे । पाम्यो केवल  
 ज्ञान ॥ सो० ॥ १५ ॥ आषाढचूति कलानिलोरे । प्रगट्यो जस्त सरूप  
 नाटक करतां पामियोरे । केवलज्ञान अनूप ॥ सो० ॥ १६ ॥ दिहा दिन  
 कान्तसग रह्योरे । गजमुकुमाल मशाण ॥ सोमल शीश प्रजालियुंरे । सिद्धि  
 गयो शुभ्र जाण ॥ सो० ॥ १७ ॥ गुणसागर थयो केवलीरे । सांजली  
 पृथिवी चंद । पोतें केवल पामियोरे । सेवकरे सुर इंद्र ॥ सो० ॥ १८ ॥  
 एम अनेकमें उद्धर्योरे । मुंक्क्या शिवपुर वास । समयसुंदर प्रभु वीरजीरे ।  
 मुजने प्रथम प्रकाश ॥ सो० ॥ १९ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वीर कहे तुमे सांजलो । दान शीयल तप जाव । निंदा ठे अ  
 ति पापिणी । धर्म कर्म प्रस्ताव ॥ १ ॥ पर निंदा करतां थकां । पापें पिर  
 जराय । वेढ राढ बाधे घणी । दुर्गति प्राणी जाय ॥ २ ॥ निंदक सरिखो  
 पापियो । जूंको कोई न दिछ । बलि चंमाल समो कह्यो । निंदक वदन अ  
 दिछ ॥ ३ ॥ आदि प्रशंसा आपणी । करतो इंद्र नरिंद । लघुता पामें लो  
 कमां । नासे निजगुण वृंद ॥ ४ ॥ को केहनी म करो तुमे । निंदा ने अ  
 हंकार । आप आपणे ठामें रहो । सहुको जलो संसार ॥ ५ ॥ तो प  
 ण अधिको जाव ठे । एकाकी समरत्थ । दान शीयल तप त्रणे जलां । प  
 ण जाव विना अयकत्थ ॥ ६ ॥ अंजन आंखें आंजतां । अधिको आणी  
 रेख । रजमांही तज काढतां । अधिको जाव विशेष ॥ ७ ॥ जगवंत हठ  
 जंजण जणी । चारे समान गणंत । चार करो मुख आपणां । चउविध  
 धर्म जणंत ॥ ८ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ ढाल पांचमी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वीर जिणेसर इम जणें रे । वेठीं परखदा वार । धर्म करो तु  
मे प्राणियारे । जिम पामो जव पाररे । धर्म हीये थरो ॥ १ ॥ धर्मना चा  
र प्रकारो रे । जवियण सांजलो । धर्म मुक्ति सुख कारो रे ॥ धर्म० ॥  
( ए आंकणी ) धर्मथकी धन संपजे रे । धर्मथकी सुख होय । धर्मथकी  
आरति टले रे । धर्म समो नहिं कोयरे ॥ धर्म० ॥ २ ॥ दुर्गति पन्तां प्रा  
णीया रे । राखे श्री जिनधर्म । कुटुंब सहको कारीमुंरे । मत चूलो जवि  
जर्म रे ॥ धर्म० ॥ ३ ॥ जीव जिके सुखिया हूआरे । वली होवे होसी जेह  
ते जिनवरना धर्मथी रे । मत कोई करो संदेह रे ॥ धर्म० ॥ ४ ॥  
सोलशें ठासठ सेंमरे । सांगानेर मजार ॥ पद्मप्रभु सुपसाजले रे । एह  
जण्यो अधिकार रे ॥ धर्म० ॥ ५ ॥ सोहम सामी परंपरा रे । खरतर  
गढ कुलचंद । युगप्रधान जग परगडोरे । श्री जिनचंद सूरीम रे ॥ धर्म० ॥  
६ ॥ तास शिष्य अतिर्दापतो रे । विनय वंत जशवंत । आचारिज चढती कजा  
रे । जिन सिंह खरिमहंत रे ॥ धर्म० ॥ ७ ॥ प्रथम शिष्य श्री पूज्यनारे ।  
सकलचंद तस शिष्य । समयसुंदर वाचक जणें रे । संव सदा सुजगीस रे ॥  
धर्म० ॥ ८ ॥ दान शील तप जावना रे । सरस रच्यो संवाद । जणतां गुणतां  
जावथुं रे । रुद्रिसमृद्धिसुप्रशादो रे ॥ धर्म० ॥ ९ ॥ ❀ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ चक्रेश्वरी देवी आरती ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जय जय आरति देवी तुमारी । नित्य प्रणमूं हूं तुम चरणारी  
जय० ॥ १ ॥ श्री मिश्रचलगिरी रखवाजी । नाम चक्रेश्वरी जग सौख्या  
ली ॥ जय० ॥ २ ॥ सुविह्वल गठनी शासन देवी । सकल श्री संवने  
सुख करवी ॥ जय० ॥ ३ ॥ निजवट दीजडी रत्न विराजे । काने कुंज  
दोय रवि शशि ठाजे ॥ जय० ॥ ४ ॥ बांहे बाजुबंध वेरसा मोहे । नीजवण स  
हु जन मन मोहे ॥ जय० ॥ ५ ॥ सोवन मय नित्य चूडी खजके । पा  
ये घुघरना घम घम घमके ॥ जय० ॥ ६ ॥ बाहन गरुड चढ्या बहु प्रे  
में । तुज गुण पार न पामूं केमें ॥ जय० ॥ ७ ॥ चूनडी जमामां देह अति  
दीपे । नवमरा हारे जग सह जीपें ॥ जय० ॥ ८ ॥ नित नित मानी

अपराध स्वभावतीरे । मुंक्क्यो मनर्थो मान । मृगावतीने में दिरुंरे । निर्मल  
 केवल ज्ञान ॥ सो० ॥ ११ ॥ मरुदेवी गज ऊपरैरे । देखी पुत्रनी रुद्ध ।  
 मुज्जने मनमांहे धरचोरे । ततद्दण पामी सिद्ध ॥ सो० ॥ १२ ॥ वीर बंदन  
 चाल्यो मारगैरे । चांण्यो चपल तुरंग । दर्दुरनामें देवतारे । तेह थयो मुज्ज  
 संग ॥ सो० ॥ १३ ॥ प्रनुपाय पूजन नीसरीरे । दुर्गला नामें नार । काल  
 धर्म विचमां करीरे । पोहोती स्वर्ग मजार ॥ सो० ॥ १४ ॥ कायानी शोभा  
 कारिमीरे । रूप किंसुं अजिमान । जस्त आरीशा नुवनमांरे । पाम्यो केवल  
 ज्ञान ॥ सो० ॥ १५ ॥ आषाढनूति कलानिलोरे । प्रगट्यो जस्त सरूप  
 नाटक करतां पामियोरे । केवलज्ञान अनूप ॥ सो० ॥ १६ ॥ दिहा दिन  
 कान्तसग रहोरे । गजसुकुमाल मशाण ॥ सोमल शीश प्रजालियुंरे । सिद्धि  
 गयो शुभ जाण ॥ सो० ॥ १७ ॥ गुणसागर थयो केवलीरे । सांजली  
 पृथिवी चंद । पोतें केवल पामियोरे । सेवकरे सुर इंद्र ॥ सो० ॥ १८ ॥  
 एम अनेकमें उद्धर्योरे । मुंक्क्या शिवपुर वास । समयसुंदर प्रभु वीरजीरे ।  
 मुज्जने प्रथम प्रकाश ॥ सो० ॥ १९ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वीर कहे तुमे सांजलो । दान शीयल तप जाव । निंदा ठै अ  
 ति पापिणी । धर्म कर्म प्रस्ताव ॥ १ ॥ पर निंदा करतां थकां । पापें पिरु  
 जराय । वेढ राढ बाधै घणी । दुर्गति प्राणी जाय ॥ २ ॥ निंदक सरिखो  
 पापियो । जूंमो कोई न दिछ । बलि चंमाल समो कह्यो । निंदक वदन अ  
 दिछ ॥ ३ ॥ आदि प्रशंसा आपणी । करतो इंद्र नरिंद । लघुता पामें लो  
 कमां । नासे निजगुण वृंद ॥ ४ ॥ को केहनी म करो तुमे । निंदा ने अ  
 हंकार । आप आपणे ठामें रहो । सहुको जलो संसार ॥ ५ ॥ तो प  
 ण अधिको जाव ठे । एकाकी समस्तथ । दान शीयल तप त्रणे जलां । प  
 ण जाव विना अयकत्थ ॥ ६ ॥ अंजन आंखें आंजतां । अधिको आणी  
 रेख । रजमांही तज काढतां । अधिको जाव विशेष ॥ ७ ॥ जगवंत हठ  
 जंजण जणी । चारे समान गणंत । चार करी मुख आपणां । चउविध  
 धर्म जणंत ॥ ८ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ ढाल पांचमी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वीर जिणोसर इम जणें रे । वेठी परखदा वार । धर्म करो तु  
मे प्राणियारे । जिम पामो जव पाररे । धर्म हीये धरो ॥ १ ॥ धर्मना चा  
र प्रकारो रे । जवियण सांजलो । धर्म सुक्ति सुख कारो रे ॥ धर्म० ॥  
( ए आंकणी ) धर्मथकी धन संपजे रे । धर्मथकी सुख होय । धर्मथकी  
आरति टले रे । धर्म समो नहिं कोयरे ॥ धर्म० ॥ २ ॥ दुर्गति पफ्तां प्रा  
णीया रे । राखे श्री जिनधर्म । कुटुंब सहको कारीमुरे । मत जूलो जवि  
जर्म रे ॥ धर्म० ॥ ३ ॥ जीव जिके सुखिया हूआरे । वली होवे होसी जेह  
ते जिनवरना धर्मथी रे । मत कोई करो संदेह रे ॥ धर्म० ॥ ४ ॥  
सौजशे ठासठ समरे । सांगानेर मजार ॥ पद्मप्रभु सुपसाज्जेरे । एह  
जण्यो अधिकार रे ॥ धर्म० ॥ ५ ॥ सोहम सामी परंपरा रे । खरतर  
गढ कुलचंद । युगप्रधान जग परगडोरे । श्री जिनचंद सूरीस रे ॥ धर्म० ॥  
६ ॥ तास शिष्य अतिदीपतो रे । विनय वंत जशवंत । आचारिज चढती कला  
रे । जिन सिंह सूरिमहंत रे ॥ धर्म० ॥ ७ ॥ प्रथम शिष्य श्री पूज्यनारे ।  
सकलचंद तस शिष्य । समयसुंदर वाचक जणें रे । संव सदा सुजगीस रे ॥  
धर्म० ॥ ८ ॥ दान शीज तप जावना रे । सरस रच्यो संवाद । जणतां गुणतां  
जावशुं रे । ऋदिसमृद्धिसुप्रशादो रे ॥ धर्म० ॥ ९ ॥ ❀ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ चक्रेश्वरी देवी आरती ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जय जय आरति देवी तुमारी । नित्य प्रणमं हुं तुम चरणारी  
जय० ॥ १ ॥ श्री मिठाचलगिरी रखवाली । नाम चक्रमरी जग सोख्या  
ली ॥ जय० ॥ २ ॥ सुविहृत गवनी शासन देवी । सकल श्री संवने  
सुख करेवी ॥ जय० ॥ ३ ॥ निजवट दीजडी रत्न विराजे । काने कुंज  
दोय रवि शशि ठाजे ॥ जय० ॥ ४ ॥ बांहे बाजुबंध वेरखा मोहे । नीजवर्ण स  
हु जन मन मोहे ॥ जय० ॥ ५ ॥ मोवन मय नित्य चूडी खजके । पा  
ये घूघरना घम घम घमके ॥ जय० ॥ ६ ॥ बाहन गरुड चढ्या बहु प्रे  
में । वृज गुण पार न पानुं केमें ॥ जय० ॥ ७ ॥ चूनडी जमामां देह अति  
दीपे । नवगरा द्वारे जग सह जीपे ॥ जय० ॥ ८ ॥ नित नित मानी

आरती उतारे । रोग सोग जय दूर निवारे ॥ जय० ॥ ९ ॥ तस घर पुत्र  
पुत्रादिक ठाजे । मन वंछित सुख संपद राजे ॥ जय० ॥ १० ॥ देवचंद्र  
सुनि आरति गावे । जय जय मंगल नित्य वधावै ॥ जय० ॥ ११ ॥

॥ ❀ ॥ बीकानेर, श्री कुंथुजिनचैत्यप्रतिष्ठा स्त० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दादा चिरंजीवो० ॥ ( इस चालमें ) ॥ ❀ ॥ आज हर्ष  
जयो त्रिचुवन नायक कुंथु जिनेसर जेटिया ॥ ( आ० ) प्रनु मस्तक  
मुगट विराजैठै । रविजिम कुंजलयुग ठाजै ठै । गुण सगला अंग  
समाजै ठै ॥ ( आ० ) ॥ १ ॥ प्रनु चौतीश अतिशय धारक ठै ।  
बांणीना गुण विस्तारक ठै । सहु देवेंद्र जिणना पायक ठै ॥ ( आ० )  
॥ २ ॥ प्रनु सिंहासण पर सौहैठै । जसु बत्रचामर शिर होवै ठै । जवि  
यणना मनकुं मोहै ठै ( आ० ) ॥ ३ ॥ प्रनु ध्यानं जे होय रंग राता । ते  
पामें नवनिधि सुखशाता । अवसानें मुक्तिपुरी पाता ( आ० ) ॥ ४ ॥ प्रनु  
कुरुरु कुदेवकुं में ध्यायो । जब काल अनादी दुखपायो । अवतो तुम  
शरणें हुं आयो ( आ० ) ॥ ५ ॥ प्रनु विरुध तुहारा चित धरने । जब ज  
य टालो सुनिजर करनें । जिम जगमें सहु जस तुम वरनें ( आ० )  
॥ ६ ॥ संवत नगणीसै इक्कीशै । जेठ नज्जल दशमी मन हींसै । करी  
चैत्य प्रतिष्ठा शुभ दीसै । ( आ० ) ॥ ७ ॥ प्रनु आज सफल जयो दि  
न मेरो । रवि जिम प्रगट्या बीकानेरो । सहु आनंदकारक संघ तेरो  
( आ० ) ॥ ८ ॥ जिन हंस सूरेश्वर महाराजा । थाप्या अतिशय धर  
जिनराजा । गुरु लक्ष्मीप्रधान सेवणकाजा ( आ० ) ॥ ९ ॥ ❀ ॥  
इति विक्रमपुर मध्ये श्री कुंथुनाथ जी चैत्यप्रतिष्ठा स्तवनम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीशीतल जिन स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( श्रीशंखेसर पाशजिनेसर ) ॥ ( इस चालमें ) ॥ ❀ ॥  
श्रीशीतल जिनचंद्र अनंत गुणाकरु । महा गोप महामाहण जगपति  
सुख करु । जगगुरु जगदाधार शरण तेरे सदा । रहतां स्वपनमें दुख  
पांसुं नहीं हुं कदा ॥ १ ॥ तूंही चिदानंद देव तूंही मुक्त गुरु अठै । तूंही तात  
तूंही मात तूं ही बंधवअठै । कांम धेतुं चिंतामणि सुरतरु तूं मही । अक्षय

सुख दातार तुं ही पायो मही ॥ २ ॥ तुमनामें अडसिध नवे निध पाइये ।  
दिन २ बढतो तेज कीरति जगजाइये । इंद नरिंद सह बस होय तुम सेव  
तां । उठव आनंद होय सहगुण केवतां ॥ ३ ॥ तप जप संजम चार कठू  
नहीं बणसके ॥ बहुल कर्मके जोर चित नहि रहसके । जो आतम गुण  
ग्यान प्रगट होय माहरो । तो पांसुं सह जेद त्रिनकमें ताहरो । ब्रह्मा  
विष्णु महेश जाणुं सुज सारपा । बीतरागतुं देव करीमें पारखा । दीनदया  
ल दया निधि शिवसुख दीजिये । मोहन निजगुण पाय एही जश लीजिये  
इति जगन्मरण श्रीशीतलजिन स्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( श्रीसंखेसर पाश० ) ( और ) नदी जमुनाके तीर उमै दो  
य पांखिया । ( हारा लाज उ० ) इस चालमें ॥ ❀ दृढरथ नंदानंद पूरण  
अतिशय धरु । बदन कमलको तेज देखी त्रिपै दिन करु । अंग उ  
पांग लक्षण दीसै सह दीपता । रूपे सुर नर इंद सहकुं जीपता ॥ १ ॥  
सुगढ कुंमल गलहार बाज्रबंध सोहता । बद्धस्थल श्रीवठ तिलक मनमो  
हता । उत्र चामर चामरुज गुण सह फरसता । अणियाजा दोय नेत्र अ  
मीरस वरसता ॥ २ ॥ देव नुवन जिम चैत्य वाण्यो बहु जावसै । देखी प्र  
फुल्लित होय सह गुण दावसै । अनुपम महमा देखि चित अति मोहि  
यो । आनंद अधिक अपार हियामें सोहियो ॥ ३ ॥ कुरुर कुदेव कुयर्म  
सेव्यो बहुकाजमें । मोह मिथ्यानके जोर पड्यो बहुजाजमें । पूरण पु  
न्य हिय जोग प्रनु दग्गण मिल्यो । प्रव प्रय संकट दुक्ख सह निशे ट  
ल्यो ॥ ४ ॥ तारण प्रवजल मोहि शीतल प्रनु जाणियो । तुम गुण  
अपरंपार हिया में पिगाणियो । शिवसुख लक्ष्मी प्रधान मेवक बरी अणी ।  
मोहन प्रनु सुख फंद मिले शीतल धणी ॥ ५ ॥ ❀ ॥

इति कलिकत्तामंरुण श्री शीतलनायजी स्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ताल तुमरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ बीगल नु तेरी दोन्तीमें । मेरी सुमता गली मेहरबान चईरे ॥  
( बी० ) आप नहीं आवे बांधा पठावे । तेरी सुन कुखान चईरे ॥ ( बी० )



॥ १ ॥ शासन नायक एही अरज है । दीजै दरश वनी बेर जईरे ( वी० ) ॥ २ ॥  
 आश दाशकी पूरन कीजै । चरण शरण लपटाइ रहीरे ( वी० ) ॥ ३ ॥  
 इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिन जीसैं मोरी० ( इस चालमें ) ॥ सदा सहाई शांति जिने  
 सर जवहुख दूर गमाय ( जलांजी जला जव० ) । विश्वशेनके कुलमें सुर  
 तरु । अचिराके नंद कहाय ( ज० ) । जनम जूमि हथणा पुर जाके । मृ  
 ग लंठन सुख दाय ( ज० ॥ १ ॥ स० ) ॥ तीश अधिक दश धनुष प्रमा  
 णैं । काया कंचन सोजाय ( ज० ) कुरुवंश कुल लाख बरश स्थित । केव  
 ल ग्यांन बरदाय ( ज० ॥ २ ॥ स० ) गर्ज थकां प्रनु शांति करी जव ।  
 शांति नाथ पद पाय ( ज० ) जव जव जमतां शरणें आयो । अवतो करि  
 यै सहाय ( ज० ॥ ३ ॥ स० ) ज्युं पारेवा ऊपर तुमनें । करुणा अधिक  
 कराय ( ज० ) परतिख प्रनुपुर कलि कत्तामें । सहु जन वांछित दाय  
 ( ज० ॥ ४ ॥ स० ) मुक्तिकमल कहै शिवसुख दायक । संकट दूर पुलाय  
 ( ज० ॥ ५ ॥ स० ) इति कलिकत्ता मंमन श्री शांतिनाथजी स्तवनम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रनुजीकी महमा अजव वनीजी मारो मनसो लियोरे लोजाय  
 ( जलां जी प्रनु मनडोलियोरे लोजाय जी ) । विश्वशेन अचराजीके नं  
 दा । शांतिनाथ मन जाय ( ज० प्र० ) मस्तक मुगट काने युग कुंमज ।  
 उर अंगियां रही ढाय ( जलां० प्र० ) ॥ १ ॥ मोहनी मूरत सोहनी मूरत  
 सहु जनकं सुखदाय । नाम ग्रहण करतां जिनजीको । सुरगण पै  
 सहु पाय ( जलां० प्र० ) ॥ २ ॥ ईत उपद्रव छुख सहु टालै । नित प्रति  
 मंगल थाय ( ज० ) मुक्तिकमल कहै सुरतरु सरिखा । मनवंछित फल दा  
 य ( जलां० प्र० ) ॥ ३ ॥ इति द्वितीय शांतिनाथजी स्तवनम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ काती महोव्व वधाई लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रथ चढ जाहु नंदन आवत है । ( इस चालमें ) ॥ ❀ ॥  
 आज नगरमें हरख वधाई । समवसरण प्रनु आवत है । ( आ० ) धरम

जिनेशर जग परमेशर । शांति सुरत मनभावत है ( आ० ) ॥ १ ॥ अ  
नुपम रयण जनी उर अंगियां । उगट कुंज चित्त चावत है ( आ० )  
॥ २ ॥ उत्र चामर चामरुज दीपत । नवसर हार सुहावत है ( आ० )  
॥ ३ ॥ सरदशशि सुख कमल विराजत । रविजिम तेज फैलावत है ( आ० )  
॥ ४ ॥ नर नारी सह अंग आचूषण । लुल लुल शीश नमावत है ( आ० )  
॥ ५ ॥ मणि सुगता फल अहृत श्रीफल । जर जर थाल वधावत है  
( आ० ) ॥ ६ ॥ बीणा मृदंग ताल कंसाळा । मधुर ध्वनी गुण गावत है  
॥ ७ ॥ सहपुर इंद्र धजा अति दीपत । विविध बाजित्र सुहावत है ॥ ८ ॥  
इत्यादिक आभंवर बहुविध । कहतां पार न आवत है ॥ ९ ॥ ( आ० )  
कार्तिक सुद पूनम दिन उठव । देख सह सुख पावत है ( आ० ) ॥ १० ॥  
धन्यभाग कलिकत्ता पुरमें । मोहन प्रनु गुण गावत है । ( आ० ) ॥ ११ ॥  
इति कलिकत्ता कार्तिक महोठव वर्णन श्रीधरमनाथ स्वामी बधाई सं० ॥

॥ ❀ ॥ अथ शासन नायक बधाई ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( केशरियानें जाजको लोक० इस चालमें ॥ ❀ ॥

हमारै आज आनंद बधाई । प्रनु वीरचरण सुखदाई । ( हमारै आज आनंद  
बधाई ) सिद्धार्थ नंदन जगबंदन । त्रिशला मात कहाई । दूत्री कुंभमें ज  
न्म जियो है । सुर नर आवै धाई ( ह० आ० ) ॥ १ ॥ कंचन वरण अ  
धिक वन सोजित । लंठन व्याघ्र सुहाई । तीन ग्यान संयुत प्रनु कहिये ।  
अविषाणकुं सुखदाई ( ह० आ० ) ॥ २ ॥ केवल पाय सबी सुरसंगे । पा  
वा पुरमें आई । ममवमरण विच देशनादेतां । परखदा चार बनाई ( ह०  
आ० ) ॥ ३ ॥ नृमंजुल विच बहुत जीवकुं । जवजल पार लंवाई । च  
रम चौमाशि पावा पुरि करके । शिवपुर पंथ मिधाई ( ह० आ० ) ॥ ४ ॥  
चौराशी लख जोरामें फिरतां । काल अनादि गमाई । पुन्य संयोगे प्रनु  
तुम जेव्या । पानिक हर पुजाई ( ह० आ० ) ॥ ५ ॥ नारण नरण जग  
विजन बहल । शिवरमणी बरदाई । लक्ष्मी प्रधान सेवे कर जोनी । मोहन  
करै सुखपाई ( ह० ) ॥ इति बधाई संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ श्रावककी करणी लि० ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रावक तूं ऊठे परजात । च्यारघनी ले पिठलीरात । मनमें स  
मरे श्री नवकार । जिम लाजै जवसायर पार ॥ १ ॥ कवण देव कवण  
गुरुधर्म । कवण हमारे ठे कुलकर्म । कवण हमारे ठे व्यवसाय । एहवो  
चितवजे मन मांह ॥ २ ॥ सामायक लेजे मनशुद्धि । धरम तणी धरी हि  
यमै बुद्धि । पम्किमणो कर रयणी तणो । पातक आलोए आपणो ॥ ३ ॥  
काया सगति करे पचखाण । सूधी पाले जिनवर आंण । जण जे गुण  
जे तवन सिझाय । जिण हुंती निसतारो थाइ ॥ ४ ॥ चीतारे नित चउदै  
नेम । पाले दया जीवै तां सीम । देहरै जाय जुहारे देव । द्रव्यत आवित  
कर जे सेव ॥ ५ ॥ पोशाले गुरु वंदन जाय । सुणे वखाण सदा चितलाय ।  
निरदूषन सूज्जतो आहार । साधानें दीजे सुविचार ॥ ६ ॥ साहमी बल्ल  
करि जे घणा । सगपण मोटा साहमी तणा । दुखिया हीणा दीना देख ।  
करि जे तास दया सु विसेष ॥ ७ ॥ घर अनुसारै दीजे दान । मोटासूं  
मकरे अजिमान । गुरुनैं मुख लेजे आखनी । धरम न मेल्ले एका घडी  
॥ ८ ॥ वारुशुद्ध करे व्यापार । उंठा अधिकानों परिहार । मज्जरे केहनी  
कूनी साष । कूनासोंस कथन मत जाष ॥ अनंतकाय कहियै वत्तीस  
अज्जह वावीसे विसवा वीश । ते जहण न करी जै किमैं । काचा कवला  
फल मत जिमैं ॥ १० ॥ रात्री जोजननो बहु दोष । जाणीनैं करिजे सं  
तोष । साजी साबू लोहने गुली । मधु धाहडी मवेचे वली ॥ ११ ॥ बलि  
मकरावे रंगण पाम । दोषण वणा कह्या ठै तास । पाणी गल जे वे वे  
वार । अणगल पीधां दोष अपार ॥ १२ ॥ जीवाणीनां करे जतन । पात  
क ठोडी करिजे पुन । ठाणां इंधण चूल्है जोय । वावर जे जिम पाप न  
होइ ॥ १३ ॥ घृतनीपर वावर जे नीर । अणगल नीर मधोए चीर । वारे  
व्रत सूधा पाल जे । अतीचार सगला टाल जे ॥ १४ ॥ कहिया पनरे क  
रमा दान । पाप तणी पर हरि जे खान । शीश मलेजे अनरथ दंरु । मि  
थ्या मेल मज्जरिजे पिंड ॥ १५ ॥ समकित शुद्ध हीयमै राख जे । बोल  
विचारिनें जाख जे । उत्तम ठामें खरचे वित्त । परउपगार करे शुभचित्त

॥ १६ ॥ तेज तक घृत दूधनें दही । उग्धाना मतमेले सही । पांचे तिथ  
मकरे आरंभ । पाले शीज तेजे मनदंज ॥ १७ ॥ दिवश्चरम कीजे च  
उविहार । च्यारे आहार तणोपरिहार । दिवश तणा आलोए पाप । जि  
म जाजे सगला संताप ॥ १८ ॥ संध्या आवश्यक साचवे । जिनवर च  
रण शरण जव जवे । च्यारे शरणां दृढ करि गए । सागारी अणशण लें  
सुग ॥ १९ ॥ करे मनोरथ मन एहवा । जाजं तीर्थ शेजुंजै जेहवा । समे  
त शिखर आवू गिरनार । जेटोम कवहुं धन अवतार ॥ २० ॥ आव  
ककी करनी वे एह । एहर्था थाये जवनो ठेह । आठे करम पसे पात  
ना । पापतणा बूटे आमला ॥ २१ ॥ वारू लहीये अमर विमान । अ  
नुक्रम पावे शिवपुर थान । कहै जिन हर्ष वणें ससनेह । करणी छुख  
हरणी वे एह ॥ २२ ॥ इति श्रावकके अहनिशि कर्तव्य संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीपार्श्वजिन स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुण अर दाशा सुगुण निवाशा । अमचीपूरो प्रनु आशा रा  
ज ( सु० ) ॥ देख उदाशा अपणा दाशा । दीजे कवुक दिजाशा राज  
॥ १ ॥ ( सु० ) ॥ चानी चटकी जव मांहे जटकी । नाच्यो में विधन  
टकी राज ( सु० ) हिव मन हटकी आपसुं अटकी । जागुं प्रनुपाय  
जटकी राज ॥ २ ॥ ( सु० ) ॥ ते हम दाजी सुगति संजाली । प्रांत अमे  
हीज पाली राज ( सु० ) एक हथाली बाजे ताली । वात अचंजा वाली  
राज ॥ ३ ॥ ( सु० ) ॥ ते उपगारी पाश तुझारी । सेवामें विध सारी  
राज ( सु० ) ॥ तत्व विचारी मन सुध धारी । श्रीधमशी सुख कारी राज  
॥ ४ ॥ ( सु० ) ॥ इति श्रीपार्श्व जिन स्तवनम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चौपरु खेलन विचार स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( राग सोरठी ) ॥ ❀ ॥ अरे माहरा प्राणावा ( चतुर नर ) चौ  
परु इणविध खेलरे । अगुज करम मल गारके ( च० ) । जाजम कर वे  
राग रे । बनीय विजायन वेमजो ( च० ) । जहां नहीं कुमतिको जागरे  
( अरे० ) ॥ १ ॥ दान शील वप जावना ( च० ) । चौपड एह पसाररे ।  
आठ दाव एक बोल में ( च० ) आवुंई करम निवाररे ॥ २ ॥ ( अरे० )

देव गुरु धर्म तीनुं जला ( च० ) । पाशा एही जाणरे । अवशर कर हा  
थे लीया ( च० ) उज्जल लेश्या आणरे ॥ ३ ॥ दरशण ग्यांन चारित्र  
जला ( च० ) तीनुंई गुपती विचाररे । नव तत्व सात हिरदे धरो ( च० ) ।  
एसव शोला साररे ॥ ४ ॥ ( अ० ) पड्या अठा रे रहणदे ( च० ) पोवा  
रा ब्रत धाररे । दस लक्ष्ण दस धर्महै ( च० ) । हितकर हीयै विचाररे  
॥ ५ ॥ ( अ० ) षट्काया षकनीपनी ( च० ) हिरदै दया विचाररे । पु  
न्य उदै पंजनी पनी ( च० ) पंच महा ब्रत धाररे ॥ ६ ॥ ( अ० ) च्यार  
तीन काणा पड्या ( च० ) । सातुंई विसन निवाररे । जे दुरगति दायक  
सही ( च० ) । बाधै अनंत संसाररे ॥ ७ ॥ ( अ० ) चिहुं गति वाजी  
लग रही ( च० ) दुख सहा जरपूररे । कर्मकटे सुख ऊपजै ( च० )  
रत्नसागर कहै सूररे ॥ ८ ॥ ( अ० ) ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
इति श्रीचौपुरु खेलन हित उपदेश सिंहाय संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सेतुंज खेलन विचार स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सेतुंज खेल खिलारी । सब समझ देख सेतुंजकी बात । ल  
ख दोउं दल अपने परायें की जात । काऊ विध कर मोह वादस्याहकों  
मात । जब जाणुं तोय चतुर खेलन खिलार ( हे से० ) ॥ १ ॥ आहुं कर्म पिया  
दे आगै फूकतेही आवै । काम क्रोध गज चलत थंजत नहीं थंजै । लोभ  
जुंठ चारुं खूंटकी मरोड चल ध्यावै । मान मायाके तुरंग चालचपल देखावै ।  
मिथ्या मत सो वजीर वीरवाकै ढंग ठामो । वाकै मारवैकों दल अपनो संभार  
( हे से० ) ॥ २ ॥ तेरो ग्यान सो वजीर वीर तेरे ढंग ठामो । आठों अंग समकि  
तके पियादे हलकारो । त्याग सांढिया सवार पर सांढियां को मारो । सत्य व  
चन तुरंगसुं तुरंग निवारो । कृपा शील दोय फील राखो दलकै अगामी । परद  
ल कर मारो भिन में संहार ( हे से० ) । जप तप सत ब्रत याकै धेरे चिहुं ऊ  
जब वाकै चलनें की काइ रहे नई ठोर । जब तेरी होगी जीत दूजो हा  
रेगौ खिलारी । जब सुजश को तेरे शिर बधैगो मोड । ठामे इंद्र धरणिंद्र  
तोरे ढोलेंगे चवर । तेरो भजन भजेगौ गुण अगाह ( हे से० ) ॥ ३ ॥  
इति मङ्गलपुरुषोंकै सेतुंज खेलन विचार संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीमहावीर स्वामीको पारणो लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( छुहा ) ॥ श्रीअग्रिहंत अनन्त गुण । अतिशय पूरणगात्र ।  
 मुनि जे ज्ञानी जे संयमी । ते कहीयै उत्तम पात्र ॥ १ ॥ पात्र तणी अनुमो  
 दना । करतो जीरणसेठ । श्रावक अच्युय गति लहे । नव श्रेवेकां हेठ ॥ २ ॥  
 दश चतुमाश वीर जी । विचरत संयम वास । वेशाजापुर आवीया । इ  
 ग्यारमी चौमाश ॥ ३ ॥ ढाल । एकवर बोला हाथीया जी ( एहनी ) ॥  
 चौमाशी एह इग्यारमीजी । विचरत साहस धीर । वेशाजापुर बाहिरै जी ।  
 आव्या श्री महावीर ॥ १ ॥ ( जगत्गुरु त्रिशला नन्दनजी ) जलमें जे  
 व्या श्री जिनराय । सखीरी चौक पूरावो आय । मेरे जाग अनोपम थाय  
 ( ज० ) ॥ २ ॥ बलदेवनो ठे देहरोजी । तिहां प्रनु कावसग्ग लीध । पख  
 कखाण चतुमाशनो जी । स्वामी ए तप कीध ( जग० ) ॥ ३ ॥ जीरणसेठ  
 तिहां रहेजी । पाले श्रावक धर्म । आकारे तिण जंजल्या जी । जाणै  
 श्री जिन मर्म ॥ ( ज० ) ॥ ४ ॥ आज अठे उपवासीया जी । स्वामी श्री  
 ब्रधमान । काळ्हि सही प्रनु जीमस्यै जी । सें हथ देस्युं दान ॥ ( ज० )  
 ॥ ५ ॥ सदा सेठ इम चिंतवे जी । होसी सफल मुऊ आम । पद्द माश  
 गिणतां थकां जी । पूरी थई चतुमाश ॥ ( ज० ) ॥ ६ ॥ सामग्री आहार  
 नी जी । जीरण कीध तयार । प्रनुनो मारग देखतो जी । वेढो घरनें वार ॥  
 ( ज० ) ॥ ७ ॥ वारि आवेने प्राहुणा जी । निहुल्या एकणवार । प्रनुजी  
 कान पधारसी जी । में निहुल्या बारंवार ॥ ( ज० ) ॥ ८ ॥ पीठे करि  
 स्युं पारणो जी । हूं प्रनुनें पम्पिना । होय मनोरथ एहवो जी । नो विन  
 वरमै आन ॥ ( ज० ) ॥ ९ ॥ अवसर उज्या गोचरी जी । श्रीमित्रास्य  
 पूत । वेशाजापुर अवतां जी । पूरण वरेय पहुत्त ॥ ( ज० ) ॥ १० ॥  
 मिथ्याली जाणै नहां जी । जंगम तीरथ एह । चेमीनें कहे एहवो जी । कां  
 एक जिह्वा देह ॥ ( ज० ) ॥ ११ ॥ चाट्टनरनें बाकुजा जी । प्रनुनें आणी  
 दीध । नारागी नेहीजीया जी । तिहांप्रनु पारणो कीध ॥ ( ज० ॥ १२ ॥  
 देव वजायें हुंहुर्जी जी । जय बोले करजोनि । हेम बुद्धि हुंहुं तिहां जी ।  
 सार्दा बारह कोनि ॥ ( ज० ) ॥ १३ ॥ कढो सेठ नृत्तस्युं दीयो जी । कां



यो पारणो वीर । लोकां प्रतें इम कहै जी । में वैराई क्षीर ॥ ( ज० ) ॥  
 ॥ १४ ॥ राजादिक सहु ए कहै जी । धन धन पूरण सेठ । जंची करणी  
 तें करी जी । अवर सहू तुज हेठ ॥ ( ज० ) ॥ १५ ॥ जीरण सेठ सुणें  
 तवैजी । बाजित्र डुंडुनी नाद । अनन्त कीयो किहां पारणोजी । मनमें  
 थयो विखवाद ॥ ( ज० ) ॥ १६ ॥ हुं जगमें अजागीयो जी । मेरै नाया  
 सांम । कल्पवृक्ष किम पामीयै जी । मारू मंडल ठाम ॥ ( ज० ) ॥ १७ ॥  
 जेता मनोरथ में कीया जी । तेता रह्या मनमांहि । निरधन जिम जिम चिं  
 तवैजी । तिम तिम निरफल थाहि ॥ ( ज० ) ॥ १८ ॥ स्वामी तिहां कीयो  
 पारणोजी । कीयो अनेथ विहार । आया पाश संतानीया जी । तिहां सुनि  
 केवल धार ॥ ( ज० ) ॥ १९ ॥ वेशालापुर राजीया जी । लोकांसुं आणंद । राय  
 प्रश्न पूठै तिहांजी । सुगुरु चरण अरविंद ॥ ( ज० ) ॥ २० ॥ मेरै नगरमें  
 को अठे जी । जीवपुन्य जशवंत । कहै केवली आजतो जी । जीरण सेठ म  
 हंत ॥ ( ज० ) ॥ २१ ॥ राय कहै किण कारणैंजी । जीरण सेठ महंत ।  
 दान दीयो जिनवीरनेंजी । पूरण ते जसवंत ॥ ( ज० ) ॥ २२ ॥ रायप्रतें  
 कहै केवलीजी । पूरण दीनो दान । हेमवृष्टि फल तेहनें जी । अवरन कोई  
 प्रमाण ( ज० ) ॥ २३ ॥ देवलोक तिण वारमेंजी । जीरण घाल्योबंध ।  
 विना दान दीना लह्यो जी । उत्तम फल संबंध ॥ ( ज० ) ॥ २४ ॥ धनी  
 एक सुर डुंडुनी जी । जो न सुणें तो कान । लहि तो जीरण तो सहीजी ।  
 केवल अविचल ठाण ॥ ( ज० ) ॥ २५ ॥ राजा जीरणनें दीयोजी । अ  
 धिक मान सन्मान । मुख्य नगरमें थापीयोजी । जोवो पुन्यप्रमाण ॥ ( ज० )  
 ॥ २६ ॥ दान दीयो सुपात्रनें जी । ते निष्फल नवि जाय । पात्रदान अनु  
 मोदतांजी । जीरण जिम फल थाय ॥ ( ज० ) ॥ २७ ॥ इम जाणी अनु  
 दनाजी । दान सुपात्र रसाल । दान देवै सुपात्रनें जी । तेहनें नमें सुनिमा  
 ल ॥ ( ज० ) ॥ २८ ॥ इति श्री महावीर स्वामीको पारणो संपूर्णम् ॥  
 ॥ ❀ ॥ अथ सब पापादिक आलोयण स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ बेकरजोमी वीनवूंजी । सुणि स्वामी सुविदीत । कूरु कपट मूंकी  
 कनीजी । बात कहूं आपवीत ॥ १ ॥ ( कृपानाथ सुज वीनतो अवधार )

तुं समरथ त्रिनुवन धणीजी । सुज्जलें छुत्तर तार ॥ ( कृ० ) ॥ २ ॥ जवसायर  
 जमनां थकां जी । दीठा दुःख अनन्त । जाग संयोगे जेदीयोजी । जय जे  
 जण जगवंत ॥ ( कृ० ) ॥ ३ ॥ जे दुःख जांजे आपणोजी । तेहनें कही  
 येँ दुःख । परदुःख जेजण तूं सुण्यो जी । सेवकर्ते द्यो सुख ॥ ( कृ० )  
 आलोयण लोधां पखैजी । जीव रुजे संसार । रूपी लक्ष्मणा महामतीजी ।  
 एह सुणो अधिकार ॥ ( कृ० ) ॥ ५ ॥ दूषम काले दोहिलोजी । सूधो  
 गुरु संयोग । परमारथ पीतै नहीं जी । गमर प्रवाही लोग ॥ ( कृ० ) ॥ ६ ॥  
 तिण तुज आगलि आपणाजी । पाप आलोकें आज । माय बाप आग  
 लि बोलतां जी । बालक केही जाज ॥ ( कृ० ) ॥ ७ ॥ जिन धर्म २  
 सह कहै जी । थापे अपणी बात । सामाचारी जूई जूई जी । संसय  
 पंडु मिथ्यात ॥ ( कृ० ) ॥ ८ ॥ जाण अजाण पाँ करी जी । बोल्या  
 उत्सृज बोल । रतने काग उभावतां जी । हारयो जनम निदोल ॥  
 ( कृ० ) ॥ ९ ॥ जगवंत जाण्यो ते किहां जी । किहां सुज करणी एह ।  
 गजपाखर खर किम सहे जी । मवज विमाममण तेह ॥ ( कृ० ) ॥ १० ॥  
 आप परूपुं आकरो जी । जाणें लोक महंत । पिण न करुं परमादीयो  
 जी । मामाहस दृष्टांत ॥ ( कृ० ) ॥ ११ ॥ काल अनंतै मे लह्या जी ।  
 तीन गन श्रांकार । पिण परमादे पागिया जी । किहां जई करुं पुकार ॥  
 ( कृ० ) ॥ १२ ॥ जाणुं उकृष्टी करुंजी । उद्यत करुंअ विहार । धीरज  
 जीव धैर नहीं जी । पोतै बहु संसार ॥ ( कृ० ) ॥ १३ ॥ सहज पड्यो सुज  
 आकरो जी । नगमें स्त्रीवात । परनद्या करतां थकां जी । जाये दिननें  
 रत ॥ ( कृ० ) ॥ १४ ॥ किरिया करतां दोहिली जी । आलस आणें जीव ।  
 धर्म पखे धंघे पड्यो जी । नरो करस्ये रोव ॥ ( कृ० ) ॥ १५ ॥ आण हुंता  
 गुणको कहै जी । नो हरखुं निशि दीश । को हितसीख जली कहै जी ।  
 नो मन आणुं गैश ॥ ( कृ० ) ॥ १६ ॥ वाद जणी विद्याजणी जी । पर रंजण  
 उपदेश । मन संवेग धरयो नहीं जी । किम संसार तेरश ॥ ( कृ० ) ॥ १७ ॥ सु  
 त्र निर्जान बलाणतां जी । सुणतां करम विपाक । तिण एक मनमांहि ऊरजे  
 जी । सुज भरकट बेराग ॥ ( कृ० ) ॥ १८ ॥ त्रिविध २ कारि ऊचरुं जी । ज

गवंत तुह्य हजूर । वारवार जांजुं वलीजी । बूटकवारो दूर ॥ ( कृ० ) ॥ १९ ॥  
 आपकाज सुख राचितां जी । कीधा आरंज कोरु । जयणा न करी जी  
 वनीजी । देव दयापर नोरु ॥ ( कृ० ) ॥ २० ॥ वचन दोष व्यापक कहा  
 जी । दाख्या अनरथ दंरु । कूरु कपट बहु केजवी जी । ब्रत कीधा शत  
 खंरु ॥ ( कृ० ) ॥ २१ ॥ अण दीधो लीजै त्रिणो जी । तोही अदत्तादान ।  
 ते दूषण लागा घणाजी । गिणतां नावै ग्यान ॥ २२ ॥ ( कृ० ) चंचल  
 जीव रहै नहीं जी । राचै रमणी रूप । काम विटवण सीकहुं जी । ते तूं  
 जाणै सरूप ॥ २३ ॥ ( कृ० ) माया ममता में पड्योजी । कीधो अधिको  
 लोभ । परग्रह मेल्यो कारमो जी । न चढी संयम सोभ ॥ २४ ॥ ( कृ० )  
 लागा सुज्जनै लालचै जी । रात्री जोजन दोष । में मनभूंक्यो माहरो जी ।  
 न धर्यो धरम संतोष ॥ २५ ॥ ( कृ० ) इण जव पर जव दूहव्याजी । जी  
 व चौराशी लाख । ते सुज मिठामि डुकडंजी । जगवंत तोरी साख ॥ २६ ॥  
 ( कृ० ) करमा दांन पनरै कहाजी । प्रगट अढारै पाप । जेमें कीधा ते  
 सहजी । वगश २ माई वाप ॥ २७ ॥ ( कृ० ) सुज आधारै एतलोजी ।  
 सरदहिणाठै सुध । जिन ध्रम मीठो जगतमेंजी । जिम साकरनै दूध ॥  
 ॥ २८ ॥ ( कृ० ) रिषभदेव तुं राजीयोजी । सेतुंजगिरि सिणगार । पाप  
 आलोया आपणाजी । करप्रनु मोरी सार ॥ २९ ॥ ( कृ० ) मर्म एह जिन  
 धर्मनोजी । पाप आलोयां जाय । मनसुं मिठामि डुकडंजी । देतां दूर पु  
 लाय ॥ ३० ॥ ( कृ० ) तुं गति तुं मति तूं धणीजी । तुं माहिव तुं देव ।  
 आणधरुं शिरताहरी जी । जव २ ताहरी सेवा ॥ ( कृ० ) ॥ ३१ ॥ ( कलशः ) ॥  
 इम चढीय सेतुंज चरण जेठ्या नाभि नंदन जिनतणा । करजोनि आदि जि  
 णंद आगे पाप आलोया आपणा । श्रीपूज्य जिनचंद सूरि सद्गुरु प्रथम  
 शिष्य सुजश घणै । गणि सकलचंद सुसीस वाचक समयसुंदर गणि जणे  
 ॥ ३२ ॥ ❀ इति आलोयणागर्भित स्तवनं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः पद्मावती आलोयण सिंहाय ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिवै राणी पदमावती । जीवराशिखमावै । जाणपणुं जगदो  
 हिलो । इणवेला आवै ॥ १ ॥ ( तेसुज मिठामि डुकडं ) । आरहंतना सा

ख । जेमें जीव विराधिया । चउरासी लाख ॥ २ ॥ ( ते० ) सात लाख प्रथ  
वीतणा । साते अप्पकाय । सातलाख तेऊकायना । सातेवली वाय ॥ ३ ॥  
( ते० ) दस प्रत्येकवनस्पती । चउदह साधारण । विति चउगिंदी जीव  
ना । वेवेलाख विचार ॥ ४ ॥ ( ते० ) ॥ देवता तिरयंच नारकी । च्यार २  
प्रकासी । चउदह लाख मनुष्यना । एलाख चउरासी ॥ ५ ॥ ( ते० ) इण  
जव परनव सेविया । जे पाप अद्वार । त्रिविध २ करि परिहरुं । पुर्गति  
दातार ॥ ६ ॥ ( ते० ) हिंसा कीर्या जीवनी । बोल्या मिखावाद । दोष  
अदत्तादानना । मेथुन उनमाद ॥ ७ ॥ ( ते० ) परिग्रह मेळ्यो कारिमो ।  
कीर्या कांध विसेष । मान माया लोभमें कीया । बलि रागनें छेप ॥ ८ ॥  
( ते० ) कलहकरी जीव दूहव्या । दाना कूडा कलंक । निन्दा कीर्या पार  
की । रति अरति निस्संक ॥ ९ ॥ ( ते० ) ॥ चाडी खादी चौतरे । की  
र्या थांपण मोसो । कुगुरु कुदेव कुयर्मनो । जलो आयो जरोसो ॥ १० ॥  
( ते० ) ॥ पाटकीनें जवमें किया । जीवना वधवान । चिनीमार जव चि  
डकला । मारया दिनराति ॥ ११ ॥ ( ते० ) माठीगरजव माठला । जाल्या  
जलवास । धावर जील कोलीजवे । मृग मारया पाम ॥ १२ ॥ ( ते० ) ॥  
काजी सुत्ताने जवे । पटी मंत्र कठोर । जीव अनेक जवे किया । कीर्या पा  
प अवोर ॥ १३ ॥ ( ते० ) ॥ कोटवालनें जवमें किया । अकराकर दं  
रु । बंदीवान मराविया । कोरमा ठुमी मरु ॥ १४ ॥ ( ते० ) ॥ परमाधर  
मानडं जवे । दीया नारकी पुल्ल । वेदन जेदन वेदना । नामणा अति नि  
ख ॥ १५ ॥ ( ते० ) ॥ कुंजालनें जवमें कीया । निम्माह पचाव्या । नेली  
जव तिल पोलीया । पापा पेट जराय ॥ १६ ॥ ( ते० ) दालनें जव ह  
ल खड्या । फारया पृथवी पेट । सूरु निदान घणा किया । दीया बलध  
जपेट ॥ १७ ॥ ( ते० ) मालीनें जव रोपिया । नानाविध वृक्ष । नूज प  
त्र फल फलना । लागी पापना जह ॥ १८ ॥ ( ते० ) ॥ अवेवाड  
आंगमी । जराया अधिकाजार । पोठी कुंठ कीना पम्या । दया नावलि  
गार ॥ ( ते० ) १९ ॥ जीषाने जव वेनरघो । कीर्या रांगणि पास । अग  
नि आरंभ कीया घणा । धातुरवाड अम्याम ॥ ( ते० ) ॥ २० ॥ नृपणे

रण ऊज्जता । मारद्या मांणस वृंद । मदिरा मांश जह्वा घणा । खाधा मूल  
 नें कंद ॥ ( ते० ) ॥ २१ ॥ खाण खणावी धातुनी । पाणी कुलंच्या । आ  
 रंज कीधा अति घणा । पोतै पापज संच्या ॥ ( ते० ) ॥ २२ ॥ अंगार  
 कर्म कीया वली । धरमे दव दीधा । सुंसलेई वीतरागना । कूना कोशज  
 पीधा ॥ ( ते० ) ॥ २३ ॥ विखी जव उंदर लिया । गीलोई हत्यारी । मूढग  
 मार तणें जवै । में जूं लीख मारी ॥ ( ते० ) ॥ २४ ॥ जामुजंजातणें जवै । ए  
 केंद्री जीव । ज्वारी चिणा गहुं सेकिया । पामंता रीव ॥ ( ते० ) ॥ २५ ॥ खांण  
 पीसण गारना । आरंज अनेक । रांधण इंधण आगिना । कीया पाप नुदेग  
 ॥ ( ते० ) ॥ २६ ॥ विक्रथा च्यार कीधी वली । सेव्या पंच प्रमाद । इष्ट वियोग प  
 ड्यां किया । रोदन विषवाद ॥ ( ते० ) ॥ २७ ॥ साधु अनें श्रावक तणा ।  
 व्रत लेईजागा । मूल अनें उत्तर तणा । दूषण मुळ लागा ॥ ( ते० ) ॥ २८ ॥  
 साप विद्वु सिंह चीतरा । शिकरानें शमली । हिंसक जीव तणें जवै । हिं  
 सा किधी सवली ॥ ( ते० ) ॥ २९ ॥ सूआवमै दूषण घणा । वलि गरज  
 गलाव्या । जीवाणी ढोल्या घणा । सीलव्रत जंजाव्या ॥ ( ते० ) ॥ ३० ॥  
 जव अनंत जमतां थकां । कीया कुटंव संबंध । त्रिविध २ करि बोसरूं ।  
 तिणसुं प्रतिबंध ॥ ( ते० ) ॥ ३१ ॥ इणजव परजव इण परै । कीधा  
 पाप अखत्र । त्रिविध २ करि बोसरूं । करूं जनम पवित्र ॥ ( ते० ) ॥ ३२ ॥ राग  
 वैरानी जे सुणें । एत्रीजी ढाल । समय सुंदर कहै पापथी । बूटै ततकाज  
 ( ते० ) ॥ ३३ ॥ ❀ ॥ इति श्री आलोयण सिंहाय संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुन्य प्रकाश आलोयण वृक्षस्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ सकल सिद्धिदायक सदा । चौबीशे जिनराय । सज्ज  
 सामिनी सरसती । प्रेमें प्रणसुंपाय ॥ १ ॥ त्रिनुवनपति त्रिशलातणो । नंदन  
 गुणगंजीर । शासन नायक जगजयो । वर्धमान वरुवीर ॥ २ ॥ एक दिन  
 वीरजिणंदन । चरणें करी परिणाम । जविकजीवना हित जणी । पृष्ठे गो  
 तमस्वामि ॥ ३ ॥ सुगतिमार्ग आराधिई । कहो किणिपरि अरिहंत । सु  
 धा सरस तव वचनरस । ज्ञाप्ये श्रीजगवंत ॥ ४ ॥ अतीचार ? आलोइण ।  
 व्रतधरीई गुरुशाखि । जीव खमावो मयजजे । योनि चोरामी लाख ३ ॥ ५ ॥

विधिसुं वज्रिवोमरावीडं । पापस्थानक अठार ४ । च्यारशरण नित अनुमो५।  
निंदोष्टुरितआचारद॥६॥ शुभकरणी अनुमोदिइं ७ । आव जलो मनआणि८।  
अणशण अवशर आदरी ९ । नवपद जपो सुजाण ॥१०॥ शुभगति आराधन  
तणा । एते दश अधिकार । चित्तआणीनें आदरो । जिम पामोजवपार ॥८॥  
॥ ॐ ॥ ( दाल ? ) एठिंडी किहां राखी । इस चालमें ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ज्ञान दरिण चारित्र तप वीरज । ए पांचे आचार ।  
एहतणा इहजव परजवना । आलोइये अर्ताचारे ॥ १ ॥ प्राणी  
ज्ञान जणो गुणखाणी । वीरवदे डमवाणीरे ॥ प्रा० ॥ गुरुजवीये नही  
गुरु विनये । काले धरी बहुमान । सुत्र अर्थ तदुजय करी स्या ।  
जणीइं वही उपधानरे ॥ २ ॥ प्रा० ॥ ज्ञानोपगरण पाद पोथी । ठव  
णी नोकवाला । एहतणी कीधी आशानना । ज्ञान जक्ति नसंजालीरे  
॥ ३ ॥ प्रा० ॥ इत्यादिक विपरीत पणार्थी । ज्ञान विराध्युंजेह । आजव पर  
जव वलिय नवो जव । मिठामिठुकरु तेहरे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ ( समकित्तल्यो शुभ  
जाणी ) ॥ जिनवचनें शंका नविकीजे । नवि परमन अजिलाप । साधुत  
णी निंदा परिहरजो । फल संदेह मराखिरे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ स० ॥ सृष्टपणुं  
उमो पशंमा । गुणवंतनें आदरीइं । माहमीनें धर्मे करी धिग्ना । जगति प्र  
जावना करीयेरे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ म० ॥ संघचेत्य प्राशाद तणोजे । अवर्ण  
वाद मनलेल्यो । द्रव्य देवको जे विणमाग्यो । विणमंतां ज्वेख्योरे ॥ प्रा० ॥  
७ ॥ म० ॥ इत्यादिक विपरीत पणार्थी । ममकित्त खंड्युं जेह । आजव ॥  
प्रा० ॥ ८ ॥ ( चारित्रल्यो चित्तआणी ) पांचसुमति त्रिणागुपति विरार्थी । आ  
ठे प्रवचनमाय । साधुतणो धर्मे प्रमादे । अशुभ वचन मन कायरे ॥ प्रा०  
॥ ९ ॥ चा० ॥ आवकनें धर्मे मानायक । पोगहमां मनवाजी । जे जवणा  
पूर्वक जे साठे । प्रवचनमायनपालीरे ॥ प्रा० ॥ १० ॥ चा० ॥ इत्या  
दिक विपरीतपणार्थी । चारित्रल्योखंड्युं जेह । आजव ॥ मिठामि ॥ ११ ॥  
चा० ॥ बाँ नैदे तप नवि कोथी । उते योगे निजशक्ते । धर्मे मन वच का  
या वीरज । नविफोरकिनें नगतेरे ॥ प्रा० ॥ १२ ॥ चा० ॥ तप वीरज  
आचारो इणफे । विविध विगध्याजेह । आजव ॥ मिठामि ॥ प्रा० ॥



॥ १३ ॥ चा० ॥ वलीय विशेषे चारित्रकेरा । अतीचार आलोइयें । वीरजि  
ऐसर वयणसुंणीनें । पापमयल सविधोइयेंरे ॥ प्रा० ॥ १४ ॥ ॥ ❀ ॥

॥❀॥ढाल२॥पृथ्वी पाणी तेज । वान वनस्पती । ए पांचे थावरकह्या ए ।  
करीकरसण आरंज । खेत्रजेखेमीयां । कूवा तलाव खणावीयाए ॥ १ ॥ घर  
आरंजअनेक । टांकां जोइरां । मेडी माल विणावियाए । लिपण गुंण का  
ज । एणिपैरे परपेरे । पृथ्वी काय विराधीयाए ॥ २ ॥ धोयण नाहण पाणी ।  
जीलण अप्पकाय । ठोति धोति करि दूहव्याए । जाठीगर कुंजार । लोह  
सोवनगरा । जामुनुंजा लिहालागराए ॥ ३ ॥ तापण सेकण काजें । वस्त्र  
निखारण । रंगण रांधण रसवतीए । इणिपेरेकर्मदान । परिपेरेकेलवी । तेज  
वानु विराधीयाए ॥ ४ ॥ वाडी वन आराम । वावी वनस्पती । पान फूल फल  
चूंदीयाए । पौंहक पापड शाक । सेक्यां सूकव्या । ठे घां ठुंघां आर्थायां  
॥ ५ ॥ अलसीनें एरंरु । घाणी घालीनें । वणा तिलादिक पीलीयाए ।  
वाली कोलु मांहिं । पीलीशेलकी । कंद मूल फलवेचीयाए ॥ ६ ॥ एम एकेंद्री  
जीव । हएया हणावीया । हणतांजे अनुमोदीयाए । आजव परजवजेह ।  
वलीय० ॥ तेसुज० ॥ ७ ॥ क्रमी सरमीया कीडा । गामर गंडोला । इअज  
पूरा अलशीआए । वाजा जलो चूमेज । विचलित रसतणा । वली अथां  
णां प्रमुखनांए ॥ ८ ॥ इमवेइंद्रीजीव । जेमें दूहव्या । ते सुज० ॥ उदेही  
जुंलीख । मांकड मकोडा । चांचड कीडी कंथुआए ॥ ९ ॥ गदहीया वी  
मेल । कांनखजूरमा । गींमोला धनेरीयाए । इमतेइंद्री जीव । जेमें दूहव्यां  
तेसुजमि० ॥ १० ॥ माखी महर मांस । मसा पतंगीया । कंशारी कोलि  
या वराए । ढींकण वीचू तोरु । जमरा जमरीय । कौंता वग परु मांकडीए  
॥ ११ ॥ इमचौरिंद्री जीव । जेमेंदू० ॥ तेसुज० ॥ जलमांनांखी जाल । जल  
चर दूहव्या । वनमां मृग संतापीयाए ॥ १२ ॥ पीड्या पंखी जीव । पाडी  
पासमां । पोपट घाल्या पांजरेण ॥ इम पंचेंद्री जीव । जेमेंदू० ॥ तेसुज० ॥ १३ ॥

॥ ❀ ॥ ढाल ३ प्राणी वाणी हितकरीजी ॥ एचाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ क्रोध लोभ जय हासथी जी । बोल्या वचन असत्य ।  
कूडकरी धनपारकाजी । लीधांजेह अदत्तरे ॥ १ ॥ जिनजी मिठा

मि छुक्कड आज । तुहमाखें महाराजरे । जिनजी । देई सारु काजरे  
॥ जि० ॥ मि० ॥ ( आंकणी० ) ॥ देव मनुज तिर्यचनाजी । मैथुन  
मेव्याजेह । विषयारस लंपटपणेंजी ॥ वणुं विटंब्यो देहरे ॥ २ ॥ जि० ॥ परि  
ग्रहनी ममता करीजी । जव २ मैली आथि । जेहजिहां ते तिहां रहीजी ।  
कोईन आवै माथिरे ॥ ३ ॥ जि० ॥ ग्यणी ओजन जे करयाजी । कीधा जह  
अजह । रमना रसनी जालचेंजी । पापकर्या परतहरे ॥ ४ ॥ जि० ॥ व्रत  
जेई वीसारीयाजी । वली आंग्यां पचखाण । कपटहेतु किरियाकरीजी । की  
धा आप वखाणरे ॥ ५ ॥ जि० ॥ त्रिणवाजे आठ दूहेजी । आलोया अ  
ताचार । शिवगति आराधन तणोजी । एपहिलो अधिकाररे ॥ ६ ॥ जि० ॥

॥ ॐ ॥ दाल ४ ॥ साहेजदानी देशी ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ पंचमहाव्रत आदरो ॥ साहेजनीरे ॥ अथवा एपो व्रत  
वार तो सा० ॥ यथा शक्ति व्रत आदरो ॥ सा० ॥ पाजो निस्ती चारतो ।  
व्रतलीधा मंत्रारीये ॥ सा० ॥ हीयमे धरीय विचारतो । शिवगति आ  
राधन तणो ॥ सा० ॥ ए वीजो अधिकारतो । जीवमवे खमावीई ॥ सा० ॥  
योनि चौराशीजाखतो । मनशुद्ध करो खांमणां ॥ सा० ॥ कोइंगुरोपनरा  
खि तो० । सर्वमित्र करो चितवो ॥ सा० ॥ कोइ न जाणो शत्रुतो । रागद्वेष  
उम परीहरो ॥ सा० ॥ कांजे जन्म पवित्र तो० । माहमी मंध खमाविये ॥ सा० ॥  
जेंउपना अपर्नात तो० । मज्जन कुटुंब करी खांमणा ॥ सा० ॥ ए जिनशा  
मन रीततो० ॥ २ ॥ खमायें अने खमावीये ॥ सा० ॥ एहीज धर्मनो सारतो ।  
शिवगति आराधन तणो ॥ सा० ॥ एवाजो अधिकारतो । मृत्वावाद हिंसाचोरी  
॥ सा० ॥ धनमृर्छा मैथुन्नतो । क्रोध मान माया तृष्णा ॥ सा० ॥ प्रेममंद्रपेश  
न्यतो ॥ ७ ॥ निंदा कलह न कीर्जाई ॥ सा० ॥ रुडा न दीजे आलतो । शनि  
अस्ती मिथ्यातजो ॥ सा० ॥ माया मोम जंजाजतो ॥ ८ ॥ त्रिविध २ बोध  
माविये ॥ सा० ॥ पापन्यास अडास्तो । शिवगति आराधन तणो ॥ सा० ॥  
एतोयो अधिकारतो ॥ ४ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ दाज पांचमो ॥ ह्वेनिलुणो इहां आवीचाए ॥ ए चाल ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ जनमजरा मरणे करीए । ए संसार प्रयाप्तो । करयाकर्म महु

अनुज्वैए । कोइन राखण हारतो ॥ १ ॥ शरण एक अरिहंतनुंए ।  
 शरणसिद्ध जगवंत तो । शरणधर्म श्री जैननोए । साधुशरण गुणवंततो  
 ॥ २ ॥ अवरमोह सवि परिहरीए । चार शरण चित्तधारतो । शिवगति  
 आराधनतणोए । ए पांचमो अधिकारतो ॥ ३ ॥ आज्ञव परज्ञव जे कर्याए  
 पापकर्म केई लाखतो । आत्मशाखें निंदीयैए । पन्धिकमीयें गुरु शाखितो  
 ॥ ४ ॥ मिथ्यामति वर्त्ताविआए । जे ज्ञाख्या उत्सूत्रतो । कुमति कदाग्र  
 हनैवसैए ॥ बलि उत्थाप्या सूत्रतो । घड्या घडाव्या जे घणाए  
 घरटी हल हथियार तो । जव २ मेली मुंकीआए । करतां जीव संहारतो  
 ॥ ६ ॥ पापकरीनें पोषीआए । जनम २ परिवारतो । जनमांतर पुहतापणीए  
 कोइन कीधी सारतो ॥ ७ ॥ आज्ञव परज्ञव जे कर्याए । इम अधिकरण  
 अनेकतो । त्रिविध २ वोसरावींइंए । आणी हृदय विवेकतो ॥ ८ ॥ दुःकृत  
 निंदा इम करीए । पापकर्या परिहारतो । शिवगति आराधन तणोए । ए  
 ठो अधिकारतो ॥ ९ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ढाल ठो ॥ आदितुं जोड़नें आपणी ॥ ए चाल ॥ ❀ ॥

धन २ ते दिन माहरो । जिहां कीधो धर्म । दान शीयल तप आदरी । टाट्या  
 दुष्कर्म ॥१॥ ध० ॥ शेरुंजादिक तीर्थनी । जे कीधी यात्र । युगतें जिनवर  
 पूजीया । बली पोष्या पात्र ॥ २ ॥ ध० ॥ पुस्तक ज्ञान लिखावीया । जिणहर  
 जिणचैत्य । संघ चतुर्विध साचव्या । ए सातेखेत्र ॥३॥ ध० ॥ पडिकमणां सुपेरे  
 कर्या । अनुकंपादान । सावू सूरि उवजायनें । दीधा बहुमान ॥४॥ ध० ॥ धर्मका  
 रज अनुमोदिये । इम वारोवारि । शिवगति आराधन तणो । सानमो अधिकार  
 ॥ ५ ॥ ध० ॥ ज्ञाव जलो मन आणीये । चित्त आणी ठामि । समताजावे  
 जावीयें । ए आत्मराम ॥ ६ ॥ ध० ॥ सुख दुःख कारण जीवनें । कोई अ  
 वर न होइ । कर्म आपजे आचर्या । जोगवीयें सोय ॥ ७ ॥ ध० ॥ समता  
 विणजे अनुसरे । प्राणी पुन्यकाम । गारि ऊपरिते लीपणुं । जांखर चित्राम ॥८॥  
 ध० ॥ ज्ञाव जलो परें जावीइं । ए धर्मनोमार । शिवगति आराधन तणो ॥  
 आठमो अधिकार ॥ ९ ॥ ध० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ढाल सातमी खैत गिरि ऊपर ( एचाल ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हवेअवसर जाणी करीय संलेखण सार । अणशण आद  
रीयें पचखी चारआहार । लडुता सवीसुंकी ठांडी समताअंग । एआ  
तम खेलें समता ज्ञानतरंग ॥ १ ॥ गति च्यारें कीधा आहारअ  
नंत निःशंक । पण तृपतिनपाम्यो जीव जालचीन रंक । दुसहो ए  
वली वली अणशणनो परिणाम । एहथी पामीजे शिवपद सुरपद  
ठाम ॥ २ ॥ धन धन्ना शालिन्द्र खंधो मेवकुमार ॥ अणशण आराधी पा  
म्यां जवनोपार । शिवमंदिर जास्यें करी एकअवतार । आराधन केरो ए नौमो  
अधिकार ॥ ३ ॥ दशमें अधिकारें महामंत्र नवकार । मनथी नवींसुंको शिव  
सुख फलसहकार । एजपतां जायें दुर्गति दोषविकार । सुपरें ए समरो चउद  
पूरवनोसार ॥ ४ ॥ जन्मांतरें जातां जो पामें नवकार । तोपातिक गाली पामें  
सुरअवतार । एनवपद सरिखो मंत्र न कोईसार । इहजवनें परजवे सुखसंपति  
दातार ॥ ५ ॥ जुज्जील जीजणी राजा राणीथाय । नवपद महिमार्थी राजसिं  
ह महाराय । राणी रतनवती वेहुं पाम्यांते सुरजोग । इकजवथीलेस्यें सिद्धव  
धूसंयोग ॥ ६ ॥ श्रीमतीनें एवली मंत्रफळ्यो ततकाल । फणिवर फीटीनें  
प्रगटथई फूलमाल । शिवकुंमरें योगी सोवन पुरसो कीध । इम एणेंमंत्रे काज  
घणांनां सिद्ध । एदश अधिकारें वीरजिणेसर जाल्यो । आराधनकेरो विधि  
जिणें चित्तमाराख्यो । तिणेंपापपखाली जवजय दूरेंनाख्यो । जिन विनय  
करंतां सुमति अमृत रसचाख्यो ॥ ८ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नमोजविजावशुंए ॥ ए चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सिद्धारथराय कुलतिजोए । त्रिशला मात मल्हारतो । अव  
नीतले तुझे अवतरयाए । करवा अहलउपगार ॥ १ ॥ ( जयो जिन वीर  
जाए ) टेक ॥ में अपराध करघावणाए । कहतां नजहुं पारतो । तुहचरणे  
आव्याजणीए । जो तारे तो तारि ॥ २ ॥ ज० ॥ आशकरांन आवीउए ।  
तुमचरणें महाराजतो । आव्यानें उवेखशोए । तोकिमरहस्यें लाज ॥ ३ ॥ ज०  
करम अलूजण आकराए । जनम मरण जंजाततो । हुंहुं एहथी ऊजग्योए ।  
लोफविदेवदयाल ॥ ४ ॥ ज० ॥ आजमनोरथ मुजफळ्याए । नाठाडुःखदंदोज

तो । तूठो जिनचौबीशमोए । प्रगट्या पुन्यकवोल ॥५॥ ज० ॥ जव २ वि  
नय तुहारमोए । जावजगति तुहपाय तो । देवदया करी दीजीयेंए । बोध  
बीज सुपसाय ॥ ६ ॥ ज० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कलशः॥ इयतरणतारण सुगतिकारण दुःखनिवारण जगजयो ।  
श्री वीरजिणवर चरणथुणतां अधिकमन उल्लटथयो ॥ १ ॥ श्री विजय देव  
सूरिंदपट्ठर । तीरथजंगम इणजगें । तपगढपति श्रीविजयप्रन्नसूरि सूरितेजें  
जगमगें ॥ २ ॥ श्रीहीरविजय सूरि शिष्यवाचक । कीर्त्तिविजय सुरगुरु समो ।  
तस शिष्य वाचक विनय विजयें । थुणयोजिन चौबीशमो । सइसत्तर संवत् उग  
एत्रीसैं रही रानेर चौमाशए । विजयदशमी विजयकारण किं गुण अभ्या  
सए । नर जवआराधन सिधिसाधन । सुकृतजीव विलासए । निर्झराहेतें  
स्तवन रचियुं । नामें पुण्यप्रकाशए ॥ ५ ॥ इति श्रीवीरजिन पुन्यप्रकाश० ॥

॥ ❀ ॥ श्री नेमि राजीमती सिंहाय ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ देशी ऊमादे जटियाणीरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पहिली तो समरुं हो सिध बुद्धरी दाता सारदा । जागुं गुरांरें  
पाय । प्रनु गुण गास्यां हो नेमीसर साहिव जिन तणा । सुजमत आपे मोरी  
माय ॥ १ ॥ सोरी पुरहुंती हो नेमीसरसाहिव थेचढ्या । जानकरी याडुराय  
हसतीतो सिणगारयाहो नेमीसर साहिव थेजजा । बोमलारी गिणती नकाय  
वाजातो अयकाहो नेमीसरसाहिव वाजता ॥ आया तोरणवार । महिल चढी  
नेहो राजुल जोवें हरखसुं । मनमांहें हरख अपार ॥ ३ ॥ आंख फरुके हो  
सहेली ह्यारी जीमणी । फिरताई दीसैंने भरतार । वामो तो जरीयोहो नेमीसर  
साहिव जीवनो । पसुवानी सुणीरे पुकार ॥ ४ ॥ ऊजो तो रथनेहो नेमीसर  
साहिव राखीयो ॥ अे पशु बांध्यांने किलकाज । गोरो तो होसीहो नेमीसर  
साहिव तुमतणो ॥ सारथी कहेंने महाराज ॥ ५ ॥ थोडा तो सुखनेहो इ  
ए राजुल नारी रें कारणें । होसीहो जीवांनोसंहार । जीव बांध्यानेहो नेमीसर  
साहिव ओडिया । जीवसवेतिणवार ॥ ६ ॥ अणपरणी राजुलहो नेमीसरसा  
हिव ओमनें । जायचढ्या गिरनार । आठेतो करमांसुहो नेमीसरसाहिव  
जीनवा । लीधो संयम जार ॥ ७ ॥ राजुल तो फुरेहो नेमीसरसाहिव एकत्री ।

जलविनमळी जेम । नवज्वारोहो नेमीसरसाहब जोमने । नेमविन जीवुंकेम  
॥ ८ ॥ सहीयां तो समजावैहो राजुल दुःख मत करो । एतो कालोडे जरतार  
पाळोतो राजुल जापैहो सहेलीमारी थेसुणो । इणज्व ए जरतार ॥ ९ ॥ रा  
जुलतो चालीहो नेमीसरसाहब वांदवा । साथे तो घणुरे परवार । गिरनारे  
चढतांहो सब आगे पाठै नीकट्या । एकली रही ठै राजुलनार ॥ १० ॥ मेहा  
तोवरस्याहो नेमीसरसाहब अतिघणा । जीज्याठै सब सिणगार । गुफातो दे  
खीहो राजुलनारी अतिजली । चीरनिचोवै राजुल नारी ॥ ११ ॥ गहणा तो वा  
ज्या हो राजुल नारी रै अंगना । धूवरना जणकार । जणकातो सुणियाहो  
रह नेमि वैठे ध्यानमें । खोली ठै पलक तिणवार ॥ १२ ॥ रूपै तो मोह्यो हो  
रहनेमि वैठो ध्यानमें । कहै सुंदर करो मोसुं प्यार । बोलीतो सुणकरहो राजुल  
अंग ढांकीयो । मानै ठोमी ठै नेमजरतार ॥ १३ ॥ जोजनतो जीम्योहो रहने  
मि खीरखांमनो । उलटी करी नाखै तेम । वैनैतो माणसहो रहनेमि पाळो नही  
जखै । जखसी कागकुत्ताजेम ॥ १४ ॥ हुं तो माताहो रहनेमि थारै सारखी ।  
हुं वरु जाईनी नार । पापतो धरस्योहो रहनेमि मारै ऊपर । तो पनस्यो  
थेनरक मजार ॥ १५ ॥ एहवा वचनें हो रहनेमि राजुल पाए नम्यो । पापख  
मावै वारंवार । कपरा तो पहरया हो राजुल नारी आपणा । पुहती ठै प्रनु  
दरवार ॥ १६ ॥ राजुलतो हरखैहो नेमीसर साहब वांदीयां । वांदीनें लीयो सं  
यम जार । केवलतो पालीहो नेमीसर साहब निरमलो । पुहती ठै मुगति  
मजार ॥ १७ ॥ केवल पालीहो नेमीसरसाहब आगलै । मिलीयाठै मु  
गति मजार । माणक्य रंगैहो नेमीसरसाहब गाईयो । ह्वारा आवागम  
ण निवार ॥ १८ ॥ इति श्रीनेमि राजीमती सिंहाय संपूर्ण ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री शालिजद्रको शिलोको लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सरसत सांमण समरुं मुखदाई । ब्रधमानस्वामी प्रणमुं वरदाई । कुंवर  
शालिजद्रो कहूं शिलोको । एक मनांथे सांजलज्यो लोको ॥ १ ॥ राज  
गृही नगरी जिनध्रम राजा । श्रेणक नांमैं मोटो महाराजा । राणी चेलणा  
चोखी पटराणी । शील संतोपे साची वखाणी ॥ २ ॥ मंत्रीसरकहियै अत्रे  
कुमारो । सगली सजामें ते हीज सिरदारो । सेठ गोजद्र नगरीमें सोहै । ज



द्रा सेठाणी ते मन मोहै ॥ ३ ॥ सुख सेती रहता कितरे के दिवसे । सुत  
 साल चद्र जन्म्यो शुभ दिवसै । वहिन सुचद्रा वीरो रमावै । मनमारे कोडे  
 माता हुलरावै ॥ ४ ॥ इण विध वधतां हुवो जुवानो । पिता परणावै मोटी  
 कर जानो । वत्रीस गोरघांरो वालम कहीजै । सातमी चूमें सुखसेती रही  
 जै ॥ ५ ॥ विहार करता वन मांहै स्वांमी । आय उत्तरीया अंतर जांमी ।  
 गोचद्र शेठ वांदणनै बैठो । समकित धारी श्रावकसेठो ॥ ६ ॥ महावीर स्वा  
 मी देशना दीधी । समज्यो श्रावकते दीख्याजीलीधी । ब्रत लेईनै विधसुं वि  
 चारै । अंतकाल आयां अणशण ज्वारै ॥ ७ ॥ वैमानिकवासी देवता  
 वदीतो । साधु गोचद्र हुवो सुवदीतो । अविध प्रयुंजी जाणें विस्तं तो ।  
 जोगी सालचद्रद्वंद्व देखै एकांतो ॥ ८ ॥ जवपूरवरी वात संजालै । नयणें आप  
 रो वेदो निहालै । मन मांहे देवता इसमो विमासै । आई निसरुं आगै जी  
 पाशै ॥ ९ ॥ आगै तो लक्ष्मी इधकेरी हुंती । देवतानी दीधी हई अनं  
 ती । पेई तेत्रीसे देवता पुहुचावै । सोनै में ग्रहणा जमीया शहु आवै  
 ॥ १० ॥ तेत्रीसमी पेटी तिणमांहै नीकलै । सूरज चंदा ज्युं तेजै जल हखे ।  
 मांणकनै हीरा सोनांमें जमीया । घाट सुघाटै देवतारां घमीया ॥ ११ ॥  
 सेहरो साहूनें साल चद्र जोगो । लाखां कोडांरा आंके त्रैलोको । शाठां  
 घमीयांरी अंतै शगलाई । नाखे आचूषण निरमायल खाई ॥ १२ ॥ दिन २  
 पेई देवता ते ल्यावै । शोनईया हीरा मांणक लावै । उत्तरीया ग्रहणा  
 निरमायल थावै । बलती पेयांरी शार नकरावै ॥ १३ ॥ राजा चक्रवर्ति  
 शुहणे न देखे । एहवा आचूषण पहरनें नाखै । केशर कस्तूरी मलया गि  
 वासै । चोवाने चंदन फुलवाद वारै ॥ १४ ॥ आठ पोहरनें वत्रीशे  
 वडिया । पात्रांतो नाचे सुह आगे खर्चायां । अपठरा शरिखी जयमा  
 पावै । जांमणि वत्रीशे ते मन जावै ॥ १५ ॥ सुकजीणी सुंदर वत्रीशे राणी ।  
 पुन्य जोगे शेती एण दिन आणी । दिन २ वध ते हेतुं निरखै । नारी  
 पत जगती हितथुंजी परख ॥ १६ ॥ एक दिन व्यापारी परदेशी आ  
 या । वशत अमोलक विध २ री ल्याया । व्यापारी चोहटे वशतां देखाजे ।  
 नगरीरा लोक आवीनेहाले ॥ १७ ॥ रतन मे कांवल शोलै निरखीने । वां

णी या देखै विधशुं परखीनें । वांणीया पूठै मोलवतावो । सवा लाख सोनइया  
नगद दीरावो ॥ १८ ॥ मोल शुणीनें शाहजी शलकै । कर २ नें वातां माहो  
मां मुलकै । बलता वांणीया नेमानही आवै । कूमी शुण गत्तां कुशलै घर  
जावै ॥ १९ ॥ इस विध व्यापारी नगरीमें जमीया । जायै राजाकै चणैजी  
नसीया । व्यापारी बोलै शुणो महाराजा । शोलैई कांबल शहूठै ताजा ॥  
॥ २० ॥ इण कांबल में गुणठै एक मोटो । आपरे आगे न वोळुं खोटो ।  
आगमें धोयां मेलज ठटै । मोल कांबलनो इधको तिणमांटै ॥ २१ ॥ गुण  
शुणीनें राजा गह गहीयो । कांबल एक लेवा घणु ऊमहीयो । नगद सोनई  
या नहीं जंमारो । महीनारी मोलत करो ऊधारो ॥ २२ ॥ बलता व्यापारी बोलै  
इमवांणी । रावलीवांणी शाचीमें जांणी । शुणो महाराजा एक अरदाशो ।  
पइशाखरचीरा नही अह्न पाशो ॥ २३ ॥ खरची दिवरावो कांबल रखवावो  
दूर देशांतर अह्ननेठे जावो । परदेशी किम कर आपै ऊधार । नगद  
सोनइया कांबलल्योसार ॥ २४ ॥ इम कहि व्यापारी मेरैजी आया ।  
आए मेरैनें घणु पिठताया । माहोमां मिलनें मित्रांणो कीधो । आपणो  
एको कारिज नसीधो ॥ २५ ॥ अबै अठासुं आघेरा चालो । सहिर सख  
रोसो नयणे निहालो । किरीयांणो वेची कारज सारीजै । सुंवारी मासी इण  
परि मारीजै ॥ २६ ॥ मुखसूं इम कहिता परदेशी आवै । मनमें इधकेरो उ  
चाट थावै । वांणी सुण इसमी जद्रा बोलावै । वहता व्यापारी ऊजारखावै  
॥ २७ ॥ सूर्या व्यापारी दीसोढो वीरा । बोलोढो इम किम बोल अधीरा ।  
वसतां देखावो मोल वतावो । आखता हुयनें परामतजावो ॥ २८ ॥ व्यापा  
री कहै वमी विणयांणी । सही या लेसी वस्त अह्लांणी । फोकटणीवातां  
कहि २ नें फेरै । एवमोही मोल कठासुं अेरै ॥ २९ ॥ जाई कहीने जद्रा  
समजावै । इण घर ऊचीरो अंतन आवै । जोलै नूलाढो किणरा जिम  
काया । दीसोढो जोलांतणा दडकाया ॥ ३० ॥ जद्रा ठुंसांजल ज़ोली विण  
यांणी । लीधी नहीं कांबल राजारी राणी । फूटरा घणु फूंदाजासाहो । पै  
दीयां बैठा दीसे पतिसाहो ॥ ३१ ॥ कांबल देखीनें ऊमाहो कीधो । मो  
लसुणीनें विलखो सुंह कीधो । सवालाख सोनइया एकणरा लागै । इस

नी नविजायै लीधी तुज आगे ॥ ३२ ॥ बलती सेठाणी वाणी इम जापै ।  
 वीरा व्यापारी इम किम दाखै । कांबल सोलेने कामण वत्रीसो । सरचाबुं किम  
 कर बहुअर वत्तीसो ॥ ३३ ॥ बैत विचारी द्वकाकरावो । ठीक कहींने मोल ठह  
 रावो । व्यापारी बोले सुणो सेठाणी । लाख वीशरी आणो हिमाणी ॥  
 ३४ ॥ जंमारी तेनीने जद्रा इम जापै । रती एकरो अंतर मतराखै ।  
 व्यापारी एठै बोलरासूरा । दामगिणीने देज्यो थे पूरा ॥ ३५ ॥ खोलै जंमारी  
 मोटो जखारो । तीजो गिणवाने साथे हुवो त्यारो । व्यापारी मोटो इकला  
 रैजी लेवै । दांम गिणीने जिणनें सहु देवै ॥ ३६ ॥ पुखतो व्यापारी को  
 ठार जोवै । अहिनाणो इंद्रपुर एहीज होवै । मोती परवाला माणक मन  
 मोहै । हीरा सोनइया सखरा ते सोहै ॥ ३७ ॥ पांचरत्नारो पारन पेखै । रोक रु  
 पइया दह दिश देखै । विधि २ रो नाणो व्यापारी निरखै । पुखतो व्यापारी  
 ले लेनें परखे ॥ ३८ ॥ चितमें व्यापारी एहवोज चितै । रहीहुं देखुं सुहणो  
 सुजरीतै । चकचूंदी आख्यां आवीनै चमकै । ठीकसेती चाले पगल्यारै ठ  
 मकै ॥ ३९ ॥ अम्वरुतो पडतो आखडतो अरकै । परु हडतो खिसतो  
 खूणांसुं खरकै । तितरै जंमारी तडकनें बोलै । ल्यो बेगोनाणो घालां थां खोलै  
 ॥ ४० ॥ मालहमालांमाथे दिरावै । व्यापारीपाठा मेरै ते आवै । तिण बेला  
 श्रेणक राजातेडावै । व्यापारी प्रते आदर दिवरावै ॥ ४१ ॥ राजाजी कहै  
 सुणो परदेश्यां । कांबल तुह्यारी एक ह्ये लेख्यां । मोटी महाराणी हठनमृकै ।  
 कांबल लेदीधां सहु धंध चूकै ॥ ४२ ॥ जिम तिम करीने जिनसां ह्ये देवां ।  
 लाखसवारो लेखो जरदेवां । मानो व्यापारी कांबल ले आवो । नहिं अवथे  
 माहरो वचन फिरावो ॥ ४३ ॥ व्यापारी सुखसुंएहवो प्रकासै । सोले ईज  
 कांबल हुंता अह्यपासै । सेठाणी जद्रा ते सहु लीया । दाम गिणीने अह्य  
 नें तिण दीया ॥ ४४ ॥ अचरज पांभीनें राजा इम दाखै । सोदागर उसनो  
 कूमो कांडे जाखै । एहवो कुणठे नगरमें आज । लाखांवीशारो काढे ते काज  
 ॥ ४५ ॥ सोदागर जंपै सुणो महाराजा । सोवनमें घर नें रतनारागजा ।  
 माल अलेखै तिणरे ह्ये दीठो । साजजद्र नामें मोटोने सेठो ॥ ४६ ॥ ऊगो  
 आथमीयो तेनवी जाणो । मानवरी देह सुर सुख माणो । दरमण तेहनो दी

ठां जाणीजै । महाराजा मनमें सांसो नांणीजै ॥ ४७ ॥ सोदागिर सुखसुंवात  
 सुणीनें । दिवरावै सीखसिरपाव देनें । ततखिण तिण बेला राजा तेमावे । अन्नै  
 कुमार हजूर आवै ॥ ४८ ॥ कुंवरजी आवै मुजरोजी कीधो । महाराजा मोटो सन  
 मानदीधो । चापै इमराजा सांजल कुमार । बेगाजिहां जावो चद्राघरवार ॥ ४९ ॥  
 चद्रानो वेदो सालजद्रसाह । अह्मनें देखणरो इधको ऊठाह । तुरत कुंवरनें  
 तेमीनें ल्यावो । बेगाहुइ जावो वारमल्यावो ॥ ५० ॥ कांबल एकजावो  
 मोलकरीनें । सेठाणी प्रतै शनमानदेनें । आया कुंवरजी शेठाणी आगै । वि  
 धि शेती कांबल एकजमांगैः ॥ ५१ ॥ बोलै इम कुंवर सुणौ शेठाणी । ह  
 ठि करनें बैठी मोटी महाराणी । महाराजा कांबल एक मंगावै । परबारो  
 मोल पूरो दिरावै ॥ ५२ ॥ इण बातै तिलजर कूमम जाणो । ऊठो घरमै शुं  
 कांबल एक आणो । शालि कुंवरनें मेलो मो साथ । बोलवै बेगो श्रेणक नर  
 नाथ ॥ ५३ ॥ अन्नै कुमाररा सुखशुं ए वात । शुणी शेठाणी जंपै इम वात ।  
 आया थेजलै कुमारजी आप । दरशण तो दीठां सहपुलीयाजी पाप ॥ ५४ ॥  
 तुहल शरिखा पुन्यवंत घरांगण आया । पुख दोहग दलिया शहु शुख  
 पाया । अरज अह्मारी एक अवधारो । सेवक मनरा सह कारज सारो  
 ॥ ५५ ॥ शोलैमें कांबल शगलाईलीया । तिके वधारी वत्तीशकीया । कांब  
 ल एकेको बहुअरनें दीधो । ऊपर नविरहियो कांबल कोई वीयो ॥ ५६ ॥  
 देवता दीधा आनूपण आवै । तिके पहिरंता तनसुख पावै । बहुअर किम  
 उठे कांबल ते करमा । खरखरा लागै अंगे ते खरमा ॥ ५७ ॥ मैलेई सुक्या  
 उत्तम जाणेनें । जंजंनो दीधो बहुअर आणेनें । शाशुजी एशुं महिमांनो  
 कीधी । एहवां अलविध शुं आणीनें दीधी ॥ ५८ ॥ जवटणो करनें वहुवां  
 पगलूहे । नाख्या ते परहा निरमायल कूवै । कहोनें निरमायल किमकर  
 दिरावै । निरमायल देऊं तो दूषण मुजथावै ॥ ५९ ॥ मोलायक बीजो का  
 रिज फुरमावै । महाराजा कुमार स्यानें तेमावै । नांन्हमीयो माहरो लीलानो  
 लामो । गहजरीयो शोन्नै गणकेरो गामो ॥ ६० ॥ सातमी नृमै शुखशेती पोढे ।  
 नाटकीयानाचे अहिनिशि गोढे । काया मानवरी कुमारते दीशे । मोजां सुररायां  
 इधको ते दीसे ॥ ६१ ॥ दरसण तो कोई देखण न पावै । लखगानें लोक आवै

न जावै । चालो हुंचालुं महाराजापासै । चद्रा इम जावै मनरैउल्हासै ॥ ६२ ॥  
 दरवार आवै चद्रा मन जोली । साथे शोगानें सहीयारी दोली । बे कर  
 जोडी चद्रा इमबोलै । प्रथवीपति राजा शमकुण तोलै ॥ ६३ ॥ अरज  
 अमारी एक अवधारो । महाराजा आंगण ह्माहरै पधारो । सेवकरै ऊपर  
 सुनिजर कीजै । शाल कुमरनें दरशण दीजै ॥ ६४ ॥ वयणशुणीनें बोलै महा  
 राज । तूठा तुऊ ऊपर आवां घर आज । जायै आगैनें युक्त करावो । शा  
 ल कुमरनें सन्मुख ल्यावो ॥ ६५ ॥ अशवारी करनें राजाजी आया । मिल २  
 नै सुहव मोतीयां वधाया । सिंघासण आशण सोवनरा देवै । आरतीयां कर २  
 उवारणा लेवै ॥ ६६ ॥ राजारै आगै चद्रा ते आवै । जोजनरी चक्ती मुऊनें फु  
 रमावै । राजाजी कहै युक्त करावो । महल तुमारा अमनें देखावो ॥ ६७ ॥  
 आलश ठोमीनें चद्रा ते आवे । हुकमति होदा जल ऊनो दिवरावै । पीठी उ  
 गटणा प्रथम करावै । साथी शगलानै शिनांन करावै ॥ ६८ ॥ क्रीडा पांणीरी  
 करता तिण वेला । मंत्री महाराजा सगला शमेला । उत्तम अंगूठी राजाजी  
 पारी । विलखाहुय जोवै शगली गोवारी ॥ ६९ ॥ राजाजी श्रेणक मनमें  
 विचारै । शगली रिद्धो शारथो ह्मारै । चिंता करीनै मनमांहे शोचै । पड  
 तावै पनीयां ऊजाआलोचै ॥ ७० ॥ सेठाणी चद्रा तुरतज शमधी । वाणीयां  
 होवै आगल बुझी । जल कल उवानी ऊजी जोवावै । पाणी बीडरीयां अंगूठी  
 पावै ॥ ७१ ॥ सुंदरली लेई घरमांहे आवै । केई अंगुठी अवर निकळावै । त्यां  
 जेली करनें चद्रा ते ल्यावै । ऊंजखनें राजा मनमें उमावै ॥ ७२ ॥ स्नान  
 करीनै शहुकोई साथ । शालकुंवरनी देखे सहु साथ । पुन्यरो पूरो ए दीशे अं  
 कूरो । शाहां शिरशोहै परतख्यशूरो ॥ ७३ ॥ शोनाराथाल रूपारी चोकी । सुख  
 मलरी गादी दीधी ए कोकी । रतनारा ऊरा पाणीरा चर्या । खाशा गंगोदक  
 पसवोवे करिया ॥ ७४ ॥ सेवानै साकर सेलमी ल्यावै । खारक खजुरां पासै  
 पुरशावै । खोपरा खासा खुरमाणी आवै । दाखानें निमजा दाममजावै ॥ ७५ ॥  
 अखरोट आंदा बेला नारंगी । पिसता सदाफज जंवेरी चंगी । रायण बीजो  
 रा खरबूजा खासा । ककडी साकरीयां जेला पतासा ॥ ७६ ॥ सरदा अंजोर  
 अगूर सखरा । वोर विदाम पुरसे ले सखरा । इण विधरामेवानें आणानें पुरसे



सगला आरोगै मनरे ते हरसै ॥ ७७ ॥ सीरा साबूनी सखरीसुहाली । लाडू बि  
धररा ल्यावै जरथाली । लाडू सेवीया खासा गुलावी । सिंघकेशरीया ल्यावै  
सतावी ॥ ७८ ॥ बाजणा लाडू गाजणा लावै । कीटीरालाडू केशरिया  
आवै । बाजणालाडू मिर्चाला आवै । लाजणांलाडू बाजणाआवै ॥ ७९ ॥  
मगदरालाडू दाजीया मुगता । लाडू कस्तुरिया ल्यावै ते गलता । मोतीजीचूर  
मिश्रीरालाडू । दीसैते मोटा देहरारा गाडू ॥ ८० ॥ जगरीया लाडू गुंदीयां  
जांखै । सहूकोपुरसंता जीजी मुख जावै । पुर २ की पुरकी गुप चुप आवै ।  
गुंदबन्ना घेवर जलेवी लावै ॥ ८१ ॥ पूरी कचोरी पेन्ना हेसमीयां । खुरमा  
ने दोठा पाजा मनगमीया । दरभिस्त फीणा इंदरसारून्ना । आढी अकव  
री दहीथरा पूरा ॥ ८२ ॥ सकर पाराने लापशी आवै । सगला तिनसेती  
धोकरने थावै । तरकार्यां आवै ततखिणताजी । बालोर बथवो चिणारी जा  
जी ॥ ८३ ॥ सोवाने मेथी सरशुं सांगरिया । कैर करेला पापर मोगरीयां  
कचनार कलीयां केवलाने फोग । आरोग्यां जाये तिणशुं सहुरोग ॥ ८४ ॥  
वरीयांनै मोमी नीलावली वोर । करुंदा कोठ करपटा जोर । चवजानी फलि  
यां घेघराकाचा । आलन पेठा अद्रक साचा ॥ ८५ ॥ अरवी बांवलीयां  
खासी काचरीयां । मिर्चाने शूठ मुखसुं आचरीया । हलदीनें लूण हींगसुं जा  
जी । तोरुं लुंगनें टींडसी ताजी ॥ ८६ ॥ आंवलीया आंवा नीवू आचार । रा  
इरे जेला राईता त्यार । खाटो मिर्चांरी खासोपलेव । होसों पुरसावै हितकर  
नें हेव ॥ ८७ ॥ वासमतीचावज मुंगांरी दाज । सुरहावी ऊपर पुरसे रसाज । सि  
खरणनेयुक्त बूरो सिरावै । पाणी परघलसुं चळुआं करावै ॥ ८८ ॥ बीन्नापानारा  
लुंग सुपारी । तिलक करे देसूहव नारी । आचूषण बागा पंचमाआवै । सिर  
दार देखी सहुनें पहरावै ॥ ८९ ॥ राजा श्रेणक इणविध फुरमावै । इणघर  
रो स्वामी निजर न आवै । अघीयां ऊर्जा हुकम हजावै । ह्यां घरआयां सु  
जरो क्युं नावै ॥ ९० ॥ आवीनें चद्रा एम पयं पे । एकवार देखो घररी सहसं  
पे । महल महिपति शू ऊपर जोवो । आराम करनें शाइतइक शोवो ॥ ९१ ॥  
पहलीज जूंम प्रथवी पति चढीया । पूरा पुरपोत्तम शाखे जे पढीया । मंमाण  
घररो मनशुं आजोचै । रचीयो जाणे कर शाखनें शोचै ॥ ९२ ॥ ऊपरजी बी



जी नृमते आवै । ज्योतिजिगामिग निजरे देखावै । नद्रा कहै सुणीयै मोटा नृ  
 पाजो । ताजी देखाबुं तीजी है मालो ॥ ९३ ॥ तीशरी पोल चढीया तिण  
 वेला । रतनारी जोत दीपै अतिकेला । आंख्यारै आगै अंधाली आवै ।  
 मन मांहे जाणै नद्रा नरमावै ॥ ९४ ॥ चौवारै चौथे चढीया तिण शेती  
 हाथे कर जालै नद्रा हित शेती । निजर करीनै निरखै ते नूम । धरु २ आ  
 वै धका करधूम ॥ ९५ ॥ श्रेणक राजा एम विचारै । फशीया फंदमांहे आ  
 वीइयां रै । कुशलै घर जावां किणही प्रकार । दिन जुगै करशी कवण दरवार  
 ॥ ९६ ॥ आवीनै नद्रा एम पयंपै । पृथवीपति मोटा क्युंमन कंपै । सुख से  
 ती कीजै इहां विशराम । तेनीहुं ल्याबुं ताहरो गुलाम ॥ ९७ ॥ शाज कु  
 मरनै सुखमै वतलायो । घर आंगण वेठो श्रेणक आयो । वखतावर मोटा लेख  
 विया राजा । आप चढीनै आया महाराजा ॥ ९८ ॥ ऊठो सिज्यासुं आलश ठोमो  
 राजा मिलनैरो राखै अतिकोमो । पृतपधारो राजारै पावै । तसलीम करनें तु  
 रत तुंआवै ॥ ९९ ॥ मातारा सुख सुं वांणी शुणवोलै । किरियांणो श्रेणक नां  
 खो ले खोलै । माताजी पूढो काश्रं इण मोलै । नार नलायो वररो शहु तोलै  
 ॥ १०० ॥ इतरा दिन थेई कांम चलायो । मन मान्यो माता हुकम हलायो  
 अमकांणा काम रहोने अवै । नंमारनरीया मणिमाणक सबै ॥ १०१ ॥ नाणा  
 रीतोड ह्वारे घरनांही । मुंहमांग्यो देइ नाखो घरमांही । किरियांणो कोई पा  
 ठो मत फेरो । कहोने कासुंथे पूढोठो एरो ॥ १०२ ॥ सतवंती नद्रा वाणी डम  
 वोलै । सुणरहो वेटा नूलोमतनोलै । पृथवीपति राजा श्रेणक सजहीजै । आ  
 पणरोस्वामी एह कहीजे ॥ १०३ ॥ रूठोए राजा विपरूप जाणो । तूठोए  
 राजा सुरतरु सुपीयाणो । इणरी सुनिजरसुं अपनीरिद्धओपै । करै निरधनीया  
 कहीये जो कोपै ॥ १०४ ॥ आशइणारी वेटा बहु कीजै । पिण आसंगो  
 पूरो नविकीजै । राजा वेसनर सरिखा जाणीजे । इण वातें कोई शांसो नां  
 णीजें ॥ १०५ ॥ मातारा हुकम माने तेसेठो । पावै लागे नआवै फिरऊठो ।  
 श्रेणक राजारो सजावऊठो । खिणमांहे रूठो खिणमाहे तूठो ॥ १०६ ॥ जा  
 णैरो विलंब वेटा नहुकीजे । जाए राजारो दरशण कीजे । तो सरन  
 दीठां राजाजी रीजै । अण चित्या कारज इण वातै सीजै ॥ १०७ ॥

मातारा वचन मीठा सुणकानें । विषधर बहु कोपै जुं पयपानें । मनमां हे  
 कुंवर वैराग आणें । जवसागर माया काची सहु जाणें ॥ १०८ ॥ पूर्वजै  
 जवमें उजो पुन्य कीधो । साधानें फाशु अशन नवि दीधो । वीतराग  
 वचनें शांशोमें धरीयो । दरशण देवांरो में नवि करियो ॥ १०९ ॥ सामा  
 यक पोशो अवशर नवि कीधो । साधारै सुखसैं शमकित नविलीधो ।  
 उजो पुण्य कारण इण जव अवतरीयो । नारी शिवरमणी मुजनें नवि वरि  
 यो ॥ ११० ॥ परवश शेती पर शेवा करणी । मातारी शीख मन मांहे ध  
 रणी । एहवो विचारी आयो मन जंगै । नरपति ले वैठो आपण उजरंगै ॥  
 ॥ १११ ॥ शाल कुमररी शोजा सराहै । मुखडो देखीनें राजा ऊमाहै । सुर  
 गांरो वाशी सुरपति जुं ओपे । काया कुंवररी अधकीज उपै ॥ ११२ ॥  
 मोटो महीपत मनमें विचारे । ए दीशे पुन्य एणसंसारै । माया घर सुंकी  
 महला मतवंती । काया कंचण जुं उत्तम दीपंती ॥ ११३ ॥ मांखणसम काया  
 कोमलजै इणरी । राग राखी नें राजा कर फेरी । कुमररी काया परसेवो व  
 लीयो । कर फरसे ततखिण मील पर बलीयो ॥ ११४ ॥ जद्रा तिण बेला राजा  
 प्रति जाषै । सीख कुमरनें द्यो शहुशाखे । जाये जनमंतर इण २ काया ।  
 परसेवा करनें फारिस्त्या नहु पाया ॥ ११५ ॥ स्वढंदाचारी सुख मांहे रहीयो  
 आगम राजरो आजमें कहीयो । ऊठै सिध्यासुं जोलो नावडियो । अवसर  
 राजरो इण जव लहीयो ॥ ११६ ॥ राजी होय राजा सीख समापी । रि  
 धी अविचल सालनें आपी । कठ पंजर बंधन सुं सुक बूटे । बलतो फिर  
 नावै वेगो तिण खूटे ॥ ११७ ॥ उत्तरी कांचलीये अहिरुं जिमत्रासै । पा  
 ठो नवि जोवै परहो ते नासै । कुंवरजी चितरे उच्चाट बेठा । आवीने पोड  
 एरीखाट जे सेंठा ॥ ११८ ॥ सहु त्रीया आवी शनसुख ऊज्जी । सुख सेती  
 उत्तर नवि दीये मोज्जी । माहो मांहि पूठे महिला मन जोली । रीसांणो सा  
 हव ना रंगरोली ॥ ११९ ॥ दीय चार वनीयां परखीनें दीठो । नाहरे चित्त  
 सुं नेहमजो नीठो । सासू सुं बोलै सरम खोलीनें । मुलकंती अंचल सुख  
 ऊपर देनै ॥ १२० ॥ रावलो जायो राजी नहीं आज । मन खांचीयो दी  
 सै सहीय आज । आवी कुमरनें समजावो आप । गुण अवगुण गुनो

करावो माफ ॥ १२१ ॥ पूत पनोती पारकी जाई । विन अवगुण कां ना  
 खो धसकाई । नेहडलै जीनी गुणवंती गोरी । तिणसेती कीजे कांड चित  
 चोरी ॥ १२२ ॥ माता इतरा दिन हुं नवि समधो । सुज करमी होइने सम  
 कित सही लक्षो । कायानें माया काची सहु जांणी । गोरी ए दीसै दुख  
 त सहिनांणी ॥ १२३ ॥ मांताजी मोनें अनुमति आपो । सदगुरु पस  
 वामे दिक्ता समापो । रहि २ रे वेदा एहवो कांई दाखै । शाइत जर नसै  
 ह्यारै तो पाखै ॥ १२४ ॥ सुंहणेंही वेदा इसमो मति सोचे । वेत विचारी  
 जंडो आलोचे । जरमायै किणरै वेदा नवि जमीयै । आपणा घररो कांई  
 नवि गमीयै ॥ १२५ ॥ सहु वाते पूत तूं सधीरो । वाई सुजद्रा तणें इक  
 वीरो । नांन्हमीया तो विण ह्यारै नवि सरसी । कुटंबरी सार वेदा कुणकर  
 सी ॥ १२६ ॥ कितराई वचन मोजीनें कहीया । मनमें कुमरै ते नविर  
 हीया । जीनो रंग चोल जगवंत धर्म । मायारा जाल मूक्या सुज कर्म ॥  
 ॥ १२७ ॥ हठकर माता हठ करी राखै । तपस्या चारित्र नहुवै तो पाखै  
 हल फलीयो हिवणा बालक बुध करिनें । सही हुं जासुं जव सागर तरिनें  
 ॥ १२८ ॥ पंडित हुइनें वेदा सुणि वात । हुं जानुं ताहरी मगजी  
 अंगधात । तो सेती चारित्र न पलै तिलमात । सुणरे वेदातूं वातरी वात ॥  
 ॥ १२९ ॥ माता ए जांण्यो हुकम करि राखुं । दिन दस आमा जिम ति  
 महं नांखुं । इतरामें इणरी बुझी फिरजासी । ललचांणी कांमणि लोत्री  
 योथासी ॥ १३० ॥ पोतारी काया पहिली वसि कीजे । कांमणि एकेकी दिन  
 प्रति ठोमीजै । वसि करि इंद्री घर वास वसीजै । करि २ तपस्यानें काया वसि  
 कीजे ॥ १३१ ॥ सूधी सुण वात हियरामे धारे । कांमणि एकेकी दिन  
 प्रतिवारै । निरलोत्री हुइनें लूखो मन राखे । चितसेती वेठो चारित्र स  
 चाखै ॥ १३२ ॥ सातमें दिन संज्यारी वेला । धनोजी धर्मी आवे एकेजा ।  
 साजानें सीख देनें इम जाखै । जंमो तूं सोच इवडो कांई राखै ॥ १३३ ॥  
 थिर मन करिनें चालोथे आगे । पूठ पूरव सुं हुं मन रागे । आपे मिल  
 दोऊं करणी आदरस्यां । वेगा जव सायर पार उतरस्यां ॥ १३४ ॥  
 एक मन दोनुं होइ नीसरीया । सिंह पाखरीया जांणे केशरीया । सांजल स्वा

मीरी देशना सूधी । समजा मन मांहे तुरत सुबुद्धी ॥ १३५ ॥ आयाघर पू  
ठा आग्या ते मांगै । छलि २ मातानें पाए ते लागै । बंधन संकट सुं माता  
मुंकावो । कल्याण माहरो कोई जो चावो ॥ १३६ ॥ कूडो कथन अब कीजे  
नवि माता । महावीर वचनें अह्ने रंग राता । चारत्रिया होसां चित्तमांहे  
चौका । धर्म करणी करनें ठोनां जव धौका ॥ १३७ ॥ आजूणा वचन जद्रा  
ते आखै । संजम लेसी ए सहू साखै । आमी अंतराय हुंस्यानें होऊं । व  
हिनोई सालो वतलो थे दोऊं ॥ १३८ ॥ सामग्री मेले सहू साथे आ  
वै । गीत गुणवंती गुण बहु गावै । ढोल नगारा ठमके बजावै ।  
प्रह ऊठी दरशण इण विधि पावै ॥ १३९ ॥ इरियावहि पडिकम पाप  
आलोवै । मेल करमरा लाग़ा सवधोवै । महावीर स्वांमी माथे कर दीधा  
साल धन्नारा कारज सहू सीधा ॥ १४० ॥ जोलामण देई जद्रा घरि  
आवै । सुज मति देनें गोख्यां समजावै । तिन दिन सेती तपस्या ते साधे ।  
मास खमणादिक करे मन बाधे ॥ १४१ ॥ करमांरी गोठ काटे बेजाई ।  
किरीयारी कमणा राखे नही काई । अणसण करीनें आऊखो पावै । सर्वा  
रथ सिधे वासो सुख पावे ॥ १४२ ॥ महाविदेह मानव जव लहिसी ।  
करणी कर आठे करम ते दहसी । सुपसा ए दांन सहू कारज सरसी । सालो  
वहिनोई दोनुं शिव वरसी ॥ १४३ ॥ शालजद्र धन्नो साधु कहाया । प्रहसम  
ऊठे प्रणमुं ते पाया । गुण तिणारा जवि जन गाया । मन सुध समरथां मुक्ति  
दे माया ॥ १४४ ॥ सुहता महाजन मोटा मति धारी । देवी धर दीपे गांव  
गुण कारी । मोटी महमाई थांन विराजै । ढाया तिणारी इधकी ते गजै ॥  
॥ १४५ ॥ संवत सतरै इक्यासी वरसै । चौमासौ कीधो चितचूंप हरखै । खे  
मकीरतरी साख सवाई । तिणरा संतानिक वाचक वरदाई ॥ १४६ ॥ सो  
म हरखनामै श्रमण कहीजे । लहमी समुद्र पाटे स लहीजे । गणी कनक  
प्रिय गुरु सुपसाया । गुण तिणरा में सिंहा मुनि गाया ॥ १५७ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री शांतिजिन वृद्धस्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सारद मात नमुं शिरनामी । हुंगाउं त्रिभुवनके स्वामी । शांतिज  
शांति जपे सबकोई । त्यां घर शांति सदा सुख होई ॥ १ ॥ शांति जपीनें

कीजै कामा । सोही काम हुवै अन्निरामा । शांति जपो परदेश सिधावै । ते  
 कुशले कमला लेई आवै ॥ २ ॥ गरज थकी प्रनु मार निवारी । शांतिज  
 नाम दियो महतारी । जेनर शांतितणा गुण गावै । रिद्धि अचिंती जेनर  
 पावै ॥ ३ ॥ ज्यांनरकों प्रनुशांति सहाई । त्यां नरकों काई आरत नाई । जो  
 कहु बंठै सोई पूरै । दालिद्र दुष्ट मिथ्या मति चूरै ॥ ४ ॥ अलख निरंजन  
 जोत प्रकाशी । घट घट प्रीतरके प्रनु वासी । स्वामि स्वरूप कहाँ नहिं  
 जावै । कहतां मोमन अचरज आवै ॥ ५ ॥ नारदिये सबही हथियारा ।  
 जीता मोहतणा दलसारा । नारतजी शिवसुं रंगराचे । राजतजी पिण सा  
 हिव साचे ॥ ६ ॥ महाबल वंतज कहिये देवा । कायर कुंथुन एक हणेवा ।  
 रुद्धिसयल प्रनु पाश कहीजे । प्रिह्ता आहारी नाम प्रणीजै ॥ ७ ॥ निं  
 दक पूजक है समन्नायक । पिण सेवकही कों है सुखदायक । तज्यो परिग्र  
 हतें जगनायक । नाम अतीत सबे विधलायक ॥ ८ ॥ शत्रु मित्र समचित्त  
 प्रणीजै । नामदेव अरिहंत प्रणीजै । सयलजीव हितवंत कहीजै । सेवक  
 जाण महापद दीजै ॥ ९ ॥ सायर जैसा होय गंजीरा । दोष नहीं इक मां  
 ह सरीरा । मेरुअचल जिम अंतर जामी । पिण न रहै प्रनु एकण ठामी ॥  
 १० ॥ लोक कहै जिनजी सहु देखे । पिण सुपनो कवहु नविपेखे । री  
 सविना बावीस परीसह । सेन्याजीती ते जगदीसह ॥ ११ ॥ मान विना  
 जग आण मनायो । माया विना सबसुं लय जाई । लोभ विना गुण राशि  
 ग्रहीजै । प्रिहु प्रण त्रिगुणो सेवीजै । निग्रंथपणें शिर उत्र धरावै । नाम  
 जती पिण चवर ढोलावै । अन्नयदान दाता सुख कारण । आगल चक्र च  
 ले अरिदारण ॥ १२ ॥ श्री जिनराज दयाल प्रणीजै । करम सबे कोही  
 मूलखणीजै । चोवीह संवज तीरथ थापै । लज्जवणी देखै प्रनु आपै ॥ १३ ॥  
 विनयवंत प्रगवंत कहावै ॥ नां काऊकों शीश नमावै । अकिंचनको विरुध  
 धरावै । सोपद पंकज आतम ठावै ॥ १४ ॥ तजतरुणी निज गुणकों ध्या  
 वै । शिवरमणीकों साथ चलावै । रागनही पिण सेवकों तारै । छेप नहीं नि  
 गुणा संगवारे ॥ १५ ॥ तेरी महमा अदनुत कहिये । तेरा गुणको पार  
 न लहिये । तुं प्रनु समरथ साहिव मेरा । हुं मनमोहन सबके तेरा ॥ १६ ॥

तूरे त्रिलोक तणो प्रतिपाला । हुंरे अनाथ अहुंरे दयाला । तूं सरणांगत रा  
खण धीरा । तूवल्लि तारक ठे वडवीरा ॥ १८ ॥ तूही जिसो वरु जागज  
पायो । तो मेरो कामचड्योरे सवायो । करजोडी प्रभु वीनबुं तो सुं । करो  
कृपा जिनवरजी मोसुं ॥ १९ ॥ जामण मरण निवारण वारो । जवसायरथी  
पारउतारो । सारंग हथणा पुर मंरुण सोहै । तिहां श्री शांति सदा मनमोहै  
॥ २० ॥ पदम सागर गुरु पाय पसाया । श्री गुण सागर के मन जाया । जे  
नरनारी इक चित्तगावै । ते मन वंछित शिवसुख पावै ॥ २१ ॥ ❀ ॥  
इति श्री शांतिजिन स्तवनं शान्तिकरणार्थं ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ जीवचार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जुवण पइवं वीरं । नमिऊण जणामि अबुह बोहत्यं । जीव  
सरुवं किंचिवि । जह जणियं पुव सूरिहिं ॥ १ ॥ जीवा सुत्ता संसारिणोअ ।  
तस थावराय संसारी । पुढवी जल जलण बाऊ । वणत्सई थावरा नेया ॥ २ ॥  
फलिअ मणि रयण विहुम । हिंगलू हरियाल मणसिल रसिंदा । कणगाइ  
धान सेढी । वणी अरणेदय पलेवा ॥ ३ ॥ अघ्नय तूरीउसं । मट्टी पाहाण  
जाइउ एगा । सोवीरंजण जवणाई । पुढवी जेयाई इचाई ॥ ४ ॥ नूमंत  
रिरक सुदगं । उंसाहिम करग हरितण महिया । हुंतिघणोदहि माई । जेया  
एगाउ आऊत्स ॥ ५ ॥ इंगाल जाल मुम्मुर । उकासणि कणग विज्जुमा  
ईया । अगणिजीयाणं जेया । नायवा निउणबुद्धीए ॥ ६ ॥ उप्पामग उक्क  
लिया । मंरुलि मुह सुव गुंजवायाय । वणतण वायाइया । जेयाखट्ट वाउ  
कायस्स ॥ ७ ॥ साहारण पत्तेया । वणत्सई जीवा पुहासुए जणिया । जेसि  
मणंताणतण । एगा साहारणा तेऊ ॥ ८ ॥ कंदाअंकुर किसलिय । पणगा  
सेवाल नृमिफोडाय । अत्तत्तिय गज्जर मोत्थ । वत्थुला थेग पल्लंका ॥ ९ ॥  
कोमल फलंच सबं । गूढ, सिराइ सिणाइ पत्ताई । थोहारि कुमार गुग्गुल ।  
गिलोइ पमुहाइ उन्नरुहा ॥ १० ॥ इचाइणो अणेगे । हवंति जेया अणंत  
कायाणं । तेसिं परिजाणणत्थं । जरकण मेयं सुए जणियं ॥ ११ ॥ गूढ  
सिर संधि पवं । सम जंग महीरगंच उन्नरुहं । साहारणं सरीरं । तविवरिअं च  
पत्तेयं ॥ १२ ॥ एग सरीरे एगो जीवो जे सिंठु तेअ पत्तेया । फज पुव ङडि



कठा । मूला पत्ताणि वीयाणी ॥ १३ ॥ पत्तेय तरु सुत्तुं । पंचवि पुढवाइणो  
 सयललोए । सुहुमा हवंति नियमा । अंतमहुत्तात्त अदिस्सा ॥ १४ ॥ संस  
 कवडुय गंमोल । जलोय चंदणग अजस लहुगाइ । मेहरी किमि पूअरगा ।  
 वेइंदिय माइ वाहाई ॥ १५ ॥ गोमी मंकण जूआ । पिपीलि उदेहियाय  
 मकोडा । इल्लिय धयमिल्लीत्त । सावय गोगीरु जाईत्त ॥ १६ ॥ गदहय चोर कीडा  
 गोमयकीमाय धन्नकीमाय । कुंथु गोवालय इल्लिया । तेइंदिय इंदि गोवाई  
 ॥ १७ ॥ चत्तरिंदियाय विच्छू । ढिंकुण जमराय जमरिया तिड्डा । मन्त्रिय  
 मंसा मसगाकंसारी कवल मोलाई ॥ १८ ॥ पंचेदियाय चत्तहा । नारय तिरिया  
 मणुस्स देवाय । नेरइया सत्तविहा । नायवा पुढविजेएणं ॥ १९ ॥ जलयर थलयर  
 खयरा । तिविहा पंचेदिया तिरिरकाय । सुसुमार मत्त कत्तव । गाहा मगराय  
 जलचारी ॥ २० ॥ चत्तपय उत्तरि सप्पा । जुय परि सप्पाय थलयरा तिविहा ।  
 गोसप्प नवल पसुहा । बोधवाते समासेणं ॥ २१ ॥ खयरा रोमय परकी ।  
 चम्मय परकीय पायडाचेव । नर लोगात्त वाहिं । समुग्ग परकी विअय परकी  
 ॥ २२ ॥ सबे जल थल खयरा । समुत्तिमा गप्पया पुहा हुंति । कम्मा  
 कम्मग नूमि । अंतर दीवा मणुस्साय ॥ २३ ॥ दसहा जुवणाहि वई । अठ  
 विहा वाण व्यंतरा हुंति । जोइसिया पंचविहा । पुविहा वेमाणिया देवा ॥ २४ ॥  
 सिद्धा पनरस जेया । तित्थ अतित्थाइ सिद्ध जेएणं । ए ए संखे वेणं । जीव  
 विगप्पा समरकाया ॥ २५ ॥ ए ए सिं जीवाणं । सरीर माज्जिई सकायंमि  
 पाणा जोणि पमाणं । जेसिंजं अत्थितं जणमो ॥ २६ ॥ अंगुल असंख जागो ।  
 सरीर मेगिंदियाण सबेसिं । जोयण सहस्स महियं । नवरं पत्तेय स्वरकाणं ॥  
 २७ ॥ वारस जोयण तिन्नेव गात्तआ । जोयणंच अणुकमसो । वेइंदिय तेइ  
 दिय । चत्तरिंदिय देह सुच्चत्तं ॥ २८ ॥ धनुसय पंच पमाणा । नेरइया सत्तमाइ  
 पुढवीए । तत्तो अच्चट्ठणा । नेया खणप्पहाजाव ॥ २९ ॥ जोयण सहस्स माणा ।  
 मत्तानुरगाय गप्पया हुंति । धणुअ पट्टत्तं परकी । जुयचारी गात्त अपट्टत्तं ॥  
 ॥ ३० ॥ खयरा धणुअ पट्टत्तं । नुरगा उत्तरगाय जोयण पट्टत्तं । गात्तय पट्टत्तमित्ता  
 समुत्तिमा चत्तप्पया जणिया ॥ ३१ ॥ उच्चेव गात्तआई । चत्तप्पया गप्पयासुणे  
 यवाकोस तिगुच्च मणुस्सा । उक्कोम सरीर माणेणं ॥ ३२ ॥ ईमाणंत सुराणं ।

रयणीउ सत्त देह उच्चत्तं । पुग पुग पुग चउ गेविऊ । एउत्तरे इक्कि परि  
हाणी ॥ ३३ ॥ बावीसा पुढवीए । सत्तय आउस्स तिन्नि वाउस्स । वासस  
हस्सा दशतरु । गणाण तेऊ तिरत्ताऊ ॥ ३४ ॥ वासाणि वारसाऊ । वेइं  
दिय ते इंदियाण अणुक्कमसो । अणुणापन्न दिणाइं । चउरिंदीणं तु अम्मासा ॥  
॥ ३५ ॥ सुर नेरइयाण ठिई । उक्कोसा सागराणि तित्तीसं । चउपय तिरिय  
माणस्सा । तिन्निय पलित्तवमा हुंति ॥ ३६ ॥ जलयर उर चुयगाणं । परमाऊ  
होइ पुवकोडीऊ । परकीणं पुण जणिउ । असंख जागो अ पलियस्स ॥ ३७ ॥  
सबे सुहमा साहारणाय । समुत्थिमा मणुस्साय । उक्कोस जहनेणं । अंतम  
हुत्तं चिय जियंति ॥ ३८ ॥ उगाहणा उमाणं । एवं संखेवउ समरकायं ।  
जे पुण इअविसेसा । विसेस सुत्ताउ तेनेया ॥ ३९ ॥ एगिंदि याय  
सबे । असंख उसप्पणी सकायंमि । उववज्जंतिचयंतिअ । अणंत काया  
अणंतान ॥ ४० ॥ संखिऊ समा विगजा । सत्तठ जवा पणिंदि तिरि  
मणुया । उववज्जंति सकाए । नारय देवाअ नोचेव ॥ ४१ ॥ दसहा  
जियाण पाणा । इंदिय उत्तास आउ वलरूवा । एगेंदिएसु चउरो । विग  
जेसु अत्त अठेव ॥ ४२ ॥ असन्नि सन्नि पंचेंदिएसु । नव दस कमण बोधवा ।  
तेहिंसह विप्पज्जो । जीवाणं जन्नए मरणं ॥ ४३ ॥ एवं अणोर पारे । संसारे  
सायरंमि जीमंमि । पत्तो अणंत खुत्तो । जीवेहिं अपत्त धम्मेहिं ॥ ४४ ॥ तह  
चउत्तासी जरका । संखा जोणीण होइजीवाणं । पुढवाईण चउएहं । पत्तेयं  
सत्त सत्तेव ॥ ४५ ॥ दस पत्तेय तरूणं । चउदस जरका हवंति इयरेसु । वि  
गलें दियेसु दो दो । चउरो पंचेंदि तिरियाणं ॥ ४६ ॥ चउरो चउरो नारय  
सुरेसु । माणुआण चउदस हवंति । संपिम्मियाय सबे । चुजसी जरकान  
जोणीणं ॥ ४७ ॥ सिद्धाण नत्थिदेवो । न आउ कम्मं न पाण जोणीउ ।  
साइ अणंता तेसिं । ठिई जिणंदा गमे जणिया ॥ ४८ ॥ काजे  
अणाइ निहिणे । जोणी गहणम्मि जीसणे इत्थ । जमिया जमिहंति चिरं ।  
जीवा जिनवयण मज्जहंता ॥ ४९ ॥ तासंपइ संपत्ते । माणु अत्ते पुज्जहे विसम्म  
त्ते । सिरि संति सूरि सिठे । करेह जो उऊ मंधम्मे ॥ ५० ॥ एसो जीव वियारो  
संखवं रुईणजाणणा हेऊ । संखित्तो उवरियो । रुंदाउ सुअ समुदाउ ॥ ५१ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ नवतत्त्व प्रकरण लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जीवा जीवा पुन्नं पावा । सब संवरोय निज्जरणा । वंधो सुरकोय  
तहा । नवतत्ता हुंति नायवा ॥ १ ॥ चवदस चवदस वयालीसा । वयासीया  
हुंति वायाला । सत्तावन्नं वारस । चउनव जेया कमेणोसिं ॥ २ ॥ एग विह  
दुविह तिविहा । चउविहा पंच ठविहा जीवा । चेयण तस इयरोहिं । वेय गई  
करण काणहिं ॥ ३ ॥ एगिंदिय सुहु मियरा । सन्नियर पणिंदिया य स विति  
चऊ । अपजत्ता पज्जत्ता । कमेण चउदस जीय छाणा ॥ ४ ॥ आहार सरीर  
इंद्रिय । पज्जत्ती आणपाण जास मणे । चउ पंच पंच ठप्पिय । इग विगला  
सन्नि सन्नीणं ॥ ५ ॥ धम्मा धम्मा गासा । तिय तिय जेया तहेव अघाय ।  
खंधा देस पएसा । परमाणु अजीव चउदसहा ॥ ६ ॥ धम्मा धम्मा पुग्गल ।  
नह कालो पंच हुंति अजीवा । चउण सहावो धम्मो । थिर संठाणो अहम्मोय  
॥ ७ ॥ अवगाहो आगासं । पुग्गल जीवाण पुग्गला चउहा । खंधा देस  
पएसा । परमाणु चेव नाइवा ॥ ८ ॥ समया वलिय महुत्ता । दीहा परकाय  
मास वरिसाय । जणित्तं पलिया सागर । उसप्पणी सप्पणी कालो ॥ ९ ॥  
एगा कोडी सतसठि लरक । सत्तहत्तरि सहस्साय । दोयसया सौजहिया ।  
आवलियाणं महुत्तंमि ॥ १० ॥ तिन्नि सहस्सा सत्तय सयाइं । तेउत्तरिंच ऊ  
सासा । एसमहुत्तो जणियो । सवेहिं अनंत नाणीहिं ॥ ११ ॥ सा उच्च गोय  
माणुग । सुरणुग पंचेदि जाइ पण देहा । आइति तण्ण वंगा । आइम संघ  
यण संठाणा ॥ १२ ॥ वन्न चउका गुरु लहु । परवा ऊसास आय बुज्जोयं ।  
सुन्नखगई निमिण तसदस । सुरनर तिरियानु तित्थयरं ॥ १३ ॥ तस वायर  
पज्जत्तं । णत्तेय थिरं सुज्जंच सुज्जगंच । सूसर आइऊ जसं । तसाइ दसगं  
इमं होइ ॥ १४ ॥ नाणंतराइ दसगं । नववीए नीय साय मिठत्तं । थावर दस  
नरयतिगं । कसाय पणवीस तिरिय दुगं ॥ १५ ॥ इग विति चउ जाईउ । कुखगइ  
उववाय हुंति पावस्स । अपसत्थं वन्न चऊ । अपढम संवयण संठाणा ॥ १६ ॥  
थावर सुहम अपज्जं । साहारण अथिर असुन्न दुज्जगाणि । इमर अणाई ऊहिं  
अजमेहिं वीय दमगंतु ॥ १७ ॥ इंदिय कमाय अव्वय । जोगा पंच चउ पंच  
तिन्नि कमां । किरियानु पणवीसं । इमानु नानु अणुक्रमसो ॥ १८ ॥ काइय

अहिगरणिया । पाउसिया पारतावणी किरिया । पाणाई वाया रंजिय । परि  
ग्गहिया माय वत्तीया ॥ १९ ॥ मिठ्ठा दंसणवत्ती । अपचरकाणाय दिठ्ठि  
पुठ्ठीय । पाउ चिय सामंतो । वणीय नेसत्थि साहत्थी ॥ २० ॥ आणवाणि  
वियारणिया अण्णोगा । अण्णदकंख पच्चइया । अन्ना पत्तग समुदाण ।  
पिज्ज दोसे रिया वहिया ॥ २१ ॥ समई गुत्ती परिसह । जइधम्मो जावणा  
चरित्ताणि । पण तिग पुवीस दस बारह । पंच जेएहिं सगवन्ना ॥ २२ ॥  
इरिया ज्ञासै सणा दाणे । उच्चारे समई सुय । मणगुत्ती वयगुत्ती । काय  
गुत्तीय अठ्ठा ॥ २३ ॥ खुहा पिवासा सी उन्हं । दंसा चेला रइत्थिउ ।  
चरिया निसीहिया सिज्जा । अकोस वह जायणा ॥ २४ ॥ अजात्र रोग  
तण्णफास । मल सकार परीसह । पन्ना अन्नाण सम्मत्तं । इय बावीस परीसहा ॥  
॥ २५ ॥ खंती मइव अज्जव । सुत्ती तव संजमेय वोधवे । सच्चं सोयं अकिंच  
एंच । वंजंच जइ धम्मो ॥ २६ ॥ पढम मणिव मसरणं । संसारो एगयाय  
अन्नत्तं । असुइत्तं आसव संवरोय । तह निज्जारा नवमी ॥ २७ ॥ लोग  
सहावो वोही । पुलहा धम्मस्स साहगारिहा । एयाउ जावणाउ । जवेयवा  
पयत्तेण ॥ २८ ॥ सामाइयत्थ पढमं । तेउठावणं जवेवीयं । परिहार विसु  
खीयं । सुहर्मतह संपरायंच ॥ २९ ॥ तत्तो अहरकायं । खायं सव्वमि जीव  
लोगमि । जं चरिऊण सुविहिया । वच्चंति अयरा मरंठाणं ॥ ३० ॥ अणसण मूणो  
इरिया । वित्ती संखेवणं रसच्चाउ । काय किलेसो संलीणयाय । वज्जो तवोहोइ  
॥ ३१ ॥ पायवित्तं विण्णउ । वेया वच्चं नहेव सज्जाउ । जाणं उस्सगोविय  
अप्पितरउ तउ होइ ॥ ३२ ॥ वारस विहं तवो निज्जाराय । वंधोय चउ विग  
प्पोय । पयइ ठिई अण्णजागो । पएस जेएहिं नाइवो ॥ ३३ ॥ पयई सहावा  
बुत्ता । ठिई काला वहारणं । अण्णजागो रसोणेउ । पएसो दल संचउ ॥  
॥ ३४ ॥ पड पफिहार मि मज्जा । हड चित्त-कुलाल जंमगारीणं ।  
जह एणमि जावा । कम्माणावि जाण तहजावा ॥ ३५ ॥ मंतपय  
पन्वणया । दव्व पमाणंच खित्त पुसणाय । कालोय अंतरं नाग ।  
जावे अप्पावहुं चेव ॥ ३६ ॥ मंतं सुद्ध पइत्ता । विज्जंतं ख कुसुम वन अमंतं ।  
सुग्गत्ति पयं तल्ल उ पन्वणा मग्गणा ईहिं ॥ ३७ ॥ गइ इंदिय काए ।

जोए वेए कसाय नाणेसु । संजम दंसणजेसा । जव सम्मे सन्नि आहारे ॥ ३८ ॥  
 नर गइ पणिंदि तसजव । सन्नि अहरकाय खइय सम्मत्ते । मुरकोणहार  
 केवल । दंसण नाणे नसेसेसु ॥ ३९ ॥ दवपमाणे सिद्धाणं । जीव दवाणि हुंति एं  
 ताणि । जोगस्स असंखिजे । जागे इकोय सबेवि ॥ ४० ॥ फुसणा अहिया  
 कालो । इगसिद्ध पमुच्च साईयाणंतो । पम्बियाया जावान् । सिद्धाणं अंतरं  
 नात्थि ॥ ४१ ॥ सबजीयाण मणंतो । जागे तेतेसि दंसणं नाणं । खइए जावे  
 परिणामिएय । पुण होइ जीवत्तं ॥ ४२ ॥ थोवा नपुंस सिद्धा । थीनर सिद्धा  
 क्रमेण संखगुणा । इय मुरकतत्तमेयं । नवतत्ता जेस उं जणिया ॥ ४३ ॥  
 जीवाइ नवपयत्थे । जो जाणइ तस्स होइ सम्मत्तं । जावेण सदहंतो । अयाण  
 माणेइ सम्मत्तं ॥ ४४ ॥ सवाइं जिनेसर जासियाइं । वयणाइं नन्नहा हुंति ।  
 इय बुद्धी जस्समणे । सम्मत्तं निच्चलंतस्स ॥ ४५ ॥ अंतो मुहुत्त मित्तपि ।  
 फासिअं हुज्ज जेहिं सम्मत्तं । तेसिं अवट्ट पुग्गल । परियट्ठो चेव संसारो ॥ ४६ ॥  
 उसप्पणी अणंतो । पुग्गल परियट्ठं मुण्येयवो । तेणंतो ती अच्चा । अणगयच्चा  
 अणंतगुणा ॥ ४७ ॥ जिण अजिण तित्थ तित्था । गिहि अन्न सलिंगथी  
 नर नपुंसा । पत्तेय सयं बुद्धा । बुद्धवोही कणि काय ॥ ४८ ॥ जिण सिद्धा अ  
 रिहंता । अजिण सिद्धाय पुंनरिआ पमुहा । गणहारि तित्थसिद्धा । अतित्थ  
 सिद्धाय मरुदेवी ॥ ४९ ॥ गिहि लिंग सिद्ध जरहो । वट्ठकल चीरीय अन्न जि  
 गम्भि । साहु सलिंग सिद्धा । थी सिद्धा चंदणा पमुहा ॥ ५० ॥ पुंसिद्धा गो  
 यमाई । गांगेय पमुहं नपुंसया सिद्धा । पत्तेय सयंबुद्धा । जणिया करकंडु कवि  
 लाई ॥ ५१ ॥ तह बुद्ध बोहि गुरु बोहिया । इग समय इक्क सिद्धाय । इग  
 समये वि अणेगा । सिद्धात्ते णेग सिद्धाय ॥ ५२ ॥ इति नवतत्त्व विचारः

॥ ❀ ॥ अथ दंभक प्रकरण लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नमिजं चउवीस जिणे । तस्सूत्त वियार जेस देसणउ । दंभ  
 पण्हिं तेचिय । थोसामि सुणेह जोजवा ॥ १ ॥ नेरइया असुराई । पुढवाई  
 वेदीया दन्नेव । गअय तिरिय मणुस्सा । वितर जोइसिय वेमाणी ॥ २ ॥  
 संसत्तरिउं इमा । सरीर मोगाहणाय मंवरणा । सन्ना संठाण कसाय । जेस  
 दिय पु समग्घाया ॥ ३ ॥ दिछा दंसण नाणे । जोगु वज्जो ववाय चवण ठिई ।

पञ्जाति किमाहारे । सन्नि गइ आगई वेए ॥ ४ ॥ चउगप्र तिरिय वाउसु ।  
मणुआणं पंचसेस ति सरीरा । थावर चउगे छुहउ । अंगुला संख जागतए  
॥ ५ ॥ सवेमिंपि जहन्ना । साहाविय अंगुलस्स संखंसो । उक्कोस पणसय  
धाणु । नेरइया सत्तहत्य सुरा ॥ ६ ॥ गअतिरि सहस्स जोयण । वणस्सई अहिय  
जोयण सहस्सं । नर तेइंदिय तिगाऊ । वेइंदिय जोयणेवार ॥ ७ ॥ जोयण मेगं  
चउरिंदि । देह मुच्चत्तणं सुए अणियं ॥ वेउविय देहंपुण । अंगुल संखं समारंजे  
॥ ८ ॥ देवनर अहिय लक्खं । तिरियाणं नव जोयण सयाणं । पुगुणंतु  
नारयाणं । अणियं वेउविय सरीरं ॥ ९ ॥ अंत महत्तं निरे । मुहुत्त चत्तारि  
तिरिय मणुएसु । देवेसु अन्मासो । उक्कोस विउवणा कालो ॥ १० ॥ था  
वर सुर नेरइया । असंवयणाय विगल वेवछा । संधयण उगं गप्पय । नर  
तिरिएसु सुणेयवं ॥ ११ ॥ सवेमिं चउदह वासन्ना । सवेसुराय चउरंसा ।  
नर तिरिय उंसंठाणा । हुंसा विगलेदि नेरइया ॥ १२ ॥ नाणाविह धय  
सूई । छुच्चुअ वण वाउ तेउ अप्पकाया । पुहवी मसूर वंदा । कारा संठाणंत  
अणिया ॥ १३ ॥ सवेवि चउ कसाया । लेसउगं गअतिरिय मणुएसु । नारय  
तेऊ वाऊ । विगला वेमाणीय तिलेसा ॥ १४ ॥ जोइ सिय तेऊ लेसा ।  
सेसा सवेवि हुंति चउलेसा । इंदिय दारं सुगमं । मणु आणं सत्त समुग्घाया  
॥ १५ ॥ वेयणा कमाय मरणे । वेऊविय तेयएय आहारे । केवलिय समुग्घा  
ए । मत्तइमे हुंति सन्नाणं ॥ १६ ॥ एगिंदियाण केवली । तेय आहारग  
विणान चत्तारी । ते वेउविय वज्जा । विगला सन्नाण नंचेव ॥ १७ ॥  
पण गप्पय तिरि सुरेसु । नारय वाऊसु चउर तिय सेसे । विगल छुदि  
छी थावर । मिठत्ती सेम तिय दिछी ॥ १८ ॥ थावर विनिसु अचल्लु ।  
चउरिंदिसु तद्दगं सुए अणियं । मणुआ चउ दंसणिणो । सेमेसु निर्गं निर्गं  
अणियं ॥ १९ ॥ अन्नाण नाण तियं । सुर तिरि निरिए थिरे अन्नाण पुगं ।  
नाणा न्नाण छुविगले । मणुए पण नाण तिअ न्नाणा ॥ २० ॥ इक्कारम सुर  
निरए । निर्गिएसु नेर पन्नर मणुएसु । विगले चउ पण वाए । जोग तिग  
थावरे होइ ॥ २१ ॥ उवउणा मणुएसु । वारम नव निरय तिरिय देवेसु ।  
विगलपुगे पणउक्कं । चउरिंदिसु थावरे नियगं ॥ २२ ॥ मंखम मंखा समए ।



जोए वेए कसाय नाणेसु । संजम दंसणजेसा । जव सम्मे सन्नि आहारे ॥३८॥  
 नर गइ पणिंदि तसजव । सन्नि अहरकाय खइय सम्मत्ते । मुरकोणहार  
 केवल । दंसण नाणे नसेसेसु ॥३९॥ दवपमाणे सिद्धाणं । जीव दवाणि हुंति सं  
 ताणि । लोगस्स असंखिजे । जागे इकोय सबेवि ॥ ४० ॥ फुसणा अहिया  
 कालो । इगसिद्ध पमुच्च साईयाणंतो । पम्बियाया जावाउ । सिद्धाणं अंतरं  
 नत्थि ॥ ४१ ॥ सबजीयाण मणंतो । जागे तेतेसि दंसणं नाणं । खइए जावे  
 परिणामिएय । पुण होइ जीवत्तं ॥ ४२ ॥ थोवा नपुंस सिद्धा । थीनर सिद्धा  
 क्रमेण संखगुणा । इय मुरकतत्तमेयं । नवतत्ता जेस उं जणिया ॥ ४३ ॥  
 जीवाइ नवपयत्थे । जो जाणइ तस्स होइ सम्मत्तं । जावेण सदहंतो । अयाण  
 माणेइ सम्मत्तं ॥ ४४ ॥ सवाइं जिनेसर जासियाइं । वयणाइ नन्नहा हुंति ।  
 इय बुद्धी जस्समणे । सम्मत्तं निच्चलंतस्स ॥ ४५ ॥ अंतो मुहुत्त मित्तं पि ।  
 फासिअं हुज्ज जेहिं सम्मत्तं । तेसिं अवट्ट पुग्गल । परियट्ठो चेव संसारो ॥ ४६ ॥  
 उसप्पणी अणंतो । पुग्गल परियट्ठं मुण्येवो । तेणंता ती अद्धा । अणगयद्धा  
 अणंतगुणा ॥ ४७ ॥ जिण अजिण तित्थ तित्था । गिहि अन्न सलिंगथी  
 नर नपुंसा । पत्तेय सयं बुद्धा । बुद्धवोही कणि काय ॥ ४८ ॥ जिण सिद्धा अ  
 रिहंता । अजिण सिद्धाय पुंनरिआ पमुहा । गणहारि तित्थसिद्धा । अतित्थ  
 सिद्धाय मरुदेवी ॥ ४९ ॥ गिहि लिंग सिद्ध जरहो । वल्लकल चीरीय अन्न लिं  
 गम्मि । साह सलिंग सिद्धा । थी सिद्धा चंदणा पमुहा ॥ ५० ॥ पुंसिद्धा गो  
 यमाई । गांगेय पमुहं नपुंसया सिद्धा । पत्तेय सयंबुद्धा । जणिया करकंडु कवि  
 लाई ॥ ५१ ॥ तह बुद्ध वोहि गुरु वोहिया । इग समय इक्क सिद्धाय । इग  
 समये वि अणेगा । सिद्धात्ते णेग सिद्धाय ॥ ५२ ॥ इति नवतत्त्व विचारः

॥ ❀ ॥ अथ दंस्क प्रकरण लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नमिजं चउवीस जिणे । तस्सूत्त वियार जेस देसणउ । दंस्का  
 पणहिं तेचिय । थोसामि सुणेह जोजवा ॥ १ ॥ नेरइया असुराई । पुढवाई  
 वेदीया दउचेव । गअय तिरिय मणुस्सा । वितर जोइसिय वेमाणी ॥ २ ॥  
 संत्तत्तरिउ इमा । सरीर मोगाहणाय संवयणा । सन्ना संठाण कसाय । जेम  
 दिय पु समग्वाया ॥ ३ ॥ दिछा दंसण नाणे । जोरु वज्जो ववाय चवण ठिई ।

पञ्जाति किमाहारे । सन्नि गइ आगई वेए ॥ ४ ॥ चनगप्र तिरिय वाजसु ।  
 मणुआणं पंचसेस ति सरीरा । थावर चनगे छुहने । अंगुला संख जागतण  
 ॥ ५ ॥ सबेमिपि जहन्ना । साहाविय अंगुलस्स संखंसो । उक्कोस पणसय  
 धणं । नेरइया सत्तहत्थ सुरा ॥ ६ ॥ गप्पतिरि सहस्स जोयण । वणस्सई अहिय  
 जोयण सहस्सं । नर तेइंदिय तिगाऊ । वेइंदिय जोयणेवार ॥ ७ ॥ जोयणमेगं  
 चनरिंदि । देह मुच्चत्तणं सुए जणियं ॥ वेजविय देहंपुण । अंगुल संखं समारंजे  
 ॥ ८ ॥ देवनर अहिय लक्खं । तिरियाणं नव जोयण सयाणं । छुणुणंतु  
 नारयाणं । जणियं वेजविय सरीरं ॥ ९ ॥ अंत महत्तं निरे । मुहुत्त चत्तारि  
 तिरिय मणुएसु । देवेसु अरुमासो । उक्कोस विज्जवणा कालो ॥ १० ॥ था  
 वर सुर नेरइया । असंघयणाय विगल ठेवठा । संघयण उगं गप्पय । नर  
 तिरिएसु सुणेयवं ॥ ११ ॥ सबेसिं चनदह वासन्ना । सबेसुराय चनरंसा ।  
 नर तिरिय ठसंठाणा । हुंता विगलेंदि नेरइया ॥ १२ ॥ नाणाविह धय  
 सूई । बुब्बुअ वण वाज तेज अप्पकाया । पुहवी मसूर वंदा । कारा संठाणत्त  
 जणिया ॥ १३ ॥ सबेवि चन कसाया । जेसठगं गप्पतिरिय मणुएसु । नारय  
 तेऊ वाऊ । विगला वेमाणीय तिलेसा ॥ १४ ॥ जोइ सिय तेऊ जेसा ।  
 सेसा सबेवि हुंति चनजेसा । इंदिय दारं सुगमं । मणु आणं सत्त समुग्घाया  
 ॥ १५ ॥ वेयणा कमाय मरणे । वेजविय तेयएय आहारे । केवलिय समुग्घा  
 ए । सत्तइमे हुंति सन्नाणं ॥ १६ ॥ एगिंदियाण केवली । तेय आहारग  
 विणात्त चत्तारी । ने वेजविय वज्जा । विगला सन्नीण तंचेव ॥ १७ ॥  
 पण गप्पय तिरि सुरेसु । नारय वाऊसु चनर तिय मेसे । विगल छुदि  
 छी थावर । मिन्नत्ती मेस तिय दिछी ॥ १८ ॥ थावर वितिसु अचख्खु ।  
 चनरिंदिसु तद्दुगं सुए जणियं । मणुआ चन दंसणिणो । सेसेसु तिगं तिगं  
 नणियं ॥ १९ ॥ अन्नाण नाण तियं । सुर तिरि निरे थिरे अन्नाण दुगं ।  
 नाणा चाण छुविगले । मणुए पण नाण तिअ न्नाणा ॥ २० ॥ इक्कारम सुर  
 निरे । तिरिएसु तेर पन्नर मणुएसु । विगले चन पण वाण । जोग तिग  
 थावरे होइ ॥ २१ ॥ चननगा मणुएसु । वारस नव निरय तिरिय देवेसु ।  
 विगलदुगे पाणत्तकं । चनरिंदिसु थावरे तियगं ॥ २२ ॥ संखम संखा समए ।

गङ्गाय तिरि विगल नारय सुराय । मणुआ नियमा संखा । वण अणंता  
 थावर असंखा ॥ २३ ॥ असन्निर असंखा । जह उववाउं तहेव चबणेवि ।  
 वावीस सगति दसवास । सहस्स उक्किठ पुढवाई ॥ २४ ॥ तिदिणग्गि तिप  
 लाऊ । नर तिरि सुर निरय सागर तितीसा । विंतर पळं जोइस । वरिस  
 लख्खा हियं पळियं ॥ २५ ॥ असुराण अहियअयरं देसूण पुपळयं नवनिकाए ।  
 वारस वासाणपण दिण।अम्मास उक्किठ विगलाऊ ॥ २६ ॥ पुढवाई दस पयाणं ।  
 अंतमहुत्तं जहन्न आउठिई । दससहस्स वरस ठिईआ । नवणाहिव निरय  
 विंतरिया ॥ २७ ॥ वेमाणिय जोइसिआ । पळ तयठंस आऊआहुंति । सुरनर  
 तिरि निरएसु । अपळात्ती थावरे चउगं ॥ २८ ॥ विगले पंच पळात्ती । अदिसि  
 आहार होइ सवेसिं । पणगाई पए जयणा । अहसन्नि तिगं जणिस्सामि ॥ २९ ॥  
 चउविह सुरतिरिएसु । निरएसु दीह कालगी सन्ना।विगले हेउवएसा । सन्ना  
 रहिया थिरासवे ॥ ३० ॥ मणु आणदीह कालिअ । दिठोवान वएसिआकेवि ।  
 पळापणतिरि मणुच्चिय । चउविह देवेषु गठंति ॥ ३१ ॥ संखान पळात्त पणिदि ।  
 निरिय नरेसु तहेव पळात्ते । नूदग पत्तेय वणे । एए सुच्चिय सुरागमणं ॥ ३२ ॥  
 पळात्त संख गङ्गाय । तिरीय नरा निरय मत्तगे जंति । निर उवट्टा एएसु । उ  
 व वळांति नसेसेसु ॥ ३३ ॥ पुढवी आऊ वणस्सई । मझे नारय विवळि आ  
 जीवा सव्वेवि उव वळांति । निय निय कम्माणु माणेणं ॥ ३४ ॥ पुढवाई दस  
 पएसु । पुढवी आउ वणस्सई जंति । पुढ वाइ दस पएहिय । तेउ वाऊ सुउव  
 वाउं ॥ ३५ ॥ तेऊ वाऊ गमणं । पुढवी पसुहंमी होइ पय नवगे । पुढ वाई  
 ठाण दसगा । विग लाई निय तहिं जंति ॥ ३६ ॥ गमणा गमणं गङ्गाय । तिरि  
 आणं मयल जीव ठाणेसु । सव्वत्थ जंति मणुआ । तेऊ वाऊहिं नोइंति ॥  
 ३७ ॥ वेय निय तिरि नरेसु । इत्थी पुरि सोय चउविह सुरेसु । थिर विगल  
 नारएसु । नपुंम वेउ हवइएगो ॥ ३८ ॥ पळा मणु वाय रगी । वेमाणिय न  
 वण निरय विंतरिआ । जोइम चउपण तिरिआ । वेइंदिय ते उंदिय नृ आऊ  
 ॥ ३९ ॥ वाऊ वणस्सई विय । अहिआ अहिआ कमेणमे हुंति । सव्वेवि इमे  
 जावा । जिणामाणंत मोपत्ता ॥ ४० ॥ संपइ तुम्हं जत्तस्स । दंसकपय जमण  
 जग्ग हीयस्स । दंस निय विरय सुलहं । जहु ममं दिंतु सुक्क पयं ॥ ४१ ॥ सि

रि जिणहंस सुणीसर । रज्जे सिरि धवलचंद सीसेण । गज सोरेण जिहिया ।  
एसा विन्नती अण्हिआ ॥ ४२ ॥ इति दंरुक प्रकरणम् ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीलघुसंवयणी लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नमिय जिणं सव्वन्तु । जग पुज्जं जगगुरु महावीरं । जंबुद्वीव प  
यत्थे । बुद्धं सुत्ता सपरिहेज्ज ॥ १ ॥ खंभा जोयण वासा । पव्वय कूडाय तिस्थ  
सेठीत्त । विजयदह सलिलान् । पिंमेसिं होइ संवयणी ॥ २ ॥ नत्तय सयं खं  
भाणं । जरह पमाणेण जाइए लक्खे । अहवा नत्तय सय गुणं । जरह पमाणं  
हवइ लक्खं ॥ ३ ॥ अहविग खंमे जरहे । दो हिमवंतेअ हेमवई चत्तरो । अठ  
महा हिमवंते । सोलस खंभाइ हरिवासे ॥ ४ ॥ वत्तीसं पुण निसट्ठे । मि  
जिया तेसठि वीय पामेवि । चत्तसठित्त विदेहे । तिरासि पिंमेइ नत्त असयं  
॥ ५ ॥ जोयण परिमाणाइं । समचत्तरंसाइं इत्थ खंभाइं । लक्खस्सय परि  
हीए । तप्पाय गुणेय हुंतेव ॥ ६ ॥ विक्खंज वग्ग दहगुण । करणी वट्ठस्स प  
रित्त होइ । विक्खंज पाय गुणित्त । परित्त तस्स गाणिय पयं ॥ ७ ॥ परहि  
निलक्ख सोलस । महस्स दोय सय सत्तवीस हिया । कोस तिगं अठावीसं ।  
धाणुसय तेरं गुलद्धियं ॥ ८ ॥ मत्तेवय कोडिसया । नत्तया अण्ण सय सह  
स्साइं । चत्तणत्तयंच महस्सा । मयं दिवद्धंच साहियं ॥ ९ ॥ गात्तय मेगं पन्न  
स्स । धाणुसया तह धण्ण पन्नस्स । सठ्ठिच अंगुलाइ । जंबुद्वीवस्स गाणियपयं  
॥ १० ॥ जरहाइ सत्तवासा । वियट्ठ चत्त चत्त रतिं सवट्ठियरे । सोलस वक्खार  
गिरि । दो चित्त विचित्त जमगा ॥ ११ ॥ दो मय कणय गिरीणं । चत्त गय  
दंताय तह सुमेहय । ठ वासहरा पिंमे । एगुण सत्तरि मयापुत्ति ॥ १२ ॥  
सोलस वक्खारेसु । चत्त चत्त कूडाय हुंति पत्तेयं । सोमणस्स गंधमायण । सत्त  
ठय रुप्पि महाहिमके ॥ १३ ॥ चत्ततीम वियट्ठेसु । विद्धुयह निमट्ठ नील वंतेसु ।  
तह मालवंत सुरगिरि । नव नव कूडाइं पत्तेयं ॥ १४ ॥ हिम मिहारिसु इकात्तमा  
इय इगमठा गिरिसु कूडाणं । एगत्ते सव्वणं । सय चत्तरो सत्त मठीया ॥ १५ ॥  
चत्तसत्त अत्तनवगे । गारम क्कंहि गुणह जहसंखं । सोलस पुट्ठगुणायानं ।  
पुवेय सगमठ मयचत्तरो ॥ १६ ॥ चत्ततीसं विजण्णसु । उत्तुक्कना अठमेरु  
जंबुम्भि । अठय देव कुराइं । हरी क्कम हरित्तहेसठी ॥ १७ ॥ मागह वरदाम

पञ्चासं । तित्थविजयेसु ऐरवयजरहे । चउतीसा तिहिगुणिया । डुरुत्तर सयंतु  
 तित्थाणं ॥ १८ ॥ विक्काहर अजिउगीय । सेढीउं डुन्नि डुन्निवेयहे । ड्य  
 चउगुण चउतीसा । वत्तीस सयंतुसेढीणं ॥ १९ ॥ चक्की जेयवाइं । विजयाइं  
 इत्थहुंतिचउतीसा । मह दह व प्पउमाई । कुरुसु दसगंति सोलसगं ॥ २० ॥  
 गंगा सिंधू रत्ता । रत्तवई चउनइउ पत्तेयं । चवदसहिं सहस्सेहिं । ममगं  
 वचंति जलहिंमि ॥ २१ ॥ एवंअप्पितरया । चउरो पुण अठवीस सहस्सेहिं ।  
 पुणरवि ढप्पनेहिं । सहस्सेहिं जंतिचउसलिला ॥ २२ ॥ कुरुमझे चउरासी ।  
 सहसा तहय विजय सोलसेसु । वत्तीसाण नईणं । चउदस सहस्साइं पत्तेयं  
 ॥ २३ ॥ चउदस सहस्सगुणिया । अरुतीस नइउ विजय मझिवा । सीउयाए  
 निवडंति । तहय सीयाइं एमेव ॥ २४ ॥ सीयासीउयाविय । वत्तीस सहस्स  
 पंचलरकेहिं । सवेवि चउदस जलखा । ढप्पन्न सहस्स मेलविया ॥ २५ ॥  
 उजोयण सकोसे । गंगासिंधूण वित्थरोमूले । दशगुणिउ पज्जंते । ड्यडुडु  
 गुणणेण सेसाणं ॥ २६ ॥ जोयणसय मुच्चिठा । कणय मया सिहारि चुव्व  
 हिमवंता । रूपि महा हिमवंता । डुसुच्चा रूप कणयमया ॥ २७ ॥ चत्तारि  
 जोयणसए । उच्चिठो निसद्ध नीलवंतोय । निसद्धो तवणिज्ज मउ । वेरुलियो  
 नीलवंतोय ॥ २८ ॥ सवेवि पव्वयरा । समय खित्तंमि मंदर विह्वणा । थरणी  
 तले सुवगाढा । उस्सेय चउत्थ जायंमि ॥ २९ ॥ खंमाई गाहाहिं । दमहिं  
 दागेहिं जंवूढीवरस । संघयणी सम्मत्ता । रइया हरिज्जह सूरीहिं ॥ ३० ॥

॥ ❀ ॥ इति श्री जंबुद्वीव संघयणी प्रकरणम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ अथ नवकारस्तवन० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीनवकार जपो मनरंगे । श्रीजिनसासन माररी माई ॥ सर्व  
 मंगल मांहे पहिलोमंगल । जपतां जयजयकाररी माई । श्री० ॥ १ ॥  
 पहिलेपद त्रिनुवन जन पूजित । प्रणमुं श्रीअरिहंतरी माई । अष्टकर्म  
 वरजत बीजे पद । ध्यावुंसिद्ध अनंतरी माई । श्री० ॥ २ ॥ आचारिज तीजे  
 पदसमरुं । गुणउत्तीस निधानरी माई । चौथेपद उज्जाय जर्पाजे । सूत्र  
 मित्रांत सुजाणरी माई ॥ श्री० ॥ ३ ॥ सर्वमायु पंचम पद प्रणमुं । पंचमहाव्रत  
 धाररी माई ॥ नवपद अष्ट इहां ते संपद । अन्तमठ वरणा मंजारी माई ॥

श्री० ४ ॥ सातइहां गुरु अह्वर एहना । एकअह्वर उचाररी माई ।  
सातसागरना पातिक जावे । पद पंचास विचाररी माई ॥ श्री० ॥ ५ ॥ संपूरण  
पणमे सागरना । पाप पूलावे दूररी माई ॥ इहजव खेमकुशल मनवंजित ।  
परजव सुख चरपूररी माई ॥ श्री० ॥ ६ ॥ ईरति सोवन पुरिसो सीधो । सिवकु  
मार इणध्यानरी माई ॥ सर्पफाटि हुई फूलमाला । श्रीमतिनें परधानरी ॥  
माई ॥ श्री० ॥ ७ ॥ जह्नु उपद्रव करतो निवारयो ॥ परचो एह परसिद्धरी माई ॥  
चोरचंरु पिंगलने हुंरुक ॥ पामें सुर नर रिद्धरी माई ॥ श्री० ॥ ८ ॥ पंच  
परमंष्टी मंत्र जगत्तम ॥ चवदेपूरव साररी माई ॥ गुणबोले श्रीपदमराज  
गुरु । महिमाजासु अपाररी माई ॥ श्री० ॥ ९ ॥ इति नवकारस्तवनम् ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीगौतम स्वामी अष्टक ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रहज्जगीतम प्रणमीजे । मन वंजित फजनो दातार । लवधि  
निधान सकल गुणसागर । श्रीब्रह्मान प्रथम गणधार । प्रह० ॥ १ ॥ गौतम  
गोत्र चवद विद्यानिधि । प्रथवी मात पिता वसुधत । जिनवर वांणि सुणी  
मनहरण्यो । बोलायो नामे इंद्र नृति । प्र० ॥ २ ॥ पंचमहाव्रत लेई प्रनृपासे  
द्यैजिनवर त्रिपदी मनरंग । श्रीगौतम गणधर तिहां गूंथ्या । पूरव चवद हुं  
वाजश अंग । प्र० ॥ ३ ॥ लवधई अष्टापद गिर चढीयो । चेत्यवंदन जिनवर  
चौवीस । पनरैसै तिरुत्तर तापसाप्रतिबोधाकीया निजसीस ॥ प्र० ॥ ४ ॥ अद  
नृत एह सुगुरुनो अतिसय । जसुदीखे तसु केवलन्यांन । जावर्जाव ठठ ठठ  
तपपारणे । आपणपे गोचरिय मध्यान ॥ प्र० ॥ ५ ॥ कामधेनु सुरतरु चिंतामणि ।  
नाम माहीं जसु करे निवासाते मदगुरुनो नाम जपंता । लाजे लखमी लाज  
विज्जास ॥ प्र० ॥ ६ ॥ लाजघणो विणजे व्यापारे । आवे प्रवहण कुशले पैम  
ते मदगुरुनो ध्यान धरंता । पामें पुत्र कलत्र बहु प्रेम ॥ प्र० ॥ ७ ॥ गो  
तम स्वांमिता गुणगातां । अष्ट महामिध नवरे निधान । समय सुंदर कहे  
सुगुरु प्रमादे । पुन्य उदयप्रगट्यो परधान ॥ प्र० ॥ ८ ॥ इति गौतम स्वामि अ० ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री चिंतामणि स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आणी मनसुधी आसता ॥ देव जुहारं नासता । पार्थनाथ मनवं  
जित प्र । चिंतामण मोगी चिंता चूर ॥ १ ॥ अणियाजी तोरी आंखडा । जाणे



कमलतणी पांखडी मुख दीगं दुख जावै दूर ॥ चिं ॥ २ ॥ को केहन  
को केहन नमैं । हारै मनमें तूहि जगमें । सदा जुहारुं जगसूर ॥ चिं ॥ ३ ॥  
वीठडीया वाले सर मेल । वैरी दुसमण पाग ठेल । तूं ठे हारै हाजरा हजर ॥  
॥ चिं ॥ ४ ॥ मुजमन लागी तुमसूं प्रीत । बीजो कोयन आवै चीत । करो  
मुऊ तेज प्रताप पसूर । चिं ॥ ५ ॥ येह स्तोत्र मनमें धरै । तेहना चित्या  
कारज सरैं । आधि व्याधि दुख जावै दूर । चिं ॥ ६ ॥ जब जब देख्यो तुम पाय  
सेव । श्रीचिंतामणि अरिहंत देव । समयसुंदर कहे सुख जरपूर ॥ चिं ॥ ७ ॥  
इति पदम् ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ८ कर्मकी मूलोत्तर प्रकृतिका नाम ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम आठ मूल प्रकृतिका नाम ॥ ❀ ॥

१ ज्ञानावरणीय कर्म । २ दर्शनावरणीय कर्म । ३ वेदनीय कर्म । ४ मोह  
नीय कर्म । ५ आयुः कर्म । ६ नाम कर्म । ७ गोत्र कर्म । ८ अंतराय कर्म ।  
पहेला ज्ञानावरणीय कर्मकी उत्तर प्रकृति पांच ॥

१ मतिज्ञानावरणीय । २ श्रुतज्ञानावरणीय । ३ अवधिज्ञानावरणीय । ४  
मनःपर्यवज्ञानावरणीय । ५ केवलज्ञानावरणीय ॥

॥ ❀ ॥ दूजा दर्शनावरणीय कर्मकी उत्तर प्रकृति नव ॥ ❀ ॥

१ चक्षुदर्शनावरणीय । २ अचक्षुदर्शनावरणीय । ३ अवधिदर्शनावरणीय ।  
४ केवलदर्शनावरणीय । ५ निद्रा । ६ निद्रा निद्रा । ७ प्रचला । ८ प्रचला  
प्रचला । ९ थीणधी ॥

॥ ❀ ॥ तीजा वेदनीय कर्मकी उत्तर प्रकृतिदो ॥ ❀ ॥

१ शातावेदनीय । २ अशाता वेदनीय ।

॥ चोथा मोहनीय कर्मकी उत्तर प्रकृति अठवीश ॥

१ सम्यक्त्व मोहनीय । २ मिश्रमोहनीय । ३ मिथ्यात्वमोहनीय । ४ अनं  
तानुबंधी क्रोध । ५ अप्रत्याख्यानी क्रोध । ६ प्रत्याख्यानी क्रोध । ७ संज्वलन  
क्रोध । ८ अनंतानुबंधी मान । ९ अप्रत्याख्यानी मान । १० संज्वलनमान ।  
११ प्रत्याख्यानी मान । १२ अनंतानुबंधीमाया । १३ अप्रत्याख्यानी माया ।  
१४ प्रत्याख्यानीमाया । १५ संज्वलन माया । १६ अनंतानुबंधी लोभ । १७

अप्रत्याख्यानी लोच. १८ प्रत्याख्यानी लोच. १९ संज्वलन लोच. २०  
हास्य नोकपाय. २१ रति नोकपाय. २२ अरति नोकपाय. २३ शोक नोक  
पाय २४ त्रयनोकपाय. २५ जुगुप्सा नोकपाय. २६ पुरुषवेद नोकपाय. २७  
स्त्रीवेद नोकपाय. २८ नपुंसकवेद नोकपाय. ॥

॥ पंचमा आयुः कर्मकी उत्तर प्रकृति चार ॥

१ देवायु. २ मनुष्यायु. ३ तिर्यगायु. ४ नरकायु.

॥ ❀ ॥ ठा नामकर्मकी उत्तर प्रकृति १०३ ॥ ❀ ॥

१ नरकगति नामकर्म. २ तिर्यग्गति नामकर्म. ३ मनुष्यगति नामकर्म.  
४ देवगति नामकर्म. ५ ऐन्द्रिय जातिनाम. ६ वैन्द्रिय जातिनाम. ७ तैन्द्रिय  
जातिनाम. ८ चतुरिन्द्रिय जातिनाम. ९ पंचेन्द्रिय जातिनाम. १० औदारिक  
शरीरनाम. ११ वैक्रिय शरीरनाम. १२ आहारकशरीरनाम. १३ तेजसशरीर  
नाम. १४ कर्मणशरीर नाम. १५ औदारिक अंगोपांग. १६ वैक्रिय अंगो-  
पांग. १७ आहारक अंगोपांग. १८ औदारिक औदारिक बंधन. १९ औदारिक  
तेजस बंधन. २० औदारिक कर्मण बंधन. २१ औदारिक तेजसकर्मण  
बंधन २२ वैक्रियवैक्रिय बंधन. २३ वैक्रिय तेजसबंधन. २४ वैक्रियकर्मण  
बंधन. २५ वैक्रिय तेजस कर्मण बंधन. २६ आहारक आहारक बंधन. २७  
आहारक तेजसबंधन. २८ आहारक कर्मण बंधन. २९ आहारक तेजस  
कर्मण बंधन ३० तेजस तेजस बंधन ३१ तेजस कर्मण बंधन. ३२ कर्मण  
कर्मण बंधन ३३ औदारिक संघातन. ३४ वैक्रिय संघातन ३५ आहारक  
संघातन. ३६ तेजस संघातन. ३७ कर्मण संघातन. ३८ वज्र ऋषि नाराच  
संघयण. ३९ ऋषि नाराचसंघयण. ४० नाराचसंघयण. ४१ अर्धनाराचसंघयण  
४२ कीलीका संघयण. ४३ त्रैलोक्य संघयण. ४४ समचतुरन्ध्रसंस्थान. ४५  
नियोध संस्थान. ४६ सादिसंस्थान. ४७ वामन संस्थान ५८ कुब्ज संस्था  
न. ४९ ह्रस्व संस्थान. ५० कृष्णवर्ण नाम. ५१ नीलवर्ण नाम. ५२ लोहितवर्ण  
नाम. ५३ हारिद्रवर्ण नाम. ५४ श्वेतवर्ण नाम कर्म. ५५ सुगन्धि गंध. ५६ पु  
रानि गंध. ५७ तिक्तस्म नामकर्म. ५८ कटुकस्म नामकर्म. ५९ कषायस्म ना  
मकर्म. ६० आम्लजम्ब नामकर्म. ६१ मधुरजम्ब नामकर्म. ६२ कर्कशस्पर्श नाम

कर्म. ६३ मृदुस्पर्श ० ६४ गुरुस्पर्श नामकर्म. ६५ लघुस्पर्श नामकर्म ६६ शीतस्पर्श नामकर्म. ६७ उष्णस्पर्श नामकर्म ६८ स्निग्धस्पर्श नाम कर्म. ६९ रुक्षस्पर्श नाम कर्म ७० नरकानुपूर्वी. ७१ तिर्यगानुपूर्वी. ७२ मनुष्यानुपूर्वी. ७३ देवानुपूर्वी. ७४ शुभ्र विहायोगति. ७५ अशुभ्र विहायोगति. ७६ पद्मावा त नामकर्म. ७७ उद्भास नामकर्म. ७८ आतप नामकर्म. ७९ उद्योत नामक र्म. ८० अगुरुलघु नाम कर्म. ८१ तीर्थकर नाम कर्म. ८२ निर्माण नामकर्म. ८३ उपवात नामकर्म. ८४ त्रसनाम कर्म. ८५ वादर नाम कर्म. ८६ पर्याप्त नाम कर्म. ८७ प्रत्येक नाम कर्म. ८८ स्थिर नामकर्म. ८९ शुभ्र नाम कर्म. ९० सौभाग्य नाम कर्म. ९१ सुस्वर नाम कर्म. ९२ आदेयनाम कर्म. ९३ य शः कीर्त्ति नाम कर्म. ९४ स्थावर नाम कर्म. ९५ सूक्ष्म नाम कर्म. ९६ अप र्याप्त नाम कर्म. ९७ साधारण नाम कर्म. ९८ अस्थिर नाम कर्म. ९९ अशुभ्र नाम कर्म. १०० दुर्भाग्य नाम कर्म. १०१ दुःस्वर नाम कर्म. १०२ अनादेय नाम कर्म. १०३ अयशोऽ कीर्त्ति नाम कर्म.

॥ ❀ ॥ सातमा गोत्रकर्मकी उत्तर प्रकृति दो ॥ ❀ ॥

१ उच्चैर्गोत्र.

२ नीचैर्गोत्र.

॥ आठमा अंतराय कर्मकी उत्तर प्रकृति पांच ॥

१ दानांतराय. २ लाजांतराय. ३ जोगांतराय, ४ उपजोगांतराय. ५ वी र्यांतराय. ( इसप्रमाणे आठ कर्मकी एकशो अठावन उत्तर प्रकृति जाणनी. )

॥ ❀ ॥ अथ नव तत्व नामः ॥ ❀ ॥

जीवतत्व, २ अजीवतत्व, ३ पुन्यतत्व, ४ पापतत्व, ५ आश्रयतत्व, ६ मंत्र तत्व, ७ निर्जरातत्व, ८ बंधतत्व, ९ मोक्षतत्व. ॥ ❀ ॥



# ॥ ❀ श्री जिनार्चन विधि: ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अर्हत्कल्पानुसारें सदैव जिन पृजन विधि किंचित्मात्र लिखते हैं ॥ जगवंतके मंदिर ( वा ) वर देरासरके विषे । चोटोकुं बांधके शुद्ध वस्त्र पहरेके, उत्तरासंग जिनोपवीत मुखकोससहित । एकांतके विषे पूर्व दिश, उत्तरदिश तरफ, बैठके परमेश्वरकी पूजा करे ॥ प्रथम जल-चंदन, पुष्प, धूप, दीप, अक्षत, नैवेद्य, फल, आदि चीजांकुं मंत्रों से पवित्र करे ( यथा ) ॥ ॐ आपो अप्य काया ऐकेंद्रिय जीव निर्वद्या हं त्पूजाया निर्व्यथाः संतु । निरपायाः संतु । सज्जतयः संतु । नमेस्तु संवट्टण हिंसापापमर्हदर्चने ॥ इस मंत्रसें जल मंत्रणा ॥ ❀ ॥ ॐ वनस्पतयो वनस्पतिका या जीवा ऐकेंद्रिया निरवद्यार्हत्पूजायां निर्व्यथाः संतु । निरपायाः संतु । स जतयः संतु । नमेस्तु संवट्टन हिंसा पापमर्हदर्चने ॥ इति पत्र पुष्प फल धूप चंदनादि अग्निमंत्रण मंत्र ॥ ❀ ॥ ॐ अग्नयो अग्निकाया जीवा ऐकेंद्रिया नि रवद्या अर्हत्पूजायां निर्व्यथाः संतु । निरपायाः संतु । सज्जतयः संतु । नमे स्तु संवट्टन हिंसा पापमर्हदर्चने ॥ इति वह्नि दीपाद्यग्निमंत्रणं ॥ फेर वास चुर्ण फूल गंधादिक हाथमें लेके मंत्र पढे ॥ ॐ त्रसरूपोहं संसारिजीवः सुवासनः सुमेशा एक चित्तो निरवद्यार्हदर्चने निर्व्यथो नृयामं । निःपापो नृया सं । मत्संश्रिता अन्येपि संसारिजीवा निरवद्यार्हदर्चने निर्व्यथा नृयासुः निरुपद्रवा नृयासुः ॥ इस मंत्रसें केशर मंत्रके अपणें तिलक करे ॥ ❀ ॥ पुण्यमें अपने मस्तककी पूजा करे ( फेर ) पुष्प अक्षत आदि हाथमें लेके मंत्र पढे ॥ तन्मंत्रो यथा ॥ ॐ पृथिव्यप्तेजो वायु वनस्पति त्रसकाया

एक वि त्रि चतुः पंचेन्द्रिया स्तिर्यङ् मनुष्या नारक देवगति गता ॥ १ ॥  
 ज्वात्मक लोकाकाश निवासिनः । इह जिनार्चने कृतानुमोदना संतु । निः  
 पापाः संतु । निरपायाः संतु । सुखिनः संतु । प्राप्त कामाः संतु । मुक्ताः  
 संतु । बोध मानुवंति ॥ इस मंत्रसे मंत्रके दशदिशामें गंध जल अद्वितादिक  
 द्वेषन करे । फेर यह श्लोक कहे ॥ शिवमस्तु सर्व जगतः । परहित नि  
 ता भवंति नूतगणाः । दोषा प्रयांतु नाशं । सर्वत्र सुखी भवतु लोक  
 ॥ १ ॥ सर्वेपि संतु सुखिनः सर्वेसंतु निरामया । सर्वे नूतगणा पश्यं  
 माकश्चिदुक्ख जाग्रवेत् ॥ २ ॥ फेर मंत्र पढे ॥ ॐ नूतधात्री पवित्रास्तु ।  
 अधिवासितास्तु । इस मंत्रसे मंत्रितजलसे जमीन पवित्र करे (फेर) स्थि  
 रायशास्वताय निश्चलाय पीठायनमः ॥ फेरपखाल करवाके परमेश्वरके पट  
 ऊपर स्थापन करे । थिरविंव होय तो वेदी ऊपर पखाल करावे ॥ पीठे इस  
 मंत्रकूं पढे ॥ ॐ अत्रहोत्रे । अत्रकाले । नामार्हतो । रूपार्हतो । द्रव्यार्हतो ।  
 जावार्हतः । समागताः । सुस्थिताः । सुनिष्ठिताः । सुप्रतिष्ठाः संतु ॥ इति  
 अर्हत्प्रतिमा स्थापन मंत्र ॥ फेर मौनसहित अगानी पुष्पग्रहण करके मं  
 पढे । ॐ नमो अर्हद्भ्यः सिद्धेभ्यः । स्तीर्णेभ्यः । स्तारकेभ्यः । बोधकेभ्यः  
 सर्वजंतुहितेभ्यः । इह कल्पना विवे जगवंतोर्हतः सुप्रतिष्ठिताः संतु ॥ यह  
 मंत्र मौन सहित पढेके जगवंतके चरणऊपर पुष्पस्थापन करे । फेर पुष्प  
 जल हाथमें लेके कहे ॥ यथा ॥ स्वागतमस्तु । सुस्थितिस्तु । सुप्रतिष्ठास्तु  
 पुष्पाजिषेकेन अर्घ्यमस्तु । पाद्यमस्तु । आचमनीयमस्तु । सर्वोपचारः पूजास्तु  
 ॥ इस मंत्रसे मंत्रित जिन प्रतिमाऊपर जलसहित पुष्प चढावे ॥ (फेर) जलग्र  
 हण करके मंत्र पढे ॥ ॐ अर्हतं तर्पणंपद्यं । प्राणदं मलनाशनं । जलजिनार्चने  
 त्रेव । जायतां सुखहेतवे ॥ १ ॥ इस मंत्रसे मंत्रित जल करके अजिषेक करावे ।  
 फेर चंदन कुंकुम कस्तुरी आदिगंध वस्तु हाथमें ग्रहण करके । यह मंत्र  
 पढे ॥ ॐ अर्हतं ॥ इदं गंधं महामोदं । वृंहणं प्रीणनं सदा । जिनार्चनेच स  
 त्कर्म । संसिद्ध्यौ जायतांममः ॥ १ ॥ ऐसा पढेके विवधगंध वस्तुका विलेपन  
 करे । फेर । पुष्पपत्रिका हाथमें ग्रहण करके । यह मंत्र पढे । ॐ अर्हतं ।  
 नानावर्णमहामोदं । सर्वत्रिदशवृत्तं । जिनार्चनेच संसिद्ध्यौ । सुखंभव

मेसदा ॥ १ ॥ इति पुष्पपूजा ॥ फेर अहुत ग्रहण करके यह मंत्र पढे ॥  
 ॐ अर्हंत । प्रीणनं निर्मलं थल्यं । मांगल्यं सर्वसिद्धिदं । जीवनं कार्यसंसि  
 द्यो । नृयान्मेजिनमंदिरं ॥ १ ॥ इस मंत्रसे मंत्रित अहुतका तीनपुंज करे ।  
 फेर पूंगीफल जातीफलादिवस्तु ग्रहण करके यह मंत्र पढे ॥ ॐ अर्हंत ।  
 जन्मफलं स्वर्गफलं । पुन्यमोक्षफलं फलं । दद्याजिनार्चने त्रैव । जिनपादाग्र  
 संस्थितः ॥ इति जिन पादाग्रे फलपूजा ॥ ( फेर ) धूप ग्रहण करके यह मंत्र  
 पढे ॥ ॐ अर्हंत । श्रीखंभागरु कस्तूरी । द्रुमनिर्यास संभवः । प्रीणनः सर्व दे  
 वानां । धूपोस्तु जिनपूजने ॥ १ ॥ इस मंत्रसे धूप द्वेपन करे । फेर पुष्प  
 ग्रहण करके यह मंत्र पढे ॥ ॐ अर्हंत । पंचज्ञान महाज्योति । र्मयायध्वांत  
 घातने । द्योतनाय प्रतिमायाः । दीपो नृयात्सदाहते ॥ १ ॥ इति दीपमध्ये  
 पुष्पन्यासः ॥ फेर पुष्प ग्रहण करके यह मंत्र पढे ॥ ॐ अर्हं जगवद्भ्यो अर्ह  
 द्यो जल गंध पुष्पाहुत फल धूपदीपैः संप्रदानमस्तु । ॐ पुण्याहं २ । प्रीयं  
 तां २ । जगवन्तोर्हंत त्रिलोक्यस्थिताः । नामाकृतिः द्रव्यत्रावयुताः स्वाहाः ।  
 इति पुनर्जिन पूजनं ॥ पीठे वास चूर्ण ग्रहण करके यह मंत्र पढे ॥ ॐ सूर्य  
 सोमांगारक बुध गुरु शुक्र शनैश्वर राहु केतु मुख्याग्रहाः इह जिन पादा  
 ग्रे समायांतु पूजां प्रतीक्षंतु । ऐसा कहके नवग्रहोंकी वासचूर्णसे पूजा  
 करे ॥ फेर यह मंत्र पढे ॥ आचमनमस्तु गंधमस्तु पुष्पमस्तु अहुतमस्तु  
 फलमस्तु धूपोस्तु दीपोस्तु ॥ पीठे अनुक्रमसे जल गंध पुष्प अहुत फल  
 धूप दीप नेवेद्य करके नवग्रहोंकी पूजा करे । फेर हाथमें पुष्प ग्रहण करके  
 यह मंत्र पढे ॥ ॐ सूर्य सोमांगारक शुक्र बुध गुरु शनैश्वर राहु केतु प्रमुखाग्र  
 हाः सुपूजिताः संतु । सानुग्रहाः संतु । तुष्टिदाः संतु । पुष्टिदाः संतु । मांग  
 ल्यदाः संतु । महोत्सवदाः संतु ॥ ऐसा कहके अहोहं पुष्प चढ़ावे ॥  
 इसी रीतिसे ॥ ॐ इंद्राग्नि यम नैरुति वरुण वायु कुबेर ईशान नाग वत्सणो  
 लोकपालाः सविनायकः सत्त्वत्रपालाः इह जिन पादाग्रे समागच्छंतु ॥ इस  
 मंत्रसे पूजापट्ट ऊपर लोकपालोंकी वास चूर्णसे पूजा करे । फेर यह मंत्र पढे ॥  
 आचमनमस्तु । पुष्पमस्तु । अहुतमस्तु । फलमस्तु । धूपोस्तु । दीपोस्तु । फेर ।  
 अनुक्रमसे जल गंध पुष्प अहुत फल धूप दीप नेवेद्य करके लोकपालोंकी



पूजा करे । फेर हाथमें पुष्प ग्रहण करके । यह मंत्र पढे ॥ ॐ इंद्राग्नि  
यमनैरुति वरुण वायु कुबेर ईशान नाग ब्रह्मणो लोकपालाः । सविनायकाः ।  
सद्देवपालाः । सुपूजिताः संतुः । सानुग्रहाः संतुः । तुष्टिदाः संतुः । पुष्टिदाः  
संतुः । महोत्सवदा संतुः ॥ ऐसा कहके लोकपालोंकी फूलसे पूजा करे । फेर  
पुष्पांजलि ग्रहण करके यह मंत्र पढे ॥ अस्मत्पूर्व गोत्र संज्ञवाः देवगति  
गताः सुपूजिताः संतुः । सानुग्रहाः संतुः । तुष्टिदाः संतुः । पुष्टिदाः संतुः । मांग  
ल्यदाः संतुः । महोत्सवदाः संतुः । ( ऐसा कहके ) जिन पादाग्रे पट्टोपरि पुष्पां  
जलि चढावै । फेर पुष्पांजलि ग्रहण करके यह मंत्र पढे ॥ ॐ अर्हं अर्हद्भक्ताष्ट  
नवत्युत्तरशतं देव जातयः स देवाः पूजां प्रतीवन्तु । सुपूजिताः संतुः । सा  
नुग्रहाः संतुः । तुष्टिदाः संतुः । मांगल्यदाः संतुः । महोत्सवदाः संतुः ।  
ऐसा कहके परमेश्वरके चरण कमलआगे पुष्पांजलि चढावै ॥ फेर  
हाथमें पुष्पांजलि ग्रहण करके । अर्हन्मंत्र स्मरणकरके तिस पुष्पोंसे  
जिन प्रतिमाकी पूजा करे । तन्मंत्रोयथा ॥ ॐ अर्हं एमो अरिहंताणं । ॐ  
अर्हं एमो सयंसंबुद्धाणं । ॐ अर्हं एमो आयारियाणं ॥ श्लोकः ॥ अयंतु त्रिप  
दोमंत्र । श्रीमतामर्हतांपरः । जोगमोक्ष प्रदोनित्यं । सर्वपाप निवृत्तनः ॥ इस  
अर्हत्मंत्रको अपवित्रपणोंसे नहिंजपना । ( तथा ) नास्तिकांश्च मिथ्या  
त्वियोंकं न देना । फेर १०८वार इस मंत्रका जाप करे । तिसके बाद । नैवेद्य  
दोय रकेवीयोंमें रखके । अंजलीमें जलग्रहण करके । यह मंत्र पढे ॥ ॐ  
अर्हं । नाना षड्रस संपूर्णं । नैवेद्यं सर्वमुत्तमं । जिनाग्रे ढोकितं सर्वं । मं  
पदा ममजायते ॥ १ ॥ यह कहके नैवेद्यपासे, जलक्षेपन करे । फेर जल  
ग्रहण करके यह मंत्र पढे ॥ ॐ सर्वे गणेश क्षेत्रपालाद्याः सर्वेग्रहाः सर्वेदि  
ग्पालाद्याः । सर्वे अस्मत्पूर्वजोद्भवादेवाः । सर्वे अष्टनवत्युत्तरशतं देवजातयः ।  
सदेव्योर्हद्भक्ताः । अनेन नैवेद्येन संतर्पितास्संतु । तुष्टिं पुष्टिं संतुः । मांगल्यं  
महो० ॥ ऐसा कहके दूसरे नैवेद्य पासे जल माले ॥ पीन्ने पुष्पांजली हाथमें  
लेके पढे ॥ योजन्मकाले पुरुषोत्तमस्य । सुमेरुशृंगे कृतमङ्गलेश्वर । देवे प्रदत्त  
कुशमांजलि प्रीतिजनकया । ददातु सर्वाणि समीहितानि ॥ १ ॥ राज्यान्निपेक  
समये त्रिदशाधिपेन । उग्रध्वजांकुलजयोः पदयोर्द्विजस्य । द्विमोतिजनितः कु

शुभांजलीयं । स श्रीणयत्वानुदिनं सुधीयां ॥ २ ॥ देवेंद्रोक्त केवले जिनपत्तो  
सानंद चक्षयागतेः । सदैहं व्यपरोपण क्लमशुभ व्याख्यान बुद्ध्यात्रयेः । आ  
मोदान्वित पारिजात कुशुमेर्यत्स्वामि पादाग्रतो । मुक्तः सः प्रतनोतु चिन्मय  
हृदां चद्राणि पुष्पांजलि ॥ ३ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ यह तीन वृत्त कहके तीन पुष्पांजलि हेषन करे ॥ फेर जवण  
हाथमें लेके यह वृत्त पढे ॥ लावाण्य पुण्यांग नृतोर्हतोयः । स्तब्धवृष्टि भावं  
सहसैवधत्ते । सविश्वचर्तुर्लवणावतारो । गर्भावतारं सुधिया विहत्तुं ॥ १ ॥  
लावण्यैक निधेर्विश्व । चर्तु स्तववृद्धिहेतुकत् । लवणो तारणं कुर्या । द्रवसा  
गर तारणं ॥ २ ॥ यह दोय वृत्त कहके दोयदफे जवण उतारे ॥ फेर लव  
णमिश्र जल लेके यह वृत्त पढे ॥ सहारता सदा चक्षां । निहंतु कर्म मो  
द्यमः । लवणाच्चि लवणांधुः । पिपाते सेवते पदो ॥ १ ॥ ऐसा कहके लवण  
जल उवारणा करे ॥ फेर आरती लेके यह पढे ॥ सप्तमीति विधाताहं । स  
प्तव्यसन नाशकृत् । यत्सप्तनरकप्रारा । सप्तारितुजांगतं ॥ १ ॥ सप्तांग राज्य  
पाददान कृतप्रमोदं । सत्सप्त तत्वविदनंतवृतप्रबोधं । तववक्रहस्तधृतसंगत सप्त  
दीप । मारात्रिकं चवतु सप्तम सङ्गुणायां ॥ ऐसा कहके आरती उतारे ॥ फेर  
मंगलदीप लेके यह पढे ॥ विश्वत्रय जवेर्जावेः । सदेवा सुर मानवेः । चिन्मं  
गलं श्रीजिनेन्द्रात् । प्रार्थनीयं दिनेदिने ॥ १ ॥ यन्मंगलं जगवतः प्रथमार्हतः  
श्री । संयोजनैः प्रतिबन्ध विवाहकाले । सर्वाः सुरासुर बधूमुख गीयमानं । स  
र्वेर्षिप्रिश्च सुमनोभि र्दार्थ्यमासा ॥ २ ॥ दास्यं गतेषु सकलेषु सुरासुरेषु ।  
राज्येर्हतः प्रथम सृष्टि कृतोयदामीत् । मन्मंगलं मिथन पाणिग तीर्थवारि ।  
पादाभिषेक विधिनान्युपचीयमानं ॥ ३ ॥ यप्रिश्वाधिपतेः ममस्ततनु नृत्सं  
सारनिस्तारणे । तीर्थेषुष्टि सुपेयुषिप्रतिदिनं वृद्धिर्गते मंगलं । नत्संप्रन्युपनीतपू  
जनविधौ विश्वात्मना सहतां । नृयान्मंगल मङ्गलं च जगते स्वस्त्यस्तु संवायच  
॥ ४ ॥ यह चारवृत्त कहके मंगलदीप आरती उतारे ॥ फेर नक्रस्तव पढे ॥  
यह सदैव जिन पूजन करणैकी विधि कही ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ श्रीदेवचंदजीकृत स्नात्रपूजा लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ चोर्तामे प्रतिशय जुज । वचनानिशयं जुज ॥ सो परमेसर देख

ऋवि । सिंहासणसंपत्त ॥ १ ॥ ( ढाल ) सिंहासण बैठा जगन्नाथ । देखी  
 ऋविजन गुण मणिखाण ॥ जेदीठै तुज निम्मल जाण । लहीयै परम महोद  
 य ठाण ॥ १ ॥ ❀ ॥ कुसुमांजलि मेलो आदि जिणन्दा । तोरो चरण कम  
 ल चौबीस पूजोरे ॥ चौबीस सोजागी । चौबीस बैरागी ॥ चौबीस जिनन्दा  
 कुसुमांजलि मेलो आदि जिणन्दा ॥ १ ॥ ❀ ॥ इतना कही । कुसुमांजली  
 चढाई जै । चरणां टीकी दीजै । हाथमें कुसुमांजली लेई । नमोर्द्धत सि  
 धा० कही । पढै ॥ ❀ ॥ ( गाथा ) जोनिअ गुण पङ्कज रम्यो । तसु  
 अनुभव एगत्त ॥ सुह पुग्गल आरोपतां । ज्योति सुरंग निरत्त ॥ १ ॥ ( ढाल )  
 जो निज आतमगुण आणन्दि । पुग्गलसंगे जेह अफन्दी ॥ जे परमेसर  
 निज पदलीन । पूजो प्रणमो ऋव्य अदीन ॥ ❀ ॥ कुसुमांजलि मेलो शांति  
 जिणन्दा । तोरा चरण कमल चो० ॥ कुसुमांजलि० ॥ २ ॥ ❀ ॥ कुसु  
 मांजली चढाई जै । गोमां टीकी दीजै । फेर हाथमें, कुसुमांजली लेके  
 नमो ऋत्तिचा० कही पढै ॥ ❀ ॥ ( गाथा ) निम्मल नाण पयासकर ।  
 निम्मल गुण सम्पन्न ॥ निम्मल धम्मु वणस कर । सो परमप्पा धन्न ॥ १ ॥  
 ( ढाल ) लोका लोक प्रकासक नाणी । ऋविजन तारण जेहनी वाणी ॥  
 परमानन्द तणी नीसाणी । तसुजगत्तै सुज्जमति ठहराणी ॥ २ ॥ कुसुमांजलि  
 मेलो नेमि जिनन्दा तोरा च० ॥ ❀ ॥ ३ ॥ ❀ ॥ कुसु० । दोनुं हाथे टीकी  
 दीजै । मुखे पढै । नमो ऋत्तिचा० ॥ ❀ ॥ ( गाथा ) जे सिझा सिझ  
 निजे । सिझिस्सन्ति अणन्त ॥ जसु आलम्बन ठवियमाण । सो सेवो अ  
 रिहन्त ॥ १ ॥ ( ढाल ) शिव सुख कारण जेह त्रिकाले । समपरिणामें जगति  
 निहाले ॥ उत्तम साधुनो मार्ग देखाले । इन्द्रादिक जसु चरण पखाले ॥  
 कुसुमांजलि मेलो पाम जिणन्दा ॥ ४ ॥ ❀ ॥ कुसु० । दोनुं खांथे टीका ।  
 दीजै । मुखे पढै नमो० ॥ ॥ ❀ ॥ ( गाथा ) सम्म दिछी देशजय  
 माहु साहुणी सार ॥ आचारज उवझाय सुणि । जो निम्मल आधार ॥ १ ॥  
 ( ढाल ) ॥ चौबीह संवें जे मन धारयो । मोहू तणो कारण निरधार्यो ॥  
 विविह कुसुमवर जान गहेवी । तसु चरणें प्रणमंति ठवेवी ॥ २ ॥ कुसुमां  
 जलि मेलो वीर जिणन्दा ॥ तोरा चरण कमल० ॥ ५ ॥ ❀ ॥ कुसु० मस्तक

दीकी दीजै । नमो ऋत्तिपद्म० कहौ । चमर हाथमें लेवे ॥ ॐ ॥  
 ( वस्तु ) सयल जिनवर २ । नमिअ मनरुद्ध ॥ कक्षाण कविह संठविअ ।  
 कारि सुधम्म सुपवित्त सुन्दर ॥ सयइक सत्तरि तित्थंकर । इकसमय विहर  
 न्ति महियल । चवण समय इगवीस जिण ॥ जन्म समय इगवीस । अत्ति  
 ह जावै पूजीया । करोसंघ सुजगीस ॥ ६ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ एकदिन अचिरा हुलरावती । ए चाल ॥ ॐ ॥ अब तीजय समकिन  
 गुण रम्या । जिन अत्ति प्रमुख गुण परिणम्या ॥ तजि इन्द्रियसुख आसंसना ।  
 करी थानक वीशनी सेवना ॥ १ ॥ अतिराग प्रशस्त प्रजावता । मनजाव  
 ना एहवी जावता ॥ सबजीव करुं शासन रसी । ऐसी जावदया मन उल्ल  
 सी ॥ २ ॥ लही परिणाम एहवुं जलुं । निपजावी जिनपद निरमलुं ॥ आ  
 नुबंधे विचइ एकजव करी । श्रद्धा संवेगते थिरधरी ॥ ३ ॥ तिहां चवीअ ल  
 हे नरजव उदार । अरते तिम ऐखत तेजसार ॥ महाविदेह विजयपरधान ।  
 मझखंने अवतरे जिन निधान ॥ ४ ॥ ( ढाल ) पुन्ये सुपनाहे देखे । मनमां  
 हरप विसेपे ॥ गजवर उज्जल सुन्दर । निरमल वृषभ मनोहर ॥ १ ॥ निरजय  
 केसरी सींह । लखमी अतिहि अबोह ॥ अनुपम फूलनी माला । निरम  
 ल शशि सुकमाजा ॥ २ ॥ तेज तराणि अति दीपे । इन्द्रधजा जगजीपे ॥  
 पुरण कजस पंभूर । पद्मसरोवर पुर ॥ ६ ॥ इग्यारमें रयणायर । देखे मा  
 ताजी गुणसायर ॥ बारमें नुवन विमान । तेरमें स्तन निधान ॥ ४ ॥ अग  
 नि शिखा निरधूम । देखे माताजी अनोपम ॥ हरखी रायनें जासे । राजा  
 अरथ प्रकासे ॥ ५ ॥ जगपति जिनवर सुखकर । होत्ये पुत्र मनोहर ॥ इं  
 द्रादिक जसु नमसे । सकल मनोरथ फलसे ॥ ६ ॥ ॐ ॥ ( वस्तु )  
 ॥ ॐ ॥ पुन्य उदय २ ॥ उपना जिननाह । माता तव रयणी समे ।  
 देखि सुपन हरखंत जार्गीअ । सुपन कही निज कंतने । सुपन अरथ  
 सांजले भोजार्गीय । त्रिनुवन तिलक महागुणी । होत्ये पुत्र नि  
 धान । इंद्रादिक जसु पावनमी ॥ कसै मिदि बिधान ॥ ॐ ॥ १ ॥  
 ( ढाल ) ॥ चंद्रा उल्लाजानी ॥ ॐ ॥ मोहमपति आसन कंपीयो । देइ अ  
 वधे मन आणंदीयो ॥ सुज आत्म निरमल करण काज । अबजल ता

ऋषि । सिंहासणमंपत्त ॥ १ ॥ ( ढाल ) सिंहासण बैठा जगन्नाथ । देखी  
 ऋषिजन गुण मणिखाण ॥ जेदीतै ठुज निम्मल जाण । लहीयै परम महोद  
 य ठाण ॥ १ ॥ ❀ ॥ कुसुमांजलि मेलो आदि जिणन्दा । तोरो चरण कम  
 ल चोवीस पूजोरे ॥ चोवीस सोजागी । चोवीस वैरागी ॥ चोवीस जिनन्दा  
 कुसुमांजलि मेलो आदि जिणन्दा ॥ १ ॥ ❀ ॥ इतना कही । कुसुमांजली  
 चढाई जै । चरणां टीकी दीजै । हाथमें कुसुमांजली लेई । नमोऽर्क्षत् सि  
 धा० कही । पढै ॥ ❀ ॥ ( गाथा ) जोनिअ गुण पङ्कज रम्यो । तसु  
 अनुजव एगत्त ॥ सुह पुग्गल आरोपतां । ज्योति सुरंग निरत्त ॥ १ ॥ ( ढाल )  
 जो निज आतमगुण आणन्दि । पुग्गलसंगे जेह अफन्दी ॥ जे परमेसर  
 निज पदलीन । पूजो प्रणमो ऋष्य अदीन ॥ ❀ ॥ कुसुमांजलि मेलो शांति  
 जिणन्दा । तोरा चरण कमल चो० ॥ कुसुमांजलि० ॥ २ ॥ ❀ ॥ कुसु  
 मांजली चढाई जै । गोसां टीकी दीजै । फेर हाथमें, कुसुमांजली लेके  
 नमो ऋत्तिधा० कही पढै ॥ ❀ ॥ ( गाथा ) निम्मल नाण पयासकर ।  
 निम्मल गुण सम्पन्न ॥ निम्मल धम्म वएस कर । सो परमप्पा धन्न ॥ १ ॥  
 ( ढाल ) लोका लोक प्रकासक नाणी । ऋषिजन तारण जेहनी वाणी ॥  
 परमानन्द तणी नीसाणी । तसुजगतें सुज्जमति ठहराणी ॥ २ ॥ कुसुमांजलि  
 मेलो नेमि जिनन्दा तोरा च० ॥ ❀ ॥ ३ ॥ ❀ ॥ कुसु० । दोनुं हाथे टीकी  
 दीजै । मुखे पढै । नमो ऋत्तिधा० ॥ ❀ ॥ ( गाथा ) जे मिश्रा सिञ्ज  
 न्तिजे । सिञ्जिस्सन्ति अणन्त ॥ जसु आलम्बन ठवियमण । सो सेवो अ  
 रिहन्त ॥ १ ॥ ( ढाल ) शिव सुख कारण जेह त्रिकाले । ममपरिणामें जगति  
 निहाले ॥ उत्तम साधुनो मार्ग देखाले । इन्द्रादिक जसु चरण पखाले ॥  
 कुसुमांजलि मेलो पास जिणन्दा ॥ ४ ॥ ❀ ॥ कुसु० । दोनुं खांधे टीकी ।  
 दीजै । मुखे पढै नमो० ॥ ॥ ❀ ॥ ( गाथा ) सम्म दिष्ठी देशजय  
 माहु माहुणी सार ॥ आचारज उवझाय सुणि । जो निम्मल आधार ॥ १ ॥  
 ( ढाल ) ॥ चोवीह मंघें जे मन धारयो । मोहू तणो कारण निरधारयो ॥  
 विविह कुसुमवर जात गहेवी । तसु चरणें प्रणमंति ठवेवी ॥ २ ॥ कुसुमां  
 जलि मेलो वीर जिणन्दा ॥ तोरा चरण कमल० ॥ ५ ॥ ❀ ॥ कुसु० मस्तक

टीकी दीजै । नमो ऋत्तिष्ठा० कही । चमर हाथमें लेवै ॥ ॐ ॥  
 ( वस्तु ) सयल जिनवर २ । नमिअ मनरङ्ग ॥ कछाण कविह संठविअ ।  
 करि सुधम्म सुपवित्त सुन्दर ॥ सयइक सत्तरि तित्थंकर । इकसमय विहर  
 न्ति महियल । चवण समय इगवीस जिण ॥ जन्म समय इगवीस । ऋत्ति  
 ह ऋत्ति पूजीया । कसोसंध सुजगीस ॥ ६ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ एकदिन अचिरा हुलरावती । ए चाल ॥ ॐ ॥ ऋत्ति तीजय समक्कि  
 गुण रम्या । जिन ऋत्ति प्रमुख गुण परिणम्या ॥ तजि इन्द्रियसुख आसंसना ।  
 करी थानक वीशनी सेवना ॥ १ ॥ अतिराग प्रशस्त प्रजावता । मनजाव  
 ना एहवी जावता ॥ सबजीव करुं शासन रसी । ऐसी जावदया मन उल्ल  
 सी ॥ २ ॥ लही परिणाम एहवूं जलूं । निपजावी जिनपद निरमलूं ॥ आ  
 उबंयै विचइ एकजव करी । श्रद्धा संवेगते थिरधरी ॥ ३ ॥ तिहां चवीअ ल  
 हे नरजव उदार । ऋत्ति तिम ऐखत तेजसार ॥ महाविदेह विजयपरधान ।  
 मज्जलंमे अवतरे जिन निधान ॥ ४ ॥ ( ढाल ) पुन्ये सुपनाहे देखे । मनमां  
 हरप विसेपै ॥ गजवर उज्जल सुन्दर । निरमल वृषज मनोहर ॥ १ ॥ निरजय  
 केसरी सींह । लखमां अतिहि अवीह ॥ अनुपम फूलनी माला । निरम  
 ल शशि सुकमाला ॥ २ ॥ तेज तरणि अति दीपै । इन्द्रधजा जगजीपै ॥  
 पुरण कजस पंभूर । पद्मसरोवर पुर ॥ ६ ॥ इग्यारमें रयणावर । देखे मा  
 ताजी गुणसायर ॥ वारमें नुवन विमान । तेरमें रतन निधान ॥ ४ ॥ अग  
 नि शिखा निरधूम । देखे माताजी अनोपम ॥ हरखी रायनें जासे । राजा  
 अरथ प्रकासे ॥ ५ ॥ जगपति जिनवर सुखकर । होस्ये पुत्र मनोहर ॥ इ  
 द्रादिक जसु नमसे । सकल मनोरथ फलसे ॥ ६ ॥ ॐ ॥ ( वस्तु )  
 ॥ ॐ ॥ पुन्य उदय २ ॥ उपना जिननाह । माता तब रयणी समे ।  
 देखि सुपन हरखन जागीअ । सुपन कही निज कंतने । सुपन अरथ  
 सांजलै सोजागीव । विनुवन तिलक महागुणी । होस्ये पुत्र नि  
 धान । इंद्रादिक जसु पावनमी ॥ करमे सिद्धि विधान ॥ ॐ ॥ १ ॥  
 ( ढाल ) ॥ चंद्रा उल्लाजानी ॥ ॐ ॥ मोहमपति आसन कंपीयो । देइ अ  
 वध मन आणंदीयो ॥ सुज आवम निरमल करण काज । ऋत्तिजल ता



राण प्रगट्यो जिहाज ॥ १ ॥ अब अम्वी पारग सत्यवाह । केवलनाणा ईअ  
 गुण अगाह ॥ शिव साधन गुण अंकूर जेह । कारण उलट्यो आसादि  
 मेह ॥ २ ॥ हरखे विकसे तव रोमराय । वलयादिकमां निज तनुं नमाय ॥  
 सिंहासणथी ऊठ्यो सुरिंद । प्रणमंतो जिन आनन्द कन्द ॥ ३ ॥ सगअरु  
 पय समुहा आवितत्य । करी अंजली प्रणमिअ मत्य सत्य ॥ सुख चापे  
 एहण आजसार । तियलोय पहु दीछो उदार ॥ ४ ॥ रेरे निसुणो सुरलोय  
 देव । विषयानल तापित तनु समेव ॥ तसु शान्तिकरण जलधर समान । मि  
 थ्याविष चूरण गरुडवान ॥ ५ ॥ ते देव जगत्तारण समत्य । प्रगट्यो तसु  
 प्रणमी हुवो सनत्य ॥ इम जंपी सकस्तव करेवि । तव देव देवी हरखे सुणे  
 वि ॥ ६ ॥ गावै तव रंजा गीतगान । सुरलोक हुवो मंगल निधान । नर  
 खेत्रे आरज वंसठाम । जिनराज वधे सुर हर्ख धाम ॥ ७ ॥ पिता माता धरे  
 उठव अलेष । जिन शासन मंगल अति विशेष ॥ सुरपति देवादिक हर  
 खसंग । संयम अरथी जननें नमंग ॥ ८ ॥ सुजवेजा लगनें तीर्थनाथ ।  
 जनम्या इंद्रादिक हर्ख साथ ॥ सुखपाम्यां त्रिजुवन सर्वजीव ॥ वधाई व  
 धाई थई अतीव ॥ ९ ॥ फूल अकृतसें वधावै । ३ प्रदक्षिणा देवै । ( पीठे )  
 शक्रस्तव ठाणें संपावियुंकामस्स । तक कहै । पीठे । रोली ( तथा ) केसरका  
 हाथमें साथिया करै । धूपखेवै ॥ ( ढाल ) श्री शांति जिननो कलश कहि  
 सुं० ॥ ए चाल ॥ ॥ श्री तीर्थपतिनो कलस मज्जन गाइये सुखकार । नर  
 खेत्र मंगण पुह विहंगण । अविक मन आधार ॥ तिहां रावराणा हरख  
 उठव । थयो जग जयकार ॥ दिशि कुमरी अवधि विशेष जाणी । लह्यो  
 हरख अपार ॥ १ ॥ निअ अमर अमरी संग कुमरी । गावनी गुणउंद ॥  
 जिन जननी पासे आय पहुती । गहकती आणंद ॥ हेमायतें जिनराज  
 जायो । शचि वधायो रम्म । अमजम्म निम्मल करण कारण । करिस सुई  
 अकम्म ॥ २ ॥ तिहां नूमि सोधन दीप दरपण वायवीजणधार ॥ ति  
 हां करिय कदली गेह जिनवर । जननी मज्जनकार ॥ वर राखमी जिनपा  
 णि बांधी । दीये इम आसीम ॥ युगकोरु कोनी चिंजीवो । धर्मदायक  
 ईम ॥ ३ ॥ ( ढाल ) उत्रालानी ॥ ॥ जिनरयणीजी दश दिश उज्जवता

धरे ॥ सुप्रजगनेंजी ज्योतिम चकते संचरे । जिन जनम्याजी जिण अव  
सर माता धरे ॥ निण अवसरजी इंद्रामण पण थर हरे ॥ ( बूटक )  
थरहरे आमन इंद्रचित्त कोन अवसर एवन्यो । जिन जन्म उठव काज  
जाणी अतिहि आणंद रुपनो ॥ निजमिद संपति हेतु जिनवर जाणि  
जगनें रुमद्यो । विकसंत वदन प्रमोद वधते देवनायक गहगह्यो ॥ १ ॥  
( ढाल ) तव सुरपति जी वंदनाद करावण ॥ सुरलोके जी घोषणा एहदि  
गावण । नरक्षेत्रे जी जिन वर जनम हुवो अत्रे । तसुप्रजगते जी सुरपति मंदि  
र गिर गत्रे ॥ ( बूटक ) गत्रे मंदिर शिखर ऊपर नुवन जीवन जिनत  
णो । जिन जन्म उठव करण कारण आवज्यो सविसुर धणो । तुम  
सुद समकित थास्ये निरमल देव देवी निहालतां । आपणा पातिक सर्व  
जास्ये नाथ चरणपखालतां ॥ ३ ॥ ( ढाल ) इम सांजलजी सुरवर कोमि  
बहु मिली । जिन वंदण जी मंदर गिरि साहमी चली । सोहम पतिजी  
जिन जननी घर आविया । जिन माताजी वांदी स्वामि वधा विया । ( बू  
टक ) वधाविया जिनवर हर्ष बहुले धन्यहुं कृतपुन्य ए । त्रैलोक्य नाथ  
क देवदीठो सुज समो कुण अन्यए । हे जगत जननी पुत्र तुह्यचो मेरु म  
ऊन वरकरी । उठंग तुह्यचै वलिय थापिस आनमा पुन्ये जरी ॥ ४ ॥  
( ढाल ) सुरनायकजी जिन निज कर कमलें ठव्या ॥ पांच रुपें जी अति  
मय महिमायें स्तव्या । नाटक विधिजी तव वर्त्तास आगल वहे । सुर  
कोमी जी जिन दरसननें ऊमहे ( बूटक ) सुर कोमि कोमी नाचती बलि  
नाथ शचि गुण गावती । अपउरा कोमी हाथ जोमी ढाव जाव दिखावती  
जय जयो तूं जिन राज जग गुरु एमदे आमी सण । अक्षत्राण शरण आ  
धार जीवन एक तूं जगदीश ए ॥ ४ ॥ ( ढाल ) सुरगिरवर जी पांडुक व  
नमें चिहं दिसे । गिरमिल परजी सिंहामण सासव वसे । तिहां आणीजी  
शकें जिन खोलें ग्रहा । चौगटे जी तिहां सुरपति आर्वा रत्ना ( बूटक )  
आविया सुरपति सर्व जगनें कज्जश श्रेणि वाणाव ए । मिहार्य पमुहा ती  
र्थताधि सर्व वस्तु आणाव ए । अचचुय पति तिहां हुकमकानो देव कोमा  
कोमिने । जिन मऊनाथ नीर ल्यावो मवे सुर कर जोडिने ॥ ५ ॥ ॐ ॥

राण प्रगट्यो जिहाज ॥ १ ॥ अब अरुवी पारग सत्यवाह । केवलनाणा ईअ  
 गुण अगाह ॥ शिव साधन गुण अंकुर जेह । कारण उजट्यो आसाहि  
 मेह ॥ २ ॥ हरखै विकसे तव रोमराय । वलयादिकमां निज तनुं नमाय ॥  
 सिंहासणथी कळ्यो सुरिंद । प्रणमंतो जिन आनन्द कन्द ॥ ३ ॥ सगअरु  
 पय समुहा आविततथ । करी अंजली प्रणमिअ मत्थ सत्थ ॥ सुख प्रापे  
 एहण आजसार । तियलोय पहु दीछो उदार ॥ ४ ॥ रेरे निसुणो सुरलोय  
 देव । विषयानल तापित तनु समेव ॥ तसु शान्तिकरण जलधर समान । मि  
 थ्याविष चूरण गरुडवान ॥ ५ ॥ ते देव जगत्तारण समत्थ । प्रगट्यो तसु  
 प्रणमी हुवो सनत्थ ॥ इम जंपी सकस्तव करोवि । तव देव देवी हरखे सुणे  
 वि ॥ ६ ॥ गावै तव रंजा गीतगान । सुरलोक हुवो मंगल निधान । नर  
 खेत्रे आरज वंसठाम । जिनराज वधे सुर हर्खे धाम ॥ ७ ॥ पिता माता घरे  
 उठव अलेष । जिन शासन मंगल अति विशेष ॥ सुरपति देवादिक हर  
 खसंग । संयम अरथी जननें उमंग ॥ ८ ॥ सुजवेला लगनें तीर्थनाथ ।  
 जनम्या इंद्रादिक हर्खे साथ ॥ सुखपाम्यां त्रिनुवन सर्वजीव ॥ वधाई व  
 धाई थई अतीव ॥ ९ ॥ फूल अहृतसें वधावे । ३ प्रदक्षिणा देवे । ( पीठे )  
 शक्रस्तव ठाणं संपावियुंकामस्स । तक्र कहै । पीठे । रोली ( तथा ) केसरका  
 हाथमें सायिया करै । धूपखेवै ॥ ( ढाल ) श्री शांति जिननो कलश कहि  
 सुं० ॥ ए चाल ॥ श्री तीर्थपतिनो कलस मज्जन गाइये सुखकार । नर  
 खेत्र मंरण पुह विहंरुण । अविक मन आधार ॥ तिहां रावराणा हरख  
 उठव । थयो जग जयकार ॥ दिशि कुमरी अवधि विशेष जाणी । जह्यो  
 हरख अपार ॥ १ ॥ निअ अमर अमरी संग कुमरी । गावती गुणउंद ॥  
 जिन जननी पामे आय पहुती । गहकती आणंद ॥ हेमायनें जिनराज  
 जायो । शचि वधायो रम्म । अमजम्म निम्मज्ज करण कारण । करिम सूर्इ  
 अकम्म ॥ २ ॥ तिहां नूमि सोधन दीप दरपण वायवीजणधार ॥ ति  
 हां करिय कदली गेह जिनवर । जननी मज्जनकार ॥ वर राखमी जिनपा  
 णि बांधी । दीये इम आसीस ॥ युगकोरु कोमी चिरंजीवो । धर्मदायक  
 ईम ॥ ३ ॥ ( ढाल ) उज्जालानी ॥ ॥ जिनरखणीजी दश दिश उज्जजता

नहण करे प्रनु अंगे । करिय विलेपण पुष्प मालठवि । वर आभरण अभं  
ग ॥ सो० ॥ १ ॥ तव सुर वर बहु जय २ स्व करे । नखेधर आणंद । मोह  
माण सारथ पति पाय्यो । आजिसु हिव जवफंद ॥ सो० ॥ २ ॥ कोमिन्न  
सीम सोवन्न उवारी । वाजंते वरनाद । सुरपति संघ अमर श्री प्रनुने । ज  
ननीने सुप्रसाद । ३ सो० ॥ आणीथापे एम पयंपे । अह्न निसतरिया आ  
ज । पुत्र तुह्यारो धणीय अह्यारो । तारण तरण जिहाज ॥ ४ सो० ॥ मात  
जवन करि राखिज्यो एहने । तुह्य सुत अह्न आधार । सुरपति जगति स  
हित नंदीसर । करे जिन जगति उदार ॥ ५ सो० ॥ निय निय कण्ठ गया  
सवि निर्जर । कहितां प्रनु गुणमार । दिहा केवल ज्ञान कल्याणक । इहा  
चित्त मजार ॥ सो० ॥ ६ ॥ खरतर गढ जिन आणा रंगी । राज सागर उ  
वझाय । ज्ञान धरम दीपचंद सुपाठक । सुगुरु तणे सुप्रसाय ॥ सो० ७ ॥  
देवचंद निज जगते गायो । जनम महोठव वंद । बोधबीज अंकुरो उठ्ठ  
स्यो । संघ सकल आणंद ॥ सो० ८ ॥ ( हाज ) ॥ इम पूजा जगते क  
रो । आतमहित काज । तजिय विभाव निजभावना । स्मतां शिवराज ॥ १ ॥  
इ० ॥ काल अनंते जे हुवा । होखे जेह जिणंद । मंपड सीमंधर प्रनु ।  
केवल नाण दिणंद ॥ इ० ॥ २ ॥ जनम महोठव इणि परे । आवक रुचि  
वंत । विरचे जिन प्रतिमा तणो । अनुमोदन खंत ॥ इ० ॥ ३ ॥ देवचंद  
जिन पूजनां । करता जवपार । जिन पस्मिमा जिन भारखी । कही सूत्र  
मजार ॥ इम० ॥ ४ ॥ इति स्त्रात्रपूजा विधि संपूर्णम् ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ अष्टप्रकारी पूजा लिख्यते ॥ ॥

॥ ॥ अथ १ जल पूजा ॥ ॥

॥ ॥ ( इहा ) गंगामागध द्वांरनिधि । उरध मिश्रितमार । कुशुमें वा  
मित शुचिजलें । करो जिन स्त्रात्र उदार ॥ १ ॥ ( हाज ) मणि कनकादि  
क अमविध करि जरी कलश सफार । शुभ रुचि जे जिनवर नमें तसुनही  
पुष्टि प्रचार । मेरुशिखर जिम सुखर जिनवर नहण अमान । करता वर  
ता निज गुण समक्ति शुद्धि निधान ॥ १ ॥ ( उंद ) दखं जरी अप्परावंद  
आवे । स्त्रात्र करि एम आमीम आवे । जिहां जरी सुरगारि जंतुदीवी ।

सर्व स्रात्रिया जलका कलश हाथमें लेके खड़ा रहे । मुखसे पढ़े ( दाल  
 शांतिनें कारणे इंद्र कलशा जरे । ए चाल ॥ ॐ ॥ आत्म साधन रसी दे  
 कोमी हसी । उबसीनें धसी खीरसागर दिसी ॥ पौमदह आदि दह ग  
 पमुहानई । तीर्थजल अमल लेवा जणी ते गई ॥ १ ॥ जाति अह क  
 श करि सहस अछोत्तरा । ब्रव चामर सिंहासणें सुजतरा । उपगण  
 प्फचंगेरि पमुहासवे । आगमें जासिया तेम आणीठवे ॥ २ ॥ तीर्थ ज  
 जरिय करकलश करि देवता । गावता जावता धर्म उन्नतिरता । तिरिय न  
 अमरनें हखे उपजावता । धन्य अह्न सगति सुचि जगति इम जावता ॥ ३  
 सम कित बीज निज आत्म आरोपिता । कलश पाणीमिसें जक्तिजल स  
 चता । मेरु सिहरो वरै सर्व आव्या वही । शक्रजुहंग जिन देषि मन ग  
 गही ॥ ४ ॥ ॐ ॥ ( गाथा ) ॥ ॐ ॥ हंहो देवा अणाई । कालो आदि  
 पुबो । तिलोय तारणो । तिलोय बंधु । मिहत्तमोह विधंसणो । आणाइ ति  
 ना विणासणो । देवाहि देवो दिछवो हिअय कामेहिं ॥ १ ॥ ॐ ॥ ( दाल ते  
 ज ) ॥ ॐ ॥ एम पजणंति वण जुवण जोईसरा । देव बैमाणिया जत्ति धम्मायरा  
 केवि कप्पठिया केवि मित्ताणुगा केई वररमण वयणेण अइउठगा ॥ ५ ॥ ( व  
 स्तु ) तत्थु अच्चुय २ इंद्र आदेश । करजोनि सर्व देवगण । लेयकलश आदेस  
 पामीय । अदनुत रूप सरूपजुय । कवण एह पुठंत सामीय ॥ इंद्र कहै  
 जगतारणों । पारग अह्नपरमेस । नायक दायक धम्मनिहि । करीयै तस  
 अजिषेस ॥ १ ॥ ( दाल ९ मी ) तीर्थ कमल वर उदक जरीनें । पुषकर सा  
 गर आवै ( एचाल ) ॥ पूर्ण कलश सुचि उदकनी धारा । जिनवर अंगै  
 न्हामें । आतम निरमल जाव करंता वधतें शुज परिणामें । अच्युता दिक  
 सुरपति मज्जन लोकपाल लोकांत । सामानिक इंद्राणी पमुहा इम अजिषे  
 क करंत ॥ १ ॥ पू० ( गाथा ) ॥ तव ईशान सुरिंदो । सर्व पजणेइ करि  
 हु सुपसावो । तुह्न अंके मह नाहो । खिणमित्तं अह्न अप्पेह ॥ १ ॥ ता  
 सकिंदो पजणई । साहमीय वज्जलंमि बहुजाहो । आणाइवंतेणं गिएहह  
 होउ कयत्थाजो ॥ २ ॥ ॐ ॥ इतना कहके । सर्व स्रात्रिया, जगवान ऊपर  
 कलश ढाले । मुखेपढ़े ॥ ॐ ॥ ( दाल ) ॥ सोहम सुरपति वृषन रूप करि ।

न्हवण करे प्रनु अंगे । करिय विलेपण पुष्प मालठवि । वर आचरण अर्च  
ग ॥ सो० ॥ १ ॥ तव सुर वर बहु जय २ ख करे । नवेधर आणंद । मोक्ष  
मार्ग सारथ पति पाम्यो । ज्ञांजिसु हिव भवपंद ॥ सो० ॥ २ ॥ कोमित्र  
तीस सौवन्न उवारी । वाजंते वरनाद । सुगति संघ अमर श्री प्रभुने । ज  
ननीने सुप्रमाद । ३ सो० ॥ आणीथापे एम पयंपे । अह्न निसतरिया आ  
ज । पुत्र तुह्यारो धणीय अह्यारो । तारण तरण जिहाज ॥ ४ सो० ॥ मात  
जतन करि राखिज्यो एहने । तुह्य सुत अह्न आधार । सुरपति भगति स  
हित नंदीसर । करे जिन भगति उदार ॥ ५ सो० ॥ निय निय कण्ठ गया  
सवि निर्जर । कहितां प्रनु गुणमार । दिक्षा केवल ज्ञान कल्याणक । इहा  
चित्त मजार ॥ सो० ॥ ६ ॥ खरतर गढ जिन आणा रंगी । राज सागर उ  
वझाय । ज्ञान धरम दीपचंद सुपाठक । सुगुरु तणे सुपमाय ॥ सो० ७ ॥  
देवचंद निज भगते गायो । जनम महोठव ठंद । बोधबीज अंकुरो उल्ल  
स्यो । संघ सकल आणंद ॥ सो० ८ ॥ ( दाल ) ॥ इम पूजा भगते क  
रो । आतमहित काज । तजिय विजाव निजभावना । रमतां शिवराज ॥ १ ॥  
इ० ॥ काल अनंतें जे हुवा । होखे जेह जिणंद । संपड मीमंधर प्रनु ।  
केवल नाण दिणंद ॥ इ० ॥ २ ॥ जनम महोठव इणि परे । आवक रुचि  
वंत । विरचे जिन प्रतिमा तणो । अनुमोदन खंत ॥ इ० ॥ ३ ॥ देवचंद  
जिन पूजनां । करता भवपार । जिन पणिमा जिन मारखी । कही सूत्र  
मजार ॥ इम० ॥ ४ ॥ इति स्नात्रपूजा विधि संपूर्णम् ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ अष्टप्रकारी पूजा लिख्यते ॥ ॥

॥ ॥ अथ १ जल पूजा ॥ ॥

॥ ॥ ( दूहा ) गंगामागध क्षीरनिधि । उध मिश्रितसार । कुशुमें वा  
सित शुचिजले । करो जिन यात्र उदार ॥ १ ॥ ( दाल ) मणि कलकादि  
क अर्घाविध करि नरी कलश मकार । शुभ रुचि जे जिनवर नमें तसुनही  
पुलि प्रचार । मेरुशिखर जिम सुखर जिनवर न्हवण अमान । करता वर  
ता निज गुण समकित अदि निधान ॥ १ ॥ ( उंद ) हस्त नरी अप्परावुंद  
आवे । स्नात्र करि एम आर्गाम जावे । जिहां जगे सुरगिरि जंबुद्वीपो ।



अमृतणा नाथ जीवातु जीवो ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ( श्लोकः ) ॥ विमल केवल  
 भामन भ्रास्करं । जगति जंतु महोदय कारणं । जिनवरं बहुमान जलो  
 धतः । शुचिमनः स्तपयामि विशुद्धये ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने । अनंतानंत  
 ज्ञान शक्तये । जन्मजरा मृत्यु निवारणाय । श्री मज्जिनेंद्राय । जलं यजाम  
 हे स्वाहा ॥ १ ॥ इति जलपूजा ॥ ❀ ॥ जलसं न्दवण करावे ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ २ चंदन पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) बावना चंदन कुमकुमा । मृगमदनं वन सार ॥ जि  
 न तनु लेपै तसुट्लै । मोह संताप विकार ॥ १ ॥ ( ढाल ) सकल संताप  
 निवारण तारण सहृ प्रवि चित्त । परम अनीहा अरिहा तनु चरचो प्रवि  
 नित्त ॥ निज रूपे उपयोगी धारी जिनगुण गेह । भावचंदन सुह भाव थी  
 टालै दुरित अठेह ॥ २ ॥ ( चालि ) जिन तनु चरचतां सकल नाकी  
 कहै कुग्रह उण्णता आज थाकी ॥ सफल अनिमेषता आज ह्याकी । प्र  
 व्यता अह्न तणी आज पाकी ॥ ३ ॥ ( श्लोकः ) सकलमोह तिमश्र वि  
 नासनं । परम शीतल भावयुतं जिनं ॥ विनय कुंकुम चंदन दर्शनै । सहज  
 तत्व विकाश कृतेर्चये ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने । अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये ॥  
 जन्मजरा मृत्यु निवारणाय । श्रीमज्जिनेंद्राय । चंदनं यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥  
 इति चंदनपूजा ॥ ❀ ॥ केसर चंदन चढावे ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ३ पुष्प पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दुहा ) शतपत्री वर मोगरा । चंपक जाइ गुलाव ॥ केतकी  
 दमणो बोलमिरि । पूजो जिन चरि ठाव ॥ १ ॥ ( ढाल ) अमल अखंभि  
 त विकसित सुज सुमनी धन जाति । लाखीणो दोरुठवो अंगारचो बहु  
 प्राति ॥ गुण कुसुमें निज आनम मंस्ति करवाप्रव्य ॥ गुणगर्गी जम्भयागी  
 पुष्प चढावो नव्य ॥ २ ॥ ( चालि ) जगधणी पूजतां विविध फुलै । सुरवरा  
 ते गिणें कृण अमूलै ॥ खंति धर मानवा जिनपद पूजै । तसुतणा पाप संताप  
 बूजे ॥ ३ ॥ ( श्लोकः ) विकच निर्मल शुद्ध मनोरमे । विशद चेतन भाव  
 मसुद्रवैः ॥ सुपरिणाम प्रसून वनेर्नवैः । परमनन्व मयं हि यजाम्यहं ॥ १ ॥  
 ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने ० पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥ ॥ ❀ ॥ इति ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ ४ धूप पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दृष्टा ) कृष्णागर मृगमद नगर । अंबर तुरक लोवान । मेल सुगंध वनमार वन । करो जिनने धूपदान ॥ १ ॥ ( दाज ) धूपघटी जिम म हमहे निम देहे पातिक वृन्द ॥ अरति अनादिनी जावे पावे मन आणंद ॥ जे जिन पूजे धूपें जव कृपें फिर तेह ॥ नावे पावे धुववर आवे सुख अ वेह ॥ २ ॥ ( चालि ) जिनघरे वासतां धूपपूरे । मिठत पुर्गन्धता जाइ दूरे ॥ धूप जिम सहज ऊर्ध्व गत स्वजावे । कारिका उच्चगति जाव पावे ॥ ३ ॥ ( श्लोकः ) सकल कर्म महं धन दाहनं । विमल संवर जावसु धूपनं ॥ असुप्त पुञ्ज संग विवर्जितं । जिनपतेः पुरतोस्तु सुहर्षितः ॥ १ ॥ ॐ क्लीं परमात्मने० । धूपं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ इति धूप पूजा ॥ धूप अगस्वत्ती खेवे ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ ५ दीपपूजा ॥ ❀ ॥

( दृष्टा ) मणिमय रजत ताम्रना । पात्रकरी घृत पुर । वत्ती सूत्र कसुं वनी । करो प्रदीप सत्वर ॥ १ ॥ ( दाज ) मंगलदीप वधावो गावो जिन गुण गीत ॥ दीपथकी जिम आलिका मालिका मंगलनीत ॥ दीपतर्णा सुप्त ज्योती द्योती जिन सुखचंद ॥ निरखी हरखो जविजन जिम लहो पूर्णा नंद ॥ २ ॥ ( चाल ) जिन गृहे दीपमाला प्रकासे । तेहया निमर अज्ञान नामे ॥ निजघटे ज्ञानज्योति विकासे । तेहया जगतणा जावजामे ॥ ३ ॥ ( श्लोकः ) जविक निर्मल बोध विकामकं । जिनगृहे सुप्त दीपक दीपनं ॥ सुगुण राग विसृष्ट समन्वितं । दधतु जाव विकाम कृते जेना ॥ १ ॥ ॐ क्लीं परमात्मने० । दीपं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ इति दीपपूजा ॥ ❀ ॥ मंगलदीप चढावे ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ ६ अक्षत पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दृष्टा ) अक्षत २ पुरसुं । जे जिन आगे मार । स्वस्तिक रचनां विस्तरे । निजगुण जर विस्तार ॥ १ ॥ ( दाज ) उद्धत अमल अलंघित मं गित अक्षतदंग । पुंजत्रय करो स्वस्तिक आस्तिक जावे रंग । निज सत्ताने

## रत्नसागर

सन्मुख उनमुख जावे जेह । ज्ञानादिक गुणठावै जावे स्वस्तिक एह ॥ २ ॥  
 ( चाल ) स्वस्तिक पूस्तां जिनप आगै । स्वस्ति श्री चद्र कल्याण जागै ।  
 जन्मजरा मरणादि असुख जागै । नियत शिव सर्म रहै तासु आगै ॥ ३ ॥  
 ( श्लोकः ) सकल मंगलकेलि निकेतनं । परम मंगल जावमयं जिनं । अ-  
 यति नव्यजना इति दर्शयन् । दधतु नाथ पुरोक्त स्वस्तिकं ॥ १ ॥ ॐ श्री  
 परमात्मने० । अहर्तं यजामहे स्वाहा ॥ ❀ ॥  
 इति अहर्तपूजा ॥ अखंरु चावल चढावै ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ ७ नैवेद्यपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) सरस सुची पकवान बहु । शालि दालि घृतपूर । धरो  
 नैवेद्य जिन आगलै । कृथा दोष तसु दूर ॥ १ ॥ ( ढाल ) लपनश्री वर घेवर  
 मधुतर मोतीचूर । सींहकेसरिया सेविया दालिया मोदक पूर । साकर द्राख  
 सींधोना नक्तिव्यंजन घृतसद्य । करो नैवेद्य जिन आगलै जिम मिलै  
 सुख अनवद्य ॥ २ ॥ ( चाल ) ढोवतां नोज्य पर जाव त्यागे । नविजना निज  
 गुण नोज्यमांगे । अह्ननणी अह्नतणो सरूप नोज्य । आपज्यो तातजी  
 जगत पूज्य ॥ ३ ॥ ( श्लोकः ) सकल पुज्यसंग विवर्जनं । सहज चेतनजाव  
 विलासकं । सरसनोजन नव्य निवेदनात् । परम निर्वृति जाव महं स्पृहे ॥ १ ॥  
 ॐ श्री परमात्मने० । नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥  
 इति नैवेद्यपूजा ॥ ❀ ॥ नैवद्य मिठाई पकवान चढावै ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ ८ फलपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) पक वीजोरं जिन करै । ठवतां सिवपद देइ । सरस  
 मधुर रस फल गिणै । इह जिन नेट करेइ ॥ १ ॥ ( ढाल ) श्रीफल क  
 दली सुरंग नारंगी आंवा सार ॥ अंजीर वंजीर दाफिम करणा षट्बीज  
 सफार ॥ मधुर सुस्वादिक उत्तम लोक आणंदित जेह । वरण गंधादिक र  
 मणीक बहुफल ढोवै तेह ॥ २ ॥ ( चाल ) फलजर पूजतां जगत स्वा  
 मी । मनुजगति बेलहै सफल पामी । सकल मनुष्येय गतिनेद रंगै ।  
 ध्यावतां फलसमाप्ति प्रसंगै ॥ ३ ॥ ( श्लोकः ) कटुक कर्मविपाक विनाशनं ।  
 सरस पकफल व्रज दोकनं । वहति मोक्षफलस्य प्रचोपुरः । कृत सिद्धि

फलाय महाजना ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० । फलं यजामहे स्वाहा ॥  
इति फलपूजा ॥ ८ ॥ श्रीफल सुपारी नीलाफल प्रमुख चढावे ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ अर्घ्य पूजा ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ( फुडा ) इमं अरु विधि जिनपूजना । विरचै जे थिरचित्त ।  
मानवज्वर मफलो करै । वाधे समकिन वित्त ॥ १ ॥ ( ढाल ) अगणित  
गुण मणि आगर नागर वांछित पाय । श्रुतधारी उपगारी श्री ज्ञान सागर  
उवझाय । तासु चरणकज सेवक मधुकर पय लयलीन । श्रीजिन पूजा  
गाई जिनवाणी रसपीन ॥ २ ॥ ( चाज ) संवत गुणयुग अचल इंदु । हर्ष  
प्ररिगाइयो श्रीजिनैंदु । तासुफल सुकृत थो सकल प्राणी । लहेज्ञान  
ज्योत धन शिव निसानी ॥ ३ ॥ (श्लोकः) इति जिनवरखंडं भक्तिः पूजयं  
ति । सकल गुणनिधानं देव चंद्र स्तुवंति । प्रति दिवस मनंतं तत्त्व मुद्रास  
यंति । परम सहज रूपं मोक्ष सौख्यं श्रयंति ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमा० अर्घ्यं  
यजामहे स्वाहा ॥ च्यारे खूणो धार दीजै ॥ इति अर्घ्य पूजा ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ वस्त्र पूजा ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ शक्रो यथा जिनपतेः सुरशेखचूला । सिंहासनो परिमित स्तप  
नावसाने । द्रव्यहतेः कुसुमचंदन गंध धूपैः । कृत्वा चनंतु विदधाति सुवस्त्र  
पूजा ॥ १ ॥ तस्मत् श्रावक वर्ग एष विधिना लंकार वस्त्रादिकं । पूजा तीर्थ  
कृतां करोति भवतं शक्त्या तिष्ठत्तयादनः । नीरागस्य निरंजनस्य विजिता  
गते विजोकीपतेः । त्वस्यान्यस्य जनस्य निर्वृति कृते क्लेशहृया कांक्षया ॥  
ॐ ह्रीं ॥ वस्त्रं० ॥ वस्त्र चढावे ॥ इति वस्त्रपूजाः ॥ इति अष्टप्रकारे पूजा ॥

॥ ॐ ॥ अथ निमक उत्तारण पूजा ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अहं पणिजग्गा पमरं । पया हिणं मुणिवयं करि जणं । पम  
इं सुहण जण जज्झियंच । लृणं ह अवहरंती ॥ १ ॥ पिकखेविणं सुह जिण  
वरह । दीहर नवण सज्जण । न्दावइ गुरु मठह अरिय । जलण पइस्सइ  
लृण ॥ २ ॥ लृण उत्ताग्धि जिणवरह । तिन्नि पयाहिणि देव । तम तम  
अब्ब करंतिव । विक्का विक्का जजेण ॥ ३ ॥ जंजेण विक्कत थुई । जजेण  
तं तहइ अन्यसइत्त । जिणरुवा मठरेणवि । कुट्टइ लृणं तम तमस्स ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ ए कही लृण अग्निशरण करे ॥ ( पीठे ) लृण पाणी लेई । सुखें  
गाथा कहे ॥ ❀ ॥ सबवि मुणवई जलविजल । तंतह नमरुइपास । अह  
वि कयंतस्स निम्मलत्त । निग्गुण बुद्धि पयास ॥ ५ ॥ जलण अणें विणु  
जलणहि पास । नरवि कयज्जल आवहि पास । तिन्नि पयाहिणि दि  
न्निय पास । जिम जिय बुद्धे नव दुहपास ॥ ६ ॥ जलनिम्मल कर कमले  
हि लेविणुं । सुखइ आवहि मुणिवई सेवणुं । पन्नणइ जिणवर तुहपइ  
सरणं । नयतुट्टइ लब्धइ सिद्धि गमाणं ॥ ८ ॥ ❀ ॥ ए कही लृण उत्तारी  
जल सरण कीजे ॥ इति निमक उत्तारण पूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पुष्पमाला पहरावण पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ उन्नय पयय नत्तस्स । नियगाणे संठियं कुणं तस्स । जिण पासे  
नमिय जणस्स । पिठतुह हुय वहे पणुणं ॥ १ ॥ सबो जिण प्पजावो ।  
सरिसा सरिसेसु जेण रत्तंती । सबन्नूण अपासे । जरुस्स नमणं न संक  
माणं ॥ २ ॥ अत्तं पडुंकरं पिठु । हुयवह निवडेण जडेण कयं । आणा  
सबन्नूणं । न कया सुकयत्थ मूलमिणं ॥ ३ ॥ ए कही माला चढाईजे ॥

॥ ❀ ॥ अथ बूटा फूल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ उवणेव मंगलेवो । जिणाण सुह जालि संवलिया । तित्थ पव  
त्तण समई । तियसे विमुक्का कुसुम बुढी ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
ए कही फूल उगालीजे प्रनु आगे ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सतर जेद पूजाकी विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम स्नात्र करे । पीठे । अष्ट प्रकारी पूजा करे । फिर सोना रुपा  
प्रमुखकी रक्खीमें । कुंकुम ( तथा ) केसर प्रमुखको साथियो करे । पीठे  
सुंदर कलश, केसर प्रमुख मिश्रित शुक्लजल नरी । रुपियो थापनाको कल  
शमेंरखी । कलश रक्खीमेंधरे । पीठे । स्नात्रिया मुख कोस उत्तरासन करके ।  
तीन नवकार गुणें । तीन नमस्कार करी । हाथे धूपदेई । रक्खी हाथ  
धरे । मनथिर राखे । ठीक वर्जे । स्नात्रिया प्रनुजी सन्मुख खना रहे ।  
कलश अडिग राखे । मुखे इम पदे । आवन्नले नगवंतनी ( इत्यादी ) ।

॥ ❀ ॥ अथ सतर जेद पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दृहा ) जावज्जे जगवंतनी । पूजा सतर प्रकार । परमिध कीधी  
द्रोपदी । अंग ठेठ अधिकार ॥ १ ॥ ❀ ॥ ( राग सरपदो ) ॥ ❀ ॥ ज्यो  
ति मक्ख जग जागती ॥ ( हांरेअइ० ) ॥ सरसति समरिसुज्जिद ॥ सतर सुवि  
धि पूजा नणी । पज्जणिसु परमानन्द ॥ १ ॥ ( गाहा ) न्हवण ( १ ) विलेवण  
( २ ) कथयुगं ( ३ ) गंधारुहणं च ( ४ ) पुष्परुहणयं ( ५ ) । माज्जा रोहण ( ६ )  
वन्नयं ( ७ ) । चुन्न ( ८ ) पम्मागाय ( ९ ) आजरणे ( १० ) ॥ २ ॥ माज्जा  
सुयवंसुवरं ( ११ ) पुष्पंगरं च ( १२ ) अष्टमंगलयं ( १३ ) धूव उखेवो  
( १४ ) गीययं ( १५ ) । नट्टं ( १६ ) वज्जं ( १७ ) नट्टाज्जणियं ॥ ३ ॥  
सतर सुविध पूजा पवरं । ज्ञाता अंग मजार । दृपदसुता द्रोपदि परे । क  
रिये विधि विस्तार ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ प्रथम न्हवण पूजा ( राग देसाख ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पूर्वमुख सावनं करि दसन पावनं । अहत धोती धरी उचित  
मानी । ( अइयो० ) ॥ विहत मुखकोसके खीर गंधोदके । सुनृत मणिक  
लश करि विवध वांती ॥ ( अ० ) ॥ १ ॥ नमवि जिनपुंगव लोमहस्ते  
नवं । मार्जनं करिअ वावारि वारी । ( अ० ) । जणिय कुशमंजली कलश  
विधि मनरली । नवति जिनइंद्र जिम तिम अगारी । ( अ० ) ॥ ❀ ॥  
दृहा ॥ ❀ ॥ परमानंद पीयूष रस । न्हवण सुगति सोपान । धरम रूप तरु  
सोचिवा । जज्जधर धारसमान ॥ १ ॥ पहली पूजा साचवे । श्रावक शुभ्र  
परिणाम । श्रुचि पत्ताज तनु जिणतणें । करइ सुकृत हित काम ॥ २ ॥

॥ ❀ ॥ अथ विधि ( राग सारंग ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पूजा सतर प्रकार । सुण जैनकी । ( पृ० ) परमानन्द तिण  
वन्नयोरी सुधारस । तपतचुणीय मेरे तनकी ॥ ( पृ० ) ॥ १ ॥ मनुकं विजोकि  
नमिंजनन प्रमारजित । करत पत्ताज सुचि धार वनकी । ( पृ० ) न्हवण  
प्रथम निज शुभ्रन पुजावत । पंककुंवरप जिम धनकी । ( पृ० ) ॥ २ ॥ तर्गणि  
नाराणि नवामिष निरणकी । मंजरी संपद फल वरधनकी । शिवपुर पंथ



दिखावण दीपी । धूमरी आपदवेल मरदनकी ( पू० ) ॥ ३ ॥ सकल कुशल  
 रंग मिल्योरी सुमति संग । जागी सुदिशा सुज मेरे दिनकी । कहे साधु  
 कीरति सारंग जरकरतां । आसफली मेरे मनकी ( पू० ) ॥ ४ ॥ ❀ ॥  
 इति प्रथम न्हवणपूजा ॥ १ ॥ ❀ ॥ पंचामृतसुं न्हवणकीजे ( तथा ) नवे  
 पांवकै अंगूठे जलधार दीजै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ द्वितीय विलेपन पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुंदर अङ्ग लूहणें करी । विंव प्रमार्जी । केसर चंदन मृगमद  
 अगरादिकसें । कचोली जरी । लेकर खमारहे । मुखे० ॥ ( रागरामगिरी )  
 गात्र लूहै जिन मन रगङ्गसूरें । ( देवा ) सखरसुवूपित वाससुं ॥ वाससुं ( हारे  
 देवा ) वा० । गंध कसायसुमेलियै ॥ १ ॥ नन्दन चंदन चंदमेलियै रे ( देवा )  
 ॥ नं० ॥ मांहे मृगमद कुंकुम जेलीयै ॥ करलीयै ( हारे देवा ) क० । रय  
 ण पिगाणि कचोलीयै ॥ २ ॥ पग जानु कर खंधे सिरै रे ( देवा ) जाल  
 कंठ नर उदर न्तरै । दुखहरै ( हारे देवा ) सुखकरै । तिलक नवेअंग की  
 जीये ॥ ३ ॥ दूजीपूजा अनुसरै ॥ श्रावक दू० ॥ हरि विरचै जिम सुरगिरै ।  
 तिमकरै ( हारे देवा ) ति० । जिणपर जनमन रंजीयै ॥ गा० ॥ ४ ॥ राग  
 ललितमें । दूहा ॥ ❀ ॥ करहु विलेपन सुखसदन । श्री जिनचन्द्रशरीर ।  
 तिलक नवे अङ्गपूजतां । लहै जवोदधि तीर ॥ १ ॥ मिटै ताप तसु देहको ।  
 परम शसिस्ता संग । चित्तखेद सब उपसमें । सुखमें समर सीरंग ॥ २ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ विधि ( राग ललित ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ विलेपन कीजै जिनवर अंगें । जिनवर अंग सुगंधै ॥ वि० ॥ कुं  
 कुम चन्दन मृगमद यक्षकर्दम । अगर मिश्रित मनरंगै ॥ वि० ॥ क्रम जा  
 नु कर खंधे शिर जाल कंठ । नर उदरन्तर संगै । विलुपति अवमेरो करत  
 विलेपन । तपत बुझति जिम अंगै ॥ वि० २ ॥ नव अंग नव २ तिलक  
 करतही । मिलत नवेनिय चंगइ । कहे साधु तन सुचि करसु ललित पूजा ।  
 जै सें गंग तरंगै ॥ वि० ३ ॥ ❀ ॥ इति द्वितीय विलेपन पूजा ॥ २ ॥ ❀ ॥  
 एकही विलेपन कीजै । नव अंग पूजीयै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ तृतीय वस्त्र युगल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अत्यन्त कोमल सुगंध अमोलक वस्त्र युगल पर । केसरनी मा  
थियो करी । प्रनुजी आगे खना रहे मुखें डम पडे ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ वसन युगल उज्ज्वल विमल । आरौपें जिन अंग ।  
लाज ज्ञान दर्शन जहे । पूजा तृतीय प्रसंग ॥ १ ॥ ( राग गौडी ) ॥ कमल  
कोमल वन चन्दन चरचित । सुगंध गंधे अधिवामिया ए ॥ ( हारे ) अड  
यो० ॥ कनक संस्ति हिय लालपल्लव शुचि । वसन जुग कंति अधिवा  
रिया ए ॥ ( हारे ) अ० ॥ जिनप उत्तम अंगे सुविधि शको यथा । करिय  
पहिम्वाणी होइये ए ॥ ( हारे ) अ० ॥ पापलूहण अंग लूहणो देवनें ।  
वस्त्रयुग पुंज मल धोइये ए ॥ ( हारे ) अ० २ ॥ ❀ ॥ इति ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ विधिः ( राग वैरानी ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ देव दुष्य युग पूजा वन्योहे जगतगुरु । ( हे हांग ) आनो व  
न्योहे जगतगुरु । देव दुखखहर अव इतनी मांगुं । तुंहीहे सबहि हिलु तुं  
हीहे सुगतिदाना । तिण नामि २ प्रनु जीके चरणे जागुं ॥ दे० १ ॥ कहै  
माधु तीर्जा पूजा केवल दमण नाण । देव दुष्य मिसदेहु उत्तम वागुं । अव  
ण अंजलि पुट सुगुण अमृतपीतां । मवरानी पुख मंशय घुस्म जागुं ॥ दे०  
॥ २ ॥ इति तृतीय वस्त्रयुगल पूजा ॥ एकही वस्त्र युगल चढावे ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ चतुर्थी सुगंधचूर्ण पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अगर चन्दन, कपूर, कुंकुम, कस्तूरीका, चूर्ण करी । कचोत्री  
जरी । आगे जना रहे । मुखें डम पडे ॥ ( गौरी रागमें । दूहा ) ॥ पूज  
चतुर्थी डण पर । सुमति बयार वाम । कुमति कुगति दूर हरे । दहे मोह द  
लपाम ॥ १ ॥ राग भारंग ॥ ❀ ॥ ( हां हारे देवा ) वाचना चंदन वम कुमकु  
मा । चूर्ण विधि विस्चे बानुए । ( हां हारे देवा ) कुलुम चूर्ण चंदन  
सुगमदा । कंकोज नणो लधि बालुए ॥ ( हां० ) २ ॥ वाम दशोदिश वा  
नन । पूजे जिनअंग न्यंगुए ॥ ( हां० ) ॥ जाति जवन अधिवामांयो ।  
जन्तुगामिक गमम मलंगुए ॥ ३ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ विधिः ( राग पुर्वी गौरी ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मेरे प्रनुजीकी पूजा आनन्द मेलै ॥ पू० ॥ वासप्रवन मोहो  
सबजोए । संपदा जेलै ॥ पू० १ ॥ सतर प्रकारी पूजा । विजय देवा तत्ताथे  
ई ॥ वि० ॥ अप्रमत्त गुण तोरा । चरण सेवै ॥ पू० २ ॥ कुंकुम चंदन  
वासे । पृजीयै जिनराजता थेई । चतुरगति दुख गोरी । चतुर्थी धनकि ॥  
पू० ॥ ३ ॥ इति चतुर्थी वासद्वेष पूजा ॥ ४ ॥ ❀ ॥ एकही वासचूर्ण प्रनुजीके  
विंव उपर ठांटे । मंदिर में चूर्ण उगलै ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पांचमी पुष्पारोहण पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गुलाब, केतकी, पांचे तरे का फूल रक्खीमें रक्खी । मुखै इम  
पढै ॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ मन विकसै तिम विकसतां । पुहप अनेक प्रकार । प्रनु  
पूजा ए पंचमी । पंचमि गति दातार ॥ १ ॥ ❀ ॥ ( राग कामोद ) ॥ चंपक  
केतकी मालती ए । ( हांरे अ० ) कुंदकिरण मचकुंद । सोवन जाई जूझका ।  
चनल सिरी अरविंद ॥ १ ॥ जिनवर चरण उवारि धरे ए ॥ ( हांरे न० ) मुकुजित  
कुशम अनेक । सिव रमणीसैं वर वरे । विध जिन पूज विवेक । वि० । इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ विधि ( राग कानरा ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सोहेरी माई वरणें । मन मोहेरी माई वरणें । ( अहो वरणें )  
विविध कुशम जिन चरणें । ( अ० ) । विकसी हसीय जंपें साहिवकुं । रा  
ख प्रनू हम सरणें ॥ सो० ॥ १ ॥ पांचमी पूजा कुशम मुकुजितकी ( कु० )  
पंच विपै ( हां० पं० ) दुख हरणें ॥ सो० ॥ कहे साधु कीरति जगति जगवें  
तकी । जविक नरा । ( हांरे ज० ) । मुख करणें ॥ २ ॥ सो० ॥ ❀ ॥  
इति पांचमी पुष्पारोहण पूजा ॥ पांच जातना पुष्प चढावे ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ठी पुष्पमाळा रोहण पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नाग- पुन्नाग, दमणो- गुलाब- पाम्पल, मोगरा- सेवती- चंपेजी-  
मालती ( इत्यादि ) पंच वरण फूलांनी माळा हाथे जेई खना रहे । ( मु  
खै इम पढै ) ( दूहा ) ॥ ठी पूजा ए ठी । महा सुरभि पुष्पमाळा ।  
गुण गुंथी थापे गले । जेमटले दुख जाय ॥ १ ॥ ( राग रामगिरी गुजरी )

॥ ❀ ॥ नाग शुभाग मंदार नवमालिका । मल्लिका मोग पारिव कटोण  
( जलां पा० ) ॥ २ ॥ मरुक दमाणक वकुल तिलक वासंतिका । लाल  
गुलाब पामल जिलाए । ( जलां पा० ) ॥ १ ॥ जासुमणि मोगरा बेतला  
मालती । पंचवर्णा गुंथी मालतीए । ( जलां गुं० ) हेमाद्र जिनकंठ पीठे  
ठवी लह लहे । जाणि संताप सब पावतीए । ( जलां० ) ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ विधिः । ( राग आसावरी ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ देखी दामा कंठ जिन अधिक एधतनंदे । चकोरकुं देखि जिम  
चंदे । ( दे० ) ॥ १ ॥ पंचविधि वरणरची कुशमांकी ॥ जेसी रयणाहे  
( जे० ) वलि सुह मंदे ( देखी० ) ॥ २ ॥ ठांरे तोमर पूजा नवमार धूजे  
सब आरिवाण ( हांरे स० ) होइ निम ठंदे । ( दे० ) ॥ ३ ॥ कहे माधु की  
रत सकल आन्या सुख । नविक जगत ( हांरे प्र० ) । जे जिन वंदे ।  
( दे० ) ॥ ४ ॥ इति उठी दोमर फूलमाला पूजा ॥ ६ ॥ एकही प्रनुजीके  
कंठे फूलमाला चढावे ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सप्तमी अंगरचन पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पंचवर्णा फूल केसरें अंगीरचे । सो हाथे लेई । मुखे इम  
पडे ॥ ❀ ॥ ( इहा ) ॥ केतकी चंपक केवना । सोजे तेम सुगात । चाढो  
जिम चढता हुवे । मातमी ये सुख सात ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ( राग केदारो गौरी )  
॥ ❀ ॥ कुंकुम चरचित विविध पंच वरणक कुशमसुंग ॥ ( हांरे अ० ) कुंद  
गुलाबसुं चंपको दमाणको जाससुंग ॥ १ ॥ मातमी पूजामें अंगी अलंकाये ।  
अंग आलंक मिसमाननी सुगति आलिगिये ॥ २ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ विधि ( रागजेरवी ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पंचवर्णा अंगी रची कुशम जाती । ( पं० ) । कुंद मचकुंद  
गुलाब गिरौमाणि । कर करणी मौवन जाती । ( पं० ) ॥ १ ॥ दमाणक मरु  
क पामल अरविंदो । अंग लई बेतजवाती । पारवि चरण कज्जार मंदारो ।  
विण पद हल वनी जाती । ( पं० ) ॥ २ ॥ सुर नर किन्नर रमाणि गानी ।  
जेरवी कुगति वनतिदानी । ( पं० ) ॥ ३ ॥ इति मातमी अंगारचन पूजा  
॥ ७ ॥ सुगंध पुपे करी अत्यन्त जतीमें जगवन्तके शरीरे अंगी रचे ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ आठमी गंधवटी पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ घनसार, अगर, सेल्हारस, प्रमुखसैं सुगंध वटी करि । जिनेश्वर नैं आगे ले खना रहे ॥ ( दूहा ) ॥ अगर सेल्हारस सार । सुमती पूजा आठमी । गंधवटी घनसार । जावै जिनतनु जावसुं ॥ २॥ ( राग सोरठ ) ॥ ❀ ❀

॥ ❀ ॥ कुंदकिरण शशि ऊजलो जी ( देवा ) । पावन घस घन सारी जी । सुरजि सिखर मृगनाजिनो जी ( देवा ) । चुन्नरोहण अधिकारी जी ॥ १ ॥ वस्तु सुगंध जव मोरियो जी ( देवा ) । अशुज करम चूरी जै जी । अंगण सुरतरु मोरियो जी ( देवा ) । तव कुमती जन खीजै जी । ( तव सुमती जनरीजै जी ) ॥ २ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ विधि ( राग सामेरी ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पूजोरी माई जिनवर अंगसुगंधै ( जिन० पू० ) । गंधवटी घनसार उदारै । गोत्रतीर्थकर बांधै । ( जलां० २ ) ( पू० ) ॥ १ ॥ आठमी पूजा अगर सेल्हारस । जावै जिन तनु रागे । धारकपूर जाव घन वरपत । सामेरी मति जागे ॥ ( जलां २ ) ( पू० ) ॥ इति आठमी वरासचूर्णपूजा ॥ ८

## ॥ ❀ ॥ अथ नवमीध्वज पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिवे सधव स्त्री जेली होके ऊज्जाल थाल में । कुंकुमको साथि यो करै । अहुत थाल में धरै । श्रीफल रूपानाणो धरै । धजा थालमें धरि सधव स्त्री साथै रखी । गीत गान गावतां । सर्व वाजित्र वाजतां । तीन प्रदक्षिणा देवै । पीठे ध्वजा ऊपरि गुरु पासैं वासक्षेप करावै । प्रदक्षिणा सन्मुख गुहली करै ॥ ऊपरि अहुतांसैं साथियो करै । नुपारी चढावै । मुखे ऐसा कहै ।

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) मोहनध्वज धर मस्तकै । सुहव गीत समूल । दीजै तीन प्रदक्षिणा । परसिध नवमी पूज ॥ १ ॥ ( रागमेघगोभी ) ॥ ( वस्तु ) सहस्र जोयण २ हेममय दंरु युतपताक पंचेवरण । धुमधुमंत धुग्वरीय वाजै । मृदुसमीर जहिकै गयण ( ज० ) । जाण कुमतिदल सयल जाजै ॥ सुरपति जिम विरचे धजाए ( हांगवि० ) नवमी पूज सुरंग । ( न० ) ति ऊपर आवक धजबहन । ( ति० ) आपै दान अन्नंग । ( आ० ) १ ॥

॥ ❀ ॥ अथ विधि ॥ ( राग नटनारायण ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिनराज को ध्वजमोहन । ध्वज मोहनारे ध्वजमोहना ॥  
( जि० ) मोहन सुगुरु अधिवासीयो । कर पंचसवद त्रि प्रदक्षिणा ॥  
( क० ) सधव वधू सिर सोहना ॥ २ ॥ ( जि० ) ज्ञातिवसन पंच वरण  
वन्योरी । विधकरी ध्वजको रोहण ॥ साधु ज्ञाति नवमीपूजा नव । पाप  
नीयाणा खोहणा । शिव मंदिरकुं अधिरोहणा । जन मोह्यो नटनारायणा  
( जि० ) ॥ २ ॥ इति नवमी पूजा० ॥ ❀ ॥ एकही ध्वजा चढाई जै ॥

॥ ❀ ॥ अथ दशमी आभरण पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पिरोजा, नीलम, लसणिया, मोती माणकसैं जड्या । आभरण  
लेई सुखे इम पढे ॥ ॥ ( राग केदारैमें ) ॥ ( दूहा ) ॥ दशमी पूजा आभर  
ण । रचना यथा अनेक । सुरपति जिम अंगै रचै । तिम श्रावक सुविवेक  
॥ १ ॥ शिर सोहै जिनवर तणैं । रयण सुगट जलकंति । तिलक जाल अं  
गदनुजा । श्रवणकुंरुज अति ज्ञाति ॥ २ ॥ ❀ ॥ ( राग अधजास गुंमलहार ।  
आशावरी ) ॥ ❀ ॥ पाच पीरोजा नीलू लसणिया । मोती माणिक जाल  
रसणीया । ( हीरा सोहैरे ) धूनी चूनी पुलकर केतना । जातिरूप सुजग  
अंक अंजना ( मनमोहैरे ) ॥ १ ॥ मौलिमुगट रयणे जड्यो । काने कुंरुज  
( हांरे ) अति जुगतै जड्यो । ( उरहारुरे ) । ( मन वारुरे ) ॥ जालतिलक  
वांहे अंगदा । आभरण दशमी पूजा मुदा । ( सुखकारुरे ) । ( दुखहारुरे ) ॥ २ ॥

॥ ❀ ॥ अथ विधिः ॥ ( राग केदारो ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रनु सिरसोहै ॥ सुगटमणि रयणे जड्यो । ( रय० ) । अंगद  
बाहु तिलक जालस्थल । यहूनीको कौन बड्यो ॥ ( प्र० ) १ ॥ श्रवण कुं  
रुज शशि तरुण मंरुल जीपे । सुरतरुसैं अलंकरयो । दुखकेदार चमर  
सिंहासन । उत्र शिर उवर धरयो । अलंकृत उचितवरयो ॥ २ ( प्र० ) ॥ ❀ ॥  
इति दशमी आभरण पूजा ॥ १० ॥ एकही आभरण ( तथा ) रोक्नांणो  
रुज्वल चढावै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ इग्यारमी फूलघर पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुगंध पुष्पकरी संयुक्त फूलघर हाथे लेई । सुखे इम पढे ॥ ❀ ॥



( दूहा ) ॥ ❀ ॥ फूलगरो अतिसोजतो । फूंदे लहके फूल । महके परिमल फलमहा । इग्यारमी पूज अमूल ॥ १ ॥ ❀ ॥ ( राग रामगिरी ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कोज अंकोल राय वेलि नवमालिका । कुंद मुचकुंद वर विच कलूए ( हांरे अईयो ) तिलक दमणक दलं मोगरा परमलं । कोमला पारिध पामलूए ॥ ( हां० अ० ) प्रमुख कुशमै रचै त्रिभुवन कुं रुचे । कुशमगेहें विचि तोरणं ए ॥ ( हां० अ० ) गुठ चंद्रोदयं कुंवका उन्नयं । जालिका गोख चितचोरणं ए । ( हां० अ० ) ॥ २ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ विधि ॥ ( राग रामगिरी ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मेरो मन मोह्यो माई री । फूलघर आनंद जीलै ( फू० ) अ सत नसत दाम वधरी मनोहर । देखत तवही सब दुरितखीलै ( फू० ) ॥ ॥ १ ॥ कुशम मंरुप थंन गुठ चंद्रोदय । कोरणी चारु विनाण सजै । इ ग्यारमी पूज वर्णीहै रामगिरी । विबुध विमान जैसें तिपुरिज्जै ( फू० ) ॥ २ मे० ॥ इति इग्यारमी फूलघरपूजा ॥ ११ ॥ एकही फूलघर चढाईजै ।

॥ ❀ ॥ अथ वारमी पुष्पवर्षा पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पंचवर्णफूल गुलाबजल लेई । मुखै इम पढे ॥ ( राग मल्हार ) ॥ ( दूहा ) वरपे वारमी पूजमें । कुशम वादलिया फूल । हरण ताप दुःख लोकको । जानुसमा बहुमूल ॥ १ ॥ ( राग जीममल्हार ) करखानी जाति ॥

॥ ❀ ॥ मेघ वरसे जरी पुष्पवादन करी । जानु परमाण कर कुशम पगरं । पंचवरणे वायो विकचि अनुक्रम चिण्यो । अधोवृत्ते नही पीढपम रं ॥ १ ॥ मे० १ ॥ वासमहके मिलै । जमरजमरीमिलै । मरस रस रंग ति ण दुख निवारी । जिनप आगे करै सुरप जिय सुखवरे । वारमी पूज ति णपर अगारी ॥ मे० ॥ २ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ विधिः ( राग जीममल्हार ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुष्प वादलीया वरसे । सुसमां ( अहो० ) । योजन असु चिहर वरस गंधोदक । मनुहर जानु समां ( पु० ) गमन आगमन की पी रनही तनु । इह जिनको अतिमय सुगुणं । गुंजत २ मधुकर इम पत्राणै ॥ गुं० ॥ मधुर वचन जिन गुण थुण्ड ॥ २ ॥ कुसुम सुपारि मेवा जो करे ।

तसुपीरु नही सुम्माणें । ( पु० ) । समवसरण पंचवरण अधोवृंत । वि  
बुध रचे सुमना सुसमा ॥ ३ ॥ वारमी पूज जविक तिम करै । कुशम  
विकस हस ऊचरै । तसु जीमबंधन अधरा हुवै । जेकर हिं जे जिननमें  
॥ पु० ॥ ४ ॥ ❀ ॥ इति वारमी पुष्पवृष्टी पूजा ॥ एकही फूलउठालै ॥

॥ ❀ ॥ अथ तेरमी अष्ट मंगलीक पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अष्टमंगलीक लेकर सुखे इम पढै ॥ ❀ ॥ रागवसंत ॥ ❀ ॥  
( दूहा ) तेरमीपूजा अवसरै । मंगल अष्टविधान । युगति रचै सुमतै स  
ही । परमानंद निधान ॥ ❀ ॥ १ ॥ राग वसंत ॥ ❀ ॥ अतुल विमल मि  
ल्यो । अखंरुगुणे मिल्यो । शालि रजत तणा तंडुलाए । श्रुषण समाजक  
विध पंचवरणक । चंद्रकिरण जैसा ऊजलाए ॥ १ ॥ ( अ० ) ॥ मेल मंगल  
लिखै सयल मंगल आखै । जिनप आगलि सुथानक धरै ए । तेरमीपू  
जा विध तेरमी मन मेरै । अष्टमंगल अष्टसिद्धि करै ए ॥ ( अ० ) ॥ २ ॥

॥ ❀ ॥ अथ विधि: ( राग कल्याण ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हांहो पुजावणी ते रसमें ( हांहो रसमें ३ ) ॥ ते० ॥ अष्टमं  
गल लिख कुशल निधान । तेज तरुणके रसमें ॥ पू० ॥ १ ॥ दप्पण ज  
द्रासन नंदावर्त्त पूर्णकुंज । मठयुग श्रीवठ तसुमें । वर्द्धमान स्वस्तिक पूजा  
मंगलकी । आनंद कल्याण सुख रसमें ॥ २ ॥ ( पू० ) ॥ ❀ ॥  
इति तेरमी पूजा ॥ १३ ॥ ❀ ॥ अष्ट मंगलीक चढावै ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चौदमी धूप पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ धूप रकेत्रीमें धर सुखे इम पढै ॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ ❀ ॥ गंधवटी मृगमद  
अगर । सेल्हारस वनसार । धरि प्रनु आगलि धूपणा । चवदमी पूजाचार  
॥ १ ॥ ( राग वेलातुल ) ॥ ❀ ॥ कृष्णागर कपूरचूर । सोगंध पंचेपूर । कुंदरुक्क  
सेल्हारस सार । गंधवटी घनसार ॥ १ ॥ ❀ ॥ गंधवटी घनसार चंदन मृग  
मदारस जेलि यै । श्रीवास धूप दशांग अंबर सुरजि बहु द्रव्य मेलियै ।  
वेरुलिय दंरु कनक मंजित धूप धाणो कर धरै । जववृत्तिधूपकरंति जोगं  
रोग सोग अशुभ हरै ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ विधिः ॥ (राग मालवी गौरी) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सब अरति मथन सुदार धूपं । करति गंध रसाजरे । ( देवा क० ) धाम धूमा वलिय धूसर । कलुष पातिक गाजरे ( देवा ) ॥ १ ॥ नु र्जगति सूचंति प्रविकुं । मधमवै कर नाजरे ( देवा ) चवदमी वामांग पूजा । दीयै रयण विशालरे । आरती मंगल माजरे । मालवी गौरी ताजरे ( देवा० स० ) ॥ इति चौदमी धूप पूजा ॥ १४ ॥ एकही धूप धाणो प्रनूके वायें अंग धरी खेईजे ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ १५ गीत गान पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( प्रनुजीके मुख आगे मधुर स्वरे गुण ग्राम गावे ) ॥ ❀ ॥ ( दूहा ) कंठ जले आलाप कर । गावो जिन गुण गीत । जावो अधिका जावना । पनरमी पूजा प्रीत ॥ १ ॥ ( श्रीरागे आर्या ) यद्गदनंत केवल म नंत फलमस्ति जैन गुण गानं । गुण वर्णतान वाद्यै । मात्रा जापा लयै र्युक्तं ॥ १ ॥ सप्तस्वर संगीतैः । स्थानैर्जयतादि ताल करणैश्च । चंचुर चारो चारी । गीतं गानं सुपीयूषं ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ विधिः ॥ ( श्रीराग ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिन गुणगानं श्रुत अमृतं । तारमंद्रादि अनाहत तानं । केवल जिम तिम फल अमृतं ( जि० ) ॥ १ ॥ विबुध कुमार कुमरि आलापे सुरज नपांग नाद जनितं ( जि० ) । पाठ प्रबंध धूयो प्रतिमानं । आयति वेद सुरति सुमतं ( जि० ) ॥ २ ॥ सबद समान रुच्यो त्रिनुवनकुं । सुरनर गावै जिन चरितं । सप्तस्वर मान शिव श्रीगीतं । पनरमी पूज हरे हुरितं रं । ( जि० ) ॥ ३ ॥ ❀ ॥ इति पनरमी गीत पूजा ॥ १५ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सोलमी नाटिक पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ समान अवस्थावाली मधव स्त्रीयां ( वा ) कुमर्यां जेजी होके प्रनूके सन्मुख संका कंखा रहन नाटक करे । स्त्रीयांका जोग नवणें ( तो ) समान अवस्थावाला पुरप नाटक करे । ( वा ) कुमर कुमर्यां मिलिके नाटक करे नाटक करणेंमें केई जीव तीर्थकर गोत्रवांवाहे । नाटक करतां मुखे इम पडे ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ कर जोमी नाटक करे । सजि सुंदर मिणगार ।

जव नाटक ते नविजमें । सोलमी पूजा सार ॥ १ ॥ ( राग सुध नट्ट )  
( काव्य ) जावादि प्यमणासु चारु चरणा संपुन्न चंदानना । सप्पिममा सम  
रुव वेसवयसो मत्तेन कुंजत्थणा । लावणा सगुणापि कस्सरवई रागाइ  
आलावणा । कुम्मारी कुमरा विजै न पुरउं नच्चति सिंगारणा ॥ १ ॥  
( गद्य ) तएणंते अठसयं कुमारि कुमरीउं । सूरियात्रेणं देवेणं संदिठा ।  
रंग मंरुवे पविठा । जिणनमंता । गायंता । वायंता । नचंतेत्ति ॥ २ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ विधि ( राग नट्ट त्रिगुण ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नाचंती कुम्मार कुमरी द्रागरुदि तत्ता थेइय ( अ० ) ॥ द्रागरु  
दि २ कि थौंगि २ न । मुखें तत्ता थेइय ( अ० १ ना० ) वेणु बीणा सुरज  
वाजै । सोलही सिणगार साजै । तनन्नन्ननेइय ( अइयो ) ॥ घणण घण  
णण घुग्घरु वमकै । रणणणणेइय ( अ० २ ना० ) कसंती कंचूकी तरु  
णी । मंजरी फ़ेकार करणी । सोजंती कुमरीय ( अइयो ) हस्त कंहा वा  
दि जावै । ददन्ती जमरीय ( अ० ना० ) ॥ ३ ॥ सोलमी नाटक तणी ।  
सूरीयात्रे रावण कीनी ॥ सुगंध तत्ताथेइय ( अ० ) जिमप जगतें जविक  
लीणा । आणंद तत्ताथेइय ( अ० ना० ) ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
इति सोलमी नाटिक पूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सतरमी वाजित्र पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सतरमी पूजामें सब जातिका वाजित्र बजावै । मुखे इम पटै ॥  
तत धन सुखिरै आनिधै । वाजित्र चौविध वाय । जगत जली जगवंतनी ।  
सतरमी ए सुखदाय ॥ १ ॥ ( गाहा ) सुरमदल कंसालो । महुयर मदल  
सुवज्जाए पणवो । सुरनारि नंदितूरो । पन्नणइ तूं नंद जिणनाह ॥ १ ॥ ( रा  
ग मधुमाधवी ) ॥ तूं नन्दि आनन्दि बोलत नन्दी । चरण कमल जंतु ज  
गत्रय वन्दी ॥ ( तूं० ) ॥ ज्ञाननिर्मल वावन सुखवेदी । तिवलबोलै रंग अति  
हि आनन्दी । ( तूं० ) ॥ १ ॥ जेरी गयणवाजंती कुमति ताजंती । सेवै जेन  
जेणावंती । जेन शाशन जइवंत नंदंती ॥ उदयसिंघ परि परिय वदंती ॥ ( तूं० )  
॥ २ ॥ सेवजविक मधुमाधन फेरी । जवनी फेरी नप्पजणंती । कहै साधु स  
तरमी पूजा वाजित्रसव । मंगल मधुर धुनिकर कहंती ( तूं० ) ३ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ कलश पूजा ( राग धन्यासरी ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ऋषितुं ऋण गुण जिनके सब दिन । तेजतरण सुखराजै । ( ते० )  
कवितशतक आठ थुणत सकस्तव । थुय २ रंगे हमठाजै । ( ऋवि० १ ) अ  
णहल पुर शांति शिव सुख दाई । नवनिधि सिध आवाजै । सतरसुपूज सुवि  
ध श्रावक की । ऋणीमें ऋगति हितकाजै ( ऋ० २ ) श्रीजिनचंद्रसूरि सर  
तरपाति । धरम वचन तसुं राजै । संवत सोल अठार श्रावणधुरि । पंचमि  
दिवस समाजै ( ऋ० ३ ) दयाकलशगुरु अमरमाणिक्यवर । तामुपसाये सु  
विध हुइ गाजै ॥ कहे साधु कीरत करत जिन संस्तव । सब लीला सुख  
साजै ( ऋवि० ४ ) ॥ ❀ ॥ इति सतरजेदी पूजा समाप्ता ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ आरतीकरण विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पूजाकियां पीठै । सब कपना । पाघ प्रमुख पहरकै ॥ उत्तरास  
ण करै ॥ पीठै प्रनू सन्मुख । अन्तर पट करी । आपकै निलाडे कुंकुंको ति  
लक करै । पीठै पट दूरि करि । रक्वेवीमें साथियो करे । मांहि रूपाना  
णो । चावल सुपारी धरे । पीठै आरती दीपकसुं संजोयनें प्रनूके सन्मुख  
दक्षिण आवर्त्तसुं । वाजित्र सब वाजतां । आरती करै । मुखै पढे ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ आरती लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जैजै आरती शांति तुहारी । तोरा चरण कमलकी में जाऊं व  
जिहारी ॥ ( जैजै० ) १ ॥ विश्वसेन अचिराजीके नंदा । शांतिनाथ मुख  
पूनमचंदा ॥ ( जैजै० २ ) ॥ चालीस धनुष सोवनमें काया । मृगलंछण प्रनु  
चरण सुहाया ॥ ( जै० ) ॥ ३ ॥ चक्रवर्त्ति प्रनु पंचम सोहे । सोलम जिन  
वर सुर नर मोहे ॥ ( जै० ) ४ ॥ मंगल आरती जोरहि कीजै । जन्म जन्म  
को लाहो लीजै ॥ ( जै० ) ॥ करजोमी सेवक गुण गावै । सो नर नारी  
अमरपद पावै ( जै० ) ५ ॥ ❀ ॥ इति श्री आरती संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीसिद्धचक्रजीकी वनी पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नवपद जीकी महिमा संयुक्त पूजा लिखिये है ॥ ❀ ॥ ( दृढा )  
॥ ❀ ॥ परम मंत्र प्रणमीकरी । तामथरी नर ध्यान । अरिहंतपद पूजा क  
रो । निज २ साक्ति प्रमाण ॥ १ ॥ ❀ ॥ ( काव्य ) उषन्न सन्नाण महो

॥ अथ कलशो पूजा (राग धन्यासो) ॥

॥ यद्विदं यत्तु जिनके सर्व दिन । तेजस्व सुखराज । (वि०)  
कविप्रशोक आठ श्रुत सकलव । अथ २ यो देवराज । (यवि० १) अ  
राटल उर शान्ति शिव सुख दंड । नवनिधि सिध आवाज । मरसुपूज सुनि  
ध आवक को । यामि यानि हितकाज (य० २) श्रीजिनवदंसरि वर  
तपति । परम वचन तसु राज । सर्वत सोल अठर आवावाडि । पवम  
दिवस समज (य० ३) दयाकलशुके अमरमणिप्रवर । तसुपमायु सु  
विष दंड राज ॥ कहै साधु कोरत करत जिन संस्तव । सब लीला सुख  
सोज (यवि० ४) ॥ ॥ इति मरसोदो पूजा समाप्ता ॥

॥ अथ अरतीकरणी विधि लि० ॥

॥ पूजाकियां पाँजे । सब कपडा । पाव प्रसुख पहरके ॥ उत्तरास  
रा करै ॥ पाँजे प्रसुख । अन्तर पट करी । आपके निजहि कंठको नि  
जक करै । पाँजे पट डरि करी । केवाम साधिया करै । माँहि ऊपाना  
या । बावल सुपारी धरै । पाँजे अरती दीपकसुं मंजोवन प्रत्येक समुख  
दंडिण आवतसुं । बाजिब सब बाजना । अरती करै । सुख पट ॥

॥ अथ अरती लि० ॥

॥ जै अरती शान्ति उदारी । तेरा चरण कमलको म जाऊ व  
लिहारी ॥ (जै०) १ ॥ विप्रमेन आचरिजाके नंद । शान्तिनाथ सुख  
पुनमवर्दा ॥ (जै० २) ॥ बालीस वज्र सोवनम काया । मंगलजग प्रदु  
चरण सुदया ॥ (जै०) ३ ॥ चक्रवर्ति प्रदु पंचम सोहै । सोलम जिन  
वर सुर नर सोहै ॥ (जै०) ४ ॥ मंगल अरती योगि कहै । जन्म जन्म  
को जाइ लीज ॥ (जै०) ५ ॥ कलजोनी सेवक गुण गावै । सो नर नारी  
अमरपद पावै (जै०) ६ ॥ इति श्री अरती संग्रह ॥

॥ अथ श्रीसिद्धचक्रांकी वनी पूजा ॥

॥ नवपद लोकी महेमा सुदिक पूजा लिखि है ॥ (इति)  
॥ परम मंत्र प्रणामी करी । तसुपारी उर ज्ञान । अरिदंनपद पूजा क  
री । जिन २ शक्ति प्रमाण ॥ १ ॥ (काव्य) उत्तर मंत्राण महे।



यैरे । जेद ठेद करि आतमा । अरिहंत रूपी थायैरे ॥ १२ ॥ वीर जिणे  
सर उपदिसैं । सांजल जो चितलाईरे । आतम ध्याने आतमा । रुद्धि  
मिले सब आईरे । ( वी० ) ॥ १३ ॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने । अनंतानंत  
ज्ञानशक्तये । जन्म जरा मृत्यु, निवारणाय । श्रीम त्सिद्धचक्राय पंचामृतं १ ।  
चंदनं २ । पुष्पं ३ । धूपं ४ । दीपं ५ । अक्षतं ६ । नैवेद्यं ७ । फलं  
८ । वस्त्रं । वासं । ययामहे स्वाहा ॥ ❀ ॥ इति प्रथमपदे श्री अरिहंतस्य  
कलशपूजा ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ २ श्रीसिद्धपदकी पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) दूजी पूजा सिद्ध की । कीजै दिल खुसियाल ।  
अशुभ करम दूरै टलै । फलै मनोरथ माल ॥ ❀ ॥ ( काव्य ) सिद्धाण  
माणंद रमालयाणं । नमो नमो एतं चतुष्कयाणं । समग्न कम्मक्खय कार  
गाणं । जम्मं जरा दुक्ख निवारणाणं ॥ १४ ॥ करी आठ कम्म कृत्यें  
पार पाम्या । जरा जन्म मरणादि जय जेणवाम्या । निरावरणजे आत्म  
रूपै प्रसिद्धा । थया पार पामी सदा सिद्धबुद्धा ॥ १५ ॥ त्रिजागोनदेहा  
वगाहात्मदेशा । रह्या ज्ञानमय जाति वर्णादिलेशा । सदानंद सौख्याश्रिता  
जोतिरूपा । अनावाध अपुनर्जवादी स्वरूपा ॥ १६ ॥ ❀ ॥ सकल कर  
म मलहय करी । पूरण शुद्ध स्वरूपो जी । अव्यावाध प्रभुता मयी । आ  
तम संपति नृपो जी । ( उद्वालो ) जेनूप आतम सहज संपति शक्ति  
व्यक्ति पणें करी । स्वद्रव्य क्षेत्र स्वकाल आवै गुण अनंता आदरी । स्व  
स्वभाव गुण पर्याय परणति सिद्ध साधन परजणी । मुनिराज मानसर हंस  
सम वरु नमो सिद्ध महागुणी ॥ १६ ॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ समय पण  
संतर अणफरसी । चरम तिजाग विशेष । अवगाहन लहीजे शिव पुहता  
सिद्ध नमो ते असेसरे ॥ १७ ॥ ( ज० सि० ) पूरव प्रयोगनें गति परिणामे ।  
बंधन ठेद असंग । समय एक ऊरधगति जेहनी । ते सिद्ध प्रणमों रंगरे  
॥ १८ ॥ ( ज० सि० ) निरमल सिद्ध सिलानें ऊपरि । जोयण एक लोक  
त । सादि अनंत तिहां थिति जेहनी । ते सिद्ध प्रणमो संतरे ॥ १९ ॥  
( ज० सि० ) जाणें पिण न सकै कही पुरगुण । प्राकृत तिम गुणजास ।

धुरे । नंद उद करि आतमा । अरिहंत रूपी थापरे ॥ १२ ॥ वीरे निशि  
 सर उपदिसे । सांख्य जो चित्तलाई । आत्म ध्याने आतमा । कोइ  
 मिलि सब आड़े । ( वी० ) ॥ १३ ॥ \* ॥ बुद्धी परमात्मने । अनंतानंत  
 ज्ञानशक्त्ये । जन्म जरा मृत्यु, निवारणाय । श्रीम तिसवकल्प प्रवामत १ ।  
 चंदनं २ । पुष्पं ३ । धूपं ४ । दीपं ५ । अक्षतं ६ । नैवेद्यं ७ । फलं  
 ८ । वस्त्रं । वसं । ययामहे स्वाहा ॥ \* ॥ इति प्रथमपदं श्री अरिहंतस्य  
 कलशपूजा ॥ १ ॥ \* ॥

॥ \* ॥ अथ २ श्रीसिद्धपदकी पूजा लिं ॥ \* ॥

॥ \* ॥ ( ईहा ) ईजा पूजा सिद्ध की । कोइ दिव खुसियाव ।  
 अशुभ करम दूरे टूट । फल मनोरथ माज ॥ \* ॥ ( काव्य ) सिद्धाण  
 माण्डं रमाजयाण । नमो नमो एत वज्रकयाण । समग कम्मकवय कर  
 गाण । जम्म जरा दुक्ख निवारयाण ॥ १४ ॥ \* ॥ करी आठ कम्म दूरे  
 पर पाप्मा । जरा जन्म मरणादिं नय जेणवप्पा । निवारणजे आत्म  
 कू मसिका । यथा पर पाप्मा सदा सिद्धवदा ॥ १५ ॥ विजयानंदेश  
 वगाहात्मदेश । रक्षा ज्ञानमय जाति वणादिलेश । सदानंद मौल्याश्रिता  
 जातिरुपा । अनवाय अयुनवादी स्वकपा ॥ १६ ॥ \* ॥ सकल कर  
 म मलक्षय करी । पूरण शुद्ध स्वकपा जी । अव्यावय प्रवृत्ता मयी । आ  
 तम संप्रति यूपो जी । ( उवाचो ) जयैष आत्म सहज संप्रति शक्ति  
 व्यक्ति पूरु करी । स्वदेव क्षेत्र स्वकाल नावै गुण अनंता आदरी । स्व  
 स्वभाव गुण पयस्य परणीति सिद्ध साधन परमणी । मुनिराज मानसर हेम  
 सम वन नमो सिद्ध महागुणी ॥ १६ ॥ \* ॥ ( टाल ) ॥ \* ॥ समय पर  
 सुतर अणुफरमी । वरम विनाग विरोम । अवगाहन लहेजे शिव पुहेता  
 सिद्ध नमो वे असुमे ॥ १७ ॥ ( न०सि० ) पूरव प्रयोगने गति परिणाम ।  
 बंधन उद असंग । समय एक ऊरयाति जेहनी । वे सिद्ध प्रणामो पूरि  
 ॥ १८ ॥ ( न०सि० ) निरमल सिद्ध मिलान ऊपर । जेषण एक लोक  
 त । सादि अनंत विहा श्रित जेहनी । वे सिद्ध प्रणामो सुतर ॥ १९ ॥  
 ( न०सि० ) जाणि प्रण न सकै कही प्रत्युण । प्राकृत तिम गुणजस ॥

येरे । जेद ठेद करि आतमा । अरिहंत रूपी थायेरे ॥ १२ ॥ बीर जिणे  
सर उपदिसै । सांजल जो वितलाईरे । आतम ध्याने आतमा । रुद्धि  
मिलै सब आईरे । ( बी० ) ॥ १३ ॥ ❀ ॥ नै ज्ञी परमात्मने । अनंतानंत  
ज्ञानशक्तये । जन्म जरा मृत्यु, निवारणाय । श्रीम सिधचकाय पंचामृतं १ ।  
चंदनं २ । पुष्पं ३ । धूपं ४ । दीपं ५ । अक्षतं ६ । नैवेद्यं ७ । फलं  
८ । वस्त्रं । वासं । ययामहे स्वाहा ॥ ❀ ॥ इति प्रथमपदे श्री अरिहंतस्य  
कलशपूजा ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ २ श्रीसिद्धपदकी पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) दूजी पूजा सिध की । कीजै दिल खुसियाल ।  
अशुभ करम दूरै टलै । फलै मनोरथ माल ॥ ❀ ॥ ( काव्य ) सिधाय  
माणंद रमालयाणं । नमो नमो एतं चउकयाणं । समग्ग कम्मक्खयं कार  
गाणं । जम्मं जरा दुक्ख निवारणाणं ॥ १४ ॥ करी आठ कम्मं कुर्ये  
पार पाम्या । जरा जन्म मरणादि जय जेणवाम्या । निरावरणजे आत्म  
रूपै प्रसिद्धा । थया पार पामी सदा सिधबुद्धा ॥ १५ ॥ त्रिजागोनदेहा  
वगाहात्मदेशा । रह्या ज्ञानमय जाति वर्णादिलेशा । सदानंद सौख्याश्रिता  
जोतिरूपा । अनाबाध अपुनर्जवादी स्वरूपा ॥ १६ ॥ ❀ ॥ सकल कर  
म मलहय करी । पूरण शुद्ध स्वरूपो जी । अव्याबाध प्रचुता मयी । आ  
तम संपति चूपो जी । ( उल्लाखो ) जेचूप आतम सहज संपति शक्ति  
व्यक्ति पणै करी । स्वद्रव्य क्षेत्र स्वकाल जावै गुण अनंता आदरी । स्व  
स्वभाव गुण पर्याय परणति सिध साधन परजणी । मुनिराज मानसर हंस  
सम वरु नमो सिध महागुणी ॥ १६ ॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ समय पए  
संतर अणफरसी । चरम तिजाग विशेष । अवगाहन लहीजे शिव पुहता  
सिध नमो ते असेसरे ॥ १७ ॥ ( ज० सि० ) पूरव प्रयोगने गति परिणामे ।  
बंधन ठेद असंग । समय एक ऊरधगति जेहनी । ते सिध प्रणमों रंगरे  
॥ १८ ॥ ( ज० सि० ) निरमल सिध सिलानें ऊपरि । जोयण एक लोक  
त । सादि अनंत तिहां थिति जेहनी । ते सिध प्रणमो संतरे ॥ १९ ॥  
( ज० सि० ) जाणें पिए न सकै कही पुरगुण । प्राकृत तिम गुणजास ।

पुरे । नेदं तदं करि आत्मा । अहिंसेत रूपी धारुरे ॥ १२ ॥ वीरे जिणे  
 सर जगदिस । सांवल जो चितलाडरे । आत्म ध्याने आत्मा । जोडि  
 मिले सब आडरे । ( वी० ) ॥ १३ ॥ \* ॥ नुं ह्रीं परमात्मने । अनंतानंत  
 ज्ञानशक्तये । जन्म जगमृत्यु, निवारणाय । श्रीम सिद्धवक्त्राय प्रणमंते १ ।  
 चंदनं २ । पुष्पं ३ । धूपं ४ । दीपं ५ । अक्षतं ६ । नैवेद्यं ७ । फलं  
 ८ । वस्त्रं । वारं । ययामहे स्वाहा ॥ \* ॥ इति प्रथमपदं श्री अहिंसेतस्य  
 कलशपूजा ॥ १ ॥ \* ॥

॥ \* ॥ अथ २ श्रीसिद्धपदकी पूजा लि० ॥ \* ॥

॥ \* ॥ ( ईहा ) ईहा पूजा सिद्ध की । कीजै दिव छुसियल ।  
 अशुभ करम हूँ टहूँ । फल मनोरथ माल ॥ \* ॥ ( काव्य ) सिद्धा  
 माणंद रमलयाण । नमो नमो एत वचकयाण । समग कम्मकवय कर  
 गाण । जम् जग डकख निवारयाण ॥ १४ ॥ करी आठ कम्म हूँ  
 पार पाप्मा । जग जन्म मरणहिं नय जेणवाप्पा । निवारणाल आत्म  
 रूप प्रसिद्धा । यया पार पाप्मा सदा सिद्धदा ॥ १५ ॥ विनयानंददा  
 वगदिरामदंशा । रक्षा ज्ञानमय जाति वणादिलेधा । सदानंद साध्याश्रिता  
 जातिरुपा । अनवाय अयनवर्धा स्वरुपा ॥ १६ ॥ \* ॥ सकल कर  
 म मलकेय करी । पूरा शुक स्वरुपी जी । अव्यावाय प्रवृत्ता मयी । आ  
 तम संपाति यूपी जी । ( उवाचो ) जेवण आत्म सहज संपाति शक्ति  
 व्युक्ति पाल करी । स्वदेव देव स्वकाल नावै गुण अनंत आदरी । स्व  
 स्वभाव गुण पदार्थ पराणि सिद्ध साधन परयाणी । मुनिराज मानसर हंस  
 सम वन नमो सिद्ध महागुणी ॥ १७ ॥ \* ॥ ( दाल ) ॥ \* ॥ समय पण  
 सेंतर आणकरमी । वरम विनय विधाय । अवगाहन लहेजे शिव पुढेता  
 सिद्ध नमो वे असुमेरे ॥ १७ ॥ ( न० सि० ) पूरे प्रयोगने गति परियाप्ते ।  
 चंदन तदं असंग । समय एक ऊरयाति जेहनी । वे सिद्ध प्रणमो सारे  
 ॥ १८ ॥ ( न० सि० ) निरमल सिद्ध सिजाने उपरि । जेवण एक लोक  
 वे । सादि अनंत तिहां श्रुति जेहनी । वे सिद्ध प्रणमो सारे ॥ १९ ॥ ( न० सि० ) जाण प्रण न मुक्के कही प्रत्यु ॥ प्रकृत निम गुणजास ।

थ प्रगट नपटुते । आचारज चिरंजीवोरे ( ज० सि० ) ३० ॥ ❀ ॥ ( ढाल )  
॥ ❀ ॥ ध्याता आचारज जला । महामंत्र सुज ध्यानीरे । पंच प्रस्थाने आ  
तमा । आचारज होइ प्राणीरे ( वी० ) ३१ ॥ नैऋती० ॥ ❀ ॥  
इति तृतीय श्री आचार्यपद कलश पूजा ( ३ ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चौथी पाठक पद पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥❀॥ (दूहा) गुण अनेक जगजेहना । सुंदर सोजित गात्र । उव  
जाया पद अरचियै । अनुजव रसनो पात्र॥१॥ (काव्य) सुत्तथ वित्थारण तप्प  
राणं । नमो २ वायग कुंजराणं । गणस्स संधारण सायराणं । सवप्पणाव  
ज्जिय मठराणं ॥ १ ॥ नहीं सूरि पिण सूरि गुणने सुहाया । नमुं वाचका  
त्यक्त मद मोह माया । वली द्वादशांगादि सूत्रार्थ दाने । जिके सावधाने  
निरुद्धाजिधाने ॥ २ ॥ धरै पंचने वर्ग वर्गित गुणौघा । प्रवादि द्विपोढेदनेतु  
ल्य सिंघा । गुणी गढ संधारणे स्थंज पूता । उपाध्याय ते वंदिइं चितप्रचू  
ता ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ❀ ॥ खंतिजुआ मुत्तीजुआ । अज्जव मदव जुत्ता  
जी । सच्चंसोयं अकिंचणा । तव संयम गुण रत्ताजी । ( उद्धालो ) जेर  
म्या ब्रह्म सुगुप्त गुप्ता सुमति सुमता शुजधरा । स्याद्वादवादइं तत्वसाधक  
आत्मपर विज्जनकरा । जवजीरु साधन धीर शासन बहन धोरी मुनिवरा ।  
सिघांत वायन दानसमरथ नमो पाठक पदधरा ॥ ३३ ॥ ❀ ॥ ( ढाल )  
॥ ❀ ॥ द्वादश अंग सिझायकरै जे । पारग धारग तास । सूत्र अरथ  
विस्तार रसिकते । नमो उवझाय उद्धासरे ॥ ( ज० सि० ) ॥ ३४ ॥ अर्थ  
सूत्रने दान विज्ञागे । आचारज उवझाय । जवत्रिणहे जेलहै सिवसंपद ।  
नमीयै ते सुपसायरे ( ज० ) ॥ ३५ ॥ मूरखशिष्य निपजायै जेप्रचु । पाहण  
पल्लव आणें । ते उवझाय सकल जन पूजित । सूत्र अरथ सविजाणेंरे ॥  
( ज० सि० ) ॥ ३६ ॥ राजकुमर सरिखा गणचिंतक । आचारज पदयो  
ग । जे उवझाय सदा ते नमतां । नावै जव जय सोगरे ॥ ( ज० सि० )  
३७ ॥ वावना चंदन रस सम वंयणें । अहित ताप सवि टालै । ते उवझाय  
नमी जे जेवालि । जिनशासन अछुवालेरे ॥ ( ज० सि० ) ॥ १८ ॥ ❀ ॥

( ढाल ) ॥ ❀ ॥ तपसिझायें स्त सदा । द्वादश अंगनो ध्यातारे । उपाध्या  
य ते आतमा । जगबंधव जगभ्रातारे ॥ ( बी० तु० ) ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं ॥  
इति चोथे पदे श्रीपाठकजीकी कलश पूजा सं० ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पांचमी साधू पदपूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) मोक्षमार्ग साधन जणी । सावधान थया जेह ।  
ते मुनिवर पद वंदतां । निरमल थायै देह ॥ १ ॥ ( काव्य ) साहूण संसा  
हिय संयमाणं । नमो २ शुद्ध दया दमाणं । तिगुत्त गुत्ताण समाहियाणं ।  
मुणीण माणंद पय छियाणं ॥ ४० ॥ करै सेवना सूरि वायग गणीनी । करुं  
वर्णना तेहनी सी मुणीनी । समेता सदा पंचसुमती त्रिगुप्ता । त्रिगुप्ते नहीं  
कांमजोगेषु लिप्ता ॥ ४१ ॥ बली बाह्य अभ्यं तरै ग्रंथटाली । हुइं सुक्तिनें  
जोग चारित्र पाली । शुभ्रष्टांग योगै रमै चित्तवाली । नमुं साधुनें तेह नि  
ज पाप टाली ॥ ४२ ॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ सकल विषय विष वारिनें ।  
निकामी निस्संगी जी । जव दव ताप समावता । आतम साधन रंगी जी  
( जुवालो ) । जेरम्या शुद्ध स्वरूप रमणें देह निर्म्मम निर्म्मदा । कानुस  
ग मुद्रा धार आसन ध्यान अभ्यासी सदा । तप तेज दीपै कर्म जीपै नैव  
ठीपै परजणी । मुनिराज करुणासिंधु त्रिजुवन बंधु प्रणमो हित जणी  
॥ ४३ ॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ जिम तरु फूलै जमरो बैसै । पीमा तमुन  
उपाय । जेई रस आतम संतोषें । तिम मुनि गोचरी जायरे ॥ ( ज० सि० )  
॥ ४४ ॥ पांच इंद्रिनें जेनित जीपै । षट काया प्रतिपाल । संयम सतर प्रकार  
आराधे । बंदूं दीन दयालरे ( ज० सि० ) ॥ ४५ ॥ अठार सहस शीलांग  
ना धोरी । अचल आचार चरित्र । मुनिमहंत जयणायुत वंदी । कीजे  
जनम पवित्रे ( ज० सि० ) ॥ ४६ ॥ नवविध ब्रह्मगुपति जेपाले । बारह  
विह तपसूरा । एहवा मुनि नमीये जो प्रगटे । पूरव पुन्य अंकुरारे ( ज०  
सि० ) ॥ ४७ ॥ सोनातणी परे परिक्षा दीसै । दिन २ चढतै वानें । मं  
यस खपकरता मुनि नमिइं । देश काल अनुमानरे ॥ ( ज० सि० ) ॥  
४८ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ अप्रमत्त जेनित रहै । नवि हरखै नवि सोचैरे ।



સાધુ સૂધા તે આતમા । સ્યું મુંઝે સ્યું લોચેરે ॥ ( વી૦ ) ॥ ૪૯ ॥ ૐ ક્ષી૦ ।  
 ઇતિ પાંચમે પદે શ્રીસાધુજીકી કલશ પૂજા ॥ ૪૦ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ અથ ઠઠી દર્શન પદ પૂજા લિ૦ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( ઢૂહા ) જિનવર જાણિત સુધ્ધનય । તત્ત્વતણી પરતીત ।  
 તે સમ્યગ્ દરસન સદા । આદરિયૈ સુજ રીત ॥ ૧ ॥ ❀ ॥ ( કાવ્ય )  
 જિણુત્ત તત્તે રૂઢ લક્ષણસ્સ । નમો ૨ નિમ્મલ દંસણસ્સ । મિઠ્ઠત્ત નાસાઈ  
 સમુગ્ગમસ્સ । મૂલસ્સ સધ્ધમ્મ મહા હુમસ્સ ॥ વિપર્યા સહો વાસના રૂપ  
 મિથ્યા । ટ્ઠલૈ જે અનાદી અઠૈ જે કુપથ્યા । જિનોક્કૈ હુઈં સહજ થી શુ  
 ધ્ધ્યાનં । કહીઈં દર્શનં તેહ પરમં નિધાનં ॥ ૫૦ ॥ વિના જેહથી જ્ઞાન મજ્ઞા  
 ન રૂપં । ચરિત્રં વિચિત્રં જવારણ્ય કૂપં । પ્રકૃતિ સાતનેં ઉપસમઈ ક્કય તેહ  
 હોવૈ । તિહાં આપ રૂપેં સદા આપ જોવૈ ॥ ૫૧ ॥ ❀ ॥ ( ઢાલ ) ❀ ॥ સ  
 મ્યગ્ દરસન ગુણ નમો । તત્ત્વ પ્રતીત સરૂપી જી । જસુ નિરધાર સ્વજાવ ઢે ।  
 ચેતન ગુણ જે અરૂપી જી ( ચાલ ) જે અનૂપ શ્રદ્ધા ધરમ પ્રગટૈ સયલ  
 પર ઈહા ટ્ઠલૈ । નિજ શુદ્ધ સત્તા જાવ પ્રગટૈ અનુજવ કરુણા ઝઝલૈ ।  
 बहुमान परणिति वस्तुतत्वे अहव सुरकारण पणें । निज साध्यदृष्टै सर्व  
 કરણી તત્ત્વતા સંપતિ ગિણૈ ॥ ૫૨ ॥ ❀ ॥ ( ઢાલ ) ॥ ❀ ॥ શુદ્ધ દેવ ગુરુ  
 ધર્મ પરિક્ષા । સદ્દહણા પરિણામ । જેહ પામી જૈ તેહ નમી જૈ । સમ્યગ્  
 દર્શન નામરે ( જ૦ સિ૦ ) ૫૩ ॥ મલ ઉપશમ ક્કય ઉપશમ જેહ થી । જે હો  
 ઇ ત્રિવિધ અજંગ । સમ્યગ્દર્શન તેહ નમીજૈ । જિન ધરમેં દઢ રંગ રે ॥  
 ( જ૦ સિ૦ ) ૫૪ ॥ પાંચવાર ઉપશમ લહી જૈ । ક્કય ઉપશમીય અસંખ ।  
 એકવાર ક્કાયક તે સમ્યક્ । દર્શન નમીઈં અસંખ રે ( જ૦ સિ૦ ) ૫૫ ॥  
 જેવિણ નાણ પ્રમાણ ન હોવૈ । ચારિત્રતરુ નવિ ફાલિત । સુખ નિરજાણ  
 ન જે વિણ લહિઈં । સમકિત દર્શન વલો ઝરે ॥ ( જ૦ સિ૦ ) ॥ ૫૬ ॥ સરુ  
 સઠ વોલે જૈ અલંકરિત । જ્ઞાન ચારિત્રતું મૂલ । સમકિત દર્શન તે નિતપ્ર  
 ણમું । સિવપંથતું અનુકૂલરે ॥ ( જ૦ સિ૦ ) ॥ ૫૭ ॥ ❀ ॥ સમ સંવેગાદિક ગુણા  
 સ્વય ઉપશમ જે આવૈરે । દર્શન તેહિજ આતમા । સ્યું હોય નામ ધરાવૈરે ॥  
 ( વી૦ તુમે૦ ) ॥ ૫૮ ॥ ( ૐ ક્ષી૦ ) ॥ ❀ ॥ ઇતિ ઠઠે દર્શનપદ કલશ પૂજા ॥ ૬૧ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ ७ में श्री ज्ञानपद पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ ❀ ॥ सप्तम पद श्री ज्ञाननो । सिद्ध चक्र तप मां  
हि । आराधी जै सुजमने । दिन २ अधिक उठाह ॥ १ ॥ ( काव्य ) अ  
ज्ञाण सम्मोह तमो हरस्स । नमो २ नाण दिवायरस्स । पंचण्यारस्स  
वगारगस्स । सत्ताण सबत्थ पयासगस्स ॥ होई जेहथी ज्ञानशुद्ध प्र  
बोधै । यथा वर्ण नासै विचित्रा विबोधै । तिणें जाणीइं वस्तु षट्द्रव्य जा  
वा । न होवै विकल्ता निजेठा स्वजावा ॥ २९ ॥ होई पंचमत्यादि सुग्यान  
जेदै । गुरुपासथी योग्यता तेह वेदइं । बली ज्ञेय हेया उपादेय रूपै ।  
लहै चित्तमां जेमध्यान प्रदीपै ॥ ६० ॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ॥ नव्य नमो गुण  
ज्ञानने । स्वपर प्रकाशक जावै जी । परयाय धरम अनंतता । जेदा जेद  
स्वजावै जी ॥ ( चाल ) ॥ जे मोख्य परणति सकल ज्ञायक बोध वास  
विलासता । मति आदि पंच प्रकार निरमल सिद्ध साधन लंढना । स्या  
द्वाद शंगी तत्वरंगी प्रथम जेद अजेदता । सविकल्पने अविकल्प वस्तु स  
कल संसय जेदता ॥ ६१ ॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ नहु अजहून जे वि  
ण लहीयै । पेय अपेय विचार । कृत्य अकृत्य न जे विण लहीयै । ज्ञानते  
सकल आधारै ॥ ( ज० ) ॥ ६२ ॥ प्रथम ज्ञानने पढे अहिंसा । श्रीसि  
चाते जाण्युं । ज्ञानने बंदो ज्ञान मनिंदो । ज्ञानीयै शिवसुख चाख्युं रे ॥  
( ज० सि० ) ॥ ६३ ॥ सकल क्रियातुं मूलते श्रद्धा । तेहतुं मूलजे कही  
इं । तेह ज्ञान नित नित बंदीजै । ते विण कहो किम रहीइरे ॥ ( ज०  
६४ ) ॥ पांच ज्ञान मांहे जेह सदागम । स्वपर प्रकाशक तेह । दीपकपरै  
त्रिनुवन उपगारी । बलि जिम रवि शशि मेहरे ॥ ( ज० सि० ) ॥ ६५ ॥  
लोक उरध अध तिर्यग् जोतिष । वैमानिकने सिद्धि । लोक अलोक प्र  
गट सवि जेहथी । तेज्ञाने मुक्त शुद्धीरे ॥ ( ज० सि० ) ॥ ६६ ॥ ❀ ॥  
( ढाल ) ॥ ❀ ॥ ज्ञानावर्णी जे कर्म ठे । कृत्य उपशम तसु थायैरे । तो होइ  
ए हीज आत्मा । ज्ञान अवोधता जाइरे ॥ ( वी० तु० ) ॥ ६७ ॥  
( वैष्णवी पर० ) ॥ ❀ ॥ इति सातमी श्रीज्ञानपद कलश पूजा सं० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ आठमें श्रीचारित्र पद पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) अष्टमपद चारित्रनो । पूजो धरी उमेद । पूजत अ  
नुभव रस मिले । पातिक होय उन्नेद ॥ १ ॥ ❀ ॥ आराहिया खंनिअ स  
कियस्स । नमो नमो संयम वीरियस्स । सज्जावणा संग विवद्धियस्स । नि  
वाण दाणाइ समुज्जयस्स ॥ वली झान फल ते धरीयै सुरंगै । निरासंसता  
आररोध प्रसंगै । जवां बोध संतारणे यानतुल्यं । धरं तेह चारित्र अप्राप्त  
मूल्यं ॥ ६८ ॥ होइ जास महिमा थकी रंक राजा । वली आदशांगी जणी  
होइ ताजा । वली पाप रूपोपि निःपाप थायै । थई सिद्धते कर्मनें पार  
जायै ॥ ६८ ॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ चारित्र गुण वलि वलि नमो । तत्व  
रमण जस मूलो जी । पर रमणीय पणो टलै । सकल सिद्धि अनुकूलो जी ।  
( चाल ) । प्रतिकूल आश्रव त्याग संयम तत्व थिरता दममयी । सुचि पर  
म खंती सुनि दसेपद पंच संवर उपचयी । सामायिकादिक जेद धरमें यथा  
ख्यातै पूर्णता । अकषाय अकुलस अमल उज्ज्वल कामकस्मल चूरणता  
॥ ७० ॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ देशविरतिनें सर्व विरतिजे । ग्रहीयतिनें  
अजिराम । ते चारित्र जगत जयवंतो । कीजै तास प्रणाम रे । ( ज० सि० )  
॥ ७१ ॥ तृणपरै जेषदखंरु सुखठंभी । चक्रवर्त्ति पिण वरिउ । ते चारित्र अख  
य सुख कारण । ते में मन मांहि धरिउरे ( ज० सि० ) ॥ ७२ ॥ हुआ रंक  
पणें जे आदरि । पूजित इंद नरिंद । असरण सरण चरण ते वंदुं । वरिउ झा  
न आनंदरे ( ज० सि० ) ॥ ७३ ॥ बारमास परजाइ जेहनें । अनुत्तर सुख  
अतिकमिइ । शुक्ल सुकल अजिजात्यते ऊपरि । ते चारित्रनें नमीइ रे  
( ज० सि० ) ७४ ॥ चयते आठ करमनो संचय । रिक्त करै जे तेह ।  
चारित्र नाम निरुक्तै प्राप्पुं । तेवंडुं गुण गेहरे ( ज० सि० ) ७५ ॥ ❀ ॥  
( ढाल ) ॥ ❀ ॥ जाणि चारित्र ते आतमा । निज स्वप्नाव मांहि रमतो रे ।  
लेख्या शुद्ध अलंकरयो । मोहवनें नवि जमतो रे । ( वी० तुमे० ) ७६ ॥  
उंझी प० ॥ ❀ ॥ इति आठमी श्रीचारित्रपद कलश पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिवै ९ मी तप पद पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) करमकाष्ट प्रतिजालवा । परतिख अगनि समान । ते

तप पद पूजो सदा । निरमल धरियै ध्यान ॥ १ ॥ कम्महुमोन्मूल न कुंज  
 रस्स । नमो २ तिब तवोयरस्स । अण्ण लक्ष्मीण निबन्धणस्स । दुस्सअ  
 त्याणय साहणस्स ॥ ७७ ॥ इय नवपय सिद्धिं लद्धि विज्जा समिद्धं । पयमि  
 य सर वग्गं ङ्गीतिरेहा समग्गं । दिसिवय सुरसारं खोणि पीढावयारं । तिज  
 य विजयचक्रं सिद्ध चक्रं नमामि ॥ ७८ ॥ त्रिकालक पणें कम्मकषाय टा  
 ले । निकाचित पणें बांधिया तेहवालै । कह्यो तेह तप बाह्य अभ्यंतर दु  
 जेदै । कृपा युक्ति निहेत दुर्ध्यान जेदै ॥ ७८ ॥ होइ जास महिमाथकी  
 लब्ध सिद्धि । अवांठक पणें कम्म आवरण शुद्धिः । तपो तेह  
 तपजे महानंद हेतें । होइ सिद्धि सीमंतनी निज संकेतें ॥ ८० ॥ इम नव  
 पद ध्यावै परम आनंद पावै । नव जव शिव जावै देव नर जवजपा  
 वै । ज्ञान विमल गुण गावै सिद्ध चक्र प्रजावै । सब दुरति समावै विश्व  
 जयकार पावै ॥ ८१ ॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ इच्छा रोधन तप नमो । वा  
 ह्य अभ्यंतर जेदै जी । आत्म सत्ता एकता । पर परणित जेदैजी ॥ १ ॥  
 ( उल्लाजो ) जेदै कम्म अनादि संतति जेह सिद्ध पणो वरइ । सुज्ञयोग  
 संग आहार टाली जाव अक्रियता करै । अंतर मुहुरत तत्व साथै सर्व  
 संवरता करी । निज आत्मसत्ता प्रगट जावैं करो तप गुण आदरी ॥ ८२ ॥  
 ॥ ❀ ॥ ( ढाल ) इम नव पद गुणमंजुलं । चतुर्निक्षेप प्रमाणें जी । सात न  
 यें जे आदरै । सम्यग् ज्ञानें जाणें जी । ( चाल ) निरधार सेती गुणें गुण  
 णो करइ जे बहुमानए । जसुकरण ईहा तत्व रमणें थायै निरमल ध्यान ए ।  
 इम शुद्ध सत्ता जलो चेतन सकल सिद्धि अनुसरै । अक्षय अनंत महंत  
 चिदधन परम आनंदता वरै ॥ ८३ ॥ कलश ॥ इम सयल सुख कर गुण  
 पुरंदर सिद्ध चक्र पदावली । सविलद्धि विज्जा सिद्धि मंदिर जविक पूजो  
 मनरली । ज्वझाय वर श्रीराज सारह ज्ञान धर्म सुराजता । गुरु दीपचंद्र  
 सुचरण सेवक देवचंद्र सुशोभता ॥ ८४ ॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ जाणंता  
 त्रिहुं ज्ञाने संयुत । ते जव सुगति जिणंद । जेह आदरै करम खपेवा ।  
 ते तप सुरतरु कंदरे ॥ ( ज० सि० ) ॥ ८५ ॥ करम निकाचित पणि कृ  
 य जाइ । । कृपा सहित जेकरतां । ते तप नमीइ तेह दीपावै । जिन शासन

उजमंतारे ॥ ( ज० सि० ) ॥ ८६ ॥ आमो सही पमुहा बहुलघी । होवै  
 जास प्रजावै । अष्ट महासिधि नव निधि प्रगटै । नमीयै ते तप जावैरे ॥  
 ( ज० सि० ) ॥ ८७ ॥ फल शिव सुख मोटुं सुर नखर । संपति जेहुं  
 फूल । ते तप सुर तरु सरिषो वंडुं । शम मकरंद अमूलरे ॥ ( ज० सि० ) ॥  
 ॥ ८८ ॥ सर्व मंगल मांहि पहिलो मंगल । वरणवियो जे ग्रंथ । ते तप पद  
 त्रिकरण नित नमिइं । वर सहाय शिवपंथरे ॥ ज० सि० ) ॥ ८९ ॥  
 इम नव पद थुणतो तिहां लीणो । हुन तनमय श्री पाल । सुजस विलास  
 बै चोथे खंमे । एह इग्यारमी ढालरे ॥ ( ज० सि० ) ॥ ९० ॥ ❀ ॥  
 ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ इच्छा रोधन संवरी । परणित समता योगै रे । तप ते  
 एहिज आतमा । वरतै निज गुण जोगै रे ॥ ( बी० ) ॥ ९१ ॥ आगमनो  
 आगमतणो । जाव ते जाणो साचोरे । आतम जावै थिरहुन । परजावे  
 मत राचोरे ॥ ( बी० ) ॥ ९२ ॥ अष्ट सकल समृद्धिनी । घट मांहि रुद्धि दा  
 खीरे । तिम नव पद रुद्धि जाणज्यो । आतमराम बै सारखीरे ॥ ( बी० )  
 ॥ ८३ ॥ योग असंख्य बै जिन कहा । नवपद मुख्यते जाणोरे । एह तणें  
 अविलंबने । आतम ध्यान प्रमाणो रे ॥ ( बी० ) ॥ ९४ ॥ ढाल वारमी  
 एहवी । चोथे खंमे पूरीरे । वाणी वाचक जस तणी । कोईनय  
 रहीअ अधूरीरे ॥ ( बी० ) ॥ ९५ ॥ ॐ ह्रीं अर्जं परमात्मने । अनन्तानन्त  
 ज्ञान शक्तिये । जन्म जरा मृत्यु निवारणाय । श्रीमत् सिद्धचक्राय । वासं ।  
 पंचामृतं । चंदनं । पुष्पं । धूपं । दीपं । अक्षतं । नैवेद्यं । फलं । वस्त्रं ।  
 ययामहे ॥ ❀ ॥ इति श्री देवचंदजी, जस विजयजी महोपाध्याय कृत सिद्धचक्र  
 महात्म, श्री नवपद पूजा सं० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नवपद पूजादिकमें सामग्री चाहिये सो लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( पंचामृत ) दूध । दही । घृत । मिश्री । शुद्धजल ॥ केसर  
 र । सुगंध चंदन । कपूर । कस्तूरी । अंबर । रोली । मोली । बूटा फूल ।  
 फूलोंकी माला । फूलोंका चंद्रवा । धूप । चावल प्रमुख ( नव ) जातकेधान ।  
 ( नव ) प्रकारके नैवेद्य । ( नव ) प्रकारके फल ( नव ) प्रकारके पक्कन  
 स्तु । मिश्री । पतासा । उंजा । विदाम । सुपारी । प्रमुख । अंगवूहणा

खातर सपेद वस्त्र । पहरावणी खातर उत्तम रेशमी प्रमुख वस्त्र । वासह्नेप । गुलाबजल । अत्तर । इत्यादिक । और ( नव ) नालीके कलस ( ९ ) रक्वेवी । परात । तसला आरती । मंगलदीप । जगवानके अंगी । समो सरण । इत्यादिक सब चीज पहली ठीक करके रखे । इससे । पूजामें । विघ्न न । होय । ( इहां ) संक्षेपविधि कही । विसेषविधि गुरूके मुखसे जाण लेणा ॥

॥ ❀ ॥ अथ सबके जाणनेकां । नवपदजीके पूजा करणेंकी कलस ढालणेंकी विधि कहते है ॥ ❀ ॥

॥ ❀ चैत्र सुदि १५ ( तथा ) आसोज सुदि १५ के दिन । श्रात्रिया नव करे । पंचामृत मोटे घने प्रमुखमें करे । थापना में श्रीफल रोक नाणो धरे । पीठे गुरूके पास मंत्रायकै । केसरसें तिलक करे । कांकणमोरा हाथमें बांधे । दहणें हाथमें साथियो करिके । विधि संयुक्त स्नात्र पढावे । पीठे श्री अरिहंत पदमें चावल ( तथा ) चंदन । पुष्प । धूप । दीप । नैवेद्य ( प्रमुख ) अष्टद्रव्य । वासह्नेप । नागरखेल पांन । रक्वेवीमें धरके । हाथमें रखे । नव कलशके मोली बांधे । कुंकुमका साथिया करे । पंचामृतसें जरिके कलश हाथ में लेके पूजा पढे । संपूर्ण होणें से कलश ढाले । बनी परातमें प्रतिमा जी पधरावै । ॐ ह्रीं एमो अरिहंताणं । इस माफक कहतो थको । अरिहंत पदकी पूजा करे । अष्ट द्रव्य अनुक्रमें चढावे ॥ इति प्रथम पूजा ॥ ❀ ॥ ॥ १ ॥ ( दूसरे ) सिद्धपद रक्तवर्ण । गहूं रक्वेवीमें धरे । श्रीफल ( तथा ) अष्टद्रव्य लेकर । ( ९ कलश ) पंचामृतसें जरिके पूजा पढे । ( पूर्ण होणें से ) ॐ ह्रीं एमो सिद्धाणं कही । ( कलश ढाले ) । अष्ट द्रव्य चढावे ॥ इति द्वितीय पूजा विधि २ ॥ ❀ ॥ ( तीसरे ) श्री आचार्यपद । पीलेवर्ण । चिणाकी दालि । अष्टद्रव्य । श्रीफल प्रमुख लेके । कलश ( ९ ) पंचामृत से जरिके पूजा पढे । पूर्ण होणेंसे । ॐ ह्रीं एमो आचार्याणं ( कही ) । कलश ढाले । द्रव्य चढावे ॥ ❀ ॥ इति तृतीय पूजा ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ( चौथे ) श्री उपाध्याय पद । नीले वर्ण । मूंग प्रमुख अष्ट द्रव्य लेके पूर्वोक्त विधि से पूजा करे । संपूर्ण होणेंसे ॥ ॐ ह्रीं एमो उपजायाणं ( कही ) कलश ढाले । अष्ट द्रव्य चढावे ॥ इति चोथी पूजा विधि ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ( पांचमें )



श्री सर्व साधुपद । स्यामवर्ण उरुद प्रमुख लेवै । और पूर्वोक्त विधिः । (पूर्ण हो नेंसें) ॐ ह्रीं एमो लोए सब साहूणं ॥ इति पंचमी ५ ॥ ❀ ॥ (ठठै) दर्शनपद स्वेत वर्ण । चावल प्रमुख पूर्वोक्त विधिसें । ॐ ह्रीं एमो दंसणस्स ॥ इति ठठी पूजा विधि ॥ ६ ॥ ❀ ॥ (सातमें) श्री ज्ञान पद । स्वेत वर्ण । चावल प्रमुख पूर्वो० । ॐ ह्रीं एमो नाणस्स ॥ ❀ ॥ इति सातमी० ॥ ७ ॥ ❀ ॥ (आठमें) चारित्रपद । स्वेतवर्ण । चावल प्रमुख पूर्वोक्त विधिः । ॐ ह्रीं एमो चारित्तस्स ॥ इति आठमी पूजा विधि ॥ ८ ॥ ❀ ॥ (नवमें) तपपद । स्वेत वर्ण । चावल प्रमुख पूर्वोक्त विधिसें । ॐ ह्रीं एमो तवस्स ( कही ) कजश ढाले । अष्टद्रव्य चढावे । पीठे अष्ट प्रकारी पूजा करे । आरती करै ॥ ❀ ॥ इति नवपदजीकी पूजा विधि संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ वासहेप पूजा लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तीर्थपति अरिहानमूं । धरम धुरंधर धीरोजी । देशना अमृत वरसता । निज वीरज वरु वीरोजी ॥ १ ॥ ( चाल ) वर अखय निर्मल ज्ञान ज्ञासन सर्व ज्ञाव प्रकासता । निज शुद्ध श्रद्धा आत्मज्ञावै चरण थि रता वासता । जिन नाम कर्म प्रज्ञाव अतिसय प्रातिहारज सोजता । ज गजंतु करुणावंत जगवंत जविक जननें थोजता ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमा० ॥ वासं यजामहे स्वाहा ॥ ❀ ॥ इति अरि० वासहेप पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ सकल कर्म मलहय करी । पूरण शुद्धस्वरूपो जी । अव्यावाध प्रचुता मई । आतम संपति चूपोजी । ( चाल ) जे चू प आतम सहज संपति शक्ति व्यक्तिपणें करी । स्वद्रव्य क्षेत्र स्वकाल ज्ञावै गुण अनंता आदरी । स्वस्वज्ञाव गुण पर्याय परिणित सिद्ध साधन परजणी । मुनिराज मानसर हंस सम वरु नमो सिद्ध महागुणी ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥ ॐ ह्रीं प० ॥ इति सिद्धपद पूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ आचारज मुनिपति गणी । गुण ठतीसे धामो जी । चिदानन्द रस स्वादता । परज्ञावै निकामो जी ॥ ३ ॥ निकाम निर मल शुद्ध चिदवन साध्य निज निर धारथी । वरज्ञान दरसन चरण वीरज साधना व्यापारथी । जविजीव बोधक तत्वसोधक सयल गुण संपतिधरा ।

संवर समाधी गत उपाधी पुविध तप गुण आगरा ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं ॥ ❀ ॥  
इति आचार्य पूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ॥ खंतिजुआ मुत्तीजुआ । अज्ञव मदव जुत्ताजी । स  
चं सोय अकिंचणा । तव संयम गुण रत्ताजी ॥ १ ॥ ( चाल ) जे रम्या  
ब्रह्म सुगुप्ति गुप्ता सुमति समता श्रुतधरा । स्याद्वाद वादे तत्वसाधक आ  
त्मपर विजजन करा । जव जीरु साधन धीर सासन बहन धोरी मुनिवरा ।  
सिद्धान्त वायण दान समरथ नमो पाठक पदधरा ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ॐ ॥  
इति उपाध्याय पद पूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ सकल विषय विषवारिने । निकामी निस्संगीजी ।  
जवपद ताप समावता । आतम साधन रंगी जी ॥ १ ॥ ( चाल ) ॥ जे  
रम्या शुद्ध स्वरूप रमणें देह निर्मम निर्मदा । काजसग मुद्राधारि आसण  
ध्यान अभ्यासी सदा । तप तेज दीपै कर्म जीपै नैव ठीपै पर जणी । मुनि  
राज करुणा सिंधु त्रिजुवन बंधु प्रणसुं हितजणी ॥ ५ ॥ ॐ ॥ ❀ ॥  
इति साधु पूजाः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ॥ सम्यग् दर्शन गुण नमो । तत्व प्रतीत सरूपीजी ।  
जसु निरधार सुजाव ठे । चेतनगुण जे अरूपी जी ॥ १ ॥ ( चाल ) जे  
अनूप श्रद्धा धर्म प्रगटे सयलपर ईहा टले । निज शुद्ध सत्ता जाव प्रगटे  
अनुभव करुणा ऊढले । बहुमान परणित वस्तु तत्वे अहव तसु कारण  
पणें । निज साध्य दृष्टे सरव करणी तत्वता संपतिगिणें ॥ ६ ॥ ॐ ॥  
इति ६ दर्शनपद पूजाः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ जव्य नमो गुण ज्ञानने । स्वपर प्रकासक ज्ञावे  
जी । पर्याय धर्म अनन्तता । जेदाजेद स्वज्ञावे जी ॥ १ ॥ ( चाल ) जे मो  
क्ष परणित सकल ग्यायक बोध ज्ञावे सजहणा । मति आदि पंचप्रकार  
निर्मज सिद्ध साधन जंठना । स्याद्वादशंगी तत्वरंगी प्रथम जेद अजेदता ।  
सविकल्पने अविकल्प वस्तु सकल संशय वेदता ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं ॥ ❀ ॥  
इति ज्ञान पूजाः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ चारित्रगुण बलि बलि नसुं । तत्व रमण जसु

न सुकारिये । ( अजित० एक० ) ॥ २ ॥ चिरसंचित धन दुरित तिमिर  
हर । तुम जिनप्रये तिमिरारिये । ( अजित० ) कहै शिवचंद्र अजित प्रभु  
मेरे । एह अरज न विसारिये । ( अजित० ) ३ ॥ ( काव्यं ) सलिल चं० ॥  
॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीं श्री मदजित जिनेंद्राय । वसुद्रव्यं यजा० ॥ ❀ ॥ इति श्री  
अजित जिनेंद्रास्याष्टविध पूजा ॥ २ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ( ३ ) श्रीसंभवजिन पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दोधक ) ॥ ❀ ॥ जय जितारि संभव सदा । श्रीसंभव जिन  
राज । सकल लोक जिण जीतलीय । जीतो मोह समाज ॥ १ ॥ ❀ ॥  
( राग ) गंधवटी धनसार केसर मृगमदारस जेलीयै ( ए चाल ) ॥ ❀ ॥  
अपरिमित वर शिखर सागर धार संभवकार ए । जिनराज संभव पाय वं  
दो लहो प्रवजल पार ए । बलि जलधिजात सुजात कुंजर कुंज प्रंजन  
जानिये । तसु जनक नाम समान नामा प्रये जिनजर आनिये ॥ १ ॥ जसु  
चरणपंकज मधुर मधुरस पान लय लागी रह्यो । मिलकारे सुरा सुर खचर  
च्यंतर प्रमर नितचित ऊमह्या ॥ जसु चरणकमलै प्लवगलांजन कनक सुवर  
ण कायए । सहु जुवन नायक सुमति दायक जननि सेना जायए ॥ २ ॥  
जसु मधुर वाणी जगवखाणी तीस शर ( ३५ ) गुणधारिणी ॥ संसार  
सागर प्रय प्रराप्रर पतित पारज्जतारिणी । स्याद्वाद पद्म कुठार धारा कुम  
ति मद तरु दारिणी । प्रभुवाणी नित शिवचंद्र गणिकै हुवो मंगल कारिणी  
॥ ३ ॥ ( काव्यं ) ❀ ॥ सलिल चंदन० ॥ ॐ ह्रीं श्री प० श्रीमत्संभव  
जिनेंद्राय वसुद्रव्यं य० ॥ ❀ ॥ इति तृतीय श्री संभव जिन पूजा ॥ ३ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ( ४ ) श्रीअभिनंदन पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दोधक ) ॥ ❀ ॥ श्रीचतुर्थ जिनवर सदा । पूजो प्रवि चितला  
य । प्रगति युगति संकट हरण । करण तीन सुध थाय ॥ १ ॥ ❀ ॥ ( राग  
सोरठी । ) कुंद किरण शशि कुजलोरे देवा० । ( ए चाल ) ॥ ❀ ॥ संवर  
नंदन जिनवरू रे ( वाल्हा ) अभिनंदन हित कामीरे । जग दभिनंदन  
जय करूरे । ( वा० ) दुरित निकंदन स्वामीरे ॥ १ ॥ लोकालोक प्रका  
सतारे ( वा० ) । कृता अविचल धामीरे । अव्याबाध अरूपिता रे ।

( वा० ) । विमल चिदानन्द रामीरे ॥ २॥ वाङ्मि पूरण सुस्मणी रे ( वा० )  
ए प्रनु अंतर जामीरे । ऐसे जिन महाराजकुंरे । ( वा० ) चंद्र नमें सिर  
नामीरे ३ । ( काव्यं ) ४ ॥ ❀ ॥ सलिल चं० ॥ नै० श्रीप० श्रीमद भि  
नंदनजिनै० । वसु० ॥ ❀ ॥ इति श्रीचतुर्थान्ननंदन जिनैद्रस्याष्टविध पूजा ४॥

॥ ❀ ॥ अथ (५) श्रीसुमति जिन पूजा लि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दोधक ) ॥ ❀ ॥ पंचम जिन नायक नमुं पंचमि गति दातार  
पंचनाण वर विमल कज । वन विकसन दिनकार ॥ १ ॥ ❀ ॥ ( राग के  
खो ) वंसी तेरी बैरिणि बाजैरे । बैरिणि बाजै ( ए चाल ) ॥ ❀ ॥ सुध जाव  
चित्त थिर धरि कैरे । ( चित्त० ) पूजो सुमति जिणिंद । ( सुधजाव० ) जिन  
भक्ति करण रसीला । लहो परम आनंद ॥ १ ॥ ( सुधजाव० ) जिनराज  
सुमति समंद । करै कुमति निकंद । ( सुध० ) प्रनुना चरण अरविंदा ।  
वंदै असुर सुरिंद ( सुध० ) ॥ २ ॥ कनकाज तनु छुतिसोहै । प्रनु सुमंग  
ला नंद ( सुध० ) करुणो पशम रस जरिया । वंदै नित शिवचंद । ( सुध० )  
॥ ३ ॥ ( काव्यं ) सलिलचं० नै० श्रीमत्सुमति जिनैद्राय वसु द्रव्यं०  
इति श्री सुमति जिन पूजा ॥ ५ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (६) श्री पद्मप्रनु पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दोधक ) ॥ ❀ ॥ हिवे पष्टम जिनवर तणी पूजन करहु  
उदार । भवि चित भक्ति धरी करी । सुख संपति करतार ॥ १ ॥ ❀ ॥  
( राग सारंग ) हांहों० । बावना चंदन घसि कुमकुमा ( ए चाल ) । ( हां  
होरे वाला ) पदमप्रनु सुख चंद्रमा । नित सकल लोक सुखदाय ए ( हां० )  
हरि सुर असुर चकोरमा । नित निरख रह्या ललचायेरो ॥ १ ॥ ( हां० ) जिन  
सुख वचन अमृत तणी । जे श्रवण करै भविपानण ( हां० ) । ते अजरा  
मरता जहै । हरिगण करै जसु गुण गानण ( हां० ) ॥ २ ॥ धर नृप कुल  
नज दिन माणि । प्रनु मात सुसीमा नंदण ( हां० ) । प्रनु दरसणतें प्रतिदिनें  
हुइ ज्यो शिवचंद आणंद ए ॥ ३ ॥ ( काव्यं ) सलिल० । नै० । श्रीपद्म  
प्रनु जिनै० वसु० ॥ ❀ ॥ इति श्री पद्मप्रनु जिन पूजा ॥ ६ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ( ७ ) श्री सुपार्श्वजिन पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दोधक ) ❀ श्रीसुपार्श्व सुरतरु समो । कामित पूरण  
काज । जो जवियण पूजो सदा । वसु विध पूज समाज ॥ १ ॥ ( राग  
कल्याण ) मेरा दिल लग्या जिने सरसै ( ए चाल ) ॥ ❀ ॥ मेरी लगी  
लगन जिन वरसै ( मेरी० ) जैसे चंद्र चकोर जमरकी । केतकि कमल  
मधुरसै ( मेरी० ) । एह सुपारस प्रभु जए पारस । गुणगण समरण फर  
सै ( मेरी० ) चेतन लोहपणो परिहरकै । हुयल्यै कांचन सरसै ॥ १ ॥  
( मेरी० ) ए प्रभु करुणा करकुं धरिल्यै । उर जिम कमल जमरसै ( मेरी० )  
जे जवि जिनपद लगन धरै तसु । नही जय मरन असुरसै ( मेरी० ) ॥ २ ॥  
मात पृथवि तनु जात तनु द्युति । सम शुभ्र कांचन सरसै ( मेरी० ) कहै  
सिवचंद्र चित्त नित मेरो । रहो प्रभुपद लय जरसै ॥ ३ ॥ ( मेरी० )  
( काव्यं ) सलिल० ॐ ह्रीं श्रीमत्सुपार्श्वजिनेंद्राय ॥ वसुद्रव्यं० ॥ ❀ ॥  
इति श्रीसुपार्श्वजिन पूजा ॥ ७ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ( ८ ) श्रीचन्द्रप्रभु पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दोधक ) ॥ ❀ ॥ अष्टम जिनपद पूजिये । विविध कष्ट हरता  
र । अष्टसिद्धि नवनिधि लहै । जिन पूजन करतार ॥ १ ॥ ❀ ॥ ( राग  
शुंभ मिश्रित मल्हार ) ॥ मेघ वरसै जरी कुसुम वादल करी । ( ए चाल )  
परमपद पूर्व गिरिराज परि उदयलहि । विजित परचंद्र दिनकर अनन्ता ।  
चंद्रप्रभु चंद्रिका विमल केवल कला । कलित सोजित सदा जिन महन्ता  
॥ १ ॥ ( परमपद० ) । कुमतिमत तिभिर जर हरीय पुन जूरि जवि । कुमुद  
सुख करीय गुण स्यण दरिया । गहिर जविसिंधु तारण तरणि गुण । धारि  
जव तारि जिनराज तरिया । ( परमप० ) ॥ २ ॥ राखिये आज मोहि  
लाज जिनराज प्रभु । करण सुख चरण जिन सरण परीया । परम शिव  
चंद्र पदपद्म मकरंद रस । पान नित करण ततपर जरीया ॥ ३ ॥ ( पर० )  
( काव्यं ) सलि० । ॐ ह्रीं श्रीमच्चन्द्रप्रभु जिने० वसु० ॥ ❀ ॥  
इति श्री चंद्रप्रभु पूजा ॥ ८ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ( ९ ) श्रीसुविध जिन पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दोषक ) ॥ ❀ ॥ सुविध २ समरण थीकी । कामित फल प्रक  
टाय । अतिह गहन संसार वनि । बहुल अटन मिट जाय ॥ १ ॥ ❀ ॥  
( राग ( चंपक केतक मालती ( एचाल ( ॥ ❀ ॥ सुविध चरणकज वंदीयै  
ए । ( अइयोवं० ) नंदीयै अति चिरकाल । सिव तरवारि निकंदीयै । विघन  
कंद ततकाल ॥ १ ॥ आज जनम सफलो ज्यो । ( हांए सफ० ) दीठो  
प्रनुदीदार । तनु मन दृग विकसित ज्ये । जिम कज लखि दिनकार ॥ २ ॥  
अमृत जलधर वरसीयो । ( हां० अइ० व० ) जवि उर द्वेज मजार । दर्शन  
सुरतरु उगीयो । शिवफलनो दातार ॥ ( काव्यं ) सलिल० । ॐ ह्रीं ।  
श्रीमत्सुविधि जिने वसु० ॥ ❀ ॥ इति श्रीसुविध जिन पूजा ॥ ९ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ( १० ) श्रीशीतल जिन पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दोषक ) सुज तनु मन शीतल करो । श्रीशीतल जिनराय ।  
तुम समरण जलधारसें । अंतर तपति पुलाय ॥ १ ॥ ( राग धादो । दादा  
कुसल सुरिंद० इस चालमें ) ॥ ❀ ॥ मेरे दीनदयाल तुम ज्ये सकल लो  
क प्रतिपाल । ( आ० ) सुणि शीतल जिनवर महाराज । चरण शरण धर्यो  
प्रनुनो आज । ( मेरे दी० ) न नमुं सहु सविकारी देव । करिमुं चरणक  
मलनी सेव । ( मेरे० ) ॥ १ ॥ जैसे सुरमाणि करतल पाय । कुणायै काच  
शकल लजसाय । ( मेरे० ) तुम सम सुरवर अवरन कोय । हेर २ जग  
निरख्यो जोय ( मेरे० ) ॥ २ ॥ प्रनु दरसण जलधर वनघोर । लखिय नि  
स्तकरे जविजन मोर ( मेरे० ) । पद शिव चंद्र विमल जस्तार । अरज  
एह उरधारियै सार ( मेरे० ) ॥ ३ ॥ ( काव्यं ) सलिल० ॐ ह्रीं । श्रीमन्नी  
तल जिनेंद्राय वसु० ॥ ❀ ॥ इति श्रीशीतलजिनेंद्र पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ( ११ ) श्रीश्रेयांस जिन पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दोषक ) ॥ ❀ ॥ श्री श्रेयांस जिनेंद्रपद । नद हुति सलिला  
धार । जे नेत्रे मज्जन करै । ते सुचि दृष्ट विधुनार ॥ १ ॥ ( राग ) सोहम  
सुरपति वृषभ रूप करि ( इस चालमें ) ॥ ❀ ॥ श्री श्रेयांस जिनेसर जग  
गुरु । इंद्रिय मदन सजंदहे । जसु वसु विध पूजनमें अरचो । उर धरि पर



मानंदहे । ए समकित धर श्रावक करणी । हरिणी जव मनरंग हे । विज  
यदेव जिन प्रतिमा पूजी । जीवाग्निगम उवंग हे ॥ श्री० ॥ १ ॥ सूरियाज  
प्रनुपूजन करियो । राय पसेणी नपांगहे । ग्याता अंगे द्रुपदि श्राविका ।  
पूज्या जिन प्रतिविंबहे । काल लगै जमसी जव वनमें । मन्दमती जयभ्रांत  
हे ॥ ( श्री० ) ॥ २ ॥ विष्णुमात तनुजात विष्णु नृप । विमल कुलांबर  
हंस हे । सकल पुरंदर अमर असुर गण । शिरो वरि प्रनु अवतंस हे  
इम सुखरनी परि श्रावक जे । पूजै जिन उन्नरंग हे । ते शिव चंद्र परमपद  
लहिस्यै । निश्चय करी जवजंग हे ( श्री ) ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ( काव्य० ) सजिल०  
॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री श्रेयांस जिनेंद्राय ॥ ❀ ॥ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ( १२ ) वासुपूज्य जिन पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दोधक ) ॥ ❀ ॥ हिवधारम जिनवर तणी । पूजन करियै सार ।  
जाव जक्तियुत जवि सदा । द्रव्यजक्ति चितधार ॥ १ ॥ ( राग ) सब अर  
ति मथनसुदार धूप ( एचाल ) ॥ ❀ ॥ सकल जगजन करत वंदन । जया  
नंदन सामिरे ( देवा ) छुरित ताप निकंद चंदन । परम शिव पद गामिरे  
( देवा ) ॥ १ ॥ ( सकल० ) नृपतिवर वसु पूज्य नृपकुल । विपिन नंदन  
जातरे ( देवा ) सुहरि चन्दन नन्द नन्दन । नन्द मदकिय घातरे ( देवा )  
॥ २ ॥ ( स० ) वासु पूज्य जिणेंद्र पूजो । सकल जन महाराज रे । ( देवा )  
करत नुति शिव चंद्र प्रनुए । निखिल सुर सिरताज रे । देवा । ( सक० )  
॥ ३ ॥ ( काव्य० ) सजिल० ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीमद्रासु पूज्य जिनेंद्राय वसु  
द्रव्यं ॥ ❀ ॥ इति श्रीवासुपूज्य जिन पूजा ॥ १२ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ( १३ ) श्री विमल जिन पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दोधक ) ॥ ❀ ॥ विमल २ जिन कर मुजे । मलिन करम क  
रि दूर । तेरम प्रनु रमियै सदा । मुज्जर मजि गुणपूर ॥ १ ॥ ❀ ॥ ( राग )  
सिधचक्र पद वंदोरे जविका । ए चाल ) ॥ ❀ ॥ विमल चरण कज वंदोरे ।  
( सूरोजन ) विम० ( वंदनसं आनन्दोरे । ( सू० वि० ) जसु गणधर मुनिव  
र गण मधुकर । सेवत पद अरविंदो । श्यामा उदर सुगति सुगता फल ।  
कृत वरमा नृप वंदोरे ( सूरि० ) ॥ १ ॥ सहु जग मंजल विमल करणकं ।

निज शासन नजचंदो । उदय ज्यो जवि कंसुद विकसिवा । वर गुण स्यण  
समंदोरे ( सूरि० ) ॥ २ ॥ यदि जव वंदि हरण जवि चाहो । प्रनुवंदी चिरनं  
दो । विमल चिदानंद वनमयरूपी । नित वंदत शिवचंदो रे ( सूरि० ॥ ३ ॥  
( काव्यं ) सजिल० ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं० । श्रीमत् विमलजिने० ॥ ❀ ॥

इति श्रीविमल जिनपूजा ॥ १३ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ( १४ ) श्रीअनन्त जिनपूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दोधक ) ॥ ❀ ॥ हिव चवदम जिनपूजतां । हरिये विषय  
विकार । जो जवियण सुणिये सदा । ए प्रनु सरणाधार ॥ १ ॥ पंचवरणी  
अंगीरची० ( ए चाल ) ॥ ❀ ॥ पूजकरणी प्रनुनी छुरित निवारी । ( छुरि )  
( आं० ) अनन्त तरणी हिमकिरण तरुणतर । किरण निकर जीताहे जारी ।  
अनन्त नाणवर दरसण तेजे । प्रनुसु यशोदरहे अवतारी ( पूज० ) ॥ १ ॥  
लोका लोक अनंत द्रव्यगुण । पर्याय प्रगट करण हारी । ताते अन्वययु  
त जिन धरियो । अनंत नाम अनि मनुहारी ( पूज० ) ॥ २ ॥ सिंहसेन नृप  
नन्दन वंदन । करत उंद्र चंद्र सुखकारी । सादि अनंत जंग थिति धरियो ।  
पद शिव चंद्र विजयधारी ( पूज० ) ॥ ३ ॥ ( काव्यं ) सजिल० । ॐ ह्रीं०  
श्रीमच्चतुर्दश अनंत जिने० वसु० ॥ ❀ ॥ इति श्री अनंत जिनपूजा ॥ १४ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ( १५ ) श्रीधर्मजिन पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दोधक ) ॥ ❀ ॥ जानु नृप कुल जानु कर । पनरम जिन सुर  
सार । सोजित महुजग विपिन जन । हरख फजद जलधार ॥ १ ॥ ( राग )  
धार समारे यमुना तीरे । वसती वने वनमाली ( ए चाल ) ॥ ❀ ॥ धर्म जिणे  
सर धरम धुरंधर । जगबंधव जगत्राला । ( में वारी जानं । जग० धरम० ) ।  
सुवता नंदन पाप निकंदन । प्रनुजये दीन दयाला ( मेंवा० । धर्म० ) ॥ १ ॥  
प्रनु धीरज गुण निरखि अमर गिरि । लजि लीनो अचला धारा । ( मेंवा० )  
जिन गंजोर्ना चमरसिंधु लाखि । किये लोकांत विहारा । ( में० । धर्म )  
॥ २ ॥ एजिनचंद्र चरण अस्चनते । लहि जिनपति अवतारा । ( मेंवा० ) ।  
करम बेरि दलकारि जवि लहिस्यो । पद शिव चंद्र उदारा । ( मेंवा० धर्म० )

॥ ૩ ॥ ( કાવ્યં ) સલિલ ચં ॥ ૐ ક્ષીં । શ્રીપં શ્રીમત્ ધર્મ જિનેં ॥ વસુદ્ર  
વ્યં ॥ ❀ ॥ ઇતિ શ્રી ધર્મજિન પૂજા ॥ ૧૫ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ અથ ( ૧૬ ) શ્રી શાન્તિજિન પૂજા લિં ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( દોષક ) અચિરા ઉયરે અવતરી । શાંતિ કરી સુખકાર । મારિ  
વિકાર મિટાય કરિ । નામ ધરચો શાંતિ સાર ॥ ૧ ॥ ❀ ॥ ( રાગ વિત્રાસ )  
ઝાવ ધરિ ધન્ય દિન આજ સફલો ગિણું ( એ ચાલ ) ॥ ❀ ॥ શાંતિ જિન  
ચંદ્ર નિજ ચરણકજ શરણગત । તરણિ ગુણધારિ ઝવવારિ તારી । કુમત જ  
ન વિપિન જાનિ કુમતિ ઘન વૃત્તનિ તતિ । ઊતિનિ શિતધાર તરવારિ વારી ॥  
( શાંતિં ) ॥ એક ઝવ પદ ઝજય ચક્રધર તીર્થકર । ધારિયા વારિયા વિઘન  
સારા । સકલ મદમારિયા વિમલ ગુણ ધારિયા । સારિયા ઝક્તિ વાંઝિત અપારા  
॥ ( શાંતિં ) હરિણ લાંઝન ધરા વરણ સુવરણ કરા । સુરવરા હિતધરા ગતવિ  
કારા । મોહઝટ ધરણિધર ગણ હરણ વઝ્રધર । કુમુદ શિવ ચંદ્ર પદ રજનિ  
કારા ॥ ( શાંં ) ૩ ॥ ૐ ક્ષીં શ્રીપં શ્રીમત્ ધર્મશમ શાંતિ જિનેંદ્રાય વસુ  
દ્રવ્યં ॥ ❀ ॥ ઇતિ શાંતિ જિન પૂજા ॥ ૧૬ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ અથ ( ૧૭ ) શ્રીકુંથુજિનપૂજા લિં ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( દોષક ) સતરમ જિનવર દીવસમ । મઝિ ઝવ સાગર જાણ ।  
ઝક્તિ યુક્તિ નિત પૂજિયૈ । લહીયૈ અમલ વિનાણ ॥ ૧ ॥ ❀ ॥ ( રાગ )  
અરિહંતપદ નિત ધ્યાયૈ ( એચાલ ) ॥ ❀ ॥ કુંથુજિણંદ ગુણગાડૈ । ( વારિ )  
મનવંઝિત ફલ પાડૈયૈ રે । પ્રન્નુ સમરણ લય લાડૈયૈ । ( વાં ) ઝવિ ઝવત  
જિ શિવજાડૈયૈરે ( કુંથું ) ॥ ૧ ॥ ઝવજલ ગત નિજ આતમા । ( વાં )  
કરુણા ઝર ધરિ તાડૈયૈ રે । ચરણ કરણ ઉપયોગિતા । ( વાં ) ગ્રહણ કરણું  
ધાડૈયૈ રે । ( વાં કુંં ) ॥ ૨ ॥ એ પ્રન્નુ દરસણ જીવનેં । ( વારિ ) અ  
ન્નુઝવ રસનો ઢાડૈયૈ રે । વર શિવચન્દ્ર વિમલ વધે । દિન ૨ સોઝ સવાડૈયૈ  
રે । ( કુંં ) ॥ ૩ ॥ ( કાવ્યં ) સલિલચં । ૐ ક્ષીં શ્રીપં । શ્રીકુંથુ  
જિનેં ॥ વસું ॥ ❀ ॥ ઇતિ કુંથુજિન પૂજા ॥ ૧૭ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ અથ ( ૧૮ ) શ્રીઅરનાથ પૂજા લિં ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( દોષક ) ॥ ❀ ॥ જિનઅઢારમોધ્યાડૈયૈ । ઝવિયણ ચિત્તમઝાર

करण तीन इक करसुदा । प्रतिदिन जय जय कार ॥ १ ॥ ॐ ॥ ( राग वसंत ) संग लागोही आवै । कुणखेलै तोसुं होरी रे । संग० ( ए चाल ) ॥ ॐ ॥ निज विमल भक्तिसें । अरजिनसें नितरमियै रे । ( निजवि० ) । जिनगुण निजगुण तुल्य करणकुं । चंचल चित हय दमियै रे । ( नि० ) ॥ १ ॥ सुमति युवति संयम नर धरिकै । कुमति नारि संग गमियै रे ॥ ( निज० ) ॥ अनुभव अमृत पान करण तैं । विषय विकृत विष दमियै रे । ( निज० अर० ) ॥ २ ॥ जिनवर संग रमण दवअनलै । पंक सवन वन धमियै रे । कहै शिवचंद्र जिनेंद्र रमणसें । भव रनमें नही भमियै रे ॥ ३ ॥ ( निज० ) ( काव्यं ) सजिल चं० ॥ ॐ ॥ ॐ ॐ ॐ । श्रीमदष्टादश अरजिनै० । वसु० ॥ ॐ ॥ इति अरजिनपूजा ॥ १८ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ ( १९ ) श्रीमल्लिजिन पूजा लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ( दोधक ) ॥ ॐ ॥ उगुणीसम जिन चरणकज । भ्रमर होय लयलाय । सेवै तसु भवि भ्रमरता । अगणित तुरित विलाय ॥ १ ॥ ॐ ॥ ( राग ) मल्लिजिणंद उपगारी रे वाला । मल्लिजिणंद उपगारी ( हांरे होरे वाला ) वारी जातं बारहजारी रे ( वा० । मल्लिजि० ) कुंजनरेसर गग नांगणमें । सहसकिरण अवतारी रे ( वाला० म० ) ॥ १ ॥ पूरव भव पदमित्र नरिंद प्रति । बोधि सिंधु भवतारी । वेदत्रयी चिरही तनु धार्यो सकल संघ सुखकारी रे ( वाला मल्लि० ) ॥ २ ॥ सकल कुशल हरि चंदन तरुवर । नंदनवन अनुकारी । संघ चतुरविध नृरिखचरण । प्रणन चंद्र अनुहारी रे ( वा० मल्लि० ) ॥ ४ ॥ ( काव्यं ) सजिल० । ॐ ॐ ॐ । श्रीमल्लिजिनै० जलं० ॥ ॐ ॥ इति मल्लिजिन पूजा ॥ १९ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ ( २० ) श्रीमुनिसुव्रतजिन पूजा लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ( दोधक ) पद्मोदर वर पद्मनद । गनपर पद्म समान । विश नि तम प्रभु पूजिये । केवल लठि निधान ॥ १ ॥ ॐ ॥ ( राग गरवो ) सुणिचतुर सुजाण । परनारीसुं प्रीतडी क्यहुं न काजिये ( एचाल ) ॥ ॐ ॥ सुणिसुव्रतजिनेंद्र सुनिजर धरि सुजपर वर दरसाण दीजिये । प्रभु दरम प्रीति निरुपाधिकता । करिये लहिये शिव साधकता । तव छुस्त मिटै शिव बाधकता ।

॥ १ ॥ ( सुणि० ) अमृतमें साध्यपणो विलसै । प्रभु दरसन साधनता  
 उलसै । तदमुजमें साधकता मिलसै । ( सुणि० ) ॥ २ ॥ जिन्नादिकरण  
 ता यदि विघटै । एकाधिकरणता यदि सुघटै । तद मुज शिव साधकता प्रग  
 टै । ( सुणि० ) ॥ ३ ॥ एकाधिकरणता मुज करियै । जिन्नाधिकरणता परि  
 हरियै । शिव चंद्र विमल पद तद वरियै ( सुणि० ) ॥ ४ ॥ ( काव्यं )  
 सलिल० । ॐ ह्रीं । विंशतितम श्रीमत् मुनिसुव्रतजिनै० ॥ ❀ ॥  
 इति मुनिसुव्रत जिन पूजा ॥ २० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ( २१ ) श्रीनमि जिन पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दोधक ) अंतरवैरि नमाविया । तब लाहियों नमि नाम । जवि  
 यण ए प्रभु पूजसै । सरीयै बंठित काम ॥ १ ॥ ( राग ) हमआए है सरण  
 तिहारे । तुम प्रभु सरणागत तारे वारी० ( एचाल ) । ❀ । श्रीनमि जिनवर  
 चरण कमलमें । नयन जमर युग धरियैरे । तिण किय गुणमकरंद पानसै  
 चेतन मद मत करियैरे । ( वारी ) चेतन मद मत करियैरे ( श्रीनमि० )  
 ॥ १ ॥ एह चरण कज अह निश विकसै । पर कज निसि कुमलावैरे ।  
 ( वारी पर ) एन बलै बलि तुहिन अनलसै । अपर कमल बल जावै रे ।  
 ( वारी० अप० ) ॥ २ ॥ ए पद कज गुन मधुरस पीवत । जीव अमरता  
 पावै रे ( वारी० ) । अवर कमल रस लोत्री मधु कर । कजगत गज गिल  
 जावै रे ( वारी० ) ॥ ३ ॥ परकज निजगुण लठ्ठिपात्रहै । पद कज संपद  
 देवै रे । तातै पदशिवचंद्र जिणंदके । अहनिशि सुर नर सेवैरे ( वारी० ) ।  
 श्री० ॥ ४ ॥ ( काव्यं ) सलिल० ॥ ॐ श्री नमिजिनै० ॥ ❀ ॥  
 इति श्री नमिजिन पूजा ॥ २१ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ( २२ ) श्रीनेमि जिन पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दोधक ) बावीसम जिन जगगुरु । ब्रह्मचारी विख्यात । इण  
 बंदन चंदन रसे । पाप ताप मिट जात ॥ १ ॥ ( राग रामगिरी ) गात्र लूहे  
 जिनमन रंग सुरे । देवा ( ए चाल ) । नेमि जिणंद उर धारियै रे ( वाला )  
 विसय कसाय निवारियै ( वाला ) । ( वारीयै ) हांरे ( वाला वारीयै ) । ए  
 जिन नैन विसारीयैरे ॥ १ ॥ जलधर जिम प्रभु गरजतारे ( वाला ) देशना

अमृत वरमतारे ( वाला ) ( देस० ) । वरसता हारे वाला वरसता । जविक  
मोर सुणि उलसतारे ॥ २ ॥ समवसरण गिरि परि रहारे ( वाला ) ।  
जामंरुज चपला बहारे ( वाला ) । चपला बह्या । ( हारे ) चपला बह्या  
सुर नर चातक उमह्या ॥ ३ ॥ बोध बीज उपजावीयोरे ( वाला ) । जवि  
उर हेत्र बधावीयो हारे ( वाला धा० ) । जविक सुगति फल पावीयोरे ॥ ४ ॥  
( काव्यं ) सजिल० ॥ ॐ ह्रीं श्रीमन्नेमि जिने० ॥ ॐ ॥

इति नेमि जिन पूजा ( २२ ) ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ ( २३ ) श्री मत्पार्श्वजिन पूजा लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ( दोधक ) ॥ अश्वसेन नंदन सदा । वामोदर खनि हीर ।  
लोक सिखर सोजे प्रनु । विजित करम वरवीर ॥ १ ॥ वाजै तेरा विबुआ  
( इस केरवाकी चालमे ) ॥ ॐ ॥ पास जिणंदा प्रनु मेरे मन वसीया । पास  
जिणंदा० । मेरे मन वसीयारे । मेरे दिज वसीया ( पास जि० ) । शिव  
कमलानन कमल विमल कल । तर मकरंद पान अतिरसीया ( पास जि० )  
॥ १ ॥ वामा नंदन मोहनि मूरत । सकल लोक जन मन किय वसीया  
( पास जि० ) । परमज्योति मुख चंद विलोकि । सुर नर निकर चकोर ह  
रसीया ( चकोर ह० ) ( पास जि० ) ॥ २ ॥ अंजन गिरि तनु छुति जिन  
जलधर । देशना अमृत धार वरसीया ( धारवर० ) ( पास जि० ) । पीय  
कार जवि चिरकाज निरसीया । सुगति युवति तनु छुत फरसीया ( पास  
जि० ) कुमुद सुपद शिवचंद्र जिणंदनी । वारीजात मन मेरो अतिह उल  
सीया ( पास जि० ) ॥ ४ ॥ ( काव्यं ) मलिल० । ॐ ह्रीं । त्रयो विंशत्तम  
श्रीमत्पार्श्वजिने० ॥ इति श्रीपार्श्वजिन पूजा ॥ २३ ॥

॥ ॐ ॥ अथ ( २४ ) श्रीमद्दीरजिन पूजा लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ( दोधक ) ॥ ॐ ॥ वर इक्खाकुक्कुल केतु सम । त्रिशजोदर  
अवनार । ए प्रनुनी नित कीजीये । विविध जक्ति मुखकार ॥ १ ॥ ( राग  
तेजतरणि मुखराजै ) । ( हारे मुखराजै ) ( प्रनु जीको ते० ) ( एचाल ) ॥ ॐ ॥  
चरम वीर जिन राया ( हारे ) जिनराया । मेरे प्रनु चरम वीर जिनराया  
( आ० ) । सिद्धारथकुल मंदिर धजसम । त्रिशजा जननी जाया । निरु



पम सुंदर प्रभु दरसण तें । सकल लोक सुखपाया । ( हांरे सुखपाया )  
 ( मेरे प्रभुच० ) ॥ १ ॥ वामचरण अंगुष्ठ फरसतें । सुरगिरि वर कंपाया  
 इंद्रचूति गणधर सुख मुनिजन । सुरपति वंदित पाया । ( हांरे ) ( मेरे प्र० )  
 ॥ २ ॥ वर्तमान शासन सुखदाया । चिदानंद धन काया । चंद्रकिरण गुण  
 विमल रुचिर धर । शिवचंद्रगणि गुण गाया । ( हांरे० मेरे प्र० ) ॥ ३ ॥  
 वरस नंद मुनि नाग धराणि मित । द्वितीयाश्विन मनजाया । धवलपद्म पं  
 चामि तिथि शनियुत । पुरजय नगर सुहाया ( मेरे० ) ॥ ४ ॥ श्रीजिन हरस  
 सूरीसर साहब । वर खरतर गठराया । हेमकीर्ति शाखा नृषण मणि । रूपचं  
 द्र उवजाया ( मेरे० ) ॥ ५ ॥ महापूर्व जसु नूरि नरेश्वर । बंदे पद उलसा  
 या । तासु शीसवाचक पुण्यशील गणि । तसु शिष्य नाम धराया ( हांरे०  
 मेरे प्र० ) ॥ ६ ॥ समयसुंदर अनुग्रही रुषिमंजल । जिनकी सोन सवाया  
 पूजरची पाठक शिवचंदे । आनंद संघ वधाया ( हांरे० मेरे० ) ॥ ७ ॥  
 ( काव्यं ) सलिल चंदन० ॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीं श्रीप० चतुर्विंशति तम  
 श्रीमद्भारजिनेंद्राय वसुद्रव्यं ॥ इति श्रीमहावीरजिन पूजा विधिः ॥ २४ ॥

॥ ❀ ॥ स्नग्धरावृत्तध्वयं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दुर्वार स्फार विघ्नोत्कट करटि घटोत्पाटन स्पष्ट जाग्रद । वी  
 र्यप्राग्भारोत्पाट चंचत् कुशल हरिदरी जित्वरी दुर्नतानां । संसारापार  
 सिंधु तरण तरतरी प्रक्तिप्रजा मजसं । प्रव्यानां ब्रह्मपद्म प्रवण मधुकरी  
 शंकरी शंकरी सा ॥ १ ॥ लोकालोक प्रलोका खलित विमल सददर्शन ज्ञान  
 प्रानुः । श्रीमद्भैरवशरीयं त्रिभुवन विभुताप्ति श्रुतुर्विंशतिश्च । श्रीसिद्धा नंत  
 नाथालय विशदलसत् सर्वलोकाग्रजाग । प्रासादाग्र प्रदेशे जगति विजयते  
 वैजयंती जयंती ॥ २ ॥ इति रुषिमंजल स्तुतिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नवपद आरती लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जय जय जगजन वंदित पूरण । सुरतरु अग्निरामी । आत्मरूप  
 विमल करतारक । अनुभव परिणामी । ( जय २ जगसारा २ ) । आरती  
 पार उत्तारा । सिद्धचक्र सुखकारा ॥ १ ॥ जगनायक जगगुरु जिनचंदा ।  
 प्रज श्रीजगवन्ता । आत्मराम रमा सुखजोगी । सिद्धा जयवंता । ( जय० २ )

पंचाचार दीपे आचारिज । जुगवर गुणवारी । धारक वाचक सूत्र अर्थना  
पाठक जवतारी ( जय० ) ॥ ३ ॥ सम दम रूप सकलगुण ज्ञायक । मो  
टा मुनिराया । दंशण नाण सदा जय कारक । संजम तपत्राया ( जय० )  
॥ ४ ॥ नव पदसार परम गुरु आपे । सिद्धचक्र सुखकारी । ए जव परज  
व रिद्ध सिद्ध दायक । जव सायर वारी ( जय० ) ॥ ५ ॥ करजोमी सेवक  
गुण गावे । मनवंजित पावे । श्रीजिनचंद अखयपद पूजत । शिव कमला  
पावे ( जय० ) ॥ ६ ॥ इति श्रीनवपद आरती ॥ ❀ ॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ अथ रुषिमंजु आरती लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जय जय जिनराजा । ( वारी ज० ) आरती करुं शिवकाजा ।  
जव जय दुख जाजा ( जय० ) ॥ १ ॥ रुषम अजित संजव जिन राया ।  
अग्निनंदन सुमति । पद्म सुपारस चंद्राप्रनुते । दूर हुवे कुमति । ( जय० ) ॥ २ ॥  
सुविध शीतल श्रेयांस सवाई । करि वारम जिनकी । विमल अनंत धर्म  
प्रनु शांति । हर आरति तनकी । ( जय० ) ॥ ३ ॥ कुंधुनाथ अरमाहि  
मुनिमुवत । नमि नेमि श्रीकारा । पार्श्वजिनेश्वर वीर जिनंदा । आतमहि  
तकारा । ( जय० ) ॥ ४ ॥ इण विधि आरति जे जवि करसी । जवसायर  
तरसी । श्रीजिनचंद अखयपद फरसी । शिव कमला वरसी । ( जय० )  
॥ ५ ॥ इति श्रीरुषिमंजु आरती ॥ ❀ ॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ अथ रुषिमंजु सुननेकी ( वा ) पूजनेकी विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( प्रथम ) ॥ ❀ ॥ आद्यन्ताक्षर संलक्ष० । यह । रुषमंजुस्तोत्र ।  
धूप, दीपादि, विधि संयुक्त आठ महिनेतक प्रजात समय सुणे । रुषिमंजु  
में ( जो ) मूलमंत्र है ( सो ) शुभदिन शुभवसी । हाथमें फल फूल जेट  
शक्ति माफक लेई । गुरुके पास जावे । जेट धरके । विनयसंयुक्त मूलमंत्र  
ग्रहण करे । ( तसका ) ८००० जाप. आठ महिनामे करे । आंखिल करणकी  
शक्ति होय ( तो ) सदा करे । नहिं तो । आठम । चवदस । दो आंखि  
ज जरूर करे । आठ महिना हुयां बाद उजमणो करे । उजमणके दिन  
१०८ वेरसुणे । पीठे शक्ति होय ( तो ) विधिसंयुक्त । रुषिमंजु स्थापन  
करायके पूजा करे । विशेष शक्ति होय तो ( २४ ) प्रकारी पूजा करावे ।

पूजामें सामग्री ज्यो पहली नवपदजीकी विधके ठिकाणें लिखीहै (सो) सर्व सामग्री इहां (२४) चौईस लेणी । एक एक महाराजकी पूजा पढायके । प्रथम जल । पीठै चंदन । ऐसैं अष्टद्रव्य अनुक्रमसैं चढावे । (पीठै) संपूर्ण पूजा हुयां बाद । गुरुभक्ति करै । साहमी वचन करै । (इहां) विशेषविधि गुरुके मुखसैं समजके करणी ॥ (यह) ऋषिमंजल सुणनेवाले पूज एंवाले नव्य जीवोंके घरमें कभी उपद्रव न होगा । सदा आनंद उच्चाह रहेगा । इत्यलंविस्तरेण । इति ऋषिमंजल सुणने (वा) पूजन करनेकी विधि॥

॥ ❀ ॥ अथ विंशतिपद पूजा विधि लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ ❀ ॥ सुखसंपति दायक सदा । जगनायक जिनचंद । विघनहरण मंगलकरण । नमो नाभि नृप नंद ॥ १ ॥ लोकालोक प्रका सिका । जिनवाणी चितधार । विंशतिपद पूजनतणो । कहिख्युं विधि वि सतार ॥ २ ॥ जिनवर अंगै जाषिया । तप जप बहु परकार । विंशतिपद तप सारिसो । अवरन कोई उदार ॥ ३ ॥ दान शील तप जप क्रिया ॥ जाव विना फलहीन । जैसे भोजन लवण विन । नही सरस गुणपीन ॥ ४ ॥ जे नवीयण सेवै सदा । जावै थानक वीश । ते तीर्थकर पदलहै । वंदै सुर नर ईश ॥ ५ ॥ ( ढाल ) श्री अरिहंतपद १ सिद्धपद २ ध्यावो । प्रवचन ३ आचारिज ४ गुणगावो । स्थविर पंचमपद ५ पुन खजाया ६ । त पसी ७ नाण ८ दंसण ९ मनजाया १ ( उद्वालो ) मनजाय विनया १० वश्यका ११ मलशील १२ किरीया १३ जानीयै । तप १४ विविध उत्तम पात्र १५ वेयावच्च १६ समाधि १७ वखानीयै । हितकर अपूर्व नाणसंग्रह १८ धरो मन सुजगीसए । श्रुतभक्ति १९ फुनि तीरथप्रचावन २० एह थानकवीसए २ ॥ ( ढाल ) एथानकवीस २० जग जयकारा । जपतां लही यै जिनपद सारा । करम निकंदै विसवावीसै । जाण्या जग तारक जग दीसै ॥ ३ ॥ ( उद्वालो ) जगदीश प्रथम जिणेंद जगगुरु चरम जिनवर जी मुदा । नव तीसरे पद सकल सेवा लही जिनपति संपदा । बावीस जिनवर सकल सुखकर इंद्र जसु गुणगाइयै । इक दोय त्रिण सहपद जपी नैं तीर्थपति पद पाइयै ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥

॥ ॐ ॥ ( इहा ) ॥ ॐ ॥ अरिहंतादिक पद सदा । नजीयै तपकरी  
सुद्ध । अति निरमल सुजयोगता । करिकै तसुगुण छुड ॥ १ ॥ विमल  
पाठ त्रिक तटुपरे । उर्वीयै जिनवर बीस २० । पूजन उपग्रण मेलि करि ।  
अरचीजै सुजगीस ॥ २ ॥ एक एक ए पदतणी । द्रव्यपूजा परकार ।  
पंच ५ अष्ट ८ विध जानीये । सत्तर १७ इगवीस सार ॥ ३ ॥ अष्ट जातिना  
कलश करि । विमलजलै जरि पूर । पूजो नवीयण पद सह । होय  
सकल दुखदूर ॥ ४ ॥ सोहै सह परमेष्ठिमें । जिनवर पद अनिराम ।  
वेद ४ निहोपे समरीये । वधतै सुज परिणाम ॥ ५ ॥ ॐ ॥

॥ ( राग देसाख ) पूर्वमुख सावनं करिदसन पावनं ए चाल ॥ ॐ ॥  
सकल जगनायकं परमपद दायकं । लायकं जिनपदं विमलज्ञानं ( अइयो  
वि० ) चतु रधिक तीस ३४ अतिशय अमल बार १२ गुण । वचन  
पणतीस ३५ गुणमणि निधानं ॥ १ ॥ ( अइयोम० ) ॥ सुखकरण जिन  
चरण पद्मसेवित सदा । नमर सुर असुर नर ऋदयहारी ( अइयो ) एह  
जिनवर तणी आण पूरण सदा । दाम जिम जगत जन शिरमि धारी  
( अइ० ) ॥ २ ॥ जिनपपद दरस पारम फरमते हुवे । प्रगट निजरूप परि  
णति विज्ञासं । नजी बहिरात्म गिरीसारता नविलहे । अनुपमं आत्मकांचन  
प्रकामं ( अ० ) ॥ ३ ॥ हुवई जिनराज पद जाप रवि किरणतें । तुरत बहु  
दुरित नर निमिरनामं । धन चिदानंद वरकंद धन नविलहे । तीर्थकर चरण  
कमला विज्ञासं । ( अ० ) ॥ ४ ॥ वर विबुध मणिलही काच लखु सकलकों ।  
अहण करिवा कवण कर पसारै । विमलही जिन चरण मरण शुभयोगतें ।  
अवर सुर मरण कुण म्दिय धोरै ॥ ५ ॥ प्रनुतणो पंचकल्याण करै दिनें ।  
प्रगट त्रिहुं लोकमें हुड नजेरौ । नविक देवपाल श्रेणिक प्रमुख जिनन  
मी । बांधीयो गोत्र जिनराजकेरौ ॥ ६ ॥ जेह त्रिणकाज नितनमें जिन  
हरखसुं । नेह नवजल तिरे जनम नोजै । अधिक नव यदिकरै नदपि नि  
श्रय करी । मम बलि अष्ट नव करीय मीजै ( अइयोक० ) ॥ ७ ॥ ॐ ॥  
( काव्यं ) ॥ ॐ ॥ एमोणं विघ्नाण म्दंसणाणं । मयाणादिया मेस जंतूग

णाणं । ज्ञवां ज्ञोज विद्धे यणे वारणाणं । एमो बोहियाणं वराणं जिणाणं  
॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भ्योनमः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ इति प्रथमपदे श्री जिनैंद्र पूजा ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ( २ ) श्री सिद्धपद गुणवर्णन पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( ब्रूहा ) ॥ तनु त्रिभागके घटनते । धन अवगाहन जास ।  
विमलनाण दंसण कीयो । लोकालोक प्रकास ॥ १ ॥ अविनाशी अ  
म्रित अचल । पदवासी अविकार । अगम अगोचर अजर अज । एमो  
सिद्ध जयकार ॥ २ ॥ ❀ ॥ ( राग सोरठ ) कुंदकिरण ससि ऊजलोरे  
देवा ॥ ए चाल ॥ ❀ ॥ अनुभव परमानंद सुंरे वाला । परमात्म  
पद वंदोरे । कर्म निकंदौ वंदिनेंरे वाला । लहि जिनपद चिरनंदोरे  
॥ १ ॥ गगन पए संतर वलीरे वाला । समयांतर अण फरसीरे । द्रव्य सगु  
ण परजायनारे वाला । एक समय विद दरसीरे ॥ २ ॥ एक समय रिजु  
गति करीरे वाला । जयेय परमपद रामीरे । जोगै सादि अनंत एरे वाला  
निरुपाधिक सुख धामीरे ॥ ३ ॥ अखिल कर्ममल परिहरीरे वाला । सिद्ध  
सकल सुखकारीरे । विमल चिदानंद धन थयारे वाला । वर इगतीस गुण  
धारीरे ॥ ४ ॥ उतपन्नता १ वलि विगमतारे वाला २ । ध्रुवता ३ त्रि  
पदी संगैरे । प्रनुमें अनंत चतुक्तारे वाला । सोहै सम क्रम जंगैरे ॥ ५ ॥  
पन्नर जेद ए सिद्धथयारे वाला । सहजानंद स्वरूपीरे । परम ज्योतिमें  
परिणम्यारे वाला । अव्याबाध अरूपीरे ॥ ६ ॥ जिनवर पिण प्रणमें सु  
दारे वाला । एहनें दीक्षा अवसरैरे । तिण प्रनुपद गुण मालकारे वाला ।  
कंठे धरीयै सुपैरे ॥ ७ ॥ हस्तिपाल जवि जगति सूंरे वाला । सिद्ध परम  
पद जजिनेंरे । पद श्री जिनहरषे लह्योरे वाला । परगुण परिणति तजि  
नेंरे ॥ ८ ॥ ( काव्यं ) लोगगजासे परिसंठियाणं । बुद्धाण सिद्धाण मणिं  
दियाणं । निस्सेस कम्मक्खय कारणाणं । एमो सया मंगल धारणाणं ॥ ९ ॥  
ॐ ह्रीं श्री सिद्धेभ्योनमः ॥ २ ॥ इति द्वितीयपदे श्री सिद्ध पूजा ॥ २ ॥

॥ ❀ ॥ अथ तृतीय प्रवचन पद पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( ब्रूहा ) ॥ पद तृतीय प्रवचननमो । ज्यंनजमो संसार । गमो

कुमति परिणमनता । दमो करण प्रयकार ॥ १ ॥ जैसें जलधर वृष्टितें । अखिल फलद विकसाय । तैसें प्रवचन प्रकृतितें । सुप्रपरणित जलसाय । २  
( श्रीराग ) जिनगुणानं श्रुत अमृतं ए चाल ॥ ॐ ॥ प्रवचन ध्यानं सुखकरणं ।  
परिहरिये सहु विषय विकारं । करीये प्रवचन आदरणं ॥ प्रवचन० १ ॥ सप्त  
भोगि जूपित ए प्रवचन । स्यादवाद सुद्राअरणं ॥ सप्तनयात्मक गुणमाणे  
आगर । बोधिवीज उत्पति करणं ॥ प्रवचन० ॥ २ ॥ जैसें अम्रित पान कर  
णतें । हुवई सकल विष संहरणं । तैसें प्रवचन अम्रित पानें । कुमति हला  
हल प्रविशरणं ॥ ३ ॥ प्र० ॥ प्रवचनकों आधेय कहीये । सकलसंवतसु अधि  
करणं । तिण एसंव चतुरविध प्रवचन । एपद अखिल कलुषहरणं ॥ ४ ॥ प्र० ॥  
यदि प्रविजन तुमए चाहवुहै । सुगतिरमाणे जन वशकरणं । करणतीन  
इककरि तदकरीये । प्रवचन पद समरण धरणं ॥ ५ ॥ प्र० ॥ जिनवरजी  
पिण ए तीरथनें । प्रणमें मध्य समवसरणं । प्रवजल तारण तरणि समानं ।  
एतोरथ अशरण शरणं ॥ ६ ॥ प्र० ॥ जिम प्रतेसर संव प्रगतिकरी । ल  
हीयो पुण्य फलाचरणं । चक्रीपद अनुप्रवि वलि शिवपद । लोभकरीय क  
म निरजरणं ॥ प्र० ॥ ७ ॥ नरपति संजव जिनहरषै करि । आराधी प्रवचन चर  
णं । करम निकंदि थया जगदीसर । जिन परमाउर आचरणं ॥ प्र० ॥ ८ ॥  
( काव्यं ) ॥ अणंत संसुद्ध गुणाकरस्स । पुक्खंधया रुग् दिवाकरस्स । अ  
णंत जीवाण दयागिहस्स । एमो एमो संव चउविहस्स ॥ ९ ॥ ( उँ डी श्री  
प्रवचनायनमः ) ॥ ३ ॥ इति तृतीयपदे श्री प्रवचन पूजा ॥ ३ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ चतुर्थ आचार्यपदपूजा लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ( वृहा ) ॥ ॐ ॥ पदचतुर्थ नमीये सदा । सूरिसर महाराज ।  
सौहम जंवू सारिसा । सकल साधु सिरताज ॥ १ ॥ सारण वारण चौयणा  
पनि चौयण करतार । प्रवचन कज विकसायवा । सहस्रकिरण अवतार  
॥ २ ॥ ( राग रामगिरी ) गात्रपुहै जिनमनरंगसुंदेवा ( ए चाल ) ॥ ॐ ॥  
आचारिज पद ध्याईयेरे वाला । तामविमल गुणगाईये ॥ पाईये ( हांरिवाला )  
पाईये ॥ जिनपतिपद जग शिरतिजोरे ॥ १ ॥ आचारिज० ॥ जिनशासन  
जुहवाजनारे वाला । सकलजीव प्रतिपालता ॥ पालता ( हांरिवाला )



पालता ॥ चरण करण मंग चालतारे ॥ २ ॥ आचारिज० ॥ सूरि सकल  
 गुण सोहतारे वाला । सुर नर जन मनमोहता ॥ मोहता ( हंरेवाला ) मो० ।  
 ज्वीयणनै पम्बोहतारे ॥ ३ ॥ आचा० ॥ पंचाचार विराजितारे वाला ।  
 सजल जलद जिम गाजता ॥ गाजता ( हंरेवाला ) गाजता ॥ सूरि सकल  
 शिर गजतारे ॥ ४ ॥ आ० ॥ उपदेशामृत वरसतारे वाला । दुरितताप सह  
 निरसिता ॥ निरसिता ( हंरेवाला ) निरसिता ॥ परमात्म पद फरसतारे ॥ ५ ॥  
 आचा० ॥ धरम धुरंधरता धरारे वाला । जगबांधव जगहितकरा ॥ हितकरा  
 ( हंरेवाला ) हितकरा ॥ स्व परसमय विनु गणधरारे ॥ ६ ॥ आ० ॥ पद  
 श्री जिनहरषे ग्रहोरे वाला । सूरेशर पद तपवह्यौ । तपवह्यौ ( हंरेवाला )  
 तपवह्यौ । पुरुषोत्तम नृप शिव लहोरे ॥ ७ ॥ आ० ॥ ( काव्यं ) कुवादि  
 केली तरु सिंधुराणं । सूरिसराणं मुणि बंधुराणं । धीरत्त संतज्जिय मंदराणं ।  
 एमोसया मंगल मंदिराणं ॥ ८ ॥ ( उँझी श्री आचार्येभ्योनमः ) ॥ ८ ॥ ❀ ॥  
 इति चतुर्थपदे श्री आचार्यपूजा ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पंचम थिवर पदपूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ( दूहा ) ❀ ॥ पुविध थविर जिनवर कहा । द्रव्य ज्ञाव प  
 रकार । लोकिक लोकोत्तर बली । सुनियै जेद विचार ॥ १ ॥ जनकादिक लौ  
 किक थविर । लोकोत्तर अणगार । पंचमपदमें जानियै । पुतीय थविर अधि  
 कार ॥ २ ॥ ( सारंगराग ) ॥ नितनमीयै थविर मुनीसरा । पंचमहाव्रत धार  
 क वारक । कुमति जगत जन हितकरा ॥ १ ॥ नितनमीयै० ॥ २ ॥ संय  
 मयोगे सीदत बालक । ग्लानादिक सह मुनिवरा । एहनें उचित सहाय दी  
 यणतें । वरै एहना दुखजरा ॥ २ ॥ नित० पर्याय वय श्रुति त्रिविध ए थ  
 विरा । बीसरु साठ समोपरा । वयधर समवायादिक पाठक । एहथ  
 विर गुणआगरा ॥ ३ ॥ नित० ॥ तीजैअंग कहा दशथविरा । रतनत्रयी  
 ना गुणधरा । तेइह निरमलजावै ग्रहिवा । जविक सरोज दिवाकरा ॥ ४ ॥  
 नित० ॥ हार जलधि सम अतिह गंजीरा । सुरगिरी गुरु धीरज धरा । शर  
 णागत तारणता धारा । ग्यान विमल जल सागरा ॥ ५ ॥ नित० ॥ श्रुत  
 तप धीरज ध्यान करणतें । द्रव्यादिक ग्यातावरा । तेह स्वरूप रमण थवि

राकक्षा । नहिय धवल केशांकुरा ॥ ६ ॥ नित० ॥ एह थविर पद सेवी जग  
ते । पदमोत्तर वसुधेसरा । पद श्रीजिनहरपै तिण लहीयो । मुनिवर कुमुद  
निशाकरा ॥ ७ ॥ नित० ॥ ( कलश ) सम्मत्त संयम पतित अविजन अ  
हित थिरकरता जला । अवगुण अद्विपित गुणविन्दुपित चंद्रकिरण समुज्ज  
ला । अष्टाधिका दशसहस शीलांगरथ रुचिर धाराधरा । अवसिंधु तारण प्रवर  
कारण नमो थविरमुनी सरा ॥ ८ ॥ ( ॐ क्लीं श्रीस्थविरायनमः ) ॥ ५ ॥ ॐ ॥  
इति पंचमपदे श्रीस्थविरपूजा ॥ ५ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ षष्ठपदे श्री उपाध्याय पूजा लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ( दृढा ) ॥ ॐ ॥ प्रवर नाण दरशण चरण । धारक यतिघ्रम  
सार । समितिपंच त्रिणगुप्तिधर । निरुपम धारजधार ॥ १ ॥ ॐ ॥

( राग जैरव ) ॥ पंचवरणी अंगीरची कुसुमजाती ( ए चाल ) ॥ ॐ ॥  
जावधरी जवजायावंदो विजयकारी । श्रीजवजाय परमपद वंदी । जहो जिनपद  
अतिशय धारी ॥ १ ॥ जाव० ॥ कुमती मदतरु जंजन सिंधुर । सुमतिकंद घन  
अवतारी । अंगहुवाजस जणय जणावे । शिष्यजणी चित हितधारी ॥ २ ॥  
जाव० ॥ सकल सूत्र उपदेश दीयणते । वाचक अति विमलाचारी । जव  
तीजे अम्रित सुखपामे । सुर असुंदर मनोहरी ॥ ३ ॥ जाव० ॥ हय ग  
ज वृष पंचानन सरिपा । करमकंद वर नर वारी । वासुदेव वामव नृप दिन  
कर । विद्यु जंभारि तुलाधारी ॥ ४ ॥ जाव० ॥ जंबू शीतानदि कांचनगि  
रि । चरमजलाधि जयमजारी । एउपमा बहुश्रुतनी जाणो । उत्तराव्ययन  
कहीमारी ॥ ५ ॥ जाव० ॥ अमल पंचविंशति गुणमणि निधि । स  
कल ज्वन जन उपगारी । शंशय निमिर हरण वामरमणि । पाप नाप  
आनपवारी ॥ ६ ॥ जाव० ॥ प्रवर शंख पय जरीयो सोहे । तिमर ग्यान  
चरण चारी । महेंद्रपाल पाठक पद सेवी । जहीयो जिनपद विजितारी  
॥ ७ ॥ जाव० ॥ ( काव्यं ) सच्चोहिदीजं कुरकारणाणं । गुमो गुमो वायग  
वागणाणं । कुबोहिदेतो हरिणेसराणं । विग्घोय संताव पयोहराणं ॥ ८ ॥  
( ॐ क्लीं श्रीउपाध्यायेभ्योनमः ) ॥ ६ ॥ इति षष्ठपदे श्रीउपाध्यायपूजा ॥ ६ ॥ ॐ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सप्तम साधुपद पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जाणें जिनवाणी सरस । स्पादवाद गुणवंत । मुनिकहीयै सिव  
पंथने । साधे साधुकहंत ॥ १ ॥ समतारस जलजीलता । विशदानंद सुरूप  
तिण पांम्यो पद सप्तमें । नमोनमों मुनिचूप ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

( राग गुंममिश्रित ग्रीम म० ) मेघवरसेजरी पुष्पवादल करी ए चाल ॥  
भक्तिधरि सातमें पद भजो मुनिवरा । सुखकरा विजित इंद्रिय विकारा ।  
गुण सत्तावीस नृपणकरी शोजिता । होजिता विकट क्रम सुभट सारा ॥ १ ॥  
भक्ति० ॥ चरणसत्तरि परम करणसत्तरि धरा । शिवकरण नाण किरिया प्रधा  
ना । प्रतिदिनें दोष आहारना वरजिता । सप्तचाळीस यतिधर्म निधाना ॥ २ ॥  
भक्ति० ॥ मदनमद भंजता कुमति जन गंजता । भक्तजन रंजता ह्मांतिधरी  
या । सुमति धरिया सदा चरण परीयाजना । तारीया ग्यान गंजीर दरीया  
॥ ३ ॥ भक्ति० ॥ त्रिणमणी समगिणें चतुरविध धरमना । परम उपदेश दा  
यक उदारा । बहिर भ्यंतर निदा वारविध अतिकठिन । तपतपै सकलजीउ  
अभयकारा ॥ ४ ॥ भक्ति० ॥ बलि अठावीस मनहरण गुण लबधि  
निधि । सातमें षष्ठ गुणठाण वसीया । सप्त भयवारका प्रवर जिन  
आगन्या । धारका स्वगुण परिणमन रसीया ॥ ५ ॥ भक्ति० ॥ पंचपर  
माद कळोलता कुलमहा । पारसंसार सागर जिहाजा । विविध नववाफि  
युत शीलव्रतके धरा । मधुर निजवाणि रंजित समाजा ॥ ६ ॥ भक्ति० ॥  
कोफि नवसहस थुणीये महा मुनिवरा । वीरभद्र जिमकरीय साधुसेवा ।  
परमपद जिनहरण सुग्रहों तसुतणा । चरणकज युगनमें सकलदेवा ॥ ७ ॥  
भक्ति० ॥ ( काव्यं ) संतजिया सेस परीसहाणं । निस्सेस जीवाण दया गि  
हाणं । सन्नाण पझाय तरुवणाणं । एमोणमो होउ तबोधणाणं ॥ ८ ॥  
( ॐ ह्रीं श्री सर्व साधुभ्योनमः ) ॥ ७ ॥ इति सप्तमपदे श्री साधु पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अष्टम ज्ञानपद पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ विमलनाण खर किरण किय । लोका लोक प्रकाश ।  
जीतलई निजतेजसें । जिन अनंत रविजास ॥ १ ॥ सहु संशय तम अपहरे ।  
जय जय नाणदिणंद । नाण चरण समरण थकी । विलय होय दुखदंद

॥ २ ॥ ॐ ॥ ( राग घाटो ) मेरो मन बसकर लीनो । ए चाल ॥ ॐ ॥  
 ज्ञावे ग्यान वंदन करीये । शिवसुख तरुंद । ज्ञावे ॥ जिनचंद्र पद  
 गुण धरीये । वरीये परम आनन्द ॥ १ ॥ ज्ञावे ॥ मतिनाण श्रुत २  
 पुनस्वधि ३ । मनपर्यव ४ जाण ॥ ज्ञावे ॥ लोका लोकजाव प्रकाशी ।  
 वर केवल नाण ५ ॥ ज्ञावे ॥ २ ॥ पंच ए इकावन ५१ जेदे । क  
 हो जिनवर जान ॥ ज्ञावे ॥ जगजीव जन्ता जेदे । ग्यानामृत रसपान ॥  
 ज्ञावे ॥ विणग्यान कीधी किरिया । होय तसुफल ध्वंस ॥ ज्ञावे ॥  
 प्रह्लाजक प्रगट ए करीये । जिम पय जल हंस ॥ ज्ञावे ॥ ४ ॥ वरनाण स  
 हितसु किरिया । करी फल दातार ॥ ज्ञावे ॥ हुवो ग्यान चरण रसीला ।  
 लहो जवजल पार ॥ ज्ञावे ॥ ५ ॥ ग्यानानंद अमृतपीधो । जस्तेसर म  
 हाराय ॥ ज्ञावे ॥ तिणसें अमृतपद लीधो । सुरपति गुणगाय ॥ ज्ञावे ॥  
 ॥ ६ ॥ सेवीग्यान जयत नरेश । जये जिन महाराज ॥ ज्ञावे ॥ सोहैग्यान  
 ए त्रिचुवनमें । सहपरि सिस्ताज ॥ ज्ञावे ॥ ७ ॥ ( काव्य ) ठहव प  
 जाय गुणकरस्स । सथापयासी करणोद्धरस्स । मिहत्त अन्नाण तमोहरस्स ।  
 णमो णमो नाण दिवायरस्स ॥ ८ ॥ ( उँ क्षी श्रीज्ञानायनमः ) ॥ ८ ॥ ॐ ॥  
 इति अष्टमपदे श्रीज्ञानपूजा ॥ ८ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ नवमी दर्शन पदपूजा लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ( दूहा ) ॥ ॐ ॥ दर्शण आश्रय धर्मनो । एहना पद उप  
 मान । दर्शण विण नहि चरणविद । उत्तराध्ययने जान ॥ १ ॥ जिणदर  
 शण फरस्यो जजो । अंतर महुरति मान । अरथपुग्गल परियदरहे । तसु  
 संसारवितान ॥ २ ॥ ॐ ॥ ( राग कामोद ) चंपक केतक मालतीए । अइ  
 यो मालती ए ॥ ( ए चाल ) ॥ ॐ ॥ जिनदरमण सुज मनवस्यो ए । ( अइयो  
 मनवस्यो ए ) । उपजत परम आनंद । जिनदर्शन दर्शन दीये । विमलना  
 ण तरुंद ॥ १ ॥ दर्शण मोहरिष्ट जीर्नाया ए ॥ ( अइयो ) वर दर्शण  
 उत्तमंत । दर्शण घट परगट हुआ । जवीयाण जव नजमंत ॥ २ ॥ जिनव  
 रदेव सुगुरु मनी ए । केवली कथित जिनधर्म । नानतत्त्व परिणतिरमें । ने  
 दर्शण करै शर्म ॥ ३ ॥ जिनप्रनु वचनो परि सदा ए ॥ ( अइयो ) ॥ धिर

शरदहण धरंत । इण लक्षणें जानीयै । समकितवंत महंत ॥ ४ ॥  
 इग, डुग, ति, चौ, शर, दश, विहा ए । ( अइयो० ) सतसठि ६७ जे  
 द विचार । वलि परीति समकित जणयो । द्रव्य जाव परकार ॥ ५ ॥ द्रव्यें  
 जिनदरशण कह्योए । जावै समकित सार । द्रव्यत दरशण जावतो । दरशण  
 कारणधार ॥ ६ ॥ द्रव्य दरश यदि गतवलीये । तदपि उत्तर हितकार ।  
 शय्यंजव जिनदरशणें । पायो दरशण सार ॥ ७ ॥ दरशण विण किरिया हता  
 ए । अंकविना जिम बिंदु । वलि हणीयो विण चंद्रिका । वासरमें जिम  
 इंदु ॥ ८ ॥ हरिविक्रम नृप सेवतोए । दरशण पद आनिराम । पद श्रीजिन  
 हरषै धरयोए । वधतै शुभपरिणाम ॥ ९ ॥ ( काव्यं ) अणंतविघ्नाण सुका  
 रणस्स । अणंत संसार विदारणस्स ॥ अणंत कम्मावलि धंसणस्स । एमो  
 एमो निम्मल दंशणस्स ॥ १० ॥ ( नै ॐ श्री दर्शनायनमः ) ॥ ९ ॥ ❀ ॥  
 इति नवमपदे श्रीदर्शनपूजा ॥ ९ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ( १० ) विनयपद पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ ❀ ॥ विनय जुवन रंजन करै । विनयै जस विसतार ।  
 विनय जीउ नूषित करै । विनयै जय जय कार ॥ १ ॥ विनयमूल जिनधर्म  
 नो । विनय ग्यान तरु कंद । विनय सकलगुण सेहरो । जय जय विनय  
 सजंद ॥ २ ॥ ( राग सामेरी ) पूजोरीमाई जिनवर ( ए चाल ) ॥ ❀ ॥  
 व्यावोरीमाई विनय दशमपद ध्यावै । पंच जेद, दश विध, तेरस वि  
 ध । वावन जेद गणेशै ॥ ध्या० ॥ वासठ जेद कहा आगममें । विन  
 यतणा सुविसेसै ॥ १ ॥ ध्या० ॥ तीर्थकर १ सिद्ध २ कुल ३ गण ४ सं  
 वा ५ । किरिया ६ धर्म ७ वरनांणा ८ ॥ ध्या० ॥ नांणी ९ आचारिज  
 १० मुनिधविरा ११ । पाठक १२ गणि १३ गुणजाणा ॥ २ ॥ ध्या० ॥  
 ए अरिहादिक तेरसपदनो । विनयकरे जेजावै ॥ ध्या० ते तीर्थकरपद अ  
 नुभविनै । अमृतपद सुखपावै ॥ ३ ॥ ध्या० ॥ जिमकांचनमें मृदुगुण ला  
 । नहीय कालिमा पावै । ध्या० ॥ तिणए सकल धातुमें उत्तम । नाम क  
 ल्याण कहावै ॥ ४ ॥ ध्या० ॥ तिमविनयीमें ते मृदुतागुण । कुमति क  
 ठिनता नासै ॥ ध्या० ॥ कृष्णादिक लेख्यानी मलीनता । जाये विनयगुण जा

से ॥ ५ ॥ ध्या० ॥ दीयसहस्र अरु अधिक चिहुत्तर । देववंदन निरधारो ॥  
 ध्या० ॥ सुखंदन विधि च्यारसो वाणु । जेदकरी उरवारो ॥ ६ ॥ ध्या० ॥  
 तीर्थकरादिकनो मनरंगो । विनय चरण शुभध्यायो । धननामा नवि नमि जि  
 नहरणे । तीर्थकर पद पावो ॥ ७ ॥ ध्यावो० ॥ ( काव्य ) आणंदिया से  
 स जगज्जणस्स । कुंदिंदु पादा मलता चणस्स । सुधम्म उत्तस्स दयासय  
 स्स । एमो एमो श्रीविनयाजयस्स ॥८॥ ( उँ की श्री विनयायनमः ) ॥ १० ॥  
 इति दशमपदे श्रीविनयपूजा ॥ १० ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ ( ११ ) चारित्र पदपूजा लि० ॥ ॥

॥ ॥ ( दृहा ) ॥ ॥ इग्यारम पद नितनमुं । देश सख चारित्र ।  
 पंक मलिनता दूरकरि । चेतन करे पवित्र ॥ १ ॥ एह चरण सेवन करे ।  
 रंकथकी सुरराय । तीन जगतपति पद दीये । जसु सुर नर गुणगाय ॥ २ ॥  
 ( राग मारंग ) बावना चंदन घसि कुमकुमा ( ए चाल ) ॥ चरण शरण  
 सुख मन हरयो । सुखकरण हरण वन पापए । ( हांहोरे वाला ) । एह चरण  
 जलधर हरे । अग्यान तरुण तर तापए ॥ १ ॥ हां० ॥ आठ कषाय निवा  
 रतां । देशविरति प्रगट हुवे लागए ॥ हांहोरे० ॥ बार कषाय निवारीया । सम  
 विरतिलहे गुणवामए ॥ २ ॥ हां० ॥ उगवामर सेव्यो थको । शुभ सखमं  
 वर चारित्रए ॥ हां० वाला ॥ परमानंद धन पददीये । सुखलोक जनित सुख  
 चित्रए ॥ ३ ॥ हां० वाला ॥ जब जय तस्माण उदिवा । एमंयम निशित कुमार  
 ए ॥ हां० वाला ॥ ग्यान परंवर करण्ठे । अभिनपदनो हिनकारए ॥ ४ ॥  
 हां० वाला ॥ चरण अनंतर करण्ठे । निखाण तणो निधारए ॥ हां०  
 वाला ॥ भगवविरति सुखचरणमैं । पामैं अरिहंत पदमारए ॥ ५ ॥ हां० वा  
 ला ॥ वरम चरण परजायमैं । अनुत्तरसुख अतिक्रम होयए ॥ हां० ॥  
 वाला ॥ मनस्सेद चारित्रना । कर्हाया जिनआगम जोयए ॥ ६ ॥ हां० वाला ॥  
 देशधी मम मंयम विपे । उक्ताजना अनंतरुण थायए ॥ हां० वाला ॥  
 अस्सणदेव मेवी चरणमैं । प्रये जगगुरु जिन महारायए ॥ हां० ७ ॥ ( काव्य )  
 कम्मोघ केतार दवानजस्स । महोदयानंद जयाजयस्स । विन्ताण पंकेरुह



काण्णस्स । एमोचरित्तस्स गुणापणस्स ॥ ८ ॥ ॐ ङ्गी श्री चारित्रायनमः  
११ ॥ इति एकादशपदे श्री चारित्र पूजा ॥ ११ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ( १२ ) ब्रह्मचर्य पद पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ) ॥ ❀ ॥ सुरतरु सुरमणि सुरगवी । कामकलश अवधार ।  
ब्रह्मचर्य इणसम कह्यो । कामित फल दातार ॥ १ ॥ जिम जोतिषीयां रज  
निकर । सुरगणमें सुरराय । तिम सहुव्रत शिर सेहरो । ब्रह्मचारज कहिवा  
य ॥ २ ॥ ( राग ख्याल ) जला प्रचुगुण वालाहो ( ए चालमें ) ॥ ❀ ॥ जव  
जय हरणा, सिवसुख करणा, सदा जजोब्रह्मचारा ( मेंवारी जानं ) सदाजजो०  
हो ॥ जव० ॥ शील विबुध तरु पालन करिवा । कहि जिनवर नववाराहो ।  
दिव्योदारिक करण करावण । अनुमति विषय प्रकाराहो ॥ १ ॥ जव०  
॥ त्रिकरण जोगै ए परिहरीयै । जवीयै जेद अढाराहो ॥ जव० ॥ क  
नक कोमिनो दानदीयै नित । कनकचैत्य करताराहो ॥ ज० ॥ २ ॥ एह  
थी ब्रह्मचारज धारकनो । फल अगणित अवधारा हो ॥ ज० ॥ सहस चौ  
रासी श्रमणदानफल । ब्रह्मव्रत फल समसाराहो ॥ ज० ३ ॥ विजयसेठ वि  
जयासेठानी । उजयपक्ष्य ब्रह्मधाराहो ॥ ज० ॥ जये सुदर्शन सेठ शीलसे  
सुगतिबधू जतरा हो ॥ ज० ४ ॥ सहस अढार शीलांग रथधारा । धारिकरै  
निसतारा हो ॥ ज० ॥ सिंहादिक वसुजय तरु जंजन । कुंजर मद मतवारा  
हो ॥ ४ ॥ ज० ॥ कलहकारि नारदीरिषि सरिषे । तरया जवजलधि अपारा  
हो ॥ ज० ॥ पञ्चक्खाण विरति नहि एहमें । ए ब्रह्मव्रत उपगारा हो । ज०  
॥ ५ ॥ सकल सुरासुर किन्नर नखर । धरीय जगति हितकाराहो ॥ ज० ॥  
ब्रह्मचारज व्रत धर नखरके । प्रणमें चरण उदारा हो ॥ ज० ६ ॥ दशम  
अंग जणियो नखर्मा । नरपति गुण आधारा हो ॥ ज० ॥ ब्रह्मचारिज व्रत पा  
लि लह्योपद । जिनहरषे जयकारा हो ॥ ज० ॥ ७ ॥ ( काव्यं ) सग्गापव  
ग्गग्ग सुहप्पयस्स । सुनिम्मज्जाणं गुणालयस्स । सच्चव्याचूमण जूसणस्स  
णमोहि शीलस्स अदूसणस्स ॥ ८ ॥ ( ॐ ङ्गी श्री ब्रह्मचर्यायनमः ) ॥ १२ ॥  
इति द्वादशपदे श्री ब्रह्मचर्य पूजा ॥ १२ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ( १३ ) किरियापद पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दृष्टा ) ॥ ❀ ॥ करम निरजरा हेतुहै । प्रवर क्रिया गुणखाण  
जिनशासननी स्थिति रही । किरिया रूपै जाण ॥ १ ॥ जुवनमांहि किरियाम  
ही । सकलशुद्ध विवहार । प्रवरनाण दूरक्षण तणो । शुधकिरिया शिणगार  
॥ २ ॥ ( राग मालवी गौमी ) ॥ सब अगतिमथन सुदारधूप ( ए चालमें )  
शुजध्यान किरिया हृदय धरिनें । धम सुकल जर धारे । आर्त्त रोद्रनी हेतु  
किरिया । अशुज पाणवीस वारे ॥ ३ ॥ शु० ॥ ग्यानवंत अशख जटहे । कि  
या शख वतंसरे । सुजटनाणा क्रियाशखे । करयक्रम अरिध्वंसरे ॥ ४ ॥ शु० ॥  
ग्यानमेती वदे शिव यदि । तेरमें गुणठाणरे । एकनाणें तद जिणेश्वर । कि  
सुनलहे निरवाणरे ॥ ५ ॥ शु० ॥ जिनप शैलेशी करण करि । चवदमें गुण  
ठाणरे । सरवमंवर चरण करणें । जहे पद निरवाणरे ॥ ६ ॥ शु० ॥ ए अ  
नंतर अमृतकारण । कहाँ जिनवर जाणिरे । सरव मंवर चरण किरिया । न  
शिव इणविनु जाणिरे ॥ ७ ॥ शु० ॥ एकनाणें इक क्रियामें । नशिव वितरण  
शक्तिरे । कहै जिनवर उजययांगे । जहे जविजन मुक्तिरे ॥ ८ ॥ शु० ॥ गर  
जमिश्रित सरस भोजन । अशुज परिणति धारे । अमृतसंयुत तेहभोजन  
रुचिर परिणति कारे ॥ ९ ॥ शु० ॥ ग्यानसहिता तेमकिरिया । कर्त्तिकरे नि  
गतारे । ग्यानविन किरियानदीपे । मनोमन फलसाररे ॥ १० ॥ शु० ॥ ग्या  
नपरिणति र्मी किरिया । तेह किरिया सारे । जयो हरिवाहन जिनेसर ।  
सुद्ध किरिया धारे ॥ ( काव्य ) विशुद्ध सदाण विवृणणस्म । सुजडि संप  
नि नृपोषणस्म । णमो सदाणंत गुणपदस्स । णमोणमो सुद्धक्रिया पदस्स ।  
॥ १० ॥ ( उँ ईं श्री क्रियायै नमः ॥ १३ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
इति त्रयोदशपदे श्री क्रियापद पूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ( १४ ) तपपद पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दृष्टा ) ॥ ❀ ॥ शमताम्य सुत तप रुचिर । ज्ञाणियो जिन  
जगन्नांन । शिव सुसुख चंदन फलद । नंदन विपिन समान ॥ १ ॥ सु  
घन करम कानन दहन । करन विमल तपजान । विपिन धूमधेतन समो ।  
जय तप सुगुण निधान ॥ २ ॥ ( राग कल्याण ) नेरी पूजावनी हे रममें

( ए चाल ) ॥ मेरीलगी लगन तप चरणें ॥ सकल कुशलमें प्रथम कुशलए ।  
 छुरित निकाचित हरणें ॥ १ ॥ मेरी० ॥ जैसें चक्रवाककी अरुणें । चकोरकी  
 हिमकर किरणें ॥ मेरी० ॥ जैसें गणधरकी जिनचरणें । चातककी जलधरणें ॥ २ ॥  
 मे० ॥ जिनवर पिण तदञ्जव शिवजाणें । त्रिण चउ नाण सुकरणें ॥ मे० ॥  
 तदपि सुकोमल करण चरणें । ठवय कठिन तप करणें ॥ ३ ॥ मे० ॥ क  
 पटसहित तप चरण धरणें । वांछित फल नवितरणें ॥ मे० ॥ नितए दं  
 न रहित तपपदके । सुरपति गण गुण वरणें ॥ ४ ॥ मे० ॥ पीठ महापी  
 ठ मुनि मल्लीजिन । पूरव ञव तप सरणें ॥ मे० ॥ रहीया तदपि कपट  
 नवि ठंड्यो । जये स्त्री गोत्रा चरणें ॥ ५ ॥ मे० ॥ दृढप्रहारि पांश्व घन  
 करमी । ठंड्या करमा वरणें । तपसें शोजलही त्रिनुवनमें । केवल कमला  
 जरणें ॥ ६ ॥ मे० ॥ लाख इग्यारह असीहजारा । पंचसय शर दिन खिरणें ।  
 मासखमण करि नंदन मुनिवर । पांम्यो फल शिव धरणें ॥ ७ ॥ मे० ॥ त  
 पकरीयो गुणरयण संवत्तर । खंधक समता दरणें । चवदसहस मुनिमें क  
 ह्यो अधिको । धनों तप आचरणें ॥ ८ ॥ मे० ॥ बाहिर भ्यंतर जेदै एत  
 प । वारजेद अधिकरणें । वसिनें कनककेतु पांम्योपद । जिनहरषे जवतर  
 णें ॥ ९ ॥ ( काव्यं ) लक्ष्मी सरोजा वलिता वणस्स । सरूव संलग्ग सुपा  
 वणस्स । अमंगला नोकुह छुदवस्स । नमो नमो निम्मल सत्तवस्स ॥ १० ॥  
 ( उँझी श्रीतपसे नमः ) ॥ १४ ॥ ❀ ॥ इति श्रीतपपूजा ॥ १४ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ( १५ ) गौतम गणधर पदपूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ ❀ ॥ गौतमगणधर पनरमें । पदसेवो सुप्रसन्न । व  
 लि सहु जिन गणधर नमो । चवदैसे वावन्न ॥ १ ॥ दान सकल जग वस  
 करे । दानहरे छुरितारि । मन वांछित सहु सुख दीये । दान धरम हितकारि  
 ॥ २ ॥ ( राग सोरठ ) ॥ मेंतेरी प्रीति पीढानीहो प्रनुमें ( ए चाल ) पनरम  
 पद गुनगाना हो जवी । पनरमपद गुणगानाहो ॥ आं० ॥ जावधरी करीये  
 मनरंगे । परम सुपात्रे दानाहोजवी ॥ पनर० ॥ १ ॥ पात्र कछ्या द्रव्य  
 जाव छुजेदै । द्रव्य लठ्ठन ए जाना हो जवी ॥ पन० ॥ सर्वोत्तम उत्तम  
 ह्वै जाजन । रत्न कनक रूपाना हो जवी ॥ २ ॥ पनर० ॥ मध्यमपात्र

कहीजै एहवा । ताम्रधातु निपजाना होजवी ॥ पनर० ॥ पात्र लोहादिक अ  
पर जातिना । तेह जघन्य कहाना हो जवी ॥ पन० ॥ ३ ॥ ज्ञावपात्रनो  
जघन कहीयै । सुनीयें सुगुण सयाना हो जवी ॥ पन० ॥ पंचम चरण धरै  
बलिवरतै । द्वीणमोह गुणठाना होजवी ॥ पन० ॥ ४ ॥ स्तनपात्र सम ते  
सर्वोत्तम । पात्र कहा जिनजानाहो जवी ॥ प० ॥ प्रवरनाण किरियाधर सु  
निवर । लाजाजात्र समांना हो जवी ॥ प० ॥ ५ ॥ ते कांचन जाजन सम  
कहीया । जवजल तारने यांना हो जवी ॥ पन० ॥ सुधमन द्वादशव्रत दर  
शनधर । तारपात्र सम जाना हो जवी ॥ पन० ॥ ६ ॥ सुध समकित धर  
श्रेणिक परमुख । रक्षा अविरत गुणठाना हो जवी ॥ प० ॥ ताम्रपात्र सम  
एहनें कहीयै । जवी गुण मणि खाना हो जवी ॥ पनर० ॥ ७ ॥ अपर सकल  
जन मिथ्यादृष्टी । लोहादिपात्र गिनाना होजवी ॥ पन० ॥ जिनशासन  
रंगै रंगाना । वाचंयम सुप्रमाना हो जवी ॥ पन० ॥ ८ ॥ एहनें दानदीये शि  
व लहीयै । एह सुपात्र पहिचाना हो जवी ॥ पन० ॥ पंचदान, दसदान, नि  
करमै । अन्नय सुपात्र महिराना हो जवी ॥ पन० ॥ ९ ॥ नखाहन सुजपात्र  
दानतै । जये जिनहरष निधानाहो जवी ॥ पन० ॥ सालिजद्र बलि सुरसुख  
लहीयो । सुरनर करय बखाना हो जवी ॥ पनर० ॥ १० ॥ ( काव्यं ) अ  
शंत विन्नाण विजाकरस्स । दुवालसंगी कमलाकरस्स । सुलब्धासा जरगो  
यमस्स । एमो गणाधीसर गोयमस्स ॥ ११ ॥ ( नै ज्ञी श्री गौतमाय नमः )  
॥ १५ ॥ इति पंचदशपदे सुपात्रदानाधिकारे श्री गौतम पूजा ॥ १२ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ( १६ ) वेयावच्च पदपूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ ❀ ॥ सोलमपदमें जानीये । वेयावच्चविधान । अ  
खिल विमलगुण मणितणो । सोहै प्रवरनिधान ॥ १ ॥ जिन, सूरि, पाठक, सु  
नी । बालक, वृद्ध गिलांन । तपसि, चैत्य, संघनो, करौ । वेयावच्च प्रधान  
॥ २ ॥ ( राग ) बालोह्वारो कव मिलसी मन मेखू ( ए चाल ) सेवो जाई  
सोलमपद सुखकारी । श्रीजिनचंद्र प्रमुख दश पद नो । करुन वेयावच्च  
जारी ॥ सेवो० ॥ श्रीतीर्थकर त्रिजुवन शंकर । अवर केवली हारी । मन  
पर्यव धर अवधिनाण धर । चन्द्र पूरव श्रुतधारी ॥ २ ॥ सेवो० ॥ दशपृ

वीं उत्कृष्ट चरणधर । लब्धिवंत अणगारी । एजिन कहीयै इनवंदनतैं ।  
 जविहुवै जिनअवतारी ॥ ३ ॥ से० ॥ जिनमंदिर बिंव करण जरावै । पूजकरै म  
 नुहारी । बेयावच्चकही ए जिनकी । करीयै जवजल तारी ॥ ४ ॥ से० ॥  
 आचारज परमुख नवपदको । बेयावच्च विजितारी । जगतिपूर्व वस्त्रौषध  
 अन्नजल । देवै गुण विस्तारी ॥ ५ ॥ से० ॥ पंचसय मुनिनी करीय बेयावच्च  
 पूरवज्रव व्रतचारी । जस्त बाहुबल चक्रीपदनुज । बजलह्यो वरी शिवना  
 री ॥ ६ ॥ से० ॥ नंदिषेण सुलसा मुनिजनकी । करीय बेयावच्च सारी ।  
 तिणसैं सरगलोकमें डुयकी । जईय प्रसंसाजारी ॥ ७ ॥ से० ॥ इत्यादिक सो  
 लमपद उधरै । बहुलजव्य क्रमजारी । तिणसैं इणबेयावच्च पदकी । वारी  
 जानें वारहजारी ॥ ८ ॥ से० ॥ नृपजीमूत केतु सोलमपद । सेवीजयेदुख  
 वारी । श्रीजिनहरष धरी हरिवंदत । शरणागत निसतारी ॥ ९ ॥ ( काव्य )  
 मणुणसबा तिसयासयाणं । सुरासुराधीशर वंदियाणं । रवींदुर्बिबा मल सगु  
 णाणं । दयावणाणं हि नमोजिणाणं ॥ १० ॥ ( ॐ ह्रीं श्रीजिनेभ्यो नमः ) ॥  
 ॥ १६ ॥ ❀ ॥ इति षोडशपदे श्रीवैयावृत्यपूजा ॥ १६ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ ( १७ ) समाधिपूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ ❀ ॥ सतरमपदमें सेवीयै । सहु सुखकरण समाधि ।  
 जिण सेवनतैं जविकनो । गमें व्याधि अरुआधि ॥ १ ॥ ब्रह्मनगर पथि  
 विचरतां । वर पाथेय समान । ए समाधिपद जानीयै । सुरमणि किय हैरान  
 ॥ २ ॥ वाजै तेराविबुआ ( इस कैरवारी चालमें ) ॥ ❀ ॥ मेरोरे समाधि चरण  
 चित वसीयो ॥ चर० ॥ तसुगुण समरणि कियो मनुवसीयो ॥ मे० ॥ सकल  
 जगत जन जिनकुं स्तवतुहै । अनुजव रंगै अतिह विकसीयो ॥ १ ॥ मे० ॥  
 द्रव्यत जावत डुविध समाधि । सुरतरु मानुं नित नुवन विलसीयो । मे० ।  
 अशन वसन सलिलादिक जकी । करय संवनी करुणा रसीयो ॥ मे० ॥ २ ॥  
 द्रव्यसमाधि प्रथम एमुनिये । कह्यो जिन लोकालोक दरसीयो ॥ मे० ॥  
 सारण वारण चोयण प्रमुखे । पतित सुथिरकरै भ्रममें हरसीयो ॥ मे० ॥ ३ ॥  
 जावसमाधि दुतीयए कहीयै । जोकरै सो जिनचरण फरसीयो ॥ मे० ॥ सकल  
 संघकीं जो उपजावत । डुविध समाधि डुरित तसु नसीयो ॥ ४ ॥ मे० ॥ सु

मति पंच त्रिण गुपति धौनित । सुरगिरिवरनो धीरज करसीयो ॥ मे० ॥  
जगतजंतु अघतपति हरणकुं । अनुजव अम्रित धार वरसीयो ॥ ५ ॥ सुक  
ल अनिल करमेंधन दाहत । जिणसें परगुण परिणति खिसीयो ॥ मे० ॥ ए  
मुनि तरणि तेज सम दीपत । अमृत सुखामृत पान तिरसीयो ॥ ६ ॥ मे० ॥  
इणपदमें अैसे मुनिजनके । समरणतें हुय जग अवतसीयो ॥ मे० ॥ एण  
दसेवी नृपतिपुरंदर । जये जगपति जिनहरष उवसीयो ॥ ७ ॥ ( काव्यं )  
सर्विंदिया पार विकार दारी । अकारणा सेस जणोवगारी । महाजवातंक ग  
णापहारी । जयोसदा सुद्ध चरित्त धारी ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीचारित्रधारिभ्योनमः  
॥ ❀ ॥ अथ ( १८ ) अपूर्व श्रुतग्रहण पदपूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ ❀ ॥ श्रुत अपूर्व ग्रहिवो सदा । अष्टादश पदमां  
हि । इणपद सेवक जनतणा । सहु संकट जय जांहि ॥ १ ॥ जैसी कुमति  
विशुद्धता । घोर तपैकरि होय । तत् अनंत गुणि शुद्धता । सुग्यानीकी जोय  
॥ २ ॥ ❀ ॥ दिलदार यार गबरू । राखुरे धुंधटदा पटमें ( ए चाल ) ॥ ❀ ॥  
जिनचंद्र ग्यान तेरा । होजीतेरे विकट जवजटनें ( आं० ) ॥ सदपूर्व ग्यान  
धरणा । वितरै जिनेंद्र चरणा । करि सर्व कर्म हरणा ॥ १ ॥ जीते० । ( जि  
नचंद्र० ) ॥ जगमें महोपकारी । जवसिंधु वारितारी । कुमतां धता बिदारी ॥ २ ॥  
जी० ॥ जि० ॥ सहुजावनो प्रकासी । परमस्वरूप जासी । समकित्त स  
झवासी ॥ ३ ॥ जी० ॥ जि० ॥ विणुहेतु विश्वबंधू । गुणरत्न राशिसिंधू ।  
शमता पीयूष अंधू ॥ ४ ॥ जीते० ॥ जिन० ॥ स्याम्राद पट्टगाजै । नयसप्तसै  
विराजै । एकांतपट्ट जाजै ॥ ५ ॥ जी० ॥ जि० ॥ लहि तीर्थ पावतारा । इणसें  
जिनेंद्रसारा । किया जव्यके उधारा ॥ ६ ॥ जी० ॥ जि० ॥ पद सेविए नरिंदा ।  
जये सागरादि चंदा । जिनहर्षके समंदा ॥ ७ ॥ जी० ॥ जि० ॥ ( काव्यं )  
सुद्धक्रिया मंमल मंमनस्स । संदेह संदोह विखंमनस्स । मुत्ती उपादान सु  
कारणस्स । नमो ही नाणस्स जयो धणस्स ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीज्ञानाय  
नमः ॥ १८ ॥ ❀ ॥ इति श्रीअपूर्वश्रुत ग्रहणरूपा ज्ञानपूजा ॥ १८ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ( १९ ) श्रुतपद पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ ❀ ॥ पाप ताप संहरण हरि । चंदन सम श्रुतसार ।



तत्त्वस्मरण कारण करण । अशरण शरण नुदार ॥ १ ॥ इगुनवीस पदमें ऋजु ।  
जिनवर श्रुतनी ऋक्ति । इन पद वंदनसें लहै । अमल नाण युत मुक्ति ।  
॥ २ ॥ ( राग ) ब्रजवासी कांन तें मोरी गागर ढोरीरे ( अपर ) आजआयोरे  
जुहाह । जीवमानाच जिणंद आगै ( इस चालमें ) ॥ ❀ ॥ ऋविजन श्रुत  
ऋक्ति चरणशरण नर धरीयैरे । ए श्रुत ऋक्ति सुमंगल माल । विमल के  
वल कमला वरमाल ॥ ऋविजन० ॥ १ ॥ सकल द्रव्य गुणगण परयाय । प्र  
गट करण एश्रुत मनत्राय ॥ ऋवि० ॥ अतुल अनंत किरण समवाय ।  
धरण तरणिगण सम कहिवाय ॥ ऋ० ॥ २ ॥ एश्रुत कुमति युवतिनें संग ।  
अगणित रमणितणो करैरंग ॥ ऋवि० ॥ अरथै प्राण्यो श्री जिनराज । सूत्रै  
गणधर मुनि सिरताज ॥ ऋवि० ॥ ३ ॥ ए श्रुतसागर अगमअपार । अनंत  
अमलगुण रयणाधार ॥ ऋवि० ॥ ऋव ऋय जलनिधि तरण जिहाज । निरु  
णि मगनऋई सकल समाज ॥ ऋ० ॥ ४ ॥ ऋवकोटी लागि तपकरि जीव ।  
अग्यानीकरै जितनी सदीव ॥ ऋवि० ॥ करम निरजरा तितनी होय । झा  
नीकै इकखिणमें जोय ॥ ऋवि० ॥ ५ ॥ एक सहस कोमि १००००००००००,  
ठससय कोमि ६००००००० । चतुरतीस कोमि ३४००००००००,  
अह्वर जोमि ॥ ऋवि० ॥ अरुसठ लाखरु ६८००००० सात हजार ७००० ।  
अरुसय ८०० असीय ८० प्रमिति चितधार ॥ ( १६०३४६८७  
८८० ) ऋवि० ॥ ६ ॥ इतने वरणसें इकपद होय । एक श्लोकका गणितए  
जोय ॥ ऋवि० ॥ इकपदको परिमाण एजाण । इणपदसें आगम परिमाण ॥  
ऋवि० ॥ ७ ॥ तीन कोमि ३००००००० अरु अडसठ लाख ६८०००००  
सहस वयालीस ४२००० एपदत्राख ॥ ऋ० ॥ इतने पदमें अंग इग्या  
र । केरी गणना ऋवि चितधार ॥ ऋ० ॥ ८ ॥ वारम दृष्टिवादको मान ।  
असंख्यात पदको पहिचान ॥ ऋ० ॥ इणको चउदपूरव इकदेश । इसको  
पारलह्यो है गणेश ॥ ऋ० ॥ ९ ॥ एह पुवाजस अंग नुदार । एहनी जईयै नित  
वज्रीहार ॥ ऋ० ॥ एहनी द्रव्य जाव बहुऋक्ति । करीयै धरीयै जिनपद युक्ति  
॥ ऋवि० ॥ १० ॥ रत्नचूरु नृप सुखमाधार । जिन श्रुतऋक्ति करी हितकार  
॥ ऋ० ॥ ऋयै जिनहरप परमपददाय । जिनके सुर नर पति गुनगाय ॥ ऋ० ॥

॥ ११ ॥ ( काव्यं ) अन्नाणवल्ली वन वारणस्स । सुबोहि बीजांकुर कारण  
स्स । अणंत संसुद्ध गुणालयस्स । एमो दयामंदिर सद्बुयस्स ॥ १२ ॥ ( ॐ  
क्षी श्री श्रुतायनमः ॥ इति श्री श्रुतपूजा ॥ १९ ॥ \* ॥

॥ \* ॥ अथ २० तीर्थप्रज्ञावन पूजा ॥ \* ॥

॥ \* ॥ ( दूहा ) ॥ प्रावचनी १, अरु ध्रमकथी २। वादि ३, निमत्ती  
४ जाण । तपसी ५, विद्या ६, सिद्ध ७, बलि । कवी ८, एहमुनित्राण ॥ १ ॥  
ज्ञावतीर्थ प्रचूकह्या । प्रज्ञावीक एअष्ट । तीर्थप्रज्ञावन जेकरै । ते फलजहै  
विशिष्ट ॥ २ ॥ \* ॥ ( राग धन्यासिरी ) तेजतरणि सुखराजै ( ए चाल ) ॥  
पर ज्ञावन जयकारा । ( अहो जयकारा ) तीरथ परज्ञावन जयकारा ॥ जिन  
संज्ञवसागर जलतरीयै । ते तीरथ गुणधारा । तीर० ॥ १ ॥ जिनके गणधर ती  
रथ कहीयै । बलि सहु संघ सुखकारा । एह महातीरथ पहिचानो । वंदि  
लहो ज्ञवपारा ॥ तीर० ॥ २ ॥ अरुसठ लौकिक तीरथ तजि करि ।  
प्रज लोकोत्तर सारा । द्रव्यज्ञाव दोयजेद लोकोत्तर । थिर जंगम ज्ञयहारा  
तीरथ० ॥ ३ ॥ पुंरुरीक परमुख पंचतीरथ । चैत्यपंच परकारा । एह वर तीर  
थ थावर कहीयै । दीठां पुरित विदारा ॥ तीर० ॥ ४ ॥ श्री सीमंधर प्रमुख  
वीशजिन । विहरमान ज्ञवतारा । दोयकोमि केवलि विचरंतां । जंगम ती  
र्थ उदारा ॥ तीर० ॥ ५ ॥ संघ चतुर विध जंगम तीरथ । जिनशासन उ  
जीयारा । वरअनंत गुण चूषण चूषित । जिनकूं नमत जिनसारा ॥ ती० ॥  
॥ ६ ॥ ए तीरथ परज्ञावना करीयै । सुज्ञावना आधारा । शिवकज जल  
विंशति तम पदकी । जानं प्रतिदिन बलिहारा ॥ तीर० ॥ ७ ॥ ए तीरथ  
परज्ञावना करतो । मेरुप्रचू अविकारा । पद जिनहरष लहीने तरीया । ज  
वज्ञय जलधि अपारा ॥ ८ ॥ तीर० ॥ ॥ ( काव्यं ) महा महा नंद  
पद प्रदाय । जगत्रयाधीश्वर वंदिताय । जिनश्रुतज्ञान पयोनदाय । नमोस्तु  
तीर्थाय शुभददाय ॥ ९ ॥ ( ॐ क्षी श्री तीर्थायनमः ) ॥ \* ॥ इति ॥ \* ॥

॥ \* ॥ अथ विंशति पद स्तुति ॥ \* ॥

॥ \* ॥ ( गरवो ) सुणिचतुर मुजाण परनारीसुं प्रीतमी० ( ए चाल )  
॥ ॥ \* ॥ चितहरषधरी, अनुज्ञवरंगै, वीश परमपद वंदीयै । शिव स्मणि

वरी, केवल सखीय सहाय करी चिरनंदीयै ( आं० ) एवीशचरण अशरण  
 शरणा । चिरसंचित दुरित तिमिर हरणा । नित चित एपद समरण धर  
 णा । चि० ॥ १ ॥ एपद समरण जिण चितधरीया । तरीया तरसै तैरे अवद  
 रीया । सदनंत अविक सहु जयहरीया ॥ चि० ॥ २ ॥ एपद गुणसागर म  
 नुहारा । वरणन तरणीयै बहुहारा । इंद्रादिक सुरन लह्यो पारा ॥ चि० ॥ ३ ॥  
 एपद अतिशय महिमाधारा । आश्रितपद कमला भरतारा । जिनचंद्रा नंद  
 घनपद कारा ॥ चित० ॥ ४ ॥ जिनहरष सुरिंदकै शिवकरणा । चंद्रामल  
 गुण विंशति करणा । हुइज्यो प्रनुअरजए अवधरणा ॥ चि० ॥ ५ ॥ ❀ ॥  
 इति श्री समस्त विंशति पदस्तुति ॥ २१ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ कलश ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ एवीशथानक जुवननंदन अघ निकंदन जानीयै । विबुधेंद्र चंद्र  
 नरेंद्र वंदित पद जिनेंद्र बखानीयै । ए वीशपद अव जलधि तारन तर  
 ण गुण पहिचानीयै । इमजानि अविजन कुशलकारन वीश पद उर  
 आनीयै ॥ १ ॥ इहवरस चंद्र दिनेंद्र हरिमुख विधि नयन गिति मिति  
 धरू । तिह मासजाद्रव धवल दल तिथि पंचमी रविवासरू । बंगाल ज  
 नपद जिह विराजित शिखर तीरथ गिरीवरू । सहु नगर सोजित अजीम  
 गंजपुर दुतीय बालूचरपुरू ॥ २ ॥ खरतर गणेशर विजित सुरगुरु विमल  
 गुण गिरिमाधरा । गुणजवन अविजन नालिन कानन नित विकासन दिनकरा  
 मुनिचंद्र श्री जिनलाज सूरिंद सुरगुरु महीयल युगवरा । सकलेंद्र वंद्य जिनें  
 द्र शासन मंरुना नित हितधरा ॥ ३ ॥ तसुपट उज्जल शिखरि गणवर उदय  
 गिरि वासरकरा । योगींद्र वृंद नरेंद्र वंदित चरण पंकज गणधरा । आचार  
 पंच वृत्तीस गुणधर सकल आगम सागरा । युगप्रवर श्री जिनचंद्रसूरी गु  
 रु सकल सूरीसरा ॥ ४ ॥ तसुचरण कमलज युगलसेवन अहनिशिमधुकरता  
 धरी । बलि सुगुरूपद अरविंद युगनी कृपा नित चित आदरी । गणधार  
 श्री जिनहरपसूरी हरष धरी घन अवहरी । या वीशपदकी विविधि पूजन वि  
 धितणी रचनाकरी ॥ ५ ॥ इति श्री विंशति स्थानक स्तुतिमयः पूजा विधि ॥

॥ ❀ ॥ अथ वीशस्थानककी आरती लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जीया चतुर सुजाण नवपदके गुन गायरे ( एचाल ) ॥ ❀ ॥  
 पियाविंशतिथान मंगल आरती गायरे ( आं० ) सुमति प्रिया कहै चेतन पति  
 को । निसुण वचन मनजायरे ॥ पि० ॥ १ ॥ यदि निजगुण परणति तुमचहीयै  
 तिनको एह उपायरे । ॥ पि० ) ॥ अरिहंत सिद्ध आचारिज पाठक । सा  
 धु सकल समुदायरे ॥ पि० ॥ २ ॥ इत्यादिक विंशतिपद समरण । जवजय  
 हरण विधायरे ॥ पि० ॥ एह आरती दुरति वारती । अनुपम सुरसुखदा  
 यरे ॥ पि० ॥ ३ ॥ जैसें जगतै करत आरती । सकल सुरा सुर रायरे ॥  
 पि० ॥ तैसें जवितुमे करत आरती । एपद गुण चितलायरे ॥ पि० ॥ ४ ॥  
 पंच प्रदीप सैं करय आरती । जेनित चित उलसायरे ॥ पि० ॥ तेलही पं  
 च चिदा नंद घनता ॥ अचल अमर पद पायरे ॥ पि० ५ ॥ पंचप्रदीप  
 अखंनित ज्योतै । दुरमती तिमिर विजायरे ॥ पि० ॥ एहआरती तुरत तारती ।  
 जवजल निपतत घायरे ॥ पि० ॥ ६ ॥ पद जिनहरषतणी एकरणी । मन  
 हरणी कहिवायरे ॥ पिया० ॥ चंद्र विमल शिव सिद्धि निधि धरणी । वरणी  
 किणविध जायरे ॥ पि० ॥ ७ ॥ इति वीश थानक आरती संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ स्रग्धरा ठंड काव्य तीन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ योजीसुतां जनोधां, जन गिरिसदृशां, काशिकेतु प्रसुक्ता । दुर्वार  
 स्फार पंको त्कट तर समर, व्रातता गम्परूपा । अव्यावाधा व्ययो द्यत् पर  
 म पद दशां सदृशां योविजर्त । योनित्यं ह्यायिकाख्या ह्यय विमल लसत्तै  
 लपूत्तै दधानः ॥ १ ॥ स्वाप्तादौ हामध्वामो हलद तुलकल प्रज्वल ज्ञात  
 वेदौ । ज्वाला माला कुलांगा जनित जव महा राय जातंक संगः । यत्रा  
 नेके पतंगाः कुमत मिमतयो जीजनन्नष्टरंगा । जस्मी ज्ञावं स्वकीयं सकल  
 जयहरः शंकर प्राणजार्जा ॥ २ ॥ प्रदस्तां नंतचंच त्किरण गणलस त्सप्त  
 संतिप्रतापो । लोका लोकाव लोका स्वजित विमलतो दयजाग्रत्प्रकाशः ।  
 त्रैलोक्या नंदन सप्रकृत कुशलकृ ष्ठंदन श्रामेरंदै । श्रीवामानंदनोयं जगति  
 विजयतां जैनचंद्रः प्रदीपः ॥ ३ ॥ त्रिजिर्विशेषकं ॥ ❀ ॥ इति ॥ ❀ ॥  
 यह तीन काव्य आरती कियां पीठे, दोनुं हाथ जोडके कहै ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नंदीश्वरा ष्टमद्वीपांतर्गत द्वापंचाशजिनप्रासाद  
शाश्वत जिनप्रतिमार्चन विधि लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दोधक ) ॥ ❀ ॥ स्वस्तिश्री सुखकरण धन । विघनहरण  
जयकार । अश्वसेन नंदन चरण । शरण रुचिर नरधार ॥ १ ॥ जिनवाणी  
समरणकरी । सकल जीव सुखकार । कहिशुं नंदीश्वर जगत । पति पूजन  
विसतार ॥ २ ॥ ( ढाल ) ॥ अखिलद्वीप सिरताज विराजै । अष्टमनंदी  
श्वर द्वीप ठाजै । बलयाकार जगत सुखकारी । निरुपम अतिशय गुण म  
णि धारी ॥ ३ ॥ ( उद्वालो ) ॥ मणिधारि वावन विमलगिरवर जैनमंदिर  
युतसदा । शुभ्रभक्तिधर निर्जर पुरंदर निरखिपांमे संपदा । इककोटि शत त्रि  
ण सठिकोटिय चौरासिलख योजना । इण द्वीपनो चक्रवाल विष्वंन मान  
जाणो नोजना ॥ ४ ॥ ( ढाल ) ॥ इणद्वीपै पूरब दक्षिण आसा । पश्चिम  
उत्तर दिश चउ पासा । चक्र रंजनगिरि सुखमा धारी । चारणसुर विद्याधर  
चारी ॥ ५ ॥ ( उद्वालो ) धरचारि निज दुति नर विनिर्जित, सजल जलधर  
धनधटा । बलि चतुरशीति सहस्रयोजन तुंगता धरतास्फुटा । इणप्रवर  
अंजन शिखर शिखरें शाश्वता जिनमंदिरा । चउसंख्य सुंदर कनक कल  
शोपमधरा जग सुखकरा ॥ ६ ॥ ( ढाल ) ॥ इक इक अंजनगिरि  
चउपासा । चउपुकरिणी प्रकट प्रकासा । विस्तर इगलख योजनसारा । ता  
सुमांहि इक इक उदारा ॥ ७ ॥ ( उद्वालो ) इक इक उदारा सहस्र चउ  
सठि योजनोन्नतता कुला । जिनराज मंदिर मंफिता सहु चंद्र किरण समु  
ज्वला । दधिमुख धरा धर दीर्घका प्रति विदिशि दोय दोय रतिकरा । दश  
सहस्र योजन उन्नता धर उदय करुणा रुणवरा ॥ ८ ॥ ( ढाल ) ॥ जिनमं  
दिर युत रतिकर विमला । पूरबदिशि तेरस सहु अचला । एहरीतिपर  
त्रिणदिशि जाणो । इम वावन्न गिरेंद्र वखाणो ॥ ९ ॥ ( उद्वालो ) इव  
खाण शतयोजन सुदीर्घा बहुत्तर योजन प्रमा । विस्तरा जिनगृहसमा । शतएक  
इणरीति प्रतिप्रासाद प्रतिमा जा

( दोधक ) रुषजानन

सकल । जिनप्रतिमा अत्रिधान ॥ ११ ॥ सुरगिरि सिखरै जिनतणी । जिन  
 न्हवणोत्सव सार । करिकैं नंदीश्वर जई । हरिगण विबुध उदार ॥ १२ ॥ अनुज्व  
 रसयुत नक्तिधर । हृदय सरोज मजार । इणपरि शाश्वत जिनतणी । करइ  
 पूज अतिसार ॥ १३ ॥ पूरबदिशि अंजनगिरी । मंदिरगत जिनराज । अरु  
 विध पूजायें सदा । अरची जै हितकाज ॥ १४ ॥ प्रथम पूज जिनराजनी ।  
 विमलजलै भरपूर । करियै न्हवण सदाज्वी । होइ सकल दुखदूर ॥ १५ ॥  
 ॥ ❀ ॥ कुंदकिरण शशिकुजलोरे देवा ( ए चाल ) ॥ ❀ ॥ मिलिकरि  
 सकल सुरासुरारे वाला । निज सेवक सुरपासैरे । क्षीरजलधि मागध थकी  
 रे वाला । सिंधुनदी गंगासैरे ॥ १ ॥ बलि वरदाम सुतीर्थसैरे वाला । वि  
 मल सलिल अणावैरे । मणि कनकादि कलस नरीरे वाला । उषधि कुसुम  
 मिलावैरे ॥ २ ॥ इंद्रादिक सहु सुरगणारे वाला । शाश्वत जिन न्हवरावै  
 रे । विमल सलिल धाराकरीरे वाला । कुमति तापनें गमावैरे ॥ ३ ॥ इण  
 परि जेनगते नवीरे वाला । न्हवणकरै जिनअंगैरे । ते सुरवर सुख अनुज  
 वीरे वाला । लहै शिवपद मनरंगैरे ॥ ४ ॥ द्रव्यपूज करि सुरवरारे वाला ।  
 करइ जिणिंद गुणगानारे । कुशल कुमुद विकसायवारे वाला । प्रभु शिव  
 चंद्र समानारे ॥ ५ ॥ ( काव्य ) दुरितदाघ बना तप वारण । सकल नाव वि  
 काशन कारण । जगति नव्य नवोदधि तारण । जिनगण सपयाम्य म  
 लैज्जलै ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्री अर्ध परमात्मनेभ्योऽनंतानंतज्ञानशक्तिभ्यः । प्रणत  
 सकल सुरासुरेन्द्र वितेंद्रवृंदविहितनक्तिभ्यः । कठिन कर्मशालमालोन्मूलनवा  
 रणेभ्यो । जन्म मृत्यु निवारणकारणेभ्यो । नंदीश्वराष्टमधीपगत । पूर्वाजनगिरी  
 शिखरस्थ । सिधायतन मंमनाय मानेभ्यः । श्रीरुषज्ञानन, चंद्रानन, वारिषेण,  
 वर्धमाना, त्रिधाना द्योत्तरैकशत शाश्वतजिनेंद्रेभ्यो । जलं ययामहे स्वाहा  
 इति प्रथम जलपूजा ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ द्वितीय चंदन पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोषक ॥ ❀ ॥ द्वितीय पूज जिनराजकी । करहु नक्ति नरसार ।  
 वर सुगंध द्रव्यें करी । तरहु सिंधु संसार ॥ १ ( राग श्रीममल्लहार ) मेघव  
 रसै नरी पुष्पवादल करी ( ए चाल ) ॥ ❀ ॥ नक्तिधरि नवीयजन पूज महा



राजकुं । एह वरगंध द्रव्यै सदाई । विमल घनसार चंदन सरस मृगमदा ।  
 कुंकुमें कर विलेपन सुदाई ॥ १ ॥ ऋक्ति० ॥ जेजवी सुरजितर गंध द्रव्ये  
 करी । सुरजि तनुकरै जिनराजकेरो । तेहनी चंद्रकर अमल यशवासना  
 सुरजितम करइ सहजगं घणैरो ॥ २ ॥ ऋक्ति० ॥ एमवर सुरजितर द्रव्य  
 सें सुरवरा । अरचकरि जगतपति बिंसारो । परम शुभजावना जावता ।  
 गावता । विशद जिनवरगुणा अति अपारा ॥ ३ ॥ ऋ० ॥ सकल सुरगण  
 मिली एमजंपै सुदा । जोसुरा आज जिनराज अरचो । विरति गुण रहि  
 त निजजन्म सफलो कीयो । सुमति संयोग दुर्मति विगूचो ॥ ४ ॥ ऋ० ॥  
 दुतीय इमपूज करतां हरइ ऋब्यनो । पाप घनताप आपैं अपारा । सरग  
 निस्त्राण पुरपंथ प्रकटीकरण । विशद शिवचंद्र करगण नुदारा ॥ ५ ॥  
 ( काव्य ) मृगमदो ज्ज्वल कुंकुम चंदनै । श्रितनांतर ताप निकंदनैः । जिन  
 चरानव तामस जास्करान् । स्वहित कृद्विधयेच समर्चये ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं  
 अर्द्धं परमात्मनेभ्यो ऽनंतानंत ज्ञानशक्तिभ्यः । कठिन कर्मशाल मालोन्मू  
 लनवारणेभ्यो । जन्म जरा मृत्यु निवारण कारणेभ्यो । नंदीश्वरा धमद्रीपगत  
 पूर्वाजनगिरि शिखरस्थ । सिधायतन मंरुनाय मानेभ्यः । श्री कृष्णानन चंद्रा  
 नन, वारिषेण, वर्धमाना, त्रिधानाष्टोत्तरे कशत शाश्वत जिनेंद्रेभ्यो । श्रंदनं  
 ययामहे स्वाहा ॥ २ ॥ इति द्वितीय गंध पूजा ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ तृतीय पुष्प पूजा ॥ ❀ ॥

॥❀॥ दोधक ॥ ❀ ॥ तृतीयपूज जिनराजनी । विकसित अतिहि रसाल  
 सुरजि कुसुमकरी ऋविकजन । करीयै ऋक्ति विशाल । १ ( राग जैरवी )  
 पंचवराणी अंगीरची कुसुमजाती ( ए चाल ) ॥ एह जिनकी पंकहरणी जगती  
 सारी । मिलकरि हरिवर सकल सुरासुर । त्रिकरण इककरि हितकारी ॥ १ ॥  
 ( एहजिनकी० ) अनुभव रसयुत चित्त ऋक्तिधरि । पूरब पुण्य उदयजारी ॥  
 एह० ॥ इण विध कुसुम ऋक्ति जिनवरकी । करइ हरइ घन दुरितारी ॥ एह०  
 ॥ २ ॥ मालती नाग पुन्नाग केवना । दमणक कुंद सुगंधि धारी ॥ एह० ॥  
 मरुक केतकी पद्म मोगरा । कुसुम मालकरि मनुहारी ॥ एह० ॥ जिनवर  
 कंठठवै प्रनुआगलि । कुसुम पुंज धरि दुःखवारी ॥ एह० ॥ इण विध पुष्प

भक्तिकरी भविजन । बरइ सकलजग शिरनारी ॥ ४ ॥ करिकै शुक्ल ध्या  
न पावकसे । जस्म विषम सम क्रम वारी ॥ एह० ॥ चिदानंद घन शिव  
चंद्रोपम । पामें अति गुण विस्तारी ॥ एह० ॥ ( काव्यं ) जव दवानल ताप  
घनाघनं । कुशल चंदन नंदन काननं । विशद शारद चंद्र समाननं । जि  
नगणं कुसुमैश्च समर्चये ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्धं परमात्मनेभ्यो अनंता० ॥  
प्रणत० कठिन० नंदीश्वरा० श्री कृष्णानन, चंद्रानन, वारिषेण, वर्धमाना  
त्रिधानाऽष्टोत्तरै कशत शाश्वत जिनेंद्रेभ्योऽपुष्पं यजामहेस्वाहा ॥ ॥ ❀ ॥  
॥ ❀ ॥ इति तृतीय पुष्पपूजा ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ४ धूपपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दोधक ) ॥ जगनायक जिनचंदनी । एह चतुर्थी जाण । धूप  
पूज करीये सदा । हरीये कुमती अनाण ॥ १ ॥ ( राग मालवी गोमी ) ॥  
सब अरतिमथन सुदारधूपं ( ए चाल ) ॥ जग कुशलकारि अघालिहरणं ।  
धूपपूज उदाररे । धूप अनलै कुगति दुखजर । फलद दहत अपाररे ॥ १ ॥ जग०  
सरस चंदन अगर अंबर । मृगमदा घनसाररे । कुंदरुक्क वली सेहहारस । करी  
ये गंधवटि साररे ॥ २ ॥ जग० ॥ स्तनमय वर धूप धाणो । धूपनृत कर धाररे  
सुर पुरंदर पूजकर्ता । लहै लाज अपाररे ॥ ३ ॥ जग० ॥ धूप परिमल म  
हमहै जिम । तेम जुवन मजाररे । धूपपूजा ते भविकनो । गुणसुगंध विचाररे  
॥ ४ ॥ जग० ॥ जवअंध कूप पतंग उधरत । धूप अरचन धाररे । कहत ग  
णि शिवचंद पाठक । पूज चतुर्थी साररे ॥ जग० ॥ ५ ॥ ( काव्यं ) जवसु  
दुस्तर वारधितारकं । विषयसौख्य विकार निवारकं । निरुपमोत्तर मंगलका  
रकं । जिनगणं धृत धूप करायजे ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्धं परमात्म०  
श्रीकृष्णानन, चंद्रानन, वारिषेण, वर्धमाना, त्रिधानाष्टोत्तरैकशत शाश्वत  
जिनेंद्रेभ्यो धूपं यजामहे स्वाहा ॥ ❀ ॥ इति चतुर्थी धूपपूजा ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ( ५ ) दीपकपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दोधक ) ॥ ❀ ॥ दीपपूज इह पंचमी । करीये विविध प्रका  
र । दीपपूज करतो भविक । दीपै जगतमजार ॥ १ ॥ ( राग कल्याण )  
तेरी पूजावणी तेरसमें ( ए चाल ) ॥ मेरी लगीय प्रीति प्रभुचरणें २ ॥ निजगुण

परणति करण करावण । सकल लोक सुखकरणें ॥ मेरी० ॥ १ ॥ गहिर  
 सिंधु नव निपतीत तारण । तरण तरणि गुणधरणें ॥ मेरी० ॥ अनंतरूप  
 धर दुरगति नयहर । परमज्योति अधिकरणें ॥ २ ॥ मेरी० ॥ करुणाधार  
 विमलगुण आगर । निरुपम अशरण शरणें ॥ मेरी० ॥ ए जिनचरण दीप  
 पूजनसें । अरचीजै दुखहरणें ॥ ३ ॥ मेरी० ॥ केवल विमल चिदानंद ल  
 हीयै । दीपपूजके करणें ॥ मेरी० ॥ स्तनदीपसें करै आरती । हरषित जिन  
 गुण वरणें ॥ ४ ॥ मेरी० ॥ ए प्रनुचरण सेव नवि जनकुं । अम्रित पद  
 सुवितरणें ॥ मेरी० ॥ कुमति रजनी अग्यान तिमिरहर । वर शिवचंद्र सुकि  
 रणें ॥ मेरी० ॥ ५ ॥ ( काव्यं ) मदन सिंधुर सिंधुर वैरिण । गुरुकषाय करे  
 ण समीरण । मदधरा धस्ता बल वैरिण । जिनगण प्रयजे सुप्रदीपकै ॥ ६ ॥  
 ॐ ह्रीं श्री अर्द्ध परमात्मने० । प्रणत० । कठिन० । नंदीश्वर० । श्री रुषभा  
 नन, चंद्रानन, वारिषेण, वर्द्धमाना, त्रिधाना ऽष्टोत्तरैकशत शाश्वत जि  
 नेद्रेभ्यो । दीपं यजामहेस्वाहा ॥ ❀ ॥ इति पंचमी दीपपूजा ॥ ५ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ ( ६ ) अक्षत पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ( दूहा ) ॥ ठठी अक्षत अरचना । करियै धरि सुननाव । बरि  
 यै सिध्विधू परम । अक्षय सुखनोदाव ॥ १ ॥ ( राग सारंग ) हां होरे देवा  
 बावनाचंदन घसि कुमकुमा ( ए चाल ) ॥ हांहोरेवाला ॥ एजगदीशर हि  
 तकरू । अलवेसर जिनमहाराज ए ( हांहोरेवाला ) अतिगहिरा नव जल  
 धि तें । प्रनु तारण तरण जिहाजए ॥ १ ॥ ( हांहोरे० ) प्रीमकरम कुंजर  
 घटा । प्रंजन मृगराज समानए ( हांहोरे० ) प्रव्यकमल प्रतिबोधवा । ए  
 प्रनु वासर महिरानए ॥ २ ॥ ( हांहोरे० ) रजतशालि तंडुलमयी । अक्षत  
 पूजन अग्रसारए ( हांहोरे० ) ए पूजा जिनचंद्रनी । वांछित सुखनी दातारए  
 ॥ ३ ॥ ( हांहोरे० ) ठवण जिनंद दरशण अठै । अनुभव रस तरुनो कंदए ।  
 ( हांहोरे० ) प्राव जिणेंसर दरशनो । कारण कह्यो सकल जिणंदए ॥ ४ ॥  
 हां० ॥ ए पाठक शिवचंद्रनें । जिनचरण शरण आधारए ॥ हां० ॥ प्रतिभव  
 हुइज्यो एकही । ठठी अक्षत पूजा सारए ॥ ५ ॥ ( काव्यं विजित मं  
 दर नृधर धीरतं । निहत सागर राज गंजीरतं । प्रजित पातक योध सुबीरतं

जिनगणं प्रयजे ऽकृतपूजया ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्द्धं परमात्मभ्योऽनतां  
प्रणतं । कठिनं । नंदीश्वरां श्रीं रुषज्ञानन, चंद्रानन, वारिषेण, वर्धमाना  
त्रिधानाऽष्टोत्तरैकशत शाश्वत जिनेंद्रेभ्यो ऽकृतं यजामहे स्वाहा ॥ ❀ ॥  
इति षष्ठी अकृत पूजा ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ ( ७ ) नैवेद्य पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) हिव पूजा नैवेद्यनी । सप्तम अतिह रशाल । करीयें जि  
नवरनी अचल । लहीयें मंगल माल ॥ १ ॥ ( राग ) जिनगुणगानं श्रुत  
अमृतं ( ए चाल ) ॥ ❀ ॥ जिनवर दरसण वर अमृतं । एजिनदरसण अम्रित फ  
रसैं । पामें अनुपम कांचनतं । तिणसैं सुरपति प्रनुदरसण वरि । जगतें  
गावैं जिनचरितं ॥ २ ॥ जिन ॥ मोदक घृत वर खज्जक परमुख । वरनै  
वेद्य सरस धरितं । हरि गण गज प्रनु आगलि ढोवैं । मणि मय  
कनक थाल ज़रितं ॥ जि ॥ ३ ॥ जेनैवेद्य करी जिन पूजन । करइतेह  
जग मन हरितं । अतिही स्वाडु सुर गति शिव पद सुख । तति नितसेवैं न  
वि तुरितं ॥ ४ ॥ जिन ॥ विंशति पदमें एजिनपति पद । वर शिवचंद्र विम  
ल अनितं । इण पद सेवक नविजन केरो । संचित चूरि हरइ तुरितं ॥ ५ ॥  
जिन ॥ ( काव्यं ) अनंत विज्ञान मयस्वरूपं । समस्त लोक त्रय चूति  
चूपं । लसद्गुणौघा मृत चारु कूपं । यजेसु नैवेद्य चया जिनौवं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं  
श्रीं अर्द्धं परमात्मभ्यो । प्रणतं । कठिनं । नंदीं । श्रीरुषज्ञानन, चं  
द्रानन, वारिखेण, वर्धमाना, त्रिधानाष्टोत्तरैक शत शाश्वत जिनेंद्रेभ्यो नैवेद्यं  
यजामहे स्वाहा ॥ इति सप्तमी नैवेद्य पूजा ॥ ७ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ ( ८ ) फल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ जिन फल पूजा अष्टमी । कष्ट अनिष्ट विदार ।  
करीयें सुजन्नावैं सदा । जरीयें पुण्यजंमार ॥ १ ॥ ( राग धन्या सिरी )  
तेज तरणि मुखराजै ( ए चाल ) ॥ सुरनायक जशगावैं । जिनजीको सुर  
( आंकणी ) निरमल मन वच काय करणतें । लुलि २ सीस नमावैं । सुर  
अवतार सफल जयो मेरो । जिनपूजन सुपसावैं ॥ १ ॥ जिनजीको सुर  
नयन चकोर चंद्र समज्योती । संचित तुरित पुजावैं । निरखि निरखि मन

मोहन मूरति । आनंद अंग न मावै ॥ २ ॥ जिनजीको ॥ नालिकेर ना  
रंगी कवला । केला आम्र अणवै । पुंगीफल दामिम परमुख फल । जि  
नवर चरण चढावै ॥ ३ ॥ जिन ॥ जेजवि फल पूजा जिनवरकी । को  
करावै जावै । अनुमोदै तेपरम चिदानंद । घन अम्रित फलपावै ॥  
जिन ॥ ४ ॥ वरसअठार ण्होत्तर जेठे । प्रतिपद सुकल सुहावै । चंद्र  
सूनु वासर जयनगरै । खरतरगह्व जगचावै ॥ जि ॥ ५ ॥ श्रीजिन हर्षसू  
रि सूरिसर । विजयमान बडदावै । रूपचंद्र गणि पाठक पारिंद्र । वादींद्र  
विरुद धरावै ॥ जिनजी ॥ ६ ॥ तासुशीश वाचक पुण्यशील शिष्य । स  
मय सुंदर कहिरावै । तासुशीश पाठक शिव चंदे । पूजरची मनुजावै ॥ ७ ॥  
जिनजी ॥ जेनंदीश्वर शास्वत जिनकी । वसुविध पूज रचावै । ते जन  
सकल लोकके ईश्वर । तीर्थकर पद पावै ॥ ८ ॥ जिन ॥ ( कलश ) सुर  
पति सुरासुर, वृंद वंदित, चरण पंकज मधहरं । सद्गीप नंदीश्वर जिनालय,  
परमतर सुखमाकरं । अतविशद हिमकर चंद्रिकामल निखिलगुण मणि  
सागरं । जिनराज गण मह मर्चये वर फलचयैः करुणाकरं ॥ ९ ॥ नैऋती  
श्री अर्ह परमात्मभ्यो ॥ प्रणत ॥ कठिन ॥ नंदी ॥ श्री रुषभानन, चं  
द्रानन, वारिषेण, वर्धमाना जिधानाष्टोत्तरकेशत शाश्वत जिनेंद्रेभ्यो फलं  
यजा महे स्वाहा ॥ ❀ ॥ इत्यष्टमी फल पूजा ॥ ८ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ दूहा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पूरवदिशि अंजन गिरी । मंदिरगत जिनराज । अरुविध  
पूजायै सदा । अरचीजै हितकाज ॥ १ ॥ पूरव प्रमुख चिहुंदिशे ।  
पुकरणी अन्निराम । दधिमुख चनुमंदिर जिना । अरचीजै शुभकाम ॥ २ ॥  
ईशानादिक विदिशि गत । वसु रतिकर गिरिराज । मंदिरगत जिनराजकी ।  
रचीयै पूजसमाज ॥ ३ ॥ दक्षिण दिशिअंजनगिरी । मंदिरगत महाराज ।  
वसुविध पूजायै सदा । पूजीजै हित काज ॥ ४ ॥ दक्षिण अंजन शैलने ।  
चनुदिशि दधिमुख सार । चनुमंदिर जिनरायकी । करीयै पूजउदार ॥  
॥ ५ ॥ दक्षिण ईशानादिकै । विदिशें अतिह उदार । अरु रतिकर  
गिरिवर जिना । पूजो विविध प्रकार ॥ ६ ॥ पश्चिमदिशि अंजन गिरी ।

मंदिर जिन महाराज । वसुविध पूजायें सदा । पूजो नविक समाज  
॥ ७ ॥ पश्चिम अंजन शैलनें । चउदिशि दधिमुखधार । चउ मंदिर  
जगनाथकी । पूजकरो सुखकार ॥ ८ ॥ पश्चिम ईशानादिकै । विदिशै जग  
हितकार । अरु रतिकर गिरि जिन प्रते । अरुचुं जगदाधार ॥ ९ ॥ उत्त  
रदिशि अंजनगिरी । मंदिर गत जगराय । अष्टविधार्चनसैं नविक । अर  
चो जीउ सुखदाय ॥ १० ॥ उत्तर अंजन शैलनें । चउ दिशि दधिमुख ।  
नाम । चउ मंदिर तीर्थेशनें । अरचो शुभपरिणाम ॥ ११ ॥ उत्तर ईशाना  
दिकै । विदिशै रुचिराकार । वसु रतिकर गिरि जगप्रभू । पूजो अरति विदार  
॥ १२ ॥ सकल संघ बलि जेठमल । कोठारी चितचंग । इनके आग्रह  
सैं करी । एहपूज मन रंग ॥ १३ ॥ इति नंदीश्वरद्वीपकी पूजा सं० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नंदीश्वर लघु अष्टप्रकारी पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ स्वर्वासिवासे सुतरां प्रकाशे । नंदीश्वरे द्वीप वरेष्टमेहम् । सुगंधि  
तीर्थामि जलैः सुप्रक्षाले । जिनेश्वराणां स्तुपयामि मूर्त्तीः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं  
नंदीश्वरे । अष्टम द्वीपे । श्रीमत्शाश्वत जिनेश्वरेभ्यो । जलं० ॥ ❀ ॥  
स्वर्वासिवासे सुतरां प्रकाशे । नंदीश्वरे द्वीपवरेष्ट मेहम् । कर्पूर स चंदन कुंकु  
मैश्च । समर्चये श्रीजिनराज मूर्त्तीः ॥ २ ॥ ❀ ॥ स्वर्वासिवा० नंदी० विकास  
त्राक् शुद्धसुगंधि पुष्पैः । समर्चये श्रीजिनराज मूर्त्तीः ॥ ३ ॥ ❀ ॥ स्वर्वासिवा  
से० नंदी० । तुरुक्क कृष्णा गुरु मुख्यधूपं । मुदा प्रयत्नामि जिनेश्वरेभ्यः ॥ ४ ॥  
॥ ❀ ॥ स्वर्वासिवा० नंदी० । सुनिर्मलाज्येन नृतैः प्रदीपैः । कुर्वे प्रमोदा जिन  
राज पूजाम् ॥ ५ ॥ ❀ ॥ स्वर्वासि० । नंदी० । स्वयं पुरस्ता जिन पुंगवानां ।  
सदक्षतौघा नुप ठौकयामि ॥ ६ ॥ ❀ ॥ स्वर्वासि० । नंदी० । स्वयं पुरस्ता० ।  
नैवेद्य जातान्युप ठौकयामि ॥ ७ ॥ ❀ ॥ स्वर्वासि० । नंदी० । स्वयंपुर० ।  
फलानि चाग्रयाण्युप ठौकयामि ॥ ८ ॥ ❀ ॥ इत्थं जिनानां प्रविधाय पूजां ।  
सद्रव्यतो नाव विशुद्धिनाजः । नव्यांगिनो नुक्रमतो लज्जते । स्वर्गच मोक्षं  
विरहाद्भवस्य ॥ ९ ॥ इत्यष्टप्रकार पूजाष्टकम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥



॥ ❀ ॥ अथ श्रीनंदीश्वराष्टमे द्वीपे द्वापंचाशजिनालय  
पूजा विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तहां पहला पूर्वदिशिमें चौमुख पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पूर्व दिशिके बीचमें अंजन गिरीके चौमुख आगे । अष्टद्रव्य ना  
लेर पांन थापना लेकर खड़ा रहै ॥ नमोर्हत् सिद्धा० ॥ शिखरणी ठंद ॥ दि  
शी श्रीपूर्वस्यां सुखर युतै देवरमणैः । स्फुरत् तुंगे शृंगे जलदसदृशै कज्जल  
गिरौ ॥ जगत्पूज्ये सिद्धायतन उदिते भूमि विदिते । नमो नंदीद्वीपे रुषन्न  
जिननाथादि विज्रवैः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री अर्हपरमात्मने अनंतानंत ज्ञानशक्त  
ये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीरुषज्जानन चंद्रानन वारिषेण वर्द्धमाननामा  
नो एकशतं चतुर्विंशति अधिक शाश्वत जिननाथाय जलं चंदनं पुष्पं धूपं ।  
दीपं अहृतं नैवेद्यं फलं ॥ यजामहे स्वाहा ॥ इति प्रथम पूजा ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दधिमुखपर्वतपूर्वदिशिमें (पूर्ववत्) द्रव्यलेके खड़ा रहै ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शिखरणी ठंद ॥ ततः प्राच्यां वापी विमलसज्जिता देव रमणा ।  
दनंद्या नंद्याकाजल जलजिता तोरणभृता । तदुत्संगाधिस्थे दधिमुख गिरौ  
चैत्य निलये । नमस्तत्र श्रीमद्वृषज्जिननाथादि विज्रवैः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री  
अर्हपरमा० अष्टद्रव्यं यजा० ॥ २ ॥

॥ ❀ ॥ दधिमुखपर्वत दक्षिणदिशिमें ॥ शिखरणी ठंद ॥ तदैताद्रेर्म्या च  
जलद नल सत्तोय निवहा । शुभा मोघाप्राच्यां भ्रमर निकरैर्जैकृतितरा । तदुत्सं  
गाधिस्थे दधिमुखगिरौ चैत्य निलये । नमस्तत्र श्रीमद्वृषज्जिननाथादि विज्रवैः  
॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री पर० अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥ ३ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पश्चिम दिशि दधिमुखपर्वतमें ॥ शिखरणी ठंद ॥ प्रतीच्या माशा  
यां तदधि गिरितौ मञ्जुलधरा । सुवापीगोस्तूपा सुर सरदिवा ज्ञांति सततं ।  
तदुत्संगाधिस्थे दधिमुखगिरौ चैत्यनिलये । नमस्तत्र श्रीमद्वृषज्जिननाथां  
दिविज्रवैः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री अर्ह० अष्टद्रव्यं य० स्वाहा ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ उत्तरदिशिमें दधिमुख पर्वतपर ॥ शिखरणी ठंद ॥ उदीच्यां सो  
पाना वतर दमरस्त्री व्रजवदा । सुदर्शाद्यानां ता तदचलवरा तपुष्कराणिका । तदु

त्समाधिस्थे दधिमुख गिरौ चैत्यनिजये । नमस्तत्र श्रीमद्वृषज्ञ जिनाथादि  
विजये ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ० अष्टद्रव्यं य० स्वाहा ॥ ५ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ईशानकृण्मे रतिकर पर्वतपर ॥ वसंततिलकाब्द ॥ वाष्पंतरे र  
तिकरः प्रथितावदातः । ईशानगो गिरिवरो मगनाश्रितश्च ॥ तत्रस्थ चैत्य रुष  
जादि जिनेश्वराणां । वंदे मुदाविशद बिंब मुदारवृत्त्या ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अ०  
अष्टद्रव्यं य० स्वाहा ॥ ६ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ॥ ❀ ॥ ईशानकृण्मे दूसरा रतिकरपर्वतपर ॥ काव्यं ॥ तादृक्वरो रति  
करोपि तथा द्वितीयः । शैल सहोदरश्च प्रचकास्ति यत्र । तत्रस्थ चैत्य रुषजा  
दि जिनेश्वराणां । वंदे मुदा विशदबिंब मुदारवृत्त्या ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ० अष्ट  
द्रव्यं य० ॥ ७ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अग्नि कृण्मे प्रथम रतिकरपर्वतपर ॥ काव्यं ॥ अग्न्याश्रितो रति  
करो रति मूर्तिरूपः । स्वर्गागणो वसुमतीव तथैव तस्य । तस्मिन् जिनालय  
वरेजगदीश्वराणां । रूपं ततोस्मि नरजन्म फलाभिलाषो ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ०  
अष्टद्रव्यं य० इति ॥ ८ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अग्निकृण्मे दूसरा रतिकर पर्वतपर ॥ काव्यं ॥ तत्रैव तत्समधरस्समपंक्ति  
तोभ्यो गोत्रोत्तमो रतिकरो नरदेवकाम्य ॥ तस्मिन् जिना ० रूपं ततो ० ॐ ह्रीं श्रीं ॥ ९ ॥  
॥ २ ॥ नैऋतकृण्मे रतिकर पर्वतपर ॥ काव्यं ॥ नैऋत्यगो रतिकर स्सुरशैल  
कीर्तिः ॥ विस्फूर्तिमूर्ति विजितः शुशुभे सदैव ॥ तत्रस्थ जैनचुवने चुवनो  
त्तमत्वे । संस्तोमि साधुरुषजादि प्रभुं सदाज्ञं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ० अष्ट  
द्रव्यं य० ॥ १० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नैऋतकृण्मे दूसरे रतिकर पर्वतपर ॥ काव्यं ॥ तस्यैव पार्श्वप  
रिवर्ति नगाधिराज ॥ स्तुतुल्यगो रतिकरो द्युतिचृदिगंतः । तत्रस्थजैन ० ॥  
संस्तोमि ० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ० । अष्टद्रव्यं य० स्वाहा ॥ ११ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वायव्यकृण्मे पहिले पर्वत रतिकरपर ॥ काव्यं ॥ गीर्वाण वर्गग  
तिदः शुभदो जनानां । वायव्यगो रतिकरः कुधर स्तथैव । तत्रापि पारगत  
मंदिरबिंब वृंदं । नित्यं नमामि वृषजादि जगत्प्रभूणां ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ०  
स्वाहा ॥ १२ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वायव्यकूणमें दूसरे रतिकरपर्वतपर ॥ काव्यं ॥ तत्सदृशो रति  
करः सुख चारुभूमिः । पद्मानुराग इतरः कलकेलि सद्यः । तत्रापिपासुः ।  
नित्यं नमामि० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं । अष्टद्रव्यं यजा० ॥ १३ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दक्षिणदिशिमें अंजनगिरि पर्वतपर ॥ काव्यं ॥ इन्द्रवज्राब्जदं ।  
योदक्षिणस्यां दिशिजातिनित्यं । द्योतांजनाद्रीरमणीय ताद्रः । तस्योपरस्थे  
जिनराज चैत्ये । नौमि स्वयंचू रुषजादिजातं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं० ॥ १४ ॥

॥ ❀ ॥ पूर्वदिशि पुष्करणी दधिमुख पर्वतपर ॥ काव्यं ॥ तत्पर्वता त्याक  
दिशि राजमाना । नंदोत्तरा पुष्करणी प्रधाना । दद्याननाद्रैः तदगाधतोये ।  
चंद्राननाद्यं प्रणमामिसद्यः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं० स्वाहा ॥ १५ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दक्षिणदिशिमें अंजनगिरिदधिमुखपर्वतपर ॥ काव्यं ॥ नि  
त्योद्योता दंजना दक्षिणस्यां । नंदावापी सार्वनाम तदंतः ॥ दध्यास्याद्रौ चंद  
नाद्यै र्जजामि॥प्राशादै श्रीवर्धमानादि सार्वं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं० ॥ १६ ॥

॥ ❀ ॥ पश्चिमदिशि दधिमुखपर्वतपर ॥ काव्यं ॥ तस्यैवाद्रैः पश्चिमायां सु  
नंदा । तस्यामध्ये श्रीदधिस्यान्न गेण्डुः । तस्मिन्चैत्यै श्रीजिनाधीश जालं ।  
नामं नामं तं नमामि प्रकामं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं० स्वाहा ॥ १७ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ उत्तरदिशि वाण्यां दधिमुखे ॥ काव्यं ॥ नदीचीना दीर्घिका नं  
दिवर्द्धनीसान्वर्था तन्नगा तत्रसंस्थे । जैनावासै बारिषेणादिर्विंब । मत्वानाथे  
सुक्तिसौख्यं नितांतं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परमात्म० अष्टद्रव्यं य० स्वाहा ॥ १८ ॥

॥ ❀ ॥ ईशानकूणें प्रथमरतिकरविषै चैत्य० ॥ काव्यं ॥ रतिकरोस्ति जि  
नालय माश्रितो । विदिशि जैरव दैवत एतयोः । तदचलै रुषजादिजिनेश्वरं  
समनुनम्य ररामितदंतिके ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं० स्वाहा ॥ १९ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ईशानकूणे द्वितीयरतिकरपर्वते ॥ काव्यं ॥ द्रुतविलंबितदं ।  
तदपरोपि तथैव तदन्वितो । जिननिकेतन केतु सुमंमितिः । तदचले रुषजादि  
जिनेश्वरं । समनुनम्य ररामित दंतिके ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मा० स्वाहा ॥ २० ॥

॥ ❀ ॥ अग्निकूणें रतिकरपर्वते ॥ काव्यं ॥ द्रुतविलंबितदं ॥ रतिकरो  
जिनराज गृहांकितौ । लसतिवन्दि विदिग्र क्तिचूषितः । तदपरस्तदगे  
रुषजादिकं । नमत नाथ मनाथ सनाथकं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्म० ॥ २१ ॥

॥ ❀ ॥ अग्निक्लृणैर्दूजै रतिकरपर्वते ॥ काव्यं ॥ तदपरापरगो नग नायको ।  
रतिकर स्तदितै जिनमंदिरै । नति तति प्रतिरोह तुमामकी । लसदनं त गु  
णाकरते प्रज्ञो ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमा० स्वाहा ॥ २२ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नैऋतिकृणै प्रथमरतिकरै ॥ काव्यं ॥ द्रुतबिलंबितुंद ॥ विदिशि  
नैऋतिगे जिनपालये । रतिकरे रुषणादि स्वयंनुवं । सुमनसा सुमनोभि  
रितोजनात् । यजत प्रव्यजना अतिजावतः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री ५हं० ॥ २३ ॥

॥ ❀ ॥ नैऋते दूजै रतिकरै ॥ काव्यं ॥ द्रुतबिलंबितुंद ॥ तदितरः सम  
सीम धरा धरो । रतिकरो विज्रवेश्म विज्रर्त्तियः । तदचले जिनराज जगद्गुरु  
सतत नौमि मुदा रुषणादिकं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमा० स्वाहा ॥ २४ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वायव्यकृणै प्रथमरतिकरै ॥ काव्यं ॥ द्रुतबिलंबितुंद ॥ अनिल  
देव विदिग्धरणीधरो । रतिकरौ जनतोस्ति तदिद्रेगे ॥ प्रवतुमे रुषणादि ज  
गत्पतौ । सतविधानमनंत मनंतशः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री० ॥ २५ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वायव्ये दूजै रतिकरै ॥ काव्यं ॥ द्रुतबिलंबितुंद ॥ रतिकरोपि  
तदन्यतरस्तथा । शिरसितस्य जिनायतने यथा । दधतुमे जिनपुंगवचंदना ॥  
विधिवदंग प्रव त्यदपंकजै ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री ५हं० ॥ २६ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पश्चिम दिशि अंजनगिरि विषे चैत्यपूजाः ॥ काव्यं ॥ नंदीश्वरे  
नंदित पश्चिमायां । स्वयंप्रज्ञः सुप्रज्ञ यांजनाद्रिः ॥ तज्जैन सद्मे गतप्रीतिब्धे ।  
प्रजामिन्नक्त्या वृषणादिबुंदं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री ५हं० ॥ २७ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पश्चिमदिशि अंजनगिरिसे पूर्वदिशि दधिमुखपर्वते चैत्यगृहआगै ८  
वस्तुलेईपढै ॥ काव्यं ॥ हिरणीबुंद ॥ दधिमुखगिरि र्जद्रा वाप्यां रराजत  
दंजना । दधिनिचैत्ये पौरस्त्याया सुरासुर सेवितः । जिनपतिगृह तस्मिन्नुद्धौ  
जिनं रुषणादिकं ॥ नमनविषयी कृत्यास्वादं सुधारसं जं लजे ॥ १ ॥ ॐ  
ह्रीं श्री ५हं० ॥ २८ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दक्षिणदिशि दधिमुखरेविषे चैत्यचौमुखआगै अष्टप्रकारपूजा ॥  
॥ काव्यं ॥ हिरणीबुंद ॥ कलजलविशालायांवाप्यांतदेवनगांजनात् । दिनकर  
करा घौ घौ पाच्यां दधीतमुखा चलः । तदचलवरे देवावासे प्रज्ञोचरणां  
बुजे । परमशरणं प्राप्यानंतं मुदं लज्जितोस्मिते ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री ५हं० ॥ २९ ॥

॥ ❀ ॥ पश्चिम दिशि दधिमुख चैत्यः ॥ काव्यं ॥ हिरणीभंद ॥ कमकु  
मुदा वाप्यांतस्मा ऋलोच्चयतो जनात् वरुणककुभिः श्रीदध्यास्य स्तदङ्गु परि  
स्थिते । जिनपवसतौ श्रीमङ्गैना कृतिं विधिवदचृशं । प्रणति तति जिर्नत्वा  
नाये स्वकीयसुखास्पदं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ५६० ॥ ३० ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ उत्तरदिशि दधिमुखचैत्यआगे अष्टप्रकार पूजा ॥ काव्यं ॥ हिर  
णीभंद ॥ जलधिसदृशां पुंडरियाद्याकिणीकिलदीर्घिका। दधिमुखनगःकौवैरी  
या तदंतरतौजनात् । तदुपरिगतेऽर्हत प्रासादे जिनेन्द्रकदंबकं । तजित दुरितौ  
जातो जातु प्रणम्य प्रजोः पुरः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ५६० ॥ ३१ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ उत्तरदिशि अंजनगिरिविषे अष्टप्रकार पूजा ॥ काव्यं ॥ हिरणीभंद ॥  
जलधिसदृशा पुंडरियाद्या किणीकिल दीर्घिका। दधिमुखनगःकौवैरीया तदंत  
रतौ जनात् । तदुपरिगते ऽर्हतप्रासादे जिनेन्द्र कदंबकं । तजितदुरितौ जातो  
जातु प्रणम्यप्रजोः पुरः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ५६० ॥ ३२ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पश्चिम दिशि अंजनगिरितः दीर्घिकावापिके ईशान कूणमें प्र  
थम रतिकरैचैत्य ॥ काव्यं ॥ दीर्घिकयो रंतराल ईशानग रतिकर नाम ।  
तत्र विचित्र चरित्र जिनेश्वरध्यान । तद्गृहीत साधतसद्भिनि श्रीरुषजादि  
राजान । मंतर्गत धृतिमत्यां वंदन सद्भान ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ५६० ॥ ३३ ॥

॥ ❀ ॥ पश्चिम दिशि अंजनगिरितः दीर्घिकावापीके ईशानकूणमें द्विती  
यरतिकरपर्वते जिनालयआगे ५८प्रकारद्रव्यलेईज्जजार है ॥ काव्यं ॥ तैर्नैव  
रीत्या रतिकर इतर स्तस्य समेन । शोभति सोन्नत यशसासोयं सोश्च गुणेन ।  
तद्गृहीत साधित सद्भिनि श्रीरुषजादिराजान । मंतर्गतै धृतिमत्यां वंदे  
॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ५६० स्वाहा ॥ ३३ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिंवे अग्निकूणकेविषे दोयरतिकरहै तिसमें पहिले रतिकरें ॥ काव्यं ॥  
धन्यतम स्त्वं रतिकरगिरवर रत्नसमान । विदिशि कृशानौ मलमितानां पुण्य  
प्रधान । श्रीरुषजानन प्रचृति प्रचूणामूर्धस्थितेन । सिरसिधृतः श्रीसिधायतनै  
त्वयिकायेन ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ५६० ॥ ३४ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अग्नि कूणे दूसरा रतिकर चैत्य आगे ॥ काव्यं ॥ समश्रेणि स्थित  
विस्तृत पर्वत इतर स्त्वमेव । रतिकर रुचिर प्रज्ञा खर जिनवर सद्भ त

देव । शक्त्या त्रिकरण प्रक्त्या नम्यां नंदत एव । त्वामेव ददतु महोदय मेव  
श्री देवाधिदेव ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ॐ ॥ ३५ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नैरुत्कृष्टं प्रथम रतिकर पर्वत चैत्य आगे ८ प्रकारें पूजा ॥ काव्यं ॥  
प्रवन्नय त्रायक शिव सुख दायक रुषजादि देव । त्वद्भिन्नावलिमालित्य चैत्य  
विराजित एव । जातौ नैरुत् विदिश जग द्रतिकर कारक ईश । रति कर उत  
श्रयितो स्मि त्वा महमेवमुनीश ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ॐ ॥ ३६ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नैरुत्कृष्टं २ रतिकरे पूजा ॥ काव्यं ॥ अपरे रतिकर ऊपरि न  
प्रोचर चर्चित चैत्य । चंचुमुदं चचराचर केतु मुदार मुपेत्यं । श्री रुषजादि  
पदोत्पल नुज्वल अकल कृपेश । चेतो मधुकर नपरम तिस्म मे मुक्तिरमेश  
॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ॐ ॥ ३७ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ काव्य कहै ॥ समराधीश विदिशित्वदा श्रयतो रतिकारः । उदया  
चलति धरातल उत्तम जिनपविहार ॥ तत्र चतुर्विध शुद्धसुधा निधि विबुध  
विवंध । श्रीरुषजादि प्रनुं प्रणमामि यशोन्नर नंद्यश ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ॐ ॥ ३८ ॥

॥ ❀ ॥ अन्यतरे रतिकर गिरि शिषरे प्रवर प्रासाद । उद्यत चातुर्धर उ  
दार अपार अनादि । चातुर्गत प्रव भ्रांति निवारक अजिनव ज्ञान । श्री रुष  
जादि जिनाय नमो नमो जानु समान ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ॐ ॥ ३९ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ उत्तरस्यां अंजन गिरि चैत्ये ॥ काव्यं ॥ चतुर शीति सहस्र योजन  
समुद्भिते सांजन गिरि । मूलतो दश सहस्र योजन विस्तृतः शिरसोपरि । एक  
सहस्र योजन उदीचीनौ रम्य श्री रमणायकः । स्तूयते तत्र सदैवमनका सार्व  
श्री रुषजादिकः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ॐ ॥ ४० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ काव्यं ॥ ततोऽंजनतोलक योजनगते विजया सुनृता । प्राच्या  
सुवापि सत योजन लक्ष्मायत विसृता । अति कांत दधिमुख गिरि स्तस्यां  
अंबु मध्य गतोमता । स्तदुपरि प्रनु श्री रुषज प्रनुत सनमामि प्रमोदतः ॥ १ ॥  
ॐ ह्रीं श्रीं ॐ ॥ ४१ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ काव्यं ॥ परिपूर्ण पथो वैजयंति दाक्षिणात्या तदगिरे । विपुल गगनोत्कर्ष  
दधिमुख पर्वत स्तदभ्यंतरे । तस्य शिषरे धर्मेनिकरे विशदतर जिनमंदिरे ।  
गतदुर्मतोहंजिन नमन्न पि पुण्ययुद्धस दीदिरे ॥ १ ॥ ४२ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥



॥ काव्यं ॥ जलधि जयनि प्रतिचीनाजयंती वापीततः । तन्मध्य दधिमुख  
चूचूचै त स्तथै वात्र समासतः । जिनराज नुवनं शर्म सदनं कर्म शत्रु निकंदनं  
ऋषभादिपत्कज पुनीतमे नवतुनूयो वंदनं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ५६० ॥ ४३ ॥

॥ ❀ ॥ काव्यं ॥ अपराजितां चूराजितांजन पर्वता दुत्तरचूवि । निर्म  
त्स्यकलकलोलकलिता द्योतयंती नुवोचुवि । नगमुख्य दधिमुख नदगमध्ये  
तदुपरि चैत्यालयै । ऋषभादि बोधिदमयिकरोवि बोधिजात्र गुणाशये ॥ १ ॥  
ॐ ह्रीं श्रीं ५६० ॥ ४४ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( काव्यं ) रमणीयकांजन रसाधरतो रतिकरो धरणी धव । ईशा  
नचूमौ तस्यमोलौ विश्वपति गृहपुंगवः । तत्र तादृश तदाकारं ऋषभप्र  
भृति कृपानिधिः । संस्मर्यचेतसि नमनलात्रं लजे देव दयानिधिः ॥ १ ॥  
ॐ ह्रीं श्रीं ५६० ॥ ४५ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( काव्यं ) तत्साम्य द्वितीयो चला द्वितीये रतिकर द्युती मती  
सदा । सकल मंगलमाल दातारि दीनबंधु गृहे मुदा । ऋषभादि दीनानाथ सेवे  
प्रतिदिनत्वा प्रतिततः । तत्र नवत्रय दुःखनिकरा न्मुच्यतां मां प्रति यतः  
॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ५६० ॥ ४६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ काव्यं ॥ बहुल विदिशि विजृत्तिसोयं रतिविनुवर गृहं । विश्वचूषण  
मखिलदूषण दुष्टदुर्मति निर्गृहं । सद्भाव जावित नव्यनविजन व्यनीत रवी  
श्रमः । ऋषभादि पुरुषोत्तम पुनीतं जयंतु योहि नगोत्तमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं  
श्रीं ५६० ॥ ४७ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ काव्यं ॥ अपर चूधर रूप सुंदर रतिकरे नत सुरनरे । विश्वेशविश  
द विहारधारे रत्नमय आनंदकरे । नाथ करुणाकर कृपालो श्रीश ऋषभादि  
प्रभो । त्वच्चरणसेवा सरण करणं दिशतु मांप्रतिहे विभो ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं  
श्रीं ५६० ॥ ४८ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ काव्यं ॥ हे नविजन नैरुति विदिशि । नगेंद्रु रतिकरोपरि जि  
नालये । नविजन ऋषभप्रभृति जिन । चंद्रमज्जिनौमि विशदाशये । ॥ १ ॥  
ॐ ह्रीं श्रीं ५६० ॥ ४९ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ काव्यं ॥ हेरतिकर धन्यतमोऽसि । तदन्य आप्त निकेतन शोभित

हेतारक चेतो रमतु त्वदंत । उत्तम मे विज्वोन्वितः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ॐ ॥ ५० ॥

॥ काव्यं ॥ हेनविजन वायुविदिशि रतिकार । सानुनि जिन सन्नानि ततः  
हेजीवन श्रीरुषजादि स्वरूप । मनुजव तपस्यतु यतः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ॐ ॥ ५१ ॥

॥ ❀ ॥ काव्यं ॥ हेनविजन तत्सम रतिकरनाम । तत्रैवास्ति गुणोत्करः ॥  
हेजिनपति चैत्यालय ऋषजादिदेव । ममैधी श्री सुखकरः ॥ १ ॥ ॐ  
ह्रीं श्रीं ॐ ॥ ५२ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ कलश ॥ युगवराः श्रीकरा दुःखकश्मलहरा चूरिसूरीश्वराः सुचितराए ।  
धर्मरुचिकारका नवसमुद्रतारका धीर्य गांजीर्य गुणसागराए ॥ दीपनंदीश्वरे,  
पंचप्रजिनगृहे, रुषजप्रमुखाः सतां बंधुराए । जैनचंद्राः सदा, त्रिनुवने सु  
कृतिनो, जयतु मद मान वन सिंधुराए ॥ ५३ ॥ इति श्रीनंदीश्वर मंगल ५२  
चैत्यपूजनविधिः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नंदीश्वरदीपतपस्याविधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम दीवालीसैं तपस्या अंगीकारकरै ॥ प्रतिक्रमणादि पूजा  
देववंदन पर्यंत सर्वकृत्यकरकै गुणनो करै ॥ यथा ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीरुषजादि वर्द्धमानांतांशास्वता जिन सर्वज्ञायनमः ॥ इसको  
२००० गुणनोकरै । छतपकरै । पीठे बारे मास अमावसको अमावस १२  
उपवास करे । फेर दूसरी दीवाली आवै जब तेलोकरै । नंदीश्वर ५२ जिना  
लयकी थापना करके जूदा २ काव्य पूजापढके ॥ जल चंदनादि अष्टप्रकारसैं  
पूजाकरे । सब फल धजा दीपक बावन चैत्ये चढावै ॥ इसीतरै उद्यापन सा  
हमी वढलकरै ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नंदीश्वर दीपकी आरती लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जीया चतुर सुजाण । नवपदके गुण गायरे ॥ ( ए चाल ) ॥ ❀ ॥  
जीया अष्टपद्मीप । मंगल आरती गायरे । परमानंद पद एहीज जपतां ।  
अजरामर सुख पायरे ॥ जी० ॥ १ ॥ रुषजानन चंद्रानन वारिषेण । ब्रह्म  
मान पद ज्ञायरे ॥ जी० ॥ एच्यारे जिन सास्वत सोहै । समरण मंगल था  
यरे ॥ जी० ॥ २ ॥ अष्टप्रकारी पूज मनोहर । मनशुद्ध कर मन ज्ञायरे ॥  
जी० ॥ जन्मजरा दुःख दूरकरणतै । कीजै एह उपायरे ॥ जी० ॥ ३ ॥ पंच

प्रदीपसें आरती कीजे । आवे आवर्त्त कहायरे ॥ जी० ॥ जैन आरती पढ़े  
पढावै । तोथायै सुररायरे ॥ जी० ॥ ४ ॥ मंगलकारी विघननिवारी । सुख  
कारी लय लायरे ॥ जी० ॥ पंचमगति पांमें एहनां मै । जेगावै चितलायरे  
जी० ॥ ५ ॥ एहआरती प्रविजनमोहै । नांमें नव निध थायरे ॥ जी० ॥  
सुखकारी ए सकल मनोहर । कर्पूरजद्र गुणगायरे ॥ जी० ॥ ६ ॥ ❀ ॥  
इति नंदीश्वरजीकी आरती संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथैक विंशतिविध जिनेंद्रपूजा लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोधक ॥ मंगल हरिचंदन रुचिर । नंदन बिपिन उदार । वामानं  
दन पद पदम । वंदन करि जयकार ॥ १ ॥ प्रवचन में प्रचुनी कही ॥ इकवी  
स परम प्रकार । पूजा हित सुख होम शिव । पद करणी मनुहार ॥ २ ॥ राग ॥  
वासु पूज्यजिन अंतरजामी ॥ एचाल ॥ ए इकवीस विध पूजनकरीयै । जिननो  
प्रवचन हरियैरे । स्रपन । विलेपन २ भूषण ३ निरुपम । पुष्प ४ वास ५ उर  
धारियैरे ॥ ए० १ ॥ सुरभिधूप ६ फल ७ दीपक ८ तंडुल ९ । वरनैवेद्य ।  
१० मधु करियैरे । पत्र ११ पुंगीफल १२ निरमल जलभृत । कलश १३ बिंब  
पुर धारियैरे ॥ ए० २ ॥ वसन युगल १४ सितवत्र १५ चमर १६ धुनि । मधुरतूर  
नी १७ करियैरे गीत १८ नटन १९ जिनवर गुणनी स्तुति २० । कोशवृद्धि २१  
शुभ्र धारियैरे । ए० ३ ॥ इति इकवीस विधि पूजानाम पदम् ॥ १ ॥

( दूहा ) प्रथम पूज ए जाणियौ न्हवण करै जिन अंग । इण अरचनतें नव्य  
नौ । होइ कुमति मलजंग ॥ १ ॥ कलश सुगंध अवोटजलसुं जरी लेकर खमौ  
रहै ॥ रागदेशाख ॥ पूर्वमुखसावनं एदेशी ॥ अन्यदा कनकगिरि राजशिखरो  
परै । जिन निलय तत्र जिनचंद्रवसिया । विविध वरप्रति प्रकरणकुं सुरग  
णा प्रचुचरण पद्मनतिकरण रसिया ॥ अ० १ ॥ आवि चउसठि जिनप्रति धरि ह  
रिगणा । मिलिकरी सुर असुर कोमि कोडी । तीर्थपति ध्यावता विमलगुण गा  
वता । प्रचूदरश पावता पाणि जोडी ॥ अ० २ ॥ तीर्थ वरदाम परजास माग  
धपदमा । हीरसागर प्रमुख सलिल जरिया । सुखरा कनक मणि रयण रजतादि  
मया । कलश करकमल ऊपरि धरिया अ० ॥ ३ ॥ कलश मुख पतितघन चंद्रकर वि  
मलतर । सलिल उरुधारसें सहसुरेंद्रा । सुर गिरैं सकल जिनराजकौ न्हवण

करि।सफल किय निजजनम विगततंद्रा ॥ अ० ४ ॥ इणपरें सुजमती शुद्ध  
 श्रावक सदा । विमलजलसें करै न्हवण जिनको । तेह शिवचंद्र कर विमलप  
 दकुं लहै॥ हरिय संसरण संसारवनको ॥ अन्य० ५ ॥ काव्यं ॥ घनतरांतर ताप  
 विनाशनं । सकल मंगल शाल घनाघनं । जिनगण प्रमुदा जल धारया  
 हितकृते स्नपयामि रमारया ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अनंतानंत ज्ञानशक्तिभ्यः  
 सकल सुरवरेंद्र वृंद विहित भक्तिभ्यो जन्मजरामरण निवारणकारणेभ्यः कुम  
 तिमत् तरुणगण कानन समूलोन्मूलना वारणेभ्यो एहिलौकिक श्रीरूपजादि  
 श्रीवर्धमान पर्य्यतेभ्य श्रुतिविंशतिजिनेंद्रेभ्यो जलंयजामहे स्वाहा ॥ ॥ ❀ ॥  
 इति प्रथम जल पूजा ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ चंदनपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा॥ पुतियपूज चंदन सरस । कुंकुम अरु घनसार । घसिकै करिये  
 जिनतणें । तिलक विलेपन सार ॥ १ ॥ अंगणवाजं एलचीरेवाला एचालमें ।  
 हरिचंदन वर मृगमदारे वाल्हा । कुंकुम बलि घनसाररे । म्हांरौमन जिनचरणे  
 हो लगगयौ । घसिकरि कनक कचौलीयारे वाल्हा । जरिकर धरि गंधसाररे  
 ॥ म्हां० १ ॥ मिलिकरि सकल सुरसरारे वाल्हा । जिन अरचन चितधाररे ॥  
 म्हां० ॥ करइ तिलक नव अंगमैरे वाल्हा । जिनके विलेपन साररे ॥ म्हां० २ ॥  
 जिन नवतनु तिलकार्चनेरे वाल्हा । उपजितफल असमानरे ॥ म्हां० ॥  
 मुगतिरमणि जालखलैरे वाल्हा । नविहोय तिलक समानरे ॥ म्हां० ॥ ३ ॥  
 लेजवियण इणपरिकरैरे वाल्हा । चंदन पूजरसालरे ॥ म्हां० ॥ तेशिवचंद्र  
 विमललहैरेवाला । निरुपम गुण मणि मालरे ॥ म्हां० ॥ ४ ॥ काव्यं ॥  
 विमल ज्ञाव जरान्वित यार्चया । सुरजिचंदन जातसपर्यया । जिन  
 वेंद्रमुचूवनमर्चया । निशमहं सम पूजन वर्यया ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अ० श्रीरु  
 पजादि चतुर्विंशतिजिनेंद्रेभ्योश्चंदनं यजामहेस्वाहा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
 इति द्वितीय चंदनपूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ आचूषणपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तीजीपूजामें आचूषण अथवा रोकनाणौलेखनोरहै ॥ दूहा ॥  
 तृतीयपूज जिनराजनी । करहु नविक सुखदाय । मंरुन मंरित

जिनतनू । करियै नक्ति मिलाय ॥ १ ॥ राग ॥ पासजिनेसर अरुजसुणीजे  
 एचाल ॥ नृषणपूज तीसरी हरिगण । विरचै हित सुख कारीरे । नृषणधरि  
 जिनअंगें निरूपम । अनुनवरस लहै नारीरे ॥ नू० १ ॥ विविधरयण मणिमय  
 अतिसुंदर।मौलिमुकुट अतिराजैरे । अरध चंद्र सम प्रभु जालखल।विमल ति  
 लक छुतिगजैरे ॥ नू० २ ॥ पूरणचंद्र तरणि मंजुल छुति । कुंजल युगल सु  
 सोहैरे । श्रवणे अंगद बाहुयुगलमें । त्रिनुवन जन मन मोहैरे ॥ नू० ३ ॥ कांचन  
 थाल विसाल नरस्थल । हारि तार मणिहारारे । इणविधिपूजी शाश्वत जि  
 नकुं । सफल गिणें अवतारारे ॥ नू० ४ ॥ इणपरि सुधसमकितधर नरवर ॥  
 पूजै जिन जयकारूरे । ते शिवचंद्र विमल जिन पतिपद । संपदलहै अतिवा  
 रूरे ॥ नू० ५ ॥ काव्यं ॥ अतिमनोहरि निर्गतदूषणै । विविध दीप्ततरा छुत  
 नृषणैः । जिनवरौघ महं प्रयजामिस । तममनंतमनुत्तर सद्गुणं ॥ ५ ॥ ॐ श्री  
 श्री अ० श्रीरुषनादि चतुर्विंशतिजिनेंद्रेभ्य नृषणंयजामहे स्वाहा ॥ ❀ ॥  
 इति तृतीय आनृषण पूजा ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ पुष्पपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चौथीपूजामेंपुष्पमाला बूटाफूलजेईऊनोरहै ॥ दूहा ॥ जे नवि  
 यण नगवंतनी । पूज चतुर्थी सार । स्वई सुरभि कुसुमें करी । लहै सिंधु  
 नवपार ॥ १ ॥ रागजीममल्हार । गुंममिश्रित ॥ मेघवरसैजरी ॥ एदेशी ॥  
 सुरनितर कुसुम पूजन नणी ऊमहा ॥ शाश्वताजिनतणी सकलइंद्रा ।  
 कुंद मचकुंद अरविंद मंदारछहि । विजलसिरि वकुल दमणक वितंद्रा ॥ सु० ॥  
 १ ॥ तिलक सुम मोगरा मालती मखिका । नाग पुन्नाग नवमालिकाली ।  
 केतकी लाल गुह्याल शरवरणयुत । जलज बलि थलज गुणशालि काली ॥  
 सु० ॥ २ ॥ घनघना घन वटाकार बादल विरचि । पुष्पके कुसुम जलधार  
 वरसैं । बेग मिथ्यामतीदेषकै अवगिणैं । समकिती बहुलनर नमरहरसै ॥ सु०  
 ॥ ३ ॥ इणपरैं जिनतणी कुसुम पूजन करी । जिन चरणपद्म हरि हुइ नम  
 रिया । इणविधैं जेहजन कुसुम अरचन करै तेह अति गहिर नवसिंधु तरिया  
 ॥ सु० ॥ ४ ॥ का० ॥ त्रिनुवनेश्वरता कमलालयं । सकलजाव निजाल

नतालयं । जिनचयं विमलाक्षय चिन्मयं । सुकुसुमैः प्रमहासि सदोदयं ॥५॥  
ॐ ह्रीं श्री० कुसुमं यजामहे स्वाहा ॥ इति कुसुमपूजा ॥ ६ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पंचमी वासक्षेप पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ ❀ ॥ वास पूजए पंचमी । विरचै सुरवर सार । मुगतिवास  
करिवाजणी । उरधरि जावअपार ॥ १ ॥ एचूरण जरपूर । डुरितकरै चकचूर ।  
एजिनैद्र पूजन करतार । उत्तर तरइ संसार ॥ २ ॥ राग बेलाउल । गंधवटी  
घनसार ॥ ए चाल ॥ बावनाचंदन विपिननंदन जनितसुजघनसारये । वलि  
तगर कृष्णागरसु कुंकुम मृगमदागंधसारये । कंकोज अंबर द्रव्यधसिकरि  
रुचिर चूरण करिजलौ । जिनराज अंग उपांग पूजौ लहौ पदजगसिर  
तिलौ ॥ ३ ॥ दूहा ॥ जावधरी जरपूर । सुरवर चढतै नूर । अरचै श्रीजिनपद  
सार । वधतैहरष अपार ॥ ४ ॥ ढालतेहिज ॥ वर वासपूजन जगति करतां  
गंध दहदिशि महमहै । इण जगतिकारक विमलजससैं सकलजग सुरजित  
रहै । इण वासजगतै जगत जयहर अखिलमंगल नितलहै । शिवचंद्र विमल  
सुजाव पावक कुगति तति तरुवन दहै ॥ ५ ॥ काव्यं ॥ वरतराजुत वाससद  
चैया । निखिलपूजन सजुण धुर्यया । सकल विश्वगुरु गुणसजुहं । जिनवरं  
प्रयजे मुनिशंकरं ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्री० वासं यजामहे स्वाहा ॥ इति पंचमी  
वासक्षेपपूजा ॥ ५ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ढी धूपपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ ए ढी पूजा मुदा । करै सकल सुरराय । इण दशांग  
वर धूपसैं । अरचै जिन मनजाय ॥ १ ॥ राग ॥ साहिवा मोती धौनैं हमारौ  
॥ ए चाल ॥ ❀ ॥ किसनागरसेल्हारस सारा । सुरजि मृगमदा वर घन सारा ॥  
जावधरी जिनपूजा करीयै जाव धरीप ॥ कुंदरुक्क सुरजित द्रव्य सारा ।  
करइ गंधवट्टि अतिहिउदारा ॥ जा० १ ॥ कनक जात वैरूर्य दंरुजाणौ । गंध  
वटीधर कर धूपधाणौ ॥ जा० ॥ धूपपूज करता सुज जरता । जिनवर अंग  
सुगंधि विरचिता ॥ जा० २ ॥ धूपधूम ऊरध दिसि जातै । करिहरिकूं ऊरध  
गति तातै ॥ जा० ॥ जैसे धूप अनलमें जलियै । इण पूजनसैं करमदल ब  
लियै ॥ जा० ॥ ३ ॥ जैसे धूप गंध दिशि पसरै । तिम पूजकना वरगुण वि



स्तरै ॥ ज्ञा० ॥ तीननुवनकुं सुरभित करियै । तातैं धूपपूज नर धरियै ॥ ज्ञा०  
॥ ४ ॥ इम शिवचंद्र कहै भोजविका । इण पूजनसैं अंतकर भवका ॥ ज्ञा० ॥  
सुरपति धूपपूज करिसारा । लहै जिनदरशसैं हरष अपारा ॥ ज्ञा० ५ ॥ का  
व्यम् ॥ सुरभिधूप सुपूजनतः सदा । निज मनोमत मद्रकरं मुदा । सकल वि  
घ्नहरं वरसिद्धये । जिनवरेंद्र कदंबक मंचये ॥ ६ ॥ ॐ क्षी श्रीं धूपं यजामहे स्वाहा ॥  
इति षष्ठी धूपपूजा ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ फलपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) करण तीन इककरि भवी । करियै विगत विकार  
फलपूजा ए सातमी । वांछितफलदातार ॥ रागकामोद ॥ चंपक के  
तकिमाजती ॥ एचाल ॥ नवरंगी नारंगीया हारंनारंगीयाए अमल  
आम्रफल सार।सुखकरणा करणा जलावरणया कविमनुहार ॥ १ ॥ जंबू नीबू  
करमदा हारंअइयो क० ए । कर्कटि दाडिमसार।कदलीफलखारक वली फणस  
विदाम विचार ॥ २ ॥ श्रीफल अरु जंबेरीयाए । निमजा पिसता दाष । इत्या  
दिक गतदोष वर । सुरभि स्वादुफलभाष ॥ ३ ॥ एह विविध फलसैं भर्यो  
हारें० फ० ए। कंचनथाल विशाल । जगनायक आंगलिधरै । सुरपति भगति  
रसाल ॥ ४ ॥ इणपरि भविजन सुधमती हारें० ए । फलपूजा करतार सुरसुख  
फल लहि तेहुवइ । शिववनिता भरतार ॥ ५ ॥ काव्यं ॥ अति सुगंधियुतै  
गतिदूषणै । विविधसुंदरशाल विनूषणैः । प्रवरकांचनपात्र गतैः फलै । सुवि  
मलैः प्रयजे जिनमंजलं ॥ ६ ॥ ॐ क्षी श्रीं अ० फलं यजामहे स्वाहा ॥ ❀ ॥  
॥ ❀ ॥ इति सप्तमी फलपूजा ॥ ७ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ दीपपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ जगगुरु पूजा अष्टमी।सुरपति भक्ति मिलाय । जिनमंदिर  
दीपककरै।हरैकुमति समुदाय ॥ १ ॥ राग सारंग ॥ हांहोरे देवा बावना चंदन घस  
एचाल ॥ हांहोरेवाल्हा ॥ इंद्र चंद्र नागेंद्र सुरा । करै दीपक भक्ति र  
सालए ॥ हां० ॥ कनक रयण मणि रजतना।वर पात्र करै घृतगाल ए ॥ हां० ॥  
अनल ज्योतियुत वत्तिका।तसु मणि धरि विमलप्रकामए ॥ हां० ॥ करइ मंदिर  
मणि मालिका । नासै सहु तिमिर विलासए ॥ हां० ॥ २ ॥ मंगलदीपक कर धरी मं

गल मंदिर सुररायए(हां०)करि जिन आरति पुर धरै । प्रभु मुख लषि चित  
जलसायए ॥ हां० ३ ॥ दीप पूज करतारनो । दुरितांतर तिमिर विला  
यए ( हां० ) लोकालोक प्रगट करू । केवल सूरज जलसायए ( हां० ) ४ ॥  
शैवचंद्र जिन पूजसैं । इणपरि आवक मनजायए ॥ हां० ॥ तेह होइ दीप  
क समौ।त्रिचुवन मंदिर दीपायए ॥ ५ ॥ काव्यं ॥ जलशनाभि कजासन  
जालया । हरगवेश्वर तामलमालया । विमल मंगल दीपकमालया  
कमलया कलया जिनमर्चये ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं दीपं यजामहे स्वाहा ॥  
इत्यष्टमी दीपपूजा ॥ ९ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथाहुत पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ एनवमी पूजा सुमति । करियै धरि सुनजाव । विमल  
चारु तंडुल तणी । हितकरणी एदाव ॥ १ ॥ राग आनंद कल्याण ॥ पूजावणी  
तेरसमे ॥ एचाल ॥ प्रभु पूजा प्रवचने वरणी ॥ प्र० ॥ इंद्र चंद्र नागेंद्र सुरा  
सुर । समकित धर नर करणी ॥ प्र० ॥ अति अपार संसार जलधि जल ॥ नि  
पतित तारण तरणी ॥ प्र० ॥ १ ॥ हित सुख हेम परमपद परमा । नंद वृंद  
निधि धरणी ॥ प्र० ॥ ग्याता अंगेद्वपदि आविका ॥ दृढ समकित गुण  
धरणी ॥ प्र० ॥ २ ॥ जिन महाराज तणी किय अरचा । सतरजेद श्रुतवरणी  
॥ प्र० ॥ जेह अन्नव्य मंदमति कुमती । नव अनंत वन भ्रमणी ॥ प्र० ३ ॥  
पूजकथापै परतिख प्रभुनी । चितधरी कुमति कुरमणी ॥ प्र० ॥ वर शिवचंद्र  
किरणगण उज्जल । अहुत तंडुल हरणी ॥ प्र० ॥ ४ ॥ सेवकरैं सुरराय  
समकिती । इणविध आवक करणी ॥ प्र० ॥ इह विपरीत मंदमति जापै ।  
पूजा शिवपुर सरणी ॥ प्र० ॥ ५ ॥ काव्यं ॥ अशकलोज्वल तंडुल मंरुले ।  
रजत शालिमयैः कृतमंगलैः । सकल विश्वपति सुरसेवितं । जिन वेंद  
मह प्रयजेत्वहं ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्री अर्हप० अ० अहुतयजामहेस्वाहा इति  
नवमी अहुतपूजा ॥ ९ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ नैवेद्यपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ ❀ ॥ पूज एह नैवेद्यनी । दशमी अतिहउदार । नविक  
रियै हरियै विषम । दुर्जय विषय विकार ॥ १ ॥ रागरामगिरी ॥ गात्रलूहे

जिन ॥ ए चाल ॥ लपनश्री वर घृतवरारे वाल्हा ॥ सिंहकेसरीया सुखकरा ।  
 सुखकरा हां रेवाल्हा सुखकरा ॥ दालि शालि घृत युतिधरा ॥ ल० ॥ १ ॥ दाली  
 यामोदक सेवियारेवाल्हा ॥ मोतीचूर जलेबीया । मनहरा हां रेवाल्हा म० द्राख  
 सरकरा दुःखहरा ॥ २ ॥ इत्यादिक निरवघनैरे वाल्हा । थालजरी नैवेद्यनै ॥  
 ढोईयै हां रेवाल्हा ढो० ॥ प्रनुपुर पातक धोईयै । ल० ॥ ३ ॥ एहपूज सुखदायिनी  
 रेवाल्हा ॥ दुर्गति दुःख जरजायनी ॥ हरिकरै हां० हरि० ॥ तिम वलि श्रावक  
 चित्त धरै ॥ ल० ४ ॥ काव्यं ॥ नैवेद्यपूजार्चित मिद्रवंधं ॥ युतं समग्रा तिथयै  
 रनिंधं । जित व्रजंवासवतांप्रगद्या । नैवेद्यचूपं प्रमुदात्रिवंदे ॥ ५ ॥ ॐ क्षी श्री  
 अर्हं० अनंता नंतज्ञानशक्तिभ्यः नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति दशमी  
 नैवेद्यपूजा ॥ १० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ पत्रपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ उत्तमवृद्धकाग्रखंरुसुगंध सुवर्णपत्रलेकैखमारहै ॥ ( दूहा ) पत्र  
 पूज इग्यारमी । रिदय रमें सुरराय । करणदमीं करियै मुदा ॥ दरशन सुध  
 मिलाय ॥ १ ॥ रागजैखी ॥ पंचवरणी अंगीर० ॥ एचाल ॥ पूजकरणी प्रनु  
 जीनी कुशलकारी ॥ पू० ॥ नाग पुन्नाग मंदारसु मखौ कुंद अरविंद मुचुकुंद  
 हारी ॥ अंब कदंब अशोक मल्लिका जाइजूही शतपत्रिवारी ॥ पू० ॥ १ ॥ जुजं  
 गवद्धि परमुख सुरजितवर वर्णफलदल लेईसारी ॥ कनकपात्र धरि जिनबिंब  
 आगलि ॥ ढौवै परमप्रक्तिमनधारी ॥ पू० २ ॥ एह प्रगतिकर सहु सुर ना  
 यक ॥ दायक संपद फल जारी । इणपरसुध समकित धर प्रविजन ॥ पत्र पूज  
 करणी सारी ॥ पू० ३ ॥ पद शिवचंद्र जिनेंद्रनौ अरचन । करतां होय सरण  
 कारी । कुगति पतित जग जीवकुं उधरत । जिम सागर गति तरिवारी ॥  
 पू० ४ ॥ काव्यं ॥ सुरजि पत्र सदर्चन पूजितं ॥ परमचित्रकरातिथयैर्युतं ॥  
 सम सुरा सुर वासव वंदितं । जिनगणं मदनारिमहंयजे ५ ॐ क्षी० पत्रंयजा  
 महेस्वाहा । इति इग्यारमी पत्रपूजा ॥ ११ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ पुंगीफलपूजा ॥ ❀ ॥

( दूहा ) अति सुंदर तर पुंगफल । जिनवर चरण चढाय । पूज बारमी  
 जानीयै । करियै प्रवि मनजाय ॥ १ ॥ श्रीचंद्राप्रनु जिनवर साहि० एचाल

अरचीजै जिनचंद्र चरणकज नमरहोय नविसारा ॥ में वारी जातं ॥  
 न० ॥ जैसे कीट फीट हुय नमरी । ऐसाध्यानउपगारा ॥ अ० १ ॥ इह  
 अखंरु सुन्न सरस पूंगफल । करलेई अमृत आहारा ॥ में० ॥ क० ॥ अ० ॥  
 नगति युगति धरि जिनवर आगलि । ढोवै हरष अपारा ॥ में० ढो० अ० २ ॥  
 इम सुरनायकनी परि जेनवि । निरखी जिन दीदारा ॥ में० ॥ सुंदर करियै  
 जिनपद पूजन । तजि जंजाल अपारा ॥ में० ३ ॥ पूंगीफल पूजाफल सारा ।  
 चितधरि नवि मनुहारा ॥ में० ॥ पद शिवचंद्र लहो अवतारा । इम कहै प्रव  
 चनसारा ॥ में० ॥ इ० अ० ४ ॥ काव्यं ॥ सकल विश्वजनौघ वशंकरं । चरण  
 पद्मनता खिल शंकरं । दिनकरं हरणोघ तमोर्चिषां । जिनवरं वर पूंगफलैर्यजे  
 ॥५॥ ॐ ह्रीं पूंगीफलं यजामहे स्वाहा ॥ इति वारमी पूंगीफल पूजा ॥१२॥

### ॥ ❀ ॥ अथ कलश पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) कलश पूज एतेरमी । सहु मनगमी सुहाय । एह पूजसें  
 नविकनो । पातिक दूर पुलाय ॥ १ ॥ राग ॥ दादा कुशल सुरिंद तुमद० ॥  
 ॥ एचाल ॥ वारी जय जिनराज जय २ सकल देव सिरताज ॥ वा० ॥ जय २  
 त्रिनुवनजन महाराज । सोहै प्रनुपुर वार समाज ॥ वा० ॥ तुम प्रनु जगमें  
 दीनदयाल ॥ तुम प्रनु शरणागत प्रतिपाल ॥ वा० १ ॥ कलशपूज प्रनुनी अ  
 तिसार । करियै लहीयै नवजल पार ॥ वा० ॥ गंगा मागध बलि वरदाम ।  
 तीरथ जलनरीया सुखधाम ॥ वा० २ ॥ रयण कनक मणिना अवदात ।  
 सुषमा मंदिर कलश सुजात ॥ वा० ॥ अखिल पुरंदर कर परिधार । प्रनु पुर  
 धरियै हरष अपार ॥ वा० ॥ ३ ॥ जैसे कलश पूजसें इंद । पूजै जगनायक  
 जिनचंद्र ॥ वा० ॥ तेसें श्रावक समकिति वृंद । जिनपति पूजे परमानंद  
 ॥ वा० ४ ॥ कहै शिवचंद्र हृदय सुविशाल । प्रनुगुण समरण दीपक माल  
 ॥ वा० ॥ धरि हरि पापतिमिर गत पार । नगति करो नय निकर विदार ।  
 ॥ वा० ५ ॥ काव्यं ॥ कलशपुंज मनोरम पूजितां । जिनचंद्र तति धृतस  
 न्मति । सुदृढि नक्तिजनैः कृतसन्निभं । प्रतिदिनं प्रयजेविजितस्पृहां ॥६॥  
 ॐ ह्रीं कलशं यजामहे स्वाहा ॥ इति कलश पूजा ॥ १३ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ वस्त्र पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ वसन युगल पूजा हिवै । चनुदमि मन उलसाय । करियै  
 श्री जिनराजनी ॥ सकल जीउ सुखदाय ॥ १ ॥ राग बेलाउल । चित सेवा  
 प्रनु चरण की क० ॥ एचाल ॥ देववसन युग अतिप्रलो । पल्लव सुकुमाल  
 चंद्र किरण गण ऊजलो । अदनुत ज्योति विशाल ॥ दे० ॥ अखिल विबुध वर  
 ऊमहा ॥ चितधरि जगति अपार । वसन युगल मंमतिकरै ॥ जिनवर बिब  
 नदार ॥ दे० ॥ २ ॥ एसमकितधर हरितंणी । करणी सुखकार । इणपरिदेस  
 विरति करै । कुमति अनल जलधार ॥ दे० ॥ ३ ॥ यदि शिव चंद्र पद कम  
 लनी । सुख मधुर सनी आस । तद नवियण प्रतिदिन करौ । एपूजन शिव  
 वास ॥ दे० ॥ ४ ॥ काव्यं ॥ वसन युग्म सुमंमति नूधनं । परमशांति सुधारस  
 सधनं । जिनमिनंच महामिव सूच्यै । वसन युग्म चयैन्नितरांसुदा ॥ ५ ॥  
 नैं ज्ञी० वस्त्र युग्मं यजामहेस्वाहा ॥ इति चवदमी दिव्य वसन पूजा ॥ १४ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ षत्र पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ पूजषत्रनी पनरमी । दुरित तमी दिनकार । ए पूजन  
 करता धरै । तीन षत्र सिरसार ॥ १ ॥ म्हां रै षत्रैरे ऊगो दिहाडौ आजनोरे ।  
 एचाल ॥ जिनराज पूज जयकारिणीरे । सित चंद्र मंमल षत्रधारिणीरे ॥  
 जि० ॥ दुरितांतर ताप निवारिणीरे । अति गहिर सिंधु षत्र तारिणीरे जि० ॥ १ ॥  
 सुमतीजन हर्ष बधारिणीरे ॥ कुमती जन हर्ष विदारिणीरे ॥ जि० ॥ सह  
 जगजीउ जन मन हारिणीरे ॥ कुमतीनी कुमति सुधारिणीरे ॥ जि० ॥ २ ॥  
 यातो त्रिनुवन यश विसतारिणीरे ॥ काल कुशल व्रतति आसारिणीरे ॥ जि० ॥  
 सिरसोहै तसु मनुहारिणीरे । करै षत्र पूज शिवचारिणीरे ॥ जि० ॥ ३ ॥ हरि  
 जिम षत्रि सुधाचारिणीरे ॥ षत्रसायर पार उतारिणीरे ॥ जि० ॥ नरकादि  
 कुगति दुख मारिणीरे ॥ शिवचंद्र किरण अनुकारिणीरे ॥ जि० ॥ ४ ॥ काव्यं  
 सकल लोक शिवंकरताजरं ॥ कुमति धूक मत हिति नास्करं । सुविमलातप  
 वारण पूजया । ह्यलमलंकृत मास महंयजे ॥ ५ ॥ नैं ज्ञी० षत्रं यजामहे  
 स्वाहा ॥ इति षत्र पूजा ॥ १५ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ चामर पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ ❀ ॥ चमरपूज ए सोलमी । करियै जक्ति समाज ।  
 चमरयुगल करकमलधरि । पूजीजै जिनराज ॥ १ ॥ रागकेदारोगौडी ॥  
 कुंदकिरण शशि ऊजलोजी देवा ॥ ए चाल ॥ धवलरयण मणि जातनारे ॥  
 वाल्हा ॥ वाला अति सुकुमालारे । चंद्रतरणि किरणोज्वलारे ॥ वाल्हा ॥  
 विविध रयण दंरुजालारे ॥ १ ॥ प्रतिजिनदोयपासैखमारे वा० । सकल अमर  
 प्रतिपालारे । ऊपरै जिन महाराजनेरै ॥ वा० ॥ बीजै चमरविसालारे ॥ २ ॥  
 चामरयुग हरि बीजतारे ॥ वा० ॥ गत चामरता लहिस्यैरे । अमर अजर  
 शिवपद लहीरे ॥ वा० ॥ सफल अमरता वहिस्यैरे ॥ ३ ॥ चमर पूजकारि  
 सुखरारे ॥ वा० ॥ अनुभव अम्रित चाखैरे । इणपरिश्रावकजनकरैरे ॥  
 वाल्हा ॥ सुमतिवंत श्रुतनापैरे ॥ ४ ॥ काव्यं ॥ विशदचामर पूजन नूषितं ॥  
 विगतमार विकार मद्रूषितं । जिनगुणं विमलाखिल सद्गुणं । जयहरंचदधे  
 हृदयांबुजे ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अ० श्रामरयुगंयजामहेस्वाहा ॥ इति  
 चामरपूजा ॥ १६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ वाजित्रपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ ❀ ॥ पूज सतरमी मनरमी । करौजविक चितलाय ।  
 मधुरतूर धुनि कीजीयै । पूजनमें उलसाय ॥ १ ॥ रागकाफी ॥ अष्टापदगिरि  
 यात्रकरणकुं ॥ ए चाल ॥ द्रागिडिदि द्रागिडिदिकि धपमपधौधौ । सुरज  
 मधुरस्वर वाजै । जो त्रिनुवन महाराजजजध्वं ॥ इमसुरहुंनुजिगाजै । मनसु  
 धजावै होलाल ॥ श्री जिनवंदन करीयै । जावै पूजी हो लाल ॥ जिनपद  
 कमला वरीयै ॥ ताल कंसाळ जेरि शंख ऊद्धरि । निज निज धुनिसेंगाजै ॥  
 ऊणण २ वलि झणण २ कर । ताल माल करवाजै ॥ म० ॥ २ ॥ वेणुवीणा  
 दिक सुर संबंधी । सुर वाजित्र वजाया ॥ नूरि तूर ख मिलित मधुरस्वर ।  
 सुररांणी गुणगाया ॥ म० ॥ ३ ॥ इणविध आवक पूजरचावै । विविध  
 वाजित्र वजावै । बहुविध जववन सरण तजीने । पद शिवचंद्र सुपावै ॥ म०  
 ॥ ४ ॥ काव्यं ॥ विबुध वादित तूरवाश्रितं । प्रवरपूजन मंचित सत्पदः ।



सुरगणैः सुरराज समुन्वितै । जिनगणस्य मुदा विदधेसदा ॥ ५ ॥ इति  
सतरमीवादित्रपूजा ॥ १७ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ गीत पूजा ॥ ❀ ॥

॥❀॥ दूहा ॥ गीतपूज अछारमी । चित्तरमी सुखकार । गीतगान जिन आ  
गलै ॥ करहु नक्ति धरिसार ॥ राग वसंत ॥ ब्रज मंमल देश दिखावो रसीया  
॥ एचाल ॥ बलिहारी तेरी नाथ सूरिति परीया ब० ॥ जातं बलिहारी बारह  
जारी ॥ एसूरति गुणमणि दरीया ॥ ब० ॥ १ ॥ जेसूरति नलिनी गुणमणि  
सम ॥ पानकराणि हुय मधुकरीया ॥ ब० ॥ ते नवसागर पार उत्तरीया ॥  
चिदानंद घनपद वरिया । ब० ॥ २ ॥ इंद्रादिक वर सकल सुरासुर ॥ एजिन चरण  
शरण धरिया ॥ ब० ॥ इंद्राणी परिकर परिवरीया ॥ गीतगान सुंदर करीया  
॥ ब० ॥ ३ ॥ जलतरंग शिवचंद्र बिमलयश । सुरजिगंध जग विसतरीया  
॥ ब० ॥ एजिनगीत पूज करि हरिगण । इण विधि नविकर गुण नरीया  
॥ ब० ॥ ४ ॥ काव्यं ॥ मधुरगीत सुपूजन पूजितं । प्रबल मोहनरेन्द्र बजाजितं ॥  
परमशांति सुधारस सागरं । जिनवरं प्रणमामि मुदाकरं ॥ ५ ॥ इति  
अछारमी गीतपूजा ॥ १८ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ नाटक पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ नवअटवी नटकनतणी । विघटनता प्रकटाय । नटन पूज  
उ गुणीसमी । करतां संकट मिटाय ॥ १ ॥ आर्यावृत्ते ततः वीणाप्रचृतिकं । तालप्र  
चृतिघनं । वंशादिकंतु सुषिर । मानघं सुरजादिकं ॥ १ ॥ ततवन शुषिरा नद्या  
घनेकगीर्वाण तूर्यरव मिलितैः ॥ सप्तस्वरैश्च षडजादिमैः सुधास्पर्धिश्रमाधुर्यैः  
॥ २ ॥ नक्तिरताः सुरवनिताः । श्रीमज्जिनचंद्र चंद्र गुणगानं । मधुरतरामृत  
मधुरं । प्रकुर्वते सत्वरं सुतरां ॥ ३ ॥ युग्मं ॥ काव्यं ॥ सध्यानामदभृजजेंद्रगमनाः  
कल्याणकुंजस्तनाः । सद्भक्त्याकृत जैनपादनमनाः संपूर्ण चंद्राननाः । चंच  
द्भिर्दशाग्निः षमुत्तरगतैः शृंगारकैः शोचिता । नृत्यंतित्रिदशेंद्र वृंद वनिताः  
सौंदर्यदर्पोक्षताः ॥ ३ ॥ राग कैरवो ॥ बाजै तेरा बिबुआरे । वा० ॥ एचाल ॥  
निरत करत सुरकुमर कुमरीया ॥ नि० ॥ बाजै सुर डुंडुजिगगन मधुरीया  
॥ नि० ॥ जिनमुखकजमाजि दृग मधुकरीया । निरखि हरषि सुरदेत नमरीया

॥ नि० ॥ १ ॥ अरधचंद्रसम जालविराजत ॥ शरदचंद्रमुख अम्रित जरीया ॥  
 ॥ नि० ॥ अति विशाल सारंग विलोचन ॥ निरपित सह सुर  
 जनमन हरीया ॥ नि० ॥ २ ॥ सकललोक जनमन जीतणकुं ॥ मदन  
 सेन मनु प्रकटन करीया ॥ नि० ॥ तब सुरवनिता सुरसमलोहित । जलदघटा  
 मझि जैसी विजुरीया ॥ नि० ॥ ३ ॥ जणण जणण रणकित नेजरीया ॥ ठमिकर  
 पाय वजित धुवरीया ॥ नि० ॥ तत्ताथेई तत्ताथेई चलतचरण गति ॥ त  
 ननन री री गान उवरीया ॥ नि० ॥ ४ ॥ ताल कंसाल वेणु वीणादिक ॥  
 विविध तूर धुनि गयण पसरिया । नि० । द्रागनिदिकी २ थपमप ध्रौध्रौ । द्रेंद्रें  
 वाजित सुरज मधुरीया ॥ नि० ५ ॥ विविध तूर धुनि करत वधरीया ॥ अ  
 नुजव अमृत धार उठरीया ॥ नि० ॥ नटनकरंती अमर कुमरीया ॥ जिन  
 गुण गावत मधुर सुसुरीया ॥ नि० ६ ॥ सजीय सोल सिणगारसुंदरीया ॥  
 सकलदेव छुति घर सुर तिरीया ॥ नि० ॥ परम रूप लवणिमकी दरीया ।  
 मनुयवासकिय कामकेसरीया ॥ नि० ७ ॥ चिरंजीव चिरनंद जिणेसर ॥ जवजल  
 तारण तरण सुतरीया ॥ नि० ८ ॥ चिदानंदधन सुख आगरीया ॥ वारीजानंजिनजी  
 नींसूरति उपरीया ॥ नि० ९ ॥ जय जगवांधव जय जगवज्जल । जय २ जिन  
 महाराज शंकरीया ॥ नि० १० ॥ जेप्रनु समरण तरणि पकरीया । तेह चरम सा  
 गर जवतरीया ॥ नि० ११ ॥ सूरियाज दशकंधरनीपरि । जेह नटन जिनपति  
 पुरकरीया । नि० । ते शिवचंद्र अमल जिनपद युत । अम्रित कमला लिंग  
 नधरीया ॥ नि० १२ ॥ काव्यं ॥ जववनाटन नाटन नाशकं । कुशल पद्मदि  
 नेश विकाशकं । कुमतिशंचटनं नटनं सुदा । न्वहमहं विदधे पुरतोऽर्हतां  
 ॥ १३ ॥ इति उगणीसमीनाटकपूजा ॥ १४ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ जिनगुणस्तुति ॥ ❀ ॥

( दूहा ) जिनगुणस्तुति पूजन सदा । करोसुमति गुणधार । इणपूजन  
 कर्त्तातणो । करै स्तवन दनुजार ॥ १ ॥ विचखरे मधुवनके वावरे । में कैसें  
 जस्नजानं पानीरा ॥ एचाल ॥ मेरीलगीय लगन जिनराजचरणसैं ॥ में अव  
 तरीया जवदारिया ॥ मे० ॥ तुम प्रनु जीतलीये सुरगिरिया । धीरज  
 गुण सुखकरिया ॥ मे० १ ॥ जीतो अतिह गंजीर गुणें करि । परम

चरम सागरिया ॥ मे० ॥ चरण कमल सेवित अतिरसिया । हरिगण  
 अमर जमरिया ॥ मे० २ ॥ अलख निरंजन अगम अगोचर । तूं प्रभु  
 जगदीसरिया ॥ मे० ॥ अशरण शरण चरण निपतित जवि । जनेगण तारण  
 तरिया ॥ मे० ॥ ३ ॥ लोकालोक कमलवन विकसित । तुम प्रभुवासर क  
 रिया ॥ मे० ॥ तुम महाराज सकल जगजनको । तुम दरसन दृग ठरिया  
 ॥ मे० ४ ॥ मंगलकैरव कानन विकसन । प्रभु शिवचंद्र निकरिया ॥ मे० ॥ जे  
 जविमुख जिन तवन उच्चरिया । तेजिन कमलावरिया ॥ मे० ५ ॥ इणविध  
 आवक करियै जिननुति । अनुजवरस गुणजरिया ॥ मे० ॥ जिननुति  
 कारक जविजनकुं नित । प्रणमत जुवन विसरिया ॥ मे० ६ ॥ काव्यं ॥ वि  
 बुध संस्कृत सन्नुति राजितं । सकल सङ्गुण संग विजासितं । जिनगणस्य सदा  
 स्तवनं मुदा । सुखकरं सुतराविदधेतरां ॥ ७ ॥ इति जिनगुणस्तुति ॥ २० ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ कोशवृद्धिपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) कोशवृद्धि इकवीसमी । जिनपूजा मनुहार । करो जविक  
 तिणसें जरो । विमल पुण्य जंमार ॥ सब अरति मथनमु० ॥ एचाल ॥  
 रजतमणि कलधौत वरतर रयण द्रव्य उदाररे । अखिल हरिगण लेइ बहुतर  
 जय जिनजंमाररे ॥ रज० १ ॥ जेह सुमती उचित बहु धन । जेह कोश अपा  
 ररे । तेह निज जीवकोश माहें । जय ज्ञान उदाररे ॥ र० २ ॥ जे अधरमी  
 मंद कुमती । जेह पूजनसाररे । तेहि निज चेतन सदनकुं । करै व्यसनागाररे  
 ॥ ३ ॥ निम्नुणिजवि शिवचंद्र जंपै । पूज एह विसालरे । करो तुमे तिण  
 नित्य लहिस्स्यौ । अमल मंगल मालरे ॥ र० ४ ॥ काव्यं ॥ अमल कोश वि  
 वृद्धिसु पूजना । चितमनंत सुखबज संगतं । यतिनतं त्रिजगज्जन सम्मतं ।  
 निहत दुर्मत माप्त महंयजे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हतं ज्ञानशक्तिभ्यः  
 सकल सुरवरेंद्रवृंद विहितं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हतं ज्ञानशक्तिभ्यः  
 मततरुण काननसमूलोन्मूलं ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हतं ज्ञानशक्तिभ्यः  
 मानपर्य्यतेभ्यः श्रुतविंशति ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हतं ज्ञानशक्तिभ्यः  
 स्वाहा ॥ ❀ ॥

कुमति  
 श्रीरुषजादिश्रीवर्ध  
 यजामहे  
 ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग धन्या सिरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तेज तरणि मुखराजै ॥ एचाल ॥ जिनजीको सुरपति गण गुण गावै ॥ सु० ॥ जे इक्कीसजेद जिनपूजा ॥ करइ करावै जावै ॥ ते जन सकल दुरित अरि हरकारि ॥ तीर्थकर पदपावै ॥ जि० ॥ वरसनाग रुषि वसु धरणी मित ॥ सकल संघ सुखपावै ॥ माघमास सित पंचमि दिनकर ॥ वासर सहु दिनरावै ॥ जि० २ ॥ श्री जिन चंद्र सूरि खरतरपति । पटनत्र तरणि कहावै ॥ श्रीजिन हर्ष सूरि सूरेश्वर ॥ विजयमान वरदावै ॥ जि० ३ ॥ संघा ग्रह हुंती जय नगरे ॥ महो वजाय पद चावै ॥ रूप चंद्र वादींद्र विरुद्ध धर ॥ जमुगुणि जनगुण गावै ॥ जि० ४ ॥ तसु विनेय वाचकवर पदधर ॥ पुण्य शील शुभ्र जावै । समय सुंदर गणि तसुपद पंकज । सेवन जमर कहावै ॥ जि० ॥ ५ ॥ सु० ॥ समरण करि जिन वर गिरको तसु ॥ चरण कमल सुपसावै ॥ पूजरची पाठक शिव चंदे ॥ परमानंद वधावै ॥ जिन० सु० ॥ ६ ॥ ❀ ॥ इति शिवचंदजी उपध्यायकृत इक्कीस प्रकारी पूजा सं० ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीसमेतशिषरपूजा लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चौबीसे जिनवर तणा ॥ प्रणमी जावै पाय । समेतशिखरगिरिरायनी । पूजकरुं मनलाय ॥ १ ॥ शिखरसमेतसिरोमणी । एगिरवरकैलास । अतिउत्तम मनोहर । एजोगिंद्र विलास ॥ २ ॥ बीसप्रभु सुगतै गया । कर अणशण इह ठोर । तातै सुर किंनरसवे । बंदतहै करजोर ॥ ३ ॥ महिमा जाकी महियलै । कहि न सकै कवि कोय । मुक्ति महिल निश्रेणिकी । एतीरथजगहोय ॥ ४ ॥ मिथ्यामत राची रह्या ॥ तिनकुं ए न सुहाय । घूकतणै मन किमगमै । दिनकर सब सुखदाय ॥ ५ ॥ अजितजिणंद दिणंद सम । दूषम सुषमा काल । कुशल करन जव जय हरन । प्रगट नए प्रतिपाल ॥ ६ ॥ श्रीराग ॥ हांहोरेदेवा बावना चंदनधसकुमकुमा ॥ एचाल ॥ हांहोरेदेवा ॥ समेतशिषरगिरिरायना । गुणगावो मनधर प्रेम ए । हांहोरेदेवा । सुरगुरु पिण एगिरतणी । बहु महिमा वरणै केमए ॥ १ ॥ हांहोरेदेवा ॥ बीसप्रभु सुगतै गया ॥ अजितादिक श्रीजिनचंदए ॥ हांहोरेदेवा ॥ इणकारण एगिरवरु । निश्रेयस सुस्तरु कंदए ॥ २ ॥ हांहोरेदेवा । कोमाकोमी मुनिवरु । सीधावहु इणगिर आयए ॥ हांहोरेदेवा ॥ एगिर फरस्यां

चरम सागरिया ॥ मे० ॥ चरण कमल सेवित अतिरसिया । हरिगण  
 अमर जमरिया ॥ मे० २ ॥ अलख निरंजन अगम अगोचर । तूं प्रभु  
 जगदीसरिया ॥ मे० ॥ अशरण शरण चरण निपतित नवि । जनगण तारण  
 तरिया ॥ मे० ॥ ३ ॥ लोकालोक कमलबन विकसित । तुम प्रभुवासर क  
 रिया ॥ मे० ॥ तुम महाराज सकल जगजनको । तुम दरसन दृग ठरिया  
 ॥ मे० ४ ॥ मंगलकैरव कानन विकसन । प्रभु शिवचंद्र निकरिया ॥ मे० ॥ जे  
 नविमुख जिन तवन उचरिया । तेजिन कमलावरिया ॥ मे० ५ ॥ इणविध  
 श्रावक करियै जिननुति । अनुभवस गुणजरिया ॥ मे० ॥ जिननुति  
 कारक नविजनकुं नित । प्रणमत भुवन विसरिया ॥ मे० ६ ॥ काव्यं ॥ वि  
 बुध संस्कृत सनुति राजितं । सकल सज्जुण संग विज्ञासितं । जिनगणस्य सदा  
 स्तवनं मुदा । सुखकरं सुतराविदधेतरां ॥ ७ ॥ इति जिनगुणस्तुति ॥ २० ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ कोशवृद्धिपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) कोशवृद्धि इकवीसमी । जिनपूजा मनुहार । करो नविक  
 तिणसैं जरो । विमल पुण्य जंमारे १ ॥ सब अरति मथनसु० ॥ एचाल ॥  
 रजतमणि कलधौत वरतर रयण द्रव्य उदाररे । अखिल हरिगण लेइ बहुतर  
 जय जिनजंमारे ॥ रज० १ ॥ जेह सुमती उचित बहु धन । जे कोश अपा  
 रे । तेह निज जीउकोश माहें । जय ज्ञान उदाररे ॥ र० २ ॥ जे अधरमी  
 मंद कुमती । हरै पूजनसाररे । तेहि निज चेतन सदनकुं । करै व्यसनागारे  
 र० ३ ॥ निसुणिनवि शिवचंद्र जंपै । पूज एह विसालरे । करो तुमे तिण  
 नित्य लहिस्यौ । अमल मंगल माजरे ॥ र० ४ ॥ काव्यं ॥ अमल कोश वि  
 वृद्धिसु पूजना । चितमनंत सुखबज संगतं । यतिनतं त्रिजगज्जन सम्मतं ।  
 निहत दुर्मत माप्त महंयजे ॥ १ ॥ नै श्री अर्हत अनंतानंत ज्ञानशक्तिभ्यः  
 सकल सुरवरेंद्रवृंद विहित नक्तिभ्योजन्मजरामरण निवारणकारणेभ्यः कुमति  
 मततरुण काननसमूलोन्मूलनवारणेभ्यो ऐहि लौकिक श्रीरूपनादिश्रीवर्ध  
 मानपर्य्यतेभ्यः शत्रुविंशति जिनेंद्रेभ्यः कोश वृद्धयर्थं दिव्य द्रव्यं यजामहे  
 स्वाहा ॥ ❀ ॥ इति कोश वृद्धि पूजा ॥ २१ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग धन्या सिरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तेज तरणि मुखराजै ॥ एचाल ॥ जिनजीको सुरपति गण गुण गावै ॥ सु० ॥ जे इक्कीसजेद जिनपूजा ॥ करइ करावै जावै ॥ ते जन सकल दुरित अरि हरकारि ॥ तीर्थकर पदपावै ॥ जि० ॥ वरसनाग रुपि वसु धरणी मित ॥ सकल संघ सुखपावै ॥ माघमास सित पंचमि दिनकर ॥ वासर सहु दिनरावै ॥ जि० २ ॥ श्री जिन चंद्र सूरि खरतरपति । पटनत्र तरणि कहावै ॥ श्रीजिन हर्ष सूरि सूरेश्वर ॥ विजयमान वरदावै ॥ जि० ३ ॥ संघा ग्रह हुंती जय नगरे ॥ महो वजाय पद चावै ॥ रूप चंद्र वादींद्र विरुद्ध धर ॥ जमुगुणि जनगुण गावै ॥ जि० ४ ॥ तसु विनेय वाचकवर पदधर ॥ पुण्य शील शुभ्र जावै । समय सुंदर गणि तसुपद पंकज । सेवन जमर कहावै ॥ जि० ॥ ५ ॥ सु० ॥ समरण करि जिन वर गिरकोतसु ॥ चरण कमल सुपसावै ॥ पूजरची पाठक शिव चंदे ॥ परमानंद वधावै ॥ जिन० सु० ॥ ६ ॥ ❀ ॥ इति शिवचंदजी उपध्यायकृत इक्कीस प्रकारी पूजा सं० ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीसमेतशिषरपूजा लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चौबीसे जिनवर तणाप्रणमीजावै पाय । समेतशिखरगिरिरायनी । पूजकरुंमनलाय ॥ १ ॥ शिखरसमेतसिरोमणी । एगिरवरकैलास । अतिउत्तग मनोहरू । एजोगिंद्र विलास ॥ २ ॥ बीसप्रभु सुगतेँ गया । कर अणशण इह ठोर । तातेँ सुर किंनरसवे । वंदतहै करजोर ॥ ३ ॥ महिमा जाकी महियजै । कहि न सकै कवि कोय । मुक्ति महिल निश्रेणिकी । एतीरथजगहोय ॥ ४ ॥ मिथ्यामत राची रह्या ॥ तिनकुं ए न सुहाय । घूकतणें मन किमगमें । दिनकर सब सुखदाय ॥ ५ ॥ अजितजिणंद दिणंद सम । दूपम सुषमा काल । कुशल करन जव जय हरन । प्रगट जए प्रतिपाल ॥ ६ ॥ श्रीराग ॥ हांहोरेदेवा बावना चंदनघसकुमकुमा ॥ एचाल ॥ हांहोरेदेवा ॥ समेतशिषरगिरिरायना । गुणगावो मनधर प्रेम ए । हांहोरेदेवा । सुरगुरु पिण एगिरतणी । बहु महिमा वरणे केमए ॥ १ ॥ हांहोरेदेवा ॥ बीसप्रभु सुगतेँ गया ॥ अडितादिक श्रीजिनचंदए ॥ हांहोरेदेवा ॥ इणकारण एगिरवरू । निश्रेयस सुरतरु कंदए ॥ २ ॥ हांहोरेदेवा । कोनाकोसी मुनिवरू । सीधावहु इणगिर आयए ॥ हांहोरेदेवा ॥ एगिर फरस्यां



जावथी। पापी पिण पावन थायए ॥३॥ हांहोरेदेवा। श्रावक सुध समकित धरे  
 ते विधपूर्वक धर प्रेमए ॥ हांहोरेदेवा ॥ बालकहै जिनचंद्रनी। करै भक्ति सदा  
 निजखेमए । हांहो० ॥ ४ ॥ इति । १ । ढाल दूजी। पूर्वमुषसावनंकरिदश  
 नपावनं । एचाल ॥ अडित जिनचंद्र सुरवृंद सेवित सदा ॥ सुभग पतकज  
 तणी सेवना । हांरेअईयोसेवनाए । जगत दुर्खभमणी रत्नपर जीवकुं । पूजीयै  
 चरण जिन देवनाए ॥ हांरे० ॥१॥ तरण तारण भवोदधि भविकजीव केई ॥  
 परम उपगार कर निस्तरया । हांरे० । शिखरगिर राय परपाय निर्वाणपद ॥  
 सिध निजरूप गुण संजरया ॥ हांरेअ० ॥२॥ अष्टविध पूजना द्रव्य भावै करै ॥  
 भाव मन सौच धर जेनरा ॥ हांरेअ० ॥ तेशिखरतीर्थ शिवसौख्य संपदवरै ॥  
 बाल जिनभक्तवत्सलकरा । हांरेअईयो वत्सल० ॥ ३ ॥ इति । नै श्री श्रीपर  
 मात्मनेअनंतानंत ग्यानशक्तए जन्मजरा मृत्युनिवारणाय श्रीअडितजिनै  
 द्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहाः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ द्वितीयपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ ❀ ॥ श्रीसंभव भवदव अनल । जलधर सम जिनराज ।  
 परउपगारी परमगुरु । भए भविक सुखकाज ॥ १ ॥ रागवेलाउल ॥ विलेपन  
 कीजै श्री जिनवर अंगै ॥ ए देशी ॥ पूजियैजिन मनरंगै जिनेसर ॥ पूजि० ॥  
 जल कुंकुमादृत धूप दीप करी । नेवजफल मनचंगै ॥ जिने० १ ॥ सेना मात  
 जितारी तात सुत । श्रीसंभव जिन अंगै । हार सुगट कुंमल वर नूषण ।  
 चाढो भवि सुभदंगै ॥ जि० पू० ॥ २ ॥ शिखर शिखर पर शिखरभएहै  
 अनंतचतुष्क सुरंगै । बालचंद्र प्रनु अधम उधारन । प्रनुता परम प्रसंगै  
 जिनेसर पूजियै० ॥ ३ ॥ नै श्री श्री परमात्मने० संभवजिनैद्रायअष्टद्रव्यं  
 यजामहेस्वाहाः । इति द्वितीयपूजा ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ तृतीयपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ ❀ ॥ अग्निनंदन जिनचंदकी । महिमा वरणी न जाय ।  
 परमरूप परमात्मा । सदानंद सुखदाय ॥ १ ॥ रागसारंग ॥ सांजसमें जिन  
 वंदो भवि० ॥ ए चालमें ॥ अग्निनंदनजिनवंदो । भविजन । अग्नि० ।  
 आंकणी ॥ संवरतात सिद्धार्थमाता । जाके कुलनभ चंदो ॥ भ० अ० ॥ १ ॥

अधम उधारन प्रवदुःख वारन । सिव सुरतरुनो कंदो । इंद्र चंद्र असुरेंद्र नमें  
नित । वंदित सुर नर वृंदो ॥ ज० अ० ॥ २ ॥ समेतशिखर पर सिवसुख  
पायो । मिटगयो प्रवप्रय फंदो । बालचंद्र प्रनु तरण तारणको । पूजनकरी  
चिरनंदो ॥ प्रवि० अ० ॥ ३ ॥ इति । नैऋती श्री परमात्मने० श्री अग्निनं  
दन जिनेन्द्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहाः ॥ ३ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ चतुर्थीसुमतिजिनपूजा ॥ ॥

॥ ॥ दूहा ॥ ॥ सुमतिनाथ समसंपदा । सदा सुमति दातार ।  
सेवै सुर नर अमरसहु । चरन सरन चितधार ॥ २ ॥ रागसारंग ॥ चरणकी  
चरणकी चरणकी । वारीजानं मैं० ॥ ए चाल ॥ बलिजानं मैं सुमति  
जिनंदकी ॥ व० ॥ आंकणी ॥ पूरनब्रह्म प्रण परमात्म । मेघकुलांबर  
चंदकी ॥ बलि० ॥ १ ॥ प्रविकुल कमल विकास करनकुं । प्रगट  
प्रताप दिणंदकी । सवि गुणलायक वंछित दायक । शासन सुरतरुंद  
की ॥ २ ॥ बलि० ॥ करन सुसेवा खचर अमरनर । मात सुमंगला नंदकी । बाल  
चंद्र प्रनु पतित उधारन । सवगुन रतन समंदकी ॥ बलि० ॥ ३ ॥ नैऋती श्री  
परमात्मने० श्रीसुमतिजिनेन्द्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहाः ॥ ४ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ पंचमी पूजा ॥ ॥

॥ ॥ ( दूहा ) ॥ पदम प्रनूपद पद्मकी । सरनगही सुखदाय । दर्शन  
विन अनदेवको । संग कबून सुहाय ॥ १ ॥ राग सोरठ मल्हार ॥ अणियारे  
नेन जिनके । सखि सुनि संग बालक किनके ॥ एचाल ॥ प्रनुसेती प्रीत  
लागी । मेरी जाग्यादिसा अब जागीरे ॥ प्रनु० आंकणी ॥ पद्मप्रनुजीके दर  
सण अंतर । आगल अब मेरी जागीरे ॥ प्रनु० १ ॥ प्रनु परमात्म में बहिरा  
तम । अनुभव आत्म सागी । प्रगट प्रताप प्रनु प्रनुतालख । अब मैं प्रयो  
अनुरागी ॥ प्रनु० २ ॥ अंतरगतकी वैहीज बूझै । क्या बूझै जो दागी । बाल  
चंद्र निज नाथ निहारत । कुमति कुटलता त्यागीरे ॥ प्रनु० ३ ॥ इति नैऋती  
श्रीपरमात्मने श्रीपद्मप्रनुजिन अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहाः ॥ ५ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ षष्ठी सुपार्श्वजिन पूजा ॥ ॥

॥ ॥ ( दूहा ) ॥ लोहवातु सम आतमा । परमात्म चिद्रूप । कंचनरूप करै

प्रगट । श्रीसुपास जिन चूप॥१॥श्रीसुपास जग जीवके। पारससम जिनराज ।  
 अण घड आतम लोहकुं । कंचन करै सुकाज ॥ २ राग वसंत ॥ दादा कुसल  
 सुरिंद तुम दरसणतैं परमानंद ॥ दादा० ॥ ए चाल ॥ जवि पूजो सु  
 पास । सहुनी बंठित पूरै आस ॥ जवि० । जाको कमल सम सुगंध  
 सास । आहार नीहार अटस्य जास ॥ जवि० ॥ १ ॥ न घटै न वधै नख केस  
 पास । मांसासृग उज्ज्वल वर्णतास ॥ जवि० ॥ अतिसय चौतीस तणौ प्रकास ।  
 तरण तारण जग जस सुवास ॥ जवि० ॥ २ ॥ श्री समेतशिखर पर कर  
 निवास । प्रनु पायो मुक्तिमहिलसुवास ॥ जवि० ॥ प्रनुके समरणसैं कर्मनास ।  
 कहै बाल सदा मैं प्रनुकोदास ॥ जवि० ॥ ३ ॥ इति । ॐ क्षी श्री परमात्मने०  
 श्रीसुपार्श्वजिन अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहाः ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ सातमीपूजा ॥ ❀ ॥

॥❀॥ चंद्रा प्रनुकी चंद्रसम । सुखसोजा मनुहार ॥ देखत दृग आनंद लहै ।  
 सूरत अति सुखकार । मल्लि मनोहर तुऊ ठकुराई॥ए राग॥ श्री चंद्रा प्रनु अरज  
 सुणीजै । श्री चंद्रा० आंक०॥त्रिनुवन नाथ गरीबके ऊपर । दीनदयाल निवाज  
 सकीजै ॥ श्रीचंद्रा० १ । अधम उधारन विरुदतुमारो । मोसो अधम न ऊर  
 कहीजै ॥ श्री० ॥ इह संसार अपार अगाधमै । साहिब सरणागत रषजीजै ॥  
 श्रीचं० ॥ २ ॥ मोपतितनकुं पार उतारो ॥ निज निर्यामक विरुद वहीजै ॥  
 श्री० ॥ बालचंद प्रनुशिव सुख दायक । आतम संपद अवमोहिदीजै॥श्रीचं०॥  
 ॥ ३ ॥ ॐ क्षी श्री परमात्मने अनंतानंत ग्यांन० जन्म० श्रीम० श्रीचंद्रा प्रनु  
 अष्ट द्रव्यं यजा महेस्वाहा ॥ ७ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ अष्टमी पूजा ॥ ❀ ॥

॥❀॥(दूहा)सुबिध जिनंद दिनंदसम । जग जीवन हितकार । मिथ्या मोह  
 अग्यानतम । दूर हरन दिनकार ॥ १ ॥ राग ॥ जियाचतुर सुजाण नवपदके  
 गुणगायरे ॥ एहनी ॥ जेटो जविक सुजाण सुबिध जिणंद सुजजावरे ॥जे०॥  
 उत्तम कुल नरजवतैं पायो ॥ फिर असो नही दावरे ॥ जे० १ ॥ जक्त उधा  
 रन जवि निस्तारन । जवसागरकी नावरे ॥ जे० ॥ तन मन बसकर निज  
 आतमको । प्रनु समरण लय लावरे ॥ जे०२॥ द्रव्य जाव युत पूजन करियै ।

मनधर अधिक उन्हावरे ॥ जे० ॥ बालचंद प्रनुपतित उधारन । मिलगए  
पुन्य पसावरे ॥ जे० ॥ ३ ॥ इति ॐ क्लीं श्री परमात्मने श्री सुविध जिनें  
द्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहाः ॥ इति अष्टमी पूजा ॥ ९ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नवमी पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ ❀ ॥ श्रीशीतल मुनिइंद्रकी । महिमा अजब अपार ।  
ज्ञानानलथी जिणदीया । कर्मअष्टेंधनजार ॥ १ ॥ ढाल ॥ सिद्धाचलगिरि  
जेव्यारे धनजाग्य हमारा ॥ एहनी ॥ श्रीशीतलजिनवंदोरे जविजनसुखकारा  
श्री० पतित उधारन पुरगति वारक । दायक शिवसुख सारारे ॥ ज०  
॥ १ ॥ जक्तजविक जव जय अपहारी । ए प्रनु परम सुप्यारारे । ज०  
मिथ्या ग्रीषम ताप निवारन । प्रनुचंदन अनुकारारे ॥ ज० २ ॥ परनुपगारी  
परम महागुरु । परमात्म अविकारारे ॥ ज० ॥ बालकहै प्रनुको जवजवमें  
चरणसरणमनवारारे ॥ ज० ३ ॥ ॐ क्लीं श्री परमात्मने० श्री शीतलजिनं  
द्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहाः ॥ ९ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ दशमीपूजा ॥ ❀ ॥

( दूहा ) श्री श्रेयांसजिणंदनी । चरन सरन सुखकार ॥ पुन्यप्रसाद मिल्यो  
मुजै । जव २ सुखदातार ॥ १ ॥ ढाल ॥ दादाचिरंजयो सेवकजन सुखदाई  
दरसण सदादियो ॥ एचाल ॥ जवि जावधरी श्री श्रेयांसजिनेसर पूजो मन  
रली ॥ ज० एप्रनुसम अवरन कोदेवा । जाकी चौसठइंद्र करे सेवा ॥ तेजहै  
सुरसुख शिवसुख मेवा ॥ ज० १ ॥ प्रनु परतिख सुरतरु सम स्वामी ।  
जाकी पुन्यप्रसाद सेवा पांमी । प्रनु जगजीवन अंतर जामी ॥ ज० २ ॥ प्रनु  
दोनदयाल परमदाता । जगवत्सल जगबंधव त्राता । कहै बाल सकलदायक  
साता ॥ ज० ३ ॥ इति । ॐ क्लीं श्रीपरमात्मने श्री श्रेयांसजिनेंद्रायअष्टद्र  
व्यं यजामहे स्वाहाः ॥ १० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ इग्यारमीपूजा ॥ ❀ ॥

( दूहा ) परमात्मपरमेसरु । श्री तेरमजिनराज । ध्यावो सेवोजविकजना  
ज्युंपावो सुखसाज ॥ १ ॥ रागकनफो । मेरी लागीजगन जिनचरणे ॥ मेरी०  
एचाल ॥ मनमोहोरी मेरो जिन चरणे म० ॥ दुःख दोहग सवहरणै । मन० ॥

प्रगट । श्रीसुपास जिन नृपा॥१॥श्रीसुपास जग जीवके। पारससम जिनराज ।  
 अण घड आतम लोहकुं । कंचन करै सुकाज ॥ २ राग वसंत ॥ दादा कुसल  
 सुरिंद तुम दरसणतैं परमानंद ॥ दादा० ॥ ए चाल ॥ जवि पूजो सु  
 पास । सहुनी बंझित पूरै आस ॥ जवि० । जाको कमल सम सुगंध  
 सास । आहार नीहार अदृश्य जास ॥ जवि० ॥ १ ॥ न घटै न बधै नख केस  
 पास । मांसासृग उज्ज्वल वर्णतास ॥ जवि० ॥ अतिसय चौतीस तणौ प्रकास ।  
 तरण तारण जग जस सुवास ॥ जवि० ॥ २ ॥ श्री समेतशिखर पर कर  
 निवास । प्रनु पायो मुक्तिमहिलसुवास ॥ जवि० ॥ प्रनुके समरणसैं कर्मनास ।  
 कहै बाल सदा मैं प्रनुकोदास ॥ जवि० ॥ ३ ॥ इति । ॐ क्षी श्री परमात्मने०  
 श्रीसुपार्श्वजिन अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहाः ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ सातमीपूजा ॥ ❀ ॥

॥❀॥ चंद्रा प्रनुकी चंद्रसम । सुखसोजा मनुहार ॥ देखत दृग आनंद लहै ।  
 सूरत अति सुखकार । मल्लि मनोहर तुऊ ठकुराई ॥ ए राग ॥ श्री चंद्रा प्रनु अरज  
 सुणीजै । श्री चंद्रा० आंक० ॥ त्रिनुवन नाथ गरीबके ऊपर । दीनदयाल निवाज  
 सकीजै ॥ श्रीचंद्रा० १ । अधम उधारन विरुदतुमारो । मोसो अधम न ऊर  
 कहीजै ॥ श्री० ॥ इह संसार अपार अगाधमै । साहिब सरणागत रषजीजै ॥  
 श्रीचं० ॥ २ ॥ मोपतितनकुं पार उतारो ॥ निज निर्यामक विरुद वहीजै ॥  
 श्री० ॥ बालचंद प्रनुशिव सुख दायक । आतम संपद अवमोहिदीजै ॥ श्रीचं० ॥  
 ॥ ३ ॥ ॐ क्षी श्री परमात्मने अनंतानंत ग्यांन० जन्म० श्रीम० श्रीचंद्रा प्रनु  
 अष्ट द्रव्यं यजा महेस्वाहा ॥ ७ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ अष्टमी पूजा ॥ ❀ ॥

॥❀॥ (दूहा) सुविध जिनंद दिनंदसमा । जग जीवन हितकार । मिथ्या मोह  
 अग्यानतम । दूर हरन दिनकार ॥ १ ॥ राग ॥ जियाचतुर सुजाण नवपदके  
 गुणगायरे ॥ एहनी ॥ जेटो जविक सुजाण सुविध जिणंद सुजन्नावरे ॥ जे० ॥  
 उत्तम कुल नरजवतैं पायो ॥ फिर औसो नही दावरे ॥ जे० १ ॥ अक्त उधा  
 रन जवि निस्तारन । जवसागरकी नावरे ॥ जे० ॥ तन मन बसकर निज  
 आतमकों । प्रनु समरण लय लावरे ॥ जे० २ ॥ द्रव्य जाव युत पूजन करियै ।

मनधर अधिक उद्धाररे ॥ जे० ॥ बालचंद प्रनुपतित उधारन । मिलगए  
पुन्य पसावरे ॥ जे० ॥ ३ ॥ इति ॐ क्लीं श्री परमात्मने श्री सुविध जिनें  
द्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहाः ॥ इति अष्टमी पूजा ॥ ९ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नवमी पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ ❀ ॥ श्रीशीतल मुनिइंद्रकी । महिमा अजब अपार ।  
ज्ञानानलथी जिणदीया । कर्मअष्टेधनजार ॥ १ ॥ ढाल ॥ सिद्धाचलगिरी  
जेव्यारे धनजाग्य हमारा ॥ एहनी ॥ श्रीशीतलजिनवंदोरे प्रविजनसुखकारा  
श्री० पतित उधारन दुर्गाति वारक । दायक शिवसुख सारारे ॥ ज०  
॥ १ ॥ प्रक्तप्रविक प्रव प्रय अपहारी । ए प्रनु परम सुप्यारारे । ज०  
मिथ्या शीषम ताप निवारन । प्रनुचंदन अनुकारारे ॥ ज० २ ॥ परनुपगारी  
परम महागुरु । परमात्म अविकारारे ॥ ज० ॥ बालकहै प्रनुको प्रवप्रवमें  
चरणसरणमनवारारे ॥ ज० ३ ॥ ॐ क्लीं श्री परमात्मने० श्री शीतलजिनं  
द्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहाः ॥ ९ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ दशमीपूजा ॥ ❀ ॥

( दूहा ) श्री श्रेयांसजिणंदनी । चरन सरन सुखकारा ॥ पुन्यप्रसाद मिल्यो  
मुजै । प्रव २ सुखदातार ॥ १ ॥ ढाल ॥ दादाचिरंजयो सेवकजन सुखदाई  
दरसण सदादियो ॥ एचाल ॥ प्रवि प्रावधरी श्री श्रेयांसजिनेसर पूजो मन  
रली ॥ ज० एप्रनुसम अवरन कोदेवा । जाकी चौसठइंद्र करै सेवा ॥ तेजहै  
सुरसुख सिवसुख मेवा ॥ ज० १ ॥ प्रनु परतिख सुरतरु सम स्वामी ।  
जाकी पुन्यप्रसाद सेवा पामी । प्रनु जगजीवन अंतर जामी ॥ ज० २ ॥ प्रनु  
दीनदयाल परमदाता । जगवत्सल जगबंधव त्राता । कहै बाल सकलदायक  
साता ॥ ज० ३ ॥ इति । ॐ क्लीं श्रीपरमात्मने श्री श्रेयांसजिनेंद्रायअष्टद्र-  
व्यं यजामहे स्वाहाः ॥ १० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ इग्यारमीपूजा ॥ ❀ ॥

( दूहा ) परमात्मपरमेसरु । श्री तेरमजिनराज । ध्यावो सेवोप्रविकजना  
ज्युंपावो सुखसाज ॥ १ ॥ रागकनमो । मेरी जागीजगन जिनचरणे ॥ मेरी०  
एचाल ॥ मनमोह्योरी मेरो जिन चरणे म० ॥ दुःख दोहग सवहरणे । मन० ॥



विमलजिनंदकी अदनुत तनुगवि । सोन्नत सोवनवरणै । म० ॥ १ ॥ दीन  
 दयाल दयानिध दाता । सबजीवन सुखकरणै ॥ म० ॥ परमात्म प्रनुपरम  
 परमगुरु । प्रनुजण तारण तरणै ॥ म० २ ॥ पुन्यप्रसाद लह्यौ प्रनु दरशना  
 सास्वत शिवसुख धरणै । म० । बालकहै प्रनु सेवकजाणी । रख लीजै मोहि  
 सरणै ॥ म० ३ ॥ इति । ॐ ह्रीं श्री परमात्मने अनंता० जन्मज० श्रीमत्०  
 श्री विमल जिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहाः ॥ ११ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ बारमी पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ श्री अनंत जिन देवकी । सेवकरो मनलाय । मनवंछित  
 सुख जिमलहै । दुरगत दूर पुलाय ॥ १ ॥ रागमालवीगौनी ॥ सब  
 अरति मथन सुदार धूपं ॥ करतगंध रसालरे ॥ देवा० ॥ एचाल ॥ ध्यावो  
 सेवो नविजन नक्तै । अनंतजिनंद महाराजरे देवा ॥ एसुरतरुसम जगमें जिन  
 वरातारणतरण जिहाजरे ॥ देवा ॥ ध्या० १ ॥ कृपासिंधु नगवान परमगुरुती  
 ननुवन सिरताजरे । देवा ॥ जिनसेवाते शिवसुख पामें । सफलहुवै सब  
 काजरे । देवा । ध्यावो० ॥ २ ॥ इह संसार असार नजनविन । कैसें रहै निज  
 लाजरे । देवा । बालचंद्र प्रनु परनुपगारी । दायक अविचल राजरे । देवा । ध्या  
 वो० ३ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने अनंत जिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहाः १२ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ तेरमी पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ धर्म जिनेसर परमगुरु । परनुपगारी देव । परमात्म  
 प्रनु चरणकी । कीजै नितप्रति सेव ॥ १ ॥ राग जैरवी ॥ पंचवरणी अंगीरची कुसु  
 मजाती । कुसुमजातीरे अईयो कुसुम० पां० एचाल ॥ सुखकारीरे देवा  
 सुखकारी । धर्मजिनंद सेवो सुखकारी । सुखकारीरे देवा । ध० । तीन नुवनके  
 साम शिरोमणि । सब जीवनकोहै हितकारी ॥ धर्म० १ ॥ जगजीवन जगबंधव  
 जगगुरु । परम पुरुष प्रनु उपगारी । अकल सकल अघहर पर अनुपमा अचल  
 अगोचर अविकारी । धर्म० २ । नवसंताप निवारण तारण । जिनसेवा मोहि  
 अतिप्यारी । सुरतरुसम प्रनु चरणशरणकी । बालचंद्र कहै बलिहारी । धर्म० ३  
 इति । ॐ ह्रीं श्री परमात्मने अनंता० जन्म० श्रीमत्० श्रीधर्मजिनेंद्राय अष्ट  
 द्रव्यं यजामहे स्वाहाः ॥ १३ ॥

॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ चवदमी पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) शांति करण सब दुःखहरण । शांतिजपो सुखकार । शिव  
सुखदायक जगतगुरु । परमात्म अविकार ॥ १ ॥ राग गौमी ॥ केसरीयाने  
ज्याजको लोक तिरायो । ए अचिरिज मोहि आयो के० एचाल ॥ शांतिजि  
नेसर ध्यावो । नविजन शांति० । तरण तारण नवसागर जिनको । तीनजगत  
जस चावो ॥ न० शां० १ ॥ शांति सुधारस नाम प्रभुको । समरण कर मन  
चावो । कर्मकोट सतखंरु हुवै तव । सुध सरूपी थावो ॥ न० शां० २ । नक्ति  
करो मनसुध नगवंतकी । मन सुध प्रभुगुण गावो । बालकहै प्रभुके सेवनसैं ।  
मनवंतित फलपावो । न० शां० ३ इति ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मने० श्रीशांतिजि  
नेद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहाः ॥ १४ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ पनरमी पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सोरठो ॥ कुंथुजिनेसर देव । नविजन पूजो नावथी । चरण  
कमल की सेव । इंद्रादिक नित प्रति करै ॥ १ ॥ राग सोरठ ॥ कुंद किरण  
ससि कुजलोजी देवा । पावन वसि धनसारोजी आठो ॥ एचाल ॥ चंद्र  
किरण जेसो कुजलोरे देवा । जग जश प्रभुविस्तारोजी ॥ आठो ॥ अनंत  
गुणेंकरी सोनतारे ॥ देवा ॥ कुंथुजिनंद जग सारोजी ॥ १ ॥ आठो ॥ कामि  
त दायक सुरतरूरे देवा ॥ सर्व जीवन प्रति पालोजी ॥ आठो ॥ नवि जन  
पूजो नावथीरे ॥ देवा ॥ ए प्रभुपरम आधारोजी ॥ २ ॥ आठो ॥ शिवसुख दायक  
साहिवारे ॥ देवा ॥ पतित उधारन हारोजी । आठो ॥ बालचंद्र जिनचंद नोरे  
॥ देवा ॥ सरणगह्यो सुखकारोजी ॥ आठो ॥ चंद्र० ३ इति ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मने  
श्री कुंथु जिनेन्द्राय अष्ट द्रव्यं यजामहेस्वाहाः ॥ १५ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ सोलमी पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ श्री अरनाथ जिनंदनी । पूजा अष्टप्रकार । करियै मन  
सुध नावसों, नवनव सुखदातार ॥ १ ॥ राग कालिंगडो ॥ मनारे जिन  
चरणा चितलावो, मनारे एहनी ॥ श्री अरनाथ कुं ध्यावो मनारे त्रिभुवन पति  
गुण गावो ॥ म० त्रिभु० ॥ त्रैसो अवरन देव जगतमें । जाको जगजश चावो ॥  
म० त्रि० १ ॥ सूर नरेसर नंदन प्रभुजी ॥ मात प्रजावती ठावो ॥ तन मन लगन

लगावो प्रभूसै ॥ नरक निगोद नजावो ॥ म०त्रि० २ ॥ परम पुरुष परमेश्वर  
प्रभुको । चरण शरण मनजावो । दीनदयाल दयानिध पूजत । बाल परम  
सुख पावो ॥ म०त्रि० ३ इति । ॐ ह्रीं श्री परमात्मने श्री अरनाथ जिनद्राय  
अष्टद्रव्यं यजामहेस्वाहाः ॥ १६ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ सतरमी पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ कुंज समुद्रव जगधणी । मल्लिजिनेसर देव । जसु पद पंकज  
की करै । इंद्र चंद्र नितसेव ॥ १ ॥ राग कल्याण । तेरी पूजावनी तेरसै  
ते० एचाल ॥ मेरी लगन लगी जिन चरणें । मल्लिजिनंद सुखकरणै । होमेरी०  
॥ त्रिभुवन नायक सब सुख दायक । एप्रभु अशरण शरणें ॥ होमेरी० १ ॥  
अनुपम रूप विराजित प्रभुजी । सोजत सोवन वरणें ॥ होमेरी० २ ॥ अंकज  
अगोचर प्रभु उपगारी । ध्यावो सब दुख हरणै । होमेरी० ॥ जो निज आतम  
कुं सुखचावो । लावो चित्त समरणै ॥ होमेरी० ॥ बालकहै प्रभु अधम उधारन  
रखलीजै मोहि सरणै होमे० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने श्री मल्लिजिनं  
द्राय अष्ट द्रव्यं यजामहेस्वाहाः ॥ १७ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ अठारमीपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ ❀ ॥ विंशतितम जिनवर नमुं । मुनिसुव्रत जिनचंद ।  
जावै प्रविजन जेटियै । दूरदलै प्रविफंद ॥ १ ॥ रागमल्हार ॥ चिहुंज  
बदरियावरसै ॥ ए चाल ॥ मुनिसुव्रतस्वामीदरसै ॥ आजआनंद धनवरसैहो  
मु० ॥ समेतशिखरपर प्रभुपद पंकज । पुन्यप्रसादै फरसैहो ॥ मु० ॥ १ ॥ प्रभुदर  
शन घनघोर घटालख । मोरनयनयुग तरसै ॥ हो मु० ॥ प्रविजनचात्रक  
प्रभुगुन गावत । जावत जावन जरसै ॥ हो मु० ॥ २ ॥ धर्मध्वनिजाके  
उपजत खेती । कर्म निरसहोय निरसै ॥ हो मु० ॥ बालप्रसाद प्रभुजीके  
आतम । परमातम प्रभु सरसै ॥ हो मु० ॥ ३ ॥ इति । ॐ ह्रीं श्री परमात्मने०  
अनं० जन्म० श्रीमत्० श्रीमुनिसुव्रतजिनेंद्रायअष्टद्रव्यं यजामहेस्वाहाः ॥ १८ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ उगणीसमीपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ ❀ ॥ नमिजिन पूजो जावसों । प्रविक प्रक्ति मनलाय ।  
जावसुध जिन पूजतां । दुरगति दूर पुलाय ॥ १ ॥ रागमालवीगौमी ॥ सब

अरतिमथनसुदारधूपं ॥ ए चाल ॥ नमिजिनेशर जगदिनेशर । पूजो  
 जविजन जावरे । जगतपति जिनराज साहिव । जवसमुद्रनो नावरे ॥ न०  
 ॥ १ ॥ इंद्र चंद्र सुरेंद्र नर सुर । पूजनको जमुचावरे ॥ तरण तरण कृपासा  
 गर । सेवनको अवदावरे ॥ न० ॥ २ ॥ पुन्यनुदै प्रनु दरसनपायो । आनंदकंद  
 सुजजावरे । बालकहै प्रनुके चरणकी । सरणमोहि सुहावरे ॥ न० ॥ ३ ॥  
 इति । ॐ क्लीं श्री परमात्मने० अनं० जन्म० श्रीमत्० श्रीनमिजिनेंद्राय अष्ट  
 द्रव्यं यजामहे स्वाहाः ॥ १९ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ बीशमीपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ ❀ ॥ पारश पारशनाथका । गुणगातां गहिगट्ट । कष्टलै  
 संपति मिलै । मनवंछित फलथट्ट ॥ १ ॥ राग । सांवरीयास्वामीजी अवमो  
 हितारो ॥ ए चाल ॥ शांवरीयासाहिवकी बलिहारी सां० ॥ अश्वसेनतात वामा  
 देवीमाता । पाशजिणंदहै सुखकारी ॥ सां० ॥ १ ॥ जाके गुणको पारनपावै ।  
 इंदनरेंद नरनारी ॥ सां० ॥ जवजवजमतां प्रजुजीमें पाया । छुरगति दूर  
 निवारी ॥ सां० ॥ २ ॥ अबमें प्रजुविन और नचाहुं । एहीमुज्जमन  
 इकतारी । बालकहै प्रजुसाहिव मेरे । शिवसुखदो मोहितकारी ॥ सां० ॥ ३ ॥

॥ ❀ ॥ ढाल दूसरी ॥ तेजतरणमुखराजै । हांउ मुख० एचाल ॥ जविजन  
 शिखरसमेतवधावो । ज० ॥ बीसजिनेशर मुगतसिधाए । ए तीरथ जगचावो । ज०  
 १ ॥ द्रव्य जावकरी पूजरचावो । त्रिभुवनपति गुणगावो । समकित पुष्टालंवन  
 कारन । एसम उर नजावो ॥ ज० २ ॥ सकल संवमकसूदावादमें । आनंद अधिक  
 बढावो । जक्ति जावसें प्रजुजीकुं पूज्या । मनवंछित फल पावो ॥ ज० ३ ॥ संवत  
 सिधि नजनिधि वसुधा सुज । कार्तिक सुदि पणचावो । जिन सौभाग्य सूरी  
 सर गुणनिधि । खस्तर गढपति चावो ॥ ज० ४ ॥ अमृत लाज समुद्र पसायै ॥ पूजर  
 ची जवि जावो ॥ बालचंद परमात्म प्रजुका ॥ हरपहरप गुणगावो ॥ ज० ५ ॥ इति  
 ॐ क्लीं श्री परमात्मने अनंतानंत ग्यानशक्तये जन्म० श्रीमत् पार्श्व जिनें  
 द्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहाः ॥ २० ॥ राग कमखो ॥ शिखर गिरितीर्थकर  
 बीश जिनवर मुदा । जक्ति जर जविकवर पूज करिये । अष्टविध विविध धरि  
 सिधि नवनिधि सही । सुघट घट संपदा प्रगट वरिये । शि० १ । विकट वट

कर्मकी जोट दूर करी । विबुध बुध आत्म निज सुधि धरियै । चरण जिनस  
रण गहि जवतरण जन लहै । चरण दरसण लही ज्ञान चरियै । शि० २ ।  
धन्य दिन आज जिनराज गिरराज चढ । दरस लहि सरस संसार दरियै । धर्म  
धर मगन जिन प्रक्ति पूरनगही । दुरति गति दुःखसें दूर दरियै । शि० ३ ।  
अष्ट नम्र निधि सदा सिद्धि सुद मावमें । पूज करि शक्ति निज प्रक्ति प्ररियै ।  
बाल प्रतिपाल सुविसाल गुनगावतां । धार जव वार निधि पार तरियै ।  
॥ शि० ॥ ४ ॥ इति श्रीबालचंदजी उपाध्याय कृत समेत शिखरगिरी  
पूजा संपूरणम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ वार व्रतकी पूजा लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम समकित द्रढ करण जल पूजा ॥ दूहा ॥ व्रत वारै आदर  
करी । पूजा तेर विधान । आनंदादिक संग्रही । सप्तम अंग प्रधान ॥ १ ॥  
राग सरपदो ॥ ज्योति सकल जग जागती हां० ॥ ए चाल ॥ ज्योति विमल  
जगजलहलै । हांरे अइयोज० ए । शाशन पति जिनचंद । त्रिकरण प्रणमन  
करिनमूं । वीरचरण अरविंद ॥ १ ॥ न्हवन १ विलेवण २ बासनी ३ ।  
हांरे० । मालं ४ दीवंच ५ ध्रुवणियं ६ ॥ फूल ७ सुमंगल ८ तंडुला ९ ॥  
हांरे० ए० ॥ अमलं दप्पणंच १० नैवज्जं ११ ॥ २ ॥ ध्वज १२ फलवृंद  
१३ एमेलियै । हां० ए । पूजा त्रिदश प्रकार । हांए । व्रत ग्रहि अनुक्रम  
अरचीयै । जगपति जगदाधार ॥ ३ ॥ सिवतरु सुखफल स्वादनो ॥ हांरे० ।  
दायक गुणमणि खांण । हांए । कुशल कला कलना थकी । प्रगटै परम  
निधान ॥ ४ ॥ दूहा ॥ समकित व्रत धुर आदरो । मेढो निज मन प्रर्म ।  
दूर थकी ए परि हरो । कुगुरु कुदेव कुधर्म ॥ १ ॥ धुर दर्शनाण सुचरण  
अणसण धीर वीर्य वखानियै । तपइम सकलना सिद्धि गज वसु पण ति वार  
सुठानियै । व्रत बारना अतिचार शर शर परम गुरुमुख जानियै । करित्याग  
राग प्रशस्त धरिमन विमल संवर मानियै ॥ १ ॥ राग रामगिरी ॥ गात्रलूहै  
जिनमन रंगसूरे देवा । स० । ए चाल ॥ धुर समकित व्रत चित धरोरे वा  
ल्हा । जवजय दुःख दल परिहरो । परिहरो हांरे बाल्हाप० । शिवरमणी वर  
लीजीयै ॥ १ ॥ वीर जिनेसर वंदीयैरे बाल्हा । जिम चिरकालसुं नंदीयै ।

नं० हारेवा० ॥ कुमति दुरति सरकीजीयै ॥ २ ॥ चरण करण गुण मणि  
 निलोरे बाल्हा० । जगजन तारण सिरतिजो । सिं० हां० ॥ सदगुरुचरण  
 नमीजीयै ॥ ३ ॥ जिन जाषित श्रुतसागरोरे वा० जेद विविध विधि  
 आगरो । आगरो० हांरे० ॥ श्रवण जुगलकर पीजीयै ॥ ४ ॥ जिन  
 शासन जिनधर्म नोरे वा० । रागदलन वसुकर्मनो । कर्म० । हां । कुश  
 लकला रसजीजीयै ॥ ५ इति ॥ दूहा ॥ सकल कर्मदल मलहरण । पूजा  
 धुर जलधार । जगनायक जिनतुंगनी । उरधर जगति उदार ॥ १ ॥ रागजि  
 जोटी ॥ निरमल होय जजलै प्रनुप्यारा । सव० ॥ ए चाल ॥ जिनवर न्हवण  
 करण सुखदाई । बूटै जनम मरण दुःखदाई । जि० । टेरे ॥ खीरजलधि गंगोद  
 कमांहि । अमल कमल रस सरस मिलाई । जिन० ॥ १ ॥ निरमल शकल  
 परम तीरथ जल । मणियुत कंचन कलश जराई ॥ जिन० ॥ २ ॥ या जिन  
 जीके नवण करणतें । जवजय दुःखदल दावसमाई ॥ जि० ॥ ३ ॥ द्रव्य जाव  
 विधि समकित फरसै । तेनर नरक निगोद न जाई ॥ जि० ॥ ४ ॥ यातें जवि  
 जनके दुःख नामै । कपूर कहै सुरहोत सहाई ॥ जि० ॥ ५ ॥ इति० ॥ काव्यं  
 परमलंकृत संस्कृत अक्षया । स्रपति यो जिनचंद्र मिमंसुदा । जवजयं परिमु  
 च्य सदोदयं । जजति सिद्धिपदं सुखसागरं ॥ १ ॥ ॐ क्षी श्री परमात्मने अ  
 नंतानंत ग्यानसक्तये । जन्मजरा० श्रीमद्० श्रीसमकितव्रत उपदेशकाय जलं  
 यजामहेस्वाहा । इति प्रथम समकित व्रतपूजा ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥❀॥ अथ प्राणातिपातव्रते केशर चंदन विलेपन पूजा ॥❀॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ प्राणातिपात विस्मय व्रतें । ठनो जंतु विनास । इणसुं  
 शिवसुख नामिलै । हिंसा दोषविजास ॥ १ ॥ हमकुं ठांडचले वनमा  
 धो । राधा० ॥ ए चाल ॥ जविजन जीवदया व्रत धारो । सम परिणा  
 म संजारोरे । ज० ॥ टेरे ॥ अपराधी पिण जीव न हणिये । जाषे  
 जगदा धारोरे । देशविरति धरनें पिण जाख्यो । विन अपराध न मारोरे । ज०  
 गो गज सेंधव महिषा दिक्कनें । बंधन वध न विचारोरे । कीजै न अवयव  
 ठेद त्रिकाले । जल चारो न विसारोरे ॥ ज० ॥ २ ॥ कीमी कुंजरनें सम  
 गिणीयै । सुख दुःख जोग विकारोरे । थावर व्रस पंचेंद्रादिकनो । होय रहि



यै हित कारोरे ॥ ज० ॥ ३ ॥ ए व्रत रत चित जे नर जगमें । सुर नर गण  
मन प्यारोरे । तेहिज लोभ महाजटमारघो । सकल करम परिवारोरे ज० ॥ ४ ॥  
थूलथकी ए व्रत जे पालै । तेजहै शिवसुख सारोरे । कुशल कला कलना  
करी प्रगटै । अनुजवरंग नदारोरे । जवि० ॥ ५ ॥ दूहा ॥ जव दव दाघ सवे  
मितै । पूजो परम दयाल । जावठ जंजन सुखकरण । दूजी पूजरसाल ॥ १ ॥  
( राग घाटो ) । जिनराजनाम तेरा म्हाराज० । ए चाल ॥ पूजो जिनेंद्र प्यारा ।  
होतारोरे विकट जवजलसैं । हो० । टेरे ॥ हांरे वनसार चंदन वासै । हांरे  
सुकुरंग नात्रि जासै । दुःख नारकादि नासै ॥ होता० ॥ १ ॥ घसि सूकना  
दि जेली । नाना सुगंध मेली । शिवदै न कर्म ठेली ॥ होता० ॥ २ ॥ पूजा  
सदा रचावो । वर जावनापि जावो । शिवसौधमे समावो ॥ होता० ॥ ३ ॥ विधि  
जाव द्रव्य धारो । हिंसाको दोष वारो । प्रभुनाम नां विसारो । होता० ॥ ४ ॥  
तज पाप जार फंदा । शिवशं कलाप कंदा । साधै कपूरचंदा ॥ होता० ॥ ५ ॥  
इति प्रथम पूजा ॥ काव्यं ॥ अमल कुंकुम केशर मिश्रितै । जिनपतेर्युगपा  
द समर्चनं । हरति सो जवदाघ मसुंदरं । रचितियो घनसार सुचंदनै ॥ १ ॥  
ॐ ह्रीं श्री परमात्मने अनंता० जन्म० श्रीमत्० प्राणातिपात विरमण व्रत  
उपदेशकाय चंदनं यजामहे स्वाहाः ॥ इति प्राणातिपात पूजा ॥ २ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ मृषावाद व्रते वासहेप पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॥ दूहा ॥ मृषात्याग व्रत दूसरो । कुमति दुरति हरतार ।  
जविजन जावै आदरो । शिवतरु फलदातार ॥ १ ॥ राग वशंत ॥ सब  
अरति मथन सुदारधूपं । कर० ॥ ए चाल ॥ सुण जविक नर धर दुतिय  
व्रत मन । मृषावादन बोलरे । बाला मृषा० । टेरे ॥ मृषावाद कुवाद शेखर  
कुजशवाद न ढोलरे । बाला । कुजश० सु० ॥ १ ॥ सकल शिवसुख धाम  
धरमरवि । ढकण राहु निटोलरे । शिवपुर नगर पथि शवर सरिखो । अरति  
व्यापन घोलरे । बाला । अरति० बाला० । सु० ॥ २ ॥ निपट कूट कला  
प करिनें ! परगुपति मतखोलरे । रुणविधौ धनधान्य निकरै । कपट कूट न  
तोलरे ॥ बालाक० सु० ॥ ३ ॥ कूटलेख कुसाख जरिनें । रचयमां रुमनो  
लरे । अन्य सिरसि कलंक धरिनें । चरित गांनुं न बोलरे । बाला चरित०

सु० ॥ ४ ॥ वसुनरेसर वृथा रचिने । लहो कुगति कचोलरे । दुतीय व्रत  
 रस राग जेखी । कुशलसार विमोलरे । बाजाकुश० सु० ॥ ५ ॥ इति ॥  
 ॥ दूहा ॥ जगदाधार जिनंदने । पूजो वासरसैण । शिववनिता वस कीजियै ।  
 पूजा त्रयतम एण ॥ १ ॥ राग गरवो ॥ जवि चतुर सुजाण परनारी सुं प्रीत  
 नी कवहुन कीजियै ॥ ज० । ए चाल ॥ जविजाव धरी जवसागर निस तार  
 क जिनपति सेवियै ॥ ज० ॥ टेरे ॥ बावनाचंदन खंरुन करियै । तेहमां बलि  
 कुंकुमरस जरियै । मृगमद परिमलता अनुसरियै ॥ जवि० ॥ १ ॥ कंकोल  
 सुवासित बलि कीजै । तिम विवध कुसुम रस कस दीजै । ए चूरण विधि  
 निज बसकीजै ॥ जवि० ॥ २ ॥ इम वासरसै जे जिन पूजै ॥ तिणसै स  
 वि करम सबल धूजै ॥ सुखसंपति जायन घर दूजै ॥ जवि० ॥ ३ ॥ सुर  
 किंनर नर सासन धारै । विनसमरथां सहसंकट वारै । ए पूजन मनवंडित  
 सारै ॥ जवि० ॥ ४ ॥ विमला कमला सबला पावै । जे प्रनुगुण गण जावन  
 जावै । इम चंदकपूर सुजशगावै ॥ जवि० ॥ ५ ॥ इति काव्यं ॥ मृगमदां  
 वर घश्रण मिश्रितै । वैखरास सुचंदन संस्कृतैः । रचतियो जिन पूजन  
 मंजसा । सलजते निवृत्ति किजवासकैः ॥ नै क्षी श्री परमात्मने अनंतानंत  
 ग्यानसक्तये । जन्मजरामृत्यु श्रीमद० मृषावाद विरमण व्रत उपदेशकाय वा  
 सहेपं यजामहेस्वाहाः । इति तीसरी मृषावाद व्रत पूजा ॥ ३ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चोथी अदत्तादांन व्रते पुष्प माल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ व्रततृतीय हिवसांजलो । जाखै जगतजिनंद । स्तेयकरण सब सुख  
 हरण । अष्टकरम दलकंद ॥ १ ॥ राग सोरठ ॥ हांहोरे देवा । बावन चंदन वासि  
 कुमकुमा । चूर० । ए चाल ॥ हांहोरे वाला । परधनहरण गमन करो ।  
 धरि त्रिकरण शुद्धविलाशए । हांहोरेवाल्हा । ए जवजल जलधर समो । व  
 लि समकित वृंद विनास ए । व० ॥ १ ॥ हांहोरे वाल्हा ॥ कनक रजत मणि  
 धातुनो । जल थल खज पशु पटकूनए । ज० ॥ हांहोरे वाल्हा ॥ इमतनु श्रू  
 ल जगतिजरया । जही सकल पदार्थ मूलए । ज० ॥ २ ॥ हांहोरे वा  
 ल्हा । कुमति पुरति रमणी तणो । ते सदन ए चोरीनो कर्मए । जे० । हांहोरे  
 वा० । विपद जलधि पिण जाणियै । सचपल थई नासैधर्मए । स० ॥ ३ ॥

हांहोरे वा० ॥ ए व्रत सुरतरु सारिखो । शिव सुख फल दैन उदार ए । शि०  
 हांहोरे बाड्हा । कुशल कलायुत कीजियै । लहियै जवजलनोपार ए । ल०  
 ॥ ४ ॥ इति ॥ दूहा ॥ पूज चतुर्थी मालनी । करियै जक्ति वशेण । मोहति  
 मर जर नपशमें । प्रगटै बोध खिणेण ॥ १ ॥ राग खंजायची । जवजय हरणा ।  
 शिवसुख करणा । सदा जजो ब्रम० में० एचाल ॥ जविजन पूजो जिन ग्रीवा  
 धरि । बर फूलनकी माला । मेंवारी० ब० ॥ ए पूजन दुरगति घरछेदी । विरचै  
 शिवसुख साला । मेंवा० विर० जवि० ॥ १ ॥ चंपक मरुक तिलक चंपेली । पामल  
 लालगुलाला । मेंवा० पा० । विमल कमल परिमल मदमाता । नतजै अलि  
 मतवाला । मेंवा० । नत० जवि० ॥ २ ॥ जाई दमण जूही कोरंटक । मालती  
 मरुक रसाला । मेंवा० मा० । ऐसैं पंचवरण कुसुमें करि । माल रचन परना  
 ला । मेंवा० मा० जवि० ॥ ३ ॥ ए मालापूजन करीनासै । कोटि करम दुःखजा  
 ला । मेंवा० को० । सुमति सुरति अनुजव बलि प्रगटै । त्रासै कुमति कुचाला ।  
 मेंवा० त्रा० जवि० ॥ ४ ॥ ए विधि संबरधर विकसै । पापसदन सुखताला ।  
 मेंवा० पा० । कपूरकहै प्रनुचरण शरणमें । मंगल माल विशाला । मेंवा० मं०  
 जवि ॥ ५ ॥ इति ॥ काव्य । सरस मुजर चंपक पाटलै । मरुक मालति केतकी  
 सत्कजैः । विधि विगुंफ्याजिनं परिपूजयेत । सज मजश्रम मीनिरजेज्जकः १ ॥  
 उँ ङ्गी श्री परमात्मने अनंतानं० जन्मजरा० श्रीम० अदत्तादान विरमण व्रत  
 उपदेशकाय । मालं यजामहेस्वाहाः ॥ इति अदत्तादान व्रत चौथी पूजा ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पांचमी मैथुन व्रते दीपपूजा ॥ ❀ ॥

॥ दूहा ॥ ❀ ॥ व्रत चौथे मैथुन तजो । जजो जविक जगवान । शीला  
 राधन योगसैं । लहियै शर्म वितान ॥ १ ॥ राग सौरठ ॥ कुंद किरण शशी ऊ  
 जलोरे देवा । पाव० ॥ ए चाल ॥ मन वच काया थिरकरीरे । बाड्हा । कजु  
 ख कुशील निवारोरे । आओ । एह नरक रमणी तणोरे । बाड्हा । शोदर  
 अति हित कारोरे । आओ ॥ १ ॥ नर सुर पशु सहजातनोरे बाड्हा ।  
 विषय कलित बहु दोषैरे । आओ । ते परिहारिनें थिररहोरे बाला० । निजदा  
 रासंतोषैरे ॥ २ ॥ आओ । लंकापति नरकै गयोरे । बाड्हा एमैथुनरस  
 धारूरे आओ । एहनें तजकरि केईलहारे । बाड्हा । जीवसकल सुखसारूरे

॥ ३ ॥ आठो । शील रख जतने धरोरे बाढ्हा । तसदूषण सविठ्ठीरे  
 आठो । कुशल कला करिने लहोरेवा० । शिवसुख माल प्रचंभीरे । आठो ॥ ४ ॥  
 इति ॥ ❀ ॥ दूहा ॥ दीपकपूजा पंचमी । करै सकल दुःखनास । ज्ञायक  
 लोका लोकनो । प्रगटै बोधिविकास ॥ १ ॥ रागदेश वरवो ॥ केसरियानेजाऊ  
 को० ॥ एचाल ॥ ❀ ॥ जावधरी दीपक पूज रचावो । यातैं शिव सुखसंपति  
 पावो । जा० । रक्त पीत सित वरण विचितृत । सूतनीवाट वणावो । गोघृतमां  
 हि अधिक तरकरिने । सुप्रमन दीपजणावो । जा० १ । दीपकनेमिस मनमांदि  
 र्मै । ग्यांनकोदीप जगावो । जम्तातिमर कलापहरीने । मंगलमालवधावो ।  
 जाव० ॥ २ ॥ अरतिहरण रतिदायक जगमें । एपूजन मनजावो । सुर नर  
 पायनमें ततखिणही । यातैं नरकनजावो ॥ जाव० ॥ ३ ॥ अनुभव जावविशाल  
 करीने । आतमसुं लयजावो । कपूरकहै जविजनसें प्रजुके । वर गुणगण ज  
 श गावो ॥ जाव० ॥ ४ ॥ काव्यं ॥ आत्मप्रबोधे कविवर्धनाय । जाड्यांधकार  
 ब्रजमर्दनाय । जव्यप्रदीपं कुरुप्रतिबुद्धे । प्रजोगृहे वायघतर्जनाय ॥ १ ॥  
 नै श्री परमात्मने अनंतानंत० जन्मजरा० श्रीमज्जि० मैथुन विरमणवत  
 उपदेश काय दीपंयजामहेस्वाहाः ॥ इति पांचमीमैथुन व्रत पूजा ॥ ५ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ठी परिग्रह व्रते धूप पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ जविकीजे व्रत पंचमे । सकल परिग्रह मान । ए मोहा  
 दिक शवरनो । जूवर दुःखनी खान ॥ १ ॥ राग वशंत ॥ अतुल विमल  
 मेढ्या अखंरु गुणे । मेढ्या० ए चाल ॥ सकल जविकजरया विमल गुणे  
 बाढ्हा । मान परिग्रहनो करो ए । सकल० ॥ टेरे ॥ वज्र समान ए समगिरि  
 जेदन । दोष दिवश पति वासरो ए । स० ॥ १ ॥ धन कण वशन गवादिक  
 पशुनो । धातु निकर तिम जाणिये ए । इत्यादिक नवजेद विधाने । दशवे  
 कालिक जाणिये ए ॥ सक० ॥ २ ॥ एहनें मूलथकी जेहरे नर । तेहनें  
 मोह मिजे सहीए । सुचिर काल ग्रहवास वसे जे । तेहनें देश विधे कहीए ।  
 सक० ॥ ३ ॥ नरक निवास इणें विनपाम्यो । मुम्मण सेठ ते जाखिये ए । जवि  
 जन ए व्रत जावथी पाजो । कुशल कला निजदाखिये ए ॥ स० ॥ ४ ॥ इति

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ ठी पूजन धूपकी । धुवो जिनवर अंग । कुशुर

जि करमतणी हरे । दायक शिवसुख चंग ॥ १ ॥ राग देसाख ॥ प्यारी छि-  
ववरणी न जाय । प्यारी० । थारै मुखमारी हो वारीराज । प्या ॥ ए चाल ॥  
ऐसी विधि पूजन जाई दिलधार । धूप धूम धनसार धार करि । ऐसी० ।  
टेर ॥ या जवज्जीम वारिसागरमें । तरस तरंफक तरल विचार । धूप० ॥ १ ॥  
चंदन देवदारु बलि अंबर । मृगमद गंधवटी धनसार । धूप० ॥ २ ॥  
ऐसे सुरजिद्रव्य बहुमेली । तिणमें सेल्हारस नविसार । धूप० ॥ ३ ॥ म  
णियुत कंचन धूपदानमें । विमलानलथी करि सुप्रचार । धूप० ॥ ४ ॥ क  
पूर करत नुतिया जिन पूजा । जविजन गणकी तारणहार । धूप० ॥ ५ ॥  
काव्यं ॥ नानासुगंध वसुनिर्मित सारधूपं । चाकर्षितं भ्रमखंड मतिहियेन ॥  
श्रद्धाश्रये विधि निवेश्य विशालजक्त्या । धूपे जिनाधिपतिनें शिवदं  
सुदावै ॥ १ ॥ ॐ श्री परमात्मने अनंतानंत० श्रीमज्जि० परिग्रह प्रमाण व्रत  
उपदेशकाय धूपं यजामहेस्वाहाः इति परिग्रह प्रमाण व्रत ठी पूजा ॥ ६ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सातमी दिशपरिमाण व्रते पुष्प पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ ठो व्रत दिशमानको । गमनागमन निवार । अकुश  
लता सवि उपशमै । श्रेयसंपजै सार ॥ १ ॥ रागगरबो । सिद्धाचलमंरुण - स्वा  
मीरे ॥ ए चाल ॥ ❀ ॥ श्रीशिवसुख संपति वरियैरे । जवज्जय दुखवार  
ण करियैरे । करिदिशि परिमाण जेचरियै । रसीला । जाव विमल दिल  
धारियैरे । वाल्हा धरियै तो समरस जरियै । र० ॥ १ ॥ अध ऊर्ध्वनें तीरठ  
वखाणोरे । दिश विदिशनें तेम प्रमाणोरे । ए ठे संकट जलधिनोराणो ॥ रसी०  
॥ २ ॥ एमां गमनागमन निवारैरे । ओठै कुमति दुरति जरतारोरे । इकच  
क्री लह्यो दुखजारो । रसी० ॥ ३ ॥ ए व्रत शिवसाधन चंनोरे । तुमे जविजन  
एहन खंनोरे । कहै कुशलकला नितमंनो । रसी० ॥ ४ ॥ इति ॥ ❀ ॥  
॥ ❀ ॥ दूहा ॥ जवियण पूजा सातमी । कीजे जक्ति विशाल । ससुरजि नाना  
जातना । विमल कुशम जरथाल ॥ १ ॥ ❀ ॥ रागधन्याशरी ॥ कबहुमें नीके  
नाथन ध्यायो ॥ क० एचाल ॥ प्रनुजीकी फूलै पूजन सारो । प्र० ॥ टेरा ॥ श्रीजिन  
जीके चरणकमलमें । अलि समता गुणधारो । प्रनु० ॥ १ ॥ चंपक कुंद गुलाब  
केवसा । पारधिनाग कलारो । जासु दमण वासंति मोगरा । पारुल लाल मं

दारो । प्रजु० ॥२॥ इम नानाविध कुशम घटा करि । जाव विमल जलजारो  
 तोलहियै जविजन ध्रुव करिने । अचिरथकी जवपारो । प्रजु० ॥ ३॥ व्रत  
 धर फूल कजाप रुचिर ग्रहि । पूज तजे जगतारो । कपूर कहत जिन चर  
 ण सरण लहि । करम सबल दल मारो । प्रजु० ॥ ४॥ इति ॥ काव्यं ॥  
 गंधामलादि गुण लक्षणा लक्षितैर्वै । पुष्पोत्करै रखिल गुंजित चंचरीकैः ॥  
 संसेवये द्विविध जाति समुद्रवैर्या । जैनेश्वरं व्रजतिसोह्य चिराच्छिवना ॥ १ ॥  
 ॐ श्री परमात्मने अनंतानंत० जन्म० श्रीमज्जि० दिशि परमाण व्रत  
 उपदेशकाय पुष्पंयजामहेस्वाहाः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
 इति दिशि परमाण व्रत सातमी पूजा ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥❀॥अथ आठमी अष्टमंगलीक जोगोपजोग व्रतपूजा ॥❀॥

॥ ❀ ॥ जगनायक पदकमलमें । धरियै करि मनभृंग । जोग अनें जप  
 जोगनो । एसहुव्रत गिरिशृंग ॥ १ ॥❀॥ सिद्धचक्रपद वंदेरे । जविकासि०  
 ए चाल ॥❀॥ सकलसचित्तनें द्रव्यविकृती । बाहन बलि तंबोल । वसन कुशम  
 दल पानहि तिमवलि । सयण विलेवण घोलेरे । जविका । इण व्रतमें मनमंनो ।  
 शिवसुख रयण करंमेरे । जविका । इण० ॥ १ ॥ ब्रह्मचार्य दिशि न्हाण  
 जत इम । नियम चतुर्दश माल । प्रतिदिन जाव हृदयधरि करियै । एहनी  
 सार संजालेरे । जवि० इण० ॥ २ ॥ तिमही अजह करोत्तर त्रिंशत । अ  
 खिल विपुल महिकंदो । कालखीण सह द्रव्य अजाण्यो । फल निशिजो  
 जन ठंदेरे । ज० ॥ इण० ॥ ३ ॥ विविध अप्पोल पुष्पोल विजेदै । अशना  
 रंज विशाल । इंगालादिक करण करावण । कर्मादान कुचालेरे । ज० ॥ ४ ॥  
 इण० ॥ एठंमै ते शिवसुखमंमै । खंमै कुगति पुकाल । सहजानंद शस्यसुख  
 प्रगटे । प्रवदे त्रिजगकृपालेरे । ज० । इण० ॥ ५ ॥ इण व्रतकरि चितमंदिर  
 जरियै । तरियै जवजलपार । अनजव चंद्र सुधा जडमंमै । कुशलकजा निर  
 धारेरे । ज० इण० ॥ ५ ॥ इति० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ मंगलपूजा अष्टमी । करमदलन असिधार । करियै  
 श्रीजिनराजकी । वरियै शर्म अगार ॥ १ ॥ राग तुमरी ॥ ❀ ॥  
 तुमविन दीनानाथ दयानिधि कोनखवरले मेरीरे । तु० । ए चाल ॥ ज



जि करमतणी हरे । दायक शिवसुख चंग ॥ १ ॥ राग देसाख ॥ प्यारी नि-  
 ववरणी न जाय । प्यारी० । थां रै सुखमारी हो वारीराज । प्या ॥ ए चाल ॥  
 ऐसी विधि पूजन जाई दिलधार । धूप धूम घनसार धार करि । ऐसी० ।  
 टेरे ॥ या जवजीम वारिसागरमें । तरस तरंक तरल विचार । धूप० ॥ १ ॥  
 चंदन देवदारु बलि अंबर । मृगमद गंधवटी घनसार । धूप० ॥ २ ॥  
 ऐसैं सुरजिद्रव्य बहुमेली । तिणमें सेटहारस नविसार । धूप० ॥ ३ ॥ म  
 णियुत कंचन धूपदानमै । विमलानलथी करि सुप्रचार । धूप० ॥ ४ ॥ क  
 पूर करत नुतिया जिन पूजा । जविजन गणकी तारणहार । धूप० ॥ ५ ॥  
 काव्यं ॥ नानासुगंध वसुनिर्मित सारधूपं । चाकर्षितं भ्रमखंड मतिर्हियेन ॥  
 श्रद्धाश्रये विधि निवेश्य विशालजक्त्या । धूपे जिनाधिपतिनं शिवदं  
 मुदावै ॥ १ ॥ उँझी श्री परमात्मने अनंतानंत० श्रीमज्जि० परिग्रह प्रमाण व्रत  
 उपदेशकाय धूपं यजामहेस्वाहाः इति परिग्रह प्रमाण व्रत बढी पूजा ॥ ६ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सातमी दिशपरिमाण व्रते पुष्प पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ बढो व्रत दिशमानको । गमनागमन निवार । अकुश  
 लता सवि उपशमै । श्रेयसंपजै सार ॥ १ ॥ रागगरबो । सिद्धाचलमंरुण - स्वा  
 मीरे ॥ ए चाल ॥ ❀ ॥ श्रीशिवसुख संपति वरियैरे । जवजय दुखवार  
 ण करियैरे । करिदिशि परिमाण जेचरियै । रसीला । जाव विमल दिल  
 धरियैरे । वाल्हा धरियै तो समरस जरियै । र० ॥ १ ॥ अध ऊर्ध्वने तीरठ  
 वखाणोरे । दिश विदिशने तेम प्रमाणोरे । ए ठे संकट जलधिनोराणो ॥ रसी०  
 ॥ २ ॥ एमां गमनागमन निवारैरे । ओढै कुमति दुरति जस्तारोरे । इकच  
 क्री लह्यो दुखजारो । रसी० ॥ ३ ॥ ए व्रत शिवसाधन चंमोरे । तुमे जविजन  
 एहन खंनोरे । कहै कुशलकजा नितमंमो । रसी० ॥ ४ ॥ इति ॥ ❀ ॥  
 ॥ ❀ ॥ दूहा ॥ जवियण पूजा सातमी । कीजे जक्ति विशाल । ससुरजि नाना  
 जातना । विमल कुशम जरथाल ॥ १ ॥ ❀ ॥ रागधन्याशरी ॥ कबहुमें नीके  
 नाथन ध्यायो ॥ क० एचाल ॥ प्रनुजीकी फूलै पूजन सारो । प्र० ॥ टेरे ॥ श्रीजिन  
 जीके चरणकमलमें । अलि समता गुणधारो । प्रनु० ॥ १ ॥ चंपक कुंद गुलाब  
 केवना । पारधिनाग कलारो । जासु दमण वासंति मोगरा । पारुल लाल मं

दारो । प्रभु० ॥२॥ इम नानाविध कुशम घटा करि । जाव विमल जलजारो  
तोलहियै जविजन ध्रुव करिनें । अचिरथकी जवपारो । प्रभु० ॥ ३ ॥ व्रत  
धर फूल कलाप रुचिर ग्रहि । पूज तजे जगतारो । कपूर कहत जिन चर  
ण सरण लहि । करम सबल दल मारो । प्रभु० ॥ ४ ॥ इति ॥ काव्यं ॥  
गंधामलादि गुण लक्षण लक्षितैर्वै । पुष्पोत्करै रखिल गुंजित चंचरीकैः ॥  
संसेवये द्विविध जाति समुद्रवैर्या । जैनेश्वरं व्रजतिसोह्य चिराच्छिवं ना ॥ १ ॥  
ॐ क्षी श्री परमात्मने अनंतानंत० जन्म० श्रीमज्जि० दिशि परमाण व्रत  
उपदेशकाय पुष्पं यजामहे स्वाहाः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

इति दिशि परमाण व्रत सातमी पूजा ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ आठमी अष्टमंगलीक जोगोपजोग व्रतपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जगनायक पदकमलमें । धरियै करि मनचूंग । जोग अनें ज्य  
जोगनो । एसहुव्रत गिरिशृंग ॥ १ ॥ ❀ ॥ सिद्धचक्रपद वंदेरे । जविकासि०  
ए चाल ॥ ❀ ॥ सकलसचित्तनें द्रव्यविकृती । वाहन बलि तंबोल । वसन कुशम  
दल पानहि तिमबलि । सयण विलेवण घोलेरे । जविका । इण व्रतमें मनमंनो  
शिवसुख रयण करंमेरे । जविका । इण० ॥ १ ॥ ब्रह्मचार्य दिशि न्हाण  
जत्त इम । नियम चतुर्दश माल । प्रतिदिन जाव हृदयधरि करियै । एहनी  
सार संजालेरे । जवि० इण० ॥ २ ॥ तिमही अजह्म करोत्तर त्रिशत । अ  
खिल विपुल महिकंदो । कालखीण सहु द्रव्य अजाण्यो । फल निशिजो  
जन वंदेरे । ज० ॥ इण० ॥ ३ ॥ विविध अप्पोल पुष्पोल विजेदै । अशना  
रंज विशाल । इंगालादिक करण करावण । कर्मादान कुचालेरे । ज० ॥ ४ ॥  
इण० ॥ एठंमै ते शिवसुखमंमै । खंमै कुगति पुकाल । सहजानंद शस्यसुख  
प्रगटे । प्रवदे त्रिजगत्कपालेरे । ज० । इण० ॥ ५ ॥ इण व्रतकरि चितमंदिर  
जरियै । तरियै जवजलपार । अनजव चंद्र सुधा ऊडमंमै । कुशलकला निर  
धारै । ज० इण० ॥ ५ ॥ इति० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ मंगलपूजा अष्टमी । करमदलन असिधार । करियै  
श्रीजिनराजकी । वरियै शर्म अगार ॥ १ ॥ राग तुमरी ॥ ❀ ॥  
तुमविन दीनानाथ दयानिधि कोनखवरलै मेरिरे । तु० । ए चाल ॥ ज

विजन जावै श्रीजिनवरकी । मंगलपूजा कीजैरे० । बालामंग० ॥ दे॥  
 श्रीलायन शरलासन नंद्या । वर्त्त कुंज निरमीजैरे।मीनजुगल श्रीबड सरावनो  
 संपुट स्वस्ति करीजैरे । बाल्हा । संपु० । जवि० ॥ १ ॥ ए अरुमंगल  
 मंनन कारण । कंचन थालरचीजैरे । रुचिराखंरु विमल गुणधारी । तंदुलसे  
 लिखलीजैरे । जवि० ॥ २ ॥ निजमन जक्तिजाव धरि जविका । प्रनुसनमुख  
 धरदीजैरे । तोसुखधाम मुक्तिपुट जेदन । निवसन कृत्य लहीजैरे । जवि० ॥  
 ३ ॥ स्वांत गगनसम सूर्योदयथी । कोटिकरम तम ठीजैरे । प्रगट प्रताप  
 पीन जिन चरणें । चंदकपूर नमीजैरे । जवि० ॥ ४ ॥ इति ॥ काव्यं ॥  
 यःसत्कांचनजाजने शुचितरे मण्युत्तमैर्ममिते । श्रीलान्यष्ट सुमंगलानि विधि  
 ना मंन्यप्रज्ञो सन्मुखे । ज्ञत्त्यात्मा परिढोकये द्रुचिपरः सोधव्रजं नाशयेत् ।  
 जित्ते दुर्गति नूधरं च लज्जते स्वर्गादि मोक्षाश्रयं ॥ १ ॥ ॐ श्री परमात्म  
 ने अनंतानंत ग्यांसक्तये जन्म० श्रीमज्जि० जोगोपजोगव्रत उपदेश  
 काय अष्टमंगलं यजामहे स्वाहाः ॥ इति जोगोपजोग व्रत आठमी पूजा ॥

॥ ❀ ॥ अथ नवमी अनरथ दंडव्रते तंदुल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ जवि ए व्रत अष्टमधरो । अनरथ दंरु विचार । पाप  
 चिरंतन उपशमै । प्रगटै पुन्यप्रचार ॥ १ ॥ सुगणसनेही साजन  
 श्रीसीमंदिरसामि । अ० ॥ ए चाल ॥ त्रिकरणशुद्ध निसुणजवि अनरथ दंरु  
 विचार । समकित सुजटनो गंजन जंजन संबर द्वार । मनमथ बोधविकासक  
 शास्त्र पठन अधिकार । मुख नू दृग तनुथी करै जंरुकुचेष्टागार ॥ १ ॥ हा  
 श्यथकीवली कुबचन जाषण मुखरप्रबंध । ऊखल मूशल घरट्टादय अतिधरण  
 दुरंध । स्नानसमें जल तेल अधिकतर अप्रतिबंध । पापविधाना देशप्रकाशन  
 दूषणखंधासरस वस्तुभृत पात्र मात्र विन ढादनठान । धरणकरण सुविवेकविकल  
 तिम दानादान । इम सहु अनरथ करम अवरपिण दुःखनी खान । व्यर्थ  
 पणें मनमान्यां ठेदै पुन्यप्रधान ॥ २ ॥ इण करिपूर्व केइगया नरसंकटधाम ।  
 व्रतग्रहिने रहियै तव लहियै शिवसुखठाम । ए व्रत तरणी जवोदधि तारण  
 तरण प्रकाम । कुशलकला नितकरतां प्रगटै अजिनवर्मां ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ नवमी श्रीजिनराजनी । पूजा परमविलास । विमलाकृत  
 प्ररिजाजने । प्रविजन करो प्रकाश ॥ १ ॥ राग पीलू ॥ अवतो उधास्यो मोहि  
 चहीयै जिनंदराय । राखुं प्ररोसोमें रावरै चरणको । अ० ॥ ए चाल ॥  
 श्रीजिनवरजीकी सेवा सारै । सो प्रवप्रय दुःख दूरनिवारै । श्रीजि० ॥  
 तंडुलविमल सकलगुण मंजित । खंजितदोष रहित उरधारै । कंचनपात्र प्री  
 जिन आगै । ढोकनबुद्धि प्रबल सुविचारै ॥ श्रीजि० ॥ १ ॥ या पूजन जन  
 तन मनरंजन । गंजन कुगतिकुं बोधविदारै । सबल करम नग प्रेदनहारो ।  
 सघन प्रबोदधि पारज्जुतारै ॥ श्रीजि० ॥ २ ॥ सुमति सानुप्रव आन मिलावै ।  
 तोपिण पद दिवशर्म समारै । पीनमहोदय धार प्रावधारै । चंदकपूर सनूर नि  
 हारै ॥ श्रीजिन० ॥ ३ ॥ काव्य ॥ यःखंरुजाति गुणवृंद समन्वितानि ।  
 नाढोकये त्रिपुलनिर्मल तंडुलानि ॥ कर्मावलिं जटति वेध हिमज्जिनाये ।  
 सोवैप्रजे त्रिवसुखं सुतरामनंतं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मने अनंतानं० ज०  
 श्रीमज्जि० अनरथदंरु विरमण व्रत उपदेशकाय अहृतं यजामहे स्वाहाः ॥  
 इति नवमी अनर्थ दंरु विरमण व्रत पूजा ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ❀

॥ ❀ ॥ अथ दशमी सामायक व्रते दर्पण पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ नवमी नव निधि जाणियै । सामायकव्रत सार । सुर जे  
 हंनो आसाकरै । सुरतरु समदातार ॥ १ ॥ राग ॥ आयरहो दिल वाग  
 में होप्यारै जिनजी । आय० ॥ ए चाल ॥ सामायक व्रत पालरे । प्र  
 विकजन । सामाय० ॥ टेरे ॥ त्रिकरण त्रिकजोगै इकमहुरत । निरतीचारै ।  
 चालरे । प्रवि० ॥ १ ॥ सा० गृहव्यापार तर्जानें सुप्रमन । धारै निरवद्य  
 विशालरे । प्र० ॥ २ ॥ सामा० ॥ मन वच वपु प्राणियांन असेवन । स्मृति  
 विहीनता टालरे । प्र० ॥ ३ ॥ सा० ॥ द्वात्रिंशत दूषण परिहरिनें । पंचम  
 गुण धरजालरे । प्र० ॥ ४ ॥ सा० ॥ इम धनमित्र तणीपर सीजो । कुश  
 लकला परनालरे । प्र० ॥ सा० । इति ॥ ❀ ॥ दूहा ॥ दशमी दर्पण पूज  
 ना । कीजै श्रावक सुद्ध । सुरपादपसम शंकरण । हरणपाप संकुद्ध ॥ १ ॥  
 राग कालिंगनो ॥ नेम प्रनुजीसुं कहज्योजी म्हांरा । नेम० ॥ ए चाल ॥  
 जिन पूजनमें रहीयेरे । म्हांरा जि० । मन वंजित फल लहीयेरे । म्हां० जि०

॥ टेरे ॥ कंचनमणी रतनेकरि जमियो । वर दरपण करगहीये । जिनवर  
सनमुख दाखन विधिसे । सकल करम बनदहीयैरे । म्हांरा । जिन० ॥ १ ॥  
प्रनुजीकीसेवा सब सुखदाई । जावजक्ति उरचहीयै । शिववनिता तुम प्रेम  
विलूधै । अपर अधिकस्युं कहीयैरे । म्हां० ॥ २ ॥ जि० निजकसरीर प्रमाद  
वसै करि । जवदल जीतिनसहीयै । सुजमन समकित वीरसंगले । चंदकपूर  
निवहियैरे । म्हां० ॥ ३ ॥ जि० । इति ॥ काव्यं ॥ रुचिर निर्मल दर्पण  
दर्शनं । विनयचूडदयः किलकारयेत् । जिनपते रचिरा द्रवसंगमं । सचनिरस्य  
जजे त्रिवमंजसा ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने अनंतानंत ग्यानसक्तये ज  
न्मजरा० श्रीमज्जि० सामायक व्रत ग्रहण उपदेशकाय । दर्पणं यजामहे  
स्वाहाः ॥ इति दशमी सामायक व्रत पूजा ॥ १० ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ इग्यारमी देशावगासी व्रते नैवेद्य पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ दसमो व्रत हिव जवियणा । धारो धरि वर जाव । संसारा  
एव गहिरनो । तारण वर तरनाव ॥ १ ॥ सिद्धाचलगिरिनेद्वारे । धन्य  
जाग हमारा । सिद्धा० ए चाल ॥ ❀ ॥ श्रद्धा धर मन जाजैरे । घनपाप तिहा  
रा । श्रद्धा० । जाजै० । टेरे ॥ विमल सकल सुज विनय धरीने । गुरु मुख  
वचन हजारा । ए व्रत सुंदर दिल धरो जविजन । देशावकास विचारारे ।  
घनपा० । श्रद्धा० ॥ १ ॥ द्रव्यानयन प्रेक्षप्रयोगै । सब्द रूप अनुसार ।  
पुजल पेक्षण प्रभृति सकलना । तजीयै दूषण धारारे । घनपा० ॥ २ ॥  
परमोत्कृष्ट जघन्य प्रकारै । प्रत्याख्यांन प्रचार । सहु व्रतनो आगमन ए  
व्रतमें । गुणमणि रयण जंनारारे । घनपा० ॥ ३ ॥ कर्म कषाय हरीनें ठेदै ।  
चउगति गेह विहारा । अजरामर धनदैलह्योनिरमल । कुशलकला करिसारारे ।  
घनपा० ॥ ४ ॥ श्रद्धा० ॥ इति ॥ दूहा ॥ एकादशमी पूजमें । विवध जां  
ति नैवेद्य । मेल करो जिनराजनी । दायक सुखनिरवद्य ॥ १ ॥ राग कल्यां  
ण ॥ तेरी पूजावणी है रसमें । होते० । एचाल ॥ ❀ ॥ सेवासारो श्रावक जिन  
चरणै । होसे० । टेरे ॥ मोदक लपनश्री वर घेवर । शिता सुरस घृत जरणै ।  
मुक्त चूर विंघ्रादिक बहुतर । नैवेद्य नानावरणै । होसे० ॥ १ ॥ रयणांकित  
कंचन जाजन जरि । मन वय तनु थिरकरणै । करिढोकन विधि परम विन

य धरी । रहियै नित प्रनु सरणें । होसेवा० ॥ २ ॥ दुःखदल नासन या  
पूजन विधि । निर्वृति विशद सुख जरणें । चंदकपूर कहत जविजनके । क  
लिमलमाला हरणें । होसेवा० ॥ ३ ॥ इति ॥ काव्यं ॥ धवल धाम शिता  
र्पि समुद्रवै । विमलजक्ति समन्वित कर्पूरै । जिनपते विदधाति वियूषनं  
सलजते शिवशं प्रवरान्नकैः ॥ १ ॥ ॐ क्लीं श्री परमात्मने अनंतानंत० ग्यां  
न सक्तिये जन्म० श्रीमज्जि० देशावगासिक व्रत द्रढ ग्रहण उपदेशकाय नै  
वेद्यं यजामहे स्वाहाः ॥ इति इग्यारमी देशावगासी व्रत पूजा ॥ ११ ॥

॥ ❀ ॥ अथ वारसी पोसहव्रते ध्वजपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ व्रतपोषध इग्यारमो । जावो जविकविधान । ध्यावो ज्युं द्रुतसंहरो ।  
प्राकृतकर्म वितान ॥ ए देशी ॥ इण सरवरियानी पालऊजादोयराजवी । म्हां  
राजाल ऊजा० ए चाल ॥ जविजन जाव विसाल प्रमाद नीवारीयै । म्हां०  
प्र० ढेर ॥ पोसहव्रत चितमांहि विनयधरि धारीयै । म्हांरा० वि० ॥ ते पिण  
दुविधप्रकार चतुर न विसारियै । म्हां० च० ॥ प्रतिवासर प्रतिपर्व सजैतिम  
सारियै । म्हां० स० ॥ १ ॥ पडिलेहण धुरधार सकल किरिया करो । म्हां०  
स० ॥ परिठावण विधिवाद मयाधरि आदरो । म्हां० म० षटकाया संघट्ट  
तजीनें संचरो । म्हांरा० त० ॥ अचपल थई पचक्खाण विविधमनसंजरो ।  
म्हां० ॥ २ ॥ वि० ॥ बलिसहु दूखण टालिनें पापनिकंदियै । म्हां० पा० ॥  
चोगति च्यार कषाय करमदल ठंदियै । म्हां० ॥ इण विधि तारण तरण सुगु  
रूपदवंदियै । म्हां० सु० ॥ कुशल कलादल मालकरी चिरनांदियै ॥ ३ ॥  
म्हां० क० इति ॥ दूहा ॥ प्रादशमी ध्वज पूजमें । घोषणदेई अमार । धरियै  
प्रादश जावना । तरियै जवजलपार ॥ १ ॥ राग देशाख ॥ कुजजानें जाडु  
मारा ॥ ए चाल ॥ प्रनुर्जासैं प्रीतजाना । करीध्वजपूजन विविधानाहो ।  
प्र० ॥ १ ॥ ढेर ॥ जोयण सहस मानमणि मंमि । कंचनदंरु रचानाहो ।  
प्र० ॥ २ ॥ पंचवरणयुत वसनपताका । अधिवासित लहकानाहो । प्र० ।  
३ ॥ ढकनाद करी तीन प्रदिक्कणा । रोहणविधि मनजानाहो । प्र० ॥ ४ ॥  
या विधिसकल करम रिपुदारण । जोतिमें जोतिसमानाहो । प्र० ॥ ५ ॥ ज  
गतारण श्री जिनदरशणमें । चंदकपूरछुजानाहो । प्र० ॥ ६ ॥ इति काव्यं ॥



अव्याचति क्षजवरैः सशुभैः सलीलै । जैनेश्वरं कनकदंरु युतैः सशोभैः ॥  
 कर्मारि वृंदजय नम्र समन्वितैर्यौ । वैसोभजे हिव दिवादिषु राज्यलक्ष्मीः  
 ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने अनंतानंत जन्म० श्रीम० पोसहव्रत ग्रहण  
 उपदेशकाय ध्वजं यजामहे स्वाहाः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

इति बारमी पोसहव्रते ध्वजपूजा ॥ १२ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ तेरमी अतिथिसंविभाग व्रते फल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ द्वादशमोव्रत सुखफलद । साधु दांसनमान । अजरा  
 मर पदसंपन्नै । सालिजद्र अनुमान ॥ १ ॥ राग कजरी ॥ मेरो मनमोह्यो  
 माई आणंदजिलै आ० ॥ ए चाल ॥ साधुदान व्रत अवि हृदय धरो । हृदय  
 धरोरेनाई हृदय धरोरे । सा० ॥ टेरे ॥ व्रतसंयम गत परलिंगीने । पफिला  
 अन मति रिजुनकरो । रिजु० ॥ १ ॥ जा० सा० ॥ जिनमत मुनिवर चरण  
 नमीजै । अशनादिक देई सुकृतवरो । सुकृ० जा० । सा० ॥ २ ॥ बलि  
 पंचातीचार निवारी । परम विरतिना विघन हरो । विघ० जा० ॥ ३ ॥  
 सा० श्रीश्रेयांसने चंदन वाला । अनुमाने पदनिर्वृतिचरो निर्वृ० जा० ॥ ४ ॥  
 सा० इति ॥ दूहा ॥ फलदल पूजा तेरमी । अरिजाजन कमनीय । अविक  
 रचौ जगवाननी । अवविषधर दमनीय ॥ १ ॥ राग प्याल ॥ लोत्री नैनरे लोत्री  
 नैना । हो दरशणके० ए चाल ॥ ❀ ॥ लोत्रीसैणारे लोत्रीसैणा हो पूजन  
 के लोत्रीसैणा ॥ टेरे ॥ पूजनविधि प्रभुकी दिल धरलै । थिर करि मनतनु वैणा ।  
 हो पू० ॥ १ ॥ श्रीफल पुंगी बीजपूर बलि । आम्र कदली फल लेणा । हो  
 पू० ॥ २ ॥ इम नानाफल गहिप्रभु आगै । अरिजाजन धर दैणा । हो०  
 पू० ॥ ३ ॥ अक्ति विमल सुचितर धर मनमें । प्रभु समरण दिनरैणा ।  
 हो पू० ॥ ४ ॥ कपूरकहै प्रभुपद पंकजमें । षट्पद अए जुगनैणा । हो  
 पू० ॥ ५ ॥ इति ॥ कलश ॥ हांहो यश धारा । प्रभुजीका वचन अमृत यश  
 धारा ॥ टेरे ॥ सुर नर मुनि तिरियग वन सींचन । बचन सजल घनकारा ॥  
 हांहो० प्र० । विक्रमपुर श्रीत्रिशलानंदन । जिनवर त्रिभुवन प्यारा । द्वाद  
 श व्रत पूजन विधि पजणी । अवियण गण हितकारा ॥ हांहोहि० १  
 प्र० ॥ गुरु खरतर जिन चंद्र सूरिवर । राजै विगति विकारा । श्रीमति जा

धृति रादि कजितके । धरि मन वचन अगारा । हांहो० आ० प्र० २ ॥  
 संवत रस त्रिक निधि रात्रिकर । मासाश्विन मनुहारा । धवलपद्म प्रतिपद  
 तिथि सोजन ॥ रजनीपति सुतवारा ॥ हांहो सु० ३ । प्र० ॥ श्रीजिनरत्न  
 सूरिसाखाधर । पाठकपद विसतारा । रूपचंदगणि चरण कमलमें । कुशलसार  
 मधुकारा । हांहो म० प्र० अपर नामकरि चंदकपूरा । राचि जिनपति नुतिसा  
 रा । लक्ष्मीप्रधान प्रवर गणिवरकी । प्रेरणया सुविचारा । हांहो० प्र० ५ इति ॥

॥ ❀ ॥ काव्य ॥ जंवाभ्रादि फल व्रजैः ससुरसैर्गंधादिभिर्मिश्रितैः । नूनं ।  
 द्रव्य हतुं प्रवैश्व विधिना कुर्यात् प्रजोर्ध्वनं । अक्तः स प्रभु पूजनैक निरतो  
 नूयोपि नूयो लजे । हर्मस्वर्ग तरोरकं सुखफला गारं वरं निर्मलं ॥ १ ॥  
 ॐ ह्रीं श्री परमात्मने अनन्ता० श्रीमज्जि० अतिथि संविज्ञाग व्रत उपदेशकाय  
 फलं यजामहे स्वाहा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

इति श्री साधुकपूरचंदजीकृत वारह व्रत पूजा संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥❀॥

### ॥ ❀ ॥ अथ संक्षिप्त विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ विशाल जिन मंदर अथवा धर्मशालामें त्रिगढ पीठ सम वसरण  
 की स्थापना करै । जिसपर पूर्व दिशकी तरफ श्रीमहावीर स्वामी, एवं चारे  
 दिशें चार प्रतिमा स्थापन करै । आगे एक चौखूणा अठा चांदी पीठ  
 लादिकका पट्ट स्थापन करै । जिसपर एक बीचमें । ६ ऊपर । ६ नीचे  
 एवं १३ सायिया करके १३ चावलोंका पुंज करै । ऊपर व्रतनाम युक्त  
 १३ चिन्नी स्थापन करै । वामपासे कल्पवृक्ष, दाहिणें पासे धजा अष्टमंग  
 लीकादि सोजता अनिशय स्थापन करै ॥ अब १३ चिन्नी लिखनेकी रीति ॥

॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री सर्व धर्म मूल श्री महर्शनायनमः ॥

॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्री स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रतायनमः ॥

॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्री स्थूल मृपावाद विरमण व्रतायनमः ॥

॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्री स्थूल अदत्तादान विरमण व्रतायनमः ॥

॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्री स्थूल मेथुन विरमण व्रतायनमः ॥

॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्री स्थूल परिग्रह परिमाण विरमण व्रतायनमः ॥

॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्री दिशा परिमाण गुण व्रतायनमः ॥

॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्री जोगोपजोग परिमाण गुण व्रतायनमः ॥

॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं श्री अनर्थ दंरु विरमण गुण व्रतायनमः ॥

॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्री सामायक शिक्षा व्रतायनमः ॥

॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं श्री देशावगाशीरूप शिक्षा व्रतायनमः ॥

॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं श्री पोषधोपवासरूप शिक्षा व्रतायनमः ॥

॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं श्री अतिथि संविज्ञाग दानरूप शिक्षा व्रतायनमः ॥

॥ ❀ ॥ इसीतरै चिठी १३ लिखके स्थापित करै । तीन नवकार गुणके वाशहेपसैं प्रतिष्ठत करै ( और ) जल, चंदन, पुष्प, धूप, दीप, नैवद्य, फल, अक्षत, वस्त्र, धजा, अष्टमंगलीक आदि तेरै तेरै, पूजाके लायक द्रव्य १३ थाल्यामें लगाय दोनुं तरफ रखै । पीनैं स्नात्र करायके पूजा करावै । जो पद की पूजा सुरू होय सो थाली लेतो रहै चढातो रहै ( परंतु ) नालेरका गोटा १३ वरग लगाया हुवा और धजा १३ व्रतका मान्दलापर व्रत दीठ चढावै । बाकी द्रव्य सर्व थाल्यामें दोनुं तरफ रखै । दीपक पूजामें १३ दीपक तो एक थालीमें रखै । और वारह व्रतका अतीचार १२४ वर्जण निमत्त १२४ एकसो चौबीस दीपक मान्दलैके चारुं तरफ सोजता श्रेणीवद्ध रखै इत्यादि यथा शक्ति चित्तकी उदार वृत्तीसैं पूजनविधि करै, करावै, करतां की अनुमोदना करै । विशेष चित्तकी उमंग होय तो वाजिन्नादि उठवके साथ मोटी धजा, कल्पवृक्ष अष्टमंगलीक नगरमें फिराकर लावै । उत्तम उत्तम द्रव्य जगवानके जेट करै ॥❀॥ इति वारह व्रत पूजा विधि संपूर्णम् ॥

॥❀॥ अथ पाठक बालचंदजी कृत पंच कल्याणक पूजा ॥❀॥

॥ ❀ ॥ तत्र प्रथम च्यवन कल्याणिक पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ( दूहा ) ॥ ज्योतिरूप जगदीशनो, अद्भुत रूप अनूप ॥ प्रवचन प्रनुता प्रगट पण, जय जय ज्योति सरूप ॥ १ ॥ ❀ ॥ चौबीसे जिनवर नमी, पंच कल्याणक रूप ॥ शासन नायक वरणबुं, दर्शन ज्ञान सरूप ॥ २ ॥ ❀ ॥ कल्याणक उठव करे, इंद्रादिक जे देव ॥ ते जावे जविजन करे, श्रीजिनवरनी सेव ॥ ३ ॥ ❀ ॥

॥ राग सरपदो ॥ जोति सकल जगदीशनी ॥ हां रे जगदीशनी ए ॥  
चार निक्षेप प्रमाण ॥ नाम जिनादिक जिन कहाः आगममांहि प्रधान ॥१॥

॥ गाथा ॥ नाम जिणा जिण नामा । ठवण जिणा उं जिणंद पणिमाउ ॥  
द्वजिणा जिण जीवा । जाव जिणा समवसरणत्था ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ढाल तेहीज ॥ विन कारण कारज नही, हां रे का० ए ॥ ए सब  
लोक प्रसिद्ध ॥ जाव निक्षेप प्रधानता । कारज रूपे सिद्ध ॥ १ ॥ विण आ  
कारे द्रव्यनो ॥ हां० ॥ द्र० ए ॥ न हुवे थापन सिद्ध ॥ नामविना आकारनो,  
प्रगट पणे नवि बुद्ध ॥ २ ॥ नामादिक कारण सही ॥ हां० ॥ का० ए ॥ इन  
विन जाव न होय ॥ जाव विशुद्धे जिनतणी । पूज करो सहु कोय ॥ ३ ॥  
व्यवहारे निश्चय लहे ॥ हां० नि० ए ॥ कारण कारज होय ॥ पावरु  
शाला कम करी, सोध चढे सहु कोय ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ ( दृहा ) ॥ ज्ञानकळा कलितातमा । लोकालोक प्रकाश ॥ व्यापकजावे  
थिर रह्यो । शुद्ध विकास विलास ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ राग सारंग ॥ हांहोरे देवा, जोति सकल जिन राजनी । सहु लोका  
लोक प्रकाश ए ॥ हांहोरे देवा, राजत श्रीजिनराजनी । वाणी प्रवचन शुभ  
वास ए ॥ १ ॥ हांहोरे देवा, मात नमुं नित्य शारदा । गुरूपंच कल्याणक  
सार ए ॥ हांहोरे देवा, तीर्थकरना वरणबुं । गुण शास्त्र परंपर धार ए ॥ २ ॥

॥ ( दृहा ) ॥ शासन नायक जग धणी । त्रिभुवन पति परमेश ॥ पर  
उपगारी प्रभु तणा, गुण गावत सहु वेस ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ढाल तेहीज ॥ हांहोरे देवा, वीश धानक करि सेवना । बांध्युं जिन  
नाम प्रधान ए ॥ हांहो० ॥ दिव्य अमर सुख अनुभवे । प्राये प्रभु पुण्य प्रमाण  
ए ॥ १ ॥ हांहो० ॥ निरमल तर वर ज्ञानना । धारक कारक शुभयोग ए ॥  
हांहो० ॥ शब्द वरण रस गंधना । शुभ फलस तणा वर जोग ए ॥ २ ॥  
हांहो० । शाश्वत मिश्रायतण तणा । नित उत्सव करत सुरंग ए ॥ हांहो० ॥  
बालचंद पाठक कहे । नित मंगल होत सुचंग ए ॥ ३ ॥ ❀ ॥

॥ ( दृहा ) ॥ पुण्य पूर्व भव प्रभुतणी । प्रगट्यो प्रगट प्रभाव ॥ सुरकुमरी  
नित प्रति करे । नाटक नवनव जाव ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पूर्व मुख सावनं ॥ ए देशी ॥ ❀ ॥

॥ शुद्ध निज दर्शन, करिय गुणकर्षना । जिनचरण सेवना विविधकारी ॥  
हे अइयो विविधकारी ॥ ए आं० ॥ एक निजधर्ममय परमलय लीनता । दीनता  
सकल तज रज निवारी ॥ हे अई० ॥ २० ॥ १ ॥ आत्मगुण अंतरातमप  
णे वृत्तिता । तजिय बहिरात्मजिन आण धारी ॥ हे अ० ॥ आ० ॥ २ ॥  
शुद्ध सम्यक्तगुण संपदा निज लही । सहीय शुद्ध धर्म रुचि जास सारी ॥ हे  
अ० जा० ॥ ३ ॥ विविधमणि रत्ननी जोति जगमग जगे, चंद्रिका जास  
जासित करारी ॥ हे अ० जा० ॥ ४ ॥ प्रवर कुल शुद्ध राजन्य प्रमुख  
मुदा ॥ आयुकर बंध नर प्रव सुधारी ॥ हे अ० प्र० ॥ गर्ज अवतार निज  
मात उदरें लहे । बाल शुद्ध लग्न शुद्ध योग चारी ॥ हे अ० ॥ शु० ॥ ५ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ ❀ ॥

॥ शुद्धदिन शुद्ध सुहस्त धनी । शुद्ध उच्च ग्रह चार ॥ देवलोक चवि प्रभु  
लहे । मातु उदर अवतार ॥ १ ॥ सुंदरवर प्रासाद महि, मध्यनिशा जिनमात  
स्वप्न देख सुख सेजमें । जाग्रत अति हरखात ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ राग काफी ॥ जिनजी प्रजो प्रवि प्यारा । या तें आनंद अधिक अ  
पारा ॥ जि० ॥ १ ॥ सुख सेज सूती जिन माता । देखे सुपना मनप्राता ॥  
चित्त हरखित हुय तिण वारा ॥ जि० ॥ २ ॥ शुचि गज वृष सिंह मनुहार,  
लक्ष्मी दाम शशी दिनकार ॥ धज कुंज पदमसर सारा ॥ जि० ॥ ३ ॥ वर  
हीर समुद्र विमान । रयणोच्चय मेरुसमान ॥ निर्धूम पावक सुखकारा ॥ जि०  
॥ ४ ॥ शिवधान्य मंगल श्रियकारी । जाणी अर्थ हृदय क्रमधारी । शुद्धसूचक  
पुण्य संचारा ॥ जि० ॥ ५ ॥ सुंदर वर सखियन संगें । करिधर्म जागरिकारंगें,  
निशि शेष गई तिणवारा ॥ जि० ॥ ६ ॥ इहां एक पुष्पमाला चढावे ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ ❀ ॥

परम पुरुष परमात्मा, प्रावी जगवन जास ॥ प्रवचन प्रगटीकरण प्रभु  
पुण्य तणे सुप्रकाश ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पूजा सतर प्रकारी ॥ ए देशी ॥ ❀ ॥

॥ आज आनंद बधाई, जई त्रिनुवनमें । चौद सुपन सूचित गुण जेहना,

अवतरे माता उदरनमें ॥ आ० ॥ १ ॥ नृपति सदन बहु सुपन शास्त्र विध,  
अर्थ विचार करि निज गनमें ॥ पुत्र स्तन फल वचत नृपति कुल, परम  
कल्याण होत जनजनमें ॥ आ० ॥ २ ॥ प्रफुलित हरख भरत हीय उत्तमत,  
जिन जननी सुतात सुन तनमें ॥ दिन दिन बढ़त प्रवर धन जन मन, अधि  
क उत्साह घर घरनमें ॥ आ० ॥ ३ ॥ रूप्य रजत मणि माणक मोतियें,  
शंख प्रवाल शिल वरसनमें ॥ धनद धनद सुरइंद्र हुकमते, भरत जंमार नृपके  
सदनमें ॥ आ० ॥ ४ ॥ ताल कंसाज मधु वीण वजावत, गीत गान गावत तन  
ननमें ॥ पुन्नुभि सुरज मृदंग धन गरजत, गरज गरज मानुं जैसे धनमें ॥  
आ० ॥ ५ ॥ सुर नर लोक मांहे अधिक उत्साह बाह । निशिदिन होत  
जनजनपदमें ॥ इंद्र इंद्राणी नृप दोहद पूरत, मनोरथ होत जो जो मातु  
मनमें ॥ आ० ॥ ६ ॥ परम कल्याण शुभयोग संयोग जयो । शुभ धरि  
शुभ ग्रह शुभ दिनमें ॥ वरण सके न ताहि कवि अवसरकों, आनंद जयो  
हे तीन जुवनमें ॥ आ० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मनेऽनंतानंत ज्ञानशक्तिये  
जन्मजरामृत्युनिवारणाय, श्रीमज्जिनेन्द्राय चवनकल्याणके अष्टद्रव्यं यजा  
महे स्वाहा ॥ इति प्रथम चवन कल्याणक पूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ द्वितीय जन्मकल्याणक पूजा ॥ ❀ ॥

( दृष्टा ) ॥ प्रगटे पावन पतित प्रनु, अधम उधारन काज ॥ नृपकु  
लमांहे अवतरे, त्रिजुवनके शिरताज ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग सौरभ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आज अधिक आनंद जयो रे वाला. आज सुरंग बधाई रे ॥ आओ,  
जगपति जिनवर जनमिया रे वाला, सुर बधुवन मिल आई रे ॥ १ ॥ आओ  
आज आनंदधन उलट्यो रे वाला. दिशि कुमरी हरखाई रे ॥ आओ दशदि  
श निर्मलता थई रे वाला. फूल रही बनराई रे ॥ २ ॥ आओ फूलें फूली बनलता  
रे वाला. मधु माखती महकाई रे ॥ शालि प्रमुख सह धान्यनी रे वाला.  
निपजी राशि सवाई रे ॥ ३ ॥ नारकी जीवें नरकमां रे वाला. कृष्ण इक  
शाता पाई रे ॥ सब जन मन हरपित जयो रे वाला. नृमंस्तु त्रि त्राई रे  
॥ ४ ॥ शुभदिन शुभ महस्तवनी रे वाला. शुभग्रह शुभ पल आई रे ॥



जन्म थयो जिनराजनो रे वाला, प्रगटी पूर्व पुण्यार्ई रे ॥ ५ ॥ ए पढी  
पुष्प तथा गुलाबजलकी वर्षा करे ॥ ❀ ॥

॥ ( सोरठो ) ॥ त्रिनुवन मांहि सुरूप, जन्मसमय जिनराजनै ॥ वाजित्र  
वजत अन्नप, सुर नर कृत उत्सव हुवे ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रावण निरत वणावे हो जला एचाल ॥ ❀ ॥

॥❀॥ आज आनंद वधार्ई रे, देखो, आज आनंद वधार्ई ॥ जयजयकार  
जयो जिनशासन, सुरकुमरी हरखार्ई रे ॥ दे० ॥ १ ॥ घरघर गोरी मंगल  
गावत, मोतियन चोक पुरार्ई रे ॥ ईति उपद्रव जय सब जागे, खार समुद्रे  
जार्ई रे ॥ दे० ॥ २ ॥ आज सनाथ जयो हे त्रिनुवन, ॥ जिनवर जनम्या  
जार्ई रे ॥ आज अधिक जग हर्ष जयो हे, धन धन माता कहाई रे ॥  
दे० ॥ ३ ॥ जन्म महोत्सव करननकुं सब, दिशिकुमरी मिल आईरे ॥  
करि कदलीगृह सुंदर रचना, पावन कर नुर लार्ई रे ॥ दे० ॥ ४ ॥ जिनज  
ननी जिनवर पय प्रणमी, मस्तक आण चढार्ई रे । स्नान करावत उजय श  
रीरे, तैलाभ्यंग करार्ई रे ॥ दे० ॥ ५ ॥ नृषण नृषित अंग विलेपन, देव  
दूष्य पहर्वाई रे ॥ दर्पण ले मंगल घट थापी । चामर जुगल ढुलार्ई रे  
दे० ॥ ६ ॥ पंचवरनके फूल सुगंधित, सुर कुमरी वरषार्ई रे ॥ होम करी  
रक्षापोटरिया, जिनवर करे बंधार्ई रे ॥ दे० ॥ ७ ॥ मंगल गावत जिन जगज  
ननी, निजगृह मांहे ठार्ई रे ॥ सफल जयो निज आतम जाणी, दिशि कुम  
री घर आई रे ॥ दे० ॥ ८ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

( दूहा ) ॥ अतिहि अधिक उत्सव करी, गइ कुमरी निज थान ॥ इंद्र  
हवे उत्सव करे, जन्म समय जिन जाण ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग गोमी ॥ सांज समे जिन वंदो ॥ ए देशी ॥ ❀ ॥

॥❀॥ आज उहव मन जायोरे ॥ देखो माई ॥ जगजननी जिन जायोरे  
॥ दे० ॥ आ० ॥ त्रिनुवन मांहि प्रकाश जयो हे, इंद्रासन थररायोरे ॥ दे०  
॥ आ० ॥ १ ॥ अवधिज्ञानधर जिनजीकुं निरखत, हृदय कमल उलसायो  
रे ॥ हरिणगमेषी इंद्र हुकमते, घंट सुघोष घुरायोरे ॥ दे० ॥ आ० ॥ २ ॥  
वनठन नवनवरूप मनोहर, सुरसमुदय मन जायोरे ॥ सुरकुमरी वरनृषण नृ

पित, अद्भुत रूप बनायोरे ॥ दे० ॥ आ० ॥ ३ ॥ नव नव यानवाहन रच  
सुरवर, सुरगिरि शिखरें आयोरे ॥ चौसठ इंद्र करत अति उत्सव, मेव घटा  
घररायोरे ॥ दे० ॥ आ० ॥ ४ ॥ काली घटा वरदामनि चमकत, दादुर  
मोर सुहायोरे ॥ अतिहि सुगंध पुष्पव्रज वरसत, मोतियनकी ऊर लायोरे  
॥ दे० ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ( दूहा ) ॥ शक्र जाय जिनवर गृहे, जिनजननी जिनराज ॥ प्रणमी  
श्रीमहाराजनी, भक्ति करे सुरराज ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुंदर नेम पियारो माई ॥ ए देशी ॥ ❀ ॥

॥ तुम सुत प्रान पियारो माई ॥ तु० ॥ ए आंकणी ॥ जगवत्सल ज  
गनायक निरख्यो, धन धन जाग्य हमारो माई ॥ तु० ॥ १ ॥ धन जगज  
ननी तुम सुत जायो, अधमनुधारण हारो माई ॥ धन धन प्रगट जयो जग  
दिनकर, त्रिनुवन तारन हारो माई ॥ तु० ॥ २ ॥ सब सुर चाहत स्नात्र  
करनकुं, सुरगिरि प्रनुजी पधारो माई ॥ कर जोमी प्रनु अरज करतहुं  
सब जनकाज सुधारो माई ॥ तु० ॥ ३ ॥ में सेवक तुम सुत चरणनको,  
आयो हूं अधिकारो माई ॥ इंद्र कहे पदपंकज प्रणमुं, जय सब दूर निवारो  
माई ॥ तु० ॥ ४ ॥ पांच रूप करि प्रनुजीकुं लावे, पांशुगवन सिणगारो  
माई ॥ चौसठ इंद्र महोत्सव करिहे, पूजन अष्ट प्रकारो माई ॥ तु० ॥ ५ ॥

॥ इहां प्रनु प्रतिमा पंचतीर्थी अंदरसें लायके, मिहामण ऊपर स्थापन  
करे ( पीठे ) स्नात्र पूजा करावे ॥ ❀ ॥

॥ ( दूहा ) ॥ पंचरूप कर इंद्र जिन, पंशुग वन ले जाय ॥ मिहामन उठ  
रंग गहि, स्नात्र करे सुरराय ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इतनो गुमान न करियें उबीली राधा हे ॥ ए देशी ॥ ❀ ॥

॥ जिनजीको पूजन करियें, हांरे हो रंगीले श्रावक हो ॥ जि० ॥ द्रव्य  
भाव बेहुजेदें करतां, जव मागर निस्तरियें ॥ जि० ॥ १ ॥ गंगाजल चंद्र  
न पुष्पादिक, अरुविध मंगल धारियें ॥ जावविशुद्ध जिन गुण गावो, नाटक  
नवनव करियें ॥ जि० ॥ २ ॥ बहुविध प्रनुकी भक्ति रचावत, वर्नन करन न  
तारियें ॥ वो आनंद देखे मोइ जाने, दुःख सब दूरें हरियें ॥ जि० ॥ ३ ॥

पूजन करि प्रभुकुं घर लावे, आतम पुण्ये जरिये ॥ कर अछाइ महोत्सव  
आवत, सब सुर मिल निज घरिये ॥ जि० ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्री प० अ०  
ज० जन्मकल्याणके अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ तृतीय दिहा कल्याणक पूजा ॥ ❀ ॥

॥ (दूहा) ॥ सुरकृत उत्सव अति अधिक, जये अनंतर प्रात ॥ मात  
पिता उत्सव करे, निज कुलक्रम विख्यात ॥ १ ॥ पार नही धनको जहां,  
अगणित जरे जंमार ॥ दान मनोवंछित दिये, दयावंत दातार ॥ २ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गात्र लूहे० ॥ ए देशी ॥ ❀ ॥

॥ जिनजन्म महोत्सव रंगशुं रे, जये प्रात करत उठरंगशुं ॥ रंगसुं हां रे  
देवा रंगशुं ॥ नृपन्तसव करे अति घणो ॥ १ ॥ पुत्रजन्म कुल क्रम करे  
रे देवा, जगजश कीरत विस्तरे ॥ वि० हां० ॥ घरघर उत्सव रंगमें ॥ २ ॥ सुर  
वधु मिल सुरसंगशुं रे ॥ देवा० ॥ करे नाटक नवरंगशुं ॥ रंग० हां रे० ॥  
बाजलीजा जिनसंगमें ॥ ३ ॥ रूपातिशयें शोभता रे ॥ देवा ॥ इंद्रादिक मन  
मोहता ॥ मो० हां रेमन० ॥ विद्याप्रभु विस्मयवती ॥ ४ ॥ परमप्रमोद  
प्रवीणता रे देवा, सुरक्रीमा अतिशयवता ॥ अ० हां० ॥ वैक्रिय शक्तिसमेलशुं  
रे ॥ ५ ॥ गावतगीत नमंगशुं रे देवा, वाजित्र नवनव रंगशुं ॥ रं० हां० ॥  
वजित अहोनिशि संगशुं रे ॥ ६ ॥ ❀ ॥

॥ ( दूहा ) ॥ तीन ज्ञान अतिशय धरे, अतिशय कजा सुधाम ॥ सुर  
सुसंग क्रीमातिशय, अतिशयगुण अजिराम ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पंच वरणी अंगी रची ए देशी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वरणी न जाती रे, व० ॥ जिनजीकी शोभा व० ॥ चित्रजात नर  
सुरासुर निरखत, जैन एसो जग जाती ॥ जि० ॥ १ ॥ अनंत गुणें करि  
शोभित प्रभु जी, शुद्ध संवेग सोवन जाती ॥ शिव मार्ग शुद्ध सेवत निशि  
दिन, पुण्यपुरुष पायाराती ॥ जि० ॥ २ ॥ पर उपगारी परम पुरुषोत्तम,  
अद्भुत अनुभव रस पाती ॥ कामजोग वरविबुध प्रकारें, प्रात जये सुख संघा  
ती ॥ जि० ॥ ३ ॥ जसु जस ख्यात प्रगट त्रिजुवनमें, कुल राजन्योत्तम  
जाती ॥ धन धन तीन जुवनके साहिब, श्याम हमारो वरगाती ॥ जि० ॥

॥ ४ ॥ इंद्र अहोनिशि जावन जावत, देख दश अति हरखाती ॥ उन्नु  
नि प्रमुख वाजित्र वजत नित । सुखधु वनमंगल गाती ॥ जि० ॥ ५ ॥  
ए पढके प्रनुको पुष्प वासहोप चढावे ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ( दूहा ) ॥ प्रवरजोग प्रनुपुण्यते । प्रगटे प्रगट प्रधान ॥ गुण  
ग्राहक गृह वासमें, दर्शन ज्ञान निधान ॥ १ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ राग ठुमरी ॥ तुम विन दीनानाथ० ॥ ॥ ॥

॥ ॥ प्रनुविन दीनानाथ दया विन, कोन कहावत कोई रे ॥ प्र० ॥  
गृहवासें शुधसंयमधारी, शुधसुजावें होई रे ॥ प्र० ॥ १ ॥ सम्यग्दर्शनज  
वनिवदें, स्वतनकी जर खोई रे ॥ प्रनुता प्रनुकी को कहि वरनें, सुर नर नारी  
मोही रे ॥ प्र० ॥ २ ॥ शुजलेश्या, शुजध्यान रमें नित । आतम निरमल  
धोई रे ॥ आतमरूप निहारत निजघर । संगसुमति जह जोई रे ॥ प्र० ॥  
॥ ३ ॥ प्रगट प्रकाश आत्म उजियारे । साम कहावत सोई रे ॥ गृहवासें  
शुधसंयम रागी, लागी लगन सवाई रे ॥ प्र० ॥ ४ ॥ निजप्रनुता प्रनु  
जीनो जीनो, अंतर शत्रु विगोई रे ॥ विषयवासना ठीण जई लख । आतम  
शक्तिशुं ठोई रे ॥ प्र० ॥ ५ ॥ ऐसा कही फूल चढावे ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ( दूहा ) ॥ दाता दीन दयाल प्रनु, देत संवत्सरिदान ॥ दूर करे  
द्राखि जग, त्रिनुवनमांहि प्रधान ॥ १ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ मरुदेवानंदकी, क्या नवि लागत प्यारी ॥ ॥ ॥

॥ ॥ जगपति जिनवरकी, क्या नवि मोहनगारी ॥ ज० ॥ मोहत  
प्रनुके मोहनरूपे, निरख निरख नरनारी ॥ क्या० ॥ १ ॥ जोगकर्म अंतराय  
कर्म कहु, क्षाण जग निरधारी ॥ दानसंवत्सर वन जिम वरसत, पृथ्वी प्रसुदि  
तकारी ॥ क्या० ॥ २ ॥ नवल्लोकांतिक देव सबे मिल, हाजर होय सुचारी ॥  
जय जय मंगल शब्द उच्चारत, धर्म गहो सुखकारी ॥ क्या० ॥ ३ ॥ दान  
धर्म शिवमारा प्रनुजी, प्रगट कियो हितकारी ॥ दाता दीनदयाल जगतमें  
जिन सम को सुविचारी ॥ क्या० ॥ ४ ॥ इंद्रादिक सुर सुरी नर नारी, दीक्षो  
त्सव अनिजारी ॥ गान दान सनमान तान करी, प्रनुगति सकल सुप्यारी ॥  
क्या० ॥ ५ ॥ नजि संमार जियो शुजयोगें, संयम मतरप्रकारी ॥ मनपर्यव

वर ज्ञान ज्यो तब, विहरत पर उषगारी ॥ क्या० ॥ ६ ॥ ॐ क्षी प०  
अ० ज० श्री दी० अष्टद्रव्यं० स्वाहा ॥ ३ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चतुर्थ केवलज्ञानकल्याणक पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ गजवर अश्व समूह स्थ, पायक कोना कोन ॥ जिनदीक्षा  
महोत्सवसमें, हाजर होय तिण ठोर ॥ १ ॥ इंद्रादिक सुर असुर नर,  
प्रभु कुं करे प्रणाम ॥ नर नारी आशीष दे । जयजय त्रिभुवन साम ॥ २ ॥  
तजि आश्रव संबर गहे, संयमजाव निधान ॥ सब संसार तजी करी, जए  
अणगार प्रधान ॥ ३ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तेरी पूजा बणी ते रसमें ॥ ए देशी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ धारी धारी धारी, जिन जए संयमपद धारी ॥ चरणकमल व  
जिहारी ॥ जि० ॥ पंचसुमतिधर तीन गुपतिकर । सब जीवां सुखकारी ॥  
जि० ॥ १ ॥ जीत लिये नृपसर्गपरीसह, शत्रुसेना गणजारी ॥ जयजैरवतें  
निःप्रकंप जए, निर्मम निरहंकारी ॥ जि० ॥ २ ॥ क्रोध मान माया लोभ  
अकिंचन, आकिंचन ब्रह्मचारी ॥ पुष्करसम निरलेप जगत गुरु, नीरंजन  
अविकारी ॥ जि० ॥ ३ ॥ चेतन पर प्रभु अप्रतिधाती । खेसम निराश्र  
यारी ॥ खड्गी शृंग परे एकाकी, अप्रतिबंध बिहारी ॥ जि० ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दोहा ) ॥ रत्नत्रय परिग्रह करी । मुक्तिमार्ग अजिराम ॥ निशि  
दिन करत विहारक्रम । प्रासुकाम निजधाम ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सद्गुरुजी सुनो मेरी अरजी ॥ ए देशी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिनवरजी जगतहितकारी ॥ जि० ॥ जग वत्सल जगबंधु  
जगत गुरु, जग नायक जयकारी ॥ जि० ॥ १ ॥ कूर्मतणीपर गुप्तइंद्रिया, अप्रमाद  
चारुसुचारी ॥ अतिशय धाम धाम निजवीरज, वृषजपरें सुविहारी ॥ जि०  
॥ २ ॥ शूर बीर प्रभु सिंहतणी पर । कुंजर करम बिदारी ॥ अतिगंभीर  
सायरसम शोभित । सौम्यलेश्या सुखकारी ॥ जि० ॥ ३ ॥ तेज पुंज दि  
नकर सम दीपत, हेम वरण मनुहारी ॥ सर्वसहन कारक धरणीपर, स्वव  
हृदयकजधारी ॥ जि० ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ॐ ॥ ( दोहा ) अनुत्तर धर संयमक्रिया कल्याणीतजिह्म ॥ वीतराग  
विचरे प्रवर रत्नत्रय जगचंद ॥ १ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ कुवजाने जादू मारा ॥ ए देशी ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ जाके रागद्वेष जया न्यारा रे सोई श्याम सकल सुखकारा ॥  
जा० ॥ वासी चंदन सम प्रभु जगमें अपकारे उपकारा रे ॥ सो० ॥ १ ॥  
कंचन काष्ठ समान हे जाके सुख दुःख सम उपकारा ॥ कोऊ निंदत  
कोऊ पूजत जिनजी हे अविकारा रे ॥ सो० ॥ जा० ॥ २ ॥ शिवसु  
ख अरु जवसुख हू न बांछे वीतराग प्रभु प्यारा ॥ शूरवीर प्रभु रूपकश्रेणि  
चढ़ मोहनी मल्ल पिठारा रे ॥ सो० ॥ जा० ॥ ३ ॥ ह्यायिक संयमने शुभ  
योगे अनुत्तर गुण गण धारा ॥ पाठक विजय विमल कहे प्रभुके चरणकम  
ल बलिहारा रे ॥ सो० ॥ जा० ॥ ४ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ( दोहा ) घनवाती चउ कर्मको ह्यकर ह्यायिक ज्ञान ॥ दर्शन  
लोकालोकको प्रगट प्रकाशी ज्ञान ॥ १ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ राग तुमरी ॥ वस मन ह्यरी कुंभके तीर ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ पायो प्रभु जवजलनिधिको तीर अनुजीवल वरवीर ॥ पा० ॥  
अनुत्तर जाके सुमति गुपति हे अनुत्तरहृमासुवीर ॥ पा० ॥ १ ॥ मार्दवआ  
र्यव अनुत्तर जाके रोक्यो आश्रव नीर ॥ संवरजोग क्रिया नवि विणगी रही  
ईया सुख सीर ॥ पा० ॥ २ ॥ घनवाती सब शत्रुविनाशी केवलज्ञान सुयी  
र ॥ पूरन दर्शन प्रगट जयो हे निज आत्म गुणहीर ॥ पा० ॥ ३ ॥ प्रा  
निहार्य अनिशय जिनसंपद जयो अनुकूल ममीर ॥ दे ज्यदेश जविक प्रति  
बोधत वचनानिशय गंभीर ॥ पा० ॥ ४ ॥ लोकालोक प्रकाश परम गुरु  
कहि न शके मनि सीर ॥ पाठक विजयविमल परमात्म प्रभुता परम सु  
यीर ॥ पा० ॥ ५ ॥ उंक्ती परमा० अ० ज० श्रीम० केवलज्ञानकल्या  
णके अष्टद्रव्य यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥ ४ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ पंचम निर्वाण कल्याणक पूजा ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ दोहा ॥ इंद्रादिक सुर गव मिली नीन नुवन शिरदार ॥ सब  
दरशी सर्वज्ञानो सहिमा करे अपार ॥ १ ॥ ॥ ॐ ॥



॥ ❀ ॥ अतुल विमल मिल्या, अखंन गुणें ॥ ए देशी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अतुल विमल प्रनुता प्रनुकी लख, चौसठ इंद्र उन्नव धरे ए ॥  
चार प्रकारके सुर सब मिलकर, समवसरण रचना करे ए ॥ अ० ॥ १ ॥  
रजत कनक वररत्नप्रकारें, कनक रत्न मणि कंगुरा ए ॥ बृह अशोक सिंहा  
सन शोभित, तीन ठत्र चामर दुरा ए ॥ अ० ॥ २ ॥ डुंडुभि प्रमुख श्रवण  
सुखदायक, गहिर सुरे वाजित्र धुरे ए ॥ जानुप्रमाण पुष्पधन वरसत, जल  
ज थलज विकसित सुरे ए ॥ अ० ॥ ३ ॥ साधु साधवी श्रावक श्राविका  
इंद्रादिक सुरी सुर वरे ए ॥ नरनारी तिर्यगु विद्याधर, द्वादशविध परिषद जरे  
ए ॥ अ० ॥ ४ ॥ प्रविजन धर्म तणें उपदेशें, जोजन गामि मधुर गिरे ए ॥  
प्रतिबोधत चौमुख श्रीजिनवर, निज निज प्राषा अनुसरे ए ॥ अ० ॥ ५ ॥  
ए पढके वासहेप करे ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ प्रगटपणें प्रनुकी प्रजा, प्रगट प्रकाशकरूप ॥ प्रग  
टी प्रनुता परमसम । परमात्म पदचूप ॥ १ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ विगरी कौन सुधारे नाथ विना ॥ ए देशी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नृमंजल प्रविकमल विबोधन, दिनकर सम जिनराया रे ॥  
चू० ॥ अणहुंते डक कोनी अमरपद, पंकज प्रमर लुजाया रे ॥ चू० ॥ १ ॥  
ग्राम नगर पुर पट्टण बिचरत, त्रिजुवननाथ कहाया रे ॥ चौसठ इंद्र करे  
जाकी सेवा, तन मनसैं लयलाया रे ॥ चू० ॥ २ ॥ इंद्राणी मिल मंगल  
गावत, मोतियन चोक पुराया रे ॥ सर्व जीव हितकारक प्रनुजी, निःश्रेयस  
सुखदाया रे ॥ चू० ॥ ३ ॥ प्रवजलनिधि निर्यामक जगगुरु, तारक सकल  
कहाया रे ॥ शासननायक संघसकलकुं । प्रवचन तत्त्व सुनाया रे ॥ चू०  
॥ ४ ॥ अनंतगुणाकर प्रनुजीकी महिमा, वरने को कविराया रे ॥ पर उप  
कारक प्रनुके पाठक, विजय विमल गुण गाया रे ॥ चू० ॥ ५ ॥ ए कहके  
वासहेप करे ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दोहा) ॥ निज निज प्राषा प्रविकजन, नृपत न सुनतहि श्रोत ॥  
मीठी अमृत सम गिरा, समजत श्रम नहि होत ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग कहेस्वो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिनंदवामिल गयोरे. दोय चरणं परध्या न ॥ शुक्ल मन गह  
गहोरे ॥ जि० ॥ ज्ञायकज्ञेय अनंतनोरे, सबदरसी जिनचंद ॥ सुरतरु  
सम जग वालहोरे. सेवत सुर नर इंद ॥ धर्ममें लह लहोरे ॥ दो० ॥ १ ॥  
चौदम गुण थानक करेरे आतम वीर्य अनंत ॥ योग निरोधनकी क्रियारे.  
सूखम चादरकंत ॥ बंध सब दर गयोरे. सब संवर जयोरे ॥ दो०  
॥ २ ॥ घन कर आत्मप्रदेशनोरे. कर शैलेशी कर्ण ॥ कर्म सकल हरे  
क्रियारे. जीर्णवस्त्र जिम पर्ण. मुक्ति पद जिम लहोरे ॥ दो० ॥ ३ ॥  
ज्ञान क्रिया कर कर्मकोरे. हृय कर पर अनुबंध ॥ निजआतम रूप लहोरे.  
शाश्वत सुख संबंध. सिद्ध शुद्ध बुध थयोरे ॥ दो० ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दोहा ) अकल अगोचर अगमगम. सिद्ध जए सुविशुद्ध ॥  
परमातम प्रनु परम पद. चिदानंद अविरुद्ध ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग धनाश्री ॥ तेजतरणिमुखराजे ॥ ए देशी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तेज तरणि सम राजे. प्रनुजीको ॥ ते० ॥ एकसमयप्रनु उरध  
गतिकर. मुक्तिमहल सुविराजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ १ ॥ सादि अनंत सदा शा  
श्वत वर. अनंत महासुख राजे ॥ अचल अगोचर प्रनु अविनाशी. सिद्ध  
रूप विराजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ २ ॥ निरुपाधिक निरुपम सुख प्रनुके. क  
हि न शके कविराजे ॥ अजर अमर अहृय अविकारी. सकलानंद सहा  
जे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ ३ ॥ संवत जगणीमे तेरो तर. आवण शुद्धि पख राजे ॥  
श्रीजिनराज नणा गुण गाया. पंचमि दिवस समाजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ ४ ॥  
श्रीविक्रमपुर नगर मनोहर. श्रीसंघ सकल समाजे ॥ पंच कल्याणक पूजा  
प्रनुकी. कीनी हिन सुखकाजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ ५ ॥ श्रीखरतराव ना  
यक लायक. युगप्रधान पद राजे ॥ जंगमगुरु जट्टाक्षरश्री. जिनमौजाग्य  
सुराजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ ६ ॥ प्रीत विलास धम्मसुंदर गणि. अमृत समु  
द्र सुभाजे ॥ पाठक विजय विमल प्रनुके गुण. गावन वन जिम गाजे ॥  
प्र० ॥ ते० ॥ ७ ॥ हंसविलास प्रवर्गगणिवरकी. प्रेरणया सुसमाजे ॥  
श्रीजिनवरकी स्तवना कीर्धी. धर्मप्रभावन काजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं प० ॥ अनं० ॥ जन्म जरामृत्यु निवारणायः श्री मज्जिनेन्द्रेभ्यो नि  
र्वाणकल्याणके अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति श्री पाठक विजयविम  
लजीविरचित पांच क० पू० सं० ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आरती ॥ राग मालवी गोमी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शुभ आरती प्रभुकी उदारचित्तें, करो प्रविक रसालरे ॥ प्रथ  
मधूप सुगंधजिनकुं, नखेवो जिननालरे ॥ १ ॥ जाल निजकर तिलक सुंदर,  
पहर पुष्प सुमालरे ॥ दक्षिणकर जिन राजजुके, कर आवर्त्त सुथालरे ॥  
शु० ॥ २ ॥ यथासगतें शुभप्रगतें, करो दिल खुशियालरे ॥ द्रव्यज्रावें वि  
विधपूजा, प्रविकज्राव विशालरे ॥ शु० ॥ ३ ॥ गुण अनंत महंत गावो,  
प्रभुपरम दयालरे ॥ जन्म सफलो करो प्रविजन, कहे पाठक बालरे ॥  
शु० ॥ ४ ॥ इति आरती ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पांच कल्याणक पूजा विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम बिंबप्रतिष्ठामें ( तथा ) रुद्धावंत सेठ सज्जकारादिककी  
तरफसें ( तथा ) संघ समुदायके तरफसें, जो पांच कल्याणकका उठव  
होय ( तबतो ) विस्तार विधिसें एकेक दिनमें एकेक कल्याणकका उठव  
करे । पांच दिनमें पांच कल्याणक करै ( और ) जल यात्रा, चोवीस प्रकारी  
बीश स्थानक, सतर जेदी, नवपदजीकी एकेक दिन पूजा उठव विस्तार वि  
धिसाथ करावै । ऐसें १० दिनका उठव करै ॥ ( यथा ) पहले दिन पूठिया  
चंद्रवा तोरणादिकसें मंरुपकी स्थापना करावे ॥ १० दिग्पालाकों बलवाकुल  
दिरावे । जल यात्रादि उठव करके मंगल कलश थापन करै ( इत्यादि ) ॥  
दूशरै दिन चवन कल्याणकको उठव करै ( जैसें ) देवलोकसें चवके माताके  
गर्भमें आवै ( तैसें ) जगवानकी माताको काष्ठमई घरादिकमें पनि बिंबो  
स्थापन करै ( पीठे ) ऊपर सेती काष्ठ विमानमें जगवानको प्रतिबिंब स्थापन  
करके नीचै उतारै ( पीठे ) चवदै स्वप्नांको क्रमसें उतारै । माताके मंरुपकेपा  
स रखे । तीन नवकार गुणके उतारै ( और ) तीन नवकार गुणके स्था  
पन करै । ( पीठे ) एक ( वा ) २४ रत्न ( अथवा ) एक ( वा ) २४

रुपियाँमें । चवन कल्याणककी थापना करे ( और ) चवन कल्याणककी पांच पूजा पढ़े ॥ ❀ ॥ इति चवन कल्याणक पूजा ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ जन्मकल्याणक विधिः ॥ ❀ ॥

॥ तीसरे दिन जन्म कल्याणकको संपूर्ण उठव करे ( जैसे ) उष्ण दिश कुमरीका आगमन, और यावन्मात्र केली गृह रचना, दर्पण दर्शनादिक उठव करे ॥ तिस पीठे, सुमेरु पर्वतकी थापनाके ऊपर इंद्रादिकका रूप करके जगवानको थापन करे । सोने, रूपे, तांबा, पीतल, मट्टी आदि अनेक तरे का कलश बन सके तो १००८ कलश गंगानदी आदि अनेक ठिकाणोंका जलसे भरकरके स्नात्र उठव करावे ॥ चृंगार १ । दर्पण २ । स्त्र करंरुक ३ । स्थाल ४ । पुष्प चंगेरिका ५ । इत्यादि उपगण पूजाका सर्व जगवान आगे रखे ॥ सर्व क्षेत्रोंकी सुगंधी उषधीयाँमें स्नात्र करावे । गुलाबजलकी, पुष्पाँ की, रत्नाँकी, वर्षा करे । तदनंतर सिद्धार्थ राजायें जिस माफक उठव कियो उस माफक अपनेसें बन सके जिस मुजब संपूर्ण उठव करे । ( तदनंतर ) घृतसेर २४ । नैवेद्य सेर २४ । गुरु सेर २४ । फल अठ्ठा २४ । चढ़ावे । २४ सधव स्त्रियाँ मिलके २४ गवली करे ॥ जन्मकल्याणककी पांच पूजा पढ़े । आरती मंगल दीप उतारे ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ दिक्षा कल्याणक विधिः ॥ ❀ ॥

॥ चौथे दिन दिक्षा कल्याणकको उठव करे । खाशा पालखीमें जगवानको बैठके, वर घोसो वाजित्रादि सहत वने उठवसें निकाले । अठ्ठा वाग वगीचामें लेजाके । अशोक, आम्रादि, उत्तम वृक्षके नीचे मिवासनपर स्थापन करके स्नात्र उठव करावे । २४ गज उत्तम वस्त्र चढ़ावे । बाश क्षेत्र देके नवीन चंद्रवा चढ़ावे । दिक्षा कल्याणककी पांच पूजा गवावे । जैन याचकादिकको दान देवे । माहर्मावठल करे ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ केवल ग्यान कल्याणक पूजा विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पांचमें दिन त्रिगुणा समोत्थरणकी रचना करे । सुगट उत्र चामरादि अनेक तरेके स्नजन्ति आचूषण सहत जगवानको स्थापन

करै । पंचवर्णा सुगंधी फूलांकी वर्षा करे । नाना प्रकारका वाजित्र वजावे, केवल ग्यान कल्याणककी मीठा स्वरसे पांच पूजा गावे ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ शांतिपूजा विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शुभ दिन शुभ महूर्ते जिन मंदरमें समोसरणपर जिन प्रतिमा स्थापन करावे (आगे) पंच परमेष्ठी पट्ट स्थापन करे (तथा) जमवानके दहिणेंपासे दश दिग्पाल पट्ट (और) वामपासे नवग्रह पट्ट स्थापन करे (पीठे) एक मोटा, एक ठोटा, तांबे, पीतल, मट्टी आदिकका हंसा ऊपर खमी सपेद मिट्टी पोतके, चार चार केशर कुंकुमा साथिया करे ॥ पीठे ऊंची नींची दोय टिवची काठकी धरावे । नींची टिवचीपर मोटा हंसा धरे । ऊंचीपर ठोटा हंसा धरे । ठोटा हंसाके तले एक छिद्र करे । दोनुं मटकाके भीतर साथिया करे ॥ वस्त्र मटकाकी टिवचीके नीचे । चावलका साथिया करके । ऊपर नालेर रुपियो थापनाको धरे ॥ दोनुं मटका ऊपर मोली सुत्रबटके पंचरंगी खजली । एकेक खूणें २१ इकोस पोकर । चारुं खूणें ८४ खजली पोके तणी बांधे ॥ नालेरके आकार मोली सुत्रको दमो नीचला मोटा हंसामें लटकतो रखके । ऊपरकी मोली ठोटा हंसाके छिद्रमें पोकर, ऊपर जो चोखुंणी तणी बांधीहे । जिसके बीचमें गांठ देवे (पीठे) जो संघ संमुदायकी तरफसे शांतिपूजा होय (जबतो) मंदरको कलश लेवे (और) एकजनकी तरफसे होय । (तब) शांतिकारके गृह सेती सधवस्त्री, जिसका । माता, पिता, सासू, सुसरा, चारेमाईत जीता होय जिस स्त्रीकुं अष्टा वस्त्र आचूषण पहरायके, कलशके मांह, कुंकु केशरको साथियो करके, चावल, सुपारी, पंचरत्नकी पोदली धरके । मुखपर नालेर १ टुकणें माफक लगाय, कसुंबल कपनो मोली सेती बांधे । ऊपर चार साथियाकर पूर्वोक्त स्त्रीके मस्तकपर रखके । गीतगान पूर्वक नानाप्रकार वाजित्रादि उद्यवसहित जिनमंदरमें लावे ॥ समवसरणके सन्मुख चावलांको साथियो करके । ऊपर कलश थापन करे ॥ (पीठे) पांच दश जणा द्रव्य लावे अपना अंग शुद्ध करे ॥ गुरुकेपासे केशर मंत्रायके तिलक करे ॥ दहिणा हाथके मोली कांकणमोरा मंत्रायके बांधे ॥ ऊपरमेष्ठी नमस्कारं ॥

इत्यादि स्तोत्रमें गुरु आत्मरक्षा करावे ॥ ( पीठे ) एक थालीमें १० । एक थालीमें ९। एक थालीमें ९। नागरखेलका पान सर्व २८ लगावे (जिसपर) फूल-अद्वैत नेवेद्य, फूल- रोक नाणोः सब पानपर बराबरधरायके तैयार रखे ॥ और पिणः पंचामृतः फूलः फूलमालाः अद्वैतः नेवेद्य नानाजात का- लीलाः सूकाः फल- अक्षरः गुलाबजलः केशरः कपूरः रोली- मोली आदिपूजापेकी सर्व सरंजाम यथाशक्ति तैयार मंगायके रखे ( पीठे ) पूजा सुरू करे ॥ ॐ ॥ प्रथम स्नात्रपूजाकी थापना रखके । कुशुमांजली लेके स्नात्रपूजा ( तथा ) अष्टप्रकारी पूजा करावे ( पीठे ) पंचपरमेष्ठी पट्टा ऊपर चावलका तीन ढिगला करके । ग्यानः दर्शनः चारित्रः की थापना करे (ऊपर) वासहोप करके चढ़ाये सूधा तीन पान चढ़ावे । उसके आगे दो चावलका ढिगला करके चैत्यदेवता क्षेत्रदेवताकी थापना करावे- पान दोय चढ़ावे ॥ ऊपर कसंवल कपनो बांधे ( पीठे ) दशदिग्पालके पट्टेऊपर जलका ठांटा देके वासहोप करे ॥ एकेक दिग्पालके टीकी देके फूल चढ़ायेके । एकेक चढ़ाये सूधो नागर खेलको पान चढ़ावे ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ दश दिग्पाल पूजा लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ इंद्राय । सायुधाय । सवाहनाय । सपरिकराय । इह अस्मिन् जंबुद्वीपे । दक्षिण भरतार्द्धक्षेत्रे । अमुकनगरे । अमुकजिनचैत्ये । शांतिपूजा म होतवे । आगच्छ २ । वलि गृहाण २ । उदयमभ्युदयं कुरु २ स्वाहा ॥ ॐ ॥  
ॐ इंद्राय नमः इति इंद्रआह्वान पूजा ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥  
पूर्वदिशे जलचंदनादि अष्ट द्रव्य चढ़ावे ॥ ॐ ॥ १ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ अग्नि दिग्पाल पूजा लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ॐ अग्नये । सायुधाय । सवाहनाय । सपरिकराय । अस्मिन् जंबुद्वीपे । दक्षिण भरतार्द्धक्षेत्रे । अमुकनगरे । अमुक चैत्ये । शांति पूजा महो तवे । आगच्छ २ वलिगृहाण २ । उदय मभ्युदयंकुरु २ स्वाहाः ॥  
ॐ अग्नये नमः ॥ २ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ दशदिग्पाल पूजा लिख्यते ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ॐ यमाय । सायु० । सवा० । सपरि० । अस्मिन् जंबु० । दक्षि० ।



अमुक० । अमु० । शांतिपूजा० । आ० । वलिगृहाण २ । उदय म० ।  
स्वाहा ॥ ❀ ॥ नैऋताय नमः ॥ ❀ ॥ दक्षिण दिशकीतरफ यमदिग्पालकी  
पूजा करै ॥ ३ ॥ ❀ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नेऋत दिग्पालपूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नैऋताय । सायु० । सवा० । सपरि० । अस्मिन् जंबुद्वीपे० ।  
शांतिपूजा० । आगच्छ २ । वलि० । उदय० कुरु २ स्वाहाः ॥ नैऋताय नमः  
॥ नेऋत कूणकीतरफ अष्ट द्रव्यचढावे ॥ इतिः ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ वरुणदिग्पाल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नैऋताय । सायु० । सवा० । सप० । अस्मिन् जंबुद्वीपे० शांति  
पूजा० । आ० । वलि० । उदयम० । स्वाहाः ॥ नैऋताय नमः ॥ पश्चिम  
दिशकीतरफ अष्टद्रव्य चढावे ॥ ५ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ वायव दिग्पाल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नैऋताय । सायु० । सवा० । सप० । अस्मिन् जंबुद्वीपे० । शांति  
पूजा० । आ० । वलिगृहाण २ । उदयम० । स्वाहाः ॥ नैऋताय नमः ॥  
वायवकूणकीतरफ अष्टद्रव्य चढावे ॥ ६ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ कुबेर दिग्पाल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नैऋताय । सायु० । सवा० । सप० । अस्मिन् जंबुद्वीपे । द  
क्षिणऋत० । शांति० । आ० । वलि० । उदय मभ्युदयं कुरु २ स्वाहाः ॥  
नैऋताय नमः ॥ उत्तरदिशितरफ अष्टद्रव्य चढावे ॥ ७ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ईशान दिग्पाल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नैऋताय । सायु० । सवा० । सप० । अस्मिन् । दक्षिण० ।  
अमुक० । अमुक चैत्ये । शांतिपूजा० । आगच्छ २ । वलि० २ । उदय म  
भ्युदयं कुरु २ स्वाहाः ॥ नैऋताय नमः ॥ ईशानकूणकीतरफ जल चंद  
नादि सर्व द्रव्य चढावे ॥ ८ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ब्रह्मदिग्पालपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नैऋताय । सायुधाय । सवा० । सप० । अस्मिन् । दक्षिणऋत

२० । शान्ति० । आ० २ । वलि० उदय मभ्यु० स्वाहाः ॥ ॐ ब्रह्मणे नमः ॥  
उर्वदिश तरफ अष्टद्रव्य चढावे ॥ ९ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ नागदिग्पालपूजा ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ॐ नागाय । मायु० । मवा० सप० । अस्मिन् जं० । दक्षि० शान्तिपूजा० । आगच्छ २ । वलि० । स्वाहाः ॥ ॐ नागायनमः ॥ अयोदिशि अष्टद्रव्य चढावे ॥ १० ॥ ऊपर कसुंवल वस्त्र मोलीसैं बांधे ( पीठे ) ॐ दशदिग्पालायनमः ॥ ऐसा कहके यथाशक्ति रोकनी द्रव्य सहन नागरखेल का पान आदि सर्व द्रव्य चढावे । पट्टाके दश दिशकी तरफ १० दीपक फूलवत्ती खमी धरके जगावे । ( वा ) एक दीपक आगे जगाकर रखें ॥  
॥ ॐ ॥ इति दशदिग्पाल पूजनविधिः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ नवग्रह पूजन विधिः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ॐ नमो आदित्याय । मायुधाय । मवाहनाय । सपरिकराय । अस्मिन् जंबुद्वीपे । दक्षिण प्रस्तद्वेगे । अमुक नगरे । अमुक चेत्ये । शान्तिपूजा महोत्सवे आगच्छ २ । वलिपूजा गृहाण २ उदय मभ्युदयं कुरु २ अत्रर्षिठेतिष्ठ २ स्वाहाः ॥ ॐ सूर्यायनमः ॥ ऐसा कहके जलचंदनादि अष्ट द्रव्य चढावे ॥ इति सूर्यपूजा ॥ १ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ चंद्रपूजा ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ॐ चंद्राय । मायुधाय । मवाहनाय । सपरिकराय । अस्मिन् जंबु० । दक्षि० । शान्तिपूजा० आ० २ । वलि० । अत्रर्षिठे तिष्ठ २ । उदय मभ्यु० स्वाहाः ॥ ॐ चंद्रायनमः ॥ ऐसा कहके जलचंदनादि अष्टद्रव्यसैं चंद्रमाकी पूजा करे ॥ ॐ ॥ २ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ मंगलपूजा ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ॐ नमो ज्योमाय । मायु० । मवा० । सप० । अस्मिन् जं० । दक्षि० । अमु० । शान्तिपूजा महोत्सवे । आगच्छ २ । वलि० २ । अत्रर्षिठे २ । उदय० । स्वाहाः ॥ ॐ ज्योमायनमः ॥ मंगलकी पूजा करे ॥ २ ॥

॥ ॐ ॥ अथ बुधपूजा ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ॐ नमो बुधाय । मायु० । मवा० । सप० । अस्मिन् जं० । दक्षि०

ए० । अमुक० । शांतिपूजा महोद्धवे । आगच्छ २ । बलि० २ । अत्रपीठे तिष्ठ २ । उदय० । स्वाहाः ॥ ॐ बुधायनमः ॥४॥ ऐसा कहके बुधकी पूजा करे ॥

॥ ❀ ॥ अथ बृहस्पति पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ नमो बृहस्पतये । सायु० । सवा० । सप० । अस्मिन् । दक्षिण० । शांति० । आ० २ । बलि० २ । अत्रपीठे० २ । उदय० । स्वाहाः ॥ ॐ बृहस्पतयेनमः ॥ ऐसा कहके बृहस्पतीकी पूजा करे ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ शुक्रपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ नमो शुक्राय । सायु० । सवा० । सप० । अ० । दक्षिण० । अमु० । शांतिपूजा० । आ० । बलि० २ । अत्रपीठे० । उदय मभ्युदयं कुरु २ स्वाहा ॥ ॐ शुक्रायनमः ॥ ६ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ शनिपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ नमो शनिश्चराय । सायु० । सवा० । सपरि० । अस्मिन् । दक्षि० । अमु० । शांति० । आ० २ । बलि० । अत्रपीठे० २ । उदय मभ्युदयं कुरु २ स्वाहा ॥ ॐ शनिश्चरायनमः ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ राहु पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ नमो राहवे सायु० । सवा० । सपरि० । अस्मिन् । दक्षि० । अमुक० । शांतिपूजा० । आ० २ । बलि० २ । अत्रपीठे० २ । उदय० । स्वाहाः ॥ ॐ राहवेनमः ॥ ८ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ केतूपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ॐ नमो केतवे । सायु० । सवा० । सप० । अस्मिन् । दक्षि० । अ० । शांति० । आगच्छ २ । बलि० २ । अत्रपीठे० । उदय० । स्वाहा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इसीतरै कमसें जगवानके वामपासे पट्टापर नवग्रहकी स्थापना करे ॥ ऊपर कसुंबल वस्त्र मोलीसें बांधे ( पीठे ) नागरखेल पान आदि सर्व द्रव्य ( तथा ) शक्ति मुजब रोकन नाणो ऊपर जेट करे ( ऐसा कहे ) ॐ नवग्रहायनमः ॥ चारुं तरफ नवदीपक ( वा ) एक दीपक धरे ॥ ❀ ॥ इति नवग्रह पूजन थापन विधि ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इसीतरै, अन्य मंजल प्रतिष्ठादिकमें ( जब ) दशदिग्पाल, नवग्रहकी थापना पूजा करणी होय ( तो ) शांतिपूजाके ठिकाने, जो पूजादि उठव होय । उसीका नाम लेकर पूजन थापन करावे ॥ विशेष विधि जो होय । सो गुरुके मुखसें समझके करावे ॥ ( पीठे ) शांतिकारकके गृहसें शुद्ध जलसें सवव स्त्रीके हाथसें किया हुवा पांचुं रंगके धानका वाकुला ( तथा ) पांचुं रंगकी खजली, गुलगुला, खीर, दहीको करवो, मालपूवा, पांच रंगका लाडू, ( इत्यादि ) उत्तम २ खाद्यवस्तु मंगाके । एक परातमें सब द्रव्य भेजा करै ( और ) घृत, खारु, अक्षर, गुलाबजल, पांच वर्णा फूल, आदि सुगंधी द्रव्य मिलाके बलवाकुल तैयार करै ॥ ( पीठे ) गुरु, वासक्षेपकी सुछी तीन वेर मंत्रसें मंत्रके, तीनवेर बलवाकुल ऊपर वासक्षेप करै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ वासक्षेप मंत्र ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ ज्ञां ज्ञो सर्वोपद्रवं विवस्य रक्ष २ स्वाहा ॥ ॐ णमो अरिहं ताणं । ॐ णमो सिद्धाणं । ॐ णमो आयरियाणं । ॐ णमो उवझायाणं । ॐ णमो लोए सबसाहुणं । ॐ णमो आगास गामीणं । ॐ णमो चारण लक्ष्मीणं । जे इमे किन्नर । किंपुरस । महोरग । गरुड । गंधर्व । जक्स । रक्सस । पिशाच । चूअ । नाइए प्पन्नइउ । जिणथर निवासिणो । सन्निहि याय । तेसवे विलेवण धूव पुप्फ फल वडवसणाहिं । वलिपफिठंता । तुठिकरा भवंतु । पुठिकरा संतिकरा भवंतु । सबं जणं कुर्वंतु । सबजिणाणं सहाणप्रजा वतं । पमन्नजावतणे । सबत्थ रस्कंतु कुर्वंतु । सब डुरियाणी नासंतु । सब सिव सुवसमंतु । संति तुठि पुठि सिव सत्थयण कारिणो भवंतु स्वाहा ॥ इस मंत्रसें तीनवेर वासक्षेप करके बलवाकुलको शुद्ध करै । ( पीठे ) आधा बलवाकुल, दूसरी परातमें विसर्जनके निमित्त पट्टेपर वस्त्रसें ढांकके रख देवे । आधा बलवाकुल लेके घरके ( तथा ) चैत्यके ऊपर ११ आत्रिया शुद्ध होके जावे । ( जिसमें ) प्रथम विनयवंत श्रावक चोटीका केश खुला करके बलवाकुल दोनों हाथोंमें लेके, पूर्व दिशकी तरफ खड़ा रहे ॥ १ ॥ दूसरो केशरकी कटोरी २ । तीशरो फूलकी चंगेरी ३ । चौथो आरीसो ४ । पांचमो धूपदानो ५ । छठो दीपक ६ । सातमो चामर ७ । आठमो घंटा ८ । नवमो जलको कद

ए० । अमुक० । शांतिपूजा महोद्वे । आगच्छ २ । बलि० २ । अत्रपीठे तिष्ठ २ । उदय० । स्वाहाः ॥ नै बुधायनमः ॥४॥ ऐसा कहके बुधकी पूजा करे ॥

॥ ❀ ॥ अथ बृहस्पति पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नै नमो बृहस्पतये । सायु० । सवा० । सप० । अस्मिन् । दक्षिण० । शांति० । आ० २ । बलि० २ । अत्रपीठे० २ । उदय० । स्वाहाः ॥ नै बृहस्पतयेनमः ॥ ऐसा कहके बृहस्पतीकी पूजा करे ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ शुक्रपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नै नमो शुक्राय । सायु० । सवा० । सप० । अ० । दक्षिण० । अमु० । शांतिपूजा० । आ० । बलि० २ । अत्रपीठे० । उदय मभ्युदयं कुरु २ स्वाहा ॥ नै शुक्रायनमः ॥ ६ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ शनिपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नै नमो शनिश्चराय । सायु० । सवा० । सपरि० । अस्मिन् । दक्षि० । अमु० । शांति० । आ० २ । बलि० । अत्रपीठे० २ । उदय मभ्युदयं कुरु २ स्वाहा ॥ नै शनिश्चरायनमः ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ राहु पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नै नमो राहवे सायु० । सवा० । सपरि० । अस्मिन् । दक्षि० । अमुक० । शांतिपूजा० । आ० २ । बलि० २ । अत्रपीठे० २ । उदय० । स्वाहाः ॥ नै राहवेनमः ॥ ८ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ केतूपूजा ॥ ❀ ॥

॥ नै नमो केतवे । सायु० । सवा० । सप० । अस्मिन् । दक्षि० । अ० । शांति० । आगच्छ २ । बलि० २ । अत्रपीठे० । उदय० । स्वाहा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इसीतरै कमसें जगवानके वामपासे पट्टापर नवग्रहकी स्थापना करे ॥ ऊपर कसुंबल वस्त्र मोलीसें बांधे ( पीठे ) नागरखेल पान आदि सर्व द्रव्य ( तथा ) शक्ति मुजब रोकन नाणो ऊपर जेट करे ( ऐसा कहे ) नै नवग्रहायनमः ॥ चारुं तरफ नवदीपक ( वा ) एक दीपक धरे ॥ ❀ ॥ इति नवग्रह पूजन थापन विधि ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इसीतरै, अन्य मंजल प्रतिष्ठादिकमें ( जब ) दशदिग्पाल, नवग्रहकी थापना पूजा करणी होय ( तो ) शांतिपूजाके ठिकाणें, जो पूजादि उद्भव होय । उसीका नाम लेकर पूजन थापन करावे ॥ विशेष विधि जो होय । सो गुरुके मुखसें समझके करावे ॥ ( पीठे ) शांतिकारकके गृहसें शुद्ध जलसें सधव स्त्रीके हाथसें किया हुवा पांचुं रंगके धानका बाकुला ( तथा ) पांचुं रंगकी खजली, गुलगुला, खीर, दहीको करवो, मालपूवा, पांच रंगका लाड़, ( इत्यादि ) उत्तम २ खाद्यवस्तु मंगाके । एक परातमें सब द्रव्य जेला करै ( और ) घृत, खारु, अत्तर, गुलाबजल, पांच वर्णा फूल, आदि सुगंधी द्रव्य मिलाके बलबाकुल तैयार करै ॥ ( पीठे ) गुरु, वासक्षेपकी सुठी तीन वेर मंत्रसें मंत्रके, तीनवेर बलबाकुल ऊपर वासक्षेप करै ॥ ❀ ॥ ॥❀॥

### ॥ ❀ ॥ वासक्षेप मंत्र ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ ईंता ईंती सर्वोपद्रवं विवस्य रक्ष २ स्वाहा ॥ ॐ एमो अरिहं ताणं । ॐ एमो सिद्धाणं । ॐ एमो आयरियाणं । ॐ एमो उवझायाणं । ॐ एमो लोए सबसाहुणं । ॐ एमो आगास गामीणं । ॐ एमो चारण लक्ष्मीणं । जे इमे किन्नर । किंपुरस । महोरग । गरुड । गंधर्व । जक्स । रक्स । पिशाच । नृच । नाइण प्पन्नडु । जिणघर निवासिणो । सन्निहि याय । तेसवे विलेवण धूव पुप्फ फल वडवसणाहिं । बलिपनिठंता । तुठिकरा भवंतु । पुठिकरा संतिकराभवंतु । सब जणं कुर्वंतु । सबजिणाणं सहाणप्रजा वंतु । पसन्नजावतणे । सबत्थ ररकंतु कुर्वंतु । सब डुरियाणी नासंतु । सब सिव सुवसमंतु । संति तुठि पुठि सिव सत्थयण कारिणो भवंतुस्वाहा ॥ इस मंत्रसें तीनवेर वासक्षेप करके बलबाकुलको शुद्ध करै । ( पीठे ) आधा बलबाकुल, दूसरी परातमें विसर्जनके निमित्त पट्टेपर वस्त्रसें ढांकके रख देवे । आधा बलबाकुल लेके घरके ( तथा ) चैत्यके ऊपर ११ स्त्रात्रिया शुद्ध होके जावे । ( जिसमें ) प्रथम विनयवंत श्रावक चोटीका केश खुला करके बल बाकुल दोनुं हाथामें लेके, पूर्व दिशकी तरफ खम्हा रहै ॥ १ ॥ दूसरो केशरकी कटोरी २ । तीशरो फूलकी चंगेरी ३ । चौथो आरीसो ४ । पांचमो धूपदानो ५ । छठो दीपक ६ । सातमो चामर ७ । आठमो वंदा ८ । नवमो जलको कल



श ९ । दशमो वलिवाकुलकीथाली १० । इग्यारमो मंगल वाजित्र ११ । इसी तरेसैं सब स्नात्रिया एकेक दिशतरफ खमारहै । ( जब ) शुद्ध हरफ उच्चारण करनेवाला पंक्ति गुरु, जो दिग्पालकी पूजा बोलचूके ( तब ) क्रमसैं जल वाला, जल, केशर, फूल, बलवाकुल चढावे । चामरकरे । काच देखावे । वाजित्र बजावे । इत्यादि ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ दशदिग्पाल आह्वान मंत्र ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ऐरावतः समारूढः । शक्रः पूर्वदिशिस्थितः । संघस्य शांतये सोस्तु वलिपूजां प्रयच्छतु ॥ १ ॥ ऐसा कहके पूर्वदिशकीतरफ जलचंदनादि बलवाकुल चढावे ॥ १ ॥ ( अग्निकूणके सन्मुख ) ॥ सदावन्दि दिशोनेता । पाव को मेषवाहनः । संघस्य शांतिये सोस्तु । वलिपूजां प्रयच्छतु ॥ २ ॥ ऐसा कहके बलवाकुल चढावे ॥ ( दक्षिण दिशकीतरफ ) दक्षिणस्यां दिशः स्वामी । यमोमहिषवाहनः संघस्य० । वलि० ॥ ३ ॥ बलवाकुल चढावे । वाजित्र बजावे ॥ ४ ॥ ( नैरुत कूणकीतरफ ) ॥ यमापरांतरालोको । नैरुतः शिववाहनः । संघस्य० । वलि० ॥ ४ ॥ ( अथ पश्चिमदिशि ) ॥ यः प्रतीची दिशोनाथः । वरुणो मकरस्थितः । संघस्य० । वलि० ५ ॥ ( अथ वायवकूण ) हरिणो वाहनं यस्य । वायव्याधिपतिर्मरुत् । संघस्य० । वलि० ॥ ६ ॥ ( अथ उत्तरदिशि ) निधान नवकारूढ । उत्तरस्यां दिशिप्रभुः । संघस्य० । वलि० ॥ ७ ॥ ( अथ ईशानकूण ) सितेवृषेधिरूढश्च । ईशानांच दिसोविभुः । संघस्य० । वलि० ॥ ८ ॥ ( अथ अधोदिशी ) ॥ पातालाधिपतियोस्तु । सर्वदा पद्मवाहनः । संघस्य० । वलि० ॥ ९ ॥ ( अथ ऊर्ध्वदिशि ) ॥ ब्रह्मलोकविभोयस्तु । राजहंस समाश्रितः । संघस्य० । वलि० ॥ १० ॥ ऐसा कहके, ऊर्ध्वदिशिकों जलचंदनादि वलि चढावे ॥ ❀ ॥

इति दशदिग्पाल आह्वान बलवाकुल देनेकी विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ( पीठे ) कलशके भीतर श्रीशांतिनाथ स्वामीकी प्रतिमा निश्चल पणैं रखे । पंचरत्नकी पोटलीरखे । केशर पुष्पादिकसैं कलशकी पूजा करे । गुरु वासहोप करे । तिसकेबाद कलशके आगे । कुशमांजली १ । लवण उत्तारण २ । पहरावणी ३ । मंगलदीप ४ । करे । मंगलदीपकमें मोलीकीबट्टी

वृत्तऐसा रखे । कि । शांतिपूजा पूरण होय जहांतक तो अवश्य अखंन रहे  
 ( पीठे ) चतुर्विध संघसहत गुरु । इरियावही पडिकमें । चारनोकारको  
 कावसग्न करके । लोगस्स कहै ॥ बैठके दक्षिणो गोमो धरतीपर रखे । मा  
 वोगोमो नम्रीनूत करके । चैत्यवंदन करै । एमोत्थुणं० कहके अरिहंत चेइ  
 याणं० । वंदणवत्तिया० अन्नत्थू० । एक नवकारको कावसग्न करे । नमो ज्ञात  
 सिद्धा० कहके । थुईकी गाथा कहे ( यथा ) ॥ यदंजि नमना देव । देहिनः  
 संतिसुस्थिता । तस्मै नमोस्तु वीराय । सर्वविघ्न विधातिने ॥ १ ॥ लोगस्स०  
 वंदन० अन्नत्थू० कहके १ नवकार० ॥ दूजीथुई कहे ॥ सुरपतिनत चरण  
 युगा । नान्नेयजिनादि जिनपती न्नीमी । यद्रचन पालनपराः । जलांजलिं  
 ददतु पुःखेभ्यः ॥ २ ॥ इहां पुक्खरवरदी० । वंदनवत्तिया० कहके कावसग्न  
 करे ॥ तीसरी स्तुति कहे ॥ वदंति वंदारु गणाग्रतो जिनाः । सदर्थतो यद्रच  
 यंति सूत्रतः । गणाधिपास्तीर्थ समर्थ नहणे । तदंगिना मस्तु मत्तंनमुक्तये  
 ॥ ३ ॥ इहां । सिद्धाणं बुद्धाणं० । अन्नत्थू० कहके १ नवकारको कावसग्न  
 करे ॥ चौथी स्तुती कहे ( यथा ) शक्रःसुरा सुरवरैः सहदेवतान्निः । सर्वज्ञ  
 शासन सुखाय समुद्यतान्निः । श्रीवर्द्धमान जिनदत्त मंतिप्रवृत्तान् । अव्यान  
 जनाः प्रवतु नित्य ममंगलेभ्यः ॥ ४ ॥ ( पीठे ) बैठके एमोत्थुणं० कहके  
 खमा हुवे ॥ श्रीशांतिनाथ देवाधिदेव आराधनार्थ करेमि कावसग्न ॥ वंदन  
 वत्तिया० । अन्नत्थू० कहके १ नव० ॥ रोग शोगादिभिर्दोषै । रंजिताय जि  
 तारये । नमः श्रीशांतये तस्मै । विहितानत शांतये ॥ ५ ॥ ( ततः ) श्रीशांति  
 देवता निमित्तं करेमि० । अन्नत्थू० १ नव का० ॥ श्रीशांतिजिन प्रकाय । प्र  
 व्याय सुखसंपदं । श्री शांतिदेवता देया । दशांति मपनीयते ॥ ६ ॥ ( ततः )  
 श्रीश्रुतदेवता नि० ॥ सुवर्णशालनीदेयात् । द्वादशांगी जिनोद्भवा । श्रुतदेवी  
 सदामह्य । मशेष श्रुतसंपदं ॥ ७ ॥ ( ततः ) श्रीनुवनदेवता नि० । चतुर्वर्णाय  
 संघाय । देवीनुवन वासिनी । निहत्य धुरितान्येषा । करोतु सुखमहत्तं ॥ ८ ॥  
 ( ततः श्रीक्षेत्रदेवतानिमित्तं० ) यासांक्षेत्रगतास्संति । साधवःश्रावकादयः  
 जिनाग्यां साधयं तस्या । रहंतु क्षेत्र देवता ॥ ९ ॥ ( ततः श्रीअंविता देवता  
 निमित्तं क० ) अंवानिहित मित्रामे । सिद्धबुद्ध समन्विता । सिंते सिंहे स्थि

तागौरी । वितनोतु समीहितं ॥ १० ॥ ( ततः श्रीपद्मावती देवता निमित्तं क० )  
 धराधिपतिपत्नीया । देवी पद्मावती सदा । क्रुद्रो पद्मवतःसामां । पातुफुल्लफ  
 णावली ॥ ११ ॥ ( ततः श्रीचक्रेश्वरी देवता निमित्तं क० ) । चंचश्चक्रधराचा  
 रु । प्रवालदलसन्निभा । चिरंचक्रेश्वरीदेवी । नंदता निवन्नाचमां ॥ १२ ॥  
 ( ततः श्रीअबुष्ठा देवता निमित्तं० ) खड्गखेटक कोदंरु । वाणपाणिस्तडित्  
 द्युतिः । तुरंग गमना बुष्ठा । कल्याणानि करोतुमे ॥ १३ ॥ ( ततः श्रीकुबेर  
 देवतानिमित्तं० ) मथुरापुरी सुपार्थ । श्रीपार्थ स्तूप रक्षिका । श्रीकुबेरा नग  
 रारूढा । सुतांकावतुवोजयात् ॥ १४ ॥ ( ततः श्रीब्रह्मदेवता निमित्तं० ) ब्रह्म  
 शांति समांपाया । दपाया द्वीरसेवकः । श्रीमत्सत्य पुरेसत्या । येनकीर्तिः कृता  
 निजः ॥ १५ ॥ ( ततः श्रीगोत्र देवता नि० ) यागोत्रं पालयत्येव । सकला  
 पायतःसदा । श्रीगोत्रदेवतारक्षां । शंकरोतु नतां गिरां ॥ १६ ॥ ( ततः श्री  
 शक्रादि समस्त देवता नि० ) श्रीशक्रप्रमुखायक्षाः । जिनशासनसंस्थिताः ।  
 देवादेव्यस्तदन्येपि । संघरक्षंस्व पायतः ॥ १७ ॥ ( ततः श्रीसिद्धायिका श्री  
 शासन देवता नि० ) अन्नत्यू० चारलोगस्सकोका० स्तुति कहे । श्रीमद्भिमान  
 मारूढा । यक्ष मातंग सेविता । सामां सिद्धायिका पातु । चक्र चापेषु धारणी  
 ॥ १८ ॥ लोमस्स० । कहके बैठे । चैत्यवंदन० । एमोत्थुणं० । जयवी  
 यरायपर्यंत कहै ॥ ❀ ॥ इसी तरे १८ स्तुतीसैं देववांदै ॥ ( पीठे ) सुंदर अंगो  
 पांगवाले । सुशीलस्त्री पुत्रादिक सहित । विवेक गुणधारक, आठ स्नात्रिया मुख  
 कोश बांधके तीन तीन नवकार गुणें (जिसमें) दो स्नात्रिया दो नालीवाला  
 कलश हाथमें लेके मटकाके दोनुं तरफ खर्रा रहे ॥ एक स्नात्रियो धूप  
 खेतो रहे ॥ १ स्नात्रियो फूल, चंदन, वासद्धोप, चढातो रहै ॥ दो स्नात्रिया  
 लोटामें जल जरके दोनुं तरफ धारा देनेवाला कलशानें पूरता रहे । दोजणा  
 दोनुं तरफ चामर ढालता रहै ॥ ( प्रथम ) गुरु आदि, सकलसंघ सात सात  
 नवकार गुणें ॥ स्नात्रिया एकेक नवकार गुणके एकेक धारा देवे । ऐसैं सात  
 धारा दे चूके ( तब ) गुरु, मधुरस्वरें स्पष्ट अक्षरोंसैं । नमो ज्ञात सिद्धाचा  
 यों० कहके ॥ अजितशांति प्रमुख साते स्मरण गुणें । ( पीठे ) भक्तामर  
 वन्नीशांति, मोटी शांति गुणें ॥ ( तथा ) सकलसंघमें जिसकों साते स्मरण

शान्ति शुद्ध आती होय । जब तो गुरुकेसाथे, अपने मनमें साते स्मरण शान्तिगुणें ( ओर ) नहि आवे सो सर्वसंघ नवकार मंत्र गुणता रहै ॥ साते स्मरण ( तथा ) शान्ति गुणें जहांतक अखंर ऊपरले ढोटे कलशमें धारा देता रहै । ठीककोई न करै । कोई आपसमें अन्य संसारी कथा न करै ॥ साते स्मरणादि संपूर्ण सर्व गुणचूकें ( पीढे ) तीन तीन नवकार गुणके कलश धरै ( पीढे ) नीचेका कलशमेंमें । जिन प्रतिमाकों निकालके अन्तीतरे अंग लूणा करके केशर पुष्पादिकसें पूजा करै ॥ जगवानकी अन्ती अंगीरचना करावे । नानाप्रकारका नेवेद्यफल चढाके । आरती उतारै । मंगलदीप करे ॥ पीढे शान्तिजल सर्वसंघ लगावे । घरमें लेजाके ढांटे । शान्तिपूजाकी मोली गुरुकेपास लेके राखनी बांधे ॥ ( इससें ) संपूर्ण संघमें नगरमें, देशमें, मरी आदिक सर्व रोग दोष दूर होके शान्ति होय । अनेक प्रकारसें रुद्धी वृद्धी सुख शौचाग्यकों प्राप्त होय ॥ ( पीढे ) जो आधा बलिवाकुल परातमें रखा हुवा है । सो लेके पूर्ववत् स्नात्रिया गुरुकेसाथ मंदरऊपर जाके दश दिग्पालकों विसर्जन करावै ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ दशदिग्पाल विसर्जन करनेकी विधि पूर्ववत् जाणनी इतना विशेष है ( कि ) आगठ २ के ठिकाणें गठ २ कहै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( यथा ) ॐ नमो इंद्राय । पूर्वदिग् अधिष्टाय काय । ऐरावण वाहनाय । सहस्र नेत्राय । वज्रायुधाय । सपरिकराय । अस्मिन् जंबुद्वीपे अमुक नगरे । अमुक मंदरे । अमुक महोद्वे । सर्वोपद्रवाद्बलिरह् २ गठ गठ स्वाहा ॥ पूर्वदिशकीतरफ ॥ ॐ इंद्राय नमः ॥ १ ॥ ( अग्निक्वणे ) ॥ ॐ नमो अग्निमूर्त्तये । शक्तिहस्ताय सायु० । सवा० । सप० । अस्मि० अमु० । सर्वोपद्रवाद्बलिरह् २ । गठ २ स्वाहाः ॥ इति ॥ ( दक्षिणदिशे ) ॥ ॐ नमो यमाय । दक्षिण दिग् अधिष्टाय काय । महिषवाहनाय । दंरु आयुधाय । कृष्ण मूर्त्तये । सायु० । सप० । अस्मिन्० । सर्वोपद्रवाद्बलिरह् २ गठ २ स्वाहाः ॥ ३ ॥ इति ॥ ( नेरुत्तक्वणे ) ॥ ॐ नमो नेरुत्ताय । खरुगहस्ताय । सायु० सवाहनाय । सप० । अस्मि० । अमु० । सर्वोपद्रवाद्बलिरह् २ गठ २ स्वाहाः ॥ ४ ॥ इति ॥ ( पश्चिमदिशे ) ॥ ॐ नमो वरुणाय । पश्चिमदिग् अधिष्टाय

यकाय । मकरवाहनाय । सायु० । सप० । अस्मिन्० । अमु० । सर्वोपद्रवा० ।  
 गॢ २ स्वाहाः ॥ ५ ॥ ( वायवकूणे ) ॐ नमो वायवे । वायवाधिपतये ।  
 ध्वजहस्ताय । हरिणवाहनाय । सा० सप० । अस्मिन्० । अमु० । सर्वोप  
 द्रवा० गॢ २ स्वाहा ॥ ६ ॥ इति ॥ ( उत्तरदिशे ) ॐ नमो धनदाय ।  
 उत्तरदिगाधिष्ठायकाय । नरवाहनाय । गदाहस्ताय । सप० । अस्मिन्० ।  
 अमु० । सर्वोपद्रवा० २ । गॢ २ स्वाहाः ॥ ८ ॥ इति ॥ ( ईशान कूणे )  
 ॥ ॐ नमो ईशानाय । त्रिशूल हस्ताय । ईशानाधिपतये । वृषभवाहनाय । स  
 प० । अस्मि० । अमु० । सर्वोपद्रवादबलिरक्त २ गॢ २ ॥ स्वाहाः ॥ ८ ॥  
 इति ॥ ( ऊर्ध्वलोके ) ॥ ॐ नमो ब्रह्मणे । राजहंसवाहनाय । ऊर्ध्वलोकाधि  
 ष्ठायाय । सायु० । सप० । अस्मि० । अमु० । सर्वोपद्रवा० गॢ २ स्वा  
 हाः ॥ ९ ॥ इति ॥ ( अधोलोके ) ॥ ॐ नमो नागाय । पातालनिवासाय ।  
 पद्मवाहनाय । सायु० । सप० । अस्मि० । अमु० । सर्वोपद्रवादबलिरक्त २ गॢ २  
 स्वाहा ॥ १० ॥ इसीतरै क्रमसे दशदिग्पाल विसर्जन करै ॥ ❀ ॥ ( पीठे )  
 नीचे आकर दिग्पाल नवग्रहादि सर्व देवताको श्लोक पढके विशर्जन करै ॥  
 ( यथा ) शक्राद्या लोकपाला दिशि विदिशि गता शुद्ध सधर्मसक्ताः ।  
 आयातास्त्रात्रकाले कलुषहतिकृते तीर्थनाथस्य प्रक्त्या । न्यस्ताशेषा पदाद्या  
 विहित शिवसुखाः स्वास्पदं सांप्रतंतं । स्नात्रे पूजामवाप्य स्वमतिकृत मुदो  
 यांतु कल्याणप्राजः ॥ १ ॥ आग्याहीनं क्रियाहीनं । मंत्रहीनंचयत्कृतं । त  
 त्सर्वं हृमृतंदेवः । प्रसीद परमेश्वरः ॥ १ ॥ आह्वानं नैवजानामि । नैवजाना  
 मि पूजनं ॥ विसर्जनं नैवजानामि । त्वमेव शरणं ममः ॥ ३ ॥ ( पीठे ) यथा  
 शक्ति ग्यानपूजा, गुरुपूजा, साहमीवात्सल्य करै ॥ जैनयाचकानेदानदेवै ॥  
 इति शांतिक स्नात्र पूजाविधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नवपद मंरुल पूजा विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम सुंदर अंगोपांगवाले नवस्नात्रिया मंत्रितजलसे स्नान करे ॥  
 ( जलमंत्र ) ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षणी अमृतं श्रावय २ स्वाहा  
 ( इसमंत्रसे ) जलमंत्रे ( पीठे ) ॐ ह्रीं अमले विमले विमलोद्भवे सर्वतीर्थ  
 जलोपमे पांपां वांवा अशुचि शुचिभवामि स्वाहा ॥ ( इस मंत्रको ) सात

वेर पढता हुवा स्नान करे ( पीठे ) ॥ ॐ ह्रीं आं क्री नमः ॥ सातवेर इस मंत्रसें वस्त्र शुद्ध करके पहरे ( पीठे ) ॐ आं ह्रीं क्री अर्जते नमः ॥ ( इस मंत्रसें ) सातवेर गुरुपासे केशर मंत्रायके तिलक करे ( पीठे ) ॐ ह्रीं अवतर २ । सोमे २ । कुरु २ । वल्लु २ । सुमणसे । सोमणसे । महु म हुरे । ॐ कवली कः कः स्वाहाः ॥ ( इस मंत्रसें ) मोली मेंढल मरोना फली मंत्रायके हाथके बांधे ॥ ( और ) जब मंजुलीके चारुं तरफ मोली मेंढल बांधे । सोजी इसी मंत्रसें मंत्रके बांधे ॥ इसीतिरे अपना अंग शुद्ध करके स्नात्रिया गुरुके सन्मुख हाथ जोरके बैठे ॥ ( जब गुरु ) ॐ पर मेष्टी० स्तोत्र पढके अंगरक्षा करै ॥ अंगरक्षा स्तोत्रः ॥ ॐ परमेष्टी नमस्कारं सारं नवपदात्मकं । आत्मरक्षा करं वज्रं । पंजरानं स्मराम्यहं ॥ १ ॥ ॐ एमो अरिहंताणं ॥ शिरस्कं शिरसिस्थितं ॥ ॐ एमो सबसिद्धाणं । मुखे मुखपटंवरं ॥ २ ॥ ॐ एमो आयरियाणं । अंगरक्षा तिशायिनी । ॐ एमो नवज्ञायाणं । आयुधं हस्तयो दृढं ॥ ३ ॥ ॐ एमो लोए सबसाहूणं । मोच के पादयोशुजे । एसो पंचनमुकारो ॥ शिलावज्रमयीतले ॥ ४ ॥ सब पाव प्पणासणो । वप्रोवज्रमयोवहिः । मंगलाणंच सबेसिं । खादिरांगार खातिका ॥ ५ ॥ स्वाहांतंचपदंज्ञेयं । पढमं हवइमंगलं । वप्रो परिवज्रमयं । पिधानं देहरक्षाणे ॥ ६ ॥ महाप्रज्ञावा रक्षेयं । कुद्रोपद्रवनाशिनी । परमेष्टिपदोद्भूता कथिता पूर्वसूरिभिः ॥ ७ ॥ यश्चैवं कुरुते रक्षां । परमेष्टि पदेसदा ॥ तस्यनस्या द्वयंव्याधि । राधिश्चापि कदाचिनः ॥ ८ ॥ ॐ ॥ इति आत्म रक्षा वज्रपिंजर स्तोत्रं ॥ ॐ ॥ यह स्तोत्र तीनवार गुणके आत्मरक्षा करै ॥ ( पीठे ) तीन वेर नवकार मंत्रसें मंत्रके चोटीके गांठ देवे ॥ ( तथा ) तीन नवकार गुणके सर्व स्नात्रियांके कानांमें फुंक देवे ॥ ( इतनी विधीतो ) हरकोई पूजा प्रतिष्ठा मंजुलादिकमें स्नात्रियांको प्रथम अवश्य करणी करा णी चाहिये ॥ ( पीठे मंदरजीमें अधिष्टायक देव देवी जो होय । उन सर्वकी पूजा करावे । अष्ट द्रव्य चढावे ॥ ( पीठे ) चंपेलीका तेलमें हिं गजू ( वा ) सिंदूर मिज्जाके क्षेत्रपालजीकी पूजा करे । चांदीका वरग ( वा ) मांजीपत्रामें अंग रचना करै । अत्तर चढावे । फूल, धूप, दीप नेवेद्य



यकाय । मकरवाहनाय । सायु० । सप० । अस्मिन्० । अमु० । सर्वोपद्रवा० ।  
 गन्ध २ स्वाहाः ॥ ५ ॥ ( वायवकूणे ) ॐ नमो वायवे । वायवाधिपतये ।  
 ध्वजहस्ताय । हरिणवाहनाय । सा० सप० । अस्मिन्० । अमु० । सर्वोप  
 द्रवा० गन्ध २ स्वाहा ॥ ६ ॥ इति ॥ ( उत्तरदिशे ) ॐ नमो धनदाय ।  
 उत्तरदिग्धिष्ठायकाय । नरवाहनाय । गदाहस्ताय । सप० । अस्मिन्० ।  
 अमु० । सर्वोपद्रवा० २ । गन्ध० २ स्वाहाः ॥ ८ ॥ इति ॥ ( ईशान कूणे )  
 ॥ ॐ नमो ईशानाय । त्रिशूल हस्ताय । ईशानाधिपतये । वृषजवाहनाय । स  
 प० । अस्मि० । अमु० । सर्वोपद्रवादबलिरक्त २ गन्ध २ ॥ स्वाहाः ॥ ८ ॥  
 इति ॥ ( ऊर्ध्वलोके ) ॥ ॐ नमो ब्रह्मणे । राजहंसवाहनाय । ऊर्ध्वलोकाधि  
 ष्ठायकाय । सायु० । सप० । अस्मि० । अमु० । सर्वोपद्रवा० गन्ध० २ स्वा  
 हाः ॥ ९ ॥ इति ॥ ( अधोलोके ) ॥ ॐ नमो नागाय । पातालनिवासाय ।  
 पद्मवाहनाय । सायु० । सप० । अस्मि० । अमु० । सर्वोपद्रवादबलिरक्त २ गन्ध २  
 स्वाहा ॥ १० ॥ इसीतरै क्रमसें दशदिग्पाल विसर्जन करै ॥ ❀ ॥ ( पीठे )  
 नीचे आकर दिग्पाल नवग्रहादि सर्व देवताकों श्लोक पढके विशर्जन करै ॥  
 ( यथा ) शक्राद्या लोकपाला दिशि विदिशि गता शुद्ध सधर्मसक्ताः ।  
 आयातास्त्रात्रकाले कलुषहतिकृते तीर्थनाथस्य प्रक्त्या । न्यस्ताशेषा पदाद्या  
 विहित शिवसुखाः स्वास्पदं सांप्रतंतं । स्नात्रे पूजामवाप्य स्वमतिकृत मुदो  
 यांतु कल्याणप्राजः ॥ १ ॥ आग्याहीनं क्रियाहीनं । मंत्रहीनंचयत्कृतं । त  
 त्सर्वं कृतमृतदेवः । प्रशीद परमेश्वरः ॥ १ ॥ आह्वानं नैवजानामि । नैवजाना  
 मि पूजनं ॥ विसर्जनं नैवजानामि । त्वमेव शरणं ममः ॥ ३ ॥ ( पीठे ) यथा  
 शक्ति ग्यानपूजा, गुरुपूजा, साहमीवात्सल्य करै ॥ जैनयाचकानेंदानदेवै ॥  
 इति शांतिक स्नात्र पूजाविधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नवपद मंरुल पूजा विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम सुंदर अंगोपांगवाले नवस्नात्रिया मंत्रितजलसें स्नान करे ॥  
 ( जलमंत्र ) ॐ क्षीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षणी अमृतं श्रावय २ स्वाहा  
 ( इसमंत्रसें ) जलमंत्रे ( पीठे ) ॐ क्षीं अमले विमले विमलोद्भवे सर्वतीर्थ  
 जलोपमे पांपां वांवा अशुचि शुचिप्रवाप्ति स्वाहा ॥ ( इस मंत्रकों ) सात

वेर पढता हुवा स्नान करे ( पीठे ) ॥ ॐ ह्रीं आं क्री नमः ॥ सातवेर इस मंत्रसें वस्त्र शुद्ध करके पहरे ( पीठे ) ॐ आं ह्रीं क्री अर्जुने नमः ॥ ( इस मंत्रसें ) सातवेर गुरुपासे केशर मंत्रायके तिलक करे ( पीठे ) ॐ ह्रीं अवतर २ । सोमे २ । कुरु २ । वल्लु २ । सुमणसे । सोमणसे । महु म हुरे । ॐ कवली कः कः स्वाहाः ॥ ( इस मंत्रसें ) मोली मेंढल मरोना फली मंत्रायके हाथके बांधे ॥ ( और ) जब मंजलजीके चारुं तरफ मोली मेंढल बांधे । सोनी । इसी मंत्रसें मंत्रके बांधे ॥ इसीतरे अपना अंग शुद्ध करके स्नात्रिया गुरुके सन्मुख हाथ जोरुके बैठे ॥ ( जब गुरु ) ॐ पर मेष्टी० स्तोत्र पढके अंगरक्षा करै ॥ अंगरक्षा स्तोत्रः ॥ ॐ परमेष्टी नमस्कारं सारं नवपदात्मकं । आत्मरक्षा करं वज्र । पंजरानं स्मराम्यहं ॥ १ ॥ ॐ एमो अरिहंताणं ॥ शिरस्कं शिरसिस्थितं ॥ ॐ एमो सबसिद्धाणं । मुखे मुखपटंवरं ॥ २ ॥ ॐ एमो आयरियाणं । अंगरक्षा तिशायिनी । ॐ एमो जवझायाणं । आयुधं हस्तयो दृढं ॥ ३ ॥ ॐ एमो लोए सबसाहूणं । मोच के पादयोशुभ्रे । एसो पंचनमुकारो ॥ शिलावज्रमयीतले ॥ ४ ॥ सब पाव प्पणासणो । वप्रोवज्रमयोवहिः । मंगलाणंच सबेसिं । खादिरांगार खातिका ॥ ५ ॥ स्वाहांतंचपदंज्ञेयं । पढमं हवइमंगलं । वप्रो परिवज्रमयं । पिधानं देहरक्षाणे ॥ ६ ॥ महाप्रज्ञावा रक्षेयं । कुद्रोपद्रवनाशिनी । परमेष्टिपदोद्भूता कथिता पूर्वसूरिभिः ॥ ७ ॥ यश्चैवं कुरुते रक्षां । परमेष्टि पदैसदा ॥ तस्यनस्या द्वयंव्याधि । राधिश्चापि कदाचिनः ॥ ८ ॥ ॐ ॥ इति आत्म रक्षा वज्रपिंजर स्तोत्रं ॥ ॐ ॥ यह स्तोत्र तीनवार गुणके आत्मरक्षा करै ॥ ( पीठे ) तीन वेर नवकार मंत्रसें मंत्रके चोटीके गांठ देवे ॥ ( तथा ) तीन नवकार गुणके सर्व स्नात्रियांके कानांमें फुंक देवे ॥ ( इतनी विधीतो ) हरकोई पूजा प्रतिष्ठा मंजलादिकमें स्नात्रियांको प्रथम अवश्य करणी करा णी चाहिये ॥ ( पीठे मंदरजीमें अधिष्टायक देव देवी जो होय । उन सर्वकी पूजा करावे । अष्ट द्रव्य चढावे ॥ ( पीठे ) चंदेलीका तेलमें हिं गलू ( वा ) सिंदूर मिलाके क्षेत्रपालजीकी पूजा करे । चांदीका वरग ( वा ) माजीपत्रासें अंग रचना करै । अत्तर चढावे । फूल, धूप, दीप नैवेद्य

फल, जल, रोकनाणो, इत्यादि सर्व द्रव्य ( ॐ क्षेत्रपालायनमः ) ऐसा बोल ता हुवा चढावे ॥ ( पीठे ) मंमलजीके दहिणेंपासे, १० दश दिग्पालके पट्टेकी थापना करे । एकेक दिग्पालकी पूजा पढके, जल चंदनादि सर्व द्रव्य, नागरखेलके पानसुद्धा चढाता रहे ॥ दशुं दिग्पालकी पूजा हुए पीठे । ऊपर कसुंबल वस्त्र बांधे । आगे सर्व द्रव्य चढावे । दीपक करै ॥ ( पीठे ) वामपासे नवग्रहका पट्टकी थापना करके पूर्वोक्त प्रकार पूजा करै ॥ ( पीठे ) सर्व स्नात्रियांकुं १८ स्तुतीसें देव वंदन करावे ॥ ( इहां ) १० दिग्पाल, नवग्रहकी पूजाका मंत्र ( तथा ) देव वंदनकी विधि विस्तारके त्रयसेती न लिखी है ( सो ) पूर्वशांति पूजामें लिख आए हैं ( उसी मुजब ) सर्व विधि करावे ( पीठे ) मंमलजीकी प्रतिष्ठा करे ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ मंमल प्रतिष्ठा विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम दोनुंपासे मोली सुत्रकी वत्ती जगाके घृतका दीपक करै ॥ इन दोनुं दीपककों चार पहर अखंरु रखे । ( पीठे ) सोनें, चांदी, आदिका कलशमें अबोट उत्तम जल भरके सोनावाणी करै । हाथमें कलश लेके । ७ सात नवकार गुणें ॥ ॐ ह्रीं जीरावला पार्श्वनाथ रक्षां कुरु २ स्वाहा ॥ इस मंत्रसें ७ बार जलकों मंत्रके । मंमलजीके चारुं तरफ धारा देवे । ऊपर जरा ठांटा देके पवित्र करै । धूप खेवै ( पीठे ) नवतारी मोली सुत्रका साढा तीन आंटा मंमलजीके बाहर कर देवे । पूर्वोक्त मंत्रसें मंत्रके मोली ( तथा ) मेंढल मरोफा फली चारुं तरफ बांधे ॥ ( पीठे ) के शरकी कटोरी हाथमें लेके ( ॐ आँ ह्रीं श्री अर्हतेनमः ) इस मंत्रसें मंत्र के मंमलके ऊपर केशरका ठांटा देवे । ( ऊपर ) चावलको साथियो करै । टीकी देवे । मंमलके अगामी चावलको साथियो ( वा ) नंद्यावर्त्त करके ऊपर नालेर रुपियो जेट धरे ॥ ( पीठे ) केशर, चंदन, कुंकम, लेकर मंमल जीके चारुं तरफ तीन रेखा आलेखन करै ॥ ( पीठे ) वाशक्षेप, पुष्प, हाथ में लेके ( ॐ नूरसी नूतधात्री विश्वाधारैनमः ॥ ) इस मंत्रसें सातवेर मंत्रके मंमलनूमि, तथा, पीठकी पूजा करै ॥ फेर, आचार्य गुरु वाशक्षेप हाथमें लेके ( ॐ ह्रीं श्री अर्हत्पीठायनमः ) इस मंत्रसें ७ वेर मंत्रके मंमल पीठकी

पूजा करे ॥ ( पीठे ) स्नात्रिया, हाथमें पुष्प, चावल, लेलेके तीन वेर मंरु  
लकों वधावे ॥ नीचे चावलको साथियो करके । रुपियो नालेर थापनाको  
धरे । ( पीठे ) स्नात्रिया मंदरके जीतरसें प्रतिमाजी लायके त्रिगुणा  
ऊपर मंत्र पढके स्थापन करे ॥ ( स्थापन मंत्र ) ॥ ॐ नमो अर्हत परमे  
श्वराय । चतुर्मुखाय परमेश्ठिने दिग् कुमारी परिपूजिताय । चतुषष्टि सुरासु  
रेंद्र सेविताय । देवाधिदेवाय । त्रैलोक्य महिताय । अत्र पीठे तिष्ठ २ स्वा  
हा ॥ इस मंत्रकों ७ वेर पढके । नवप्रतिमा ( वा ) एकप्रतिमा स्थापन करे ॥  
( इसीतिरे ) मंरुल प्रतिष्ठा करके ( पीठे ) सिद्धचक्र पूजा सरू करे ॥ ॐ ॥  
( प्रथम ) एकरकेत्रीमें । सपेद गोलो, सपेद वस्त्र, सपेद धजा, ८ कर्केतन  
रत्न, ३४ हीरा, पुष्प अद्भुत, फल, दीप, धूप, हाथमें लेके अरिहंत पद  
की पूजा पढे ॥ ( यथा ) अथाष्टदल मध्याब्ज । कर्णिकायां जिनेश्वरान् ।  
आविर्भूतौत्तसद्बोधा । नात्रतः स्थापयाम्यहं ॥ १ ॥ निःशेष दोषे धन धूम  
केतुः । नपार संसार समुद्र सेतून् । यजै समस्तातिशयैक हेतून् । श्रीमज्जि  
नानांबुज कर्णिकायां ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हद्भ्योनमः स्वाहा ॥ ३ ॥  
इस मंत्रसे अर्हत पदकी थापना पूजा करे । सर्व द्रव्य चढावे ॥ ( पीठे )  
रकेत्रीमें । लाल गोलो, लाल धजा, लाल वस्त्र, ८ माणक रत्न, ३१ मृंगा-  
जल पुष्पादि सर्व द्रव्य हाथमें लेके सिद्ध पूजा पढे ॥ ( यथा ) तस्य पूर्व  
दले सिद्धान् । सम्यक्तादि गुणात्मकान् । निःश्रेय संपदं प्राप्तान् । निदधे  
भक्ति निर्भरः ॥ ३ ॥ तत्पूर्वं पत्रे परितः प्रणष्टः । दुष्टाष्ट कर्मा मधिगम्य  
शुद्धि । प्राप्तान्नरान्निधि मनंतवोधान् । सिद्धान् यजे शान्तिकरान्नराणां ॥ ४ ॥  
ॐ ह्रीं श्रीं सिद्धेभ्योनमः स्वाहा ॥ पूर्व दिशकी तरफ सिद्ध पदकी स्थाप  
ना पूजा करे । सर्व द्रव्य चढावे ॥ ॐ ॥ इति ॥ ॐ ॥ ( पीठे ) रकेत्रीमें  
पीलो गोलो, पीली धजा, पीलो वस्त्र, ५ गोमेदक रत्न, ३६ सोनेका फूल,  
जल, पुष्पादि सर्व पीत द्रव्य हाथमें लेके आचार्य पदकी पूजा पढे ॥ ( यथा )  
स्थापयामिततः सूरान् । दक्षिणेस्मिन् दले मजे । चरतः पंचधाचारान् ।  
पद्मत्रिशङ्कुणैर्युतान् ॥ ५ ॥ सूरौ सदाचार विचारसारा । नाचारयंतः स्वपरान्न  
यथेष्टं । उग्रोपसर्गैक निवारणार्थः । मभ्यर्चयाम्यद्भुतगंधधूपैः ॥ ६ ॥ ॐ

ॐ श्री सूर्यभ्योनमः स्वाहा ॥ ३ ॥ दक्षिणदिशकी तरफ आचार्य पदकी  
 स्थापना पूजा करे ॥ इति ॥ ❀ ( पीठे ) हरितगोलो, हरितवस्त्र, हरामुं  
 गकालझड़, हरीधजा, ४ इंद्रनील, २५ मरकतरत्न पन्ना, जल पुष्पादि सर्व  
 द्रव्य हाथमें लेके उपाध्याय पदकी पूजा पढ़ै ॥ ( यथा ) द्वादशांग श्रुता  
 धारान् ॥ शास्त्राध्ययन तत्परान् ! निवेशयाम्युपाध्यायान् । पवित्रे पश्चिमे  
 दले ॥ ७ ॥ श्रीधर्मशास्त्राण्यनिशं प्रशान्त्यै । पठन्ति येन्यानपि पाठयन्ति । अ  
 ध्यापकां स्तान्पराब्जपत्रैः । स्थितान्यवित्रान् परिपूजयामि ॥ ८ ॥ ॐ श्री  
 उपाध्यायेभ्योनमः स्वाहा ॥ पश्चिमदिशकीतरफ उपाध्याय पदकी स्थापना  
 पूजा करे ॥ इति ॥ ❀ ( पीठे ) रक्तेबीमें स्यामगोलो, स्यामवस्त्र, स्यामधजा ।  
 उडदकालझड़, ५ राजपट्ट, २७ अरिष्टरत्न, जल, पुष्पादि सर्व द्रव्य हाथमें ले  
 के साधूपदकी पूजा पढ़ै ॥ ( यथा ) व्याख्यादिकर्म कुर्वाणान् । सुप्रध्या  
 नैक मानसान् । उदक पत्रगतान् वारान् । साधुवासीस सुव्रतान् ॥ ९ ॥ वैरा  
 ग्यमंतर्वचसि प्रसिद्धं । सत्यं तपो द्वादशधा शरीरे । येषां मुदक्यवगतान्  
 सुकृतान् पवित्रान् । साधून्सदातान् परिपूजयामि ॥ १० ॥ ॐ श्री श्री सर्व  
 साधुभ्योनमः स्वाहा ॥ ५ ॥ उत्तरदिशकी तरफ साधुपदकी स्थापना पूजा  
 करे ॥ इति ॥ ❀ ( पीठे ) रक्तेबीमें सपेदगोलो, सपेद धजा, सपेद  
 वस्त्र, ६७ मोती आदि, श्वेतद्रव्य हाथमें लेके । दर्शन पदको श्लोक बोलके  
 चढ़ावे ॥ ( यथा श्लोकः ) जिनेन्द्रोक्त मतश्रद्धा । लक्षणे दर्शनेयजे । मिथ्या  
 त्वमथनं शुद्धं । नस्तमीशान् सदले ॥ ११ ॥ ॐ श्री श्री सम्यग् दर्शनाय  
 नमः स्वाहा ॥ ६ ॥ ईशान कृणु दर्शनपदकी स्थापना पूजा करे ॥ इति ॥  
 ( पीठे ) रक्तेबीमें ५१ मोती, श्वेतगोलो, श्वेत धजा, चावलका लझड़ आदि  
 श्वेतद्रव्य हाथमें लेके, ग्यानपदको श्लोक बोलके चढ़ावे ॥ ( श्लोकः )  
 मशेष द्रव्यपर्याय । रूपमेवाव ज्ञासकं । ग्यानमाग्नेय पत्रस्थं । पूजयामि हि  
 तावहं ॥ १२ ॥ ॐ श्री श्री सम्यग् ग्यानाय नमः स्वाहा ॥ ७ ॥ अग्निकृष्ण  
 कीतरफ ग्यानपदकी स्थापना पूजा करे ॥ इति ॥ ❀ ( फेर ) रक्तेबीमें  
 सपेद गोलो, सपेद धजा, ७० मोती, श्वेतवस्त्र आदि श्वेत द्रव्य हाथमें  
 लेके चारित्र पदको श्लोक बोलके चढ़ावे ॥ ( श्लोकः ) सामायिकादि

जिर्जदै । श्चारित्रं चारु पंचधा । संस्थापयामि पूजार्थं । पत्रैह नैस्तु क्रमा  
 त् ॥ १३ ॥ ॐ क्षी श्री सम्यग् चारित्राय नमः स्वाहा ॥ ८ ॥ नैस्तु कृणकी  
 तरफ चारित्र पदकी स्थापना पूजा करै ॥ इति ॥ ॐ ॥ ( पीठे ) र्केत्रीमें  
 ५० मोती, श्वेतगोलो, श्वेत धजा आदि, सर्व सपेदद्रव्य हाथमें लेके, तप  
 पदको श्लोक बोलके चढावै ॥ ( श्लोकः ) द्विधा द्वादशधाजिन्नं । पूतेपत्र  
 तपःस्वयं । निधाययामि चत्तयात्र । वायव्यां दिशि शर्मदं ॥ १४ ॥ ॐ क्षी  
 श्री सम्यग् तपसे नमः स्वाहा ॥ ९ ॥ वायव कृणकी तरफ तप पदकी  
 स्थापना पूजा करे ॥ इति ॥ ॐ ॥ ( अथ अर्घ्यं ) ॥ निःस्वेदत्वादि दिव्या  
 तिशय मयतनून् श्री जिनेन्द्रान् सुसिद्धान् । सम्यक्तादि प्रकृष्टाष्टक गुणभृदा  
 चार साराश्चसूरीन् । शास्त्राणि प्राणिरक्षा प्रवचन रचना सुंदराण्यादि संज्ञं ।  
 स्तत्सिद्ध्यै पाठकानां यतिपति सहिता नर्चयाम्यर्घदानै ॥ १५ ॥ इत्थमष्ट  
 दलं पद्मं । पूरये दर्हदादिभिः । स्वाहांतै प्रणवाद्यश्च । पदैर्विघ्न निवृत्तये ॥  
 १६ ॥ ॐ क्षी श्री अक्ष अमित्रानुसा सम्यग् दर्शन ज्ञान चारित्र तपसे  
 भ्यो क्षी श्री अर्ह परमेश्विन परमनाथ परमदेवाधिदेव परमार्हन् परमानंत  
 चतुष्टय । परमात्मने तुभ्यं नमः ॥ ( इति मूलमंत्रः ) ॥ इति सिद्धचक्र  
 प्रथमवलय मूलपूजा विधि ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ द्वितीय वलय पूजा ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ प्रथम वलयमें एक मध्य, चार दिश, चार विदिश, एवं अष्टदल  
 कमलके आकार नवकोठा मंजलके मध्यभागमें होय । उनोंकी पूर्वोक्त  
 प्रकार पूजा करै ॥ ( पीठे ) दूसरा वलयमें चूरीके आकार १६ कोठा  
 होय । ( जिसमें ) एकेक कोठाके अनंतर आठ कोठामें, अवर्गादि आठ  
 वर्ग स्थापन करै । ( और ) एकेक कोठा बीचमें खाली रहा है ( उसमें )  
 अनाहत पद ( ॐ क्षी णमो अरिहंताणं ) ऐसा पदस्थापन करै ॥ ( पीठे )  
 एक र्केत्रीमें मिश्री लवंग ( तथा ) एक र्केत्रीमें मोटी दाखां लेके खसा  
 रहै । अनाहत पदमें मिश्री लवंग चढावे ॥ और आठ वर्गमें दाषा चढावे ॥  
 ( यथा ) ॐ क्षी णमो अरिहंताणं ॥ मिश्री लवंग चढावै ॥ १ ॥ अ आ  
 इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ ए ऐ न औ अं अः ॐ क्षी स्वर वर्गाय नमः ॥



( इहां ) १६ दाख चढावै ॥ २ ॥ उँ क्षी एमो अरिहंताणं ॥ मिश्री लवंग  
 ॥ ३ ॥ क ख ग घ ङ । उँ क्षी व्यंजन कवर्गायैनमः ॥ १६ ॥ दाखच० ॥ ४ ॥  
 उँ क्षी एमो अरिहंताणं ॥ ५ ॥ चढजऊन । उँ क्षी चवर्गायैनमः ॥ ६ ॥  
 उँ क्षी एमो अरिहंताणं ॥ ७ ॥ टठमूढण । उँ क्षी टवर्गायैनमः ॥ ८ ॥  
 उँ क्षी एमो अरिहंताणं ॥ ९ ॥ तथदधन । उँ क्षी तवर्गायैनमः ॥ १० ॥  
 उँ क्षी एमो अरिहंताणं ॥ ११ ॥ पफवन्नम । उँ क्षी पवर्गायैनमः ॥ १२ ॥  
 उँ क्षी एमो अरिहंताणं ॥ १३ ॥ यरलव । उँ क्षी यवर्गायैनमः ॥ १४ ॥  
 उँ क्षी एमो अरिहंताणं ॥ १५ ॥ शषसह । उँ क्षी शवर्गायैनमः ॥ १६ ॥  
 पहला अवर्गसें, पवर्गतक, वर्गदीठ १६ सोले दाख चढावै ॥ सब ९६  
 दाख ( और ) यरलव १ । शषसह २ । यह दो वर्गमें ६४ दाख चढावै ॥ ❀ ॥  
 इति दूसरा वलय पूजनविधिः ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अब ( तीसरा वलयमें ) चार दिश, चार विदिशमें आठ परमेष्ठी, पद  
 स्थापन निमत आठ कोठा करै ॥ इस आठ कोठाके बीच बीचमें वलाका  
 तीन तीन देवे ॥ तीनुं वलाकामें २४ खाना हुवै ॥ एकेक खानेमें दो दोय ल  
 ब्धि पद स्थापन करनेसें । चोवीस घरमें ४८ लब्धिपद स्थापन पूजन करना ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ लब्धिपद पूजन विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आठ परमेष्ठी पदोंमें । उँ क्षी परमेष्ठिने नमः स्वाहा ॥ ऐसा ८  
 वेर कहके ँबीजोरा चढावै ( और ) लब्धि पदका नाम बोलके, खारकां ४८  
 चढावै ॥ ( यथा ) ॥ उँ क्षी अर्द्ध एमो जिणाणं ॥ १ ॥ उँ क्षी अर्द्ध ए  
 मो उँहि जिणाणं ॥ २ ॥ उँ क्षी अर्द्ध एमो परमोहि जिणाणं ॥ ३ ॥ उँ क्षी  
 अर्द्ध एमो सबोहि जिणाणं ॥ ४ ॥ उँ क्षी अर्द्ध एमो अणंतोहि जिणाणं  
 ॥ ५ ॥ उँ क्षी अर्द्ध एमो कुब्जबुद्धीणं ॥ ६ ॥ उँ क्षी अर्द्ध एमो वीयबुद्धी  
 णं ॥ ७ ॥ उँ क्षी अर्द्ध एमो पयाणुसारीणं ॥ ८ ॥ उँ क्षी अर्द्ध एमो आ  
 सीविसाणं ॥ ९ ॥ उँ क्षी अर्द्ध एमो दिष्ठी विसाणं ॥ १० ॥ उँ क्षी अर्द्ध  
 एमो संजिन्नसोयाणं ॥ ११ ॥ उँ क्षी अर्द्ध एमो सयंसंबुद्धाणं  
 ॥ १२ ॥ उँ क्षी अर्द्ध एमो पत्तेय बुद्धाणं ॥ १३ ॥ उँ क्षी अर्द्ध एमो  
 बोहि बुद्धाणं ॥ १४ ॥ उँ क्षी अर्द्ध एमो उज्जुमईणं ॥ १५ ॥ उँ क्षी अर्द्ध

एमो विज्जमईणं ॥ १६ ॥ उँ क्षी अँक्ष एमो दसपुत्रीणं ॥ १७ ॥ उँ क्षी  
 अँक्ष एमो चतुदश पुत्रीणं ॥ १८ ॥ उँ क्षी अँक्ष एमो अहंग निमत्त कु  
 शलाणं ॥ १९ ॥ उँ क्षी अँक्ष एमो विज्जव्वण इट्ठिपत्ताणं ॥ २० ॥  
 उँ क्षी अँक्ष एमो विज्जाहराणं ॥ २१ ॥ उँ क्षी अँक्ष एमो चारण लक्ष्मीणं  
 ॥ २२ ॥ उँ क्षी अँक्ष एमो पणासमणाणं ॥ २३ ॥ उँ क्षी अँक्ष एमो आ  
 गासगामीणं ॥ २४ ॥ उँ क्षी अँक्ष एमो खीरासवेणं ॥ २५ ॥ उँ क्षी अँक्ष  
 एमो सप्पिया सवाणं ॥ २६ ॥ उँ क्षी अँक्ष एमो महुआसवाणं ॥ २७ ॥  
 उँ क्षी अँक्ष एमो अमियासवाणं ॥ २८ ॥ उँ क्षी अँक्ष एमो सिधायणाणं  
 ॥ २९ ॥ उँ क्षी अँक्ष एमो जगवया महइ महावीर वद्धमाण बुद्धरि ।  
 सीणं ॥ ३० ॥ उँ क्षी अँक्ष एमो जगतवाणं ॥ ३१ ॥ उँ क्षी अँक्ष एमो  
 अक्खीण महाणसियाणं ॥ ३२ ॥ उँ क्षी अँक्ष एमो वद्धमाणणं ॥ ३३ ॥  
 उँ क्षी अँक्ष एमो दित्ततवाणं ॥ ३४ ॥ उँ क्षी अँक्ष एमो तत्ततवाणं ॥  
 ॥ ३५ ॥ उँ क्षी अँक्ष एमो महातवाणं ॥ ३६ ॥ उँ क्षी अँक्ष एमो घोर  
 तवाणं ॥ ३७ ॥ उँ क्षी अँक्ष एमो घोर गुणाणं ॥ ३८ ॥ उँ क्षी अँक्ष ए  
 मो घोर परिक्रमाणं ॥ ३९ ॥ उँ क्षी अँक्ष एमो घोर गुण वंजयारीणं ॥  
 ॥ ४० ॥ उँ क्षी अँक्ष एमो आमोसही पत्ताणं ॥ ४१ ॥ उँ क्षी अँक्ष एमो  
 खेत्तोसही पत्ताणं ॥ ४२ ॥ उँ क्षी अँक्ष एमो जत्तोसही पत्ताणं ॥ ४३ ॥  
 उँ क्षी अँक्ष एमो विप्पोसही पत्ताणं ॥ ४४ ॥ उँ क्षी अँक्ष एमो सवोसही  
 पत्ताणं ॥ ४५ ॥ उँ क्षी अँक्ष एमो मणवलीणं ॥ ४६ ॥ उँ क्षी अँक्ष  
 एमो वयण वलीणं ॥ ४७ ॥ उँ क्षी अँक्ष एमो कायवलीणं ॥ ४८ ॥ उँ क्षी अ  
 ँक्ष अरुयाललब्धि पदेभ्योनमः ॥ ॥ ॥ इसीतरे लब्धिपदका नाम बोल २  
 के तीजे चौथे पांचमे वलयमें खारकां सब ४८ चढ़ावे ॥ ( पीठे ) मंजु  
 लीके गलेके स्थानके क्षी कारजी स्थापन किया है ( जहांमें ) साढ़ातीन  
 बलाका. मंजुलजीके चोतरफदेके नीचे ( कों ) ऐसा अक्षर लिखा है ( जिसके )  
 प्रथम वलयमें. आठ दिशाये, आठ गुरु पादुका स्थापन करके ८ दाम  
 मफल चढ़ावे ॥ ( यथा ) उँ क्षी अँक्ष पादुकाभ्योनमः ॥ १ ॥ ( दाम  
 चढ़ावे ) ॥ उँ क्षी सिद्ध पादुकाभ्योनमः ॥ २ ॥ उँ क्षी आचार्य पादुका

भ्योनमः ॥ ३ ॥ ॐ क्षी गुरुपादुकाभ्योनमः ॥ ४ ॥ ॐ क्षी परमगुरु पादु  
 काभ्योनमः ॥ ५ ॥ ॐ क्षी अदृष्टगुरु पादुकाभ्योनमः ॥ ६ ॥ ॐ क्षी अनंत  
 गुरुपादुकाभ्योनमः ॥ ७ ॥ ॐ क्षी अनंतानंत गुरुपादुकाभ्योनमः ॥ ८ ॥ ॐ क्षी  
 श्रीअदृष्टगुरु पादुकाभ्योनमः स्वाहा ॥ इसीतरें ठठावलयमें ८ दारुम चढावे ॥  
 ( पीठे ) सातमा वलयमें आठे दिशायें । जयादिक ८ देवीकों स्थापन कर  
 के । ८ नारंगी चढावै ॥ ( यथा ) ॐ क्षी जयायैनमः स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ क्षी जंजायै  
 नमः स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ क्षी विजयायैनमः स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ क्षी थंजायैनमः  
 स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ क्षी जयंत्यैनमः स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ क्षी मोहायै नमः स्वाहा ॥ ६ ॥  
 ॐ क्षी अपराजितायैनमः स्वाहा ॥ ७ ॥ ॐ क्षी अंधायै नमः स्वाहा ॥ ८ ॥ ( ऐसैं )  
 सातमा वलयमें ८ नारंगी चढावै ॥ ❀ ॥ ( पीठे ) आठमा वलयमें । १६ विद्या  
 देव्याकों स्थापन करके चांदीका वरग लगाई ऋई १६ सुपारयां चढावै ॥  
 ( यथा ) ॐ क्षी रोहायैनमः ॥ १ ॥ ॐ क्षी प्रह्लादैनमः ॥ २ ॥ ॐ क्षी वज्रशं  
 खलायैनमः ॥ ३ ॥ ॐ क्षी वज्रांकुशायैनमः ॥ ४ ॥ ॐ क्षी चक्रेश्वर्यैनमः ॥ ५ ॥  
 ॐ क्षी पुरुष दत्तायैनमः ॥ ६ ॥ ॐ क्षी काल्यैनमः ॥ ७ ॥ ॐ क्षी महाका  
 ल्यैनमः ॥ ८ ॥ ॐ क्षी गौर्यैनमः ॥ ९ ॥ ॐ क्षी गंधार्यैनमः ॥ १० ॥ ॐ  
 क्षी सर्वास्त्र महाज्वालायैनमः ॥ ११ ॥ ॐ क्षी मानव्यैनमः ॥ १२ ॥ ॐ क्षी  
 वैरोद्व्यायैनमः ॥ १३ ॥ ॐ क्षी अबुसायैनमः ॥ १४ ॥ ॐ क्षी मानस्यैनमः  
 ॥ १५ ॥ ॐ क्षी महामानस्यैनमः ॥ १६ ॥ ( इसीतरें ) आठमा वलयमें  
 चारुं तरफ १६ विद्यादेवीकों १६ सुपारी चढावै ॥ ❀ ॥ ( पीठे ) नवमा  
 वलयकै वामवासे । २४ शाशनदेव्यांकों स्थापन करके २४ सुपारयां चढावै ॥  
 ( यथा ) ॥ ॐ चक्रेश्वर्यैनमः ॥ १ ॥ ॐ अजितवलायैनमः ॥ २ ॥ ॐ डुरि  
 तार्यैनमः ॥ ३ ॥ ॐ काल्यैनमः ॥ ४ ॥ ॐ महाकाल्यैनमः ॥ ५ ॥ ॐ श्या  
 मायैनमः ॥ ६ ॥ ॐ शांतायैनमः ॥ ७ ॥ ॐ ऋकुटियैनमः ॥ ८ ॥ ॐ सुतार  
 कायनमः ॥ ९ ॥ ॐ अशोकायैनमः ॥ १० ॥ ॐ मानव्यैनमः ॥ ११ ॥ ॐ  
 चंदायैनमः ॥ १२ ॥ ॐ विदितायैनमः ॥ १३ ॥ ॐ अंकुशायैनमः ॥ १४ ॥  
 ॐ कंदर्पायैनमः ॥ १५ ॥ ॐ निर्वाण्यैनमः ॥ १६ ॥ ॐ बलायैनमः ॥ १७ ॥  
 ॐ धारण्यैनमः ॥ १८ ॥ ॐ धरणप्रियायैनमः ॥ १९ ॥ ॐ नरदत्तायैनमः ॥ २० ॥

ॐ गांधार्येनमः ॥ २१ ॥ ॐ अंबिकायैनमः ॥ २२ ॥ ॐ पद्मावत्यैनमः ॥ २३ ॥  
 ॐ सिद्धायिकायैनमः ॥ २४ ॥ इसीतरे वामपासे ॥ २४ देव्यांकी स्थापना  
 करे ॥ ( पीठे ) दक्षिणपासे २४ यक्ष राजकी स्थापना करके २४ सुपारी  
 चढावे ॥ ( यथा ) ॥ ॐ ब्रह्मशांतयेनमः ॥ २४ ॥ ॐ पार्श्वायैनमः ॥ २३ ॥  
 ॐ गोमेधायनमः ॥ २२ ॥ ॐ जृगुट्येनमः ॥ २१ ॥ ॐ वरुणायनमः ॥ २० ॥  
 ॐ कुबेरायनमः ॥ १२ ॥ ॐ यक्षराजायनमः ॥ १८ ॥ ॐ गंधर्वायनः ॥ १७ ॥  
 ॐ गरुडायनमः ॥ १६ ॥ ॐ किन्नरायनमः १५ ॥ ॐ पातालायनमः ॥  
 ॥ १४ ॥ ॐ षण्मुखायनमः ॥ १३ ॥ ॐ कुमारायनमः ॥ १२ ॥ ॐ यक्षरा  
 जायनमः ॥ ११ ॥ ॐ ब्रह्मणेनमः ॥ १० ॥ ॐ अजितायनमः ॥ ९ ॥ ॐ  
 विजयायनमः ॥ ९ ॥ ॐ मातंगायनमः ॥ ७ ॥ ॐ कुसुमायनमः ॥ ६ ॥ ॐ  
 तुंबुरवेनमः ॥ ५ ॥ ॐ यक्षनायकायनमः ॥ ४ ॥ ॐ त्रिमुखायनमः ॥ ३ ॥  
 ॐ महायक्षायनमः ॥ २ ॥ ॐ गोमुखायनमः ॥ १ ॥ इसी तरे नवमा वल  
 यके दक्षिणपासे २४ यक्षकी स्थापना करके २४ सुपारी चढावे ॥ ( पीठे )  
 चारे दिशायें ४ द्वारपालकी स्थापना करके । पीला वल वाकुल चढावे ॥  
 ( यथा ) ॐ कुमुदायनमः ॥ १ ॥ ( पूर्वदिशि ) ॥ ॐ अंजनायनमः ॥  
 दक्षिण ० ॥ २ ॥ ॐ वामनायनमः ॥ ( पश्चिम ) ॥ ३ ॥ ॐ पुष्पदंतायनमः  
 ॥ ४ ॥ उत्तरदिशि ॥ ॐ ॥ ( पीठे ) चार विदिशकीतरफ चार वीर  
 पदे कृष्ण वलवाकुल चढावे ॥ ( यथा ) ॐ माणजद्राय नमः ॥ १ ॥ ॐ  
 पूर्णजद्रायनमः ॥ २ ॥ ॐ कपिलायनमः ॥ ३ ॥ ॐ पिंगलायनमः ॥ ४ ॥  
 ॐ ॥ इसी तरे दशमा वलयमें आठुं दिशायें । ४ द्वारपाल । ४ वीर स्था  
 पन करे ॥ ( पीठे ) पूर्ण कलशके आकार, ऊपरसे किया हुवा, सिद्धचक्र  
 जीके गलेके स्थानकः नवनिधान पदे, नव सोनें चांदी आदिकका कलशामें  
 यथाशक्ति रोकनाणो घालके स्थापन करे ॥ ( यथा ) ॐ नैसर्गिकायनमः  
 ॥ १ ॥ ॐ पांशुकायनमः ॥ २ ॥ ॐ पिंगलायनमः ॥ ३ ॥ ॐ सर्वरत्नायनमः  
 ॥ ४ ॥ ॐ महापद्मायनमः ॥ ५ ॥ ॐ कालायनमः ॥ ६ ॥ ॐ महाका  
 लायनमः ॥ ७ ॥ ॐ माणवायनमः ॥ ८ ॥ ॐ शंखायनमः ॥ ९ ॥ इसीतरे  
 सुखस्थानके नवनिधानपदे ९ कलश स्थापन करे ॥ ॐ ॥ ( पीठे ) को

हलोल हाथमें लेके । दक्षिण नेत्रके बराबर पासमें बंगलीका आकार किया है ॥ ( जहां ) ॐ ह्रीं विमल स्वामिनेनमः ॥ १ ॥ ऐसा कहके चढ़ावे । ( फेर ) कोहलोल हाथमें लेके वामनेत्रपासे बंगलीमें ( ॐ क्षेत्रपालायनमः ) ॥ ऐसा बोलके चढ़ावे ॥ २ ॥ ( पीठे ) तीसरो कोहलोल हाथमें लेके, अधःपींढीके दहिणेंपासे बंगलीमें ( ॐ चक्रेश्वर्येनमः ॥ ) ऐसा बोलके चढ़ावे ॥ ३ ॥ ( पीठे ) चौथो कोहलोल हाथमें लेके नीचे पींढीके वामपासे बंगलीमें ( ॐ अप्रसिद्ध सिद्धचक्राधिष्ठाय कायनमः ) ऐसा बोलके चढ़ावे ॥ ४ ॥ ( पीठे ) दशदिशायें इंद्रादिक दशदिग्पालकों स्थापन करे ( वनसकेतो ) अपना २ वर्ण मुजब वस्त्र, नेवे छ पुष्पादि द्रव्य चढ़ावे ( अथवा ) सर्वकों एक द्रव्य सर्व समान चढ़ावे ( यथा ) ॐ इंद्रायनमः ॥ १ ॥ कनकवर्ण । चंदन, केशर, चंपो, द्राख, पीलोवस्त्र, पान, सुपारी, रोकनाणो, आदि सर्व द्रव्य चढ़ावे ❀ ॥ १ ॥ ( अग्निकूले ) ॐ अग्नयेनमः ॥ २ ॥ रक्तवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावे ॥ २ ॥ ( दक्षिणदिशि ) ॐ यमायनमः ॥ ३ ॥ कालेवर्णका वस्त्रादि द्रव्य चढ़ावे ॥ ३ ॥ ( नेरुतकूले ) ॐ नेरुतायनमः ॥ ४ ॥ धूसरवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावे ॥ ( पश्चिमदिशि ) ॐ वरुणायनमः ॥ धूसरवर्णका सब द्रव्य चढ़ावे ॥ ५ ॥ ( वायवकूले ) ॐ वायवेनमः ॥ ६ ॥ नीलवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावे ॥ ६ ॥ ( उत्तरदिशि ) ॐ कुबेरायनमः ॥ ७ ॥ सपेद वर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावे ॥ ७ ॥ ( ईशानकूले ) ॐ ईशानायनमः ॥ ८ ॥ सपेद वर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावे ॥ ८ ॥ ( अधोदिशिः ) ॐ नागायनमः ॥ ९ ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावे ॥ ९ ॥ ( ऊर्ध्वदिशि ) मस्तके । ॐ ब्रह्मणेनमः ॥ १० ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादि सर्व द्रव्य चढ़ावे ॥ इसीतरे दशदिग्पालको स्थापन पूजन करै ॥ ❀ ॥ ( पीठे ) नीचे पींढी स्थानकके बीचमें ९ कोठा किया हुवा है ( जहां ) नवग्रहकी स्थापना पूजा करै ॥ ( यथा ) ॐ सूर्यायनमः ॥ १ ॥ लालवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावे ॥ १ ॥ ॐ सोमायनमः ॥ सपेदवर्ण वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावे ॥ २ ॥ ॐ जोमायनमः ॥ लाल रंग वस्त्रादिक द्रव्य ० ॥ ३ ॥ ॐ बुधायनमः ॥ ४ ॥

सुंगे रंगका वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ७ ॥ ॐ बृहस्पतयेनमः ॥ पीलेवर्णका वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ५ ॥ ॐ शुक्रायनमः ॥ सपेदवर्ण नांदोल वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ६ ॥ ॐ शनिश्चरायनमः नीलेरंगका वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ८ ॥ ॐ राहवेनमः ॥ काले रंगका वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ८ ॥ ॐ केतवेनमः ॥ गीट रंग वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ९ ॥ इसीतरै नीचे नवग्रहकी स्थापना करै ( पीठे ) स्नात्र, नवपदजीकी पूजा करायके । आरती नवपदजीकी करै पीठे नवपदको चैत्यवंदन करै ॥ उपपन्नसन्नाण० ( तथा ) जोधुरि श्रीअरिहंत मूलदृढ पीठपङ्क्तियो । सिद्ध सूरि उवाच साहु चिहुं साह गराठिउ । दंश ए नाण चरित्त तव पम्निशाहे सुंदरु ॥ तत्तक्खर सिरि वग्ग लद्धि गुरु पयद लम्बरु । दिशिवाल जक्ख जक्खणीपमुह सुरकुशमेहि अलंकियो । सो सिद्धिचक्क गुरु कप्पतरु अहमन वंन्धिय दियउ ॥ १ ॥ ( पीठे ) । जंकिंचि एमोत्थुणं० । नमोर्द्धत सिद्धा० कहके । नवपदजीको स्तवन ॥ उपपन्न सन्नाण महोमयाणं० आदिस्तवन कहके । जयवीरराय अनत्थू कहके १ नव० कावसग्ग करै ॥ नवपद स्तुति कहै ॥ ( पीठे ) गुरुकेपास आयके चाशक्षेप लेके ग्यानपूजा, गुरुपूजा करै ॥ धूप खेवै । रोकनाणो चढावे ॥ ( पीठे ) यथाशक्ति साधर्मिवात्सल्य करै ॥ इति नवपद मंजु पूजन विधिः ॥ ॥ अब जाणना चाहियै ( कि ) जब कोई श्रीमंत उन्नीकी तपस्या करै तब तो ठए महिने मंजु पूजा विस्तार विधीसाथ कराता रहे ॥ और तपस्या ४ ॥ साढाचार वरसमें पूरण होय ( तब ) वनाउठवकेसाथ मंजु रचना पूजा करै ॥ उद्यापन करै ॥ संपूर्ण देवखाते, ग्यानखाते, गुरुखातेका उपगरण नव नव करायके । प्रथम धर्मशाजामें सुशोभित करै । दशपनरौदिन जलजात्रादि अनेक तरैका उठव करै ॥ ( पीठे ) देवका देवखाते देवै । ग्यानका ग्यानखाते । गुरुका गुरुखाते । उपगणादि द्रव्य देवै ॥ ( और ) रङ्गीरहित क्रिया जावसे संपूर्ण करै । द्रव्यपूजा अपनी शक्ति सुजय करै ॥ ( और ) पंचायती संव तरफमें मंगलीक अर्थ ठए महिने मंजु रचना नवपद पूजा अवश्य पूर्वोक्त विधिसहित करता रहे ॥ उन्नी करनेका विधि ( तथा ) नवपद पूजा, स्तवन, धूर्त, संपूर्ण, खसागरका प्रथम जागमें



लिखा हुवा है ( इससे ) इहां न लिखा है । उसमुजब करै, करावै ॥  
 ॥ ❀ ॥ इति विशेष विधिः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ऋगवंतके ( ९ ) अंग पूजन दूहा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जलजरी संपुट पत्रनां । युगलक नरपूजंत । रिषज चरण अं  
 गूठने । दायक ऋवजल अंत ॥ १ ॥ जानुं बलें कानसग रह्या । विचर्या  
 देश विदेश । खना खडा केवल लह्या । पूजो जानु नरेश ॥ २ ॥ लोकांतिक  
 बचनें करी । वरस्या वरशी दान । करकंमै प्रनु पूजनां । पूजो ऋवि बहु  
 मानं ॥ ३ ॥ मानगयुं दोअंशथी । देखी वीर्य अनन्त । नुजाबलें ऋवजल  
 तर्या । पूजो खंध महन्त ॥ ४ ॥ रत्नत्रय गुण ऊजली । सकल सुगुण  
 विशराम । नाभि कमलनी पूजना । कस्तां अविचल धाम ॥ ५ ॥ हृदय  
 कमल उपशम बलें । बाल्यो रागनें रोष । हेम दहै वन खंरनें । हृदय तिल  
 कसंतोष ॥ ६ ॥ सोल पहर देई देशना । कंठ विबर वर तूल । मधुर धु  
 नी सुर नर सुणें । तिम गले तिलक अमूल ॥ ७ ॥ तीर्थकर पद पुन्य  
 थी । त्रिनुवन जन सेवंत । त्रिनुवन तिलक समा प्रनु । जाल तिलक ज  
 यवंत ॥ ८ ॥ सिद्ध शिला गुण ऊजली । लोकांतिक ऋगवंत । वसियातिण  
 कारण सही । शिर संख्या पूजंत ॥ ९ ॥ उपदेशक नव तत्वना । तिम नव  
 अंग जिणंद । पूजो बहुविध जाव थी । कहे सहु वीर मुणिंद ॥ १० ॥

॥ ❀ ॥ अथ शिवाकारक दूहा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जीवना जिनवर पूजिइं । पूजाना फल जोय । राज नमें  
 परजा नमें । आण न लोपे कोय ॥ १ ॥ कुंजे बांध्यो जल रहे । जल  
 विना कुंज न होय । ज्ञानें बांध्यो मन रहे । गुरु विना ज्ञान न होय ॥ १ ॥  
 गुरु दीपक गुरु देवता । गुरु विन घोर अंधार । जे गुरु बाणी वेगला ।  
 रु वसिया संसार ॥ १ ॥ जावे जिनवर पूजियें । जावे दीजै दान । जा  
 वे जावना जाविये । जावे केवल न्यान ॥ १ ॥ प्रचू नामकी उषधी । शुद्ध  
 चित्तसें खाय । रोग पीमा व्यापे नही । महा दोष मिट जाय ॥ १ ॥ पांच  
 कोमीनें फूलमे । पाय्या देश अढार । कुमार पाल राजा थयो । वरत्यो जैजै  
 कार ॥ १ ॥ मनमोहन पारस मिल्यो । मोहन गुण सुखकंद । मोहनी सू

स्त देखके । मोहन चित आनन्द ॥ १ ॥ पारश प्रभुके नामसे । सहु सं  
कटमिटजाय । ईत ज्यद्रव जय टले । मोहन गुण प्रगटाय ॥३॥ इति दूहा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नवपद पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम अरिहंत पदपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ परम मंत्र प्रणमी करी । तास धरी उर ध्यान ॥ अरिहंत  
पदपूजा करो । निज निज शक्ति प्रमाण ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ काव्य ॥ जियंतरंगारिजणे सु नाणे । सप्पामि हेराइ सयप्पहाणे ।  
संदेह संदोह रयं हरंते । जाएहनिचंपि जिणे रिहंते ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ उप्पन्न सन्नाणमहोमयाणं । सप्पाडिहेरासण संठिआणं ॥ सदेस  
णाणं दियसज्जाणाणं । एमो एमो होउ सया जिणाणं ॥ १ ॥ नमोनंत संत प्र  
मोद प्रधानं । प्रधानाय ज्व्यात्मने ज्ञास्वताय ॥ थया जेहना ध्यानथी सौ  
ख्यज्जाजा । सदा सिद्ध चक्राय श्रीपाल राजा ॥ २ ॥ करया कम्मं दुर्मम्मं च  
कचूर जेणें । जला जव्य नवपद ध्यानेन तेणें ॥ करी पूजना जव्य ज्ञावें  
त्रिकाजें । सदा वासियो आतमा तेण काजें ॥ ३ ॥ जिके तीर्थकर कर्म  
उदयें करीनें । दियै देशना जव्यनें हित धरीनें ॥ सदा आठ महापामिहारे  
समेता । सुरेशें नरेशें स्तव्या ब्रह्मपूता ॥ ४ ॥ करया वातिया कर्म चारे अ  
जग्गा । जवोपग्रही चार ठे जे विजग्गा ॥ जगत् पंचकट्याणके सौख्य  
पामें । नमो तेह तीर्थकरा मोहकामें ॥ ५ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ॥ त्रीजे जव विधिसें करी । वीश स्थानक तप करिनें  
रे ॥ गोत्र तीर्थकर बांधियुं । समकित शुद्ध मन धरिनें रे ॥ १ ॥ अरिहंत पद  
नित वंदियें । करम कठिन जिम ठंभीये रे ॥ ( ए आंकणी ) ॥ जनम कट्याण  
कनें दिनें । नारकी सुखिया थावै रे ॥ मति श्रुत अवधि विराजता । जसु उंय  
म कोइ नावे रे ॥ अ० ॥ २ ॥ दीक्षा लीधी शुद्ध मनें । मन पर्येव आदरि  
युं रे ॥ तप करि कर्म खपाइनें । नतखिण केवल वरियुं रे ॥ अ० ॥ ३ ॥ च  
उत्तीश अतिशय शोचता । बाणी गुण पेतीशो रे ॥ अठदश दोष रहित थई  
पूरे संघजगीसो रे ॥ अ० ॥ ४ ॥ तन मन वयण जगाइने । अरिहंत पद  
आराधे रे ॥ ते नर निश्चयथी सही । अरिहंत पदवी साधे रे ॥ अ० ॥ ५ ॥

॥ ❀ ॥ श्लोक ॥ अथाष्टदलमध्याब्ज । कर्णिकायां जिनेश्वरान् ॥ आवि  
र्भूत लसद्बोधा । नावृतः स्थापयाम्यहम् ॥ १ ॥ निःशेष दोषैधनधूमकेतु  
नपार संसार समुद्र सेतून् ॥ यजे समस्ता तिथयैक हेतून् । श्रीमज्जिनानं  
बुजकर्णिकायाम् ॥ २ ॥ ( नैऋती अर्हद्भ्यो नमः ) ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ द्वितीय सिद्धपद पूजा ॥ ❀ ॥

॥ दोहा ॥ दूजी पूजा सिद्धकी । कीजें दिल खुशियाल ॥ अशुभ कर्म  
दूरें टले । फले मनोरथमाल ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ दुष्ट कम्मावरण प्पमुक्के । अणंतनाणाइ सिरी चउक्के । समग्ग लोग  
ग्गपयप्पसिद्धे । जाएहनिच्चंपि मणं मि सिद्धे ॥ २ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सिद्धाणमाणंदरमालयाणं । एमो एमो एतं चउक्कयाणं ॥  
सम्मग्ग कम्मक्खय कारयाणं । जम्मं जरा दुक्ख निवारयाणं ॥ १ ॥  
करी आठ कर्म ह्ये पार पाम्या । जरा जन्म मरणादि जय जेण वाम्या ॥  
निरावरण जे आत्मरूपे प्रसिद्धा । थया पार पामी सदा सिद्ध बुद्धा ॥ त्रिजा  
गोनदेहा वगाहात्मदेशा । रह्या ज्ञानमय जात वणींदि जेशा ॥ सदानंत सौ  
ख्याश्रिता ज्योतिरूपा । अनाबाध अपुनर्जवादि स्वरूपा ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ॥ सकल कर्मनो ह्य करी । सिद्ध अवस्था पाईरे ॥  
गुण इगतीस विराजता । उप्पम जसनही कांई रे ॥ ६ ॥ मन शुद्ध सिद्ध  
पद वंदियें ( ए आंकणी ) जनम मरण दुःख निर्गम्या । शुद्धातम चिदरू  
पी रे ॥ अनंत चतुष्टय धारता । अव्याबाध अरूपी रे ॥ म० ॥ ७ ॥ जास  
ध्यान जोगीसरू । करे अजप्पा जापें रे ॥ जव जव संच्यां जीवने । कठिण  
कर्म तें कापें रे ॥ म० ॥ ८ ॥ ध्यान धरंतां सिद्धनुं । पूजंतां मन रागें रे ॥  
अविचल पदवी पाईयें । कह्यं जिनवर वरु ज्ञागें रे ॥ म० ॥ ९ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्लोक ॥ तस्य पूर्वदले सिद्धान् । सम्यक्त्वादि गुणात्मकान् ॥  
निःश्रेयसपदं प्राप्तान् । विदधे प्रक्ति निर्जरः ॥ १ ॥ तत्पूर्वपत्रे परितः प्रणष्ट  
दुष्टाष्टकर्मानधिगम्य शुद्धिम् ॥ प्राप्तान्नरान् सिद्धिमनंतबोधान् । सिद्धान्यजे  
शांति करा न्नराणाम् ॥ ( नैऋती सिद्धेभ्योनमः ) ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ तृतीय आचार्यपद पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ ॥ हिव आचारज पद तणी । पूजा करो विशेष ॥  
मोह तिमिर दूरें हरे । सूजे जाव अशेष ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ नतं सुहंदेहि पिया न माया । जंदिंति जीवाणिह सूरि पाया । तुम्हा हु  
तेचेव सया महेह । जंमुरक सुरकाईं लहुं लहेह ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सूरीण दूरीक्य कुग्गहाणं । एमो एमो सूरसम प्पहाणं ॥  
सदेशणा दाण समायराणं । अखंरु उत्तीस गुणायराणं ॥ १ ॥ नमुं  
सूरिराजा सदा तत्त्वताजा । जिनेंद्रा गर्मे प्रौढ साम्राज्यन्नाजा । षट्त्वर्ग व  
र्गितगुणें शोभमाना । पंचाचारनें पालवे सावधाना ॥ जवि प्राणिनें देशना  
देशकाले । सदा अप्रमत्ता यथा सूत्र आले ॥ जिके शासनाधार दिग्दंति  
कल्पा । जगत्ते चिरंजीवजो शुद्धजल्पा ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ॥ गुणउत्तीशे दीपता । पाले पंच आचारो रे ॥ जिन  
मार्ग साचो कहे । युगप्रधान जयकारोरे ॥ १० ॥ आचारिज पद वंदीयें ।  
( आंकणी ) ॥ सारण वारण चोयणा । पमिचोयण चो शिहारे ॥ जव्यजी  
व समजायवा । देवानें ते दिहा रे ॥ आ० ॥ ११ ॥ जिनवर सूरज आथ  
म्या । परतिख दीपक जेहा रे ॥ सकल जाव परगट करे । ज्ञानमयी जसु दे  
हा रे ॥ आ० ॥ १२ ॥ विधिशुं पूजा साचवे । व्यावे निज हित जाणी रे ॥  
पावे लघुतर कालमां । आचारज पद प्राणी रे ॥ १३ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( श्लोक ) ॥ स्थापयामि ततःसूरीन् । दक्षिणेऽस्मिन् दलेऽभले ॥  
चरतः पंचधाचारं । पद्त्रिंशत् सङ्गुणैर्युतान् ॥ १ ॥ सूरीन् सदाचार रतांश्च  
सारा । नाचार्यंतः स्वपरान्यथेष्टम् ॥ उग्रोपसर्गेक निवारणार्थं । मभ्यर्चयाम्य  
हृत्त र्गंध धूपैः ॥ २ ॥ ( उं ह्रीं सूरिभ्योनमः ) ॥ इति ॥ ३ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ चतुर्थ उपाध्याय पद पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ गुण अनेक जग जेहना । सुंदर शोजित गात्र ॥ उव  
प्राया पद अरचियें । अनुभव रसनुं पात्र ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ सुत्तत्य मवेग मयेसुणं । संनीर खीरामव विस्तुणं । पीणंति जेते उ  
वझायराये । जाण्ह निचं पि कयप्पसाण् ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ङंद ॥ सुत्तत्थवित्थारण तप्पराणं । एमो एमो वायग कुंजराणं ॥  
गणस्स संधारण सायराणं । सब प्पणा वज्जिय मत्तराणं ॥ १ ॥ नही  
सूरि पण सूरिगणनें सहाया, नमुं वाचका त्यक्त मदमोह माया ॥ वली  
घ्रादशांगादि सूत्रार्थ दाने, जिके सावधाने निरुद्धाजिमाने ॥ धरे पंचने व  
र्ग वर्गित गुणौघाः । प्रवादि द्विपोद्भेदने तुल्य सिंघाः ॥ गुणी गढसंधारणे  
स्तंभचूता । उपाध्याय ते वंदिये चितप्रचूता ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ॥ घ्रादशांगी वाणी वदे । सूत्र अरथ विस्तारेरे ॥  
पंचवरग गुण जेहना । सुमति गुपति नित धारेरे ॥ १४ ॥ श्रीजिवाजाया  
वंदिये ( ए आंकणी ) ॥ दायक आगम वाचना, जेद जाव युत सारीरे ॥  
मूरखकुं पंथित करे, जगतजंतु हितकारीरे ॥ १५ ॥ श्री० ॥ शीतलचंद कि  
रण समी, वाणी जेहनी कहियेरे ॥ ते जवाजाया पूजतां, अविचल सुखमा  
लहीयेरे ॥ १६ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्लोक ॥ घ्रादशांगश्रुताधारान् ॥ शास्त्राध्ययन तत्परान् । निवे  
शयाम्युपाध्यायान् । पवित्रे पश्चिमे दले ॥ १ ॥ श्रीधर्मशास्त्राण्यनिशं प्रशां  
त्यै । पठन्ति येऽन्यानपि पाठयन्ति ॥ अध्यापकांस्तानपराब्जपत्रे । स्थिता  
पवित्रान्परिपूजयामि ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं नमो नमो नमो नमः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पंचम साधुपदपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ मोहमार्ग साधन जणी, सावधान थया जेह ॥ ते सु  
वर वंदतां । निर्मल थाये देह ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ खंतेय दंतेय सुगुत्ति गुत्ते । मुत्ते पसंते गुण जोग जुत्ते । गयप्पमाए हय  
मोह माए । झाएह निचं मुणि राय पाए ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ङंद ॥ साहूण संसाहिय संजमाणं । एमो एमो सुद्ध दयादमाणं ॥  
तिगुत्ति गुत्ताण समाहियाणं । सुणीण माणंद पयठियाणं ॥ १ ॥ करे  
सेवना सूरि वायग गणीनी । करूं वर्णना तेहनीशी सुणीनी ॥ समेता सदा  
पंच समिति त्रिगुप्ता । त्रिगुप्ते नही काम जोगेषु लिप्ता ॥ वली बाह्य अभ्यं  
तरे ग्रंथि टाली । हुये मुक्तिने योग्य चारित्र पाली ॥ शुजष्टांग योगे रमे  
चित्त वाली । नमूं साधुने तेह निज पाप टाली ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ઢાલ) સકલ વિષય વિષ વારિને, આતમધ્યાને રાતારે ॥  
 નપશમ રસમાં ઝીલતા । નિજ ગુણ જ્ઞાને માતારે ॥ ૧૭ ॥ હિત ધરિ મુનિ  
 પદ વંદિયે ( એ આંકળી ) સ્તનત્રયી આરાધતાં । પદ્મકાયા પ્રતિપાલેરે ॥  
 પંચેન્દ્રી જીપે સદા । જિન મારગ અજુવાલેરે ॥ હિં ॥ ૧૮ ॥ ગુણ સત્તાવી  
 શ અલંકર્યા । પંચ મહાવ્રત ધારીરે ॥ દ્વાદશવિધ તપ આદરે । ચિદાનંદ  
 મુખકારીરે ॥ હિં ॥ ૧૯ ॥ નવવિધ બ્રહ્મચરિજ ધરે । કરમ મહા ઝટ જી  
 ત્યારે ॥ પૂહવા મુનિ ધ્યાવે સદા । તે નર જગત વિદીતારે ॥ હિં ॥ ૨૦ ॥

॥ ❀ ॥ શ્લોક ॥ વ્યાખ્યાદિકર્મ કુર્વાણાન્ । શુભધ્યાનૈક માનસાન્ ॥  
 નદક્ષપત્રગતાન્નિત્યં, સાધૂન્વંદામિ સુવ્રતાન્ ॥ ૧ ॥ વૈરાગ્યમંતર્વચસિ પ્રશિષ્ઠં  
 સત્યં તપો દ્વાદશધા શરીરે ॥ યેષામુદક્ષપત્ર ગતાન્ પવિત્રાન્ । સાધૂન્ સદા  
 તાન્ પરિપૂજયામિ ॥ ઐ ક્ષી સર્વ સાધુભ્યોનમઃ ॥ ❀ ॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ અથ ષષ્ઠમદર્શન પદપૂજા ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ દોહા ॥ જિનવર પ્રાપ્તિ શુભનય, તત્ત્વ તણી પરતીત ॥ તે સ  
 મ્યદર્શન સદા । આદરિયે શુભરીત ॥ ૧ ॥ ❀ ॥ ॥❀ ॥

॥ ❀ ॥ જં દલ્લકાઈ સુ સદ્ગુણ । તં દંસણં સઘ ગુણપ્પહાણં । કુગ્રાહવાહી  
 નવયંતિ જેણ । જહા વિસુદ્ધેણ રમાયણેણ ॥ ૬ ॥ ❀ ॥ ॥❀ ॥

॥ ❀ ॥ હંદ ॥ જિણુત્તત્તે રૂઢ લક્ષણસ્સ । ણમો ણમો નિમ્મલે દંસણ  
 સ્સ ॥ મિઠ્ઠત્ત નાસાઈ સમુગ્ગમસ્સ । મૂલસ્સ સઘમ્મ મહાહુમસ્સ ॥ ૧ ॥  
 વિપરિયામહો વાસનારૂપ મિથ્યા । ટલે જે અનાદી અઢે જે કુપચ્યા ॥  
 જિનોત્તે હુવે મહજથી સુધ્ધ્યાનં । કહિયેં દર્શનં તેહ પરમં નિધાનં ॥ વિના  
 જેહથી જ્ઞાનમજ્ઞાનરૂપં । ચરિત્રં વિચિત્રં ત્રવાણ્ય કૂપં ॥ પ્રકૃતિ સાત નપશ  
 મકૂયેં તેહ હોવે । તિહાં આપરૂપેં સદા આપ જોવે ॥ ૧ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ઢાલ) ॥ સુગુરુ સુદેવ સુધર્મની । મહાહુણા ચિત્ત ધારિયેરે ॥ માત  
 પ્રકૃતિનો કૃત્ય કરી । ક્ષાયિક સમક્તિ વારિયેરે ॥ ૨૧ ॥ દરશણ પદ નિત  
 વંદિયે ( એ આંકળી ) ડાળ વિણ જ્ઞાન નિઃફલ કહ્યું । ચારિત્ર નિઃફલ જા  
 વેરે ॥ શિવ સુખ એ વિણ નાં મીલે । વહુ સંસારી થાયેરે ॥ ૨૦ ॥ ૨ ॥ મનસાઠિ



जेदे शोजतुं । अजरामर फल दातारे ॥ जे नर पूजे जावशुं । ते पामें सुख  
शातारे । दरशण पद० ॥ २३ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्लोक ॥ जिनेंद्रोक्तमतं श्रद्धा । लक्षणं दर्शनंयजे ॥ मिथ्यात्वमथ  
नं शुद्धं । न्यस्तमीशानसद्वले ॥ १ ॥ ॐ क्लीं सम्यग्दर्शनाय नमः ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सप्तम ज्ञान पद पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ सप्तम पद श्री ज्ञाननो । सिद्धचक्रतप मांहि ॥ आराधी  
जें शुभ मनें । दिन दिन अधिक उवाहि ॥ ❀ ॥

॥ नाणं पहाणं नय सिद्ध चक्रं । तत्ताववोहिक मयं पसिद्धं । धरेह चित्तावसहे  
फुरंतं । माणक दीबुब्ब तमो हरंतं ॥ ७ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ठंड ॥ अन्नाण संमोह तमोहरस्स । एमो एमो नाण दिवायरस्स ॥  
पंचप्पयारस्सु वगारगस्स । सत्ताण सबत्थ पया सगस्स ॥ १ ॥ हुवे  
जेहथी ज्ञान शुद्ध प्रबोधं । यथा वरण नाशे विचित्रं विबोधं ॥ तिणें जा  
णीयें वस्तु षडद्रव्य जावा । न होवे वित्ता निजेत्ता स्वजावा ॥ हुवे पंच  
मत्यादि सुज्ञान जेदे । गुरुपासथी योग्यता तेह वेदे ॥ वली ज्ञेय हेया उपा  
देय रूपें । लहे चित्तमां जेम ध्वांतप्रदीपें ॥ १ ॥

॥ ❀ ॥ ( ढाल ) जहू अजहू विचारणा । पेय अपेय निर्धारोरे ॥ कृत्य  
अकृत्य नें जाणियें । ज्ञान महा जयकारोरे ॥ २४ ॥ ज्ञान निरंतर वंदियें ॥  
( ए आंकणी ) ॥ ज्ञान विना जयणा नही । जयणा विण नही धर्मोरे ॥ धर्म  
विना शिव सुख नहीं । ते विण न मिटे जर्मोरे ॥ ज्ञा० ॥ २५ ॥ पांच प्रकार  
ते जेहना जेद इकावन तासोरे ॥ जाणीनें पूजे सदा । ते लहे केवल  
खासोरे ॥ २६ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्लोक ॥ अशेषद्रव्यपर्याय । रूपमेवावजासकम् ॥ ज्ञानमाग्नेयपत्र  
स्थं । पूजयामि हितावहम् ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अष्टम चारित्र पद पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ अष्टमपद चारित्रनुं । पूजो धरी उमेद ॥ पूजत अनुजव  
रस मिले । पातक होय उठेद ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ सुसंवरं मोह निरोह सारं । पंचप्पयारं विगयाइ यारं । मूलोत्तराणेग  
गुणं पवित्तं । पालेह निचंपिहु सच्चरित्तं ॥ ८ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ठंद ॥ आराहियाखंफिय सकियस्स । एमो एमो संयम वीरिय  
स्स ॥ सज्जावणा संग विवाट्टियस्स । निवाणदाणाइ समुज्जयस्स ॥ १ ॥  
वली ज्ञानफल चरण धारियें सुरंगें । निराशंसता द्वाररोध प्रसंगें ॥ जवां  
ओधिसंतारणे यानतुल्यं । धरुं तेह चारित्र अप्राप्तमूल्यं ॥ १ ॥ हुवे जास  
महिमाथकी रंक राजा । वली द्वादशांगी जणी होय ताजा ॥ वली पाप रू  
पोपि निःपाप थाये । थई सिद्ध ते कर्मनें पार जाये ॥ २ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( ढाल ) सर्व विरति देशविरतिथी । अणागार सागारीरे ॥ जय  
वंतो थावो सदा । ते चारित्र गुण धारीरे ॥ २७ ॥ चारित्रपद नित वंदीयें ॥  
( ए आंकणी ) षट्खंड सुख तजि आदरे । संयमशिव सुखदायीरे ॥ सत्तर  
जेदें जिन कह्यो । ते आदारियें जाईरे ॥ चा० ॥ २८ ॥ तत्त्वरमण तमु  
मूल ठे । सकल आश्रवनो त्यागीरे ॥ विधिसेती पूजन करे । जाव धरी  
वरजागीरे ॥ चा० ॥ २९ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्लोक ॥ सामायिकादिजिज्जंदे । श्रारित्रं चारुपंचधा ॥ संस्थापया  
मि पूजार्थं । पत्रे हि नेरुने कमात् ॥ १ ॥ ॐ क्लीं सम्यग्चारित्राय नमः ॥ ८ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नवम तपपद पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ दोहा ॥ कर्मकाष्ट प्रति जालवा । परतिख अगनिसमान ॥ ते  
तप पद पूजो सदा । निर्मल धारियें ध्यान ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ वज्रं तहाप्रितर जेयमेयं । कयाइ दुप्रेय कुकम्मजेयं । दुक्खक्ख यत्थं कय  
पावनासं । तवं तवेहा गमियं निरासं ॥ ९ ॥ एयाइं जेकेवि नवप्पयाइं ।  
आराहियंतिष्ठफल प्ययाइं । जहंति ते सुत्तक परंपराणं । सिरि सिरिपाज  
नेरेसुत्त ॥ १० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कम्महुमोनमूलण कुंजरस्स । एमो एमो तिव्वतवोज्जरस्स ॥ अ  
णेग लघ्घीण निवंधणस्स । दुस्सज्ज अत्थाणय साहणस्स ॥ १ ॥ त्रिका  
लिकपणें कर्म कपाय टाजे । निकाचिनपणें बांधियां तेह बाजे ॥ कहुं तेह  
तप बाह्य अभ्यंतर दुजेदें । क्रमा युक्त निर्हेतु दुघ्यान ठेदे ॥ हुवे जास महि

माथकी लब्धि सिद्धि । अवांछकपणे कर्म आवरण शुद्धि । तपो तेह तप जे  
महानंद हेतें । हुवे सिद्धि सीमंतिनी निज संकेतें ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ ( ढाल ) निज इहा अवरोधीये । तेहिज तप जिन जाख्युरे ॥  
बाह्य अभ्यंतर जेदथी । द्वादशजेदें दाख्युरे ॥ ३० ॥ अनुपम तप पद वं  
दियें ( ए आंकणी ) तदभव मोक्ष गामीपणुं । जाणे पण जिन रायारे ॥  
तप कीधा अति आकरा । कुत्सित करम खपायारे ॥ अ० ॥ ३१ ॥ करम  
निकाचित ह्य हुवे । ते तपनें परजावेंरे ॥ लब्धि अठावीश ऊपजे । अष्ट  
महासिद्धि पावेरे ॥ अ० ३२ ॥ एहबुं तपपद ध्यावतां । पूजंतां चित्त  
चाहेरे ॥ अहयगति निर्मल लहे । सहु योगिंद सराहे रे ॥ अ० ॥ ३३ ॥

॥ ❀ ॥ श्लोक ॥ द्विधा द्वादशधा भिन्नं । पूते पत्रे तपश्चयं ॥ संस्थापयामि  
प्रत्तयात्र । वायव्यां दिशि शर्मदम् ॥ ॐ ह्रीं सम्यगुत्तपसे नमः इति ॥ ९ ॥

॥ ❀ ॥ अथ कलश ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इम नवपद ध्यावे, पर्म आनंद पावे । नव अव शिव जावे, देव  
नुर अव पावे ॥ ज्ञान विमल गुण गावे, सिद्ध चक्र प्रजावे । सहु डुरित श  
भावे, विश्व जयकार पावे ॥ १ ॥ ❀ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ अरिहंत सिद्ध आचार्य उवजाय, साधु दंसण नाण ए ॥ चारित्र  
तप नवपद थकी, इहां सिद्धचक्र प्रमाण ए ॥ १ ॥ श्रीपाल राजा सुक्ख  
ताजा, लह्या सिद्धचक्र ध्यानसों ॥ प्रविजन प्रजो जिन लाज जाणी, हि  
ये आणी जाव सों ॥ २ ॥ इय नवपय सिद्धि, लद्धि विज्जा समिद्धं । पयमि  
य सरवग्गं, ह्रीं तिरेहासमग्गं ॥ दिसिवइ सुरसारं, खोणिपीढावयारं । तिजय  
विजयचक्रं सिद्धचक्रं नमामि ॥ ३ ॥ निःस्वेदत्वादि दिव्या तिशयमयतन्न श्री  
जिनेंद्रान्सुसिद्धान् । सम्यक्त्वादि प्रकृष्टाष्टगुणगणभृदा, चार सारांश्च सूरीन्  
॥ शास्त्राणि प्राणिरुहा प्रवचनरचना सुंदराण्यादिशंत । स्तत्सिद्ध्यै पाठकानां  
यतिपति सहितानर्चया म्यर्घदानैः ॥ १ ॥ इत्थमष्टदलं पद्मं । पूरयेदर्हदादिभिः ॥  
पहांतैः प्रणवाद्यैश्च । पदैर्विघ्न निवृत्तये ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं पंचपरमेष्ठिने सम्य  
स्सनादिचतुरन्वितेभ्यो नमः ॥ ❀ ॥ इति श्री नवपदस्तुतिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नवपद आरती ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ए नवपद प्राणी नित ध्यावो । पंचम गत सासय सुख पावो ॥  
( ए आंकणी ) धुरथी अरिहंतपद ध्याईजें । थिरतायें श्री सिद्ध थुणीजें ॥  
ए० ॥ १ ॥ आचारज तीजें आराधो । सूधे मन जिन कारिज साधो ॥  
ए० ॥ २ ॥ नवजाया पंचम अणगारा । प्रणमंतां पामें नवपारा ॥ ए० ॥  
॥ ३ ॥ दंसण नाण चरण नल दीपे । तप तपतां कम अरिनें जीपे ॥ ए० ॥  
॥ ४ ॥ ए नवपद प्राणी नित थुणतां । गिस्वा नरनव सफज गिणंता ॥ ए० ॥  
॥ ५ ॥ सिद्धचक्रनी कीजै सेवा । मनवंठित लहियें नित मेवा ॥ ए० ॥ ६ ॥  
अजर अमर सुखदायक साचो । रूने मनसें नित प्रति राचो ॥ ए० ॥ ७ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पंचपरमेष्ठी पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम अरिहंत पद पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ नैकाखीज आदै नमुं ॥ गीर्वाणी सुखदाय । तुं तू ठी  
पंमितकरै ॥ पूजै सुर नर राय ॥ १ ॥ नै नमो गुरु देवकुं । जापासरस वनाय ॥  
पाहणथी पल्लवकरे । उपगारी सिराय ॥ २ ॥ प्रथम नमुं अरिहंतजी ॥  
दूजा सिद्ध अनंत । तीजा सूरि सदानमुं । उपगारी जगवंत ॥ ३ ॥ वलि नव  
झाया वंदिये ॥ गुण पचवीस प्रधान । द्वादश अंग प्ररूपता ॥ नही विकथा  
नहिमान ॥ ४ ॥ पंचम पद मुनि राजनो । वंदो नवि इकतार ॥ गुण सत्तावी-  
स सौजता । करुणारस जंमार ॥ ५ ॥ पांचो पद सेवेनहीं । मूरख लोक  
अजाण । ए पांचूं परमेष्ठिहै ॥ अनुपम सुखकीखाण ॥ ६ ॥ नज्जल वरण विरा-  
जता ॥ कुमति हरण सुजलेश ॥ अरिहंत पद पूजा करो । सेवन सदा सुरेस ॥  
॥ ७ ॥ अष्ट द्रव्य लेईकरी । पूजो अरिहंत देव । पूजत अनुभव रसमिले । पावो  
सुख नितमेव ॥ ८ ॥ प्रथम पद श्रीकारहै । अतिसय जास अनंत । तीनलो-  
कना राजवी । सेवे सुर नर संत ॥ ९ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चाल होलीरी ॥ वज्रिहारी सुखकर जिनवरकी । सबदेवनमें देव  
नगीनो । महिमा अधिकी मुनिवरकी ॥ व० ॥ कोईव्यावै हरि हर ब्रह्मा ।  
कोई कहै मेरे बाजाकी ॥ व० ॥ १ ॥ कोई नरसिंह देवकुं ध्यावै । कोई कहे  
मेरे ज्वाजार्जा ॥ व० ॥ मेरे परसन तुमही आए । वीतराग गुण बाजाजी ॥

व० ॥ २ ॥ अवरदेव सब काच कथीरा । तुमहो अमोलक हीराजी ॥ व० ॥  
 राग द्वेष तुम पास नहीं हैं । वाईस परीसह धीराजी ॥ व० ॥ ३ ॥ तेरी सूरत  
 की बलिहारी । क्या कहूं अजब अमीराजी ॥ व० ॥ कोड देवता हाजर रहता  
 अणहुंते बडवीराजी ॥ व० ॥ ४ ॥ जगजीवन जगलोचन कहिये । तुमसम  
 अवरन धीराजी ॥ व० ॥ तेरे गुणको पारन पायो । सुरनर राय वजीराजी ॥  
 व० ॥ ५ ॥ वरै गुणो प्रभू ऊपर सोहै ॥ बृह अशोक उदाराजी ॥ व० ॥  
 तीनअत्र नामंज पूठै । ध्वजा फुरक रही साराजी ॥ व० ॥ ६ ॥ पृथ्वीपीठ  
 सिंहासन ऊपर । राजत हो बडवीराजी ॥ व० ॥ पान फूल करके बहु सो  
 प्रत । राजतहो गुणपूराजी ॥ व० ॥ ७ ॥ सहस जोजननो इंद्रध्वज प्रभु ।  
 आगे चालत सारा जी ॥ व० ॥ महागोप महामाहण कहिये । निर्यामक सत्थ  
 वाराजी ॥ व० ॥ ८ ॥ ऐसै अरिहंत पदकी महिमा । सुणियो तुम सब प्यारा  
 जी ॥ व० ॥ तीन लोकमें इनका जंडा । पूजतहै इकताराजी ॥ व० ॥ ९ ॥  
 अष्ट द्रव्यसैं पूजा करतां । सदा हुवै जयकाराजी ॥ व० ॥ धर्म विशाल दयाल  
 पसायै । सुमति कहै गुणसाराजी ॥ व० ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने पंचपरमे  
 श्री महामंत्र राजाय अरिहंत पदे अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति अरिहंत  
 पद पूजां ॥ १ ॥                      ॥ ❀ ॥                      ॥ ❀ ॥                      ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ दूजी सिद्धपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ दूजी पूजा सिद्धकी । करो प्रविक गुणवंत । धजा चढावो  
 प्रावसुं । जालवरण मतिवंत ॥ १ ॥ गुण इकतीस विराजता । तीनलोक  
 सिरछत्र । अनंतचतुष्टय धारता । जगजीवन जगमित्र ॥ २ ॥                      ॥ ❀ ॥

॥ ठाल ॥ प्रविपनरमपदगुणगानाहो ॥ प्र० ॥ एचाल ॥ प्रविसिद्ध पदके  
 गुणगानाहो ॥ प्र० सि० ॥ पनरेजेदे सिद्ध विराजै । प्रवितुम चितमें लानाहो  
 ॥ प्र० सि० ॥ जिना जिन तीरथा तीरथ कहियें । अन्य सलिंग कहानाहो ॥  
 ॥ प्र० सि० ॥ १ ॥ स्त्री पुरुषादिक लिंगें जायै । कृत्य नपुंसक गानाहो ॥  
 ॥ प्र० ॥ प्रत्येकबुद्ध नैं सहसंबुद्धा । बुद्धबोधित सुप्रमानाहो ॥ प्र० सि० २ ॥  
 एक अनेक और एकसमयें । गुरुमुखथी सुध पानाहो ॥ प्र० सि० ॥ अष्ट सिद्धि  
 नव निधिके दाता । तुमहो देव निधानाहो ॥ प्र० सि० ॥ ३ ॥ सादी अनंत

तुम सुखके जोगी । जोगीसर जयंजानाहो ॥ ज० सि० ॥ शब्दरूप रस गंध  
 फरसकुं । जीतनए मुनि जाना हो ॥ ज० सि० ॥ ४ ॥ अव्याबाध सुखके तुम  
 रमिये । जव्य सकल सुख दानाहो ॥ ज० सि० ॥ घाति अधाति दूर करीनें ।  
 जोतमेंजोत समानाहो ॥ ज० सि० ॥ ५ ॥ पेंतालीसलख जोजन सिखा ।  
 उज्ज्वलवरण कहानाहो ॥ ज० सि० ॥ ऊपर जोजन जागचोइसमें । सिद्धपनु  
 ठहरानाहो ॥ ज० सि० ॥ ६ ॥ तिहां श्रीसिद्ध सदा जयवंता । परमगुरु परधा  
 नाहो ॥ ज० सि० ॥ अनंतगुणाकर ज्ञान दिवाकर । इनके गुण नितगानाहो  
 ॥ ज० सि० ॥ ७ ॥ जवधि रिधि सब सिद्धिके दाता । परम इष्ट सुखदानाहो  
 ॥ ज० सि० ॥ धरमविशाल दयाल पसायें । सुमति कहें बुधवानाहो ॥ ज०  
 सि० ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमात्मने अष्ट द्रव्यं यजामहेस्वाहा ॥ इति  
 सिद्धपद पूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ तीजी आचार्यपद पूजा ॥ ❀ ॥

॥ दूहा ॥ तीजेपदकुं नितनमूं । आचारज गुणवान । गुणवत्तीस वीराज  
 ता । जिनवरके परधान ॥ १ ॥ प्रतिरूपादिक गुणकरी । राजेसुर समान ।  
 जातिवंत कुलवंतहे । नहीविकथा नहीमान ॥ २ ॥ जव्य मकलकुं तारवा ।  
 देसाचो उपदेश । कुमति सदादूरे करे । सुमती पाले हमेश ॥ ३ ॥ रुद्धि सिद्धि  
 कारण पूजिये । पीलेरंग प्रधान । गणधारक गुरु गठपती । युगपरधान सृजाना  
 ॥ ढाल ॥ मखीजिनंद सुखकारी रेवाला ॥ एचाल ॥ आचारज सुखकारी  
 रेवाला ॥ आ० ॥ पंचाचार विराजत जगमणि । सहस किरण अवतारी रे  
 वाला ॥ आ० ॥ प्रतिरूपादिक गुण जसु लाजे । मोह माया परिहारी रेवाला  
 ॥ आ० ॥ १ ॥ रागद्वेषकुं दूर निवारि । सुमनारस जंडारी रेवाला ॥ आ० ॥  
 क्रोध मान माया नहि जिनके । विकथा दूर निवारि रेवाला ॥ आ० ॥ २ ॥  
 तेजकरी सूरज सम सोजित । मिथ्यातमके वारी रेवाला ॥ आ० ॥ कृपा  
 अधिक जगमें जसुराजे । विषयविकार निवारि रेवाला ॥ आ० ॥ ३ ॥  
 हृदय गंजीर महायश निर्मल । रूपादिक मनुहारी रेवाला ॥ आ० ॥ देश  
 जात कुत्र उत्तम जिनके । मोहा सब नर नारी रेवाला ॥ आ० ॥ ४ ॥  
 सुखर नखर मेव करतहे । जय २ तुम सुखकारी रेवाला ॥ आ० ॥ मीठी



व० ॥ २ ॥ अवरदेव सब काच कथीरा । तुमहो अमोलक हीराजी ॥ व० ॥  
 राग द्वेष तुम पास नहीं हैं । वाईस परीसह धीराजी ॥ व० ॥ ३ ॥ तेरी सूखत  
 की बलिहारी । क्या कहूं अजब अमीराजी ॥ व० ॥ कोड देवता हाजर रहता  
 अणहुंते बडवीराजी ॥ व० ॥ ४ ॥ जगजीवन जगलोचन कहिये । तुमसम  
 अवरन धीराजी ॥ व० ॥ तेरे गुणको पारन पायो । सुरनर राय वजीराजी ॥  
 व० ॥ ५ ॥ बारै गुणो प्रभू ऊपर सोहै ॥ बृह अशोक उदाराजी ॥ व० ॥  
 तीनछत्र जामंरुज पूठै । ध्वजा फुरक रही साराजी ॥ व० ॥ ६ ॥ पृथ्वीपीठ  
 सिंहासन ऊपर । राजत हो बडवीराजी ॥ व० ॥ पान फूल करके बहु सो  
 जत । राजतहो गुणपूराजी ॥ व० ॥ ७ ॥ सहस जोजननो इंद्रध्वज प्रभु ।  
 आगे चालत सारा जी ॥ व० ॥ महागोप महामाहण कहिये । निर्यामक सत्य  
 वाराजी ॥ व० ॥ ८ ॥ ऐसै अरिहंत पदकी महिमा । सुणियो तुम सब प्यारा  
 जी ॥ व० ॥ तीन लोकमें इनका जंडा । पूजतहै इकताराजी ॥ व० ॥ ९ ॥  
 अष्ट द्रव्यसें पूजा करतां । सदा हुवै जयकाराजी ॥ व० ॥ धर्म विशाल दयाल  
 पसायै । सुमति कहै गुणसाराजी ॥ व० ॥ १० ॥ नै ईंती परमात्मने पंचपरमे  
 षी महामंत्र राजाय अरिहंत पदे अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति अरिहंत  
 पद पूजा ॥ १ ॥                      ॥ ❀ ॥                      ॥ ❀ ॥                      ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ दूजी सिद्धपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ दूजी पूजा सिद्धकी । करो जविक गुणवंत । धजा चढावो  
 जावसुं । जालवरण मतिवंत ॥ १ ॥ गुण इकतीस विराजता । तीनलोक  
 सिखत्र । अनंतचतुष्टय धारता । जगजीवन जगमित्र ॥ २ ॥                      ॥ ❀ ॥

॥ ढाल ॥ जविपनरमपदगुणगानाहो ॥ ज० ॥ एचाल ॥ जविसिद्ध पदके  
 गुणगानाहो ॥ ज० सि० ॥ पनरेजेदे सिद्ध विराजै । जवितुम चितमें लानाहो  
 ॥ ज० सि० ॥ जिना जिन तीरथा तीरथ कहिये । अन्य सलिंग कहानाहो ॥  
 ॥ ज० सि० ॥ १ ॥ स्त्री पुरुषादिक लिंगें जायै । कृत्य नपुंसक गानाहो ॥  
 ॥ ज० ॥ प्रत्येकबुद्ध नै सहसंबुद्धा । बुद्धबोधित सुप्रमानाहो ॥ ज० सि० २ ॥  
 एक अनेक और एकसमये । गुरुमुखथी सुख पानाहो ॥ ज० सि० ॥ अष्ट सिद्धि  
 नव निधिके दाता । तुमहो देव निधानाहो ॥ ज० सि० ॥ ३ ॥ सादी अनंत

करे तुम्ह नितवरणं ॥ श्री० ॥ नवनिध अडसिध मंगलमाला । पूजत जगमें  
जस वरणं ॥ श्री० ॥ ९ ॥ ॥ ॐ ॥ श्री परमात्म० शकजपाठक राजाय ऽष्ट  
द्रव्यं० ॥ इति पाठक पदपूजा ॥ ४ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ पंचमी साधु पदपूजा ॥ ॐ ॥

॥ दूहा ॥ पंचमपदमें सोजता । साधु सकल गुणवंत । गुण सतवीम विरा  
जता । महिमावंत महंत ॥ १ ॥ स्यामवरण मुनिवर कहा । तप करवा अति  
सूरि । जविक कमल प्रतिबोधता । धरता निरमल नूर ॥ २ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ दाल ॥ सदा सहाई कुसल सू० ॥ एचाल ॥ सदा सहाई वीर पटोथर ।  
सुणियो जविक उदार ॥ जलाली ॥ सु० ॥ सुधर्म स्वामी अंतरजामी । तसु  
नंदन सुखकार ॥ ज० ॥ जंवूआदिक गुणके सागर । तेप्रणसुं हितकार ॥ ज०  
स० ॥ १ ॥ प्रजवादिकसय पांच उदारा । प्रतिबोध्या सुखकार । ज० । सिज्जंजव  
आदिक जे सूरि । तेहना शिष्य सुविचार ॥ ज० । स० २ ॥ थूलजद्र मोठो  
ब्रह्मचारी । हुकरहुकरकार । ज० । सिंहगुफावासी जेमुनिवर । जापे हुकर  
कार ॥ ज० स० ३ ॥ बज्र कुमार बने उपगारी । प्रतिबोध्या नर नार । ज० ।  
श्रीसिद्धसेन दिवाकर स्वामी । राखी जगमें कार ॥ ज० स० ४ ॥ विक्रम आ  
दिक नृप अछारे । प्रतिबोध्या सुखकार । ज० । एकतीर्थकुं परगट करके ।  
गुरुचरणां व्रतधार । ज० ॥ म० ॥ ५ ॥ देवद्विगणी ए सवमें मोटा । राख्यो झा  
नज सारा ॥ ज० ॥ सूत्र ताडपत्रे लिखराख्या । जेशलमेर मजार । ज० स० ६ ॥ अन्न  
यदेव सूरि उपगारी । नव अंग टीका कार । ज० । हेमाचारज हे बन्नागी  
जिणकीनो हेमनोजार । ज० । ७ ॥ कुमार पालनें जिण प्राति बोध्या । सा  
खीधरमनो राख । ज० । श्रीजिनदत्त सूरिमेर मोटा । आवक किया सवा लाख  
ज० स० ८ ॥ स्तन प्रनु सूरि उपगारी । ओस्थानगर मजार । ज० ।  
जंगमंमकी थापनाकरके । मोठो कियो उपगार । ज० स० ९ ॥  
इत्यादिक गुण गाणके दास्या । सेवो जविक उदार ॥ ज० ॥ दंडणआदिक  
महानपसरा । नांयलियां जयकार । ज० स० १० ॥ गजसुकुमाल महामु  
निषंडु । जावकरी इकतार । ज० । धन धन्या अरु शालजद्रजी । कीर्तीकर  
णोसार । ज० स० ११ ॥ लंघकनूनिता शिष्य पांचमें । सूरवीर व्रतधार

अमृत वाणी बोले । सुणतां हरख अपारीरे वाला ॥ आ० ॥ ५ ॥  
 पूर्वचवद जणया श्रुतसागर । लबधि अठाईस धारीरे वाला० ॥ द्रव्यानुजोगी  
 चरणानुजोगी । करणजोगके धारीरे वाला ॥ आ० ॥ ६ ॥ गणतानुजोगरू  
 धरमानुजोगी । जाणें आगमसारारे वाला० । धर्मप्रवाहक एह कहीजै । सूरि  
 मंत्रके धारीरे ॥ वाला० आ० ॥ ७ ॥ गणधारी गढभार धुरंधर । सारण  
 वारण कारीरे ॥ वाला ॥ आ० ॥ ज्ञान उजागर विद्या सागर । वारीजाजं वार  
 हजारीरे ॥ वाला० ॥ आ० ॥ ८ ॥ धरम विशाल दयाल पसाये । सुमति कहै जय  
 कारीरे ॥ वाला० ॥ आ० ॥ ऐसे गौतमस्वामी कहिये । पूजोकर इकतारीरे ॥ वाला ।  
 आ० ॥ ९ ॥ इति ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मने० स्वाहाः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चोथी श्रीउवजाय पद पूजा ॥ ❀ ॥

॥ दूहा ॥ श्रीउवजाया वंदिये । प्रेमधरी मनरंग ॥ चोथे पदमें सोजता ।  
 पूजो धर उठरंग ॥ १ ॥ नीलवरण ध्वज सुंदरू । धरलावो सुजथाल । अष्टद्र  
 व्य लेईकरी । सेवो दीनदयाल ॥ २ ॥ ढाल ॥ जिनगुणगानं श्रुतऽमृतं ॥ ए  
 चाल ॥ श्रीउवजाया जयहरणं । जयहरणं रे देवा जयहरणं ॥ श्री ॥ परिहर विषय  
 विकार प्रकारं । ए गुरु है असरण सरणं ॥ श्री ॥ १ ॥ गुण पचवीस विराजत सुं  
 दर । देखत सबको मनहरणं ॥ श्री० । तेजपुंज रवि शशि समदीपत । मिथ्या  
 तम दूरेकरणं ॥ श्री० ॥ २ ॥ सूत्र अर्थ दाता जगमां है । सुनि मानसमें जय  
 करणं । सारण वायण चोयण करता । पमिचोयण वलि आचरणं ॥ श्री ॥ ३ ॥  
 द्वादश अंग पढ्या श्रुतसागर । सुमती धर कुमती हरणं ॥ श्री ॥ अतिशय  
 विद्याचूरण योगे । जिनसासन उन्नतिकरणं ॥ श्री ॥ ४ ॥ धरम प्रजाविक है  
 भंगारी । ऐसे गुरु तारण तरणं ॥ श्री० ॥ तप जप आदिकनी खप करता  
 जव्य सकलकुं निसतरणं ॥ श्री ॥ ५ ॥ नवविध ब्रह्मचर्यके धारक । दशविधि  
 विनय सदाकरणं ॥ श्री ॥ ॥ माया ममता दूर निवारी । द्वादश जेदे तपधरणं  
 श्री ॥ ६ ॥ शिष्य वरगकूं ज्ञानदानदै । मूरखथी पंक्ति करणं ॥ श्री ॥ जग  
 जीवनके हौ प्रतिपालक । तुमविन अवरन आचरणं ॥ श्री ७ ॥ विनकारण  
 जगमें उपगारी । धन २ तुमरी आचरणं ॥ श्री० ॥ पंचपरमेष्ठी महामंत्रको ।  
 इष्ट सदा दिलमें धरणं ॥ श्री ॥ ८ ॥ धरम विशाल दयाल पसावे । सुमति

करे तुम्ह नितवरणं ॥ श्री० ॥ नवनिध अडसिध मंगलमाला । पूजन जगमें  
जस वरणं ॥ श्री० ॥ ९ ॥ ॥ ॐ ह्रीं परमात्म० शकलपाठक राजाय ऽष्ट  
द्रव्यंय० ॥ इति पाठक पदपूजा ॥ ४ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ पंचमी साधु पदपूजा ॥ ॥

॥ दूहा ॥ पंचमपदमें मोक्षता । साधु सकल गुणवंत । गुण सत्तवीस विरा  
जता । महिमावंत महंत ॥ १ ॥ स्यामवरण मुनिवर कहा । तप करवा अति  
सूरि । जविक कमल प्रतिबोधता । धस्ता निरमल नूर ॥ २ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ दाल ॥ सदा सहाई कुसल सू॥ एचाल ॥ सदा सहाई वीर पदोधर ।  
सुणियो जविक उदार ॥ जलजी ॥ सु० ॥ सुधर्म स्वामी अंतरजामी । तसु  
नंदन सुखकार ॥ ज० ॥ जंबूआदिक गुणके सागर । तेप्रणसुं हितकार ॥ ज०  
स० ॥ १ ॥ प्रज्जवादिक्सय पांच उदारा । प्रतिबोध्या सुखकार । ज० । मिज्जंनव  
आदिक जे सूरि । तेहना शिष्य सुविचार ॥ ज० । स० २ ॥ थूजजद्र मोटो  
ब्रह्मचारी । हुकरहुकरकार । ज० । सिंदरुफावासी जेमुनिवर । प्रापे हुकर  
कार ॥ ज० स० ३ ॥ वज्र कुमार बने उपगारी । प्रतिबोध्या नर नार । ज० ।  
श्रीसिधसेन दिवाकर स्वामी । राखी जगमें कार ॥ ज० स० ४ ॥ विक्रम आ  
दिक नृप अछारे । प्रतिबोध्या सुखकार । ज० । एकतीर्थकुं परगट करके ।  
गुरुचरणां व्रतधार । ज० ॥ स० ५ ॥ देवद्विगणी ए सवमें मोटा । राख्यो झा  
नज सारा ॥ ज० ॥ सूत्र ताडपत्रे लिखराख्या । जेशजमेर मजार । ज० ॥ स० ६ ॥ अज  
यदेव सूरि उपगारी । नव अंग टीका कार । ज० । हेमाचारज है वरुजार्गी  
जिणकानो हेमनोजार । ज० । ७ ॥ कुमार पालन जे प्रति बोध्या । मा  
लीधरमनां राख । ज० । श्रीजिनदत्त सूरामर मोटा । आवक किया सवा लाख  
ज० स० ८ ॥ रत्न प्रभु सूरि उपगारी । ओस्यानगर मजार । ज० ।  
उमवंमकी थापनाकरके । मोटो कियो उपगार । ज० स० ९ ॥  
उत्पादिक गुण गणके दरिया । सेवो जविक उदार ॥ ज० ॥ हंढणआदिक  
महानपनूरा । नांमलियां जवकार । ज० स० १० ॥ गजसुकुमाल महामु  
निवंहु । जावकरी डकतार । ज० । धन धन्या अरु शालनद्रजी । कौनीकर  
गोसार । ज० स० ११ ॥ खंधकनूनिना शिष्य पांचमै । सूरवीर व्रतधार

। ज०। पंचमपदमें ए मुनिपूजो । सदाहुवै सुखकार । ज० स० ॥ १२ ॥ पंच  
मअरे ठेहनै होसी । दुपसहसूर दयाल । ज० । इत्यादिक एघीप अठीमें ।  
वंडु साधु कृपाल ॥ ज० स० ॥ १३ ॥ धरमविशाल दयाल पसायै । पूज  
रची सुखदाय । ज० । सुमतिकहै एपंचपरमेष्टी । कामधेनु कहवाय ज० स० ॥

॥ ❀ ॥ ढाल दूजी ॥ चालपाणिहारीकी ॥ ❀ ॥

॥ सुणप्याराजी । सुणतांआसीस्वाद प्याराजी । धरम सनेही साधुजी ॥  
सु० ॥ करता परनुपगार प्या० ॥ लालच लोभ न जेहनें । सु० । नहिरा  
खे द्वेषलगर प्या० । ममता माया ठोमनें ॥ सु० ॥ धरै व्रत सुखकार  
प्या० ॥ १ ॥ गाम नगर पुर पाटणैं सु० । करता धर्म व्यापारप्या० ॥ राग द्वेष  
मुनिराजनें ॥ सु० ॥ नहीकोई विषय विकार प्या० ॥ २ ॥ उपगारी सिरसेह  
रो । सु० । कुमतिकरे परिहार प्या० । विनकारण मुनिराजजी ॥ सु० ॥ नव्य  
जीव हितकार प्या० ॥ ३ ॥ ग्यानी ध्यानी सूरमा । सु० । महमा करत नेरस  
प्या० ॥ वाणी अमृत सारसी । सु० । सुणतां हरख हमेस प्या० ॥ ४ ॥ अनेक  
जीवप्रतिबुझिया । सु० । धरमतणा परधान । प्या० । मायानकरे साधुजी सु०  
नहिविकथा नहीमांन प्या० ॥ ५ ॥ पंचमहाव्रत धारता । सु० ॥ ऐसे दीनदया  
ल । प्या० । सुमति धारक पांचवै । सु० । गुपतीना रखवाल प्या० ॥ ६ ॥  
उद्देसक आदेकरी । सु० । कृतकरुनें बलिदूत । प्या० । सिज्यातर रायपिम्हू  
। सु० । नहिंधारै अवधूत प्या० ॥ ७ ॥ कुवचन केहनो सांजली । सु० । न  
धरै मनमें क्रोध । प्या० । मधुकरनीपरै मालता । सु० । उंचनींच कुलसोध प्या०  
॥ ८ ॥ लाधेजानौ देहनै । सु० । अणलाधै तपधार । प्या० । ओसरमोसर  
देखनें । सु० । रसलंपट नहीहोय । प्या० ॥ ९ ॥ किरियां करतां साधुजी । सु०  
आलस नकरे कोय ॥ प्या० ॥ परिसहजीते आकरा । सु० । कर्मकरे सबदूर  
प्या० । मुनिवर मधुकर समकह्या । सु० । दिन २ बधते नूर । प्या० ॥ १० ॥  
जंगम तीरथ सारषा ॥ सु० ॥ धरमतणा आधार । प्या० । एहवा मुनिवर पूज  
तां । सु० । पावै वंजित सार ॥ प्या० ॥ ११ ॥ धरमविसाल दयालनो । सु०  
सुमति कहै करजोर । प्या० । एहवा श्रीमुनिराजजी । सु० । सुऊ माथेका  
मोर । प्या० ॥ १२ ॥ नैं झैं परमात्म० सर्वसाधुभ्योऽष्ट द्रव्यंयजामहे० ॥ इति

## ॥ ❀ ॥ अथ कलसकी पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ अब पूजा हे कलसकी । सुणियो तुम नर नार । सांज  
जतां सुख पामसो । सफल हुसी अवतार ॥ १ ॥ ऐसी फारु मोहनी । सजा  
सह हरखाय । सेवो जगतकी मोहनी । ए जग सार कहाय ॥ २ ॥ मंत्रमांह  
सिरदारहै । पंच परमेष्ठी एह । सरवारथ सिधी कहौ । गणधर गौतम जेह  
॥ २ ॥ जेहनें एहनी आसता । तेहनें एह सहाय । जागहीन नर मूढकुं ।  
होत नहीं फलदाय ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ ढाल प्रश्न तथा उत्तर ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चंगीमें चंगी कोन जगतकी मोहनी । चंगीमेंचंगी जान जिणंद  
पद मोहनी ॥ १ ॥ सुखी जगतमें कोन कहो मन जावना । सुखी वोही  
संसार परम पद जावना ॥ २ ॥ सब देवनमें देव कहो कुण जाणना । सब  
देवनमें देव बडो जिन जाणना ॥ ३ ॥ सबमें मोटो ध्यान कहो कुण सा  
जना । सबमें मोटो ध्यान सुकल तुम जाणनां ॥ ४ ॥ धरम वक्तो जगमांहि  
कहो कुण साजना । दया धर्म जगमांहि बडो है साजना ॥ ५ ॥ शिव रम  
णीको नाथ कहो कुण साजना । शिव रमणीको नाथ सर्व सिध जाणना  
॥ ६ ॥ धरममें मोटो कोण कहो मेरे साजना । धरममांहि सुजनाव सुणो  
मेरे सा० ॥ ७ ॥ दाता कहियै कोन कहो मन जावना । गुरु बडे दातार  
धरम धन पावना ॥ ८ ॥ मीठी जगमें कोन कहो मन जावना । मीठी जि  
नकी वाणि धरो चित चाहना ॥ ९ ॥ मीठी दाख खजूरके मीठी चाहनी ।  
जिणसें अधिकी होय वाणी जिनरायनी ॥ १० ॥ सब व्रतमें कुण सार कहो  
मेरे साजना । सब व्रतमें व्रतसार चोथो व्रत जाणना ॥ ११ ॥ खरतर गह  
पति चंदसूरीश्वर सोहता । सकल विमल गुणगेह जविक मन मोहता ॥ १२ ॥  
प्रीतसागरगणि सीम सकल गुण राजता । अमृत धर्म उदार वाचक पद आ  
जता ॥ १३ ॥ पाठकमें परधान कृपा गुण मारता । तसु शिष्य धर्म विशाल  
मुनीव्रत धारता ॥ १४ ॥ सुमति कहै गुणसार जविक मन मोहता । वी  
कानेर मजार सकल मन मोहता ॥ १५ ॥ संव सकल सुखदाय सेवो प्रभु  
जावसुं । पूजरची चितजाय अधिक बलदावसुं ॥ १६ ॥ संवत सय जगणीसक



। ज०। पंचमपदमें ए मुनिपूजो । सदाहुवै सुखकार । ज० स० ॥ १२ ॥ पंच  
मन्त्रारे ठेहमै होसी । दुपसहसूरि दयाल । ज० । इत्यादिक एग्रीप अठौमें ।  
वंडु साधु कृपाल ॥ ज० स० ॥ १३ ॥ धरमविशाल दयाल पसायै । पूज  
रची सुखदाय । ज० । सुमतिकहै एपंचपरमेष्टी । कामधेनु कहवाय ज० स० ॥

॥ ❀ ॥ ढाल दूजी ॥ चालपाणिहारीकी ॥ ❀ ॥

॥ सुणप्याराजी । सुणतांआसीस्वाद प्याराजी । धरम सनेही साधुजी ॥  
सु० ॥ करता परनुपगार प्या० ॥ लालच लोभ न जेहनें । सु० । नहिरा  
खे द्वेषलगार प्या० । ममता माया भोरनें ॥ सु० ॥ धरै व्रत सुखकार  
प्या० ॥ १ ॥ गाम नगर पुर पाटणें सु० । करता धर्म व्यापारप्या० ॥ राग द्वेष  
मुनिराजनें ॥ सु० ॥ नहीकोई विषय विकार प्या० ॥ २ ॥ उपगारी सिरसेह  
रो । सु० । कुमतिकरे परिहार प्या० । विनकारण मुनिराजजी ॥ सु० ॥ ज्वय  
जीव हितकार प्या० ॥ ३ ॥ ग्यानी ध्यानी सूरमा । सु० । महमा करत नरेस  
प्या० ॥ वाणी अमृत सारसी । सु० । सुणतां हरख हमेस प्या० ॥ ४ ॥ अनेक  
जीवप्रतिबूजिया । सु० । धरमतणा परधान । प्या० । मायानकरे साधुजी सु०  
नहिविकथा नहीमान प्या० ॥ ५ ॥ पंचमहाव्रत धारता । सु० ॥ ऐसे दीनदया  
ल । प्या० । सुमति धारक पांचवै । सु० । गुपतीना रखवाल प्या० ॥ ६ ॥  
उद्देसक आदेकरी । सु० । कृतकमनें बलिदूत । प्या० । सिज्यातर रायपिम्कूं  
। सु० । नहिंधारै अवधूत प्या० ॥ ७ ॥ कुवचन केहनो सांजली । सु० । न  
धरै मनमें क्रोध । प्या० । मधुकरनीपरै मालता । सु० । उंचनींच कुलसोध प्या०  
॥ ८ ॥ लाधेजामौ देहनै । सु० । अणलाधै तपधार । प्या० । ओसरमोसर  
देखनें । सु० । रसलंपट नहीहोय । प्या० ॥ ९ ॥ किरियां करतां साधुजी । सु०  
आलस नकरे कोय ॥ प्या० ॥ परिसहजीते आकरा । सु० । कर्मकरे सबदूर  
प्या० । मुनिवर मधुकर समकहा । सु० । दिन २ बधते नूर । प्या० ॥ १० ॥  
जंगम तीरथ सारषा ॥ सु० ॥ धरमतणा आधार । प्या० । एहवा मुनिवर पूज  
तां । सु० । पावै वंजित सार ॥ प्या० ॥ ११ ॥ धरमविसाल दयालनो । सु०  
सुमति कहै करजोर । प्या० । एहवा श्रीमुनिराजजी । सु० । सुऊ माथेका  
मोर । प्या० ॥ १२ ॥ ॐ क्लीं परमात्म० सर्वसाधुभ्योऽष्ट द्रव्यं यजामहे० ॥ इति

## ॥ ❀ ॥ अथ कलसकी पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ अब पूजा हे कलसकी । सुणियो तुम नर नार । सांज  
लतां सुख पामसो । सफल हुसी अवतार ॥ १ ॥ ऐसी मारुं मोहनी । सजा  
सहू हरखाय । सेवो जगतकी मोहनी । ए जग सार कहाय ॥ २ ॥ मंत्रमांह  
सिरदारहै । पंच परमेष्ठी एह । सरवारथ सिद्धी कह्यौ । गणधर गौतम जेह  
॥ २ ॥ जेहनें एहनी आसता । तेहनें एह सहाय । जागहीन नर मूढकुं ।  
होत नहीं फलदाय ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ ढाल प्रश्न तथा उत्तर ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चंगीमें चंगी कोन जगतकी मोहनी । चंगीमेंचंगी जान जिणंद  
पद मोहनी ॥ १ ॥ सुखी जगतमें कोन कहो मन जावना । सुखी वोही  
संसार परम पद जावना ॥ २ ॥ सब देवनमें देव कहो कुण जाणना । सब  
देवनमें देव बडो जिन जाणना ॥ ३ ॥ सबमें मोटो ध्यान कहो कुण सा  
जना । सबमें मोटो ध्यान सुकल तुम जाणनां ॥ ४ ॥ धरम बनो जगमांहि  
कहो कुण साजना । दया धर्म जगमांह बडो है साजना ॥ ५ ॥ शिव रम  
णीको नाथ कहो कुण साजना । शिव रमणीको नाथ सर्व सिद्ध जाणना  
॥ ६ ॥ धरममें मोटो कोण कहो मेरे साजना । धरममांहि सुजजाव सुणो  
मेरे सा० ॥ ७ ॥ दाता कहियै कोन कहो मन जावना । गुरू बडे दातार  
धरम धन पावना ॥ ८ ॥ मीठी जगमें कोन कहो मन जावना । मीठी जि  
नकी वाणि धरो चित चाहना ॥ ९ ॥ मीठी दाख खजूरके मीठी चाहनी ।  
जिणसें अधिकी होय वाणी जिनरायनी ॥ १० ॥ सब व्रतमें कुण सार कहो  
मेरे साजना । सब व्रतमें व्रतसार चोथो व्रत जाणना ॥ ११ ॥ खरतर गह्व  
पति चंदसूरीश्वर सोहता । सकल विमल गुणगेह जविक मन मोहता ॥ १२ ॥  
प्रीतसागरगणि सीस सकल गुण राजता । अमृत धर्म उदार वाचक पद गा  
जता ॥ १३ ॥ पाठकमें परधान कृपा गुण मारता । तसु शिष्य धर्म विशाल  
मुनीव्रत धारता ॥ १४ ॥ सुमति कहै गुणसार जविक मन सोहता । वी  
कानेर मजार सकल मन मोहता ॥ १५ ॥ संघ सकल सुखदाय सेवो प्रभु  
जावसुं । पूजरची चितलाय अधिक बलदावसुं ॥ १६ ॥ संवत सय जगणीसक

तेपन जाणीयै । माह सुद चवदश बार मंगल मन आणीयै ॥ १७ ॥ जणतां  
गुणतां एह सदा सुख पामसै । घर घर मंगल माल हुवै जिननामसै ॥ १८ ॥  
॥ इति श्रीसुमति मंरुणजीकृत पंचपरमेष्ठी पूजा संपूर्ण ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री सिद्ध गिरि निनाणुं प्रकारी पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम ध्वज पूजा ॥ ❀ ॥

॥ श्रीरूपनायनमः ॥ दूहा ॥ रूपनादिक जिनवरनमी । प्रणमी सज्जुपाय ।  
पुंरुगीक गिररायनी । पूजकरुं सुखदाय ॥ १ ॥ सजल शिखर गिरवर सरस ।  
फरस्यां पाप पुलाय । कनकाचल सहुशिरतिजो । वंधां सहु दुःखजाय ॥ २ ॥  
नाम लियां सुख संपजै । घर बैठां सुज जाव । सफल जन्म जात्रा करै ।  
जव जल तारन नाव ॥ ३ ॥ जव जव जमता मानवी । पामे दुःख अनंत ।  
पुंरुगिर जेटे तिके । तुरत लहै जव अंत ॥ ४ ॥ कल्पवृक्ष चिंतामणी ।  
जंत्रमंत्र जग जोय । ए महिमा सहुकारमी । गिरवर सम नहिकोय ॥ ५ ॥  
प्रथम ध्वजा लेईकरी । चाढो गिरवर शृंग । विजय सदा जगमें हुवै । दिन  
दिन अधिक सुरंग ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ढाल ॥ चित हरखधरी । अनुजवरंगे बीसपरमपदसेविये ॥  
॥ एचाल ॥ गिरराज जयो श्रीसिद्धाचल तीरथ रयणे पूजियै । महाराज  
जयो श्रीरिसहेसर जविजन जावै पूजीयै ॥ वर मोहन ध्वज पूजा करियै ।  
चितचोखे जगमै जसचरियै । जिनराज सरण जवि अनुसरियै ॥ गि० १ ॥  
इहां पुंरुगीक गण धर आया बै । तिणपुंरुगीक नाम कहाया बै । सिद्धदेव  
नमी सुख पायाबै ॥ गि० ॥ २ ॥ विमलाचल गुण मणि दरियोबै । सुरगिर  
महागिरि गुण जरियोबै । बलि पुन्यरासि मन धरियोबै ॥ गि० ॥ ३ ॥ बलि  
श्रीपत परवत सुखकारी । बलि इंद्र प्रकास ते चितधारी । सास्वत ए गिरवर  
चित्रापी ॥ गि० ॥ ४ ॥ दृढसक्ति मुक्तिनिलो कहियै । अरु पुष्पदंत मन स-  
रदहियै । महापद्म सुठाम सदा कहियै ॥ गि० ॥ ५ ॥ बलि पृथ्वीपीठ सुजद्र  
वारु । कैलास गिरि कहियै सुखकारु । पातालमूल जविहेतारु ॥ गि० ॥ ६ ॥  
बलि अकरम नामें एह जाणो । सर्व कामद बलि मनमें आणो । गिर गुण  
गातां मन हुल साणो ॥ गि० ॥ ७ ॥ ए इक्कीस गिरंद नामा । ध्यावो जवि

जन तुमे सुखकामा । कहै सुमति सदा ए अजिरामा ॥ गि० ॥ ८ ॥ इति ॥ काव्यं ॥  
 देवा सुरेंद्र नर नागर मर्चितेभ्यः । पापः प्रणासकर जव्य मनोहरेभ्यः । घंटा  
 ध्वजादि परिवार विन्तुषितेभ्यः ॥ नित्यं नमो सिद्ध गिरींद्र जिनालयेभ्यः ॥ १ ॥  
 ॐ ह्रीं श्री परमात्मने अनंतानंत ज्ञानशक्तये जन्म जरामृत्यु निवारणाय  
 श्री विमलाचल तीर्थ स्थित जिनेंद्राय ध्वजां यजा महे स्वाहा ॥ पचरंगी  
 धजा चढावै ॥ इति ध्वज पूजा ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ दूसरी जल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ निर्मल जल कलसा नरी । पूजो श्रीजिनराय । पूजत  
 अनुभव गुणलहै । पाप पंक मल जाय ॥ १ ॥ ॥ ढाल ॥ आज आयोरे उठाह  
 जीवडा नाच जिणंद आगै ॥ ❀ ॥ आज हरख धरी गिरवर पूजन करियैरे ॥  
 आ० ॥ कलस अठोत्तर सो मनरंगानिरमल जल नरियै अतिचंग ॥ आ० ॥  
 गंगादिक तीरथना जाण । अवर सुजल पूजो जग जाण ॥ आ० ॥ इणपर  
 न्हवण करो जिनराज । नवियण सारो बंढित काज ॥ आ० ॥ इणगिर ऊपर  
 रुषन जिणंद । समवसरया नवियण सुखकंद ॥ आ० ॥ २ ॥ महियल मोटो  
 ए गिरि जाण । नवियण जेटो सुखनी खाण ॥ आ० ॥ कंकर २ साधु अनंत  
 सिद्ध थया जाण्यो जगवंत ॥ आ० ॥ ३ ॥ हिव सुणज्यो सगलो अधिकार ।  
 चित थिर राखी करो गुण धार ॥ आ० ॥ मन तन उजसै सुणतां एह । तत  
 खिणपावै करमनो ठेह ॥ आ० ॥ पातिक टाली पूजो देव । जिम सुख पावो  
 नित्य अठेह ॥ आ० ॥ महियल मोटो ए गिरराय । श्री सुख जाखे श्री जिन  
 राय ॥ आ० ॥ ५ ॥ प्रथम अजित सोलम प्रनु ध्यान । करके पूजो गिरराजां  
 न ॥ आ० ॥ इणपर सुमति कहै हित आण । जिनपद सेव्यां कोड कल्याण  
 ॥ आ० ॥ ६ ॥ काव्यं ॥ देवा सुरेंद्र नर नागर मर्चितेभ्यः, पापः प्रणा सकर  
 जव्य मनो हरेभ्यः । घंटाध्वजादि परिवार विन्तुषितेभ्यः । नित्यं नमो सिद्ध  
 गिरींद्र जिनालयेभ्यः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने अनंतानंत ज्ञानशक्तये  
 जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्री विमलाचल तीर्थाय जलं यजा महे स्वाहा ॥  
 इति जल पूजा ॥ २ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ तीसरी चंदन पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ निर्मल केसर चंदन । पूजो श्रीजगदीस । प्रेम धरी  
 पूजा करो । सुखपावो निस दीस ॥ १ ॥ नगर अजोध्यानो धणी । श्रीजि  
 तशत्रु नरेस । विजयाराणी शीखनी । सोजाकरै सुरेस ॥ २ ॥ जिण जायो  
 सुत जग धणी । जीत्या रिपु दल जास ॥ अजित कुंवर राजा कियो । नाम  
 जिसो परकास ॥ ३ ॥ ढाल ॥ श्रीचंद्राग्रजू जिनवर साहिब ( इस चालमें )  
 अजित जिनेसर जग परमेसर । तुमहो पर उपगारा ॥ मेंवारीजाऊं तुं ॥  
 बावनाचंदन केसर घोली । कस्तूरी घनसारा ॥ में० ॥ जाव जगतसुं प्रनु  
 गुण गावो । पूजो जग जरतारा ॥ में० अ० ॥ १ ॥ मिथ्यातम जर दूर  
 निवारी । सेवो प्रनु अविकारा ॥ में० ॥ राज राजेसर जगपति जिनवर ।  
 चक्री अजित उदारा ॥ में० अ० ॥ २ ॥ परउपगारी तुं परमेसर । जेठ्यां  
 जय जय कारा ॥ में० ॥ जिम २ परमल पसरै तेहथी । सोजा अधिक  
 उदारा ॥ में० अ० ॥ ३ ॥ नूमंरुल विचरंता प्रनूजी । बहु चेतन सुखकारा  
 ॥ में० ॥ पुंरुरीक पर अजित जिनेसर । चौमासोतिहां धारा ॥ में० अ०  
 ॥ ४ ॥ सिंहसेनादिक गणधरथापी । पंचाणू हितकारा ॥ में० ॥ एक लाख  
 सुनि सुद्रा धारी । जरिया गुण मणि धारा ॥ में० अ० ॥ ५ ॥ चौथा आरानें  
 मध्यज जागै । अजित हुवा अविकारा ॥ में० ॥ बोहत्तरलख पूरवनो आज ।  
 कीधा जग जयकारा ॥ में० अ० ॥ ६ ॥ सोलम जिनवर शांतिजिनेसर ।  
 अचिरा नंद उदारा ॥ में० ॥ विमलगिरिंद पर कर चौमासो । करम कलंक  
 निवारा ॥ में० अ० ॥ ७ ॥ विश्वसेन कुलजाण विराजै । जगजीवन हित  
 कारा ॥ में० ॥ श्रीहथणापुर मंरुण स्वामी । सुमति सदा दातारा ॥ में० अ०  
 ॥ ८ ॥ काव्यं ॥ देवा सुरेंद्र० पूर्वलीपरें संपूर्ण कहोजै ॥ ॐ श्री श्रीपरमा  
 त्म० ॥ इति चंदन पूजा ॥ ३ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ चौथी पुष्प पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ पूज चतुर्थी इणपरें । कुसुम सुगंध सुजोय । जव्य मनो  
 रथ पूरवै । घर घर मंगल होय ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ढाल ॥ जिनराज नाम तेरा । हो महाराज नाम तेरा ॥ हो०

॥ ❀ ॥ विमलगिरि नाम तेरा । हो कनकगिरि नाम तेरा ॥ हो सेवोरे  
 उज्जलगिरि रसमें ॥ हो० नु० ॥ मचकुंद कुंद जाणो । चंपो गुलाब आणो ।  
 पूजो जिनंद जाणो ॥ हो० नु० ॥ १ ॥ कर्मावसी जु राजै । जिनबिंब  
 बहोत गजै । जोतां मिथ्यात जाजै ॥ हो० नु० ॥ २ ॥ मोतीवसी जुहारो  
 मनकामना जु सारो । दिलमां हैं एहि धारो ॥ हो० नु० ॥ ३ ॥ बालावसी  
 जिणंदा । निरण्यांहि सुख कंदा । अछारे चैत्य बंदा ॥ हो० नु० ॥ ४ ॥  
 पेमावसी जु प्यारा । जेदो जिनंद सारा । वंघांथी सुख कारा ॥ हो० नु०  
 ॥ ५ ॥ हेमावसी जु वंदो । अजितादि सुख कंदो । सेवो जिनंद चंदो ॥  
 हो० नु० ॥ ६ ॥ उज्जमवसी जु राजै । नंदीश्वर जाव गजै । सेवोथे सुख  
 काजे ॥ हो० नु० ॥ ७ ॥ साकरवसी जु जावै । जेठ्यांसुं पाप जावे । देख्यांसुं  
 सुख थावे ॥ हो० नु० ॥ ८ ॥ गींपावसी जु ध्यावो । वंछित सुख पावो ।  
 मनमांहि जावलावो ॥ हो० नु० ॥ ९ ॥ खरतरवसी जु सोहै । जिनराज  
 मन्न मोहै । निरख्यांसुं सुखहोवै ॥ हो० नु० ॥ १० ॥ इत्यादि जावजाणो ।  
 गुरुयांन मन्न आणो । संकादिचित्त नांणो ॥ हो० नु० ॥ ११ ॥ सुमतादि  
 ध्यानध्यावो । गुण नाथनाजु गावो । मन जाव एहि जावो ॥ हो० नु० ॥ १२ ॥  
 ॥ काव्यपूर्वनीपरें ॥ नै क्षी श्रीपरत्मा० ॥ इति पुष्प पूजा ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पांचमी धूप पूजा ॥ ❀ ॥

( दूहा ) धूपपूज ए पांचमी । करता जवि सुखदाय । धूपघटी जिम मह  
 महे ॥ तिम तिम पातिक जाय ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ यात्रानिनाणुं करियै विमलगिरि यात्रा० ॥ ए चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इण विधि पूजन करियै विमलगिरि ॥ इ० ॥ कृष्णागरनें मृगमद  
 अंबर । गंधवटी अनुसरियै ॥ वि० इ० ॥ १ ॥ चीरुसेट्टहारस तुरक जलेरो ।  
 इणविध पूजन करियै ॥ वि० इ० ॥ केसर चंदन मृगमद कुंकुम । जाव जलै  
 अनुसरियै ॥ वि० इ० ॥ २ ॥ उज्जल अमल अखंमित तंडुल । दीप अखंरु  
 जु धरिये ॥ वि० इ० ॥ पुष्प सुगंध गुलावना लेइ । पूजो इणगिरिवरियै ॥  
 वि० इ० ॥ ३ ॥ साधू साहमी जगति करीनें । आतम निरमल करियै ॥ वि०  
 इ० ॥ पांचे पांमव इणगिरि पूजो । नवनारद मुनि वरियै ॥ वि० इ० ॥ ४ ॥



गिरवर ऊपर पांचे ठामें । पूजकरी अब हरियै ॥ वि० इ० ॥ कलस अठोत्तर  
 सो लेईनै । न्हवण जली विध करियै ॥ वि० इ० ॥ ५ ॥ मूलनायक श्री  
 आदि जिनेसर । इण गिरिपर समोसरियै ॥ वि० इ० ॥ जाव जगतसुं जि  
 ननी पूजा । करतां सहु सुख वारियै ॥ वि० इ० ॥ ६ ॥ लहि अवतार ए गिर  
 नहीं फरसे । तो किम जवजल तरियै ॥ वि० इ० ॥ पुंरगिरिनो ध्यान धरीनै  
 पुन्य खजानो जरियै ॥ वि० इ० ॥ ७ ॥ ए गिरनी आसातना टाली । जात्र  
 करी निसतरिये ॥ वि० इ० ॥ सगतबतां जो संव लेईनै । आवै इण गिर  
 वारियै ॥ इ० ॥ ८ ॥ द्रव्य जावसुं पूजन करिनै । पाप पंक अपहरियै ॥ वि०  
 इ० ॥ सुमतिकहै धन २ ए गिरवर । पूजौ जवि सुख करियै ॥ वि० इ०  
 ॥ ९ ॥ ॥ काव्य पूर्ववत् ॥ ॐ श्री श्रीपरत्मा० ॥ इति धूपपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ठी दीपपूजा ॥ ❀ ॥

( दूहा ) ठी पूजा दीपनी ॥ करो जविक सुखकार । विमलबोध पावो  
 तुमे । ज्ञानदीप सुविचार ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पासजिनंदा प्रभु मेरे मनवसिया ॥ पा० ॥ एचाल ॥ आदि  
 जिणंदा प्रभु सेवो सुखकारी ॥ आ० ॥ निरमलबोध विकासक दीपक । दिन २  
 जोत अधिक सुखकारी ॥ आ० ॥ १ ॥ अनुजवदीपक प्रगट जयोहै । सक  
 ल चराचर जाव विचारी ॥ आ० ॥ केवल ज्ञानी प्रथम तीर्थकर । समोवस  
 रया जवियण हितकारी ॥ आ० ॥ २ ॥ फागुण सुद आठमनें दिवसै । रुष  
 जदेव आया सुविचारी ॥ आ० ॥ जरथपुत्र चैत्रीपूनमदिन । इणगिर आया  
 जवि मनधारी ॥ आ० ॥ ३ ॥ नमि विनमी राजा विद्याधर । पुंर गिर सेवै  
 इकतारी ॥ आ० ॥ पोतरा प्रथम तीर्थकर कैरा । द्रावरुनें वारखिल विचारी  
 ॥ आ० ॥ ४ ॥ कातीसुदपूनम दिन सीधा । दसकोनी मुनि साथ उदारी ॥  
 आ० ॥ पांचे पांरुव इणगिर सीधा । नव नारद निज काज सुधारी ॥ आ०  
 ॥ ५ ॥ संव प्रजुन्न गया इहां मुगतै । आठ करम दल दूर निवारी ॥ आ० ॥  
 नेमि विना तेवीस तीर्थकर । समवसरिया जवियण उपगारी ॥ आ० ॥ ६ ॥  
 ए गिरराजना गुणगणगातां । सफल हूवै आतम सुविचारी ॥ आ० ॥ ए गिर  
 राजनी पूजा जगमें । जवजल पार उतारण हारी ॥ आ० ॥ ७ ॥ द्रव्य

जाव सुं पूजन करियै । कुमति कुदलता दूर निवारी ॥ आ० ॥ कहै सुमति  
सेवो इकतारी । इण तीरथनी जावुं बलिहारी ॥ आ० ८ ॥ ❀ ॥  
इति ॥ काव्यपूर्ववत् ॥ ॐ क्षी श्रीपरत्मा० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सातमी अद्वतपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ( दूहा ) उज्जाल तंडुल लेयनें । पूजो दीन दयाल । स्वस्तिक करतां वि  
स्तरे । घर २ मंगल माल ॥ १ ॥ तुमविन दिनानाथ दया निध  
कोंन खबरले मेरीरे ॥ एचाल ॥ गिरिवर जेटण जविजन आवे । मनवंठित  
फल पावैरे । उज्जाल तंडुल थाल जरीनें । वधावो गिरिरायारे । अष्टमंगल  
प्रभु आगल धरियै । निरमल सुध सुहायारे ॥ नि० ॥ २ ॥ ए गिरिमहिमा  
जिनसुख सुणके । चक्री मन हुलसावैरे । जरथराय षट्खंरुको नायक । संघ  
लेई इहां आवैरे ॥ गि० ॥ २ ॥ सोनानो प्रसाद करावै । रयणी मूरती ठा  
वैरे । जाव जगति सुं पूजा रचावै । प्रभु चरणे चितलावैरे ॥ गि० ॥ ३ ॥  
जरततणें अष्टम पट्टसोहै । दंरुवीरज महाराजारे । संघलेई उधार करावै ।  
संचे सुज फल ताजारे ॥ गि० ॥ ४ ॥ ईशानेंद्र करायो तीजो ।  
चोथो माहेंद्र करावैरे । पांचमो उद्धार ब्रह्मइंद्रनो । सुर नर मिल  
जस गावैरे ॥ गि० ॥ ५ ॥ षठो उधार जुवनपतीनो । सातमो  
सगरनो जाणोरे । आठमो व्यंतर इंद्र करावै । जविजन मनमें आणोरे ॥ गि०  
६ ॥ चंद्रजसराय उधार करावै । नवमो जविसुख कंदारै । शांतिनाथ सुत  
दशमो जावै । उधार करे आनंदारे ॥ गि० ॥ ७ ॥ दशरथराय सुतन गुण  
आगर । रामचंद्र जल जावैरे । उद्धार इग्यारमो एह करायो । बारमो पांडु  
करायोरे ॥ गि० ॥ ८ ॥ तेरमो उद्धार जावडशाहनो । चवदमो बाहडदेह नोरे  
समरेसाह करायो जावै । पनरमो सहसुखदैनोरे ॥ गि० ॥ ९ ॥ संवतसतरैसै  
सित्यासै । वैशाखवदि सुजवारोरे । करमें मोसी करायो जावै । एसोलमउद्धार  
रोरे ॥ गि० ॥ १० ॥ तिणकारण ए तीरथ मोटो । सहुतीरथ सिर राजारे ॥  
कहै सुमति पूजो जलजावै । पावोज्युं सुखपाजारे ॥ गि० ॥ ११ ॥ इति ॥  
काव्यपूर्ववत् ॐ क्षी श्रीपरत्मा० ॥ इति अद्वतपूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ आठमी नैवेद्यपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ मोदेक मोतीचूरना । सींहकेसरिया सार । इत्यादिक  
 नैवेद्यले । पूजकरो सुखकार ॥ १ ॥ ॥ सिद्धचक्रपदवंदोरे । जविका ॥  
 ॥ एचाल ॥ श्री सिद्धाचल पूजोरे । जविका । इणसम गिरिनहीं दूजोरे  
 जविका ॥ श्री० ॥ मोदेक मोतीचूरना लेई । नैवेद्यपूजा करियेरे ॥ ज० ॥  
 सिंहकेसरिया दालिया केई । मोदेक इण विध धरियेरे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ १ ॥  
 ललितसरोवर पेखो जावै । बलि सत्तानीवावरे ॥ ज ॥ तिहां विसरामो  
 जविजन लेवै । वरुनैं चोतरे आवरे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ २ ॥ सेवुं  
 जानीपाजै चढतां । आणंद अंग नमावरे ॥ ज० ॥ दूरथकी सेवुंजो दीसै ।  
 सुंदर रूप सुहावैरे ॥ ज० श्री ॥ ३ ॥ हिंशुलाजहमै चढके पूजो । कलि कुं  
 पासकुमाररे ॥ ज० ॥ बारी मांहेपैसी जविजन । जेटो आदि दीदाररे ॥  
 ज० श्री ० ४ ॥ मरुदेवीटुंक मनोहर दीसै । गजपर बैठा सोहैरे ॥ ज० ॥  
 शांतिनाथ सोलम उपगारी । जविजनना मन मोहेरे ॥ ज० श्री० ५ ॥ वंस  
 पोखामे जगत वदीतो । सोमजी साह मल्हाररे ॥ ज० ॥ रूपजी साह करायो  
 जावै । चौमुख मूल उद्धाररे ॥ ज० श्री० ॥ ६ ॥ नेमनाथ चवरीदेखीने । देखो  
 धरमपुवाररे ॥ ज० ॥ आदीसरना चरण पखाली । पूजो विविध प्रकाररे ॥  
 ज० श्री० ॥ ७ ॥ जमतीमांहे विंव विराजै । कहतांनावै पाररे ॥ ज० ॥ पुंरु  
 रीकणाणधर गुरु पूजो । शांतिनाथ सुखकाररे ॥ श्री० ८ ॥ चेजणात  
 जाई सिद्धसिलानें । सिद्धवरुजूनो कहियेरे ॥ ज० ॥ पुंरुगिरनी जमतीमांहे  
 एहसहुसरदहियेरे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ९ ॥ जलकाजोलनैं जाडवडूंगर । हस्तागि  
 रीफिरनमियेरे ॥ ज० ॥ कदमगिरीपरचरणजिनेश्वर । जेट्यांसहुसुखलहियेरे  
 ॥ ज० ॥ १० ॥ घरवैठां जो जावकरीनैं । मनशुद्ध जावनाजावैरे ॥ ज० ॥  
 सुमतिकहै ते धनधन कहिये । जात्रानो फल पावैरे ॥ ज० श्री० ॥ ११ ॥  
 काव्य पूर्ववत् ॥ ॐ क्लीं श्री परमात्मने० ॥ इति नैवेद्यपूजा ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ नवमी फलपूजा ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ निर्मल फलपूजा करो । उत्तमफल सुखकाज । जविजन  
 पूजो जावसुं । सरै सहसुजकाज ॥ १ ॥ ढाल ॥ रामतरमवामें गइथी । मोरी

सहीयरकै० ॥ एचाल ॥ आदीसर पूजाकरो । एतो सिद्ध गिरीनो रायो हेमाय  
 सदगुरुने परसादथी । एतो दरसणदेवनो पायो हेमाय ॥ आ० ॥ १ ॥ आंवा  
 दासिम लेयने । एतो फलपूजा इमकीजैहे माय । श्रीफल पूंगीफल जला ।  
 एतो जेटकरी फललीजै हे माय ॥ आ० ॥ २ ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनी । एतो  
 सेवाथी चितलायो हे माय । मिथ्यामत राचै थकै । एतो काल अनंत गमायो  
 हे माय ॥ आ० ॥ ३ ॥ हिवसेवा प्रनु ताहरी । एतो चाहुं देव सवायोहे माय ।  
 सिद्धाचल गिरिरायनो । एतो मंरुण आदि कहायो हे माय ॥ आ० ॥ ४ ॥  
 धन्य दिवस धन्यते घसी । एतो धन मरुदेवी जायो हेमाय ॥ पूरबनिनाणूं  
 समोसरया । एतो आदीसर महारायोहेमाय ॥ आ० ॥ ५ ॥ अष्टोत्तर  
 सत नामढे । एतो शास्त्रथकी तेजाणो हेमाय । एसहु नामजप्यां थकां । एतो  
 प्रगट्यो परम कल्याण हेमाय ॥ आ० ॥ ६ ॥ सुकराजा इहां आयने । एतो ध्यान  
 धरै षट्मासी हे माय । चंद नृपति गिरि जेटतो । एतो पाम्यो सुखनीरासी हे  
 माय ॥ आ० ॥ ७ ॥ अनंतजीव सुगतेगया । में तो नमणकरुं चित धारीहे माय  
 गिरवर दरसण देखतां । एतो मोहै सहु नर नारी हे माय ॥ आ० ॥ ८ ॥ धन २  
 ए गिरिरायना । एतो गुणगायो सुखदायो हे माय । सुमतिकहै जिन राजनी  
 एतो सेवाथी सुखपायो हे माय ॥ आ० ॥ ९ ॥ काव्यपूर्ववत् ॥ ॐ क्ली  
 श्री परमात्म० ॥ इति फलपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ गुलाब जल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ निर्मल जल कुसुमै करी । वासित सरस सुगंध ॥ पूजो  
 जिनवर जग धणी । दूरकरो दुख धंध ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सिद्धचक्रपद बंदोरे जविका ॥ एचाल ॥ श्रीविमलाचल  
 पूजोरे ॥ जविका । तीरथ एहवोन दूजोरे । जविका ॥ श्री ॥ सुरजि गंधोदक  
 लेई जावै । ठिरुको जिनवर अंगरे ॥ ज० ॥ कुसुमैवासित उत्तम जलनी ।  
 वृष्टिकरो मनरंगरे । ज० । श्री० १ ॥ आदीसरना चरण पखाली । पूजो उठ पर  
 जातरे ॥ ज० ॥ गुणनो लख नवकार गुणीजै । दीय अठम ठठ सातरे । ज० ।  
 श्री० २ ॥ रथजात्रा परदक्षिणादीजै । पूजा विविध प्रकारे । ज० । धूप दीप  
 फल नैवेद्य मुंकी । नमियै नामहजारे । ज० । श्री० ३ ॥ आठ अधिक शत

हुंक जलेरी । मोटी तिहां इक्वीसरे ॥ ज० ॥ सेवुंजय गिरि हुंक ए पहिलुं । ना  
म नमो निसदीसरे ॥ ज० ॥ श्री० ४ ॥ सहस अधिक अठ मुनिवर साथे । बाहु  
बली शिवठामरे ॥ ज० ॥ तिणकारण ए गिरवर कहियै । त्रीजो मरुदेवीनामरे ॥  
ज० श्री० ५ ॥ पुंरुरीक गिरि नाम एचोथुं । पांचकोमि मुनि सिधरे । ज० ॥  
पांचमी हुंक रेवतगिरि कहियै । तिण ए नाम प्रसिधरे ॥ ज० ॥ श्री० ६ ॥ विम  
लाचल सिधराज प्रागीरथ । प्रणमीजै सिधहेत्रे । ज० ॥ ठरीपाली इणगिर जे  
दो । करियै जन्म पवित्रे । ज० ॥ श्री० ७ ॥ पूजाकरी प्रनुना गुणगावो । सा  
धोकाम अनेकरे ज० ॥ पुंरुर गिरना गुणगण गातां । निरमल आत्म विवेकरे ।  
ज० ॥ श्री० ८ ॥ देवकीनंदन पूजो जावै । थूलजद्र मुनिरायरे । ज० ॥ सुमतिमं  
रुण जिनराज पसायै । दिन २ आणंद थायरे ॥ ज० ॥ श्री० ९ ॥ इति काव्य  
पूर्ववत् ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमात्म० ॥ इति गुलाब जल पूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ इग्यारमी वस्त्र युगल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ प्रनु पूजो इग्यारमी । होमयुगल लेई सार । निरमल  
गुण धारी करी । पूजो जगजस्तार ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग घाटो ॥ मेरोमन वसकरलीनो । जिनवर प्रनुपास ॥ मे० ॥  
गिरवर मंरुणआदि । सुज्जनथांसुंलागो ॥ सु० ॥ विमलाचल तीरथराजै ।  
तीननुवन आल्हाद ॥ सु० ॥ १ ॥ सूरत मोहनीलागै । जागै प्रीत अनाद ॥  
सु० ॥ सुरनर वंदन आवै । पावै प्रनु परसाद ॥ सु० ॥ २ ॥ देश देशका जात्री  
आवै । पावे हरख अपार ॥ सु० ॥ मरु देवी नंदन वंदो । गावो गुण गण सार  
सु० ॥ ३ ॥ हेमनी चोरी कीनी । ए आलोयण तास ॥ सु० ॥ चढ चैत्री पूनम  
आवै । करै इक उपवास ॥ सु० ॥ ४ ॥ वस्त्रनीचोरीरे जेणें । कीनी जोलै जाव ॥  
सु० ॥ वारसात आंबिल करियै । जवियण सुज मन जाव ॥ सु० ॥ ५ ॥ स्तननी  
चोरी कीनी । तेजन सुध इमहोय ॥ सु० ॥ गिरिपर तपस्या कीजै ॥ आत्म  
निरमल होय ॥ सु० ॥ ६ ॥ पित्तलादि चोरी कीनी । ते सुध थायेकेम ॥ सु० ॥  
पुरमद्वसातजु करियै । धरियै मनमें प्रेम ॥ सु० ॥ ७ ॥ मोतीनीचोरी जुकीनी ।  
आंबिल कर जवितीन ॥ सु० ॥ धानादि चोरी कीनी । दैते वस्तु प्रवीण ॥ ८ ॥  
देवादिघन जो वांछै । तो सुधयाये एम ॥ सु० ॥ अधिको वित्तजोखरचै । मुनि

पोषैवहुप्रेम ॥ मु० ॥ ९ ॥ चौपद चौरीकीनी । दैते वस्तुनोदान ॥ मु० ॥ सरधासुं  
तपस्या कीजै ॥ दीजै मुनि सनमान ॥ मु० ॥ १० ॥ पुस्तक पारका देखी ।  
लिखै जो आपणो नाम ॥ मु० ॥ षट्मासी तपस्या कीजै । सामायकतिणठाम  
॥ मु० ॥ ११ ॥ कन्या परिब्राजका जाणो । सधव अथव गुरुनार ॥  
॥ मु० ॥ तिन संग व्रत जो जाजै । ठम्मासी तपसार । मु० ॥ १२ ॥  
॥ गो स्त्री बालक रुषिनी । आसातनाजेकीन ॥ मु० ॥ वस्त्र पात्र मुनिने  
दीजै । जावधरी लय लीन ॥ मु० ॥ १३ ॥ श्रीजिन पूजन कीजै । होम  
युगल अतिचंग ॥ मु० ॥ इशविध पूज रचावो । सुमतिक है मनरंग ॥ मु० ॥  
१४ ॥ इति ॥ काव्यं ॥ देवा सुरेंद्र नरनागरमर्चितेभ्यः । पापः प्रणासकर  
अव्यमनोहरेभ्यः । घंटा ध्वजा दिपरिवार विनूषितेभ्यः । नित्यं नमो सिद्धगि  
रेंद्र जिना लयेभ्यः ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने नंतानंत ज्ञान शक्तये  
जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेंद्राय वस्त्रं यजामहे स्वाहाः ॥ ११ ॥

॥ ❀ ॥ अथ कलश ॥ ❀ ॥

॥ रागधन्यासिरी ॥ तेज तरण मुख राजै ॥ एचाल ॥

॥ प्रनुजीकी पूजरची सुखकाजै । हांओ सुख काजै ॥ श्रीसिद्धाचल  
गिरवर ऊपर । मंरुण आदि विराजै । नाज्जनृपति मरुदेवीके नंदन । दरशण  
सुं दुःख जाजै ॥ हां० प्र० ॥ १ ॥ वीकानेर नगर अतिसुंदर । मरुधर देश  
विराजै । श्रीजिन सौजाग्य सूरि पटोवर । सकल गुणैकरी गाजै ॥ हां० प्र०  
॥ २ ॥ श्रीजिन हंससूरि खरतरपति । गुण गिरुवा गुरुराजै । प्रीत सागर  
गाणि सिष्य सुवाचक । अमृत धर्म सुठाजै । हां० प्र० ॥ ३ ॥ तसु सेवक  
पाठक पदसोहै । द्रुमा कट्याण गाणि राजै । तसु चरणांबुज सेवक अहनि  
स । धर्मविसाल विराजै ॥ हां० प्र० ॥ ४ ॥ सुमति मंरुण ए गिरनी पूजा ।  
रचिय संघ सुखकाजै । कुशल करण सह मुनिवरकी । प्रेरणया सुखका  
जै ॥ हां० प्र० ॥ ५ ॥ चूंपधरी चोखै चितचाहै । लिखी सकल सुत्रकाजै  
संवतसय उगणीस तीसमें । पूजरची हितकाजै । हां० प्र० ॥ ६ ॥  
जेठसुदी तेरस रविवारै । मुणतां सह दुःखजाजै । जावधरी गिरनां गुणगाया ॥



दिन २ अधिक दिवाजै ॥ हां० प्र० ॥ ७ ॥ इति श्रीपाठक सुमति मंरुणजी  
कृत सिद्धगिरीपूजा संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीआबूजी पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ ॥ श्रीजिनवर आराधियै । धरियै हियमे  
ध्यान । रुषन जिणंद दिणंद सम । दिन दिन चढतै वान ॥ १ ॥ आबू  
गिर पूजन रचुं । महियल मोटो ठाम । देस देसका संववी । आवी करै  
प्रणाम ॥ २ ॥ आबू अचल गढ दीपतो । महियल जाण सुमेर । देवलवानो  
अति दीपतो । महिमा थई चिहुं फेर ॥ ३ ॥ विमलसाह मंत्री थयो ।  
मोटो पुन्य पसाय । पातसाह बारै जणी । वस करिया सुखदाय ॥ ४ ॥  
तिणए तीरथ थापियो । आवूगिर सिरदार । चैत्य कराया जावसुं । खरची  
द्रव्य अपार ॥ ५ ॥ सुद्धोदक लेईकरी । पूजो आदि जिणंद । स्नात्रकरी  
जिनराजनी । पावो परमानंद ॥ ६ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम जलपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इक सुणलै नाथ अरज मेरी० ॥ एचाल ॥ बलिहारी आबू  
गिरवरकी ॥ व० ॥ आबू गिरिपर अदनुत सोहै । सूरत आदि जिनेसर  
की ॥ व० ॥ आस पास बहु जानी जंगी । मांहि गुफा जोगीसरकी ॥ बलि० ॥  
॥ १ ॥ देश देशके जात्री आवै । पूजरचै परमेश्वरकी ॥ व० ॥ विमलै मंत्री  
वस करलीनी । पातसाही बारै घरकी ॥ व० २ ॥ तिणए विंव जराया जावै ।  
महिमा आदि जिनेसरकी ॥ व० ॥ आठसै बहुतर जिनवर गजै । न  
दियां नीर सजल जरकी ॥ व० ३ ॥ कोरणी खूबवणी अति सुंदर । दिल  
जर दरसण सुखकरकी ॥ व० ॥ देराणी जेठाणीरा आला । कोरणि करी  
हदवेमरकी ॥ व० ॥ ४ ॥ अंगी चंगी अजब वणी है । सोवन वरण रतन  
वरकी ॥ व० ॥ सुमति कहै एतीरथ उत्तम । इनकुं नपम सुरगिरकी ॥ व० ॥  
॥ ५ ॥ ॐ ज्ञी आवूगिरेंद्राय तीरथ सीरोमणाय । श्रीआदिस्वराय जलं ॥ १ ॥

॥ ❀ ॥ अथ दूसरी चंदन पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ केशर चंदन लेयके । पूजो श्री गिरराज ॥ पूजत अनुभव  
गुणजहै । तारण तरण जिहाज ॥ अचल गढे जिनराजनो ॥ अति उत्तंग

प्रसाद । देख जविक हखितहुवै ॥ पावै परम आट्हाद ॥ २ ॥ राग सोरठ ॥  
 कुंद किरण शशि ऊजलोरे देवा ॥ एचाल ॥ आवू तीरथ पूजीयैरे ॥ वाल्हा ॥  
 तीरथ महिमा वंतोरे ॥ आठो जिनवर सहूजवि सेवियैरे ॥ वाल्हा ॥ आणी  
 ज्ञाव अनंतोरे ॥ १ ॥ आठो ॥ वस्तपाल तेजपालजीरे ॥ वा० ॥ लीनो  
 लखमी लाहोरे ॥ आ० ॥ मुद्रा बहु खरची करीरे ॥ वा० ॥ जसलीनो  
 जगमांहोरे ॥ २ ॥ आठो ॥ कोरणी जीणी सुंदरूरे । वा० । कीधी धर मन  
 रंगैरे ॥ आ० ॥ सुरगुरु पिणनहि कहीसकैरे ॥ वा० ॥ महिमा अधिक सुरंगैरे  
 ॥ ३ ॥ आठो ॥ बारैकोरु ऊपर सहीरे ॥ वा० ॥ लागा तेपन लाखोरे ॥ आ०  
 इतनो धन खरच्यो सहीरे ॥ वाला ॥ श्री संवकैरी साखोरे ॥ ४ ॥ आठो ॥  
 मूलनायक नेमी सरूरे ॥ वा० ॥ ब्रम्हचारी सिरदारोरे ॥ आठो ॥ च्यारसै  
 अमसठ सुंदरूरे ॥ वा० ॥ जिनवर बिंब उदारोरे ॥ ५ ॥ आ० ॥ सुमति सदा  
 इमवीनवैरे ॥ वा० ॥ तीरथनी बलिहारीरे ॥ आ० ॥ मन वंछित सगला  
 फलैरे ॥ वा० ॥ पूजत गिर सिरदारीरे ॥ ६ ॥ आ० ॥ ॐ ह्रीं आवू गिरंदाय  
 तीर्थसि० श्री आदीस्वराय चंदनं यजा महे ॥ २ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ तीसरी फूल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ ब्रम्हचारी जोगीसरू । जगपति नेम जिनंद ॥ वावीसम  
 जिन पूजतां । नितप्रति होत आनंद ॥ १ ॥ चंपक केतकि केवलो । विउज  
 सिरी मचकुंद ॥ मोगर मालति कुशमसैं । पूजो जवि सुख कंद ॥ २ ॥  
 सेहुंजानो वासी प्यारो लागै म्हांरा राजिंदा ॥ से० ॥ एचाल ॥ आवू  
 तीरथ जेटो म्हांरा राजिंदा ॥ जेटो ह्वाराराजिंदा जे० ॥ आ० ॥ इण  
 सम तीरथ ओरन कोई । मिथ्यातम सब मेटो । म्हां० । अमीऊरो  
 महाराज कहावै । देख्यां अति सुखपावै । म्हां० आ० १ । मनसुखजात्र करौ  
 जविप्रांणी । सुर नर मुनि गुणगावै । म्हां । सुंदर सूरत मूरति सोहै । देख्यां  
 प्रीत लगावै । म्हां० आ० २ । अवर अनेक जिन बिंब कहावै । दरस करत  
 दुख जावै । म्हां० । एगिर सहू सिरदार कहावै । जोगीसर बहुध्यावै । म्हां० ।  
 आ० ३ ॥ दूरथकी एगिखर निरखी । मोतियन थाल जरावै । म्हां० । दांन  
 मांन सनमान करीनें । तीरथ महमा गावै । म्हां० आ० ४ । विधसेती गिरवर

नितपूजै । लाज अनंत उपावै । म्हां० । संघपती संघ लैकै जावै । धन २  
तेह कहावै । म्हां० आ० ५ । पुष्पमाल गुंथी जविजावै । जिनवर पूज रचावै  
म्हां० । सुमतिकहै गिरराजकुं ध्यावै । वंछित सफल लहावै । म्हां० आ० ६ ॥  
ॐ क्षीं आवूगिरेंद्राय तीर्थसिरोम० श्रीआदीश्वराय पुष्पंयजामहे ॥ ३ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ चौथी धूप पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ धूप दशांग लेई करी । पूजो तीरथ राय । सुरजि सुगंधी  
महमहैं । इमजाखै जिनराय ॥ १ ॥ विमल अश्व वाहन धरी । सेवकरै  
जिनराज । अंबादेवी पूजतां । सफलकरै सबकाज ॥ २ ॥ मैं निरण्या  
गुरुमहाराज षडिआं हरखजरी मैं० ॥ ए चाल ॥ दिल मैं हरखधरी  
जविपूजो गिरवर सार ॥ दिल० ॥ धूप दशांग लेई करीरे । पूजो जग  
जरतार । बोधबीज निरमल करोरे । सफलकरो अवतार ॥ दि० ॥ संघकरी संघ  
वीधणारे । जेटै श्री गिरसार । अष्टद्रव्य लेई करीरे । पूजै जिन इकतार । दिल०  
ज० २ ॥ अचलगढे जिनराज नारे । मोहन मंदिर च्यार । विमलै साह करावि  
यारे । धन धन तसु अवतार ॥ दि० ज० ३ ॥ सुंदर मूरत गुण जरीरे । चौमुख  
प्रतिमा च्यार । साजन ह्वारा थे सुणोरे । जाखुं गिरि गुणधार । दिल० ज० ४ ॥  
चवदैसै चौमालनीरे । मूरत गुण जंनार । हेममई जिनराज नीरे । सोजे अ  
धिक दीदार ॥ दिल० ज० ५ ॥ धन जेहनी माता पितारे । धन जेहना कुजसार  
द्रव्य प्रबल खरची करीरे । लीनो लाज अपार ॥ दि० ज० ६ ॥ इणपर ए  
गिर रायनीरे । महिमा अधिक अपार । सुमतिसदा कर जोम्निरे । प्रणमें  
वारंवार । दिल० ज० ॥ ॐ क्षीं आवूगिरेंद्राय तीर्थसिरोमणाय श्रीआ  
दीश्वराय धूपं यजामहे ॥ ४ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ पांचमी दीपक पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दीपक पूजा पंचमी । करो जविक गुणवंत । दीपक सम गुण  
पांमियै । केवल ज्ञान अनंत ॥ १ ॥ तीरथनी महिमा करो । जाव धरी  
मतिवंत । द्रव्य जाव विहुं जेदसुं । पूजो जवि विकसंत ॥ २ ॥  
तुमबिन दीनानाथ दयानिधि कोन खबर ले मेरीरे । ज० ॥ एचाल ॥  
आवू गिरपर आदि जिनेसर । दरसनकी बलिहारीरे । आ० । नगरसीरोही

नाम कहावै । जिनवर विंव जुहारीरे । तिहांथी द्वादस गाऊ निरखो ।  
हणादरो सुख कारीरे ॥ आबू० १ ॥ आबूगिरकी पाजे चढतां । पाप सकल  
परिहारीरे । ए गिर देखी सुर नर मोहै । महिमा अधिक उदारीरे ॥ आ० २ ॥  
आस पास बहु जामी सोहै । बिच मंदिर मनुहारीरे । नाजिरायके नंदन क  
हियै । मरुदेवी मात मल्हारीरे ॥ आ० ३ ॥ जुगला धरम निवारण स्वामी  
त्रिजुवन जन हितकारीरे । नगर अजोध्या आप विराजो । आदिनाथ उप  
गारीरे ॥ आ० ४ ॥ आदीसर अलबेसर कहियै । सबको तुं अवतारीरे । सब  
जोगीसर तुमकुं ध्यावै । अद्भुत कीरत थारीरे ॥ आ० ५ ॥ तुं जय जंजन तुंहि  
निरंजन । लोकालोक विहारीरे । जोगीसर जिनराज जगतगुरु । नेमीसर  
ब्रह्मचारीरे ॥ आ० ६ ॥ तारण तरण दयानिध स्वामी । सेवकजन साधारीरे ।  
सुमति कहै जवि निरमल जावै । सेवो प्रभु सुखकारीरे ॥ आ० ७ ॥ नै की  
आबूगिरेंद्राय तिर्थसिरोमणाय श्रीआदीश्वराय दीपं यजामहेः ॥ ५ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ अद्वत पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहाः ॥ अद्वत पूजा साचवै । जविजन मंगल काज । तीन  
पुंज प्रभु आगलै । करौ जविक सुखसाज ॥ १ ॥ मंगल आठ  
करोसही । प्रभुआगै धरप्रेम । अरुसिद्धि नवनिध संपजै । सुजस हुवै निततेम  
॥ २ ॥ ढाल तुमतो जलेविराजोजी सांवलिया माहाराज सिखरपर जलेविरा  
जोजी ॥ तु० ॥ ए चाल ॥ तुमतौ जले विराजोजी । आबूके सिरदार सिखरपर  
जले विराजोजी ॥ तु० ॥ नाजिरायके नंदन कहियै । तीन जवन विसरांमी ।  
केसर चंदन मृगमद घोली । पूजो अंतर जामी ॥ तुम० ॥ १ ॥ विखम पहानां  
विचमें राजै । साहिबतुं सिरनामी । आदीसर जोगीसर पूजी । वंछित  
सगला पामी ॥ तु० ॥ २ ॥ द्रव्य जावसैं पूज रचावो । मनमें आणंद पावो  
जर सुगताफल थाल वधावो । तीरथ महिमा गावो ॥ तु० ३ ॥ आबू  
गिरको ध्यान धरावो । तपस्यासुं फलपावो । घरसारु बलिदान दिरावो  
संघजगत करवावो ॥ तु० ४ ॥ अचलगढै जिनदरसण करवा । संघसकज मिल  
आवै । आदीसर नेमीसर पूजी । मनवंछित सबपावै ॥ तु० ॥ ५ ॥ तीरथ महिमा  
जविजन करियै । दिलमें जावजधारियै । सुमतिकहै तन मन कर उजाज ।

पुन्य खजानो जरिये ॥ तुम० ६ ॥ ॐ क्षीं आवूगिरेंद्राय तीर्थसिरोमणाय  
श्री आदीस्वराय अहृतं यजामहेः ॥ ६ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नैवेद्यपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॥ दूहा ॥ मोदक मोतीचूरना । ओर सुगंध रसाल । पूजो तीरथ  
रायनै । आवकरी गुण माल ॥ १ ॥ नैवेद्य पूजा सातमी ॥ करो अविक  
धरप्रेम । तीरथनी महिमा करी । गुणगावो धरनेम ॥ २ ॥ ॥ ❀ ॥  
श्रीचंद्राप्रभु जिनवर साहिब सुणियो अरज हमारी ॥ में० एचाल ॥ ❀ ॥

॥ श्रीआदीसर जिनवरसाहिब । तुमपर जातं बलिहारा । में वारिजातं ॥  
॥ तु० ॥ आवू गिरपर आप विरा जो । साहिब पर उपगारा । में० श्री० ॥  
तूं हिं जिनेसर तूं परमेसर । अंतरप्राण आधारा । में० । जोगीसर  
तेरी लयजाणें । परमात्म अविकारा । में० ॥ श्री० २ ॥ मनमोहन तुं नाथ  
निरंजन । जगजीवन हितकारा । में० । सुर नर किन्नर सेवकरतहै । जय २  
जग जरतारा ॥ में० श्री० ३ ॥ तेरीमहिमा अधिक विराजै । सबजीवन सुखकारा  
॥ में० ॥ अनंतज्ञान दरसणको स्वामी । मनमोहन सबप्यारा ॥ में० श्री० ॥  
४ ॥ लोकउचित व्यवहार प्रवर्त्यो । बोधबीज दातारा । में० । तुमकुं जो तन  
मनसैंध्यावै । पावै वंछित सारा ॥ में० श्री० ५ ॥ अविकलोकको तुं उपगारी ।  
मिथ्यातम घनवारा ॥ में० ॥ सुमति कहै गिरपूज रचावो । एगिरसबसिरदारा  
॥ में० ॥ श्री० ६ ॥ ॐ क्षीं आवूगिरेंद्राय तीर्थसिरोमणाय श्रीआदी श्वराय  
नैवेद्यं यजामहे ॥ ७ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ आठमीधजा तथा फलपूजा ॥ ❀ ॥

॥ दूहा ॥ प्रभुपूजा एआठमी । मंगल आठ कराय । पंचवरण ध्वज मोहनी ।  
पूजकरो सुखदाय ॥ १ ॥ आंवा दारुमं आददे । विवध जांत मनरंग । प्रभु आगल  
ढोवो सही । आवधरी उरंग ॥ २ ॥ सब सुंदर आवो सही । सजसोलै सिण  
गार । रतन जम्त कंचुक धरी । पहरी नवसरहार ॥ ३ ॥ ढाल ॥ पनरुमपदगुण  
गानाहो अविप० ॥ ए चाल ॥ अवि जिनगुण मंगल गानाहो ॥ अवि० ॥  
फलपूजा ए गिरकी करके । जगमें सुजस वधानाहो । अ० । मंगल आठ

रचोप्रनु आगल । चंदमुखी मनजानांहो ॥ जवि० ॥ १ ॥ पंचवर  
णकी ध्वजवर कहियै । हित चितसैं करवानाहो । सुंदरनारी सब सि  
णगारी । प्रेमधरी सबआनाहो ॥ जवि० ॥ २ ॥ कंचू कसिआ हरख उज  
सिआ । आनूखण पहरानाहो । ज० । रतनजमित सब सुंदरचूनी । हाथे  
बाहु सोजानाहो । ज० । जवि० ॥ ३ ॥ थेई थेई तानकरै प्रचू आगल । मधुर  
सुरै गुणगानाहो । ज० । इंद्राणी मिल मंगल गावै । तिम तुमे जगत  
करानाहो ॥ ज० ॥ ४ ॥ इत्यादिक गुण जिनके गावत । बोधबीज उपजा  
नाहो । ज० । सुमतिकहै जवि पूजन करियै । मनवंडित फल दानाहो  
॥ जवि० ॥ ५ ॥ ॐ क्षी आबूगिरेंद्राय तीर्थ सिरोमणाय श्रीआदीस्वराय  
फलं ध्वजं अष्टमंगलं यजामहेः ॥ ८ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ नवमी वस्त्र पूजा ॥ ❀ ॥

॥❀॥दूहाः॥वस्त्र जुगल लेईकरी । पूजो दीनदयाल॥ सुजश सुगंधी विस  
तरै । बोधबीज गुणमाल॥१॥ रथयात्रा प्रचुनी करो । महिमा जगत कराय ॥  
लाज अनंतो ऊपजै । समकित निरमल थाय ॥ २ ॥ ढाल ॥ दरशणके लोनी  
नैना । होदर० ॥ ए चाल ॥ हो पूजनके लोनी सैणा ॥ लोनी० हो पू० ।  
पूजनकुं जिया नित नितचाहै । कुगुरु वचन तजदैनै । हो पू० लो० ॥ १ ॥  
यापूजा समकितकी करणी । सुगुरु वचन सुणलैना । हो पू० । गिरवर गढ  
गिरनार विराजै । नेमकुमार सुखदैनै ॥ हो० ॥ २ ॥ वस्त्रजुगलकी पूजन  
करियै । तन मन उज्जावैना ॥ हो० ॥ मिथ्यातम सब दूर निवारी ।  
सुमति रमण संगरैनै ॥ हो पू० ॥ ३ ॥ सरधा केसर रंग घोलकै । निजआतम  
रंगलैना । हो० । विमलगिरी अष्टापद पूजो । आदीसर सुख दैनै । हो पू०  
॥ ४ ॥ शिखरसमेत वनो जगमांहै । बीसप्रचू हितदैनै ॥ हो पू० ॥ आवू  
गिरकी महिमा अद्रुत । मानो हमाराकैहना ॥ हो पू० ॥ ५ ॥ रथयात्रा  
जिनवरकी करकै । पाप पमल हरदैनै । हो० । कुगुरु कुमतिको संगनो  
रुके । जिनगुणमें दिलदैनै ॥ हो पू० ॥ ६ ॥ आदीसर अलवेसर कहियै ।  
जगतारक जगसैनै । हो पू० । सुमति सदा प्रचुके गुण गावत ।



बोधबीज सुखदेना ॥ हो पू० ७ ॥ नै की आवृगिरेंद्राय तीर्थ सीरोमणाय  
श्री आदीस्व० वस्त्रं यजामहेः ॥ ९ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ गुलाब जल ॥ ❀ ॥

॥❀॥(दूहा)समकित निरमल कारणें । सुरभि सुगंधी लेह । ठिरको श्रीगिर  
राजकुं । जावधरी गुणगेह ॥१॥ गिरवर जावै नेटियै । दीजै वंनित दान । गी  
तगान नलगाइयै । ज्युंपावो बहुमान ॥ २ ॥ ढाल ॥ थारीगईरे अनादिनीं  
द जरा टुकजोवोतो सही ॥ जोवो० ॥ एचाल ॥ तुमकरोरे सुमतिको  
संग रंगीला सेवोतो सही । सेवोतो सहीरे म्हांराचेतन सेवोतो सही ।  
तुम० ॥ मुनिवरकी वरणी हितकरणी । लेखोतो सही । मिथ्यातम करदूर  
हियामैं देखोतो सही ॥ दे० म्हां० तु० ॥ १ ॥ आतम करणी निजगुण  
धरणी देवोतो सही । तुं कह्यौरे हमारो मान सुग्यानी वेवोतो सही ॥ बे० म्हां०  
तुम० ॥ २ ॥ समकित करणी नव नय हरणी लेवोतो सही । द्रोपदि जिम  
जिनराज नगतकर सेवोतो सही ॥ से० म्हां० तुम० ३ ॥ रागकतरणी जग  
जस नरणी जोवोतोसही । अकलंकित गुणहोय नरमसब धोवोतो सही ॥ धो०  
म्हां० तुम० ॥ ४ ॥ सवमन हरणी गुणमणि धरणी पावोतो सही । कूड क  
पट कर दूर हीयामैं लावोतो सही ॥ ला० म्हां० तुम० ॥ ५ ॥ आवृगिरनी पू  
जन करणी ध्यावोतोसही । तन मन प्रीतलगाय जिणंदगुण गावो तो सही ।  
गा० म्हां० तुम० ॥ ६ ॥ अनुपम करणी पापनधरणी जावोतो सही । तुम  
करोरे सुगंधी पूज नविक सुख पावोतो सही ॥ पा० म्हां० तुम० ॥ ७ ॥ इम  
गुणवरणी पूजनकरणी गावोतो सही । सुमति रंगीला सैण हीयामैं लावोतो  
सही ॥ ला० म्हां० तुम० ॥ ८ ॥ नै की आवृगिरेंद्राय तीर्थसिरो० श्रीआदी  
श्वराय सुगंधि द्रव्यं यजामहेः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ वाजिन्नपूजा ॥ ❀ ॥

॥❀॥(दूहाः)नंदी घोख बजावतां । थायै लाज अनंत । विविध प्रकारै पू  
जतां । बोधबीज विकसंत ॥ १ ॥ ढाल ॥ पूज पूज जिनराज काजसारतुं  
का० ॥ सार सार जिनराज तार तार तुं ॥ ता० नलांहे ता० ॥ सा० ॥  
जग जश धार सार जय कारतुं । सरणाई मिरदंग चंग सार सार तुं ॥

सा० ज० सा० सार० ॥ तुंही है जिनंद चंद आदि कार तुं । जगत उधार  
सार अविकारतुं ॥ अ० ज० ॥ सार० ॥ १ ॥ समकित धारसार  
सुखकारतुं । मनमथ जीतकार राग वारतुं । रा० ज० । सा० । तुंहीं है मुनिंद  
इंद हितकारतुं । गुणको निधान सार जरतारतुं । ज० ज० ॥ सारसार० ॥ २ ॥  
सुर नर देव सार किरतारतुं । आवूके जिनंद चंद मुनिसारतुं । सु० ज० सार० ।  
परमआधार सार जिनतारतुं । सुमति विचार धार सुखकारतुं । सु० ज०  
सार० ॥ ३ ॥ ॐ क्षी आवूगिरेंद्राय तीर्थसि० श्रीआदीश्वराय वाजित्रगुणवरणन  
पूजा ॥ ११ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ नृत्य पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहाः ॥ सुरसुंदर हरखैकरी । सजसोलै सिणगार । ताल मृदंगहि  
लेयनै । जगतकरै बहुसार ॥ १ ॥ जावधरी प्रनु आगलै । अष्टापद गिरसार ।  
रावणनै मंदोदरी । नृत्यकरै गुणधार ॥ २ ॥ ढाल ॥ जिनगुणगावत सुरसुंदरीरे  
जि० ॥ ए चाल ॥ जगतिकरे सब सुरसुंदरीरे ॥ ज० ॥ सुरसुंदरीरेदेवा ॥  
सु० ज० ॥ हीर चीर पाटवर पहरी । रम ठम घुग्घर नाद करीरे । ज० सु० ॥ १ ॥  
चंदवदन मनमोहन गहरी । मृगनैनी शृंगारधरीरे ॥ ज० ॥ बांह बाजूबंध  
कंचन चूनी । बेसर मोती जाल जरीरे ॥ ज० सु० ॥ २ ॥ अपठरवरणी  
सुर मन हरणी । मोहनी रूप अनूप धरीरे ॥ ज० ॥ चंपकवरणी मनवस  
करणी । प्रचूआगै गुणगावै खरीरे ॥ ज० सु० ॥ ३ ॥ जिनगुण गावत हरख  
वधावत । थेई थेई नाचत जावधरीरे ॥ ज० ॥ अशरण शरण तुंही जगदी  
पक । तुंहि निरंजन सुख करीरे ॥ ज० सु० ॥ ४ ॥ जविजन ध्यावत हरख  
उपावत । गावत गुण सुजराग करीरे ॥ ज० ॥ गजगत गामनी सब मिल  
जामनी । ठम ठम नाचत सुर महररीरे ॥ ज० सु० ॥ ५ ॥ अष्टापद गिरसाव  
णराजा । मंदोदरी जिम जगतकरीरे ॥ ज० ॥ सुमति सदा जिनके गुणगा  
वत । लल २ जिनजीकै पायपरीरे ॥ ज० सु० ॥ ६ ॥ ॐ क्षी आवूगिरेंद्राय  
तीर्थसिरोमणाय श्रीआदीश्वराय गीतनृत्यगुणवरणन पूजा ॥ १२ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ कजश रागरेखता ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिनंदजश आजमै गायो ॥ ए चाल ॥ गिरंदजश आजमै

गायो । जेटतां हरख अतिपायो ॥ गि० ॥ आबूगिरिंद सुखदायो । सघन  
 घन खंखसैं ढायो । खरा जिनचंद सूरिराजा । तपै जग जानज्युं ताजा  
 गि० ॥ १ ॥ कृमा कल्याणके पाजा ॥ विविध गुण ज्ञानके प्राजा ॥ धरम  
 विशाल तसुनंदा ॥ कहै युं सुमति सुख कंदा ॥ गि० ॥ २ ॥ संवत उगणीस  
 चालीसै । प्रेमधर अधिक सुजगीसै ॥ प्रजो तुम देव जगदीसै । फलैसब आस  
 निस दीसै ॥ गि० ॥ ३ ॥ देवांके देव मनप्राया ॥ पूजतां संपदा पाया ॥ वीकाणें  
 सहरमें राजै ॥ जगत जस ताहरो गाजै ॥ गि० ॥ ४ ॥ आदि जिन पूज सुख  
 काजै ॥ नमत प्रभु पाप सहजाजै ॥ सकल जन प्रावसैं ध्यावै ॥ मोहन  
 मुनि प्रेमसैं गावै ॥ गि० ॥ ५ ॥ इति श्री आबू गिरि श्री आदीस्वर जिन  
 गुण महिमा वर्णन सुमति मंरुणजी पाठककृत पूजा संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ आबूजीको स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अईन २ नाटक नाचै आदी सरकै आगैलो अ० ॥ एचाल ॥  
 पूजो पूजो तीरथ पूजो ॥ आबू तीरथ पूजोलो ॥ पूजो० ॥ इंद्र पूजै चंद्रपूजै  
 इणसम ओरन दूजोलो ॥ पू० ॥ अध्यातम जोगीसरध्यावै ॥ दरसण लागै  
 मीठोलो ॥ पू० आ० १ ॥ सुर जन मोहै मुनिजन मोहै ॥ लागो रंग मजी  
 ठोलो ॥ पू० ॥ तेजपाल वस्तपाल करायो ॥ मोहन मंदर दीठोलो ॥ पू० २ ॥  
 बारै कोमी सुद्रा ऊपर लागो तेपन लाखैलो ॥ पू० ॥ इतनो धन खरच्यौ प्रवि  
 प्राणी ॥ संघ सकलनी साखैलो ॥ पू० ३ ॥ च्यारसै अरुसठ सुंदर सोहै । जिन  
 वर बिंब उदारीलो ॥ पू० ॥ सुमतिसदा जिनवर जशगावै ॥ तीरथनी वलि-  
 हारीलो ॥ पू० । आ० ४ ॥ इति आबू गिरिपदं ॥ १ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सहस्रकूटजी पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ श्री जिनवर प्रणमी करी । प्रावधरी प्ररपूर । अनु  
 प्रव गुण निरमल करी । वंडुं जिनवर सूर ॥ १ ॥ नवै श्री जिनराजनी । सं  
 ख्या आगम जेह । गुरुमुख जे इमसांजली । ते सुंणजो धर नेह ॥ २ ॥ स  
 हसकूटनी थापना । करियै विध विसतार । पूजरचावो नवनवी । अष्ट दि  
 वस सुविचार ॥ ३ ॥ श्री सेत्रुंजा ऊपरै । सहस्रकूटनो प्राव । ते देखी प्र  
 वि उरधरो । सेवो जिनवर पाव ॥ ४ ॥ अष्ट द्रव्य लेईकरी । तन मन उ

झलझाव । गीतनृत्य प्रचू आगलै । कर पूजन गुणगाव ॥ ५ ॥ सधव  
सुहागण सुंदरी । सजसोलै सिणगार । प्रचु आगै मंगल करै । पावै हर  
ख अपार ॥ ६ ॥ निरमल जल कलशा जरी । स्नात्र करै जविसार । सहस  
कूट जिनराजनी । महिमा अधिक उदार ॥ ७ ॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥  
आज आयोरे उठाह । जीवमा नाच० ( ए चाल ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आज हरख अपार । जिनवर पूजन करियैरे ॥ आ० ॥ पंचजरत  
वलि ऐरवत पंच । इण दश खेत्रतणा जिणसंच ॥ आज० ॥ दक्षिण उत्तर  
जरते जाण । अतीत अनागतनें वर्तमान ॥ १ ॥ आज० ॥ इणपर गिण  
तां जिनवर थाय । सातसै वीश अधिक कहवाय ॥ आ० ॥ तीश चौवीशी  
वंडुं एह । तारण तरण जविक गुण गेह ॥ आ० ॥ २ ॥ परमात्म परमे  
शर जाण । एहनी आणकरो परमाण ॥ आ० ॥ जिनसम अवरन दूजो  
देव । सुरवर सुनिवर करतासेव ॥ आ० ॥ ३ ॥ अतिशयवंत महंत उदार ।  
सुर नर मोहै देख दीदार ॥ आ० ॥ वारिजातं एहनी वार हजार । सुज  
प्रीतम एही अवधार ॥ आ० ॥ ४ ॥ करता चूमरुज उपगार । जगनायक  
जिनवर जयकार ॥ आज० ॥ जावधरी वंडुं जगसार । सुमति सदा दीजै  
किरतार ॥ आ० ॥ ५ ॥ उँ क्षी परमा० । श्री सहस्रकूट जिनेंद्राय जलं यजा  
महे ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ द्वितीय चंदन पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ वर्तमान जिन वंदिये । तीन चौवीसी मांह । रुष  
जादिक जिनपूजतो । दिन २ हरख उठाह ॥ १ ॥ कुंकम चंदन मृगमदै ।  
अंबर सुगंध विशाल । श्री जिनवर पूजन करो । जावधरी गुणमाल ॥ २ ॥  
( ढाल ) ॥ ❀ ॥ अवतो उधारयो मोहि चाहियै जिनंदराय (ए चाल) ॥ ❀ ॥  
वर्तमान जिनपूजन करकै । तन मनको सब पाप हरोरे ॥ वर्त्त० ॥ रुषज  
अजित शंजव अजिनंदन । सुमति सदा जिनराज खरोरे ॥ वर्त्त० ॥ १ ॥ प  
दम सुपास जिनंद सुसेवो । चंद्रप्रचु चित चाह धरोरे । सुविध शीतल  
जिन अंतर जांमी । श्री श्रेयांस जिनेंद्र वरोरे ॥ वर्त्त० ॥ २ ॥ वारमो वाशपूज्य  
जिन नमनें । मिथ्यातम सब दूर करोरे । विमल अनंत धरम जिन नमतां ।

गायो । जेदतां हरख अतिपायो ॥ गि० ॥ आबूगिरिंद सुखदायो । सधन  
 धन खंखसैं णायो । खरा जिनचंद सूरिराजा । तपै जग जानज्युं ताजा  
 गि० ॥ १ ॥ कृमा कल्याणके पाजा ॥ विविध गुण ज्ञानके जाजा ॥ धरम  
 विशाल तसुनंदा ॥ कहै युं सुमति सुख कंदा ॥ गि० ॥ २ ॥ संवत उगणीस  
 चालीसै । प्रेमधर अधिक सुजगीसै ॥ प्रजो तुम देव जगदीसै । फलैसब आस  
 निस दीसै ॥ गि० ३ ॥ देवांके देव मनजाया ॥ पूजतां संपदा पाया ॥ वीकाणें  
 सहरमें राजै ॥ जगत जस ताहरो गाजै ॥ गि० ४ ॥ आदि जिन पूज सुख  
 काजै ॥ नमत प्रभु पाप सहजाजै ॥ सकल जन जावसैं ध्यावै ॥ मोहन  
 मुनि प्रेमसैं गावै ॥ गि० ॥ ५ ॥ इति श्री आबू गिरि श्री आदीस्वर जिन  
 गुण महिमा वर्णन सुमति मंरुणजी पाठककृत पूजा संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ आबूजीको स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अईनु २ नाटक नाचे आदी सरकै आगैलो अ० ॥ एचाल ॥  
 पूजो पूजो तीरथ पूजो ॥ आबू तीरथ पूजोलो ॥ पूजो० ॥ इंद्र पूजै चंद्रपूजै  
 इणसम ओरन दूजोलो ॥ पू० ॥ अध्यातम जोगीसरध्यावै ॥ दरसण लागै  
 मीठोलो ॥ पू० आ० १ ॥ सुर जन मोहै मुनिजन मोहै ॥ लागो रंग मजी  
 ठोलो ॥ पू० ॥ तेजपाल वस्तपाल करायो ॥ मोहन मंदर दीठोलो ॥ पू० २ ॥  
 वारे कोमी मुद्रा ऊपर लागा तेपन लाखैलो ॥ पू० ॥ इतनो धन खरच्यौ प्रवि  
 प्राणी ॥ संघ सकलनी साखैलो ॥ पू० ३ ॥ च्यारसै अरुसठ सुंदर सोहै । जिन  
 वर बिंब उदारीलो ॥ पू० ॥ सुमतिसदा जिनवर जशगावै ॥ तीरथनी वलि-  
 हारीलो ॥ पू० । आ० ४ ॥ इति आबू गिरिपदं ॥ १ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सहस्रकूटजी पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( वृहा ) ॥ श्री जिनवर प्रणमी करी । जावधरी नरपूर । अनु  
 प्रव गुण निरमल करी । वंडुं जिनवर सूर ॥ १ ॥ नवै श्री जिनराजनी । सं  
 ख्या आगम जेह । गुरुमुख जे इमसांनली । ते सुंणजो धर नेह ॥ २ ॥ स  
 हसकूटनी थापना । करिये विध विसतार । पूजरचावो नवनवी । अष्ट दि  
 वस सुविचार ॥ ३ ॥ श्री सेतुंजा ऊपरै । सहस्रकूटनो जाव । ते देखी प्र  
 वि उरधरो । सेवो जिनवर पाव ॥ ४ ॥ अष्ट द्रव्य लेईकरी । तन मन उ

झलझाव । गीतनृत्य प्रचू आगलै । कर पूजन गुणगाव ॥ ५ ॥ सधव  
सुहागण सुंदरी । सजसोलै सिणगार । प्रचू आगै मंगल करै । पावै हर  
ख अपार ॥ ६ ॥ निरमल जल कलशा प्री । स्नात्र करै प्रविसार । सहस  
कूट जिनराजनी । महिमा अधिक उदार ॥ ७ ॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥  
आज आयोरे उठाह । जीवना नाच० ( ए चाल ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आज हरख अपार । जिनवर पूजन करियैरे ॥ आ० ॥ पंचप्रस्त  
वलि ऐरवत पंच । इण दश खेत्रतणा जिणसंच ॥ आज० ॥ दक्षिण उत्तर  
प्रस्ते जाण । अतीत अनागतनें वर्तमान ॥ १ ॥ आज० ॥ इणपर गिण  
तां जिनवर थाय । सातसै बीस अधिक कहवाय ॥ आ० ॥ तीस चौबीसी  
वंडुं एह । तारण तरण प्रविक गुण गेह ॥ आ० ॥ २ ॥ परमात्म परमे  
शर जाण । एहनी आणकरो परमाण ॥ आ० ॥ जिनसम अवरन दूजो  
देव । सुरवर मुनिवर करतासेव ॥ आ० ॥ ३ ॥ अतिशयवंत महंत उदार ।  
सुर नर मोहै देख दीदार ॥ आ० ॥ वारिजातं एहनी वार हजार । सुज  
प्रीतम एही अवधार ॥ आ० ॥ ४ ॥ करता चूमनल उपगार । जगनायक  
जिनवर जयकार ॥ आज० ॥ प्रावधरी वंडुं जगसार । सुमति सदा दीजै  
किरतार ॥ आ० ॥ ५ ॥ उँ क्षी परमा० । श्री सहस्रकूट जिनेंद्राय जलं यजा  
महे ॥ १ ॥ ❀ ॥                      ॥ ❀ ॥                      ॥ ❀ ॥                      ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ द्वितीय चंदन पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ वर्तमान जिन वंदिये । तीन चौबीसी मांह । रूप  
आदिक जिनपूजतो । दिन २ हरख उठाह ॥ १ ॥ कुंकम चंदन मृगमदे ।  
अंबर सुगंध विशाल । श्री जिनवर पूजन करो । प्रावधरी गुणमाल ॥ २ ॥  
( ढाल ) ॥ ❀ ॥ अवतो उधारयो मोहि चाहिये जिनंदराय (ए चाल) ॥ ❀ ॥  
वर्तमान जिनपूजन करके । तन मनको सब पाप हरोरे ॥ वर्त्त० ॥ रूपप्र  
अजित शंभव अजिनंदन । सुमति सदा जिनराज खरोरे ॥ वर्त्त० ॥ १ ॥ प  
दम सुपास जिनंद सुसेवो । चंद्रप्रचु चित चाह धरोरे । सुविध शीतल  
जिन अंतर जांमी । श्री श्रेयांस जिनेंद्र वरोरे ॥ वर्त्त० ॥ २ ॥ वारमो वाशपूज्य  
जिन नमनें । मिथ्यातम सब दूर करोरे । विमल अनंत धरम जिन नमतां ।



रुद्ध सिद्धको जंमार जरोरे ॥ वर्त्त० ॥ ३ ॥ शांति कुंथु अर मत्ति जिनेसर ।  
 सुनिसुव्रत दिलध्यानं करोरे । नमि नेमी श्रीपाश जिनेसर । बीर सदा मुज्ज  
 नाथ खरोरे ॥ व० ॥ ४ ॥ ए चौवीशे जिन गुण गावत । संपद सुखकी सेज  
 वरोरे । सुमति कहै जिन पूजन करकै । छल २ जिनके पाय परोरे ॥ व० ॥  
 ॥ ५ ॥ ॐ क्षी परमा० । सहसकूट जिनेद्राय चंदनं यजामहेः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ( ३ ) पुष्पमाल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहाः ) ॥ पुष्पमाल गुंथी करी । कंठ ठवो जिनराज । सुम  
 ति सुगंधी विसतरै । लाज अनंत समाज ॥ १ ॥ अतीत चौवीसी वंदियै ।  
 आंणी जाव प्रधान । मनवंछित पूरण सदा । परतिख कल्प समान ॥ २ ॥  
 ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ श्री चंद्राप्रभु जिनवर साहिब । सुणिये० मेंवारि० ( एचाल ) ॥

॥ ❀ ॥ केवल ज्ञानीनै निखांणी । सागर महा जशकारा ( में वारि  
 जाउं सा० ) के० ॥ विमलनाथ निरमल गुणधारक । सर्वानुंचूति उदा  
 रा ॥ ( में० स० ) के० ॥ १ ॥ श्रीधर दत्त जिनवर उपगारी । दामोदर अवि  
 कारा ॥ में० दा० ॥ अधिक सुतेज जिनेसर सांमी । सुनि सुव्रत गुणकारा  
 ॥ २ ॥ ( में० सु० ) के० ॥ २ ॥ श्री सुमती शिवगति जिनपूजो । अस्तंग नमी  
 सुनि प्यारा ॥ ( में० अ० ) ॥ अनिल यशोधर जिनवर सेवो । किरतारव म  
 नुहारा ॥ ( में० कि० ) के० ॥ ३ ॥ श्री जिनराज जिनेसर वंदो । शुद्धमती  
 शिवकारा ॥ ( में० सु० ) ॥ स्यंदन संप्रति जिन चौवीशे । सुमति सदा गुण  
 कारा ॥ ( में० सु० ) के० ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ॐ क्षी परमा० श्री सहसकूट  
 जिनेद्राय पुष्पं यजामहेः ॥ ३ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ( ४ ) धूप पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ जावी जिनवर वंदियै । द्रव्य जाव सुविचार । पद  
 मनाज आदिक प्रभु । वंदूं वारं वार ॥ १ ॥ कृष्णागर मृगमद तगर । अं  
 वर तुरक लोवांन । धूप करो जिन राजनें । पावो सुख असमान ॥ २ ॥  
 ( ढाल ) ॥ संप्रव जिन सुखकारीरे । वाला संज ( एचाल ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पदमनाज सुखकारी रे वाला ॥ प० ॥ ( हांरे होरे वाला ) वारीजाउं  
 वार हजारि रेवाला ॥ प० ॥ सूरदेव जिन वंडु जावै । सुपारस ब्रह्मचारीरे ।

वा० प० ॥ १ ॥ स्वयं प्रभु जिन अंतरजांमी । सर्वानुभूत उदारी । देवश्रुती  
जिनपर उपगारी । उदय पेढाल विचारीरे । वा० ॥ प० ॥ २ ॥ पोद्दल  
जिन शत किर्ती कहिये । सुव्रत जिन हितकारी । अमम जिनेसर वारमो  
कहिये । निष्पाय गुणधारीरे । वा० प० ॥ ३ ॥ निष्पुलाक जिन पनरमो  
सेवो । महिमा अधिकतुमारी । सोलम निरमम जिनवर जावै । सेवकरो  
इकतारीरे । वा० ॥ प० ॥ ४ ॥ चित्र गुपति चितचाह धरीने । समाधि से  
वो सुविचारी । संवर जिनगुण मणिके आगर । जस्सोधर जशधारीरे ।  
वा० ॥ प० ॥ ५ ॥ विजयमखि देवज जिन पूजो । अनंतवीरज शुभचारी  
जावकरी नंदकर सेवो । एहीज निजगुण धारीरे । वा० ॥ प० ॥ ६ ॥ जा  
वी जिनवर उत्तम कहिये । चरण कमल बलिहारी । सुमति कहै तन  
मन कर उज्जल । सेवोजिन इकतारीरे । वा० ॥ प० ॥ ७ ॥ उँझी परमा०  
सहस्र कूटजिनेद्राय धूप० ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ (५) दीपक पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहाः ) दीपक कंचन मय करी । पूजो जग भरतार । धा  
तकी पूरव खंमै । भरत तणा जिनसार ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ॥ तुमविन दीनानाथ दयानिध कोन० ॥ ( ए चाल )

॥ ❀ ॥ धातकी खंमै पूरव भरतै । अतीत चौबीसी वंदोरे । धा० ।  
स्तन प्रभूनें अभल प्रभूजी । असंभव जिन वंदोरे । धात० ॥ १ ॥ श्री  
अकलंक चंद्रा प्रभु प्रणमुं । सुभ्रंकर सुखकंदोरे । सपत नाथ जिन  
सुंदर जावै । नाथ पुरंदर इंदोरे ॥ धा० ॥ २ ॥ श्रीस्वामी जिन देव  
दत्तजी । वासवदत्त सुनंदोरे । श्रीश्रेयांस जिनेसर वंदो । वीरस्वरूप  
आनंदोरे ॥ धा० ॥ ३ ॥ श्रीतप तेज दिवाकर सेवो । श्रीप्रतिबोध सुदेवोरे ।  
श्रीसिद्धार्थ जिनवर पूजो । स्पंदन जिणगुण देवोरे । धा० ॥ ४ ॥ अमल  
नाथ देवेंद्र सुपूजो । प्रवचन नाथ सुचंदोरे । विश्वानन जिनदेव सुवंदो ।  
मेघ अधिक गुण वृंदोरे ॥ धा० ॥ ५ ॥ श्रीसर्वज्ञ जिनेसर वंदो । चौबीसम  
मुनिचंदोरे । धातकी खंमै पूरवभरतै । अनागत जिनवृंदोरे ॥ धा० ॥ ६ ॥  
इमहीज धातकी पूरव भरतै । वर्तमान सुखकंदोरे । सुमतिसदा जिनराज

कृपासैं । लहै सदा आनंदोरे ॥ धा० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं परमा० । सहस्रकूट जि  
नेद्राय दीपं यजामहेः ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (६) अद्वैत पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ पष्ठिम धातकीखंमैं । जरतै जिनवर सार । अ  
तीत चौबीशी एकहुं । सांजलजो सुविचार ॥ १ ॥ उज्जल तंडुल लेयनैं ।  
मंगलकर जविसार । निरमलगुण प्रगटैसही । पूजन जग जरतार ॥ २ ॥  
( ढाल ) पास जिणंदा प्रभु मेरे मनवसीआ ॥ पा० ॥ ( एवाल ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अतीत चौबीसी सेवो जवि रसिआ ॥ अ० । से० ॥ पष्ठिम धात  
की जरतै सोहै । एजिनराज सकल मन वसिआ ॥ स० । अ० ॥ वृषजनाथ  
महाराज विराजै । श्रीप्रियमित्र अधिकगुणं रसिआ । अ० ॥ अ० ॥ १ ॥ शांति  
जिनेसर जग उपगारी । समुद्रनाथ सेवो जविरसिआ । से० । अजित जिनेसर  
जग जयकारी । श्रीअव्यक्त सकल सुख रसिया । स० ॥ अ० ॥ २ ॥ कक्षासित  
जिनजनके दीपक । सरब जीत जिन अधिक दरसिआ ॥ अ० । प्रबुध जिने  
सर नवमो कहियै । दशमो प्रव्रजित अधिक उलसिआ । अ० ॥ अ० ॥ ३ ॥  
श्रीसोधरम जिनेसर बंदो । तमोधि दीपए नांम दरसिआ । नां० । वज्रशे  
न श्रीबुध जिनेसर । प्रबंधनाथ जगके दुख घसिआ । ज० ॥ अ० ॥ ४ ॥  
अजित प्रमुख पल्योपम बंदो । अकोप जिनंद सब पाप तरसिआ । स०  
निष्ठित जिन मृगनाथ सुसेवो । देवेंद्रनाथ मुज्जमनमें वसिआ । म० । अ० ।  
॥ ५ ॥ प्रयत्नित जिन वंदुं उपगारी । चौबीशम शिवनाथठै रसिआ । ना० ।  
पश्चिम जरतै धातकी खंमैं । वर्तमान अनागत रसिआ । अ० ॥ अ० ॥  
॥ ६ ॥ इण विधजो जविपूज करतहै । तसु मन बंठित मेघ वरसिआ ।  
मे० । तीन चौबीशी एनितबंदो । सुमतिसदा ए ग्यांन दरसिआ । ग्यां० ।  
अ० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं परमा० सहस्र० अद्वैतं यजामहेः ॥ ६ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (७) नैवेद्य, फल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहाः ) ॥ सातमी पूजा साचवै । फल नैवेद्य सुखकार । उ  
त्तम फल पूजा करो । पावो सुख अविकार ॥ १ ॥ पुरकरद्रीपै बंदियै ।  
अतीत चौबीशी जेह । शास्त्रथकी सुणजो सदा । अनुपम गुणके गेह

॥ २ ॥ ( ढाल ) ॥ जात्रानिनाणुं करियै विमलगिरि जा० ( ए चाल ) ॥  
 पुक्खरघ्नीप सुवंदोरे । नविजन ॥ पु० ॥ पूरवज्जते अतीत चौवीशी । सेव  
 तनवि चिरनंदोरे । न० ॥ पु० ॥ पदमचंद्र रक्तांग अजोगिक । सरवा  
 रथ सुख कंदोरे । न० ॥ पु० ॥ १ ॥ रुखीनाथ हरिन्द्र सुहंकर । गणा  
 धिप मुनि इंदोरे । न० ॥ पु० ॥ पारत्रक जिनकुं नविवंदो । ब्रह्मचारी  
 सुखकंदोरे । न० । पु० ॥ २ ॥ दीपक जिन बलिराज रुखीसर । विशाख  
 प्रभू जिनचंदोरे । न० ॥ पु० ॥ अचितरवि श्रीसोम जिनेसर । जयश्री मो  
 क्त जिनंदोरे । न० ॥ पु० ॥ ३ ॥ अग्नीजानुं धनुख सुवंदो । सेमांचित चि  
 रनंदोरे । न० ॥ पु० ॥ प्रसिध्नाथ श्रीजिनवरइंदो । वंदी पाप निकंदोरे  
 न० । पु० ॥ ४ ॥ इम हीज वर्त्तमान जिनपूजी । अनागत जिन वंदोरे ।  
 न० । पु० । सुमतिकहै जो जिनवर पूजै । तेहीज जगमणि चंदोरे । न०  
 पु० ॥ ५ ॥ ॐ क्षी परमात्मने । सहस्र कूट० नैवेद्यं फलं यजामहे ॥ ७ ॥ ॥

### ॥ ॥ अथ ( ८ ) वस्त्रपूजा ॥ ॥

॥ ॥ ( दूहाः ) वस्त्रयुगल प्रनु आगलै । ढोवो नविक उदार ।  
 जंबू ऐरवत खेत्रमें । पूजो जिनवर सार ॥ १ ॥ ( ढाल ) ॥ आज हुं ग  
 ईथी समवसरणमें । ( ए चाल ) ॥ ॥ जंबूघ्नीपे ऐरवरतमें । इमहीज  
 जिनवर ढाजैरी ( वारी इम० ) जं० ॥ तीन चौवीशी गिणतां नविज  
 न । बहुत्तर जिन पति राजैरी । वा० व० ॥ जं० १ ॥ गुरुमुखथी अ  
 वधारो नविजन । परमात्म गुण साजैरी । वा० । प० ॥ जं० ॥ न्नाव धरी  
 पूजन नवि करतां । कुमति कुटलता लाजैरी । वा० । कु० जं० ॥ २ ॥  
 इमहीज धातकी पूरव मां है । ऐरवतखेत्र सुकाजैरी । तीन चौवीशी नित २  
 नमियै । बोधलता गुण वाजैरी । वा० । वो० ॥ जं० ॥ ३ ॥ इमहीज धा  
 तकी पश्चिमसो है । ऐरवतखेत्र सुभाजैरी । वा० । ऐ० ॥ जं० ॥ ४ ॥ ज  
 गत जंतु करुणानिध स्वामी । अमृत वाणि सुगाजैरी । वा० । अ० ।  
 जं० ॥ सुमति कहै ए जिनवर पूजो । उपगारी सिरताजैरी । वा० । उ० । जं०  
 ॥ ५ ॥ ॐ क्षी परमा० । सहस्र कूट जिनेद्राय । वस्त्रं यजामहेः ॥ ८ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ ( ९ ) ध्वज पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहाः ) वीशजिनेसर शास्वता । पंचविदेह मजार । सीमंधर  
आदै करी । प्रणमुं वारहजार ॥ १ ॥ गगन वीच अदनुतवणी । पंचवरण  
विकसंत । नवमीध्वज पूजा करी । लेवो लाजअनंत ॥ २ ॥ ( ढाल ) ॥  
सेहुंजानो वासी प्यारो लागै म्हांराराजिंदा ( ए चाल० ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ विहरमानं ऋवि ध्यावो म्हांराराजिंदा । ध्या० ॥ वि० ॥ सीमंधर  
जुगमंधर स्वांमी । बाहु सुबाहु सुहावै । म्हां० ॥ वि० ॥ श्रीसुजात स्वयंप्रभु  
सेवो । ऋषजानन मनजावै । म्हां० ॥ वि० ॥ १ ॥ अनंत वीरज सिरी सूरप्रचूजी ।  
दशमो विशाल कहावै । म्हां० ॥ वज्रधर जिन ऋवि सेवो जुगतै ।  
बोधबीज उपजावै । म्हां० ॥ वि० ॥ २ ॥ चंद्रानन जिन चंद्रबाहूजी । नु  
जंग ईशर सुखपावै । म्हां० । नेमप्रभू जिन गुण माणि दरियो । वीरसेन  
मुनिरावै । म्हां० ॥ वि० ॥ ६ ॥ अठारम महाजद्र सुशेवो । देवजशा नित  
ध्यावो ॥ म्हां० ॥ अजित वीरज जिनवीशमो ध्यावो । देख्यां हरख नमावै ।  
ह्मां० । वि० ॥ ४ ॥ पंचविदेहै एजिनसोहै । सोवन वरण सुहावै ॥ ह्मां० ॥  
चौरासीलख पूरव आयु । शाशता एहिजपावै । ह्मां० । वि० ॥ ५ ॥ परमपु  
रख एवीश जिनेसर । ए जगसार कहावै ॥ ह्मां० ॥ सुमति कहै ए जिनवर  
पूजो । निजगुण जुं ऋवि आवै । ह्मां० वि० ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं परमा० सहस्र  
कूट० ध्वजं यजामहेः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ अष्टमंगल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ॥ पंचविदेहै शासता । एकसो साठ जिनंद । कल्या  
णक जिनराजना । पूजो अधिक आनंद ॥ १ ॥ सधव मिली प्रभु आग  
लै । मंगल आठकरंत । तन मन उज्जल जावसुं । हृदयकमल विकसंत ॥  
॥ २ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ ( हांहोरे देवा ) बावना चंदन घस० ( ए चाल )

॥ ❀ ॥ ( हांहोरे देवा ) पंचविदेह विराजता । उत्कृष्टा सहु जिनराजए ।  
हांहो० ॥ एकसो साठ सुहंकरा । जगबंधव जग शिरताजए ॥ हां० ॥  
जनमसमें त्रिहुं लोकमें । हरखित हुवै सहु सुरराजए ॥ हां० ॥ चौसठ  
सुरपति जावसुं । उठव करै हित सुख काजए ॥ २ ॥ हां० ॥ च्यवन जनम

दिख्या सही । केवल मोक्ष शुभराजए ॥ हां० ॥ चौबीशे जिनराजना । क  
ल्याणक वलि सुसमाजए ॥ ३ ॥ हां० ॥ पंच पंच गिणती कर्यां । एक  
सौबीश शुभराजए ॥ हां० ॥ च्यार जिनसर शासता । रुषभानन जिनगुण  
राजए ॥ ४ ॥ हां० ॥ चंद्रानन बीजोनमुं । वारखेण तीजो महाराजए ॥ हां० ॥  
वरधर्मान नितवंदियै । ए च्यारे शुभगुण पाजए ॥ ५ ॥ हां० ॥ द्रव्य जाव  
पूजन करो । जव जलनिधि तारण ज्याजए ॥ हां० ॥ सुमति सदा जिनरा  
जना । पदवंदै हित सुख काजए ॥ ६ ॥ ॐ क्षी परमा० सहस्रकूट० अष्ट  
मंगलं० यजामहेः ॥ १० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ गीत, नृत्य पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहाः ) ॥ गीत नृत्य गुणगावतां । थायै लाज अनंत । ज  
व्य सदा सेवन करै । हृदय कमल विकसंत ॥ १ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ अरे  
धारीगईरे अनादिनींद जरा दुकजोवोतो सही ॥ जो० ॥ ( ए चाल ) ॥  
तनें देवैरे सुग्यांनीसीख जिनंद पद सेवोतो सही । सेवोतो सही मेराचेतन सेवो  
तोसही ॥ त० ॥ जिनवरकी वरणी दुखहरणी जोवोतो सही ॥ मे० जो० ॥  
रायपसेणी मांहे हीयामें पोवोतो सही ॥ पो० मे० । त० ॥ १ ॥ जवदधिकी  
तरणी सुखकरणी लेवोतो सही ॥ मे० ले० ॥ तुंरुख्योरे अनंते काल अग्यांनी  
वेवोतो सही ॥ वे० मे० तनें० ॥ २ ॥ सम कितकी करणी मन हरणी सेवो  
तो सही ॥ ह्यां० से० ॥ परहरमान गुमान जगत जश लेवो तो सही ॥  
ले० । मे० ॥ तनें० ॥ ३ ॥ जविजनकी करणी जशजरणी वेवोतो सही ॥  
मे० ॥ अजर अमर गुण होय करममल धोवोतो सही ॥ धो० मे० ॥  
त० ॥ ४ ॥ इत्यादिक गुण गण जिन वरणी जावो तोसही ॥ मे० जा० ॥  
गीत ग्यान शुभ जाव हियामें ध्यावोतो सही ॥ ध्या० । मे० त० ॥ ५ ॥  
मुनिवरकी करणी चितधरणी पावोतो सही ॥ मे० ॥ सुमति कहै गु  
रुग्यांन हियामें ल्यावोतो सही ॥ ल्या० मे० ॥ तनें० ॥ ६ ॥ ॐ क्षी पर  
मा० । सहस्रकूट जिनेंद्राय गीत नृत्य पूजनं ॥ ११ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ वाजिन्न गुणपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ताल मृदंग सजी करी । मन्त्र पूजो धरजाव । ज



गत करी जिन राजनी । समकित शुद्ध उपाय ॥ १ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥  
 जिन गुण गावत सुरसुंदरीरे ॥ जिन० सु० ॥ ( ए चाल ) ॥ निरत करै  
 मिल सुरसुंदरीरे ॥ नि० सु० ॥ थेई २ तान करै प्रभु आगै । गावत  
 देवी सुर मधुरीरे ॥ नि० ॥ कंचू कसिया हरख उल्लासिया । ठमठम  
 नाचत कवल करीरे ॥ नि० ॥ १ ॥ ताल कंशाल विशाल अनोपम । गा  
 वत राग ठत्तीस करीरे ॥ नि० ॥ जिनगुण गावत हरख वधावत । पावत  
 निजगुण हरख प्ररीरे ॥ नि० ॥ २ ॥ तीन लोकको नाथ निरंजन ।  
 धरम धुरंधर तुंजिनरीरे ॥ नि० ॥ प्रब दुःख प्रंजन जन मन रंजन । अशर  
 ण शरण आनंद करीरे ॥ नि० सु० ॥ ३ ॥ अनंत गुणाकर सब सुख सा  
 गर । सेवत आपद दूरदरीरे ॥ नि० ॥ जगदीपक जगलोचन तूही । तूही  
 जगत पिया महरीरे ॥ नि० सु० ॥ ४ ॥ इण विध नृत्य करी प्रभुआगल  
 समकित सुद्ध उपाय खरीरे ॥ नि० ॥ सुमति कहै प्रविजन जिन पूजो ।  
 सफल जनम ए सफल घरीरे ॥ नि० सु० ॥ ५ ॥ ॐ क्षी परमा० सहस  
 कूट जिनेंद्राय नाटक पूजा ॥ १२ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ गुलाब जल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ विविध सुगंध लेई करी । पूजन कर जिनराज ।  
 सुजश सुगंधी विस्तरै । प्रगटै पुन्यसमाज ॥ ( चाल अंगरेजीवाजै  
 की ) ॥ आनंद कंद पूजतां जिनंद चंदहुं ( ए चाल ) ॥ पूज पूज जिन  
 राज काजसारतुं । का० ॥ पू० ॥ जग जश धार सार सुखकारतुं । अनंत झां  
 न तूही ज्ञान हितकारतुं । हि० ॥ पू० ॥ १ ॥ केतकी गुलाब फूल चाढ  
 सारतुं । मोगरो अत्रीरलाल अविकारतुं ॥ अ० पू० ॥ २ ॥ तूही जगमात  
 तात भरतारतुं । अत्तर सुगंध गंध प्रविठारतुं ॥ अ० पू० ॥ ३ ॥ केवमो  
 चंपेल बेल अवधारतुं । परम आनंद चंद जिनसारतुं ॥ जि० पू० ॥ ४ ॥  
 प्रगत उधार सार किरतारतुं । मैतोहुं आचारहीन मुनितारतुं ॥ सु० पू०  
 ॥ ५ ॥ मुनिंद चंद पूजतां पाप टारतुं । एहीहै जिनंद देव प्रवि धारतुं ॥  
 अ० पू० ॥ ६ ॥ तूही है मुनीश ईश गुणकारतुं । सुमति आधारसार जय

कारुं ॥ ज० पू० ॥ ७ ॥ ॐ श्री परमा० श्री सहसकूट जिनेंद्राय सुगंध  
जलं यजामहेः ॥ १३ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ कलश पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ॥ तेजरण सुखराजैहो प्रभू० ॥ ( ए चाल ) ॥  
तेज अधिक जगगाजैहो । प्रभु थारो ॥ ते० ॥ सहसकूट जिनवर सब पूजत ।  
पुन्य अनंत सुकाजै । अतिशयवंत महंत जिनेसर । सुरतरु सम प्रभू बाजै  
हो ॥ ते० ॥ १ ॥ रूप अनूप करी सुर मोहै । देखत दुख सहु जाजै ।  
खतर गढपति चंदसूरीसर । तेज अधिक गुरु बाजैहो ॥ ते० ॥ २ ॥  
प्रीतसागर गणी सिष्य सुवाचक । अमृत धरम सुराजै । शीश कृमा कल्याण  
सुपाठक । अमृत सम गुणराजैहो ॥ ते० ॥ ३ ॥ धरमविशाल मुनि गुरुदीवो  
तसुनंदन हितकाजै । सुमति कहै प्रवि प्रावधरीने । पूजो श्री जिनराजैहो  
ते० ॥ ४ ॥ वीकानेर नगर अतिसुंदर । संघ सदा गुण राजै । प्रेमधरी पू  
जन एकरियै । वंभित हितसुख काजैहो ॥ ते० ॥ ५ ॥ उगणीसै चालीशै  
मिगसर । सुद पंचमी शुभराजै । सुगुण निधान मोहन मुनीगावै । निजगु  
ण निरमल काजैहो ॥ ते० ॥ ६ ॥ इति सहस कूटजी पूजा संपूर्ण ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सहसकूट स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ सहियांहे नेमीसर वनमेने गिरना० ॥  
॥ ❀ ॥ सहियांहे सहसकूट महाराज वंदो सब प्रावसुंहे माय ॥ वं  
दो० ॥ सहि० ॥ तीस चौवीशी पृर्जायै हे माय ॥ स० ॥ विहरमान  
जगवान सेवो चित चाहसुं हेमाय ॥ से० ॥ स० ॥ १ ॥ एकसो साठ  
जिनेसरा हे माय । स० । उक्कृष्ट अवधार निरंजन ध्यावसुं हे माय नि० ।  
स० ॥ २ ॥ एकसो बीस जिनंदना हे माय ॥ स० ॥ कल्याणक सब होय ।  
सेवो प्रवि दावसुं हे माय ॥ से० ॥ स० ॥ ३ ॥ च्यार जिनेसर शाशता हेमा  
य ॥ स० ॥ जयवंता जगदीश अधिक गुण गावसां हेमाय ॥ अ० । स० ।  
॥ ४ ॥ बहुत दिनारो उमाहमो हे माय । स० । ते फजियो सुऊ आज जि  
एंद पद सेवनां हे माय ॥ जि० ॥ स० ॥ ५ ॥ उठव अधिक सुहामणा हे मा  
य । स० । खूबथया रंगरोल अधिक मन रंगसुं हेमाय । अ० ॥ स० ॥ ६ ॥

जगणीसै चालीशमें हे माय । स० । पोश माश सुखकार जगत कर जा  
वसुं हे माय । ज० ॥ स० ॥ ७ ॥ संघ सहू हरषै करी हे माय । सं० । पूज  
रची चितचाह वंछित सब पांमिया हे माय । वं० ॥ स० ॥ ८ ॥ धरम  
विशाल दयालनो हे माय । स० । सुमति कहै मन रंग सकल गुण दी  
जीयै हे माय । स० ॥ स० ॥ ९ ॥ इति सहसकूट जिनस्तवनं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सहसकूट स्वरूप, विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पांचजरत । ५ ऐरवत ॥ १० क्षेत्रोंमें । अतीत, अनागत, वर्तमा  
न, तीनों कालकी अपेक्षाये ३० चौबीशी होय ( अंके ) ७२० हुवा ।  
( तथा ) ५ महाविदेहके एकसो आठ विजयमें १६० जिन होय ( ८८० )  
( तथा ) २४ जगवानका १२० कल्याणक स्वरूप ( अंके १००० )  
( तथा ) ५ महाविदेहमें २० विहरमान ॥ ४ शाश्वता जिन ( एवं सर्व  
१०२४ जिन स्वरूप ) कों सहसकूट कहते हैं । सहसकूटजीको मंदर  
सिद्धगिरी तीर्थाधिराजके ऊपर, मूल नायकजीके पासमें अत्यंत मनोहर है ।  
( इसकी ) उत्कृष्टभाग्ये प्रत्येक महाराजकी । प्रत्येक द्रव्यसें पूजन उन्नव क  
रना होय ( तो ) आठदिन अठ्ठाई महोन्नव करै । रोकनाणो । नालेर, सुपारी  
विदाम, वस्त्र, दीपकादि, प्रत्येक द्रव्य १०२४ एकहजार चौबीशर चढ़ावै ।  
इतनी शक्ति न होय तो यथाशक्ती महोन्नव साथ पूजा विधि गुरुके मुख  
सें जानके करे ॥ ❀ ॥ इति सहसकूट पूजन विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पांचग्यान पूजा लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ वर्धमान जिनचंदकुं । नमन करी मनरंग । पूज  
रखुं जवि प्रेमसुं । सांजलजो उन्नरंग ॥ १ ॥ पांचज्ञान जिनवर कहा । म  
ति श्रुति अवधि प्रधान । मनपर्यव केवल बडो । दिनकर जोत समान ॥ २ ॥  
ज्ञानबनो संसारमें । गुरु विन ज्ञान न होय । ज्ञानसहित गुरु वंदियै । सु  
चिकर तन मन होय ॥ ३ ॥ वीर जिणंद बखानीयो । नंदीसूत्र मजार । ज  
व्य सदा अनुजव धरो । पावो सुख श्रीकार ॥ ४ ॥ निरमल गंगोदक जरी ।  
कंचन कलश उदार । श्रुतसागर पूजनकरो । जाव धरी जविसार ॥ ५ ॥  
चितहरखधरी अनुजवरंगे वीश परमपदसेविये ( ए चाल ) मति अ

तिह जंजो शकल विमल गुण आगर जविजन सेवियै । (आंकणी) ।  
 एमति ज्ञान सदा नमियै । निजपाप सकल दूरै गमियै । मनशुद्धकरी निज  
 गुण रमियै ॥ मति० ॥ १ ॥ व्यंजनकर अवग्रह इमजाणो । चतुर्भेदकरी  
 मनमें आणो । इमजाखै श्रीजिन जगजाणो ॥ मति० ॥ २ ॥ अर्थेकरी  
 भेद जिणंद आखै । पणइंद्रिय मनकर प्रनुदाखै । मुनि मानस ते दिलमें रा  
 खै ॥ मति० ॥ ३ ॥ बलि षटविध भेद ईहा कहियै । षटभेद अपाय करी  
 लाहियै । षटविध धारण जवि सरदहियै ॥ मति० ॥ ४ ॥ इमभेद अ  
 छार्इस जविधारो । इमजाखै जिनवर सुखकारो । निश्चय व्यवहारते अवधा  
 रो ॥ मति० ॥ ४ ॥ बलिरतन जमित कंचन कलशै । जविपूजन कर तन  
 मन उजसै । चिदरूप अनूप मदा विलसै ॥ मति० ॥ ६ ॥ एज्ञान दिवाक  
 र समकहियै । इम सुमति कहै दिलमें गहियै । एज्ञानथी अनुपम सुख ल  
 हियै ॥ मति० ॥ ७ ॥ ॐ क्षी परमात्मने अनं० जन्म० श्रीम० ॥ श्रीमति  
 ज्ञान धारकेभ्यः । जलंयजामहे स्वाहाः ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ( २ ) श्रुतज्ञान पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ श्रुत धारक पूजा करो । जाव धरी मनरंग । उप  
 गारी शिरसेहरो । जावो जिन उठरंग ॥ १ ॥ मृगमद चंदन वाससूं । जो  
 पूजै श्रुतअंग । अनुभव सुध प्रगटे सही । पामें सुरक अजंग ॥ २ ॥  
 ( ढाल ) ॥ नाभजीके नंदाजीमें लग्यामेरा नेहरा । ( ना० ए चालमें ) ॥  
 श्रुतजाकी पूजा कर सीखो जवी सेहरा । श्रु० । विनय सहित गुरुवंदन करके  
 लुल२ पायनमें गुरुदेवरा ॥ श्रुत० ॥ १ ॥ तीन तीश आशातन टाली । ज  
 गातिकरै जवि गुण गण गेहरा ॥ श्रुत० ॥ श्रीगुरु ज्ञान अखंभित वरसै ।  
 ज्युं पावस रत वरसै मेहरा ॥ श्रुत० ॥ २ ॥ दशविध विनयकरै श्रुतगुरुको  
 सेवेज्युं अलिफूलनै नेहरा ॥ श्रुत० ॥ गुण माणि रयण जरयो श्रुतसागर ।  
 देख दरश हरखावै मेरा जीवरा ॥ श्रुत० ॥ पठन वायन बलि२ करियै ।  
 सीजै वंभित ज्युं मुनिसेवरा ॥ श्रुत० ॥ गुरुनगती जैसी गणधरकी । बी  
 र कहै सुण गोतम सेहरा ॥ श्रुत० ॥ ऐसैं गुरुभतीसैं सीखो । ए श्रुतज्ञान  
 सकल सुखदेहरा ॥ श्रुत० ॥ गुरुविन आरेन को उपगारी । गुरु देव सदा

जगणीमें चालीशमें हे माय । स० । पोश माश सुखकार जगत कर जा  
वसुं हे माय । ज० ॥ स० ॥ ७ ॥ संव सह हरषे करी हे माय । सं० । पूव  
रवी चितचाह वंजित सब पांमिया हे माय । वं० ॥ स० ॥ ८ ॥ धरम  
विशाज दयाजनो हे माय । स० । सुमति कहै मन रंग सकल गुण दी  
जीये हे माय । स० ॥ स० ॥ ९ ॥ इति सहसकूट जिनस्तवनं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सहसकूट स्वरूप, विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पांचजरत । ५ ऐरवत ॥ १० क्षेत्रोंमें । अतीत-अनागत-वर्तमा  
न-तीनों कालकी अपेक्षायें ३० चौबीशी होय (अंके) ७२० हुवा ।  
( तथा ) ५ महाविदेहके एकसो आठ विजयमें १६० जिन होय ( ८८० )  
( तथा ) २४ जगवानका १२० कल्याणक स्वरूप ( अंके १००० )  
( तथा ) ५ महाविदेहमें २० विहरमान ॥ ४ शाश्वता जिन ( एवं सर्व  
१०२४ जिन स्वरूप ) को सहसकूट कहते हैं । सहसकूटजीको मंदर  
सिद्धगिरी तीर्थाधिराजके ऊपर मूल नायकजीके पासमें अत्यंत मनोहर है ।  
( इसकी ) उत्कृष्टजागे प्रत्येक महाराजकी । प्रत्येक द्रव्यसें पूजन उठव क  
रना होय ( तो ) आठदिन अष्टाई महोत्सव करें । रोकनाणो । नालेर-सुपारी  
विदाम-वस्त्र, दीपकादि, प्रत्येक द्रव्य १०२४ एकहजार चौबीशर चढ़ावे ।  
इतनी शक्ति न होय तो यथाशक्ती महोत्सव साथ पूजा विधि गुरुके मुख  
सें जानके करें ॥ ❀ ॥ इति सहसकूट पूजन विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पांचग्यान पूजा लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ वर्धमान जिनचंद्रकुं । नमन करी मनरंग । पूज  
रखुं जवि प्रेमसुं । सांजलजो उतरंग ॥ १ ॥ पांचज्ञान जिनवर कहा । म  
ति श्रुति अवधि प्रधान । मनपर्यव केवल बडो । दिनकर जोत समान ॥ २ ॥  
ज्ञानवसो संसारमें । गुरु विन ज्ञान न होय । ज्ञानसाहित गुरु वंदिये । सु  
चिकर तन मन होय ॥ ३ ॥ वीर जिणंद बखानीयो । नंदीसूत्र मजार । ज  
व्य सदा अनुजव धरो । पावो सुख श्रीकार ॥ ४ ॥ निरमल गंगोदक जरी ।  
कंचन कलश उदार । श्रुतसागर पूजनकरो । जाव धरो जविसार ॥ ५ ॥  
चितहरखधरो अनुजवरंगो वीश परमपदसेविये ( ए चाल ) मति अ

तिह जलो शकल विमल गुण आगर जविजन सेवियै । (आंकणी) एमति ज्ञान सदा नमियै । निजपाप सकल दूरे गमियै । मनशुद्धकरी निज गुण रमियै ॥ मति० ॥ १ ॥ व्यंजनकर अवग्रह इमजाणो । चउजेदकरी मनमें आणो । इमजाखे श्रीजिन जगजाणो ॥ मति० ॥ २ ॥ अर्थेकरी जेद जिणंद आखे । पणइंद्रिय मनकर प्रनुदाखे । मुनि मानस ते दिलमें राखे ॥ मति० ॥ ३ ॥ बलि षटविध जेद ईहा कहियै । षटजेद अपाय करी लाहियै । षटविध धारण जवि सरदहियै ॥ मति० ॥ ४ ॥ इमजेद अछाईस जविधारो । इमजाखे जिनवर सुखकारो । निश्चय व्यवहारते अवधारो ॥ मति० ॥ ४ ॥ बलिरतन जमित कंचन कलशै । जविपूजन कर तन मन उजसै । चिदरूप अनूप मदा विलसै ॥ मति० ॥ ६ ॥ एज्ञान दिवाकर समकहियै । इम सुमति कहै दिलमें गहियै । एज्ञानथी अनुपम सुख लहियै ॥ मति० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने नमः० जन्म० श्रीम० ॥ श्रीमति ज्ञान धारकेम्यः । जलंयजामहे स्वाहाः ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ( २ ) श्रुतज्ञान पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ श्रुत धारक पूजा करो । जाव धरी मनरंग । उपगारी शिरसेहरो । जावो जिन उठरंग ॥ १ ॥ मृगमद चंदन वाससूं । जो पूजै श्रुतअंग । अनुभव सुध प्रगटे सही । पामें सुरक अंग ॥ २ ॥ ( ढाल ) ॥ नाजजीके नंदाजीसैं लग्यामेरा नेहरा । ( ना० ए चालमें ) ॥ श्रुतजाकी पूजा कर सीखो जवी सेहरा । श्रु० । विनय सहित गुरुवंदन करके छल २ पायनमें गुरुदेवरा ॥ श्रुत० ॥ १ ॥ तीन तीश आशातन टाली । जगातिकरै जवि गुण गण गेहरा ॥ श्रुत० ॥ श्रीगुरु ज्ञान अखंफित वरसै । ज्युं पावस रत वरसै मेहरा ॥ श्रुत० ॥ २ ॥ दशाविध विनयकरै श्रुतगुरुको सेवेज्युं आलिफूलनै नेहरा ॥ श्रुत० ॥ गुण मणि स्यण जरखो श्रुतसागर । देख दरश हरखावै मेरा जीवरा ॥ श्रुत० ॥ पूजन वायन बलि २ करियै । सीजै वंझित ज्युं मुनिसेवरा ॥ श्रुत० ॥ गुरुजगती जैसी गणधरकी । वीर कहै सुण गोतम सेहरा ॥ श्रुत० ॥ ऐसैं गुरुजकीसैं सीखो । ए श्रुतज्ञान सकल सुखदेहरा ॥ श्रुत० ॥ गुरुविन आरेन को उपगारी । गुरु देव सदा



गुण मणिके जेवरा ॥ श्रुत० ॥ ऐसैं गुरुकी कीर्त करकै । सुमति धरो दिलमें  
गुण गेहरा ॥ श्रु० ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ नितनमियै थिवर मुनीसरा नि० ( एचालमें ) ॥ ॐ ॥ नितन  
मियै श्रुतधर मुनिवरा ॥ नि० ॥ अरथै श्री जिनराज वखाणैं । सुत्रे  
श्री गुरु गणधरा ॥ नि० ॥ १ ॥ मेवधुनी जिम जविजन सुणकै । हरसे  
ज्युं केकी वरा ॥ नि० ॥ अंग इग्यारै गुण मणि धारक । वारै उपांग उजाग  
रा ॥ नि० ॥ २ ॥ जगत उधारण तुंपरमेशर । सकल विमल गुण आगरा  
॥ नि० ॥ जेद पयन्ना नंदी सेवो । मूलसूत्र जवि गुण करा ॥ नि० ॥ ३ ॥  
श्रुतधारी गोतम गुण दीवो । पूरब चउद विद्याधरा ॥ नि० ॥ पहिलो  
आचारंग वखाणैं । चरण करण गुण सुखकरा ॥ नि० ॥ ४ ॥ दूजो सुयग  
मांग सुणीजै । जेद तिशय तेसठखरा ॥ नि० ॥ तीजो ठांणांगसूत्र विराजै ।  
सुणतां पापमितैपरा ॥ नि० ॥ ५ ॥ चौथोसमवायांग सुहावै । अरथ अनेक  
करिवरा ॥ नि० ॥ पंचमें जगवई महिमा करियै । सहसठत्तीश प्रशन धरा ॥  
नि० ॥ ६ ॥ छठो ज्ञाता अंग सु ध्यावो । धरमकथा कहै जिनवरा ॥ नि० ॥  
सातमो अंग उपाशक कहियै । दशश्रावक प्रतिमा धरा ॥ नि० ॥ ७ ॥ आठ  
मअंगै जिनवरदाखै । अंतगरु केवलि मुनिवरा ॥ नि० ॥ नवमें अंगै जविमु  
नधारो । अनुत्तरवाई शुभकरा ॥ नि० ॥ ८ ॥ प्रणविचार कहा जिन द  
शमें । अंगुष्ठादिक शुभतरा ॥ नि० ॥ अंगइग्यारमें जिनवर दाखैं । कर्मवि  
पाक विविध परा ॥ नि० ॥ ९ ॥ बारमोअंग जिणंद वखाणैं । अतिशय गु  
ण विद्याधरा ॥ नि० ॥ अक्षरश्रुत वलिसन्नी कहियै । सम्यकजेद अधि  
कतरा ॥ नि० ॥ १० ॥ सादिजेद सपरजव लहियै । गम्यकजेद सुणोनरा ॥  
नि० ॥ अंगप्रविष्ट कहै जिनवरजी । जेदचवद सुणजो खरा ॥ नि० ॥ ११ ॥  
इमजो श्रीश्रुतज्ञान आराधो । जाव जगत कर बहुपरा ॥ नि० ॥ सुमति  
कहै गुरु ज्ञान आराधो । वंढित पूरण सुरतरा ॥ नि० ॥ १२ ॥ ॥ ॐ ॥  
ॐ ह्रीं परमात्मने० श्रीश्रुतज्ञानधारकेभ्यः चंदनं यजामहेस्वाहाः ॥२॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ ( ३ ) अवधिज्ञान धूपपूजा ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ( दूहा ) ॥ ॐ ॥ अगर सेव्हारस धूपसैं । पूजो अवधि उदार ।

बोधबीज निरमलहुवै । प्रगटै सुक्ख अपार ॥ १ ॥ नवल नगीनें सारिखो ।  
ज्ञानवनो संसार । सुरनर पूजे जावसुं । महियल ज्ञानउदार ॥ २ ॥  
( ढाल ) ॥ निरमल हुय जजलै प्रनुप्यार । सबसंसार० ( ए चाल ) ॥ ॥

॥ अवधिज्ञानको पूजनकरले । ज्युं पावै जवपार सजूणा ॥ अ० ॥ ज्ञानवनो  
सुखदेन जगतमें । उपगारी सिरदार सजूणा ॥ अ० ॥ १ ॥ जेद असंखकहै  
जिनवरजी । मूलजेद षट् सार ॥ स० ॥ वट्टमान होयमान वखाणै । सूत्रें  
श्री गणधार ॥ स० ॥ २ ॥ सुर नर तिरि सहु अवधि प्रमाणै । देखै द्रव्य  
उदार ॥ स० ॥ अवधि सहित जिनवर सहुआवै । थाये जग जरतार ॥  
स० ॥ ३ ॥ ज्ञान विना नर मूढ कहावै । ढोरसमो अवतार ॥ स० ॥ ज्ञा  
नी दीपक सम जगमां है । पूजे सहु नर नार ॥ स० ॥ ४ ॥ ज्ञानतर्णी  
महिमा जग मां है । दिन २ अधिकीसार ॥ स० ॥ मूलमंत्र जग वशकर  
वाको । एहीज परम आधार ॥ स० ॥ ५ ॥ ज्ञाननीपूजा अहनिशि करिये ।  
जीजे वंछित सार ॥ स० ॥ ज्ञाननें वंदी बोध उपावो । कर्म कलंक निवार  
॥ स० ॥ ६ ॥ इत्यादिक महिमा जविसुणकै । पूजो अवधि उदार ॥ स० ॥  
सुमतिकहै जवि जाव धरीनें । सेवो ज्ञान अपार । सजूणा ॥ ७ ॥ ॐ क्षी  
श्रीपरमात्म० । श्रीअवधिज्ञान धारकेभ्यः । धूपं यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥

॥ ॥ अथ ( ४ ) मनपर्यवज्ञान पुष्पपूजा ॥ ॥

॥ ( दूहा ) ॥ ॥ केतकी दमणो मालती । अवर गुलाब सु  
गंध । जावधरी पूजन करो । हरै कुमति दुर्गंध ॥ १ ॥ मनपर्यव पूजाक  
रो । विवध कुशम मनरंग । महिकै परमल चिहुं दिशै । पामें शुजश अ  
चंग ॥ ७ ॥ ( ढाल ) ॥ सेत्रंजानोवासीप्यारो लागे० से० ॥ ( एचाल ) ॥

॥ ॥ जिनजीरो ज्ञानसुहावे । म्हांरारजिदा । ( जिनजीरो ज्ञान० ) जिन  
जीरो ज्ञान अनंतो सोहै । कहतां पारन आवै । म्हांरारजिदा ॥ जि० ॥  
॥ १ ॥ सन्नी नर मनपर्यव जाणै । तेमुनि ज्ञान कहावै ॥ म्हांरा० ॥ जिन०  
विपुलमतीनें रुनुमति कहिये । ए पुयजेद लहावे ॥ म्हांरा० जि० ॥ २ ॥  
अंगुलअढाए ऊणो देखै । तेरुनु नाम धरावै ॥ म्हांरा० ॥ जि० ॥ ३ ॥ म  
नगत जाव सकल ए जाखै । ते चोथो मनजावै ॥ म्हां० जि० ॥ एह

नी महिमा नित नित कीजै । तिमज्रवि नांमधरावै । म्हां० ॥ जि० ॥ ४ ॥  
 जगजीवन जगलोचन कहियै । सुनिजन ए नितध्यावै ॥ म्हां० ॥ जि० ॥ दि  
 क्हाले जिनवर उपगारी । चोथो ज्ञान उपावै ॥ म्हां० जि० ॥ ५ ॥ मनका  
 शंसा दूर करतहैं । सुणतां आण मनावै ॥ म्हां० जि० ॥ तन मन शुचिकर  
 पूजन करलै । जनम जनम सुखपावै ॥ म्हां० जि० ॥ ६ ॥ विविध कुशमसैं  
 पूजा करतां । बोधलता उपजावै ॥ म्हां० जिन० ॥ सुमति कहै जवि ज्ञान  
 आराधो । श्री जिनदेव बतावै ॥ म्हां० जि० ॥ ७ ॥ नै ज्ञी श्री परमात्म०  
 श्री मनपर्यवज्ञानधारकेभ्यः पुष्पं यजामहे स्वाहाः ॥ ४ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ ( ५ ) केवल ज्ञानपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ प्रनुपूजा ए पंचमी । पंचम ज्ञान प्रधान । सकलजाव  
 दीपक सदा । पूजो केवल ज्ञान ॥ १ ॥ फल दीपक अकृत धरी । नैवेद्य  
 सुरजिउदार । जाव धरी पूजन करो । पावो ज्ञान अपार ॥ २ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( ढाल ) तुमविन दीनानाथ दयानिध तु० ॥ ( ए चाल ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तुंचिदरूप अनूप जिनेसर । दरशणकी बलिहारीरे । तुं० । ( आं० )  
 निरमल केवल पूरण प्रगट्यो । लोका लोक विहारीरे । केवलज्ञान अनंत विरा  
 जै । द्वायक जाव विचारीरे ॥ तुंचिद० ॥ १ ॥ जोत सरूपी जगदानंदी । अ  
 नुपम शिवसुख धारीरे । जगत जाव परकाशक जानूं । निजगुण रूप सुधारी  
 रे ॥ तुंचि० ॥ २ ॥ सकल विमलगुण धारक जगमें । सेवत सब नरनारीरे ।  
 आतम शुद्ध सरूपी जविजन । गुण मणि रयण जंमारीरे ॥ तुंचिद० ॥ ३ ॥  
 केवल केवल ज्ञान विराजै । दूजो जेदन धारीरे । आतम जावै जवि ज  
 नसेवो । जगजीवन हितकारीरे ॥ तुंचि० ॥ ४ ॥ अवर ज्ञान सब देश क  
 हावै । केवल सरव विहारीरे । सरव प्रदेशी जिनवर जाखे । साखे श्रीगण  
 धारीरे ॥ तुंचि० ॥ ५ ॥ जए अजोगी गुणके धारक । श्रेणचढी सुखका  
 रीरे । अष्ट कर्म दल दूरकरीने । परमातम पद धारीरे ॥ तुंचि० ॥ ६ ॥ अमें  
 ज्ञानवमो जगमांहे । सेवोशुद्ध आचारीरे । सुमति कहै जविजन शुभ  
 जावै । पूजो कर इकतारीरे ॥ तुंचि० ॥ ७ ॥ फल १ अकृत २ दीपक ३  
 नैवेद्यसैं ४ । पूजो ज्ञान उदारीरे । पूजत अनुभव मत्ताप्रगटे । विजयी सु

ख ब्रम्हचारीरे ॥ तुंचि० ॥ ८ ॥ ॐ क्लीं परमात्मने श्रीकेवलज्ञान धारकेभ्यः  
फलं १ अहृतं २ दीपं ३ नैवेद्यं ४ यजामहे स्वाहाः ॥ ५ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ कलश पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ केशरियानें जाजको लोक तिरायो० ॥ ( ए चाल ) ॥ ❀ ॥  
प्रनु थारो ग्यांन अनंत सुहायो । प्रनु अशरण शरण कहायो ॥ प्रनु० ॥  
मति श्रुति अवधि अने मनपर्यव । केवल अधिक कहायो । अव्यसकल उपगार  
करतहै । श्रीजिनराज बतायो ॥ प्र० ॥ १ ॥ खरतरगढ पति चंद्र सूरिसर । रा  
जत राज सवायो । तेजपुंज रवि शशि सम सोहै । देखत दिल हुलसा  
यो ॥ २ ॥ प्रनु० ॥ प्रीत सागरगणि शिष्य सुवाचक । अमृतधर्म सुपायो  
श्रीश कृमाकल्याण सुपाठक । सदगुरु नाम धरायो ॥ प्रनु० ॥ ३ ॥ धरम  
विशाल दयाल जगतमें । ज्ञान दिवाकर ध्यायो । ज्ञान क्रियानो  
मूलजे कहिये । तत्वरमण मनजायो ॥ प्रनु० ॥ ४ ॥ वीकानेर नगर अति  
सुंदर । संघ सकल सुखदायो । सुधमती जिन धर्म आराधक । जगतकरे  
मुनिरायो ॥ प्र० ॥ ५ ॥ उगणीसे चालीशै वरशै । आसूसुद वरदायो । ज्ञां  
न विजयकारक सब जगमें । नित प्रति होत सहायो ॥ प्र० ॥ ६ ॥ सुम  
ति सदा जिनराज कृपासे । ज्ञान अधिक जशगायो । तत्वदीपक  
मोहन मुनिजावै । ज्ञानतणो गुणगायो ॥ प्रनु० ॥ ७ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पांचज्ञान आरती ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जय जग सुखकारी । वारी जय शम पद धारी । आरती करूं  
सहु सारी ॥ जय० ॥ अष्टा विंशति जेद करीनें । मति ज्ञान राजे ॥ मति० ॥  
ध्यावत पूजत जविजनकेरा । जव संकट जाजे ॥ जय० ॥ १ ॥ जेद चतुर्दश  
अथवा विंशति । प्रवचन पति दाखे ॥ प्र० ॥ श्री श्रुतज्ञानकी महिमा जिन  
वर । स्वसुखथी जाखे ॥ जय० ॥ २ ॥ रूपी द्रव्य विषयि मर्यादा । करि अव  
धी सोहै ॥ क० ॥ जेद पटक संख्याती तीवा । जविजन मनमोहे ॥ जय० ॥  
॥ ३ ॥ तुर्य ज्ञान मन पर्यव कहिये । जेद युगम लहिये ॥ जेद० ॥ श्रुमति  
विष्णुमती सरदहिये । न्यूनाधिक गहिये ॥ जय० ॥ ४ ॥ लोका लोकांन  
गंत वस्तु । गुण पर्यव जासी ॥ गु० ॥ केवल एक सहाय अनंते । जण

निर्वृतिवासी ॥ जय० ॥ ५ ॥ पंचज्ञानकी आरती करतां । जवआरती ठीजे  
 ज० ॥ जिम वरदत्त कुमार गुण मंजरी । तिम जक्ती कीजे ॥ जय ॥ ६ ॥ बृह  
 त् जट्टारक खरतर पति जिन । हंससूरि राया ॥ जि० ॥ तत् पद कज मधु  
 कर कंचन निधि ॥ आनंद वस्ताया ॥ ज० ॥ ७ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ मंगल दीवो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दीवोरे दीवो मंगलदीवो । जुवन प्रकाशक जिन चिरंजीवो ॥ दी०  
 ॥ १ ॥ चंद्र सूर प्रजु तुम मुख केरा । लुंण करता दै नित्पफेरा ॥ दी० ॥  
 ॥ २ ॥ जिन तुज आगल सुरनी अमरी । मंगल दीप करी दिये जमरी ।  
 दी० ॥ ३ ॥ जिम जिम धूपघटी प्रगटावे । तिम तिम जवनां पुरित दजावे  
 दी० ॥ ४ ॥ नीर अद्भुत कुसुमंजली चंदन । धूप दीप फल नैवेद्य बंदन ।  
 दी० ॥ ५ ॥ इणपरै अष्ट प्रकारी कीजे । पूजा स्नात्र महोत्सव पञ्चणीजे ॥ दी० ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ मंगल आरती ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जविजन मंगल आरती करिये ॥ जनम जनमकी आरति  
 हरिये ॥ ज० ॥ १ ॥ आरती प्रथम जिनेसरजीकी । दारुण विघन निवारण  
 नीकी ॥ ज० ॥ दूजैपद श्रीसिद्ध दिणंदा । आरती करत मिटत जवफंदा  
 ज० ॥ २ ॥ तीजे पद श्रीसूरि महंता । मार्ग शुद्ध प्रकाश करंता ॥ ज० ॥  
 चौथे पद पाठक गुणवंता । आरती करत हरत जव चिंता ॥ ज० ॥ ३ ॥  
 पंचमी आरती साधुन केरी । कुगति निवारण शुभगति शेरी ॥ ज० ॥ शिव  
 सुखकारण श्री जिनवांणी । ठी आरती ज्ञान वखांनी ॥ ज० ॥ ४ ॥ सा  
 तमी आरती आनंदकारी । समकित व्रत गृहि प्रतिमा धारी । ज० ॥ यह  
 विध मंगल आरती गावै । शुद्ध कृमा कल्याण ते पावै ॥ ज० ॥ ५ ॥ इ०

### ॥ ❀ ॥ अथ श्रीलक्ष्मी मोहन कृत स्तवन संग्रह ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अरिहंत नमो जगवंत नमो । जिनराय आदीशर नित्य नमो ॥  
 नमो नाभि मरुदेवानंदन, आदिनाथ जगनाथ नमो ॥ अरि० १ ॥ जग  
 हितकारक वांछितदायक ग्यान विमल गुणधार नमो ॥ नमो नमो अवि  
 चल सुखदायक शांतिसूरत जग तातनमो ॥ अरि० २ ॥ अतिशय धारक

सुर नर पूजित, सहस्रगुणधार सुदेवनमो ॥ जिनगुण आहक श्रीवरपावत, सु  
क्तिमोहन जयकार नमो ॥ अरि० ३ ॥ इति श्री आदिजिन स्तवनम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गजल ॥ ताल पंजावी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जबसें चेतन पावत निजगुण, आतम ध्यान लगाते हैं । आतम  
पेखत सहस्रसुख लेखत, सोहं ध्यान लगाते हैं ॥ सोहं सोहं सोहं जपतां सह अ  
रि कर्म खपाते हैं । सिद्धि अचल अविनाशी वसुगुण पुरुषोत्तम पद पाते हैं ॥ १ ॥  
निज घरमें बैठे अक्षय सुख पाते हैं । जब जगमें रहे सहज जीव ध्याते हैं । कर  
जोमी करके जिनगुण गाते हैं । सहज निवि मिलके मस्तक नमाते हैं ॥ २ ॥  
देव सेतेहें, इंद्र सेतेहें, सार जगतका पाते हैं, जब पार जगतका आते हैं ॥ ३ ॥  
जैनप्रकाश, करत हुलाश, शिवश्रीपाश, मोहनआश ॥ ४ ॥ जब० ॥ २ ॥

॥ ❀ ॥ रागकैरवो, अजी साहव नतीजा० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मेरे साहव जिनंदा दिग्वसिया मे० ॥ सुनोरी समकितधर नर  
नारी, सेवो शिवश्रीनृप ॥ जिनं० टेक ॥ ध्यान दिलमें धारके सेवत वीशथा  
नकों, जिननाम उपायके धारे अमर निधानकों ॥ उत्तम कुलमें आयके ज्ञान  
त्रिकले साथकों, भोगसुख पायके लीनो चरणपद हाथकों ॥ १ ॥ करम त  
पाई केवल जोपाए, सेवो शिव श्रीनृप ॥ जिनं० मेरे० ॥ २ ॥ केई अमर  
आयके, नमन करै सुजजावसें ॥ समवसरण रचनाकरी, चौमुख जिनदेखा  
वसें ॥ अतिशयगुण जिनधार, पर्षद चार प्रकारसें ॥ सोजित मधुर स्वर, कहे  
धर्म विस्तारसें ॥ सहज निविसुनके व्रतगुणपाए, सेवो शिव श्रीनृप ॥ जिन० ॥ ३ ॥  
पारनही लेसके, सुरगुरु पिणकथनसें ॥ अरिहंतपद आदरी अनंतसिद्धवत  
नसें ॥ तीनचुवन प्रजुतणा, रहा चैत्य अनादिसें ॥ श्रीवर शिवसुखपाय ध्या  
नगुण प्रसादसें ॥ संव चतुर्विध प्रजु मोहनकर, सेवो शिव श्रीनृप ॥ जिनं०  
॥ ४ ॥ ❀ ॥ इति अरिहंतपद वर्णन स्तवनम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जीया चतुर० । ताल पंजावी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जीया इकसुनवात, जिनपदकों तूं ध्याये ॥ जी० टेक ॥ अष्ट  
करमके वसमें पकियो । जमियो जबसायर मांये ॥ जीया० ॥ १ ॥ पुन्यसंयो  
गे नरजवपायो । मिलियो उत्तमकुल आयरे ॥ जीया० २ ॥ जैनधरम जिन



दर्शन पायो । फिरतुं आलस क्युंखायरे ॥ जी० ३ ॥ परगुणगरी अंतरजामी ।  
 तरण तारण महा रायरे ॥ जी० ४ ॥ इकचित प्रनुको समरण करलै । ज्युं  
 गुण परगट थायरे ॥ जी० ५ ॥ जोताहरा गुण प्रगट करै तो । शिवरमणीवरे  
 जायरे ॥ जी० ६ ॥ तत्वदीपक प्रनु श्रीवर ध्यावे । मोहन वंछित पायरे ॥  
 जीया० ७ ॥ इति जिनपदस्तवनम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तालपंजाबी ॥ राहचंपेली ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुनोमेरे पतियां दिलधर वतियां । निजगुण दर्शन जानं जानं  
 जानं ॥ टेक ॥ जिन दर्शनसें मोहू मिलै । इकचित प्रनुगुण गानं गानं  
 गानं ॥ सुनो० ॥ १ ॥ जंगम थावर तीर्थतणा । में तो नित सबगुण ध्यानं  
 ध्यानं ध्यानं ॥ सुनो० ॥ जैन प्रजावक गुण प्रगटे । शिव मोहनपद पानं  
 पानं पानं ॥ सुनो० ॥ ३ ॥ ❀ ॥ इति जिनदर्शनस्तवनम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जुकजुक परे० इस में ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नितनित नसुंरे तुमजिनप्यारे । मोहि तार, अवतार, तार, तार,  
 तार, अवतारे । नितनसुंरे० ॥ नितनित० । टेक ॥ तुमनाम जगमोहता ।  
 तुमकाम जगसोहता । तुमधर्म जगबोहता । अविजीव अवखोहता ॥ १ ॥  
 मनजावत, गुणगावत, शिवपावत, तुमकरो प्रकाशक जैन मोहन गुणसारे  
 नित० ॥ २ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ऐसे धोका देनेवाले० ताल पंजाबी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ऐसे पूजा करनेवाले मेंनें विरले देखे जाले ॥ ऐसे० टेक ॥ ऐसे  
 जिन आग्याकों पालनवाले, विधिसंयुतसें रहनेवाले, विनयादिगुण धरने  
 वाले, भक्तिगुण दिखलानेवाले ॥ पूजा० ॥ १ ॥ ऐसे अपनेजीके सुखपा  
 नेको, गुणगानेको गुणपानेको, इकचित जिनको ध्यातेहे सो, शिवकामें  
 को शिवपानेको, ठोमी ठोमी भवनीवाते, त्यागीहे कुमतीकीवाते, धारीहे  
 सुमतीकीवाते, पालीहे समकितकी वाते ॥ पूजा० २ ॥ ऐसे पूजन द्रव्ये  
 जावे, फल शिवनगरी देताहे, ऐसे निजगुण प्रगटे सुंदर सहुदिल जाणें  
 जगजाणें, सोजा सोजा जारी सोजा, जैसीहे सूरजकी सोजा, जैसी हे चं

द्रुकी सोजा, जिससे अधकी निजगुणसोजा. जिससे अधकी जिनपद  
सोजा ॥ धारो गुण सम, जेथी दूर हुवे भ्रम, सहु दूर हुवे कम, जैनमंगल  
पावे धम, अजी सुनो सीखो धारो आगम श्रीवर मोहनजाले ॥ ऐसे० ॥ ३ ॥  
इति श्रीजिनपूजा विधि स्तवनं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गजल ॥ क्या कहूं अववेरवेर० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ या कहूं अब चेतजीव ठोमरे संसार सारा ॥ या० ॥ टेक ॥ बहुत  
कर्मसे ना मिले, अपनागुण एकीवखत, तबतो श्रद्धा धारके, गुण पाय  
दर्शन ग्यान सारा ॥ या० १ ॥ पंचकारण सब आमिले, दिलधरो संयमतरफ,  
संयमलीये जावसें. जब ठोमदे सहु कर्म प्यारा ॥ या० २ ॥ तीनरत्न जो  
तो मिले । दूर हुवे कुमती भ्रम, जिनमंगल गुणगाय के. शिवपाय मोहन  
ध्यान सारा ॥ या० ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हंसारे राजा० एचाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुनोरे चेतन, अ जगजाल असारा । तुंतो भूमियो अनंतभव  
प्यारारे ॥ सुनो० ॥ टेक ॥ क्रोध लोभ मोह मिथ्या कपटे । कीनोजालपसा-  
रारे ॥ सुनो० १ ॥ नवा नवारूपे चिहुंगातिमांहे । कुटुंब अनेक प्रकारारे ॥  
सुनो० ॥ २ ॥ ऊठी काया ऊठी माया । ऊठा सबपरवारारे ॥ सुनो ॥ ० ३ ॥  
धन जोवन मद मतकर प्यारे । एकदिन जंगल चारारे ॥ सुनो० ४ ॥ जिन-  
धम सार दया दान निजगुण । सेवत गुण सुख कारारे ॥ सुनो० ५ ॥ जैनमं-  
गलगुण श्रीवर पावत । मोहन ग्यान प्रकारारे ॥ सु० ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रागचंपेली ॥ तालपंजावी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आदिजिनवरजी सुनोमेरी अरजी । भवजलमें अब तार तार  
तार ॥ आ० ॥ टेक ॥ मोह मिथ्यावम काल बहु । भूमियो भव वन चार  
चार चार ॥ आदि० १ ॥ हिवपुन्यें दर्शन गुणयोग, तुमगुण सुणिया  
सार सार सार ॥ आ० २ ॥ जिनगुण आहक भविलहस्ये शिव मोहनपद  
धार धार धार ॥ आ० ३ ॥ ❀ ॥ इति श्री आदिजिनस्तवनं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ लावणीकी चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रवण अजितजिन सहगुण सुन कर सेवनका दिल चाहते हैं

सेवनकरना सुमतिआदरना चेतनगुण जबपाते हैं ॥ टेक ॥ मोहे अबतो  
 बोनावो सहकुमतिकखेल । चिहुंगतिमांहे बहुत किया ठेल । पुन्ययोगे  
 दर्शन पाया । निजगुणसुमतिमहल ॥ मोहे० श्रव० १ ॥ मोहे अबतो  
 देखावो सहनिजगुणसेल । जेथीसहुजाणुं जगतकाखेल । करजोनीने सेवा  
 करुं तुंही चित्रावेल ॥ मो० अ० २ ॥ प्रभुअबतो उत्तारो प्रवजलसेपार । गावे  
 जिनमंगल गुणसुखकार । सहसंध श्रीवर पावे मोहन सुक्तीसार ॥ प्र० अ०  
 ॥ ३ ॥ इतिश्री अजित जिनस्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वामबंद, ताल २ मात्रा ६ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अजितचरण, रहतशरण, कनकवरण, तेजतरण ॥ अजि० १ ॥  
 दिलविचार, तत्वसार, मदप्रकार, तजगमार ॥ अ० २ ॥ प्रव अनंत, प्रय  
 सहंत, गुणधरंत, सुख करंत ॥ अ० ३ ॥ ज्ञानराय, लक्ष्मीपाय, मुक्ति प्राय,  
 सुखस्थाय ॥ अ० ४ ॥ इतिपदं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शिरपरयेबोजा० ॥ नाटक चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ संभवजिन थारी मूरतप्यारी अंगियां सारीरे ॥ सं० ॥ अंगियां  
 तुममनजाई, सुंदर सब रत्नजमाई, मानुंदिनकारीरे, जानुं बलिहारीरे ॥  
 सेवत नित तुम सुरसारा, तुम सहजग मोहनगारा, प्रविपल पल तुमगुण  
 धारे । शिवसुखलागत सहप्यारे । श्रीवर हितकारी, मोहनधारी, गुणसुख  
 कारीरे ॥ सं० ॥ १ ॥ इतिश्री संभव जिनस्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आई सुंदर नार, करकर शृंगार० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ताल पंजावी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिनतत्वसार, सहजग आधार, करिमोह जार, सुखशांतिसार-  
 प्रभुगुण अपार दिलसमरणकीनो ॥ जि० १ ॥ जिनसुमति पाय दिलसुमति  
 थाय । सह कुमति जाय, मोह मद न साय ॥ गुण आत्म पाय वंछितसुख  
 लीनो ॥ जिन० २ ॥ प्रवजल प्रधान, प्रवहणसमान, सहसुखनिधान, करि  
 आत्मध्यान, शिवश्री प्रधान, गुणमोहनलीनो ॥ जि० ३ ॥ इति श्री सुमति  
 जिनस्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नजर आई मुजकों० ताल दीपचंदी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नजनकर अवतो जिनंदगुणका । सहृ बोम मिथ्यात मतकाप्र  
रम ॥ टेक ॥ नम्यो नवजलमें अनंतोकाज । कुमतीसंगचेतन असुन करम ॥  
न० १ ॥ किया प्यारे चिहुंगति नाटक खेल, सहा बहु दुःख नपायो धरम ॥  
पायो अब दर्शन कोई पुन्ययोग, प्रचुण नजकर राख सरम ॥ न० ॥ २ ॥  
मिले वासु पुज्य जिनेसर राय, फले मन वंजित काजकरम ॥ गावे जिनमंग  
ल जैनप्रसाद, पावे सुख श्रीवर मोहन धरम ॥ न० ३ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तुंनकमलाजीयरवा इस० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तुं अवतार विमलवा ओप्रनुमोरा ॥ तुं० ॥ विमलजिनेसर जग  
परमेसर । करोमहर निजरवा ॥ करो महर निजरवा ॥ करो० ओ० १ ॥ तुं  
जगतारण विरुद श्रवणकर । रहूं तुमरे सरणवा ॥ र० ओ० २ ॥ तुमगुण सुरगुरु  
पारन पावत, किममें करूं वरणवा ॥ कि० ओ० ३ ॥ सुमतिसंग मुज निजगु  
णपातुं । एती करोमहरवा । एती० ओ० ४ ॥ तत्वदीपक शिव श्रीवर मोहन ।  
गुणगायो तरणवा ॥ गुण० ओ० तुं० ५ ॥ ❀ ॥ इति श्रीविमल जिनस्तवनम् ॥

॥ ❀ ॥ कंतावंद, ताल २ मात्रा ७ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रनुनमिनाथ, जोइंहाथ, सहृजग नाथ, शिवपुरहाथ ॥ प्रनु० ॥  
प्रनुपदलीन, थिरचितकीन, जिमजलमीन, अंतरपीन ॥ प्र० २ ॥ करुणासार,  
दिलगुणधार, अबमुजतार, कर नवपार ॥ प्र० ३ ॥ मोह मिटाय, तत्वदीपाय  
निजगुणपाय, शिवसुखथाय ॥ प्र० ४ ॥ पाठक मान, लक्ष्मीप्रधान, मो  
हनज्ञान, आतमध्यान ॥ प्रनु० इति श्री नमिजिनपदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ लादचला विणजारा इसचालमें ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रनु धर्मेनाथ सुज्यारा । जगजीवन मोहनगारा ॥ टेक ॥ तुम  
सेवा हितसुखकारी । सुरनर नवि दिलगुण धारारे । निजगुण सुख सांगत  
सारा ॥ प्र० १ ॥ तुम अंगिया अजब सुहावे । नृपण सब रयण जमावे । दिन  
कर समतेज अपारा ॥ प्रनु० २ ॥ शिवश्रीवर निजगुण पावे । गुण जैन प्रजा  
कर गावे, नित मोहन सुख जयकारा ॥ प्र० ३ ॥ इति श्री धर्मजिनस्तवनम् ॥

॥ ❀ ॥ दिलदारीकीनीरे० । इसमें ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दिलहर नाजावोरे, मेराओप्यारे, सुखकारियां, प्रीतमवारियां, दि  
लधरियां नजरियां, जरियां, हठकरके, फिरकर नाजावोरे ॥ दिल० टेक ॥  
मन अंदर रही शिववनिताजो । जानलेईसुझ घरकोंआकर । अबतो अर  
जो सुनके गिरपर ना धावोरे ॥ दि० १ ॥ बात नमानी यादवमुख जो । सा  
थरहुंगी संयमपाकर । पल पल दर्शन करके, शिवपुरकों पावोरे ॥ दि० २ ॥  
जैन प्रजाकर शिवश्रीवरजो । मोहनश्रेणी जिनगुण गाकर । उच्च नाटक  
करके प्रभुका तत्वदीपावोरे ॥ दिल० ३ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
इतिश्री नेमि जिनस्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तोरासच नहिकहनारे; इसचालमें ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तोराकथन निजानारे । प्यारेनेम, धरुप्रेम, गतियां तरस मोहे रतियां  
सतावै ॥ तोरा० टेक ॥ सरस दरस तोरो बहुतसुहावे, देखीनयना दिलवरसें ।  
साम साम साम, मेरै तुमसेतीकाम, मेरे सिरपर तुंहे स्वामी, तुंहे अंतरजामी,  
॥ तोरा० ॥ रथकों फिराय पिया गिरवरचाले । शिववनिता ललचानेकों ।  
प्यारी प्यारी प्यारी, तोहेदिल शिवप्यारी । में पिण दिहा लेसुंसारी । मोहुं  
शिवनारी ॥ तोरा० ॥ २ ॥ नेमराजुलदोनुं मोहसिधाए । जिनमंगल नित  
गुणगावे । ध्यान ध्यान ध्यान, तोरानितकरै ध्यान, पावे शिव लक्ष्मीप्रधान,  
थावे मोहनज्ञान ॥ तो० ॥ ३ ॥ इतिश्री नेमिजिनस्तवनम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कोईरसीलाढबीला० इसचालमें ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मेरे रंगीला चंगीला प्रभुपासजी । जैसा संगीला साथीला हो  
यतासजी ॥ मेरे० टेक ॥ पलमेरी णिनमें अहनिशिसमरुं । जिमहुय सुमता  
नारीहो सुंदरवानी, सहजसें पाया चेतन गुणज्ञानी । तन मन मोहन जाण  
सज्जन ॥ मेरे० १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
इतिश्री पार्श्वजिनस्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ठमरी ॥ गेरीब्राह्मणकी, इस० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्यारी पारशकी प्यारी पारशकी । सूरत अति मनजावनकी ॥  
प्यारी० ॥ टेक ॥ सुंवईसहर चिंतामणिपास । अंगिया अजब सुहावनकी ॥

प्यारी० १॥ सरदइंदु जिम वदन मनोहर । आसपूरै नितध्यावनकी॥प्या० २॥  
अश्वशेन वामाजीकेनंदन । तीन चुवन जसगावनकी ॥ प्यारी० ३ ॥ चव  
जलतारक सहसुखकारकः नयनसुधावरसावनकी ॥ प्या० ४ ॥ ज्ञानसुधा  
रस श्रीवरधारकः सुक्ति मोहन जय पावनकी ॥ प्या० ५ ॥ ❀ ॥  
इतिश्री चिंतामणी पार्श्वजिनस्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ताज दादरा, हजूरियांगढी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अरज करं ठाढो, अरज करं ठाढो, मोहेतारो ॥ अर० ॥ टेक ॥  
प्रजुजीथांको विरुद चितधारो । दुःखसहुटारो ॥ मोहे० १ ॥ प्रजुजी तुमे  
तरण तारणढो । सुखकारण ठो ॥ मोहे० २ ॥ प्रजुजी रिखज जिनेसर  
साचो । मोहन गुण राचो ॥ मोहे० ३ ॥ इतिश्री आदिजिनपदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शरणमें आयो शरणमें आयो । वीरतेरे शरणमें आयो ॥ वीर०  
टेक ॥ प्रजुजी मेंतो कुमति संग रमियो । बहुत चवजमियो ॥ वीर० १ ॥  
प्रजुजी मोकुं सुमति अवदीजे । जगत जश लीजे । वी० २॥ प्रजुजी शिवसुख  
श्रीवर चाहुं ॥ मोहनगुण पातुं ॥ वी० ३ ॥ इति श्रीवीरजिन स्तवनम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग कल्याण, मानोप्यारा२० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मोहे तारो मोहे तारो कुंथुजिनंद । मो० ॥ टेक ॥ कुंथुजिनेसर तुं  
परमेशर । शांति सूरत सुखकारो ॥ मो० १ ॥ सूरपिता श्रीदेवी माता । तुम  
तारक अवतारो ॥ मो० २ ॥ अतिशय सोजित अंगआनृपणः मोहनीमूरत  
प्यारो ॥ मो० ३ ॥ अविनाशी अविकारी तुं प्रजुः शिववाशी जगप्यारो ॥  
मो० ४ ॥ वीकानेर नगर अतिसुंदर । चैत्यवन्यो हितकारो ॥ मो० ५ ॥ जग  
णीसे इक्तीस जेष्ठसुद । दशमीदिन सुजवारो ॥ मो० ६ ॥ प्रजुथापनाकरि  
नृतनचैत्यें । श्रीवर संघ हजारो ॥ मो० ७ ॥ लक्ष्मीप्रधान मोहन नित सेवे । जब  
शिव पद दातारो ॥ मो० ८ ॥ इति श्रीकुंथुजिन चैत्य प्रतिष्ठा स्त० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गजल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गुणोंको धारजे दिलदार हरदम । अंगुणोहे सब सुखकार हरदम



॥ ❀ ॥ दिलदारीकीनीरे० । इसमें ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दिलहर नाजावोरे, मेराओप्यारे, सुखकारियां, प्रीतमवारियां, दि  
लधारियां नजरियां, जरियां, हठकरके, फिरकर नाजावोरे ॥ दिल० टेक ॥  
मन अंदर रही शिववनिताजो । जानलेईमुझ घरकोआकर । अबतो अर  
जी सुनके गिरपर ना धावोरे ॥ दि० १ ॥ बात नमानी यादवमुख जो । सा  
थरहुंगी संयमपाकर । पल पल दर्शन करके, शिवपुरको पावोरे ॥ दि० २ ॥  
जैन प्रजाकर शिवश्रीबरजो । मोहनश्रेणी जिनगुण गाकर । उल्लव नाटक  
करके प्रभुका तत्वदीपावोरे ॥ दिल० ३ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
इतिश्री नेमि जिनस्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तोरासच नहिकहनारे; इसचालमें ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तोराकथन निजानारे । प्यारेनेम, धरुप्रेम, गतियां तरस मोहे रतियां  
सतावै ॥ तोरा० टेक ॥ सरस दरस तोरो बहुतसुहावे, देखीनयना दिलवरसें ।  
साम साम साम, मेरे तुमसेतीकाम, मेरे सिरपर तुंहे स्वामी, तुंहे अंतरजामी,  
॥ तोरा० ॥ रथको फिराय पिया गिरवरचाले । शिववनिता ललचानेको ।  
प्यारी प्यारी प्यारी, तोहेदिल शिवप्यारी । में पिण दिहा लेसुंसारी । मोहुं  
शिवनारी ॥ तोरा० ॥ २ ॥ नेमराजुलदोनुं मोहसिधाए । जिनमंगल नित  
गुणगावे । ध्यान ध्यान ध्यान, तोरानितकरै ध्यान, पावे शिव लक्ष्मीप्रधान,  
थावे मोहनज्ञान ॥ तो० ॥ ३ ॥ इतिश्री नेमिजिनस्तवनम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कोईरसीलाबवीला० इसचालमें ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मेरे रंगीला चंगीला प्रभुपासजी । जैसा संगीला साथीला हो  
यतासजी ॥ मेरे० टेक ॥ पलमेंरी ढिनमें अहनिशिसमरुं । जिमहुय सुमता  
नारीहो सुंदरवानी, सहजसें पाया चेतन गुणज्ञानी । तन मन मोहन जाण  
सज्जन ॥ मेरे० १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
इतिश्री पार्श्वजिनस्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ठमरी ॥ गेरीब्राह्मणकी, इस० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्यारी पारशकी प्यारी पारशकी । सूरत अति मनचावनकी ॥  
प्यारी० ॥ टेक ॥ सुंवईसहर चिंतामणिपास । अंगिया अजब मुहावनकी ॥

परगढहोय तनमें । सहजगजाणहोवे इकठिनमें ॥ ज्ञान ज्ञान निजज्ञान,  
सुप्रध्यान करध्यान ॥ आ० नि० १ ॥ दोष अष्टादश रहित केवल्युत,  
अविजन धर्मसुनावे । लक्ष्मीप्रधान मिले शिवसंपद, मोहन जय सु  
खेपाय सहजगमें ॥ गुणगान, स्वरजान, अरतान, लहेमान ॥ आत्म० नि० ॥

३ ॥ इतिश्री नमिजिनस्तवनम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सांवलिया जैसं वने ते सेंतारो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आजमोरी अरज शीतलजिन धारो, मेरो जनम मरण दुःख-  
दारो ॥ आ० टेक ॥ कालअनादि अम्यो अव वनमें । कुमति नार मो  
हजारो । नरक निगोद देवनर अवकर । बहुविध नाटककारो ॥ आ० १ ॥  
पुन्यसंयोग जैनागम वचने । दर्शनगुण हितकारो । गुरु मुख तारक ईश्वर  
तुमको । जाणसरण सुखकारो ॥ आ० २ ॥ सिद्ध बुद्ध तुं जग परमेश्वर ।  
परमात्म जगप्यारो । ब्रह्मा विष्णु महेश्वर तुमही । तुम प्रभु जगदाधारो  
॥ आ० ३ ॥ दृढस्थ नंदानंद जिनेश्वर । अतिशय सहगुण प्यारो । शांतिसूक्त  
प्रभुशीतल जिनवर । अविजन हित सुख कारो ॥ आ० ४ ॥ इंद्रनुवन  
जिम चैत्य मनोहर । कलिकत्तापुरसारो । श्रीवर फल वट्टी प्रनुपावे । मुक्ति-  
मोहन जयकारो ॥ आ० ५ ॥ इतिपदम् ॥

॥ ❀ ॥ मोरी राजुल राणीजी थानें नमजी मिले इसचालमें ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मोरी सुमता राणीजी थानें श्रीपतिजी मिले । श्रीपतिजी० ॥  
श्रीपति मिलवा कारणें सारु । दान शील तप जाव । विधिसें जिनग्राम से  
वतां । सह पावे आत्म दाव । हे मोरी० १ ॥ श्रीपतिप्यारी सुमता नारी ।  
दर्शन ज्ञान सुहाय । चारित्र निजगुण साथ सें सह । सुख संपत्ति नितपाय ॥  
हे मो० २ ॥ विक्रमपुर श्रीकुंथु जिनेश्वर । चंद उदय अमरेश । श्रीशशि वि  
जय सुहावणा । सह सुगुण विद्या श्रीवरेस ॥ हे मो० ३ ॥ सह सुखकारी मृ  
रति प्यारी । मुक्ति कमल मन जाय । जिनपद पाठक सेवतां । सहसंघ मोहन  
जय थाय ॥ हे मो० ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥

इति श्रीकुंथुजिन पाठक सहगुण सेवन स्तवनम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥

गु० टेक ॥ अपने गुणोंकी पहचानक्याहे, वचन जिनराजका सत्यजाण हर  
दम ॥ गु० १ ॥ दर्शन ज्ञान चारित्र गुणहै । स्तन निजआत्मका पहचान  
हरदम ॥ गु० २ ॥ शासनपति महावीर प्रभुहै । चरण नितध्यानका चितधार  
हरदम ॥ गु० ३ ॥ निजगुणजो सहु भविजनपावै । मोहन शिवराजका सुख  
पाय हरदम ॥ गु० ४ ॥ इति निजगुण वर्णन पदम् ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ लावणीकीचाल ॥ ❀ ॥

॥ नितध्यावो फलपावो सदा तुमशाश्वत गिरिवरहां ॥ टेक ॥ तीरथहैओ स  
हुजग मंरुण, सिधगिरी शिवपाज । जिसकेध्यानैं भवि जनपामैं, अरिहंतपद  
शिवराज । केइध्याया, केइ पाया, केइ पावे, केइपामसी शिवसुख ज्ञानसैं  
भविजन अनंतकाल गतियां ॥ नित० १ ॥ पूरब निनाणों आया इनगिरि,  
रिखभजिनंद जिनराय । नववशिचेत्यसुहामणाजी । सहु जिनबिंबसुहाय ।  
संवआवै, प्रभुध्यावै, सुखपावै । गुणग्यानसैं श्रीवर जैनप्रकाशक मोहन जय  
वतियां ॥ नि० ३ ॥ इति सिधगिरी स्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कोईहालकहोजाके० इसमें ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मोरी बात सुनोसारे, प्रभु कुंथुनाथ प्यारे ॥ मो० टेक ॥ सूरपिता  
श्रीदेवीमाता, हथनापुरजारे, तुमजगतारक जन्मलईनें, बहु भविजन तारे ॥  
तुमसुनोगरीबनिवाज, रखोमेरी लाज, करो सुभकाज ॥ मो० १ ॥ सुरनर  
सहु भवितुजनें नमतां, सुखपायाजरपूर, ग्यानध्यानसैं दर्शनसाथें, कर्मकिया  
चकचूर ॥ प्रभुपाया शिवसुखआप, करे सहुजाप, बूटेसहुपाप ॥ मो० २ ॥  
जगदीश्वर जगतारक तुमहो, मोहतारोदिलधार, पाठक श्रीवर विक्रमपुरमें,  
सेवेतुमसुखकार ॥ प्रभुआनंद अधिक अपार, मोहनपद धार, करो जयसार ॥  
मो० ३ ॥ इतिपदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ यारवहालखुलजावै ॥ इसमें ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ निजगुण आत्मजबपावै, कुमतितिमरतवदूरेहोगा । सुमतिक  
थन नितजायतनमनसैं । त्याग त्याग दुःखत्याग, पापठोरु मोहठोरु । आत्म०  
॥ निज० टेक ॥ प्रभुनामि भजकर निजगुणसुधकर, चेतनकर्महटावे, ज्ञानरखी

परगटहोय तनमें । सहजगजाणहोवे इकाग्रिनमें ॥ ज्ञान ज्ञान निजज्ञान,  
सुप्रध्यान करध्यान ॥ आ० नि० १ ॥ दोष अष्टादश रहित केवलद्युत,  
प्रविजन धर्मसुनावे । लक्ष्मीप्रधान मिले शिवसंपद, मोहन जय सु  
खेपाय सहजगमें ॥ गुणगान, स्वरजान, प्ररतान, लहेमान ॥ आत्म० । नि० ॥  
३ ॥ इति श्री नमिजिनस्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सांवलिया जैमैवनें तैसंतारो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आजमोरी अरज शीतलजिन धारो, मेरो जनम मरण दुःख-  
तारो ॥ आ० टेक ॥ कालअनादि प्रम्यो प्रव वनमें । कुमति नार मो  
हजारो । नरक निगोद देवनर प्रवकर । बहुविध नाटककारो ॥ आ० १ ॥  
पुन्यसंयोग जैनागम वचनें । दर्शनगुण हितकारो । शुरु मुख तारक ईश्वर  
तुमको । जाणसरण सुखकारो ॥ आ० २ ॥ सिद्ध बुद्ध तुं जग परमेश्वर ।  
परमात्म जगप्यारो । ब्रह्मा विष्णु महेश्वर तुमही । तुम प्रभु जगदाधारो  
॥ आ० ३ ॥ दृढरथ नंदानंद जिनेश्वर । अतिशय सहगुण प्यारो । शांतिसूरत  
प्रभुशीतल जिनवर । प्रविजन हित सुख कारो ॥ आ० ४ ॥ इंद्रनुवन  
जिम चैत्य मनोहर । कलिकत्तापुरसारो । श्रीवर फल वद्री प्रभुपावे । मुक्ति-  
मोहन जयकारो ॥ आ० ५ ॥ इतिपदम् ॥

॥ ❀ ॥ मोरी राजुल राणीजी थांनें नमजी मिले इसचाजमें ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मोरी सुमता राणीजी थांनें श्रीपतिजी मिले । श्रीपतिजी० ॥  
श्रीपति मिलवा कारणें सारु । दान शील तप प्राव । विधिसें जिनघम से  
वतां । सह पावे आत्म दाव । हे मोरी० १ ॥ श्रीपतिप्यारी सुमता नारी ।  
दर्शन ज्ञान सुहाय । चारित्र निजगुण साथ से सह । सुख संपति नितपाय ॥  
हे मो० २ ॥ विक्रमपुर श्रीकुंथु जिनेश्वर । चंद नुदय अमरेश । श्रीशशि वि  
जय सुहावणा । सह सुगुण विद्या श्रीवरेस ॥ हे मो० ३ ॥ सह सुखकारी भू  
रति प्यारी । मुक्ति कमल मन प्राव । जिनपद पाठक सेवतां । सहसंघ मोहन  
जय थाय ॥ हे मो० ४ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

इति श्रीकुंथुजिन पाठक सहगुण सेवन स्तवनम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीजिनधर्ममहिमास्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आवो आवो नगरिया हमारीरे ॥ इस चालमें ॥ आवो आवो  
सज्जन मिल सारारे ॥ गुणगावो जिनंद सुखकारारे ॥ आ० ॥ टेक ॥ कोई  
हाथे वंशी धारो ॥ कोई हाथे वीणारे ॥ मृदंग बजावो गावो करी स्वरजीणा ॥  
आ० ॥ १ ॥ ठम २ पायनाचो घुग्घरु बंधावोरे ॥ नर नारी सहु जोडे  
सुजश बधावो ॥ आवो० ॥ २ ॥ दान दया शील धारो । तप जप सारोरे ॥  
आवसुद्ध धारकरो आतम निस्तारो ॥ आ० ॥ ३ ॥ पर पीडा दूर करी ॥  
करो उपगारोरे । पर निंदा दूर ढोमो । लेवोगुणसारो ॥ आ० ॥ ४ ॥ जीवकों  
बचायाचावो जिन धर्म धारोरे ॥ समकित सुद्ध धारी करोभवपारो ॥ आ०  
॥ ५ ॥ ज्ञान गुणीसैं सोवत रखतां ॥ होवैगी बढाईरे ॥ लक्ष्मी मोहन शिव  
सुख पावे । जय आनंद बधाई ॥ आ० ॥ ६ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चौवीशजिन नमस्कार स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नेमगयो गिरनारे ॥ इस चालमें ॥ प्रभुजी मिल्या मोहे आजरे ।  
मेरा सफल थया सहुकाजरे ॥ प्र० ॥ एतो तीन जुवन सिर ताजरे ॥ प्र० मेंतो  
रुषन्न अजित संजव नमुं । अजिनंदन जिनराजरे । सुमति पदम प्रभु सेवतां  
धारुं सुपार्श्व सुकाजरे ॥ प्र० १ ॥ चंद्राप्रभु जिनवर नमुं । सुविधि शीतल  
महाराजरे । श्रेयांस जिनकों नितनमुं । वासु पुज्य सुखकाजरे ॥ प्र० ॥  
॥ २ ॥ विमल अनंत प्रभु नमुं । धर्म शांति गुणराजरे । कुंथुनाथ  
अरिनाथकों । मल्लिनाथ सुज काजरे ॥ प्र० ३ ॥ वीशमा मुनिसुव्रत नमुं ।  
नामि नेमी पार्श्व महाराजरे । चौवीशमा महावीरजी । शाशनपति शिरता  
जरे ॥ प्र० ४ ॥ नवपद सहु गणधर नमुं । पूरो मन बंढित काजरे । शिव  
सुख श्रीवर पद मिलै । मोहन जय गुणराजरे ॥ प्र० ५ ॥ इति श्री महो  
पाध्याय श्रीलक्ष्मीप्रधानजी मुक्ति कमलगाणिःकृतस्तवन संग्रह संपूर्णम् ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री दादाजीकी अष्टप्रकारी पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सकल गुणगरिष्ठान् सत्तपोजि वरिष्ठान् । शम दमय मनुष्यांश्चा  
रुंचारित्र निष्ठान् । निखिल जगति पीठे दर्शितात्म प्रज्ञावान् । मुनिप कुश  
लसूरीन् स्थापयाम्यत्र पीठे ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीं श्री श्री जिन कुशल स्वरि

गुरो अत्रावतरावतर स्वाहा ॥ इति आह्वानं ॥ ❀ ॥ ॐ क्षी श्री श्री जिन  
कुशलसूरि गुरो अत्र तिष्ठ २ ठः ठः स्वाहा ॥ ❀ ॥ इति प्रतिष्ठापनं ॥ २ ॥ ॐ क्षी  
श्री श्री जिनकुशल सूरिगुरो अत्र मम सन्निहितो भव वषट् ॥ ❀ ॥  
इति सन्निधी कारणं ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अष्टप्रकारी पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) गंगाजल तिम नृवलवलि । तीर्थोदक जरपूर । कल  
शजरी गुरु चरणपर । ढाले तस दुःखदूर ॥ १ ॥ ❀ ॥ ( ढाल ) देशी सूर  
ती महीनांनी ॥ ❀ ॥ गंगाजल अति निरमल अमलसु कमलें पूर । खोरो  
दधि वरदधि ज्यों उज्ज्वल जल जरपूर । तेह उदकवलि तीर्थ नीर जरि कलश  
सदूर । गुरुचरणे जे ढाले ढाले दुकृतदूर ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॐ क्षी श्री श्रीजिन  
कुशल सूरिगुरु चरणकमलेभ्यः जलं निर्वपामिते स्वाहा ॥ इति जलपूजा ॥

॥ ❀ ॥ चंदन पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ बावन्ना चंदन अगर । घस केसर घन सार । चरचै जे गुरु  
चरणने । पांमें जे जेकार ॥ १ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ मलयागर तिम अगर चं  
दन बजिकेसर सार । कस्तूरी अतिगंधे पूरी घस घनसार । कुशल सूरि  
गुरुचरणे चरचै चढतै जाव । सकल रोग तन सोग हरे बलि जफता जाव  
॥ २ ॥ ❀ ॥ ॐ क्षी श्री श्री जिन कुशल सूरिगुरुः चरण कमलेभ्यः चंदनं  
निर्वपामिते स्वाहा ॥ ३ ॥ इति चंदन पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुष्प पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ केतकि चंपक फूलथी । पूजे जे गुरुपाय । तसु जशसूर उदै  
हुवे । अपजश निमिर नसाय ॥ १ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ चंपक केतकि मख्यो  
दमन सेवती फूल । जाई जुई मोगरो माजती तेम उहल । कमल गुलाब  
चंपेली बेजी परमलपूर । गुरुचरणे जे ढोवे होवे जश ज्युं खर ॥ २ ॥ ॐ क्षी  
श्री श्री जिन कुशल सूरिगुरुः चरणकमलेभ्यः पुष्पं निर्वपामिते स्वाहा ॥  
इति पुष्पपूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अक्षत पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ उज्ज्वल ज्यों शशि अंकविण । खंभित नहीं विशाल । अक्षत गु



रुचरणे ठवै । तसु घर मंगल माल ॥ १ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ सरल सुगंधित  
तंडुल उज्जल जल उत्पन्न । ज्युंवर मोती आजा हुंती उज्जलवन्न । जलधोई  
ससमोई सोई अद्भुत नव्य । स्वस्तिक कुशल वधावै पावै मंगल जव्य ॥ २ ॥  
॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीं श्री श्री जिन कुशल सूरिगुरुः चरण कमलेभ्यः । अद्भुतं निर्व  
पामि ते स्वाहा ॥ ❀ ॥ इति अद्भुतपूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ दीप पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कंचन मणिमय रत्ननी । दीवी कर घृतपूर । वाती मौली सूत  
धर । करौ प्रदीप सुद्धर ॥ १ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ कंचन घटित जटित गति  
नानाविध नवरत्न । दीवी अतिकारीगर कीवी अधिकै यत्न । घृतपूरी सस  
नूरी मौली वाती जोय । दीप करै गुरु आगै ज्योत उद्योती होय ॥ २ ॥  
॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीं श्री श्री जिन कुशल सूरिगुरुः चरण कमलेभ्यः दीपं निर्व  
पामि ते स्वाहा ॥ ❀ ॥ इति दीपपूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ धूप पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ बावन्ना चंदन अगर । सेव्वारस घनसार । धूपै जे गुरु धूपथी  
तस घर रिध विसतार ॥ १ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ अगर चंदन सेव्वारस ढान  
ढनीलो मेल । कपूर काचरी बलि घनसारै मृगमद जेल । धूप अडंग करी  
गुरु धूपै चढते चित्त । ते नरवित्त सुमारग पामें नव नव नित्त ॥ २ ॥ ❀ ॥  
ॐ ह्रीं श्री श्री जिन कुशल सूरिगुरुः चरण कमलेभ्यः धूपं निर्वपामिते  
स्वाहा ॥ इति धूपपूजा ॥ ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ नैवेद्य पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ साल दाज पकवान घन । व्यंजन नव नव प्रांत । नेवज गुरु  
आगल ठवै । कुधा दोष उपसांत ॥ १ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ पेना मगद  
सेवइया जाडू मोतीचूर । खाजा ताजा लापसी दोठानें घृतपूर । पिस्ता  
दाख विदाम बुहारा पिम्बखजूर । गुरुचरणे जे ठोवै जोग लहै जरपूर ॥ २ ॥  
॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीं श्री श्री जिन कुशल सूरिगुरुः चरण कमलेभ्यः नैवेद्यं निर्व  
पामिने स्वाहा ॥ ❀ ॥ इति नैवेद्यपूजा ॥ ७ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ फल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीफल शीताफल सदा । फल पूंगीफल लेय । ढोवै जे गुरु  
चरणपर । तसु उत्तम फल देय ॥ १ ॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ श्रीफल शी  
ताफल नारंगी दाम्भ दाख । खरवृजा तरवृज जंजेरी पाखी साख । करुणा  
कवला केला नींबू फलस सफार । गुरु चरणे फल ढोई फल पामें श्रीका  
र ॥ २ ॥ ॐ क्षी श्री श्रीजिन कुशल सूरि गुरुः चरण कमलेभ्यः । फलं  
निर्व्वपामिते स्वाहा ॥ ❀ ॥ इति फल पूजा ॥ ८ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अर्घ पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( अथ कजश ) दूहा ॥ ❀ ॥ इम जिन कुशल सुरिंदने । पूजे  
अष्ट प्रकार । तसु घर नवनिधि संपजे । पुत्रादिक परिवार ॥ १ ॥ चट्टारक  
खरतर गठै । श्रीजिन लाजसुरिंद । रत्नराजमुनि जमरपर । सेवै पद अरवि  
द ॥ २ ॥ तासुचरण रजकणसमो । ग्यांन सार बुद्धिमंद । श्रीसदगुरु पूजा  
रची । सोधोकविजन वृंद ॥ ३ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
इति श्रीजिनकुशल सुगुरुणां अष्टप्रकारी पूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ लघु अष्ट प्रकारी पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुरनदी जल निर्मल धारया । प्रबल दुष्कृत दाय निवारया ।  
सकल मङ्गल वंछित दायकं । कुशल सूरि गुरुश्वरणांयजे ॥ १ ॥ ॐ क्षी  
श्री श्रीजिन कुशल सूरिः चरण कमलेभ्यो जलं० ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ चंदन पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मलय चंदन केशर वारिणा । निखल जाम्बयवृजा तप हारिणा ।  
सकल० ॥ १ ॥ ॐ क्षी श्री श्रीजिन कुशल सूरि गुरुः चरण कमलेभ्यो चं०

## ॥ ❀ ॥ अथ पुष्प पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कमल केतकि चंपक पुष्पकेः । परिमला हन पद पद वृंदके ॥  
सकल० ॥ ३ ॥ ॐ क्षी श्री श्री जिन कुशल सूरि गुरुः० ॥ पुष्पं यवा०॥३॥

## ॥ ❀ ॥ अथ अकृत पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सकल तंतुज केरित निर्मलै । प्रवर मोक्षिक पुंजवदुज्वलैः ।  
सकल मङ्गल० ॥ ॐ क्षी श्री० अकृतं यवामह स्वाहाः ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नैवेद्य पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ बहु विधै श्वरुभिर्वटकेयकैः । प्रवर मोदक पुंज सु खर्जकैः ।  
सकल मङ्गल ० ॥ ॐ क्षीं श्रीं ० । नैवेद्यं ययामहे स्वाहाः ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ दीप पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अति सुदीप्त मयै खलु दीपकैः । विमल कंचन प्राजन संस्थिते ।  
सकल मङ्गल ० ॐ क्षीं श्रीं ० । दीपं ययामहे स्वाहाः ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ धूप पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अगर चंदन धूप दशांगजै । प्रसरिता खिल दिह्यु सुधुम्रकैः ।  
सकल मङ्गल ० ॥ ॐ क्षीं श्रीं ० । धूपं ययामहे स्वाहाः ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ फल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पनशमोच सदा फलकर्कटैः । सुसुखदेः किल श्रीफल चिर्नटैः ।  
सकल मङ्गल ० ॥ ॐ क्षीं श्रीं ० । फलं यया महे स्वाहाः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अर्घ्य पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जल सुगंध प्रसून सुतंडुलैः । श्वरु प्रदीपक धूप फलादिभिः ।  
सकल ० ॥ ॐ क्षीं श्रीं ० । श्रीजिन कुशल सूरि ० । अर्घ्यं स्वाहा ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ दादा गुरु महाराज की पूजा लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पहली थापना स्थापन करके आवाहन का श्लोक पढ़े  
॥ काव्य ॥ सकल गुण गरिष्ठान् सत्तपोन्निर्वरिष्ठान् । शम दमय मनुष्यांश्चारु  
चारित्रनिष्ठान् । निखल जगति पीठे दर्शितात्म प्रज्ञावान् । मुनिप कुशल  
सूरिन् स्थापया म्पत्रपीठे ॥ १ ॥ ॐ क्षीं श्रीं श्री जिन दत्त श्री जिन कुशल  
श्री जिन चंद्रसरि गुरौ अत्रावतरावतर स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ क्षीं श्रीं श्री जिन  
दत्त सूरिगुरौ अत्रतिष्ठ २ ठः ठः ठः स्वाहा ॥ इति प्रतिष्ठापनं ॥ ॐ क्षीं श्रीं  
श्रीजिनदत्तसूरिगुरौ अत्र मनसंनिहितो ज्व वषट् इति संनिधीकरणं ॥ ३ ॥  
अथ जलका कलश लेके स्नात्रीया मुच होके खड़ा रहे ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम जलपूजा ॥ ❀ ॥

॥ दोहा ॥ ईश्वर जग चिंतामणी । कर परमेशी ध्यान । गणधर पद गुण  
वर्णना । पूजन करो सुजाण १ ॥ सौ धर्मा मुनिपति प्रगट । वीर जिनेश्वर

पाट । मिथ्या मत तम हरणकूं । नव्य दिखावण वाट ॥ २ ॥ सुस्थितसुप्रति  
वध गुरु । सूरि मंत्र को जाप । कोटि कीयो जब ध्यान धर । कोटिकाष्ठ  
सुधाप ॥ ३ ॥ दश पूर्वो श्रुत केवली । जये वज्र धर स्वाम । तादिन तें  
गुरु गहको । वज्र शाख जयो नाम ॥ ४ ॥ चंद्रसूरि जये चंद्रशम । अतहि  
बुद्धि निधान । चंद्रकुली सब जगत में । पसरयो बहु विज्ञान ॥ ५ ॥ वर्ध  
मान के पाट पद । सूरिजिनेश्वर आश । चैत्य वाशि कूं जीत कर । सुविहित  
पद प्रकाश ॥ ६ ॥ अणहिलपुर पाटण सजा । लोक मिले तिहां लह ।  
खरतर विरुद्ध सुधानिधि । पुर्जज राजसमह ॥ ७ ॥ अजय देव सूरि जये  
नव अंगदीका कार । थंजण पारस प्रगट कर । कुष्ट मिटावन हार ॥ ८ ॥  
श्री जिन वल्लभ सूरि गुरु । रचना शास्त्र अनेक । प्रतिबोधे आवक बहुत ।  
ताके पद विशेष ॥ ९ ॥ हुंवड आवग वाघमी । अठारे हजार । जैन दया  
धर्मी किये । वरते जेजेकार ॥ १० ॥ दादा नाम विज्ञात जस । सुर नर  
सेवग जाश । दत्तसूरि गुरु पूजतां । आनंद हर्ष उजास ॥ ११ ॥ दिल्ली में  
पतसाहनो । हुकम उठाया शीश । मणिधारी जिन चंद गुरु । पूजो विस  
वावीस ॥ १२ ॥ ताके पद परंपरा । श्री जिन कुशल सूरिंद । अकबर कूं  
परचा दीआ । दादा श्री जिनचंद ॥ १३ ॥ एसे दादाच्यार कूं । पूजो चित्त  
लगाय । जल चंदन कुशमादि कर । ध्वज सौगंध चढाय ॥ १४ ॥ ॐ ॥

॥ॐ॥ चाल दादा चिरंजीवो पदेशी ॥ॐ॥

॥ ॐ ॥ गुरुराज तणी पूजन कर जवि सुख कर मिलसी लल्लि घणी ॥  
ए आंकणी ॥ गुरु दत्तसूरिंद जग सुखकारी । गुरु सेवगनें सानि  
धकारी । गुरु चरण कमलनी बलिहारी ॥ गु० १ ॥ शंवत इग्यारे बार  
शशी । वत्तीसे जनम्यां शुभ दिवसी । आवग कुल हुंवडनें हुजसी ॥ गु० ॥  
॥ २ ॥ जसु वाउगसा पितु नाम जणे । बाहडदे माना हर्ष घणे । इक्ता  
लीसे दिक्कापजणे ॥ गु० ३ ॥ गुणहत्तरे वल्लभ पाठधरी । गुरु माया बीजनी  
जाप करी । गुरु जग में प्रगटया तरावरी ॥ गु० ४ ॥ मणिधारी जिन चंद  
उपगारी । जिन दत्त सूरिंद के पठारी । जये दादा दूजा सुखकारी ॥ गु०  
५ ॥ राशज पितु देख्खण दे माता । श्री मान गोत्र बोधनशाना । दिल्ली

पतसाह सु गुण गाता ॥ गु० ६ ॥ जसु चोथे पाट उद्योत करी । जिन कुशल  
सूरिंद अति हर्ष करी । तेरेसे तीसे जनम घरी ॥ गु० ७ ॥ जसु जिह्वा ज  
नक जगत्र जीयो । वर जैत सिरी शुभस्वपन लीयो । गुरु ढाजेड गोत्र  
उधार कीयो ॥ गु० ८ ॥ धन सैंतालीसे दीह धरी । जिन चंदसूरीश्वर पा  
टवरी । गुणहत्तरे सूरि मंत्र जाप करी ॥ गु० ९ ॥ सेवा में बावन बीर खरा ।  
जोगणीया चोसठ हुकम धरा । गुरु जगमें केइ उपगार करा ॥ गु० १० ॥  
माणक सूरीश्वर पद ढाजे । जिन चंदसूरि जगमें गाजे । जये दादा चोथा  
सुख काजे ॥ गु० ११ ॥ जिन चांद उगायो उजियालो । अम्मावश की  
पूनमवालो । सब श्रावग मिल पूजन चालो ॥ गु० १२ ॥ जिन अकबर कूं  
परचा दीना । काजीकी टोपी वश कीना । वकरीका जेद कहा तीना ।  
गु० १३ ॥ गंधोदक सुरजि सुकलश करी । पह्तालन सद गुरु चरण परी । या  
पूजन कवि रुधिसार करी ॥ गु० १४ ॥ श्लोक ॥ सुर नदी जल निर्मल धा  
रयः । प्रबल दुष्कृत दाघ निवारयः । सकल मंगल वंछितदायकं । कुशल  
सूरि गुरोश्चरणायजे ॥ १ ॥ ॐ ज्ञां श्रीं परम पुरषाय, परम गुरु देवाय, जगवते  
श्री जिनशाशनो दीपकाय, श्री जिन दत्त सूरिश्वराय । मंडित जाल स्थल  
श्री जिनचंद्र सूरीश्वराय । श्री जिन कुशल सूरीश्वराय । अकबर असुर  
त्राण प्रतिबोधकाय श्री जिन चंदसूरीश्वराय । जलं निर्विषामिते स्वाहाः ॥ १ ॥

॥ ❀ ॥ अथ दूजी केशर चंदन पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॥ दोहा ॥ केशर चंदन मृग मदा । कर वनसार मिलाप ।  
परचा जिन दत्तसूरि का । पूज्यां तूटे पाप ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ चाल वीण वाजे की ॥ दीन के दयाल राज सार २ तूं । आंकणी ॥ आये  
जरु अठेनग्र धाम धूम २ धुं । वाजते निशाण ठोर हर्ष रंग हूं । ह० दी० १ ॥  
मूसलमान मुगलपूत फोज मो जमूं । फोत मोत होगया हायकार सूं ॥  
हां० दी० २ ॥ सन्न विन्न देख आप हुकम दीन यूं । लावो मेरे पास आस  
जीव दान हूं ॥ जी० दी० ३ ॥ मृतक पूत मंत्र सैं उगाय दीनतूं । देख के  
अचंच रंग दास खासकूं ॥ दा० ४ दी० ॥ करत सेव जाव पूर पूर राजजूं ।  
ठोर के अजह् खाण हाजरी जरूं ॥ हा० ५ दी० ॥ वीजखीजके पनी प्रति

क्रमण के मूं । हाथसें उठाय पात्र ढांक दीन हूं ॥ ढां० ६ दी० ॥ दामनी  
अमोल बोल सिद्ध राज तूं । देतूं वरदान ठोरु बंध कान क्यूं । वं० ७ ॥  
दत्त नाम जपत जाप करत नांह चूं । फेर में पड़ंगी नांह ठोरु दीन हूं ॥ ठो०  
८ दी० ॥ करोगे निहाल आप पाव पलकनूं । रामकृदिसार दास चरण  
ठाहलूं ॥ च० ९० दी० ॥ श्लोक ॥ मलय चंदन केशर वारिणा । निखिल  
जाडय रुजातप हारणा । शकल० । ॐ क्षीं श्रीं श्री जिन दत्त सूरि गुरो के  
शर चंदनं निर्विषामिने स्वाहा ॥ २ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ तीसरी पुष्प पूजा ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ दोहा ॥ चंपा चमेली मालती । मरुवा अरु मचकंद । जो चाहे  
गुरु चरण पर । नित घर होय आनंद ॥ १ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ नींद तो गई बादीला मारी० । ए चाल ॥ राग मान ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ गुरु पर तिख सुर तरु रूप सुगुरु शम दूजो तो नही ।  
दूजो तो नही रे सुमति जन दूजो तो नही । गुरु परतिख सुर तरु  
रूप सु गुरुने पूजो तो सही ॥ ए आंकणी ॥ चितोर नगरी बज्र थंज  
मे । विद्या पोथी रहारे ॥ सु० ॥ हेजी मंत्र जंत्र विद्या में पूरी गुरु निज ।  
हाथ गृही ॥ गु० गुरुपर० ॥ १ ॥ पुरज्जेणी महाकाज के । मंदिर थंज कहीरे  
सुम० । हेजी शिद्धशेन दिन करकी पोथी । विद्या सरव लहीरे सु० वि०  
गुरुप० ॥ २ ॥ उज्जेणी व्याख्यान वीच मे । आविका रुप गृहीरे । सु०  
श्रा० ॥ हेजी जोगणीयां ठजणे कुं आई, सब कुं खोज दई । सु० गु ३ ॥  
दीन होय जोगणीयां चोमठ । गुरु की दाश जईरे । सु० गु० ॥ हेजीशान  
दीया वरदान हरख में पमरया सुजस मही ॥ प० गु० ४ ॥ पुष्पमाल गुरु  
गुण की गंधी । चाहो चित्त चहीरे । सु० चा० । हेजी कहै रामकृदिसार  
सुजस की वंदी आप दई । वूं० गु० ५ । श्लोक । कमल चंपक केतकी पुष्प  
के । परि मलाजत पद पद हृद के । शकल० ॥ ॐ क्षीं श्रीं श्री जिन दत्त०  
पुष्पं निर्विषामिने स्वाहाः । ३ । ॥ ॐ ॥



पतसाह सु गुण गाता॥गु० ६ ॥ जसु चोथे पाट उद्योत करी । जिन कुशल  
सूरिंद अति हर्ष करी । तेरेसे तीसे जनम धरी ॥ गु० ७ ॥ जसु जिह्वा ज  
नक जगत्र जीयो । वर जैत सिरी शुभ्रस्वपन लीयो । गुरु ठाजेड गोत्र  
उधार कीयो ॥ गु० ८ ॥ धन सैंतालीसे दीक्ष धरी । जिन चंदसूरीश्वर पा  
टवरी । गुणहत्तरे सूरि मंत्र जाप करी ॥ गु० ९ ॥ सेवा में बावन बीर खरा ।  
जोगणीया चोसठ हुकम धरा । गुरु जगमें केइ उपगार करा ॥ गु० १० ॥  
माणक सूरीश्वर पद ठाजे । जिन चंदसूरि जगमें गाजे । जये दादा चोथा  
सुख काजे ॥ गु० ११ ॥ जिन चांद उगायो उजियालो । अम्मावश की  
पूनमवालो । सब श्रावग मिल पूजन चालो ॥ गु० १२ ॥ जिन अकबर कूं  
परचा दीना । काजीकी टोपी वश कीना । वकरीका जेद कहा तीना ।  
गु० १३ ॥ गंधोदक सुरजि सुकलश करी । पह्वालन सद गुरु चरण परी । या  
पूजन कवि रुधिसार करी ॥ गु० १४ ॥ श्लोक ॥ सुर नदी जल निर्मल धा  
रयः । प्रबल दुष्कृत दाव निवारयः । सकल मंगल वंछितदायकं । कुशल  
सूरि गुरौश्वरणायाजे ॥ १ ॥ ॐ ज्ञों श्रीं परम पुरषाय, परम गुरु देवाय, जगवते  
श्री जिनशाशनो दीपकाय, श्री जिन दत्त सूरिश्वराय । मंडित जाल स्थल  
श्री जिनचंद्र सूरिश्वराय । श्री जिन कुशल सूरिश्वराय । अकबर असुर  
त्राण प्रतिबोधकाय श्री जिन चंदसूरिश्वराय । जलं निर्विषामिते स्वाहाः॥१॥

॥ ❀ ॥ अथ दूजी केशर चंदन पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॥ दोहा ॥ केशर चंदन मृग मद्रा । कर धनसार मिलाप ।  
परचा जिन दत्तसूरि का । पूज्यां तूटे पाप ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ चाल वीण वाजे की ॥ दीन के दयाल राज सार २ तूं । आंकणी॥आये  
जरु अठेनग्र धाम धूम २ धुं । वाजते निशाण ठोर हर्ष रंग हूं । ह० दी० १ ॥  
मूसलमांन सुगलपूत फोज मो जमूं । फीत मोत होगया हायकार सुं ॥  
हां० दी० २ ॥ सन्न विघ्न देख आप हुकम दीन यूं । लावो मेरे पास आस  
जीव दान हूं ॥ जी० दी० ३ ॥ मृतक पूत मंत्र सैं उगाय दीनतूं । देख के  
अचंन रंग दास खासकूं ॥ दा० ४ दी० ॥ करत सेव जाव पूर पूर राजजूं ।  
गोरु के अजह्द खाण हाजरी जरूं ॥ हा० ५ दी० ॥ बीजखीजके पत्नी प्रति

क्रमण के मूं । हाथसैं उठाय पात्र ढांक दीन हूं ॥ ढां० ६ दी० ॥ दामनी  
अमोल बोल सिद्ध राज तूं । देतूं वरदान ठोरु बंध कीन करूं । वं० ७ ॥  
दत्त नाम जपत जाप करत नांह चूं । फेर में पड़ंगी नांह ठोरु दीन हूं ॥ ठो०  
८ दी० ॥ करोगे निहाल आप पाव पलकन्ह । रामकृदिसार दास चरण  
गहलूं ॥ च० ९० दी० ॥ श्लोक ॥ मलय चंदन केशर वारिणा । निखिल  
जाड्य रुजानप हारणा । शकल० । उँ कीं श्रीं श्री जिन दत्त सूरि गुरो के  
शर चंदनं निर्विषामिते स्वाहा ॥ २ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

### ॥ ॐ ॥ अथ तीसरी पुष्प पूजा ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ दोहा ॥ चंपा चमेलीं माजती । मरुवा अरु मचकंद । जो चाहे  
गुरु चरण पर । नित वर होय आनंद ॥ १ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ नींद तो गई बादीला मारी० । ए चाल ॥ राग मान ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ गुरु पर तिख सुर तरु रूप सुगरु शम दूजो तो नहीं ।  
दूजो तो नहीं रे सुमति जन दूजो तो नहीं । गुरु परतिख सुर तरु  
रूप सु गुरुनें पूजो तो नहीं ॥ ए आंकणी ॥ चितोरु नगरी वज्र थंन  
मे । विद्या पोथी रहीरे ॥ सु० ॥ हेजी मंत्र जंत्र विद्या में पूरी गुरु निज ।  
हाथ गृही ॥ गु० गुरुपर० ॥ १ ॥ पुरज्जेणी महाकाल के । मंदिर थंन कहीरे  
सुम० । हेजी शिद्धशेन दिन करकी पोथी । विद्या सग्न लहीरे सु० वि०  
गुरुप० ॥ २ ॥ उज्जेणी व्याख्यान बीच मे । श्राविका रूप गृहीरे । सु०  
श्रा० ॥ हेजी जोगणीयां बजणे कुं आई, सब कुं खोल दई । सु० गु ३ ॥  
दीन होय जोगणीयां चोमठ । गुरु की दाश जईरे । सु० गु० ॥ हेजीशान  
दीया वरदान हरख सैं पमर्या सुजस मही ॥ प० गु० ४ ॥ पुष्पमाल गुरु  
गुण की गूंथी । चाढो चित्त चहीरे । सु० चा० । हेजी कहे रामकृदिसार  
सुजस की वंदी आप दई । वं० गु० ५ । श्लोक । कमल चंपक केतकी पुष्प  
के । पार मज्जाकृत् पद पद हृद के । शकल० ॥ उँ कीं श्रीं श्री जिन दत्त०  
पुष्पं निर्विषामिते स्वाहाः । ३ । ॥ ॐ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ चोथी धूप पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ धूप पूज कर सुगुरु की । पसरे परमल पूर । जस सुगंध  
जगमें वधे । चढे सवाया नूर ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग सौरभ ॥ कुबजा ने जादू मारा ॥ ए चाल ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अंबिका विरुद्ध बखाणे गुरु तेरो ॥ अं० ॥ तुम युग प्रधान नही  
ठाने ॥ गु० ए आंकणी ॥ गढ गिरनारपे अंबड श्रावक । एसो नियम चित ठाणे ।  
युग प्रधान इस जुग में कोई । देखूं जन्म प्रमाणे ॥ गु० अं० १ ॥ कर उपवाश  
तीन दिन बीते । प्रगटी अंबा ज्ञाने ॥ गु० ॥ प्रगट होय कर में लिख दीना ।  
सुवरन अक्षर दाने ॥ गु० अं० २ ॥ या गुण संयुत अक्षर वांचै । ताकूं युग  
वर जाने ॥ गु० ॥ अंबड मुलक २ में फिरता । सूरि शकल पतवाने ॥ गु०  
३ ॥ आया पाश तुमारे सदगुरु । कर पसार दिखलाने ॥ गु० ॥ वास द्वेप  
ऊन ऊपर माला । चेला वांच सुणाने ॥ गु० अं० ४ ॥ सर्व देव हे दाश  
जिनोके । मरु धर कल्प प्रमाणे ॥ युग प्रधान जिन दत्त सूरेश्वर । अंबरु शीश  
जुकाने ॥ गु० ५ ॥ उद्योतन सूरिनें निज हथ । चौरासी गढ ठाने । सो  
शत्रु तुमरी शेवा सारे । चौरासी गढ माने ॥ गु० ६ ॥ जो मिथ्यात्वी तुमकूं  
न पूजे । सो नही तत्व पिठाने । जद्र बाहु स्वामी तुम कीर्तन । कीनी  
ग्रंथ प्रमाणे ॥ गु० ७ ॥ युग प्रधान परि कीए गंडिका । गण धर पद वृत्ति  
म्याने । कहे रामरुद्रिशार गुरुकूं । पूजा धूप कराने ॥ गु० ८ ॥ श्लोक ॥ अगर  
चंदन धूप दशांगजैः । प्रशरिता खिल दिहू सु बुझकै ॥ शकल मं० ४ ॥  
ॐ ह्रीं श्रीं पर० धूपं निर्व्विपामिते स्वाहाः ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ पांचमी दीपपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ दीप पूज कर सुगण नर । नित २ मंगल होत । उजि  
यालो जगमें जुगत । रहे अखंस्त जोत ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चाल ख्याल की ॥ पूजन कीज्योजी नर नारी गुरु महाराज  
का ॥ हो पू० ॥ सिंधु देशमें पंच नदी पर । साधे पांचु पीर । जोई ऊपर पुरुष  
तिराये । ऐसे गुरु सवीर ॥ पू० ॥ २ ॥ प्रगट होयके पांच पीरने । सात दीया  
बरदान । सिंधु देश में खर तर श्रावग । होवेगा धनवान ॥ पू० ॥ २ ॥ सिंधु

देश मुलतान नग्रमें । बडा महोन्नव देख । अंबड और गढ का श्रावग । गुरु  
 से कीना छेष ॥ पू० ॥ ३ ॥ अण हिलपुर पत्तन में आवो ॥ तो में जाणुं  
 सच्चा । बसो महोन्नव आवेंगे तूं । निर्धन होगा कच्चा ॥ पू० ॥ ४ ॥ पत्तन  
 बीच पधारे दादा । सनमुख निर्धन आया । गुरु बतलाया क्यूंरे अंबरु ।  
 अहंकार फल पाया ॥ पू० ॥ ५ ॥ मनमें कपट कीया अंबरुने । खरतर  
 महिमा धारी । जहर दीया उन अशन पांनमें । गुरु विध जाणी सारी ॥ पू०  
 ६ ॥ अण शाली सुखवर श्रावगसें । निर्विष सुद्री मंगाई । जहर उतारा  
 तब लोकोमें । अंबरु निंघा पाई ॥ पू० ॥ ७ ॥ मरके बितर हुवा वो अंबरु ।  
 रजो हरण हर लीना । अणसाली वितर वचनोसें । गोत्र उतारा कीना ॥  
 पू० ॥ ८ ॥ सज्ज होय गुरु औघालेके । गोत्र वचाया सारा । रुद्धिशार महिमा  
 सद गुरुकी । दीपकका उजयारा ॥ पू० ॥ ९ ॥ श्लोक ॥ अति सुदिसमयै  
 खलु दीपकैः । विमल कंचन प्राजन शंस्थितैः ॥ सकल० ॥ नैऋती पर० दीपं  
 निर्व्विषामिते स्वाहाः ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ अद्वत पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ अद्वत पूजा गुरु तणी । करो महाशय रंग । कृती न  
 होवे अंग मे । जीते रण मे जंग । १ । राग आसावरी ॥ अबधू सो जोगी  
 गुरु मेरा ॥ ए चाल ॥ रतन अमोलख पायो सु गुरु शम । रतन अमोलख  
 पायो । गुरु शंकट सबही मिटायो । सु० ॥ ए आंकणी ॥ विक्रमपुर नगरी  
 लोकन कूं । हेजा रोग संतायो । बहोत उपाय कीया शांतिक का । जरा फरक  
 नही आयो । सु० २० १ । जोगी जंगम ब्रह्म शंन्यासी । देवी देव मनायो ।  
 फरक नहीं किनही ने कीना । हाहाकार मचायो । सु० २० २ ॥ रतन  
 चिंतामणि सरिषो साहिव । विक्रमपुर में आयो । जैन संघ को कष्ट दूर कर  
 जैजैकार वरतायो ॥ सु० २० ३ ॥ महिमा सुण माहेश्वर ब्राह्मण । सबही शीश  
 नमायो । जीवत दांन करो महाराजा । गुरु तब थूं फुरमायो । सु० २० ४ ॥ जो  
 तुम समक्ति व्रत कों धारो । अबही करदूं उपायो । तहत वचन कर रोग  
 मिटायो । आनंद हर्ष वधायो । सु० २० ५ । जो कोई श्रावग व्रत नही धारयो  
 पुत्री पुत्र चढायो । साधु पांच से दीद्वत कीना । साध वीयां समुदायो ।

। सु० २० ६ । मंत्र कला गुरु अतिशय धारी । ऐसो धर्म दीपायो ॥ रुधिसार  
पर किरपा कीनी । साचो इलम बतलायो ॥ सु० २० ७ ॥ श्लोक ॥ सरल  
तंडुल कै रति निर्मलै ॥ प्रवर मौक्तिक पुंज वदूज्वलैः सकल० ॥ ॐ क्षी  
श्रीं प० अद्भुतं निर्व्विपामिते स्वाहाः ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ नैवेद्य पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ नैवेद्य पूजा सातमी । करो जविक चित चाव ॥ गुरु गुण  
अगाणित कुण गिणे । गुरु जव तारण नाव ॥ १ ॥ राग कट्याण । तेरी  
पूजा वणी हे रसमे ॥ ए चाल ॥ हो गुरु किया असुर कुं वश में । ए आंकणी ।  
वरु नगरी मे आप पधारे । सांजेला धसमस में । ब्राह्मन लोक बेमे अजिमा  
नी । मिलकर आया सुसमे ॥ हो गु० १ ॥ महिमा देख सक्या नही गुरु की  
जेरे मिथ्यात्वी गुस में । मृतक गऊ जिन मंदिर आगे । रखदी सनमुख चसमे  
। हो गु० २ ॥ श्रावग देख जये आकुलता । कहे गुरु से कसमें । चिंता दूर  
करी हे संव की । गऊ उठ चाली रसमे ॥ हो गुरु० ६ ॥ मरी गऊ कूं जीती  
कीनी । लोक रह्या सब हसमे । जाके गाय पत्नी रुद्रालय । संव जया सब खु  
समे । हो गु० ४ । ब्राह्मण पांव पन्या सब गुरुके । देख तमासा इसमे । हुकुम  
उठावेंगे शिर ऊपर । तुम शंतति की दिशमे ॥ हो गु० ५ ॥ नमस्कार हे  
चमत्कार कूं । कीनी पूजा रसमें । कहे राम रुधिसार गुरु की । आनंद मंगल  
जस में ॥ हो गु० ६ ॥ श्लोक ॥ बहु विधे श्रुतिर्वदकैर्यकैः ॥ प्रचुरसर्पि पिप  
क मुखज कै । शकल० । ॐ क्षी श्रीं प० नैवेद्यनिर्व्विपामिते स्वाहाः ॥ ७ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ फल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ फल पूजा सें फल मिले । प्रगटे नवे निधान ॥ चिहुंदिश  
कीरत विस्तरे । पूजन करो सुजान ॥ १ ॥ रथ चढ जाहुनंदन आवत  
हे ॥ ए चाल ॥ चालो संव सब पूजनकूं । गुरु शमरयां सनमुख आवत  
हेरे । चा० ५ ॥ ए आंकणी ॥ आनंदपुर पहन को राजा । गुरु शोभा  
सुण पावत हेरे ॥ चा० ॥ जेज्या निज परधान बुझानें । नृप अरदास  
सुणावत हेरे । चा० । लाज जाण गुरु नगर पधारे । नृपत आय वधावत  
हेरे । चा० । राज कुमार को कुष्ट मिटायो । अचरज तुरत दिखावत

हेरे । चा० २ । दश हजार कुटंब संग नृप कूं । श्रावग धर्म धरावत हेरे ।  
 चा० ३ ॥ दया मूल आज्ञा जिनवर की । वारे ब्रत उचरावत हेरे ॥ चा० ॥  
 ऐसे च्यार राज समकित धर । खर तर संघ वणावत हेरे । चा० ४ । कुष्ट  
 जलंधर हौण जगंदर । केइयक लोक जीवावत हेरे । चा० । ब्राह्मन क्षत्री  
 अरु माहेश्वर । ओश वंश पसरावत हेरे । चा० ५ ॥ तीस हजार एक लख  
 श्रावग । महिमा अधिक रचावत हेरे ॥ चा० ॥ कहत राम रुद्धिसार गुरु  
 कूं । फल पूजा फल पावत हेरे ॥ चा० ६ ॥ श्लोक ॥ फनसमोचसदाफल  
 कर्कटै । सुसुखदै किल श्रीफल चिर्जटै । शकल० ॥ उँ क्षी ५० फलं निर्वि  
 पामिते स्वाहाः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ वस्त्र सुगंधी पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ वस्त्र अत्तर गुरु पूजना । चोवा चंदन चंपेल । दुस्मन  
 सब सज्जन हुवे । करे सुरंगा खेल ॥ १ ॥ मनमो किमही न बाजे हो कुंथु  
 जिन ॥ ए चाल ॥ लखमी लीला पावेरे सुंदर । लखमी लीला पावे । जे  
 गुरु वस्त्र चढावेरे । सुं० । सुजस अत्तर महकावेरे ॥ सुं० ॥ पुरजन शीश  
 नमावेरे । सुं० । ए आंकणी ॥ दरिया बीच जीहाज श्रावग की । डूबण खतरे  
 आवे । साचे मन समरे सद गुरु कूं । दुख की ढेर सुणावेरे ॥ सुं० । १ ॥ वाचं  
 ताव्याख्यानसूरीश्वर । पंखी रूपे थावे । जाय समंद में ज्याज तिराई । फिर  
 पीठा जब आवेरे ॥ सुं० २ ॥ पूढे संघ अचरज में जरीया । गुरु सब बात  
 सुणावे ॥ ऐसे दादा दत्त कुशल गुरु । परचा प्रगट दिखावेरे । सुं० ३ ।  
 बोथर गूजरमल श्रावग की । दादा कुशल तिरावे । सुखसूरि गुरु शमय  
 सुंदर की । ज्याज अलोप दिखावेरे ॥ सुं० ४ ल० ॥ वारे से इग्यारे दत्तसूरि ।  
 अजमेर अण शण ठावे । उपज्या सोधर्मा देवलोकै । सीमंवर फुरमावेरे  
 सुं० ५ ॥ इक अवतारी कारज सारी । मुक्ति नगर में जावे । कुशल  
 सूरि देराऊर नगरे । नुवनपति सुरथावेरे ॥ सुं० ६ ॥ फागुण वदि अम्मा  
 वश सीधा । पुनम दरश दिखावे । मणिधारी दिखी मे पूज्यां । शंकट  
 सुपने नावेरे । सु० ७ । रथी उठी नही देख वादशा । वांही चरण  
 पधरावे । वस्त्र अतर पूजा सद गुरु की । रुद्धिसार मन आवेरे । सुं० ।



॥ श्लोक ॥ अखिल हीर शुचि नव चीर कै । प्रवर प्रावरणै खलुगंधतः । श  
कल० ॥ ॐ ह्रीं श्रीप० वखं चोवा चंदन पुष्पसारं निर्विषामिते स्वाहाः॥

॥ ❀ ॥ अथ धजा पूजा ॥ ❀ ॥

॥ दोहा ॥ ध्वज पूजा गुर राज की । लहके पवन प्रचार । तीन लोकके  
शिखर पर । पोहचे सो नर नार ॥ १ ॥ चाल । जिन गुण गावत  
सुर सुंदरी रे । ए चाल ॥ ध्वज पूजन कर हरख जरी रे ॥ ध० ॥ सज  
सोले शिणगार सहेल्यां । श्री सदगुर के द्वार खरीरे । ध० । अप  
ठर रूप सुतन सुक लीनी । ठम २ पग जणकार करीरे ॥ ध० १ ॥ गा  
वत मंगल देत प्रदक्षणा । धन २ आनंद आज घरीरे । ध० ॥ निर्धन कूं  
लखमी वगसावत । पुत्र विना जाके पुत्र करीरे ॥ ध० २ ॥ जो जो पर तिख  
परचा देख्यां । सुणो जविक दिल बीच धरीरे । ध० ॥ फतेमख जगतीया  
आवग । पहली शंका जोर करीरे ध० ३ । परतिख देखूं जब में जाणूं । प्रग  
ट्या ततखिण तरण तरीरे ॥ ध० ॥ पुष्प माल शिर केशर टीका । अधर श्वेत  
पोशाख करीरे ॥ ध० ४ ॥ मांग २ बर बोलें बाणी ॥ फरक बतावो गुरु मेघ  
जरीरे । ध० ॥ फरक जगायो दोय लाख पर । तेरी महिमा नित्त हरीरे ॥  
ध० ५ ॥ गैनचंद गोलेछा कूं ते । परतिख दीना दरस फरीरे ॥ ध० ॥ विक्र  
मपुर में थुंज तुमारा । चित्र करावत सुर सुंदरीरे ॥ ध० ६ ॥ थानमख  
जुआयां पर किरपा । लखमी लीला सहज वरीरे । लखमी पति दूगरु की सा  
हिव । हुंमी की जुगताण करीरे । ध० ७ ॥ जो जगार करया तें मेरा । दीनी  
सनमुख अमृत जरीरे ॥ ध० । तेरी कृपा सें सिद्धी पाई । जागे जस अरु जागे  
जरीरे । ध० ८ ॥ जूखा जोजन तिसिया पाणी । जगत हाजरी देव परीरे ॥  
॥ ध० ॥ विमुख वखत पर सहाय हमारे । रुद्धिसारकी गरज सरीरे । ध० ९ ॥  
श्लोक ॥ मृष्ट मधुरध्वनि खिखणी नाद कै । ध्वजविचित्रित विसृतवासकै ।  
शकल० । शिखरो पारि ध्वजां आरोपयामि स्वाहाः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अर्घ पूजा कलस ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ जटारक पदवी मिली । जीते वादी वृंद । कंठ विराजत  
सरस्वती । जग में श्री जिन चंद ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ राग आसावरी ॥ अथवा धन्या श्री ॥ पूजन जग सुखकारी । सुगुरु ते  
री। पूज० । तेरे चरण कमल बलिहारी । सु० । साह सजेम दिखीको बादस्या  
सुण के शोज तिहारी । जट्ट हरायो चरचा करके । जट्टारक पद धारी । सु० १ ॥  
अम्मावश की पूनम कीनी । चंद उगायो जारी । चढके गगन करी हे चरचा ।  
सूरज से तप धारी । सु० ॥ चौदेसे उगणीस शाल में । लखनेउ नगर मजारी  
गोरा फिरंगी टोपीवाला । दिलमें यह बात विचारी । सु० ३ । जैन सितंबर  
देव जो सच्चा । पूरे मनसा हमारी । वाणी निकसी राज्य तुमारा । होवेगा  
इधकारी ॥ सु० ४ ॥ अंधेकी खोजी आंख सूरत में । पूजे सब नर नारी ।  
कह जग गुण बरणूं मे तेरा । तूं ईश्वर जयकारी ॥ सु० ५ ॥ उगणीसे संवत्सर  
तेपन । मिगसर माश मजारी । शुक्ल दूज जिन चंद सूरिशर । खर तर  
गठ आचारी सु० ६ कुशल सूरि के निज संतानी । हेम कीर्ति मनुहारी ।  
प्रति बोध्या जिन द्वी पांचसे । जान सहित अणगारी ॥ सु० ७ ॥ हेम  
धाम शाखा जब प्रगटी । जग में आनंदकारी । धर्मशील साधू गुण पूरे ।  
कुशल निधान उदारी ॥ सु० ८ ॥ या पूजन करतां सुख आनंद । अन  
धन लखमी सारी । कहत राम रुद्धिशर गुरूकी । जय २ शब्द उचारी ।  
सु० ९ ॥ इति श्री समस्त दादा गुरु पूजा संपूर्ण ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सदगुरूणां आरती लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पहली आरती दादाजीकी कीजै । दुःखदोहग सब दूर हरीजै ।  
( जैजै सदगुरु आरती कीजै ) श्रीजिन दत्त सूरि समरीजै । ( जै जै० )  
॥ १ ॥ बीजी बीज पमंती धारा । जयवारण तूंही सुखकारा ( जै० ) ॥  
२ ॥ तीजी परचा पूरक तेरी । दूर हरो सब दुर्मति मेरी ( जै ) ॥ ३ ॥  
चौथी सुगलपूत जिय दायक । सुखर हुकम धरै ज्युं पायक ॥ ( जै० ) ॥  
४ ॥ पांचमी पांच नदी जिण तारी । संघ सकलनो संकट वारी ॥ ( जै० )  
॥ ५ ॥ छठी थांजो वज्र विदारी । विद्या पोथी परगट कारी ॥ ( जै० ) ॥  
६ ॥ सातमी चौसठ जोगण साधी । सूरिमंत्र सुरनें आराधी ॥ ( जै० ) ॥  
॥ ७ ॥ इण विध सात आरती कीजै । मनवन्तित संपति फल लीजै ॥ ( जै० )

॥ ८ ॥ जैन लाज खरतर गणधारी । सदगुरु चरण कमल बलिहारी ॥  
( जै० ) ॥ ९ ॥ इति श्री दादाजीकी आरती संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीदादाजीको वृद्ध स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ विलशे रुद्धि सम्पद्धि मिली । शुभयोगै पुण्यदशा सफली । जि  
न कुशलसूरि गुरु अतुल बली । मनवंडित आपै दादो रङ्गरली ॥ १ ॥ मङ्गल  
लील समें विपुला । नव नवय महोत्सव राजयला । सुपसायें गुरु चढतीक  
ला । सुकलीणी पुत्रवती महिला ॥ २ ॥ सबही दिन थायै सबला । सद  
वास कपूर तणा कुरला । हय गय रथ पायक बहुला । किछोल करै मंदिर क  
मला ॥ ३ ॥ बीजै चमर निसाण धुरै । नरवै दरवार खना पुहरै । जय जय  
करजोमी उचरै । सांनिध गुरु सब काज सरै ॥ ४ ॥ सरसा भोजन पान  
सदा । दुखरोग दुकाल न होय कदा । अविचल ऊलट अंग सुदा । गुरु  
कूरम दृष्टि प्रसन्न सदा ॥ ५ ॥ घम घम माहल नाद धुमें । बत्तीसे नाटक  
रङ्ग रमें । प्रगट्यो पुण्य प्रताप हमें । सबला अरियण ते आय नमें ॥ ६ ॥  
तन सुख मन सुख चीर तनें । पहिरे वेजानुल होय रनें । ध्यावो कुशल गु  
रु एक मनै । । जूझक सुरमंदिर जरै धनें ॥ ७ ॥ ततखिण घण खंच्यो आ  
वै । करि स्यामघटा मेह बरसावै । तिसियां तोय तुरत पावै । जलदाता त्रि  
जग मुजस गावै ॥ ८ ॥ लहिरियां जल कछोल करै । प्रवहण प्रवसायर  
मझिमेरै । बूडंता बाहण जे समरै । ते आपद निश्चै सुं उचरै ॥ ९ ॥ खर  
खरु खरुग प्रहार बहै । सोदामनि जिम सम सेल सहे । कुशल २ गुरुनाम  
कहै । ते खेम कुशल रिणमझ लहै ॥ १० ॥ थुंन सकल परचापूरै । श्री  
नागपूरै संकट चूरै । मंगलोर अधिकै चूरै । देरावर जय टालै दूरै ॥ ११ ॥  
वीरमपुर वानै सुधरै । खंजाइतपुर विक्रम नयरै । जिणचंद सूरि पाटै पवरै ।  
जसु कीरति महिमंजल पसरै ॥ १२ ॥ पूरव पश्चिम दक्षिण आगे ।  
उत्तर गुरु दीपे सौभाग्य । दह दिशि जन सेवा मांगे । श्रीखरतर गठनी म  
हिमा जागे ॥ १३ ॥ पुर पट्टण जनपद ठामे । गाईजे कुशल नयर गामे ।  
पूजे जे नर हितकामे । ते चक्रवर्त्ति पदवीपामे ॥ १४ ॥ श्रीजिनकुशलसूरि

साखै । सेवकजननें सुखिया राखै । समस्यां गुरुदरसन दाखै । श्रीसाधु कीर  
त पाठक ज्ञाखै ॥ विल० ॥ १५ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

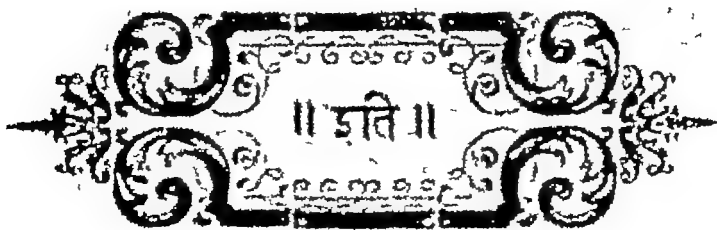
॥ ❀ ॥ श्री जिन दत्तसूरिजी उत्पत्ति स्तोत्र लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सिरि सुयदेव पसाय करे । गुरु श्री जिन दत्तसूरी । वंदिसु खर  
तर गढरयण । सूरि जेम गुण पूरि ॥ १ ॥ संवत् इग्यारै वरसै । वत्तीसै जसु  
जम्म । वाळिग मंत्रि पिता जणणी । बाहनि देव सुरम्म ॥ २ ॥ इक्तालै  
जिणवइ गहिय । गुणहत्तरै जसु पाट । वइसाखां वदि ठठि दिन । पइ  
प्रणमें सुरथाट ॥ ३ ॥ अवंरु सावय कर लिहिय । सोवन अक्षर अंब ।  
जुगप्रधान जग पयानियोए । सिरि सोहै पनि बिंब ॥ ४ ॥ जिण चउसठि  
जोगिण जणिय । खित्तपाल बावन्न । साइण माइण विज्जुलिय । पुहविह  
नामनयन्न ॥ ५ ॥ सूरिमंत बलकर सहिय । साहिय जिम धरणिंद । सावइ  
साविय लक्ख इग । पनि बोहिय जिण बिंब ॥ ६ ॥ अरि करि केसरि  
छुठदल । चउविह देव निकाय । आंण नलोपै कोई जुगे । जसु प्रणमें नर  
राय ॥ ७ ॥ संवत् बार इग्यारसमें । अजयमेर पुर ठाण । इग्यारस आसा  
ढ सुदि । सगपत्तन सुह जांण ॥ ८ ॥ श्री जिनवल्लह सूरि पए । श्रीजिन  
दत्त मुणिंद । विघहरण मंगल करण । करो पुण्य आणंद ॥ ९ ॥ ❀ ॥  
इति श्री जिनदत्त सूरि ज्यष्टकं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीजिन कुशल सूरजी उत्पत्ति स्तोत्र लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रिसह जिणेसर सोजयो । मंगलकेलि निवास । वासव वंदिय  
पय कमल । जगसहु पूरै आस ॥ १ ॥ ❀ ॥ ( चौपाई ) ॥ ❀ ॥ चंदकुलं  
वर पूनिम चंद । वंदो श्री जिन कुशल मुणिंद । नाम मंत्र जसु महिम नि  
वास । जो समरै तसुपूरै आस ॥ २ ॥ मरुमंरुल समियाणो गांम । धण कण  
कंचण अति अन्निराम । जिहां वसे जिह्वागर मंत्रि । जेतसिरी तसु वरणी  
कलत्र ॥ ३ ॥ जसु तेरेसे तीसै जम्म । सैंतालै सिर संयम रम्म । पाटण  
सतहत्तरै जसु पाट । निव्यासिये तसु सुरगैवाट ॥ ४ ॥ नूमंरुल सरगै पा  
याज । अचिराचिर जुग इण कलिकाल । प्रनु प्रताप नविमानै सोय । में  
नविनयणे दीठो जोय ॥ ५ ॥ निरधन जेहे धन धन्न सुवन्न । पुन्नहीण पामें

बहु पुत्र । असुखी पामे सुखसंतान । एकमना करतां गुरु ध्यान ॥ ६ ॥  
 प्रभु समरण आपद सहु टले । सयल सांति सुखसंपति मिले । आधि व्याधि  
 चिंता संताप । ते ठंभी नवि मंमै व्याप ॥ ७ ॥ पाप दोष नवि लागे तिहां ।  
 प्रभु दरसन उत्कंठा जिहां । सेवतां सुस्तरुनी गांहि । निश्चै दालिद्र भेटे बांहि  
 ॥ ८ ॥ विस हर विस नर विस नरनाह । जूत प्रेत ग्रह व्यंतर राह । प्रभु नामें  
 जे नकरे पीर । आजै जावठ जव जय जीर ॥ ९ ॥ रोग सोग सवि नासै  
 दूर । अंधकार जिम जगै सूर । मूरख फीदी पंक्ति थाय । प्रभुपसाय दुख दु  
 रिय पुलाय ॥ १० ॥ दिन दिन जिन सासन उद्योत । तिहां अछै जव सा  
 यर पोत । सो सदगुरु में जेद्व्यौ आज । रलीय रंग सीधा सवि काज ॥ ११ ॥  
 ( ढाल ) आज घर अंगण सुस्तरु फलियो । चिंतामणि कर कमलै मिलि  
 यो । उदयो परमाणंद घरे ॥ १२ ॥ आज दीहमें धने गिणियो । जुगपव  
 रागम जोमें थुणियो । चंद्रगच्छ महिमा निलोए ॥ १३ ॥ कांई करो पृथिवी  
 पतिसेवा । कांई मनावो देवी देवा । चिंता आंणो कांई मने ॥ १४ ॥ वार  
 वार ए कवत जणीजै । श्रीजिन कुशलसरि समरीजै । सरै काज आयास वि  
 णे ॥ १५ ॥ संवत चवद इक्यासी वरसै । सुलक बाहणपुरमें मन हरसै ॥  
 अजिय जिणैसर वरजवणै ॥ १६ ॥ कीयो कवित ए मंगल कारण । विघन  
 हरण सहु पाप निवारण । कोई मत संसो धरो मने ॥ १७ ॥ जिम २ से  
 वे सुरनर राया । श्रीजिन कुशल मुनीसर पाया । जयसागर जवझाय थुणे ॥  
 १८ ॥ इम जो सदगुरु गुण अजिनंदै । रुद्धि समृद्धै सो चिरनंदै । मन  
 वंति फलमुज हुवो ए ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
 दादाजी श्रीजिन कुशल सूरजी उत्पत्ति विचारगर्जित स्तो० ॥ ❀ ॥



॥ ❀ ॥ अथ श्री दादाजीस्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सज्जु करुणानिधान राखोजाज मेरी ॥ टेरे ॥ जैजै जिन कुशल  
सूरि । समस्त हाजर हजूर । महकत जिम जसकपूर । महमाजगतेरी ॥ स०  
॥ १ ॥ जापर तुमहोदयाल । भिनमें करदो निहाल । संकटकों चूरदेव ।  
दोलतकी ढेरी ॥ स० ॥ २ ॥ तुमहो सुरतरु समान । वंभित फल देवोदान ।  
सेवगकों दीनजान । भेटोजवफेरी ॥ स० ॥ ३ ॥ सरण आयेकी राखोजाज ।  
वंभित सब पुरोकाज । हरखचंद सरण आए । कीरति सुण तेरी ॥ स० ॥ ४ ॥  
इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीजिन कुशल सूरिजीको ठंद लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ समरं माता सरसती । कुमारी करजोरु । कवि माता कवियण  
तणा । पूरै वंभित कोरु ॥ १ ॥ कुशल करण जग कुशल गुरु । दायक वंभित  
देव । अहनिसि तो ऊजग करें । सुर नर सारै सेव ॥ २ ॥ पुर पट्टण गांम  
प्रगट । जग सगलै जस वास । पुरावदी तो पालियै । वसेसु दादो वास  
॥ ६ ॥ ( ठंद मोतीदांम ) ॥ दादो वास दियै दौलत । वधै ठत्र बाया सेवक  
वित्त । वधारै मांम दिसो दिसवान । धरै इक चित्त जिके गुरुध्यान ॥  
॥ ४ ॥ पूनम पूनम पूजै पाय । नवा नवा नैवज बार निपाय । चंपावलि  
केतकि फूल चरख । अनोपम श्रीफल लेई अरख ॥ ५ ॥ लहै घर सुंदर  
लहि अठेह । सजंती सोल बधंती नेह । लहै घर नारी लोयण बाण । ल  
है घरपूत सपूत सुजांण ॥ ६ ॥ लहै जलगांम सुठांम नृवाल । लहै ढिग  
भीत जला ढांचाल । लहै घर मंदिर घोडा जोरि । लहै जट सेव करे  
जोडि ॥ ७ ॥ लहै घर भंगल मद्द मसत्त । लहै घर चीर अनोपम सत्त ।  
लहै घर साजण हल्ल किलोल । लहै नितलीला ठाका ठोल ॥ ८ ॥ लहै  
वरकुरला वर कपूर । लहै घरजीमण मोतीचूर । लहै मनवंभित जोग वि  
शाल । लहै घर साल कचोला थाल ॥ ९ ॥ धुरै नित गीत तणा गह गट्ट ।  
जणे नित जय २ चरण जट्ट । फले पूत सपूतां बांजि फलंति । विठोहा  
वाल्हा वेग मिलंति ॥ १० ॥ अनेकानेक विरुद्ध अपार । दीठो इक का  
ल्हां तूं दातार । जीहां सहस्स हुवै जो सुख । कहूं इक जीहां केई रु



कख ॥ ११ ॥ वना विरुद ताहरा विख्यात । नर नारी सहु आवै जात ।  
 गुणें कर गिरुवो समुद्र सरीस । कह्योमें कोई नकरज्यो रीस ॥ १२ ॥ (दूहा)  
 रीस न करज्यो कवियणां । में माहरी मतिजार । कहीयो जगमें कुशल गुरु  
 खरतर गढ सिणगार ॥ १३ ॥ (ढंद नाराच ) सिणगार हार सोहए । सुकांमधे  
 नु दोहए । धरंत ध्यान जो सदा । टलंत दूर आपदा ॥ १४ ॥ प्रथम तो  
 देराजै । सुथान सिंधुथीवरै । जेशाण थुंज जागतो । सुदिठ संघ सावतो ॥  
 ॥ १५ ॥ मुजतान मीर सेवता । अनेक पीर देवता । किरौ हँरें फतै पुरै ।  
 गुरु सदा नुदो करै ॥ १६ ॥ मरोट थान भूलगो । एकांत चित्त नुजगो ।  
 बीकाण वान वाधतो । सुथान थान सावतो ॥ १७ ॥ प्रजावना रिणीपुरै । नीसा  
 ए वाजता घुरै । नागोर नाम दीपतो । दाणव देवजीपतो ॥ १८ ॥ तोरण  
 तेम सोह ए । जगत्त मन्नमोहए । सरूप मेमै सही । अपार लढी जां लही  
 ॥ १९ ॥ महिम्म मालपूरतो । लाहोर दुःख चूरतो । कला अनेक आगरै । उतीस  
 पवनफूलरै ॥ २० ॥ दादारी करंत सेव । हिंदुआं तुरकां देव । सदा शुद्ध सांगा  
 नेर । जालमी करंत जेर ॥ २१ ॥ अमरसरै अनेक । राखतो जु ठोमै टेक ।  
 मालपूरै मझिमान । खान खान सेवै थान ॥ २२ ॥ ब्राह्मणपुरै राजरीत । जे  
 तारणें जगत्रजीत । सोजित सुख सद्दयं । वेनातैटै विरुद्दयं ॥ २३ ॥ खे  
 जमलै खरो सदा । बाहरु मेरु संपदा । जोधाण जुग जातरा । जुमति  
 देश देशरा ॥ २४ ॥ वीरम्मपुर तिममरी । करंत नृत्य अम्मरी । जालोर जैत  
 सिंवरी । खंजायते खराखरी ॥ २५ ॥ प्रगट्ट आप पाटणें । सूरत सुख  
 सांधणें । अनन्त तेज अहम्मदा । सुमङ्गलोर सर्वदा ॥ २६ ॥ साचोर नु  
 क्क सासतो । तुरत्त शत्रु त्रासतो । नुदैपुरै जु ईमरै । सेत्रावे कोटले गुरै ॥ २७ ॥  
 गुरु सदा नुदो करै । एकांत ध्यान जो धरै । जमंत जाण जेतली । कीरत्त  
 कोर तेतली ॥ २७ ॥ (दूहा ) कला अनेकां कुशल गुरु । समरचां होय  
 हजूर । अलगी टालै आपदा । जिम अंधारै सूर ॥ २६ ॥ (कलश ) सूर  
 नेज जिम चूर । दूर आपद जय टालै । माईतां ज्युं मयाकरी । सेवक नित  
 प्रतिपाले । मनवंजित मायवाप । कुशल गुरु कायिता दाना । पृनिम पृजे पा

य । रहै जे ध्यानै राता । सुप्रसाद सोम सुंदर सुगुरु । अजय सोम उंजग करी । प्रगटियो थुंन पाली पुरे । विजे सिंघ लीलावरी ॥ ३० ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री दादाजी वृद्धस्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सदगुरुजी थे सांजलो । श्रीजिन दत्त सूरीसहो । सेवकने सांनिध करो । पूरो मनहजगीसहो ॥ १ ॥ (दोलतिदोहोदादाजी संपतिदो) । दोलतदो गुरु माहरा । थांहरा विरुद्ध अनेकहो । तोसेव्यां संकट टलै । एहीज दादा ताहरी देकहो ॥ २ ॥ दौ० ॥ जीती चौसठ जोगिणी । वसकीया बावन वीरहो । सिंघ मांहे तें साधीया । पंचनदी पंच पीरहो ॥ ३ ॥ दौ० ॥ पम्किमणां मांहे बीजली । वलीय वली जव कायहो । थे मंत्री राखी तिका । तूठा वरदेजायहो ॥ ४ ॥ दौ० ॥ उठव करतां उच्चमैं । मूंओ सुगलरो पूतहो । जापकरी जीवामीयो । संघ माहै राख्यो दादै सूतहो ॥ ५ ॥ दौ० ॥ वरु नगररे ब्राह्मणैं । देहरे धरी मृत्यु गायहो । पंच मरमेष्टि विद्यावले । पिसुण लगाया दादै पायहो ॥ ६ ॥ दौ० ॥ विक्रम पुर व्यापी मरी । तै दूरकीया सहु दुखःहो । परवार पिण पोतै कीयो । सहुनें दीधौ दादै सुःखहो ॥ ७ ॥ दौ० ॥ अंबरु हाथे अख्यरै । थे प्रगट्या तत खेवहो । युग प्रधान जग तुं जयो । आखै अंबिका देवहो ॥ ८ ॥ दौ० ॥ थांओ वज्र विदारनें । पोथी परगट कीधहो । विद्या सोवन अहरे । उजेणी मांहे लीधहो ॥ ९ ॥ दौ० ॥ इम विरुद्ध घणात्रै ताहरा कहितां नावै पारहो । जाग संजोगै दादौ जेटीयो । अम्वसीयां आधारहो ॥ १० ॥ दौ० ॥ हुंहुं सेवक ताहरौ । थे आपो धनरिखहो । जुवन कीरति सु प सावलै । जाज उदै सुख सिखहो ॥ ११ ॥ दौ० ॥ इति श्री दादाजी गीतां ॥

॥ ❀ ॥ ( पुनः ) राग जैतसरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सहाई मेरै श्रीजिन कुशल गुरु ॥ कुशल करण कलि मांहे प्रगट्यो । खरतर गहवरु ( स० ) बावनो चंदन मृगमद मेली । पूजो प्रेमजरु ॥ ( स० ) ॥ १ ॥ चिंता चूराण विघ्न विनारण । दाजिद्र दूर हरु ॥ ( स० ) ॥ २ ॥ दिन दिन साहिव चढिते वानें । ध्यावो ग्यान धरु ( स० ) बाजै जेहना जशना बाजा । ठावी ठामैं जरु ॥ ( स० ) ॥ ३ ॥ संवत अठार समैं अमृतसठै । भिगसर मास थिरु ( स० ) संवत सहित श्री सदगुरु

कख ॥ ११ ॥ बन्ना विरुद ताहरा विख्यात । नर नारी सहु आवै जात ।  
 गुणें कर गिरुवो समुद्र सरीस । कह्योमें कोई नकरज्यो रीस ॥ १२ ॥ (दूहा)  
 रीस न करज्यो कवियणां । में माहरी मतिजार । कहीयो जगमें कुशल गुरु  
 खरतर गढ सिणगार ॥ १३ ॥ (ढंद नाराच ) सिणगार हार सोहए । सुकांमधे  
 नु दोहए । धरंत ध्यान जो सदा । टलंत दूर आपदा ॥ १४ ॥ प्रथम तो  
 देराजै । सुथान सिंधुथीवरै । जेशाण थुंन जागतो । सुदिठ संव सावतो ॥  
 १५ ॥ मुजतांन मीर सेवता । अनेक पीर देवता । किरो हें फतै पुरै ।  
 गुरु सदा उदो करै ॥ १६ ॥ मरोट थांन मूलगो । एकांत वित्त नजगो ।  
 बीकाण वांन बाधतो । सुथांन थांन सावतो ॥ १७ ॥ प्रजावना रिणीपुरै । नीसा  
 ए वाजता धुरै । नागोर नांम दीपतो । दाणव देवजीपतो ॥ १८ ॥ तोरण  
 तेम सोह ए । जगत्त मन्नमोहए । सरूप मेरुतै सही । अपार लढी जां लही  
 ॥ १९ ॥ महिम्म मालपूरतो । लाहोर दुःख चूरतो । कला अनेक आगरै । ढत्तीस  
 पवनफूलरै ॥ २० ॥ दादारी करंत सेव । हिंदुआं तुरकां देव । सदा शुद्ध सांगा  
 नैर । जालमी करंत जेर ॥ २१ ॥ अमरसरै अनेक । राखतो जु ठोमै टेक ।  
 मालपुरै मझिमान । खान खान सेवै थांन ॥ २२ ॥ बाहणपुरै राजरीत । जे  
 तारणें जगत्रजीत । सोजित सुख सदयं । वेनातटै विरुदयं ॥ २३ ॥ खे  
 जमलै खरो सदा । बाहरु मेरु संपदा । जोधाण जुग जातरा । जुमंति  
 देश देशरा ॥ २४ ॥ वीरम्मपुर तिम्मरी । करंत नृत्य अम्मरी । जालोर जैत  
 सिंघरी । खंजायते खराखरी ॥ २५ ॥ प्रगट्ट आप पाटणें । सूरत सुक्ख  
 सांघणें । अनन्त तेज अहम्मदा । सुमङ्गलोर सर्वदा ॥ २६ ॥ साचोर जु  
 ज्ञा मासतो । तुरत्त शत्रु त्रासतो । नुदेपुरै जु ईसरै । सेत्रावे कोटले गुरै ॥ २७ ॥  
 गुरु सदा उदो करै । एकांत ध्यान जो धरै । नमंत जाण जेतली । कीरत्त  
 कोरु तेतली ॥ २७ ॥ (दूहा ) कला अनेकां कुशल गुरु । समरचां होय  
 हजूर । अलगी टालै आपदा । जिम अंधारै सूर ॥ २६ ॥ (कलश ) सूर  
 तेज जिम नूर । दूर आपद नय टालै । माईतां ज्युं मयाकरी । सेवक निन  
 प्रतिपालै । मनवंजिन मायचाप । कुशल गुरु कामिता दाता । प्रणिम पूजे पा

य । रहै जे ध्यानै राता । सुप्रसाद सोम सुंदर सुगुरु । अजय सोम नृजग  
करी । प्रगटियो थुंन पाली पुरे । विजे सिंघ लीलावरी ॥ ३० ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री दादाजी वृद्धस्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सदगुरुजी थे सांजलो । श्रीजिन दत्त सूरीसहो । सेवकने सांनिध क  
रो । पूरो मनहजगीसहो ॥ १ ॥ (दोलतिदोहोदादाजी संपतिदो) । दौलतदो गुरु  
माहरा । थांहरा विरुद्ध अनेकहो । तोसेव्यां संकट टले । एहीज दादा ताहरी  
देकहो ॥ २ ॥ दौ० ॥ जीती चौसठ जोगिणी । वसकीया वावन वीरहो । सिंघ  
मां है ते साधीया । पंचनदी पंच पीरहो ॥ ३ ॥ दौ० ॥ पम्किमणां मांहे बीजली ।  
बलीय बली जव कायहो । थे मंत्री राखी तिका । तूठा वरदेजायहो ॥ ४ ॥  
दौ० ॥ उठव करतां उच्चमें । मूंओ सुगलरो पृतहो । जापकरी जीवामीयो ।  
संघ मांहे राख्यो दादै सूतहो ॥ ५ ॥ दौ० ॥ वरु नगरसे ब्राह्मणें । देहरै ध  
री मृत्यु गायहो । पंच मरमेष्टि विद्याबले । पिसुण लगाया दादै पायहो ॥ ६ ॥  
दौ० ॥ विक्रम पुर व्यापी मरी । ते दूरकीया सहु दुखहो । परवार पिण पोतै  
कीयो । सहुनें दीधौ दादै सुखहो ॥ ७ ॥ दौ० ॥ अंवरु हाथे अख्यरे । थे  
प्रगट्या तत खेवहो । युग प्रधान जग तुं जयो । आखै अंविका देवहो ॥  
॥ ८ ॥ दौ० ॥ थांजो वज्र विदारनें । पोथी परगट कीधहो । विद्या सोवन  
अदरें । उजेणी मांहे लीधहो ॥ ९ ॥ दौ० ॥ इम विरुद्ध घणाठे ताहरा  
कहितां नावै पारहो । जाग संजोगै दादौ जेदीयो । अरुवनीयां आधारहो ॥  
॥ १० ॥ दौ० ॥ हुंहुं सेवक ताहरौ । थे आपो धनरिखहो । नुवन कीरति सु  
प सावलै । लाज उदै सुख सिखहो ॥ ११ ॥ दौ० ॥ इति श्री दादाजी गीतं ॥

॥ ❀ ॥ ( पुनः ) राग जैतसरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सहाई मेरै श्रीजिन कुशल गुरु ॥ कुशल करण कजि मांहे प्रग  
ट्यो । खरतर गठवरु ( स० ) वावनो चंदन मृगमद मेजी । पृजो प्रेमजरु ॥  
( स० ) ॥ १ ॥ चिंता चूरण विघ्न विमारण । दालिद्र दूर हरु ॥ ( स० )  
॥ २ ॥ दिन दिन साहिब चढितै वानें । ध्यावो ग्यान धरु ( स० ) वाजे  
जेहना जशना वाजा । ठावी ठामै जरु ॥ ( स० ) ॥ ३ ॥ संवत् अ  
ठार समें अमृतसठे । मिगसर मास थिरु ( स० ) संवत् सहित श्री सदगुरु

जेटे । श्रीजिन हर्ष सख ॥ ( स० ) ॥ ४ ॥ गांव गडालै चरण नमंता ।  
तूठो कल्पतरु ( स० ) पाठक श्रीविद्याहेम गणीने । उदय स्तन करु ॥  
( स० ) ॥ ५ ॥ इति दादाजी स्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( पुनः ) देशीकी चालमें ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दादा चिरंजीवो सेवक जन सुखदाई दरशण सदा देवो ।  
दादो दीनदयाल सदा दाता । दादो समस्यां आपै सुखसाता । दादो जगना  
यक जगगुरु भ्राता ( दा० ) ॥ १ ॥ दादो परचा जगसगलै पूरे । दादो  
सेवकना संकट चूरै । दादो छुरित हरै सहुनी दूरै ॥ ( दा० ) ॥ २ ॥ दादा  
अलगांधी जात्री आवै । दादो देखीने ते सुख पावै । हारा दादाजीनी जोमै  
कोई नावै ( दा० ) ॥ ३ ॥ दादो राज नगर मांहे राजै । जिहां सुजश  
नगरा नितवाजै । दादो ढोगालां सेहर ठाजै ॥ ४ ॥ ( दा० ) दादा बस केशर  
सूकम बोली । हाथे लेई सोवन कचोली । पूजो दादाजीने मिल २ टोली  
( दा० ) ॥ ५ ॥ दादो आरतियां आरति टालै । दादो सेवगजनने प्रति  
पालै । दादो जिनशासन नित उजवाले ( दा० ) ॥ ६ ॥ दादो महिमावंत  
महाराजा । दादो राजै खरतर गठराजा । दादो समस्यां सफल करै काजा  
( दा० ) ॥ ७ ॥ दादो कुसल सुरिंद बहुगुण धारी । दादो परतिख सुर  
तरु अवतारी । जाऊं दादाजीनी हुं बलिहारी ( दा० ) ॥ ८ ॥ दादो श्री  
जिन चंद सुरिंद पाटै । दादो गाजै गुणियण गहगाटै । जसु थान सोहै  
जगथिर थाटै ( दा० ) ॥ ९ ॥ दादा महिर निजर मुज परिकरियै । दा  
दा आरतिपीमा छुख हरियै । दादा जिम जग जय कमलावरियै ( दा० )  
॥ १० ॥ दादा सेवगने सांनिध करज्यो । दादा पुसमणने दूरै हरज्यो । जि  
णचंदना मन वंझित फलज्यो ( दा० ) ॥ ११ ॥ इति दादाजी स्तवनं ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( आपाटै जैरुं आवै इस चालमें ) । गाजै जिन कुशल गमा  
लै । सेवकनां संकट टालैहो गा० ॥ १ ॥ परतिख गुरु परचा पूरे । सेव  
कनी चिंता चूरै हो ( गा० ) ॥ २ ॥ बतरी नितरी ठविगजै । विचमें थि  
र थुंज विराजै हो ( गा० ) ॥ ६ ॥ ऊजरे यात्री मित्र आवै । दादो जी

दीठां सुखपावै हो ( गा० ) ॥ ४ ॥ केशर वस जरिय कचौली । मांहें व  
लि मृगमद घोली हो ( गा० ) ॥ ५ ॥ पूजो पग नीर पखाली । गावो गुण  
गीत रसाली हो ( गा० ) ॥ ६ ॥ दादोजी दुखियां सुख देवै । निरधनियां  
नित धन देवै हो ( गा० ) ॥ ७ ॥ हय हाथी रथपति बहुला । गुरु  
नामैं पामैं कमला हो ( गा० ) ॥ ८ ॥ सकजासुत सुंदर नारी । पामैं परि  
कर सुखकारी हो ( गा० ) ॥ ९ ॥ अलगांथी रोग गमावै । गुरु पूज्यां वं  
डित पावै हो ( गा० ) ॥ १० ॥ पावै गुरु तिसियां पाणी । तिणवेला ज  
लधर आणी हो ( गा० ) ॥ ११ ॥ ग्रहगोचर जोर जंजालै । पीना हुवै  
आलै मालै हो ( गा० ) ॥ १२ ॥ वाजै जगजशना वाजा । राजै खरतरग  
ठ राजा हो ( गा० ) ॥ १३ ॥ जसु जैत सिरी वरमाता । जिट्हागर मं  
त्रि विख्याता हो ( गा० ) ॥ १४ ॥ संवत सतरैसै इक्यासी । काती पूनि  
म परकासी हो ( गा० ) ॥ १५ ॥ सहु संव सहित सुविजासै । अधिके  
हर हेत उट्हासै हो ( गा० ) ॥ १६ ॥ इम यात्र करी आणंदै । जिन  
भक्ति जती सर वंदै हो ( गा० ) ॥ १७ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ( राग धन्यासरी ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आयो आयो जी समरंतां दादो जी आयो । संकट देख सेव  
क कुं सदगुरु । देरावरतें ध्यायो जी समरंतां ( दा० ) दादा वरसै मेहनैं रात  
अंधेरी । वायपिण सबजौ वायो । पंच नदी हम बैठे बेनी । दरीयै हो दा  
दा दरीयै चित्त मरायो जी ॥ ( स० दा० ) ॥ २ ॥ दादा उच्च जणी पो  
हचावण आयो । खरतर संव सवायो । समय सुंदर कहै कुशल २ गुरु । प  
रमानन्द सुख पायो जी । समरंतां दादोजी आयो ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

॥ ❀ ॥ ( राग लहुरी ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जाया भक्तिसुं पूर रहोरे । पुरजन सब दूरहोरे ( जा० ) मेरे  
मनमें भक्ति बैरागी । चित्त परणित लगनसुं लागी । मोरी जाग्यदसा अब  
जागी ॥ ( जाया हो ) ॥ ( जा० ) ॥ १ ॥ सब सज्जन मिलकर आवो ।  
गुरु चरणे चोक पुरावो । बलि अकृत धवल वधावो ( जाया हो ) ॥ ( जा० )  
॥ २ ॥ गुरु महिमावंत सवाई । गुरु नाम मदा सुखदाई । गुरु मेव्यां पाप



पुलाई ( जीया हो ) ॥ ( ज्ञा० ) ॥ ३ ॥ घस केशर जरकै कचोल  
है मृगमद कुंकुम धोली । गुरु पूज रचो जरजोली ( जीया हो ) ॥ (   
 ॥ ४ ॥ श्री जिन हर्ख सूरि सर राजा । वाजै जग जशना वाजा  
रत्न करै सुज काजा ( जीया हो ) ॥ ( ज्ञा० ) ॥ ५ ॥ इति स्तवनम्

॥ ❀ ॥ ( राग केरवो ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कुशल सुरिंद गुरु पूजो जवि हितसुं ( कुश० ) केशर  
कपूर अरगजा । जाव धरी करो पूजा चितसुं ॥ ( कु० ) ॥ १ ॥  
लाजगुलाव मालती । मनसुध माल करै जवि रुचिसुं ( कु० ) ॥ २ ॥  
शरण परम गुरु सेवो । धरम ध्यान धरो आतम रुचिसुं ॥ ( कु० )  
सेवक जन प्रतिपाल जगत गुरु । आसापुरै गुरु वणु दत्तसुं ॥ ( कु० )  
ध्यान सुधारै ग्यानवधारै । रूप रंग देवै चित हित मतसुं ॥ ( कु० )  
कुशल सुरिंद गुरु सानिध कारी । परतिख परचापूरै सतसुं ॥ ( कु० )  
श्री जिनहर्ख सदा सुविलासी । सत्यरत्न सुख एही ठतसुं ॥ ( कु० )

॥ ❀ ॥ ( राग देवश्री चलत ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आज करोरे उवाह । श्री जिनकुशल सुरिंद आगै । (   
 आ आगी बेलानै न आगो दाव । इण आगी बेजा क्युं करो लाज ॥ (   
 ॥ १ ॥ विविध प्रकार पूजो मनरंग । हिल मिल गावो साजन संग (   
 धूप दीप करो नैवेद्य सार । फुल वारीनो नहीं जिहां पार ॥ ( आ० ) ।  
अकृत श्रीफल ठोवै जेह । पुत्र कलत्र पांमें संपदा तेह ॥ ( आ० ) ॥  
सुर नर नारी कुजा करै जोर । कौण करै ह्वारा दादाजीनी होर ॥ (   
 ॥ ४ ॥ श्रीखरतर गढपति सिरदार । राजा राणा सेवै इकतार ॥ (   
 ॥ ५ ॥ महिर निजर करो श्रीगुरुराज । कुशल सुरिंद गुरु गरीव रि  
( आ० ( ॥ ६ ॥ श्री जिन हर्ख करै नवरंग । सत्य रत्न मन ग्यान  
ग ॥ ( आ० ) ॥ इति स्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥

॥ ❀ ॥ ( राग वंगालो घाटो ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ में निरख्या गुरु महाराज । ठीयां हर्खजरौ ( में० )  
अनंत गुण आगरुदे । समता रसनो धाम । परम परम परमात्मारे ।

दायक स्वाम ॥ ( ठ० में० ) ॥ १ ॥ करुणा निध गुरु दोलतीरे । सेवक  
जन प्रतिपाल । जविजन जत्तै जावसुरे । ल्यावै जर जर थाल ॥ ( ठ०  
में० ) ॥ २ ॥ केशर चंदन कुंकुमारे । जरीय कचोली हाथ । पदमण आवै  
मलपतीरे । पूजे सहीयर साथ ॥ ( ठ० में० ) ॥ ३ ॥ कुशल सूरीसर सा  
हिवारे।श्रीजिनचंद सूरी पाट । बलिहारी जिन कुशलनीरे । गाजै घणुं गहि  
गाट ॥ ( ठ० में० ) ॥ ४ ॥ अष्टसिद्धि सानिध करैरे । सुखसंपूरण सार । श्री  
जिन हर्ख सूरी सरुरे । सत्यरतन सुखकार ( ठ० में० ) ॥ ५ ॥ ❀ ॥  
इति स्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( राग प्रजाती ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चरणकी चरणकी चरणकी । वारी जातं में गुरुराय चरणकी  
( वा० ) श्रीजिनदत्त सूरीसर सदगुरु । सफल बनी सेवा चरणकी ॥ ( वा० )  
॥ १ ॥ प्रथममंगल गुरुरायकी सेवा । अशुभ करम सब हरणकी ॥  
( वा० ) ॥ २ ॥ दालिद्रजंजण अरि सब गंजण । पग पग सानिध करणकी ॥  
( वा० ) ॥ ३ ॥ मोह नहीं परवाह अनेरी । शरनग्रही इन चरणकी ॥  
( वा० ) ॥ ४ ॥ श्री जिनहर्ख तुम चरणां को दासा । आशापूरो सुख  
करणकी ॥ ( वा० ) ॥ ५ ॥ इति दादाजी स्तवनम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀

॥ ❀ ॥ कुशलगुरु अब मोहि दरशण दीजै । ( अ० ) ऐसी जांति करो  
मेरे सदगुरु । ज्युं मन मूढपती जे ( कु० ) ॥ १ ॥ जलदातार विरुद अमृत  
रस । श्रवण अंजलि जर पीजै । सुस्तरु सम दरशण विन देख्यां । कहो नय  
ण किमरीजै ( कु० ) ॥ २ ॥ परमदयाल कृपाल कृपानिधि । इतनी अरज  
मुणीजै । परम जगत जिनराज तुमारो । अपनो कर जाणीजै ( कु० ) ॥ ३ ॥  
इति स्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कुशल गुरु कुशल करो जरपूर । सेवक जन मन वंछित पूरण ।  
समस्यां होय हजूर ( कु० ) ॥ १ ॥ परम दयाल प्रेम रस पूरण । अशुभ हर  
ण जये दूर । संव उदोकर सदगुरु मेरा । वानवै श्रीजिन चंदसूर ( कु० ) ॥ २ ॥

## ॥ ❀ ॥ ( देशीकी चालमें ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सदगुरु पूजण जावस्यां । म्हेतो कुशल सूरिंद गुण गास्यां हे माय ( स० ) । श्रीफळ जेट चढावस्यां । म्हेतो चरणांरी पूज रचास्यां हे माय ( स० ) ॥ १ ॥ मारुदेशमें सोजता । नगर बीकांणै राजै हे माय । गां म गमालै दीपता । ज्यांरी महीयल महिमा गाजै हे माय । ( स० ) ॥ २ ॥ समस्यां संकट चूरता । कुशल करण अवतारी हे माय । सुखदायक श्रीसंघने । खरतर गढ अधिकारी हे माय ( स० ) ॥ ३ ॥ दूर देशांतर थी घणा । हिल मिल यात्री आवै हे माय । छल २ सीस नमावता । संत सुजस मिल गावै हे माय ( स० ) ॥ ४ ॥ सऊ सिणगार मनोहरू । ठम २ पाय ठम कावै हे माय ( स० ) । तन मन प्राण लोचावती । गौरी मंगल गावै हे माय ( स० ) ॥ ५ ॥ विबुड्यां साजन मेलवै । अनमी पाय नमावै हे माय । मनरा मनोरथ पूरवै । पर बल लखमी ल्यावै हे माय ( स० ) ॥ ६ ॥ विषमी वेला वाटमें । समस्यां सांनिध आवै हे माय । नूखा जोजन मेलवै । तिसियां नीर मिलावै हे माय ( ७ ) । यात्री आवै नितनवा । थांन आगल थिर थाट हे माय । सीरणीयां नित सांमठी । गावै गुण गहगाट हे माय ( स० ) ॥ ८ ॥ कुशल सूरिंद गुरु आगलै । जविमिल जावना जावै हे माय । चंदफतै मुनि नित नमें । परमानंद मुख पावै हे माय ( स० ) ॥ ९ ॥ इति ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आयो सहु श्रीसंव आसधरे । गुरु मौन गह्यां कहो केम सरे दरशण वहिलो सदगुरु दाखो । निज सेवक जाण महिर राखो ॥ १ ॥ इह विषमी वेला आयवणी । केहवी करीयै तुज अरज घणी । अलगानो तो वेगा आवो । हिव ढील घनी जर न करावो ॥ २ ॥ तूं सदगुरु खरतर गढ साचो । कोई न जाणै तुमनें काचो । इण संकटमें आलस न करो । दा दा दुशमणनें दूर हरो ॥ ३ ॥ काई चूक पमी सदगुरु हमसुं । तो जिम कहिस्यो तिणपरी खमसुं । पिण हिवणां हठ थे मति तांणो । निहथै पो तानो कर जांणो ॥ ४ ॥ आया सहु मिलकर अठां लगे । पाठा किम जावां इणें पगे । इणपरि गुरु सुणीयै अरज इसी । हिव मत्रकां मेजो क

रीय खुशी ॥ ५ ॥ जिन कुशल सूरिसर जगचावो । अपणायतकर वेगा  
आवो । अगला विरुद ते अजुवालो । परवल निज ठोरु प्रतिपालो ॥ ६ ॥  
गुणगाम गमाले एगायो । सुणतां सदगुरु वेगो आयो । राजी हुय सग  
ला रंगरली । जिनचंद्रनी आस्या सफल फली ॥ ७ ॥ इति पदं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ताल ठुमरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सदा सहाई कुशलसुरिंद गुरु द्यो दौलत गुरु रायजी ( सदा० )  
खाई न खूटै खरची न तूटै । दिन २ वधै सवाय जी ( स० ) ॥ १ ॥ स  
कजा सुत नर सुंदर नारी । सुन्न परिकर सुख दायजी ( स० ) मित्र स  
मागम सुजशवधारण । नित प्रति हरख उठाहजी ( स० ) ॥ २ ॥ राजा प  
रजा पायनमें सहू । गुरु समरण सुपसाय जी ( स० ) दोखी दुशमण नृप  
त्रय पनियां । सदगुरु करय सहाय जी ( स० ) ॥ ३ ॥ विषमी विरियां सं  
कट पडियां । समर्यां आवै धायजी ( स० ) चूखां जोजन तिशियां पाणी ।  
निरवनियां धनदाय जी ( स० ) ॥ ४ ॥ संघ सकलनें द्यो सुख शाता ।  
जिम कीरत जग थाय जी ( स० ) । थानक थिरता पर घल जोजन ।  
पग पग कुशल सहाय जी ( स० ) ॥ ५ ॥ अजय महा सुखदाई सद  
गुरु । नवनिधि वंजित थाय जी ( स० ) । सुमति सवाई नितघर संपद ।  
दान विशाल लहायजी ( स० ) ॥ ६ ॥ इति० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिन कुशल सुरिंद गुरु सदा नमो ( जि० ) ॥ सुख संपति रि  
द्धि सिद्धि सब हाजर । देश देशांतर कांई जमो ॥ जि० ॥ १ ॥ वाट वाट  
अरु विषमी विरियां । विघन बुराई दूर गमो ( जि० ) ॥ २ ॥ अह निशि नां  
म मंत्र उधारो । सुगुरुचरण चित रमो रमो ( जि० ) ॥ ३ ॥ एक मन ध्या  
वो वंजित पावो । विपत व्यथा सब दमो दमो ( जि० ) ॥ ४ ॥ अजय महा  
सुख संपति पावो । सुथिर थानक थिति जमो जमो । ( जि० ॥ ५ ॥ इति

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नृपती थारे पायनमें जी सुर नर सारे मेव । ज्योति थारी ज

ग जागती जी । पुनियामें परतिख देव ॥ १ ॥ हुं तो मोहि रह्यो जी ह्या  
 रा राज । दादरे दरवार ( हुं० ) केशर अंबर केवमो जी । कस्तूरी करपूर ।  
 चंपो चंदन राय चंबेली । अक्ति करूं जरपूर ( हुं० ) ॥ २ ॥ पांगुलियां  
 नें पाव समापै । आंधलीयांनैं आंख । रूपहीणानें रूप देवै दादो । पंख ही  
 णानें पांख ( हुं० ) ॥ ३ ॥ चंदपाटोधर साहिवो जी । श्री जिनकुशल  
 सूरिंद । आठ पोहर थांने उलगै जी । रंग वणें राजिंद ( हुं० ) ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सदगुरु जी सुणो मोरी अरजी ( स० ) पहिली काम कीये बहु  
 तेरे । अपणा विरुद विचारी । पल पल चूक परी सदगुरु जी । में सुत  
 लवका गरजी ॥ ( स० ) ॥ १ ॥ ध्यान तुमारो कबहु न ध्यायो । पूजा क  
 री नही तेरी । तोई सेवकना बंठित पूर्या । आही थांरी मरजी ॥ ( स० ) ॥ २ ॥  
 निश्चै सेती तुम गुण गावै । तुरत कटत दुख वेनी । अक्त उधार कहावत  
 जगमें । ताहै करत हुं अरजी ( स० ) ॥ ३ ॥ और देव कुं में नहीं ध्यान  
 शरण अहीमें तेरी । दूर थकी में जेटण आयो । विपत दिशा सब तरजी ॥  
 ( स० ) ॥ ४ ॥ कुशल गुरूका में हूं सेवक । लोक जाणें सब कोई । हमा  
 रतनकी वीनती सुणकै । दरशण दीयो सदगुरु जी ॥ ( स० ) ॥ ५ ॥ इति

॥ ❀ ॥ होरीकी चालमें ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ होरी खेलो नेमसैं धाय २ ( इस चालमें ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सदगुरुके चरण चित लाय लाय । जिनदत्त सूरिंद गुरु करोरे  
 सहाय । ( सद० ) वावन वीर अनें वलि चौसठ । जोगणि वसकीनी हर्ष  
 लाय । विद्या पुस्तक सोवन अक्षर । थांजो वज्र विदार पाय ( सद० ) ॥  
 ॥ १ ॥ सुलतानमें पंच पीर महाबल । पंच नदी सादी चितलाय । इत्या  
 दिक बहु परचा पूरक । गुरु समर्यां सब दुख जाय ( सद० ) ॥ २ ॥  
 गुरुके नामसैं अरुसिद्धि नव निधि । गुरु गुण गावो सबही धाय । श्रीजिन  
 शोभाय सूरि सुगुरु पर । महिर करो गुरु सुख दाय ( सद० ) ॥ ३ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नेम श्यामसें कहियौ मोरी ( इस चा० )

॥ ❀ ॥ गुरु पूज रचोरे सुग्यानी । जली हीयै प्रक्ति जरानी ( गुरु० ) श्री  
जिन कुशल सूरीसर साहिव । खरतर गव्व राजानी । देश देश में थानक  
गुरुका । सोजा जग पहिचानी । सदा रवि तेज समांनी ( गु० ) ॥ १ ॥ के  
शर चंदन मृगमद जेजी । चरणारी पूजरचानी । धूप दीप बलि आगल ढोवी ।  
बहुविध पुष्प चढानी । जला फल जेट धरांनी । ( गुरु० ) ॥ २ ॥ बाट घाटमें  
परचा पूरक । हाजर होत सहानी । श्री जिन शौजाग्य सूरिके साहिव ।  
बंझित काज करानी । सदा गुरु महिर लखानी ( गुरु० ) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

॥ ❀ ॥ राग प्रजाती ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कैसे कैसे अवसरमें गुरु राखी लाज हमारी । ( कैसे० ) मो  
कुं सबल जरोसा तेरा । चंदसूरि पटधारी । ( कै० ) ॥ १ ॥ तुम विन और  
न कोई मेरे । या जगमें हित कारी । मेरा जीवन हाथ तुमारै । देखो आप  
विचारी । ( कै० ) ॥ २ ॥ आगै तो केई बेर हमारी । चिंता दूर निवारी । अ  
बकी विरियां नृल मती जावो । सदगुरु परउपगारी ( कै० ) ॥ ३ ॥ अबकै  
आप लाज गूजरकी । रखीयै गुरु जशधारी । मेरे कुशल सूरिंद गुरु तेरा ।  
वन्ना जरोसा जारी ( कै० ) ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग प्रजाती ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री जिन कुशल सूरीसर साहिव । तुमहो पर उपगारी ( श्री  
जि० ) । खरतर गव्व नायक गुणजायक । जिन चंदसूरि पटधारी ( श्री० )  
॥ १ ॥ संत उधारण सुजश वधारण । श्रीरु प्रजन अति जारी । नाम तु  
मारो कुशल करण जग । वारी जातं वार हजारी ( श्री० ) ॥ २ ॥ जगव  
ठल तुमही हो जगत्गुरु । करुणानिधि करतारी । कहै जिनचंद मेरेहो  
मदगुरु । हमहै शरण तुमारी ( श्री० ) ॥ ३ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री गणधर गुरु कुशलसूरिंद के । चरण कमल परिवारी ।  
( श्री० ) केशर चंदन अहृत कुंकुम । जलजर कंचन जारी । देवक आगे



मंगल दीपक । फूल धरुं फूल वारी । ( श्री० ) ॥ १ ॥ ऐसी जांति करुं  
विध पूजा । आनकै चित्त इकतारी । राज कहत मेरे परम गुरुकी । बेर  
बेर बलिहारी ( श्री० ) ॥ २ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रेखता ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कुशल गुरु देखकै दरसन । मेरा दिल होत है परसन । जग  
तमें या समो कोई । न देखा नयनजर जोई ॥ १ ॥ विरुद भूमंरुजै ठाजै  
फरसतां पाप सहु जाजै । पूजतां संपदा पावै । अचिंती लछि घरआवै  
॥ २ ॥ इकै सुख गुण कहुं केता । मुजै विज्ञान नही एता । जालचंदकी  
अरज सुन लीजै । चरण की सरण मोहि दीजै ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( राग कहरवो ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कुशल गुरु दरशण दीजै हो ( कु० ) खरतर गढपति कुशल  
सूरिंद गुरु । मुऊपर महिर धरीजै हो ( कु० ) ॥ १ ॥ पतित उधारण विरुद  
तुहारो । इतनी अरज सुणीजै हो ( कु० ) ॥ २ ॥ आधि व्याधि अरु दो  
खी दुशमण । ए सब दूर हरीजै हो ( कु० ) ॥ ३ ॥ खेम रतन सेवक कुं  
निस दिन । सदगुरु सानिध कीजै हो ( कु० ) ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वंशी हमारी दीजै ( इस चालमें ) पूजो जजोरे जाई । गुरु म  
हिमा योत सवाई ( पू० ) । मृगमद केशर चंदन अरचो । सुंदर पुष्प च  
ढाई ( पू० ) ॥ २ ॥ जविक जीव मिल गुरु गुण गावे । वाकै सदगुरु हो  
त सहाई । ( पू० ) ॥ ४ ॥ श्री जिन सौभाग्य सूरि सुगुरु मेरे निशि दिन  
हर्ष बधाई ( पू० ) ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ॥ मालण ल्यावै फूलमा ( ए चाल ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हुं तो अरज करुं करजोमनै जी । ह्यारी अरज सुणो महारा  
ज । ( सदगुरु ) विरुद धणाठि राजराजी । सूरि सकल सिरताज ( स० )  
( सुनिजर जोय जो साहिवा ) । थारे रावल राणा राजबीजी । थारा पूनिम  
पूजै पाव ( स० ) ॥ १ ॥ केशर अरज कुंकुमांजी । कांई मृगमद रहा म

हिकाय ( स० ) ( सुनिजर जोय जो साहिवा ) ॥ २ ॥ थांरै घुमजांरै आ  
गल वृधराजी । दुलत चमर गजढाल ( स० ) कारण सेवे कामनी जी ।  
कांई निरख करै जी निहाल ( स० ) ( सुनिजर० ) ॥ ३ ॥ थांरी ठावी ठोमै  
थापना जी । कांई उदयापुर आंबेर ( स० ) महिमा जजी गुरु मेरुते जी  
कांई साजूमै वाली सांगानेर ॥ ( सदगु० सु० ) ॥ ४ ॥ थांरी ज्योति घणी  
गुरु जिंगमिगै जी । कांई वधती गढ वीकाण ( स० ) आशा पूरण आव  
ज्यो । थेतो देरावररा दीवाण । ( स० सु० ) ॥ ५ ॥ ह्यारी वीनतनी जलै  
मानिज्योजी । कांई दादाजी दीन दयाल ( स० ) कुशल सदा कविराजरै ।  
कांई पादोधर प्रतिपाल ॥ ( स० सु० ) ॥ ६ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( लावणीकी चालमें ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सदगुरुजी ह्यारा सरणें आयां की लज्या राखज्यो ( स० )  
पतित उधारण विरुद सुणीनें । आयो तुमारै पास । अब मनवंडित पुरो माह  
रा । ए हीज दिलकी आश जी ॥ ( स० ) ॥ १ ॥ काम क्रोध मद लोभ तजी  
नें । तज दियो सब संसार । नवपदको इक ध्यान धरानें । पाया सहु गुण  
पार जी ॥ ( स० ) ॥ २ ॥ देश देशमें थुंज विराजै । परचा जग विहात ।  
इण कहु मांहे सुरतरु सरिखा । प्रगट रह्या साख्यात जी ॥ ( स० ) ॥ ३ ॥  
चिंतामणि और कामधेनु सम । माहरै तुंहीज देव । आण धरुं शिर ताहरी  
( शिरै ) करुं तुमारी सेवजी ॥ ( स० ) ॥ ४ ॥ मात पिता बंधव तुं जगमें ।  
हितकारी गुरुदास । राजा राणा सहु जग मांहे । सेवे तुमरा पाय जी ॥  
( स० ) ॥ ५ ॥ आज गुरु तुम चरण पसार्ये । सीधा वंडित काज । लक्ष्मी  
प्रधान तुमारा दरशण । मोहन गुणका राजजी ॥ ( स० ) ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ वधाई ( राग कहरवो ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आजकी बडी ह्यारै हरष वधाई । गुरु दरशण पायो सुखदाई  
( आ० ) ॥ १ ॥ गुरु जग नायक वंडित दायक । गुण गण लंकृत सह  
मन जाई ॥ ( आ० ) ॥ २ ॥ उत्तम धर्म प्रभाव करीनें । जैनी कुजकी रीत  
देखाई ॥ ( आ० ) ॥ ३ ॥ गुरु परतह सहु संघ सुखदायक । देश देशमें  
प्रगट रहाई ॥ ( आ० ) ॥ ४ ॥ धन दिन आज सफल थयो माहरै । सुर

तरु सम मिलियो फलदाई ॥ (आ०) ॥ ५ ॥ वंजित पूरण संकट चूरण ।  
सहु जवि मात पिता वरदाई ॥ (आ०) ॥ ६ ॥ कलिकत्तापुर मंरुन साहि  
व । कुशल करो मोहन गुणदाई ॥ (आ०) ॥ ७ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ देशना वधावा संग्रह ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वीरजीदीयेनै देशनारे । त्रिनुवन जन हितकाज । परषद वारनें  
आगलेरे । जगजीवन हितकाज ॥ वी० ॥ १ ॥ प्रभू मुख पद्म मनोहरूरे । जि  
हां वांणी मकरंद । जव्यमधुरतो जावथीरे । पांनकरै आनंद ॥ वी० २०२ ॥  
अजर पाणुं जगसंपजैरे । अमृतध्यान पसाय । प्रभू वचनामृत पांनथीरे । अ  
जर अमर पद थाय ॥ वी० २०३ ॥ मधुर पाणे मनमोहनीरे । अनुपम वांणि  
जुदार । सांजले जव्यलहै सहीरे । जिन परजाव विचार ॥ वी० २०४ ॥  
जिहां षट्द्रव्य विचारणारे । नय निह्नेप अजंग । चोविह धर्म प्ररूपणारे । स  
तजंगी अतिचंग ॥ वी० २२५ ॥ शासननायक जिन वरूरे । अनुपम अमृत  
धार । जलधरनी पर वरशतारे । जविचातिक हितकार ॥ वी० २०६ ॥ श्रीजिन  
लाज पसायथीरे । जिन आतम हितजाण । वाचक अमृत धर्मनोरे । शीश  
जणें कल्याण ॥ वी० २०७ ॥ इति देशना ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः देशना लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गुणनिधि श्री जिनचंद मुणिदा । मुखसोहै पूनमचंदा । मोह्या सवं  
सुरनखंडा ॥ १ ॥ सुगुरु ह्वारा देशना हिवदीजै । थारी देशना सुण मनरीजै ।  
सु० ॥ दिनकर परकास सवायो । जूमंरुल ऊपर ढायो । कमलादि सकल मन  
प्रायो ॥ सु० ॥ २ ॥ वेलाउज देव गंधार । बलि जैख राग मजार । गायन  
गावे सुखकार ॥ सु० ॥ ३ ॥ पंचसवद गहिर ध्वनि गाजै । जिनवर घर  
जाजर वाजै । सहु सज्ज थया धर्म काजै ॥ सु० ॥ ४ ॥ हिव बहिला पा  
ट पधारो । श्री संघना कारज सारो । मधुरे स्वर वचन उच्चारो ॥ सु० ॥  
५ ॥ सुण वीनती वचन विशेष । गुरु आपे धर्म उपदेश । टालो जविकोमि  
कलेश ॥ सु० ॥ सदगुरुनी मीठी वाणी । उपदेश सुणो जविप्राणी । सुण  
तां मन अनिहि सुहाणी ॥ सु० ॥ ७ ॥ गुरुप्रतपो ज्युं शशि सूर । दिन २ प्रति

वधतै नर । हरो संघ सकल दुःखदूर ॥ सु० ८ ॥ गोरीमिल मंगल गावै । नर  
मोत्यांथाल वधावै । वा लावण्य कमल सुख पावै ॥ सु० ॥ ९ ॥ ॐ ॥  
इति देशना ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ वधावो ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ मृगापुत्र गोखै रतन जडावहो ( ए चाल ) ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ श्री जिनचंद सूरिसरू । सुगुरु ह्वारा । श्री खस्तर गठ रायहो । श्री  
जिनलाज पादो धरू । सुगुरुह्वारा । दिन २ सोज सवायहो ॥ १ ॥ ह्वारा सहजसो  
जागी । ह्वारा सुज गुणरागी । ह्वाराहितधरू । सुगुरु ह्वारा देशनाघो मनरंग  
हो । संव सह उठक थयो ॥ सु० ॥ सुणवा अमृत वांणहो । वहिजा वंठित  
पूरहो ॥ सुगु० ॥ थेठो अवसर जांणहो ॥ २ ॥ ह्वारा० ॥ सूर किरण धर संचरया  
सु० ॥ विकस्या कमल कलापहो । राग विजास प्रमुख तणा ॥ सुगु० ॥ हो  
य रत्ना आलापहो ह्वारा० ॥ ३ ॥ पंच मवद जाजरतणा ॥ सु० ॥ मं  
गलनाद उचारहो । इम बहु विध नृ मंरुलै ॥ सु० ॥ वरत्या जय २ कार  
हो ॥ ह्वारा ॥ ४ ॥ संघसकल जगतै करी ॥ सु० ॥ जोवे थारी वाटहो । नीं  
चे पधारो गठ पति ॥ सु० ॥ द्यो दरसण गहगाटहो ॥ ह्वां ॥ ५ ॥ निण  
अवसर सिंघासणें ॥ सु० ॥ पाव धारै उजसंतहो । जल धरज्युं गहरेस्वरै । सु०  
वाचै सुत्र सिधांतहो ॥ ह्वां० ॥ ६ ॥ बहुजवियण प्रति वृज्जे ॥ सु०  
वयणसुधारस योग हो । उत्तम धरम प्रकाशता ॥ सु० ॥ दाले जव दुख जोग  
हो ॥ ह्वां० ॥ ७ ॥ तेज तरुणी जिम दिन मणी ॥ सु० ॥ सुण उत्तीस निवा  
शहो । मोहन सुद्रा तुम तणी ॥ सु० ॥ निरख्यांमन उद्दासहो ॥ ह्वां० ॥ ८ ॥  
थे चिर जीवो गठ पति ॥ सु० ॥ राज करो इक आंणहो । इम बोले मुनि  
सुधमदा ॥ सु० ॥ वांणी कृमा कल्याणहो ॥ ह्वां० ॥ ९ ॥ ॥ ॐ ॥  
इति वधावो ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ पुनः देशना ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ जात्रा निनाण् करीये ए चाल ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ एहवा सदगुरु वांदीये । जविकजन ( एहवा० ) आपतरे अव  
रुनहुं तारे । शरण तिहारी गहीये ॥ १ ॥ जवि० ॥ जिममारथ पति मायी

जनकुं । वंछित देशै बहीयै ॥ २ ॥ जवि० तिम सदगुरु अमृत उपदेशे ।  
 लहै जविक सुख कहीये ॥ ३ ॥ जविक० ॥ गोपसमा गुरु गुण नित धा  
 रे । राखे गोजन महीये ॥ जवि० ॥ ४ ॥ बलिनिर्यामक उपमधारै । जिम नावि  
 क नौ तरीयै ॥ ५ ॥ ज० ॥ एक असंजम दोयाविधि बंधन । त्रिविध दंरु प  
 रिहरीये ॥ जवि० ॥ ६ ॥ च्यार कषाय निवारक तारक । पंच महाव्रत ध  
 रीयै ॥ ज० ॥ ७ ॥ पदकाय रक्तक महा जय जीपक । अशरण शरण  
 कहीजियै ॥ ज० ॥ ८ ॥ एहवा सदगुरु नी बलिहारी । शरण गृही निसतरी  
 ये ॥ जवि० ॥ ९ ॥ गौतमस्वामि समा मुनि उत्तम । सर्व जीव सम धरियै । ज  
 वि० ॥ १० ॥ हृदयकमल नितप्रति राखीजै । आनंद शिवपद लहीयै ॥ ज  
 वि० ए० ॥ ११ ॥ इति देशना ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ वधावो लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जवि तुहो वंदोरे शीतल जिन पतीरे ए चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुखकर स्वामी श्री तीर्थ करूरे । वरधमान जिनराज । दरशण  
 जेहनोरे दरपण ज्युं दीपैरे । शोजत तेज समाज । ( जवि जन वंदोरे जावै ग  
 ठ पतीरे ) ॥ १ ॥ तसु पट राजैरे सुधरम गण धरूरे । झाता छादश अंग  
 जंबू स्वामीरे शिष्य सोहामणोरे । चवद पूरव धरचंग ॥ २ ॥ जवि० ॥ प्र  
 जव सज्यंजव जगमें परगमारे । श्री जशोजद्र मुणिंद । श्री संचूतवि  
 जय जद्रवाहुजीरे । श्रीथूलजद्र दिणंद ॥ ३ ॥ जवि० ॥ एम अनुक्रम दश पूर  
 व धरूरे । हुवा वयर मुणीस । श्री जिनमत दीपायो चूतजेरे । सुर नर ना  
 मत सीस ॥ ४ ॥ जवि० ॥ तास परंपर चंद्रकुले जलारे । श्री कोटिक ग  
 ण धार । श्री उद्योनत सूरि सुहामणारे । वयरीसाख मजार ॥ ५ ॥ ज  
 वि० ॥ वरधमान परमुख सिख्य जेहनारे । चार अशी परमाण । गठ चौ  
 राशी प्रगट्या त्यांथकीरे । जाणे चतुर सुजाण ॥ ६ ॥ जवि० ॥ ताससीस  
 जिनेश्वर सूरिजीरे । दुर्लभ राय समह । खरतर विरुद लह्यो ते ख्वमारे । म  
 ठपति जीतप्रतह ॥ ७ ॥ जवि० ॥ नवअंगी वृत्ति कारक दीपतारे । श्री  
 अजय देव सूरि राय । श्री जिनब्रह्म जिनदत्त गठपतीरे । श्री जिन  
 कुशल अमाय ॥ ८ ॥ जवि० ॥ परम प्रजावक इण गठमें थयारे । आचारि

ज गुणवंत । शुद्ध समाचारी जगतेहनीरे । सुणि हराखित होय संत ॥ ९ ॥  
 जवि० ॥ शुद्ध परंपरमां, थया अनुक्रमेरे । श्री जिनजात्र सूरेश । सात  
 पदोदर जगमां परगमारे । श्री जिनचंद, सुणीश ॥ १० ॥ जवि० ॥  
 तेज, प्रतापे जीत्यो दिनमणीरे । सोम्यपणें, प्रिजपत्ति । गंजीर  
 गुण सागरनें जीतियोरे । सुर सेवै दिन रत्ति ॥ ११ ॥ जवि० ॥ स्या  
 दवाद जिन धर्म वखाणतारे । नय निहोप विचार । जंगपदारथ अति  
 विस्तारसोरे । जाखे जवि हितकार ॥ १२ ॥ जवि० ॥ ग्यान पूरव कि  
 या साथे जलीरे । जिन वाणी अनुसार । एहनें सेवोरे क्युंचूला जमोरे ।  
 थाय सफल अवतार ॥ १३ ॥ जवि० ॥ सुरतरु ठांजी बांवल आदरेरे । कोइ  
 नर मूढ गिमार । ए जंखाणो साचो मत करोरे । जहि एहवो गणधार ॥ १४ ॥  
 जवि० ॥ नामधारक आचारजळे घणारे । पंचम काज मजार । पिण इण  
 सरिखो जगमा को नहीरे । स्व पर तारण हार ॥ १५ ॥ जवि० ॥ वाचक  
 लावण्य कमल पसायधीरे । कमल सुंदरनी एवाण । जे मांनसी ते सुख नित  
 पांमसीरे । पातिकनी करि हांण ॥ १६ ॥ जवि० ॥ इति वधावो ॥ ॥ ॥

॥ ॥ पुनः वधावो ॥ ॥

॥ ॥ आवण पावस जलश्यो ( ए चाल ) ॥ ॥

॥ ॥ मोतियने मेहवरसीयो सखि । आजहुवो आणंद । पूजपधारया  
 विहरता । नामें शौजाग्य सूरिंदरे । जिनहर्ख सूरिंदनो नंदरे । सदगुरु सुरत  
 स्तो कंदरे । सुखसोहै पूनमचंदरे ॥ सखि मोतीडे मेह० ॥ १ ॥ क्हांति गु  
 णें करी सोजता । सखि पंच महाव्रत धार । वर उत्तीस गुणें सदा । विचरे जे  
 निरस्तीचारे । रशीया जे पर उपगारे । उपशम रसना जंमारे । पाजे पंचा  
 चारे ॥ सखी मोती० ॥ २ ॥ मेवतणी पर गाजता । सखिमीठी जेहनी बांण ।  
 आपतरे परतारता । गुण गण रतनारी खाणरे । सहू आगमना जे जाणरे ।  
 प्रतपे जिम जलहल जाणरे । जेहनी अनिशय विन्नाणरे ॥ सखिमो० ॥ ३ ॥  
 परतिख सुरतरु सारसा । सखि इण पंचम काज । साथे जेहनें शौजता । सु  
 निवर जिम मोतीमाजरे । केई थिवरनें केई चालरे । वंदीजे तेह त्रिकाजरे ।  
 सखि मोती० ॥ ४ ॥ सूरि मकल मिर मेहरो । सखि खरतर गड सिंगगा ।



जैन धरम दीपावता । महिमा जेहनी अणपारे । सहु संघतणा सिरदारै ।  
 सखीसुमतितणा जरतारै । जेहनें प्रणमें नरनारै ॥ सखि० ॥ ५ ॥ सूत्र अ  
 थ विसतारता । सखि देता धर्मो पदेश । दान शीयल तप जावना । बारै जाव  
 ना सुविशेषरे । द्रव्यादिक अर्थ निशेषरे । गुण अरु पर्याय प्रदेशरे ॥ सखि० ॥  
 ६ ॥ सुणतां श्रीजिनराजना । सखि अमृत वचन विलास । कृणमे कर्म समूह  
 नो । सखि निश्चै होवै नाशरे । थायै निजग्यान प्रकाशरे । कहै बाल सुगुरु  
 सहवासरे । करतां निजरूप सुजाषरे ॥ सखिमो० ॥ ७ ॥ इति वधावो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ गुंहली लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नणदल विंदलीदे ( ए चाल ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिनशासन जयकारी । जगगुरु गोतम गणधारीरे । सहीयांगुंह  
 ली करो । गुंहली करो गुरुसंगे । श्रुत जगति तणै ऊरंगेरे ॥ सही० ॥ विचरंतां  
 सुनिराया । राजग्रही नगरी आयारे ॥ सही० ॥ १ ॥ पंचेंद्री विषय निवारी  
 नवविध ब्रह्मव्रत धारीरे ॥ सही० ॥ च्यार कषाय कुं टाले । पंचमहाव्रत सूधा  
 पालैरे ॥ सही० ॥ २ ॥ सेवै पंचाचार । धरै पंचसुमति मनुहारै ॥ सही० ॥  
 त्रिणगुप्ती बलि ठाजै । इम ढत्रीश गुणै गुरुराजैरे ॥ सही० ॥ ३ ॥ चरण  
 करण गुणसंगी । शुद्धातम अनुजव रंगीरे ॥ सही० ॥ उत्तसर्गने अपवादी ।  
 बहु नयगम जंग प्रवादीरे ॥ सही० ॥ ४ ॥ मोक्ष मार्ग उपदेशी । धरे ध  
 रम ध्यान शुजलेसीरे ॥ सही० ॥ २ ॥ रत्नत्रय अभ्यासी । जविजन चिं  
 तकमल विकाशीरे ॥ सही० ॥ ५ ॥ श्रेणिक नरपति आवै । गणधर वंदन  
 शुज जावैहे ॥ स० ॥ चेजणा स्वास्तिक पूरै । मोहतिमर जरमनें चूरैरे ॥  
 सही० ॥ ६ ॥ निस्तुणी गुरु मुख वांणी । समकित निरमल करै शाणीरे ॥  
 स० ॥ श्रुत सेवा जेकरस्ये । तेकीर्त्तिसागर पद वरस्यैरे ॥ सही० ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ मंगल वधावो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पहिलुंए मंगल जिनतणुं । नाम सोहामणोए । वीजुंए मंगल  
 सिद्धनुं । ध्यानर लियामणोए ॥ त्रीजुंए मंगल जिनवरै धर्मजेदाखियोए ।  
 जिहां सुद्धदेव सुद्ध गुरुतणो । मर्मवलि जापियोए ॥ १ ॥ चौथोए मंगल  
 साधुनो । नामसंजारियोए । पंच महाव्रत पाजता चित्त अवधारियोए । अति

अमोलिक गुण रयणना जेहडे आगरूप । सूरि उतीस गुण सोहता कामित  
सुरतरूप ॥ २ ॥ जाणुंए श्रीपुज्य आवैए । कुमति मद वारताए । देशना  
जल धर वरसता, जविक मनठारताए । सोवन रतननें फूलडे । मोतीवधाम  
णाए । कीजिये जगति बहु जावसुं लीजिये जामणाए ॥ ३ ॥ पाठक पंक्ति  
परिवरचा । शासन सोहताए । चौविह संव गुण संवना जविक मन  
मोहताए । आजवहनी मुळ आंगणें, अमीयमेह बूठडाए । सासन देवी  
चकेसरी आजमुळ तूठडीए ॥ ४ ॥ मनह मनोरथ सविफलपा । मंगल सब  
मिल्याए । डुरित दोहग दुःख आपदा, दोहलिम सब टल्याए । रुद्धिनें सिद्धि  
नवनिधिसुं, सहजसुख आवियाए । सुरतरु सुरमणी सुरगवी अम्हवारि  
आवियाए ॥ ५ ॥ सेतुंज आवू गिरनारनें समेत शिखरवरूप । अचल  
अष्टापद पंचए तीरथ सुखकरूप । ग्यान विमल वरदर्शन चारित्र अनुसरोए  
नितर रंगवधामणा, जवजल निधितरोए ॥ इति प्रथम मंगल वधावो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पूर्णकलसस्थापना मंगल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ धरम उठवसमें, जैन पदकारणें । उत्तम मंगल आचरेए । जाव  
मंगल तिहांदेव अरिहंत प्रनु । जेहथी परम मंगल वरेए । तेहना नामनें  
जाजुंहुं जामणें । खिण २ हर्ष समरण करेए । पंच कल्याणके जिमसुरपतिकरे ।  
तिमजिन जक्ति जविआदरेए ॥ १ ॥ जाव मंगल तणी पुष्टता कारणें । द्रव्य  
मंगल जला कीजियेए । तिहांगुण पूर्णता इच्छता जविकजन । कुंज थिर  
पूरण लीजियेए । पदम आसनठव्यो पदम बनेठव्यो मंत्र पवित्रथी नितजपे  
ए । जिनवरजीमणी दिशि हरख जरहायमे । पूरण कलसनें थापियेए ॥ २ ॥  
माहरानाथनें परम मंगल होज्यो मंगल संव चौविह जणेंए । मंगलतीर्थनें  
मंगल चेत्यनें मंगल तेह करता जणीए । जैनशासन तणो हरख मंगलकरे ।  
तेण आनंद अति ऊपजेए । चवन अवसरसमें मानाना गर्जमें । इंद्रनें हर्षजे  
संपजेए ॥ ३ ॥ तेम प्रामादनी थापना अवसरे । कुंजथापनसमें हरखियेए ।  
जेम संसारना कारज कारणें । लोकसंसार मंगल करेए । परम आनंद धर  
धन्यता मानता । गीत मंगल सुरि उचरेए । देवता देवनें मंगल कीजिये  
देवचंदह पद अनुसरेए ॥ ४ ॥ इति पूर्णकलसस्थापना मंगल ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ चैत्यप्रतिष्ठा मंगल ॥ ❀ ॥

॥ हिवे प्रतिष्ठा कारणेण । पूरव सनमुख सारतो । ( वेदिका सुन्न रचीए )  
 दोढहाथ उन्नत बलीए । पूरित वस्तु उदारतो ॥ वे १ ॥ पंचस्वस्तिक श्रीफल  
 ठवीए । पंचरतन जूपीठतो ॥ वे० ॥ अष्टसुगंध विलेपियोए करिये धूपजकि  
 ठतो ॥ वे० २ ॥ वारे आंगुलमां ग्रंथ नहींए । उन्नत सरल उत्तंगतो ॥ वे० ॥  
 चउविदिसि चउवंसनेए । थाये मन उन्नंगतो ॥ वे० ३ ॥ वंशपात्रमां जुहार  
 काए । चउवंसें सात साततो ॥ वे० ॥ समोसरणनें प्रथम समेए । पीठ रचे  
 सुरराजतो ॥ वे० ४ ॥ तिम इहां सुन्न महुमत दिनेए । जूमि सुद्ध महा  
 काजतो ॥ वे० ॥ हिवे जललेवा कारणेण । थयो उजमाल पुन्यवंततो ॥  
 (जलजात्रा जणीए) ॥ हयवर सिणगारयावणाए । मयगल मद मल पंततो ॥  
 वे० ॥ देवनंदा जिमवीरनेए । वृखन्न रथ कस्या सज्जतो । पंचम अंगे वरणव्या  
 ए । तिम इहां स्थगण गज्जतो ॥ ज० ॥ ७ ॥ जेरि जुंगल सरणाइयोए ।  
 ढोल निसाण वाजित्रतो । ज० ॥ संघचतुर्विध बहु मिल्ह्याए । ध्वजलहि  
 कंत पवित्रतो ॥ ज० ॥ ८ ॥ सूहवगीत मंगल जणेए । नरनारीना थोकतो  
 ॥ ज० ॥ प्रसन्न करी जल देवताए । मंत्र सनाथ सलोकतो ॥ ज० ९ ॥  
 सोल सिणगारे सोजतीए । रुचवंती चउनारितो ॥ ज० ॥ सजल कलश  
 सिरपर ठवीए । आवे जिन दरवारतो ॥ ज० ॥ १० ॥ प्रनुनें जीमाणि दिस  
 ठवीए । देई प्रदक्षिण मानतो ॥ ज० ॥ संघ सत्कार आरुंवरेए । रतनसा  
 हरख प्रमाणतो ॥ ज० ११ ॥ ❀ ॥

॥ इति प्रतिष्ठादिक सुन्नकायोंमें सधव स्त्रीयोंके मंगल गायन वधावा  
 संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ जलयात्रा महोत्सव विधि ॥ ❀ ॥

॥ अछाही महोत्सव ( तथा ) प्रतिष्ठा आदिकमें प्रथम दिन । पीठ, वीदे  
 का, पूजनस्थानक साते स्मरण शांति आदि मंत्रादिकमें सुद्ध करै । दीप धूपा  
 दिक करै, चावलोंका स्वस्तिकादि अष्ट मंगल करै, श्रीफल चढावे, तोरण  
 धजा बंधावे । स्नात्रियांको मंत्रादिकमें पवित्र किया हुवा जलादिकमें स्नान  
 करायके निलक करावे । मंत्रा हुवा वस्त्र पहराके मोली कांकण मोरा

बंधाके अंग सुद्धी करावे ( पीठे ) उँकळ्मख दह २ स्वाहा ॥ इस मंत्रको ७  
 वेर गुणाके चित्त निर्मल करे । पीठे आत्म रक्षा करावे ॥ ( यथा ) उँ क्षी  
 एमो अरिहंताणं पादोरक्षः २ ॥ उँ क्षी एमो सिद्धाणं कटिं रक्षः २ ॥ उँ क्षी  
 एमो आयरियाणं नाभिं रक्षः २ ॥ उँ क्षी एमो उवज्जायाणं हृदयं रक्षः २ ॥  
 उँ क्षी एमो लोएसवसाहूणं ब्रह्मां रक्षः २ ॥ उँ क्षी एमो पंचणमुकारो  
 शिखां रक्षः २ ॥ उँ क्षी सव पावप्पणासणो आसनं रक्षः २ ॥ उँ क्षी मंग  
 लाणंचसवेसिं आत्मचक्षु रक्षः २ ॥ उँ क्षी पढमंहवइ मंगलं परचक्षु रक्षः २ ॥  
 स्वाहा ॥ उँ परमेष्ठी नमस्कारं० इत्यादिकसें आत्म रक्षा अपनी करे  
 ( तथा ) स्त्रीयादिककी करावे, पीठे नवग्रह, दश दिग्पालकी स्थापना  
 करे, वलवाकुलादि चढावे, दूसरे दिन सर्व संघ अष्टावस्त्र आचूषण धारन  
 करके नानाप्रकारका वाजित्र महोत्सव इंद्र ध्वजादि पूर्वक जगवानको रथमें  
 ( वा ) पालखी आदिकमें अष्टा जलाशयके स्थानक गायन प्रक्ति करता  
 हुवा जिनशाशनकी उन्नति करता हुवा आवे अंग सुद्धी कराके ज  
 ल कलशा जरावे ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अंग सुद्धी जल पूजन मंत्र विधि ॥ ❀ ॥

॥ उँ क्षी अमृतोद्भवे अमृतवर्षणी अमृतं श्रावय २ स्वाहा ॥ इस मंत्रसे  
 ७ वेर दातण स्नान करनेको जल मंत्रीजे ॥ इति जल मंत्रः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ उँ क्षी यहसेनाधिपतयेनमः ॥ इस मंत्रसे सातवेर मंत्रके दांतण  
 करे ॥ इति दांतण मंत्रः ॥ उँ क्षी श्री क्ली कामदेवाविषति ममाक्षीप्सितं  
 पूरय २ स्वाहाः इस मंत्रसे ७ वेर पढके मुख धोवे ॥ इति मुख धोवण मंत्रः ॥  
 ॥ ❀ ॥ उँ क्षी अमले विमले विमलोद्भवे सर्व तीर्थ जलोपमे पांपां वांवां  
 अशुचि शुचिप्रवामि स्वाहाः ॥ इस मंत्रको सातवेर पढके पूर्व मंत्रित जलमें  
 स्नान करे ॥ इति स्नान मंत्रः ॥ ❀ ॥ उँ क्षी ओं कौ नमः ॥ इस मंत्रसे ७ वेर  
 मंत्रा हुवा वस्त्र धोती उत्तरामण धारण करे ॥ इति वस्त्र मंत्र ॥ उँ ओं क्षी  
 कौ अर्हतेनमः ॥ इस मंत्रसे ७ वेर केशर चंद्रनादिक मंत्र के तिलक करे ॥

॥ ❀ ॥ उँ क्षी अवतर २ सोमे २ कुरु २ वल्गु २ निवल्गु २ सुमणे  
 सोमणसे महु महुरे उँ कवलिकः कः स्वाहाः ॥ इस मंत्रमें मेंढज मोड़ी



॥ ❀ ॥ परममंगल श्री दादाजीके काव्य सर्वईया ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दाशानुदाशा इव सर्वदेवाः । यदीय पादाब्ज तले लुठंति । मरु  
स्थली कटपतरुः सजीया । ज्युगप्रधानो जिनदत्तसूरिः ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चिंतामणिः कल्पतरुर्वराको । कुर्वन्ति नव्याः किमु कामगव्या ।  
प्रसीदतः श्री जिनदत्त सूरिः । सर्वेपदा हस्ति पदे प्रविष्टाः ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नोयोगी न च योगिनी न च नराधीशस्य नो शाकिनी । नो  
वेत्ताल पिशाच राक्षसगणाः नो रोग शोगो जयं । नो मारी नच विग्रहः प्रभृ  
तयः प्रीत्या प्रणत्युचकैः । यस्ते श्री जिनदत्तसूरि गुरवो नामाक्षरं ध्यायति ॥

॥ ❀ ॥ अथ सर्वईया लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ बावन वीर कीयै अण्णें वसः चौसठ जोगण पाय लगाई ।  
माइण शाइण व्यन्तर खेचर नृतरु प्रेत पिशाच पुजाई । बीज तमक कम  
क नटक अटक रहैलु खटक न काई । कहे धर्मसीह जंवे कुणलीह दीयै  
जिनदत्त की एक पुहाई ॥ १ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राजे थुंज ठोर ठोर, ऐसो देवनही और, दादो दादो नामसें, ज  
गत्र जस्त गायो है । आपणेंही जाव आय, पूजै लखलोक पाय, प्यासनकुं  
रांन मांजि, पांणी आन पायो है । वाट घाट शत्रु दाट, हाट पुर पाटणमें, दे  
ह गेह नेहसूं, कुशल वरतायो है । धर्मसीह ध्यान धरे, सेवकां कुशल करे  
साचो श्री कुशल गुरु नामधुं कहायो है ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कुशल अंग उतरंग कुशल वणिजे व्यापारे । कुशल देव देहरे ।  
कुशल धन राजपुवारे । पुन्य पसायें कुशल कुशल श्रीसंघ जणी जे । वाहण  
आवे कुशल कुशल वर वर गाईजे । श्री जिनचंद्र सूरि पुहपट्टधर । नाम मंत्र  
आरति टले । श्रीजिनकुशल सूरि पाय पूजतां नवनिधान लक्ष्मी मिले ॥१॥

॥ ❀ ॥ कुशल वनो संसार । कुशल सज्जन घर चाहे । कुशल मङ्गल  
माल । लखिवर कुशल आवे । कुशल धन वरसंत । कुशल धन धन स्वप्नो ।  
कुशल घोना धट्ट । कुशल पहिरीय सुवन्नो । ए रसो नाम सद्गुरु तणो ।  
कुशल जगरजीया मणो । नट्टारक श्री जिनकुशल सूरि नाम ग्रहणें करी ।  
वरधर होत वधावणो ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥



॥ ❀ ॥ अथ खरतर गढ शुद्ध समाचारी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जो प्रतिपदा १ तिथी कम हो ( तो ) प्रतिपदा १ का पक्ष ख्वाण व्रत । पिन्नी अमावास्या ( ३० ) तिथियों करे । ८ अष्टमी कम हो ( तो ) अष्टमीका व्रत सप्तमी ७ को करे । और ( जो ) १४ चौदस कम हो ( तो ) १४ का उपवास । अमावस ( वा ) पूनम को करे ( इस का कारण ) यह दोनों तिथी समान है । ( जैसे ) चौदस वनी तिथि है । ( तैसे ) अमावस पूनमजी चिरंतन पक्षीका दिन है । इसी से यह दो दिन वने है । यह दो दिन में उत्तम ज्ञव्यजीव यथाशक्ति पोशह पम्किमणा दि धर्मकृत्य करे । पारणें उत्तर पारणें धर्मका उद्योत करे । ( इहां विशेष कहते है ) इस समय में जैनी पत्रा प्रसिद्ध नहीं है । मिथ्यात्वी के पत्रों से देखके सर्व तिथी गिणनेमें आती है । ( और ) इस पत्रैका कुठ प्रमाण नहीं । हर कोई तिथि कम हो जाती है । इसीसे ( जो ) चौदश कम हो ( तो ) उपवास ( तथा ) पक्खी पम्किमण ( निस्संदेह ) पूनम १५ ( तथा ) अमावसके दिन करे ( परंतु ) तेरश चौदश के वितत्यैकों न करे । और जो बेजा करे । तथा हरी गौडे ( तो ) यह दोनों दिनमानें ॥ ❀ ॥ ( अव ) कोई बेर संवत्तरी की ४ चौथ कम हो ( तो ) पंचमी ५ के दिन, संवत्तरी पम्किमण करे । ( परंतु ) ती ज ३ के दिन कदापि काले न करे ( और ) जो चौथ ४ दो होय ( तो ) पहली चौथ संवत्तरी करे । औरजी कोई तिथि दो होय ( तो ) पहली तिथि मान्यनी कहै । दूसरी जूंम तिथी रही । ( दूसरो यह प्रमाण है ) साठ ६० वडी की अखंड तिथी गोकै । वनी अथ वनीकी ( दूसरी ) तिथी कोण मानें ( इ हां कोई कहै ) अपणें उदय तिथी मानें है । सूर्य जगै इहां तक कोई तिथी हो ( तोजी ) उस दिन उसी तिथि को मानै है ( इसीसे ) जो दूशरी तिथि अथ घडीजी हो ( तो ) मानणें में क्या दोष है ( इसका उत्तर ) हे ज्ञव्य जो पहलै दिन तीज मानी है ( और ) तीज ३ के दिन चौथ बहुत बडी जुगतेगा । पिण उस दिन तीज मानीजेगा । ( इसी तरे ) चौथके दिन सूर्य जगै ( इहां तक ) वनी अथ घडी जी चौथ होगा ( तो ) चौथ ४ मानीजे गा । ( पर ) जो तिथी दो होय । उसमें तो पहली तिथि सूर्य उदय अस्त दोनोंमें रही ( इसीसे )

पहली तिथि ठोडकै, दूसरी तिथि करणा युक्त नहीं । ( और ) कार्तिक मास  
बढे ( तो ) पहले कार्तिक चौमासो करे ॥ फाल्गुण बढे ( तो ) दूसरे फाल्गु  
ण चौमासो करे । आशाढ बढे ( तो ) दूसरे आशाढ चौमासो करे । आशा  
ढ चौमासो की १४ चौदशसे । पंचामे दिने चौथको संवत्तरी पर्व करे ।  
चौथ कम हो ( तो ) ५ पांचमके दिन संवत्तरी करे । श्रावण । ज्ञाद्रवो ।  
आशोज । बढे ( तो ) पंचमाशी चौमासो करे ( जो ) श्रावण मास बढे ( तो )  
दूसरे श्रावण शुद्ध ४ को संवत्तरी करे ( पर ) चौमासो की चौदशसे पंचास  
दिन उज्रंघकै, संवत्तरी पर्व कदापि काले न हो, यह कल्पसूत्र जीके पह  
ली समाचारीमें प्रसिद्ध पाठ है, ( और ) चौमासो में, श्रावण । ज्ञाद्रवो ।  
आशोज । यह तीन मास बढे तो पंचमाशी चौमासो करे । ( और ) जो मास  
दोहोय ( उसमें ) पहला मासका कृष्णपक्ष । ( दूसरे मासका शुक्ल पक्ष ।  
( ऐसे ) एक मास में जो कल्याणक तिथी हो । उसीका व्रत पंचक्खाण  
करे । बीचका ३० दिन छुट जाणना । यह तीस दिनमें कल्याणकादि  
क के व्रत पंचक्खाण न हो शकै ( इसीसे ) विवेकी जीव सब तिथीका वि  
चार समझके व्रत पंचक्खाण करे ( तो ) व्रत जंग कर्मी नहो ॥ ❀ ॥  
यह तिथीका परमाणु श्रीहरिचंद्र सूरजी महाराजके किया हुवा । तत्त्व  
तरंगणी ग्रंथमें प्रसिद्ध है ( सो ) इहां किंचित् लिखने हैं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तिहि पन्णे पुत्र तिही । कायवा लुत्त धम्म कज्जेय । चाउदमी  
विजोवो । पुत्तमिय पक्खि पक्खिमणं ॥ १ ॥ तत्थेव पोसह विही । कायवा  
सव्वगेहि सुह हेऊ । नहु तेरसीइ कीरई । जह्मा नाणाइणो दोसा ॥ २ ॥  
सूरोदय पडियावि । तेरसी हुंति न पक्खियं कुळा । चाउम्मासिय करणे ।  
एसविही देसिउ समणा ॥ ३ ॥ तिहि बुद्धीए पुवा । गहिया पक्खि पुत्त जोग सं  
जुत्ता । इयरावि माणणिज्जा । परं थोवत्ति तत्तुत्ता ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( तथा ) ज्योतिषकरंड पाहुनके इदं कथितमस्ती ॥ ❀ ॥  
उठि सहिया न अठमी । नेरमि महिया न पक्खिया होई । पडिबै सहियान  
क्यावि । इइ जणिआ वीयरगेण ॥ १ ॥ अठमि दिनंमि पायं । कायवा अठ  
मीय पाणण । कइयावि सत्तमंमि । नवमी उठि न कायवा ॥ २ ॥ पनरस

मिम्य दिवसे । कायञ्च पक्खियं तु पाएण । चाउदसेवि कइया । नहु तेरसि  
सोजसमे कहवि ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( तथा ) श्रावक सामायक करै ( तब ) प्रथम सामायक  
दंरु ३ वेर उचरके ( पीठे ) इरियावही पम्किमें ( क्युंकि ) आत्मारथी आचा  
र्यों के किये हुए कितनेही ग्रंथमें प्रसिद्ध पाठ है ( और ) सामायकाधिकारे  
प्रथम इरियावही पम्किमके ( पीठे ) करेमि जंते कहणा । ऐसा पाठ खु  
जासा कोई ठिकाणें देखनें में न आताहै ॥ ❀ ॥ तथा श्री महावीर स्वामी  
का ठ कल्याणक मान्य करणा चाहिये ( क्युंकि ) कल्पसूत्रादि अनेक  
ग्रंथोंमें शाखहै ( और ) बने बडे, संवेगी गीतार्थ, खरतर गच्छ, तप गच्छादिक  
के, आचार्योंनें ग्रंथोंमें प्रगट पणें ठ कल्याणक वर्णन कियेहै ( जो ) आ  
श्चर्य कारी संबंध जाणके ठछा कल्याणक नमानते हैं ( उनोंको ) मिगंबरवत्  
मल्लिनाथ स्वामीकोंजी स्त्री पणें मानणा न चाहिये ( क्युंकि ) आश्चर्यकारी  
संबंध समानत्व है ( दूशरो ) न मानणें में अपनैं ही गुरुवादिक्की आग्या लो  
पन होती है ॥ ❀ ॥ ( तथा ) सर्वे पोषध, अष्टमी, चतुर्दशी, कल्याणकादि,  
पर्व तिथीको करै ( परंतु ) सदैव करनेका कथन नही ॥ ❀ ॥ ( तथा )  
कल्पसूत्र वाचनामें । नववाचनाको बंधाणनहिं । अधकीजी वाचना  
करै ॥ ❀ ॥ ( तथा ) आंचिल मां है एक अन्नद्रव्य ( दूशरो ) उश्न जल  
द्रव्य, यह दोद्रव्य ग्रहण करनेका कथन है ( इसमें ) रसनाका लोचुपी  
पणासें अधिक द्रव्य ग्रहण न करणा चाहिये ॥ ❀ ॥ ( तथा ) तरुणी स्त्री कुं  
मूल नायकजीकी पूजा करनी प्रमाणीक आचार्योंनें निषेध करीहै ( क्युंकी )  
इस कालमें प्रायें स्त्रियोंमें अविवेकत्व पणा ( तथा ) अकस्मात् स्त्रीधर्म प्रगटहो  
ना दीख रहाहै ॥ ❀ ॥ ( तथा ) श्रावकानें, पाणस्स लेवाका पाठ कहणा युक्त नहीं ।  
यह साधुका पाठहै ॥ ❀ ॥ ( तथा ) दिनप्रति एक उपवास पचखावै । जो अधिकतप  
की इच्छा होय तो अपनैं दिलमें धारना रखे । परंतु पञ्चरकाण नित्यसूर्योदये क  
रणा चाहिये ॥ ❀ ॥ ( तथा ) जिसधान्यकी दोफामहोय जिसमें चिकणास न होय  
सो सर्व विदलकी गिण तीमें है ॥ इस विदलधान्यको गोरस दध्यादिकके  
साध प्रक्षुण नकरना चाहिये ॥ ❀ ॥ ( तथा ) सुंवे जायेका सूतक मानणा

चाहिये। जिसके घरमें सूतक होय। उसी घरको आहार पाणी साधुवर्जन करे  
( परंतु ) संपूर्ण कुलगोत्रको सूतक नगिऐं ॥ ❀ ॥ ( इत्यादि ) इहां नाममात्र  
खरतर गढकी समाचारी लिखनेमें आई है ( यद्यपि ) समाचारी ग्रंथ अनेकहै  
( तथापि ) श्रीसमयसुंदरजी महाराजके बनाया हुवा। समाचारी शतक  
ग्रंथ है ( जिसमें ) पंचांगी सूत्रोंका आलावा प्रमाणयुक्त। समाचारीका निर्णय  
किया है ( जो ) अनेकांती विशेषज्ञ होय सो आत्मार्थी गुरुसं निश्चकरे ॥ और  
जे कोई मृगांमे कोरहू जैसा। एकांती, दृष्टिरागी, अजिमानो, अपने गढका  
पुंढना पकमके। धर्मसागर निन्नवकी तरे। खरतर गढकों मतपद्धमें कहतेहै  
( और ) १२०४ शाजमें हुवा लिखते है ( सो ) साफ अपनी अग्याता ( तथा ) छेप  
सूचन करते हैं ॥ ग्रंथोंमें प्रत्यक्ष पण सावित होताहै ( कि ) कोटिक गढ,  
चंद्र कुल, वयरी शाखा वाले, श्री जिनेश्वर सूरजी महाराजे, अणहल पुर  
पट्टणमें। सं१०८०, चैत्यवासियों कों, शास्त्र विवादसें जीते ( इसमें ) पाट  
णके, दुर्लभ राजानें, खरतर विरुद्ध दिया। तवसें खरतर गढ प्रशिक्ष हुवा  
( तथा ) यही, श्री जिनेश्वर सूरजीके दो शिष्य हुए। श्रीमाजगोत्र थाप  
क, श्रीजिनचंद्र सूरि ( तथा ) नवांगीवृत्तिकारक श्री अन्नयदेवसूरिजी हुए  
( तथा ) इनोंके शिष्य पट्टधारी जिन वल्लभ सूरिजी हुए। ( तत्पटे ) युगप्रधान  
सवालाख श्रावक प्रतिबोधक, श्री जिनदत्त सूरिजी हुए। इस माफक वद्वत  
ग्रंथोंकी प्रशस्तियोंमें अधिकार है ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( इससेती ) अहो ज्यो मूलतत्व इसकालमें इतनाही है  
जो तत्व नसमजो ( तो ) अपनी अपनी समाचारी करने जावो ( परंतु )  
एकेक गढकी निंदा मतकरो। एक धर्ममें छेप मत रखो, मत करो।  
श्री नवकार, जिन प्रतिमा पूजक, सर्व जैनी जाई आपसमें एक्यता करके  
धर्मवृद्धी ( तथा ) उत्कृष्टसें ग्यानवृद्धी करते रहो। जिसमेती अपने धर्मकी  
( तथा ) अपने जैनी जाइयोंकी दिन २ वृद्धी होय मदा आनंद होय ॥ ❀ ॥  
॥ ❀ ॥ किंवहुना ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ स्वकुल प्रकाशन संक्षिप्त गुर्वावली ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शासनके नायक श्रीमहावीर स्वामी ( तत्पटे ) २ श्रीसुधर्मा

स्वामी (तत्पट्टे) ३ श्रीजंबू स्वामी, (तत्पट्टे) । ४ श्रीप्रज्व स्वामी । ५ श्री  
सज्यंजव स्वामी । ६ श्रीयशोजद्र स्वामी । ७ श्रीसंनृतिविजय स्वामी ।  
८ मा श्रीजद्रवाहू स्वामी । ९ मा श्रीयूलजद्रस्वामी ॥ (तत्पट्टे) १० मा । श्री  
आर्यमहागिरी ( तत्पट्टे ) ११ मा । लघुभ्राता, श्रीआर्य सुहस्ति सूरि  
हुए ( सो ) श्रीवीर जगवानसें, २३५ वरशे, संप्रति राजा ( तथा ) ऐवंती सु  
कमालकों प्रतिबोधके, धर्मका बहुत उद्योत किया ॥ १ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

॥❀॥ (तत्पट्टे) १२ श्रीसुस्थित सूरि, १ क्रोम सूरि मंत्रका जापकिया, इससे  
कोटिक गह्व प्रशिद्ध हुवा ॥ इसी तरै पट्टानुक्रमे १६ में पाटे ॥ श्री वज्र स्वामी  
दश पूर्व धर, बने प्रजावीक, विद्यागामी हुए ( इहांसे ) वज्र शाखा प्रवर्तन  
जई ॥ (तथा १८ में पाटे) श्री जिनचंद्र सूरजी । हुए ॥ (इहांसे) चंद्र कुल  
प्रशिद्ध हुवा । ( इसीतरै पट्ट परंपरायें ) जगवानसें ( ३८ में पाटे ) श्रीउद्योतन  
सूरजी हुए । ( सो ) एक निज शिष्य ( अन्य ८३ ) साधु शिष्योंकों आचा  
र्य पद देके । चौराशी गह्व प्रशिद्ध किये ॥ ❀ ॥ यह ८४ गह्वके आचार्य  
बने प्रमाणीक, प्रजावीक, धर्मोद्योतक हुए ( श्रीउद्योतनसूरि ) पट्टे । आ  
वृजी तीर्थ प्रगट कारक, विमल मंत्री प्रतिबोधक, बने प्रजावीक ( ३९ में  
पाटे ) श्रीवर्धमान सूरि हुए ॥ ❀ ॥ ( ४० में पाटे ) श्रीजिनेश्वर सूरि  
हुए ( सो ) अजहण पुर पट्टणमें । दुर्जज राजाकी सजामें । चैत्यवासियों  
कों, विवाद करके जीते ( इस सेती ) सं ॥१०८०॥ (खरतर विरुद्ध) पाटणके  
राजानेंदिया । अतिशयपणें सिद्धांत मार्गसें सचाहुवा (इससें) खरतरगह्व प्रशिद्ध  
हुवा (इहांसे) कोटिक गह्व । चंद्रकुल । वज्र शाखा ( और ) खरतर विरुद्धका ।  
नवाशिष्योंकों जेद कहनें लगा ॥❀॥ ( ४१ में पाटे ) दिल्लीके बादशाहकों व  
रदेनें वाले । जीवहिंसा ठोमनें वाले । श्रीमाल, महतियाण गोत्र, प्रति  
बोधक । श्रीजिन चंद्र सूरि हुए ॥❀॥ (तथा) इनोंके लघु भ्राता (४२ में पाटे)  
स्थंजणा तीर्थ, नवांगी वृत्ति, प्रगट कर्ता, श्री अजयदेव सूरि हुए, ( तत्प  
ट्टे ) दशहजार, वागडी आवक प्रतिबोधक ( ४३ में पाटे ) श्री जिन वल्लभ  
सूरि हुए ॥ ❀ ॥ ४३ ( तत्पट्टे ४४ में ) महाप्रजावीक, युगप्रधान,  
चातोमके मंदर स्थंजसें । विद्याप्राय पुस्तक प्रगट कारक । ५२ वीर



६४ योगणी, आदि देवी देव्यांकों प्रतिबोधक । ( सवालाख ) रजपूत ब्राह्मणादिकों प्रतिबोधके । सावण सुम्बा, गोलठा, ठाजेर (आदि) अनेक गोत्र श्रावक कुल स्थापक । सवाकोर जौकारजीका जाप करनेवाले, श्रीजिन दत्तसूरजी हुए ( सो ) आजतक मोटा दादाजीके नामसे । देशावरोमें प्रशिष है ॥ तत्पट्टे ४५ मा । जालस्थल मणिधारक, दिल्लीके पातसाहकों, अनेक चमत्कार देखाके । धर्म उद्योत करनेवाले । श्रीजिनचंद्र सूरजी हुए ( जिनोंका ) दिल्लीके जरवजारमें दाग हुवा ( और ) बडा चमत्कार देखके संपूर्ण बादशाहादिक लोक पूजने मानने लगे । ( यह दूसरा दादाजीहुवा ) इहांसे अनुक्रममें ( ५० में पाटे ) महा प्रजावीक श्रीजिन कुशल सूरजी हुए ( सो ) आचार्य पद पायके बहुत जिन धर्मका उद्योत करनेवाले हुए ( अंतमें ) सं । १३८९, फागुणवद अमावश दिन, देव लोक गए ( तत्पु रांत ) फागुण सुद १५ सोमवारने ( प्रथम ) दरशण संघकों दिया ( तिस पीठे ) अनेक गांव, नगरोंमें, जक्ति धर संवका उपगार करने लगे ( इससेती ) संघ अपना, उपगारी आचार्योंको, इष्टदेव समजके । सर्व देशगांव नगरोंमें चरण, स्तंभ, मंदर, स्थापन करके ( दादाजीके नामसे ) अनेक प्रकारसे । पूजन, वंदन करने लगे । सर्व स्थानक दादाजीका नाम प्रशिष हुवा ( आजतक ) सर्व स्थानक, प्रत्यक्ष परचा देनेवाले, संवकों मालुम हो रहे है ( ऐसे ) महा उपगारी ( यह ) तीशरा दादाजी हुए ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इहां से अनुक्रममें ६१ में पाटे महा प्रजावीक श्री जिन चंद्र सूरजी हुए सो सं । १६१२ जेशलमेरमें आचार्य पद पायके गठमें बहुतसे साधुओंका किया उधार कराके उग्र विहार करनेवाले, दिल्लीका अकबर बादशाहको चमत्कार देखाके, जीव हिंसा पर्व दिनोंमें डोकाके, अमारि बडहो पेलानेवाले पंचनदी, पंचपीर, मानजद्र, खोडिया खेत्रपालकों साधन करके, जीव दया धर्म प्रवर्तन करनेवाले, वरु चमत्कारी, ये चौथा दादाजीके नामसे प्रशिषनवे ॥ १॥

॥ ❀ ॥ ऐसे महा प्रजावीक उत्तम आचार्योंके पादानुपाटे ( ६५ में ) महोपगारक तेजस्वी श्रीजिन चंद्र सूरजी सूरेश्वर । १७११ आचार्य पदधारक हुए ॥ इनोके दो शिष्य हुए ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥



॥ १ प्रथम आचार्यपदधारक ॥ २ उपाध्यायपदधारक

॥ ❀ ॥ पट्टश्रेणीमहाराजनामः ॥ ❀ ॥ प्रवरपुज्यश्रेणीनामः ॥ ❀ ॥

॥ ६६ ॥ श्रीजिन सुखसूरिः ॥ ६६ ॥ पुज्य श्रीनदयतिलकजी गणिः

॥ ६७ ॥ श्रीजिन अक्तिसूरिः ॥ ६७ ॥ पुज्य श्रीअमरशीजी गणिः

॥ ६८ ॥ श्रीजिन लाजसूरिः ॥ ६८ ॥ पुज्य श्रीलक्ष्मीचंदजी गणिः

॥ ६९ ॥ श्रीजिन चंद्रसूरिः ॥ ६९ ॥ पुज्य श्रीविजमालजी गणिः

॥ ७० ॥ श्रीजिन हर्षसूरिः ॥ ७० ॥ पुज्य श्रीसुगुणप्रमोदजी गणिः

॥ ७१ ॥ श्रीजिन शौजाग्यसूरिः ॥ ७१ ॥ पुज्य श्रीविद्याविशालजीगणिः

॥ ७२ ॥ श्रीजिन हंशसूरिः ॥ ७२ ॥ पुज्य महोपाध्याय श्रीलक्ष्मी

॥ ७३ ॥ श्रीजिनचंद्रसूरजीपट्टे प्रधानजी गणिः

॥ ७४ ॥ श्रीजिन कीर्तिसूरिजी वर्तमान पुज्यादेशेन

॥ ❀ ॥ वर्तमान विजय राज्ये ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ तत्शिष्य मुख्य ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जैन पाठक श्रीमोहनलाल (अपरनाम) उपाध्याय श्रीमुक्ति कमलगणीने (अपना शिष्यगण) पं० श्रीजयचंद मुनिः पं० रावतमल्लादि तत्वदीपक मोहन मंरुली (तथा) सर्व जैन पाठकगण हितार्थ, श्रीवीकानेर रांघरीका माणक चौकमध्य सतरमा श्रीकुंथुनाथस्वामीका अनुपम नवीन मंदिर सं० १९३१ में वनायके प्रतिष्ठा कराइ (तथा) नवीन ज्ञानचैत्य जैन लक्ष्मी मोहन शाला नामक वनवायके अपना पूर्वजोंका संचित, सर्व पुस्तक सर्व ज्ञानोपगरणका, जंडार स्थापन किया ॥ फेर ज्ञान जंडारकी वृद्धी के निमित्त कलकत्ता बंबईमें शाखारूप जैन पाठशाला स्थापन करके, रत्नसागर दोनाग आदि सर्वधर्मकृत्य जैन आचार संग्रहका पुस्तक हजारों उपवाय के प्रशिक्ष किया ॥ श्रीसंजु रूपसादात् ॥ ❀ ॥

॥ जब लग मेरु अडिग है । जब लग शशि अरसूर । तब लग यहपुस्तक सदा । रह जो गुणजर पूर ॥ ❀ ॥

पोथीप्यारी प्राणयी । गलहियोको हार । बहुत यतनकर राख ज्यो । पोथी सेती प्यार ॥ ऐसी मेरी आशा सफल करजो सही ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ स्वकुल प्रकाशणम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिव कही माहरो कुल प्रकासुं अहो जवियण तुम सुणो । गुरु गढ कोटिक चंद्रकुल अरु वयारि शाखा चित्तजणो । गुण गण जिनेसर सूरि गुझार विरुद पायो गुणकरी । सोजयउ खरतर गढ मोहन प्रगट सहु जवि हित धरी ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गुरु गढ खरतर तेज दीपै विक्रमपुर सोहै सही । जिनहंस सूरिसर तणे पद चंदसूरी जिन मही । गणधार लक्ष्मीप्रधान पाठक मोहन मन उवासर ए । बहु रत्नसंग्रह कजिकत्ता पुर किया सुंवर जासए ॥ २ ॥

॥ ❀ ॥ रत्नसागर अंत मङ्गलाचरण ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तीन तत्वकों नमण कर । सेजुं सदगुरु पाय । देवी जगवती सा निधै । वचन अमृत रस थाय ॥ १ ॥ चौरासी लक्ष जोनिमें । जे रक्षा जीव अनन्त । मोह मिथ्यात वसे पड्या । पायो दुःख नही अन्त ॥ २ ॥ परम देव परमात्मा । विदानन्द गुणचंग । जव्य जीवके हित जणी । जेद कहा सह अंग ॥ ३ ॥ गणधर गौतम आदि सह । रचिया अंग अक्षय त्रिकरण हुं प्रणमुं सदा । ज्ञान आतम गुण नूप ॥ ४ ॥ आचारज उज जाय मुनि । जगवन वचन उपेत । जाण्य टीका निर्युक्ति कर । प्रगट कीया संकेत ॥ ५ ॥ जगवती सुत्र मांहे कहा । आगमना पंच अंग । सरथे जे जवि प्राणिया । पामें नित उतरंग ॥ ६ ॥ जैवंता वरतो सदा । सह जग पंम्ब ज्ञान । पिण उपगारी जव्यकों । ए श्रुतज्ञान प्रधान ॥ ७ ॥ दुष्टकर्म संयोगमें । चित वेठे नही ज्ञान । पिण जाणुं सुरतर समो । ए हीज धर्म प्रधान ॥ ८ ॥ प्रवन्न ज्ञान्य संयोगमें । पारश दरसन पाय । पारश फर स्यां लोह सह । गुणकंचन समयाय ॥ ९ ॥ मनमोहन पारश मिटवो । मोहन गुण सुखकंद । मोहनी मूरत देखके । मोहन चित आनंद ॥ १० ॥ पारश प्रनुकेनाममे । सह संकेत मिटजाय । इतजगद्रव जयज्ये । मोहनगुण प्रगदाय ॥ ११ ॥ जिन दरशण मुक्त मनवस्यो । जे प्रगटे चित आय । कर्मशुद्ध दल जीपके । शिवरमणी वरं जाय ॥ १२ ॥ शिवपुर जोवा कारणें । समकित दृष्टके हेन । बाल अह मोहन जणी । स्वमागर गुण देन ॥ १३ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रत्नसागर, मोहनगुणमाला प्रथमभाग ॥ तृतीयवेर ढपाके प्रसिद्ध करते समय, ज्ञानवृद्धी खाते, प्रथम साहाय्य करनेवाले, धर्मज्ञ ग्राहकोंकी नामावली मान्यसहित प्रकाशित करतेहैं ॥ ❀ ॥

जैन उद्योतक श्री शीतल जिनेश्वर नवीन चैत्य कारापित ( तथा ) श्रीशिखर गिरी तीर्थराज पर चैत्य महिमा दया धर्म विस्तारक ( तथा ) श्री मकशी पार्श्वनाथ तीर्थकी शोभनीक व्यवस्था कारक, उत्कृष्ट नवपद भक्ति धारक । सर्व जैन मान्य, दूसरी जैन स्वेताम्बर कोन्फेन्स ( बंबई ) के प्रमुख, श्रीमान् वाइसरायके सुकीम जोंहरी, खरतर गठी सुश्रावक

२५	राय श्रीवद्रीदासजी बहादुर	रैवासी कलकत्ता
१५	बाबू श्रीबुधसिंहजी विजयसिंहजी दुधेमिया	अजीमगंज
१०	बाबू श्रीराय गणपतिसिंहजी बहादुर	अजीमगंज
१०	राय मेघराजजी जालमचंदजी कोठारी बहादुर	अजीमगंज
१०	राय श्री धनपति सिंहजी राजसिंहजी बहादुर	बालूचर
१०	सुकीम जोंहरी बाबू श्रीमोतीचंदजी नक्षत्र	कलकत्ता
१०	सेठ दीपचंदजी पारख	जोधपुर
९	सेठ श्रीबालचंदजी कनीरामजी आनन	मुंबई
५	पं० प्र० श्री पनालालजी रामरतनजी मुनिः	बीकानेर
५	सेठ श्री फूलचंदजी गोलठा	फजोधो
५	मगनीरामजी दानमलजी कोठारी	मुंबई
५	बाबू श्री जैरूदासजी रत्नदासजी जोंहरी	कलकत्ता
५	हीरालालजी किसनचंदजी द्वार	वरधा
५	गुलाबचंदजी भोमराजजी ( हस्ते ) सुगनचंदजी कान्छगा	मुंबई
४	बाबू श्रीशिताबचंदजी नाहर	अजीमगंज
४	बाबू श्री माधवलालजी जोंहरी	कलकत्ता
४	जेठ मलजी गांधी वस्तुपालजी वराडिया	मुंबई
२१	तत्वदीपक मोहनमंरुजी जैनपाठशाला बुटकर	मुंबई

॥ कलकत्ता ॥ ॥ वीकानेर ॥ ॥ बम्बई ॥

॥ ❀ ॥ श्री जैन लक्ष्मी मोहनशाला ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( जाहरखवर ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सर्व जैनों मज्जन पुरपांकों मात्तुम रहे । जगत्रमें वांछित सुखदायक तत्वज्ञान, संपूर्ण प्राणियोंके ( ज्ञान ) उत्तम पदार्थ है ( क्युंकि ) मद ज्ञानमेती, जीवकों । दर्शन, चारित्रादिक, मोटा गुणकी प्राप्ति होती है ( और ) यही, ज्ञान, दर्शन, चारित्र, सुदृगुण पानमें । थोड़े कालमें जीवकों, अवश्य मोक्षका, अहय सुख मिलता है ( तो ) जिस ज्ञानके प्रसाद, अनादि जव भ्रमण दुःख दूर होके । अंतमें मोक्षफल मिले ( ऐसा ) उत्तम ग्यान पदार्थका । मुख्य, मिय्यात्वी, अज्ञानी राज ( कोई ) विवेकी, उत्तम पुरुष, अनादर न करेगा ( अपितु ) बुद्धिमान, धर्मज्ञ जीवतो । अपनी शक्ति सृजव । तन, मन, धनमें, ज्ञानवृद्धि, विद्यादान, करेगा, करवेगा, अनुमोदेगा ( इसीकारणमें ) अंतरंगप्राप्तिमें अपनेको ( तथा ) अपना शिष्यादिक ( संपूर्ण ) पाठक गण को । विद्या दान मिलने निमित्त । वीकानेर । कलकत्ता । बम्बईमें, जैन पाठशाला, स्थापन करीहे ( और ) पाठशालाके उत्तम जन अर्थ, सर्वोपयोगी ( यह ) ग्न्मागर पुस्तक तीनों बेर उपाके प्रसिद्ध किया है ( और ) पहनें वालोंके पास ( कुम्भी ) भाग खरच लेनेमें न आता है । दोनूं पाठशालाओंके खरचका निजाब ( तथा ) उत्तम जन होना परेपगारी । गुणब्राह्म । संवके हाथ है ( जो ) धर्मगामी संव । तन, मन, धनमें, मदत देने रहेंगे ( तो ) यह तीनों पाठशाला न्याई रह रहेगा ( और ) कममें विद्या वृद्धि होनेका, बहुतसा प्रयत्न करनेमें आवेगा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ स्वमागर प्रथम भाग ( तथा ) दूसरा भाग ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सर्वोपयोगी, वाग्माशी, धर्मकृत्य जैनाचार संवहकी पुस्तक, लेनेकी इजा होय ( तो ) जिनमें सृजव ठिकाने ( नामद्वारेके पास ) नेकरी निजगवज देके लेजावे ( या ) देशावरोंमें भेगावे ( तथा ) देशावरोंमें भेगानेवाला ( जो कोई ) प्रथम निजगवज न लेजेगा ( और ) स्वमागर प्रादि पुस्तक भेगावेगा

(उमकों) साक मारफत, पुस्तक जेजणेंमें आवैगा । साक मारफत, रुपियादेके पुस्तक लेशकेगा । नाटपेट पत्र लेनेमें न आवैगा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( तथा ) इमीनकलका । मोटा, ठोटा, अहुरोंमें ( जो कोई ) पुस्तक उपाने निमत्त जेजैगा ( तो ) जलदी उपाकर जेजा देनेमें आवैगा ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ पुस्तक मिलनेका ठिकाना ॥ ❀ ॥

॥ १ ॥ सु । वीकानेर । ठि । बडे उपाशरे ( जैन लक्ष्मीमोहनशाला ) जैन महोपाध्याय श्री लक्ष्मी प्रधानजी मोहनलालजी गणिः पासे ॥ ❀ ॥

॥ २ ॥ सु । कलकत्ता । ठि । अफीमचौरस्ते । ६२ नं । जैन विद्या शाला । अध्यक्ष पंक्ति श्री जयचंद रावतमल मुनिः पासे ॥ ❀ ॥

॥ ३ ॥ सु । सुंवई । ठि । विचला जोईवाला श्रीचिंतामणिजीके मंदिर जैन पाठशाला उ । श्री मुक्तिकमलजी मंत्री धर्मकल्याणजी पासे ॥

॥ ❀ ॥ पुस्तक नाम ॥ ❀ ॥

रु० आ० ट०

॥ १ ॥ रत्नसागर प्रथम जाग.

५ ० १२

॥ २ ॥ रत्नसागर दूसरा जाग.

२ ८ ४

॥ ३ ॥ खरतरगढ तपगढ पांच प्रतिक्रमण विधि:

१ ४ ४

॥ ४ ॥ खरतर राई, देवसी, प्रतिक्रमण विधि:

० ६ ॥

॥ ५ ॥ श्रीजिन पूजा संग्रह.

१ ४ ४

॥ ६ ॥ योग रत्नाकर वेद्यकसार.

० ६ ॥

॥ ७ ॥ स्तवन संग्रह

० ४ ॥

॥ ❀ ॥ इसपुस्तकां मिवाय । जीमशी मालकका ठापाकी ( तथा ) पं० श्रीधर सिवलालके ठापाकी पुस्तकां पण जेजनेमें आवैगा ( और ) हमारे पाठशालाकी पुस्तकां पण ये दो ठापामें मिलसकेगा इत्ता होय उतासे संगायलेना ( तथा ) रत्नसागर दोनुंजागका ( १० पुस्तक ) जो एकठा लेवैगा ( उमकों ) श्यामके मदनखाने एक पुस्तक ज्यादा मिलेगा । सही ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ यह पुस्तक । इंग्रेजी १८६७ सालके २५ अैनके कायदेसे रजिष्टर किया गया । इस पुस्तकपर मालकने अपना हक दाखवाहे ।

